जीवन के झरोखे

(लघुकथा प्रेरक प्रसंग भाग-३)

वक्त, विश्वास और शर्म हया यह ऐसे परिंदे है
जो कभी उड़ जाएं तो फिर लौटकर नहीं आते।

* संग्रीकरण :- सौ. प्रगती प्रभाकर अकीम

* छायांकन :- श्री सुधीर वासुदेवराव लिंगायत
आर्टटेक ग्राफीक्स, ७८९/९०, गुरुवार पेठ, पुणे- मो. ९४२२३६३३११

* सौजन्य :- पार्टस् कॉटेज, ६-ए, दिवाडकर अपार्टमेंटस्, ताडीवाला रोड, पुणे- ४११००१

* संशोधन, शुद्धिकरण:- श्री अशोक चांदमल सिंहल

* प्रेषक व्यवस्था :- श्री मोहन तुलस्यान (तुलस्यान एक्सप्रेस कुरिअर) फोन नं.२६११९२९१,
३, सागर अपार्टमेंटस्, फ्लॅट नं.८, ताडीवाला रोड, पूना-४११००१
घर-२६०५०७६१ मो.९८२३०४४८३२

* सहयोगी छायांकन :- रश्मि हीरा - संजय हीरा

* पॅकिंग श्री ओमप्रकाश बलभद्रप्रसाद अग्रवाल

* संग्रहकर्ता :- श्री अनन्तसुत मणिरत्नम् महेन्द्रकुमार पाटोदिया

कोनार्क इन्क्लेव्ह, बी-८, बंड गार्डन रोड, पुणे - १

फोन नं. - २६१६२६७२, २६०५९६७४, २६०५९५०९ मो. ९३७१११६६८३

* प्रकाशन नारायणी देवी सांस्कृतिक भवन ट्रस्ट
श्री नारायणी धाम, सर्व्हे नं. ७४/१-बी, प्लॉट नं. १७-१८-१९,
कात्रज दूध डेअरी के पीछे, सातारा रोड, पुणे-४११०४३ फोन- २४३६५१५१

भरोसा और आशीर्वाद कभी दिखाई नहीं देते लेकिन असंभव को संभव बना देते हैं।

* मूल्य - अपने बच्चों के लिए दादा-दादी, नाना-नानी की कहानियां

ग्रन्थ प्राप्ति का स्थान

१) महालक्ष्मी मंदिर,
नेहरू स्टेडियम के पास,
सारस बाग, पुणे- ४११०३७

२) नारायणी देवी सांस्कृतिक भवन ट्रस्ट, (राणी सती मन्दिर)
सर्व्हे नं. ७४/१-बी/२, प्लॉट नं. १८-१९,
कात्रज दूध डेअरी के पीछे, सातारा रोड,
पुणे- ४११ ०४६ फोन नं. २४३६५१५१

३) अमरनाथ अग्रवाल
१०३१, बुधवार पेठ, जगोबादादा तालीम के पास,
पूना-४११००२ फोन नं. ऑ.२४४७३३१० घर-२५४३०२७४

४) डॉ. सुशील भारूका
आर्च डेव्हलपर्स, सिटी प्राईड, मोंढा नाका, जालना रोड,
औरंगाबाद फो. ०२४०-२३४५९५५ मो. ९८२३०२८४१२

५) श्री जगदीश बाघमल अग्रवाल
हॉटेल टूरिस्ट, मंगलवार पेठ, पुणे- २

६) श्री शाम ग्यानीराम अग्रवाल
आज का आनंद, शिवाजीनगर, पुणे-५
फोन ऑ. २५५३४८८८

७) श्री सुशीलकुमारजी अग्रवाल
एस-३, जनता कॉलनी, जयपुर-३०२००४
फोन नं. ऑ. ०१४१-२६०६७४६, मो. ९८२९०६०६७४

८) श्री प्रेमप्रकाश सूतवाला
५६, नवशील अपार्टमेंट्स, ब्लॉक नं. ५,
फ्लैट नं. २, टैगोर रोड, कैंटोनमेंट्स,
कानपुर- २०८००४ मो. ९३३५८७२९४४

९) श्रीमती गीता जयप्रकाश गोयल
बिल्डिंग ९ए, ११ वां मजला, गंगा सॅटेलाईट,
वानवडी, पुणे- ४११०४० मो. ९८६०००२२२
फोन नं. ऑ. २६१४०२५१ घर- २६८३७४३४

१०) शंकरलाल रिणवाँ
धानुका आश्रम, परिक्रमा मार्ग, रमण रेती,
वृंदावन- २८११२१ (यू.पी.) मोबाईल -०९७५६२५८२४२
फोन नं. ०५६५-३२९०८०४, २५४००७५, २५४०७३१

११) श्री विजय चौधरी
आशिष, विमान नगर, खामगांव-४४४३०३
फोन नं. (०७२६३) २५२४०३ ऑ. २५३११६

१२) श्री बनवारीलाल अग्रवाल
१६-११-७४१/डी/३६, मूसारामबाग,
हैद्राबाद- ५०००३६ मो. ९४२४६३५४९१९

१३) श्री किरण अग्रवाल
कुसुम बंगलो, आकाशगंगा सोसायटी,
कृष्णचरन अपार्टमेंटस् के सामने, काठे गल्ली, द्वारका,
नासिक - ००१ फो. (०२५३) ८०४६३३, मो. ९८५०३०४०६१

१४) श्री देवीप्रसाद सरावगी
गोकुलधाम,२९बी-२ रा मजला, ३२/१बी,
रामकृष्ण समाधि रोड, कलकत्ता-७०००५४
फोन नं. घर-२३२०१४१४ ऑ.२३५३८७६८

१५) श्री मोतीलाल डेंगला
अरुणोदय, ११८९/ए, १३-मेन हॉल, दूसरा स्टेज
बेंगलोर- ५६०००८ फो. २५२६४२०५, मो.९३४१२६२४९३

१६) अग्रवाल समाज, पुणे
श्री अग्रसेन भवन (वासुदेव जानी)
१०८८, रविवार पेठ, पुणे- ४११००२
फोन- २४४७६१६५, २४४७७७५६

१७) श्री राजेन्द्र बेनीप्रसाद मंगल
श्री खाटू श्याम मित्र मंडल, पूना
सी.एम.ई. पुणे- ४११०३१ मो. ९७६४४५५८५५

१८) श्री बनवारीलाल जाजोदिया
रघुमणि, डी-३४, एचआयजी कॉलनी,
शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के पीछे, आग्रा-मुंबई रोड,
इंदौर- ४५२००१ (म.प्र.)
फो. २५५९४५१ मो. ९३००५६९४७१

१९) श्रीकांत रामस्वरूप मोरारका
नानसा गेट, स्टेशन नवलगढ़- ३३३०४२
जिल्हा- झुनझुनु (राजस्थान) मो. ९४१४३१५७३०

२०) श्री अशोककुमार एस. जालान
अवाडे माळा, ए-१३, शुभमकरोति अपार्टमेंटस्,
इचलकरंजी- १५ जिल्हा-कोल्हापूर मो. ९४२२४२६७८०

२१) श्री दिनेशजी अग्रवाल
३/ए, प्रस्तावना अपार्टमेंट, प्रतिष्ठा कॉम्प्लेक्स,
एक्स्पेरिमेंटल स्कूल के सामने, पारले पॉईंट, सूरत
मोबाईल - ९८२४१००९४०

संग्रहकर्ता की कलम से

एकांत में पुस्तकें ही सर्वोत्तम मित्र होती हैं। पुस्तकों से ही हमें सूझ-बूझ, चिंतन, निष्कर्ष और अनुभव प्राप्त होते हैं। स्वाध्याय से ही व्यक्ति में तार्किक शक्ति, बौद्धिक पैनापन, चिंतन आता है और मानव जीवन को ऊंचा उठाते हुए निर्मल बनाने की शक्ति मिलती है। किताबें जीवन में बेहतरीन साथी साबित होती है। अच्छी किताबें पढ़ना दिमाग के लिए फायदेमंद है। किताबें जीवन की एकरसता को तोड़ती है। किताबों के पढ़ने से आपका दिमाग तरोताजा हो जाता है। जब आप किसी असफलता से दु:खी हो जाते है, आपके मन में नकारात्मक विचार आते है तो किताबें ही आपका हौसला बढ़ाती हैं। किताबें पढ़कर आपकी एकाग्रता में सुधार आता है। किताबें पढ़ने से आप अनेक नए शब्द सीखते हैं। इनकी मदद से अपने विचारों को बेहतर ढंग से पेश कर सकते है। उसके पढ़ने से आपको व्यापक शोध तथा विश्लेषण प्राप्त होता है। ज्ञान के भंडार के सहायता से आप विभिन्न वर्गों के लोगों से बेहतर संवाद स्थापित कर सकते हैं।

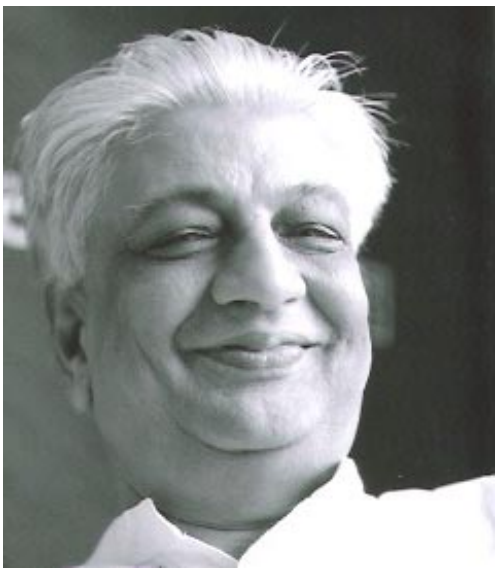

जीवन को उत्साह से भरने के लिए एक विचार, एक गीत, एक पुस्तक और एक मित्र ही काफी होता है। जो पुस्तकें सबसे अधिक सोचने के लिए मजबूर करती है वही आपकी सबसे बड़ी मित्र और सहायक होती है।

मनुष्य स्वयं सबसे बड़ा खतरा और सबसे बड़ी उम्मीद है। साहित्य उतना ही पुराना है, जितनी वाणी। इसकी उत्पत्ति मनुष्य की जरूरतों से हुई और तबसे इसकी और जरूरत बढ़ने के अलावा इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है। लेखक समाज से अलग और अनन्य नहीं हैं, सभ्यता की शुरुआत से इनके कार्यों, इनके कर्त्तव्यों और इनकी जिम्मेदारियों को हमारी प्रजाति द्वारा ही निपटाया गया है। लेखक की कोई भाषा नीति नहीं होती। भाषा को परिभाषित और वर्णित करने के मामले में भाषा बड़ी कमजोर होती है। यदि कोई भाषा केवल भाषा के स्तर पर अपनी विशेषताएं खोजे तो उसे यह जानकर धक्का लगेगा कि जो गुण उसमें है, वे अन्य अनेक भाषाओं में कई मामलों में है। ऐसे में अपनी भाषा इतने गर्व का विषय नहीं होगी।

मानवता भ्रम के उजाड़ और स्याह समय से गुजर रही है। लेखकों का प्राचीन कार्य नहीं बदला है। वह हमारे गंभीर दोषों और विफलताओं को उजागर करने और सुधार के उद्देश्य से हमारे अंधेरे कोनों और खतरनाक स्वप्नों पर प्रकाश डालने का काम करते हैं।

इसके अलावा लेखकों को मानव आत्मा की महानता और हार में बहादुरी, साहस, करुणा और प्रेम के लिए मनुष्य की सिद्ध क्षमता का जश्न मनाने का कार्य सौंपा गया है। कमजोरी और निराशा के खिलाफ अंतहीन युद्ध में लेखक उम्मीद की पताका फहराते हैं। जो लेखक मनुष्य की पूर्णता में पूरे जुनून से विश्वास नहीं करता, उसका न तो साहित्य के प्रति कोई समर्पण है और न ही साहित्य में उसकी कोई रुचि है।

अच्छे लेखन का फैसला समय और समाज करता है। इसलिए हमेशा पढ़ना और लिखना चाहिये। इन्सान बनकर जीते

समय पढ़ना यह सबसे आनंद देनेवाली चीज है। पढ़ने-लिखने का शौक नहीं बल्कि वह जिंदगी का हिस्सा होना चाहिए। अपने यहां का लेखक, जात, धर्म, समाज और स्वयं के जीवन की कथा बयान करने में धन्यता मानता है।

सब जानते हैं कि साहित्य में एक जीवन दर्शन होता है और यह सृजन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। साहित्य की समाज में एक छोटी मगर महत्वपूर्ण भूमिका है। साहित्य की अलग-अलग विधाओं ने समाज का मार्गदर्शन किया है। इसके बावजूद मौजूदा दौर में साहित्य और किताबों को अस्तित्व के लिये संघर्ष करना पड़ रहा है। नेक विचारों को लोगों तक पहुंचाने का अहम काम साहित्य ही करता है।

तकनीकी के विस्तार ने किताबों के आगे गंभीर चुनौती पेश की है। यह सही है कि किताबें जीवित हैं और उसने तकनीकी के साथ एक रिश्ता कायम कर लिया है, लेकिन अब समय आ गया है कि हम आत्मचिंतन करें कि इस रिश्ते को ज्यादा मजबूत कैसे किया जाये।

वह जमाना ही अलग था, जब बचपन के उस जादू भरे माहौल में दादी या नानी की गोद में लेटकर शूरवीर राजाओं, राजकुमारियों, राक्षसों और परियों की कहानी सुनते-सुनते रातें छोटी मालूम होती थीं, दिल में सुगबुगाता विस्मय आंखों में उतर आता था, मन के किवाड़ खुल जाते और कहानी का दामन थामकर मन खुले आसमान में बेरोकटोक विचरण करने लगता था। जीवन के न जाने कितने अनमोल सूत्र, कितने रहस्य, कितने सबक चुपके से मन में घर कर जाते और बचपन में बोए ये बीज जाने-अनजाने बड़े होने पर मुश्किल की घड़ी में हौसला देते।

एक लोककथा का जन्म- आसमां में बिजली चमकी, बादल गरजे, मेघ बरसे और अबोध बाल-मन में सवाल उठा। सवाल के जवाब में दादी ने एक कहानी सुना डाली। डाल पर चिड़िया चहकी, शेर दहाड़ा, भूकंप आया, मनुष्य ने मनुष्य से दोस्ती की, प्रेम किया, युद्ध किया, इस तरह हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी घटना से एक लोककथा जन्म लेती। एक कान से दूसरे कान, एक मुख से दूसरे मुख और एक मन से दूसरे मन में गूंजती लोककथाएं सदियों से बहती रही हैं। पंचतंत्र की कहानी हो या कछुए व खरगोश तथा चूहे की चिंदी या मां के कलेजे की कहानी, बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ ये कहानियां बच्चों को पर्यावरण से जोड़ने का काम भी करती थीं। रामायण, महाभारत, वेद, पुराणों की कहानियां व लोक कथाएं बच्चों में जिज्ञासा जगाती और बच्चे कई दिनों तक इन कथाओं से जुड़े रहते। ये कथाएं, कहानियां और सुरीली लोरियां उनमें नए संस्कार जगाती थीं।

कहानियां बच्चों की पहली पाठशाला- इन सीधे-सलोने परम्परागत खेलों में न चौड़े-विशाल मैदानों की जरूरत थी और न ही स्टेटस सिंबल बने आज के महंगे साजो-सामान की। शाम ढलते ही आंगन या छत पर पूरे परिवार के सोने का कार्यक्रम बनता। आंगन पानी से धोए जाते। बच्चे बिस्तर उठाकर छत या आंगन में जमाते। चांदनी रात में तारों तले दादी से कहानी सुनने का मजा ही कुछ और था। बच्चों का दादा-दादी व नाना नानी के प्रति लगाव बढ़ता रहता था। सात समंदर पार के राजाओं, परियों और साहस व संघर्ष की इन कहानियों से बच्चों की कल्पना में चार चांद लग जाते और उन्हें एक नई प्रेरणा मिलती थी। कहानियां बच्चों की पहली पाठशाला होती थी। रानी लक्ष्मीबाई और शिवाजी की बहादुरी, बीरबल की सूझबूझ भरी चतुराई, हरिश्चंद्र की सत्यवादिता, विवेकानंद और गांधीजी, शहीद भगत सिंह, सुभाषचंद्र बोस के त्याग, महानता और महाराणा प्रताप के संकल्प और साहस की कहानियों से बच्चों का चरित्र निर्माण तो होता ही था, साथ ही उन्हें ये कहानियां, लोककथाएं अपनी जड़-जमीन और संस्कृति से भी जोड़े रखती थी।

नए मूल्य और आदर्श- जब बच्चे दादा-दादी से पौराणिक कथाएं और देश-विदेश की लोककथाएं सुनते तो उनका मासूम मन देश और काल की सीमाओं को तोड़ कल्पना शक्ति के सहारे नए मूल्य और आदर्शों को आत्मसात करता था। तब बच्चे, बच्चे होते थे। तब बच्चों का बाल सुलभ भोलापन, जिज्ञासा, उत्सुकता, कौतूहल, चंचलता, मासूमियत प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा की बलि नहीं चढ़ा था। बच्चों की धमाचौकड़ी को स्कूली होमवर्क और कोचिंग क्लासेज ने चौपट नहीं किया था। न वीडियो गेम्स थे और न ही दूरदर्शन, संगणक, इंटरनेट या मोबाइल का मोह। सूचनाओं और जानकारियों के हमले। दैनिक जीवन में व्याप्त हिस्सा और अपराध ने उनकी मासूमियत को खत्म नहीं किया था।

एक दौर था जब बच्चों के लिए कहानियां खत्म ही नहीं होती थीं। वे सुनते रहते थे दादी, नानी की गोद में बैठकर कहानियां और उनसे मिली सीख को जज्ब करते रहते थे, हां-हूं करते हुए कहानियां आज भी है। दादा दादी के गोद में बैठकर रामायण, महाभारत के प्रसंग सुनते थे। कहानियां सिर्फ परंपरा और संस्कृति की समझ ही नहीं देती हमें जागरूक व जिज्ञासु बनाती है। उससे जीवन की सच्चाई मिलती है। जब बच्चों के लिए उपयोगी और अनुभव की नींव रखती है।

आज के समय में भले ही पूरी दुनिया मीडिया और तकनीकी से जुड़ी हुई है लेकिन फिर भी बच्चे मां-बाप से, दोस्त एक दूसरे से, भाई-बहन एक दूसरे से दूर हो रहे हैं। जुड़ने के साधन जितने ज्यादा हो गए हैं रिश्तों के बीच उतनी ही अधिक दूरी आ गई है। सबसे ज्यादा दूरी आई है बच्चों और दादा-दादी के बीच। आज तो मुश्किल से ही बच्चे दादी मां की कहानियां सुनते हैं। जबकि ये कहानियां बच्चों के लिए कई तरह से फायदेमंद हैं। सोते समय कहानी सुनने के कई लाभ हैं।

कहानियां सुनकर बच्चों को नये-नये शब्दों का ज्ञान होता था। एक तरह से कहानियां बच्चों के शब्दकोश के ज्ञान को बढ़ाती हैं। कहानियां सुनने के दौरान बच्चे कई सवाल भी पूछते जिनका जवाब आप उदाहरण समेत देते हैं। आप के द्वारा दिए गए जवाब बच्चे सोने से पहले सुनते हैं और उसके बाद सोते हैं। ऐसे में ये जवाब और शब्द बच्चों की स्मृति में लंबे समय के लिए रह जाते हैं।

संगणक या लैपटॉप पर बैठकर कहानी सुनने से आंखों में जोर पड़ता है। साथ ही ये डिजिटल माध्यम बच्चों को कल्पनाशक्ति पर रोक लगा देते हैं। जबकि कहानी सुनने के दौरान हर बच्चा अपनी कल्पना में खो जाता है जिससे उनकी रचनात्मकता बढ़ती है।

अधिकतर बच्चे अंग्रेजी माध्यम पाठशाला में पढ़ रहे हैं। ऐसे में वे पाठशाला और दोस्तों से अपनी भाषा में कम ही बात करते हैं। इससे उन्हें अपनी भाषा और संस्कृति का कम ज्ञान होता है। कहानी सुनाने की परंपरा बच्चों में अपनी भाषा के प्रति जिज्ञासा और जागरूकता दोनों बनी रहती है। उनमें अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम विकसित होता है और वे कहानियां सुनने में रुचि दिखाते हैं।

मैंने इस किताब में छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह किया है जो बालकथाएं, ज्ञानकथाएं, बोधकथाएं व लोककथाएं जो बचपन में बालकों को सुनाकर प्रेरणास्रोत बन सकती है और उन्हें उत्साहित कर सकती हैं। इस किताब की शिक्षाप्रद कहानियां हमारे इतिहास से व धर्मग्रंथों से ली गयी है जो छात्रों के लिये भी अपने अध्ययन के लिये उपयोगी है।

कहानी के माध्यम से अगर पाठ से संबंधित कोई बात समझाने की कोशिश की जाती है तो आप उसे जल्दी याद कर लेते हो, इसलिए मुहावरों को कहानी के माध्यम से बता रहे हैं, ताकि आप इसे अच्छी तरह से समझ सको।

प्रार्थना

प्रार्थना की शक्ति असीम है, उसका आंकलन कम ना करें। प्रार्थना से मन एकाग्रता को प्राप्त होता है और चिंताएं समाप्त होती जाती हैं। प्रार्थना से आत्मविश्वास बढ़ता है और शांति मिलती है। मानसिक तनाव दूर करने में प्रार्थना बड़ी सहायक सिद्ध होती है। प्रार्थना से निर्भयता आती है। रात्रि विश्राम के समय प्रार्थना का नियम अनिद्रा रोग एवं सपनों से बचाता है।

प्रेम ही प्रार्थना है। कोई कोई पूछता है कि किसकी प्रार्थना करें। प्रार्थना का अर्थ ही है, सबकी प्रार्थना करें। वह जो समस्त फैला हुआ है, उसके प्रति जो प्रेम का भाव है उसका नाम प्रार्थना है। हाथ जोड़ लेने का नाम प्रार्थना नहीं है। इस तरह जीवन जीना चाहिए कि सबके प्रति प्रेम बहता रहे तो वही प्रार्थना होगी। बेईमान लोग प्रार्थना से बचने के लिए दो मिनट के लिए हाथ जोड़कर मंदिर जाकर लौट आते है और कहते हैं कि हमने प्रार्थना कर ली पर वह प्रार्थना नहीं है। प्रेम ही प्रार्थना है। समग्र के प्रति प्रेम ही प्रार्थना है।

लिखे हुए शब्दों को दोहराना प्रार्थना नहीं है। प्रार्थना का अर्थ है परमात्मा का मनन, चिंतन और उसका अनुभव। आत्मा का खुद से बातचीत करना ही मनन कहलाता है। जब हम अपने भीतर अवस्थित आत्मतत्व से बातचीत करते हैं तो वह प्रार्थना हैं। प्रार्थना करने के लिए हमें तन-मन से पवित्र होना चाहिए। पवित्रता आत्म तत्व की होनी चाहिए, मन की होनी चाहिए। प्रार्थना हृदय से होती है, क्योंकि हमारा आत्मतत्व स्वयं ही ईश्वर का सूक्ष्म स्वरूप है। प्रार्थना तभी फलित होगी, जब हमारा मन राग-द्वेष से मुक्त होगा। प्रार्थना का अर्थ है परम की कामना और इसके लिए क्षुद्र और तुच्छ कामनाओं का परित्याग करना चाहिए। परम की चाह ही प्रार्थना है। लेकिन हम लोग परम की नहीं अल्प की मांग करते हैं। हमें सांसारिक मान, पद व प्रतिष्ठा की चाह को ही हम प्रार्थना समझते है। यह तो वासना है। धन, यश व पुत्र: इन तीनों की मूल कामना का नाम ऐषणा है। इसे ही ऋषियों ने वितैषणा, लोकैषणा, पुत्रेषणा कहा है। जब तक इन क्षणिक सुख देनेवाली तृष्णाका अंत नहीं होगा तब तक परम प्रार्थना का आरंभ नहीं हो सकता। हमारे अंदर की पवित्रता ही हमें प्रार्थना के योग्य बनाती है। अपने स्वास्थ हेतु ईश्वर से कुछ मांगना छोड़कर दाता बनें। देनेवाले को देवता कहा जाता है। गरीबों, वंचितों और जरूरतमंदों को शारीरिक, आर्थिक और मानसिक रूप से मदद करके हम दाता बन सकते हैं। प्रभु से प्रार्थना करने के लिए हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं बल्कि हृदय फैलाने की आवश्यकता है। प्रार्थना तभी पूर्ण होगी जब सांसारिक वासना का अभाव होगा। प्रार्थना और ध्यान से अपने आत्मिक जीवन की शक्ति बढाओ तब निश्चय ही ईश्वर के नाम पर सांसारिक कर्म भी सर्वोत्तम रीति से कर सकेंगे। हर समय भगवान से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हे भगवन्। हमें सुमति दो तथा कुमति दूर करके हमें अपने चरणों की प्रीति का वरदान दो। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता पूर्ण भावना स्वयं ही एक प्रार्थना है। कृतज्ञ और उल्लसित हृदय से की गई अर्चना भगवान को सबसे अधिक प्रिय है।

हे प्रभु। मेरे पैरों में इतनी शक्ति देना कि दौड़-दौड़कर तेरे दरवाजे आ सकूं। मुझे ऐसी सद्बुद्धि देना कि सुबह-शाम घुटने के बल बैठकर तुझे प्रणाम कर सकूं। १०० साल जिऊं या ५० साल- यह तेरी मर्जी मेरी अर्जी तो सिर्फ इतनी है कि

जब तक भी जिऊं जिह्वा पर तेरा नाम रहे। देने में मेरे हाथ कभी थके नहीं। मेरे मालिक प्रेम से भरी हुई आंखें देना, श्रद्धा से झुका हुआ सिर देना, सहयोग करते हुए हाथ देना, सत्पथ पर चलते हुए पैर देना और सुमरन करता हुआ मन देना। हे प्रभु। अपने इस बच्चे को अपनी कृपा-दृष्टि देना। सद्-बुद्धि देना।

प्रार्थना थोड़ी ही देर सही मगर पूरे प्राणों से करो। प्रार्थना में यदि तुम्हारे प्राण न जुड़ें तो प्रार्थना अधूरी है। दिल से की गई प्राथनाएं अवश्य ही फलीभूत होती हैं। पर प्रार्थना के साथ प्रयत्न भी तो जरूरी है।

प्रार्थना का स्वभाव हमेशा से ही असाधारण रहा है। दुनिया भर के तमाम धर्मों और संप्रदायों में इसे मन को निर्मल कर उस परमात्मा को प्राप्त करने की अमूल्य औषधि माना गया है। मनुष्य मन का अहंकार जिसके द्वारा किसी विराट सत्ता में ना केवल समाहित होता है बल्कि भीतर के सभी अवगुण उसी की अनुपम आभा में विसर्जित होते हैं। यकीनन प्रार्थना विनम्रता की सर्वोच्च अवस्था को प्रतिबिंबित करती है, जिसमें सतत तीव्र पुकार की सहज उपस्थिति होती है। असल प्रार्थना तमाम मजहबी ताने-बाने से मुक्त होकर करुणामयी प्रेम की अनन्य अभिव्यक्ति को उजागर करती है। वहां शरणागत और समर्पण का अभिन्न भाव अपने मुकम्मल अर्थों के साथ साकार होता दिखाई देता है।

प्रार्थना अपने आप होनेवाली भावमयी सतत प्रक्रिया का हिस्सा है, जहां बहुत कुछ अलग-अलग स्तरों पर रूपांतरित होता है। प्रार्थना परोक्ष रूप से आत्मशुद्धि के बिंबों का निर्माण करती है। सदियों से महान संतों ने इसके समग्र मर्म को जाना और बताया है। इसके सूक्ष्म से विराट होते स्वरूप की उपमाओं को पहचान कर उसे अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया है। महात्मा गांधी ने तो प्रार्थना के इस अनुक्रम को अपने सत्याग्रह का अनिवार्य अंग घोषित किया था। बापू के लिए प्रार्थना उनकी पहचान का रूप बनी। उन्होने इसे आत्मा और शरीर को जोड़नेवाली अनिवार्य कड़ी के रूप में बताया है, जो मनुष्य की अंतर चेतना को मूर्छित होने से बचाती है।

समूह में की गई अरदास की अपनी ही एक ताकत है। कोई भी उसकी रूहानियत के नूर से अछूता नहीं रहता क्योंकि परहित का भाव वहां सर्वोपरि रहता है। एक साथ उठनेवाले हाथों की पुकार अपने असल मौला के दिल तक जा पहुंचती है। वह उसकी आवाज सुनता है और खुद भी उसमें शरीक होता है। लिहाजा अपने बंदों की विपदाओं को हरने के लिए उतर आता है। स्वामी रामसुखदास जी महाराज इस संदर्भ में अक्सर कहा करते थे कि शुद्ध बुद्ध हृदय से की गई पुकार सबसे बड़ी साधना है। जब अपने किए कुछ न हो तो फिर प्रार्थना ही एक मात्र रास्ता साबित होती है। दुनिया के महानतम धर्म प्रार्थनाओं की बुनियाद पर फले-फूले हैं जो निवेदन के सच्चे अर्थ के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। कर्म, विचार और भावों के संदर्भ में चेतना के सोपानों को लगातार प्रभावित करते हैं।

हमारे यहां चिरकाल से प्रार्थना की बहुत सुंदर परंपरा रही है। उपनिषदों का बहुत बड़ा हिस्सा इन्हें ही समर्पित है जो समूचे जगत के कल्याण के लिए अनुनय करता है। वास्तव में प्रार्थना से सदकार्य करने की असीमित प्रेरणा मिलती है। मन में परम सत्ता के प्रति अनुग्रह विकसित होता है और कुछ अच्छा करने के लिए पर्याप्त आत्मबल मिलता है।

दशहरा अवकाश के दौरान एक मित्र की कुशलक्षेम पूछने हेतु उसके घर जाना हुआ। वह मित्र पिछले दो-ढाई महीने से अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से जूझ रहा था, किंतु उस दिन बहुत प्रसन्नचित, सहज और सुकून से लबरेज नजर आ

रहा था। जब यह जानना चाहा कि समस्याओं से कैसे छुटकारा मिला, तो उसने तत्परता से जवाब दिया- ईश्वरीय प्रार्थना की शक्ति। असलियत में जीवन की कुछ निजी समस्याएं ऐसी होती हैं जिन्हें केवल परम सत्ता की प्रार्थना के हवाले करने से ही चैन मिलता है।

दरअसल, प्रार्थना अनन्य भावयुक्त हृदय से किया गया ऐसा आर्तनाद है जिसका व्यक्ति के अवचेतन मन पर तात्कालिक व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

श्रद्धा, आस्था व निष्ठापूर्वक की गई प्रार्थना से व्यक्ति के मन में आत्मविश्वास व इच्छाशक्ति का जागरण होता है। इच्छाशक्ति के जागरण से व्यक्ति के मन पर छाई निराशा व जीवन में आए व्यवधान हटने लगते हैं। रचनात्मक प्रार्थना हमें ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जिसके सकारात्मक परिणाम न सिर्फ हमारी बैलेंसशीट पर दिखते हैं बल्कि हममें आत्मविश्वास व आत्मबल की नई भावना भी जाग्रत होती है। प्रार्थना से आंतरिक शक्ति उत्पन्न होती है।

दरअसल, प्रार्थना पूजा-पाठ का कोई विधि-विधान यानी धार्मिक क्रियाकलाप नहीं बल्कि नि:स्वार्थ प्रेम, त्याग और समर्पण से अभिभूत होकर उस निर्गुण, निराकार परमात्मा से तारतम्य स्थापित करने की एक विशुद्ध भावना है। जिस विराट के संकेत मात्र से नदियों की अविरल धारा प्रवाहित होती है, शीतल और सुगंधित हवाओं के चलने का एहसास होता है, उस असीम व अनंत सत्ता के प्रति व्यक्ति का मस्तक जब श्रद्धा भाव से झुक जाता है, तब प्रार्थना होती है।

प्रार्थना आंतरिक चेतना के जागरण की अनुपम स्थिति है। प्रार्थना की नहीं जाती। जब व्यक्ति सत्वबुद्धि में स्थितप्रज्ञ होकर संपूर्ण सृष्टि में एकत्व के बोध की अनुभूति करने लगता है और वह परमेश्वर को सृष्टि का नियामक मानते हुए दृष्टा भाव से सांसारिक इच्छाओं के प्रति अनासक्त होकर परमपुरुष के निमित्त मात्र के रूप में कर्म करता है, तब प्रार्थना अपने आप घटित होती है। जब व्यक्ति मन, बुद्धि और कर्ता भाव से ऊपर उठकर अपने आप को बिल्कुल निढाल छोड़ देता है और खुद को समग्रता में देखने लगता है तो उसका संपूर्ण अस्तित्व शांत होकर सत्य की अनुभूति संपूर्ण अस्तित्व शांत होकर सत्य की अनुभूति में उतरने लगता है। इस स्थिति में उसका द्वैत भाव विलीन हो जाता है और शेष रह जाता है केवल ईश्वरीय आनंद।

कभी मनुष्य बीमारी से भयभीत रहता है, कभी उसे बुढ़ापा सताता है, कभी वह मौत से घबराता है। न जाने कितने चेहरे हैं भय और दु:ख के। मनुष्य उन सबसे सुरक्षा चाहता है। दुनिया की सबसे बड़ी प्रार्थना दु:ख मुक्ति की है। दु:ख और कठिनाइयों के बीच में मनोबल बना रहे, यही सच्ची प्रार्थना है, जो व्यक्ति को अहंकार से बचाने वाली और पुरुषार्थी बनानेवाली है। प्रार्थनाओं में जीवन का सारांश निहित होता है।

दुनिया को बदलने से पहले अपने आपको बदलना होता है - एक किशोर ने प्रार्थना करनी शुरू की- या खुदा। मुझे शक्ति दो। मैं दुनिया बदलना चाहता हूं। लोगों के दिल पर राज करना चाहता हूं। प्रार्थना करते करते कई वर्ष बीत गए लेकिन प्रार्थना स्वीकृत नहीं हुई। उसने सोचा, क्यों न प्रार्थना के बोल बदल लूं। उसने ऐसा ही किया और अब यह प्रार्थना करने लगा- या खुदा। मुझे शक्ति दो। मैं अपने संपर्क में आनेवाले लोगों को बदल दूं। प्रार्थना करते-करते फिर कई वर्ष बीत गए। युवक ने सोचा- मेरी प्रार्थना में ही कोई कमी है, मुझे प्रार्थना का तरीका बदलना चाहिए। अब

वह प्रार्थना करने लगा- या खुदा। मैंने दुनिया को बदलने का सपना देखा, सफल नहीं हुआ। अब मेरी कोई विशेष इच्छा नहीं है। तुम मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं अपने आपको बदल सकूं। उसकी प्रार्थना एक दिन में ही फलीभूत हो गई। खुदा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उसने अपने अंदर एक शक्ति महसूस की, जिसकी बदौलत वह खुद बदल गया। फिर उसके आसपास का वातावरण बदल गया। उसने पाया सभी उसके विचारों को महत्व दे रहे हैं। वह उसे जिस रूप में बदलना चाहता था, उस रूप में दुनिया बदल रही है। यह किशोर था जो आगे चलकर एक सूफी संत बना। दुनिया को बदलने से पहले स्वयं को बदलना होता है। हर व्यक्ति के अंदर शक्ति का अनंत स्रोत छिपा पड़ा है। आवश्यकता है उसे पहचान कर उपयोग करने की। उसके लिए प्रार्थना का एक सूत्र है- मैं शक्तिसंपन्न बनूं। आज यह प्रार्थना महिलाओं के लिए ज्यादा जरूरी है। प्रभात के हर सूर्य को दीप्त होना होगा। सायंकाल अवसान की बेला में हम उसके तेजोमय होने की आशा रखें तो यह बेमानी होगा।

भौतिक विकास के साथ मनुष्य की आध्यात्मिक यात्रा भी जरूरी है - एक आदमी काफी समय से मंदिर में जाकर प्रार्थना करता- हे प्रभु, सौ रुपये दो। एक बार एक मनुष्य ने उसकी प्रार्थना सुनी। उसने एक रूमाल में निन्यानवे रुपये बांधकर पोटली रख दी। उसे पोटली मिली, वो राजी हो गया। उसे लगा- प्रभु ने प्रार्थना सुन ली। पोटली खोल कर गिनने लगा। निन्यानवे रुपये देखकर उसे लगा एक रुपया कहां चला गया। चिंता करने लगा- एक रुपया कम है, निन्यानवे ही क्यों? भगवान को तो सौ रुपये देना था। या तो गिनती में भूल हुई होगी या तो किसी ने जरूर एक रुपया ले लिया होगा। एक रुपया कम है की चिंता में वह इस कदर डूब गया कि उन रुपयों का सदुपयोग करना भूल गया। यह आम मानसिकता है। जो नहीं मिला उस पर ध्यान केंद्रित हो जाता है। जो मिला उसका प्राय: सदुपयोग ही नहीं किया जाता।

आज जिसे देखें, वह कुछ न कुछ पाने के लिए दौड़ता दिखाई दे रहा है। भौतिकता के इस बढ़ते प्रभाव को यदि आध्यात्मिकता द्वारा संतुलित नहीं करेंगे तो भौतिकता इंसान और मानव समाज को तोड़ डालेगी। इन दोनों के बीच संतुलन आवश्यक है। साफ दिख रहा है कि सब कुछ पास होते हुए भी आज के इंसान को संतोष नहीं, वह भटकता अधिक है। भटकाव ही उसे दौड़ा रहा है। स्थिति यह है कि दर्द पैरों में है और इलाज वह सिर का करा रहा है। ठीक है कि भौतिकता किसी हद तक शारीरिक सुख देगी, लेकिन भीतर शांति चाहते हैं तो सही उपचार आध्यात्मिकता से ही संभव है। भौतिकता बुरी नहीं, लेकिन संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। हर व्यक्ति सुख चाहता है। सुख भोगो लेकिन याद रखो, वृक्ष जितना आकाश की ओर उठता है, उतना ही उसकी जड़ें जमीन के अंदर फैलती हैं। तभी वृक्ष मजबूती से टिकता है। भौतिक विकास जितना आवश्यक है, उतनी ही आध्यात्मिक यात्रा भी अनिवार्य है। नहीं तो विकास ऱ्हास बन जाएगा। जीवन में अनके विकृतियां आ जाएंगी। इसलिए विकास विवेक के प्रकाश में किया जाए, यह बहुत जरूरी है। विवेक के लिए अध्यात्म का मार्ग ही श्रेष्ठ है। कुछ देर के सकारात्मक विचार आपके पूरे दिन की नकारात्मक सोच दूर कर देते है। सकारात्मक विचार यानी प्रार्थना। जब कुछ देर की प्रार्थना दिन भर की नकारात्मक सोच दूर कर सकती है तो यदि प्रार्थना का समय बढ़ा दें तो सोचिए कितनी सकारात्मक बढ़ आएगी और कितने बढ़ेंगे सकारात्मक विचार।

संसारिक कर्मों के अलावा प्रार्थना मनुष्यों के जीवन की दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा मानी जाती रही है। कई रूपोंवाली प्रार्थना से आशय उस महाशक्ति की स्तुति से है जिसकी शक्ति के कारण प्रलय और सृजन सम्भव होता है। मौलिक होने के कारण प्राणियों का सृजन उस महाशक्ति की अद्भुत कृत्यों में से एक मानी जाती है।

प्रकृति रूपी इस महाशक्ति की स्तुति के कई तरीके हैं, जो मानवों द्वारा ईजाद किये गये हैं और कालांतर में जिसमें संशोधन होता रहा है। हालांकि, इस स्तुति का सर्वमान्य ध्येय आत्मा से एकाकार होना है। समय के साथ पाखंड और कुरीतियों ने प्रार्थना के तरीकों पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया है जिस कारण धर्म पर लोगों की आस्था में क्षरण हुआ है। इन तरीकों में द्रव्य से महाशक्ति को प्रभावित करने की कोशिश प्रमुख हैं।

प्रार्थना के समय मनुष्यों की मुद्रा और भाव अहम होते हैं। नि:स्वार्थ भाव से की गयी प्रार्थना कामना रहित होती है। ग्रंथों में कई ऐसी कहानियों का उल्लेख हैं जिससे स्तुति के दौरान होनेवाले मनोभाव का पता चलता है। मन की शांति और एकाग्रता के लिये प्रार्थना आवश्यक है। इससे चित्त प्रसन्न रहता है, लेकिन यह तभी सम्भव है जब प्रार्थना कामरहित मन से की गयी हो और जब प्रार्थना के ऊपर सांसारिक इच्छा हावी न हों।

प्रार्थना अगर मन से की जाए तो ईश्वर तक पहुंचती ही है। प्रार्थना यदि मन से की जाये, तो परमेश्वर हमारी पुकार अवश्य सुनते हैं, परंतु अक्सर हमारी प्रार्थना तब अपना पूरा असर नहीं डाल पाती है, जब उसमें भाव और पूर्ण निष्ठा की कमी होती है। प्रार्थना में भाषा का उतना महत्व नहीं है, जितना भाव का। प्रार्थना के साथ-साथ अपने कर्मों का लेखा-जोखा भी अवश्य करते रहें। तब जाकर बात बनती है। प्रार्थना में मन-मस्तिष्क की एकाग्रता के साथ-साथ समर्पण का भी विशेष महत्व है। सच्ची प्रार्थना वही कर पाते हैं, जिनका हृदय मंदिर पवित्र होता है। क्योंकि परमात्मा का निवास निर्मल मन में ही होता है। छल-कपट से जो दूर है, यों समझें कि वे परमात्मा के करीब हैं। प्रार्थना विनम्रता का प्रतीक है। वेदों में अनेकों प्रार्थनाएं निहित हैं। जब भी ईश की चरण शरण में जायें, उससे अभयता मांगे। मात्र शब्दों का खेल न खेलें, क्योंकि वह हमारे मन के भाव-कुभाव को भली-भांति जानता और समझता है। प्रार्थना वस्तुत: प्रेमोपासना की सर्वोत्तम विधि है। भगवान श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की प्रार्थना सुनकर चीर हरण के समय उसकी लाज रखी। वे भक्तों की आर्त पुकार सुनकर दौड़े-दौड़े चले आते हैं। जो सच्चा भक्त है, उसकी प्रार्थना सदैव यही रहती है कि हे प्रभो। मैं आपके ध्यान में हमेशा बना रहूं। आपकी कृपा हमेशा चाहिए, क्योंकि आप कृपा साध्य हैं, पुरुषार्थ साध्य नहीं। आप इंद्रियातीत हैं। कमी हमारी पुकार में है, आपके देने में नहीं।

प्रार्थना व ध्यान इंसान के लिए बहुत ही जरूरी हैं। प्रार्थना में भगवान आपकी बात सुनते हैं और ध्यान में आप भगवान की बात सुनते हैं।

एक बार मदर टेरेसा ने पारिवारिक प्रार्थना पर बल देते हुए कहा था, जो परिवार एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं वे हमेशा साथ रहते हैं। मां मरियम का स्मरण कराती प्रार्थना रोजरी माला परिवारों की महत्वपूर्ण पारिवारिक प्रार्थना है। इसलिए मां के दरबार से कभी कोई खाली हाथ नहीं लौटता है। ईसाई मत के कैथोलिक समुदाय के श्रद्धालुओं में मां मरियम की भक्ति ऊंचा स्थान रखती है।

माना जाता है कि रोजरी बुरी आत्माओं के विरुद्ध लड़ने का महान हथियार है। इसके द्वारा विश्व में सुख और समृद्धि की कामना की जाती है। बुरी आत्माओं से बचने के लिए रोजरी माला के जरिए असंख्य श्रद्धालु लगातार प्रार्थना करते रहते हैं। श्रद्धालु मानते हैं कि मां अपने भक्तों की प्रार्थनाएं कभी अनसुनी नहीं जाने देतीं। बच्चों के दुख और सुख में हमेशा उनके साथ रहती हैं। अतिपूजनीय और कृपालु मां मरियम अपने भक्तों की प्रार्थना सुनकर आशीर्वाद देती हैं। इस विनती की शुरुआत उस समय हुई जब माता मरियम ने अलग-अलग देशों में दर्शन देकर अपने भक्तों से रोजरी करने का निवेदन किया था। मां मरियम ने फातिमा, लू, वेलॉनकनी, माउंट मैरी जैसे कई पवित्र स्थलों पर दर्शन देकर रोजरी माला की प्रार्थना के द्वारा पापियों के हृदय परिवर्तन की ख्वाहिश पेश की थी ताकि वे ईश्वर में विश्वास कर एक अच्छे इंसान बन सकें। मां के इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए परम धर्मपीठ और चर्च के अधिकारियों ने रोजरी माला विनती को पवित्र धर्म विधियों की प्रार्थनाओं में प्रमुख स्थान प्रदान किया। तब से लेकर अब तक यह विश्वास के साथ बारंबार बोली जाती है।

बाइबिल के पवित्र सुसमाचारों में हुए घटनाक्रम, चमत्कारों, रहस्यों, प्रार्थनाओं और प्रभु यीशू के क्रियाकलापों को जोड़कर रोजरी माला के चार भेदों का रूप दिया गया है। ये चार भेद हैं- आनंद का भेद, दु:ख का भेद, ज्योति का भेद और महिमा का भेद। हर भेद में पांच रहस्य होते हैं। इन रहस्यों पर मनन करते हुए कैथोलिक समुदाय मां मरियर की भक्ति के जरिए प्रभु यीशु के जीवन पर ध्यान करता है। यह सरल सी प्रार्थना मां मरियम के माध्यम से लोगों को ईश्वर से जोड़ती है। बहुत से भक्त रोजरी माला को अपने गले और हाथ की कलाई में बांधते हैं ताकि मां का आशीष हमेशा उन पर बना रहे। इस पवित्र माला के द्वारा ईश्वरीय वरदानों का भंडार भक्तों के लिए खुल जाता है और कई प्रकार के कृपादानों से मां के जरिए ईश्वर अपने भक्तों की झोली में खुशियां भर देता है।

प्रार्थना हृदय का सहज अंकुरण है। जब दूसरे की मृत्यु का वरण करके उसे जीवन देने की चेतना जगे तब प्रभु प्रार्थना समझो। प्रार्थना दुनियाभर के कई लोगों के लिए रोजमर्रा की जिंदगी का एक हिस्सा है। यह हर दिन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रार्थना कई धर्मों और संस्कृतियों का अभिन्न अंग है। यह सहायता के लिए एक याचिका, कृतज्ञता की अभिव्यक्ति, पूजा करने का तौर तरीका और दूसरों के साथ सहभागिता प्राप्त करने का एक साधन है। प्रार्थना के कई अलग-अलग पुनरावृत्ति के साथ प्रार्थना के कार्य के घेरे में कई अनुष्ठान है। उनमें से सबसे प्रचलित है कि आँखों को बंद करना। कई लोगों के लिए तो प्रार्थना व्यक्तिगत है। प्रार्थना व्यक्ति और भगवान के साथ या किसी अन्य उच्च शक्तियों से आपस में बात करने का तरीका है। उस समय आंखें बंद कर लेते है ताकि आप किसी चीज से अवरुद्ध न हो और साथ ही उस प्रार्थना पर एकदम एकाग्रचित होकर अपना ध्यान आकर्षित कर सके। दूसरों के साथ सम्वाद करने के लिए अपनी आंखों का उपयोग करने के बजाय आप उन्हें बंद कर देते है और अपने विचारों को अंदर से बंद कर देते है। प्रार्थना भी तभी सफल होती है जब उसमें परहित का भाव हो। दो पहर प्रार्थना के लिए बहुत महत्वपूर्ण है एक सुबह और एक रात। इन दोनों समय में आप परमात्मा के बहुत समीप होते हो। भारत में तो प्रार्थना पर इतने प्रयोग हुए है कि दुनिया के और देशों में विज्ञान भी इसके प्रभाव को खोज नहीं पाया।

माता-पिता

माता-पिता का हाथ पकड़कर रखिए तो लोगों के पांव पकड़ने की कभी जरूरत नहीं पड़ेगी।

सभी नस्लों में मां को बहुत अहमियत दी गई है। इस्लाम में मां का बहुत ऊंचा दर्जा है। कुरान में कहा है हमने मनुष्य को अपने मां-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने की ताकीद की। उसकी मां ने उसे (पेट में) तकलीफ के साथ उठाए रखा और उसे तकलीफ के साथ जन्म भी दिया। उसके गर्भ में पलने और दूध छुड़ाने में तीस माह लग गए। मां के कदमों के नीचे जन्नत है। खुदा ने कहा इंसान को मां के बारे में कि वह उसके साथ नेक बर्ताव करे।

इंसानों में सबसे ज्यादा अच्छे बर्ताव का हकदार कौन है? इस पर जवाब दिया- तुम्हारी मां। उस व्यक्ति ने दोबारा वही सवाल किया। आपने फरमाया- तुम्हारी मां। उस व्यक्ति ने तीसरी बार फिर वही सवाल किया। इस बार भी आपने फरमाया कि तुम्हारी मां। उस व्यक्ति ने चौथी बार फिर भी यही सवाल किया। आपने कहा कि तुम्हारा पिता, यानी इस्लाम में मां को पिता से तीन गुना ज्यादा अहमियत दी गई है। इस्लाम में जन्म देनेवाली मां के साथ-साथ ही अपनी मां के साथ नेक बर्ताव करने और उसकी खिदमत करने का भी हुक्म दिया गया है।

भारत में मां को शक्ति का रूप माना गया है। हिन्दू धर्म में देवियों को मां कहकर पुकारा जाता है। धन की देवी लक्ष्मी, ज्ञान की देवी सरस्वती और शक्ति की देवी दुर्गा को माना जाता है। नवरात्रि में मां के विभिन्न स्वरूपों की पूजा-अर्चना का विधान है। वेदों में मां को पूजनीय कहा गया है। महर्षि मनु कहते हैं, सौ आचार्यों के बराबर एक पिता होता है और एक हजारा पिताओं से अधिक गौरवपूर्ण मां होती हे। तैतृयोपनिशद् में कहा गया है- मातृ देवो भव:। इसी तरह जब यक्ष ने युधिष्ठिर से सवाल किया कि भूमि से भारी कौन है तो उन्होंने जवाब दिया कि माता गुरुतरा भूमेरु यानी मां इस भूमि से भी कहीं अधिक भारी होती है। रामायण में श्रीराम कहते हैं- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी यानी जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। बौद्ध धर्म में महात्मा बुद्ध के स्त्री रूप में देवी तारा की महिमा का गुणगान किया जाता है।

यहूदियों में भी मां को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उनकी धार्मिक मान्यता के मुताबिक कुल ५५ पैगम्बर हुए हैं जिनमें सात महिलाएं थीं। ईसाइयों में मां को उच्च स्थान हासिल है। इस मजहब में यीशु की मां मदर मैरी को सर्वोपरि माना जाता है। गिरजाघरों में ईसा मसीह के अलावा मदर मैरी की प्रतिमाएं भी विराजमान रहती हैं। यूरोपीय देशों में मदरिंग संडे मनाया जाता है। चीन में दार्शनिक मेंग जाई की मां के जन्मदिन को मातृ दिवस के तौर पर मनाया जाता है, तो इजराहल में हेनेरिता जोल के जन्मदिवस को मातृ दिवस के रूप में मनाकर मां के प्रति सम्मान प्रकट किया जाता है। हेनेरिता ने जर्मन नाजियों से यहूदियों की रक्षा की थी। नेपाल में वैशाख के कृष्ण पक्ष में माता तीर्थ उत्सव मनाया जाता है। अमेरिका में मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाया जाता है। इस दिन मदर्स डे के लिए संघर्ष करनेवाली अन्ना जार्विस को अपनी मुहिम में कामयाबी मिली थी। इंडोनेशिया में २२ दिसंबर को मातृ दिवस मनाया जाता है। भारत में भी मदर्स डे पर उत्साह देखा जाता है।

पूरी दुनिया में मई माह के दूसरे रविवार को मनाये जानेवाले मदर्स डे का इतिहास भी रोचक है। प्राचीन यूनान में देवी देवताओं की माता रिया के सम्मान में बसंत ऋतु में विशेष उत्सव मनाया जाता है। रोम में देवी सिबेल माता के सम्मान में हिलेरिया नामक तीन दिवसीर्य पर्व मनाया जाता है। रोम की वीनस को देवी मां का दर्जा दिया जाता है। चीन, जापान में कुलनाम में सर्वप्रथम मां का नाम लिखने की परंपरा है।

दक्षिण यूरोप के नन्हें से देश माल्टा में प्राचीन देवी, मंदिर आज भी है। इंग्लैंड में १७ वीं सदी में मदरिंग संडे नाम से एक दिन तय है जिस दिन काम करनेवाले मजदूरों को परिजनों से मिलने विशेष अवकाश दिया जाता है। इस मौके पर मदरिंग केक बनाने का रिवाज है बदले में मां खूब आशीर्वाद देती है। युगोस्लाविया में मदर्स डे को स्थानीय भाषा में मातरित्से कहा जाता है।

मां बच्चे को नौ माह अपनी कोख में रखती है। प्रसव पीड़ा सहकर उसे इस संसार में लाती है। सारी सारी रात जागकर उसे सुख की नींद सुलाती हे। हम अनेक जन्म लेकर भी मां की कृतज्ञता प्रकट नहीं कर सकते। मां की ममता असीम है, अनंत है और अपरंपार है। मां और उसके बच्चों का रिश्ता अटूट है। मां बच्चे की पहली गुरु होती है। उसकी छांव तले पलकर ही बच्चा एक ताकतवर इंसान बनता है। हर व्यक्ति अपनी मां से भावनात्मक रूप से जुड़ा होता है। वो कितना ही बड़ा क्यों न हो जाए लेकिन अपनी मां के लिए वो हमेशा उसका छोटा-सा बच्चा ही रहता है। मां अपना सर्वस्व अपने बच्चों पर न्यौछावर करने के लिए हमेशा तत्पर रहती है। मां बनकर ही हर महिला खुद को पूर्ण मानती है।

कहते हैं कि एक व्यक्ति बहुत तेज घुड़सवारी करता था। एक दिन ईश्वर ने उस व्यक्ति से कहा कि अब ध्यान से घुड़सवारी किया करो। जब उस व्यक्ति ने इसकी वजह पूछी तो ईश्वर ने कहा कि अब तुम्हारे लिए दुआ मांगने वाली तुम्हारी मां जिंदा नहीं है। जब तक वो जिंदा रही, उसकी दुआएं तुम्हें बचाती रहीं मगर उन दुआओं का साया तुम्हारे सर से उठ चुका है। सच, मां इस दुनिया में बच्चों के लिए ईश्वर का ही प्रतिरूप है जिसकी दुआएं उसे हर बला से महफूज रखती हैं। मातृ शक्ति को शत शत नमन।

वह इस सुंदर धरा पर भगवान ने जो सर्वश्रेष्ठ रचना रची है वह मां है। ज्ञान का प्रथम पाठ हम मां से ही सीखते हैं इसीलिए नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था, कि मुझे किसी भी देश की माताओं के बारे में बता दें, मैं उस देश का भविष्य बता दूंगा। उसका मानना था कि एक स्कूल खोलने की बजाय एक माता को शिक्षित करना एक जैसा है। हमारे देश का इतिहास ममतामयी माताओं के वर्णन से भरा है। पौराणिक काल की पार्वती से लेकर त्रेतायुग की सीता, द्वापर की कुंती से लेकर त्रेतायुग की अहिल्या, कस्तूरबा जीजाबाई से लेकर मदर टेरेसा तक मातृत्व की अद्भुत मिसाल है। इसी तरह यशोदा एक ऐसा उदाहरण है जो कृष्ण को जन्म देनेवाली देवकी से बढ़कर है। इसीलिए इतिहासकारों ने मां के चरणों में स्वर्ग की कल्पना की है।

त्याग की मूर्ति मां के बलिदान को हम कभी भूल नहीं सकते। वह स्वयं भूखी रहती है, गीले में सोती है परंतु बच्चे को कष्ट नहीं होने देती। मां के इस ऋण से हम कभी मुक्त नहीं हो सकते। किसी ने क्या खूब कहा है कि जब खानेवाले पांच हो और रोटी चार हों तो, मुझे भूख नहीं है कहने वाली मां ही होती है। पुत्र कुपुत्र हो सकता है पर मां कभी कुमाता नहीं हो सकती। मां की कोई उपमा नहीं हो सकती क्योंकि हमारी कोई उप मां हो ही नहीं सकती। कहा गया है कि मां की ममत्व की बूंद अमृततुल्य होती है।

भोली, संवेदनशील मां के बारे में फिल्मकार फराह खान की राय है कि अच्छी मां बनने के लाखों तरीके हैं, लेकिन सर्वश्रेष्ठ मां बनने का एक भी तरीका नहीं है। हमारे सामाजिक ताने बाने में कई नयी परिभाषाएं गढ़नेवाली मां एक आत्मीयता की प्रतीक है, एक चमत्कारिक ताकत है। वह राष्ट्र की निर्मात्री है, सृष्टा है। तभी मधुर भंडारकर कहते हैं कि जवानी चली जाती है, प्यार कुम्हला जाता है, दोस्ती के पत्ते गिर जाते हैं किंतु मां की छिपी हुई उम्मीद इन सबको सह लेती है। मां की गोद शांति निकेतन है,वहां जो सुकून मिलता है वह कहीं नहीं मिल सकता। जीवन का पहला पाठ हम मां से ही सीखते हैं। इसीलिए सुंदर गीत है कि हे मां तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी कविगण कहते हैं कि भगवान हर जगह नहीं पहुंच सकते इसलिए उसने हर घर में मां भेज दी है। हमें वर्ष में एक दिन मातृत्व दिवस मनाकर इतिश्री नहीं

कर लेनी चाहिए बल्कि इसे संकल्प दिवस के रूप में पूरे वर्ष मनाना चाहिए।

मनुष्य की जिन्दगी में मां-बाप की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। हर व्यक्ति चाहे वो अमीर हो या गरीब, फकीर हो या बादशाह अपने माँ बाप की प्यार के साये में कुछ न कुछ थोड़ा वक्त तो जरूर गुजारता है। माँ-बाप अपनी संतान को बड़े शौक से शिक्षा व अनुभव देते है। अगर किसी समय बच्चा अस्वस्थ हो जाए तो वो बेचैन हो जाते है और अपनी हैसियत के अनुसार चिकित्सक हाकीम से इलाज करवाते है। बच्चा जब भी बहुत छोटा रहता है अपनी जरूरतों को मुंह से बोल भी नहीं सकता तब भी माँ बाप उसकी इशारों और हरकतों से पता लगा लेते हैं कि उसे किस चीज की आवश्यकता है और उसे फौरन देने की कोशिश करते है। माँ बच्चे की जरूरत के हिसाब से दो साल तक दूध पिलाती है वही बच्चा नौ माह तक अपनी माँ के गर्भ में रहता है। इस दरम्यान माँ कई तरह की तकलीफें सहती है। पैदाइश के वक्त माँ को बहुत तकलीफ सहनी पड़ती है लेकिन जब संतान बोलने और चलने फिरने के काबिल हो जाती है वहीं माँ बाप उसकी शिक्षा, संस्कार का इंतजाम करते है, अच्छे अच्छे स्कूल और कॉलेजों में पढ़ाने के लिए भेजते है। बच्चे की शिक्षा के लिए अपनी हैसियत से भी अधिक दिल खोलकर खर्च करते है ताकि उनकी संतान बेहतरीन मनुष्य बन सके और उस शिक्षा की रोशनी में अपनी जिंदगी को प्रकाशित कर सके। वर्तमान समय में माँ-बाप की बेइज्जती और अवज्ञा का बाजार गरम हो गया है जबकि माता-पिता संतान के अच्छे स्वरूप के हकदार है। मगर आज संतान के अच्छे बर्ताव के लिए तरसते है। आज बहुत से लोग अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। कितने ऐसे आदमी है जिनकी आमदनी अच्छी खासी है पर अपने माँ-बाप से काम करवाते है, जबकि वो काफी बूढ़े हो चुके है। उनके शरीर में ताकत नहीं रहती। कुछ माँ-बाप को तो इतना मजबूर कर दिया जाता है या ऐसी पृष्ठभूमि बनाई जाती है कि माँ-बाप को स्वयं संतान से दूर जाना पड़ता है या उन्हें दूर कर दिया जाता है। माता-पिता पर संतान का यह व्यवहार बहुत ही अशोभनीय है। वर्तमान समय में माता-पिता पर ध्यान भी कम दिया जाता है जहाँ तक कि उनके बीमारी का इलाज भी ठीक से नहीं कराया जाता जबकि वो ही माँ-बाप अपनी इस संतान के बीमार पड़ जाने पर रात-दिन जाग-जागकर एक कर देते है। उसकी हर जरूरत पर प्यार-मुहब्बत के साथ उसे देते है। माता-पिता संतान के लिए अच्छे से अच्छा कपड़ा, खाना एकत्रित करने में अपनी पूरी जिन्दगी लगा देते है। सेवा करना संतान का फर्ज है। वक्त निकालकर उनके पास बैठना, उनका खयाल रखना, दु:ख तकलीफ पूछना संतान का फर्ज है, क्योंकि माँ बाप अच्छे व्यवहार के हकदार है।

हमारे माता पिता उम्र भर मोमबत्ती की तरह जलते जलते सदैव हमारे जीवन में प्रकाश भरने की कोशिश करते हैं, पर हम उनके जीवन के आखिरी दौर में भी उन्हें प्यार और मान सम्मान नहीं दे सकते। इस दैहिक लोक में माता पिता ही परमात्मा के सच्चे रूप हैं। उनसे ही हमें जीवन मिलता है, वे ही हमारे प्रथम गुरु और सखा होते है और वही हमारा पालन पोषण करते हैं। हम इस जीवन में उनका ऋण किसी भी रूप में नहीं चुका सकते हैं। दुनिया में सभी का कर्ज चुकाया जा सकता है, पर मां का कर्ज कभी नहीं चुकाया जा सकता। बिना माता के देवता भी कुछ नहीं है। इस जगत में पिता का कर्ज चुकाया जा सकता है, गुरु का कर्ज चुकाया जा सकता है लेकिन माता का नहीं। माता जो हर पल अपने बच्चे के हित के लिए खड़ी रहती है। कहते हैं कि माता सर्वत्र है, कण-कण में हैं।

माता ऐसी होती है जो अपने बच्चे पर संकट नहीं आने देती। संकटों को दूर करती है इसलिए तो उसे जगत जननी दुर्गा कहते हैं। जगतमाता का विविध स्वरूप है।

प्रेरक प्रसंग

१) भविष्य के चक्कर में आज का सुख-चैन क्यों गंवाएं - किसी शहर में धर्मदत्त नाम का एक बड़ा सेठ था। वह हमेशा उदास रहता क्योंकि उसे अपनी भावी पीढ़ी की चिंता हरदम सताती रहती थी। एक बार भगवान महावीर उस शहर में आए। गंगा के तट पर उनका व्याख्यान हो रहा था। धर्मदत्त भी प्रवचन सुनने गया, लेकिन उसका मन कहीं ओर था। चेहरे पर चमक गायब थी।

महावीर ने उसकी उदासी की वजह पूछी तो सेठ बोला- प्रभु, मुझे किसी चीज की कमी नहीं है। लेकिन मुझे चिंता यह है कि मेरी आठवीं पीढ़ी का गुजर-बसर कैसे होगा? भगवान महावीर ने कहा, तुम्हारी यह चिंता मैं अभी दूर किए देता हूं। इसके लिए तुम्हें एक काम करना होगा। यहां एक आश्रम के पीछे झोपड़ी में एक मजदूर का परिवार रहता है। तुम उससे कहो कि वह अपनी जरूरत का आटा अपने पास रखकर बाकी तुम्हें दे दे। सेठ ने वैसा ही किया।

मजदूर की पत्नी एक हंडिया ले आई और उसे देते हुए बोली- ले जाओ भाई। मेरे पास इतना ही आटा है। सेठ ने कहा- नहीं- नहीं, तुम अपनी जरूरत का आटा रख लो, जो बचे उसे दे दो। वह बोली- अगर मैंने अपनी जरूरत का आटा रख लिया तो तुम्हें क्या दूंगी? मुझे जिसने आज दिया है, वह कल भी देगा। यह सुनकर सेठ आटा लिए बगैर लौट आया। उसने भगवान महावीर को सारी बात बता दी। भगवान महावीर बोले- सेठ, वह मजदूर स्त्री है जिसे कल की भी चिंता नहीं है और एक तुम हो कि अपनी आठवीं पीढ़ी की चिंता में खुद को गला रहे हो। आज जो सुख-चैन उपलब्ध है, उसे भी खो रहे हो। यह उपदेश सुनकर सेठ की आंखें खुल गईं। उस दिन से उसने चिंता करना छोड़ दी और खुशी खुशी वर्तमान का आनंद लेने में लग गया।

२) शरीर पर ध्यान देने के लिए आत्मा की उपेक्षा न करें - एक व्यक्ति जीवन के अंतिम दौर में था। उसने सोचा- कब्रिस्तान में कितनी कब्रें होती हैं और कैसे वहां मृतकों के लिए फूल रखे होते हैं। उन्हें मृतक कभी देख तक नहीं पाते। उसने तय किया, मरने से पहले यह जानूंगा कि मुझे कहां दफनाया जाएगा। मैं किस ताबूत में रखा जाऊंगा और मेरी कब्र पर किस तरह के फूल रखे जाएंगे? उसने अंतिम दो वर्ष स्वयं को दफनाने की जगह ढूंढ़ने में लगा दिए। वह कब्रिस्तान गया और वहां उसने वह स्थान चुन लिया जहां खुद को दफनाना चाहता था। उसने अपने लिए एक ताबूत भी चुन लिया। उसने सोचा- मेरी मृत्यु के बाद यही मेरा घर होगा। मैं खुश हूं कि मृत्यु से पहले मैंने इसे देख लिया। वह फूलों की दुकान पर गया और उसने उन फूलों को भी चुना जो वह अपनी कब्र पर रखवाना चाहता था।

उसे अभिमान था कि उसने उन फूलों को भी देख लिया था, जिन्हें कोई भी नहीं देख पाता। इसके बाद उसने अपने परिवार और मित्रों को अपनी अनेक निजी चीजें बांट दीं। अंत में अपने पुत्र को वसीयत सौंप दी और आखिरी सांस ले ली। उसने जीवन के अंतिम दो वर्ष भौतिक शरीर को मृत्यु के लिए तैयार करने में तो लगाए, पर अपनी आत्मा के लिए कुछ भी नहीं किया। हममें से अनेक इस व्यक्ति से अलग नहीं है।

३) एक पंथ, दो काज - बहुत समय पहले की बात है। रामपुर गांव में भोलू नाम का एक लकड़हारा रहता था। गांव में बाहर जहां उसकी झोपड़ी थी, वहां से कुछ दूरी पर ही घने जंगल की तरफ जानेवाला एक रास्ता था। भोलू उस रास्ते

से जंगल में दूर तक जाता और वहां से सूखी लकड़िया लाकर गांव में बेच देता।

रामपुर गांव में एक वैद्य जी भी थे। वे जड़ी-बूटियों से दवाइयां तैयार करके रोगियों को इलाज करते थे। पहले तो वे स्वयं जंगल में जाकर जड़ी बूटियां लाते थे, लेकिन उम्र ज्यादा हो जाने के कारण वे स्वयं जा नहीं पाते थे, इसलिए वे जड़ी-बूटियां शहर के एक बड़े पंसारी की दुकान से खरीदते थे। पंसारी उन्हें वे जड़ी बूटियां बड़े महंगे दामों पर देता था। कभी कभी आवश्यकतानुसार जड़ी-बूटियां मिलती भी नहीं थी।

भोलू लकड़हारा वैद्य जी को भी सूखी लकड़ियां कभी कभी देता था। एक बार जब भोलू उनको लकड़ियां देने गया तो उन्होंने पूछा- भोलू तुम ये लकड़ियां कहां से लाते हो?

भोलू ने कहा- महाराज, मैं तो ये लकड़ियां घने जंगल में खूब आगे जाकर एक सुखी नदी के पास उगे सुखे पेड़ों से तोड़ कर लाता हूं। कुछ इधर-उधर बिखरी लकड़ियां जलाने में अच्छी होती हैं और उनसे किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होता। हरे भरे पेड़ों से मैं लकड़ियां कभी नहीं काटता।

वैद्यजी बोले- यह तो तुम बहुत अच्छा करते हो। हरी लकड़ियां काटनी भी नहीं चाहिए। नहीं तो पेड़ खत्म हो जाएंगे और पेड़ खत्म होने से धीरे-धीरे जंगल खत्म हो जाएंगे, जिनसे हम सबको बड़ा नुकसान होगा।

आपने बिल्कुल ठीक कहा वैद्यजी- लकड़हारा बोला। वैद्यजी बोले- अच्छा यह तो ठीक है, क्या तुम मेरा एक काम कर सकते हो? लकड़हारा बोला- आज्ञा दीजिए।

वैद्यजी बोले- देखो जिस जगह से तुम सुखी लकड़ियां लाते हो, उससे कुछ दूरी पर ही एक तालाब है। उसके किनारे-किनारे कुछ जड़ी बूटियां उगती हैं, जो दवाइयां बनाने के काम आती हैं। अगर तुम वे जड़ी-बूटियां मुझे लाकर देते रहो तो मैं तुम्हें उनकी अच्छी कीमत दे दूंगा।

क्यों नहीं वैद्यजी, मुझे आप उन जड़ी-बूटियों की पहचान बता दीजिए। मैं उन्हें ढूंढकर लाता रहूंगा। मेरे लिए तो यह एक पंथ दो काज वाली बात होगी अर्थात मुझे एक कार्य से दोहरा लाभ होगा।

४) देने के आनंद का कोई जवाब नहीं - एक बार एक शिक्षक संपन्न परिवार से सम्बन्ध रखनेवाले एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे पड़े हैं जो संभवत: पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे जो अपना काम पूरा कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था।

शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, गुरुजी। क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा कर झाड़ियों के पीछे छिप जाएं, जब वह मजदूर इन्हें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा।

शिक्षक गंभीरता से बोले, किसी गरीब के साथ इस तरह का भद्दा मजाक करना ठीक नहीं है। क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिप कर देखें कि, इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है?

शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास की झाड़ियों में छुप गए।

मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों के पास आ गया। उसने जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी कठोर वस्तु का आभास हुआ। उसने जल्दी से जूता हाथ में लिया और देखा अन्दर कुछ सिक्के पड़े थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

वह सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें उलट-पलट कर देखने लगा।

काफी देर तक वह इधर-उधर देखता रहा, लेकिन दूर दूर तक उसे कोई नजर नहीं आया तो उस गरीब ने वे सिक्के अपनी जेब में डाल लिए। अब उसने दूसरा जूता उठाया। उसमें भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भाव-विभोर हो गया। उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसने हाथ जोड़ ऊपर देखते हुए कहा, हे प्रभु। समय पर सहायता करनेवाले उस अनजान सहायक का लाख-लाख धन्यवाद। उसकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी। मजदूर की बातें सुन शिष्य की आंखें भर आयीं। शिक्षक ने शिष्य से पूछा, क्या तुम्हारी मजाकवाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली? शिष्य बोला, आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूं जिन्हें मैं पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनंददायी है। देने का आनंद असीम है।

५) ऑटो वाले की सोच - एक व्यक्ति ऑटो से रेल्वे स्टेशन जा रहा था। ऑटोवाला बड़े आराम से ऑटो चला रहा था। एक कार अचानक ही पार्किंग से निकलकर रोड पर आ गई। ऑटो ड्राइवर ने तेजी से ब्रेक लगाया और कार, ऑटो से टकराते-टकराते बची। कार चला रहा आदमी गुस्से में ऑटो वाले को ही भला-बुरा कहने लगा जबकि गलती उसकी थी। ऑटो चालक एक सत्संगी (सकारात्मक विचार सुनने-सुनानेवाला) था। उसने कारवाले की बातों पर गुस्सा नहीं किया और क्षमा माँगते हुए आगे बढ़ गया।

ऑटो में बैठे व्यक्ति को कारवाले की हरकत पर गुस्सा आ रहा था और उसने ऑटो वाले से पूछा- तुमने उस कारवाले को बिना कुछ कहे ऐसे ही क्यों जाने दिया? उसने तुम्हें भला-बुरा कहा जबकि गलती तो उसकी थी। हमारी किस्मत अच्छी है, नहीं तो उसकी वजह से हम अभी अस्पताल में होते। ऑटो वाले ने कहा- साहब बहुत से लोग गार्बेज ट्रक की तरह होते हैं। वे बहुत सारा कूड़ा अपने दिमाग में भरे हुए चलते हैं। जिन चीजों की जीवन में कोई जरूरत नहीं होती उनको मेहनत करके जोड़ते रहते हैं जैसे क्रोध, घृणा, चिन्ता, निराशा आदि जब उनके दिमाग में इनका कूड़ा बहुत अधिक हो जाता है तो वे अपना बोझ हल्का करने के लिए इसे दूसरों पर फेंकने का मौका ढूंढ़ने लगते हैं। इसलिए मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूं और उन्हें दूर से ही मुस्कराकर अलविदा कह देता हूं, क्योंकि अगर उन जैसे लोगों द्वारा गिराया हुआ कूड़ा मैंने स्वीकार कर लिया तो मैं भी कूड़े का ट्रक बन जाऊंगा और अपने साथ-साथ आसपास के लोगों पर भी वह कूड़ा गिराता रहूंगा। सवारी ने कहा- अच्छा, तुम ऐसा सोचते हो? ऑटोवाले ने कहा- मैं सोचता हूं जिन्दगी बहुत खूबसूरत है इसलिए जो हमसे अच्छा व्यवहार करते हैं उन्हें धन्यवाद कहो और जो हमसे अच्छा व्यवहार नहीं करते उन्हें मुस्कुराकर माफ कर दो। सभी मानसिक रोगी केवल अस्पताल में ही नहीं रहते हैं, कुछ हमारे आसपास खुले में भी घूमते रहते हैं।

६) साधु के लिए कोई चोर न रहे - चोर भागने को था कि उस फकीर ने आकर दरवाजे पे रोक लिया और कहा कि ऐसी ज्यादती मत करो। वह कंबल ले जाओ; नहीं तो मन में सदा के लिये पीड़ा रह जाएगी कि तुम आये भी, खाली हाथ गये। कौन आता है अंधेरी रात में? और हम फकीरों के घर तो कभी कोई आता ही नहीं। तुमने तो हमें धनी होने का सम्मान दिया। अब तुम ऐसा न करो, जल्दी न करो; ले जाओ कंबल, अन्यथा मुझे बड़ी पीड़ा रह जाएगी और दुबारा आओ तो जरा

खबर कर देना, हम इंतजाम पहले से कर देंगे, कुछ मिलेगा जरूर। पता ही न हो तो हम भी क्या कर सकते हैं? ऐसे अतिथि की तरह मत आना, एक चिट्ठी डाल देना।

वह चोर तो घबड़ा गया था। घबड़ाहट में उसे कुछ सूझा नहीं, उसने सोचा, लो कंबल और यह आदमी तो कुछ आदमी जैसा मालूम नहीं पड़ता था। क्योंकि या तो पागल है या फिर किसी और जब वह कंबल ले के भागने लगा तो उस फकीर ने रोका कि देख भाई, दरवाजा अटका दे और ध्यान रख, कभी भी किसी के घर जाए, दरवाजा जब खोलते हो तो अटका के जाना चाहिए। उस चोर ने भी सोचा कि कहां के आदमी से पाला पड़ गया और जब वह दरवाजा अटकाने लगा तो उस फकीर ने कहा कि देख, धन्यवाद दे दे, पीछे काम पड़ेगा। हमने तुझे कंबल दिया, नाहक चोर क्यों बन रहा है? धन्यवाद दे दे, बात खत्म हो गयी।

७) अनुशासन का पुल - एक मठ में एक भिक्षु रहते थे। उनके पास बहुत सारी सिद्धियां थीं और लोग उनका बहुत सम्मान करते थे। उनको सम्मान से बड़ा कुछ न लगता था और अपनी इस जिन्दगी से वो संतुष्ट थे।

दोपहर को वो अपने शिष्यों के साथ ध्यान में मग्न थे। वहीं दूसरे शिष्य भूखे थे। तभी भिक्षु ने कहा कि क्या तुम भूखे हो? वह शिष्य बोला, अगर हम भूखे भी हों तो क्या? मठ के नियम के अनुसार दोपहर में भोजन नहीं कर सकते हैं।

भिक्षु बोले, तुम चिंता न करो, मेरे पास फल हैं। फल शिष्य को देकर भिक्षु वहां से चले गए। उसी मठ में एक वरिष्ठ भिक्षु थे, वह मठ के नियमों को लेकर जागरूक रहते थे। वह एक सिद्ध पुरुष थे, लेकिन ये बात उनके सिवाय और कोई नहीं जानता था। अगले दिन उन्होंने घोषणा की कि जिसने भी भूख के कारण मठ का नियम तोड़ा है, उसे मठ से निष्कासित किया जाता है। उनकी बात सुनकर भिक्षु ने अपना चोंगा उतारा और हमेशा के लिए उस मठ से चले गए। अनुशासन के बिना हमें सच्ची प्रगति नहीं मिल सकती। भिक्षु ने भी ऐसा ही किया। जीवन में जो सफलता मिलती है वह कठोर अनुशासन के कारण ही मिलती है।

८) इमारत घोटाला - एक सरकारी इमारत की मरम्मत के नाम पर हर साल काफी रुपये खर्च होता था। मरम्मत करनेवाले अधिकारी का स्थानांतरण हो गया और उसके स्थान पर दूसरा अधिकारी आया। नये अधिकारी के सामने इमारत मरम्मत की राशि मंजूर करने का मामला प्रस्तुत हुआ। उन्होंने इमारत की पुरानी फाइल बुलाई। अवलोकन करने पर पता चला कि पिछले आठ-दस वर्षों से उक्त इमारत की लगातार मरम्मत हो रही है। उन्होंने मौके पर जाकर इमारत की हालत देखनी चाही। अपने अधीनस्थ को साथ लेकर जीप से वे मौके पर गए तो क्या देखते हैं कि निर्धारित स्थान पर कहीं इमारत का पता नहीं है। उन्होंने अधीनस्थ की ओर देखा, उसका चेहरा सफेद हो गया था। वे अनुभवी थे, सब समझ गए। वहीं पर उन्होंने अधीनस्थ को आज्ञा दी कि इमारत की हालत बहुत खराब है। जन धन की हानि की आशंका को देखते हुए इसे शीघ्र तोड़ दिया जाए। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि कागज पर बनी उस इमारत को तोड़ दिया गया और उसको तोड़ने के बिल का भुगतान भी शीघ्र हो गया।

९) ध्यान रहे; ईमानदारी सबसे बड़ा गुण - यह कहानी है स्वभाव से बहुत ही अच्छे और ईमानदार लड़के मार्टिन की। उसके अच्छे व्यवहार के कारण ही सभी उस पर बेहद विश्वास करते थे। सभी उसकी तारीफ करते नहीं थकते। वह

कभी कोई चीज नहीं चुराता था। यहां तक कि रास्ते में पड़ी हुई कोई चीज भी उसे मिलती, तो वह उसके मालिक को ढूंढकर उस तक पहुंचाने की पूरी कोशिश करता था।

एक दिन की बात है, मार्टिन परीक्षा देने अपने स्कूल की ओर जा रहा था। स्कूल की गेट पर अचानक उसे याद आया कि वह अपना पेन तो घर पर ही भूल गया है। परीक्षा शुरु होने में कुछ ही समय बाकी बचा था। अब क्या करे। वह दौड़ा दौड़ा पास की एक दुकान में गया। उसने एक अच्छा-सा पेन चुना, लेकिन जब जेब में हाथ डाला तो उसे पता चला कि जेब में तो पैसे ही नहीं हैं। यह जानकर उसे बड़ा धक्का लगा। वह मन ही मन उदास हो गया। परीक्षा की चिंता उसे खाये जा रही थी। एक पल को उसके दिमाग में तब पेन को चुरा लेने का ख्याल आया जब दुकानदार कुछ सामान लाने अंदर गया हुआ था। तभी उसके अंतर्मन ने कहा, यह तो चोरी है। मन की आवाज सुनकर उसने पेन उठाने का ईरादा वहीं छोड़ दिया और फौरन अपने स्कूल की तरफ भागा। परीक्षा हॉल में पहुंचने पर जब उसने देखा कि अध्यापक उत्तर-पुस्तिका बांटने लगे हैं, तो वह और भी चिंतित हो गया। वह इसी चिंता में डूबा हुआ था तभी अध्यापक की नजर मार्टिन पर पड़ी। उन्होंने देखा कि मार्टिन बहुत उदास बैठा है।

उन्होंने मार्टिन से इस उदासी का कारण पूछा। तब मार्टिन ने पूरी बात बता दी। अध्यापक ने कहा, तुम दुखी मत हो, यह लो मेरा पेन और आराम से प्रश्नों के उत्तर लिखो। अब मार्टिन की खुशी का ठिकाना न रहा। परीक्षा पूरी होने के बाद खुशी-खुशी उसने उत्तर-पुस्तिका के साथ पेन लौटाना चाहा, तो अध्यापक ने यह कहते हुए पेन लेने से इनकार कर दिया कि ईमानदार व्यक्ति की सभी सहायता करते हैं। मैं प्रसन्न हूं कि तुमने विपरीत परिस्थिति में भी ईमानदारी का साथ नहीं छोड़ा। सत्यता या ईमानदारी ही सबसे बड़ा गुण है।

१०) मूर्ख को सीख देने का कोई फायदा नहीं होता - एक जंगल में एक पेड़ पर गौरेया का घोंसला था। एक दिन कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। ठंड से कांपते हुए तीन-चार बंदरों ने उसी पेड़ के नीचे आश्रय लिया। एक बंदर बोला- कहीं से आग तापने को मिले, तो ठंड दूर हो सकती है।

दूसरे बंदर ने सुझाया- देखो, यहां कितनी सूखी पत्तियां गिरी पड़ी हैं। इन्हें इकट्ठा कर हम ढेर लगाते हैं और फिर उसे सुलगाने का उपाय सोचते हैं।

बंदरों ने सूखी पत्तियों का ढेर बनाया और फिर गोल दायरे में बैठकर सोचने लगे कि ढेर को कैसे सुलगाया जाए। तभी एक बंदर की नजर दूर हवा में उड़ते एक जुगनू पर पड़ी और वह उछल पड़ा। उधर ही दौड़ता हुआ चिल्लाने लगा- देखो, हवा में चिनगारी उड़ रही है। इसे पकड़कर ढेर के नीचे रख कर फूंक मारने से आग सुलग जाएगी।

हां हां, कहते हुए बाकी बंदर भी उधर दौड़ने लगे। पेड़ पर अपने घोंसले में बैठी गौरेया यह सब देख रही थी। उससे चुप नहीं रहा गया। वह बोली- बंदर भाइयों, यह चिनगारी नहीं है। यह तो जुगनू है।

एक बंदर क्रोध से गौरेया की ओर देख कर गुर्राया- मूर्ख चिड़िया, चुपचाच घोंसले में दुबकी रह। हमें सिखाने चली है।

इस बीच एक बंदर उछल कर जुगनू को अपनी हथेलियों के बीच कटोरा बना कर कैद करने में सफल हो गया। जुगनू को ढेर के नीचे रख दिया गया और सारे बंदर लगे चारों ओर से ढेर में फूंक मारने।

गौरेया ने फिर सलाह दी- भाइयो। आप लोग गलती कर रहे हैं। जुगनू से आग नहीं सुलगेगी। दो पत्थरों को टकरा कर उससे चिनगारी पैदा करके आग सुलगाइए।

बंदरों ने गौरेया को घूरा। आग नहीं सुलगी, तो गौरेया फिर बोल उठी- भाइयो। आप मेरी सलाह मानिए। कम से कम दो सूखी लकड़ियों को आपस में रगड़ कर देखिए।

सारे बंदर आग न सुलगा पाने के कारण खीजे हुए थे। एक बंदर क्रोध से भरकर आगे बढ़ा और उसने गौरेया को पकड़ कर जोर से पेड़ के तने पर मारा। गौरेया फड़फड़ाती हुई नीचे गिरी और मर गई।

मूर्ख को सीख देने का कोई लाभ नहीं होता। उल्टे सीख देनेवाले को ही पछताना पड़ता है।

११) उत्साह भरे जीवन का सार तत्व - एक चौराहे पर तीन यात्री मिले। तीनों के कंधों पर दो दो झोले आगे पीछे लटके हुए थे। अपनी लंबी यात्रा से तीनों थके हुए थे, लेकिन एक यात्री के चेहरे पर प्रसन्नता और उत्साह का भाव था। दूसरा यात्री श्रम से थका हुआ तो था, लेकिन निराश या क्लांत नहीं था। पर तीसरा बेहद मुरझाया हुआ और दुखी दिख रहा था। तीनों एक पेड़ की छाया में बैठ कर सुस्ताने लगे। बातचीत होने लगी, कौन कहां से आ रहा है, कहां जा रहा है, किसकी झोली में क्या रखा है। एक यात्री ने बताया कि उसने अपनी पीछे की झोली में परिवार की और उपकारी मित्रों की भलाइयां भर रखी थी और सामने की झोली में उन लोगों के झोले में अपने मित्रों और हितैषियों की अच्छाइयां लटका रखी थी और उनकी बुराइयों की थैली पीछे लटका रखी थी, जिन्हें देख-देख कर अपनी सराहना करता और खुश होता फिर तीसरे यात्री से उन दोनों ने पूछा, तुम्हारे झोलों में क्या भरा है? आगे का झोला तो काफी भारी लगता है, पीछे का झोला हल्का है। उसने बताया कि उसने भी अच्छाइयों की थैली आगे और बुराइयों की थैली पीछे लटका रखी है, लेकिन पीछे की थैली में एक छेद है, इसलिए बुराइयां टिकती नहीं, एक-एक कर गिर जाती हैं और पीछे का वजन हल्का हो जाता है। जिस यात्रि ने आगे के झोले में अच्छाइयां और पीछे के झोले में बुराइयां भर रखी थीं, वह प्रसन्न था क्योंकि चलते समय उसकी नजर हमेशा अच्छाइयों पर ही पड़ती थी और बुराइयों को वह भूला रहता था। जिसके थैले में छेद था वह उत्साह से भी भरा रहता था, क्योंकि चलते समय वह आगे लटकी अच्छाइयों को तो देखता ही था, उस पर बुराइयों का वजन भी कम रहता था। वे रास्ते में धीरे-धीरे गिर जाती थी, लेकिन जिसने बुराइयों की थैली आगे और अच्छाइयों की थैली पीछे लटका रखी थी, वह हमेशा थका हुआ और निराश रहता था। यही जीवन यात्रा का सार तत्व है।

१२) एक तिनके ने जीवन को स्वर्ग बनाया तो दूसरे ने... - उस साल नदी में बाढ़ आ गई थी। दो छोटे से तिनके उसमें बहने लगे। उनमें से एक तिनका सीधा बहते आड़ा हो गया और नदी के तेज बहाव को रोकने की कोशिश करने लगा। चिल्लाकर कहने लगा, मैं इस नदी को रोक कर रहूंगा। कुछ भी हो जाए। मैं मरूं या बचूं, लेकिन नदी को रोककर ही दम लूंगा। उसकी हालत खराब हो गई। दर्द बढ़ने लगा। न उसके आड़े होने से नदी रुकनी थी और न रुकी।

दूसरा तिनका नदी में तैरते-तैरते सीधा हो गया। नदी का बहाव जहां था, उसी ओर अपने को बहने दिया। वह मजे में बहे जा रहा था। तिनका विजयी भाव के साथ सोचने लगा, मैं नदी को बहने में मदद कर रहा हूं और इसे इसकी मंजिल यानी सागर तक पहुंचा कर ही रहूंगा।

नदी के ऊपर उड़ रहे तोता और मैना ये सब देख रहे थे। तोते ने मैना से कहा, दोनों कितने बेवकूफ हैं। नदी को इनके वजूद का पता तक नहीं हैं और ये...।

मैना बोली, हां है तो, लेकिन फर्क है। एक ने जिन्दगी को नरक बना लिया है और दूसरे ने स्वर्ग।

१३) और महाराज सारी बातें समझ गए - एक बार राजा कृष्णदेवराय की मां बहुत बीमार पड़ गयी। उन्हें आम से बहुत प्यार था। इसलिए जीवन के अंतिम दिनों में वे आम दान करना चाहती थी। किंतु, कुछ दिनों बाद अंतिम इच्छा पूरी किये बिना ही उनकी मृत्यु हो गयी। मृत्यु के बाद राजा ने ब्राह्मणों से मां की अंतिम इच्छा के बारे में बताया। ब्राह्मण बोले, अंतिम इच्छा पूरी न होने पर उन्हें मुक्ति नहीं मिल सकती। उनकी आत्मा की शांति के लिए आपको सोने के आमों का दान करना पड़ेगा। अत: राजा ने कुछ ब्राह्मणों को भोजन के लिए बुलाया और सोने से बने आम दान में दिये। तेनाली राम तुरंत समझ गया कि ब्राह्मणों ने राजा की सरलता का फायदा उठाया है। अगले दिन तेनाली राम ने ब्राह्मणों को निमंत्रण पत्र भेजा। उसमें लिखा था कि तेनाली राम भी अपनी माता की पुण्यतिथि पर दान करना चाहता हैं। उनकी भी एक अधूरी इच्छा थी। सभी ब्राह्मण निश्चित दिन तेनाली राम के घर पहुंचे। ब्राह्मणों को स्वादिष्ट भोजन परोसा गया। भोजन करने के बाद सभी दान मिलने की प्रतीक्षा करने लगे। उन्होंने देखा कि तेनाली राम लोहे की सलाखें गर्म कर रहा है। तेनाली राम बोला, मेरी मां जोड़ों के दर्द से परेशान थी, मृत्यु के समय उन्हें तेज दर्द हो रहा था। इससे पहले कि मैं गर्म सलाखों से उनकी सिंकाई करता, वह मर चुकी थीं। अब उनकी आत्मा की शांति के लिए मुझे आपके साथ वैसा ही करना पड़ेगा। यह सुनकर ब्राह्मण बौखला गये। तेनाली राम बोला यदि सोने के आम से महाराज की मां की आत्मा को शांति मिल सकती है तो मैं मां की अंतिम इच्छा क्यों नहीं पूरी करूं। ब्राह्मण गिड़गिड़ाते हुए बोले, तेनाली राम, हमें क्षमा करो। हम वे सोने के आम तुम्हें दे देते हैं। बस तुम हमें जाने दो। तेनाली राम ने ब्राह्मणों को जाने दिया, परंतु एक लालची ब्राह्मण ने बात राजा को बता दी। यह सुनकर राजा क्रोधित हो गये और उन्होंने तेनाली राम को बुलाया। तुमने ब्राह्मणों से सोने के आम क्यों ले लिये? महाराज, यदि वे आपकी मां की पुण्यतिथि पर सोने के आम ग्रहण कर सकते हैं, तो मेरी मां की पुण्यतिथि पर लोहे की गर्म सलाखें क्यों नहीं झेल सकते। महाराज सारी बात समझ गये।

१४) कुत्तों ने राजा को दी स्वामीभक्ति की सीख - एक राजा था। उसने १० खूंखार जंगली कुत्ते पाल रखे थे, जिनका इस्तेमाल वह लोगों को उनके द्वारा की गई गलतियों पर मौत की सजा देने के लिए करता। एक बार कुछ ऐसा हुआ कि राजा के एक पुराने मंत्री से कोई गलती हो गई। अत: क्रोधित होकर राजा ने उसे शिकारी कुत्तों के सम्मुख फिंकवाने का आदेश दे डाला।

सजा दिए जाने से पूर्व राजा ने मंत्री से उसकी आखिरी इच्छा पूछी। मंत्री ने कहा- राजन। मैंने आज्ञाकारी सेवक के रूप में आपकी १० साल तक सेवा की है। मैं सजा पाने से पहले आप से १० दिनों की मोहलत चाहता हूं।

राजा ने उसकी बात मान ली। दस दिन बाद राजा के सैनिक मंत्री को पकड़ कर लाए और राजा का इशारा पाते ही उसे खूंखार कुत्तों के सामने फेंक दिया, परंतु यह क्या। कुत्ते मंत्री पर टूट पड़ने की बजाय अपनी पूंछ हिला-हिला कर मंत्री के ऊपर कूदने लगे और प्यार से उसके पैर चाटने लगे।

राजा आश्चर्य से यह सब देख रहा था। उसने मन ही मन सोचा कि आखिर इन खूंखार कुत्तों को क्या हो गया है। वे इस तरह क्यों व्यवहार कर रहे हैं। आखिरकार राजा से रहा नहीं गया।

उसने मंत्री से पूछा- ये क्या हो रहा है, ये कुत्ते तुम्हें काटने की बजाय तुम्हारे साथ खेल क्यों रहे हैं।

मंत्री बोला- राजन्। मैंने आपसे जो १० दिनों की मोहलत ली थी, उसका एक-एक क्षण मैंने इन बेजुबानों की सेवा करने में लगा दिया। मैं रोज इन कुत्तों को नहलाता, खाना खिलाता व हर तरह से उनका ध्यान रखता। ये कुत्ते खूंखार और जंगली होकर भी मेरी दस दिन की सेवा नहीं भुला पा रहे हैं, परंतु खेद है कि आप प्रजा के पालक होकर भी मेरी दस साल की स्वामिभक्ति भूल गए और मेरी एक छोटी सी त्रुटि पर इतनी बड़ी सजा सुना दी।

राजा को अपनी भूल का एहसास हो गया। उसने तत्काल मंत्री को आजाद करने का हुक्म दिया और आगे से ऐसी गलती न करने की सौगंध ली।

कई बार इस राजा की तरह हम भी किसी की बरसों की अच्छाई को उसकी एक पल की बुराई के आगे भुला देते हैं। यह कहानी हमें क्षमाशील होना सिखाती है। यह हमें सबक देती है कि हम किसी की हजार अच्छाइयों को उसकी एक बुराई के सामने छोटा न होने दें।

१५) हक की जिद - सर जगदीशचंद्र बोस आधुनिक भारत के प्रथम महान वैज्ञानिक थे जिन्होंने यह सिद्ध करके सारे संसार को आश्चर्य चकित कर दिया था कि पेड़ पौधों में भी संवेदना होती है। वह भी मानव तथा अन्य जीवधारियों के समान सुख-दु:ख, सर्दी-गर्मी, प्रकाश, शोर तथा अन्य उत्तेजनाओं का अनुभव करते हैं। वह बेहद स्वाभिमानी थे और कभी अपने स्वाभिमान पर समझौता नहीं करते थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय में भौतिकी का अध्ययन करने के बाद वह कैंब्रिज विश्वविद्यालय चले गए थे। सन १८८४ में वहां से स्नातक की उपाधि लेने के बाद वह भारत लौट आए। यहां प्रेजीडेंसी कॉलेज में भौतिकी के अध्यापक के पद पर उनकी नियुक्ति की गई। उस समय अंग्रेजों का शासन था तथा अंग्रेज भारतीयों को हेय दृष्टि से देखते थे। बड़ा भेदभाव किया जाता था। भारतीय प्रोफेसरों को यूरोपीय प्रोफेसरों की तुलना में मात्र दो तिहाई वेतन दिया जाता था। मगर बोस तो उस समय अस्थायी थे। इस वजह से उनका वेतन और कम था। उन्हें यूरोपीय प्रोफेसरों की तुलना में केवल आधा वेतन मिलना था। इससे बोस क्षुब्ध हो गए। उन्होंने कहा कि समान कार्य के लिए समान वेतन मिलना चाहिए। उनका कहना था, मैं वेतन लूंगा तो पूरा, वरना वेतन लूंगा ही नहीं। और सचमुच उन्होंने पूरे साल वेतन नहीं लिया। आर्थिक तंगी के कारण कलकत्ता का महंगा मकान छोड़कर उन्हें शहर से दूर रहना पड़ा। कलकत्ता में काम पर आने के लिए वे पत्नी सहित नाव लेकर हुगली नदी पार करते फिर पत्नी नाव लेकर वापस चली जातीं। शाम को बोस को लेने के लिए नाव लेकर फिर आती। इस सबके बावजूद वह अपने निश्चय से डिगे नहीं। उनके संकल्प से विवेकशील अंग्रेज पदाधिकारी शर्मिंदगी महसूस करते। आखिरकार बोस का संकल्प काम आया। कॉलेज प्रशासन ने उन्हें अंग्रेजों के बराबर वेतन देना स्वीकार कर लिया।

१६) राई की तलाश - एक बार गौतम बुद्ध के पास एक स्त्री आई और विलाप करने लगी कि सांप के काटने से उसके पुत्र की मृत्यु हो गई है। स्त्री अपने इकलौते पुत्र को जीवित कराने के लिए बार बार उनसे विनती कर रही थी। बुद्धदेव ने

उससे प्रश्न किया, क्या तुम नहीं जानती कि इस संसार में जो भी जन्म लेता है, उसका एक दिन अंत होना निश्चित है? उस स्त्री ने कहा, हां अच्छी तरह जानती हूं। मगर आप पहुंचे हुए महात्मा हैं और आपमें इतनी सामर्थ्य है कि आप मेरे पुत्र को जीवित कर सकते हैं, इसलिए मैं आपसे याचना कर रही हूं। मेरा वह बेटा मेरी इकलौती संतान थी। मैं आपसे उसके जीवन की आस लेकर आपके पास आई। मगर आप तो मुझे उपदेश दे रहे हैं। यदि आप उसे जीवित नहीं कर सकते, तो कृपया साफ-साफ बता दें। बुद्धदेव ने जान लिया कि पुत्र-वियोग में शोकमग्न इस स्त्री को समझाना कठिन है। उन्होंने कहा, ठीक है, मैं तेरे पुत्र के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूं। मगर तू इसके लिए किसी घर से राई लेकर आ, लेकिन इस बात का ध्यान रखना कि जिस घर से तू राई लेकर आए उस घर में कभी किसी की मृत्यु नहीं हुई हो। स्त्री के मन में आशा का संचार हुआ। उसने सोचा कि राई तो आसानी से प्राप्त हो जाएगी। लेकिन वह जिस घर में जाती, वहां यही जवाब मिलता कि उसके घर में किसी न किसी की मृत्यु अवश्य हुई है। वह बेचारी थक गई, लेकिन किसी भी घर से राई नहीं मिली। उसे इस बात की समझ आ रही थी कि मृत्यु अटल एवं अवश्यम्भावी है और उसका सामना किसी न किसी दिन हर एक को करना ही पड़ता है। थक हारकर वह बुद्धदेव के पास लौटी और उसने बताया कि उसे कोई ऐसा घर नहीं मिला जहां किसी की मृत्यु नहीं हुई हो। लेकिन अब अन्य लोगों के समान वह भी इस दुख का धैर्य और साहसपूर्वक सामना करेगी।

१७) संतों का एकांत - संतों की हर बात निराली होती है। एक बार की बात है। संत सफियान अपने अजीज मित्र संत फजील से मिलने गए। कई दिनों बाद हुई दोनों संतों की आत्मीय मुलाकात में कब दिन खत्म हुआ और कब रात सामने आकर खड़ी हो गई, पता ही नहीं चला। अध्यात्म चर्चा करते करते पूरी रात बीत गई। सुबह सूरज की लाली फैली तो सफियान चलने के लिए उठे और संतुष्टि से पूर्ण स्वर में बोले- आज की रात मेरी सब रातों में सबसे अच्छी रही और इस महफिल को तो यादों के पिटारे में बिल्कुल भी नहीं रखा जा सकता। सफियान हैरान रह गए और हैरत से पूछ बैठे-यह कैसे, जरा खुलकर बताइए। फजील समझाते हुए बोले- मेरे भाई, तमाम रात तुम इस फिक्र में रहे कि कोई ऐसी बात करो, जो मुझे पसंद आए और वह मेरे लिए यादगार लम्हा बन जाए। दूसरी ओर, मैं इस फिक्र में था कि तुम मेरे मेहमान बनकर आए हो तो मेरे मुंह से कोई अनहोनी बात ना निकल जाए। मेरी जुबान पर भी काबू रहे और मैं आपकी पसंदीदा बातें ही करूं। हम दोनों ही एक दूसरे की पसंदगी की फिक्र में खुदा से लापरवाह रहे। उसको एक पल भी याद ना किया। इससे अच्छा तो यही रहता कि हम एकांत में रहते। तब कम से कम अपने खुदा को याद तो करते। मुझे ऐसा एकांत पसंद है जहां कोई मेरे और ऊपरवाले के बीच में खलल न डाले और जहां मैं किसी की झूठी प्रशंसा में अपना समय व्यतीत न करूं। मैं यह भी नहीं चाहता कि कोई मुझे अपनी प्रशंसा से खुदाई दर्जा दे। इसलिए कहता हूं मेरे भाई, हम संतों के लिए एकांत ही सबसे अच्छा है जहां हम अपने खुदा से सीधे संपर्क में रह सकते हैं।

१८) उस्ताद को सुकून - अबू सईद और हसन खिरकानी दो चोटी के सूफी संत हुए हैं। एक बार की बात है, दोनों ने आपस में तय किया कि क्यों न वह अपनी आंतरिक अवस्थाओं को एक-दूसरे से बदल लें। अबू सईद उम्र में काफी छोटे थे, मगर इल्म में बहुत हद तक हसन खिरकानी के नजदीक थे। जब आंतरिक अवस्थाएं बदलने का समय आया तो दोनों एक दूसरे के गले लग गए। गले लगने से उनकी आंतरिक अवस्थाएं एक दूसरे से बदल गईं। इसके बाद दोनों अपने

अपने घर लौटे। कुछ ही देर में अबू सईद पर जैसे मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। पूरी रात अबू सईद बेतहाशा रोते रहे। एक भी पल के लिए उनकी आंख नहीं लगी। पूरी रात वह घुटनों पर सिर रखकर खूब रोए। उन्हें लगा कि संसार की सारी तकलीफ उनके दामन में आ गई है और वह जार-जार रोते रहे। वहीं दूसरी तरफ हसन खिरकानी बड़े सुकून से लेटे हुए ईश्वर का नाम लेते रहे। पूरी रात मजे में कटी। अगली सुबह उनके दरवाजे पर अबू सईद फिर खड़े मिलते हैं और रोते हुए कहते हैं कि ऐ। हसन खिरकानी, अपनी इस अवस्था को वापस ले लो। मेरा गला भर आ रहा है। मैं दुख से रात भर नहीं सो पाया। आपके जैसा कोई नहीं है जो संसार के सभी दुख को खुद में समेट ईश्वर को याद कर पाए। आप हमारे उस्ताद हैं। दोनों ने अपनी अवस्थाएं फिर बदलीं और जाते हुए अबू सईद ने हसन की दहलीज को चूम लिया और उस्ताद कह दिया। हसन ने भी उस दहलीज को चारों तरफ से चुनवाकर कहा कि यह बड़ी पाक जगह है, इसे अबू सईद ने चूमा है। ईश्वर से मैंने अपने से बेहतर शिष्य मांगा था, उसने अबू सईद को दिया है। इनकी इज्जत करो। इसकी रूह में खुशबू है। सदियों से बेचैने मेरी रूह को सईद ने कल सुकून दिया है। इस तरह एक शिष्य अपने उस्ताद के साथ अमर हो गया।

१९) असुविधा से आविष्कार - एडविन कॉक्स बर्तन बेचनेवाला सेल्समैन था। वह विभिन्न तरह के बर्तन बेचा करता था। उस समय बर्तन दुकानों पर कम ही देखने को मिलते थे, इसलिए लोग सेल्समैन से बर्तन खरीद लिया करते थे। एडविन की खास बात यह थी कि वह ग्राहकों की सलाहों या शिकायतों को बड़ी गंभीरता से लेता था। एक दिन जब वह बर्तन बेचने निकला तो एक वृद्धा इंतजार करती हुई मिली। उसने कॉक्स से एक कड़ाही खरीदी थी। वह बोली, बर्तन तो बहुत अच्छा है, लेकिन खाना बनाने के बाद उस बर्तन को धोने में मुश्किल होती है। उसमें से चिकनाई निकलती ही नहीं। तुम कुछ ऐसा क्यों नहीं ढूंढते जिससे कि बर्तनों को आराम से साफ किया जा सके? एडविन सोच में पड़ गया। उसे वृद्धा की यह असुविधा बड़ी वास्तविक लगी। लौटकर वह ऐसी वस्तु ढूंढ़ने में लग गया जिससे बर्तनों को साफ करने में आसानी हो और ग्राहकों की यह दिक्कत दूर हो। अचानक उसकी नजर स्टील की जाली पर गई। उसने उस जाली में साबुन का घोल लगाया और उसे सुखा दिया। इसके कुछ देर बाद उसने चिकने बर्तन को उसकी सहायता से साफ किया तो बर्तन अच्छी तरह साफ हो गया। यह देखकर कॉक्स खुशी से उछल पड़ा। अब उसने बर्तनों के साथ ऐसी कई जालियां रख लीं और बर्तन खरीदने वालों को उन जालियों से बर्तन साफ करने के लिए कहा। इसके बाद तो जैसे चमत्कार हो गया। जालियों के साथ उसके बर्तन धड़ाधड़ बिकने लगे। एक समय ऐसा भी आया कि बर्तन कम बिकते और बर्तन साफ करनेवाली जालियां अधिक बिकतीं। यह देखकर कॉक्स ने बर्तन बेचना बंद कर अपना अधिक समय बर्तन साफ करनेवाली जालियां बनाने में लगाना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में ये जालियां पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गईं। आज भी ये जालियां पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गईं। आज भी ये जालिंया बर्तन साफ करने में धड़ल्ले से इस्तेमाल की जाती हैं।

२०) संत की सीख - काशी के एक संत उज्जैन पहुंचे। उनकी प्रशंसा सुन उज्जैन के राजा उनका आशीर्वाद लेने आए। संत ने आशीर्वाद देते हुए कहा, सिपाही बन जाओ। यह बात राजा को अच्छी नहीं लगी। दूसरे दिन राज्य के प्रधान पंडित संत के पास पहुंचे। संत ने कहा, अज्ञानी बन जाओ। पंडित नाराज होकर लौट आए। इसी तरह जब नगर सेठ आया तो संत ने आशीर्वाद दिया, सेवक बन जाओ। संत के आशीर्वाद की चर्चा राज दरबार में हुई। सभी ने कहा कि यह

संत नहीं, कोई धूर्त है। राजा ने संत को पकड़ कर लाने का आदेश दिया। संत को पकड़कर दरबार में लाया गया। राजा ने कहा, तुमने आशीर्वाद के बहाने सभी लोगों का अपमान किया है, इसलिए तुम्हें दंड दिया जाएगा। यह सुनकर संत हंस पड़े। राजा ने इसका कारण पूछा तो संत ने कहा, इस राज्य दरबार में क्या सभी मूर्ख हैं? ऐसे मूर्खों से राज्य को कौन बचाएगा। राजा ने कहा, क्या बकते हो? संत ने कहा, जिन कारणों से आप मुझे दंड दे रहे हैं, उन्हें किसी ने समझा ही नहीं। राजा का कर्म है, राज्य की सुरक्षा करना। जनता के सुख-दुख की हर वक्त चौकसी करना। सिपाही का काम भी रक्षा करना है, इसलिए मैंने आपको कहा था कि सिपाही बन जाओ। प्रधान पंडित ज्ञानी होता है। जिस व्यक्ति के पास ज्ञान हो, सब उसका सम्मान करते हैं जिससे वह अहंकारी हो जाता हे। पर यदि वह ज्ञानी होने के अहसास से बचा रहे तो अहंकार से भी बचा रह सकता है। इसलिए मैंने पंडित को अज्ञानी बनने को कहा था। नगर सेठ धनवान होता है। उसका कर्म है गरीबों की सेवा, इसलिए मैंने उसे सेवक बनने का आशीर्वाद दिया था। अब आप ही बताइए कि मैं हंसू या रोऊं? संत की बातें सुन राजदरबार में मौजूद सभी लोगों की आंखें खुल गई। राजा ने संत से क्षमा याचना की।

२१) मंजिल की राह - स्वामी विवेकानंद से मिलने एक व्यक्ति आया। उसके चेहरे पर दुख और पीड़ा के भाव साफ झलक रहे थे। स्वामी जी को देखते ही वह उनके पैरों पर गिर गया और कहने लगा, स्वामीजी। मैं बहुत दुखी हूं। मैं मेहनत में कोई कमी नहीं छोड़ता, इसके बावजूद कभी भी सफल नहीं हो पाया। स्वामी जी ने पल भर में उसकी परेशानियों को समझ लिया। उन्होंने अपना छोटा सा पालतू कुत्ता उस व्यक्ति को सौंपा और कहा, तुम कुछ दूर मेरे इस कुत्ते को सैर करा लाओ फिर मैं तुम्हारे सवालों के जवाब दूंगा। काफी देर तक वह व्यक्ति कुत्ते को लेकर स्वामी जी के पास लौटा तो उसके चेहरे पर थकान के कोई निशान नहीं थे। लगता नहीं था कि वह मेहनत करके आया है। मगर कुत्ता बुरी तरह से हांफ रहा था और थका हुआ लग रहा था। स्वामी जी ने उस व्यक्ति से पूछा, यह कुत्ता इतना हांफ क्यों रहा है? यह थका हुआ लग रहा है जबकि तुम पहले की तरह ही ताजा और साफ-सुथरे दिख रहे हो? उस व्यक्ति ने जवाब दिया, स्वामीजी। मैं तो सीधा-सीधा अपने रास्ते पर चल रहा था, पर यह कुत्ता तो दौड़ता ही रहा। यह गली के सभी कुत्तों के पीछे भागता और उनसे लड़कर फिर मेरे पास वापस आ जाता। हम दोनों ने एक समान रास्ता तय किया, पर इसने मेरे से कहीं ज्यादा दौड़ लगाई है, इसीलिए यह ज्यादा थक गया है। स्वामी जी मुस्कराए और कहा, यही तुम्हारे प्रश्नों का जवाब है। तुम मंजिल पर सीधे जाने के बजाय दूसरे लोगों के पीछे भागते रहते हो। उसमें तुम्हारी काफी ऊर्जा लगती है। रास्ता उतना ही तय होता है, पर तुम बुरी तरह थक जाते हो। स्वामी जी की बातें सुन उस आदमी की आंखें खुल गईं।

२२) बालक का हौसला - बात उस समय की है, जब भारत स्वतंत्र नहीं हुआ था। एक बालक के अंदर देश भक्ति कूट कूटकर भरी थी। वह उन लोगों की बराबर मदद करता था, जो आजादी के दीवाने थे और गुलामी की जंजीरें तोड़ने के लिए जी-जान से जुटे थे। उसकी मां ने अपने बेटे को देश भक्ति के रंग में रंगे देखा तो उसे बड़ी खुशी हुई। साथ ही उस मां के मन में यह डर भी समाया हुआ था कि कहीं उसका बेटा पुलिस के हाथ में पड़ जाने पर घबरा न जाए और उन लोगों के नाम पते न बता दे, जो छिपकर देश की आजादी के लिए काम कर रहे थे। एक दिन मां ने लड़के को अपना डर बताया तो उसने बड़ी दृढ़ता से कहा, मां। तुम बेफिक्र रहो। मैं घबराऊंगा नहीं। बालक

फिर भी बालक था। मां को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ और वह बोली, मैं तेरा इम्तहान लूंगी। इसके बाद मां ने एक दीया जलाया और कहा, इस पर अपनी हथेली रख दे। लड़का एक क्षण के लिए भी नहीं झिझका और वह अपनी परीक्षा देने के लिए तैयार हो गया। उसने फौरन अपनी हथेली जलती बत्ती की लौ के ऊपर कर दी। हथेली जलती रही, पर उस बालक के मुंह से उफ तक नहीं निकली। वह लगातार मुस्कराता रहा। बालक का हौसला देखकर मां का जी भर आया। उसने उसे सीने से लगा लिया और दिल खोलकर आशीर्वाद दिया। लड़का अपने काम में दोगुने उत्साह से जुट गया। आगे चलकर यही लड़का अशफाक उल्ला भारत का महान क्रांतिकारी बना। जब काकोरी केस में अशफाक उल्ला को फांसी की सजा मिली और उसके गले में रस्सी का फंदा डाला गया, तब वह ऐसे प्रसन्न था मानो उसके जीवन की सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई हो। वह हंसते हुए गाता था, हे मातृभूमि, तेरी सेवा किया करूंगा, फांसी मिले मुझे या हो जन्म-कैद मेरी, बंशी बजा-बजाकर तेरा भजन करूंगा।

२३) अनुशासन का पाठ - एक बार महात्मा गांधी और खान अब्दुल गफ्फार खान एक साथ ही जेल में थे। खान साहब और महात्मा गांधी की दोस्ती आध्यात्मिक स्तर की थी। जेल में महात्मा गांधी वहां के अनुशासन को अच्छी तरह मानते थे। वह जब कभी जेल में होते तो वहां के नियम-कायदे को भली भांति जानकर उसका पालन करते थे। खान साहब को यह बात कुछ अखरती थी। जब कभी जेल अधीक्षक या उसके समकक्ष का कोई अधिकारी आता तो महात्मा गांधी उठकर खड़े हो जाते और उनसे बातें करते थे। खान साहब को यह ठीक नहीं लगता, मगर करते क्या। एक दिन गांधीजी से उन्होंने मुस्कराते हुए बोल ही दिया कि हमें पता है कि आप अंग्रेज अधिकारियों के आने पर उठकर क्यों बात करते हैं। गांधीजी ने पूछा- क्यों भाई? वह बोले यही कि ये अधिकारी हमें और दूसरे कैदियों को सिर्फ अंग्रेजी या हिंदी का अखबार दे हैं और आपको गुजराती समेत कई जबानों की पत्रिकाएं और अखबार देते हैं। गांधीजी मुस्करा दिए। अगली सुबह फिर उनके सामने कई अखबार आए। गांधी जी ने सिर्फ अंग्रेजी और हिंदी का अखबार उठाया बाकी के लिए मना कर दिया। यह सिलसिला महीना भर चला। अंग्रेज अधिकारी फिर आया और गांधी जी उससे वैसे ही खड़े होकर बात करते रहे। तब खान साहब को लगा कि उन्होंने गलत कह दिया। अब खान साहब भी किसी अंग्रेज अधिकारी के आने पर उससे खड़े होकर बात करने लगे। एक दिन गांधीजी ने कहा, हमें पता था, आपके व्यवहार में भी वह आ जाएगा जो हम सोचते हैं, इसलिए उस दिन कहना ठीक नहीं लगा। आप अहिंसा में हमसे बहुत आगे निकल चुके हैं। हो सके तो जहां रहिए वहां के अनुशासन को मानिए ताकि दूसरों को तकलीफ न हो। उनको हम अपने मूल व्यवहार से ही सही रास्ते पर ला पाएंगे। बदला लेकर या दुत्कार कर नहीं।

२४) सेवा की सार्थकता - पुराने जमाने की बात है। टिकरी के राजा सुंदर सिंह के नगर से कुछ दूर एक गांव के मंदिर में संत गौरीबाई रहती थीं। वह ईश्वर की आराधना से समय निकालकर गांववालों की मदद करती थी। गांववाले भी उनके प्रति अत्यंत श्रद्धा रखते थे और उन्हें प्यार से गौरी माई बुलाते थे। उनकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैली हुई थी। जब राजा सुंदर सिंह ने उनके बारे में सुना तो वह उनसे मिलने जा पहुंचे। गौरीबाई के दर्शन कर और उनकी बातें सुनकर वह बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सोचा कि संत को कुछ भेंट करना चाहिए और गौरीबाई को पचास हजार स्वर्ण मुद्राएं दीं। पहले तो गौरीबाई

ने उन्हें लेने से मना कर दिया पर राजा के बार बार अनुरोध करने पर उन्हें स्वीकार तो कर लिया, मगर गरीबों में बांट देने को कहा। राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, ये मुद्राएं आपके लिए हैं। इन पर तो आपका अधिकार है। इस पर उन्होंने मुस्कराकर कहा, राजन्, आप ठीक कहते हैं। इन मुद्राओं पर मेरा अधिकार है, लेकिन मुझ पर तो इन गांव वालों का अधिकार है। मैं तो इनकी सेवक हूं, इसलिए मुझसे पहले इन पर गांव वालों का हक बनता है। इस पर राजा ने कहा, आप धन्य हैं। फिर भी जीवन निर्वाह के लिए आपकी कुछ तो आवश्यकताएं हैं। गौरीबाई ने कहा, राजन्, आप मेरी चिंता न करें। मैं इनकी सेवा करती हूं और ये हजारों गांव वाले मुझ अकिंचन का ख्याल रखते हैं। फिर मुझे भला क्या आवश्यकता होगी जिसकी पूर्ति न हो सके। मैं तो बस गांववालों की तकलीफों को दूर करना चाहती हूं, उन्हें सुख में देखना चाहती हूं। इनके सुख में ही मेरा सुख भी है। इसलिए ये मुद्राएं सही जगह जा रही हैं। आपका दान भी सफल हो रहा है। संत गौरीबाई की इस बात का राजा पर इतना असर हुआ कि उन्होंने भी गरीबों की सेवा का व्रत ले लिया।

२५) बातों बातों में - थॉमस अल्वा एडीसन दिन रात नए प्रयोगों में लगे रहते थे। उस समय दूरसंचार के साधनों का विकास नहीं हुआ था। बात पहुंचाने के लिए बस चिट्ठी-पत्री ही होती थी। ऐसे में एडीसन की प्रयोगशाला कागजों से भरी रहती थी। एक दिन उन्हें पत्र से नए आविष्कार की खबर किसी को भेजनी थी। कुछ सोचते-सोचते उन्होंने पत्र लिफाफे में रखा और गोंद लगाकर बंद कर दिया। मगर गोंद हाथ में लगी रह गई, जिससे उनकी एकाग्रता भंग हो गई। उन्हें बड़ा गुस्सा आया। खुद से उन्होंने पूछा, क्या कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं खोजी जा सकती जिससे कि लिफाफे को बंद करते समय हाथ में गोंद न लगे? फिर क्या था, वे लग गए इस सवाल का जवाब खोजने में। उन्होंने सारे लिफाफों को मेज पर बिखरा दिया और उनमें अनेक तरह के प्रयोग करने लगे। कुछ ही देर में उनका सहायक वहां आया। मेज पर लिफाफों को फैला देख वह समझ गया कि एडीसन किसी नए आविष्कार की प्रक्रिया में हैं। तभी एडीसन सहायक से बोले, तुम एक कागज पर गोंद लगाकर उस कागज को सुखा दो। जब कागज पर लगी गोंद सूख जाए तो मुझे बताना। सहायक ने ऐसा ही किया। जब गोंद सूख गईं तो उसने वह कागज एडीसन के हाथ में थमा दिया। एडीसन ने कागज पर सूखी गोंद पर थोड़ा सा पानी लगाकर उसे नम कर दिया तो वह कागज फिर से चिपकने लगा। इस प्रक्रिया में हाथ पर गोंद भी नहीं लगी। यह देखकर एडीसन उछलकर बोले, आखिरकार लिफाफे को चिपकाना आसान हुआ, और हाथ भी गंदा नहीं हुआ। इसके बाद से तो सारी डाक टिकट व लिफाफे ऐसे ही बनने लगे। आज भी डाक टिकट व लिफाफे पर सूखी गोंद ही होती है जिसे जरा से पानी की सहायता से चिपकाया जा सकता है। एडीसन ऐसे ही बातों बातों में मानव जीवन को थोड़ा आसान बनाते चलते थे।

२६) परिश्रम की उड़ान - हॉवर्ड ह्यूज एक दुस्साहसी विमानचालक थे। सन १९२९ में शेयर बाजार के लुढ़कने के बाद उन्होंने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में उतरने की सोची। जब लोगों को पता चला तो लोग बोले, मि. हॉवर्ड, फिल्म निर्माण विमान नहीं है जिसे आप अपनी योग्यता से चला सको, इसमें भाग्य प्रमुख होता है। यह सुनकर हॉवर्ड मुस्कराकर बोले, जहां परिश्रम होता है, वहां भाग्य स्वयं खिंचा चला आता है। फिल्म निर्माण में उन्होंने मेहनत और लगन से काम किया और वे उसमें सफल रहे। मगर सन १९३५ में उनके मन में विमान से फिर से जुड़ने की भावनाएं बलवती हो उठीं। उन्हें

अहसास हो गया कि उनका पहला प्रेम विमान ही है, जिसके बगैर वह नहीं रह सकते। उन्होंने एयरक्राफ्ट कंपनी शुरू करने का निर्णय लिया। यह सुनकर कई लोगों ने उन पर तंज कसते हुए कहा, हॉवर्ड, हर जगह परिश्रम काम नहीं आता। एयरक्राफ्ट कंपनी के लिए किस्मत का धनी होना बहुत जरूरी है। इस पर भी हॉवर्ड मुस्कराकर बोले, जब सकारात्मक दृष्टिकोण हो, मेहनत की कमी न हो तो सफलता को एक न एक दिन आना ही होता है और मैं एयरक्राफ्ट कंपनी का निर्माण करने के बाद इसमें भी बुलंदियों तक पहुंचकर दिखाऊंगा। फिर आप भी उन्हीं में शामिल होंगे जो मुझे बधाई देने या मुझसे मिलने के लिए लाइन में प्रतीक्षा कर रहे होंगे। आखिरकार हॉवर्ड ह्यूज ने रात-दिन परिश्रम कर ह्यूज एयरक्राफ्ट कंपनी का निर्माण कर ही लिया। अथक मेहनत के कारण कुछ ही समय में वे विमानों के सरताज के रूप में स्थापित हो गए। एक दिन ऐसा भी आया जब वे सब लोग वास्तव में लाइन में लगकर उन्हें बधाई देने और मिलने के लिए बेताब खड़े थे। उस दिन हॉवर्ड ह्यूज सबसे सहजता से मिले और बस एक ही वाक्य बोले, जहां परिश्रम होता है, वहां सब संभव हो जाता है।

२७) कृतज्ञता की भावना - घटना सन १८७४ की है। पोलैंड निवासी दुनिया के मशहूर संगीतकार पेड्रेवस्की अमेरिका की यात्रा पर थे। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य संगीत आयोजनों में हिस्सा लेना था। उनके कार्यक्रम का आयोजन कौन कराएगा, इसे लेकर हर बार स्पर्धा रहती थी। इस बार उन्होंने एक साधारण लुहार युवक को यह जिम्मेदारी दी ताकि इसी बहाने उसकी कुछ मदद हो जाए। लेकिन प्रतिद्वंद्वियों की साजिश के कारण बहुत ही कम टिकट बिके। समापन के बाद युवक संगीतकार पेड्रेवस्की के कार्यक्रम की फीस देने आया। सामान्यत: पेड्रेवस्की के हर कार्यक्रम में आठ-दस हजार डॉलर इकट्ठा हो जाते थे। इसमें से २००० डॉलर तक आयोजक को मिल जाते थे। लेकिन इस बार मात्र तीन हजार डॉलर ही इकट्ठा हो पाए। युवक ने टिकट बिकने से जो तीन हजार डॉलर मिले उसे पेड्रेवस्की के आगे रख दिए। वयोवृद्ध संगीतकार पेड्रेवस्की ने पूछा, हॉल का किराया कैसे चुकाओगे? निराश युवक बोला, किसी तरह परिश्रम कर कुछ वर्षों में चुका दूंगा। पेड्रेवस्की को तो उस युवक की मदद करनी थी। वह बोले, निराश मत हो। यह राशि भी ले जाओ। हॉल का किराया चुका दो और नया धंधा शुरू करो। वह युवक अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें धन्यवाद देकर चला गया। समय ने पलटा खाया। वही युवक हर्बर्ट हूवर अमेरिका का ३१वां राष्ट्रपति बना। १९३० की विश्वव्यापी मंदी में जब यूरोपीय राष्ट्र अमेरिका का ऋण नहीं चुका पा रहे थे, तब राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर ने पोलैंड के संगीतकार पेड्रेवस्की को याद कर दस करोड़ डॉलर की राहत राशि पोलैंड सहित अन्य राष्ट्रों को प्रदान की। हूबर को इस कार्य के लिए याद किया जाता है। लेकिन उन्होंने बड़ी विनम्रता पूर्वक़ एक ही बात कही, मैं आज जो भी हूं उन ख्यातिलब्ध संगीतकार पेड्रेवस्की के कारण हूं। मैंने तो महज ऋण चुकाया है।

२८) अभिवादन का प्रभाव - एक आदमी बर्फ बनानेवाली कंपनी में काम करता था। एक दिन कारखाना बंद होने से पहले अकेला फ्रिज करनेवाले कमरे का चक्कर लगाने गया तो गलती से दरवाजा बंद हो गया और वह अंदर बर्फ वाले हिस्से में फंस गया। छुट्टी का वक्त था और लोग घर जा रहे थे। किसी ने भी ध्यान नहीं दिया कि कोई अंदर फंस गया है। वह समझ गया कि दो तीन घंटे बाद उसका शरीर बर्फ बन जाएगा। अब जब मौत सामने नजर आने लगी तो भगवान को सच्चे मन से याद करने लगा। प्रभु मुझे यहां से बाहर निकालो। मैं पूरे जीवन आपके इस उपकार को याद रखूंगा और

इतना कहते कहते उसकी आंखों से आंसू निकलने लगे। एक घंटा ही गुजरा था कि अचानक फ्रिजर रूम में खट खट की आवाज हुई। दरवाजा खुला चौकीदार भागता हुआ आया। उस आदमी को उठाकर बाहर निकाला और गर्म हीटर के पास ले गया। उसकी हालत कुछ देर बाद ठीक हुई तो उसने चौकीदार से पूछा, आप अंदर कैसे आए? चौकीदार बोला, साहब मैं बीस साल से यहां काम कर रहा हूं। इस कारखाने में काम करते हुए हर रोज सैकड़ों मजदूर और ऑफिसर कारखाने में आते-जाते हैं। लेकिन आप उन लोगों में से हो, जो जब भी कारखाने में आते हो तो मुझसे हंसकर अभिवादन करते हो। ऐसे ही निकलते हुए आपका अभिवादन करना मेरी सारे दिन की थकावट दूर कर देता है। जबकि अक्सर लोग मेरे पास से यूं गुजर जाते हैं जैसे मैं हूं ही नहीं। आज हर दिन की तरह मैंने आपका आते हुए अभिवादन तो सुना, लेकिन जब वापसी में ज्यादा देर हो गई तो मैं आपको तलाश करने चल पड़ा कि कहीं आप किसी मुश्किल में ना फंसे हो। वह आदमी हैरान हो गया कि किसी को हंसकर अभिवादन करने जैसे छोटे काम की वजह से आज उसकी जान बच गई।

२९) सही का चुनाव - एक बड़ा बुद्धिमान बादशाह था। उसको एक नौकर की जरूरत थी। जब नौकर रखना था तो परीक्षण जरूरी था तो उसने अनेक लोगों को बुलाया। क्योंकि नौकर बहुत काम देनेवाला होता है लेकिन आदमी बहुत खतरनाक भी होता है। कोई खतरनाक आदमी न आ जाए इसके लिए भी परीक्षण जरूरी था। बादशाह को एक तरकीब सूझी, उसने उपस्थित लोगों में से तीन को सामने खड़ा कर कहा, बताओ, इत्तफाक से मेरी दाढ़ी में और तुम्हारी दाढ़ी में एक साथ आग लग जाए तो तुम क्या करोगे? पहला तत्काल बोल उठा, हुजूर। आपकी दाढ़ी की आग तत्काल बुझा दूंगा। अपनी दाढ़ी की आग की चिंता ही नहीं करूंगा। दूसरा बोला, जहांपनाह। पहले मैं अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा और फिर आपकी दाढ़ी की चिंता करूंगा। तीसरा बोला, हुजूर। एक हाथ से आपकी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा और दूसरे हाथ से अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा। बादशाह ने तीनों व्यक्तियों के उत्तर सुनकर कहा, पहला आदमी अव्यावहारिक है। दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो कठिन समय आने पर अपनी बात न सोचकर दूसरे की सोचता हो, अपनी नहीं बल्कि दूसरे की चिंता करे। इसलिए यह आदमी या तो झूठा है या अज्ञानी। दोनों ही स्थितियों में वह रखने लायक नहीं है। ऐसा व्यक्ति अपनी बात से लुभा तो लेता है, किंतु आखिर में उसे धोखा देता है। दूसरा आदमी स्वार्थी है। स्वार्थी आदमी किसी का भला नहीं करता। वह खुदगर्ज होता है। वह सदा अपनी ही बात सोचता है, अपना ही भला करता है। वह आदमी भी खतरनाक होता है। आखिर में बादशाह ने कहा, तीसरा आदमी न अव्यावहारिक है और न स्वार्थी। वह व्यवहार के धरातल पर जीता है। इस तरह बादशाह ने सही व्यक्ति का चयन कर उस तीसरे व्यक्ति को नौकरी दे दी और बाकी दोनों को विदा कर दिया।

३०) राजा का स्वभाव - राजा रणजीत सिंह के बारे में ऐसा माना जाता था कि वह जनता की नब्ज जानते हैं, आम आदमी का दुख दर्द समझते हैं। रणजीत सिंह हमेशा जनता की तकलीफों को दूर करने के लिए व्याकुल भी रहते थे। एक बार की बात है, उनके दरबार में एक विदेशी व्यापारी आया। वह व्यापारी अपनी खूबसूरत सजावटी सामान के लिए सभी रजवाड़ों में प्रसिद्ध था। रणजीत सिंह के दरबार में भी उसे उतनी ही इज्जत मिली, जितनी सब जगह मिलती थी। रणजीत सिंह ने उसे अपने साथ लाया सामान दिखाने को कहा। वह बड़े ही गर्व के साथ लाए हुए शीशे के नायाब नाजुक झाड़

फानूस राजा के सामने दिखाने लगे। उनमें इस कदर चमक थी कि दरबारी वाह-वाह करने लगे। व्यापारी ने राजा से कहा कि ये आपकी शान में चार चांद देंगे। तभी राजा रणजीत सिंह ने अपने एक सिपाही को इशारा किया और उसने इन झाड़ फानूस को ऊपर से नीचे फेंका। पूरी कांच से बनी झाड़ टूट कर बिखर गई। तब राजा ने व्यापारी से पूछा कि अब इसका क्या दाम है? व्यापारी ने मायूसी से कहा कि अब इसका क्या मोल, अब तो यह कूड़ा भरा है। तब राजा ने कहा जनाब हम जमीन के जिस हिस्से के राजा हैं, वह अभी इतना अमीर नहीं है कि ऐसी चीजें खरीदे, जिसका टूटने के बाद कोई मोल न हो। मेरी जनता कम से कम में गुजर करती है, उसका राजा कैसे ऐसे शौक पाल सकता है? यह समझ लीजिए कि राजा के स्वभाव में जनता दिखनी चाहिए। जाइए और किसी अमीर राज्य में अपने कांच के टुकड़ों को बेचिए। यहां अभी हमारी जरूरतें दूसरी हैं। वैसे ये बातें हर राजा, हर लीडर को अपनानी चाहिए। हमारे स्वभाव में अंतिम व्यक्ति की जरूरतें झलकनी चाहिए। कहीं हमारे वैभव के उन्माद में किसी की दर्द की चीखें दम न तोड़ दें।

३१) जमीन और आसमान - एक बार मशहूर खगोलशास्त्री अस ख्वारिज्मी गांव की सैर पर निकले। उस वक्त वह तारों को देखकर जीवन की गति बता दिया करते थे। तारों की गणना में उस वक्त उनका कोई मुकाबला नहीं था और चारों तरफ उनकी इस विद्या के चर्चे थे। रात में वह तारों से भरा आसमान देखते चले जा रहे थे कि पैरों के नीचे गहरा गड्ढा आया और वह उसमें गिर गए। रात में काफी देर तक वे उसी गढ्ढे में पड़े पड़े मदद के लिए चीखते रहे, पर दूर दूर तक कोई सुननेवाला नहीं था। काफी देर तक चीखने चिल्लाने के बाद एक बुढ़िया आई और उसने इन्हें नीचे गिरे देखा। वह अनपढ़ बुढ़िया बहुत जद्दोजहद के बाद इन्हें निकाल पाई। बाहर निकलते ही अल ख्वारिज्मी ने बुढ़िया को धन्यवाद दिया। बुढ़िया मुस्कुराई और आगे बढ़ गई। तब इन्होंने उससे पूछा कि आपने हमें पहचाना नहीं? हम मशहूर ज्योतिषी भी हैं। तारों को देखकर आपकी जिंदगी के बारे में बता सकते हैं। आपने हमारी मदद की है इसलिए हम कृतज्ञता वश अपने इस हुनर से आपको आनेवाला कल बता दें। तब बुढ़िया ने पलट कर कहा जिसे जमीन के गड्ढों के बारे में न पता हो वह क्या खाक जानता है? पहले जहां चल रहे हो उसे जान लो बाद में तारों को पढ़ना। बुढ़िया की बात उनके दिल में लग गई क्योंकि यह सच था। जब जमीन का नहीं पता तो आसमान को जानकर क्या करेंगे? वह लग गए पाताल की खोज में और दुनिया में सबसे ज्यादा नाम भूगर्भशास्त्री के रूप में कमाया। जिस दिन हम सच को जान लेते हैं, उसी दिन दुनिया को आसान करने की गांठ खुलने लगती हैं। हम सबको अपने गर्व के बिना सीखने में लगना चाहिए। किसी भी इंसान की एक बात हमारी दिशा बदल सकती है अगर उसमें सच्चाई हो। जैसे उस बूढ़ी औरत ने अल ख्वारिज्मी की दिशा बदल दी।

३२) एक समय की बात है। एक किसान ने अपने पड़ोसी की खूब निंदा की, अनर्गल बातें उसके बारे में बोलीं।

बोलने के बाद उसे लगा कि उसने कुछ ज्यादा ही कह दिया, गलत कर दिया। वह एक विद्वान के पास गया और बोला, मैंने अपने पड़ोसी की निंदा में बहुत उल्टी-सीधी बातें कर दी हैं, अब उन बातों को वापस लूं?

विद्वान ने वहां बिखरे हुए पक्षियों के पंख इकट्ठे करके दिए और कहा कि शहर के चौराहे पर डालकर आ जाओ। जब वापस आ गया तो विद्वान ने कहा, अब जाओ और इन पंखों को वापस इकट्ठा करके ले आओं।

किसान गया लेकिन चौराहे पर एक भी पंख नहीं मिला। सब हवा में तितर-बितर हो चुके थे। किसान खाली हाथ विद्वान के पास लौट आया। विद्वान ने कहा, यही जीवन का विज्ञान है कि जैसे पंखों को इकट्ठा करना मुश्किल है, वैसे ही बोली हुई वाणी को लौटाना हमारे हाथ में नहीं है। जिस प्रकार एक बार कमान से निकला तीर वापस कमान में नहीं लौटता, ठीक उसी प्रकार एक बार मुंह से निकले हुए शब्द कभी वापस नहीं लौटाए जा सकते।

३३) सम्राट की इच्छा - सम्राट बिम्बिसार को सत्य का स्वरूप जानने की इच्छा हुई। उन्होंने भगवान महावीर से कहा- भगवन, मनुष्य को दुख से मुक्ति दिलानेवाले सत्य को मैं जानना चाहता हूं। सत्य को मैं प्राप्त करना चाहता हूं। उसे प्राप्त करने के लिए मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब देने के लिए मैं तत्पर हूं। कृपया आप मुझे उचित मार्ग दिखाएं सम्राट की बात सुनकर भगवान महावीर को लगा कि दुनिया को जीतनेवाला सम्राट सत्य को भी उसी भांति जीतना चाहता है। अहंकार के वशीभूत वह सत्य को भी क्रय की वस्तु मान रहा है और उसे खरीदना चाहता हैं। उन्होंने विम्बिसार से कहा- सम्राट, सत्य को प्राप्त करने के लिए पहले आपको सामयिक का फल प्राप्त करना होगा। अपने राज्य के पुण्य श्रावक से आप सामयिक का फल प्राप्त कीजिए। उसके सहारे सत्य और मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं। बिम्बिसार सामयिक फल का अर्थ नहीं जानते थे। वे पुण्य श्रावक के पास गए और उन्होंने उनसे कहा- श्रावक श्रेष्ठ, मैं याचक बनकर आपके पास आया हूं। मैं सत्य को जानना चाहता हूं। मुझे सामयिक फल दीजिए। उसके लिए आप जो मूल्य मांगोगे मैं दूंगा। श्रावक ने कहा- महाराज। सामयिक फल कोई किसी को नहीं दे सकता। उसे तो खुद ही प्राप्त करना पड़ता है। अपने मन से राग-द्वेष हटाने का ही दूसरा नाम है सामयिक फल। उसे तो आपको खुद ही प्राप्त करना होगा। उसे मैं दान भी नहीं कर सकता। सत्य को न खरीदा जा सकता है, न उसे दान या भिक्षा के द्वारा पाया जा सकता है और न ही उस पर आक्रमण करके विजय प्राप्त की जा सकती है। श्रावक ने उन्हें बताया, राजन्। शून्य के द्वार से ही सत्य का आगमन होता है और अहंकार जब शून्य होगा तभी सत्य का आगमन होगा। सम्राट बिम्बिसार को अपनी गलती का अहसास हो गया।

३४) युवक और महात्मा - दुख से परेशान एक युवक महात्मा के चरणों में उपस्थित हुआ। महात्मा के पूछने पर उसने बताया- मेरे पिता मुझे बहुत प्रेम करते थे। उनकी मृत्यु ने मुझे अकेला और असहाय कर दिया। महात्मा ने कहा- भाई। इसमें दुख की क्या बात है, इस संसार में जो भी आता है उसको एक दिन जाना ही पड़ता है। युवक बोला- मेरी यही चिंता है कि मेरे पिताजी की सद्गति हुई कि नहीं? पुत्र होने के नाते उनकी सद्गति कराना मेरा कर्त्तव्य है, इसीलिए आपकी शरण में आया हूं। आप पहुंचे हुए सिद्ध पुरुष हैं, आप अवश्य मेरी सहायता करेंगे। महात्मा ने समझाया- भाई, जैसे उन्होंने कर्म किए वैसे ही उनको गति मिल गई, अब तुम्हें चिंतित होने की जरूरत नहीं। परंतु युवक अपनी बात पर अड़ा रहा। आखिर में महात्मा ने युवक से कहा- जाओ और दो घड़े लेकर आओ। एक घी से भरा हुआ दूसरा कंकड़ों से भरा, फिर मैं तुम्हारे पिताजी की सद्गति करता हूं। युवक दोनों घड़े ले आया। महात्मा उसे नदी तट पर लेकर गए और दोनों घड़ों को नदी में फेंकने का आदेश दिया। युवक ने दोनों घड़े नदी में फेंक दिए। जैसे ही दोनों घड़े टूटे, कंकड़ नदी में समा गए और घी पानी के ऊपर तैरने लगा। महात्मा ने कहा- देखते क्या हो? कंकड़ पानी में डूब गए हैं। उन्हें पानी में तैरा दो।

महात्मन कंकड़ तो भारी होते हैं, वो तो डूबेंगे ही। युवक ने विनम्रता से उत्तर दिया। महात्मा ने कहा- चलो कोई बात नहीं, ऐसा करो घी को डुबो दो। युवक बोला- ये कैसे संभव है? घी को भला कैसे डुबाया जा सकता है? महात्मा ने कहा- भले आदमी, जब तुम कंकड़ों को तैरा नहीं सकते और घी को डुबा नहीं सकते तो फिर मैं तुम्हारे पिता की सद्गति या दुर्गति कैसे कर सकता हूं? हर व्यक्ति की गति उसके हाथ में है। अच्छे कर्म पर अच्छी गति मिलेगी, बुरे कर्म पर दुर्गति मिलेगी।

३५) हाथों की शोभा - एक बार महान कवि माघ अपने घर में बैठे एक रचना लिखने में तल्लीन थे। एक गरीब ब्राह्मण उनके पास आया और बोला, आपसे एक आशा लेकर आया हूं। मेरी एक कन्या है। वह जवान हो गई है। उसके विवाह की व्यवस्था करनी है, किंतु मेरे पास कुछ भी नहीं है। आपकी उदारमना प्रकृति की चर्चाएं दूर दूर हैं। आपकी कृपा हो जाए तो मेरी कन्या का भाग्य बन जाएगा। माघ स्वयं बहुत ही गरीब थे। वह सोचने लगे, गरीब ब्राह्मण को क्या दिया जाए? देने के लिए भी तो कुछ नहीं है। क्या इसे खाली हाथ वापस भेजना होगा? यह सोचते-सोचते उनकी दृष्टि किनारे सोई हुई पत्नी पर पड़ी। उसके हाथों में सोने के कंगन चमक रहे थे। संपत्ति के नाम पर यही उसकी जमा-पूंजी थी। माघ ने सोचा, कौन जाने मांगने पर दे या न दे। सोई हुई है, यह अच्छा अवसर है, क्यों न एक कंगन चुपचाप निकाल लिया जाए। जैसे ही माघ कंगन निकालने लगे, पत्नी की नींद टूट गई और उसने पूछा, आप क्यों कंगन निकालना चाहते है? माघ बोले, गरीब ब्राह्मण द्वार पर बैठा है। बड़ी आशा लेकर आया है। उसे अपनी युवा पुत्री का विवाह करना है। घर में कुछ और देने को है नहीं। तुम्हें इसलिए नहीं जगाया कि कहीं तुम कंगन देने से इनकार न कर दो। पत्नी बोली, मुझे आपके साथ रहते इतने वर्ष हो गए, किंतु आज तक आप मुझे पहचान न पाए। आप तो एक ही कंगन ले जाने की सोच रहे थे, लेकिन आप मेरा सर्वस्व भी ले जाएं तो भी मैं प्रसन्न होऊंगी। पत्नी का इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा कि वह पति के साथ मानव कल्याण के काम आती रहे। यह कहकर माघ की पत्नी ने अपने दोनों कंगन बाहर बैठे ब्राह्मण को दे दिए। माघ और उनकी पत्नी की उदारता से प्रभावित वह ब्राह्मण आंख में आंसू लिए वहां से चल पड़ा। दरअसल हाथों की शोभा दान देने में हैं, कंगन से नहीं।

३६) हालात से संघर्ष - एक नर्सिंग होम में एक बच्ची का जन्म हुआ। जब डॉक्टर ने उस बच्ची को देखा तो पाया कि वह बहुत ही कमजोर और मूक-बधिर है। डॉक्टर ने उसकी मां से कहा- आपकी बच्ची बहुत ही कमजोर है, मैं आपका दुख समझ सकता हूं लेकिन आपको साहस रखना होगा। आंखों में आंसू लिए मां ने पूछा- क्या कभी मेरी बच्ची ठीक नहीं हो पाएगी? क्या अब वो ज्यादा दिन नहीं जी पाएगी? उस मां का दिल टूट चुका था और अभी उसकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि डॉक्टर बीच में बोल पड़ा- आपकी बच्ची जीवित तो रहेगी लेकिन न वो कभी देख पाएगी और न ही कभी सुन पाएगी। यह सुनकर मां चौंक गई और बोली- क्या मेरी बच्ची अंधी और बहरी है। मेरी बेटी का क्या होगा? कमरे से बाहर जाते वक्त डॉक्टर ने अपने आपसे बड़बड़ाते हुए कहा- यह बहुत ही पीड़ादायक केस है, मैंने आज तक अपनी जिंदगी में इस तरह का केस नहीं देखा और हो सकता है कि इस बच्ची की मौत भी हो जाए। मगर बच्ची जैसे-जैसे बड़ी होती गई अपने हालात से जूझना सीखती गई। उसने हिम्मत न हारी और सीखने की कोशिश जारी रखी। थोड़ा बड़ी होने पर अपने स्पर्श और सूंघने की शक्ति के प्रयोग से कठोर मेहनत की बदौलत उसने बोलना-लिखना सीख लिया। समय के

साथ उसके संघर्ष की यह अनोखी कहानी लोगों में प्रसिद्ध हो गई और उन्हें दुनिया भर के लोगों को संबोधित और प्रेरित करने के लिए बुलाया जाने लगा। उन्होंने हाईस्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की और कई प्रेरक पुस्तकें भी लिखीं। वह हर उस इंसान के लिए प्रेरणा बनी जो जन्मजात कमियां होने के बावजूद जीवन में कुछ करना चाहता हैं, कुछ बनना चाहता है। अपनी लगन और मेहनत की बदौलत वह दुनिया की प्रेरक हस्तियों में शामिल होकर हेलेन केलर के नाम से प्रसिद्ध हुई।

३७) पैसे का सदुपयोग - बेंजामिन फ्रैंकलिन ने अपने एक धनी मित्र की मेज पर सोने की कुछ गिन्नियां रखते हुए कहा, यह लीजिए अपनी रकम वापस। धनी मित्र ने पूछा यह क्या है? फ्रैंकलिन ने कहा, मैंने जो रकम आपसे ली थी, वह वापस कर रहा हूं। धनी मित्र को कुछ याद नहीं था। फ्रैंकलिन ने बताया मैंने एक प्रेस से समाचार-पत्र छापने का काम प्रारंभ किया था, अचानक ही अस्वस्थ हो जाने से मेरा काम ठप हो गया था और उस समय मैंने आपसे यह रकम ली थी। अब वह राशि लौटाने आया हूं। आप ने समय पर जो सहायता की, उसका परिणाम यह हुआ कि अखबार दोबारा प्रकाशित हो रहा है। मैं ही उसका संपादकीय कार्य करता हूं। ग्राहकों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। आर्थिक दृष्टि से मैं अब निश्चिंत हूं। अपनी इस गिन्नी को आप संभाल लें। बेंजामिन ने जब विस्तार से स्थिति स्पष्ट की तो उसे याद आ गया। लेकिन उसने कहा, यह तो ठीक है कि आप मुझसे राशि ले गए थे, परंतु उसे वापस लौटाना तो तय नहीं हुआ था। उस समय आप कठिनाई में थे, इसलिए आपकी सहायता करना मैंने अपना कर्तव्य समझा था। जब फ्रैंकलिन ने जोर दिया तो उने मित्र ने कहा, मेरी ओर से आप यह रकम आप अपने पास रखें। कभी कोई कष्ट में आपके पास आए तो यह उसे दे दें और उससे आप भी वापस न लें। वह भी इसे आगे किसी की सहायता के लिए दे दे। यह क्रम चलता रहे तो कितना अच्छा हो। कुछ सोचकर फ्रैंकलिन ने वे गिन्नियां अपने पास रख लीं और वैसा ही किया जैसा उनके मित्र ने कहा था। उन्हें समझ आ गया कि सामसाजिक जीवन में मानवीय संवेदना से आनंद की अनुभूति होती है। गिन्नियां अगर वापस रख ली जातीं तो वैसा आनंद नहीं दे पातीं जैसा आनंद वे जरूरतमंदों की जरूरत पूरी करते घूमती हुई दे रही थीं।

३८) सुख की खोज - एक संत को अपना भव्य आश्रम बनाने के लिए धन की जरूरत पड़ी। वह अपने शिष्य को साथ लेकर धन जुटाने के लिए लोगों के पास गए। घूमते-घूमते वह सूफी संत राबिया की कुटिया में पहुंचे। राबिया की कुटिया साधारण थी। किसी तरह की सुविधा नहीं थी वहां। फिर भी रात हो गई तो संत वहीं ठहर गए। राबिया ने उनके लिए खाना बनाया। खाने के बाद संत के सोने के लिए राबिया ने एक तख्त पर दरी बिछा दी और तकिया दे दिया। खुद वह जमीन पर एक टाट बिछा कर सो गई। थोड़ी ही देर में राबिया गहरी नींद सो गईं, लेकिन संत को नींद नहीं आ रही थी। वह दरी पर सोने के आदी नहीं थे। वह हमेशा मोटे गद्दे पर सोते थे। संत सोचने लगे कि जमीन पर टाट बिछा कर सोने के बावजूद राबिया को गहरी नींद आ गई और उन्हें तख्त पर दरी के बिछौने पर भी नींद क्यों नहीं आई। यह बात उन्हें देर तक मथती रही। सुबह जल्दी उठकर राबिया ने अपने हाथ से कुटिया की सफाई की और चिड़ियों को दाना खिलाया। संत ने पूछा, राबिया, तुमने मेरे लिए अच्छा बिछौना बिछाया। फिर भी मुझे नींद नहीं आई जबकि तुम्हें जमीन पर गहरी नींद आ गई। इसका कारण क्या है? राबिया बोलीं, गुरुदेव, जब मैं सोती हूं तो मुझे पता नहीं होता कि मेरी पीठ के नीचे गद्दा है या टाट। उस समय मुझे दिन भर किए गए सत्कर्मों का स्मरण करके ऐसा अद्भुत आनंद मिलता है कि मैं अपना सुख दुख

सब भूलकर परम पिता की गोद में सो जाती हूं। इसलिए मुझे गहरी नींद आती है। संत ने कहा, मैं अपने सुख के लिए धन एकत्रित करने निकला था। यहां आकर मुझे मालूम हुआ कि संसार का सुख भव्य आश्रम में नहीं, बल्कि इस कुटिया में है। फिर उन्होंने सारा एकत्रित धन गरीबी में बांट दिया और एक सामान्य सी कुटिया में रहने लगे।

३९) अपने आप में रहना - यूनानी तत्ववेत्ता डायोजनीज से किसी अजनबी व्यक्ति ने पूछा, धर्म क्या है? डायोजनीज ने कहा, ऐसे धर्म की व्याख्या कैसे की जा सकती है? अजनबी ने कहा, मैं बहुत जल्दी में हूं इसीलिए आप पांच मिनट में धर्म की व्याख्या कर दीजिए। डायोजनीज बोला, तुम जल्दी में हो, वैसे मैं भी जल्दी में हूं। इतने कम समय में धर्म को समझना मुश्किल है, ऐसा करो तुम अपना पता मुझे लिख कर दे दो तो मैं धर्म की लिखित व्याख्या तुम तक पहुंचा दूंगा। अनजबी व्यक्ति ने कागज और पेन निकाला, अपना पता लिखा और दे दिया। डायोजनीज ने पूछा- ये तुम्हारा स्थायी पता है? इस जगह को छोड़कर तुम कहीं जाते तो नहीं हो? अजनबी बोला- कभी-कभी बाहर चला जाता हूं, ऐसा करता हूं मैं वहां का पता भी आपको दे देता हूं। डायोजनीज ने कहा, ये मामला अस्थिरता का नहीं स्थिरता का है। तुम जहां स्थायी रूप से रहते हो, वहां का पता मिले बिना मैं तुमसे पत्र व्यवहार नहीं कर सकता। तुम मुझे उस जगह का पता बताओ जहां तुम हमेशा रहते हो। डायोजनीज के बार-बार एक ही बात कहने पर अजनबी झल्ला उठा। वह अपने दोनों हाथों झटकते हुए बोला, मैं यहां रहता हूं, कुछ बताना है तो बताओ, वरना चले जाओ। डायोजनीज ने मुस्कुरा कर कहा, बस यही तो धर्म है। धर्म का अर्थ है अपने आप में रहना। आत्मचिंतन करना, अपने आपको पहचानना। बस यही व्याख्या है धर्म की। आज हर कोई धर्म की बात कर रहा है, धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। असहिष्णुता का माहौल बना हुआ है। कर्म कांड को धर्म का दर्जा दे दिया गया है, पर वास्तविक धर्म हमारे अंदर ही छुपा हुआ है। जिस दिन हमने इस बात को समझ लिया धर्म का वास्तविक रूप हमारे समक्ष प्रकट हो जाएगा।

४०) दूसरों का गर्व - कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रफी अहमद किदवई से मिलने के लिए एक रात कोई आया। रात की वजह से उन्हें मिलने नहीं दिया जा रहा था। फिर भी उन्होंने इशारे से उस आगंतुक को मिलने के लिए बुलाया। रफी अहमद के व्यक्तिगत सचिव साथ थे। उन्होंने आगंतुक से बात करनी शुरू की, वह अपनी बेटी की शादी के लिए मंत्री से कुछ आर्थिक मदद चाहते थे। रफी अहमद ने अपने सचिव से कहा कि इन्हें जितनी जरूरत है वह दी जाए और जरूरत हो तो हमारे अपने खाते से दीजिए। सचिव रफी साहब से बोले कि जानते हैं यह आपके कितने बड़े विरोधी हैं? रफी साहब ने सख्त लहजे में कहा कि यह हमारे विपक्ष के नेता हैं। मेरी आलोचना करना इनका काम है। आप बस इनकी मदद कीजिए। सचिव ने कहा माना। उनके जाने के बाद रफी साहब ने सचिव को समझाया कि तुम्हें क्या लगता है मुझे नहीं पता कि यह हमारे कितने विरोधी हैं? मैं अच्छी तरह जानता हूं कि यह कांग्रेस की और व्यक्तिगत तौर पर मेरी भी जबरदस्त आलोचना करते हैं। फिर भी यह सोचो कि यह शख्स कितना जरूरतमंद रहा होगा कि उसे अपने दुश्मन से मांगना पड़ रहा है। उसके दिल से पूछना कि उसको कितनी तकलीफ हुई होगी यहां आने में? उसकी जरूरत ने उसे इतना दबा दिया कि शर्मिंदगी के बावजूद उसे यहां आना पड़ा। जिंदगी में किसी को नीचा नहीं समझना चाहिए। वक्त पर गुरूर कभी मत करना। आज वह मजबूर होकर यहां आया है, कल हम भी मजबूर हो सकते हैं। मैंने उससे आंखे भी

नहीं मिलाईं बल्कि आंख झुकाकर बात की कि कहीं उसकी शर्मिंदगी में आंख झुक न जाए। हमें हमेशा दूसरे इंसान के गर्व को बनाए रखना चाहिए। उसकी मजबूरी को अवसर नहीं समझना चाहिए।

४१) सबसे बड़ा संगीतज्ञ - एक समय नारद एवं तुंबुरा में यह बहस छिड़ी कि कौन महान संगीतज्ञ है? दोनों विष्णु के पास पहुंचे और कहा संपूर्ण ब्रह्मांड में श्रेष्ठतम संगीतज्ञ हम दोनों में से कौन है? विष्णु मुस्कराए और बोले- मैं संगीतज्ञ के विषय में कुछ नहीं जानता, लेकिन इस विषय के महान ज्ञाता हनुमानजी हैं, आप उनसे फैसला करा लें। इस पर दोनों ऋषि बोले- वही हनुमान। जिन्होंने लंका दहन किया। वे भला निर्णायक कैसे हो सकते हैं, वह भी संगीत के? विष्णु ने समझाया- जाने में हानि क्या है? जब नारद व तुंबुरा हिमालय पर पहुंचे तो यह देखकर आश्चर्य में डूब गए कि हनुमान जी मधुर स्वर में कुछ गा रहे हैं और इतना लीन हैं कि उन्हें कुछ होश नहीं है। दोनों ऋषियों ने ताली बजाकर हनुमानजी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। हनुमानजी ने आंखें खोली तो दोनों ने कहा, भगवान विष्णु ने हमें आपके पास भेजा है यह फैसला कराने के लिए कि हम दोनों में से महान सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ कौन है? हनुमान बिना कुछ कहे अपनी वीणा के तार साधने लगे ताकि एक विशेष प्रकार की धुन बजाई जा सके। इसके बाद उन्होंने ऐसा राग छेड़ा जिसके बारे में इन ऋषियों ने कल्पना भी नहीं की थी। राग छिड़ते ही हिमालय की बर्फ पिघलकर बहने लगी। नारद व तुंबुरा यह दृश्य देखकर चकरा गए। हनुमान जी के संगीत के सामने हिमालय नतमस्तक था, वह पिघलता जा रहा था। देखते-देखते नारद व तुंबुरा उस जल में डूबने लगे तो हनुमान जी से बचाने की प्रार्थना की। तब हनुमान जी ने कहा, आप दोनों में से जो इस पानी को फिर से बर्फ बना दे, वही श्रेष्ठ संगीतज्ञ होगा। दोनों अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए वीणा के तारों पर कवायद करने लगे, लेकिन अफसोस कि उनके संगीत का हिमालय पर और उसकी पिघलती बर्फ पर कोई असर नहीं हुआ। निर्णय हो चुका था।

४२) यश की लालसा - एक बार की बात है, राजा भोज दिन भर की व्यस्तता के बाद गहरी नींद में सोए हुए थे। स्वप्न में उन्हें एक दिव्य पुरुष के दर्शन हुए। उस दिव्य पुरुष के चारों ओर उजाला आभामंडल था। भोज ने बड़ी विनम्रता से उनका परिचय पूछा। मंद-मंद मुस्काते हुए वह बोले, मैं सत्य हूं। मैं तुम्हें तथाकथित उपलब्धियों का वास्तविक रूप दिखाने आया हूं। चलो, मेरे साथ। राजा उत्सुकता और खुशी से उनके साथ चल दिए। भोज खुद को बहुत बड़ा धर्मात्मा समझते थे। उन्होंने अपने राज्य में कई मंदिर, धर्मशालाएं, नहरें और कुएं आदि बनवाए थे। उनके मन में इन कामों के लिए गर्व भी था। दिव्य पुरुष भोज को उनके ही एक शानदार बगीचे में ले गए और बोले, तुम्हें इस बगीचे का बड़ा अभिमान है न? फिर उन्होंने एक पेड़ छुआ और देखते ही देखते वह ठूंठ हो गया। एक एक करके सभी सुंदर फूलों से लदे वृक्षों को छूते गए और वे सब ठूंठ होते चले गए। इसके बाद वह उन्हें भोज के एक स्वर्णजड़ित मंदिर के पास ले गए। भोज को वह मंदिर अतिप्रिय था। दिव्य पुरुष ने जैसे ही उसे छुआ, वह लोहे की तरह काला हो गया और खंडहर की तरह गिरता चला गया। यह देख राजा के तो होश उड़ गए। वे दोनों उन सभी स्थानों पर गए, जिन्हें राजा भोज ने चाव से बनवाया था। दिव्य पुरुष बोले, राजन्, जिन्हें तुम उपलब्धि मानते थे देखो उनका क्या हश्र हुआ। भ्रम में मत पड़ो। भौतिक वस्तुओं के आधार पर महानता नहीं आंकी जाती। एक गरीब आदमी द्वारा पिलाए गए एक लोटे जल की कीमत, उसका पुण्य, किसी यशलोलुप धनी की करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से कहीं अधिक है। इतना कहकर वह अंतर्धान हो गए। राजा भोज ने स्वप्न पर

गंभीरता से विचार किया और फिर ऐसे कामों में लग गए जिन्हें करते हुए उन्हें यश पाने की लालसा बिलकुल नहीं रही।

४३) मूनलाइट सोनाटा - एक बार एक संगीतकार एक कुटिया के पास से गुजर रहे थे। वहां एक लड़की उनकी बनाई धुन पर अभ्यास कर रही थी। अभ्यास करते करते वह अपने पिता से बोली, पिताजी, कितना अच्छा होता यदि इस धुन को कोई संगीतकार मुझे बजाना सिखाता। इस पर पिता बोले, बेटी, हम गरीब लोग हैं। यहां संगीतकार कहां आएगा? मुझे ही तुम्हें सिखाना होगा और तुम्हें ही इसे अपनी मेहनत से सीखना होगा। पिता की बात पर युवती बोली, यह तो आप सत्य कह रहे हैं पिताजी। पर मैं आपसे वादा करती हूं कि मैं अकेले ही इस धुन को बजाना सीख लूंगी। उनकी बात सुनकर संगीतकार कुटिया के अंदर पहुंचे तो यह देखकर दंग रह गए कि पिता अपनी दृष्टिहीन बेटी को संगीत सिखा रहा था। यह देखकर संगीतकार पिता से बोले, आप हटिए, मैं आपकी बेटी को यह धुन बजाना सिखाता हूं। उन्होंने कुर्सी खींची और पियानो पर करीब एक घंटे तक उस धुन को बजाते रहे। संगीत की मधुर ध्वनि से पुलकित होकर युवती खुशी से उछल कर बोली, आप ने तो यह धुन बहुत अच्छी तरह से बजानी सिखाई है। शायद इतनी अच्छी तरह से तो इसे संगीतकार ने भी नहीं बजाया होगा। युवती की बात सुनकर संगीतकार मुस्कराकर धुन बजाने लगे। युवती ने जिज्ञासावश पूछा, आप कौन हैं? संगीतकार युवती से बोले, मैं बीथोवन हूं और तुम मेरी ही धुन बजा रही थी। बीथोवन का नाम सुनकर युवती व पिता दोनों ही हैरान रह गए। पिता हैरानी से बीथोवन को ताकते रहे। शाम बीत चुकी थी। कुटिया में अंधेरा छा गया था, परंतु चांद की चांदनी का प्रकाश छनकर कुटिया में आ रहा था। नेत्रहीन युवती की मंत्रमुग्ध मुद्रा और शीतल चांदनी से प्रेरित होकर ही बीथोवन ने अपनी प्रसिद्ध रचना मूनलाइट सोनाटा की रचना की। यह रचना विश्वप्रसिद्ध है।

४४) तारों का शिखर - सर सीवी रामन के सगे भतीजे डॉ. चंद्रशेखर भी उन्हीं के पदचिन्हों पर चलनेवाले विज्ञानी थे। तारा भौतिकों में महत्वपूर्ण अनुसंधान के लिए उन्हें सन १९८३ में प्रख्यात नोबल पुरस्कार दिया गया था। कैंब्रिज में अध्ययन करते समय उन्होंने तारों के जन्म-मृत्यु संबंधी कई अनुसंधान किए। जब वहां एस्ट्रोनोमिकल सोसायटी ने अपने अनुसंधान पर बोलने के लिए उन्हें आमंत्रित किया, तो बड़े परिश्रम से उन्होंने अपना व्याख्यान तैयार किया। जब युवा चंद्रशेखर तारों के जन्म और मृत्यु संबंधी अपना पर्चा पढ़कर बैठ गए तो उसके बाद बूढ़े खगोलज्ञ एडिंग्टन खड़े हुए। एडिंग्टन ने चंद्रशेखर के सिद्धांतों की धज्जियां उड़ा दी और उसे सिर्फ बकवास बताया। चंद्रशेखर को उम्मीद थी कि एडिंग्टन शाबाशी देंगे, पर यहां तो बिल्कुल उलटा हो गया। उस समय एडिंग्टन की तूती बोलती थी, इसलिए किसी में भी उनका विरोध करने की हिम्मत न थी। चंद्रशेखर हतोत्साहित तो हुए, पर अपने मार्ग से विचलित न हुए। उन्होंने अपनी खोज पर एक पुस्तक लिखी, तारों की संरचना का परिचयात्मक अध्ययन और अनुसंधान कार्य में लगे रहे। आगे चलकर उनकी बातें सही साबित हुईं और उन्हें वैज्ञानिकों ने यथोचित सम्मान भी दिया। तारों के सिकुड़ने की चंद्रशेखर द्वारा निर्धारित सूर्य से १.४ गुना द्रव्यमान को चंद्रशेखर सीमा नाम दिया गया और सिद्धांत सर्वमान्य रहा। युवावस्था की उस खोज के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार भी दिया गया। हालांकि इसके लिए इन्हें ५३ वर्षों की लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ी। एक मौके पर डॉ. चंद्रशेखर ने एडिंग्टन को धन्यवाद देते हुए कहा कि अच्छा हुआ, जो मुझे एडिंग्टन से प्रोत्साहन न मिला। हो सकता है उससे मेरा माथा चढ़ जाता और मैं इतने अनुसंधान कार्य

न कर पाता, जो मैंने उस दिल तोड़ देनेवाली घटना के बाद किए।

४५) प्रकृति का सम्मान - वनवास अवधि में राम, लक्ष्मण तथा सीता अनेक ऋषि-मुनियों से मिले। उस अवधि में राम तथा तपस्वियों के मध्य विभिन्न विषयों पर जो वार्तालाप हुआ वह जीवन-दर्शन का श्रेष्ठ पैमाना है। इसी क्रम में राम, ऋषि शरभंग के आश्रम पहुंचे। शरभंग की मानव देह का अंत निश्चित था। उन्होंने अपनी योग व आध्यात्मिक शक्तियों से इतनी ऊर्जा अर्जित कर ली कि उनके अंत समय स्वयं भगवान इंद्र उन्हें सदेह स्वर्ग ले जाने पृथ्वी पर आए, परंतु उन्होंने इंद्र का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। इस अस्वीकृति पर प्रश्नाकुल इंद्र को शरभंग का उत्तर मिला, भगवन। मानव देह तो पंचतत्वों का मिश्रण है। मैं भी स्वयं मानव देह की हूं। अपने अंत समय में सदेह पृथ्वी लोक छोड़ना प्राकृतिक नियम के विरुद्ध होगा। मैं आत्मस्वरूप होकर ही भूलोक त्यागूंगा। परंतु अभी मुझे श्री राम की प्रतीक्षा है। उनके दर्शन किए बिना मैं प्राण नहीं छोडूंगा। शरभंग मुनि की इच्छा से अवगत हो इंद्र वापस चले गए। वहीं दूसरी ओर कुछ दूर पर वृक्षों के झुरमुट की आड़ में खड़े राम ने शरभंग तथा इंद्र के बीच हुई सारी बातचीत सुन ली। जब शरभंग और राम मिले तो उन दोनों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। शरभंग बोले, हे राम। तुम तो मानव रूप में ईश्वरीय अवतार हो। मैं अंतर्धान होने से पूर्व तुम्हारे ही दर्शन को व्याकुल था। मुनि के तपोबल से आश्चर्यचकित होकर राम बोले, मुनिवर। आपसे श्रेष्ठ कौन हो सकता है। आप तो अमरता तथा सदेह स्वर्ग जाने का अवसर छोड़ प्रकृति नियमों के प्रति दायित्व निभा रहे हैं। आप के सम्मुख तो साक्षात ईश्वर भी नतमस्तक होंगे। जो भी साधारण मानव आपके गुणों को ग्रहण करेगा, वह साधारण होकर भी देवताओं के लिए पूजनीय व आदरणीय होगा। प्रकृति के नियमों का पालन करने वालों के सामने तो देवता भी शीश नवाते हैं।

४६) वैज्ञानिक की सादगी - एक बार एक सरकारी अधिकारी वैज्ञानिक माइकल फराडे से मिलने रॉयल सोसायटी पहुंचा। वहां पहुंचने के बाद सरकारी अधिकारी ने फराडे के बारे में पूछा तो एक गार्ड ने प्रयोगशाला की ओर जाने को कहा। सरकारी अधिकारी जब प्रयोगशाला की ओर पहुंचे तो उन्हें पूरी प्रयोगशाला खाली मिली। उन्होंने काफी तलाश किया, पर उन्हें किसी वैज्ञानिक के चिन्ह नजर नहीं आए। वहां से वह वापस मुड़ने ही वाले थे कि तभी उनकी नजर एक वृद्ध व्यक्ति पर पड़ी जिन्होंने ढीला-ढाला चोला पहना हुआ था और वे एक सिंक में बोतलें साफ करने में लगे थे। उसे देखकर अधिकारी बेरुखी से बोले, ऐ सुनो। क्या तुम रॉयल सोसायटी के कर्मचारी हो? अधिकारी की बात सुनकर वृद्ध व्यक्ति बोले, जी हां, मैंने चार दशकों से अधिक समय तक इस सोसायटी की सेवा की है। बताइए मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं? इस पर अधिकारी चिड़चिड़ा कर बोला, मुझे एक महत्वपूर्ण काम के लिए एक महान वैज्ञानिक से मिलना था। मुझे बताया गया कि वह यही मिलेंगे, पर मुझे वे कहीं भी नहीं मिले। गार्ड ने मुझे गलत जगह पर भेजा, मैं उसकी शिकायत करूंगा। अधिकारी की बात सुनकर वृद्ध व्यक्ति सहजता से बोले, सर, आपको किन वैज्ञानिक से मिलना था? यह प्रश्न सुनकर अधिकारी व्यंग्य करते हुए उनकी तरफ देखते हुए बोला, अरे तुम नहीं समझ पाओगे। न ही उनसे मिलने में मेरी कोई मदद कर पाओगे। पर एक बार बताइए तो सही। वृद्ध बोले। अधिकारी खीझ कर बोला, मुझे माइकल फैराडे से मिलना है। इस पर वृद्ध व्यक्ति मुस्करा कर बोले, जी बैठिए, मुझे ही माइकल फराडे कहते हैं। यह यह सुनकर अधिकारी का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया। वह माइकल फराडे की सादगी देखकर उनके प्रति नतमस्तक हो गया।

४७) कर्त्तव्य का पाठ - तपस्वी जाजलि श्रद्धापूर्वक वानप्रस्थ धर्म का पालन करने के बाद खड़े होकर कठोर तपस्या करने लगे। उन्हें गतिहीन देखकर पक्षियों ने उन्हें कोई वृक्ष समझ लिया और उनकी जटाओं में घोंसले बनाकर अंडे दे दिए। अंडे बढ़े और फूटे, उनसे बच्चे निकले। बच्चे बड़े हुए और उड़ने भी लगे। एक बार जब बच्चे उड़कर पूरे एक महीने तक अपने घोंसले में नहीं लौटे, तब जाजलि हिले। वह स्वयं अपनी तपस्या पर आश्चर्य करने लगे और अपने को सिद्ध समझने लगे। उसी समय आकाशवाणी हुई, जाजलि, गर्व मत करो। काशी में रहनेवाले व्यापारी तुलाधार के समान तुम धार्मिक नहीं हो। आकाशवाणी सुनकर जाजलि को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उसी समय काशी चल पड़े। उन्होंने देखा कि तुलाधार तो एक अत्यंत साधारण दुकानदार हैं। वह अपनी दुकान पर बैठकर ग्राहकों को तौल-तौलकर सौदा दे रहे थे। जाजलि को तब और भी आश्चर्य हुआ जब तुलाधार ने उन्हें उठकर प्रणाम किया, उनकी तपस्या, उनके गर्व तथा आकाशवाणी की बात भी बता दी।

जाजलि ने पूछा, तुम्हें यह सब कैसे मालूम? तुलाधार ने विनम्रतापूर्वक कहा, सब प्रभु की कृपा है। मैं अपने कर्त्तव्य का सावधानी से पालन करता हूं। न मद्य बेचता हूं। न और कोई निंदित पदार्थ। अपने ग्राहकों को मैं तौल में कभी ठगता नहीं। ग्राहक बूढ़ा हो या बच्चा, वह भाव जानता हो या न जानता हो, मैं उसे उचित मूल्य पर उचित वस्तु ही देता हूं। किसी पदार्थ में दूसरा कोई दूषित पदार्थ नहीं मिलाता। ग्राहक की कठिनाई का लाभ उठाकर मैं अनुचित लाभ भी उससे नहीं लेता हूं। ग्राहक की सेवा करना मेरा कर्त्तव्य है, यह बात मैं सदा स्मरण रखता हूं। मैं राग-द्वेष और लोभ से दूर रहता हूं। यथाशक्ति दान करता हूं और अतिथियों की सेवा करता हूं। हिंसारहित कर्म ही मुझे प्रिय है। कामना का त्याग करके संतोषपूर्वक जीता हूं। जाजलि समझ गए कि आखिर क्यों उन्हें तुलाधार के पास भेजा गया।

४८) मुफ्त अनारों की कीमत नहीं समझी - एक समय की बात है। एक शहर में एक धनी आदमी रहता था। उसकी लंबी-चौड़ी खेती-बाड़ी थी और वह कई तरह के व्यापार करता था। बड़े विशाल क्षेत्र में उसके बगीचे फैले हुए थे, जहां पर भांति-भांति के फल लगते थे। उसके कई बगीचों में अनार के पेड़ बहुतायत में थे, जो दक्ष मालियों की देखरेख में दिन दूनी और रात चौगुनी गति से फल-फूल रहे थे। उस व्यक्ति के पास अपार संपदा थी, किंतु उसका हृदय संकुचित न होकर अति विशाल था। शिशिर ऋतु आते ही वह अनारों को चांदी के थालों में सजाकर अपने द्वार पर रख दिया करता था। उन थालों पर लिखा होता था आप कम से कम एक तो ले ही लें। मैं आपका स्वागत करता हूं। लोग इधर-उधर से देखते हुए निकलते, किंतु कोई भी व्यक्ति फल को हाथ तक नहीं लगाता था। तब उस आदमी ने गंभीरतापूर्वक इस पर विचार किया और किसी निष्कर्ष पर पहुंचा। अगली शिशिर त्रतु में उसने अपने घर के द्वार पर उन चांदी के थालों में एक भी अनार नहीं रखा, बल्कि उन थालों पर उसने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हमारे पास अन्य सभी स्थानों से कहीं अच्छे अनार मिलेंगे, किंतु उनका मूल्य भी दूसरे अनारों की अपेक्षा अधिक लगेगा और तब उसने पाया कि न केवल पास-पड़ोस के, बल्कि दूरस्थ स्थानों के नागरिक भी उन्हें खरीदने के लिए टूट पड़े। कथा का संकेत यह है कि भावना से दी जानेवाली अच्छी वस्तुओं को हेय दृष्टि से देखने की मानसिकता गलत है। सभी सस्ती या नि:शुल्क वस्तुएं या सेवाएं निकृष्ट नहीं होतीं। वस्तुत: आवश्यकता वह दृष्टि विकसित करने की है, जो भावना और

व्यापार में फर्क कर सके और वस्तुओं की गुणवत्ता का ठीक-ठाक निर्धारण कर सके।

४९) नए साल का इम्तहान - मशहूर सूफी संत सैय्यद कुतुब हुसैन शाह किरमानी साल के आखिरी रोज अपने मुरीदों में शकरपारे बांट रहे थे। शकरपारे उनकी पसंद की खास मिठाई थी। वह शकरपारे बांटते जाते और सभी को आनेवाले साल की जमकर तैयारी करने की हिदायत देते जाते। उसी रोज कई हफ्तों पहले लाहौर से चले एक दूसरे सूफी संत उनके पास पहुंचे। हुसैन किरमानी को मिठाई बांटते देख उन्होंने पूछा, क्या हुसैन, तुम अपने महबूब से मिलने जा रहे हो जो खुशी में मिठाई बांट रहे हो। तपाक से हुसैन का एक मुरीद बोला, नहीं हुजूर, आनेवाले साल की खुशी की मिठाई है, आप भी चखिए। मेहमान सूफी संत यह सुनते ही हत्थे से उखड़ गए। उन्होंने कहा, ऐ हुसैन, तुम्हें जरा भी अक्ल नहीं। कोई सूफी नए साल की खुशी मनाए, यह उसे बिल्कुल शोभा नहीं देता। हम तो यहां अपने महबूब से मिलने को दुबले हुए जाते हैं और तुम एक साल और बढ़ जाने की खुशी मना रहे हो। हुसैन ने उन्हें पास बैठाया और पानी पिलाया। फिर हुसैन ने लाहौर से आए मेहमान संत से कहा, आपको पता है, यह नया साल क्यों आया है? यह नया साल मेरे महबूब ने भेजा है कि यह लो तुम्हें एक और साल इम्तहान देना होगा। मेरा महबूब चाहता है कि मैं अभी और इम्तहान दूं, इसलिए उस इम्तहान की खुशी में मिठाई बांट रहा हूं। एक सूफी अगर इम्तहान से मायूस होगा, तो कैसा सूफी। महबूब के इम्तहान में फना हो जाने का मौका भला किसे मिलता है। मैं अपने हर मुरीद से कहता हूं कि इम्तहान से डरना मत, घबराना मत, मायूस मत होना। उसका खुशी-खुशी इस्तकबाल करना। खुशी मन से इम्तहान के लिए जाना। इसी तरह आनेवाला साल भी एक और इम्तहान का साल है। यह इम्तहान खुशी खुशी देने में कोई गलती नहीं है। वह सूफी संत भी खामोश होकर मिठाई चखने लगे।

५०) सेवा का महत्व - काशी के राजा सुशर्मा अपने दरबारियों के हर प्रश्न का जवाब देते थे। एक बार एक व्यक्ति ने दरबार में उनसे पूछा, राजन्, मनुष्य के जीवन में भक्ति और सेवा में किसका महत्व ज्यादा है? उस समय वह उस प्रश्न जवाब नहीं दे पाए, लेकिन वह इस बारे में लगातार सोचते रहे। कुछ समय बाद राजा शिकार के लिए जंगल की ओर निकले, लेकिन उन्होंने किसी को साथ में नहीं लिया। घने जंगल में वह रास्ता भटक गए। शाम हो गई। प्यास से उनका बुरा हाल हो गया था। काफी देर भटकने के बाद उन्हें एक कुटिया दिखाई पड़ी। वह किसी संत की कुटिया थी। राजा किसी तरह कुटिया तक पहुंचे और पानी-पानी कहते हुए मूर्छित हो गए। कुटिया में संत समाधि में लीन थे। राजा के शब्द संत के कानों पड़े। पानी पानी की पुकार सुनने से संत की समाधि भंग हो गई। वह अपना आसन छोड़ राजा के पास गए और उन्हें पानी पिलाया। पानी पीकर राजा की चेतना लौट आई। राजा को जब पता चला कि संत समाधिस्थ थे तो उन्होंने कहा, मुनिवर, मेरी वजह से आपके ध्यान में खलल पड़ी। मैं दोषी हूं। मुझे प्रायश्चित करना होगा। संत ने कहा, राजन्, आप दोषी नहीं हैं इसलिए प्रायश्चित करने का प्रश्न ही नहीं है। प्यासा पानी मांगता है और प्यास बुझानेवाला पानी देता है। आपने अपना कर्म किया है और मैंने अपना। यदि आप पानी की पुकार नहीं करते तो आपका जीवन खतरे में पड़ जाता और यदि मैं समाधि छोड़ कर आपको पानी नहीं पिलाता, तब भी आपका जीवन खतरे में पड़ता। आपको पानी पिलाकर जो संतुष्टि मिल रही है वह कभी समाधि की अवस्था में नहीं

मिलती। भक्ति और सेवा दोनों ही मोक्ष के रास्ते हैं, लेकिन यदि आप आज प्यासे रह जाते तो मेरी अब तक की सारी साधना व्यर्थ हो जाती। राजा को उत्तर मिल गया कि सेवा का महत्व भक्ति से अधिक है।

५१) नमक की तुलना - एक बार सत्यभामा ने श्रीकृष्ण से पूछा, मैं आपको कैसी लगती हूं? श्रीकृष्ण बोले- नमक जैसी लगती हो। इस तुलना को सुन सत्यभामा क्रुद्ध हो गई। तुलना की भी तो किस से की? श्रीकृष्ण ने किसी तरह सत्यभामा को मना लिया और उनका गुस्सा शांत कर दिया। कुछ दिन पश्चात श्रीकृष्ण ने अपने महल में एक भोज का आयोजन किया। सर्वप्रथम सत्यभामा से भोजन प्रारंभ करने का आग्रह किया। सत्यभामा ने पहला कौर मुंह में डाला। मगर यह क्या? सब्जी में तो नमक ही नहीं था। कौर को मुंह से निकाल दिया। फिर दूसरा कौर किसी और व्यंजन का मुंह में डाला। उसे चबाते-चबाते भी बुरा सा मुंह बनाया। इस बार पानी की सहायता से किसी तरह कौर गले से नीचे उतारा। अब तीसरा कौर कचरी का मुंह में डाला तो फिर थूक दिया। अब तक सत्यभामा का पारा सातवें आसमान पर पहुंच चुका था। जोर से चीखीं कि किसने बनाई है यह रसोई? सत्यभामा की आवाज सुनकर श्रीकृष्ण दौड़ते हुए सत्यभामा के पास आए और पूछा क्या हुआ देवी इतनी क्रोधित क्यों हो? सत्यभामा ने कहा इस तरह बिना नमक की कोई रसोई बनती है? एक कौर नही खाया गया। श्रीकृष्ण ने बड़े भोलेपन से पूछा, नमक नहीं तो क्या हुआ, बिना नमक के ही खा लेती। उस दिन क्यों गुस्सा हो गई थी जब मैंने तुम्हें यह कहा कि तुम मुझे नमक जितनी प्रिय हो? सत्यभामा हैरत से कृष्ण की ओर देखने लगीं। कृष्ण बोलते गए, स्त्री जल की तरह होती है। जिसके साथ मिलती है उसका ही गुण अपना लेती है। स्त्री नमक की तरह होती है, जो अपना अस्तित्व मिटा कर भी अपने प्रेम-प्यार तथा आदर-सत्कार से अच्छा परिवार बना देती है। स्त्री अपना सर्वस्व खोकर भी किसी के जान-पहचान की मोहताज नहीं होती है। अब सत्यभामा को श्रीकृष्ण की बात का मर्म समझ में आ गया।

५२) सच्चा पुण्य - संत एकनाथ महाराष्ट्र के विख्यात संत थे। वह स्वभाव से अत्यंत सरल और परोपकारी थे। एक दिन उनके मन में विचार आया कि प्रयाग पहुंचकर त्रिवेणी में स्नान करें और फिर त्रिवेणी से पवित्र जल भरकर रामेश्वरम में चढ़ाएं। उन्होंने अन्य संतों के समक्ष अपनी यह इच्छा व्यक्त की। सभी ने हर्ष जताते हुए सामूहिक यात्रा का निर्णय लिया। एकनाथ सभी संतों के साथ प्रयाग पहुंचे। सभी ने त्रिवेणी में स्नान किया। तत्पश्चात अपनी अपनी कांवड़ में त्रिवेणी का पवित्र जल भर लिया। पूजा-पाठ से निवृत्त हो सबने भोजन किया, फिर रामेश्वरम की यात्रा पर निकल पड़ें संतों का यह समूह यात्रा के मध्य में ही था कि मार्ग में एक गधा दिखाई दिया। वह प्यास से तड़प रहा था और चल भी नहीं पा रहा था। सभी संतों के मन में दया उपजी, किंतु उनके कांवड़ का जल तो रामेश्वरम के निमित्त था, इसलिए सबने मन को कड़ा कर लिया। किंतु एकनाथ से रहा नहीं गया। उन्होंने तत्काल अपनी कांवड़ से पानी निकाल कर गधे को पिला दिया। प्यास बुझाने के बाद गधे को मानो नवजीवन प्राप्त हो गया। वह उठकर सामने घास चरने लगा। संतों ने एकनाथ से कहा, आप तो रामेश्वरम जाकर तीर्थ जल चढ़ाने से वंचित हो गए। एकनाथ बोले, ईश्वर तो सभी जीवों में व्याप्त है। मैंने अपनी कांवड़ से एक प्यासे जीव को पानी पिलाकर उसकी प्राण की रक्षा की। इसी से मुझे रामेश्वर जाने का पुण्य मिल गया। वस्तुत: धार्मिक़ विधि-विधानों के पालन से बढ़कर मानवीयता का पालन है, जिसके निर्वाह पर ही सच्चा पुण्य प्राप्त होता है। सभी धर्मग्रंथों में परोपकार को श्रेष्ठ धर्म माना गया है। सही मायने में

परोपकार से ही पुण्य फलित होता है। ईश्वर की सच्ची उपासना भी यही है। यही बात संत एकनाथ ने अपने आचरण से साबित किया। सारे संत उनकी बात सुन उनके सामने नतमस्तक हो गए।

५३) गुस्सा अपने को गुलाम बनाता है - भारत को जीत लेने और कुछ दिन यहां गुजार लेने के पश्चात विश्व विजेता सिकंदर भारत से लौटने की तैयारी कर रहा था। किसी ने उसे सलाह दी कि उसे हिन्दुस्तान से अपने साथ एक योगी ले जाना चाहिए। सिकंदर को यह बात काफी पसंद आई। उसने अपने साथ ले जाने योग्य एक योगी की तलाश शुरू कर दी। काफी तलाश के बाद उसे जंगल में पेड़ के नीचे एक ध्यानमग्न योगी दिखाई दिया। वह उनके ध्यान टूटने का इंतजार करता रहा।

जब योगी ने अपनी आंखें खोलीं तो वह बोला, आप मेरे साथ यूनान चलो, मैं आपको धन-धान्य से भर दूंगा। योगी ने मना कर दिया। तब वह अपने असली रूप में आ गया। तलवार निकाल कर बोला- मैं तेरे टुकड़े कर दूंगा।

योगी ने हंसकर कहा, तुम मेरे टुकड़े नहीं कर सकते क्योंकि मैं अमर हूं। दूसरा तुम साहसी नहीं हो। एक साहसी ही अपने विरोधी को क्षमा कर सकता है। इसके अलावा तुम विजेता भी नहीं हो, तुम मेरे दास के दास हो। मैंने बड़ी साधना के बाद क्रोध को जीता है। अब वह मेरा दास है। तुम उसके काबू में हो। विजेता तब होते जब मेरे गुस्सा दिलाने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाते।

योगी की बातों ने सिकंदर की आंखें खोल दीं। उसे समझ आ गया कि उसका अपने ही क्रोध पर काबू नहीं है तो वह खुद को विजेता कैसे कह सकता है? उसे ध्यान आया कि यह अकारण नहीं कहा गया है कि गुस्से को जिलाए रखना जलते हुए कोयले को हाथ में पकड़े रखने के समान होता है। हम तो उसे किसी दूसरे के ऊपर फेंकना चाहते हैं, पर होता यह है कि खुद हमारा ही हाथ जल जाता है।

५४) जब हवा चलती है - बहुत समय पहले की बात है, आइसलैंड के उत्तरी छोर पर एक किसान रहता था। उसे अपने खेत में काम करने वालों की बड़ी जरूरत रहती थी लेकिन ऐसी खतरनाक जगह, जहाँ आए दिन आंधी-तूफान आते रहते हों, कोई काम करने को तैयार नहीं होता था।

किसान ने एक दिन शहर के अखबार में विज्ञापन दिया कि उसे खेत में काम करनेवाले एक मजदूर की जरूरत है। किसान से मिलने कई लोग आए लेकिन जो भी उस जगह के बारे में सुनता, वो काम करने से मना कर देता। अंतत: एक सामान्य कद का पतला दुबला अधेड़ व्यक्ति किसान के पास पहुंचा। किसान ने उससे पूछा- क्या तुम इन परिस्थितियों में काम कर सकते हो? हम्म, बस जब हवा चलती है तब मैं सोता हूं। व्यक्ति ने उत्तर दिया। किसान को उसका उत्तर थोड़ा अजीब लगा लेकिन चूंकि उसे कोई और काम करनेवाला नहीं मिल रहा था इसलिए उसने व्यक्ति को काम पर रख लिया। मजदूर मेहनती निकला, वह सुबह से शाम तक खेतों में मेहनत करता, किसान भी उससे काफी संतुष्ट था। कुछ ही दिन बीते थे कि एक रात अचानक ही जोर-जोर से हवा बहने लगी, किसान अपने अनुभव से समझ गया कि अब तूफान आने वाला है। वह तेजी से उठा, हाथ में लालटेन ली और मजदूर के झोपड़े की तरफ दौड़ा, जल्दी उठो, देखते नहीं तूफान आने वाला है, इससे पहले की सब कुछ तबाह हो जाए, कटी फसलों को बाँध

कर ढँक दो और बाड़े के गेट को भी रस्सियों से कस दो। किसान चीखा। मजदूर बड़े आराम से पलटा और बोला- नहीं जनाब, मैंने आपसे पहले ही कहा था कि जब हवा चलती है तो मैं सोता हूं। यह सुन किसान का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। जी मैं आया कि उस मजदूर को गोली मार दे, पर अभी वो आनेवाले तूफान से चीजों को बचाने के लिए भागा। किसान खेत में पहुंचा और उसकी आंखें आश्चर्य से खुली रह गयी, फसल की गांठें अच्छे से बंधी हुई थीं और तिरपाल से ढकी भी थी, उसके गाय-बैल सुरक्षित बंधे हुए थे और मुर्गियां भी अपने दडबों में थी। बाड़े का दरवाजा भी मजबूती से बंधा हुआ था। सारी चीजें बिलकुल व्यवस्थित थी। नुकसान होने की कोई संभावना नहीं बची थी। किसान अब मजदूर की ये बात कि जब हवा चलती है तब मैं सोता हूं समझ चुका था और अब वो भी चैन से सो सकता था। हमारी जिंदगी में भी कुछ ऐसे तूफान आने तय हैं। जरूरत इस बात की है कि हम उस मजदूर की तरह पहले से तैयारी करके रखें ताकि मुसीबत आने पर हम भी चैन से सो सकें।

५५) बोझा गया पेट में - एक बार सम्राट कृष्णदेव राय ने अपने दरबारियों की परीक्षा लेने के लिए एक चाल चली। उन्होंने छोटी-बड़ी कई गठरियां बनायीं और दरबारियों से उन्हें उठाकर ले चलने को कहा। हर दरबारी ने छोटी-बड़ी गठरी उठाने की चेष्टा की। केवल तेनाली राम एक कोने में खड़ा रहा। अंत में जब एक बड़ी गठरी बच गयी, तो उसने उसे सिर पर उठा लिया। यह देखकर अन्य दरबारी उसका मजाक उड़ाने लगे।

शाम को जब सब लोग अंतिम पड़ाव पर पहुंचे, तो बोझा ढोने के कारण सभी दरबारी हाफ रहे थे। केवल तेनालीराम के सिर पर बोझा नहीं था। यह देखकर महारानी ने तेनालीराम से पूछा- यह क्या, बोझा कहां गया? तेनालीराम ने हंसकर कहा- लोगों के पेट में।

फिर उसने बताया कि वह पहले ही भांप गया था कि बड़ी गठरी में खाने-पीने का सामान है। वह यह भी जान गया था कि और सबको तो मंजिल तक बोझा उठाना पड़ेगा। पर उसका बोझा राह में सिर से हट जायेगा। गठरी में सफर के लिए ही खाने-पीने का सामान दिया गया था। तेनालीराम की चतुराई देखकर सब दंग रह गये।

५६) कुंती को मिले युधिष्ठिर के श्राप का असर आज भी भुगत रही है नारी जाति - युधिष्ठिर ने अपनी मां कुंती को ऐसा श्राप दिया जो आज भी संपूर्ण नारी जाति के लिए अभिशाप है। महाभारत युद्ध के उपरांत धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से पूछा, इस युद्ध में कितने लोग वीरगति को प्राप्त हुए हैं? युधिष्ठिर ने कहा, इस युद्ध में एक अरब, छियासठ करोड़, बीस हजार वीर वीरगति को प्राप्त हुए हैं। धृतराष्ट्र बोले, वीरों के शवों का सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार तुम्हें ही करवाना चाहिए। सभी पांडव, धृतराष्ट्र और उनके अन्य सगे-संबंधी गंगा तट पर गए और मृतक वीरों को जलांजलि दी। तभी कुंती ने भरे कण्ठ से पांडवों को बताया कि कर्ण उनका बड़ा भाई था इसलिए उनके प्रति भी आप सभी को जलांजलि अर्पित करनी चाहिए। युधिष्ठिर ने कुंती से कहा, अगर आप इस रहस्य से पहले ही पर्दा उठा देती तो संभवत: महाभारत युद्ध को टाला जा सकता था। कुंती मौन रहीं। युधिष्ठिर ने शास्त्रीय विधि के अनुसार कर्ण का भी अंतिम संस्कार किया और उन्हें जलांजलि दी। युधिष्ठिर का शोक कम नहीं हुआ। जब सभी प्रयास विफल हो गए तो माता कुंती ने युधिष्ठिर को समझाने का यत्न किया मगर युधिष्ठिर ने कहा, माता। आपने भ्राता कर्ण और हमारे रिश्ते को

रहस्य बनाकर रखा जिस वजह से आज हमें मानसिक क्लेश से गुजरना पड़ रहा है। आज मैं नारी जाति को श्राप देता हूं कि आज से कोई भी स्त्री अपने हृदय में कोई भी रहस्य गुप्त नहीं रख पाएगी। ऐसे वचन बोल युधिष्ठिर दुखी होकर वन को जाने लगे मगर अर्जुन और भीम ने उन्हें जाने नहीं दिया।

५७) मृत व्यक्ति को जीवित और स्वस्थ व्यक्ति को जवान बनानेवाली बूटी - ईरान के बादशाह खुसरो के प्रधानमंत्री बुर्जोई राज चिकित्सक भी थे। वह नई औषधियों पर शोध करते और उन पर लिखे ग्रंथ भी पढ़ते रहते थे। एक बार उन्हें पता लगा कि भारत में किसी पर्वत पर संजीवनी नाम की बूटी होती है, जिससे मृत व्यक्ति जीवित हो जाता है और स्वस्थ व्यक्ति यदि उसका सेवन कर ले तो वह हमेशा स्वस्थ और जवान बना रहता है। बुर्जोई यह सुनकर रोमांचित हो उठे। उन्होंने अपने बादशाह से भारत आने की इजाजत ली। वह भारत आए और संजीवनी बूटी की खोज में लग गए। वह अनेक पर्वतों और जंगलों में गए लेकिन कहीं भी उन्हें संजीवनी नजर नहीं आई। एक दिन वह एक पेड़ की छांव में आराम कर रहे थे, तभी एक पंडित जी वहां पहुंचे। वह बुर्जोई को देखकर बोले, आप परदेसी मालूम होते हैं। बुर्जोई बोले, हां भई, मैं परदेसी ही हूं। मैंने सुना है कि आपके यहां संजीवनी बूटी के रूप में अमृत मिलता है। मैंने यहां बहुत तलाश किया लेकिन वह बूटी मुझे कहीं नजर नहीं आई। यह सुनकर पंडित जी मुस्कराने लगे और बोले, संजीवनी बूटी तो केवल हनुमान ही तलाश कर पाए थे। आज के समय में तो संजीवनी बूटी शायद न मिले लेकिन अमृत अवश्य मिल सकता है। हमारे यहां अमृत पंचतंत्र नामक ग्रंथ में है। जो उस ग्रंथ को समझ-बूझकर पढ़ लेता है, समझ लीजिए उसने अमृत ग्रहण कर लिया। वह ग्रंथ जीवन में अमृत घोल देता है और व्यक्ति जब तक जीवित रहता है सकारात्मक विचारों से भरा रहता है। बुर्जोई पंडित जी की बात से प्रभावित हुए। वह पंचतंत्र की एक प्रति लेकर अपने देश लौट गए।

५८) शिवाजी महाराज की नजर के नजरिए ने बनाया प्रेरक और स्मरणीय पल - एक दिन छत्रपति शिवाजी अपने शिबिर में बैठे सेनापति माधव का इंतजार कर रहे थे। तभी सेनापति एक ग्रंथ लेकर उनके पास पहुंचा। माधव के पीछे एक डोला भी था। उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा, मुगल सेना को खदेड़ कर भगा दिया गया है और राजा बहलोल खां जान बचाकर भाग गया है।

शिवाजी ने पूछा, लेकिन सेनापति ये डोले में क्या है? माधव ने कहा, इसमें स्वर्ग की परी कही जानेवाली बहलोल खां की बेगम गौहर बानू हैं। जो आपकी जीत होने की खुशी में यहां लाई गई हैं। इस तरह हम उन्हें अपमानित कर मुगल शासक से प्रतिशोध ले सकेंगे।

शिवाजी के सामने गौहर बानू को पेश किया गया। शिवाजी ने कहा, आप अत्यंत सुंदर हैं। काश। मेरा जन्म आपके पुत्र के रूप में होता तो मैं भी इतना ही सुंदर होता। इसके बाद शिवाजी ने अपने सेनापति पर काफी नाराज हुए और उन्होंने कहा कि बेगम गौहर खां को पूरे राजकीय सम्मान से राजा बहलोल खां के हवाले कर दिया जाए।

अपनी बेगम गौहर बानू को सही हालात में देखकर बहलोल खां शिवाजी की उदारता का कायल हो गया और इस तरह वह उनकी सच्ची वीरता के आगे नतमस्तक हो गया। हमेशा अपना नजरिया ठीक रखना चाहिए हो सकता है आपके विरोधी भी आपकी प्रसन्नता करने लगे।

५९) विसंगतियों से मुक्त होकर ही पूरी होती है ईश्वर की पूजा - एक गांव के मंदिर में प्रतिदिन लोग पूजा- पाठ के लिए एकत्र होते थे। मंदिर में प्रवेश करने से पूर्व वे अपने जूते-चप्पल मुख्य द्वार के अहाते में उतार दिया करते। वे जूतों-चप्पलों को व्यवस्थित तरीके से नहीं रखते थे। परंतु प्रतिदिन जब वे मंदिर से बाहर आकर देखते, तो उन्हें अपने जूते-चप्पल बिना किसी कष्ट व खोज के सही स्थान पर ढंग से रखे मिल जाते। वास्तव में भक्तों के मंदिर में जाने के बाद एक व्यक्ति प्रतिदिन वहां आता था। वह अव्यवस्थित रखे जूतों-चप्पलों को साफ कर उन्हें व्यवस्थापूर्वक रख देता। इस कार्य को करनेवाला व्यक्ति तो उत्तम था, हैरानी इस बात की थी कि मंदिर से बाहर आने के बाद साज-सज्जापूर्वक रखे अपने जूते-चप्पल देख लोग आश्चर्यचकित नहीं होते थे। उन्हें ध्यान ही नहीं रहता कि उनके जूते-चप्पल मंदिर में प्रवेश के समय कितने अव्यवस्थित होते और बाहर आने पर उन्हें वे व्यवस्थित-सुरक्षित व स्वच्छ मिलते।

एक दिन इसी भावना से उद्वेलित एक वृद्ध ग्रामीण उस व्यक्ति के पास आकर बोला, क्या तुमने जीवनभर लोगों के जूते-चप्पल साफ करने और उन्हें ढंग से लगाने का अनुबंध कर रखा है? आखिर इससे तुम्हें प्राप्त क्या होता है? न तो मंदिर प्रशासन तुम्हें कोई पारिश्रमिक देता है और न ही वे लोग तुम्हारे इस परिश्रम के बारे में संवेदनामयी विचार रखते, जिनके जूते-चप्पल उठाते-उठाते तुम्हें यहां वर्षों बीते हैं। लोगों की तरह तुम भी मंदिर के अंदर क्यों नहीं जाते? अपने लिए ईश्वर से आशीर्वाद क्यों नहीं मांगते?

व्यक्ति बोला, जब तक लोग अपने जूतों-चप्पलों को सुव्यवस्थित तरीके से रखना नहीं सीख जाते, तब तक मैं मंदिर के अंदर प्रवेश नहीं करूंगा। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की है कि वह शीघ्र ही लोगों को अपने जूतों-चप्पलों को ठीक प्रकार से रखने-संभालने का ज्ञान व गुण दें। ऐसा होगा तभी मैं ईश्वर के दर्शन करूंगा।

उस व्यक्ति का ऐसा दृष्टिकोण ईश्वर के लिए चुनौती नहीं है, अपितु वह चाहता है कि लोग ईश्वरीय भक्ति के लिए अपेक्षित योग्यताएं धारण करें। जो मंदिर के प्रवेश द्वार पर अपने जूतों-चप्पलों से अव्यवस्था फैलाते हैं और इसके प्रति किसी आत्मग्लानि से पीड़ित नहीं होते, भला वे ईश्वर की पूजा के योग्य ही कहां हैं? मनुष्य के जीवन में ईश्वरीय अस्तित्व का आभास तभी हो सकता है, जब उसके सामान्य जीवन की समस्त गतिविधियां सुचारू और सुव्यवस्थित होंगी। मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर जूतों-चप्पलों की दुरावस्था तो एक उदाहरण है। जब मंदिर जैसे स्थान पर लोग इस तरह की अव्यवस्था के कारक बनेंगे, तो सामान्य स्थानों पर कितनी अव्यवस्थाएं फैलाते होंगे। जब तक लोग ऐसी सामान्य विसंगतियों से मुक्त नहीं होंगे, तब तक ईश्वर के लिए उनकी पूजा संपूर्ण नहीं होगी।

६०) दूसरों को अपना समझने लगे तो दुनिया का संवरना मुश्किल नहीं - सैकड़ों साल पहले नदी किनारे एक सुंदर सी नगरी थी। लेकिन वहां का राजा बहुत सनकी था। एक दिन अपने महल की छत से दूर बहती नदी को देखा और मंत्री से पूछा कि यह किस दिशा से किस दिशा की ओर बह रही है? मंत्री ने कहा, पश्चिम से पूरब की ओर बह रही है।

राजा के दिमाग में कौंधा कि तब तो पूरब के राज्य भी इसके पानी का उपयोग करते होंगे। मंत्री से हां सुनते ही फरमान जारी कर दिया कि नदी के रास्ते में दीवार खड़ी कर दो। वैसा ही किया गया। कुछ दिनों में ही नदी का बहाव शहर की तरफ मुड़ गया। वहां के नागरिक त्राहि-त्राहि करने लगे। वे लोग राजा के पास जाने से डरते थे इसलिए मंत्री से गुहार

लगाई। उस जमाने में घंटा बजाकर समय का भान कराया जाता था। मंत्री ने रात तीन बजे छह का घंटा बजवा दिया। राजा बिस्तर से उठ गए। देखा बाहर खूब अंधेरा है। वह आश्चर्य में पड़ गए कि सुबह के छह बजे इतना अंधेरा कैसे। उन्होंने मंत्री से इसका कारण पूछा तो जवाब मिला कि अब सूरज अपने राज्य में नहीं आ पाएगा। नदी का पानी रुक जाने के कारण नाराज होकर पूरब के लोगों ने सूरज को इधर आने से रोक दिया है। राजा चिंतित हो गए कि तब तो अंधेरे में ही रहना होगा। घबराए राजा के अंदर डर से ही सही, विवेक का झटका आया और नदी पर बनी दीवार को तुरंत तोड़ने का आदेश दिया। जब तक दीवार टूटी, सूरज के निकलने का समय हो गया। राजा के चेहरे पर निश्चिंतता से उपजी खुशी तैर गई। ऐसे उदाहरण आज हमारे सामने भी हैं। जीवन-जगत विवेक से चलता है, सनक से नहीं। दोनों विपरीत ध्रुव हैं। दोनों की गति अलग-अलग है। एक सन्मति की ओर ले जाता है और दूसरा अधोगति की तरफ। सनक हमेशा सामनेवाले को पराजित और बर्बाद देखना चाहता है। उसका अपना होना ही सब कुछ होता है। दूसरे का होना उसे कांटे की तरह लगता है। उसे इस बात का भी भान नहीं रहता है कि उसकी सोच या कारगुजारी से कितना बड़ा नुकसान होता है।

६१) मैं का भाव छूटते ही विकृतियां ईश्वरीय चेतना में बदल जाती है- यूनानी दार्शनिक सुकरात समंदर के किनारे टहल रहे थे। उनकी नजर रेत पर बैठे एक अबोध बालक पर पड़ी, जो रो रहा था। सुकरात ने रोते हुए बालक का सिर सहलाते हुए उससे रोने का कारण पूछा। बालक ने कहा, यह जो मेरे हाथ में प्याला है, इसमें मैं समुद्र के सारे पानी को भरना चाहता हूं, किंतु यह मेरे प्याले में समाता ही नहीं। बालक की बात सुनकर सुकरात की आंखों में आंसू आ गए। सुकरात को रोता देख, रोता हुआ बालक शांत हो गया और चकित होकर पूछने लगा, आप भी मेरी तरह रोने लगे, पर आपका प्याला कहां है? सुकरात ने जवाब दिया, बच्चे, तू छोटे से प्याले में समुद्र भरना चाहता है और मैं अपनी छोटी सी बुद्धि में संसार की तमाम जानकारियां भरना चाहता हूं। बालक को सुकरात की बातें कितनी समझ में आईं यह तो पता नहीं, लेकिन दो पल असमंजस में रहने के बाद उसने अपना प्याला समंदर में फेंक दिया और बोला, सागर यदि तू मेरे प्याले में नहीं समा सकता, तो मेरा प्याला तो तेरे में समा सकता है।

बच्चे की इस हरकत ने सुकरात की आंखें खोल दीं। उन्हें एक कीमती सूत्र हाथ लग गया था। सुकरात ने दोनों हाथ आकाश की ओर उठाकर कहा, हे परमेश्वर, आपका असीम ज्ञान व आपका विराट अस्तित्व तो मेरी बुद्धि में नहीं समा सकता, किंतु मैं अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ आपमें जरूर लीन हो सकता हूं।

दरअसल, सुकरात को परमात्मा ने बालक के माध्यम से ज्ञान दे दिया। जिस सुकरात से मिलने के लिए बड़े बड़े विद्वानों को समय लेना पड़ता था, उसे एक अबोध बालक ने परमात्मा का मार्ग बता दिया था। असलियत में परमात्मा जब आपको अपनी शरण में लेता है, यानि जब आप ईश्वर की कृपादृष्टि के पात्र बनते हैं तो उसकी एक खास पहचान यह है कि आपके अंदर का मैं मिट जाता है। आपका अहंकार ईश्वर के अस्तित्व में विलीन हो जाता है।

६२) दृष्टिकोण सकारात्मक होने पर खुद समाधान निकल आता है - रामकृष्ण परमहंस के दो शिष्यों में कौन बड़ा के सवाल पर विवाद हो गया। एक सन्यास दीक्षा में बड़ा था, तो दूसरा ज्ञान में। लेकिन दोनों मैं बड़ा, तो मैं बड़ा पर

उलझ गए थे। अंत में इसका हल पाने के लिए वे गुरु के पास गए। दोनों ने अपनी-अपनी बातें रखीं और अपने अपने पक्ष में तर्क दिए। परमहंस ने मुस्कराते हुए कहा, जो दूसरे को बड़ा माने, वह बड़ा। अब यह तुम दोनों सोचो कि तुम्हारे में कौन बड़ा है। दोनों शिष्यों ने गुरु का निर्णय सुना। अब वे एक-दूसरे को बड़ा कहने लगे। जो दीक्षा में, सन्यास में बड़ा था वह कहने लगा- माथा मुंडाने से क्या होता है, महत्वपूर्ण है ज्ञान। आपने शास्त्र मेरे से ज्यादा पढ़े हैं और प्रभावशाली प्रवचनकार भी हैं। दूसरा बोला, शास्त्र-पाठ से क्या होता है। महत्व है तो साधना का। आप साधना में बड़े हैं, इसलिए आप श्रेष्ठ हैं।

इतनी देर दोनों मैं बड़ा के लिए झगड़ रहे थे, अब आप बड़े की जिद पर आ गए। लेकिन दोनों झगड़ों में बड़ा अंतर आ गया। पहले विवाद में कटुता थी, दूसरे में मधुरता है। पहले में आग्रह और अहम था, दूसरे में विनम्रता और मनुहार है। यह रूपांतरण कैसे हुआ? दरअसल दृष्टि बदली, घटनाओं का संदर्भ बदल गया। संदर्भ बदला कि अर्थ बदल गया। अर्थ बदलते ही वातावरण में परिवर्तन आ गया। जीवन सम-लय पर चला गया और फिर जगत नए रूप में आ गया।

६३) एक पक्ष से सोच कर लिया गया निर्णय ही टकराव पैदा करता है - प्रत्येक व्यक्ति के भीतर दो प्रकार की धाराएं प्रवाहित होती हैं। एक, अशुद्ध, अशुभ, दुष्ट भावों की धारा तो दूसरी शुद्ध, शुभ, उत्तम भावों की धारा। एकपक्षीय अशुभ दृष्टि का परिणाम होता है- जीवन में अविश्वास, असफलता का उदय। मैत्री, प्रेम, सहिष्णुता, क्षमा- ये शुभ भाव हैं। जीवन की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण सूत्र है- सभी दृष्टिकोणों से, सभी अपेक्षाओं से सोचना-विचारना।

दुनिया में अशुभ और दुष्ट भावों की धारा को प्रकट होने का बहुत अवसर मिलता है। निमित्त अनेक मिल जाते हैं। पग-पग पर इतने निमित्त हैं कि एकपक्षीय अशुभ भाव तो सहज ही उत्पन्न हो जाते हैं।

एक पक्षीय दुष्ट धारणा के कारण आदमी कितना बड़ा अनर्थ कर सकता है, यह इस घटना से समझा जा सकता है। शुभ और संतुलित चिंतन के लिए बात व विचार को सभी अपेक्षाओं से, सभी दृष्टिकोणों से समझने की आदत डालनी चाहिए। आदमी जब एक ही एक दृष्टि से, एक ही पक्ष को देखकर या सुनकर निर्णय लेता है, तब कलह, संघर्ष और युद्ध पैदा होते हैं।

भगवान महावीर के समय की घटना है। सम्राट श्रेणिक की महारानी चेलना सो रही थी। अचानक रानी के मुंह से निकला, वह बेचारा क्या करता होगा? सम्राट जाग रहा था। इन शब्दों ने उसके रोम-रोम में आग लगा दी। उसने सोचा, हो न हो, रानी किसी अन्य में आसक्त है। सुबह सम्राट ने महामंत्री अभयकुमार को बुलाकर कहा, मैं भगवान महावीर को वंदन करने जा रहा हूं। तुम महारानी चेलना के इस अन्त:पुर को जला देना। सम्राट श्रेणिक महावीर के पास पहुंचे तो सतियों का प्रसंग चल रहा था। महावीर कह रहे थे, महारानी चेलना सतियों में अग्रणी हैं। सम्राट को कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने बाद में प्रभु महावीर से पूछा, भगवन। कल रात को सोते हुए महारानी के मुंह से ये शब्द निकले, वह बेचारा क्या करता होगा? ये शब्द सतीत्व के अनुरूप हैं या उसके विपरीत?

भगवान बोले, कल महारानी चेलना वंदना करने आई थी। लौटते हुए उसने देखा एक वृक्ष के नीचे एक जैन मुनि कायोत्सर्ग साधना में ध्यानस्थ खड़े थे। वे निर्वस्त्र थे। भयंकर सर्दी थी। रानी वहां रुकी नहीं, वंदना कर चली गई। रात को जब वह सोई हुई थी, एक हाथ कंबल से बाहर रह गया। सर्दी के कारण वह जड़-सा हो गया। इसी पर उसके मन में ख्याल आया कि वह बेचारा मुनि इस भयंकर सर्दी में क्या करता होगा? सम्राट ने सुना और स्तंभित रह गया। तुरंत वहां से चला।

रास्ते में अभयकुमार मिला। सम्राट ने पूछा, क्या आदेश का पालन कर दिया? अभयकुमार बोला, हां महाराज। सम्राट ने कहा, अनर्थ हो गया। पूरी बात सुनकर अभयकुमार बोला- महाराज। आप चिंता न करें। मैंने आग तो लगाई है, पर उसे महल तक पहुंचने में पूरा दिन लगेगा।

६४) जिस काम में दिल गवाही दे वह ईश्वरीय प्रसाद से कम नहीं - एक बार एक बड़े वकील को फिल्म बनाने का शौक हुआ। उन्होंने एक दिग्दर्शक को साथ लिया और उससे कहा- देखो स्क्रिप्ट लिखने का काम मैं करूंगा। डायरेक्टर ने कहा- ठीक है। लेकिन इसके बाद उन्होंने कहा- मैं इस फिल्म में एक्टिंग भी करूंगा। दिग्दर्शक का मन तो मान नहीं रहा था, लेकिन उसने फिर भी हां कर दी क्योंकि पैसा वकील साहब ही लगा रहे थे।

फिल्म बनने का समय आया तो वकील साहब दिग्दर्शक भी बन बैठे। यहीं से सब कुछ गड़बड़ाने लगा और वही हुआ जिसका डर था। फिल्म अधूरी ही रह गई। यहां जितनी गलती वकील साहब ने की, उतनी ही गलती डायरेक्टर की भी रही। जैसे ही वकील साहब ने एक से ज्यादा भूमिकाओं की मांग की थी, वहीं डायरेक्टर को या तो हट जाना चाहिए था या फिर उनकी बात मानने से इनकार कर देना चाहिए था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

जिस काम की गवाही आत्मा दे, वही काम करें। जब आप अपनी आत्मा की आवाज नहीं सुनते तो ऐसा ही होता है। सवाल यह है कि लोग अपनी आत्मा की आवाज को अनसुना क्यों कर देते हैं? शायद इसलिए कि आत्मा का रास्ता लंबा लगता है। लिहाजा लोभ, लालच और स्वार्थ में फंसकर जल्दी सफलता पाने की कोशिश करते हैं और रास्ता भटक जाते हैं। ऐसे में बहुत से लोग आत्मसम्मान तक खो बैठते हैं। सांसारिक वातावरण के व्यवहार को अपनाना शुरू कर देते हैं।

६५) और उसे अपनी गलती का एहसास हो गया - ठाकुर रणवीर सिंह बहुत उदार और न्यायप्रिय व्यक्ति थे। उनके दीवान करमचन्द को भी उनकी सूझ-बूझ के लिए जाना जाता था। इसीलिए उनका वेतन सबसे ज्यादा था।

ठाकुर के निजी सेवक सुन्दर के अलावा रियासत के सभी लोग दीवान को बहुत मान देते थे और उससे सलाह लेते थे। सुन्दर को सदा यही शिकायत रहती थी कि वह दिन-रात ठाकुर की सेवा में लगा रहता है, मगर उसका वेतन दीवानजी से बहुत कम है। एक दिन ठाकुर अपनी रियासत का दौरा करने निकला। उसके साथ सुन्दर भी था। अकेले में मौका पाकर सुन्दर ने अपने दिल की बात ठाकुर से कह ही दी और विनती की कि उसको भी दीवानजी के बराबर वेतन मिलना चाहिए। रणवीर सिंह ने सुन्दर की बात सुनी और कहा, तुम ठीक कहते हो, हम तुम्हारी बात पर गौर करेंगे। इतने में शोर शराबे की आवाज सुनाई दी। ठाकुर ने सुन्दर से कहा, जाकर देखो कि यह शोर कैसा है। सुंदर ने आकर बताया कि हुजूर वे बंजारे हैं। वो तो ठीक है, मगर कहां से आए हैं? ठाकुर ने पूछा।

सुन्दर गया और वापस आकर बोला, राजस्थान से आए हैं। यहां क्यों आए हैं? ठाकुर ने फिर पूछा। सुन्दर फिर गया और आकर बताया, हुजूर, वो कठपुतली का नाच दिखाते हैं। सुन्दर, जाकर पता तो करो कि क्या ये लोग आज रात हमें कठपुतली का नाच दिखाएंगे? सुन्दर पूछकर आया और बताया, हां वे रात को कठपुतली का नाच दिखाएंगे। अब तक सुन्दर को समझ नहीं आ रहा था कि ठाकुर छोटी-छोटी बातों के लिए उसे क्यों परेशान कर रहे हैं? इतने में दीवान का वहां आना हुआ। ठाकुर ने उससे भी यही सवाल किया कि वह पता लगाए यह शोर कैसा है? दीवान गया और उसने थोड़ी देर

में आकर बताया, ये लोग राजस्थान के बंजारे हैं, कठपुतली का नाच दिखाते हैं। सुना है कि ये लोग अपने काम में बहुत माहिर हैं। इसलिए मैंने आज रात महल में उन्हें अपनी कला दिखाने को कह दिया है।

सुन्दर यह सब देख-सुन रहा था। इससे पहले कि ठाकुर कुछ कहता उसे अपनी गलती का एहसास हो चुका था। वह हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला, अन्नदाता आज आपने मेरी आंखें खोल दीं। मैं जहां हूं वहीं ठीक हूं। मैंने दीवानजी से खुदकी तुलना की इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूं।

६६) बैंगन की चोरी और तेनालीराम की चतुराई - राजा कृष्णदेवराय को प्रकृति से बड़ा ही प्रेम था। उनके राज्य में अनेक बाग बगीचे थे। एक बार राजा ने दरबारियों को दावत दी, जिसमें बैंगन की सब्जी भी परोसी गई। तेनालीराम ने घर आकर अपनी पत्नी से बैंगनों की प्रशंसा की। पत्नी ने तेनालीराम से कहा- इतने स्वादिष्ट बैंगन कम से कम एक बार तो मुझे भी खिलाओ। राजा अपने बाग के पौधों के बारे में बड़े सावधान रहते हैं। उनके बाग में चोरी करनेवालों का सिर काट लिया जाता है। तेनालीराम ने कहा। देखो, कम से कम एक बार तो मेरी इच्छा पूरी कर दो, पत्नी बोली।

तेनालीराम को अपनी पत्नी के आगे हार माननी पड़ी। एक रात वह चुपके से राजा के बाग से दस-बारह बढ़िया बैंगन तोड़कर ले आया। उसकी पत्नी ने बड़े परिश्रम और लगन से उसकी बेहद स्वादिष्ट तरकारी बनाई। वाह, वाह क्या बढ़िया बैंगन हैं, तेनालीराम की पत्नी ने चखते हुए कहा- अपने बेटे को भी कम से कम चखा तो देने चाहिए। ऐसा गजब न कर देना। छह साल का बच्चा। अचानक कभी मुंह से बात निकल गई तो? तेनालीराम बोला।

यह कैसे हो सकता है? कुछ ऐसा सोचो कि वह बैंगन खा भी ले और चोरी भी साबित न हो, तेनालीराम की पत्नी बोली। बहुत अच्छा, तेनाली राम ने कहा। काफी देर सोचने के बाद एकाएक उसने एक बाल्टी में पानी भरा और खुली छत पर, जहां बच्चा सोया हुआ था, खूब सारा पानी उस पर छिड़क दिया। फिर उसे उठाकर कहा वर्षा हो रही है अंदर चलो। अंदर ले जाकर उसने बच्चे के कपड़े बदलवाए। उसके बाद उसे बैंगन की तरकारी खाने को दी। फिर यह कह कर कि वर्षा हो रही है, उसे अंदर ही सुला दिया।

अगले दिन राजा को बैंगनों की चोरी का पता चला गया। राजा ने चोर पकड़नेवाले को काफी बड़ा पुरस्कार देने की घोषणा की। प्रधानमंत्री अप्पाजी को तेनालीराम पर शक था। उसने राजा को अपना विचार बताया। मैं जानता हूं कि वह बहुत चतुर है। वह किसी न किसी बहाने बच निकलेगा। उसके बेटे को बुलवाओ। सभी सच्चाई पता चल जाएगी, राजाने कहा। तेनालीराम के बेटे को बुलवाया गया। उससे पूछा गया, कल रात को तुमने कौन सी सब्जी खाई थी? बैंगन की सब्जी। बहुत ही स्वादिष्ट थी, बच्चे ने कहा। प्रधानमंत्री अप्पाजी ने तेनालीराम से कहा, अब तो तुम्हें अपना अपराध स्वीकार करना ही पड़ेगा। बिल्कुल नहीं, तेनाली राम ने कहा, यह तो कल रात बहुत ही जल्दी सो गया था। यों ही ऊटपटांग बातें कर रहा है। अवश्य इसने सपना देखा होगा। मैं अभी सारी बात साफ किए देता हूं।

इससे पूछिए कि कल रात मौसम कैसा था? कल रात को बड़ी मूसलधार वर्षा हुई थी। प्रधानमंत्रीजी मेरे सारे कपड़े भीग गए थे, बच्चे ने कहा। रात को तो एक बूंद भी पानी नहीं पड़ा था।

६७) सेवा का संकल्प - एक दिन एक महानुभाव सबेरे-सबेरे टहल कर अपनी कुटिया पर लौटे। उन्होंने कुटिया के बाहर एक दीन-हीन व्यक्ति को पड़ा पाया। उसके शरीर से मवाद बह रहा था। वह कुष्ठरोग से पीड़ित था। उस व्यक्ति ने

अपनी धीमी आवाज में महानुभाव को हाथ जोड़ते हुए कहा, मैं आपके दरवाजे पर शांतिपूर्वक मरने आया हूं। रोगी की इस हालत से उन महानुभाव का हृदय द्रवित हो उठा, पर उसे वह आश्रय कैसे दें। वे अकेले तो थे नहीं, कुटिया में और भी बहुत से भाई-बहन रहते थे। क्षणभर मन में द्वंद्व रहा। अंत में वे कुटिया में चले गए। अंतर्द्वंद्व ने संघर्ष का रूप धारण कर लिया। अंतर से आवाज आई, तू अपने को सेवक कहता है। इंसानियत की सेवा का दावा करता है और दूसरी ओर उस दुखी, बेबस आदमी को ठुकराता है? अंदर से ही दूसरी आवाज ने जवाब दिया, मेरे लिए तो कोई बात नहीं है, पर दूसरे लोग ऐसे रोगी को रखना पसंद नहीं करेंगे। ठीक है, तब तू मानव-जाति की सेवा करने का दम भरना छोड़ दे। इस बार आवाज में खीझ थी। संघर्ष और तीखा हुआ। अंत में उन्होंने निश्चय किया कि जो व्यक्ति सही मायने में अपने कर्तव्य का पालन करता है वह दूसरों की नाराजगी की परवाह क्यों करे? जो आशा लेकर आया है, जीवन के अंतिम क्षण में शांति पाना चाहता है उसे मायूस कैसे किया जा सकता है। इस निश्चय के बाद उन्होंने अपने बराबर की कोठरी खाली कराई और असाध्य रोगी को उसमें रखा। इतना ही नहीं, मानवता के उस पुजारी ने अपने हाथ से रोगी के घाव धोए, मवाद साफ किया और दवा लगाई। रोगी बराबर वहां रहा और परमशांति के साथ उसकी जीवन-लीला समाप्त हुई। वह महानुभाव थे बापू, जिनके लिए मानव सर्वोपरि था और सेवा जिनके लिए जीवन का चरम लक्ष्य थी। रोगी थे संस्कृत के प्रकांड विद्वान परचुरे शास्त्री।

६८) राजा की चतुराई - बात उन दिनों की है, जब सिकंदर महान विश्व विजय करने के लिए समूचे लाव-लश्कर के साथ निकला हुआ था। कई देशों को जीतते हुए वह एक छोटे से देश में पहुंचा और उसे भी जीत लेने के लिए युद्ध प्रारंभ कर दिया। मगर वहां का राजा फिलिप बड़ा ही समझदार था। उसकी कुशाग्र बुद्धि के चर्चे दूर-दूर तक थे। सिकंदर की ताकत देखकर उसने सोच समझकर अपनी रणनीति बनाई। रणनीति के तहत उसने अपनी संपूर्ण सेना मोर्चे पर खड़ी कर दी और युद्ध का नगाड़ा बजते ही युद्ध समाप्ति की घोषणा कर दी। युद्ध समाप्ति की घोषणा होते ही सिकंदर के सैनिकों ने राजा फिलिप को कैद कर लिया। उसे सिकंदर के सामने पेश किया गया। सिकंदर बोला- अब तुम हमारे गुलाम हो और हम तुम्हारे शासक। मगर तुमने बिना लड़े ही हार क्यों मान ली? फिलिप ने जवाब दिया- बादशाह, आपकी सेना के सामने हमारी सेना कुछ भी नहीं। इस युद्ध में हमारी हार निश्चित थी, तो फिर बेगुनाहों का खून बहाकर क्या लाभ होता? फिलिप के जवाब से प्रभावित होकर सिकंदर ने उसकी बेड़ियां खुलवा दीं। तभी वहां उन्हें कोलाहल सुनाई दिया। राजा फिलिप ने सिकंदर से पूछा- यह बाहर क्या हो रहा है? सिकंदर बोला- हमारे सैनिक आपके शहर में तबाही मचा रहे हैं और लोगों को लूट रहे हैं। फिलिप बुद्धिमानी दिखाते हुए कहने लगा- मगर बादशाह, अब यह मेरा नहीं, बल्कि आपका ही शहर है। आप अपने ही शहर और अपनी ही प्रजा को लूट रहे हैं। क्या इसीलिए लोग आपको सिकंदर महान कहते हैं? सिकंदर एक बार फिर राजा फिलिप की बुद्धि का कायल हो गया। उसने तुरंत कत्लेआम और लूटपाट को रुकवाने का आदेश दिया और कहा कि यहां के लोग सचमुच सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें फिलिप जैसा राजा मिला है। उस देश की बागडोर फिलिप को ही सौंपकर वह वापस लौट गया।

६९) संकल्प की शक्ति - मेरी के ऐश किशोरावस्था में ही व्यवसाय की ओर आकर्षित हो गई थीं। मगर अनुभव हासिल करने के लिए कहीं काम करना जरूरी था। सो वह घरेलू सामान और सफाई के उत्पाद बेचनेवाली एक कंपनी से

जुड़ गईं। मेरी बहुत मन से काम करती थीं, लेकिन महिला होने के कारण उन्हें यहां नजरअंदाज किया जाता था। यह बात उन्हें खलती थी। उन्हें लगता था कि व्यवसाय का अच्छा चलना तभी संभव है जब काम करनेवाले कर्मचारियों को प्राथमिकता मिले। पर वह किससे कहतीं। यहां उनकी सुनता ही कौन। वह चुपचाप अपना काम करती रही। पर उस दिन उनके सब्र का बांध टूट गया जब उनसे जूनियर सहयोगी पुरुष को उन्हीं का सुपरवाइजर बना दिया गया। उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद कॉस्मेटिक्स का अपना कारोबार शुरू करने की कोशिशों में लग गईं। दुर्भाग्यवश उसी बीच उनके पति की हार्ट अटैक से मौत हो गई। पति की असमय मौत के बावजूद मेरी ने हार नहीं मानी और डलास में मेरी के कॉस्मेटिक्स की शुरूआत की। ऐश की अनोखी रणनीतियों की बदौलत एक साल के भीतर उनकी कंपनी की बिक्री ८,००,००० डॉलर तक पहुंच गई। उनकी सेल्स टीम में तीन हजार कंसल्टेंट शामिल थे। ऐश अच्छा प्रदर्शन करने वाले कंसल्टेंट को हीरों के गहने और महंगी कारें तोहफे में देती थी। इस कारण कर्मचारी उनसे बेहद प्रसन्न रहते थे। २००१ में ८३ साल की उमर में उनका देहांत हुआ। मगर उनकी बनाई कंपनी उनके बाद भी उनके बताए रास्ते पर आगे बढ़ती रही। २०११ में मेरी के कॉस्मेटिक्स सीधी बिक्री करनेवाली दुनिया की छठी सबसे बड़ी कंपनी बन गई। इस तरह मेरी के ऐश ने दुनिया को दिखा दिया कि यदि महिला एक बार दृढ़ निश्चय करके काम करना आरंभ कर दे तो उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं झुका सकती।

७०) सच्चा प्रेम - संत सदना का पेशा था तो कसाई का, लेकिन जीव-हिंसा से वह द्रवित हो उठते थे। आजीविका का कोई अन्य उपाय न होने से वह दूसरे कसाइयों से मांस खरीदकर बेचा करते। बचपन से ही हरिकीर्तन में रुचि होने के कारण वे सदा लीलामय पुरुषोत्तम के नाम जप, गुणगान और चिंतन में लगे रहते। मांस तौलते समय बाट रूप में जिस पत्थर का प्रयोग करते, वस्तुत: वह भगवान शालिग्राम थे जिससे वे अनभिज्ञ थे। बाट समझकार उससे वह मांस तौला करते। एक दिन एक साधु उनकी दुकान के सामने से जा रहे थे कि उनकी नजर तराजू में रखे शालिग्राम पर पड़ी। मांस विक्रेता के तराजू पर भगवान को देख उन्हें क्रोध आया। उन्होंने सदना से उसे मांग लिया और उसकी विधिपूर्वक पूजा कर अपने पूजाघर में रख दिया। मगर भगवान तो प्रेम के भूखे हैं, मंत्र या विधि की वे जरा भी अपेक्षा नहीं करते। उन्होंने रात में साधु को स्वप्न में कहा, सदना के यहां मुझे बड़ा सुख मिलता था, वहां से उठाकर तुम मुझे यहां क्यों ले आए? मांस तौलते समय उसका स्पर्श पाकर मैं बड़े आनंद का अनुभव करता था। उसके मुख से निकले शब्द मुझे मधुर स्त्रोत जान पड़ते थे। यहां मैं घुटन महसूस कर रहा हूं। अच्छा होता तुम मुझे वहीं पहुंचा देते। जागने पर साधु महाराज तुरंत शालिग्राम लेकर सदना के पास पहुंच गए। उन्हें बताया कि यह कोई बाट या पत्थर नहीं, बल्कि साक्षात शालिग्राम भगवान हैं। यह सुन सदना को पश्चाताप हुआ। मन ही मन बोले, मैं भी कितना पापी हूं कि भगवान को अब तक अपवित्र स्थल पर रखता रहा। उन्हें पश्चाताप की मुद्रा में देख साधु ने उन्हें अपने सपने की बात बताई और कहा कि भगवान को और कुछ नहीं चाहिए। वह तो बस सच्चे प्यार के भूखे हैं जो आपसे उन्हें मिल रहा है।

७१) नम्रता और आत्मविश्वास - बात उस समय की है जब डॉ. जाकिर हुसैन विशेष अध्ययन के लिए जर्मनी गए हुए थे। वहां पर अपरिचित लोगों से मित्रता करने का बड़ा रिवाज था। जब भी दो अनजान व्यक्ति एक दूसरे को अपना

नाम बता कर हाथ मिलाते तो मान लिया जाता कि वे आपस में दोस्त बन चुके हैं। डॉ. जाकिर हुसैन के परिचय का दायरा अभी ज्यादा नहीं बढ़ा था, लेकिन वे यहां के चलन से परिचित होने लगे थे। ऐसे में एक दिन कॉलेज वार्षिकोत्सव के मौके पर उनके साथ छोटा सा हादसा हो गया। कार्यक्रम का समय हो चुका था सभी विद्यार्थी व शिक्षक उत्सव के लिए निर्धारित स्थल पर पहुंच रहे थे। जाकिर साहब भी तेजी से उधर ही जा रहे थे। जैसे ही उन्होंने कॉलेज में प्रवेश किया, जल्दबाजी वह एक व्यक्ति से टकरा गए। जिनसे टकराए वे उसी कॉलेज के सीनियर प्रोफेसर थे। प्रफेसर ने गुस्से में उनकी तरफ देखते हुए कहा, ईडियट। पलभर को जाकिर साहब असमंजस में रहे, फिर मुस्कुराते हुए अपना हाथ आगे की ओर बढ़ा दिया बोले, मैं जाकिर हुसैन भारत से यहां पढ़ने के लिए आया हुआ हूं। जाकिर साहब की हाजिरजवाबी देखकर शिक्षक महोदय का गुस्सा गायब हो गया। वह भी मुस्कराते हुए बोले, बहुत खूब। आपकी हाजिरजवाबी ने मुझे प्रभावित कर दिया। इस तरह परिचय देकर आपने हमारे देश के रिवाज को भी मान दिया है और साथ ही मुझे मेरी गलती का अहसास भी करा दिया है। वाकई हम अनजाने में एक-दूसरे से टकराए थे। ऐसे में मुझे क्षमा मांगनी चाहिए थी। अपशब्द नहीं बोलने चाहिए थे। डॉ. जाकिर हुसैन ने अपनी हाजिरजवाबी से शिक्षक महोदय को भी उनकी गलती का अहसास करा दिया। ऐसा आचरण वही लोग कर सकते हैं जिनमें जाकिर हुसैन की तरह विनम्रता और आत्मविश्वास दोनों का अद्भुत मेल हो।

७२) संत की सीख - जापान में एक शहर है ओसाका। शहर के निकट एक गांव में एक विद्वान संत रहते थे। एक दिन संत अपने एक अनुयायी के साथ सुबह की सैर कर रहे थे। अचानक एक व्यक्ति उनके निकट आया और उन्हें भला-बुरा कहने लगा। संत मुस्कराकर चल दिए। संत पर कोई असर न देख वह व्यक्ति परेशान हो गया। वह गुस्से से तमतमा उठा और उनके पूर्वजों को गालियां देने लगा। फिर भी संत मुस्कराते रहे। संत पर जब कोई असर नहीं हुआ तो वह व्यक्ति निराश होकर रास्ते से हट गया। उस व्यक्ति के जाते ही एक अनुयायी ने संत से पूछा कि आपने उस दुष्ट की बातों का कोई जवाब क्यों नहीं दिया, वह बोलता रहा और आप मुस्कराते रहे। क्या आपको उसकी बातों से जरा भी कष्ट नहीं हुआ? संत कुछ नहीं बोले और अपने अनुयायी को पीछे आने का इशारा किया। कुछ देर बाद संत के साथ वह अनुयायी कक्ष में पहुंचा। संत बोले, तुम यहीं रुको मैं अंदर से अभी आता हूं। कुछ देर बाद संत अपने कमरे से निकले तो उनके हाथों में कुछ मैले कपड़े थे। उन्होंने बाहर आकर उस अनुयायी से कहा, ये लो तुम अपने कपड़े उतारकर इन्हें धारण कर लो। उस व्यक्ति ने देखा कि उन कपड़ों में बड़ी तेज दुर्गंध है, उससे अजीब सी बदबू आ रही थी। अनुयायी ने उस कपड़े को हाथ में लेते ही उन कपड़ों को दूर फेंक दिया। संत बोले, अब समझे? जब कोई तुमसे बिना मतलब के भला-बुरा कहता है तो तुम क्रोधित होकर उसके फेंके हुए अपशब्द धारण कर लेते हो, लेकिन दूसरे के गंदे कपड़े नहीं पहन सकते। जिस तरह तुम अपने साफ सुथरे कपड़ों की जगह ये मैले कपड़े धारण नहीं कर सकते, उसी तरह मैंने भी उस आदमी के फेंके हुए अपशब्दों को धारण नहीं किया। यही वजह थी कि मुझे उसकी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ा।

७३) विद्वान की पराजय - आदि शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच सोलह दिन तक लगातार शास्त्रार्थ चला। इस शास्त्रार्थ में मंडन मिश्र की धर्म पत्नी देवी भारती को निर्णायक बनाया गया था। हार-जीत का निर्णय होना बाकी था। इसी बीच देवी भारती को किसी आवश्यक कार्य से कुछ समय के लिए वहां से बाहर जाना पड़ गया। जाने से पहले देवी भारती

ने दोनों ही विद्वानों के गले में एक-एक माला डालते हुए कहा, ये दोनों मालाएं मेरी अनुपस्थिति में आपकी हार जीत का फैसला करेंगे। यह कहकर देवी भारती वहां से चली गईं। शास्त्रार्थ की प्रक्रिया आगे चलती रही। कुछ देर बाद देवी भारती अपना कार्य पूरा करके वापस लौट आईं। उन्होंने अपनी निर्णायक नजरों से शंकाचार्य और मंडन मिश्र को बारी बारी देखा और अपना निर्णय सुना दिया। उनके फैसले के अनुसार आदि शंकराचार्य विजयी घोषित किए गए और उनके पति मंडन मिश्र की पराजय हुई थी। सभी दर्शक हैरान हो गए कि बिना किसी आधार के इस विदुषी ने कैसे अपने पति को ही पराजित करार दे दिया। एक विद्वान ने देवी भारती से नम्रतापूर्वक जिज्ञासा की, हे देवी, आप तो शास्त्रार्थ के मध्य ही कहीं और चली गईं थीं, फिर वापस लौटने पर आपने ऐसा फैसला कैसे दे दिया? देवी भारती ने मुस्कराकर जवाब दिया- जब भी कोई विद्वान शास्त्रार्थ में पराजित होने लगता है, जब उसे हार की झलक दिखने लगती है तो स्वाभाविक रूप से वह क्रुद्ध हो उठता है। आप लोग गौर करें कि मेरे पति के गले की माला उनके क्रोध के ताप से सूख चुकी है, जबकि शंकराचार्य जी की माला के फूल अभी भी पहले की भांति ताजे हैं। इससे ज्ञात होता है कि इस शास्त्रार्थ में आदि शंकराचार्य की ही विजय हुई है। विदुषी देवी भारती की यह बात सुनकर उनके फैसले पर सवाल उठानेवालों का मुंह बंद हो गया।

७४) माता की शिक्षा - विनोबा भावे के बचपन की घटना है। उनका मित्र भी उनके घर में साथ रहा करता था। कभी कभी घर में बासी भोजन बचा रहना स्वाभाविक है। उनकी माता भोजन फेंकने के विरुद्ध थीं, इसलिए बचा भोजन मिल-जुलकर थोड़ा-थोड़ा खा लिया जाता था। ऐसे अवसर पर माता विनोबा को बासी भोजन देकर उनके मित्र को ताजा खिलाने का प्रयास करती थीं। विनोबा को इस पर कोई आंतरिक विरोध नहीं था। किंतु परिहास में उन्होंने मां से कहा, मां, आपके मन में अभी भेद है। मां प्रश्नवाचक दृष्टि से उनकी ओर देखने लगीं। विनोबा ने हंसते हुए कहा, मां, देखो न, आप मुझे बासी भोजन देती हैं और मेरे साथी को ताजा। मां की उदारता को पक्षपात की संज्ञा देकर, विनोबा ने परिहास किया था, किंतु माता ने उसे दूसरे ढंग से लिया। बोलीं, बेटा, तू ठीक कहता है। मानवीय दुर्बलताएं मुझमें भी है। तुझमें अपना बेटा दिखता है तथा अभ्यागत में अतिथि। इसे ईश्वर रूप अतिथि मानकर, सहज ही मेरे द्वारा यह पक्षपात हो जाता है। तुझे बेटा मानने के कारण तेरे प्रति अनेक प्रकार का स्नेह मन में उठता है। जब तुझे भी सामान्य दृष्टि से देख सकूंगी, तब पक्षपात की आवश्यकता नहीं रह जाएगी। बात कहीं की कहीं पहुंच गई थी, पर विनोबा को प्रसन्नता हुई। माता का एक और उज्ज्वल पक्ष उनके सामने आया। समाज के संतुलन तथा आध्यात्मिकता की पकड़ का महत्वपूर्ण सूत्र उन्हें मिल गया। पक्षपात मनुष्य के अंत:करण को सहन नहीं होता। व्यक्ति अभाव स्वीकार कर लेता है, पक्षपात नहीं। अपने को पक्षपात से मुक्त अनुभव करनेवाला अंत:करण ही संतोष का अनुभव करता है। बालक विनोबा ने माता की शिक्षा गांठ बांध ली। संत विनोबा जी की समदर्शिता का यही गुण विकसित होकर समाज में आज भी व्यापक प्रभाव डाल रहा है।

७५) मन में हो विश्वास - जापान का प्रसिद्ध सेनापति नोबुनागा कम सैनिकों व थोड़े साधनों से ही अपने समर्थ विरोधियों के छक्के छुड़ा देने के लिए प्रख्यात था। वह अपने साथियों का मनोबल बढ़ाए रखने की कला में बहुत कुशल था। युद्ध सन्निकट था, लेकिन सैनिकों की संख्या काफी कम थी। युद्ध जीतना भी था। अत: सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए उसने एक तरकीब निकाली। उन्हें लेकर देवता के मंदिर में गया और सिक्के उछालकर देवता की इच्छा सिद्ध

करने लगा। सिक्के चित पड़ें तो जीत, पट पड़ें तो हार समझी जानी थी। सिक्के तीन बार उछाले गए। तीनों ही बार चित पड़े। सभी हर्ष से नाचने लगे, तालियां बजाते हुए चिल्लाने लगे कि जीत, जीत, जीत। लड़ाई लड़ी गई। चार गुनी अधिक संख्या वाली विपक्षी सेना को उन बहादुरों ने तोड़-मरोड़कर रख दिया और विजय का डंका बजाते हुए वापस लौटे। अभिनंदन समारोह में नोबुनागा ने उसे सैनिकों की नहीं, उनके मनोबल की विजय बताया और रहस्य खोलते हुए वे सिक्के दिखाए, जो उछाले गए थे। वे इस चतुराई के साथ ढाले गए थे कि दोनों ओर वही निशान था, जो चित कहा जाता था। उन्होंने सैनिकों को समझाया कि आत्मविश्वास से बड़ी कोई शक्ति नहीं, वह असंभव को भी संभव कर दिखाती है।

७६) श्रम की सुगंध - वनवास के दौरान श्रीराम कुटिया में बैठे थे कि उनका शबरी से मिलने का मन हुआ। मन की बात मानते हुए वह शबरी के पास पहुंचे तो देखा कि वहां चारों ओर फूल ही फूल खिले थे जिनकी खुशबू से सारा वन महक रहा था। हर फूल से भीनी-भीनी सुगंध आ रही थी। श्रीराम ने जिज्ञासावश शबरी से फूलों के खिलने की वजह पूछी, तो वह बोलीं- भगवन, इसके पीछे एक घटना है। यहां बहुत समय पहले मातंग ऋषि का आश्रम था। यहां बहुत से ऋषि-मुनि और विद्यार्थी रहते थे। एक बार चातुर्मास के समय आश्रम में ईंधन समाप्त होनेवाला था। वर्षा होने से पहले सूखी लकड़ियां लाने की जरूरत थी। आलस्यवश विद्यार्थी लकड़ी लेने वन में नहीं जा रहे थे। विद्यार्थियों की उदासीनता देखकर स्वयं वृद्ध मातंग ऋषि ने अपने कंधे पर कुल्हाड़ी रखी और लकड़ियां काटने जंगल की ओर चल पड़े। गुरु को जाते देखा तो विद्यार्थी भी उनके पीछे चले। मातंग ऋषि ने सूखी लकड़ियां काटीं और उन्हें बांधकर अपने कंधे रख सभी लोग आश्रम की ओर लौटने लगे। मातंग ऋषि आगे चल रहे थे और विद्यार्थी उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। अचानक एक विद्यार्थी ने देखा कि वृद्ध आचार्य के शरीर से पसीने की बूंदें टपक रहीं हैं। लेकिन आश्चर्य तो यह था कि जहां-जहां आचार्य और शिष्यों के पसीने की बूंदें गिरीं, वहां-वहां सुंदर फूल खिल उठे। वही फूल बढ़ते-बढ़ते आज सारे वन में फैल गए है। यह उस श्रम का प्रभाव है कि वे कुम्हलाते नहीं हैं और चारों ओर अपनी मधुर सुगंध फैला रहे हैं। भगवान श्रीराम ने जब यह सुना तो उनको आश्चर्य हुआ और वे कह उठे- यह तो श्रम की महक है, सादगी की महक है, त्याग की महक है। ये फूल पसीने के फूल हैं। श्रम एवं पवित्रता से जो अपना जीवन महकाते हैं, उनकी महक सदियों तक कायम रहती है।

७७) कवि का जवाब - अमेरिकन चिकित्सक एवं कवि ओलिवर वेंडेल होम्स कद से थोड़े छोटे थे। उनके छोटे कद के कारण लोग अक्सर उन पर व्यंग्य किया करते थे। हालांकि वह बेहद हाजिरजवाब एवं बुद्धिमान थे। उनके प्रतिद्वंद्वी उनकी सफलता एवं यश से ईर्ष्या करते थे। एक बार ओलिवर एक महत्वपूर्ण मीटिंग में गए। हॉल खचाखच भरा हुआ था। वहां आए लगभग सभी व्यक्ति उनसे लंबे थे। यह देखकर उनके दो प्रतिद्वंद्वी उनके पास आए। पहला बोला, सर, आपका कार्य हमेशा उत्कृष्ट होता है। आज भी आप मीटिंग में अपने बढ़िया विचार ही लिखकर लाएं होंगे। ओलिवर मुस्कराकर बोले, जी, बिल्कुल सही कहा आपने। मैं हमेशा अपने कार्य को पूर्ण तन्मयता और निष्ठा से ही करता हूं। दूसरा प्रतिद्वंद्वी बोला, यह तो बहुत अच्छी बात है। शायद ही कारण है कि आज तक आपको कोई भी पराजित नहीं कर सका है। उसकी बात सुनकर ओलिवर सहज रूप से मुस्करा दिए। उनकी मुस्कराहट को देखकर पहला प्रतिद्वंद्वी बोला, सर, आप बेहद बुद्धिमान, मेहनती, एकाग्र और कल्पनाशील हैं। आप सर्वगुण संपन्न हैं सिवाय एक बात को छोड़कर। यह

बोलते ही दूसरा प्रतिद्वंद्वी बोला, बिल्कुल सर। अब देखिए न, इस मीटिंग में हम सब कद में लंबे हैं और आप हमारे बीच में सबसे छोटे हैं। ऐसे में लंबे कद के लोगों के बीच स्वयं को देखकर आपको छोटापन महसूस हो रहा होगा। इस पर पहला प्रतिद्वंद्वी दूसरे से बोला, अरे, इस बारे में तुम अपनी राय मत दो। सर से ही पूछते हैं कि सर को इस समय कैसा महसूस हो रहा है? दोनों प्रतिद्वंद्वियों का आपसी वार्तालाप सुनकर ओलिवर सहज भाव से मुस्करा कर बोले, मुझे इस समय ऐसा महसूस हो रहा है कि बड़ी बड़ी चट्टानों के बीच में केवल एक ही हीरा है। यह सुनकर दोनों झेंप गए और वे चुपचाप खिसक लिए।

७८) चंपा और बांस - बहुत दिनों पहले एक राजा रहता था। उनकी दो रानियां थी। दोनों ही नि:संतान थीं। राजा सभी मंदिरों में पूजा-पाठ करता था। फिर भी उनके संतान न हुई। एक बार एक संन्यासी उस राज्य से गुजरे। राज्य के दरबारियों के विनती करने पर उस महात्मा संन्यासी को दरबार में ससम्मान बुलाया गया। राजा ने संन्यासी से संतान न होने की व्यथा बताई और अपनी दोनों रानियों को संन्यासी के सत्कार में लगा दिया। बड़ी रानी उसी वक्त तैयार हो गई और महात्मा का बड़ा सत्कार किया। छोटी रानी ने महात्मा के फटे कपड़ों को देखकर उनकी सेवा करने से इनकार कर दिया।

महात्मा ने बड़ी रानी को खूब आशीर्वाद दिया और कहा, बहुत जल्द ही यहां बच्चों की आवाज सुनाई देगी। कुछ ही दिनों में बड़ी रानी गर्भवती हो गई। यह खबर पाकर राजा बहुत खुश हुआ। बड़ी रानी का सम्मान बहुत बढ़ गया। उधर छोटी रानी के मन में ईर्ष्या हो रही थी। सोच रही थी कि अभी से बड़ी रानी का इतना आदर हो रहा है, न जाने बच्चे के पैदा होने के बाद कितना होगा। उसने राजमहल की दाई को बुलवाया उसे धन देकर अपने साथ शामिल कर लिया। समय पर रानी ने दो बच्चों को जन्म दिया एक बेटी, एक बेटा। दाई ने तुरंत बच्चों को एक झांपी में रखकर ले गई और रानी के पास दो पत्थर रख दिए। बड़ी रानी जब पत्थरों को देखकर उदास हो गई उधर राजा खुशी से झूमते हुए बड़ी रानी के पास पहुंचे और जब उन्होंने देखा बड़ी रानी दो पत्थरों को आश्चर्य से ताक रही है, राजा वहीं रुक गया और दाई से पूछने लगे क्या बात है। दाई ने कहा, बच्चे नहीं, पत्थर पैदा हुए हैं। राजा को बहुत गुस्सा आया। बड़ी रानी को उसी वक्त बंदी गृह में कैद कर दिया। पूरे राजमहल में ये बात फैला कि बड़ी रानी ने ईंट-पत्थर को जन्म दिया है। उधर छोटी रानी ने दो चौकीदारों को बुलाकर झांपी दे दी और उन्हें मारने को कहा। चौकीदार झांपी लेकर जंगल में गए। झांपी खोलकर बच्चों को देखा, तब दोनों ने तय किया कि बच्चों को वहीं छोड़ देंगे। भगवान बच्चों की रक्षा करेंगे। दोनों महल वापस आकर रानी से मारने की झूठी बात बता दी। कुछ दिनों बाद राजा ने बड़ी रानी को फिर से महल में रहने दिया। वह फिर पूजा-पाठ करती रहती। पूजा के लिए फूल लाने सिपाही को भेजती। एक दिन आसपास कोई फूल नहीं मिला। सिपाही जंगल से फूल लाने गया। जंगल में सिपाही ने देखा सुंदर चंपा के फूल लगे हुए थे। चंपा और बांस का झाड़ पास-पास उगे हुए थे। सिपाही फूल तोड़ने के लिए जैसे ही नजदीक आया, चम्पा के झाड़ ने कहा ए भैया बांस राजा के सिपाही फूलवा तोड़े बर आए है। बांस ने कहा- लग जा बहिनी आकाश कहते ही चम्पा का झाड़ ऊपर की ओर बढ़ने लगा, और सैनिक फूल तक नहीं पहुंच पाए। सैनिक दौड़ते हुए सेनापति के पास पहुंचे और उन्हें सारी बात बताई। सेनापति ने उनकी बातों पर विश्वास ही नहीं किया। सैनिकों के आग्रह पर सेनापति सैनिकों के संग चल पड़े जैसे ही सेनापति चम्पा और बांस के पास पहुंचे, फिर से पहले जैसे ही हुआ और चम्पा का झाड़ ऊपर उठ गया। सेनापति डर गया। दौड़ते हुए पहुंचे मंत्री के पास। अब मंत्री चल

पड़े देखने के लिए। चम्पा को ऊपर से दूर तक दिखाई दे रहा था, उसने देख लिया कि मंत्री जी आ रहे हैं। मंत्री जी जैसे ही पेड़ तक पहुंचे, पेड़ और ऊपर हो गया। मंत्री जी सीधे पहुंचे राजा के दरबार में। राजा को पूरा हाल सुनाया। बात सुनकर राजा भी पहुंचे। बड़ी रानी भी उन सबके साथ चल पड़ीं। चम्पा के झाड़ को ऊपर से सब कुछ दिखाई दे रहा था। जैसे ही वे सब पास पहुंचे। चम्पा ने कहा- ए भैया बांस छोटी रानी संग राजा फूल तोड़े बर आए है। लग जा बहिनी आकाश सुनते चम्पा का झाड़ और भी ऊंचा हो गया। राजा दोनों पेड़ों के पास पहुंचकर पूछने लगे क्या बात है तुम दोनों भाई-बहन हो कैसे चम्पा और बांस बन गए?

उसी वक्त बड़ी रानी वहां तक पहुंची। चम्पा ने कहा ए भैया बांस बांस ने कहा- काय बहिनी चम्पा चम्पा ने कहा हमर महतारी, दुखियारी बड़ी रानी है फुलवा तोड़े बार आवथे। परो बहिनी पांव। चम्पा जमीन में बड़ी रानी के पैरों को छूने लगा। इसके बाद चम्पा और बांस का झाड़ भी झुककर बड़ी रानी के पैरों को छूने लगा। इसके बाद चम्पा और बांस ने राजा को सारी बात बताई। राजा ने उसी वक्त छोटी रानी को बंदीग्रह में डालने का आदेश दिया। रानी बड़े दुख से दोनों को देख रही थी। ये दोनों मनुष्य कैसे बनेंगे? बड़ी रानी दोनों से लिपटकर रोने लगी। जैसे ही आंसूओं ने चम्पा और बांस को छुआ, चम्पा और बांस मनुष्य बन गए। बेटा, बेटी को बड़ी रानी ने गले से लगा लिया। राजा रानी दोनों बच्चों के साथ खुशी-खुशी राजमहल की ओर चल पड़े।

७९) उसके कदम घर की ओर लौट रहे थे - जब स्कूल से घर आकर गोपी ने अपना बैग फर्श पर फेंका तो उसमें से कुछ फटी हुई कॉपियां और पुस्तकें बाहर निकल कर बिखर गईं। उसकी माताजी, जो पहले ही किसी कारण निराश-सी बैठी थी, उन्होंने जब यह देखा तो उनका पारा चढ़ गया। उन्होंने एकदम उसके गाल पर थप्पड़ जड़ दिया और बोली, मॉडल स्कूल में पढ़ते हो। वहां यही सब सिखाते हैं क्या? कितने दिन से देख रही हूं। कभी बैग फेंक देते हो, कभी मोजे और जूते निकालकर इधर-उधर मारते हो। सुबह से शाम तक जी तोड़कर काम करती हूं। फिर कहीं जाकर मुश्किल से हजार रुपया महीना मिलता है। पता है, कैसे पढ़ा रही हूं तुझे? देखो तो सही, क्या हालत बनाई है कॉपी-किताबों की। शर्म नहीं आती क्या?

गोपी के पिताजी की एक हादसे में मृत्यु हो गई थी। घर का गुजारा बड़ी मुश्किल से चल रहा था। उसकी माताजी को यह चिंता भी रहती थी कि गोपी पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं लेता। उधर गोपी को अपनी मां पर गुस्सा आ रहा था। पलंग पर पड़ा वह रोता रहा। अचानक उसके दिमाग में एक विचार कौंधा, क्यों न मैं पास वाले शहर में अपने दोस्त हैपी के पास चला जाऊं। माताजी ढूंढेगी तो परेशान तो होंगी।

बस, फिर क्या था। वह मां के घर से निकलने का इंतजार करने लगा और जैसे ही वह पड़ोस में किसी काम से गईं, वह चुपके से घर से बाहर निकल लिया और बड़े-बड़े कदम भरता हुआ चलने लगा। चलने से पहले उसने मां के पर्स से बीस रुपये का एक नोट भी निकाल लिया। कुछ देर बाद गोपी की माताजी घर आ गईं। जब उन्हें गोपी कहीं नजर नहीं आया तो वह उसे ढूंढने लगीं। फिर उन्होंने सोचा कि वह अपने किसी दोस्त के पास गया होगा, थोड़ी देर में आ जाएगा। धीरे-धीरे अंधेरा घिरने लगा और रात हो गई। गोपी अभी तक नहीं लौटा था। उसकी मां की चिंता बढ़ने लगी। वह इस बात से

बिलकुल बेखबर थीं कि वह कभी किसी साइकिल या स्कूटर से लिफ्ट लेता हुआ दूसरे शहर पहुंच गया होगा। हैपी के पिताजी की इस शहर में बदली हो गई थी। इसलिए वह गोपी का स्कूल छोड़कर चला गया था।

गोपी अभी हैपी के घर वाली गली में दाखिल हुआ कि उसने देखा, एक लड़का खंभे की ट्यूब की रोशनी में पढ़ने में व्यस्त था। वह उसके पास गया और उसे एकटक देखता रहा। फिर उसने पूछा, क्या कर रहे हो भाई? उस लड़के ने नजर उठाई और बोला, पढ़ रहा हूं। यह कहकर वह फिर पढ़ने लगा। गोपी के दूसरे प्रश्न ने उसका ध्यान भंग कर दिया। गोपी का सवाल था- कौन सी कक्षा में पढ़ते हो? उत्तर मिला- दसवीं कक्षा में। कौन से स्कूल में? गोपी की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी। स्कूल में नहीं प्राइवेट।

वह लड़का कुछ और पढ़ना चाहता था, लेकिन गोपी के सवालों ने उसका मन उचाट कर दिया। वह अपनी पुस्तकें समेटने लगा। उसका हर रोज रात को साढ़े दस बजे तक पढ़ने का नियम था। बातों बातों में गोपी को यह पता चल गया कि उस लड़के के माता-पिता नहीं है और वह साइकिल की एक दुकान पर मरम्मत का काम करता है।

इतने मेहनती लड़के की बातें सुनकर गोपी सन्न रह गया। उसे यह भी पता चला किया वह हर साल आधे मूल्य पर पुरानी किताबें खरीदकर पढ़ता है। गोपी ने उसकी पुस्तकें देखीं तो मन ही मन उसे शर्म आई। वह सोचने लगा, उसकी मां तो उसे नई किताबें खरीदकर देती हैं और वह उनका ऐसा हाल बना लेता है जैसे वह दो तीन साल पुरानी हों।

गोपी के मन को एकदम झटका सा लगा। अपनी पुस्तकों और शिक्षा के प्रति ऐसा स्नेह? इतनी मेहनत? उसे अपने से ग्लानि सी होने लगी। वह उस लड़के को दूर तक जाते हुए देखता रहा। फिर वह सोचने लगा, उसने जो कुछ भी किया, अच्छा नहीं किया। उसने फैसला किया कि वह मां को सारी असलियत बता देगा और माफी मांग लेगा। अब वह अपनी किताबें भी संभाल कर रखेगा। गोपी काफी देर तक यही सब सोचता रहा। हालांकि एकबारगी उसका मन हुआ भी कि वह सामने दिख रहे हैपी के घर की घंटी बजा दे, लेकिन न जाने क्या सोच कर उसने ऐसा नहीं किया। अब उसके कदम तेजी से पीछे की तरफ लौट रहे थे, अपने घर की तरफ।

८०) राजा कृष्णदेव का मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया - दिल्ली का एक प्रसिद्ध व्यक्ति, जो हाथ की सफाई से तरह-तरह के जादू के खेल दिखाया करता था, एक बार विजयनगर गया और उसने तरह-तरह के खेल दिखाए। उसने पत्थरों को स्वर्ण मुद्राओं में बदल दिया। उसने अपना सिर काटकर अपने हाथ से पकड़कर राजा को दिखाया। वह राजा से बोला- महाराज, आपके राज्य में कोई मेरा मुकाबला नहीं कर सकता।

मेरी चुनौती है कि जो भी आकर मुझे इस कला से हराएगा, मेरा सिर उसके सामने हाजिर है। राजा को उसकी शेखी बहुत बुरी लगी। उसने तेनालीराम से कहा- अगर तुम इस व्यक्ति का अभिमान तोड़ दो तो तुम्हें राजकोष से एक हजार स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी। मुझे स्वीकार है, महाराज, तेनालीराम ने कहा।

तेनालीराम उस जादूगर के पास पहुंचा और बोला- क्यों इतनी शेखी बघार रहे हो? मेरा दावा है कि जो मैं अपनी बंद आंखों के साथ कर सकता हूं, वह तुम अपनी खुली आंखों से नहीं कर सकते। क्यों बेकार की बात करते हो? जादूगर ऐंठते हुए बोला- अगर तुम बंद आंखों के साथ एक भी ऐसा काम कर सकते हो जो मैं खुली आंखों के साथ नहीं कर सकता तो

मैं अपना सिर तुम्हारे हवाले कर दूंगा।

ठीक है। तेनालीराम ने कहा और उसने पिसी हुई मिर्च मंगवाई और आंखें बंद करके एक-एक मुट्ठी मिर्च दोनों आंखों के ऊपर डाल ली। एक मिनट तक उसने आंखें बंद ही रखीं और मुस्कुराता रहा। उसके बाद मिर्च हटाकर उसने अपने पलकें धो डाली और जादूगर से कहा- जो मैंने बंद आंखों के साथ किया है, वह अब तुम अपनी खुली आंखों के साथ करो।

जादूगर ने हार मान ली, बोला, मेरा सिर आपके आगे हाजिर है। मुझे तुम्हारे सिर की जरूरत नहीं है। मैं महाराज से मिलनेवाले पुरस्कार से ही संतुष्ट हूं, तेनाली राम ने कहा, इस तरह राजा कृष्णदेव राय का मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया।

८१) दोस्ती के लिए - तीन दोस्त उनके करीब परेशान बैठे थे। बार बार पूछने पर भी वह अपनी परेशानी नहीं बता रहे थे। चाय पीते हुए उन्होंने सबसे कहा, अपनी परेशानी बताते हो या हम चाय छोड़कर चले जाएं? तब उनमें से एक बोला, क्या बताएं दोस्त, बड़ा ख्वाब था अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में पढ़ने का, बड़ी जद्दोजहद करके यहां तक पहुंच भी गए, मगर अब आगे का सफर मुश्किल लगता है। हम सब अपनी सारी मेहनत, जान-पहचान लगा चुके हैं। हममें से किसी की भी फीस भरने का इंतजाम नहीं हो सका है। अब लगता है कि एएमयू छोड़ना ही पड़ेगा। इतना ही साथ बहुत था दोस्त, कम से कम हमने एएमयू की सरजमीन तो देख ली। सुनकर उसने टोका, बस, इतनी सी बात है? फीस के पैसे मुझसे लो और यहीं रहो। सब दोस्तों को उसकी स्थिति का अंदाजा था। शुरू में उन सबने उसको रोकने की कोशिश की, लेकिन उसके दबाव के आगे सबको झुकना पड़ा। वह हॉस्टल पहुंचा और बैग में रखे सारे रुपए निकालकर दोस्तों को दे दिए। सबकी फीस जमा हो गई और उनकी पढ़ाई चलती रही। मगर उनकी फीस देनेवाला घर लौटा तो महीना भर यूनिवर्सिटी वापस ही नहीं आया। दोस्तों ने खूब छानबीन की, मगर कुछ पता नहीं चला। अरसे बाद पता चला कि उसने अपनी फीस और एएमयू में रहने के लिए मिलने वाला सारा खर्च दोस्तों की फीस के लिए दे दिया था। जिसकी वजह से उसको क्लास भी छोड़नी पड़ी और हॉस्टल भी, क्योंकि उसके पास खर्च करने को कुछ बचा ही नहीं था। जब दोस्तों को यह बात बता चली तो सबने अपना सिर पीट लिया। उसने उन सबके लिए अपना भविष्य ही दांव पर लगा दिया था। यह थे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रफी अहमद किदवई। तभी तो उनके दोस्त रफियन कहलाते थे। दोस्तों के लिए मर मिटनेवाले।

८२) गणित पर फतह - वह गणित में बहुत कमजोर था। इसकी वजह से उसके सहपाठी और अध्यापक उसे बुद्धू समझते थे। उसके साथी उसके कोट के पीछे बुद्धू लिखी पर्ची चिपका देते थे और फिर सभी उसकी हंसी उड़ाया करते थे। सहपाठियों का ऐसा करना उसे अच्छा नहीं लगता था। वह अपने सहपाठियों से कहता, माना कि मैं गणित में कमजोर हूं, किंतु इसका यह अर्थ तो नहीं कि तुम सब मिलकर मेरा इस तरह मजाक उड़ाओ। लेकिन विरोध करने पर सहपाठी और दूने वेग से उसका मजाक उड़ाते। जब उससे सहन न हुआ तो उसने एक-दो लड़कों के साथ लड़ाई-झगड़ा भी किया, अपने अध्यापकों से उनकी शिकायत भी की। चुप रहने और कक्षा में पीछे बैठने की वजह से अध्यापक उसकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं देते थे। एक दिन तो कक्षा में एक अध्यापक ने भी उस पर व्यंग्य कसते हुए कहा, यह बुद्धू और किसी विषय में तो फिर भी पास हो सकता है, लेकिन गणित में तो सात जन्मों में भी सफल नहीं हो सकता। अध्यापक का यह व्यंग्य बालक के कोमल हृदय को भेद गया। तब उसने सोचा, इस तरह विरोध करने, लड़ने-

झगड़ने या शिकायत करने से कोई लाभ नहीं दिख रहा है। क्यों न मैं इन सबको गलत साबित कर दूं। उस दिन के बाद उसने कमर कसकर दिन-रात पूरी लगन के साथ गणित का अध्ययन शुरू कर दिया। प्रारंभ में उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उसने हिम्मत न हारी। गणित पर फतह हासिल करना उसका लक्ष्य बन गया और वह दिन रात गणित में ही डूबा रहने लगा। उसका खाना-पीना, सोना जागना, उठना-बैठना सब गणित ही बन गया। गणित के ज्ञान ने विज्ञान में उसकी इतनी दिलचस्पी पैदा कर दी कि बचपन में बुद्धू कहलाने वाला वह बालक सुप्रसिद्ध गणितज्ञ और महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टाइन बना।

८३) स्वावलंबन की सीख - ग्रीस में किलेंथिस नामक एक बालक एथेंस के तत्ववेत्ता जीनो की पाठशाला में पढ़ता था। किलेंथिस बहुत ही गरीब था। उसके बदन पर पूरे कपड़े भी नहीं होते थे। लेकिन पाठशाला की फीस वह नियमित रूप से भर देता था। वह पढ़ने में इतना तेज था कि बाकी विद्यार्थी उससे ईर्ष्या करते थे। उनमें से कुछ ने यह संदेह भी किया कि किलेंथिस फीस के जो पैसे देता है वह कहीं से चुरा कर लाता होगा, क्योंकि उसके पास तो पहनने के पूरे कपड़े भी नहीं है। एक दिन उसके साथियों ने ईर्ष्यावश उसे चोर बताकर पकड़वा दिया। मामला अदालत में गया। किलेंथिस ने निर्भयता के साथ जज से कहा, मैं पूरी तरह निर्दोष हूं। मुझ पर चोरी का दोष बिल्कुल गलत लगाया गया है। मुझे दो गवाह पेश करने की इजाजत दी जाए। अदालत की मंजूरी से गवाह बुलाए गए। पहला गवाह था एक माली। उसने कहा, यह बालक दिन में मेरे बगीचे में कुएं से पानी खींचता है और मैं इसे मजदूरी के रुप में कुछ पैसे देता हूं। दूसरी गवाह एक वृद्ध महिला थी। उस महिला ने कहा- मैं बूढ़ी हूं मेरे घर में कोई काम करनेवाला नहीं है। यह बालक प्रतिदिन मेरे घर पर आटा पीसता है और कुछ काम भी कर जाता है। इसके बदले में मैं इसे कुछ पैसे दे देती हूं। किलेंथिस के अपने निर्वाह के साथ-साथ पाठशाला की फीस भरने की नेक कमाई की बात सुनकर जज बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे सहायता देनी चाही, परंतु उसने दान लेना स्वीकार नहीं किया। उसने कहा- मैं स्वयं परिश्रम करके ही पढ़ना चाहता हूं। किसी से दान लेने के स्थान पर स्वावलंबी बनकर आगे बढ़ना ही मेरे माता-पिता ने मुझे सिखाया है। बाल्यकाल में समाविष्ट उत्तम संस्कार ही व्यक्ति को आगे चलकर महामानव बनाते हैं और समाज को श्रेष्ठ नागरिक देते हैं।

८४) डॉजसन बने कैरोल - चार्ल्स एल. डॉजसन ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी में गणित के प्रोफेसर थे। गणित पर उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं। उन्हें बच्चों को काल्पनिक कहानियां सुनाने का बहुत शौक था। एक बार उन्होंने कुछ बच्चों को एक कथा सुनाई, जिसमें एक बच्ची नींद में जादुई संसार में पहुंच जाती है। यह कथा बच्चों को बहुत पसंद आई। उन्होंने रेवरेंड चार्ल्स एल. डॉजसन से उस कहानी को लिखने के लिए कहा। काफी समय बीत गया। एक दिन उनका एक मित्र घर आया। वह चार्ल्स की अलमारी में पुस्तकें देखने लगा। वहीं उसके हाथ एक धूल जमी पांडुलिपि लगी। पांडुलिपि का शीर्षक एलिस इन वंडरलैंड था। शीर्षक देखकर उन्होंने उसे पढ़ना शुरू किया तो अंत तक पढ़कर ही दम लिया। इसके बाद वह उसे प्रकाशित करने के लिए ले गए। एलिस इन वंडरलैंड के लेखक लुइस कैरोल थे। कुछ ही समय में इस पुस्तक ने सफलता के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। लोग इस किताब के लेखक लुइस कैरोल से मिलने के लिए बेचैन होने लगे। आखिरकार लेखक ने स्वयं को सार्वजनिक करने की ठान ली। जब वह लोगों से रुबरु हुए तो लोग उन्हें देखकर दंग रह

गए, क्योंकि वह तो प्रोफेसर चार्ल्स एल. डॉजसन थे। उन्होंने कहा कि जब उनके मित्र ने इस पुस्तक को प्रकाशित कराने की जिद की तो उन्होंने उसे छद्म नाम से प्रकाशित कराने के लिए कहा। उन्हें लग रहा था कि लोग उनके द्वारा बच्चों की लिखी हुई पुस्तक देखकर उन्हें गंभीरता से नहीं लेंगे और सोचेंगे कि वह बच्चों की कहानियां लिखता है। हैरानी तो उन्हें तब हुई, जब लोग उन्हें एलिस इन वंडरलैंड के लेखक लुइस कैरोल के नाम से ही जानने लगे। इसके बाद उन्होंने अपने छद्म नाम को ही अपना लिया। आज भी असंख्य लोग लुइस कैरोल से तो परिचित है जबकि चार्ल्स एल.डॉजसन को कम ही जानते हैं।

८५) राजा ने खुश होकर तेनालीराम को महल दिया - राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम पर प्रसन्न होकर उन्हें अपना एक महल एक वर्ष के लिए दे दिया। कुछ दरबारियों को यह बात खल गई। उन्होंने मंत्री और सेनापति के साथ मिलकर अफवाह फैला दी कि उस महल में भूत रहते हैं। यह बात तेनालीराम ने हंसी में टाल दी, मगर उस महल में उन्हें रात बितानी कठिन हो गई। रातभर उन्हें चलते-फिरते अजीब-अजीब आकार दिखाई दिए।

उन्होंने राजा कृष्णदेव राय से शिकायत की, महल में भूत हैं। दरबारी हंसने लगे। राजा ने चुटकी ली, हमने आज तक भूत नहीं देखा। आज हम तुम्हारे कक्ष में रहेंगे और भूत देखेंगे।

रात को राजा और तेनालीराम कक्ष में छिपकर बैठ गए। आधी रात बीत गई। कोई विचित्र घटना नहीं घटी। अचानक कहीं पास में किसी के गिरने की आवाज आई। राजा और तेनालीराम ने देखा कि कुछ काली आकृतियां गिरती-पड़ती भाग रही हैं। राजा तलवार खींचकर गरजे, रुक जाओ, वरना मार डालूंगा।

आकृतियां रुक गईं। राजा ने गौर से देखा तो चकित रह गए। काले लबादों में सेनापति, राज पुरोहित और उसका पुत्र था। पूछताछ से पता चला कि वही तीनों महल में उत्पाद मचानेवाले थे, ताकि तेनालीराम को राजा की दृष्टि में डरपोक, सनकी और वहमी बना सकें। उस रात तीनों एक टांड पर छिपकर यह देखने-सुनने को बैठे थे। मगर उनको यह पता न था कि तेनालीराम ने वह टांड उसी दिन कच्ची लकड़ी से इस तरह बनवाया था कि अधिक बोझ न संभाल सके।

राजा ने प्रसन्न होकर वह महल तेनालीराम को सदा के लिए दे दिया।

८६) धूप के धुआं को कोई कैसे नाप सकता है - एक बार की बात है। राजा कृष्णदेव का दरबार लगा था। महाराज दरबारियों के साथ हल्की-फुल्की चर्चा में व्यस्त थे कि अचानक चतुराई पर चर्चा निकल आयी। सभी दरबारियों का कहना था कि तेनालीराम से और भी बुद्धिमान लोग आपके दरबार में हैं, लेकिन तेनालीराम हर मामले में टांग अड़ा देते हैं। इसलिए किसी को अपनी बुद्धिमानी साबित करने का मौका ही नहीं मिलता है। यह सुनकर महाराज समझ गये कि सभी दरबारी तेनालीराम के खिलाफ हैं। कुछ देर वे सोचते रहे। फिर उनकी नजरें अचानक ठाकुरजी के सामने जलती एक धूप बत्ती पर टिक गयी। महाराज ने कोने में जलती उस धूप बत्ती की ओर इशारा करके कहा कि जो भी दरबारी इस धूप बत्ती का दो हाथ धुआं नापकर बता देगा, उसे तेनालीराम से चतुर समझा जायेगा। सम्राट का प्रश्न सुनकर सभी दरबारी चकित रह गये। सोचने लगे ये कैसा मूर्खतापूर्ण प्रश्न है। धुआं कोई कैसे नाप सकता है। जब सभी दरबारी थक हारकर बैठ गये, तो एक दरबारी बोला- महाराज यह काम असंभव है। हां, यदि तेनालीराम इस काम को कर देगा तो हम उसे अपने अधिक चतुर मान लेंगे। महाराज कृष्णदेव ने मुस्कराते हुए तेनालीराम की तरफ

देखा- क्यों तेनालीराम, क्या तुम्हें दरबारियों की चुनौती स्वीकार है?

तेनालीराम बोले- महाराज मैं कोशिश कर सकता हूं। तेनालीराम ने एक सेवक को बुलाकर उसके कान में कुछ कहा। सेवक तत्काल गया और शीशे की दो हाथ लंबी एक नली लेकर दरबार में हाजिर हुआ। तेनालीराम ने धूप बत्ती उठाकर उस नली के मुंह पर लगा दी। धुआं नली में भरने लगा। कुछ ही देर में पूरी नली धुएं से भर गयी। तेनालीराम ने कपड़ा ठूंस कर नली का मुंह बंद कर दिया। फिर उसे महाराज की तरफ बढ़ा कर बोले- लीजिए महाराज, हाजिर है दो हाथ धुआं। महाराज अब तेनालिराम की चतुराई पर मुस्कुरा रहे थे और अन्य दरबारियों की बोलती बंद थी।

८७) सफल होने लक्ष्य अवश्य निर्धारित करें - सुंदरबन इलाके मे रहनेवाले ग्रामीणों पर हर समय जंगली जानवरों का खतरा बना रहता था। खासतौर पर जो युवक घने जंगलों में लकड़ियां चुनने जाते थे उन पर कभी भी बाघ हमला कर सकते थे। यही वजह थी कि वे सब पेड़ों पर तेजी से चढ़ने-उतरने का प्रशिक्षण लिया करते थे। प्रशिक्षण, गांव के ही एक बुजुर्ग दिया करते थे, जो अपने समय में इस कला के महारथी माने जाते थे। आदरपूर्वक सब उन्हें बाबा-बाबा कहकर पुकारा करते थे। बाबा कुछ महीनों से युवाओं के एक समूह को पेड़ों पर तेजी से चढ़ने-उतरने की बारीकियां सिखा रहे थे और आज उनके प्रशिक्षण का आखिरी दिन था। बाबा बोले, आज आपके प्रशिक्षण का आखिरी दिन है, मैं चाहता हूं, आप सब एक एक बार इस चिकने और लम्बे पेड़ पर तेजी से चढ़-उतर कर दिखाएं।

सभी युवक अपना कौशल दिखाने के लिए तैयार हो गए। पहले युवक ने तेजी से पेड़ पर चढ़ना शुरू किया और देखते-देखते पेड़ की सबसे ऊंची शाखा पर पहुंच गया। फिर उसने उतरना शुरू किया और जब वो लगभग आधा उतर आया तो बाबा बोले, सावधान, जरा संभल कर, आराम से उतरो, कोई जल्दबाजी नहीं। युवक सावधानी पूर्वक नीचे उतर आया। इसी तरह बाकी के युवक भी पेड़ पर चढ़े और उतरे और हर बार बाबा ने आधा उतर आने के बाद ही उन्हें सावधान रहने को कहा। यह बात युवकों को कुछ अजीब लगी और उन्हीं में से एक ने पूछा, बाबा, हमें आपकी एक बात समझ में नहीं आई, पेड़ का सबसे कठिन हिस्सा तो एकदम ऊपर वाला था, जहां पे चढ़ना और उतरना दोनों ही बहुत कठिन था, आपने तब हमें सावधान होने के लिए नहीं कहा, पर जब हम पेड़ का आधा हिस्सा उतर आए और बाकी हिस्सा उतरना बिलकुल आसान था तभी आपने हमें सावधान होने के निर्देश क्यों दिए?

बाबा गंभीर होते हुए बोले, बेटे। यह तो हम सब जानते हैं कि ऊपर का हिस्सा सबसे कठिन होता है, इसलिए वहों पर हम सब खुद ही सतर्क हो जाते हैं और पूरी सावधानी बरतते हैं। लेकिन जब हम अपने लक्ष्य के समीप पहुंचने लगते हैं तो वह हमें बहुत ही सरल लगने लगता है। हम जोश में होते हैं और अति आत्मविश्वास से भर जाते हैं और इसी समय सबसे अधिक गलती न कर बैठो। युवक बाबा की बात समझ गए, आज उन्हें एक बहुत बड़ी सीख मिल चुकी थी। मित्रों, सफल होने के लिए लक्ष्य निर्धारित करना बहुत ही जरूरी है और ये भी बहुत जरूरी है कि जब हम अपने लक्ष्य को हासिल करने के करीब पहुंच जाएं, मंजिल को सामने पाएं तो काई जल्दबाजी न करें और पूरे धैर्य के साथ अपना कदम आगे बढ़ाएं।

८८) तीन मछलियों का झुंड - एक नदी के किनारे उससे जुड़ा एक बड़ा-सा तालाब था। लंबी-लंबी घास और झाड़ियों से घिरे होने की वजह से वह तालाब किसी को आसानी से नजर हीं नहीं आता था। उसमें तीन मछलियों का

झुंड रहता था। स्वभाव से तीनों अलग थीं। मीना संकट आने के लक्षण मिलते ही उसे टालने का उपाय करने में विश्वास रखती थी। पूमी का मानना था कि संकट आने पर चतुराई से बचने का प्रयत्न करो। जबकि निम्मो का सोचना था कि संकट को टालने या उससे बचने की चिंता करना बेकार है। हमारे सोचने से कुछ नहीं होता। होता वही है, जो किस्मत में लिखा हैं।

एक दिन शाम को कुछ मछुआरे नदी में मछलियां पकड़कर घर जा रहे थे। बहुत कम मछलियां उनके जाल में फंसी थीं। तभी उनकी नजर झाड़ियों के ऊपर पक्षियों के झुंड पर गयी, सबकी चोंच में मछलियां दबी थीं। वे चौंके उन्होंने अनुमान लगाया कि झाड़ियों के पीछे जरूर कोई तालाब है। थोड़ी देर बाद जब वे तालाब के करीब पहुंचे तो खुशी से झूम उठे। एक ने कहा, यहां हमें ढेर सारी मछलियां मिलेंगी। इस तालाब के बारे में तो हमें पता नहीं था। दूसरे ने कहा, अब तो शाम हो चली है। कल सुबह आकर यहां जाल डालेंगे। तीनों मछलियों ने भी उनकी बातें सुन ली थीं। मीना ने कहा, साथियों अब हमारा यहां रहना ठीक नहीं। समय रहते जान बचाने का उपाय करना चाहिए। मैं तो नहर के रास्ते नदी में जा ही रही हूं। पूमी बोली, तुम्हें जाना है तो जाओ, मैं तो नहीं आ रही। अभी खतरा आया कहां है। निम्मो बोली, हो सकता है मछुआरे न भी आयें या उनकी जाल चूहे कुतर जायें। फिर ये भी तो जरूरी नहीं है कि मैं ही उनकी जाल में फंसू। इस तरह मीना तो वहां से चली गयी, लेकिन पूमी और निम्मो वहीं रह गयी। सुबह मछुआरे तालाब में मछलियां पकड़ने लगे। संकट देख पूमी बचाव का उपाय सोचने लगी। उसे याद आया कि तालाब में काफी दिनों से एक उद्‌बिलाव की लाश तैर रही है। वही जल्दी से उस लाश के पेट में घुस गयी और उसकी दुर्गंध को अपने ऊपर लपेट कर बाहर निकली। कुछ ही देर में वह मछुआरे के जाल में फंस चुकी थी। मछुआरे ने जब जाल में से मछलियों को निकाल कर एक तरफ फेंका तो सभी तड़प रही थीं। मछुआरे ने उसे उठाकर देखा तो उसके शरीर की दुर्गंध से उन्हें लगा कि यह तो मरी हुई है। उन्होंने पूमी को तालाब में फेंक दिया। किस्मत के भरोसे रहनेवाली निम्मो ने अन्य मछलियों की तरह तड़प-तड़प कर प्राण त्याग दिया। अपना कर्म ही अंतत: काम आता है। भाग्य के भरोसे बैठे रहनेवाले को कुछ हाथ नहीं लगता।

८९) स्वर्ग का टिकट - धनीराम तीर्थयात्रा पर निकले। कुछ आवश्यक सामान व एक हजार अशर्फियां थैले में डालकर साथ ले गए थे। रात्रि विश्राम के लिए एक धर्मशाला में रुके। वहां उनकी मुलाकात पड़ोस के गांव के एक गृहस्थ बांकेलाल से हुई। बांकेलाल एक गरीब किसान था। धरम करम में भी उसकी रुचि थी और वह भी तीर्थयात्रा के लिए ही निकला था। धर्मशाला में ही एक आदमी एक कोने में पड़ा कराह रहा था। दोनों यात्री उठकर उसके करीब गए। उसने इशारे से समझाया कि वह चार दिनों से भूखा था। इतना सुनते ही धनीराम कन्नी काटने के इरादे से बांकेलाल से बोले- मैं बहुत थक गया हूं और मुझे नींद भी आ रही है। तुम देखो क्या माजरा है। मैं सोने जा रहा हूं। कुछ जरूरत होगा तो बताना।

धनीराम तो सोने चले गए। बांकेलाल ने पहले उस आदमी को भोजन कराया जो उसने कल के लिए बचा रखा था। उसे भोजन कराकर बांकेलाल को आत्मसंतुष्टि का अहसास हुआ। भोजन के बाद भी वह आदमी लगातार कराह रहा था। बांकेलाल ने उसे छूकर देखा। वह आदमी भीषण ज्वर से तप रहा था। बांकेलाल ने धनीराम से उसकी हालत के बारे में

बताया। धनीराम ने रुखेपन से कहा, इसमें मैं क्या कर सकता हूं? मैं कोई वैद्य तो नहीं? सुबह भोर में ही धनीराम आगे की यात्रा के लिए प्रस्थान कर गए और बांकेलाल ने उस आदमी के इलाज के लिए उसके पास जो थोड़ी पूंजी बची थी सभी खर्च कर दी। अब उसके पास आगे की तीर्थयात्रा के लिए पैसे नहीं बचे थे। सो मन ही मन भगवान से क्षमायाचना करता हुआ अपने घर वापस आ गया। कुछ ही दिनों बाद धनीराम भी तीर्थयात्रा कर गांव वापस आ गए। चारों ओर सेठजी के दान के ही चर्चे थे। एक हजार अशर्फियों का दान कोई कम थोड़े ही था। बहुत दिन बीते। धनीराम का देहावसान हो गया। यमराज के दरबार में हाजिर होते हुए धनीराम सोच रहे थे मैंने तो बहुत दान पुण्य किया है मुझे स्वर्ग अवश्य मिलेगा। इससे पहले कि यमराज कुछ फैसला सुनाते, यमदूतों ने बांकेलाल की आत्मा को यमराज के सामने पेश किया। उसे देखते ही यमराज ससम्मान उठ खड़े हुए और यमदूतों को हिदायत देते हुए बोले, इन्हें सम्मान सहित दिव्य रथ पर बैठा कर स्वर्ग में पहुंचा आइये। सभी देवता इनका वहां इंतजार कर रहे हैं।

धनीराम विस्मय से बोले, महाराज। शायद आपसे कोई गलती हो रही है। यह बांकेलाल तो अपनी यात्रा भी पूरी नहीं कर पाया था जबकि मैंने भगवतदर्शन के साथ ही हजार अशर्फियों का बड़ा चढ़ावा भी भगवान को चढ़ाया था। इस हिसाब से तो स्वर्ग का हकदार मैं ही हुआ ना?

यमराज मंद मंद मुस्कराते हुए बोले मूर्ख मानव। तुम्हारे इन अशर्फियों का हम क्या करें? क्या तुम अपने आपको इतना सक्षम मानने लगे हो कि तुम हमें कुछ दे भी सकते हो? करुणा, दया, प्रेम जिस हृदय में होता है भगवान का वास भी वहीं होता है। वह हर पल तुम्हारे साथ होता है और तुम्हारी हर हरकत पर उसकी पैनी निगाह रहती है। धर्मशाला में तुम दोनों की परीक्षा स्वयं भगवान ने ली थी जिसमें तुम अपने निजी स्वार्थ के कारण अनुत्तीर्ण साबित हुए हो जबकि बांकेलाल अपनी सहृदयता के कारण भगवान का प्रिय बन गया है और उन्होंने स्वयं ही उसे अपने पास बुलाया है। धन संपत्ति और रुतबे का रौब दिखाकर तो तुम अपने लिए संसार के सभी भौतिक सुख खरीद सकते हो लेकिन स्वर्ग का टिकट नहीं।

९०) पिता का सच्चा प्यार - एक दिन एक ११ साल की लड़की ने अपने पिता से पूछा- आप मेरे १५ वें जन्मदिन पर मुझे क्या देनेवाले हो? उस लड़की के पिता ने जवाब दिया- बेटी, अभी तो बहुत समय बाकी है।

जब वह लड़की १४ साल की हुई तब वह अचानक से एक दिन बेहोश हो गई और जल्दी ही उसे अस्पताल में भर्ती किया गया। तभी डॉक्टर आए और उन्होंने बताया कि उस लड़की के हृदय में खराबी है और वह जल्द ही मरनेवाली है।

जब वह लड़की अस्पताल में पलंग पर लेटी हुई थी तभी उसने अपने पिता से कहा- डैडी, क्या डॉक्टर ने आपको बताया कि मैं मरनेवाली हूं। पिता ने रोते हुए कहा- नहीं तुम जीनेवाली हो।

लड़की ने कहा- आपको ये कैसे पता कि मैं जीनेवाली हूं?

तभी पिता ने दरवाजे से मुंह मोड़ते हुए कहा- मुझे पता है।

जब उसकी तबियत ठीक होने लगी थी जब वह १५ साल की होनेवाली थी। एक दिन वह ठीक हो गई और अपने घर वापस आ गई जहाँ पलंग पर उसे एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था- मेरी प्यारी बेटी, जब तुम ये पत्र पढ़ रही होगी, तब अस्पताल में मैंने तुम्हें जो कहा था, वह सच हो चुका होगा। एक दिन तुमने मुझसे पूछा था कि तुम्हारे १५वें जन्मदिन पर

मैं तुम्हें क्या दूंगा? तब मुझे कुछ पता नहीं था लेकिन अभी तुम्हारे लिए मेरा उपहार मेरा दिल है। उसके पिता ने अपनी बेटी की जान के लिए अपना दिल दान किया था।

हमेशा अपने माता-पिता से प्यार कीजिए, क्योंकि हमारी खुशी के लिए वे कई चीजों का त्याग करते हैं, जिसका हमें पता भी नहीं होता है। बहुंत से समय हम जीवन में अपने आपको बड़ा बनाने में व्यस्त होते हैं और जिन्होंने हमें बड़ा किया उन्हें ही भूल जाते हैं। चाहे हम कितने ही व्यस्त क्यों ना हो, अपना थोड़ा समय भी उनके साथ बिताएं और उन्हें ये बताएं कि आप भी उनसे उतना ही प्यार करते हैं जितना वे आपसे करते थे। उन्हें आपके जीवन में उनका महत्व बताइए, उनकी सेवा कीजिए और उन्हें कभी दु:ख मत दीजिए।

९१) सारे जहाज जला दो - कई वर्षों पहले एक योद्धा के सामने एक बहुत बड़ी मुसीबत आ गई। उसे एक ऐसी सेना के साथ युद्ध करना था, जो बहुत ही शक्तिशाली थी। योद्धा के पास बहुत ही कम संसाधन और सैनिक थे जबकि विरोधी सेना के पास उनसे १० गुना ज्यादा सैनिक और हथियार थे। योद्धा ने युद्ध करने का फैसला किया और अपने सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार होने को कहा। योद्धा ने हथियारों के साथ सैनिकों को जहाज में भरा और समुद्र के रास्ते दुश्मन देश की तरफ आगे बढ़ने लगे। गंतव्य स्थल पर पहुंचने के बाद जहाज में से सारे हथियार और सैनिकों को उतारने के बाद जहाज को जलाने का आदेश दे दिया। योद्धा ने अपने सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा- आप देख रहे हैं कि सारे जहाज जला दिए गए हैं। अब हम तब तक वापस जिन्दा नहीं लौट सकते, जब तक कि हम जीत न जाएं। हमारे पास जीत के अलावा कोई विकल्प नहीं। या तो हम जीतेंगे या फिर मरेंगे।

योद्धा की सेना ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया और वे अपने से दस गुना ताकतवर दुश्मन से जीत गए। योद्धा की जीत केवल एक ही कारण था- दृढ़ निश्चय या पक्का इरादा। उन्होंने पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं छोड़ा और इसलिए वे जीत गए। ज्यादातर लोग जोखिम से बचने के लिए बैकअप प्लान बनाते है। लक्ष्य को प्राप्त करने में आनेवाली मुसीबतों और प्रतिकूल परिस्थिति में बैकअप प्लान आपकी सबसे बड़ी कमजोरी बनकर आपको लक्ष्य से भटकने के लिए मजबूर करता है। बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं। जो व्यक्ति वाकई में अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहते हैं उनके पास किसी भी तरह का बैकअप प्लान नहीं होता। मुसीबतें आने पर आपको रास्ते बदलने की जरूरत होती है, लक्ष्य नहीं।

९२) हर व्यक्ति के अंदर आग होती है, उसमें प्यार की आहुति डालें तो वह मन को शांति देती है - किसी नगर में एक विद्वान साधु रहता था। लोग उसके पास अपनी समस्याएं लेकर आते और वहां से प्रसन्न होकर लौटते। एक दिन एक सेठ साधु के पास आया और बोला महाराज, मेरे पास सब कुछ है, फिर भी मन शांत नहीं रहता। मैं क्या करूं? साधु कुछ न बोला और उठकर चल दिया। सेठ भी पीछे-पीछे चल पड़ा। आश्रम के एक खाली कोने में जाकर साधु ने वहां आग जलाई और धीरे-धीरे कर उस आग में एक-एक लकड़ी डालता रहा। हर लकड़ी के साथ आग की लौ तेज होती रही। कुछ देर बाद वह वहां से उठकर वापस अपनी जगह आकर चुपचाप बैठ गया।

सेठ भी साधु के पास आकर बैठ गया। लेकिन जब साधु ने उससे कुछ भी न कहा तो सेठ हैरान होकर बोला, महाराज,

आपने मेरी समस्या का समाधान तो किया नहीं। सेठ की बात सुनकर साधु मुस्कराते हुए बोला, मैं इतनी देर से तुम्हारी समस्या का समाधान ही बता रहा था। शायद तुम समझे नहीं। देखो, हर व्यक्ति के अंदर आग होती है। उसमें प्यार की आहुति डालें तो वह मन को शांति और आनंद देती है। यदि उसमें दिन-रात काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद की लकड़ियां डाली जाती रहें तो वह मन में अशांति उत्पन्न करती हैं, आग को और भड़काती हैं। जब तक तुम अशांति फैलाने वाले इन तत्वों को आग में डालना बंद नहीं करोगे, तब तक तुम्हारा मन शांत नहीं होगा।

यह सुनकर सेठ की आंखें खुल गईं। वह प्रसन्न मन से साधु को नमस्कार कर अपने घर लौट आया। उसने भविष्य में अपने अंदर की आग में प्यार, करुणा और परोपकार की आहुति डालने का संकल्प कर लिया। तभी से उसका जीवन बदल गया और वह शांतिपूर्वक जीवन बिताने लगा।

९३) अच्छे कार्य के लिए गुप्त दान देने से हमारे ऋण उतर जाते हैं - एक बार सरदार वल्लभ भाई पटेल कांग्रेस के लिए फंड एकत्रित करने रंगून गए। वहां उन्होंने अनेक व्यक्तियों से सहयोग मांगा। उन्होंने देखा कि जब भी वे चीनियों से चंदा मांगते थे तो वे सूची में अपना आंकड़ा नहीं चढ़ाते थे, बल्कि चुपके से अपने घरों के अंदर से श्रद्धानुसार चंदा लेकर जमा करा देते थे। अधिकतर चीनियों को ऐसा ही करते देख उन्होंने एक चीनी से कहा, भैया, आप लोग चंदा तो दे देते हो, किंतु उसे सूची में नहीं चढ़वाते। क्या आपके यहां ऐसा कोई रिवाज है? बिना सूची में चढ़ाए यह तो पता ही नहीं चलेगा कि आपने कितना चंदा दिया?

यह प्रश्न सुनकर वह चीनी मुस्कराकर बोला, नहीं, हमारे यहां ऐसा कोई रिवाज नहीं है, पर एक मान्यता अवश्य है। यह सुनकर सरदार पटेल ने उस मान्यता के बारे में सुनने की इच्छा जताई। वह बोला, हमारे यहां दान की रकम को धर्म ऋण कहते हैं। सूची में दान की रकम लिख दें और संयोगवश हमारे पास उतनी रकम न हो तो उसे चुकाने में जितने दिनों की देर होती है, उतने दिन का ऋण हम पर चढ़ जाता है। धर्म ऋण का पाप सबसे बुरा माना जाता है। दूसरी बात यह कि हम यह समझते हैं कि अच्छे कार्य के लिए गुप्त दान से हमारे ऋण उतरते हैं। यदि हम सूची में चढ़ाकर या दूसरे को बताकर दान दें तो दान का महत्व घट जाता है, इसलिए चंदे या फंड के लिए जो रकम देनी हो उसे हम तुरंत देकर ऋणमुक्त होने की कोशिश करते हैं। धर्म ऋण का महत्व व उपयोगिता तभी श्रेष्ठ होती है जब वह पूरी गरिमा, श्रद्धा और सच्चे मन से दी जाए। यह सुनकर सरदार पटेल बेहद खुश हुए।

९४) समस्याओं में ही छिपा है उनका समाधान, खोज कर तो देखिए - एक युवक व्यक्तिगत संस्थान में कार्यरत था। वह अपनी जिंदगी से खुश नहीं था। वो हर समस्या से परेशान था और उसी के बारे में सोचता रहता था। एक बार शहर से कुछ दूरी पर एक महात्मा का काफिला रुका। जब उस युवक को पता चला तो वह भी दर्शन के लिए उनके पास पहुंचा। महात्मा जी के पास सैकड़ों भक्त अपनी परेशानी लेकर आए हुए थे। जब उस युवक का नम्बर आया तो उसने कहा, मैं अपनी जिंदगी से बहुत दु:खी हूं। आप कोई ऐसा उपाय बताएं कि मेरी सभी परेशानियां दूर हो जाएं।

महात्मा जी मुस्कुराए और उन्होंने कहा, आज बहुत देर हो गई है मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर कल दूंगा। लेकिन तुम मेरा एक छोटा सा काम करोगे। हमारे काफिले में लगभग सौ ऊंट है, ऊंट की देखभाल करनेवाला बीमार है। मैं चाहता हूं तुम

इन ऊंटों की देखभाल करो। जब सभी ऊंट बैठ जाएं तो तुम सो जाना। इतना कहकर महात्मा जी अपने तंबू में चले गए। दिन हुआ तो महात्मा जी ने उस युवक से पूछा, बेटा क्या तुम्हें अच्छी नींद आई। युवक ने कहा, मैं एक पल के लिए भी नहीं सो पाया। मैंने सभी ऊंटों को बैठाने की पूरी कोशिश की लेकिन कोई न कोई ऊंट फिर खड़ा हो जाता।

महात्मा जी बोले, मैं जानता था यही होगा। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ है कि ये सारे ऊंट एक साथ बैठ जाएं। युवक नाराज हो गया। वह बोला, जब आपको पता था तो आपने ऐसा करने के लिए क्यों कहा?

तब महात्माजी ने कहा, देखो जब तक एक समस्या का समाधान करने की कोशिश करोगे तो दूसरी समस्या खड़ी हो जाएगी। जब तक यह जीवन है ये समस्याएं बनी रहेंगी। कभी कम तो कभी ज्यादा। इसलिए इन समस्याओं का सामना करते हुए जीवन का आनंद लो।

९५) विचारों की शुद्धता - एक आदमी अक्सर बदहजमी से परेशान रहता। उसने अनेक चिकित्सकों को दिखाया। हर चिकित्सक उसे पोषक तत्वों से भरपूर भोजन लेने की सलाह देते, बासी या तैलीय भोजन से दूर रहने को कहते। उसने वैसा ही किया, मगर समस्या वैसी की वैसी बनी रही। एक दिन वह एक प्रसिद्ध संत के पास गया और बोला- महाराज, मैंने सब उपाय करके देख लिए, लेकिन मेरा शरीर बदहजमी से पीड़ित रहता है। आखिर मेरा शरीर स्वस्थ कैसे रहेगा? संत बोले- तुम एक सप्ताह तक किसी से भी गुस्से में बात मत करो। किसी की खुशी या उन्नति देखकर ईर्ष्या मत करो। अपने धन पर अहं मत करो। बस, तुम्हारी यह समस्या स्वत: दूर हो जाएगी। उस आदमी को विश्वास नहीं हुआ। लेकिन उसने एक सप्ताह तक संत की बात मानने का निश्चय किया। सातवें दिन उसका चित्त प्रफुल्लित था। वह स्वयं को स्वस्थ और खुश महसूस कर रहा था। वह मन ही मन संत के प्रति कृतज्ञ हुआ और उसने हमेशा के लिए झूठ, ईर्ष्या, क्रोध, अहं आदि को छोड़ देने का निर्णय कर लिया। बाहरी अवांछित तत्व तो व्यक्ति को बीमार करते ही हैं, लेकिन आंतरिक तत्व इंसान के शरीर को बाहरी अवांछित तत्वों से भी अधिक नुकसान पहुंचाते हैं, हमारा शरीर उन घटकों से बनता है, जो हम अवशोषित करते हैं। यदि वे अशुद्ध हुए तो, हम भी अशुद्ध होंगे। अगर वे हानिकारक हैं, तो हम बीमार पड़ जायेंगे। यह प्रकृति का एक नियम है। जिस प्रकार हर व्यक्ति अपने भोजन के प्रति सचेत रहता है, उसी प्रकार उसके विचार और भावनाएं भी उच्च कोटि के होने चाहिए।

श्रेष्ठ विचारों की शक्ति होती है, जो उसे हर पीड़ा और परेशानी से उबार लेती है। दरअसल, सकारात्मक विचार से शरीर में नारएपीनफ्रीन एवं डोपामाइन जैसे संक्रमण सक्रिय होते हैं। ये संक्रमण शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत गुणकारी हैं। बचपन से ही आंतरिक तत्व श्रेष्ठ हों और बच्चों के बालमन में ईर्ष्या, अहं, क्रोध जैसे कांटे पैदा ही न होनें दें, तो आंतरिक शुद्धता बनी रहेगी और शरीर भी ताउम्र निरोगी रहेगा।

९६) दान का आनन्द - एक राजा थे। वह बड़े ही उदार थे। दानी तो इतने कि खाने-पीने की जो भी चीज होती, अक्सर भूखों को बांट देते और स्वयं पानी पीकर रह जाते। एक बार ऐसा संयोग हुआ कि उन्हें कई दिनों तक भोजन न मिला। उसके बाद मिला तो थाल भरकर मिला। उसमें से भूखों को बांटकर जो बचा, उसे खाने बैठे कि एक ब्राह्मण आ गया। वह बोला, महाराज। मुझे कुछ दीजिए। राजा ने थाल में से थोड़ी-थोड़ी चीजें उठाकर उसे दे दीं। फिर जैसे ही खाने को हुए कि एक शूद्र आ गया।

राजा ने खुशी-खुशी उसे भी कुछ दे दिया। उसके जाते ही एक चांडाल आ गया। राजा ने बचा-बचाया सब उसे दे दिया। मन ही मन सोचा, कितना अच्छा हुआ, जो इतनों का काम चला। मेरा क्या है, पानी पीकर मजे में अपनी गुजर कर लूंगा। इतना कहकर वह जैसे ही पानी पीने लगे कि हांफता हुआ एक कुत्ता वहां आ गया। गर्मी से वह बेहाल हो रहा था। राजा ने झट पानी का बर्तन उठाकर उसके सामने रख दिया। कुत्ता सारा पानी पी गया। राजा को न खाना मिला, न पानी, पर उसे जो मिला उसका मूल्य कौन आंक सकता है।

९७) प्रेम की महिमा - आगोबीओ शहर के आसपास के खेतों और जंगलों में एक विशालकाय भेड़िये का इतना आतंक छाया हुआ था कि वहां कोई रास्ता चलने का साहस नहीं करता था। वह कई मनुष्यों और पशुओं का सफाया कर चुका था। अंत में संत फ्रांस्वा ने उस भयानक जानवर का सामना करने का निश्चय किया। वे शहर से बाहर निकले। उनके पीछे लोगों की भारी भीड़ थी। वे जंगल के समीप पहुंचे तो भेड़िया मुंह फाड़े संत की ओर लपका, परंतु फ्रांस्वा ने शांतिपूर्वक एक संकेत किया और भेड़िया ठंडा होकर उनके पैरों के पास ऐसे लोट गया, मानो भेड़ का बच्चा हो। भाई, भेड़िये। संत फ्रांस्वा ने कहा, तूने इस देश को बहुत हानि पहुंचाई है। जो दंड हत्यारों को मिलना चाहिए, उसी दंड का तू अधिकारी है। सब लोग तुझसे घृणा करते हैं, परंतु यदि तेरे और आगोबीओ के मेरे इन मित्रों के बीच मैत्री स्थापित हो जाए तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। भेड़िये ने अपना सिर झुका लिया और वह अपनी पूंछ हिलाने लगा। संत फ्रांस्वा ने फिर कहा, भाई भेड़िये। मैं तुझसे प्रतिज्ञा करता हूं कि यदि तू इन लोगों के साथ शांतिपूर्वक रहना स्वीकार कर ले तो ये तेरे साथ अच्छा बर्ताव करेंगे और तुझे प्रतिदिन खाना भी देंगे। क्या तू भी यह प्रतिज्ञा करता है कि आज से तू इन्हें कोई हानि नहीं पहुंचाएगा?

अब तो भेड़िये ने अपना सिर पूरी तरह से झुका लिया और अपना बायां पंजा संत के हाथ में रख दिया। इस प्रकार सच्चे दिल से दोनों में संधि स्थापित हो गयी। तब फ्रांस्वा भेड़िये को आगोबीओ के विशाल जनपथ की ओर ले चले। वहां नागरिकों की बड़ी भीड़ के सामने उन्होंने उक्त वचन फिर दुहराए। भेड़िये ने फिर से अपना पंजा संत के हाथ में रख दिया, जिसका अर्थ था कि वह भविष्य में अच्छे आचरण करने की प्रतिज्ञा करता है। उसके बाद वह भेड़िया उस नगर में दो वर्ष तक रहा और उसने इस बीच में कोई हानि नहीं पहुंचाई। नगरवासी भी उसके लिए प्रतिदिन भोजन लाते थे। जब उसकी मृत्यु हुई तो सबको दु:ख हुआ। वह भेड़िया कितना भी बुरा क्यों न प्रतीत होता हो, पर उसके अंदर एक ऐसी चीज थी, जिसे वास्तव में, तब तक किसी व्यक्ति ने नहीं जाना, जब तक संत फ्रांस्वा ने उसे भाई कहकर संबोधित नहीं किया। भेड़िया नि:संदेह एक बड़े अपराधी का दृष्टांत उपस्थित करता है, जिससे सब लोग घृणा करते हैं, परंतु यह हमें बताता है कि उन लोगों में भी, जिनसे किसी को कोई आशा नहीं होती, भलाई के कुछ ऐसे बीज होते हैं, जो तनिक-सा प्रेम पाकर फूट निकलते हैं।

९८) अपना विवेक जो सभी नियमों से परे है - सुकरात तब अपने शिष्यों के साथ चर्चा में व्यस्त थे। उस समय तत्वज्ञान पर रोचक चर्चा चल रही थी। तभी एक ज्योतिषी घूमता-घामता वहां आ पहुंचा। सुकरात को भी अनागत और अज्ञात को जानने-बतानेवाली विद्याओं में दिलचस्पी थी। ज्योतिषी का दावा था कि वह चेहरा देखकर इंसान के बारे में

सब कुछ बता देता है। सुकरात ने कहा कि तुम मेरे बारे में बताकर खुद को साबित करो। सुकरात के चेहरे पर भद्दे दाग थे, उनका शरीर बेडौल था और उनकी आवाज भी कर्कश थीं। सुकरात को देखकर ज्योतिषी अनायास ही कहने लगा, आपके नथुनों की बनावट बता रही है कि आपमें क्रोध की भावना प्रबल है। आप विलासी और लोभी भी हैं। उसकी बातें सुकरात के शिष्यों को अच्छी नहीं लगी। वे नाराज होने लगे। एक अवसर ऐसा भी आया कि वे अपना आपा खोने लगे। उस समय तो हद ही हो गई, जब ज्योतिषी ने कहा कि आपके माथे और सिर की आकृति के आधार पर कहा जा सकता है कि आप बेहद लालची रहे हैं। आपकी ठोड़ी आपको सनकी बताती है, होठों और दांतों की बनावट देखें, तो ये सदैव देशद्रोह के लिए उकसाते हैं। शिष्य उस ज्योतिषी को दुत्कारने ही वाले थे कि सुकरात ने उन्हें रोक दिया। यही नहीं, बात पूरी हो जाने पर सुकरात ने उसे ईनाम देकर भेज दिया। यह देखकर तमाम शिष्य चकित रह गए। सुकरात ने कहा, ज्योतिषी ने जो कुछ बताया, वे सारे विकार मुझमें हैं। उस दैवज्ञ ने सही कहा है, पर उससे एक भूल जरूर हुई है। उसने मेरे विवेक बल पर जरा भी गौर नहीं किया। मैं उसके सहारे ही अपने आपको संभाले रहता हूं। शिष्य अब शांत हो चले थे। विवेक के बल पर कोई भी अपने आपको संभाल और सुधार सकता है।

९९) शौर्य वह है, जो किसी स्थिति में पराजित न हो - प्रतापी सम्राट पोरस से युद्ध करने के बाद सिकंदर की सेना ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। वापस लौटने से पहले सिकंदर ने रावी के तट पर शासन कर रहे अश्वपति के राज्य पर आक्रमण कर दिया। अश्वपति के असावधान सैनिकों को सिकंदर के सिपाहियों ने बुरी तरह मारा-काटा। अश्वपति बंदी बना लिए गए। उन्हें राजसभा में पेश किया गया। वहां अश्वपति का शौर्य जांचने के इरादे से सिकंदर ने उन्हें आजाद कर दिया और संधि कर ली। मैत्री का उत्सव मनाने के लिए दरबार आयोजित हुआ। अश्वपति अपने खूंखार लड़ाकू कुत्तों के लिए मशहूर थे। चार कुत्ते हमेशा उनके साथ रहते थे। उन्हें अश्वपति दरबार में भी साथ ले गए। सिकंदर ने देखते ही व्यंग्य किया, महाराज, ये भारतीय कुत्ते हैं? अश्वपति ने तुरंत कहा, हां, ये छिपकर आक्रमण नहीं करते, बल्कि शेरों से भी सामने से लड़ते हैं। यह सुनकर सिकंदर ने शेर और कुत्तों की लड़ाई आयोजित करने के लिए कहा। प्रबंध होते ही शेर और दो कुत्तों की लड़ाई छिड़ गई। शेर ने कुत्तों को लहूलुहान कर दिया, पर कुत्तों ने भी उसके छक्के छुड़ा दिए। शेर जान छुड़ाकर भागा। तभी कुत्तों ने उसके शरीर में ऐसे दांत चुभाए कि वह घायल होकर गिर पड़ा। अश्वपति ने फिर चुनौती-सी दी कि कोई है ऐसा वीर, जो कुत्ते को शेर से अलग कर दे? बारी बारी से कई योद्धा उठे और कुत्तों की टांगें पकड़ कर खींचने लगे, पर वे उनके दांत छुड़ा न सके। सिकंदर के सभी योद्धा हार गए, तो अश्वपति ने अपने अंगरक्षक को संकेत किया। वह उठकर शेर के पास पहुंचा और कुत्ते को पकड़ कर एक ही झटका लगाया कि शेर की हड्डी और मांस सहित कुत्ता भी खिंच गया। इस स्थिति से लज्जित हुए सिकंदर ने अपना सिर झुका लिया।

१००) समाधान से पहले जरूरी है समस्या का बोध - अंगदेश के महामंत्री युतिसेन की मृत्यु हो गई। उस राज्य में सबसे बुद्धिमान इंसान को ही मंत्री बनाने का नियम था। इसके लिए पूरे राज्य में परीक्षाएं हुईं और तीन सबसे ज्यादा बुद्धिमान युवक चुने गए। उन्हें राजधानी बुलाया गया। तीनों युवक मुख्य परीक्षा से एक दिन पहले राजधानी पहुंचे। उन्हें एक कक्ष में ठहराया गया। कक्ष में प्रवेश करते ही एक युवक सीधा अपने बिस्तर तक गया और सो गया। शेष दोनों

युवकों ने समझा कि शायद उसने परीक्षा देने का ख्याल छोड़ दिया है। अगली सुबह तीनों एक साथ राजमहल पहुंचे। वहां उन्हें परीक्षा की शर्त बताई गई। असल में, परीक्षा के लिए एक कक्ष बनाया गया था। उस कक्ष में एक ताला लगा था। उस ताले की कोई चाबी नहीं थी। उस पर गणित के कुछ अंक लिखे हुए थे। शर्त यह थी कि जो युवक उन अंकों को हल कर लेगा, वह ताला खोल लेगा। उन तीनों युवकों को उस कक्ष में बंद कर दिया गया और कहा गया कि जो सबसे पहले दरवाजा खोलकर बाहर आएगा, वही महामंत्री बनेगा। तीनों भीतर गए। जो युवक रात भर सोया रहा था, वह फिर आँखें बंद करके एक कोने में बैठ गया। बाकी दोनों ने अपने कपड़ों में छिपाकर लाई किताबें निकालीं और उन अंकों के हल तलाशने लगे।

१०१) पत्थरों को सींचने और फसल उगाने की कला - एक गर्म दोपहरी के दिन एक किसान बांसों के झुरमुट में बनी हुई जेन गुरु की कुटिया के पास रुका। उसने गुरु को एक वृक्ष के नीचे बैठे देखा। किसान ने चिंतित स्वर में जेन गुरु से कहा, खेती की हालत बहुत बुरी है। मुझे डर है कि इस साल गुजारा नहीं होगा। तुम्हें चाहिए कि तुम पत्थरों को पानी दो, जेन गुरु ने कहा। किसान ने जेन गुरु से पूछा कि इस बात का क्या अर्थ है। कुछ समझ में नहीं आया। गुरु किसान की बात पर थोड़ा हंसे और कुछ देर तक किसान की तरफ देखते रहे। फिर जेन गुरु ने कहा, एक कहानी सुनो। किसान सुनने के अंदाज में पसर कर बैठ गया। इसके बाद गुरु ने उसे जो कहानी सुनाई, उसका सार यह था, कोई किसान किसी जेन गुरु की कुटिया के पास से गुजरा और उसने देखा कि गुरु एक बाल्टी में पानी ले जा रहे थे। किसान ने उनसे पूछा कि वे पानी कहां ले जा रहे हैं। गुरु ने किसान को बताया कि वे पत्थरों को पानी देते हैं, ताकि एक दिन उन पर वृक्ष उगे। किसान को बहुत आश्चर्य हुआ और वह आदर प्रदर्शित करते हुए झटपट वहां से मुस्कराते हुए चला गया। जेन गुरु प्रतिदिन पत्थरों को पानी देते रहे और कुछ दिनों में पत्थरों पर काई उग आई। काई में बीज आ गिरे और अंकुरित हो गए। क्या यह कहानी सच है, किसान ने कौतूहल से पूछा। किसान के सवाल में आशा और प्रतीक्षा के साथ जिज्ञासा के स्वर भी झलक रहे थे। जेन गुरु ने उस वृक्ष की ओर इशारा किया, जिसके नीचे वह बैठे थे। किसान भी वहीं बैठकर उस कहानी पर मनन करने लगा। उसे लगा, सींचते रहने से पत्थरों पर भी कुछ उगाया और हरा-भरा किया जा सकता है, तो बारिश की क्या चिंता करना। उसके चेहरे पर शांति और सांत्वना के भाव झलकने लगे थे।

१०२) जीतने के बजाय हारना बेहतर - महाभारत का एक प्रसंग है कि खांडव वन में आग लगी। उस अग्निकांड का निमित्त अर्जुन को माना गया। अग्निकांड में अश्वसेन नामक एक महासर्प की माता चक्षुश्रक मर गई। इससे अश्वसेन को बहुत क्रोध आया और वह अर्जुन से बदला लेने के लिए घात लगाने लगा। कुरुक्षेत्र के मैदान में कर्ण और अर्जुन आमने सामने थे। उपयुक्त अवसर देखकर अश्वसेन ने बाण का रूप धारण किया और कर्ण के तरकश में जा घुसा। अर्जुन पर प्रहार करते समय कर्ण के हाथ में संयोगवश वही बाण आया, जिसमें अश्वसेन समाया हुआ था। बाण का अटपटापन देखकर शल्य ने कहा, महाभाग। यह बाण कुछ बेतुका सा है। धनुष पर दूसरा बाण चढ़ाओ, तो ठीक रहेगा। कर्ण ने दर्पपूर्वक कहा, शल्य। मैं दोबारा लक्ष्य नहीं देखता और एक बार बाण को धनुष पर चढ़ाकर फिर उसे नहीं उतारता। ऐसा कहकर उसने बाण को लक्ष्य की ओर छोड़ा। कृष्ण ने इस महाभयंकर बाण को आते देखकर रथ के घोड़ों को जमीन पर बिठा दिया, सो बाण के प्रहार से अर्जुन का मुकुट भर कटा, उसका सिर बच गया। अश्वसेन

का क्रोध शांत न हुआ। अर्जुन के बच जाने से उसे बहुत दुख हुआ। इस बार वह अपने असली रूप में कर्ण के पास पहुंचा और बोला, हे महाबली। पिछली बार तुमने मेरा पराक्रम जाने बिना ही बाण रूप में मुझे असावधानी से छोड़ा था, उसी से अर्जुन बच गया। अबकी बार तुम ध्यान से शर संधान करो। कर्ण ने पूछा, भद्र तुम कौन हो और मेरे तरकश में किसलिए प्रवेश करना चाहते हो? अश्वसेन ने पूरी कहानी कही। इस पर कर्ण ने कहा, मैं अपने ही पुरुषार्थ से विजय पाना चाहता हूं। द्वेष बुद्धि से, छल का आश्रय लेकर विजयी होने के बजाय मुझे हार स्वीकार है। पुरुषार्थ पर भरोसा करनेवाले कभी दूसरों की मदद का आश्रय नहीं लेते।

१०३) महत्वपूर्ण हमेशा शांत और अविचल रहता है - एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि मानव शरीर के पांचों तत्व ही आपस में उलझ बैठे, जिनसे इस शरीर का निर्माण हुआ है। वायु ने बहस की शुरुआत करते हुए कहा, मैं सभी पांचों में सबसे बड़ा हूं। मैं न आऊं, तो श्वास हीन होकर शरीर एक क्षण में ही शांत हो जाए। उसका तत्काल अंत हो जाएगा। यह सुनकर पृथ्वी ने कहा, अरे, मेरे कारण तो यह शरीर खड़ा दिखता है। इंद्रियों का आकार न हो, तो तुम सब अपनी अभिव्यक्ति भला कैसे कर सकोगे? इस बहस में जल तत्व भी चुप न बैठा। उसने कहा, जीवन का आधार तो मैं ही हूं। अगर शरीर में रस न हो, तो सब कुछ पलक झपकते समाप्त। अग्नि ने अब ठहाका लगाया और कहा, अरे, मेरी क्षमता तथा महत्व का अनुमान तो तुम लगा ही नहीं सकते। मैं न रहूं, तो यह शरीर क्षण मात्र में बर्फ हो जाए। आकाश-तत्व ने भी बड़ी हेकड़ी से कहा, मेरी उपयोगिता का मूल्यांकन तुम सबकी पहुंच से परे है। तुम लोग सोच ही नहीं सकते मेरी उपयोगिता। समस्त सूक्ष्म शक्तियों का संचालन तो मैं ही करता हूं। शब्द मेरी तन्मात्रा है, मैं न रहूं, तो संसार खामोशी में डूबा समुद्र लगने लगे। आत्मा चुपचाच बैठी यह संवाद सुन रही थी। उसने कुछ न कहा। पांचों तत्वों में जब कलह बढ़ने लगी, तो उससे रहा न गया। उसे घुटन होने लगी। उसकी घुटन इस कदर बढ़ी कि अनायास ही वह शरीर से बाहर आ गई। पांचों तत्व भी उसके पीछे पीछे ऐसे चल पड़े, जैसे मधुमक्खियों के छत्ते से उनकी रानी चल देती है, तो सारी मधुमक्खियां उसके पीछे पीछे चल देती हैं। आत्मा को तो यह बोध भी नहीं था कि उसकी अनुपस्थिति में क्या हुआ है। विधाता ने कहा, जो महत्वपूर्ण है, वह शांत और अविचल रहता है।

१०४) पतन का वाहक - भगवान श्रीकृष्ण के समय में चरणाद्रि चुनार राज्य में पौंड्रक नाम का राजा शासन करता था। उसके दरबारी बड़े खुशामदी थे। वे कहते थे, महाराज, आप तो साक्षात भगवान वासुदेव हैं। पापों का नाश करने के लिए आपने अवतार लिया है। यह हम सबका धन्य भाग है कि हम नित्य आपका दर्शन करते हैं। इस प्रकार की चिकनी-चुपड़ी बातों से दरबारी पौंड्रक को खुश किया करते थे। उन लोगों की बातें सुनते सुनते राजा भी वास्तव में खुद को भगवान का अवतार समझने लगा था। वासुदेव बनने के लिए उसने अपने दो नकली हाथ भी लगवा लिए और चारों हाथों में भगवान विष्णु की तरह शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए रहता था। धीरे-धीरे उसका अहंकार इतना बढ़ गया कि उसने अपना एक दूत द्वारिकापुरी भेजा। श्रीकृष्ण को भेजे संदेश में उसने लिखा, खुद को वासुदेव कहते हो, पर विष्णु का असली अवतार तो मैं हूं। अब तुम इन सब चिन्हों को त्याग दो, अन्यथा युद्ध में मैं तुम्हारा नाश कर दूंगा। श्रीकृष्ण पौंड्रक की राजधानी के पास अकेले ही रथ पर चढ़कर पहुंचे, जबकि पौंड्रक एक अक्षौहिणी सेना

लेकर उनसे युद्ध करने निकला। मगर कृष्ण ने पौंड्रक की सेना को क्षण भर में ही अपने दैवीय अस्त्रों की सहायता से समाप्त कर दिया। उसके बाद उन्होंने पौंड्रक से कहा, तुमने जिन चिन्हों को छोड़ने का संदेश भेजा था, उन्हें अब मैं छोड़ रहा हूं। तुम संभाल लेना। यह कहकर उन्होंने पहले गदा फेंकी, जिससे पौंड्रक का रथ चूर-चूर हो गया। वह जमीन पर गिर पड़ा। अहंकार से ग्रस्त होकर वह फिर उठ खड़ा हुआ, तो कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसका मस्तक उड़ा दिया। उस समय खुशामद करनेवाले दरबारियों का कहीं अता पता भी नहीं था।

१०५) बदलते युग में मानव का व्यवहार - एक बार पांडवों ने श्रीकृष्ण से पूछा, कलियुग में मनुष्य कैसा होगा? श्रीकृष्ण ने कहा, तुम पांचों वन में जाओ और जो भी दिखे, उसके बारे में बताओ। पांचों भाई वन में गए। वहां युधिष्ठिर ने देखा कि किसी हाथी की दो सूंड है। अर्जुन दूसरी दिशा में गए। वहां उन्होंने देखा कि एक पक्षी के पंखों पर वेद मंत्र लिखे हुए हैं, पर वह मांस खा रहा है। भीम ने देखा कि गाय अपने बछड़े को इतना चाट रही है कि वह लहूलुहान हो रहा है। सहदेव ने छह-सात कुएं देखे, जिसमें बीच का कुआं खाली है। नकुल ने देखा कि पहाड़ के ऊपर से एक बड़ी शिला लुढ़कती हुई आई, वह कितने ही वृक्षों से टकराई, मगर अंत में एक अत्यंत छोटे पौधे का स्पर्श होते ही वह स्थिर हो गई। शाम को वे सभी श्रीकृष्ण के पास गए और उन्होंने अपने दृश्यों का वर्णन किया। युधिष्ठिर ने कहा, मैंने दो सूंड वाला हाथी देखा। तो श्रीकृष्ण ने कहा, कलियुग में ऐसे लोगों का राज होगा, जो दोनों ओर से शोषण करेंगे। वे बोलेंगे कुछ और करेंगे कुछ। अर्जुन की बातें सुनकर कृष्ण ने कहा, कलियुग में पंडित और विद्वान कहलाने वाले लोग बहुत होंगे, किंतु वे इसी ताक में रहेंगे कि कौन-सा मनुष्य मरे और उनके नाम से संपत्ति कर जाए। कोई विरला ही संत होगा। भीम के आश्चर्य के बारे में श्रीकृष्ण का जवाब था, कलियुग का आदमी अपनी संतानों को इतना लाड़ करेगा कि उसे अपने विकास का अवसर ही नहीं मिलेगा। सहदेव के देखे आश्चर्य का अर्थ था कि लोग वैवाहिक आयोजन में, अन्य छोटे-बड़े उत्सवों में तो लाखों रुपये खर्च कर देंगे, परंतु पड़ोस में ही यदि कोई भूखा-प्यासा होगा, तो यह नहीं देखेंगे कि उसका पेट भरा है या नहीं। पांचवें आश्चर्य के बारे में कृष्ण का कहना था, यह मन की उस गिरावट का संकेत है, जो भगवन्नाम के जप से ही रुक सकेगा।

१०६) शिक्षक को कृष्ण की तरह होना चाहिए - डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति थे। एक दिन सेवानिवृत्त होनेवाले शिक्षक उनका आशीर्वाद लेने के लिए उनके निवास स्थान पर पहुंचे। डॉ. राधाकृष्णन ने उनसे पूछा, सेवानिवृत्त होने के बाद आप क्या करेंगे? शिक्षक ने जवाब दिया, कोई नौकरी ढूंढूंगा। डॉ. साहब ने गंभीर होकर कहा, जीवन भर छात्रों को शिक्षा देकर गुरु का दायित्व निभाया और अब कहते हैं कि नौकरी करूंगा। उन्होंने कहा, हमारे धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य पर माता-पिता के ऋण के साथ देवता और समाज का भी कर्ज होता है। अब अपना समय समाज सेवा में लगाइए। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की सेवा कीजिए और उन्हें संस्कारित कीजिए। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा केवल पुस्तकीय शिक्षा दे देने से ही शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं होता। छात्रों को संस्कारित किया जाना भी परम आवश्यक है। युवा पीढ़ी को इसकी प्रेरणा दी जानी चाहिए कि अपने राष्ट्र, माता-पिता, गुरु, परिवार और समाज के प्रति उनका क्या कर्त्तव्य है। अपने देश की महान संस्कृति व आदर्श परंपराओं के विज्ञानसम्मत रहस्य से छात्रों को

परिचित कराया जाना आवश्यक है। राष्ट्रभक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा शील-सदाचार से संपन्न युवक ही देश के सर्वांगीण विकास में योगदान दे सकते हैं। सच्चे शिक्षक के कर्त्तव्य की बात करते हुए डॉ. राधाकृष्णन ने कहा शैक्षिक ज्ञान के साथ आत्मिक ज्ञान भी आवश्यक है। इसी से मानव का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षक़ वास्तव में हमारी अंतर्दृष्टि को व्यापक करने में हमारी मदद करते हैं, हमारे विचार को बदलने में नहीं। नई परिस्थिति में खुद को किस तरह निखारा जाए, इसकी शिक्षा सच्चा शिक्षक ही दे सकता है। हमारे ज्ञान को व्यापक करने और उसे निष्पक्ष भाव से परखने में शिक्षक मदद करते हैं। शिक्षक में कृष्ण का अक्स देखना चाहिए। सच्चा शिक्षक भगवद्गीता के कृष्ण की तरह होना चाहिए, जिन्होंने अर्जुन को खुद के अंदर झांकने की प्रेरणा दी।

१०७) इलाज में पथ्य की तरह उपयोगी खुशी - जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के एक मित्र थे डॉक्टर बर्कले। वह बीमारों का इलाज करते, उन्हें तंदुरुस्त रहने के लिए सलाह देते, पर खुद अक्सर बीमार रहते थे। शॉ ने एक बार उन्हें संदेश भिजवाया कि आप फ़ुरसत में हों, तो मेरा मुआइना कर जाएं। डॉ. बर्कले तुरंत दौड़े आए। बर्नार्ड शॉ घर की ऊपर मंजिल पर रहते थे। वहां की सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते डॉक्टर हांफ गए। शॉ ने उन्हें आरामकुर्सी दी और एक गिलास पानी पिलाया। फिर कहा देखा आपने, मैं उम्र में आपसे कितना बड़ा हूं और इन्हीं सीढ़ियों पर दिन में तीन बार चढ़ता उतरता हूं। कभी हांफता नहीं। आप कहें, तो वह नुस्खा आपको भी बता दूं। चिकित्सक ने कहा हां, बता देंगे, तो अच्छा रहेगा। शॉ ने कहा अपनी खुराक में एक तिहाई कटौती कर दें और साथ ही सीढ़ियां चढ़ते-उतरने जितना व्यायाम तो करें ही। डॉ. बर्कले ने स्वीकृति में सिर हिला दिया। अब बारी बर्नार्ड शॉ की थी। उन्होंने कहा लेकिन उपचार अभी अधूरा है। यह तभी काम करेगा, जब आप इसकी फीस भी चुकाएंगे। यह बात सुनकर बर्कले ठठाकर हंस पड़े। उन्होंने पूछा कितनी फीस देनी होगी। बर्नार्ड शॉ ने कहा ज्यादा नहीं, सिर्फ फीस पांच शिलिंग ही काफी है। डॉक्टर ने खिलखिला कर हंसते हुए पांच शिलिंग उन्हें दे दिए। कहा कि बहुत खूब। आपने मुझे तंदुरुस्त रखने का यह अच्छा उपाय बताया। औरों को भी इसी तरह डॉक्टर के पास आने से रोकते रहिएगा। कम खुराक लेना और नियमित व्यायाम करना स्वस्थ रहने का अचूक नुस्खा है।

१०८) असली हकदार कौन - महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के काटलुक गांव में एक प्राइमरी स्कूल था। पहला दिन था, इसलिए कक्षा में ज्यादातर विद्यार्थी नये थे। अध्यापक जाधवराव ने प्रवेश करते ही बच्चों से पूछा, यदि तुम्हें रास्ते में हीरा मिल जाए, तो तुम उसका क्या करोगे? सभी विद्यार्थियों को अपने मन से जवाब देना था। अध्यापक ने कह दिया था कि जरूरी नहीं कि जवाब सही हो, सिर्फ यह जरूरी है कि सभी को अपनी पसंद का जवाब देना है। एक छात्र ने कहा, मैं हीरा बेचकर बढ़िया घर खरीदूंगा। दूसरे ने कहा, मैं उसे बेचकर धनवान बन जाऊंगा। किसी ने कहा कि वह हीरा बेचकर देश विदेश की यात्राएं करेगा। किसी ने कारखाना लगाकर मालामाल हो जाने और सदावर्त चलाने की बात कही। यानी सभी छात्र अपने अपने ढंग से सवाल के जवाब दे रहे थे। छात्रों की बातें सुनने के लिए जाधवराज किसी यंत्र चालित मूर्ति की तरह गर्दन उचकाते और अगले छात्र पर नजरें टिका देते। उनकी प्रतिक्रिया से लगता कि उन्हें रटेरटाए उत्तर मिल रहे हैं। मगर अचानक एक छात्र के उत्तर पर जाधवराव ठहर गए। उस बालक का उत्तर था, मैं उस हीरे के मालिक का पता लगाऊंगा और उसे हीरा लौटा दूंगा। अध्यापक चकित थे। फिर उन्होंने पूछा कि बहुत कोशिश करने पर भी अगर उसका मालिक न

मिला, तो क्या करोगे? उस छात्र ने कहा, तब मैं हीरे को बेचूंगा और उससे मिले पैसे अनाथ-लावारिस बच्चों की सेवा में लगा दूंगा। वह लावारिस हीरा लावारिसों की मदद के लिए ही काम आना चाहिए। शिक्षक उत्तर सुनकर गदगद हो गए। खुशी से वह बोले, शाबास, तुम बड़े होकर सचमुच देशभक्त बनोगे। उनका कहा हुआ सही निकला। बड़ा होने पर वह बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से जाने गए। राह चलते अनायास मिलने वाली संपत्ति पर हक जताना कतई उचित नहीं।

१०९) व्यावहारिक ज्ञान - एक मोची था। वह बिल्कुल निरक्षर था। उसे पढ़े लिखे लोगों को देखकर ईर्ष्या होती थी। एक बार की बात है उसके पास एक कॉलेज के प्रोफेसर अपने जूते बनवाने के लिए आये। प्रोफेसर के पास सिर्फ एक जोड़ी जूते थे। प्रोफेसर ने मोची से कहा कि वह उनके जूते तुरंत सही कर दे। मोची ने जवाब दिया, अब तो मैं काम बंद करके घर जा रहा हूं, मेरे लिए आपके जूतों को तुरंत सही कर पाना संभव नहीं होगा। आप कल आकर दोबारा अपने जूते ले जाना। प्रोफेसर ने जवाब दिया, मेरे पास सिर्फ एक जोड़ी जूते ही हैं और मैं जूतों के बिना चल नहीं सकता। मोची ने कहा, अच्छा मैं आपको एक दिन के लिए किसी के इस्तेमाल किए हुए जूते पहनने के लिए दे देता हूं। क्या कहा? क्या मैं किसी दूसरे व्यक्ति के जूते पहनूं? तुमने मुझे समझ क्या रखा है। मोची ने जवाब दिया, अगर आप दूसरों के जूते अपने पैरों में पहन नहीं सकते तो दूसरे लोगों के विचारों को अपने दिमाग में लिए क्यों घूम रहे हो। मोची के इस जवाब से प्रोफेसर दंग रह गए। मोची ने एक बहुत ही व्यावहारिक बात कही कि व्यावहारिक बुद्धि किताबी ज्ञान से श्रेष्ठ है। इस कहानी का सार यह है कि पढ़ा लिखा सिर्फ वही नहीं होता जिसके पास तमाम उपाधि हो या जो बौद्धिकता का काम करता हो। पढ़ाई का अंतिम फल ज्ञान है और यह किसी के पास भी हो सकता है।

११०) सुनाने से ज्यादा जीवन में उतारना - पंडित अनिकेत गंगा तट पर प्रतिदिन भागवत पुराण का पाठ-पारायण करते। उसी घाट पर एक घड़ियाल रहता था। भागवत कथा उसे बहुत सुहाती। एक दिन वह पंडित से बोला, मुझे शुरू से लेकर अंत तक विधिवत भागवत सुनाएं। आपको हर दिन सौ मोतियों की दक्षिणा दूंगा। पंडित अनिकेत ने वैसा ही किया। घड़ियाल रोज कथा सुनता और पंडित को दक्षिणा देता। कथा पूरी होने पर उसने एक हार और भेंट किया। साथ ही उसने पंडित अनिकेत से यह भी निवेदन किया कि किसी प्रकार से वह उसे त्रिवेणी संगम तक पहुंचा दें, तो वह एक घड़ा भरकर मोती उन्हें देगा। पंडित ने बैलगाड़ी का प्रबंध किया और घड़ियाल को त्रिवेणी पहुंचा दिया। घड़ियाल ने भी अपना वचन पूरा किया, मगर विदा करते समय घड़ियाल ने पंडित को नमन नहीं किया, बल्कि हँसने लगा। अनिकेत ने हँसी का कारण पूछा, तो घड़ियाल ने कहा, अपने पड़ोस के धोबी के गधे से इसका कारण पूछना। पंडित जी सीधे उस गधे के पास पहुंचे और उससे घड़ियाल के हंसने का कारण पूछा। गधे ने कहा, पूर्वजन्म में मैं कौशल नरेश का अंगरक्षक था। वह त्रिवेणी तट पर आए, तो बहुत प्रभावित हुए। राजपाट दूसरों को देकर वहीं बस गए। मुझसे उन्होंने कहा, अब वेतन तो नहीं मिलेगा, पर चाहो, तो मेरे साथ रहकर तुम भी धन अर्जित करो और यदि लौटना चाहो, तो एक सहस्र मुद्रा लेकर वापस चले जाओ। गधे ने कहा, मैं मुद्रा लेकर वापस चला आया। राजा तो स्वर्ग चले गए, पर मैं रुपयों के प्रपंच में पड़कर अनेक अनर्थ करता रहा और अब गधे की योनि में पड़ा कष्ट सह रहा हूं। अनिकेत यह सुनकर सन्न रह गए। वह त्रिवेणी तट पर घड़ियाल के पास गए और उसे गुरु मानकर आत्मकल्याण की साधना करने लगे।

१११) कच्चा बर्तन इस तरह पक्का बना - संत मंडली के साथ ज्ञानेश्वर महाराज गोरा कुम्हार के घर आए। नामदेव भी साथ थे। ज्ञानदेव ने गोरा से कहा, बताओ, इनमें से कौन-सा मिट्टी का बर्तन कच्चा है? गोरा ने पिटनी लेकर पीटना शुरू कर दिया। सभी संत मार खाकर भी शांत रहे। नामदेव की बारी आई, तो वह एकदम बिगड़ उठे। तुरंत गोरा बोला, यही कच्चा बर्तन है। नामदेव बड़े ही दुखी हुए। सब संतों के बीच गोरा द्वारा किए गए अपमान की उन्होंने भगवान से शिकायत की। भगवान ने कहा, नामा, सच है कि तू मेरा परम भक्त है और मैं तेरे लिए सदा सब कुछ करने को तैयार रहता हूं। फिर भी तुझमें से मेरे-तेरे का भेद न मिटने से तू कच्चा ही है। यह तो बिना गुरु की शरण गए मिट नहीं सकता। शिवालय में विठोबा खेचर परम संत हैं। उनके पास जाकर तू ज्ञान प्राप्त कर आ। नामदेव विठोबा के पास गए। विठोबा सो रहे थे। उनके पैर शिव की पिंडी पर देखकर नामदेव को बड़ी अश्रद्धा हुई। उन्होंने सोचा, क्या ऐसे ही अधिकारी से ज्ञान प्राप्त करने की प्रभु ने मुझे सलाह दी। जब उनसे नहीं रह गया, तो उन्होंने विठोबा से कहा, महाशय, आप बड़े संत कहलाते हैं और शंकर की पिंडी पर पैर धरते हैं। विठोबा ने कहा, नामा, मैं बूढ़ा जर्जर हो गया हूं। तुम्हीं मेरे पैर उठाकर उस जगह पर रख दो, जहां शिव की पिण्डी न हो। नामदेव ने उनके पैर पकड़कर पिंडी से उतार अन्यत्र रखे। मगर उन्हें वहां भी शिव की पिंडी दिखी। इस तरह वह जहां-जहां पैर उठाकर रखते, उन्हें शिव की पिण्डी दिखती। वह समझ गए और तत्काल विठोबा के चरण पकड़ लिए। विठोबा ने नामदेव को अद्वैत का बोध कराया। नामदेव की द्वैतबुद्धि मिट गई। दूसरे दिन संत सभा के बीच भगवान ने नामदेव को लक्ष्य करके कहा, यह बर्तन भी पक्का बन गया।

११२) पशु की नहीं, करुणा की हत्या है यह - एथेंस के देव मंदिर में कोई उत्सव था। उसमें शामिल होने के लिए प्लेटो को भी लोगों ने बुलाया, जिससे वह इन्कार न कर सके। वह भी उत्सव में सम्मिलित हुए। लेकिन मंदिर में उन्हें एक अलग ही दृश्य देखने को मिला। असल में, मंदिर में जो भी आता, एक पशु अपने साथ लाता और फिर देव प्रतिमा के सामने उसकी बलि देता। वह पशु तड़पता हुआ अपने प्राण त्याग देता। दर्शक यह सब देखते, हंसते, इठलाते और नृत्य करते। प्लेटो से यह दृश्य देखा न गया। उन्होंने धर्म के नाम पर ऐसा उत्सव पहली बार देखा था। वह उठकर चलने लगे। उनका हृदय आर्तनाद कर रहा था। तभी एक सज्जन ने उनका हाथ पकड़कर कहा, आज तो आपको भी बलि चढ़ानी होगी। लीजिए यह रही तलवार और यह रहा बलि का पशु। प्लेटो ने शांतिपूर्वक थोड़ा पानी लिया, मिट्टी गीली की और उसी मिट्टी से छोटा सा जानवर बनाया। फिर उस निर्जीव जानवर को देव प्रतिमा के सामने रखा, तलवार चलाकर उसे काट दिया और फिर घर की ओर बढ़ने लगे। पर लोगों को यह रास न आया। कुछ लोगों ने कटाक्ष भी किया, क्या यही आपका बलिदान है? हां प्लेटो ने कहा, आपका देवता निर्जीव है, उसके लिए निर्जीव भेंट उपयुक्त थी, सो चढ़ा दी। उन धर्मधारियों ने प्रतिवाद किया, जिन लोगों ने यह प्रथा चलाई। क्या वे मूर्ख थे? क्या आपका अभिप्राय यह है कि हमारा यह कृत्य मूर्खतापूर्ण है? यह सुनकर प्लेटो मुस्कुराए, पर उनका हृदय कराह रहा था। उन्होंने निर्भीक भाव से कहा, आप हों या पूर्वज, जिन्होंने भी यह प्रथा चलाई, उन्होंने पशुओं की नहीं, बल्कि मानवीय करुणा की हत्या का प्रचलन किया है। कृपया न तो देवता को कलंकित करें, न धर्म को, क्योंकि धर्म दया और विवेक का पर्याय है, हिंसा और अंधविश्वास का पोषक नहीं।

११३) पिता और पुत्र कहीं दूर जा रहे थे। थोड़ी देर बाद जब वे चलते चलते थक गए तो एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगे। पिता अपने पुत्र से बेहद प्रेम करता था। अचानक उसे लगने लगा कि उसका बेटा भूखा होगा। तभी उसे एक फलदार पेड़ दिखाई दिया। उसने जल्दी जल्दी दो-तीन फल तोड़े और पुत्र को खाने को दे दिए। वह फल खाने लगा। एक के बाद दूसरा फल... फिर तीसरा... वह खाए जा रहा था। पिता ने सोचा- हद हो गई, क्या इतने स्वादिष्ट फल हैं कि मेरा पुत्र रुकने का नाम ही नहीं ले रहा। आखिरकार पिता से रहा नहीं गया और उसने भी वही फल लेने की कोशिश करने लगा। तभी पिता ने फल अपने मुंह में डाल लिया। लेकिन वह फल का स्वाद पाकर हैरान रह गया। फल खाकर उसका मन खराब हो गया। असल में वह फल बिल्कुल कसैला था। एक बार खाने के बाद कोई उसे मुंह में न रखना चाहे।

हैरान होकर उसने अपने पुत्र से पूछा- बेटा, तुम कुछ बोले क्यों नहीं। तुम्हें फल खाने से साफ मना कर देना चाहिए था। आखिर इतने कड़वे फलों को कोई कैसे खा सकता है। पुत्र ने जवाब दिया- आप हमेशा मेरी खुशी और सुख के बारे में ही सोचते हैं। मेरी सुख-सुविधाओं का ख्याल रखते हैं। कभी कोई चीज कम भी हो तो आप खुद न लेकर मुझे ही दे देते हैं। आपने मुझे इतनी सारी स्वादिष्ट चीजें खाने को दीं, अब अगर आज आपके ही द्वारा दिए कुछ कड़वे फल मैंने खा लिए तो क्या हो गया। बेटे की बात सुनकर पिता की आंखों में प्रेम के आंसू भर आए और उसने उसे अपने गले से लगा लिया।

११४) दुनिया का जरूरी हिस्सा बनना हो तो सबसे प्यार करना होगा - कहते हैं, जमीन का हर हिस्सा तब तक तड़पता है जब तक उसे कोई मोहब्बत से थाम न ले। हर तरफ लोग बेतहाशा परेशान होकर भाग रहे हैं। मगर जैसे ही पांव के नीचे की पहली ईंट खिसकती है, हममें से बहुतों का सारा वजूद एक झटके में खत्म हो जाता है। हम टूटकर बिखर जाते हैं। वैसे जिसने भी इस ठोकर से सीखा वह पीले पन्नों में दर्ज हो गया।

ऐसे ही एक थे रेत पर पांव पटकते आजम शम्स। ठंड में जबदरस्त बरसात की रात वह एक घर के बाहर खड़े रहे। खुले आसमान में वह महबूबा की एक झलक के लिए उसके दरवाजे पर भीगते ठिठुरते रहे। सुबह के चार बज गए। अचानक आसमान की तरफ देखा और चीखकर वह चौखट छोड़ दी। शम्स के दिल ने कहा कि जिसकी मोहब्बत के लिए इतनी तड़प है उससे बेहतर है उसे बनाने वाले से मोहब्बत करूं। एक झटके में सब कुछ छोड़ अपने महल लौट आए।

सब कुछ आम लोगों में बांट दिया। रोज का नियम हो गया दिन भर काम करना और काम से मिले पैसों से हर जरूरतमंद को खाना खिलाना और खुदा का ध्यान। साल के साल गुजर गए। एक दिन शम्स खुद खाना बांट रहे थे कि एक अधेड़ सी औरत आई और उसने शम्स का हाथ पकड़ लिया। बोली, मेरे महबूब उस रात आप मेरी झलक के लिए भीगते रहे, मुझे सब पता था। मगर उस वक्त शम्स, तुम मेरे लायक न थे। एक रोज मुझे जब यह पता चला कि इश्क ने तुममें सूफियाना फूल खिला दिया तो मैं तुम्हारी मोहब्बत में तड़प उठी और भागकर देखो तुम्हारे पास आ गई।

शम्स ने कई दिन की भूखी उस औरत को खाना खिलाया, फिर कहा कि अब तुम जा सकती हो। तब पलटकर उसने कहा कि, मेरे आशिक क्या अब मैं तुम्हारे दिल में नहीं रही? शम्स ने कहा, मैं तुझे चाहता था। तभी मुझे लगा कि अगर तुम्हें चाहता हूं, तो तुम्हें बनाने वाले को चाहा जाए, जो तुम्हारे जैसे करोड़ों को बना चुका है। जब मैं अकेला तुमसे मोहब्बत करता था। आज सारा बसरा शहर मुझसे मोहब्बत करता है।

वह जाने लगी तो शम्स ने पुकार कर कहा, उस सर्द रात तुम्हारे दरवाजे एक आशिक खड़ा था जो वहीं मर गया। उस सुबह एक दरवेश पैदा हो गया और दरवेश किसी एक की मोहब्बत में हो जाए तो काहे का दरवेश? एक सूफी दिलों की आहट सुन लेता है। सूफी दिलों में मोहब्बत भरते हैं, जमाने में इश्क घोलते हैं। जख्म पर ठंडे फाहे रखकर सुकून देते हैं। तुम जाओ और दुनिया के हर इंसान को शम्स समझ कर मोहब्बत करो। ऐसे ही अगर हम हर ठोकर पर रुककर, सोचकर आगे बढ़ें तो हममें और आप में भी शम्स समा सकते हैं। हम भी दुनिया के लिए एक जरूरी हिस्सा बन सकते हैं। लेकिन यह तभी है, जब हम शम्स जैसा पवित्र प्रेम कर सकें।

११५) आदर्श समाज के लिए धन के असली स्वरूप की स्थापना जरूरी - एक माहेश्वरी सेठ के घर में एक ब्राह्मण रसोइया था। उसे ठाकुर कहा जाता था। माहेश्वरी परंपरा में तिलक दो तरह से किए जाते हैं- खड़ा तिलक और आड़ा तिलक। सेठ जी खड़ा तिलक करते थे और ठाकुर आड़ा। सेठ ने ठाकुर का तिलक देखा तो कहा- आड़ा तिलक क्यों करते हो? कल से खड़ा तिलक करना। ठाकुर कुछ बोला नहीं। दूसरे दिन वह फिर आड़ा तिलक करके आया। सेठ ने उसे टोका। तीसरे दिन भी तिलक वैसे ही रहा। सेठ का पारा चढ़ गया। वह बोला- कही बात पर ध्यान क्यों नहीं देते? ठाकुर हाथ जोड़कर चला गया।

चौथे दिन ठाकुर आया। उसके ललाट पर फिर तिलक आड़ा था। सेठ क्रोध में बोला- ठाकुर। मैंने तुमसे क्या कहा था, कुछ समझ में आया या नहीं? ठाकुर ने कहा- जी, सब समझ रहा हूं। सेठ ने पूछा- तिलक कैसे किया है? ठाकुर ने कुर्ता ऊपर कर पेट दिखा दिया। वहां खड़ा तिलक किया हुआ था। सेठ बोले- यह क्या मजाक कर रहा है? ठाकुर ने शांत भाव से कहा- सेठ जी, नौकरी पेट करता है, सिर नहीं। मेरे पास अपना दिमाग है और मैं दिमाग से सोचता हूं, अपनी आस्था के अनुरूप तिलक करता हूं। पेट को भूख लगती है। उसके लिए आपकी नौकरी करता हूं। इसी भावना से आपका तिलक पेट पर लगा लिया है।

यह छोटी-सी कहानी बड़ा रहस्य खोलती है। जहां मत-मजहबों को लेकर छोटी-छोटी बातों में व्यक्ति उलझ जाता है, वहां धर्म की बात गौण हो जाती है और उपासना प्रमुख हो जाती है। संसार में जितने मत, मजहब या संप्रदाय है, वे सब बरकरार रहें, कोई कठिनाई नहीं होगी। किंतु जहां अज्ञानवश सबको एक कर दिया जाता है या अपने अपने मत के आग्रह से दंगे शुरू हो जाते हैं, वहां स्थिति बिगड़ने लगती है।

११६) अपराध की जड़ - चीन के दार्शनिक लाओत्से अपने विचार और बुद्धि के कारण काफी प्रसिद्ध थे। चीन के राजा ने लाओत्से से प्रधान न्यायाधीश बनने का अनुरोध किया और कहा, संपूर्ण विश्व में आप जैसा बुद्धिमान और न्यायप्रिय कोई नहीं है। आप न्यायाधीश बन जाएंगे तो मेरा राज्य आदर्श राज्य बन जाएगा। लाओत्से ने इन्कार करते हुए कहा कि वह उस पद के लिए उपयुक्त नहीं हैं। लेकिन राजा नहीं माना। लाओत्से ने उसे समझाया, मुझे न्यायालय में कार्य करते देखकर आपको अपना विचार बदलना पड़ेगा। मेरा मानना है कि संपूर्ण व्यवस्था में ही दोष है। आपके प्रति आदर भाव रखने के कारण ही मैंने आपसे सत्य नहीं कहा है। अब या तो मैं न्यायाधीश बना रहूंगा या आपके राज्य की कानून-व्यवस्था बनी रहेगी। पहले ही दिन न्यायालय में एक चोर को लाया गया जिसने राज्य के सबसे धनी व्यक्ति का

लगभग आधा धन चुरा लिया था। लाओत्से ने मामले पर अपना निर्णय सुनाया, चोर और धनी व्यक्ति, दोनों को छह-छह महीने की जेल की सजा दी जाए। धनी व्यक्ति ने कहा, आप यह क्या कर रहे हैं? चोरी मेरे घर में हुई है। मेरा धन चुरा लिया गया है, फिर भी आप मुझे जेल भेजने का निर्णय कर रहे हैं। यह कैसा न्याय है? लाओत्से ने कहा, मुझे तो लगता है कि मैंने चोर के प्रति न्याय नहीं किया है। तुम्हें वास्तव में अधिक लंबा कारावास देना चाहिए। तुमने आवश्यकता से अधिक धन जमा करके बहुत से लोगों को संपत्ति से वंचित कर दिया है। देश में हजारों लोग भूखे मर रहे हैं, लेकिन धन संग्रह करने की तुम्हारी लालसा कम नहीं होती। तुम्हारे लालच के कारण ही ऐसे चोर पैदा हो रहे हैं। अपने घर में होनेवाली चोरी के लिए तुम ही जिम्मेदार हो। तुम अधिक बड़े अपराधी हो। राजा ने लाओत्से को उसी दिन हटा दिया।

११७) कभी न करें घमंड - बहुत दिनों की बात है। किसी शहर में रमन, घीसा और राका तीन चोर रहते थे। तीनों को थोड़ा थोड़ा विद्या का ज्ञान था। तीनों चोरों को विद्या का ज्ञान प्राप्त होने के कारण बहुत घमण्ड था। विद्या द्वारा तीनों चोर शहर में बड़े बड़े लोहे की तिजोरियों को तोड़ देते थे और बैंकों को लूट लिया करते थे। इस तरह तीनों चोरों ने शहर के लोगों की नाक में दम कर रखा था। एक बार तीनों चोरों ने एक बड़े बैंक में डकैती करके सारा माल उड़ा दिया। जब पुलिस को खबर हुई तो तीनों चोरों को पकड़ने के लिए तलाश करने लगी। मगर तीनों चोर पास ही के एक घने जंगल में भाग गए।

तीनों चोरों ने देखा कि जंगल में बहुत सी हड्डियां बिखरी पड़ी हैं। रमन ने अनुमान लगाकर कहा- ये तो किसी शेर की हड्डियां हैं। मैं चाहूं तो सभी हड्डियों को अपनी विधा के ज्ञान द्वारा जोड़ सकता हूं। घीसा को भी विधा का घमंड था सो, वह बोला- अगर ये शेर की हड्डियां हैं तो मैं इनको अपनी विद्या द्वारा शेर की खाल तैयार कर उसमें डाल सकता हूं। रमन और घीसा की बात सुनकर राका का भी घमण्ड उमड़ पड़ा और उसने कहा- तुम दोनों इतना काम कर सकते हो तो मैं भी अपनी विधा द्वारा इसमें प्राण डाल सकता हूं।

तीनों चोर अपनी विधा का प्रयोग करने लगे। कुछ देर बाद रमन ने सारी हड्डियों को जोड़ दिया और घीसा ने शेर की हुबहू जान डाल दी। थोड़ी देर में तीनों चोर सामने एक जीवित भयानक शेर को देखकर थर-थर कांपने लगे। मगर शेर के पेट में तो एक दाना नहीं था। वह भूख के मारे गरजता हुआ तीनों चोर पर हमला कर बैठा और मारकर खा गया। शेर मस्त होकर घने जंगल की ओर चल दिया।

इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती है कि कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए। घमण्डी को हमेशा दुख का ही सामना करना पड़ता है। यदि तीनों चोर अपनी विद्या का घमण्ड न करते तो उन्हें जान से हाथ न धोने पड़ते। हमें अपनी विद्या का प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए।

११८) गुरु दक्षिणा का सही वक्त - उज्जैन में सांदीपनि ऋषि के आश्रम में भगवान श्रीकृष्ण विद्याध्ययन करते थे। वह गुरु के चरणों में बैठकर ज्ञान प्राप्त करते थे। वह सुदामा तथा अन्य सहपाठियों के साथ गुरुकुल की सफाई करते। रात्रि को जब गुरुजी सोने लगते, तो उनके चरण दबाते। शिक्षा पूरी कर लेने के बाद श्रीकृष्ण आश्रम से विदा लेने गुरुदेव के पास गए। ऋषि सांदीपनि ने कहा वत्स कृष्ण, गुरुदक्षिणा के रूप में मुझे भौतिक वस्तुएं नहीं चाहिए। जगत में दो वंश चलते हैं। एक पुत्र परंपरा वंश, जो पूर्वजों की वंशबेल बढ़ाता है और दूसरा शिष्य परंपरा का वंश, जो विद्यादान कर गुरु

का नाम अमर करता है। मेरी आकांक्षा है कि एक दिन तुम्हारे द्वारा दिए गए उपदेश से धर्म और न्याय की रक्षा का मार्ग प्रशस्त हो। जब कुरुक्षेत्र में कर्त्तव्य-विमुख अर्जुन को श्रीकृष्ण ने गीता का अमर उपदेश देकर धर्म रक्षा के प्रति प्रेरित किया, तो महर्षि सांदीपनि को लगा कि जैसे श्रीकृष्ण ने गुरुदक्षिणा प्रदान कर स्वयं को गुरु ऋण से मुक्त कर लिया।

११९) रणनीति महत्वपूर्ण है, प्रदर्शन नहीं - ८२ वर्षीय वांग त्सिंग अर्जेंटीना में रहते हैं। इस उम्र में भी वह चीन के युवाओं को मार्शल आर्ट ताई ची सिखाते हैं। ताई ची एक प्राचीन मार्शल आर्ट है, जिसमें अनेक शारीरिक क्रियाएं करते समय सांस पर नियंत्रण रखा जाता है। यह सिर्फ मार्शल आर्ट ही नहीं है, बल्कि योग की भी एक पद्धति है। इसका अभ्यास करनेवाले सुघड़ शरीर के साथ स्थिर और सुदृढ़ मन के भी स्वामी होते हैं। वांग त्सिंग ने इस आर्ट में कई बदलाव या सुधार किए। एक बदलाव तो यह कि ताई-ची आर्ट में पहले रंगीन बेल्टों का उपयोग होता था। त्सिंग ने उसे बंद किया और सीधे-सादे बेल्टों का चलन शुरू किया। तरह तरह के रंग वाले बेल्ट योद्धा के स्तर और कौशल को व्यक्त करते थे। अब सभी योद्धाओं और अभ्यासियों के पास एक ही जैसे बेल्ट थे। यानी वे सभी समान थे। एक शिष्य ने वांग त्सिंग से पूछा, दूसरी सभी मार्शल आर्ट पद्धतियों में योद्धा का स्तर दिखाने के लिए अलग अलग रंगीन बेल्टों का प्रयोग किया जाता है। ताई ची में यह क्यों मना है? वांग ने उत्तर दिया, यदि तुम्हारे पास धन हो, तो तुम उसे हाथ में लेकर घूमते हो या उसे अपनी जेब में संभालकर रखते हो? उस शिष्य ने कहा, जेब में रखते हैं। तब वांग त्सिंग ने फिर पूछा और यदि धन बहुत अधिक हो, तो उसे भी अपने जेब में ठूंसकर ही रखोगे? शिष्य ने कहा, नहीं, जेब में ठूंसकर नहीं रखेंगे, बल्कि उसे संभालकर तिजोरी या बैंक में रख देते हैं। अब वांग त्सिंग ने कहा, सभी को दिखनेवाली बड़ी-सी बेल्ट पहनकर घूमने में क्या तुक है?

१२०) अपने आप मिल जाते हैं खुशी बांटने के तरीके - एक व्यक्ति फलों की दुकान पर पहुंचा और दाम पूछने शुरू किए। फलवाले ने दाम बताए केले ५० रुपये दर्जन, सेब ८० रुपये किलो, अनार १८० रुपये किलो आदि। उसी समय एक गरीब महिला दुकान पर आई और एक किलो सेब व एक दर्जन केले के भाव पूछे। दुकानदार बोला, केले ५ रुपये दर्जन और सेब २५ रुपये किलो। औरत ने एक किलो सेब और दो दर्जन केले खरीदे। यह सब देख पहले वाले ग्राहक को दुकानदार पर बहुत गुस्सा आया और वह उसे घूरने लगा। ग्राहक की नजर समझते ही दुकानदार ने ग्राहक को इशारा करते हुए थोड़ा-सा इंतजार करने को कहा। उधर, वही औरत फल खरीदने के बाद खुशी से बड़बड़ाई, हे भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है, मेरे बच्चे फलों को खाकर बहुत खुश होंगे। उस महिला के जाने के बाद दुकानदार ने पहलेवाले ग्राहक की तरफ देखते हुए कहा कि साहब आपको मैंने कोई धोखा नहीं दिया है। दरअसल यह महिला विधवा और इसके चार बच्चे हैं, लेकिन यह इसे भगवान पर बहुत विश्वास है। लोगों ने जब इसकी मदद करनी चाही तो इसने साफ इनकार कर दिया। इसके चलते यह जब भी दुकान पर आती है तो मैं कम से कम दाम पर इस महिला की मदद करता हूं। इतना ही नहीं दुकानदार ने बताया कि यह महिला सप्ताह में एक बार मेरी दुकान पर आती है और उस दिन मेरी बिक्री सबसे अधिक और ज्यादा मुनाफे की होती है। मुझे इस महिला की मदद करने की यही एक तरकीब सूझी। साथ ही स्वाभिमान भी बचा रहता है। ऐसा करकर मुझे ऐसी ही शांति मिलती है जैसा मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर। खुशी अगर बांटना चाहो तो तरीके भी अपनेआप मिल जाते हैं। आप भी अपने आसपास ऐसे जरूरतमंद लोगों को ढूंढ़िये और उनकी मदद कीजिए।

१२१) अपनों का प्यार - नेहा एक लड़की थी जो अपने मां-बाप का प्यार पाने के लिए हमेशा कुछ न कुछ करती रहती थी कि उसके मां-बाप हमोश उसके साथ रहें। एक दिन की बात है। नेहा के पापा और मां दोनों लोग घर पर थे और नेहा अपने स्कूल गई थी। नेहा की मां कुछ काम से नेहा के कमरे में गई तो वहां पर नेहा का एक नोटबुक था और उस पर लिखा था कि काश मैं टीवी होती। नेहा की मां स्कूल में टीचर थी। शाम में वह बच्चों की कॉपी चेक कर रही थी और उनके पति घर पर आराम से बैठ कर टीवी देख रहे थे। नेहा की मां ने सोचा, यह सही समय है नेहा का लिखा नोट पढ़ने का। उसने अपने पति से कहा- सुनते हो जी, आज एक लड़की ने लिखा है कि काश मैं दूरदर्शन होती तो सब लोग मुझसे प्यार करते, सब लोग मुझको देखने आते, पापा जब भी थककर दफ्तर से घर आते तो मुझको ही पहले देखने आते और मां का जब भी टाइम पास नहीं होता तो वो भी दूरदर्शन के पास आकर समय बीताती। यह सुनकर नेहा के पापा हंसने लगे, लेकिन नेहा की मां रो रही थी इस पत्र को पढ़कर और अपने पति से कहा- आपको पता है यह पत्र किसने लिखा है? तो उसके पति ने कहा- अरे होगा कोई भी? तो उसकी मां ने कहा- यह पत्र हमारी बेटी नेहा ने लिखा है। यह सुनते ही नेहा के पापा को बहुत ही अफसोस हुआ और दोनों पति-पत्नी ने मिलकर शपथ ली कि हम दूरदर्शन से ज्यादा समय नेहा के साथ देंगे।

१२२) प्रवचन का असर - गौतम बुद्ध जिन्हें हम सिद्धार्थ के नाम से भी जानते हैं, उनका प्रवचन चल रहा था। एक व्यक्ति हर रोज प्रवचन सुनने आता था। बुद्ध अपने प्रवचन में लोभ, मोह, अहंकार, द्वेष आदि छोड़ने की बात किया करते थे। एक दिन वह व्यक्ति गौतम बुद्ध के पास आकर बोला, बुद्ध जी, मैं एक महीने से आपका प्रवचन रोज सुन रहा हूं परंतु मुझ पर उसका कोई असर नहीं हो रहा है। क्या मुझमें कोई कमी है, या उसका कोई कारण है? तब बुद्ध ने उस व्यक्ति से पूछा, तुम कहां रहते हो? उसने उत्तर दिया- श्रावस्ती। बुद्ध ने फिर पूछा, तुम श्रावस्ती अपने गांव कैसे जाते हो? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, कभी बैलगाड़ी से और कभी घोड़े से जाता हूं। बुद्ध ने फिर से उस व्यक्ति से प्रश्न किया- तुम्हें श्रावस्ती पहुंचने में कितना समय लगता है? तब उसने समय का हिसाब लगाकर बताया। बुद्ध ने उस व्यक्ति से पूछा अब यहां बैठे, क्या तुम श्रावस्ती पहुंच सकते हो? वह आश्चर्यचकित हुआ और बोला, यहां बैठे भला मैं कैसे श्रावस्ती पहुंच सकता हूं? इसके लिए मुझे चलना पड़ेगा या फिर किसी वाहन का सहारा लेना पड़ेगा। बुद्ध ने कहा, तुम बिल्कुल सही कह रहे हो कि व्यक्ति चलकर ही अपनी मंजिल पर पहुंच सकता है। उसी तरह जो अच्छी बातें होती हैं, पहले उन्हें अपने जीवन में उतारना होता है और उनका अनुसरण करना पड़ता है। उसके अनुसार आचरण भी करना होता है। बुद्ध की यह बात सुनकर उस व्यक्ति ने कहा, अब मैं अपनी भूल समझ गया। आपने जो मार्ग बताया, उस पर आज से ही चलूंगा। बुद्ध ने उस व्यक्ति को आशीर्वाद दिया। आशय यह है कि ज्ञान कोई भी हो वह तभी सार्थक होता है, जब उसको व्यावहारिक रूप में जीवन में उतारा जाता है। केवल प्रवचन सुनने या उसका अध्ययन करने से कुछ प्राप्त नहीं होता है।

१२३) कामयाबी का जज्बा - ग्लेन कनिंघम और उनके बड़े भाई फ्लॉएड जब स्कूल पढ़ते थे, तब उन्हें एक जिम्मेदारी दी गई। उनकी जिम्मेदारी थी कि वे सुबह स्कूल पहुंचकर स्कूल के कमरे को केरोसिन स्टोव जलाकर गर्म करें। उस समय ग्लेन की आयु आठ वर्ष थी। एक दिन किसी ने गलती से केरोसिन के कंटेनर में पेट्रोल डालकर रख दिया। स्टोव जलाते ही कमरे में धमाका हुआ और आग लग गई। फ्लॉएड और ग्लेन भी आग में बुरी तरह झुलस गए। फ्लॉएड

की मृत्यु हो गई और ग्लेन के शरीर का निचला हिस्सा बुरी तरह झुलस गया। वह बच तो गए लेकिन उनके पैरों को जहर से बचाने के लिए डॉक्टर ने उन्हें काटने का सुझाव दिया। ग्लेन ने डॉक्टर का सुझाव ठुकरा दिया और बोले, मैं इन्हीं पैरों पर चलना शुरू करूंगा। डॉक्टर ग्लेन की बात सुनकर अचंभित हुए। इसके बाद ग्लेन अपने पैरों को काम लायक बनाने के लिए वह सब कुछ करते, जो वह कर सकते थे। बारह साल की आयु में ही ग्लेन दौड़ने लगे और अपने स्कूल में तेज दौड़नेवाले धावक बन गए। तेरह साल की आयु में उन्होंने पहली एक मील की रेस जीती। कंसास रिले में उन्होंने सबसे कम समय के साथ एक मील की दूरी तय कर विश्व रेकॉर्ड बनाया। १९३२ में लॉस एंजलिस ओलिंपिक में हुई पंद्रह सौ मीटर की दौड़ में वह चौथे रहे। १९३६ के बर्लिन ओलिंपिक में उन्होंने पंद्रह सौ मीटर की रेस में सिल्वर जीता। इसके बाद उन्होंने पंद्रह सौ मीटर और एक मील की रेस में सात बार इंडोर का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। आगे चलकर ग्लेन कनिंघम यूथ रांच की स्थापना की, जहां उन्होंने करीब दस हजार गरीब बच्चों का पालन-पोषण किया। अपने दृढ़ संकल्प से ग्लेन ने यह साबित कर दिया कि यदि जीने की इच्छा और कुछ करने की चाहत हो तो हर बाधा सीढ़ी बन जाती है।

१२४) अली का खजाना - ईरान के शहंशाह अब्बास एक दिन जंगल में शिकार खेलने गए। खेलते-खेलते वह रास्ता भटक गए। जब वह रास्ते की खोज के लिए भटक रहे थे, तभी बादशाह को बंसी की आवाज सुनाई दी। वह उस स्थान पर पहुंचे जहां से आवाज आ रही थी। देखा, एक बालक मस्ती से बंसी बजा रहा था। कुछ दूर पर उसके पशु चर रहे थे। बादशाह ने बालक का नाम और उसका ठिकाना पूछा। बातचीत के दौरान वह चरवाहे बालक की हाजिर जवाबी और प्रतिभा के कायल हो गए। उसे शाही दरबार में लाया गया। आगे चलकर वह एक रत्न सिद्ध हुआ। नाम था उसका मोहम्मद अली बेग। बादशाह के बाद उसका अवयस्क पौत्र शाह सफी तख्त पर बैठा। कुछ समय बीता, जासूसों ने शाह के कान भरे कि कोषाध्यक्ष मोहम्मद अली बेग शाही खजाने का दुरुपयोग करता है। शाह उनकी बातों में आ गया। उसने मोहम्मद अली की हवेली का निरीक्षण किया। वहां चारों ओर सादगी थी। निराश होकर शाह लौटने लगा कि तभी जासूसों के इशारे पर उसका ध्यान एक कक्ष की ओर गया, जिसमें तीन मजबूत ताले लटक रहे थे। इसमें कौन से हीरे-जवाहरात, मुहर बंद कर रखे हैं मोहम्मद? शाह ने पूछा। मोहम्मद अली सिर झुकाकर बोला- हुजूर, इसमें हीरे-जवाहरात, मुहरों से भी कीमती चीजें हैं, जो मेरी निजी संपत्ति है। साथ ही कहा कि हुजूर को प्रजा की निजी संपत्ति की जांच का अधिकार है। इस पर शाह ने मोहम्मद को ताले खोलने को कहा। ताले खोल दिए गए। कक्ष के बीचों बीच एक तख्त पर कुछ चीजें करीने से रखी थीं- एक बंसी, सुराही, भात रखने की थैली, लाठी, चरवो की पोशाक और दो मोटे ऊनी कंबल। मोहम्मद बोला, यही हैं मेरे हीरे-जवाहरात। बादशाह जब मुझे पहली बार मिले थे, तब मेरे पास यही चीजें थीं। आज भी निजी कहने को मेरी यही संपत्ति हैं। बादशाह लज्जित होकर लौट गया।

१२५) अपना सुख और दूसरों का दुख हमेशा कम लगता है - अपने सुख और दूसरों के दुख हमेशा कम ही लगते हैं। दूसरों के बारे में सोचते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम भी किसी के लिए दूसरे ही हैं।

कहीं किसी पर्वत पर एक ज्ञानी महात्मा रहते थे। उनकी प्रसिद्धि इतनी अधिक थी कि उनके दर्शन के लिए लोग नदियां और घाटियां पार करके चले आते। लोग यह मानते थे कि महात्मा उन्हें दुखों और समस्याओं से छुटकारा दिला सकते हैं।

ऐसे ही कुछ श्रद्धालुओं को महात्मा ने तीन दिनों तक खाली बैठाकर इंतजार कराया। इस बीच और भी लोग आ पहुंचे। जब वहां और लोगों के लिए जगह नहीं बची तो महात्मा ने सभी उपस्थितों से कहा, आज मैं तुम सभी को दुखों और कष्टों से मुक्ति का उपाय बताऊंगा लेकिन तुम्हें यह वचन देना होगा कि तुम किसी को भी नहीं बताओगे कि मैं यहां रहता हूं और किसी और को यहां नहीं भेजोगे। इस बात पर सबकी रजामंदी ले लेने के बाद उन्होंने सबसे एक एक करके अपनी समस्याएं बताने को कहा।

किसी ने बोलना शुरू किया, लेकिन उसे किसी और ने टोंक दिया- सभी समझ गए थे महात्मा से संवाद का यह अंतिम अवसर था। जब वहां बहुत शोरगुल होने लगा तब महात्मा ने कहा शांत हो जाइए। आप सभी अपने अपने कष्ट और तकलीफें एक पर्चे में लिखकर मेरे सामने रख दीजिए।

जब सभी लोग लिख चुके तब महात्मा ने एक टोकरी में सारे पर्चों को आपस में मिला दिया और कहा, ये टोकरी एक दूसरे के बीच घुमाते जाओ। हर व्यक्ति इसमें से एक पर्चा उठाए और पढ़े, फिर यह तय करे कि वह अपने दुख ही अपने पास रखना चाहेगा या किसी और के दुख लेना पसंद करेगा।

सारे व्यक्तियों ने टोकरी से पर्चे उठाकर पढ़े और पढ़ते ही सभी बहुत चिंता में पड़ गए। वे इस नतीजे पर पहुंचे कि उनके दुख और तकलीफें कितनी ही बड़ी क्यों न हो, पर दूसरों के दुख दर्द के सामने वे कुछ भी नहीं थी। दो घंटे के भीतर उनमें से हर किसी ने सारे पर्चे देख लिए और सभी को अपने ही पर्चे अपनी जेब के हवाले करने पड़े। दूसरों के दुखों की झलक पाकर उन्हें अपने दुख हल्के लगने लगे थे। जीवन का यह जरूरी सबक सीखकर वे सभी अपने अपने घर को चले गए। उनके दुख तो बरकरार थे पर उनका बोझ अब दिल और दिमाग पर उतना नहीं लग रहा था। फिर उनमें से किसी ने भी किसी और को महात्मा के निवास का पता नहीं बताया।

१२६) रणजी का जज्बा - एक बार शतक बनाकर रणजी पविलियन लौटे तो मित्रों ने उन्हें बधाई दी। रणजी ने उत्तर देने के बजाय अपने बर्फ से सफेद पैड की ओर इशारा कर दिया, जिस पर तीन जगह धब्बे लगे थे। वास्तव में, वह तीन बार खेलते हुए गेंद से चूके थे और उनके लिए यह बात नागवार थी। एक मशहूर गेंदबाज ने एक बार कहा भी था, मेरी जिंदगी की सबसे शानदार गेंद वह थी, जिसे मैंने रणजी के पैड पर हिट किया था। रणजी को जब ऑस्ट्रेलिया यात्रा के लिए चुना गया तो एक ऑस्ट्रेलियन प्रशंसक इतना प्रसन्न हुआ कि सीनेट में एक विशेष अधिनियम लागू करके उन्हें सौ डालर के प्रचलित टैक्स से मुक्त करा दिया। यह टैक्स किसी भी विदेशी को ऑस्ट्रेलिया में प्रवेश करने से पहले देना पड़ता था। एडिलेड के पहले टेस्ट मैच में रणजी ने १८९ रन बनाए। परंतु उनकी प्रसिद्धि जल्द ही धूमिल पड़ गई, जब उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज अर्नेस्ट जोंस पर गलत गेंद फेंकने का आरोप लगाया। इस आरोप के बाद रणजी बीमार हो गए। डॉक्टरों ने बेड रेस्ट की सलाह दी। ऑस्ट्रेलियाई आलोचकों ने ऐसा प्रचार करना शुरू किया कि रणजी जोंस की तूफानी गेंदबाजी से भयभीत हैं। गर्वीले राजा रणजी इस आरोप को बर्दाश्त नहीं कर सके और बिस्तर से उठकर सीधे खेल के मैदान में आ पहुंचे। उन्होंने इंग्लैंड के लिए १९५ रन बनाकर सबका मुंह बंद कर दिया। हालांकि मैच के बाद रणजी को फिर बिस्तर पकड़ लेना पड़ा। दिलचस्प बात है कि ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट सीरीज के दौरान ही उनका ऑपरेशन भी हुआ,

बावजूद इसके वह मैच में खेलते रहे और रनों की बौछार से आलोचकों की आलोचनाएं धोते रहे। उनके इसी जज्बे के कारण आलोचकों की बातों को दरकिनार करते हुए ऑस्ट्रेलियाई ही नहीं दुनिया भर के फैंस उन पर अपना दिल लुटाते रहे।

१२७) सत्य के प्रति गांधीजी का आग्रह सर्वोपरि - किसी भी कार्य को करने का व्रत लेना और उसे अपने कहे अनुसार निभाना बहुत ही मुश्किल है, लेकिन उससे भी मुश्किल है उस व्रत को तोड़कर सबके सामने इस सच को स्वीकार करना कि उनसे व्रत का पालन नहीं हो पाया और उन्होंने आधे में ही व्रत तोड़ लिया। ऐसे समय में गांधीजी का यह किस्सा सच बोलने के लिए हमें प्रोत्साहित करता है।

सत्य के प्रति गांधीजी का आग्रह सबसे ऊपर रहता था। वह स्वयं तो इसका पालन करते ही थे, यह भी चाहते थे कि उनके करीबी लोग भी सदैव सत्य का पालन करते रहें। यह उन दिनों की बात है जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में थे और फीनिक्स आश्रम में रहते थे।

एक बार कुछ युवक उस आश्रम में रहने के लिए आए। उन युवकों ने एक विचित्र व्रत लिया। उन्होंने मिलकर निश्चय किया कि एक महीने तक वे बिना नमक वाला भोजन करेंगे। इसके लिए उन्होंने प्रतिज्ञा भी कर ली। कुछ दिनों तक तो वे अपनी प्रतिज्ञा पर बाकायदा अमल करते रहे, लेकिन शीघ्र ही वे सादा भोजन से उकताने लगे। जब इस तरह और चलाना मुश्किल हो गया, तो एक दिन उन युवकों ने भोजन डरबन से मंगवा कर मसालेदार और स्वादिष्ट चीजें खा लीं। लेकिन उन्हीं में से एक युवक ने बापू को यह सब बता भी दिया। बापू उस समय तो कुछ नहीं बोले, लेकिन प्रार्थना सभा में उन्होंने उन सब युवकों को बुला कर खाने के बारे में पूछपाछ की। उन सबने मना कर दिया। उलटा उन लोगों ने भेद खोलनेवाले साथी को ही झूठा ठहरा दिया। बापू को युवकों की यह हरकत अच्छी नहीं लगी। वे जोर से अपने गालों को पीटने लगे। फिर बोले- मुझसे सच्चाई छिपाने में कसूर तुम्हारा नहीं, मेरा है, क्योंकि मैंने अभी तक सत्य का गुण प्राप्त नहीं किया है। इसलिए सत्य मुझसे दूर भागता है। बापू का यह बर्ताव देखकर युवकों पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे सब एक-एक करके बापू के चरणों में गिर पड़े और उन्होंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

१२८) अपनी दृष्टि बदलें, दुनिया भी बदली नजर आएगी - एक अरबपति आदमी को चौबीसों घंटे आंखों में दर्द रहता था, उसने दुनियाभर के चिकित्सकों को दिखा लिया, पर कोई आराम न मिला। उसके लिए परेशानी अब असहनीय हो चली थी। मरता क्या न करता, वह अन्य वैकल्पिक उपाय भी आजमाने लगा। इसी बीच उसे एक संत के बारे में पता चला, जो हर तरह के दर्द से मुक्ति दिलाने के लिए विख्यात थे। उस अमीर ने उन्हें बुलावा भेजा। संत आए और उसे देखते ही बोले, तुम जितनी ज्यादा हरी चीजें देख सकते हो देखो।

उनके जाने के बाद उस व्यक्ति ने अपने नौकरों को भेजकर बाजार में उपलब्ध सारा हरा रंग मंगा लिया। फिर उसने नौकरों की पूरी फौज लगाकर अपने घर की दीवारों समेत हर चीज हरे रंग में रंगवा ली। अब उसके चारों तरफ सबकुछ हरा ही हरा था। हरा-हरा देखने के चक्कर में उसने बाहर निकलकर कारोबार का तनाव लेना भी बंद कर दिया और आश्चर्य उसका दर्द गायब हो गया। कुछ दिनों बाद संत उसका हालचाल जानने आए, तो पहले नौकरों ने उन पर हरे रंग से भरी बाल्टी उलट दी। फिर वे उन्हें अमीर के पास ले गए। नौकरों को डर था कि संत के गेरुए वस्त्र देखकर कहीं मालिक की

आंखों का दर्द लौट न आए। जब अमीर ने संत को उनके बताए उपाय के लिए धन्यवाद दिया, तो वे बोले, मैंने तो धन कमाने के तनाव से तुम्हारा ध्यान हटाने के लिए तुम्हें यह उपाय बताया था। यदि तुम सहजबुद्धि लगाते और सबकुछ रंगने के बजाय यदि आंखों पर हरा चश्मा चढ़ा लेते, तो क्या ज्यादा कारगर नहीं होता। वरना ऐसे तो तुम चाहकर भी पूरी दुनिया को रंग नहीं सकते। सच है, यदि हम अपना चश्मा, अपनी दृष्टि बदल लें, तो दुनिया भी बदल जाती है।

१२९) पक्षी और फूल की दोस्ती - कभी वह झील बहुत बड़ी थी। उसके चारों तरफ घने पेड़ थे। वहां सुंदर सुंदर फूल खिलते थे। जाड़े की ऋतु में देश विदेश के पक्षी वहां आकर बसेरा करते थे। सब एक-दूसरे को अपने अपने देश के बारे में बताते। नई-नई बातें सुनाते थे। दिनभर चिड़ियों की चहचहाट से वह सारी जगह भर जाती थी। उन्हें हंसते-खिलखिलाते देखकर झील में भी तरंगे उठने लगती थीं।

मगर झील का यह सुख ज्यादा दिनों तक नहीं रहा उसका पानी धीरे-धीरे कम होने लगा। यह कुछ मौसम के कारण हुआ, कुछ लोगों की नासमझी के कारण। इसी नासमझी से उस सुंदर जगह के पेड़ कटने लगे। वहां नए-नए मकान बनने लगे। जहां सिर्फ चिड़ियों, पक्षियों और पेड़ों की पत्तियों का शोर होता था, वहां आरे-कुल्हाड़े और मशीनों का शोर भी घुल मिल गया। उस बार जाड़े में जब दूर देश के पक्षी झीलों का सफर तय करके आए उन्हें झील का पानी कुछ कम लगा। पेड़ भी कम हो गए थे। उन्हें बहुत दु:ख हुआ। उन्होंने अपने मन के दु:ख को अपनी दोस्त चिड़ियों के साथ मिलकर भुला लिया। मगर हर जाड़े में झील और जंगल का हाल बुरा होता गया। अधिकतर दूर देश के पक्षियों ने आना बंद कर दिया था। मगर कुछ पक्षियों को इस जंगल से वाकई लगाव था। वे अपने पैदा होने के बाद से यहां लगातार आ रहे थे।

झील के किनारे एक विशाल पेड़ था। सभी पक्षियों और चिड़ियों का उससे बहुत प्रेम था। वह उनकी प्रिय जगह थी। वे सब कहीं धूप में बैठकर दिनभर बातें करते। एक दूसरे को अपने अपने देश की कहानियां सुनाते। आपस में चुहल करते। लेकिन वह पेड़ भी एक दिन काट दिया गया। चिड़ियों को इतना दुख हुआ कि उस दिन वे चहचहाना भूल गई। फिर देश के पक्षियों ने तय कर लिया कि अब वे यहां कभी नहीं आएंगे उनमें से एक पक्षी की दोस्ती एक फूल से हो गई थी। वह पक्षी बहुत दूर देश से आता था। वह फूल भी ठीक उसी तरह हर जाड़े में खिलता और उसका इंतजार करता। इस बार भी वह पक्षी उस फूल के मोह अकेले ही उस झील पर आया। फूल खिलकर उसी का इंतजार कर रहा था। दोनों ने खूब बातें कीं। इस बार वह फूल बहुत दु:खी था। उस झील और जंगल की सुंदरता खत्म हो जाने से उस जैसे न जाने कितने फूलों ने खिलना बंद कर दिया था। बस चारों तरफ मकान ही मकान दिख रहे थे। आखिर उस पक्षी के वापस लौटने का दिन आ गया। फूल और पक्षी दोनों ही बहुत उदास थे। उदास वह झील भी थी। पक्षी ने अपने जाने के दिन फूल से कहा- अब यहां क्या रखा हैं? आओ तुम भी मेरे साथ चलो जैसे यहां खिलते हो, वैसे वहां खिलना। वहां ज्यादा सुख से रहोगे। फूल बोला- नाराज मत होना मित्र मैं वहां खिल नहीं पाऊंगा। अपने देश की धरती छोड़कर भी कोई खिलता है। पक्षी फूल से विदा लेकर उड़ गया। उसने वादा किया वह अगले जाड़े फिर आएगा।

१३०) मिलनसार होने के कारण राजू सबका प्रिय बना - राजू पढ़ने में थोड़ा कमजोर था। लेकिन वह इतना मिलनसार था कि लोग उससे बहुत प्यार करते थे। राजू का परिवार बहुत छोटा और सुखी था। पिता सरकारी नौकरी करते

थे और मां घर संभालती थी। बहन उससे चार-पांच साल छोटी थी। राजू के पड़ोस में बहादुर अंकल का घर था। बहादुर अंकल के परिवार से बराबर झगड़ा होता रहता था। बहादुर अंकल छोटी-छोटी बातों पर राजू के पापा से झगड़ा करते। बहादुर अंकल से घर के सामने की एक नाली को लेकर विवाद था। दोनों परिवारों में इसे लेकर झगड़ा कई सालों से था। कोर्ट कचहरी तक की नौबत आ गई थी।

बहादुर अंकल हर किसी से झगड़ा मोल ले लेते थे। उनका परिवार भी काफी बड़ा था। कुल मिलकर आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपैया वाली हालत थी। मुकदमेबाजी में आर्थिक स्थिति और कमजोर होती चली गई थी। मई के महीने में लू लगने से उनकी तबीयत खराब हुई तो ठीक होने का नाम नहीं ले रही थी। घर के सामने वाली मड़ई में पड़ी चारपाई पर लेटे रहते। राजू बहादुर अंकल की यह हालत कई दिनों से देख रहा था। उनके परिवार से झगड़ा था तो उसने बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। उसे इस बात का भी डर था कि कहीं उसके पिता ने देख लिया तो वे भी गुस्सा करेंगे।

राजू एक दिन सुबह सुबह ट्यूशन के लिए निकल रहा था तो बहादुर अंकल खांसने की आवाज सुनी। वह अपने आपको रोक नहीं पाया और उस मड़ई के पास पहुंच गया जहां वे लेटे हुए थे। राजू ने उनसे पूछ ही लिया-अंकल आपकी तबीयत कैसी है?

बहादुर अंकल को थोड़ा आश्चर्य हुआ कि दुश्मन का लड़का उनसे हालचाल क्यों पूछ रहा है? फिर भी वे उठे और बोले-बेटा कई दिन से तबीयत खराब चल रही है। दवा ली लेकिन ठीक नहीं हुई अब तो पैसा भी नहीं है कि दवा ले आऊं।

राजू के पास दो सौ रुपये थे। आज उसे ट्यूशन की फीस जमा करनी थी। उसनरे ट्यूशन की फीस बहादुर अंकल के हाथ में रखते हुए कहा- इन पैसों का दवा ले लें। बहादुर अंकल को पैसे देने के बाद वह तेजी से निकल गया। राजू हमेशा से ट्यूशन की फीस समय पर देता था। लेकिन इस बार उसे कोई बहाना ढूंढना होगा। वह रास्ते भर सोचता रहा कि ट्यूशनवाले मास्टर साहब से क्या बताएगा? ट्यूशन पर पहुंचा तो उसे एक उपाय सूझा। उसने मास्टर साहब से कहा-पिताजी की पेमेंट अभी नहीं आई है। उन्होंने कहा है कि फीस अगले महीने दे देंगे।

मास्टर साहब ने-ठीक है कह कर राजू को आश्वस्त कर दिया। बहादुर अंकल दो-तीन दिन में ही ठीक हो गए। उन्होंने राजू से कहा कि बेटा तुम्हारा पैसा जल्द ही लौटा दूंगा।

१३१) बिजली और तूफान - बहुत समय पहले बिजली और तूफान धरती पर मनुष्यों के बीच रहा करते थे। राजा ने उन्हें मनुष्यों की बस्ती से दूर रखा था। बिजली तूफान की बेटी थी। जब कभी किसी बात पर बिजली नाराज हो उठती, वह तड़प कर किसी के घर पर गिरती और उसे जला देती या किसी पेड़ को राख कर देती, या खेत की फसल नष्ट कर देती। मनुष्य को भी वह अपनी आग से जला देती थी। जब-जब बिजली ऐसा करती, उसके पिता तूफान गरज-गरजकर उसे रोकने की चेष्टा करते। किंतु बिजली बड़ी ढीठ थी। वह पिता का कहना बिल्कुल नहीं मानती थी। यहां तक कि तूफान का लगातार गर्जना मनुष्यों के लिए सिरदर्द हो उठा। उसने जाकर राजा से इसकी शिकायत की। राजा को उसकी शिकायत वाजिब लगी। उन्होंने तूफान और उसकी बेटी बिजली को तुरंत शहर छोड़ देने की आज्ञा दी और बहुत दूर जंगलों में जाकर रहने को कहा। किंतु इससे भी समस्या का समाधान नहीं हुआ। बिजली जब नाराज होती, जंगल के पेड़ जला डालती। कभी-कभी पास के खेतों का भी नुकसान कर डालती। मनुष्य को यह भी सहन न हुआ। उसने फिर राजा से

शिकायत की। राजा बेहद नाराज हो उठा। उसने तूफान और बिजली को धरती से निकाल दिया और उन्हें आकाश में रहने की आज्ञा दी, जहां से वे मनुष्य का उतना नुकसान नहीं कर सकते थे जितना की धरती पर रहकर करते थे।

१३२) समाधान - लो मंत्रीजी की सिफारिश आ गई। कमेटी के अध्यक्ष ने फोन का चोंगा क्रेडिल पर रखते हुए कहा। अब तो हम लोग लिस्ट फाइनल कर चुके हैं। अब किसका नाम काटा जा सकता है? कमेटी के एक सदस्य ने चिंता प्रकट करते हुए कहा। मगर मंत्रीजी के आदमी को तो एडजस्ट करना ही पड़ेगा। अध्यक्ष ने मायूस स्वर में कहा। चयनित सूची पर फिर से विचार होने लगा। यह अरुण कुमार एमएलए साहब का आदमी है और विनीत कुमार की सिफारिश चेयरमैन ने की है। एक मेम्बर ने जानकारी दी। यह संजीव मेरे भतीजे का साला है। दूसरे मेंबर बोले। और यह विमल वर्मा मेरा रिश्तेदार है। तीसरे मेम्बर ने तपाक से कहा। यह तीन आदमी मेरे हैं। अध्यक्ष ने अपने आदमियों के नाम गिनाए। फिर किसका नाम काटा जाए। रामपाल और धर्मदास दोनों अनुसूचित जाति के हैं। इनका नाम भी नहीं काटा जा सकता। पूरी कमेटी गहरी चिन्ता में बैठी हुई। कोई रास्ता समझ में नहीं आ रहा है। इस दीपक कुमार का नाम काट दिया जाए। इसकी कोई सिफारिश नहीं है और यह रिजर्वेशन में भी नहीं आता है। एक मेंबर ने सुझाव दिया। मगर यह मेरिट में सबसे टॉप पर है। दूसरे मेंबर ने शंका प्रकट की। इससे क्या फर्क पड़ता है। इसका नाम काटने में कोई हर्ज नहीं है। ब्रिलिएंट आदमी है। कहीं न कहीं नौकरी मिल ही जाएगी। अध्यक्ष मुस्कराते हुए बोले।

१३३) जब शेर ने दिया अभयदान - पुण्यकोटि ने शेर से विनय के साथ कहा- मुझे घर जाने दो, बछड़े को दूध पिलाने के बाद मैं स्वयं तुम्हारे सम्मुख हाजिर हो जाऊंगी। अभी मेरे बच्चे को मेरी जरूरत है, मुझ पर दया करो।

कलिंग नामक एक ग्वाला पहाड़ के निकट अपनी गायों के साथ बहुत सुख-संतोष से रहता था। उसकी गायों में पुण्यकोटि नाम की एक गाय थी जो अपने बछड़े को बहुत प्यार करती थी। प्रतिदिन संध्या समय वह रंभाती और दौड़ती हुई घर लौट आती थी। ग्वाला उसकी गाय से बेहद प्रेम करता था और हर शाम को गाय को बाहर लेकर सैर पर जाता था।

उसी पहाड़ पर एक शेर भी रहता था। एक बार बहुत दिनों तक उसे कुछ खाने को नहीं मिला। वह भूख के कारण व्याकुल हो रहा था और किसी शिकार की तलाश में था। उसने एक दिन शाम को पुण्यकोटि गाय से रोककर कहा, मैं तुम्हें अपना आहार बनाऊंगा। मैं बहुत दिनों से भूखा हूं और अगर मैंने अब कुछ नहीं खाया तो मैं निश्चय ही मर जाऊंगा। इसलिए अब तुम मेरा आहर बनोगी।

पुण्यकोटि ने शेर से विनय के साथ कहा, मुझे घर जाने दो, बछड़े को दूध पिलाने के बाद मैं स्वयं तुम्हारे सम्मुख हाजिर हो जाऊंगी। मैं वादा करती हूं कि मैं किसी भी कीमत पर तुम्हारे पास आऊंगी। फिर तुम मुझे खा सकते हो पर अभी मेरे बच्चे को मेरी जरूरत है। पहले तो शेर ने उसकी बात न मानी, पर जब पुण्यकोटि ने विश्वास दिलाया कि वह निश्चय ही वापस आने का वचन दे रही है तो शेर ने कहा, अच्छा, तुम जा सकती हो लेकिन अपना वचन निभाना न भूलना। मैं तुम्हारा यहीं इंतजार कर रहा हूं।

गौशाला में बछड़े को दूध पिलाते समय पुण्यकोटि ने उसको वह समाचार दिया और आंखों में आंसू भरकर अपने बछड़े से विदा ली। बाहर निकलते समय उसने बछड़े से कहा, बेटा, सावधानी से और नम्र भाव से रहना।

फिर पुण्यकोटि ने अन्य गायों से कहा, बहनों, मैं तो जा रही हूं, लेकिन मेरे बछड़े को अपना बच्चा समझकर इसका ध्यान रखना। मैं तुम्हारा अहसान मानूंगी।

फिर पुण्यकोटि ने शेर के पास जाकर कहा, लो, मुझे खा लो। शेर ने सोचा कि इतनी अच्छी गाय को अपना आहार बना लेना तो बहुत बुरा होगा। इस गाय ने मुझसे जो वादा किया था उसे निभाने के लिए अपने प्राण की भी परवाह नहीं है इसे और शेर को उस पर दया आ गई।

यह सोचकर उसने उस गाय को छोड़ दिया और आगे के लिए अन्य सब गायों को भी अभयदान दे दिया।

१३४) कामयाबी पाने का तरीका - रिचर्ड हूकर ने ७ साल की मेहनत के बाद अपना उपन्यास लिखने में सफलता पाई। इस उपन्यास को पूरा करने के लिए उन्हें दिन-रात तक का बोध नहीं रहा। कई-कई दिनों तक उन्होंने खाना तक नहीं खाया। यहां तक कि जब उनके मित्र उनके पास आते तो वह उनसे बात तक न करते, बस अपना उपन्यास लिखने में लगे रहते। अथक मेहनत के बाद उपन्यास पूरा हुआ। वह इसे लेकर एक प्रतिष्ठित्त प्रकाशक के पास गए। प्रकाशक ने उपन्यास के प्रथम पृष्ठ को देखते ही रिचर्ड पर व्यंग्य करते हुए कहा, यह उपन्यास केवल रद्दी की टोकरी में डाले जाने लायक है। इसे मैं तो क्या, कोई छोटा-मोटा प्रकाशक भी प्रकाशित नहीं करेगा। अथक मेहनत के बाद पहली बार ही मिले इतने बड़े नकारात्मक जवाब से रिचर्ड के विचारों में जंग शुरू हो गई। उनके सकारात्मक विचारों पर नकारात्मक विचार हावी होने लगे। एक दिन जब उनका मन यह कह रहा था कि यह उपन्यास कभी भी प्रकाशित नहीं हो पाएगा तो उन्होंने उस धारणा को दबाकर मंद-मंद स्वर में बोलना आरंभ कर दिया कि यह उपन्यास न केवल प्रकाशित होगा, अपितु पूरी दुनिया में यह ऐसी धूम मचा देगा कि लोग देखते रह जाएंगे। वह हर प्रकाशक के पास जाने से पहले और बाद तक यही बोलते रहते। २१ प्रकाशकों ने उनके उपन्यास को अस्वीकृत कर दिया। लेकिन रिचर्ड का आत्मविश्वास और उत्साह बलवती होता रहा। आखिर एक दिन एक प्रकाशक ने उसे प्रकाशित करने पर अपनी सहमति की मुहर ही लगा दी। कुछ ही समय बाद यह उपन्यास न केवल बेस्टसेलर बन गया, अपितु इस उपन्यास पर एक सफल फिल्म और एक सफल टेलीविजन धारावाहिक भी बना। इस प्रकार रिचर्ड हूकर अपने बुलंद हौसलों के कारण कामयाब होकर पूरी दुनिया के सामने एक प्रेरणा बन गए।

१३५) आखिरकार राजा को भूल का एहसास हुआ - एक बार प्रसन्न होकर राजा ने तेनालीराम को पांच हाथी उपहार में दिये। मगर निर्धन होने के कारण तेनालीराम पांच-पांच हाथियों का खर्च नहीं उठा सकता था, इसलिए वह परेशान हो गया। फिर भी वह शाही उपहार को घर ले आया।

घर पर पत्नी शिकायत करती कि हम स्वयं तो ठीक से रह नहीं पाते, इन हाथियों के रहने की व्यवस्था कैसे करें? इनके लिए कहां से भोजन लायें? यदि राजा इन हाथियों के स्थान पर पांच गायें ही दे देते, तो कम-से-कम उनके दूध से हमारा भरण-पोषण तो होता। कुछ देर सोचने के बाद तेनाली ने हाथियों से पीछा छुड़ाने की योजना बना ली। वह बोला- मैं जल्दी ही वापस आ जाऊंगा। इन हाथियों को लेकर काली मंदिर गया और उनके माथे पर तिलक लगाया। फिर हाथियों को नगर में घूमने के लिए छोड़ दिया। अधिकतर समय हाथी भूखे ही रहते।

शीघ्र ही वे निर्बल हो गये। किसी ने हाथियों की दुर्दशा की सूचना राजा को दी। राजा अप्रसन्न हो गये। उन्होंने

तेनालीराम को दरबार में बुलाकर पूछा- तेनाली, तुमने हाथियों के साथ ऐसा दुर्व्यवहार क्यों किया? तेनालीराम बोला- महाराज, उपहार में मिले हाथियों को अस्वीकार करता, तो आपका अपमान होता। यह सोचकर मैंने उन्हें स्वीकार कर लिया, परंतु यह मेरे ऊपर बोझ बन गया, क्योंकि मैं निर्धन व्यक्ति हूं, मैं पांच हाथियों का भार नहीं उठा सकता था, अत: मैंने उन्हें देवी काली को समर्पित कर दिया। यदि आप पांच हाथियों के स्थान पर मुझे पांच गायें उपहार में दे देते, तो वे मेरे परिवार के लिए ज्यादा उपयोगी होतीं। राजा बोले- तब तुम उनके साथ भी तो ऐसा ही दुर्व्यवहार करते?

नहीं महाराज। गायें तो पवित्र जानवर हैं और फिर गाय का दूध मेरे बच्चों के पालन-पोषण के काम आता। राजा को भूल का एहसास हुआ। उन्होंने तुरंत आदेश दिया कि तेनाली से हाथियों को वापस लेकर पांच गायें उपहार में दी जायें।

१३६) पराजय की पहली सीढ़ी - महाभारत का युद्ध चल रहा था। एक ओर अर्जुन थे, जिनके सारथी थे श्रीकृष्ण, तो दूसरी ओर कर्ण थे और उनका सारथी शल्य। भगवान श्रीकृष्ण ने कर्ण के सारथी से कहा- तुम हमारे विरुद्ध जरूर लड़ना पर मेरी एक बात जरूर मानना। जब कर्ण प्रहार करे, तब कहना कि यह भी कोई प्रहार होता है। तुम प्रहार करना नहीं जानते। बस, तुम इन वाक्यों को दोहराते रहना। सारथी शल्य ने कृष्ण की बात स्वीकार कर ली। युद्ध आरंभ हुआ।

कर्ण के प्रत्येक प्रहार पर शल्य कहता, यह भी कोई प्रहार है? आप प्रहार करना ही नहीं जानते।

उधर, अर्जुन के प्रत्येक प्रहार पर, कृष्ण कहते वाह कैसा प्रहार है। क्या निशाना साधा है। प्रत्येक बार उसके सारथी द्वारा कहने पर कर्ण हतोत्साहित हो गया। अर्जुन की शक्ति बढ़ती गई और पांडव पहले से अधिक शक्तिशाली हो गए, इसलिए प्रोत्साहन मन के लिए अमृत है, जबकि हतोत्साहित मन पराजय की पहली सीढ़ी है।

१३७) गणित ने उबारा - पुरानी बात है। गणितज्ञ भास्कराचार्य की एक पुत्री थी लीलावती। विवाह के कुछ समय पश्चात वह विधवा हो गई। वह हमेशा दुखी रहती थी। भास्कराचार्य पुत्री को दुखी हालत में देखकर उसे ससुराल से घर ले आए। घर आकर भी लीलावती का वही हाल रहा। वह सारा दिन अपने जीवन को कोसती रहती और अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहाती रहती थी। एक दिन भास्कराचार्य ने लीलावती को समझाया, बेटी, मुझे तुम्हारे दुख का अंदाजा है, पर कब तक तुम इस तरह रोती रहोगी? जो चला गया वह वापस तो नहीं आ सकता। एक न एक दिन सभी को इस दुनिया से जाना है। यदि तुम सारा दिन ऐसे ही रोती रही, तो धीरे-धीरे तुम्हारे अस्तित्व का नामोनिशान मिट जाएगा। तुम्हें इससे बाहर निकलना होगा। तुम्हें अपने व्यक्तित्व को सार्थक रूप देने का प्रयास करना चाहिए। लीलावती ने कहा, पिताजी, मैं क्या करूं, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। आप ही कोई रास्ता बताइए। भास्कराचार्य बोले, बेटी, तुम्हारी बुद्धि प्रखर है। अपना मन गणित सीखने में लगाओ। यह तुम्हें दुख से बाहर निकलने में मदद करेगा। लीलावती को पिता की बात अच्छी लगी, वह अपना समय गणित सीखने में लगाने लगी। गणित में उसका मन कुछ इस तरह रम गया कि वह अपना दुख भी धीरे-धीरे भूल गई। लीलावती हमेशा गणित की पहेलियों में खोई रहती। उसने गणित के कई नियम निर्धारित किए। उसके बनाए नियम आज भी गणित में इस्तेमाल किए जाते हैं। उसने अंकगणित पर कई महान ग्रंथों की रचना की। अपने पिता को गणित संबंधी शोध कार्यों में लीलावती ने सहयोग किया। उनके पिता ने अपने एक ग्रंथ का नाम लीलावती भी रखा। इस ग्रंथ ने भास्कराचार्य और लीलावती को अमर कर दिया। लीलावती ने सिद्ध कर दिया कि

लगन सच्ची हो तो सफलता अवश्य मिलती है।

१३८) सेवा ही पूजा - उन दिनों बंगाल बाढ़ की मार से जूझ रहा था। बहुत से गांव बाढ़ में डूबकर पूरी तरह बर्बाद हो चुके थे। लोगों को हर पल बीमारियों और अन्न वस्त्र के अभाव का सामना करना पड़ रहा था। इन कठिन परिस्थितियों में कुछ युवा दिन-रात लोगों की सेवा में जुटे हुए थे और इन्हीं में से एक थे सुभाष यानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस। वह उन दिनों कॉलेज की पढ़ाई कर रहे थे और अपने कुछ मित्रों के साथ बाढ़ पीड़ितों की सहायता में लगे हुए थे। एक दिन वह जब सेवा कार्य के लिए घर से जा रहे थे, तब उनके पिताजी ने उनसे पूछा, बेटा, तुम कहां जा रहे हो? लगता है कि आज कल तुम बहुत व्यस्त रहते हो। सुभाष ने उत्तर दिया, पिताजी, मैं बाढ़-पीड़ितों की सेवा में लगा हूं। बाढ़ ने लोगों का घर-बार उजाड़ दिया है। उनकी हालत देखकर मेरा दिल रो उठता है। इस पर जानकीनाथ बोस बोले, सुभाष, मैं तुमसे सहमत हूं। लोगों की मदद जरूर करनी चाहिए। लेकिन ऐसा करने के लिए अपने कर्त्तव्यों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। अपने यहां दुर्गा-पूजन का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इसमें मेरे साथ तुम्हारा होना भी बेहद आवश्यक है। पिता को जवाब देते हुए सुभाष ने कहा, पिताजी, मुझे माफ कीजिए। मेरे लिए आपके साथ चलना संभव नहीं है। जब चारों ओर बाढ़ से हाहाकार मचा हुआ है, ऐसे में मेरे दिमाग में तो केवल एक ही विचार हर समय रहता है- किस तरह लोगों की अधिक-से-अधिक मदद की जाए। सुभाष ने आगे कहा, मेरे लिए दीन दुखियों में ही मां दुर्गा का वास है। मेरी पूजा के भागी यही लोग है। उनकी यह बात सुनकर पिता की आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े और गदगद होकर उन्होंने सुभाष को गले से लगा लिया। देशभक्ति और सेवाभाव के लिए नेताजी बोस आज भी याद किए जाते हैं।

१३९) जादूगर की बात - महान सूफी संत अबू हफस हदाद पहले एक लोहार थे। हदाद का अर्थ ही लोहार है। एक बार हदाद को एक कनीज से इश्क हो गया। उनका लोहा पीटने या कुल्हाड़ी बनाने में मन ही न लगता। जैसे ही हथौड़ा हाथ में ले, कनीज का चेहरा आंख के सामने दौड़ जाता और हाथ कमजोर पड़ जाते। कनीज से उन्होंने अपने दिल की बात बताने की कई जुगत भिड़ाई, मगर कोई भी काम नहीं आई। थक-हारकर एक रोज वह अपने नजदीक के एक बहुत मशहूर जादूगर के पास पहुंचे और उससे प्रार्थना की कि वह कोई जादू करे। अबू के दिल का हाल जानकर जादूगर उनकी राह आसान करने को तैयार हो गया। जादूगर ने उनसे कहा कि तुम्हें चालीस दिन तक प्रार्थना और नेक कामों से दूरी बरतनी पड़ेगी, तभी जादू का असर होगा। जादूगर की बात मान हदाद घर लौट आए और उन्होंने प्रार्थनाएं और जो भी छोटे-मोटे नेक काम वह किया करते थे, सब छोड़कर जादू के इंतजार में बैठ गए। चालीस रोज बाद जब वह कनीज उन्हें नहीं मिली तो वह जादूगर के पास फिर पहुंचे और बोले कि अब भी वह मुझे नहीं मिली। जादूगर ने उनसे पूछा कि इस बीच तुमने कोई नेक काम तो नहीं किया? उन्होंने कहा- नहीं। जादूगर बोला, याद करो, तुमने किया है। तब अबू हफस ने बताया कि चलते वक्त वह रास्ते में पड़नेवाले कंकड़-पत्थर बीनकर किनारे करते रहे कि किसी को चोट न लग जाए। तब जादूगर मुस्कुराया और बोला, जिसकी प्रार्थनाओं को छोड़े हुए हो, वह तुम्हारी इस मामूली सी नेकी को भी पसंद करके तुम्हारे साथ खड़ा है। उसे छोड़कर तुम कनीज से दिल लगाए हो? यह बात हदाद के दिल पर लग गई और वह वहीं से ईश्वर की ओर लौट पड़े। अपनी सेवा, प्रेम, त्याग और समर्पण से उस दौर के बड़े सूफी संत अबूम हफस हदाद बने।

१४०) गांधीजी को मिला था एक करोड़ का सिक्का - आजादी मिलने तक पूरे देश में गांधीजी की ख्याति फैल चुकी थी। लोग दूर दूर से उनसे मिलने आते। उनकी एक झलक से लोग अपने आपको खुशनसीब मानने लगते। अगर गांधीजी कहीं जनसभा करनेवाले होते, तो इसकी खबर तुरंत लोगों को लग जाती और गांधीजी को सुनने के लिए मीलों चलकर जनसभा स्थान तक पहुंचते थे। उसी समय एक दिन गांधीजी देश भर में घूम-घूम कर चरखा संघ के लिए धन इकट्ठा कर रहे थे। वे जहां भी जाते अपार जनसमूह उनके दर्शन करने और उन्हें धन देने के लिए जुट जाता था। इसी क्रम में वे उड़ीसा में एक सभा को संबोधित करने पहुंचे।

उनके भाषण के बाद एक बूढ़ी गरीब महिला खड़ी हुई, जिसके बाल सफेद हो चुके थे। कपड़े फटे हुए थे और वह झुककर चल रही थी। उसने याचना भरे स्वर में आग्रह किया, मुझे गांधीजी को देखना है किसी तरह वह भीड़ से होते हुए गांधीजी के पास पहुंची और उनके पैर छुए। फिर उसने अपनी साड़ी के पल्लू में बंधा तांबे का एक सिक्का निकाला और गांधीजी के चरणों में रख दिया।

गांधीजी कुछ देर तक उस बूढ़ी महिला को श्रद्धाभाव से देखते रहे और फिर उन्होंने सावधानी से सिक्का उठाकर अपने पास रख लिया। उस समय चरखा संघ का कोष जमनालाल बजाज संभाल रहे थे। उन्होंने सिक्का मांगा, लेकिन गांधीजी ने मना कर दिया। जमनालालजी ने हंसते हुए कहा, मैं चरखा संघ के लिए हजारों रुपए, कीमती गहने और चेक संभालता हूं, फिर भी आप मुझ पर इस तांबे के सिक्के को लेकर यकीन नहीं कर रहे। गांधीजी बोले, यह मात्र एक सिक्का नहीं है। यदि किसी के पास लाखों हैं, तो वो हजार-दो हजार दे देता है। उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन यह सिक्का शायद उस औरत की कुल जमा पूंजी थी, उस वृद्धा ने अपना संपूर्ण धन दान में दे दिया। जो उदारता उसने दिखाई, उसका कोई मोल नहीं हो सकता। इस तांबे के सिक्के का मूल्य मेरे लिए एक करोड़ से भी अधिक है।

१४१) कुछ समय पहले एक समारोह में शामिल होना था। समय कम था, लिहाजा हमने टैक्सी ली। टैक्सी वाले की उदास शक्ल देखकर मैंने पूछा, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है क्या? वह बोला, सर, क्या आप डॉक्टर हैं? मैंने जवाब दिया, तुम्हारा चेहरा तुम्हें बहुत थका और बीमार बता रहा है। इस पर ठंडी आह भरते हुए वह बोला, मेरी पीठ में दर्द बना रहता है। उसकी उम्र पूछी तो बताया, तीस वर्ष। इस पर मैंने हैरानी जताते हुए कहा, यह तो सिर्फ कसरत से ठीक हो सकता है। इसके बाद दूसरा प्रश्न पूछा, क्या आजकल धंधा कुछ मंदा चल रहा है? टैक्सी वाले ने आश्चर्य से पूछा, साहब, आपको कैसे पता चला? क्या आप ज्योतिषी हैं? मैंने कहा, अरे भई, जब तुम हर वक्त बुझे हुए चेहरे से सवारियों का स्वागत करोगे तो भला कौन तुम्हारी टैक्सी में बैठना चाहेगा? ऐसे में आमदनी तो कम होगी ही। टैक्सी वाला जैसे सोते से जागा और बोला, सर, आज आपने मेरी गलती का अहसास मुझे करा दिया।

बात आई-गई हो गई। कुछ महीने बाद अचानक एक दिन उसी टैक्सीवाले ने मुझे बाजार में पहचान लिया और मुस्कुराते हुए पूछा, सरजी, कैसे हैं आप? मैंने कहा, ठीक हूं भैया। पर मैंने तुम्हें पहचाना नहीं। इस पर वह बोला, सर, मैं वही टैक्सीवाला हूं जिसे आपने उत्साह का पाठ पढ़ाया था। आज आपकी दी हुई शिक्षा के कारण ही मेरी तीन टैक्सियां किराए पर चल रही हैं और मेरा व्यवसाय खूब फल-फूल रहा है। परिवार में भी खुशहाली बढ़ी है। अब मैं भी हर उदास-

मायूस व्यक्ति को मुस्कुराते हुए काम करने की सलाह देता हूं।

१४२) हमारी तहजीब में घुली महक फूलवालों की सैर में समाई है - फूलों के इस मेले का खास आकर्षण है, हिंदू-मुस्लिम भाईचारे का प्रतीक रंगबिरंगे खुशबूदार फूलों का पंखा और फूलों की चादर जो दिल्ली वासियों की ओर से महरौली के योगमाया मंदिर व कुतुबक परिसर के निकट स्थित सूफी ख्वाजा बख्तियार काकी की दरगाह पर चढ़ाए जाते हैं। इस मेले की शुरुआत मुगल बादशाह अकबर शाह द्वितीय के शासनकाल में बादशाह की पत्नी बेगम मुमताज ने की थी। दरअसल बादशाह के शहजादे मिर्जा जहांगीर का किसी बात पर ब्रिटिश रेजीडेंट से झगड़ा हो गया था, फलस्वरूप अंग्रेजों ने शहजादे को इलाहाबाद जेल में बंद कर दिया था। पुत्रमोह में बेगम मुमताज ने मन्नत मांगी कि वह बेटे की रिहाई होने पर सूफी संत ख्वाजा बख्तियार काकी की मजार पर फूलों की चादर चढ़ाएंगी। बेगम की दुआ शीघ्र कबूल हुई। अंग्रेजों व मुगलों में सुलह हो गई और उन्होंने मिर्जा जहांगीर को रिहा कर दिया। इस खुशी में ख्वाजा बख्तियार काकी की दरगाह व योगमाया मंदिर समेत पूरे महरौली क्षेत्र में तीन दिन तक महोत्सव मनाया गया। इस दौरान दरगाह व मंदिर को हिंदू-मुस्लिमों ने परस्पर मिलकर खासतौर से रंगबिरंगे फूलों से सजाया।

दरअसल, ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी और ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया सूफी परंपरा में चिश्ती सिलसिले के ऐसे सूफी संत हुए हैं, जो दिल्ली के सभी संप्रदायों के लोगों में बेहद लोकप्रिय हैं। इन सूफी संतों का समाज को कर्मकांड, अंधविश्वास, जातिवाद व सांप्रदायिक द्वेष आदि से मुक्ति दिलाने में विशेष योगदान रहा।

विद्वानों में मान्यता है कि सूफी शब्द की उत्पत्ति सफा शब्द से हुई है, यानी पवित्र, आत्मसंयम व ईमान का जीवन जीनेवाला पुरुष जो इस्लामी रहस्यवाद वहदत-उल-वुजूद अर्थात परमात्मा के एकत्व सिद्धांत में विश्वास रखता है और परमात्मा से अटूट मोहब्बत व मानवता की सेवा ही जिसका एकमात्र लक्ष्य है। ऐसे सूफी संत व ख्वाजा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए लोग अंजुमन-सैर-ए-गुल-फरोशां सोसायटी द्वारा आयोजित फूल वालों की सैर के मेले में एकत्र होते हैं और पारस्परिक सौहार्द व भाईचारे की निरंतरना को आगे बढ़ाते हैं।

१४३) प्रदर्शन टकराव को जन्म देता है दर्शन जुड़ाव का आधार बनता है - केवल ज्ञान की प्राप्ति के बाद तीर्थंकर महावीर का जन-जन के अभ्युदय के लिए गांव-गांव, नगर-नगर विहार चल रहा था। जहां कहीं भी उनका पदार्पण होता, कुटिया से लेकर राजमहल तक का वातावरण आंदोलित हो उठता। उसी क्रम में उनका आगमन दशार्णपुर में हुआ। वहां के राजा दशार्णभद्र प्रसन्नता से भर गए। उन्हें मालूम था कि महावीर को सुनने के लिए जाति, समाज और राज्य के भेद की दीवारों को तोड़कर असंख्य लोग उमड़ पड़ते हैं।

राजा ने तय किया कि प्रात:काल समवसरण में भगवान के दर्शन-लाभ लेंगे। राजा के मन में एक विचार कौंधा कि वहां तो कई पड़ोसी राज्यों के राजा भी होंगे, उस भीड़ में उन्हें पहचान कैसे मिलेगी? तो क्यों न इस स्वर्णिम अवसर का लाभ लेते हुए अपने वैभव, समृद्धि, शक्ति और सैन्य-बल का प्रदर्शन कर दिया जाए। अगली सुबह वे पूरे शाही ठाट-बाट से मुख्य मार्ग से निकले। मगर आश्चर्य कि उसी समय आसमान में एक कर्णभेदी गड़गड़ाहट हुई। सबकी आंखें उसी पर अटक गई। देखा, स्वर्ग के अतुल वैभव से सजे-संवरे इंद्र आसमान के रास्ते तीर्थंकर के समवसरण में जा रहे हैं। राजा

दशार्णभद्र उस वैभव के सामने फीके नजर आने लगे।

उनकी समझ में आ गया कि इंद्र का यह प्रदर्शन उसके अहं प्रदर्शन का मर्दन करने के लिए ही है। वे मन ही मन पछताने लगे कि कहां भटक गए? एक अवसर मिला था, घर में दर्शन-दीप जलाने का और उलझ गया वैभव-प्रदर्शन में। राजा समवसरण में पहुंचे और वंदन कर यथास्थान बैठ गए। सुनते हुए संबोधि को प्राप्त हुए। प्रवचन के बाद उन्होंने भगवान से निवेदन किया कि चरणों में स्थान दें। भगवान ने उनके अंतर-हृदय को पढ़ा और उस भावना को स्वीकार कर लिया। वे राजर्षि बन गए। प्रदर्शन के सारे मोह-आवरणों को हटाकर आत्मदर्शन में स्थित हो गए। इंद्र ने यह सब कुछ देखा और निकट आकर नमस्कार करते हुए कहा, उस वैभव-प्रदर्शन में मैं आपसे होड़ ले सकता था, लेकिन इस दर्शन की भूमिका में तो मात्र अपना प्रणाम ही निवेदन कर सकता हूं। उसमें मैंने आपको पराजित किया, किंतु इसमें मैं स्वयं पराजित हूं।

१४४) नकल करने के लिए भी अकल जरूरी- अयोध्या में चूड़ामणि नाम का एक व्यक्ति रहता था। धन पाने की इच्छा से उसने बहुत दिनों तक भगवान की तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर एक रात धन देवता कुबेर ने उसे सपने में दर्शन दिए।

उन्होंने कहा- सूर्योदय के समय तुम हाथ में लाठी लेकर घर के दरवाजे पर खड़े हो जाना। कुछ देर बाद तुम्हारे पास एक भिक्षुक आएगा। उसके हाथ में एक भिक्षा पात्र होगा। जैसे ही तुम उस भिक्षा पात्र में अपनी लाठी अड़ाओगे वह सोने में परिवर्तित हो जाएगा। उसे तुम अपने पास रख लेना। ऐसा दस दिन करने से तुम्हारे पास दस सोने के पात्र हो जाएंगे, जिससे तुम्हारी जीवन भर की दरिद्रता दूर हो जाएगी।

रोज सुबह उठकर चूड़ामणि वैसा ही करने लगा, जैसा कुबेर ने सपने में बताया था। एक दिन उसे ऐसा करते हुए पड़ोसी ने देख लिया। बस, उसी दिन से चूड़ामणि का पड़ोसि नित्यप्रति किसी भिक्षुक की प्रतीक्षा में अपने घर के दरवाजे पर लाठी लिए खड़ा रहता। बहुत बहुत दिन बाद अंतत: एक भिक्षुक उसके दरवाजे पर भिक्षा मांगने आया। पड़ोसी ने भिक्षा पात्र पर डंडा छुआया, पर वह सोने में नहीं बदला। अंत में गुस्सा आया और उसने आव देखा न ताव और भिक्षुक पर प्रहार करना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में भिक्षुक के प्राण पखेरु उड़ गए। उसके इस कर्म की सूचना राजा तक पहुंची। राज कर्मचारी उसे गिरफ्तार कर राजा के सामने ले गए। अभियोग सिद्ध होने पर पड़ोसी को मृत्युदंड दिया गया।

१४५) प्रेम की महिमा- पुराने समय की बात है। एक शहर के आस-पास के जंगलों में एक भेड़िये का इतना आतंक छाया हुआ था कि वहां कोई रास्ता चलने का साहस भी नहीं करता था। वह अनेक मनुष्यों और जानवरों को मार चुका था। अंत में उस शहर के एक महान संत फ्रास्वा ने उस भयानक जानवर का सामना करने की ठानी। वे शहर से बाहर निकले तो उनके पीछे स्त्री और पुरुषों की बहुत भीड़ थी।

जैसे ही संत जंगल के समीप पहुंचे, वैसे ही भेड़िये ने उनकी तरफ रुख किया और उनकी ओर लपका। तभी संत ने उसकी ओर एक शांतिपूर्वक ऐसा संकेत किया कि भेड़िया ठंडा होकर संत के पैरों के पास ऐसे लोट गया जैसे कोई भेड़ का बच्चा हो। तभी संत ने उसे संबोधित किया- देख भाई, तूने इस शहर को बहुत हानि पहुंचाई है और बहुत उत्पात किया है,

इस वजह से तू बाकी अपराधियों की तरह दंड का अधिकारी है और इस शहर के लोग तुमसे बहुत घृणा करते हैं। परन्तु यदि तेरे और इस शहर में रहनेवाले मेरे मित्रों के बीच मैत्री स्थापित हो जाए तो मुझे बहुत खुशी होगी। भेड़िये ने अपना सिर झुका लिया और पूंछ हिलाने लगा।

इस पर संत ने फिर से कहा- देख भाई, मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अगर तू इन लोगों के साथ शांतिपूर्वक रहना स्वीकार करता है तो ये लोग भी तेरे साथ अच्छा बर्ताव करेंगे और साथ ही तेरे लिए खाने की भी व्यवस्था कर देंगे। क्या तू ये प्रतिज्ञा करता है? इस पर भेड़िये ने अपना सिर पूरी तरह झुका लिया और संत के हाथ पर अपना पंजा रख दिया।

संत उसे शहर के बीचो बीच ले गए और सबके सामने एक बार फिर भेड़िये से यही बात कही तो भेड़िये ने पहले की तरह संत के हाथ पर हाथ रख दिया और उसके बाद वो भेड़िया दो साल तक उस शहर में रहा और उसने किसी को कोई हानि नहीं पहुंचाई। इस पर उसके मरने पर भी लोगों को बहुत दु:ख हुआ लेकिन फिर भी वो लोग हैरान थे कि ऐसे खूंखार जानवर ने अपनी प्रवृत्ति किस तरह बदल ली? उसे जिसने बदल दिया, उसके अंदर एक चीज थी, ये किसी ने नहीं जाना। ये संत फ्रांस्वा का प्रेमपूर्ण बर्ताव था जिसने उसे बदल दिया और प्रेम की महिमा इसी को तो कहते हैं।

१४६) मां की ममता का मोल - एक व्यक्ति जो अपने जीवन में काफी सफल हो चुका था और एक दिन अपनी माँ के पास गया और बोला- माँ आज कुछ भी मेरे पास है, मैं जिस सफलता की बुलंदियों को पा चुका हूं वो सब आपके प्यार और ममता की ही देन है। इसलिए माँ आपने जो प्यार दिया है मैं उसका ऋण चुकता करना चाहता हूं।

यह सुनकर माँ आश्चर्यचकित हो गई और बोली- नहीं बेटा मुझे अपनी ममता और प्यार के बदले कुछ भी नहीं चाहिए ये तो मेरा फर्ज था जो की मैं अपनी संतान के लिए किया। लेकिन वह व्यक्ति बार बार जिद करने लगा- नहीं माँ, मैं आपके प्यार और ममता के बदले कुछ देना चाहता हूं। मां आप मांगो तो सही, बार बार जिद करने के बाद माँ बोली- ठीक है क्या तुम मेरे साथ जैसे बचपन में सोते थे वैसे सो सकते हो? यह बात सुनकर वह व्यक्ति बोला- इस इतनी सी बात है तो जरूर मैं अपनी माँ के पास आज रात सोऊंगा और जैसे ही रात में वह व्यक्ति अपनी माँ के पास सो गया, माँ उठकर एक मग पानी ले आती है जहा सोयी थी उस तरफ से पानी डाल देती है जिससे धीरे धीरे वह पानी उस व्यक्ति की तरफ भी चला गया और फिर नमी से वह व्यक्ति परेशानी महसूस करने लगा और दूसरी तरफ खिसक गया। फिर माँ ने और पानी डाल दिया जिससे उधर भी नमी महसूस हुई तो वह तुरंत उठ गया और अपनी माँ के हाथ में मग देखकर गुस्से से बोला- आप क्या कर रही हो माँ, मुझे सोने क्यों नहीं देती हो? आप मुझे गीले बिस्तर पर भला कैसे सुला सकती हो? माँ बोली- बेटा जब तुम बचपन में मेरे साथ सोते थे तो ऐसे ही तुम भी बिस्तर गीला कर देते थे और फिर मैं दूसरी तरफ तुम्हें करे खुद गीले स्थान पर सो जाती थी। तुम तो मेरे प्यार और ममता का कर्ज चुकाना चाहते हो जो मैंने तुम्हारे लिए किया था। क्या तुम मेरे लिए थोड़ा सा भी केवल एक रात के लिए गीले में सो नहीं सकते हो। यदि तुम ऐसा कर सकते हो तो मैं समझ जाऊंगी कि तुमने मेरी ममता का कर्ज चुका दिया है। माँ की बातें सुनकर अब उस व्यक्ति की आंखें खुल गई थी। उसे अब समझ आ चुका था कि जिस माँ ने अपनी न जाने कितनी रातों को मेरी खुशी के लिए ऐसे ही गुजार दिए हैं, भला उस माँ का कर्ज कैसे चुकता किया जा सकता है? अब वह किए पर शर्मिंदा था।

इस दुनिया में चाहे कितने भी ऋण और कर्ज हो चुकाए जा सकते हैं लेकिन माँ के प्यार और ममता के मोल को कभी भी नहीं चुकाया जा सकता है।

१४७) आपको देना होगा अपनी प्रतिभा का परिचय - एक बार अकबर ने दरबारियों से कहा, हमारे लिए सभी समान हैं। आप सब भी बीरबल जैसे गुणी बनने की कोशिश करें। अगर आप लोग भी बीरबल की तरह समझदार हैं तो बेशक बीरबल की जगह आपमें से कोई भी ले सकता है। लेकिन उसके लिए आपको अपनी प्रतिभा का परिचय देना होगा। तय समय के अनुसार एक दिन बादशाह ने सभी को दरबार में हाजिर होने का हुक्म दिया। उस दिन अकबर बादशाह ने तीन फुट लंबी और दो फुट चौड़ी एक चादर मँगवाई और अपने सिंहासन पर आकर बैठ गए।

अकबर ने चादर दिखाकर दरबारियों से कहा, देखिए, यह एक चादर हैं। मैं यहां लेट रहा हूं और तुम सभी को बारी-बारी आकर यह चादर मुझे इस प्रकार ओढ़ाना है कि मैं सिर से पैर तक पूरी तरह ढँक जाऊं। अब एक-एक करके सब आते जाइए। इतना कहने के साथ ही अकबर बादशाह लेट गए। अब एक एक करके कई दरबारी आए और बादशाह को उस चादर से ढँकने की कोशिश करने लगे। बहुत कोशिशों के बाद भी कोई भी दरबारी बादशाह का पूरा शरीर ढँकने में कामयाब नहीं हुआ। दरबारियों ने बहुत कोशिश की लेकिन सभी निष्फल रहे। बादशाह को पूरी तरह कोई भी ढँक नहीं पाया। थोड़ी देर बाद बीरबल का राजदरबार में प्रवेश हुआ। बीरबल को देखते ही अकबर बादशाह मन ही मन हँस पड़े। उन्होंने दरबारियों से कहा, देखो, अब बीरबल भी दरबार में आ पहुंचे हैं। देखते हैं कि वे क्या करते हैं? बीरबल बहुत ही चतुर थे दरबार में घुसते ही उन्होंने इस समस्या का हल सोच लिया था।

बीरबल के पास आने पर बादशाह फिर लेट गए और उन्हें चादर ओढ़ाने के लिए कहा। बीरबल ने पहले तो चादर को गौर से देखा फिर, अकबर बादशाह से बोले, बादशाह आप अपने पैर सिकोड़ लीजिए। बीरबल की बात सुनते ही बादशाह हँस पड़े और बीरबल के कहे अनुसार पाँव सिकोड़ कर लेट गए। सभी दरबारियों की नजर बीरबल पर ही गड़ी थी। बादशाह को पैर सिकोड़ते देख उन्हें भी यह अनुमान हो गया कि अब अकबर बादशाह को सिर से पैर तक ढँकना मुश्किल नहीं है। लेकिन अब करते तो क्या करते? चूक जो गए थे। जैसे ही बादशाह अकबर ने अपने पैर सिकोड़ लिए वैसे ही बीरबल ने बादशाह को पूरी तरह ढँक दिया और अपनी जगह पर आकर बैठ गए। यह देखकर सब दरबारी दंग रह गए।

बादशाह ने दरबार को संबोधित करते हुए कहा, देखा आप लोगों ने, बीरबल की चतुराई को। अब समझ आया कि मैं बीरबल को इतना मान-सम्मान क्यों देता हूं। बादशाह का ऐसा कहना ही था कि सभी दरबारियों के मुंह लटक गए। फिर सबने बीरबल को कोसना शुरू किया और उसकी इस चतुराई पर वे अपने आपको भी कोसते रहे।

१४८) नई पीढ़ी का बुद्धिमान कौवा - कौवा प्रसन्न हो उठा। जरूर यह कोई मंदिर है, जिस पर लाल ध्वजा फहरा रही है, उसने सोचा-मंदिर है, तो वहां कोई जलाशय जरूर होगा। जलाशय न सही, पशु-पक्षियों के लिए पेयजल की व्यवस्था तो होगी ही।

प्यास के मारे कौवे का बुरा हाल था। उसे भटकते हुए कई घंटे भी तो हो चुके थे। घोंसला कहीं नजर नहीं आ रहा था और दूर-दूर तक पानी का कहीं नामो-निशान भी नहीं।

तभी एक पेड़ के नीचे उसे एक सुराही नजर आई। कौवे की बांछें खिल गई। शायद उसी की किस्मत से कोई राहगीर इसे यहां छोड़ गया है, उसने सोचा, लेकिन सुराही के पास पहुंचते ही उसकी खुशी काफूर हो गई।

दरअसल सुराही का मुंह इतना संकरा और लंबा था कि उसके तमाम जतन विफल हो गए। बेहाल कौवे ने सुराही को अच्छी तरह ठोक-बजा कर तसल्ली कर ली कि उसमें पानी तो है न, कहीं ऐसा न हो कि ढेर सारी मेहनत के बाद पता चले कि यह रीता है। उसने दिमाग के घोड़े दौड़ाने शुरू किए, लेकिन कहीं कोई रास्ता नजर नहीं आया। कौवा निराश नहीं हुआ। उसने उड़ान भरी और एक ऊंचे पेड़ की चोटी पर पहुंच कर अड्डा जमाया।

कौवे ने खुशी से पंख फड़फड़ाते हुए उस ओर उड़ान भरी। यह देखकर उसका दिल धक से रह गया कि जिसे मंदिर समझ कर वह इतनी दूर हांफता-कांपता तेजी से उड़ता आया था, वह तो सड़क किनारे का एक ढाबा था।

उसे पता था कि ढाबों के मालिक कितने कंजूस होते हैं। सड़ा-गला खाना भी जो गाय को नहीं डाल सकते, उस जैसे कौवे को पानी क्या पिलाएंगे। वह ढाबे के इर्द-गिर्द घूमा, कई चक्कर लगाए। हर तरफ नजर डाली, पर पानी का कहीं कोई नामो-निशान न था। ढाबे के कंजूस मालिक ने सारे बर्तन भी ढंक कर रखे हुए थे, ताकि उस जैसा कोई कौवा चोंच तक न मार सके।

वह निराश होकर उड़ने ही वाला था कि ढाबे के सामने एक कार आकर रुकी। उसमें से दंपति के साथ दो बच्चे उतरे और ढाबे वाले से कुछ कहा। कौवा कौतूहलवश रुक कर उन्हें देखने लगा। ढाबे वाले ने कोल्ड्रिंक की बोतलें स्ट्रॉ डालकर उन्हें पकड़ाईं और वे चारों उस छोटे से पाइप से मुंह लगाकर कोल्ड ड्रिंक पीने लगे।

कौवे ने उन्हें अचरज से देखा, लेकिन तभी उसके दिमाग में एक आइडिया क्लिक किया। उसने एक तेज झपट्टा मारकर काउंटर पर रखे स्ट्रॉ में से एक चोंच में दबाया और तेजी से वापस लौट पड़ा। उसकी हरकत देख ढाबेवाला जोर से चिल्लाया, शायद उसने उसको मारने के लिए कुछ फेंका भी, लेकिन कौवे ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। अब उसे बस सुराही तक पहुंचने की ही फिक्र थी।

तेजी से उड़ते हुए उसने सुराही के पास पहुंच कर ही दम लिया। उसने स्ट्रॉ को सुराही के मुंह में डाला और चाव से पानी सुड़कने लगा। इतनी मेहनत के बाद मिला जल उसे अमृततुल्य लगा। जी भर कर पानी पीने के बाद उसने एक ईंट जोर लगाकर छांव में खिसकाई और उसे तकिया बनाकर सो गया।

१४९) सफल तो वही होता है - एक बार की बात है, एक नि:संतान राजा था, वह बूढ़ा हो चुका था और उसे राज्य के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी की चिन्ता सताने लगी थी। योग्य उत्तराधिकारी के खोज के लिए राजा ने पूरे राज्य में ढिंढोरा पिटवाया कि अमुक दिन शाम को जो मुझसे मिलने आएगा, उसे मैं अपने राज्य का एक हिस्सा दूंगा। राजा के इस निर्णय से राज्य के प्रधानमंत्री ने रोष जताते हुए राजा से कहा, महाराज, आपसे मिलने तो बहुत से लोग आएंगे और यदि सभी को उनका भाग देंगे तो राज्य के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। ऐसा अव्यावहारिक काम न करें। राजा ने प्रधानमंत्री को आश्वस्त करते हुए कहा, प्रधानमंत्री जी, आप चिन्ता न करें, देखते रहें, क्या होता है। निश्चित दिन जब सबको मिलना था, राजमहल के बगीचे में राजा ने एक विशाल मेले का आयोजन किया। मेले में नाच-गाने और शराब की महफिल जमी

थी, खाने के लिए अनेक स्वादिष्ट पदार्थ थे। मेले में कई खेल भी हो रहे थे। राजा से मिलने आनेवाले कितने ही लोग नाच-गाने में अटक गए, कितने ही सुरा-सुंदरी में, कितने ही आश्चर्यजनक खेलों में मशगूल हो गए तथा कितने ही खाने-पीने, घूमने-फिरने के आनंद में डूब गए। इस तरह समय बीतने लगा। पर इन सभी के बीच एक व्यक्ति ऐसा भी था जिसने किसी चीज की तरफ देखा भी नहीं, क्योंकि उसके मन में निश्चित ध्येय था कि उसे राजा से मिलना ही है। इसलिए वह बगीचा पार करके राजमहल के दरवाजे पर पहुंच गया। पर वहां खुली तलवार लेकर दो चौकीदार खड़े थे। उन्होंने उसे रोका। उनके रोकने को अनदेखा करके और चौकीदारों को धक्का मारकर वह दौड़कर राजमहल में चला गया, क्योंकि वह निश्चित समय पर राजा से मिलना चाहता था। जैसे ही वह अंदर पहुंचा राजा उसे सामने ही मिल गए और उन्होंने कहा, मेरे राज्य में कोई व्यक्ति तो ऐसा मिला जो किसी प्रलोभन में फंसे बिना अपने ध्येय तक पहुंच सका। तुम्हें मैं आधा नहीं पूरा राजपाट दूंगा। तुम मेरे उत्तराधिकारी बनोगे। सफल वही होता है जो लक्ष्य का निर्धारण करता है, उस पर अडिग रहता है, रास्ते में आनेवाली हर कठिनाइयों का डटकर सामना करता है और छोटी-छोटी कठिनाइयों को नजरअंदाज कर देता है।

१५०) घमंडी हाथी और चालाक बंदर - एक था जंगल बहुत ही सुंदर और हरा भरा। चारों ओर हरियाली, किस्म-किस्म के पशु पक्षी उस जंगल में रहते थे। जंगल में एक हाथी भी रहता था। बहुत शक्तिशाली, लेकिन घमंडी,बेचारे सारे जानवर उससे डरते। एक दिन हाथी नदी से नहाकर लौट रहा था। मस्ती में झूमता-झामता वह रास्ते के हर पेड़ को अपनी सूंड में लपेट कर झटका देकर गिराता चल रहा था। पास के पेड़ पर बैठा एक बंदर यह सब देख रहा था। उससे हाथी की मनमानी देखी न गई। बोला- गजराज, तुम्हारा ताकतवर शरीर देखकर मुझे जलन होती है। क्या तुम सभी पेड़ एक झटके में तोड़ सकते हो? हाथी रौब में बोला, हां, हां। तुम जो भी पेड़ कहो, उसे मैं एक झटके से धराशायी कर दूं।

बंदर ने कहा, अच्छा। तो वह सामनेवाला बरगद का पेड़ गिरा दो, तो मान लूं कि तुम बड़े बलशाली हो। हाथी तो पहले ही घमंड से फूला था उसने बरगद के तने को सूंड से लपेट कर जोर से पेड़ को झकझोरा। पेड़ मजबूत था पर बलशाली हाथी के जोर लगाने से हिल उठा। इसी समय एक डाल में मधुमक्खी का बड़ा सा छत्ता टूट कर ठीक हाथी की पीठ पर आ गिरा। सारी मधुमक्खियां हाथी के चारों ओर लिपट गईं। इस भयंकर आक्रमण से हाथी घबरा गया। दर्द के मारे वह बिलबिला उठा और चिंघाड़ता हुआ भागा।

१५१) तब भोली बुढ़िया को समझ में आया - एक बुढ़िया थी। वह अपनी कोठरी में बैठी सिलाई का काम कर रही थी। अचानक उसके हाथ से सुई गिर गई। शाम का समय था। बुढ़िया ने सुई को खोजने की कोशिश की, लेकिन नहीं मिली। धीरे-धीरे रात हो गई। अंधेरा फैल गया।

बुढ़िया फिर भी खोजती रही, लेकिन उसकी लाख कोशिशों के बाद भी सुई उसके हाथ ना लगी। बुढ़िया परेशान हो गई कि अब वह बिना सुई के कपड़ों की सिलाई कैसे करेगी। तभी कोई आदमी आया। बुढ़िया से पूछा, माई, अंधेरे में क्या कर रही हो? बुढ़िया ने हैरानी के स्वर में कहा, अरे, भैया मेरी सुई गुम हो गई है। उसे ढूंढ रही हूं।

आदमी ने हंसकर कहा, माई, सुई उजाले में मिलेगी। इतना कहकर आदमी चला गया।

भोली बुढ़िया कोठरी से बाहर आई और उजाले में खड़ी होकर सुई खोजने लगी। उसी समय कोई राहगीर उधर से गुजरा।

उसने बुढ़िया को बाहर कुछ खोजते देख कर पूछा, ओ बुढ़िया माई, क्या खोज रही हो?

बुढ़िया सुई खोजते-खोजते काफी थक चुकी थी, राहगीर की आवाज सुनकर कराहते हुए बोली, भैया, क्या बताऊं। मेरी सुई गुम हो गई है। उसी को ढूंढ रही हूं। राहगीर ने पूछा, माई, सुई कहां खोई थी?

बुढ़िया ने कहां, कोठरी के अंदर। राहगीर मन ही मन मुस्कुराकर बोला, ओ माई, तुम भी गजब करती हो, अगर सुई कोठरी में खोई थी, तो यहां ढूंढने से थोड़े मिलेगी। आपसे किसने कह दिया जो सुई यहां ढूंढने लगी। देखो माई, अगर सुई खोई है कोठरी में, यहां कैसे मिलेगी? जरा सोचो तो।

बुढ़िया ने उसी भोलेपन से कहा, मुझे किसी ने कहा था कि उसे उजाले में खोज। राहगीर बोला, अरे माई, चीज जहां खोई है, वहीं मिलेगी। बुढ़िया की अब समझ में आया कि उजाले में खोजने का क्या मतलब था।

१५२) घंटी की कीमत - रामदास एक ग्वाले का बेटा था। रोज सुबह वह अपनी गायों को चराने जंगल में ले जाता। हर गाय के गले में एक-एक घंटी बंधी थी। जो गाय सबसे अधिक सुंदर थी, उसके गले में घंटी भी अधिक कीमती बंधी थी।

एक दिन एक अजनबी जंगल से गुजर रहा था। वह उस गाय को देखकर रामदास के पास आया, यह घंटी बड़ी प्यारी है। क्या कीमत है इसकी?

बीस रुपये रामदास ने उत्तर दिया। बस, सिर्फ बीस रुपये। मैं तुम्हें इस घंटी के चालीस रुपये दे सकता हूं। सुनकर रामदास प्रसन्न हो उठा। झट से उसने घंटी उतारकर उस अजनबी के हाथ में थमा दी और पैसे अपनी जेब में रख लिए। अब गाय के गले में कोई घंटी नहीं थी। घंटी की टुनक से उसे अन्दाजा हो जाया करता था। अत: अब इसका अन्दाजा लगाना रामदास के लिए मुश्किल हो गया कि गाय इस वक्त कहां चर रही है। जब चरते-चरते गाय दूर निकल आई तो अजनबी को मौका मिल गया। वह गाय को अपने साथ लेकर चल पड़ा।

तभी रामदास ने उसे देखा। वह रोता हुआ घर पहुंचा और सारी घटना अपने पिता को सुनाई। उसने कहा, मुझे तनिक भी अनुमान नहीं था कि वह अनजबी मुझे घंटी के इतने अच्छे पैसे देकर ठग ले जाएगा।

पिता ने ठगी का सुख बड़ा खतरनाक होता है। पहले वह हमें प्रसन्नता देता है, फिर दु:ख। अत: हमें पहले ही से उसका सुख नहीं उठाना चाहिए। लालच से कभी सुख नहीं मिलता।

१५३) जब ऋषि ने राजकुमार को कोड़े मारे - काफी समय पहले की बात है। एक राजा थे। नाम था प्रताप सिंह। बड़े ही दयावान, न्यायप्रिय और बुद्धिमान। उनके एक इकलौता पुत्र था। राजा चाहते थे कि उनके बाद उनका पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी बने। इसलिए वे राजकुमार को हर तरह से योग्य और होशियार बनाना चाहते थे। राजा ने बचपन में ही राजकुमार को एक ऋषि के आश्रम में पढ़ने भेज दिया। कुछ वर्षों बाद जब राजकुमार सभी विद्याओं में पारंगत हो गया तो उसे लेकर ऋषि राजा के पास पहुंचे। भरे दरबार में राजा ने ऋषि से पूछा - ऋषिवर, क्या राजकुमार सब शिक्षा में निपुण और होशियार हो गया?

हां राजन। राजकुमार सब तरह से निपुण एवं योग्य हो गया, किन्तु कहते कहते ऋषि रुक गये।

आप क्यों रुक गये ऋषिवर। राजा ने आश्चर्य से पूछा। ऋषि ने कहा- राजकुमार हर तरह से योग्य है पर उसकी एक परीक्षा

बाकी है जो राज दरबार में ही ली जायेगी। यदि वह उसमें सफल नहीं हुआ तो समझो वह राजा बनने के योग्य नहीं है।

परीक्षा, कैसी परीक्षा। मैं कुछ समझा नहीं ऋषिवर। साफ-साफ कहें। पहेलियां नहीं बुझाए। राजा ने व्यग्रता से कहा।

हा राजन् राजकुमार की परीक्षा। यह इसकी अंतिम परीक्षा होगी। किन्तु परीक्षा की शर्त यह है कि परीक्षा लेते वक्त आप व दरबार का कोई भी व्यक्ति किसी तरह का हस्तक्षेप न करे। यदि आपको यह शर्त मंजूर हो और आप आज्ञा दें तो राजकुमार की परीक्षा ली जाय। राजा से स्वीकृति लेने के बाद राजकुमार के कपड़े उतरवा कर ऋषि उस पर कोड़े बरसाने लगे। सटाक... सटाक... एक नहीं पूरे पन्द्रह कोड़े राजकुमार को लगाये।

राजकुमार ने न तो उफ किया और न ही कोड़े लगाने का विरोध। कोड़े लगाने के बाद राजा ने ऋषि से पूछा- ऋषिवर यह कैसी परीक्षा ली आपने? आपने तो राजकुमार को कड़ी सजा दे दी। राजकुमार ने कोई अपराध किया था?

ऋषिवर ने कहा- नहीं राजन। राजकुमार ने कोई अपराध नहीं किया। यह तो उसकी सहनशीलता की परीक्षा थी। राजा बनने के बाद वह कभी किसी पर क्रोध न करे और न ही किसी बेगुनाह निरपराध व्यक्ति पर कोड़े बरसाये। जब भी राजकुमार किसी को कोड़े लगाने की सजा देंगे, तब उस वक्त उन्हें इन्हीं कोड़ों की याद रहेगी। तब वे भूलकर भी किसी को कोड़ों की सजा न देंगे। मेरी परीक्षा का यही उद्देश्य था, जिसमें राजकुमार खरे उतरे। अब वे हर तरह से राजा बनने के योग्य है। यह कहकर ऋषि चुप हो गये। राजा ने संतुष्ट होकर ऋषि का खूब आदर-सत्कार किया और आश्रम के लिए विदा किया।

१५४) आवाज की गूंज - एक बच्चा अपने पापा के साथ पिकनिक मनाने गया। गर्मियों की छुट्टियां थी तो सोचा क्यों ना कुछ समय प्रकृति के नजदीक शांति में गुजारा जाए। यही सोचकर उन्होंने कहीं पहाड़ों पर घूमने की योजना बनायी। सामान पैक करके पिता और पुत्र दोनों पिकनिक के लिए निकल पड़े। पर्वतों का नजारा बहुत ही शानदार था। चारों ओर खुला आसमान और हरियाली थी। बच्चा एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ने का प्रयास करने लगा। जैसे ही वो थोड़ा आगे चढ़ा उसका पाँव थोड़ा फिसला और एक पत्थर से उसके पैर में हल्की सो चोट लग गई और मुंह से तेज आवाज निकली- आह। अब उसकी ये आवाज गूंज की वजह से वापस उसे सुनाई पड़ी- आह। बच्चे को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये कौन बोला? वो फिर से जोर से बोला- कौन है? फिर से आवाज गूंज कर वापस आई- कौन है? बच्चा उत्सुकतावश फिर चिल्लाया- कौन हो तुम? फिर आवाज वापस सुनाई दी- कौन हो तुम?

बच्चे ने अपने पिता से इसके बारे में पूछा तो पिता ने बच्चे के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और जोर से चिल्लाए- तुम कायर हो? फिर से आवाज सुनाई दी- तुम कायर हो? पिता मुस्कुरा कर फिर जोर से बोले- तुम साहसी हो तुम विजेता हो। आवाज वापस सुनाई दी- तुम साहसी हो तुम विजेता हो। पिता ने बच्चे को समझाया कि ये आवाज तुम्हारी ही है जो पहाड़ों से टकराकर तुमको वापस सुनाई दे रही है, यही जीवन है। हम जो बोलते हैं, हम जो सोचते हैं, वही हमें वापस मिलता है। इस आवाज की तरह ही हमारा भविष्य है, हमने जो आज किया वही हमको कल वापस मिलेगा। तुम दूसरों के प्रति मन में इज्जत रखोगे तो वही तुमको वापस मिलेगी। तुम अगर मन में सोच लो कि तुम कायर हो, तुम कुछ नहीं कर सकते तो तुम वैसे ही बन जाओगे। तुम सोचोगे कि तुम विजेता हो तो तुम वैसे ही बन जाओगे।

बच्चे की समझ में अब पूरी बात आ चुकी थी।

१५५) गायब हुए भगवान - आखेट की खोज में भटकता विश्वबंधु शवर नील पर्वत की एक गुफा में जा पहुंचा। वहां भगवान नील-माधव की मूर्ति के दर्शन पाते ही शवर के हृदय में भक्ति-भावना का स्रोत उमड़ पड़ा और उनका हृदय परिवर्तित हो गया। उन्होंने हिंसा तत्काल छोड़ दी और भगवान नील माधव की दिन-रात पूजा करने लगे। उन्हीं दिनों मालव राजा इंद्र प्रद्युम्न किसी अपरिचित तीर्थ में मंदिर बनवाना चाहते थे। उन्होंने अपनी इस इच्छा को पूर्ण करने के उद्देश्य से स्थान की खोज के लिए अपने मंत्री विद्यापति को भेजा। विद्यापति ने वापस जाकर राजा को नील पर्वत पर शवर विश्वबंधु द्वारा पूजित भगवान नील माधव की मूर्ति की सूचना दी। यह सुनते ही राजा तुरंत मंदिर बनवाने के लिए वहां पहुंचा। किंतु घोर आश्चर्य। मूर्ति वहां नहीं थी। राजा ने क्रोधित होकर कहा, विद्यापति तुमने व्यर्थ ही हमारा समय नष्ट किया है। यहां तो मूर्ति ही नहीं है। विद्यापति ने कहा, महाराज मैंने स्वयं अपनी आंखों से इसी गुफा में भगवान नील माधव की मूर्ति देखी है। अवश्य ही कोई ऐसी बात हुई है, जिससे भगवान की मूर्ति अंतर्धान हो गई है। राजन। यह बताइए कि यहां आते समय आप क्या सोचते हुए आए है? राजा इंद्र प्रद्युम्न ने बताया कि मैं सारे रास्ते केवल इतना ही सोचता आया हूं कि अपने स्पर्श से भगवान की मूर्ति को अपवित्र करनेवाले शवर को सबसे पहले भगा दूंगा और कोई अच्छा पुजारी नियुक्त कर दूंगा। विद्यापति ने बड़ी नम्रता से कहा कि आपकी इसी भेद भावना के कारण ही भगवान रुष्ट होकर चले गए हैं। समदर्शी भगवान जात-पात नहीं बल्कि सदैव हृदय की सच्ची निष्ठा ही देखते हैं। बात समझ में आते ही राजा को अपनी भूल का अहसास हो गया। उसने भगवान से क्षमा मांगी और उनकी स्तुति की। तब उसी स्थान पर प्रसिद्ध जगन्नाथ जी मंदिर की स्थापना कराई।

१५६) अनमोल खजाना - एक बहुत ही सिद्ध और विवेकशील महात्मा थे। एक बार उन्हें जमीन पर पड़ा हुआ एक पैसा मिला। महात्मा ने उसे उठा लिया। वे सोचने लगे- भिक्षा में मुझे भोजन तो मिल जाता है फिर क्यों मैंने यह पैसा उठा लिया? उन्होंने निश्चय किया कि यह पैसा वह सबसे गरीब आदमी को दान कर देंगे। महात्मा गरीब आदमी की तलाश में घूमते रहे, परंतु उन्हें कोई सुपात्र नहीं मिला। एक दिन महात्मा जी घूमते-घूमते एक राज्य की राजधानी जा पहुंचे। उन्होंने देखा कि राजमार्ग पर राजा के साथ अस्त्र-शस्त्रों से सजी एक विशाल सेना चली आ रही थी। राजा महात्मा को पहचानता था। हाथी से उतरकर उसने महात्मा को प्रणाम किया। महात्मा ने कहा, राजन्। आप अपना हाथ आगे करें। फिर उन्होंने अपनी झोली से वह पैसा निकालकर राजा के दाएं हाथ पर रख दिया। राजा ने आश्चर्य चकित होकर महात्मा से पूछा, महाराज। यह क्या है? महात्मा ने उत्तर दिया, मैंने सोचा था यह पैसा मैं सबसे गरीब आदमी को दान करूंगा और वह गरीब आदमी तुम हो। राजा ने विनीत स्वर में कहा, महाराज। आपके आशीर्वाद से मेरे खजाने में हीरे जवाहरातों का असीम भंडार विद्यमान है। महात्मा ने उत्तर दिया, फिर भी राजन। तुम बहुत गरीब हो। यदि तुम्हारे खजाने में धन का भंडार है तो सेना लेकर क्यों जा रहे हो आक्रमण करने? युद्ध में कितने लोगों की जान जाएगी? यह सब किसलिए? मात्र राज्य विस्तार और धन के लिए? तब तुम से गरीब और कौन हो सकता है? महात्मा की बातें सुन राजा की नजरें शर्म से झुक गईं। उसने महात्मा के चरण स्पर्श करके अपनी सेना को लौटने का आदेश दिया। राजा सेना के पीछे चलते हुए मुट्ठी में बंद सिक्के को बार-बार देख रहा था। बिना युद्ध किए लौटने के बाद भी राजा को ऐसा लग रहा था मानो वह अनमोल खजाना जीतकर लौट रहा हो।

१५७) द्विवेदी जी का जनेऊ - हिंदी साहित्य के अमर हस्ताक्षर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी बरसात के दिनों में अपने खेतों में घूमने गए। वहां गांव के मजदूर परिवारों की कुछ महिलाएं घास काट रही थीं। द्विवेदी जी को देखकर उन्होंने घास काटना बंद कर दिया और सकुचाते हुए सिर झुकाकर खड़ी हो गईं। द्विवेदी जी कहने लगे, आप निश्चिंत होकर घास काटती रहो, मैं तो खेतों की हरियाली देखने आया हूं। इतना कहकर द्विवेदी जी खेत की मेड़ पर टहलने लगे। तभी घास काटती एक महिला को सांप ने काट लिया। द्विवेदी जी दौड़कर उसके पास गए, आव देखा न ताव झट से अपना जनेऊ तोड़कर पैर में सांप द्वारा काटे गए स्थान से थोड़ा ऊपर कसकर बांध दिया। फिर उस महिला की घास काटने की दरांती से उस स्थान पर चीरा लगाकर जहरीला खून बाहर निकाल दिया और उस महिला की जान बचा ली। इतनी देर में गांव के कई लोग इकट्ठा हो गए। उनमें कई पंडित लोग भी थे। वह सभी चर्चा करने लगे, ब्राह्मणों का धर्म तो आज भ्रष्ट हो गया। महावीर ने बड़ा अनर्थ कर दिया। इसने ब्राह्मण होकर जनेऊ जैसी पवित्र चीज को एक अछूत स्त्री के पैर से छुआ दिया। अब कौन ब्राह्मणों का सम्मान करेगा? ब्राह्मणों की ऐसी बातें सुनकर द्विवेदी जी बोले, इस जनेऊ के कारण ही एक स्त्री की जान बच गई। आप लोगों को आज इस जनेऊ पर गर्व होना चाहिए। मुझे इस बात की खुशी व गर्व है कि आज मेरा ब्राह्मण-कुल में जन्म लेना सार्थक हो गया। अब से पहले इस जनेऊ की कीमत ही क्या थी? आज से पहले यह यज्ञोपवीत एक प्रतीकमात्र था। परंतु आज इसने असलियत में इस महिला की जान बचाकर अपनी उपयोगिता साबित कर दी। अब मैं इस जनेऊ को सदैव अपने हृदय से लगाकर रखूंगा। द्विवेदी जी की बातों का किसी के पास कोई जवाब नहीं था।

१५८) संत की वाणी - संत मध्वाचार्य उत्तर भारत की यात्रा पर निकले थे कि रास्ते में विशाल गंगा नदी आ गई। उनके शिष्य घबरा गए कि आगे कैसे जाएं। मध्वाचार्य ने कहा, हम जब भवसागर पार करने निकले हैं तब नदी से कैसा डर। वे स्वयं नदी में घुस गए और शिष्यों से अनुगमन करने को कहा। शिष्यों को यह देख आश्चर्य हुआ कि नदी की उफनती धारा धीरे-धीरे शांत होती गई और वे आसानी से उस पार पहुंच गए। मगर आसमान से गिरे तो खजूर में अटके। वे बादशाह जलालुद्दीन खिलजी के राज्य में प्रवेश कर गए थे। उन्हें दुश्मन के जासूस जान सैनिकों ने तलवारें निकाल लीं। मध्वाचार्य ने उनसे शांत स्वर में कहा, हम लोग संन्यासी ठहरे। भला हम तुम्हारा क्या बिगाड़ सकते हैं? हम तो तुम्हारे बादशाह के दर्शन करना चाहते हैं। सैनिक उनके कथन से संतुष्ट हो गए और राजमहल की ओर ले चले। महल के बरामदे में खड़े बादशाह ने जब देखा कि एक वैरागी अपने शिष्यों के साथ निडरता के साथ सीमा में प्रवेश कर गया है, तो उसे आश्चर्य हुआ और उसने वहीं से चिल्लाकर पूछा, ऐ वैरागी, मेरे राज्य में इस प्रकार बेरोक-टोक आने की जुर्रत कैसे की? समझ में नहीं आता, इतनी बड़ी नदी को तुम कैसे पार कर गए। मध्वाचार्य ने ऊंचे और मधुर स्वर में जवाब दिया, हुजूर घबराइए नहीं, हम लोग आपके राज्य से होकर उत्तर की ओर जाना चाहते हैं। रही नदी पार करने की बात, तो आपका जो अल्लाह है वही हमारा नारायण है। हम सब उसी की संतान हैं। उसी की कृपा से हम लोग यह नदी पार कर सके। सैनिकों से हमने आपसे भेंट कराने की विनती की और उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी। संत की मधुर वाणी और शांत स्वभाव का बादशाह पर ऐसा असर पड़ा कि वह उन्हें दरबार में ले गया और उनका यथोचित सम्मान किया।

१५९) नाम की शक्ति - संसार का भ्रमण करते हुए गुरु नानकदेव जी और मरदाना किसी जंगल से जा रहे थे। मरदाना को जोरों की भूख लगी। जब भूख असहनीय हो गई तो उसने कहा, महाराज। बहुत भूख लगी है। नानक जी ने कहा, मरदाना। तो फिर रोटियां सेंक ले। मरदाना ने कहा- महाराज। बहुत ठंड है, ना तो कोई चूल्हा है और न ही कोई तवा है और पानी भी बहुत ठंडा है। तालाब छोटा था जैसे ही गुरु नानक जी ने तालाब के पानी को स्पर्श किया, पानी उबाल मारने लगा। नानक देव जी ने कहा, ले मरदाना, अब रोटी सेंक ले। मरदाना आटे की चक्कियां बनाकर उस तालाब में डालने लगे, रोटियां तो सिंकी नहीं, आटे की चक्की डूब गई। दूसरी चक्की डाली वह भी डूब गई। फिर एक और डाली तो वह भी डूब गई। परेशान मरदाना भागता हुआ आया और आकर नानक जी से बोला, महाराज आप कहते हो रोटियां सेंक लें, रोटियां तो कोई सिंकी नहीं, बल्कि सारी चक्कियां डूब गईं। अब क्या करें? गुरु नानक देव ने पूछा, मरदाना ये बता तूने नाम जप कर रोटियां सेंकी थी? मरदाना नानकदेव जी के चरणों में गिर गया और बोला, महाराज गलती हो गई। नानक देव जी ने कहा, जा नाम जप कर रोटियां सेंक। गुरु नानक का आदेश मान मरदाना ने नाम जप कर पानी में चक्की डाली तो चमत्कार हो गया। न सिर्फ रोटियां सिंक गईं बल्कि डूबी हुई रोटियां भी तैर कर उपर आ गईं और सिंक गई। मरदाना ने पूछा, महाराज ये क्या चमत्कार है? नानक देव जी ने कहा, मरदाना, नाम के अंदर वो शक्ति है कि जपनेवाला अपने आप तैरने और भवसागर पार होने लगता है और आसपास के माहौल को तार देता है। जहां गुरु नानक देव जी ने तालाब को स्पर्श कर ठंडे पानी को गरम पानी में उबाल दिया, वो जगह आज भी वहीं है। उसका नाम मणिकराव साहिब है।

१६०) कमाल की सलाह - कबीर के बेटे कमाल ने भी अपने पिता के रास्ते पर चलते हुए अपना जीवन ईश्वर की उपासना में समर्पित कर दिया था। वह दिन रात ईश्वर की आराधना में लगे रहते थे और बाकी वक्त परोपकार में बिताते थे। एक दिन काशी नरेश को किसी ने बताया कि कमाल भी कबीर की ही तरह लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि से दूर हैं। उन्हें केवल लोगों के दु:ख- दर्द दूर करने में आनंद मिलता है और वह कीमती से कीमती भेंट को भी तुच्छ समझते हैं। काशी नरेश यह जानने के लिए कमाल के पास आए और कुछ बातें की। फिर उन्हें एक बहुमूल्य अंगूठी भेंट करते हुए बोले, आपने मुझे ज्ञान के अनमोल मोती प्रदान किए हैं। मैं एक छोटी सी भेंट आपको दक्षिणा में देना चाहता हूं। कमाल ने अंगूठी की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा और बोले, यदि आपके मन में दक्षिणा देने की इच्छा है तो यहीं कहीं इस भेंट को छोड़ दें। कमाल की बात सुनकर काशी नरेश ने अंगूठी झोंपड़ी के छप्पर पर रख दी और वहां से चले गए। उन्होंने सोचा, भला कोई भी व्यक्ति कीमती अंगूठी की ओर नजर भी न मारे ऐसा कैसे हो सकता है? यह सोचकर वह अगले दिन फिर कमाल के पास पहुंचे। कमाल हंसकर बोले, आइए महाराज। आज क्या भेंट लाए हैं? यह जवाब सुनकर काशी नरेश को अत्यंत हैरानी हुई। वह बोले, आज तो मैं कल भेंट की हुई अंगूठी वापस लेने आया हूं। कहां है वह अंगूठी? इस पर कमाल बोले, मुझे क्या पता। आप जहां छोड़कर गए होंगे वहीं होगी, मुझे तो उसकी आवश्यकता नहीं थी। यह सुनकर काशी नरेश ने छप्पर पर हाथ बढ़ाया तो अंगूठी वहीं पाकर चकित रह गए। वह कमाल के पैरों में गिर पड़े और बोले, ऐसी विरक्ति मेरे अंदर भी ला दें ताकि मैं भी अपने जन्म को सफल कर सकूं। कमाल ने उन्हें लाभ-लोभ से मुक्त होकर राजकाज चलाने की सलाह दी।

१६१) धैर्य का परिणाम - बात १९०४ की है। एक विश्व मेला आयोजित किया गया था। इस मेले में सभी देशों के प्रतिनिधि अपनी अपनी वस्तुओं का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार करने के लिए उन्हें लोगों को दिखा व समझा रहे थे। रिचर्ड ब्लेशनीडेस इस मेले में भारतीय चाय को प्रमोट करना चाहते थे। तब तक चाय इतनी मशहूर नहीं हुई थी। उन्हें पूरा यकीन था कि वह बतौर प्रॉडक्ट भारतीय चाय को लोकप्रिय बनाने में सफल होंगे। उन्होंने एक अच्छी जगह देखकर भारतीय चाय की स्टॉल भी लगा ली थी। उन दिनों गर्मी का मौसम था। इसलिए सभी लोग ठंडे प्रॉडक्टों को महत्व दे रहे थे। ऐसे में चाय की स्टॉल खाली पड़ी रही। वहां इक्के-दुक्के लोग ही नजर आ रहे थे। रिचर्ड ब्लेशनीडेस यह देखकर थोड़े निराश हुए, लेकिन उन्होंने हिम्मत न हारी। वह कुछ देर तक मेले के अन्य उत्पादनों को ध्यान से देखते रहे। सहसा उनकी नजर एक खास उत्पादन पर पड़ी जिस पर लोग टूट पड़ रहे थे। उन्होंने करीब जाकर देखा तो पाया कि वहां शीत पेय बिक रहा है। यह देखकर वह वापस अपने स्थान पर आए और थोड़ी देर एकांत में सोचते रहे। अचानक उन्हें एक विचार आया। उन्होंने चाय को चीनी के साथ मिलाकर शीत पेय के रूप में बेचना शुरू कर दिया। लोगों को वह चाय रूपी शीत पेय बेहद पसंद आया। कुछ ही देर में उनकी स्टॉल पर भारी भीड़ लग गई। उनका यह नया पेय मेले में बेहद लोकप्रिय और चर्चित हुआ। यह दुनिया में शीत चाय की शुरुआत थी। यह रिचर्ड ब्लेशनीडेस के धैर्य और उनकी सूझबूझ का ही परिणाम था कि एक फ्लॉप साबित होते उत्पाद को उन्होंने मेले का हॉट ट्रेंड बना दिया। इसके बाद शीत चाय ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। आज इसकी गिनती दुनिया के विभिन्न हिस्सों में सबसे पसंदीदा पेय पदार्थों के रूप में होती है।

१६२) आजाद की इकन्नी - उन दिनों क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद अपनी खराब आर्थिक परिस्थिति में झांसी स्थित बुंदेलखंड की एक कंपनी में मोटरगाड़ी चलाकर गुजर-बसर कर रहे थे। प्रतिकूल परिस्थितियों के उस गौर में उन्हें चने खाकर अपनी भूख शांत करने का इंतजाम करना पड़ता था। एक दिन चंद्रशेखर आजाद के पास केवल इकन्नी ही बची थी। उन्होंने दिन भर कुछ भी नहीं खाया था। वह पूरा दिन खाली पेट मोटरगाड़ी चलाते रहे और इसकी वजह से शाम तक भूख से व्याकुल हो गए। एक जगह उन्हें चने बेचनेवाला दिखा। चंद्रशेखर आजाद उसके पास से इकन्नी के भुने हुए चने ले आए। जब वह चने खा रहे थे तो चनों में से अचानक एक इकन्नी और निकल आई। इकन्नी देख वह चकित रह गए। एक बार के लिए तो उनका मन डोल गया। मन में यह ख्याल आया कि इससे कल का काम भी चल जाएगा, परसों की चिंता फिर करेंगे। किंतु तभी वह एकदम गंभीर हो गए, अपने विवेक को जागृत किया और सोचने लगे कि यह इकन्नी मेरी कैसे हो सकती है? इस इकन्नी को मैंने अपने पुरुषार्थ से तो अर्जित नहीं किया है। लगता है यह भूल से मेरे पास आ गई है। चने खाकर चंद्रशेखर आजाद ने एक लोटा पानी पिया। फिर वह चने बेचनेवाले के पास गए और बोले, क्यों भाई, तुमने मुझे इकन्नी भी चने में डाल दी? ऐसा करोगे तो क्या कमाओगे? चने बेचनेवाला जब तक कुछ समझ पाता, चंद्रशेखर आजाद उसे इकन्नी देकर वापस हो लिए। चने बेचनेवाला कभी हथेली पर रखी इकन्नी को देखता, तो कभी सड़क पर जाते हुए उस नौजवान को। मन ही मन वह सत्यनिष्ठ चन्द्रशेखर आजाद की प्रशंसा कर रहा था। सदाचार के संवाहक क्रांतिवीर चंद्रशेखर आजाद देश के नौजवानों के हृदयों पर प्रेरणास्रोत बनकर सदैव अंकित रहेंगे।

१६३) गरीब महिला का महादान - नेताजी सुभाषचंद्र बोस एक सभा को संबोधित कर रहे थे। अचानक मंच पर चढ़ने का प्रयास करती हुई एक स्त्री पर उनकी नजर पड़ी। वह बिल्कुल फटेहाल थी। आजाद हिंद फौज के अधिकारी भी अचरज में थे। सभी के भीतर उत्सुकता थी कि आखिर यह चाहती क्या है? तभी उस स्त्री ने अपनी मैली-कुचैली साड़ी की खूंट में बंधे तीन रुपये निकाले और नेताजी के पांवों के पास रख दिए। नेताजी हैरान होकर उसे देख रहे थे। फिर उस महिला ने हाथ जोड़कर कहा, नेताजी, इसे स्वीकार कर लीजिए। आपने राष्ट्र देवता के लिए सर्वस्व दान करने के लिए कहा है। मेरा यही सर्वस्व है। इसके अलावा मेरे पास कुछ नहीं। सभा में उपस्थित जनसमुदाय भी चकित था। नेताजी मौन रहे। वह औरत कुछ निराश सी बोली, क्या आप मुझ गरीब के इस तुच्छ दान को स्वीकार नहीं करेंगे? क्या भारत मां की सेवा करने का गरीबों को अधिकार नहीं है? नेताजी की आंखों में आंसू आ गए। बिना कुछ कहे उन्होंने रुपये उठा लिए। उस स्त्री की खुशी का ठिकाना न रहा। वह उन्हें प्रणाम कर चली गई। उसके जाने के बाद पास खड़े एक अधिकारी ने पूछा, नेताजी, उस गरीब महिला से तीन रुपये लेते हुए आप की आंखों में आसूं क्यों आ गए थे? नेताजी ने कहा, मैं सचमुच बहुत असमंजस में पड़ गया था। उस गरीब महिला के पास कुछ भी नहीं होगा। यदि मैं इन्हें भी ले लूं तो इसका सब कुछ छिन जाएगा। और यदि नहीं लूं तो इसकी भावनाएं आहत होंगी। देश की स्वाधीनता के लिए यह अपना सब कुछ देने आई है। इसे इंकार करने पर पता नहीं, वह क्या-क्या सोचती। हो सकता है, वह यही सोचने लगती कि मैं केवल अमीरों का ही सहयोग स्वीकार करता हूं। यही सब सोच-विचार करके मैंने यह महादान स्वीकर कर लिया।

१६४) पानी की रेखाएं - तमिल महिला संत अवय्यार की छोटी अवस्था में ही उनके माता-पिता का निधन हो गया था। एक दयालु कवि ने उनका लालन-पालन किया। जब उनकी उम्र सोलह वर्ष की हुई तो योग्य वर की खोज की जाने लगी। देखने में वह सुंदर थीं ही, एक राजकुमार ने उन्हें पसंद कर लिया। किंतु महिला संत अवय्यार का ध्यान बचपन से ही भगवद्भजन में लग गया था। उन्हें घर-गृहस्थी से विरक्ति हो गई थी। उन्होंने अपने अभिभावकों से कहा, मैंने तो अपना जीवन भगवद्भजन, काव्य-रचना और जनसेवा में बिताने का निश्चय किया है। आप मेरे विवाह का विचार त्याग दें। किंतु परिजनों ने उसकी बात अनसुनी कर दी। जब अवय्यार ने देखा कि उनके कहने का कोई असर नहीं हुआ है, तो उन्होंने विचार किया कि जिस यौवन और रूप-संपदा के कारण उन्हें वैवाहिक बंधन में जकड़ा जा रहा है, यदि वह न रहे तो अपनी इच्छा पूरी हो सकती है। वह भगवान की शरण में गईं और उनसे याचना की, भगवन्, मेरा यौवन और सौंदर्य भजन-पूजन, सरस्वती की उपासना और ज्ञान-दान में बाधक बन रहे हैं। इसलिए हे प्रभु मेरे इस तन को कुरूप कर दो, ताकि मैं बेहिचक सबकी सेवा कर सकूं। कहते हैं, परमात्मा ने उनकी आर्त पुकार सुन ली और एक रात्रि में ही अवय्यार के शरीर का सारा तेज जाता रहा। वह एक अधेड़ की भांति कुरूप दिखाई देने लगीं। लोगों ने जब देखा तो हैरान हो गए, मगर बाद में उन्हें सही बात पता चली तो वे उसके त्याग की प्रशंसा करने लगे। अवय्यार ने अपना जीवन भगवद्भजन और धार्मिक ग्रंथ रचना में व्यतीत किया। उनके एक ग्रंथ नीति नेरि विलख्खम में लिखा है कि शरीर पानी का बुलबुला और धन-संपत्ति समुद्र की लहरें हैं। पानी से लिखी रेखाएं जितने समय तक टिकती हैं, शरीर और धन भी उतने ही काल तक रहता है।

१६५) कृष्ण का प्रेम - आंध्र प्रदेश में बम्मेर पोतन्ना एक संत थे। एक दिन वे अष्टम स्कंध का गजेंद्र मोक्ष प्रसंग लिख रहे थे कि उनका साला श्रीनाथ आया और पढ़ने लगा, मगरमच्छ ने गजेंद्र का पैर पकड़ा और वह उसे धीरे-धीरे निगलने लगा। तब गजेंद्र के प्राण संकट में पड़ गए और उसने भगवान कृष्ण से प्रार्थना की। आर्त पुकार सुनकर भगवान तुरंत वहां पहुंचे, पर जल्दी में सुदर्शन चक्र लेने का ध्यान न रहा। वह इतना पढ़कर रुक गया और अपने बहनोई का मजाक उड़ाकर बोला, आपने कैसे लिखा कि भगवान को सुदर्शन चक्र लेने का ध्यान न रहा। वे क्या लड़ाई देखने जा रहे थे? यदि सुदर्शन चक्र साथ में न ले जाएं, तो भला गजेंद्र की मुक्ति कैसे होगी? कोई काव्य लिखने के पूर्व उसे अनुभव की कसौटी पर परखना आवश्यक होता है। पोतन्ना उस समय तो चुप रहे, पर दूसरे दिन उन्होंने श्रीनाथ के लड़के को दूर खेलने भेज दिया और समीप के एक कुएं में एक बड़ा पत्थर डालकर और चिल्लाने लगे, श्रीनाथ। दौड़ो, तुम्हारा बच्चा कुएं में गिर गया। श्रीनाथ ने सुना, तो वह बिना कुछ सोचे कुएं में कूदने लगा। यह देख पोतन्ना ने उसे पकड़ लिया और बोले, मूर्ख हो क्या जो बिना कुछ सोचे हुएं में कूद रहे हो? बच्चे को निकालोगे कैसे? रस्सी बाल्टी तो साथ में लाए नहीं। श्रीनाथ जब सोचने लगा तो पोतन्ना बोले, घबराओ नहीं, तुम्हारा बच्चा गिरा नहीं है। मैं तो तुम्हें यह दिखाना चाहता था कि जिस पर प्रेम अधिक हो, उस पर संकट पड़ने पर मनुष्य की क्या दशा होती है। जिस प्रकार पुत्र-प्रेम में तुम्हें रस्सी-बाल्टी लेने का स्मरण न रहा, उसी प्रकार भगवान कृष्ण भी सुदर्शन चक्र लेना भूल गए। तब श्रीनाथ ने समझा कि प्रियजनों के दुख-कष्ट की बात सुनकर मनुष्य तो क्या भगवान भी सुध-बुध खो बैठते हैं।

१६६) काम की आदत - एक बार ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि सात साल तक उनके गांव में पानी नहीं बरसेगा। यह सुनकर सभी निराश हो गए और घर छोड़कर जाने लगे। एक किसान को अपने गांव से बहुत प्रेम था। अधिकतर लोग चले गए, किंतु वह वहीं डटा रहा। उसने सोचा कि सात साल तक वर्षा तो होने वाली नहीं है तो फिर हल वगैरह का क्या काम? उसने उन्हें उठाकर एक ओर रख दिया। सात दिन वह इसी सोच विचार में बैठा रहा कि बिना पानी के वह गुजारा कैसे करेगा। उसने हल वगैरह तो एक ओर रख दिए किंतु यदि सात साल में वह उन्हें चलाना ही भूल गया तो? काफी सोच विचार के बाद उसने एक निर्णय लिया और अपना हल उठाकर खेत जोतने लगा। अब उसे मन में यह खुशी हो रही थी कि वह तो अपना काम करता ही रहेगा। इससे खेती का अभ्यास भी बना रहेगा। कई दिनों तक वह लगातार खेत जोतता रहा। इसी तरह से एक दिन जब वह खेत जो रहा था, तो एक बदली वहां से निकली। अभी तक ऐसी अनेक बदलियां वहां से बिना बरसे ही निकल चुकी थीं, लेकिन यह वाली बदली किसान को देखकर रुकी और बोली, किसान भाई, तूने सुना नहीं कि यहां पर सात साल तक पानी नहीं बरसेगा? फिर तू क्यों व्यर्थ ही खेत जोत रहा है? बदली की बात पर किसान बोला, मत बरसो, मैं तो खेत इसलिए जोतता हूं कि कहीं सात साल बाद मैं खेत जोतना ही न भूल जाऊं। किसान की बात सुनकर बदली हैरान हो गई और वह सोचने लगी कहीं सात सालों में मैं भी बरसना ही न भूल जाऊं। वह बरसने लगी। उसे बरसते देख अन्य बदलियां भी वहां इकट्ठी हो गईं और बदली की बरसना भूलनेवाली बात सुनकर सभी उसका साथ देते हुए झमाझम बरस उठीं। इस प्रकार काम की आदत व मेहनत ने भविष्यवाणी को झुठला दिया।

१६७) अपनत्व से बड़ा कर्त्तव्य - एक वकील की वकालत खूब चलती थी। एक बार वह हत्या का एक मुकदमा

लड़ रहे थे। उन्हें खबर मिली कि गांव में उनकी पत्नी बहुत बीमार हो गई हैं। बीमारी गंभीर थी। इस कारण वकील साहब गांव आ गए। वह अपनी पत्नी की देखभाल में लगे थे। इसी बीच हत्या के उस मुकदमे की सुनवाई की तारीख पड़ी। वकील साहब असमंजस में थे। इधर पत्नी मृत्युशैया पर थी, उधर पेशी पर शहर जाना भी जरूरी था। न जाने पर मुकदमा खारिज हो जाने और मुलजिम को फांसी होने की आशंका थी। पति को असमंजस में देख पत्नी बोलीं- आप मेरी चिंता न करें, पेशी पर जरूर जाएं। भगवान सब अच्छा करेंगे। पत्नी की बात मानकर वकील साहब शहर लौट तो आए, मगर उनका मन बड़ा दुखी होता रहा। अदालत में मुकदमा पेश हुआ। सरकारी वकील ने साबित करने की कोशिश की कि मुलजिम कसूरवार है और उसे फांसी ही होनी चाहिए। वकील साहब बचाव पक्ष की ओर से जवाब देने के लिए खड़े हुए। वह बहस कर ही रहे थे कि उनके सहायक ने एक तार लाकर उनको दिया। वकील साहब थोड़ी देर रुके। तार पढ़कर अपने कोट की जेब में रखा और फिर बहस में लग गए। उन्होंने साबित कर दिया कि उनका मुवक्किल बेकसूर है। बहस के बाद मजिस्ट्रेट ने फैसला सुनाया कि अपराधी निरपराध है। मुवक्किल और दूसरे वकील मित्र अदालत के बाद बधाई देने वकील साहब के कमरे में आए। वकील साहब ने मित्रों को वह तार दिखाया जो उन्हें अदालत में बहस के दौरान मिला था। तार में लिखा था कि उनकी पत्नी का देहांत हो गया। मित्रों ने कहा, बीमार पत्नी को छोड़कर नहीं आना चाहिए था। वकील साहब ने कहा, दोस्तो, अपनत्व से बड़ा कर्त्तव्य होता है। यह वकील थे भारत की एकता के निर्माता लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल।

१६८) भगवान के भरोसे - सूर्य अस्त हो चला था। आकाश में बादल छाए हुए थे। नीम के एक पेड़ पर ढेर सारे कौवे रात बिताने के लिए बैठे हुए थे। कौवे अपनी आदत के अनुसार, आपस में एक-दूसरे से कांव-कांव करते हुए झगड़ रहे थे। उसी समय एक मैना आई और रात बिताने के लिए नीम के उस पेड़ की एक डाल पर बैठ गई। मैना को देखकर सभी कौवे उसकी ओर देखने लगे। बेचारी मैना सहम गई। डरते हुए बोली, अंधेरा हो गया है। आसमान में बादल छाए हुए है। किसी भी समय पानी बरस सकता है। मैं अपना ठिकाना भूल गई हूं। आज रात भर मुझे भी इस पेड़ की एक डाल के एक कोने में रात बिता लेने दो।

मैना बोली- मेरे ऊपर दया करो। कौवे भला कब उसकी बात मानते। उन्होंने कहा, यह नहीं हो सकता। यह पेड़ हमारा है। तुम इस पेड़ नहीं बैठ सकती हो। भागो यहां से। कौवों की बात सुनकर बड़े ही दिन स्वर में मैना बोली, पेड़ तो सभी भगवान के हैं। यदि बरसात होने लगी और ओले पड़ने लगे, तो भगवान ही सबको बचा सकता है। मैं बहुत छोटी हूं। तुम लोगों की बहन हूं। मेरे ऊपर दया करके रात बिता लेने दो। मैना की बात सुनकर सभी कौवे हंसने लगे। फिर बोले, हम लोगों को तेरी जैसी बहन की कोई जरूरत नहीं है। तू भगवान का नाम बहुत ले रही है, तो भगवान के सहारे यहां से जाती क्यों नहीं? यदि तू यहां से नहीं जाएगी, तो हम सब मिलकर तुझे मार भगाएंगे और सभी कौवे मैना को मारने के लिए उसकी ओर दौड़ पड़े। कौवों को कांव-कांव करते हुए अपनी ओर आते देखकर मैना वहां से जान बचाकर भागी। वहां से थोड़ी दूर एक आम के पेड़ पर अकेले ही रात बिताने के लिए मैना एक कोने में छिपकर बैठ गई। रात में तेज हवा चली। कुछ देर बाद बादल बरसने लगे और इसके साथ ही बड़े-बड़े ओले भी पड़ने लगे। ओलों की मार से बहुत से कौवे घायल

होकर जमीन पर गिरने लगे। कुछ तो मर भी गए। मैना आम के जिस पेड़ पर बैठी थी, उस पेड़ की एक डाल टूट गई। आम की वह डाल अन्दर से खोखली थी। डाल टूटने की वजह से डाल के अन्दर के खाली स्थान में मैना छिप गई।

डाल में छिप जाने की वजह से मैना को न तो हवा लगी और न ही ओले ही उसका कुछ बिगाड़ पाए। वह रात भर आराम से बैठी रही। सवेरा होने पर जब सूरज निकला, तो मैना उस खोह से निकली और खुशी से गाती-नाचती हुई ईश्वर को प्रणाम किया। फिर आकाश में उड़ चली। मैना को आराम से उड़ते हुए देखकर, जमीन पर पड़े घायल कौवों ने कहा, अरी मैना बहन, तुम रात को कहां थीं? तुम्हें ओलों की मार से किसने बचाया?

ईश्वर ने की मेरी रक्षा- मैना बोली, मैं आम की डाली पर बैठी ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि हे ईश्वर। दुखी और असहाय लोगों की रक्षा करना। उसने मेरी प्रार्थना सुन ली और उसी ने मेरी भी रक्षा की। मैना फिर बोली, हे कौवों सुनो, भगवान ने केवल मेरी रक्षा ही नहीं की। वह तो जो भी उस पर विश्वास करता है और उसकी प्रार्थना करता है, उसे याद करता है तथा भरोसा करता है, ईश्वर उसकी रक्षा अवश्य ही करता है और कठिन समय में उसे बचाता भी है।

१६९) सत्संग ने बना दिया चोर को साधु - एक बार अवंतिपुर में साधु कोटिकर्ण आए। उन दिनों उनके नाम की धूम थी। उनका सत्संग पाने दूर-दूर से लोग आते थे। उस नगर में रहनेवाली कलावती भी सत्संग में जाती थी। कलावती के पास अपार संपत्ति थी। उसके रात्रि सत्संग की बात जब नगर के चोरों को मालूम हुई तो उन्होंने उसके घर सेंध लगाने की योजना बनाई। एक रात जब कलावती सत्संग में चली गई, तब चोर उसके घर आए। घर पर दासी अकेली थी। जब दासी को पता चला कि चोर सेंध लगा रहे हैं तो वह डरकर वहां से भागी और उधर चल दी जहां कलावती सत्संग में बैठी थी। कलावती तन्मय होकर कोटिकर्ण की अमृतवाणी सुन रही थी। दासी ने उसे संकेत से बुलाया, किंतु कलावती ने ध्यान नहीं दिया। इस बीच चोरों का सरदार दासी का पीछा करता हुआ वहां आ पहुंचा। तब डरकर दासी कलावती के पास जाकर बोली- स्वामिन चलिए घर में चोर घुस आए हैं। कलावती ने कहा- तू चुपचाप सत्संग सुन।

धन तो फिर मिल जाएगा किंतु इतना अच्छा सत्संग कहा मिलेगा। कलावती का जवाब सुनकर चोरों का सरदार स्तब्ध रह गया और उसने भी पूरा सत्संग सुना। सत्संग समाप्ति पर वह कलावती के चरणों में गिर पड़ा और बोला- आज तुमने मेरी आंखों से अज्ञान का पर्दा उठा दिया। अब मैं कभी चोरी नहीं करूंगा। तब तक उसके साथी चोर भी वहां आ पहुंचे। उन्होंने कहा- हमें कितना धन मिल रहा था और तुम यहां आ बैठे। तब वह बोला- अब तक झूठे सुख से संतोष पाया, किंतु आज सच्चा सुख मिला है। तुम भी मेरे साथ सत्संग सुनो। सार यह है कि भौतिक संपदा शरीर को सुख पहुंचाती है किंतु सत्संग आत्मा को सुकून देता है और आत्मा का संतोष शरीर के सुख से बढ़कर होता है।

१७०) इंद्र की घोषणा का कोई लाभ नहीं उठाया साधु ने - एक बार इंद्र अपने दरबार में सभी देवताओं के साथ बैठे पृथ्वी की स्थिति पर चर्चा कर रहे थे। पृथ्वी के जीवन, वहां की समस्याओं व मांगों के विषय में सभी अपने-अपने विचार रख रहे थे। इंद्र का आग्रह था कि पृथ्वी के जीवन के विषय में उन्हें सही वस्तुस्थिति का ज्ञान हो जाएतो वे सुधार की दिशा में कुछ सकारात्मक कदम उठाए। देवताओं ने उन्हें काफी कुछ जानकारी दी। इनमें से एक अहम बात यह सामने आई कि पृथ्वीवासियों को कई वस्तुएं कुरूप लगती हैं जिनसे वे असहज हो जाते हैं। यह सुनकर इंद्र ने पृथ्वी पर घोषणा करवाई

कि जिसे जो भी वस्तु कुरूप लगती है, वह उसे यहां लाकर सुंदरता में बदलवा ले। इंद्र की यह घोषणा सुनकर पृथ्वीवासियों की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। सभी ने इस सुअवसर का लाभ उठाना उचित समझा और अपनी-अपनी वस्तुओं को सुंदर करवाकर ले गए। इंद्र ने अंत में पुन: खोज करवाई कि कहीं कोई इस सुविधा से वंचित तो नहीं रह गया। पता लगा कि एक छोटी-सी कुटिया में रहनेवाले साधु ने कुछ भी परिवर्तित नहीं करवाया है। कारण पूछने पर उसने कहा- मनुष्य जीवन से सुंदर अन्य कुछ है ही नहीं और आत्मसंतुष्टि से बढ़कर कोई आनंद नहीं है। मेरे पास ये दोनों ही वस्तुएं हैं। फिर मुझे इन्हें बदलवाने की भला क्या जरूरत है? सार यह है कि सुंदरता के सही मायने आंतरिकता में ही बसते हैं। बाहरी सौंदर्य नेत्रों को प्रीतिकर लगता है, किंतु मन का आनंद तो आंतरिक सौंदर्य में ही निहित होता है। इसलिए अपने जीवन को सदाचरण से सुंदर बनाएं और भीतर के आनंद की दिव्यता का भोग करें।

१७१) बुरे का अंत बुरा ही होता है - किसी गांव में दो मित्र रहते थे- राकेश और सूरज। दोनों के स्वभाव में बड़ा अंतर था। सूरज सबकी मदद करता था, तो राकेश सबका मन दुखाता रहता था। एक दिन राकेश ने सूरज से कहा- मित्र। तूने अब तक दूसरे स्थान की यात्रा नहीं की है। इसलिए मेरे साथ शहर चल। वहां हम धन कमाने के साथ घूम भी लेंगे और जो धन कमाएंगे वह आधा-आधा बांट लेंगे।

सूरज उसकी बातों में आ गया। तो दोनों निकल पड़े। शहर जाकर राकेश ने सूरज की बुद्धि और मेहरत से बहुत सा धन कमाया। जब काफी धन इकट्ठा हो गया, तो एक दिन वे अपने गांव की तरफ रवाना हो गए। रास्ते में राकेश ने सोचा क्यूं ना मैं सूरज को ठग लूं। उसे एक उपाय सूझा। जब वे दोनों एक गांव में पहुंचे तो राकेश ने कहा- रास्ते में अगर डाकुओं ने हमें लूट लिया तो सारा धन उनके पास चला जाएगा। क्यों ना हम इसे कहीं गाड़ दें? जब भी जरूरत पड़ेगी यहां से ले जाया करेंगे। सूरज को राकेश की बात सही लगी। सूरज को भी धन की जरूरत थी, इसलिए वह उसके साथ हो लिया। उन दोनों ने धनवाली जगह को खोदना शुरू किया। लेकिन वहां धन नहीं था। यह देखकर राकेश बोला- सूरज तूने सारा धन निकाल लिया है। राकेश की बात सुनकर सूरज को गुस्सा आ गया। वह बोला- मैंने यह धन नहीं लिया है। मैंने आज तक अपनी जिंदगी में किसी के साथ बेईमानी नहीं की। यह धन तूने ही चुराया है। दोनों लड़ते हुए अपने सरपंच के पास पहुंचे और सारी बात सरपंच को कह सुनाई। सरपंच ने सूरज की बात पर भरोसा करते हुए राकेश को सौ कौड़े मारने का दंड दिया। यह सुनकर राकेश डर गया। उसने कहा, सरपंच जी वह पेड़ बोलता है। हम उससे पूछेंगे तो वह हमें चोर का नाम बता देगा। राकेश दौड़ता हुआ अपने घर पहुंचा और अपने पिता को सारी बात समझा दी। अगले दिन उसने पिता को पेड़ की खोखर में बैठा दिया और कहा कि यदि सरपंच चोर का नाम पूछे, तो वे सूरज का नाम ले दें।

राकेश और सूरज सरपंच के साथ जब उस पेड़ के पास गए और चोर का नाम पूछा, तो खोखर में छिपे राकेश के पिता ने सूरज का नाम ले यिा। सरपंच ने सूरज को कठोर कारावास की सजा देने का निर्णय लिया। सूरज ने कहा- मुझे दंड स्वीकार है। बस मैं इस पेड़ में आग लगाना चाहता हूं। सरपंच की इजाजत से सूरज ने पेड़ के चारों ओर आग लगा दी। थोड़ी देर में राकेश का पिता चिल्लाया- अरे, मुझे बचाओ। जैसे-जैसे पिता को बाहर निकाला गया सारी सच्चाई सरपंच के सामने आ चुकी थी। बेईमानी करने के अपराध में राकेश को कठोर कारावास की सजा मिली और सूरज को सारा धन।

धन लेकर सूरज खुशी-खुशी अपने घर लौट गया।

१७२) मेहनत की कमाई का अपना सुख होता है - शहर के अमीर सेठ किरोड़ीमल रोज सुबह घूमने निकलते। एक दिन उन्हें रास्ते में एक भिखारी मिला। वह भिखारी सेठजी के पैरों में गिर पड़ा और गिड़गिड़ाते हुए बोला। साहब, मैंने दो दिन से खाना नहीं खाया है। बहुत भूख लगी है। आप मेहरबानी करके कुछ पैसे दे दीजिए ताकि मैं खाना खा सकूं। सेठ किरोड़ीमल को भिखारी पर तरस आ गया। उन्होंने अपनी जेब से पचास पैसे का सिक्का निकाला और उसे झाड़ियों की तरफ फेंक दिया। सिक्का झाड़ियों के बीच में जा गिरा। सेठ किरोड़ीमल वहां से चले गए। लेकिन भिखारी झाड़ियों में सिक्का ढूंढने लगा। आधे घंटे बाद आखिर उसे सिक्का मिल गया। वह बहुत खुश हुआ। जब सेठ उस रास्ते से वापस लौट रहे थे, तो उन्हें वह भिखारी फिर मिल गया। सेठ ने फिर भिखारी से पूछा, क्यों वह सिक्का मिल गया न? जी हां, मैंने उसे ढूंढ़ लिया। भिखारी ने जवाब दिया। अगले दिन सेठ जब सैर को निकले तो उन्हें वह भिखारी फिर मिल गया। भिखारी ने फिर पैसे मांगे। सेठ ने अपनी जेब से एक रुपये का सिक्का निकालते हुए कहा, ये लो और सिक्का एक गड्ढे में गंदा पानी और कीचड़ था उसमें फेंक दिया। फिर सेठ घूमने निकल गए।

एक घंटे की जी-तोड़ मेहनत के बाद सिक्का भिखारी को मिल गया। तीसरे दिन भिखारी ने फिर पैसे लेने के लिए बहाना बनाया, तो सेठ ने सिक्का निकाला और उसे पास के नाले में फेंक कर आगे बढ़ गया। एक-डेढ़ घंटे की कोशिश के बाद भिखारी को सिक्का मिल गया। जब किरोड़ीमल वापस लौटे, तो उन्होंने भिखारी से पूछा, क्यों सिक्का नहीं मिला? सेठजी सिक्का तो मिल गया। लेकिन मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं? भिखारी ने कहा। हां पूछो? क्या पूछना चाहते हो? सेठ ने मुस्कुराते हुए कहा। आप हर रोज आते हैं और मुझे पैसे भी देते हैं, लेकिन मैं वह समझ नहीं पाता हूं कि आप सिक्के को इस तरह क्यों फेंकते है कि मुझे उसे ढूंढ़ने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। आखिर ऐसा करने से आपको क्या हासिल होता है? भिखारी ने पूछा। सेठ किरोड़ीमल ने हंसते हुए कहा, अरे मैं तुमको मेहनत की सीख देना चाहता हूं। तुम हट्टे-कट्टे हो। मेहनत करके कमा सकते हो। यूं तुम्हें बिना मेहनत के मिलता रहा तो तुम काम से जी चुराने लगोगे। मेहनत की कमाई का अपना सुख होता है, इस बात को क्यों भूलते हो मेरे भाई। अगले दिन जब सेठ किरोड़ीमल घूमने निकले तो उन्हें वह भिखारी कहीं दिखाई नहीं दिया।

१७३) शागिर्द का नजराना - सरी सक्ती अपने वक्त के आला दर्जे के सूफी संत थे। उनकी सादगी बड़ी मशहूर थी। वह जल्दी किसी से कुछ लिया नहीं करते थे। यह बड़ा आम था कि जिसका नजराना सरी सक्ती ने कुबूल कर लिया, वह खुद को धनी समझता था। सरी सक्ती का भांजा था जुनैद। एक रोज जुनैद पढ़कर घर लौट रहा था कि रास्ते में उसे अपने पिता रोते मिल गए। पिता को रोता देख जुनैद ने पूछा, क्यों रो रहे हैं? किसी ने चोट पहुंचाई या तकलीफ दी? पिता बोले, यह दीनार हमने मेहनत से कमाए थे और सोचा था कि सरी सक्ती की नजर करेंगे। मगर उन्होंने न केवल ये लेने से मना कर दिया बल्कि इनकी ओर निगाह उठाकर भी नहीं देखा। बताओ, हमारी मेहनत और ईमानदारी की कमाई भी सरी सक्ती ने स्वीकार नहीं की। यह बात जुनैद को बड़ी नागवार गुजरी। उन्होंने पिता से वह दीनार लिया और सरी सक्ती के घर चल दिए। दरवाजे पर पहुंचकर आहट दी। उधर से सवाल आया, कौन है? यह बोले- जुनैद। क्या करने आए हो? अपने पिता

का नजराना लाया हूं, आप देख लीजिए। मगर सरी सक्ती ने दरवाजा ही नहीं खोला और नजराना वापस ले जाने को कहा। बंद दरवाजे के बाहर खड़े जुनैद बगदादी ने जवाब दिया, यह नजराना मैं उस खुदा के नाम पर देने आया हूं, जिसने आप पर तमाम मेहरबानी की और आपको दरवेश बनाया। उसी खुदा ने मेरे पिता के साथ भी इंसाफ किया और उन्हें दुनियादार बनाया। मेरे पिता ने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। अब आपका जो कर्त्तव्य बनता है वह कीजिए। मासूम बच्चे का यह जवाब सुनकर सरी सक्ती ने दरवाजे खोल दिए और नजराना ही नहीं कबूला बल्कि जुनैद को भी गले से लगा लिया। कहा, मुझे मेरा शागिर्द मिल गया। यही जुनैद आगे चलकर मशहूर सूफी संत जुनैद बगदादी के नाम से मशहूर हुए।

१७४) अमीरी की पहचान - एक बार स्वामी विवेकानंद रेल में यात्रा कर रहे थे। एक भिखारी ने अपनी गरीबी का हवाला देते हुए उनसे भीख मांगी। पहले स्वामीजी ने कुछ जवाब नहीं दिया, फिर दूसरी बार भिखारी ने कहा, श्रीमान, मैं बहुत गरीब हूं, मेरे पास कुछ भी नहीं है, मुझ पर दया करो। कुछ मदद करो। उसके दोबारा भीख मांगने पर स्वामी जी की आंखें भर आई। तपाक से सहयात्री ने पूछा, श्रीमान क्या बात है? आपकी आंखों में आंसू क्यों? इसका जवाब देते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा, इस अमीर आदमी का दयनीय जीवन जीना और इस तरह भीख मांगना मुझे कष्ट दे रहा है। इसी कारण मेरी आंखों में आंसू आ गए। इस पर सहयात्री ने कहा, अरे, यह तो भिखमंगा है। आप इसे अमीर कैसे कह रहे है? स्वामीजी ने बड़े ही नम्र भाव से भिखारी से पूछा, क्या आप मुझे अपना बायां हाथ एक लाख रुपये में बेचेंगे? मैं खरीदना चाहता हूं, रुपये अभी दूंगा। भिखारी ने अपना हाथ पीछे की ओर खींच लिया और नहीं में सिर हिलाया। क्या दायां हाथ एक लाख में दोगे? भिखारी ने कहा, नहीं। क्या बायां पांव एक लाख में दोगे? नहीं। दूसरा पांव दो लाख में दोगे? नहीं। भिखारी ने कहा, नहीं, ये बेचने के लिए नहीं है। क्या अपनी एक आंख दो लाख में दोगे? यहां पर भी उत्तर नकारात्मक ही था। दूसरी आंख के पांच लाख दूंगा। भिखारी चीखकर बोला, नहीं, नहीं। मैं इन्हें नहीं बेचूंगा, मैं इन्हें नहीं बेच सकता। इस पर स्वामी जी बोले, लाखों की इस संपत्ति के होते हुए भी तुम भीख मांग रहे हो। क्या अब भी तुम समझते हो कि तुम गरीब हो? क्या सचमुच तुम्हारे पास कुछ नहीं है? अब भिखारी चुप था। कुछ पल गुमसुम रहने के बाद उसने स्वामी जी को प्रणाम करते हुए कहा, महाराज, आपने मेरी आंखें खोल दीं। अब जिंदगी में कभी मैं भीख नहीं मांगूंगा।

१७५) रेशम के तार - लिस्टर एक कुशल सर्जन थे, लेकिन उनके अधिकतर मरीज सेप्टिक से मर जाते थे। लिस्टर दिन रात नई खोजों में लगे रहते थे। एक दिन रात को वे पाश्चर के बारे में पढ़ रहे थे। उन्होंने पढ़ा कि पाश्चर ने इस बात की खोज की थी कि संक्रमण करनेवाले रोगाणु हर स्थान पर होते हैं, शरीर के अंदर भी। यह पढ़कर लिस्टर को जैसे दिशा ज्ञान हो गया। उन्होंने प्रयोग करने आरंभ कर दिए और निष्कर्ष निकाला कि सेप्टिक से बचने का एकमात्र तरीका है कि घाव लगातार किसी कीटाणुरोधी तत्व के संपर्क में रहें। इसके बाद लिस्टर घाव की ड्रेसिंग कार्बोलिक एसिड मिलाकर करने लगे। उन्होंने ऑपरेशन के औजारों को भी कीटाणुरहित बनाने पर जोर दिया। जब यह बात अन्य डॉक्टरों को पता चली तो उन्होंने लिस्टर का मजाक उड़ाया। उनसे बेपरवाह लिस्टर अपने औजारों को कीटाणुरहित करते और उसके बाद मरीजों का इलाज करते। उनकी इस एंटीसेप्टिक विधि से वार्ड में एक भी मरीज सेप्टिक से नहीं मरा, जबकि अन्य अस्पतालों में मरीज सेप्टिक से लगातार मर रहे थे। आखिर अस्पतालों के अन्य डॉक्टरों को लिस्टर की एंटीसेप्टिक

प्रणाली से सहमत होना पड़ा। उन्होंने भी इसका प्रयोग करना शुरू कर दिया और उनके सामने सकारात्मक परिणाम आए। अब तो उनकी एंटीसेप्टिक प्रणाली को मान्यता मिलनी ही थी। लिस्टर ने टांके लगाने के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान किया। उस समय तक घावों को रेशम के तार से सिला जाता था, इससे जहर फैल जाता था। लिस्टर ने जानवरों पर प्रयोग करने के बाद टांके लगाने के लिए भेड़ की आंतों से बने धागों का इस्तेमाल शुरू किया। इसे शरीर के ऊतक सोख लेते थे और इससे जहर नहीं फैलता था। उनके इस आविष्कार की भी बेहद सराहना हुई। चिकित्सा में उनके उल्लेखनीय योगदान के कारण उन्हें रॉयल सोसायटी का अध्यक्ष बना दिया गया।

१७६) ज्ञान किसी का सगा नहीं - एक महात्मा ने देखा कि उनके शिष्य को अपने ज्ञान और विद्वत्ता पर बड़ा घमंड होने लगा है। महात्मा उसके इस घमंड को दूर करना चाहते थे। उन्हें शिष्य को सच्चा ज्ञान देने की सूझी तो जिसके चलते एक दिन सवेरे ही वह उसे साथ लेकर यात्रा पर निकले। दोपहर के समय वे दोनों एक खेत में पहुंचे, जहां एक किसान अपनी फसल को सींच रहा था। गुरु और शिष्य काफी देर तक वहां खड़े रहे लेकिन किसान ने आंख उठाकर उनकी ओर देखा तक नहीं। वह लगन से अपने काम में लगा रहा। दोपहर ढले महात्मा अपने शिष्य के साथ एक नगर में पहुंचे। वहां उन्होंने देखा कि एक लुहार लोहा पीट रहा है। पसीने से उसकी सारी देह तर-बतर हो रही थी। गुरु-शिष्य काफी देर वहां खड़े रहे लेकिन लुहार को भी गर्दन ऊपर उठाने की फुरसत नहीं थी, लिहाजा वह भी अपने काम पर लगा रहा। गुरु शिष्य फिर आगे बढ़े और दिन छिपे के समय वे एक सराय में पहुंच गए। दोनों ही बेहद थके हुए थे, वहां भी उन्हें तीन मुसाफिर मिले जो बहुंत थके हुए लग रहे थे। उन्हें देखकर प्रतीत हो रहा था कि तीनों ही अपने-अपने काम से लौटे हैं और काफी थकान में हैं। गुरु ने शिष्य से कहा, तुमने देखा, पाने के लिए कितना देना पड़ता है। किसान तन-मन लुटाता है, तब कहीं खेत फलता है और लोगों को खाने को मिलता है। लुहार शरीर सुखा देता है तब धातु सिद्ध होती है, यात्री अपने को थकाकर ही मंजिल पाता है। वे शिष्य से बोले कि तुमने ज्ञान के पोथे रट डाले, लेकिन सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाए, ज्ञान तो कमाई है। अपने को झोंककर उसे प्राप्त किया जाता है। महात्मा ने कि वत्स कर्मों से ज्ञान की क्यारियां सींचो, जीवन की आग में ज्ञान की धातु सिद्ध करो और मार्ग में अपने को झोंककर ज्ञान की मंजिल पाओ। ज्ञान किसी का सगा नहीं है। जो उसे कमाता है, वह उसी के पास जाता है।

१७७) अच्छे कर्म का साथ देने में ही भलाई होती है - एक बार देवर्षि नारद अपने शिष्य तुम्बुरु के साथ कहीं जा रहे थे। गर्मियों के दिन थे एक प्याऊ से उन्होंने पानी पिया और पीपल के पेड़ की छाया में बैठे ही थे अचानक एक कसाई वहां से २५-३० बकरों को लेकर गुजरा। उसमें से एक बकरा एक दुकान पर चढ़कर घास खाने के लिए दौड़ पड़ा। दुकान शहर के मशहूर सेठ शागाल्चंद की थी। दुकानदार का बकरे पर ध्यान जाते ही उसने बकरे के कान पकड़ कर मारा। बकरा चिल्लाने लगा। दुकानदार ने बकरे को पकड़ कर कसाई को सौंप दिया और कहा कि जब बकरे को तू हलाल करेगा, तो इसका सिर मुझे देना, क्योंकि यह मेरी घास खा गया है।

देवर्षि नारद ने जरा सा ध्यान लगाकर देखा और जोर से हंस पड़े। यह देख तुम्बुरु पूछने लगा- गुरुजी। आप क्यों हंसे? उस बकरे को जब मार पड़ रही थी, तो आप दुखी हो गए थे, किन्तु ध्यान करने के बाद आप हंस पड़े। इसका क्या रहस्य है?

नारदजी ने कहा- यह तो सब कर्मों का फल है। इस दुकान पर जो नाम लिखा है शागाल्चंद सेठ, वह शागाल्चंद सेठ स्वयं यह बकरा होकर आया है। यह दुकानदार शागाल्चंद सेठ का ही पुत्र है। सेठ मर कर बकरा हुआ है और इस दुकान से अपना पुराना संबंध समझ कर घास खाने गया। उसके बेटे ने ही उसको मारकर भगा दिया। मैंने देखा कि ३० बकरों में से कोई दुकान पर नहीं गया। इस बकरे का पुराना संबंध था, इसलिए यह गया। इसलिए ध्यान करके देखा, तो पता चला कि इसका पुराना संबंध था। जिस बेटे के लिए शागाल्चंद सेठ ने इतना कमाया था, वही बेटा घास तक खाने नहीं देता और गलती से खा लिए, तो सिर मांग रहा है। पिता की यह कर्म गति और मनुष्य के मोह पर मुझे हंसी आ रही है।

अपने अपने कर्मों का फल तो प्रत्येक प्राणी को भोगना ही पड़ता है और इस जन्म के रिश्ते-नाते मृत्यु के साथ ही मिट जाते हैं, कोई काम नहीं आता। इसलिए हमेशा अच्छे कर्म ही करने चाहिए और अच्छे कर्मों का ही साथ देना चाहिए।

१७८) कर्म और संकल्प से भाग्य बदल जाता है - हिमालय के पर्वतीय प्रदेश में एक राजा राज करता था। एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए गया। एक खरगोश झाड़ियों में से निकला। राजा ने उसका पीछा किया, किंतु अचानक वह खरगोश चीते में बदल गया और शीघ्र ही दृष्टि से ओझल हो गया। इस आश्चर्यजनक घटना से स्तंभित हुए राजा ने पंडितों की एक सभा बुलाई और उनसे इसका अर्थ पूछा। उन्होंने उत्तर दिया, इसका अर्थ यह है कि जिस स्थान पर चीता दृष्टि से ओझल हुआ था, वहां आपको एक नया शहर बसाना चाहिए। क्योंकि चीते केवल उसी स्थान से भाग जाते हैं, जहां मनुष्यों को एक बड़ी संख्या में बसना हो। राजा को सपने का शुभ फल जानकर बहुत खुशी हुई। नया शहर बसाने के लिए मजदूर काम पर लगा दिए गए। प्रजा भी सहयोग करने लगी। हंसी-खुशी काम शुरू हुआ। अंत में जमीन की कठोरता देखने के लिए एक स्थान पर उन्होंने लोहे की एक मोटी कील गाड़ी। उस समय अचानक पृथ्वी में एक हल्का-सा कंपन हो उठा। खुद को ज्ञानी कहनेवाले लोग चिल्ला पड़े। इसकी नोंक सर्पराज शेषनाग की देह में धंस गई है। अब यहां शहर नहीं बनाना चाहिए। यदि बनाया गया तो शहर पर कोई भारी विपत्ति आएगी और राजा का अपना वंश भी शीघ्र ही नष्ट हो जाएगा। राजा बोला, हम यहां शहर बनाने का निश्चय कर चुके हैं, इसलिए आप इसका कोई उपाय बताएं मैं सब करने को तैयार हूं। शहर तो बनेगा ही राजा के दृढ़ निश्चय से ज्ञानी पिघले और राजा से कुछ उपाय करवाए। जमीन वहां की उपजाऊ थी और पानी भी खूब था। कहते हैं, कई सौ साल से एक खूबसूरत शहर उस पहाड़ पर बसा हुआ है और उसके चारों ओर फैले खेत बढ़िया फसलें पैदा करते हैं। कर्म और संकल्प के आगे भाग्य को भी हार माननी होती है।

१७९) अनाड़ी शिकारी सबसे खतरनाक होता है - जब छोटे कौवे उड़ने लायक हो जाते हैं, तो बड़े कौवे यह जानने के लिए उनकी परीक्षा लेते हैं कि झुंड का हिस्सा बनने योग्य है या नहीं।

ऐसे ही तीन छोटे कौवों कि परीक्षा का दिन आ गया। झुंड के सरदार ने पहले छोटे कौवे से पूछा- मुझे बताओ, दुनिया में सबसे ज्यादा खतरनाक चीज क्या है? पहले छोटे कौवे ने तुरंत ही उत्तर दिया- तीर सबसे खतरनाक होता है। उत्तर सुनकर सभी कौवों ने उसके अनुमोदन में सर हिलाया।

सरदार फिर उड़ कर पेड़ की दूसरी शाखा तक गया, जहां दूसरा छोटा कौवा बैठा था। सरदार ने उससे भी वही प्रश्न किया। दूसरे छोटे कौवे ने एक पल को सोचा और फिर उत्तर दिया- बेजोड़ शिकारी सबसे खतरनाक होता है, क्योंकि तीर

तो शिकारी ही चलाते हैं। एक कुशल और बेजोड़ शिकारी के तीर से बचना नामुमकिन है।

सरदार ने इस उत्तर के लिए दूसरे छोटे कौवे की प्रशंसा की और बाकी कौवों ने भी उत्तर के समर्थन में हुंकारी भरी। अब सरदार तीसरे छोटे कौवे के पास गया, जो पेड़ की अन्य शाखा पर बैठा था। तीसरे छोटे कौवे ने गंभीरतापूर्वक प्रश्न का उत्तर सोचा, फिर उसने अपना उत्तर दिया- अनाड़ी शिकारी सबसे खतरनाक होता है।

सरदार और सभी कौवों को तीसरे छोटे कौवे का उत्तर बहुत अजीब लगा। सरदार ने तीसरे छोटे कौवे से पूछा- तुमने ऐसा उत्तर क्यों दिया?

तीसरे छोटे कौवे ने कहा- सभी तीर खतरनाक होते हैं और कुशल शिकारियों के तीर से बचना मुश्किल होता है, क्योंकि उनका निशाना सटीक होता है, लेकिन जरा सा दाएं या बाएं होकर उनके तीर से बचा जा सकता है। इसके विपरीत, अनाड़ी शिकारी के तीर का कुछ भरोसा नहीं होता कि वह कहां जाकर लगेगा।

तीसरे छोटे कौवे के उत्तर का स्पष्टीकरण सुनकर सभी बहुत खुश हुए और सबने कहा कि यही सर्वश्रेष्ठ उत्तर है। सरदार को यह अहसास हो गया कि वह लंबे समय तक अपनी गद्दी पर कायम नहीं रह पाएगा। झुंड ने तीसरे छोटे कौवे के गुणों को पहचान लिया था।

१८०) दान का महत्व - धनीराम नामक एक सेठ बेहद कंजूस था। वह भिखारी तक को कभी एक पैसा नहीं देता था। उसकी इस आदत के कारण लोग उसे नापसंद करते थे। सेठ जिससे भी बात करने की कोशिश करता, वही उससे दूर चला जाता। उसे लगता कि शायद लोग उसकी धन-दौलत से जलते हैं, इसलिए उससे बातें करना पसंद नहीं करते। एक दिन मंदिर के निर्माण कार्य के लिए सभी से चंदा वसूला जा रहा था। न जाने उस दिन धनीराम के मन में क्या आया कि उसने रुपयों से भरी थैली पुजारी को दे दी। यह देखकर वहां उपस्थित सभी लोग हैरान रह गए। उस दिन के बाद से धनीराम जहां भी निकलते, लोग उसका हालचाल पूछते और आदर देते। यह देखकर एक दिन सेठ फिर पुजारी के पास पहुंचा और बोला, पुजारी जी, देखा लोगों में धन का कितना मोह है। पहले वे मुझसे सीधे मुंह बात नहीं करते थे किंतु उस दिन मैंने रुपयों से भरी थैली क्या दी कि अब सब मुझसे बात करने को आतुर रहते हैं। दौलत देखते ही सब बदल गए। इस पर पुजारी ने मुस्कराते हुए कहा, सेठजी, आपका सोचना गलत है। लोग आपका धन देखकर नहीं बदल गए हैं। उन्हें यह लगने लगा है कि आप बदल गए हैं। आपके भीतर दान की भावना आ गई है। धन तो आपके पास पहले भी इतना ही था किंतु आपके अंदर दान करने की भावना नहीं थी। वास्तव में यह महत्व दान का है। यह सुनकर धनीराम दंग रह गया। उसने संकल्प किया कि अब वह जरूरतमंद की मदद करेगा।

१८१) सच्ची आध्यात्मिकता - एक व्यक्ति किसी फकीर के पास साधना सीखने गया। फकीर की चारों ओर बहुत ख्याति थी। उनके आशीर्वाद से बीमार स्वस्थ हो जाते थे और लोगों की परेशानियां दूर हो जाती थीं। दूर दूर से पीड़ित लोग उनके यहां आते, दुआएं मांगते और प्रसन्न होकर जाते। जब वह आदमी संत के पास पहुंचा तो देखा कि फकीर एक ठोकरी में से दाना निकालकर पक्षियों को चुगा रहे थे। उन्हें चुगते देख कर वे बच्चों की तरह खुश हो उठते थे। इस तरह लंबा समय बीत गया। न फकीर ने उस व्यक्ति की ओर देखा और न दाना चुगाना ही बंद किया। आनेवाला परेशान हो

गया। वह फकीर की ओर बढ़ा। उसे सामने देखते ही फकीर ने ठोकरी उसके हाथों में थमा दी और कहा, अब तुम पक्षियों के साथ आनंद का अनुभव करो। वह व्यक्ति सोचने लगा, कहां तो मैं इनसे आध्यात्मिक साधना का रहस्य जानने आया हूं और ये हैं कि मुझे पक्षियों को दाना चुगाने को कह रहे हैं। फकीर ने उसके मन की बात पढ़ ली। वह बोले, स्वयं की परेशानियों को भूल कर दूसरों को आनंद पहुंचाने का प्रयत्न ही जीवन की हर सिद्धि और आनंद का राज है। यदि तुम स्वयं सुख और आनंद पाना चाहते हो, तो वही दूसरे को भी देना सीखो। तुम यदि यह साध सकोगे तो तुम्हारी सारी साधना हो जाएगी। जो लोग आध्यात्मिकता को किसी खास नियम और जीवनशैली में देखते हैं, वे उसके नैसर्गिक पक्ष से वंचित रह जाते हैं। खरा आध्यात्मिक जीवन दूसरों को सुख बांटने में होता है। उसमें आनंद और खुलेपन का अनुभव होता है। एक छोटे से उदाहरण से वह व्यक्ति आध्यात्मिकता के रहस्य को समझ गया।

१८२) सबसे बड़ी साधना - नगर सेठ का पुत्र था मेघ। बुद्ध के प्रवचनों से प्रभावित होकर उसने भी प्रवज्या ग्रहण करने का फैसला किया। बुद्ध ने उसे अपने निर्णय पर ठीक से सोच लेने को कहा, लेकिन वह अपने फैसले पर दृढ़ रहा। वह बौद्ध विहार में रहने लगा। वह अपने साथ सुख-सुविधाओं की चीजें लेता आया था। बुद्ध ने एक दिन विहार के वरिष्ठ भिक्षु को मेघ की सुख-सुविधाएं कम करने को कहा। मेघ को अब मोटा भोजन और मोटा बिस्तर दिया जाने लगा। उसे सेवा के कड़े काम भी दिए गए। धीरे-धीरे मेघ की प्रसन्नता को ग्रहण लगने लगा। वह खिन्न सा रहने लगा। उसने इससे पहले कभी रूखा-सुखा अन्न नहीं खाया था। वह हमेशा आरामदेह बिस्तर पर सोता था। जब से वह इन सुविधाओं से वंचित हुआ, उसका उत्साह कम होने लगा। उसे लगा कि उसकी शांति छिन गई है। उसके मन में विचार उठने लगा कि कहीं मैंने गलत मार्ग का चुनाव तो नहीं कर लिया। ऐसा तो नहीं कि बाद में मुझे पछताना पड़ेगा। उसने बुद्ध के पास जाकर कहा, भगवन्, मेरे मन में भौतिक इच्छाएं फिर से पैदा हो रही हैं, आप मुझे विशेष साधना बताएं। इस पर बुद्ध ने कहा, मन को स्थिर रखना ही सबसे बड़ी साधना है। बेहतर यही है कि तुम अपने चित्त को वश में करने का प्रयत्न करो। यह स्थिरता आराम की स्थिति में उपलब्ध होनेवाली जड़ता नहीं है। इसमें जीवन का प्रवाह है। हर परिस्थिति के साथ सामंजस्य बनाने की क्षमता है। बुद्ध की बात सुनकर मेघ उनके समक्ष नतमस्तक हो गया।

१८३) कर्त्तव्य की रक्षा - बात सोलहवीं सदी की है। फ्रांसीसी शहर तूलोन के पास एक टापू के प्रकाश गृह (लाइट हाउस) में काम करनेवाला व्यक्ति अचानक बीमार हो गया। सवाल उठा कि अब जहाजों को रोशनी दिखने का काम कौन करे। रात के केवल नौ ही बजे थे। रोशनी दिखानेवाले की पत्नी ने अपने कर्त्तव्य का महत्व समझ खुद ही लैम्प जला दिया। लैम्प जलाकर वह लौटी ही थी कि उसने पाया उसका पति मरणासन्न है। वह चिंतित हो गई। इतने में उसके सात साल के बेटे और नौ साल की बेटी ने आकर बताया कि लैम्प घूम नहीं रहा है। दरअसल प्रकाशगृह का लैम्प चारों ओर घूमकर अपना प्रकाश फैलाता था। यदि वह एक ही दिशा को प्रकाशित करता तो जहाजों के टकराने और डूबने की आशंका थी। पत्नी पति को मृत्यु शय्या पर छोड़ बच्चों के साथ लैम्प ठीक करने चली गई, पर वह ठीक नहीं हुआ। उसने अपने बच्चों को वहीं बैठाते हुए कहा, तुम लोग रातभर लैम्प को चारों ओर घुमाते रहना। आज बादलों के कारण चांद की रोशनी भी नहीं है। यह कहकर वह अपने पति के पास चली गई। दोनों बच्चे सुबह के छह बजे तक लैम्प घुमाते रहे। इस

तरह उन्होंने कई जहाजों को रोशनी दिखाई और उन्हें दुर्घटना से बचाया। सुबह तक उन बच्चों के पिता का निधन हो चुका था। उनकी मां रो रही थी लेकिन उसके चेहरे पर कर्त्तव्य निभाने का संतोष झलक रहा था। वह जानती थी कि उसने और दोनों बच्चों ने एक महान काम को अंजाम दिया है और यही उसके पति के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

१८४) बड़ा कौन - एक बार सम्राट अशोक अपने विश्वस्त मंत्री भ्रामात्य के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक संत को आते देख वह घोड़े से नीचे उतरे और उन्होंने संत को दंडवत प्रणाम किया। यह बात भ्रामात्य को अच्छी नहीं लगी। संत के जाने के बाद भ्रामात्य ने अशोक से पूछा, राजन्, मेरी समझ में नहीं आया कि इतने बड़े सम्राट होकर आपने एक साधारण साधु को दंडवत प्रणाम क्यों किया। उस समय अशोक ने कोई उत्तर नहीं दिया। दो दिनों के बाद उसने कई जानवरों के मुखौटों के साथ एक साधु और एक राजा का सुंदर मुखौटा भ्रामात्य को देते हुए कहा, गांव में जाकर इन मुखौटों को बेच दीजिए। मैं जानना चाहता हूं कि प्रजा किसे ज्यादा पसंद करती है। भ्रामात्य उन मुखौटों को बेचने के लिए गांव में गया। साधु का मुखौटा सबसे पहले बिक गया। उसके बाद सभी जानवरों के मुखौटे भी बिक गए। मगर राजा का मुखौटा किसी ने नहीं खरीदा। भ्रामात्य उसे लेकर लौट आया। अशोक ने उसे फिर से जाने को कहा और यह भी निर्देश दिया कि यह मुखौटा किसी को मुफ्त दे दे। भ्रामात्य दोबारा गया मगर गांव वालों ने मुखौटा लेने से इनकार कर दिया। बोले, इस कचरे को लेकर हम क्या करेंगे। भ्रामात्य फिर लौट आया और सम्राट को गांव वालों की बात बताई। अशोक ने कहा, अब तो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा। संत हमेशा पूजनीय होते हैं क्योंकि वे मोह माया से दूर रहकर पूरे समाज के हित की बात सोचते हैं। राजा का महत्व तात्कालिक होता है। पर संत की कीर्ति हमेशा बनी रहती है।

१८५) विश्वास की रक्षा - बात तब की है जब अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल पकड़ लिए गए। उन्हें कोतवाली लाया गया। कोतवाली में निगरानी रखनेवाला सिपाही सो रहा था। बिस्मिल के पास भागने का पूरा मौका था। उन्होंने देखा कि वहां केवल बुजुर्ग मुंशीजी जागे हुए हैं। बूढ़े मुंशी ने भांप लिया कि बिस्मिल भागने की सोच रहे हैं। वह तुरंत बिस्मिल के पैरों पर गिर गए और बोले, ऐसा न करना। नहीं तो मैं बंदी बना लिया जाऊंगा और मेरे बच्चे भूखों मर जाएंगे। बिस्मिल को उन पर दया आ गई और उन्होंने भागने का विचार तत्काल त्याग दिया। संयोगवश दो दिनों के बाद ही ऐसा मौका उन्हें फिर मिला। उन्हें जब शौचालय ले जाया गया तो उनके साथ दो सिपाही थे। एक ने दूसरे से कहा कि इनके हाथों में बंधी रस्सियां हटा दो। मुझे विश्वास है कि ये भागेंगे नहीं। इसके बाद जब बिस्मिल शौचालय गए तो पाया कि शौचालय की दीवार ज्यादा ऊंची नहीं है। बस हाथ बढ़ाते ही वह दीवार के ऊपर हो जाते और क्षण भर में बाहर निकल जाते। उन्होंने देखा कि बाहर सिपाही कुश्ती देखने में मगन हैं। वह भागने ही वाले थे कि उन्हें विचार आया कि जिस सिपाही ने विश्वास कर इतनी स्वतंत्रता दी उससे विश्वासघात कैसे करूं। उन्होंने भागने का विचार तुरंत त्याग दिया। उन्होंने अपनी आत्मकथा में जेलर पंडित चंपालाल की भी काफी बड़ाई की है। उन्हें भागने में कई मौके हासिल हुए लेकिन उन्होंने सोचा कि इससे पंडित चंपालाल के ऊपर आफत आ जाएगी। बिस्मिल के लिए विश्वास की रक्षा सबसे बड़ी चीज थी।

१८६) सच्चा सहयोगी - किसी राजा को अपने मंत्रियों में से एक बहुत प्रिय था। वह राजा का विश्वासपात्र था। कुछ ईर्ष्यालु स्वभाव वाले मंत्रियों दरबारियों को यह सहन नहीं होता था। उनमें से कुछ ने एक दिन राजा से शिकायत की। वे बोले, अपराध क्षमा हो, राजन। जिस मंत्री को आप अपना प्रिय व विश्वासपात्र समझते हैं वास्तव में वह भ्रष्टाचारी है। राज्य में जो भ्रष्टाचार फैला हुआ है, इसका मुख्य कारण यह मंत्री ही है। यह सुनकर राजा ने अपने उस प्रिय मंत्री को उन मंत्रियों के सामने बुलाया और कहा, ये लोग तुम्हारे ऊपर जो आक्षेप लगा रहे हैं उसके निराकरण के लिए तुम्हें एक सप्ताह का समय दिया जाता है। तुम्हें खुद को निर्दोष सिद्ध करना पड़ेगा नहीं तो दंड भुगतना पड़ेगा। उस मंत्री ने अपने घर आकर राजा को एक पत्र लिखा, राजन। अपमानित होने से मरना अच्छा है, इसलिए मैं मरने जा रहा हूं, अलविदा। औरा मंत्री पत्र लिखकर अज्ञात स्थान पर चला गया। राजा ने पत्र पढ़ा और उसकी छानबीन की। मंत्री के न मिलने से राजा ने उसे मृत समझकर शोकसभा आयोजित की। वह मंत्री भी वेश बदलकर अपनी शोकसभा में पहुंचा। वहां उपस्थित जन समूह उसको श्रद्धांजलि दे रहा था। शिकायत करनेवाले भी कह रहे थे, मंत्री जी बहुत ईमानदार, विश्वासपात्र व उच्च विचारों वाले व्यक्ति थे। उनकी असामयिक मृत्यु से हम सब दुखी हैं। यह सुनते ही वह मंत्री अपने असली रूप में आ गया। उसे देख उसके विरोधियों के होश उड़ गए। मंत्री ने राजा से कहा, देखा महाराज। इन लोगों की राय कैसे बदल गई। अगर मैं बुरा था तो आज ये मेरी प्रशंसा क्यों कर रहे हैं। क्या आप ऐसे लोगों पर विश्वास करेंगे जिनके विचार हमेशा बदलते रहते हैं। राजा को अपनी भूल का अहसास हो गया। उसने उस मंत्री को गले से लगाया और उन लोगों को राजसेवा से निकाल बाहर किया जिन्होंने मंत्री की शिकायत की थी।

१८७) सच्ची पूजा - एक बार संत राबिया बेतहाशा सड़क पर भागी जा रही थीं। उनके एक हाथ में पानी से भरा प्याला था और दूसरे में जलती मशाल। लोगों ने उन्हें इस तरह देखा तो हैरत में पड़ गए। आमतौर पर राबिया अध्यात्म का कोई गूढ़ तथ्य समझाने के लिए विचित्र कहानियों और रूपकों का प्रयोग करती थीं, लेकिन यह आचरण उन सबसे अलग था। लोग कुछ पूछें इसकी गुंजाइश भी नहीं थी क्योंकि वह तेजी से दौड़ती जा रही थीं और साथ में कुछ कहती भी जा रही थीं। हालांकि जिस किसी ने ध्यान दिया उसने राबिया के वचनों को सुना। वह कह रही थीं कि मैं स्वर्ग को जला देना और नरक को पानी में डुबो देना चाहती हूं। सुनने वालों को समझ में नहीं आया कि ऐसा कहने के पीछे आशय क्या है। राबिया की बात का मर्म जानने की उत्सुकता हर किसी में थी। लोग उनका सम्मान करते थे और उनकी बातें बड़ी गंभीरता से सुनते थे। इसलिए कई और लोग उनके पीछे पीछे दौड़ने लगे। एक जगह एक बुजुर्ग फकीर ने राबिया को रोका और पूछा कि वह ऐसा क्यों करना चाहती हैं। राबिया ने कहा, मैं स्वर्ग को जलाना और नरक को डुबाना इसलिए चाहती हूं कि लोग सही मायने में धार्मिक हो सकें। लोग जन्नत के लालच में नेक काम करते हैं या दोजख से डरकर बुरे कामों से बचते हैं। लालच और डर जहां हों वहां ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम नहीं हो सकता। स्वर्ग और नरक नहीं होंगे तो लालच और डर मिट जाएगा और हम ऊपरवाले की बंदगी ज्यादा अच्छी तरह कर सकेंगे।

१८८) सफलता का रास्ता - एक बार प्रसिद्ध विचारक स्वेट मार्डेन के पास एक व्यक्ति आया और बोला, सर, मैं काम करने की इच्छा रखता हूं, लक्ष्य भी मैंने निर्धारित कर लिया है और उसके लिए आवश्यक साधन भी मेरे पास

उपलब्ध हैं, फिर भी न जाने क्यों मुझे मेरे कार्य में शत-प्रतिशत सफलता नहीं मिलती। यदि मैं काम न करूं तो असफल होने की बात मेरी समझ में आती है, मगर काम करते रहने पर भी नाकामयाब होते रहने की बात मेरी समझ से परे है। उस व्यक्ति की बात सुनकर स्वेट मार्डेन बोले, तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर बेहद सरल है। फिर भी मैं तुम्हें इसका जवाब एक उदाहरण देकर समझाता हूं। उदाहरण से तुम भलीभांति समझ जाओगे कि तुम्हारे काम में क्या कमी रह जाती है। व्यक्ति बोला, हां, आप मुझे अवश्य बताएं ताकि मैं अपने में सुधार कर सकूं। स्वेट मार्डेन बोले, बहुत से लोग अपने जीवन की गाड़ी को गुनगुने पानी में चलाने की कोशिश करते हैं, लेकिन वे यह नहीं जानते कि पानी को जब तक २१२ फारेनहाइट तक गर्म न किया जाए उसमें भाप नहीं बनती है और जब तक पानी में भाप न बने तब तक इंजन गाड़ी को नहीं खींच सकता। उदाहरण सुनकर वह व्यक्ति आश्चर्य से बोला, इंजन का मेरे काम से क्या संबंध है? स्वेट मार्डेन बोले, भाई, बहुत ही गहरा संबंध है। तुम्हारे काम में उत्साह की कमी ठीक उसी तरही असर करती है, जिस तरह गुनगुना पानी इंजन के बायलर पर। जब तक पानी २१२ फारेनहाइट तक गर्म नहीं हो जाता, तब तक वह इंजन को नहीं खींच सकता। उसी तरह जब तक तुम अपने काम में संपूर्ण आत्मशक्ति और एकाग्रता नहीं झोंक देते तब तक सफलता तुमसे दूर रहेगी। सारे साधन उपलब्ध होने पर भी मंद गति से काम करने पर मंजिल तक पहुंचना कठिन है। युवक ने उसी क्षण निश्चय किया कि अब वह अपने उत्साह को गुनगुने पानी की तरह मंद नहीं पड़ने देगा और सफलता पाकर रहेगा।

१८९) सेवा का संदेश - यह घटना उस समय की है जब स्वामी शिवानंद सरस्वती जी महाराज मलाया में रहकर चिकित्सा कार्य करते थे। उन दिनों अंग्रेजों के रबर के बगीचों में अनेक भारतीय भी काम करते थे। अधिकतर भारतीय निर्धन थे। स्वामी जी एक बगीचे के पास स्थित अपने क्लीनिक में रोगियों की चिकित्सा करते थे। एक दिन एक बहुत ही गरीब श्रमिक अपनी पत्नी को साथ लेकर उनके पास पहुंचा। उसकी पत्नी गंभीर रूप से बीमार थी और बुरी तरह कराह रही थी। यह देखकर स्वामी जी द्रवित हो उठे और तुरंत उसके इलाज में लग गए। जब श्रमिक ने देखा कि स्वामी जी बिना कुछ कहे उसकी पत्नी का इलाज कर रहे हैं तो वह रोता हुआ बोला, स्वामी जी, मेरे पास इस समय आपको देने के लिए एक रुपया तक नहीं है। मैंने तो यह भी नहीं पूछा कि आप मेरी पत्नी के इलाज की कितनी फीस लेंगे। इलाज करने के बाद यदि मैं आपकी फीस न चुका पाया तो क्या होगा? कृपया आप मुझे अपनी फीस बताइए ताकि मैं उसका इंतजाम कर सकूं। श्रमिक की बात सुनकर स्वामी जी बोले, परेशान होने की जरूरत नहीं है। पहले मुझे इसकी जांच तो कर लेने दो। वह ठीक हो जाए फिर फीस भी आ जाएगी। स्वामी जी ने श्रमिक की पत्नी की बीमारी का पता लगाकर उसके लिए जड़ी-बूटियां बनाईं और उसे पिलाईं। कुछ देर बाद वह श्रमिक को अनेक दवाइयां और उसके साथ ही कुछ रुपये देते हुए बोले, इस समय तुम्हारी पत्नी को इन दवाइयों के साथ ही पौष्टिक भोजन व फल की भी सख्त जरूरत है। तुम इन दवाइयों के साथ इसे फल, दूध व अन्य पौष्टिक आहार देते रहना। कुछ ही दिनों में यह स्वस्थ हो जाएगी। जब कभी तुम्हारे पास रुपये आ जाएं तो किसी रोगी व जरूरतमंद की मदद कर देना। समझ लेना मुझे मेरी फीस मिल गई। यह सुनकर श्रमिक स्वामी जी के प्रति नतमस्तक हो गया।

१९०) कवि का संघर्ष - अंग्रेजी के महान कवि ओलिवर गोल्डस्मिथ को लेखन के शुरुआती दिनों में काफी संघर्ष झेलना पड़ा था। कई बार उनके पास खाने तक के लिए पैसे नहीं होते थे। वे अक्सर ही मकान मालकिन को किराया नहीं

दे पाते थे। वैसे तो मकान मालकिन सहृदय महिला थी, इसलिए ज्यादा कुछ नहीं बोलती थी। लेकिन उसे भी तो अपनी रोजी-रोटी चलानी थी। एक बार जब गोल्डस्मिथ मकान मालकिन के बार बार कहने पर भी किराया नहीं दे पाए तो उसने गुस्से में गोल्डस्मिथ की एक पांडुलिपि उठा ली और बोली, यह पांडुलिपि मैं तुम्हें तभी दूंगी जब तुम मेरा किराया चुका दोगे और यदि तुम किराया नहीं चुका पाए तो यह पांडुलिपि आग की भेंट चढ़ जाएगी। इसके बाद उसने पांडुलिपि को उठाकर अपनी अलमारी में बंद कर दिया। यह देखकर गोल्डस्मिथ बेहद घबरा गए। उन्होंने तुरंत अपने मित्र डॉ. जानसन को बुलवाया। जॉनसन भागे हुए आए। उन्होंने गोल्डस्मिथ को परेशान देखा तो सारा किस्सा समझ गए। जॉनसन ने मकान-मालकिन से क्षमा मांगी और किराया चुकाकर गोल्डस्मिथ की पांडुलिपि वापिस ली। गोल्डस्मिथ पांडुलिपि को देखकर खिल उठे और जॉनसन के गले लग गए। इसके बाद जॉनसन अनेक प्रकाशकों के पास घूमे और उस पांडुलिपि को प्रकाशित करने का अनुरोध किया। आखिरकार एक प्रकाशक ने उस पांडुलिपि को साठ पौंड में खरीद लिया। जब वह पांडुलिपि पुस्तक के रूप में प्रकाशित होकर आई तो शीघ्र ही बाजार में छा गई और अत्यंत लोकप्रिय हो गई। वह पुस्तक थी दि विकर ऑफ वेकफील्ड। आज यह विश्व की महान पुस्तकों में गिनी जाती है।

१९१) पुजारी की सीख - कांगड़ा जनपद के भगवती मंदिर के पुजारी रुद्रप्रताप समाज सुधारक, वैद्य और अध्यापक थे। साधारण लोगों के साथ-साथ वहां के राजा सूर्यभानु भी उनका बहुत सम्मान करते थे। सूर्यभानु का पुत्र उदयभानु बेहद उद्दंड था। वह न केवल अपनी प्रजा पर अत्याचार करता था। बल्कि राज्य के कर्मचारियों को भी तरह-तरह से सताया करता था। राजा सूर्यभानु इससे बेहद दुखी रहते थे। उन्होंने उदयभानु को समझाने के अनेक प्रयत्न किए, पर कोई नतीजा नहीं निकला। हारकर सूर्यभानु ने अपने पुत्र के व्यवहार के बारे में पुजारी रुद्रप्रताप को बताया और उन्हें उसे सुधारने के लिए कहा। सारी बात जानकर रुद्रप्रताप ने सूर्यभानु से कहा, महाराज, आप चिंता न करें। उसे कल सवेरे भगवती के दर्शन करने मंदिर में भेज दीजिएगा। राजा सूर्यभानु उन्हें प्रणाम करके लौट आए। अगले दिन सुबह उदयभानु पुजारी रुद्रप्रताप के पास पहुंच गया। रुद्रप्रताप ने बड़े प्रेम से उदयभानु का स्वागत किया, फिर उसके हाथों भगवती को प्रसाद चढ़वाया, फिर उसे अपने साथ विश्राम कक्ष में लेकर आ गए। उदयभानु ने चलने की आज्ञा मांगी। इस पर पुजारी रुद्रप्रताप बोले, बेटा, मैंने तुम्हारे भोजन की व्यवस्था भी करवाई है। आओ, भोजन तैयार होने तक हम शतरंज की एक-एक बाजी खेलते हैं। उदयभानु को शतरंज का बेहद शौक था। वह शतरंज खेलने बैठ गया। खेलते-खेलते रुद्रप्रताप ने चाल चली, लेकिन फिर अपना मोहरा हटा लिया और बोले, क्षमा करना, भूल हो गई। ऐसा रुद्रप्रताप ने दो-तीन बार किया। चौथी बार भी जब वह चाल चलकर अपना मोहरा हटाने लगे तो उदयभानु बोला, पंडित जी, एक दो बार की गलती तो क्षमा हो सकती है लेकिन बार बार की गलती क्षमा नहीं होगी। आप कई बार ऐसा कर चुके हैं। इस पर रुद्रप्रताप ने मुस्कुराकर कहा, बेटा, अगर आप खेल में भी मेरी गलतियां क्षमा नहीं कर सकते तो जो गलतियां आप जीवन में कर रहे हैं, उन्हें कोई कैसे क्षमा करेगा? उदयभानु उनका इशारा समझ गया। उसी दिन से उसमें सुधार आने लगा।

१९२) हनुमान के व्यक्तित्व में है एक सरल और सच्चे भक्त की गरिमा - रावण पर विजय पाने के बाद अयोध्या लौटकर श्रीराम का दरबार लगा। भक्तों को मनचाही वस्तु, ढेर सारा स्वर्ण आदि भेंट किया जा रहा था। हनुमान का नंबर

आया तो प्रभु और भक्त आमने-सामने थे। श्रीराम ने कहा- मांगो, आज मैं बहुत प्रसन्न हूं। तुम्हें क्या दिया जाए? हनुमान जी ने कहा- प्रभु बिना मांगे ही आपने सब कुछ दिया है, फिर भी आप देना चाहते हैं तो अपनी भक्ति और प्रेम मुझे दीजिए और कुछ नहीं चाहिए। फिर भी मां सीता नहीं मानीं और मोतियों की एक माला हनुमान जी को भेंट में दे दी।

हनुमान ने मोती की माला के मनके एक-एक कर तोड़े और देखकर हैरान हो गए। राज दरबारी व अन्य भी सोचने लगे कि इतनी सुंदर माला को कैसे नष्ट कर रहे हैं। किसी ने तो यहां तक कह दिया- वानर हैं न। मोती की माला रास कैसे आ सकती है? पूछा गया- हनुमान, यह माला क्यों तोड़ रहे हो? हनुमान ने उत्तर दिया- जिसमें मेरे प्रभु का वास नहीं है, वह चीज मेरे किस काम की? किसी ने ताना मारा कि क्या तुम्हारे शरीर में भगवान श्रीराम का वास है? इस शरीर को भी नष्ट कर दो। यह सुनते ही हनुमान ने अपना सीना चीरकर दिखा दिया श्री राम को।

हनुमान जी बहुत कुछ मांग सकते थे। अयोध्या का आधा राज्य भी मांगते तो श्रीराम दे देते। वानर की आकृति को बदलकर सुंदर रूप मांग सकते थे। मुक्ति मांग सकते थे, लेकिन नहीं। सिर्फ एक चीज मांगी-भक्ति। और कुछ नहीं।

क्यों भक्ति ही मांगी? क्योंकि भक्ति में ही सब कुछ है। भक्ति में मुक्ति है, आनंद है और प्रभु के दर्शनों का सान्निध्य है। श्रीचरणों में आश्रय है, प्रेम है। हर समय ईश्वर को ही चिंता रहती है अपने भक्त की, हर आवश्यकता पूरी करने की। इसलिए भक्ति में ही सब कुछ है। हमें भी यही सीखना है कि हम भी भक्ति का वरदान मांगें और कुछ नहीं।

आजकल भक्त भगवान से क्या-क्या नहीं मांगते। बेटा मांगते हैं, धन-मकान मांगते हैं, अच्छी पत्नी मांगते हैं, अच्छी नौकरी चाहते हैं। हमारे पास एक लंबी सूची है भगवान से मांगने के लिए जो कभी पूरी ही नहीं होनेवाली। अच्छा होगा, हम विचार करें हनुमान जी की बात पर। और ईश्वर से सिर्फ उसकी भक्ति ही मांगें।

१९३) गलत काम से बचना ही नहीं, उसे रोकना भी हमारा दायित्व है - एक सरकारी स्कूल की एक कक्षा में दो-दो छात्रों के लिए बैठनेवाले डेस्कों पर तीन-तीन, चार-चार विद्यार्थी बैठे थे। कमरे छोटे, डेस्क कम और बच्चे ज्यादा। ये छात्र डेस्क तोड़ते भी कुछ ज्यादा थे, इसलिए कितने भी डेस्क मंगवा लो हमेशा कम ही पड़ जाते हैं।

एक छात्र ने टीचर से कहा- मैम बैठने में बड़ी दिक्कत हो रही है। टीचर ने कहा- डेस्क तोड़ोगे तो यही हाल होगा। रोज-रोज नए डेस्क नहीं खरीदे जा सकते। हम मिलनेवाली सुविधाओं या चीजों को नष्ट करते रहेंगे तो उसका खमियाजा भी किसी न किसी रूप में हमें ही भुगतना पड़ेगा। हम जैसे बीज बोते हैं, वैसा ही फसल काटते हैं। यदि डेस्क तोड़ेंगे तो बैठने में दिक्कत होगी ही। जमीन पर भी बैठना पड़ सकता है। बिजली खराब करेंगे या बल्ब व ट्यूब तोड़ेंगे तो पढ़ाई के लिए रोशनी नहीं मिल सकेगी। कुछ लोग सार्वजनिक संपत्ति का न केवल दुरुपयोग करते हैं अपितु उसे नष्ट करने या चुराने से भी बाज नहीं आते। ऐसे में व्यवस्था पर दोषारोपण करना बेमानी है। हमें सार्वजनिक संपत्ति की देखभाल अपनी निजी संपत्ति की तरह करनी चाहिए। तभी हम उससे लाभ ले सकेंगे।

तभी एक दूसरा विद्यार्थी खड़ा हो गया और बोला- मैम मैं कभी डेस्क, बल्ब या ट्यूब नहीं तोड़ता और न ही कभी सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाता हूं। फिर भी मुझे और मेरे जैसे दूसरे छात्रों को क्यों इन सबका नुकसान भुगतना पड़ रहा है। टीचर ने बताया- मनुष्य कर्मशील प्राणी है। वह जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। जब हम

गलत काम करते हैं तो उसका गलत नतीजा भी हमें अवश्य ही भुगतना पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि अच्छे काम करो। उनका परिणाम सुखद होगा। लेकिन कुछ लोग काम करते ही नहीं। माना कि वे गलत काम नहीं करते, इसलिए गलत परिणामों से बच तो जाते हैं, लेकिन अच्छे काम न करने के कारण अच्छाई या सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं।

१९४) खुद को सिर्फ पैसा कमाने में लगा देना सही नहीं है -एक बढ़ई रोज कुछ बनाता और बेचकर खुश रहता था। वह संतुष्ट था और काम के समय खुशी से गुनगुनाता रहता था। एक दिन एक अमीर पड़ोसी उसके ठोकने-पीटने की आवाज से परेशान हो उठा। वह शोर बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। पड़ोसी ने बढ़ई को शांत करने की एक योजना बनाई। उसने कई सौ रुपये निकाले और उन्हें एक लिफाफे में डालकर बढ़ई की दुकान में रख दिया। उसने सोचा कि अब बढ़ई को काम नहीं करना पड़ेगा।

बढ़ई दुकान में आया तो उसे वहां लिफाफा पड़ा मिला। उसने सोचा- इन पैसों से कुछ लेकर मैं नए औजार खरीदूंगा ताकि और बेहतर फर्नीचर बना सकूं और ज्यादा पैसा कमा सकूं। पैसों ने बढ़ई की धन कमाने की इच्छा को भड़का दिया। उसने और मेहनत शुरू कर दी ताकि वह हाल में मिले कई सौ रुपयों को हजारों में बदल सके। उसने खूब पैसे कमाने शुरू कर दिए, लेकिन वह वहीं संतुष्ट नहीं हुआ। उसने सोचा कि वह हजारों को दस हजारों में बदल डाले। बढ़ई शांत होने के बजाय और शोर करने लगा था। अब वह और अधिक काम करता था।

बढ़ई ने दस हजार कमा लिए तो अब वह लाख कमाना चाहता था। वह दिन-रात काम करने लगा। जल्द ही उसने गुनगुनाना छोड़ दिया। उसे अब अपने काम में आनंद नहीं आता था। रात में कई बार वह इतने तनाव में होता कि सो भी नहीं पाता था। उसका आंतरिक संतोष और शांति धन कमाने के चक्कर में गायब हो चुकी थी।

अब हम खुद पर नजर डालें। क्या हम ज्यादा कमाने के लिए देर तक काम करते हैं? क्या अधिक लाभ के लिए अवकाश में भी काम करते रहते हैं? क्या हम अपने काम-काज से एक दिन या कुछ घंटे का भी अवकाश, बिना अपने काम-काज के बारे में सोचे हुए नहीं ले पाते? अगर ऐसा है तो क्या हम बढ़ई जैसे ही नहीं बन रहे।

१९५) प्रयोग और प्रशिक्षण से मनचाही मंजिलें हासिल की जा सकती हैं - एक खरगोश पत्थर के पास गया और बोला- महाशय। आप सुंदर-सुंदर दांत बनाते हैं, ऐसा मैंने सुना है। आप मेरे मुंह में भी दो दांत लगा दें तो आपको बड़ी कृपा होगी। मेरी समस्या यह है कि जब भी मेरे सामने लोमड़ी आती है, मैं डर जाता हूं। मुकाबला करना तो दूर की बात है, कभी-कभी तो प्राण भी संकट में फंस जाते हैं। आप तो दो दांत लगा देंगे तो मेरे अंदर शक्ति आ जाएगी। फिर मैं डटकर लोमड़ी का मुकाबला कर लूंगा। इतना कहकर खरगोश पत्थर की शिला के सामने मुंह खोलकर लेट गया। पत्थर ने उसके मुंह में दो दांत लगा दिए। खरगोश प्रसन्न होकर सीना ताने जंगल में निकला। उसने फैसला कर लिया था कि आज लोमड़ी से दो-दो हाथ करने ही हैं।

खरगोश जा रहा था। सामने से लोमड़ी आती दिखाई दी। खरगोश हिम्मत जुटाकर कुछ दूर तो चला, पर जब लोमड़ी काफी पास आ गई तो खरगोश के हाथ-पांव ढीले पड़ गए। कंठ सूख गया, उसका दिमाग चकराने लगा और प्राण अधर में लटक गए। वह दबे पांव वहां से भागा। शिला के पास आकर ही उसने राहत की सांस ली। कुछ देर तक अपनी

उखड़ती सांसों को नियंत्रित करने में लगा रहा, फिर पत्थर से बोला- महाशय। आपने मेरे मुंह में दो दांत लगाए, उसके लिए आपका धन्यवाद। लेकिन मुझे इन दो से पूरा संतोष नहीं है। आप थोड़ी-सी कृपा और करें, दो तीखे दांत और लगा दें। फिर मैं लोमड़ी के दांत खट्टे करने में समर्थ हो जाऊंगा।

पत्थर बोला- दो अतिरिक्त दांत लगा देने के बाद भी तुम जिंदादिल और शेरदिल नहीं बन सकते। वीरता और ताकत सिर्फ नाखून, दांत और अस्त्र-शस्त्र में नहीं बसती। यह उधार नहीं मिलती। वीर बनने के लिए साहस, शक्ति और प्रयोग करने की हिम्मत चाहिए।

१९६) नसीहत - अफ्रीका के एक राष्ट्रीय उद्यान में जॉर्ज नाम का एक छोटा-सा जिराफ अपने माता-पिता के साथ रहता था। एक दिन जॉर्ज दोपहर में अपनी माँ के साथ पेड़ की हरी-हरी पत्तियां चर रहा था। तभी उद्यान से लगी सड़क पर से एक जीप गुजरी। जीप में एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता बैठे थे। जैसे ही उनकी दृष्टि जॉर्ज और उसकी माँ पर गई, उन्होंने जीप रुकवा दी और उसकी छत पर चढ़कर उस सुंदर दृश्य का फोटो उतारने लगे। अचानक हवा का एक तेज झोंका आया और निर्माता की टोपी उड़कर ठीक उसी पेड़ पर जा अटकी, जिसकी डाल से जॉर्ज और उसकी माँ पत्तियाँ चर रहे थे। वाह। मैं इसे भी खाऊँगा। जॉर्ज ने कहा और अपनी गर्दन उस तरफ बढ़ाई। माँ उसकी इस बात पर हँसी, यह कतई स्वादिष्ट नहीं होती, जॉर्ज। इसे उन सज्जन को लौटा दो। जॉर्ज को माँ की बात माननी पड़ी। उसने सावधानी से गर्दन उचकाकर टोपी डाल पर से उतारी और उद्यान की चारदीवारी के पास जाकर उन सज्जन को लौटा दी। वे फिल्म निर्माता उसके इस व्यवहार से अत्यंत खुश हुए। उन्होंने फौरन जानवरों पर एक फिल्म बनाने का निश्चय किया, जिसका नायक उन्होंने जॉर्ज को चुना। जॉर्ज को भी इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि सारे साथी जानवरों में उसे ही प्रधानता दी गई। उदारता का हर कार्य स्वर्ग की ओर एक कदम है।

१९७) सुख शांति की तलाश - संत अनाम टीले पर बैठे हुए अस्त होते सूर्य को देख रहे थे कि एक व्यक्ति आया और अभिवादन करते हुए कहने लगा- आप बड़े शांत, प्रसन्न और सुखी प्रतीत होते हैं। मुझे लगता है कि आप शांति और प्रसन्नता के भंडार है। संत ने कहा, आपका प्रयोजन? आगंतुक ने कहा कि मैं संसार का सर्वाधिक धनी व्यक्ति हूं। दो वर्ष पहले जब मैं विश्व भ्रमण के लिए निकला, तो मेरे एक मित्र ने शांति और सुख लाने को कहा था। संसार की बड़ी से बड़ी फर्मों में, विश्व के बड़े से बड़े धर्मस्थलों में, संतों और ऋषियों के आश्रम में, कहीं भी ये वस्तुएं मुझे नहीं मिलीं। क्या आप मेरे लिए किसी भी कीमत में ये वस्तुएं दे सकते हैं। संत ने कहा, अवश्य, पर क्या तुम्हारे पास कागज और कलम है? आगंतुक ने दोनों चीजें निकालकर संत को दे दीं। संत ने कागज पर कुछ लिखा और उससे कहा- इसमें शांति, प्रसन्नता और सुख का नुस्खा लिखा है। धन्यवाद कहकर वह आगंतुक अपने आप चला गया। उसे खोलकर पढ़ते ही धनिक के मित्र ने कहा, मुझे शांति मिल गई। प्रसन्नता तथा सुख भी। दरअसल, कागज में लिखा था कि जिसके अंत:करण में विवेक जागृत हो जाता है और संतोष की धारा बहती है, वहीं शांति निवास करती है। प्रसन्नता और सुख शांति के प्रसाद हैं।

१९८) आदर्श की राह - महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय जी की सुपुत्री पार्वती विधवा हो गई। वह लाला जी के साथ ही रहती थी। कुछ दिनों के बाद पार्वत्ती के इकलौते बेटे भारत भूषण की सगाई हुई। लड़की के माता-पिता ने

इस शुभ अवसर पर लाला जी और पार्वती को एक-एक सौ रुपये दिए। वर्षों बाद उनकी बेटी के जीवन में आनंद की घड़ी आई थी और घर में कोई उत्सव हो रहा था। लाला जी बेटी का उत्साह कम नहीं करना चाहते थे सो वह मना नहीं कर सके। लेकिन उस रात वह उदास रहे। वह सगाई पर एक रुपये से अधिक लेना आडंबर मानते थे। उन्हें लगा कि उनकी कथनी-करनी में समानता नहीं है। व्याकुल लाला जी ने दो-तीन दिनों के बाद अपनी पुत्री से पूछा, लड़कीवाले तुम्हें सौ रुपये दे गए थे, उसका तुमने क्या किया? इस पर उसने पलटकर सवाल किया, पिता जी आपको भी तो मिले थे, आपने उन रुपयों का क्या किया? कुछ देर तक पहले आप, पहले आप होता रहा। पार्वती ने कहा, मैंने वे रुपये आर्य अनाथालय, फिरोजपुर भिजवा दिए हैं। अनाथ भारत भूषण का विवाह होने जा रहा है न। यह सुनकर लाला जी गदगद हो गए। उन्होंने कहा, तुम धन्य हो, मेरी लाड़ली बेटी। मैंने अपना एक सौ रुपया आर्य विधवा आश्रम को दे दिया है। मेरी पुत्री जो अब तक अधूरी थी, अब उसके प्यारे पुत्र भारत भूषण का विवाह होनेवाला है। ईश्वर सब की पुत्रियों पर सुख की वर्षा करे। सभी विधवाओं के कष्टों का निवारण हो।

१९९) महापुरुषों का जीवन - आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती के भक्तों की संख्या अनगिनत थी। वह जहां भी जाते, उनसे प्रभावित होकर अनेक लोग उनके शिष्य बन जाते। उनके शिष्य उनके लिए कुछ न कुछ करना चाहते थे। इससे उन्हें संतोष होता था। उनके निकट शिष्यों में एक थे पंजाब के पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी। पंडित विद्यार्थी काफी लंबे समय तक स्वामी दयानंद के सान्निध्य में रहे और उन्होंने उनसे काफी ज्ञान भी प्राप्त किया। वह स्वामी जी के कई कार्यक्रमों में शामिल हुए। स्वामी जी उनके प्रति काफी स्नेह रखते थे। स्वामी जी के देहावसान के कुछ समय बाद स्वामी जी के ही किसी दूसरे अनुयायी ने पं. विद्यार्थी से कहा, पंडित जी, स्वामी जी महायोगी थे। आपको उनके घनिष्ठ संपर्क में रहने का सुअवसर मिला है। इसलिए आपको उनके विषय में विस्तृत जानकारी है। आप स्वामी जी का एक जीवन चरित क्यों नहीं लिखते? पंडित जी बड़ी गंभीरता से बोले, स्वामी जी का जीवन चरित लिखने का मैं प्रयत्न कर रहा हूं। थोड़ा बहुत आरंभ भी कर चुका हूं। उस अनुयायी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, यह जीवन चरित कब तक पूर्ण होगा? यह कब तक प्रकाशित हो जाएगा? पंडित जी बोले, आप यह मत सोचो कि मैं कागज पर स्वामी जी का जीवन चरित लिख रहा हूं। मेरे विचार से तो महापुरुषों का जीवन चरित मनुष्य के स्वभाव में, आचरण में लिखा जाना चाहिए। मैं इसी प्रकार का प्रयास कर रहा हूं कि मेरा जीवन स्वामी जी के आदर्शों के अनुरूप हो। मैं उनके पदचिन्हों पर चल सकूं। किसी महापुरुष के विचारों को अपने आचरण में जीना ही उसके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होती है। इससे उस महापुरुष के ज्ञान की ज्योति चारों तरफ फैलती है और इसका लाभ न सिर्फ उसके अनुयायियों को बल्कि समाज के हर व्यक्ति को मिलता है। स्वामी जी का दूसरा अनुयायी पंडित जी की बात से सहमत हो गया।

२००) प्रजा का हित - पुराने जमाने की बात है। रायपुर में एक राजा राज्य करता था। उसकी प्रजा करों के बोझ से परेशान थी। एक दिन स्वामी हरिदास उसके दरबार में पधारे। राजा ने उन्हें प्रणाम करते हुए पूछा, महाराज। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं? हरिदास ने कहा, राजन्। आपसे भला मैं क्या अपेक्षा करूं। राजा ने सिर झुकाकर लेकिन अभिमान भरे लहजे में कहा, महाराज, आप आदेश तो कीजिए। मेरे लिए कुछ भी असंभव नहीं है। हरिदास जी बोले, फिर

भी एक बार विचार कर लेते तो उचित रहता। राजा ने हरिदास जी को आश्वासन देते हुए कहा, मैंने जो वचन दिया है, वह पत्थर की लकीर है। आप निश्चिंत होकर अपने मन की बात कहिए। हरिदास बोले, हे राजन्। आपने वचन दे ही दिया है तो अपने राज्य की गरीब जनता का कर माफ कर दीजिए। राजा बोला, महाराज। आप मुझसे सारी उम्र के गुजारे भर के लिए धन ले लीजिए, किंतु ऐसा न कहिए। आप तो राज्य के खर्च का स्रोत ही बंद करने की बात कह रहे हैं, यह कैसे संभव होगा? हरिदास जी ने कहा, राजन्। जनता से कर वसूल करना अन्याय नहीं है, मगर गरीबों से कर वसूलना अवश्य अन्याय है। आप जिन लोगों से कर वसूलते हैं उनमें से कितनों के पास खाने तक के लाले पड़े हैं। राजन्। कहीं ऐसा न हो कि आपकी प्रजा एक दिन कर देने के लायक ही न रह जाए। यह सुनकर राजा का सिर लज्जा से झुक गया। उसने तत्काल गरीबों को कर में छूट देने की घोषणा की।

२०१) नकल बाघ की करो - जंगल से गुजरते हुए एक आदमी ने ऐसी लोमड़ी को देखा जिसके पैर टूट चुके थे और वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही थी। उसने सोचा कि आखिर वह अपना गुजारा कैसे करेगी। तभी उसने देखा कि एक बाघ अपने मुंह में शिकार को दबाए हुए वहाँ आया। पेट भर खाने के बाद वह बचा खुचा शिकार लोमड़ी के लिए छोड़कर चला गया। अगले दिन भी ईश्वर ने बाघ को लोमड़ी के लिए भोजन के साथ वहाँ भेज दिया। वह आदमी ईश्वर की महानता के बारे में सोचकर आश्चर्यचकित हो गया और उसने यह निर्णय लिया कि वह बिना कुछ किए एक कोने में पड़ा रहेगा और ईश्वर उसका भरण-पोषण करेंगे। अगले एक माह तक वह ऐसा ही करता रहा और जब वह मरने की हालत में पहुंच गया तब उसे एक आवाज सुनायी दी- मेरे बच्चे। तुम गलत राह पर हो। सत्य को पहचानो। नकल ही करना है तो बाघ की करो, लोमड़ी की नहीं।

२०२) कर्म, फल और खेल - श्याम नामक बालक रोज स्कूल जाते वक्त जंगल से गुजरते जंगली जानवरों की आवाज से बहुत भयभीत रहता था। उसने अपने पिता से हठ की कि आप मुझे रोज स्कूल छोड़ने आया करो। पिताजी ने कहा- तुम पूरे रास्ते गोपाल गोपाल कहते चलते जाओ। श्रीकृष्ण तुम्हारी रक्षा स्वयं करेंगे।

नन्हें से श्याम ने रोज स्कूल जाते वक्त गोपाल का स्मरण करना शुरू किया। कुछ दिनों पश्चात कृष्ण उसके सामने प्रकट हुए और कहा- बोलो तुम्हें क्या वरदान दूं? नन्हे से श्याम ने कहा, हे गोपाल, आप रोज मुझे स्कूल तक छोड़ने आओ, यही मेरी इच्छा है। कृष्ण तैयार हो गए। मैत्रीपूर्ण स्नेह भरा सफर चलता रहा। श्याम के कुछ मित्रों ने जब यह बात सुनी, तो उन्होंने कहा कि हम कैसे मानें कि कृष्ण तुम्हें स्कूल छोड़ने आते हैं? दूसरे दिन श्याम ने कृष्ण से प्रार्थना की, तो मित्रों को भी कृष्ण दर्शन हुए। जैसे श्याम की भक्ति का फल उसके मित्रों को बिना मेहनत मिला, इसी प्रकार हमारे जीवन में रोजाना हमें कई ऐसी प्राप्तियां होती हैं, जिनके लिए हमने कोई पुरुषार्थ नहीं किया। माता-पिता, भाई-बहन, मित्र के किसी पुण्य से हमें ये प्राप्तियां होती हैं। कभी उन लोगों का उपकार नहीं भूलना चाहिए, जिनके पुरुषार्थ से हम आगे बढ़े। जन्म से लेकर मृत्यु तक हमने अनेकानेक लोगों से मदद ली। अत: कभी यह मिथ्या अभिमान न करें कि हमने अपने बलबूते सब कुछ हासिल किया है। सृष्टि पर ऐसा कोई नहीं, जिसने किसी के साथ सहयोग के बिना अपना जीवन निर्वाह किया हो। इसीलिए सदैव सभी के प्रति कृतज्ञता की भावना रखें।

२०३) जीवन का सच - एक बार किसी गांव में एक महात्मा पधारे। उनसे मिलने पूरा गांव उमड़ पड़ा। गांव के हरेक व्यक्ति ने अपनी अपनी जिज्ञासा उनके सामने रखी। एक व्यक्ति ने महात्मा से पूछा, महात्मा जी, ऐसा क्या करें, जिससे जीवन की सभी चिंताओं से मुक्ति मिल जाए और कोई भी काम अधूरा न रहे। यह सुनकर महात्मा जी मुस्कराए, फिर उन्होंने कहा, पहले तुम मुझे कुछ जिंदा मेंढ़क लाकर दो, उसके बाद तुम्हारे इस सवाल का जवाब दूंगा। यह सुनकर लोग चकराए। लेकिन महात्मा जी का आदेश था, सो कुछ लोग जल्दी से तालाब पर पहुंचे और बड़ी मुश्किल से कुछ मेंढ़क पकड़ लाए। फिर महात्मा जी ने तराजू लाने को कहा। एक आदमी तराजू ले आया। महात्मा जी ने लोगों से कहा कि वे मेंढ़कों को तौलें और उनका कुल वजन बताएं। यह कहकर महात्मा जी चले गए। उसी व्यक्ति ने मेंढ़कों को तौलना शुरू किया जिसने प्रश्न किया था। उसने ज्यों ही मेंढ़कों को पलड़े पर रखा, कभी एक उछलकर भाग निकलता तो कभी दूसरा। फिर लोग उन्हें पकड़कर लाते और तराजू पर रख देते। लेकिन उन्हें स्थिर रख पाना बेहद कठिन था। लोग दिन भर प्रयास करते रहे। शाम होने पर महात्मा जी फिर वहां पहुंचे। उन्होंने लोगों से यह काम बंद करने को कहा। सारे मेंढ़क भाग निकले। महात्मा जी ने कहा, जैसे इतने जिंदा मेंढ़कों को खुले तौर पर तौलना संभव नहीं, उसी प्रकार संसार में सब ठीकठाक करके निश्चिंत रहना संभव नहीं है। उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम, इन सद्गुणों को जीवन में धारण करो और अपना दायित्व निभाओ।

२०४) तुष माश - एक सामान्य गृहस्थ था। उसकी धर्म-ध्यान में बड़ी रुचि थी। अपने परिवार का भरण-पोषण करने के साथ-साथ वह संतों का सत्संग किया करता था। अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ा करता था। एक दिन वह कहीं जा रहा था कि रास्ते में एक ओर को लोगों की भीड़ देखकर वहां चला गया। एक मुनि उपदेश दे रहे थे। वह खड़े होकर उनका प्रवचन सुनने लगा। वह शरीर और आत्मा के संबंध में बोल रहे थे। कह रहे थे- बहुत से लोग समझते हैं कि आदमी मर जाता है तो शरीर के साथ आत्मा भी मर जाती है। ऐसा नहीं है। आत्मा अमर है। जिस प्रकार पुरानी हो जाने पर सर्प अपनी केंचुली उतारकर नई केंचुली धारण कर लेता है, उसी प्रकार शरीर के पुराने और जीर्ण हो जाने पर आत्मा नया शरीर धारण कर लेती है। यह शरीर मंदिर है और आत्मा उसमें ईश्वर है। आत्मा की आराधना के लिए शरीर अनिवार्य है। पर दोनों को मिलाओ मत। दोनों अलग-अलग है। गृहस्थ ने यह सब सुना और आगे बढ़ गया। तरह-तरह के विचार उसके मन में उठ रहे थे। वह उनमें एकदम खो गया। अचानक उसे ठोकर लगी वह गिर गया। उसकी विचारधारा टूट गई। उठकर चलने लगा। उसे ध्यान आया कि रास्ते में एक साधु मिले थे, लेकिन उसका मस्तिष्क कुछ ऐसा हो गया कि उसे याद नहीं आया कि उन्होंने क्या कहा था। उसने याद करने की बहुतेरी कोशिश की, लेकिन विस्मरण इतना हो गया कि वह उसका सूत्र नहीं पकड़ पाया। कुछ देर चलने पर एक गांव आया। वहां किसी घर के बाहर बैठी एक स्त्री कुछ कर रही थी। उसने पूछा, बहन, तुम क्या कर रही हो। वह बोली, तुष-माश। (मैं उड़द की दाल के छिलके उतार रही हूं) स्त्री का इतना कहना था कि उसे साधु का उपदेश याद आ गया। स्त्री ने उसे बोध दिया कि शरीर और आत्मा एक नहीं हैं, भिन्न हैं। उसे यह भी याद आया कि साधु ने मैं और तू का गुर बताया था, जिस प्रकार मैं और तू दो हैं, उसी प्रकार शरीर और आत्मा हैं। स्त्री का वचन उसके भीतर इतना प्रवेश कर गया कि वह उसे जीवन भर नहीं भूला।

२०५) प्रेम की भाषा - काशी के एक संत अपने आश्रम में शिष्य पारंगत के साथ रहते थे। उसने आश्रम में बीस साल रहकर देर सारा ज्ञान अर्जित किया। एक दिन संत ने कहा, वत्स पारंगत, तुमने बहुत समय तक मेरी सेवा की है। इस अवधि में मेरे पास भी जो कुछ न था, वह सब मैंने तुम्हें सिखला दिया है। तुम और ज्ञान अर्जित करो इसलिए मैंने फैसला किया है कि तुम कुछ समय के लिए देशाटन जाओ। देश के तीर्थ स्थलों का भ्रमण करो और देश की अधिकाधिक भाषाएं सीख कर वापस आओ। पारंगत देशाटन पर निकल पड़ा। कई वर्ष बीत गए उसे भ्रमण करते हुए। इस अवधि में उसने विभिन्न प्रदेशों का भ्रमण किया। देश की सभी भाषाएं भी सीखी और कुछ धन भी एकत्रित करके एक दिन आश्रम लौट आया। उसने सोचा कि गुरुजी को जब पता चलेगा कि उनका शिष्य आश्रम के लिए धन कमा कर लाया है तो बहुत खुश होंगे। वह आश्रम में गुरुजी के पास गया। गुरुजी रुग्णावस्था में तख्त पर लेटे थे। गुरु को इस हालत में देखकर उसे एक बार दुख तो हुआ लेकिन उत्साह में उसने गुरु को प्रणाम करके कहा, गुरुवर, मैं देश की सभी भाषाएं सीख ली है और आश्रम के लिए धन कमाकर भी लाया हूं। संत शांत भाव से उसकी बातें सुनते रहे फिर बोले, वत्स, क्या तुम्हें कभी कोई ऐसा व्यक्ति भी मिला जो बेवश, लाचार होकर भी दूसरों की मदद कर रहा हो। क्या तुम्हें कोई ऐसी मां मिली, जो अपने शिशु को भूखा रोता देख कर अपना दूध रहित स्तन उसे पिला रही हो। परंगत ने कहा, ऐसे लोग तो हर जगह मिले थे। गुरु ने कहा, क्या तुम्हारे मन में उनके लिए किसी तरह की सहानुभूति जगी थी। क्या तुमने प्रेम का एकाध शब्द उनसे कहे। उसने कहा, गुरुवर, मैं इस झमेले में पड़ता तो आप के आदेश का पालन कैसे करता। मेरे पास इतनी फुर्सत नहीं थी कि मैं इस ओर ध्यान देता। संत ने कहा, वत्स पारंगत, तुमने बहुत सारी भाषाएं तो सीख ली, धन भी कमाया लेकिन उस अमूल्य भाषा को नहीं सीख पाए जिसके लिए मैंने तुम्हें भेजा था। तुम अब भी प्रेम, करुणा और सहानुभूति की भाषा से वंचित हो। यदि ऐसा नहीं होता तो तुम दुखियों का दुख देखकर भी अनदेखा नहीं करते। यहां तक कि तुमने अपने गुरु को भी रुग्णावस्था में देख कर भी कुशल क्षेम जाने बिना अपनी कहानी सुनाने लगे। पारंगत गुरु का भाव समझ गया और अज्ञानता के लिए क्षमा मांगकर उलटे पांव लौट कर अज्ञात दिशा की तरफ चला गया।

२०६) सादगी का पाठ - काशी के एक सेठ अकीर्ति बचपन से ही विरक्त स्वभाव के थे। उनकी ईश्वर में गहरी आस्था और भक्ति थी। वह बहुत ही विनम्र थे और सादगीपूर्ण जीवन जीते थे। उनका अधिकतर समय माता पिता की सेवा में गुजरता था। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी वह अकिंचन और अपरिग्रही थे। माता-पिता की मृत्यु के बाद उनकी संसार से पूरी तरह विरक्ति हो गई। अकीर्ति ने अपना समस्त धन गरीबों और वंचितों के बीच बांट दिया और एक महात्मा की तरह वन में कुटिया बना कर रहने लगे। एक सच्चे महात्मा की भांति उनका जीवन था लेकिन उन्हें भक्तिमय जीवन जीने में अनेक तरह की बाधाएं भी आती रहीं, फिर भी वह अपनी साधना में लगे रहे। कुछ ही दिनों में उनके त्याग, तप और ज्ञान से प्रभावित होकर लोग उनके दर्शन के लिए आने लगे। लोग उनकी प्रशंसा करते तो उन्हें लगता कि उनका पुण्य नष्ट हो रहा है। जिस मंजिल की ओर वह जाना चाहते हैं, वहां पहुंचने में ये सारी स्थितियां बाधा हैं। इन्हीं स्थितियों के कारण वह एक दिन कुटिया त्याग कर एकांत साधना करने लगे। पर कुछ दिनों बाद वहां भी आदर-सत्कार करनेवाले पहुंचने लगे। फिर वह नागद्वीप जाकर रहने लगे। अकीर्ति की घोर तपस्या से शुक्र देवता का आसन हिल गया। शुक्र एक दिन अकीर्ति

की परीक्षा लेने के लिए नागद्वीप पहुंचे। ब्राह्मण वेश में पहुंचकर उन्होंने अकीर्ति से भोजन की याचना की। अकीर्ति ने वृक्ष के नीचे जमीन पर गिरे पत्ते उबाले और एक कटोरा भर कर उनके सामने रख दिया। फिर वह विनम्रतापूर्वक बोले, आइए हम दोनों क्षुधा मिटाने के लिए भोजन ग्रहण करें। अकीर्ति ने ईश्वर का स्मरण कर उबले पत्तों के रस को पूर्ण संतोष के साथ पी लिया। जबकि, शुक्र उस बेस्वाद रस को बड़ी मुश्किल से हलके से नीचे उतार पाए। शुक्र बेहद लज्जित हुए। उन्होंने मन-ही-मन अकीर्ति के सादगीपूर्ण जीवन को नमन किया और लौट गए।

२०७) समय का उपयोग - एक दिन एक व्यक्ति किसी महात्मा के पास पहुंचा और कहने लगा, जीवन अल्पकाल का है। इस थोड़े समय में क्या-क्या करूं? बचपन में ज्ञान नहीं होता। युवावस्था में गृहस्थी का बोझ होता है। बुढ़ापा रोगग्रस्त और पीड़ादायक होता है। तब भला ज्ञान कैसे मिले? लोक सेवा कब की जाए? यह कहकर वह रोने लगा। उस रोते देख महात्मा जी भी रोने लगे। उस आदमी ने पूछा, आप क्यों रोते हैं? महात्मा ने कहा, क्या करूं, खाने के लिए अन्न चाहिए। लेकिन अन्न उपजाने के लिए मेरे पास जमीन नहीं है। परमात्मा के एक अंश में माया है। माया के एक अंश में तीन गुण है। गुणों के एक अंश में आकाश है। आकाश में थोड़ी सी वायु है और वायु में बहुत आग है। आग के एक भाग में पानी है। पानी का शतांश पृथ्वी है। पृथ्वी के आधे हिस्से पर पर्वतों का कब्जा है। जमीन पर जहां देखो नदिंया बिखरी पड़ी हैं। मेरे लिए भगवान ने जमीन का एक नन्हा सा टुकड़ा भी नहीं छोड़ा। थोड़ी सी जमीन थी उस पर भी दूसरे लोगों ने अधिकार जमा लिया। तब बताओ, मैं भूखा नहीं मरूंगा। उस व्यक्ति ने कहा, यह सब होते हुए भी आप जीवित तो हैं न। फिर रोते क्यों हैं? महात्मा ने तुरंत उत्तर दिया, तुम्हें भी तो समय मिला है, बहुमूल्य जीवन मिला है, फिर समय न मिलने की बात कहकर क्यों हाय-हाय करते हो। अब आगे से समयाभाव का बहाना न करना। जो कुछ भी है, उसका उपयोग करो, उसी में संतोष पाओ। संसार में हर किसी ने सीमित समय का सदुपयोग करके ही सब कुछ हासिल किया है।

२०८) जनकल्याण की राह - एक बार अयोध्या के राजा रघु के दरबार में इस प्रश्न पर बहस चल रही थी कि राजकोष का उपयोग किन प्रयोजनों के लिए किया जाए? एक पक्ष का मत था कि सैन्य शक्ति बढ़ाई जाए ताकि न केवल अपनी सुरक्षा हो बल्कि राज्य के विस्तार की योजना भी आगे बढ़े। इस अभियान पर जो खर्च होगा उसकी भरपाई पराजित देशों से मिलने वाले संसाधनों से की जा सकेगी। दूसरे पक्ष का कहना था कि राजकोष प्रजा जन के हित में खर्च किया जाए ताकि उनका जीवन स्तर बढ़ सके। अगर सुखी, संतुष्ट, साहसी और सहृदय नागरिक हों तो देश समृद्ध होता है। इस प्रकार युद्ध करके नए क्षेत्र जीतने की अपेक्षा मैत्री का विस्तार कहीं अधिक लाभदायक है। उससे स्वेच्छया सहयोग और अपनत्व की ऐसी उपलब्धियां प्राप्त होती हैं, जिनके कारण छोटा देश भी चक्रवर्ती स्तर का बन सकता है। दोनों पक्षों के तर्क चलते रहे। सबके मन में उत्सुकता थी कि आखिर राजा रघु क्या निर्णय देते हैं। जब सबने अपनी बात समाप्त की तब उन्होंने कहा, युद्ध पीढ़ियों से लड़े जाते रहे हैं। उनके कड़वे मीठे परिणाम भी स्मृति पटल पर अंकित हैं। लेकिन इस बार युद्ध छोड़ दिया जाए और लोकमंगल को अपनाया जाए। देखते हैं क्या होता है। समस्त संपत्ति जनकल्याण की योजनाओं पर खर्च कर दी जाए। कुछ सभासद दबे छुपे इस निर्णय की आलोचना करने लगे। उन्हें अनिष्ठ की आशंका सताने लगी। उधर रघु के निर्णय के मुताबिक विकास योजनाएं तेज कर दी गईं। धीरे-धीरे प्रजाजन हर दृष्टि से सम्मुन्नत हो गए।

आक्रमण की चर्चाएं समाप्त हो गई। सुख-शांति के समाचार पाकर अन्य देशों के समर्थ लोग वहां आकर बसने लगे। बंजर भूमि सोना उगलने लगी और अयोध्या में खुशहाली फैल गई।

२०९) रास्ते की रूकावट - विद्यार्थियों की एक टोली पढ़ने के लिए रोजाना अपने गाँव से ६-७ मील दूर दूसरे गाँव जाती थी। एक दिन जाते-जाते अचानक विद्यार्थियों को लगा कि उन में एक विद्यार्थी कम है। ढूंढ़ने पर पता चला कि वह पीछे रह गया है। उसे एक विद्यार्थी ने पुकारा, तुम वहाँ क्या कर रहे हो? उस विद्यार्थी ने वहां से उत्तर दिया, ठहरो, मैं अभी आता हूं। यह कहकर उसने धरती में गड़े एक खूँटे को पकड़ा। जोर से हिलाया, उखाड़ा और एक ओर फेंक दिया फिर टोली में आ मिला। उसके एक साथी ने पूछा, तुमने वह खूंटा क्यों उखाड़ा? इसे तो किसी ने खेत की हद जताने के लिए गाड़ा था। इस पर विद्यार्थी बोला, लेकिन वह बीच रास्ते में गड़ा हुआ था। चलने में रुकावट डालता था। जो खूँटा रास्ते की रुकावट बने, उस खूँटे को उखाड़ फेंकना चाहिए। वह विद्यार्थी और कोई नहीं, बल्कि लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल थे।

२१०) सत्यनिष्ट सुकरात - सुकरात को जब जहर पिलाया जा रहा था, तब लोगों ने सोचा कि वह बहुत दुखी होंगे, पर सुकरात ने इसे सहजता से लिया। उनके सामने दो प्रस्ताव रखे गए। पहला प्रस्ताव यह था कि वह एथेंस छोड़कर चले जाएं। इस पर सुकरात ने कहा, जिस एथेंस में जन्मा, पला वही मरूंगा। जिस भूमि पर मैंने हजारों व्यक्तियों को सत्य की रोशनी दी, हजारों बंद आंखों को खोला, उसे छोड़कर जाने की बजाय मैं जहर पीकर मर जाना अच्छा समझूंगा। यहां मरने से आनेवाली पीढ़ियां कहेंगी कि मैं ऐसे लोगों द्वारा मारा गया जो सुसंस्कारित एवं सभ्य थे। जब इस प्रस्ताव को सुकरात ने ठुकरा दिया तो दूसरा प्रस्ताव यह रखा गया कि वह भले ही एथेंस में रहें, लेकिन सत्य बोलना बंद कर दें। यह सुनते ही सुकरात जोर से हंसे और बोले, यह तो मेरे लिए और भी असंभव है। यह तो ऐसा ही है कि कोई पक्षियों से कहे कि गीत मत गाओ, चांद और सितारों से कहे कि प्रकाश मत दो। यह तो उनका स्वाभाविक कार्य है। वे तो सदैव वैसा करेंगे। आखिरकार सुकरात ने दोनों शर्तें मानने से इनकार कर दिया। तब उनसे कहा गया कि उनकी मृत्यु निकट है। इस पर उन्होंने कहा, जीवन और मृत्यु के बारे में तो केवल भगवान जानता है, जो हमारा और तुम्हारा मालिक है। सुकरात को जहर पिला दिया गया। उनका भौतिक शरीर तो यूनान की धरती में विलीन हो गया, पर उनके द्वारा दी गई सत्य की ज्योति हमेशा जगमगाती रहेगी।

२११) पाप का कारण - राजा सत्यप्रिय एक धर्मपरायण शासक थे। एक दिन उनके मन में सवाल उठा कि आखिर क्या कारण है कि लोग पाप करने को विवश होते है? यह प्रश्न उन्होंने अपने गुरु से किया। गुरु मुस्कुरा कर बोले, राजन्, इसका जवाब तुम्हें विद्यामती नामक एक युवती दे सकती है। गुरु ने राजा को विद्यामती का पता बताया। राजा उन्हें प्रणाम कर उस युवती के पास पहुंचे। विद्यामती अति रुपवान एवं गुणवान थी। राजा ने उसे अपनी शंका बताई तो विद्यामती ने कहा, इसका जवाब पाने के लिए आपको कुछ दिन मेरे यहां अतिथि बनकर रहना होगा। राजा बोले, मगर, मैं तो राजा हूं। यहां कैसे ठहर सकता हूं। मेरी प्रजा दिन रात मुझे अपनी समस्याएं बताती रहती है। राजा की बातबीच में काटकर विद्यामती बोली, पर प्रश्न का उत्तर आपको तभी मिल पाएगा। यह सुनकर राजा वहां रुक गए और अपने राज्य में यह सूचना भिजवा दी कि वह एक अति आवश्यक कार्य से बाहर गए हुए है। विद्यामती राजा की दिन-रात सेवा करती, उन्हें

स्वादिष्ट भोजन खिलाती और उनसे ज्ञान-विज्ञान व वेदों आदि के बारे में बात भी करती। राजा विद्यामती पर मोहित हो गए और एक दिन उन्होंने प्रणय निवेदन कर डाला। इस पर विद्यामती बोली, बस महाराज, आज आपको आपका जवाब मिल गया। अब आप जासकते हैं। राजा ने हैरान से कहा, यह मेरा उत्तर नहीं। इस पर विद्यामती बोली, महाराज पाप की जड़ लोभ ही तो हैं, जो मनुष्य को गलत मार्ग की तरफ ले जाता है और उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर देता है। विद्यामती का यह जवाब सुनकर राजा लज्जित होकर बोले, आप सत्य कह रही हैं। लोभ ही मनुष्य से गलतियां कराता है, जैसे आज मुझसे करा रहा था। वह विद्यामती को नमस्कार कर लौट गए।

२१२) देश की आत्मा - एक बार सम्राट नेपोलियन छुट्टी बिताने पैरिस से काफी दूर एक छोटे शहर में अपने एक मित्र के यहां आए। मित्र ने उन्हें वहां की कई रमणीक जगहें दिखाईं लेकिन नेपोलियन को कोई जगह पसंद नहीं आ रही थी। उन्होंने कहा, मैं अपने देश की असली जिंदगी देखने के लिए निजी यात्रा पर यहां आया हूं। आप मुझे वह जगह दिखाइए जहां देश की आत्मा बसती है। मैं देखना चाहता हूं कि हमारे देश के किसान और मजदूर किस हाल में हैं। मित्र उन्हें लेकर शहर से बहुत दूर एक कस्बे में गया। नेपोलियन ने देखा कि खेत में फसल लहलहा रही है। मजदूर खेत में काम कर रहे हैं। वह बहुत खुश हुए। एक दिन वह एक संकरी गली से गुजर रहे थे कि सामने से एक किसान सिर पर भारी बोझ लेकर आता दिखा। गली इतनी पतली थी कि किसान बगल से निकल नहीं सकता था और न ही मुड़ सकता था। वह पसोपेश में पड़कर खड़ा हो गया। उसे इस तरह खड़ा देख नेपोलियन के मित्र ने क्रोध में कहा, तुम्हें दिखाई नहीं देता? अंधा है क्या? जल्दी से वापस जाओ। किसान बोझ लेकर मुड़ ही रहा था कि उसका एक पैर किसी चीज में फंस गया और वह लड़खड़ाने लगा। वह बोझ सहित गिरनेवाला था कि नेपोलियन ने दौड़ कर उसे सहारा दिया और कहा, तुम्हें वापस लौटने की जरूरत नहीं है। तुम आराम से निकल जाओ। किसान को जगह देने के लिए नेपोलियन अपने मित्र के साथ पीछे लौट कर दूसरी गली में खड़े हो गए। किसान के जाने के बाद मित्र ने कहा, एक अदने किसान के लिए हमें अपना मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए था। हमें देखकर लोग क्या सोचेंगे? नेपोलियन ने कहा, दोस्त, किसानों की मेहनत से ही देश तरक्की करता है। उन्हीं की मेहनत के कारण हम लोग भरपूर सुख भोगते हैं। उनका तिरस्कार देश की उपेक्षा के बराबर है। मित्र का सिर लज्जा से झुक गया।

२१३) सच्चा सेवक - गजनी के सुलतान महमूद के पास कई गुलाम थे, लेकिन वह उनमें से अयाज को सबसे ज्यादा प्यार करते थे। इसके कारण कुछ सरदार और गुलाम अयाज से जलने लगे। एक बार हिम्मत करके एक सरदार ने सुलतान से पूछा, हुजूर, गुस्ताखी माफ हो। बहुत से लोग आपकी दिन-रात सेवा करते हैं, आपकी खिदमत में कोई कोर कसर नहीं उठाते, फिर भी आप अयाज को सबसे ज्यादा प्यार करते हैं। क्या औरों की वफादारी में कोई कमी है? सुलतान ने कहा, इसका जवाब मैं समय आने पर दूंगा। कुछ समय बाद एक दिन भरे दरबार में सुलतान ने हीरे-मोतियों से जड़ा एक कीमती हार अयाज को दिया और कहा, इसे तोड़ दो। अयाज ने उसे तुरंत तोड़ दिया। हार में लगे हीरे-मोती फर्श बिखर गए। इससे वहां मौजूद लोगों में सन्नाटा छा गया। लोग सोचने लगे कि आज तो अयाज को फांसी से कम की सजा नहीं मिलेगी। ऐसे हुक्म का पालन करने से पहले उसे इसके नतीजे पर विचार कर लेना चाहिए था। सुलतान का चेहरा भी गुस्से से लाल हो गया। उन्होंने गुस्से से चीखते हुए कहा, इतना कीमती हार तुमने क्यों तोड़ा?

अयाज ने विनम्रता से कहा, हुजूर, गुलाम से गलती हो गई, माफ कर दे। सुलतान ने उससे पूछा, अयाज, जब तुमने हार को तोड़ा, तब क्या तुम्हें डर नहीं लगा? अयाज ने कहा, कैसा डर हुजूर। मैं जानता हूं कि आप काफी सोच विचार के बाद ही कोई हुक्म देते है। मैंने सोचा कि हार तोड़ने के आपके हुक्म में भी कोई राज छिपा होगा। इसलिए मैंने हार तोड़ दिया। सुलतान ने मुस्कुरा कर लोगों से कहा, आप लोग जानना चाहते थे न कि अयाज को मैं सबसे ज्यादा प्यार क्यों करता हूं? आज उसका राज आपके सामने है। अयाज कह सकता था कि हार मानी। अपने इसी स्वभाव और सच्ची वफादारी की वजह से वह मेरे दिल में बाकी लोगों से ऊपर जगह रखता है।

२१४) लड़ाई की जड़ - एक बार एक बूढ़ा शहद से भरी मटकी लेकर जा रहा था। रास्ते में उसका पांव एक छोटे से पत्थर पर पड़ा तो वह लड़खड़ाया और थोड़ा शहद जमीन पर टपक गया। बूढ़ा तो संभल कर आगे चल दिया, मगर शहद पर कई मक्खियां आकर बैठ गई। मक्खियों को एक गिलहरी ने देखा तो वह फौरन उन पर झपटी। मक्खियां उड़ गईं। तभी एक बिल्ली ने गिलहरी पर झपट्टा मारा। गिलहरी भी भाग गई। उसी समय एक कुत्ता गुर्राता हुआ बिल्ली की तरफ बढ़ा। बिल्ली तो भाग गई मगर अचानक एक और कुत्ता वहां आ गया। दोनों आपस में लड़ने लगे। इतने में इन कुत्तों के मालिक भी आ गए। वे अपने कुत्तों को बचाने में लग गए। जब कुत्ते शांत नहीं हुए तो वे एक दूसरे के कुत्ते को पीटने लगे, फिर आपस में ही झगड़ पड़े। बात बढ़ गई तो उनके घर वाले और दोस्त भी आ पहुंचे। कुछ देर बाद दोनों तरफ के मोहल्ले वाले भी लाठियां लेकर मैदान में आ डटे। दोनों गुटों में जमकर मारपीट होने लगी। कई लोग जख्मी हो गए। एक साधु ने उधर से गुजर रही एक बुढ़िया से पूछा, यह लड़ाई किसलिए हो रही है? बुढ़िया कोई उत्तर नहीं दे सकी। साधु ने एक लड़के से पूछा तो उसने भी कोई जवाब नहीं दिया। खैर किसी तरह साधु को लड़ाई की असली वजह का पता चला तो उसने भीड़ को शांत होने का इशारा किया। लड़ाई रुक गई। साधु ने पूछा, बिना बात समझे लड़नेवाले को आप क्या कहेंगे? सभी मौन थे। साधु ने फिर कहा, हमारे यहां लड़ाई की जड़ ही यही है कि लोग जानते ही नहीं कि वे किस बात पर झगड़ रहे हैं। जिस दिन लोगों में यह समझ आ जाएगी कि लड़ने के पहले लड़ाई की जड़ जान लें तो कभी झगड़ा-फसाद होंगे ही नहीं।

२१५) ऐसी होती है योग्य प्रजा - उज्जयिनी के राजा भोज संस्कृत के प्रकांड विद्वान और बड़े दानवीर शासक थे। हर याचक को कुछ न कुछ देना वह अपना कर्त्तव्य समझते थे। उनकी विद्वता और दानशीलता दूर-दूर तक चर्चित थी। विद्वानों के साथ-साथ आम लोग भी उनके दरबार में अपनी याचना एवं जिज्ञासा लेकर समय-समय पर उपस्थित होते रहते थे। एक कुम्हार की पत्नी ने राजा भोज की बड़ी प्रशंसा सुनी। वह भी अपनी समस्या का समाधान पाने के लिए साहस करके राजमहल पहुंची। द्वारपाल से निवेदन करते हुए उसने कहा, हे द्वार रक्षक। मैं राजा भोज के दर्शनार्थ आई हूं। कृपया भीतर जाने की अनुमति दीजिए। द्वारपाल ने कहा, तुम्हें राजा भोज से क्या काम है? उसने कहा, अपनी एक समस्या राजा भोज के सामने रखना चाहती हूं आपके सामने नहीं। द्वारपाल सभा में पहुंचा। हाथ जोड़कर बोला, राजन्। किसी कुम्हार की धर्मपत्नी आपके दर्शन करना चाहती है। आपसे कुछ निवेदन करने की भावना लेकर आई है। राजा ने कहा, आने दो। वह आई और नमस्कार कर बोली, हे राजन्। खेत में मिट्टी खोदते समय मेरे पति को धन

मिला है। वह उसी खेत में उस धन की सुरक्षा के लिए पहरा दे रहे हैं। मैं आपके पास सूचना देने के लिए आई हूं। जमीन में गड़ा धन राजा का होता है। इसलिए उसे अपने खजाने के लिए मंगवाएं। राजा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने धन से भरे हुए घड़े को मंगाया। घड़े का मुंह खोलकर देखा। वह रत्नों से भरा था। राजा ने पूछा, हे कुंभकार। ये सब क्या है? कुम्हार बोला, हे राजन्। मेरी समझ में आप साक्षात चंद्रमा स्वरूप हैं। आपको मृत्यु लोक में आया जानकर आकाश के सब तारांगण भी रत्नों की पंक्ति के रूप में आपके पास आए हैं। कुम्हार की ईमानदारी के साथ उसकी विद्वतापूर्ण भाषा ने राजा को विस्मय में डाल दिया। उसने सोचा, यह साधारण व्यक्ति नहीं है, इसकी ईमानदारी प्रेरक है, अनुकरणीय है। यह बड़ा विद्वान भी लगता है। भोज ने वह घड़ा कुम्हार को भेंट में दे दिया।

२१६) मनुष्य की सेवा - एक प्रसिद्ध संत मृत्यु के बाद जब स्वर्ग के दरवाजे पर पहुंचे तो चित्रगुप्त उन्हें रोकते हुए बोले, रुकिए संत जी, अंदर जाने से पहले लेखा-जोखा देखना पड़ता है। चित्रगुप्त की बात संत को अच्छी नहीं लगी। वह बोले, आप यह कैसा व्यवहार कर रहे हैं? बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी मुझे जानते हैं। इस पर चित्रगुप्त बोले, आपको कितने लोग जानते हैं, इसका लेखा-जोखा हमारी बही में नहीं होता, इसमें तो केवल कर्मों का लेखा-जोखा होता है। इसके बाद वह बही लेकर संत के जीवन का पहला हिस्सा देखने लगे। यह देखकर संत बोले, आप मेरे जीवन का दूसरा भाग देखिए क्योंकि जीवन के पहले हिस्से में तो मैंने लोगों की सेवा की है, उनके दु:ख दूर किए हैं। जबकि जीवन के दूसरे हिस्से में मैंने जप-तप और ईश्वर की आराधना की है। दूसरे हिस्से का लेखा जोखा देखने पर आपको वहां पुण्य की चर्चा अवश्य मिलेगी। संत की बात मानकर चित्रगुप्त ने उनके जीवन का दूसरा हिस्सा देखा तो वहां उन्हें कुछ भी नहीं मिला। सब कुछ कोरा था। वह फिर से उनके जीवन के आरंभ से उनका लेखा-जोखा देखने लगे। आरंभ का लेखा जोखा देखकर वह बोले, संत जी, आपका सोचना उल्टा है। आपके अच्छे और पुण्य के कार्यों का लेखा जोखा जीवन के आरंभ में है। यह सुनकर संत आश्चर्यचकित होकर बोले, यह कैसे संभव है? चित्रगुप्त बोले, संत जी, जीवन के पहले हिस्से में आपने मनुष्य की सेवा की, उनके दु:ख-दर्द कम किए। उन्हीं पुण्य के कार्यों के कारण आपको स्वर्ग में स्थान मिला है, जबकि जप-तप और ईश्वर की आराधना आपने अपनी शांति के लिए की है। इसलिए वे पुण्य के कार्य नहीं है। यदि केवल आपके जीवन के दूसरे हिस्से पर विचार किया जाए तो आपको स्वर्ग नहीं मिलेगा। चित्रगुप्त की बात सुनकर संत समझ गए कि जीवन में जप-तप से बड़ा कर्म है सच्चे मन से मनुष्य की सेवा।

२१७) सौंदर्य की खोज - एक व्यक्ति हमेशा परेशान और उद्विग्न सा रहता था। उसकी परेशानी मानसिक थी। उसे सर्वोत्तम सौंदर्य की तलाश थी। एक दिन उसने बिना कुछ कहे-सुने चुपचाप घर छोड़ दिया। वह इधर-उधर भटकता रहता और अपने प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता रहता। इसी तरह बहुत समय बीत गया। एक दिन वह किसी जंगल से गुजर रहा था। वहां उसने एक तपस्वी को साधना करते पाया। वह वहीं ठहर गया। तपस्वी का ध्यान टूटने पर व्यक्ति ने उससे पूछा, सर्वोत्तम सौंदर्य क्या है? तपस्वी का उत्तर था, श्रद्धा ही सबसे सुंदर है, जो मिट्टी को भी भगवान बना देती है। व्यक्ति संतुष्ट नहीं हुआ। यात्रा के अगले पड़ाव पर उसे एक गुणी सज्जन मिले। उसने अपना यह प्रश्न उनके समक्ष रखा तो वह बोले, प्रेम ही सर्वोत्तम सौंदर्य है। प्रेम न हो, तो जीवन की सुंदरता को कुरूपता में बदलते देर

नहीं लगती। व्यक्ति फिर भी संतुष्ट नहीं हुआ। आगे चलकर उसे युद्ध से लौटता सैनिक मिला। सैनिक से पूछने पर उसका उत्तर था, शांति ही सर्वोत्तम सौंदर्य हैं, क्योंकि संघर्ष की भयानक विनाशलीला मैं स्वयं देखकर आ रहा हूं। व्यक्ति अब भी संतुष्ट नहीं था और निराश होकर घर लौट आया। घर के सभी लोग उसकी प्रतीक्षा में व्याकुल हो रहे थे। दुखी पत्नी और आंसू बहाते अपने बच्चों से मिलकर उस व्यक्ति को अपार सुख का अनुभव हुआ। उसने महसूस किया कि आत्मीयता, स्नेह और श्रद्धा का मिला जुला सौंदर्य तो घर में ही था और वह व्यर्थ इन्हें बाहर खोजने का प्रयास कर रहा था। घर अपने आप में सभी सौंदर्य को समेटे हुए है।

२१८) अनोखा फैसला - पुरानी कथा है। चीन में एक विचारक की काफी धूम थी। लोग उससे बेहद प्रभावित थे। राजा ने उसकी तारीफ सुन उसे न्यायाधीश बना दिया। उन्हीं दिनों नगर के सबसे धनवान सेठ के घर में चोरी हो गई। सब जानते थे कि सेठ ने इतनी अकूत संपत्ति बेईमानी व लोगों का शोषण करके इकट्ठा की है। किंतु चोरी तो चोरी थी इसलिए चोर को पकड़ने के लिए अभियान छेड़ा गया। चोर पकड़ा गया। उसने अपनी गलती स्वीकार कर ली। न्यायाधीश ने उसे चोरी के जुर्म में एक साल की सजा सुना दी। चोर को सजा सुनाने के बाद न्यायाधीश ने सेठ की संपत्ति की जांच शुरू करवा दी लेकिन सेठ की दलील थी कि उसने सारी कमाई तिजारत से हासिल की है। उसने किसी का शोषण कर या गलत तरीके से धन अर्जित नहीं किया है। लेकिन न्यायाधीश ने इस बात को नहीं माना। उसने फैसला सुनाते हुए कहा, इस संपत्ति का कुछ हिस्सा चुरानेवाले चोर को तो एक वर्ष की सजा दी गई है मगर इस संपत्ति के मालिक को दो वर्ष की सजा दी जाती है। सेठ ने फैसले पर सवाल उठाया तो न्यायाधीश ने कहा, चोर ने तो चोरी की बात मान ली। उसके हृदय परिवर्तन की गुंजाइश है। लेकिन तुमने तो झूठ बोलकर सही रास्ते पर आने के सारे रास्ते बंद कर लिए हैं। चोर को सजा जरूर मिलनी चाहिए किंतु जब तक केवल चोरों को सजा मिलती रहेगी और आम आदमी का शोषण करनेवाले खुलेआम घूमते रहेंगे तब तक चोरी बंद नहीं होगी। इसलिए तुम्हें सजा सुनाई गई है।

२१९) संपूर्ण सुंदरता - एक बार कुदरत के सातों रंगों के बीच बहस छिड़ गई। प्रत्येक रंग यह साबित करने में लगा था कि वही सबसे श्रेष्ठ है। सबसे पहले हरे रंग ने कहा कि वह जीवन और हरियाली का प्रतीक है, इसलिए ईश्वर ने उसका चयन खास तौर पर पत्तों के रंग के लिए किया है। धरती का एक बड़ा भाग हरियाली से ढका हुआ है। नीले रंग ने उसकी बात काटते हुए कहा, आकाश व समुद्र का रंग नीला है। जल ही जीवन है। नीला जल नीले आकाश के बादलों से होकर नीले समुद्र में समा जाता है। बिना इस चक्र के विकास संभव नहीं, इसलिए मैं तुम सबसे श्रेष्ठ हूं। तब पीला रंग बोला, पीला खुशहाली का प्रतीक है। सूरज पीला है। पीली सूरजमुखी सारी दुनिया में हंसी व खुशी देती है। इसलिए मैं ही सर्वश्रेष्ठ स्थान का अधिकारी हूं। तभी नारंगी रंग ने कहा, मैं मिठास और स्वास्थ्य का प्रतीक हूं। सभी मीठे व लाभकारी फलों पपीता, गाजर, आम व संतरा की छटा नारंगी है। तभी जामुनी रंग ने कहा, श्रेष्ठ तो मैं हूं क्योंकि मैं पानी की गहराई व मन की शांति का प्रतीक हूं। वर्षा ऋतु रंगों की इस सारी बहस को ध्यान से सुन रही थी। वह पास आकर बोली, तुम सभी श्रेष्ठ हो। सभी को ईश्वर ने किसी न किसी खास कारण से बनाया है। लेकिन सर्वश्रेष्ठ है तुम सबका एक साथ होना। रंगों को यह उपदेश जैसी बात अच्छी नहीं लगी, वे तो सिर्फ अपनी तारीफ सुनना चाहते थे। तभी आकाश में जोर से बिजली

कड़की। सभी रंगों ने डर कर एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया और आकाश में बड़ा सा इंद्रधनुष दिखाई देने लगा। रंगों ने देखा, सभी उनकी छटा निहार रहे थे। वर्षा ऋतु ने हंस कर समझाया, तुम सबके अलग अलग प्रशंसक हैं, लेकिन तुम्हारा एक साथ होना संपूर्ण जगत के लिए सुंदरता और जीवन का संदर्श है। इसके बाद रंगों ने कभी एक दूसरे से झगड़ा नहीं किया।

२२०) दोस्ती की राह - एक बार डेल कार्नेगी रेडियो पर लिंकन के विषय में बोलते हुए उनकी जन्मतिथि गलत बता गए। अगले दिन अनेक श्रोताओं के गुस्से से भरे खत उनके पास पहुंचे। एक खत में तो उनके लिए अनेक अपशब्द लिखे थे। नाराज होकर कार्नेगी ने भी उस श्रोता को काफी कड़ा पत्र लिख डाला, लेकिन रात होने के कारण वह खत भेज नहीं पाए। सुबह उन्हें लगा कि खत में बहुत अधिक अपशब्द लिख दिए गए हैं। उन्होंने फिर से खत लिखना शुरू किया। पढ़ने पर उन्होंने पाया कि उस खत में लिखे गए शब्द पहले वाले खत से विनम्र थे। उन्होंने सोचा कि क्यों न एक दिन और रुक जाऊं। अगले दिन उन्होंने सोचा कि उस श्रोता ने जवाब मांगा ही नहीं है तो फिर वह उसे बेवजह नाराजगी भरा खत लिख रहे हैं। उन्होंने खत को रद्दी की टोकरी में डाल दिया। दो तीन बाद उन्हें ख्याल आया कि वह उस श्रोता को अपना मित्र बना सकते हैं। उन्होंने श्रोता को अपनी ओर से दोस्ती भरा पत्र लिखा। जवाब में उस श्रोता ने अपने पहले खत के लिए क्षमा मांगी और कहा कि गलती किसी से भी हो सकती है। इस पर डेल कार्नेगी ने लिखा, समय बीत जाने पर हमारा उबाल कम हो जाता है। इसलिए हमें तत्काल प्रतिक्रिया देने से बचना चाहिए। इससे अनेक अप्रिय स्थितियों और टकरावों को रोका सकता है। यदि मैंने उसी दिन उस पत्र का जवाब दे दिया होता तो मैं एक व्यक्ति को अपना दुश्मन बना बैठता, जबकि आज वह मेरा मित्र है।

२२१) क्रोध पर विजय - एक व्यक्ति के बारे में यह विख्यात था कि उसको कभी क्रोध आता ही नहीं है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें सिर्फ बुरी बातें ही सूझती हैं। ऐसे ही व्यक्तियों में से एक ने निश्चय किया कि उस अक्रोधी सज्जन को उसके रास्ते से न हटाया जाए और वह लग गया अपने काम में। उसने इस प्रकार के लोगों की एक टोली बना ली और उस सज्जन के नौकर से कहा- यदि तुम अपने स्वामी को उत्तेजित कर सको तो तुम्हें पुरस्कार दिया जाएगा। नौकर तैयार हो गया। वह जानता था कि उसके स्वामी को सिकुड़ा हुआ बिस्तर ठीक ही नहीं लगता है, अत: उसने उस रात बिस्तर ठीक ही नहीं किया। प्रात:काल होने पर स्वामी ने नौकर से केवल इतना कहा- कल बिस्तर ठीक था। सेवक ने बहाना बना दिया और कहा- मैं ठीक करना भूल गया था। भूल तो नौकर ने की नहीं थी, अत: सुधरती कैसे? इसलिए दूसरे, तीसरे और चौथे दिन भी बिस्तर ठीक नहीं बिछा। तब स्वामी ने नौकर से कहा- लगता है कि तुम बिस्तर ठीक करने के काम से ऊब गए हो और चाहते हो कि मेरा यह स्वभाव छूट जाए। कोई बात नहीं। अब मुझे सिकुड़े हुए बिस्तर पर सोने की आदत पड़ती जा रही है। अब तो नौकर ने ही नहीं, बल्कि उन धूर्तों ने भी हार मान ली।

२२२) अज्ञात भय - दो शहरी लड़के रास्ता भूल गए। अंधेरा बढ़ रहा था, अत: मजबूरन उन्हें एक सराय में रूकना पड़ा। आधी रात को एकाएक उनकी नींद उचट गई। उन्होंने पास के कमरे से आती हुई एक आवाज को सुना-कल सुबह एक हंडे में पानी खौला देना। मैं उन दोनों बच्चों का वध करना चाहता हूं।

दोनों लड़कों का डर के कारण खून जम गया। हे भगवान। वे बुदबुदाए, इस सराय का मालिक तो हत्यारा है। तुरंत

उन्होंने वहाँ से भाग जाने का निश्चय किया। कमरे की खिड़की से वे बाहर कूद गए। पर बाहर पहुंचकर उन्होंने पाया कि बाहर दरवाजे पर ताला लगा हुआ है। अंत में उन्होंने सूअरों के बाड़े में छिपने का निर्णय किया।

रात भर उन्होंने जागते हुए बिताई। सुबह सराय का मालिक सूअरों के बाड़े में आया। बड़ा सा छुरा तेज किया और पुकारा- आ जाओ मेरे प्यारे बच्चो, तुम्हारा आखिरी वक्त आ पहुंचा है।

दोनों लड़के भय से काँपते हुए सराय के मालिक के पैरों पर गिर पड़े और गिड़गिड़ाने लगे। सराय का मालिक यह देखकर चकित रह गया। फिर पूछा, बात क्या है?

हमने रात में आपको किसी से कहते सुना था कि सुबह आप हमें मौत के घाट उतारनेवाले हैं। लड़कों ने जवाब दिया। सराय का मालिक ये सुनकर हँसा, बेवकूफ लड़कों। मैं तुम लोगों के बारे में नहीं कह रहा था। मैंने तो दो नन्हें सूअरों के बारे में कहा था, जिन्हें मैं इसी तरह पुकारता हूँ। पूरी बात जाने बिना दूसरों की बातों पर कभी यकीन नहीं करना चाहिए।

२२३) श्रद्धा जाग गई तो कठिन काम भी आसान हो जाता है - राम के साथ विश्वामित्र मिथिला जा रहे थे। जब वे नदी के उस पार पहुंचे तो नाविक को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी नाव राम के पवित्र चरणों के स्पर्श से सोने की हो गई है। आश्चर्यचकित नाविक के मुंह से निकल पड़ा, यह कैसा आश्चर्य। अवश्य ही यह अलौकिक महापुरुष है। वह दौड़कर अपने घर गया और उसने अपनी पत्नी को इस विचित्र घटना के विषय में बताया।

उसकी पत्नी इस चमत्कार की बात सुनकर खुशी से झूम उठी। फिर जितना भी सामान वह अपने घर से ला सकती थी, उठाकर लाने लगी। सामान लाती और उसे राम के चरणों के पास रख देती। उसने सोचा कि वह सारा सामान भी सोने में बदल जाएगा। लेकिन घर का ढेर सारा सामान उठाकर लाते लाते वह थक गई। हालत यह हो गई कि सामान ढोते ढोते उसके सारे शरीर में दर्द होने लगा। यह देखकर नाविक ने अपनी पत्नी से कहा, अब तुम यह मूर्खता बंद करो। आखिर यह बोझ तुम कब तक ढोती रहोगी? सोने के प्रति तुम्हारा लोभ कभी समाप्त नहीं होगा। कहीं तुम इस बोझ में ही दबी न रह जाओ। घर से सामान उठा उठा कर लाने की जगह तुम उन चरणों को ही क्यों अपने घर नहीं ले जातीं। नाविक की पत्नी को यह बात जंच गई। वह तुरंत राम के पास दौड़ी गई और बोली, आपको मेरे घर पधारना होगा।

पहले तो राम कुछ झिझके, किंतु फिर उसके आग्रह को देखकर तैयार हो गए। उसके घर जाने के लिए वह नाव में बैठ गए। उसी पल न जाने क्या हुआ कि नाविक की पत्नी सब कुछ सोने में बदलने की अपनी उस इच्छा को ही भूल गई। वह राम के चरण कमलों के ध्यान में ही डूबी रह गई। नाविक-पत्नी ने राम से प्रार्थना की, मेरे घर आने के अवसर पर आप मुझे कुछ देने की कृपा करें। राम ने उसे चार फल दिए। नाविक पत्नी ने उन चारों फलों के बारे में जानना चाहा- वे क्या हैं, वे कहां पैदा हुए, उनके प्रतीकात्मक अर्थ क्या हैं और उनके नाम क्या हैं? लक्ष्मण ने उसे समझाया, ये चारों फल काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष हैं। उन्होंने यह भी कहा कि राम के युगल-चरणों की प्राप्ति के बाद फिर उनका कोई अर्थ नहीं है। क्योंकि जिन्हें चरणकमलों की प्राप्ति हो गई उनके पास तो वह सब अपने आप आ ही जाएंगे। उनके लिए चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

जो सच्चे भक्त हैं, उन्हें इन चारों वर्गों की प्राप्ति के लिए चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। भक्त में अगर श्रद्धा जाग

गई तो उसका कठिन से कठिन काम भी आसान हो जाता है। इसलिए श्रद्धा के बिना भक्ति नहीं जाग सकती।

२२४) योद्धा वह है जो दूसरों से नहीं, अपने आप से युद्ध करता है - एक राजा की एक आंख खराब थी। वह अपना चित्र बनवाना चाहता था। इस काम के लिए उसने चित्रकार को दस हजार रुपये का पुरस्कार देने की घोषणा की। तीन चित्रकारों ने राजमहल जाकर राजा के चित्र बनाए। पहले चित्रकार ने सुंदरता को महत्व दिया। उसने राजा को अपने चित्र में दोनों आंखों से देखनेवाला दिखाया। दूसरे चित्रकार ने सत्य को महत्व देते हुए राजा की खराब आंख दिखाई। तीसरे चित्रकार ने सत्य और सुंदर का समन्वय करते हुए ऐसा चित्र बनाया जिसमें राजा धनुष पर बाण चढ़ाए अपने लक्ष्य पर निशाना साध रहे हैं। इस आकृति में न राजा की आंख की खराबी छुपाई गई और न दिखाई गई। राजा ने तीसरे चित्र को मान्य घोषित किया और उसके चित्रकार को पुरस्कृत और सम्मानित किया।

२२५) नये साल का तोहफा - एक दिन एक बच्चा पालतू जानवरों की दुकान पर एक पिल्ला खरीदने गया। वहां चार पिल्ले लाइन से बैठे थे। उनमें प्रत्येक की कीमत ५० डॉलर थी, लेकिन एक पिल्ला कोने में अकेला बैठा हुआ था। बच्चे ने पूछा, क्या वह भी बिकाऊ है और अकेला क्यों बैठा हुआ है। दुकानदार ने जवाब दिया, वह उन्हीं में से एक है, लेकिन अपाहिज है और बिकाऊ नहीं है। बच्चे ने पूछा, उसमें क्या कमी है। दुकानदार ने कहा, इस पिल्ले की एक टांग खराब है। बच्चे ने पूछा, फिर आप इसके साथ क्या करोगे। जवाब था, इसे हमेशा के लिए सुला दिया जाएगा। बच्चे ने पूछा, क्या मैं उस पिल्ले के साथ खेल सकता हूं। दुकानदार ने कहा, हां बिल्कुल।

बच्चे ने उस पिल्ले को उठाया और वह पिल्ला उसके कान चाटने लगा। उसी समय बच्चे ने तय किया कि वह उसी पिल्ले को खरीदेगा। दुकानदार ने उससे कहा, पर यह पिल्ला बिकाऊ नहीं है। लेकिन बच्चा उसे खरीदने की जिद पर अड़ा रहा। आखिरकार दुकानदार उसे ५० डॉलर में वह पिल्ला बेचने को राजी हो गया। बच्चे ने जेब से दो डॉलर निकाले और बाकी के ४८ डॉलर माँ से लेने दौड़ा। जैसे ही डॉलर लेकर वह दुकान पर लौटा, दुकानदार ने फिर उससे कहा, मेरी समझ नहीं आया, आखिर तुम इस अपाहिज पिल्ले के लिए इतने डॉलर क्यों खर्च कर रहे हो जबकि तुम इसी कीमत में एक अच्छा पिल्ला खरीद सकते हो।

बच्चे ने एक शब्द भी नहीं कहा। उसने अपने बाएं पैर से पैंट उठाई। उसकी कृत्रिम टांग दिखने लगी। यह देख दुकानदार ने कहा, मैं तुम्हारे दर्द और इस मूक प्राणी की पीड़ा को समझ सकता हूं। तुम्हारी भावना और प्यार की कद्र करता हूं। तुम इस पिल्ले को मुफ्त में ही ले जा सकते हो। यह मेरी ओर से तुम्हारे लिए नये साल का तोहफा है।

२२६) बड़ों की सख्ती से बनती है जिन्दगी - कक्षा ६ के बच्चे बड़े उत्साहित थे, इस बार उन्हें पिकनिक पर पास के वाइल्डलाइफ नेशनल पार्क ले जाया जा रहा था। तय दिन सभी बच्चे ढेर सारे खाने-पीने के सामान और खेलने-कूदने की चीजें लेकर तैयार थे। बस सुबह चार बजे निकली और २-३ घंटों में नेशनल पार्क पहुंच गई। वहां उन्हें एक बड़ी सी कैंटर में बैठा दिया गया और एक गाइड उन्हें जंगल के भीतर ले जाने लगा।

मास्टर जी भी बच्चों के साथ थे और बीच-बीच में उन्हें जंगल और वन्य जीवों के बारे में बता रहे थे। बच्चों को बहुत मजा आ रहा था। वे ढेर सारे हिरनों, बंदरों और जंगली पक्षियों को देखकर रोमांचित हो रहे थे। वे धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे

थे कि तभी गाइड ने सभी को शांत होने का इशारा करते हुए कहा, आप लोग बिलकुल चुप हो जाइए और उस तरफ देखिए। यह एक दुर्लक्ष दृश्य है, एक मादा जिराफ अपने बच्चे को जन्म दे रही है फिर क्या था। गाड़ी वहीं रोक दी गई और सभी बड़ी उत्सुकता से वह दृश्य देखने लगे। मादा जिराफ बहुत लंबी थी और जन्म लेते हुए बच्चा करीब दस फुट की ऊंचाई से जमीन पर गिरा और गिरते ही अपने पांव अंदर की तरफ मोड़ लिए, मानो वो अभी भी अपनी मां की कोख में ही है। इसके बाद मां ने सर झुकाया और बच्चे को देखने लगी। सभी लोग बड़ी उत्सुकता से ये सब होते देख रहे थे कि अचानक ही कुछ अप्रत्याशित सा घटा, मां ने बच्चे को जोर से एक लात मारी और बच्चा अपनी जगह से पलट गया।

कैंटर में बैठे बच्चे मास्टर जी से कहने लगे, सर, आप उस जिराफ को रोकिए नहीं तो वो बच्चे को मार डालेगी पर मास्टर जी ने उन्हें शांत रहने को कहा और पुन: उस तरफ देखने लगे। बच्चा अभी भी जमीन पर पड़ा हुआ था कि तभी एक बार फिर मां ने उसे जोर से लात मारी। इस बार बच्चा उठ खड़ा हुआ और डगमगा कर चलने लगा। धीरे-धीरे मां और बच्चा झाड़ियों में ओझल हो गए।

उनके जाते ही बच्चों ने पूछा, सर, वो जिराफ अपने ही बच्चे को लात क्यों मार रही थी अगर बच्चे को कुछ हो जाता तो? मास्टर जी बोले, बच्चों, जंगल में शेर-चीतों जैसे बहुत से खूंखार जानवर होते हैं। यहां किसी बच्चे का जीवन इसी बात पर निर्भर करता है कि वो कितनी जल्दी अपने पैरों पर चलना सीख लेता है। अगर उसकी मां उसे इसी तरह पड़े रहने देती और लात नहीं मारती तो शायद वो अभी भी वहीं पड़ा रहता और कोई जंगली जानवर उसे अपना शिकार बना लेता।

बच्चों, ठीक इसी तरह से आपके माता-पिता भी कई बार आपको डांटने डपटते हैं, उस वक्त तो ये सब बहुत बुरा लगता है, पर जब आप बाद में पीछे मुड़कर देखते हैं तो कहीं न कहीं ये एहसास होता है कि मम्मी-पापा की डांट की वजह से ही आप जीवन में कुछ बन पाए हैं। इसलिए कभी भी अपने बड़ों की सख्ती को दिल से ना लें, बल्कि उसके पीछे जो आपका भला करने की उनकी मंशा है उसके बारे में सोचें।

२२७) मेहनत का फल - एक गरीब विधवा थी। वह बड़ी नेक, मेहनती, ईमानदार और सच बोलनेवाली महिला थी। उसका एक बारह वर्षीय पुत्र था। उसका नाम कपिल था। कपिल अपनी मां को बहुत प्यार करता था। मां हमेशा उसे अच्छे काम करने की शिक्षा देती थी। कुछ बातें तो ऐसी थी जिन्हें कपिल ने मां की शिक्षा मानकर बचपन से ही अपने जीवन में उतार लिया था। जैसे काम से कभी जी न चुराना, कड़ी मेहनत करना, किसी को हानि न पहुंचाना, अपने बड़ों का आदर सम्मान करना और समय का मूल्य समझना आदि।

एक दिन कपिल गली में अपने साथियों के साथ क्रिकेट खेल रहा था। बाल उसके हाथ में थी। उसने बाल तेजी से उछाल कर फेंकी तो हाथ बहक जाने के कारण बाल सामनेवाली दुकान के शोकेस पर जा लगी। शीशा टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। यह देखकर सारे साथी पिटाई के डर से भाग गये। कपिल अकेला रह गया, वह नहीं भागा। दुकान का मालिक गुस्से में भरा हुआ कपिल के पास आया और बोला- शीशा किसने तोड़ा है? अंकल, गेंद गलती से मेरे हाथ से छूटकर उस ओर चली गई जिस कारण शीशा टूट गया। इसके लिए मैं ही दोषी हूं। कपिल ने कहा।

अब इसका मूल्य क्या तेरा बाप चुकाएगा? मेरा बाप जीवित नहीं है। गरीब मां है। मैं शीशे का मूल्य चुकाने के लिए

आप के यहां मजदूरी करने के लिए तैयार हूं। कपिल ने बड़ी नम्रता से कहा। दुकानदार का क्रोध शांत हुआ। उसने नुकसान के बदले में कपिल को एक सप्ताह तक दुकान पर मजदूरी करने के लिए कहा। कपिल ने दुकान पर एक सप्ताह तक सहर्ष मजदूरी करना स्वीकार कर लिया। कपिल ने एक सप्ताह तक पूरी मेहनत, लगन और मुस्तैदी से दुकान पर काम किया। उसके हंसमुख स्वभाव और मीठी बोली से ग्राहक भी प्रभावित हुए। कपिल के एक सप्ताह के काम से दुकानदार भी बड़ा प्रभावित हुआ। उसने उसे स्थायी रूप से अपने यही नौकर रख लिया। दुकानदार ने जब देखा कि कपिल को पढ़ने-लिखने का बड़ा चाव है तो उसने उसके लिए यह व्यवस्था भी कर दी।

कपिल पढ़ता भी रहा और दुकान के कामों को भी बिना किसी रुकावट के बखूबी निपटाता रहा। कपिल के सद्‌गुणों, मेहनत और काम करने के ढंग से व्यापार इतना बढ़ गया कि हजारों का व्यापार लाखों में होने लगा था। दुकानदार बढ़ती आयु के कारण अधिक काम-काज नहीं कर पाता था। सब कुछ कपिल ने ही संभाल रखा था। अपने अथक परिश्रम और ईमानदारी के कारण उसने मालिक का इतना मन मोह लिया था कि उसने उसे दुकान में अपना साझीदार ही बना लिया था। कुछ ही समय में कपिल एक संपन्न व्यक्ति बन गया। अपने जीवन की सफलता का सारा श्रेय वह अपनी मां को ही देता था।

२२८) भगवान की माया - एक अमीर आदमी था। उसने समुद्र में अकेले घूमने के लिए एक नाव बनवाई। छुट्टी के दिन वह नाव लेकर समुद्र की सैर करने निकला। आधे समुद्र तक पहुंचा ही था कि अचानक एक जोरदार तूफान आया। उसकी नाव पूरी तरह से तहस-नहस हो गई लेकिन वह लाइफ जैकेट की मदद से समुद्र में कूद गया।

जब तूफान शांत हुआ तब वह तैरता तैरता एक टापू पर पहुंचा लेकिन वहां भी कोई नहीं था। टापू के चारों ओर समुद्र के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उस आदमी ने सोचा कि जब मैंने पूरी जिंदगी में किसी का कभी भी बुरा नहीं किया तो मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? उस आदमी को लगा कि भगवान ने मौत से बचाया तो आगे का रास्ता भी भगवान ही बताएगा। धीरे-धीरे वह वहां पर उगे झाड़-पत्ते खाकर दिन बिताने लगा। अब धीरे-धीरे उसकी श्रद्धा टूटने लगी, भगवान पर से उसका विश्वास उठ गया। उसको लगा कि इस दुनिया में भगवान है ही नहीं। फिर उसने सोचा कि अब पूरी जिंदगी यहीं इस टापू पर ही बितानी है तो क्यों ना एक झोपड़ी बना लूं?

फिर उसने झाड़ की डालियों और पत्तों से एक छोटी सी झोपड़ी बनाई। उसने मन ही मन कहा कि आज से झोपड़ी में सोने को मिलेगा, आज से बाहर नहीं सोना पड़ेगा।

रात हुई ही थी कि अचानक मौसम बदला बिजलियां जोर-जोर से कड़कने लगीं। तभी अचानक एक बिजली उस झोपड़ी पर आ गिरी और झोपड़ी धधकते हुए जलने लगी। यही देखकर वह आदमी टूट गया, आसमान की तरफ देखकर बोला, तू भगवान नहीं, राक्षस है। तुझमें दया जैसा कुछ है ही नहीं। तू बहुत क्रूर है।

वह व्यक्ति हताश होकर सिर पर हाथ रखकर रो रहा था कि अचानक एक नाव टापू के पास आई। नाव से उतरकर दो आदमी बाहर आये और बोले कि हम तुम्हें बचाने आये हैं। दूर से इस वीरान टापू पर जलता हुआ झोपड़ा देखा तो लगा कि कोई उस टापू पर मुसीबत में है। अगर तुम अपनी झोपड़ी नहीं जलाते तो हमें पता नहीं चलता कि टापू पर कोई है।

उस आदमी की आंखों से आंसू गिरने लगे। उसने ईश्वर से माफी मांगी और बोला कि मुझे क्या पता कि आपने मुझे बचाने के लिए मेरी झोपड़ी जलाई थी। दिन चाहे सुख के हों या दुख के, भगवान अपने भक्तों के साथ हमेशा रहते हैं।

२२९) घर की हकीकत - शायर जिगर मुरादाबादी बहुत ही उदार और दयालु थे। दूसरों की मदद के लिए वह हर समय तैयार रहते थे। अपने इस स्वभाव के चलते वह काफी लोकप्रिय भी हो गए। एक बार वह अपने एक मित्र के साथ कहीं जा रहे थे। दोस्त ने देखा कि एक व्यक्ति उन्हें देखकर आंखें चुरा रहा है। दोस्त ने कहा- हजरत। माजरा क्या है? वह आदमी आपको देखकर इस तरह झेंप कर आंखें क्यों चुरा रहा था? अगर वह आपको जानता था तो सामने क्यों नहीं आया। कम से कम आपसे दुआ सलाम तो करता। और जनाब आप भी कैसे हैं, उसे कुछ नहीं बोले। आप उसे जानते हैं क्या?

जिगर मुरादाबादी बोले- अच्छी तरह जानता हूं उसे। हकीकत यह है कि एक दिन इस आदमी ने मेरी जेब से पैसे चुरा लिए थे। इसलिए मुझे पहचान कर भी कुछ झेंप रहा था। मित्र ने कहा, जब तुम्हें पता चल गया कि यह वही है, तो तुमने मुझे क्यों नहीं बताया? मैं उसी वक्त उसकी खबर जरूर लेता। मुरादाबादी ने हंसकर कहा- अरे भाई, अब तुम्हें क्या बताऊं? मैं तो खुद उसकी खबर लेने के लिए गया था। उसके घर ही जा पहुंचा था। पर वहां जाकर जो देखा, उसे बता पाना मेरे लिए जरा मुश्किल है। क्या बताऊं, उसके घर की हालत किस कदर खराब थी। उसके पत्नी और बच्चों के पास खाने तक को कुछ नहीं था। अब तुम ही बताओ भला मैं क्या करता। मैं चुपचाप वहां से लौट आया। जिगर मुरादाबादी का दोस्त यह सुनकर हैरान हो गया। अब उसके भीतर मुरादाबादी साहब के लिए इज्जत में और इजाफा हो गया। उसे लगा, असल इंसान वही होता है, जो दूसरों की मुसीबत समझे।

२३०) गलती का अहसास - उन दिनों ईश्वरचंद्र विद्यासागर एक संस्कृत कॉलेज के आचार्य थे। एक बार उन्हें किसी काम से प्रेसीडेंसी कॉलेज के अंग्रेज आचार्य कैर से मिलने जाना पड़ा। कैर भारतीयों से घृणा करते थे। जिस समय ईश्वरचंद्र उनके पास पहुंचे, वह मेज पर जूते रख पैर फैलाकर बैठे हुए थे। ईश्वरचंद्र को देखकर भी न तो वह उनके सम्मान में खड़े हुए और न ही उनके अभिवादन का जवाब दिया। ईश्वरचंद्र ने उस समय तो कुछ नहीं कहा। लेकिन तय कर लिया कि कैर को उसकी गलती का अहसास अवश्य कराएंगे। संयोगवश कुछ ही समय बाद कैर को ईश्वरचंद्र से एक काम पड़ गया। वह उनके पास पहुंचे। कैर को अपने पास आते देख, उन्होंने चप्पलें पहनीं और मेज पर पैर फैलाकर बैठ गए। कैर एकदम सामने आ खड़े हुए, फिर भी उन्होंने बैठने के लिए नहीं कहा। यह देखकर कैर गुस्से से तिलमिला गए और उन्होंने इस दुर्व्यवहार की शिकायत लिखित में शिक्षा परिषद के सचिव डॉ. मुआट से कर दी। मुआट ईश्वरचंद्र विद्यासागर को भली-भांति जानते थे। फिर भी उन्होंने इस सिलसिले में उन्हें पूछताछ के लिए बुलाया और कैर की शिकायत का जिक्र किया। कैर वहीं सामने गर्व से सेना तान कर खड़े थे। डॉ. मुआट की बात सुनकर ईश्वरचंद्र बोले, हम भारतीय लोग तो अंग्रेजों से ही शिष्टाचार सीखते हैं। जब मैं कैर से मिलने गया तो ये जूते पहनकर आराम से मेज पर पैर फैलाकर बैठे थे और इन्होंने इसी अंदाज में मेरा स्वागत किया था। मुझे लगा कि शायद यूरोपीय शिष्टाचार ऐसा ही होता है। यह सुनकर कैर बहुत शर्मिंदा हो गए और उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया।

२३१) एक बड़ा सबक - तर्कशास्त्री पं. रामनाथ एक छोटे से गुरुकुल में छात्रों को पढ़ाते थे। कृष्णनगर के राजा शिवचंद्र को यह पता लगा तो उन्हें बहुत दुख हुआ कि ऐसा महान विद्वान भी गरीबी में रह रहा है। एक दिन वह स्वयं

पंडितजी से मिलने उनकी कुटिया में जा पहुंचे और बोले- पंडित जी, मैं आपकी कुछ सहायता करना चाहता हूं। पं. रामनाथ ने कहा- राजन्, भगवान की कृपा ने मेरे सारे अभाव मिटा दिए हैं। मुझे अब कोई आवश्यकता नहीं रही। राजा बोले- मैं घर खर्च के बारे में पूछ रहा हूं। हो सकता है उसमें कुछ परेशानी होती हो। उन्हें जवाब मिला- इस बारे में तो गृहस्वामिनी अधिक जानती हैं। आप उन्हीं से पूछ लें। यह सुनकर राजा गृहिणी के पास जा पहुंचे- माता, आपके घर के खर्च के लिए कोई कमी तो नहीं? गृहिणी का जवाब था- भला सर्व-समर्थ परमेश्वर के रहते उनके भक्तों को क्या कमी रह सकती है। पहनने को कपड़े हैं। सोने को बिछौना है। पानी रखने के लिए मिट्टी का घड़ा है। भोजन की खातिर विद्यार्थी सीधा ले आते हैं। बाहर खड़ी चौलाई का साग हो जाता है। इससे अधिक की जरूरत भी क्या है? राजा श्रद्धावनत हो गए, फिर भी बोले- हम चाहते हैं कि आपको कुछ गांवों की जागीर प्रदान करें। इससे आपको भी अभाव नहीं रहेगा और गुरुकुल भी ठीक से चलता रहेगा। राजा की यह बात सुनकर वृद्धा गृहिणी मुस्कराई- इस संसार में परमात्मा ने हर मनुष्य को जीवन रूपी जागीर दे रखी है। जो इसे अच्छी तरह से संभालना सीख लेता है, उसे फिर किसी चीज का अभाव नहीं रह जाता। यह सुन राजा का मस्तक झुक गया। आज उन्हें एक बड़ा सबक मिल गया था।

२३२) मनुष्य के प्रकार - एक दिन सुबह के समय परमहंस देव अपने शिष्यों के साथ टहल रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि पास ही कुछ मछुआरे जाल फेंककर मछलियां पकड़ रहे हैं। अचानक एक मछुआरे के पास पहुंचकर वे खड़े हो गए और अपने शिष्यों से बोले, इस जाल में फंसी मछलियों की गतिविधियां तुम लोग गौर से देखो। शिष्यों ने देखा कि कुछ मछलियां ऐसी हैं जो जाल में निश्चल पड़ी हैं। वे निकलने की कोई कोशिश भी नहीं कर रही हैं, जबकि कुछ मछलियां जाल से निकलने की कोशिश करती रहीं, किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली और कुछ जाल से मुक्त होकर फिर से जल में खेलने में मगन हैं। जब परमहंस ने देखा कि शिष्य मछलियों को देखने में मगन होकर दूर निकल गए हैं, तो फिर उन्हें अपने पास बुला लिया। शिष्य आ गए तो कहा, जिस प्रकार मछलियां मुख्यत: तीन प्रकार की होती हैं, वैसे ही अधिकतर मनुष्य भी तीन प्रकार के होते हैं। एक श्रेणी उन मनुष्यों की होती है, जिनकी आत्मा ने बंधन स्वीकार कर लिया है। अब वे इस भवजाल से निकलने की बात ही नहीं सोचते। दूसरी श्रेणी ऐसे व्यक्तियों की है, जो वीरों की तरह प्रयत्न तो करते हैं पर मुक्ति से वंचित रहते हैं। तीसरी श्रेणी उन लोगों की है जो प्रयत्न द्वारा अंतत: मुक्ति पा ही लेते हैं। लेकिन दोनों में एक श्रेणी और होती है जो खुद को बचाए रहती है। एक शिष्य ने पूछा, गुरुदेव, वह श्रैणी कैसी है? परमहंस देव बोले, हां, वह बड़ी महत्वपूर्ण है। इस श्रेणी के मनुष्य उन मछलियों जैसे हैं जो जाल के पास नहीं आतीं। और जब वे पास ही नहीं आतीं, तो फंसने का प्रश्न ही नहीं उठता।

२३३) लोग समस्याएं बताने लगे और मंत्री का भेद खुल गया - एक दिन राजा कृष्णदेव राय शिकार के लिए गये। वे जंगल में भटक गये। दरबारी पीछे छूट गये। शाम होने को थी। उन्होंने पास के एक गांव में रात बिताने का तय किया। राहगीर के वेश में किसान के पास गये। कहा, दूर से आया हूं, रात को आश्रय मिल सकता है? किसान बोला- जो रुखा-सूखा हम खाते हैं, क्या आप खाइयेगा? मेरे पास एक पुराना कंबल ही है, क्या उसमें जाड़े की रात काट सकेंगे? राजा ने हां में सिर हिलाया। रात को राजा गांव में घूमे। बहुत गरीबी दिखी। उन्होंने पूछा- दरबार में जाकर फरियाद क्यों

नहीं करते? कैसे जायें? राजा तो चापलूसों से घिरे रहते हैं। कोई हमें दरबार में जाने ही नहीं देता। किसान बोला।

सुबह राजधानी लौटते ही राजा ने मंत्री को बुलाया। कहा- हमारे राज्य के गांवों की हालत ठीक नहीं हैं। तुम गांवों की भलाई के काम करने के लिए खजाने से काफी रुपया ले चुके हो। क्या हुआ उसका? मंत्री बोला- महाराज, सारा धन उसी काम में खर्च हुआ है। आपसे किसी ने गलत कहा। मंत्री के जाने के बाद उन्होंने तेनालीराम को बुलाकर कल की पूरी घटना सुनायी। तेनालीराम- महाराज, अब आपको ही जनता के दरबार में जाकर उनका फैसला करना चाहिए। अगले दिन राजा ने घोषणा की- कल से हम गांव-गांव जायेंगे, यह देखने के लिए कि प्रजा किस हाल में जी रही है।

मंत्री- महाराज, लोग खुशहाल हैं। आप बेकार में परेशान होंगे। तेनालीराम- मंत्री जी से ज्यादा प्रजा का भला चाहनेवाला और कौन होगा? मगर आप भी तो प्रजा की खुशहाली देखिए।

मंत्री ने राजा को पास के गांव दिखाने चाहे, पर राजा ने दूर के गावों की ओर घोड़ा मोड़ दिया। राजा को सामने पाकर लोग खुलकर समस्याएं बताने लगे। मंत्री के कारनामे का सारा भेद खुल चुका था। राजा ने घोषणा की अब हर माह कम से कम एक बार वे खुद जनता के बीच जाकर उनकी समस्याओं का समाधान करेंगे।

२३४) मातृ भक्ति - किसी समय चीन में हो-लीन नाम का एक नौजवान रहता था। वह अपनी मां का परमभक्त था। बूढ़ी मां की सेवा भक्ति-भाव से किया करता था। मां को किस समय, किस चीज की जरूरत पड़ेगी, इसका वह पूरा ख्याल रखता था। एक बार हो-लीन के घर में एक चोर घुसा। चोर के घुसते ही हो-लीन की नींद खुल गई, लेकिन चोर ताकतवर था। उसने हो-लीन को एक खम्बे से कसकर बांध दिया। पास ही के कमरे में मां सोई थी। इस सारे झमेले में कहीं मां की नींद न खुल जाय, इस ख्याल से हो-लीन चुप ही रहा। चोर ने उस कमरे में पड़ी एक पेटी खोली और वह सामान निकालने लगा। उसने हो-लीन का रेशमी कोट निकाला और एक चादर बिछाकर उस पर रख दिया। इस तरह वह एक के बाद एक सामान निकालकर और रखता गया। हो-लीन सब कुछ चुपचाप देखता रहा। इस बीच चोर ने पेटी में से ताम्बे का एक तसला बाहर निकला। उसे देखकर हो-लीन का गला भर आया और उसने कहा, भाईसाहब, मेहरबानी करके यह करके यह तसला यहीं रहने दीजिये। मुझे सुबह ही अपनी मां के लिए दलिया बनाना होगा और मां को देना होगा। तसला न रहा तो बूढ़ी मां को दलिए के बिना रह जाना पड़ेगा। यह सुनते ही चोर के हाथ से तसला छूट गया। उसने भर्राई हुई आवाज में कहा, मेरे प्यारे मित्र, तसला ही नहीं, बल्कि तेरा सारा सामान मैं यहीं छोड़े जा रहा हूं। तेरे जैसा मातृ-भक्त के घर से मैं तनिक-सी भी कोई चीज ले जाऊंगा तो मेरा सत्यानाश हो जायेगा। तेरे घर की कोई चीज मुझे हजम नहीं होगी। ऐसा कहकर और हो-लीन को बन्धन से मुक्त करके वह चोर धीमे पैरों वहां से चला गया।

२३५) कई बार झूठ से भी बुरा होता है सच - एक जहाज पर बहुत सारे नाविक थे। वहां यह व्यवस्था थी कि हर नाविक बारी-बारी से एक-एक दिन बाकी साथियों के बारे में रिपोर्ट तैयार करता था। एक बार एक नाविक ने रात में शराब पी ली। उस दिन के प्रभारी ने लिखा कि फलां नाविक ने आज रात शराब पी। अगले दिन जब नाविक को अपनी गलती का अहसास हुआ, तो वह अपने उस साथी के पास जाकर उससे गुजारिश करने लगा कि वह अपनी रिपोर्ट में थोड़ा संशोधन कर दे। नाविक का कहना था कि तीन साल के सेवाकाल में उसने पहली बार शराब पी थी, इसलिए रिपोर्ट में इस

बात का उल्लेख भी होना चाहिए कि ऐसा तीन साल में पहली बार हुआ है। ऐसा न लिखे जाने पर मालिकों के सामने उसकी छवि खराब होगी। लेकिन उसके साथी ने यह कहते हुए कुछ भी जोड़ने से मना कर दिया कि मैंने जो लिखा है वह अगर सच न हो, तब कुछ बोलो। बेचारा नाविक, अपना सा मुंह लेकर चला गया।

संयोग से कुछ दिनों बाद उसे ही प्रभारी के रूप में रिपोर्ट तैयार करनी थी। वह बदला लेने के लिए तैयार था, लेकिन दूसरा नाविक (जो पहले प्रभारी रहा था) अतिरिक्त तौर पर सतर्क उसने उस दिन कोई गलत हरकत नहीं की। लेकिन जब दूसरे दिन उसने रिपोर्ट देखी, तो उसके हाथों के तोते उड़ गए। उसकी रिपोर्ट में लिखा था- आज तो फलां नाविक के व्यवहार और क्रियाकलापों में कोई बुराई नजर नहीं आई। इसका यह भी मतलब निकाला जा सकता था कि वह नाविक बाकी दिनों में गड़बड़ करता रहता है, लेकिन उस दिन वह ठीक-ठाक रहा। वह भागा-भागा प्रभारी के पास पहुंचा और उससे रिपोर्ट के शब्द बदलने की मिन्नतें करने लगा। लेकिन प्रभारी ने उसे उसका ही वाक्य सुना दिया- मैंने जो लिखा है वह अगर सच न हो, तब कुछ बोलो।

सच है कि अधूरा सत्य पूरे झूठ भी ज्यादा खतरनाक हो सकता है। शातिर लोग आधे सच का इस्तेमाल कर दूसरों का बुरा करने की कोशिश करते हैं, लेकिन वे भूल जाते हैं कि इसमें वे खुद भी फंसाए जा सकते हैं।

२३६) त्याग में सुख - भगवान बुद्ध के पास सम्राट श्रोणिक आए और पूछा, भंते, हमारे राजकुमार, जिन्हें बहुत अच्छा भोजन मिलता है, जिन्हें हर तरह की सुविधाएं हैं, जो बड़े आवास में रहते हैं, जिनके साथ नौकर-चाकरों की पूरी फौज है, फिर भी वे प्रसन्न नहीं रहतें और आपके ये भिक्षु जो पदयात्रा करते हैं, निरंतर भ्रमण करते हैं, खाने को जैसा मिल जाता है, खा लेते हैं। रहने को जो कुटिया मिल जाए, वहां रह लेते हैं, फिर भी इनके चेहरे पर हमेशा इतनी प्रसन्नता रहती है। इसका कारण क्या है? भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया, प्रसन्नता खोजनी हो तो अकिंचन (जिसके पास कुछ भी न हो) में खोजो। जिसने संकल्प पूर्वक सब कुछ छोड़ दिया, वही प्रसन्न रह सकता है। भिखारी कभी प्रसन्न नहीं होगा, क्योंकि उसने छोड़ा नहीं है। वह तो अभाव में ही जीवन जी रहा है। अभाव का जीवन जीनेवाला प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे चिंताएं हर क्षण घेरे रहती हैं। जिसने जानबूझ कर छोड़ा है, वह प्रसन्न रह सकता है। ये दो बातें हैं- एक छोड़ना और एक छूटना। जिसे पदार्थ प्राप्त नहीं है, वह त्यागी नहीं है। त्यागी वह होता है, जो अपने स्वतंत्र मन से त्याग कर दे। वही प्रसन्न रह सकता है। अभावग्रस्त प्रसन्न नहीं रह सकता। साधन, सुविधा संपन्न व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे पैसे की सुरक्षा की चिंता सताती है। वे हमेशा भयभीत रहता है। अभय वही हो सकता है, जिसने स्वेच्छा से त्याग किया है। श्रोणिक को अपने प्रश्न का समाधान मिल गया।

२३७) चटोरी नौकरानी - एक जमींदार था। उसके घर में काम करनेवाला कोई नहीं था। इसलिए उसने एक नौकरानी को काम पर रख लिया। वह नौकरानी जमींदार के घर के सारे काम किया करती थी। लेकिन उसमें एक बुराई थी कि वह चटोरी बहुत थी। वह अक्सर छिपकर कुछ न कुछ खाती रहती थी। कई बार जमींदार ने देखकर भी अनदेखा कर दिया। एक दिन जमींदार ने उसकी चटोरेपन की आदत से तंग होकर कहा- यदि आज के बाद मैंने तुम्हें चीजें चोरी करके खाते देखा, तो नौकरी से निकाल दूंगा। नौकरी जाने के डर से वह संभल गई।

एक दिन जमींदार का मित्र शंकरलाल आनेवाला था। जमींदार उसके लिए अच्छी किस्म का एक आम ले आया। उसने नौकरानी को बुलाया और कहा- आम का छिलका उतारकर इसे टुकड़ों में काट दो। जब मेरा दोस्त आएगा तब हम दोनों दोस्त मिलकर इसे खाएंगे।

नौकरानी को आम बहुत पसंद थे। मन को लाख समझाने के बावजूद भी आम की खुशबू से वह रह न सकी। उसने आम काटा और थोड़ा सा चखा। चखते-चखते आम खत्म हो गया। इतने में जमींदार की आवाज सुनाई दी। आम काट कर ले आ। मेरा दोस्त आने ही वाला है। नौकरानी के होश उड़ गए। उसे अपनी नौकरी जाने की चिंता सताने लगी। उसने एक योजना बनाई। उसने जमींदार से कहा- मालिक चाकू की धार कम हो गई है। इससे आम का बारीक छिलका उतर नहीं रहा है। इसमें धार लगा दो। जमींदार चाकू में धार लगाने लगा। इतने में दरवाजे पर शंकर लाल आ पहुंचा। नौकरानी उससे बोली, लगता है मालिक तुमसे नाराज हैं। चाकू की धार बनाते-बनाते बुदबुदा रहे थे कि आज तो शंकरलाल की नाक काट दूंगा। नौकरानी की बात सुनकर जब शंकरलाल ने भीतर झांककर देखा, तो वाकई जमींदार चाकू की धार तेज कर रहा था। यह देखकर शंकरलाल सिर पर पांव रखकर भागा। उधर नौकरानी ने जमींदार से कहा- आपका दोस्त मेरे हाथ से आम छीनकर भाग गया है। जमींदार हाथ में चाकू लिए शंकरलाल के पीछे दौड़ा। वह दौड़ते हुए चिल्ला रहा था, अरे रुक जा, कम से कम आधा तो काट कर दे जा। शंकरलाल ने सोचा वह उसकी आधी नाक मांग रहा है। वह और तेज दौड़ने लगा। अंत में थकहार कर जमींदार घर लौट आया। उस दिन के बाद शंकरलाल और जमींदार की मुलाकात नहीं हुई। आम का राज नहीं खुला और नौकरानी आम का मजा लेकर अगली चोरी में जुट गई।

२३८) आत्मा के उपासक - एक बार महर्षि अनमीषि ने एक पंक्ति कहीं पढ़ी, कुबेर हो या रंक, जब तक परिश्रम से कमाए धन का एक अंश लोकहित में समर्पित नहीं करता, वह अधर्म खाता है। महर्षि इस पंक्ति से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पत्नी सहित यह प्रतिज्ञा ली कि अपने भिक्षाटन से उन्हें जो कुछ प्राप्त होता है, उसमें से भी नित्य वे दीन-दुखियों को भोजन करा कर ही भोजन किया करेंगे। उन्हें संकल्प निभाते कई वर्ष बीत गए। कोई तप परीक्षा बिना सिद्ध हो गया हो, ऐसा कम ही होता है। एक दिन भोजन के समय तक उनके द्वार पर कोई नहीं आया। दोनों उदास हो गए। अनमीषि अपनी कुटिया से बाहर निकले। उन्हें थोड़ी दूर पर एक पेड़ के नीचे एक वृद्ध कुष्ठ रोगी पीड़ा से कराहता दिखाई दिया। अनमीषि ने उसके पास जाकर कहा, हे बंधु, मेरे यहां भोजन तैयार है। उसे खाकर निश्चय ही आपकी पीड़ा कुछ कम होगी। कृपया उसे ग्रहण कर हमें भी कृतार्थ करें। वृद्ध ने अत्यंत दीन भाव से कहा, आर्य श्रेष्ठ, मैं आपकी उदारता का अधिकारी नहीं हूं, क्योंकि जाति का चांडाल हूँ। यदि संभव हो तो बची हुई कुछ रोटियां यहां फेंक दें, उन्हें उठाकर मैं अपना पेट भर लूंगा। वृद्ध की यह बात सुनकर अनमीषि की करुणा उमड़ पड़ी, आंखों से अश्रु की धारा बह चली। वे बोले, ऐसा न कहें तात। हम जाति के पुजारी नहीं, जीवमात्र में व्याप्त आत्मा के उपासक हैं। आपके अंदर जो चेतन है, वही तो परमात्मा है। उसे छोड़कर हम अन्न ग्रहण करने का पाप कैसे कर सकते हैं? वे उसे सादर अपनी कुटिया पर ले गए। स्नान आदि करा कर साफ कपड़े पहनाए। फिर उसे भोजन कराने के बाद ही पति-पत्नी ने स्वयं भोजन किया। जब रात को अनमीषि सोए तो अग्नि देव प्रकट हुए और बोले, तू ही ईश्वर का सच्चा भक्त है, जो ब्राह्मण, चांडाल, हाथी व कुत्ते में कोई भेद नहीं करता।

२३९) दो घड़ी धर्म की - एक नगर में एक धनवान सेठ रहता था। अपने व्यापार के सिलसिले में उसका बाहर आना-जाना लगा रहता था। एक बार वह परदेस से लौट रहा था। साथ में धन था, इसलिए तीन-चार पहरेदार भी साथ ले लिए। लेकिन जब वह अपने नगर के नजदीक पहुंचा, तो सोचा कि अब क्या डर। इन पहरेदारों को यदि घर ले जाऊंगा तो भोजन कराना पड़ेगा। अच्छा होगा, यहीं से विदा कर दूं। उसने पहरेदारों को वापस भेज दिया। दुर्भाग्य देखिए कि वह कुछ ही कदम आगे बढ़ा कि अचानक डाकुओं ने उसे घेर लिया। डाकुओं को देखकर सेठ का कलेजा हाथ में आ गया। सोचने लगा, ऐसा अंदेशा होता तो पहरेदारों को क्यों छोड़ता? आज तो बिना मौत मरना पड़ेगा। डाकू सेठ से उसका माल-असबाब छीनने लगे। तभी उन डाकुओं में से दो को सेठ ने पहचान लिया। वे दोनों कभी सेठ की दुकान पर काम कर चुके थे। उनका नाम लेकर सेठ बोला, अरे। तुम फलां-फलां हो क्या? अपना नाम सुनकर उन दोनों ने भी सेठ को ध्यानपूर्वक देखा। उन्होंने भी सेठ को पहचान लिया। उन्हें लगा, इनके यहां पहले नौकरी की थी, इनका नमक खाया है। इनको लूटना ठीक नहीं है। उन्होंने अपने बाकी साथियों से कहा, भाई इन्हें मत लूटो, ये हमारे पुराने सेठ जी हैं। यह सुनकर डाकुओं ने सेठ को लूटना बंद कर दिया। दोनों डाकुओं ने कहा, सेठ जी, अब आप आराम से घर जाइए, आप पर कोई हाथ नहीं डालेगा। सेठ सुरक्षित घर पहुंच गया लेकिन मन ही मन सोचने लगा, दो लोगों की पहचान से साठ डाकुओं का खतरा टल गया। धन भी बच गया, जान भी बच गई। इस रात और दिन में भी साठ घड़ी होती हैं, अगर दो घड़ी भी अच्छे काम किए जाएं, तो अट्ठावन घड़ियों का दुष्प्रभाव दूर हो सकता है। इसलिए अट्ठावन घड़ी कर्म की और दो घड़ी धर्म की। इस कहावत को ध्यान में रखते हुए अब मैं हर रोज दो घड़ी भले का काम अवश्य करूंगा।

२४०) युधिष्ठिर ने जब अपनी गलती मानी - युधिष्ठिर को बड़ी हैरानी हुई। नगाड़े क्यों बजाए जा रहे हैं, यह जानने के लिए वह अपने विश्राम कक्ष से बाहर आए। कक्ष से बाहर निकलते ही उनका सामना भीम से हो गया। उन्होंने भीम से पूछा, ये विजय दुंदुभि क्यों बज रही हैं? भीम ने नम्रता से उत्तर दिया, महाराज, हमारी सेना ने तो कोई विजय प्राप्त नहीं की है। पर पता चला है कि आपने काल पर विजय प्राप्त कर ली है। सुनकर युधिष्ठिर की हैरानी और बढ़ गई। उन्होंने फिर पूछा, मैंने काल पर विजय प्राप्त कर ली है। आखिर तुम कहना क्या चाहते हो? भीम ने हाथ जोड़कर कहा, महाराज, अभी कुछ देर पहले आपने एक ब्राह्मण से कहा कि वह कल मिले। तब उसकी समस्या और हल आप सुनेंगे। इससे जाहिर है कि आज तो मृत्यु आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। ब्राह्मण से आपका संवाद सुनने के बाद मैंने सोचा कि आपने काल पर विजय प्राप्त कर ही ली है, वरना आप उस ब्राह्मण को कल मिलने के लिए कतई नहीं कहते। यह सोचकर मैंने नगाड़े बजाने की आज्ञा दी थी। भीम की बात सुनकर महाराज युधिष्ठिर की आंखें खुल गईं। उन्हें अपनी भूल का पता लगा। तभी उन्हें पीछे खड़ा हुआ ब्राह्मण दिखाई दे गया। उन्होंने याचक से उसकी आवश्यकता के बारे में पूछा। ब्राह्मण ने बताया कि अगले शुक्लपक्ष में उसकी बेटी का विवाह है। खर्च के लिए कुछ भी पास में है नहीं। कोई संभावना भी दिखाई नहीं दे रही। ब्राह्मणी ने कहा कि धर्मराज के पास जाओ। वह अवश्य कोई प्रबंध कर देंगे। ब्राह्मण की बात सुनकर धर्मराज ने ब्राह्मण की जरूरत के लिए यथेष्ट प्रबंध कर दिया। फिर वह बोले, क्षमा करना, मैं इस बात से चूक रहा था कि शुभ संकल्प को एक पल के लिए भी स्थगित नहीं करना चाहिए। शुभ संकल्प को न टालें।

२४१) निष्पाप जीवन का रहस्य - एक सज्जन ने एकनाथ से पूछा, महाराज, आपका जीवन कितना सीधा-साधा और निष्पाप है। हमारा जीवन ऐसा क्यों नहीं? आप कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते। किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं, टंटा-बखेड़ा नहीं। कितने शांत, कितने प्रेमपूर्ण, कितने पवित्र हैं आप। एकनाथ ने कहा, अभी मेरी बात छोड़ो। तुम्हारे संबंध में मुझे एक बात मालूम हुई है। आज से सात दिन के भीतर तुम्हारी मौत आ जाएगी।

एकनाथ की कही बात को झूठ कौन मानता। सात दिन में मृत्यु। सिर्फ १६८ घंटे बाकी रहे। हे भगवान। यह क्या अनर्थ? वह मनुष्य जल्दी-जल्दी घर दौड़ गया। कुछ सूझ नहीं पड़ता था। आखिरी समय की, सब कुछ समेट लेने की, बातें कर रहा था। वह बीमार हो गया। बिस्तर पर पड़ गया। ६ दिन बीत गये। सातवें दिन एकनाथ उससे मिलने आये। उसने नमस्कार किया। एकनाथ ने पूछा, क्या हाल है? उसने कहा, बस अब चला। नाथजी ने पूछा, इन ६ दिनों में कितना पाप किया? पाप के कितने विचार मन में आये? वह मरणासन्न व्यक्ति बोला, नाथजी, पाप का विचार करने की तो फुरसत ही नहीं मिली मौत एक-सी आंखों के सामने खड़ी थी।

नाथजी ने कहा, हमारा जीवन इतना निष्पाप क्यों है, इसका उत्तर अब मिल गया न? मरण रूपी शेर सदैव सामने खड़ा रहे, तो फिर पाप सूझेगा किसे?

२४२) आंखों से देखी बात भी गलत हो सकती है - कथा बहुत पुरानी है। अवंती राज्य में एक राजा राज करता था। राजा अपने राज्य के कार्यों के प्रति सदैव सतर्क रहता था। एक दिन राजा मंत्री के साथ मंत्रणा कर रहा था, मंत्रणा करते-करते रात के बारह बज गये। किन्तु कुछ विशेष कार्यवश राजा मंत्री बात करते ही रहे। इधर शयन कक्ष में रानी को नींद सताने लगी। शयनकक्ष को पुष्प, सुगंध, इत्र से सजाने वाले माली के लड़के ने अपने नियमित कार्य के अनुसार कमरे में जाकर सोने के बिस्तर को सजाया। विभिन्न प्रकार की सुगंधियों से सुशोभित किया। काफी देर के बाद शैया को देखकर उसके मन में विचार आया, कितनी सुन्दर सेज सजी है। एक मिनट सोकर देखूं तो सही, कैसा लगता है।

अचानक उसका मन मचला कि वह पलभर में यह सोचकर लेट गया कि अभी तो राजा साहब मंत्रणा कर रहे हैं, किन्तु उस मूर्ख माली के लड़के को पता नहीं था कि सुगंधियों में एक सुगंध ऐसी भी है जिसके प्रभाव से लेटते ही आदमी गहरी नींद में सो जाता है। हुआ भी यही, बेचारा माली का लड़का सोचा कि नींद में बेहोश हो गया।

संयोगवश कुछ ही मिनट बाद रानी साहिबा कमरे में आईं, तो समझी राजा साहब सोये हैं, हल्के प्रकाश में नींद की खुमारी से सोच ही नहीं सकी कि माली का लड़का भी सो सकता है।

अभी कुछ पल भी नहीं बीते होंगे कि राजा के पीछे-पीछे कमरे तक छोड़ने मंत्री आया किन्तु राजा साहब के पांव के नीचे जैसे सांप दब गया हो, चौंककर पीछे लौट पड़े। पलभर में ही म्यान से तलवार खींचकर माली के लड़के और रानी को समाप्त करने के लिए बढ़े, किन्तु मंत्री ने आगे बढ़कर हाथ पकड़ लिया और बोला, महाराज, कभी-कभी आंख से देखी घटनाएं झूठ और कान से सुनी बातें सही होती है। आप कुछ समय और छुपकर सुनें।

अचानक रानी और माली का लड़का हड़बड़ाकर उठे। दोनों एक दूसरे पर क्रोधित होने लगे। रानी ने कहा, मूर्ख। तू इस पर क्या समझकर सोया?

रानी साहिबा क्षमा करें। मैं तो बिस्तर लगाने के बाद सोचा, देखूं बिस्तर कैसा लगता है, मगर आप तो बाद में आई आपको तो देखना चाहिए था कि कौन सोया है। इस बात से राजा और मंत्री हंस पड़े राजा ने दोनों को क्षमा कर दिया।

२४३) गधा, लोमड़ी और शेर - लोमड़ी और गधे ने मिलकर तय किया कि वे शिकार खेलने साथ-साथ जाएंगे। दोनों चल पड़े। कुछ दूर जाने पर लोमड़ी आगे निकल गई। तभी अचानक उसकी मुठभेड़ शेर से हो गई। चालाक लोमड़ी ताड़ गई कि अब जान की खैर नहीं। फौरन उसे गधे का खयाल आ गया। बोली, जंगल के राजा, अगर आप मुझे छोड़ दें तो मैं आपके भोजन के लिए एक गधा भेंट दे सकती हूं। आप मेरे साथ चलिए। शेर राजी हो गया और लोमड़ी के साथ चल दिया। थोड़ी दूर जाने पर एक पेड़ की छांव में गधा बैठा नजर आया। शेर उस पर टूट पड़ा। पूरा गधा खाने पर भी उसकी भूख नहीं मिटी। उसने लोमड़ी की ओर देखा और पलक झपकते उसे भी धर दबोचा।

जो लोग धोखेबाजी से सौदा करते हैं, वे खुद भी कभी उसका निशाना बन सकते हैं।

२४४) नया मकान - कई साल किराये पर रहने के बाद आज उसने नया मकान खरीद ही लिया था। चलो आज ईश्वर की कृपा से घर भी बन गया। माँ ने प्रसन्नता जाहिर की। सबके बड़े-बड़े कमरे थे। माँ का कमरा भी काफी बड़ा था। हाँ, इस कोने में मैं अपना मन्दिर बनाऊँगी, माँ ने कमरे के एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा। बीवी भी अपनी विशाल और अति सुंदर रसोई देखकर खुश थी। कुछ दिन बाद पति-पत्नी को लगा की रसोई पकाने से रसोई खराब हुई जाती है और पूजा करने के कारण माँ वाले कमरे की छत काली पड़ी जा रही है। समस्या का हल निकाला गया। क्यों न रसोई गैरेज में ही पकाई जाए और मां का मंदिर भी वहीं बना दिया जाए। रसोई गैरेज में पकने लगी और मंदिर भी माँ की इच्छा के विरुद्ध गैरेज में स्थापित कर दिया गया। अब रसोई साफ-सुथरी थी और माँ का कमरा भी मंदिर के बाहर लगाने से और बड़ा लगने लगा था। बड़े घर में आने पर माँ को बेटे बहू का दिल छोटा-छोटा दिखने लगा था।

२४५) सच्चा साधु - किसी गांव के पास एक कुटिया में हरिदास नामक साधु रहते थे। उनके पास कुछ जमीन थी, जिस पर वह खेती करते थे। उससे भी जब कभी खाने लायक नहीं मिल पाता तो वह गांव में मजदूरी भी कर लेते थे। उनके यहां साधु-संतों का आना-जाना लगा रहता था। एक बार जबर्दस्त बारिश हो रही थी। तभी बाहर से आवाज आई, साधु महाराज। क्या सो गए? हरिदास ने द्वार पर आकर देखा कि कुछ साधु बाहर खड़े हैं। हरिदास उन्हें आदरपूर्वक अंदर ले गए, फिर बोले, प्रिय अतिथियों, आज मेरे पास भोजन की व्यवस्था नहीं है। खेत में जो कुछ पैदावर हुई वह खत्म हो गई। बरसात की वजह से कहीं मजदूरी भी नहीं मिली। अतिथि साधुओं ने आश्चर्य से पूछा, महाराज, क्या गांव से कुछ खाने-पीने को नहीं मिलता? हरिदास ने हंसते हुए कहा, मिलता तो बहुत है, लेकिन मैं नहीं लेता। उन साधुओं ने इसका कारण पूछा तो हरिदास ने कहा, किसान काफी मेहनत करके फसल उगाते हैं, मैं उनकी मेहनत की कमाई मुफ्त में कैसे ले सकता हूं? इस पर अतिथि साधु बोले, पर आप तो साधु हैं फिर आप दान दक्षिणा क्यों नहीं लेते। आपको मेहनत करने की क्या जरूरत है? हरिदास ने कहा, मुझे तो लगता है कि एक साधु को अपनी मेहनत से जीवनयापन करना चाहिए। हम दूसरों की मेहनत की कमाई भला क्यों खाएं। हमें अपने आचरण से दूसरों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। मेहनत से भागकर ईश्वरोपासना का कोई अर्थ नहीं है। श्रम में ही साधुता है। अतिथि साधु निरुत्तर हो गए।

२४६) छोटा और बड़ा काम - अब्राहम लिंकन जब अमेरिका की धारा सभा के सदस्य चुने गए तो उनका अभिनंदन करने के लिए अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। उसमें अनेक जाने-माने और धनी लोग भी थे। जब ये सारे लोग लिंकन के घर पहुंचे तो वे अपनी गाय दुह रहे थे। कुछ समय तक विस्मय का वातावरण बना रहा। आखिर जब एक सज्जन से न रहा गया तो उसने पूछ डाला, अरे, आप देश के अग्रणी नेता होकर अपने हाथ से गाय दुह रहे हैं। लिंकन ने मुस्कराकर उत्तर दिया, भाइयों, काम कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। हम लोग श्रम से डरते हैं और अपना काम औरों पर छोड़ देते हैं। यह हमारे भीतर की एक बड़ी कमी है।

२४७) संकल्प की ताकत - एक बालक परीक्षा में फेल हो गया। उसके साथियों ने इस पर उसका खूब मजाक उड़ाया। इससे उस लड़के को गहरा सदमा पहुंचा। उसके बाद से वह अत्यंत तनावग्रस्त रहने लगा। उसने पढ़ना-लिखना और यहां तक कि ढंग से खाना-पीना भी छोड़ दिया। वह हर समय एक कोने में गुमसुम बैठा रहता। बालक के माता-पिता ने उसे प्यार से समझाया, बेटा, एक बार फेल होना इतनी बड़ी असफलता नहीं है जिससे तुम इस तरह परेशान हो जाओ। आखिर ऐसा कब तक चलेगा। जो हुआ उसे भूल जाओ और आगे की सोचो। किंतु बालक को माता-पिता की बातों से संतुष्टि नहीं मिली। मानसिक अशांति और निराशा में उसे कुछ नहीं सूझा और वह एक रात आत्महत्या करने के लिए चल पड़ा। रास्ते में एक बौद्ध मठ मिला जहां से कुछ आवाजें आ रही थीं। बालक उत्सुकतावश उन आवाजों को सुनने के लिए मठ के अंदर चला गया। वहां उसने देखा कि एक भिक्षुक कह रहा था, पानी मैला क्यों नहीं होता, क्योंकि वह बहता रहता है। पानी के मार्ग में बाधाएं क्यों नहीं आतीं? क्योंकि वह बहता रहता है। पानी का एक बिंदु झरने से नदी, नदी से महानदी और महानदी से समुद्र क्यों बन जाता है? क्योंकि वह बहता रहता है। इसलिए मेरे जीवन, तुम रुको मत, बहते रहो। जीवन में कुछ असफलताएं आती हैं लेकिन तुम उनसे घबराओ मत। उन्हें लांघकर दोगुनी मेहनत करते चलो। बहना और चलना ही जीवन है। एक असफलता से भी घबराकर रुक गए तो उसी तरह सड़ जाओगे जिस तरह ठहरा हुआ पानी सड़ जाता है। बालक को ये बातें अच्छी लगीं। वह ठहरकर इस पर विचार करने लगा। उसका खोया हुआ आत्मविश्वास लौटा। उसने ठान लिया कि वह निराश नहीं होगा और जीवन में आगे बढ़ेगा। यह सोचकर वह वापस घर की ओर मुड़ गया। फिर उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। यही बालक बड़ा होकर अपने देश वियतनाम का राष्ट्रनायक बना। उसका नाम था हो ची मिन्ह।

२४८) हजार हाथ वाला - विवियन एक शहरी लड़का था। एक दिन वह पास के जंगल में रसभरियां चुनने गया। वह रसभरियां चुन ही रहा था कि सहसा आसमान में बिजली चमकने लगी। बादलों की गड़गड़ाहट के साथ तेज हवा ने आंधी का रूप धारण कर लिया। विवियन डर से कांपने लगा। बिजली से बचने के लिए उसने एक ऊंचे पेड़ की डाल पर शरण ली। उस बेचारे को यह पता ही नहीं था कि बिजली अक्सर ऊंचे पेड़ों पर पहले गिरती है। अचानक उसे एक आवाज सुनाई पड़ी, जो उसे उसका नाम लेकर बुला रही थी, विवियन। इधर आ जाओ। वह उस आवाज की ओर बढ़ने के लिए पेड़ से कूदकर भागा। पर जैसे ही वह कुछ कदम आगे बढ़ा, पूरी गर्जना के साथ उसी पेड़ पर बिजली गिरी। विवियन मरने से बाल-बाल बच गया। फौरन उसके होंठ प्रार्थना में बुदबुदा उठे, ईश्वर तुमने ही शायद मेरी

प्राणरक्षा के लिए मुझे मेरे नाम से पुकारा था। मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूं। पर तभी उसे वही पुकार दुबारा सुनाई दी- विवियन, विवियन। इधर चले आओ। मैं यहां हूं। विवियन तेजी से दौड़ता हुआ पुकारनेवाली उस औरत के पास पहुंचा और बोला, लो, मैं आ गया। पर यह तो बताओ कि तुम्हें मुझसे क्या काम है? यह सुन औरत बोली, मैं तुम्हें नहीं बुला रही। मैं तो अपने छोटे बेटे विवियन को पुकार रही हूं, जिसे मैंने कुछ देर पहले पास के ही झरने पर बकरियों को पानी पिलाने भेजा था। विवियन ने उस औरत को अपना सारा किस्सा बताया तो उस औरत के हाथ ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए जुड़ गए। बचानेवाले के हजार हाथ होते हैं।

२४९) खान साहब, निमित्त और पेंटिंग - खान साहब की एक-एक पेंटिंग लाखों में बिका करती थी। एक बार निमित और उसके दोस्तों ने खान साहब से एक ऐसी पेंटिंग बनाने का अनुरोध किया, जो जिंदगी के सभी पहलुओं को दर्शाए। खान साहब ने कुछ ही मिनटों में एक सुंदर-सी पेंटिंग बना दी। पेंटिंग बहुत खूबसूरत थी। कहीं दुख था, तो कहीं अत्यंत खुशी, कहीं दर्द था, तो कहीं उत्साह। ऐसा लग रहा था खान साहब ने रंगों में अपने भाव पिरो दिए हों। तभी खान साहब को कोई फोन आ गया और वह पेंटिंग वैसे ही छोड़ कर फोन पर बात करने लगे। पीछे से खान साहब का नौकर निमित और उसके दोस्तों के लिय चाय और नाश्ता ले आया। सब अपनी बातों में व्यस्त हो गए। तभी कुछ बच्चे खेलते-खेलते वहां आए और हाथ में नाश्ते और चाय की ट्रे पकड़े नौकर से जोर से जा टकराए। ट्रे नीचे गिर गई और कप टूट गए। निमित और उसके सभी दोस्त कप बटोर ही रहे थे कि तब तक नौकर की नजर पेंटिंग पर पड़ी जिस पर चाय पड़ने से वह पूरी धुल चुकी थी। नौकर ने तुरंत पेंटिंग हाथ में उठाई और एक साफ कपड़े से उसे पोछने की कोशिश की, पर कपड़े से पेंटिंग और भी ज्यादा खराब दिखने लगी। नौकर ने बच्चों को वहां से भगा दिया, पर वह बहुत दुखी हो गया। वह बोला, मुझे माफ कर दीजिए साहब। मेरी वजह से खान साहब की आपके लिए बनाई हुई पेंटिंग खराब हो गई। निमित ने नौकर के कंधे के ऊपर हाथ रखा और बोला, इसमें तुम्हार कोई गलती नहीं। कुछ चीजें हमारे हाथ में नहीं होतीं। पेंटिंग का अफसोस तो रहेगा, लेकिन एहसास भी तो रहेगा न कि आगे से हम ध्यान रखें। खान साहब सब सुन रहे थे। वह बोले, मैंने दुनिया में कई लोग देखे हैं, जो मेरी पेंटिंग के रंगों और उनमें छिपे भावों पर लाखों रुपये न्योछावर कर देते हैं। पर पहली बार कोई ऐसा देखा, जो असल जिंदगी के रंगों और भावों की कद्र करता हो। खान साहब ने अगले दिन निमित को अपनी सबसे कीमती पेंटिंग भेंट कर दी। चंद रुपयों से ज्यादा मूल्यवान किसी के भाव होते हैं।

२५०) बेस्ट ऑफ लक नहीं, बेस्ट ऑफ कर्मा कहिए- अदिति को एक कहानी लेखन प्रतियोगिता में भाग लेने जाना था। प्रतियोगिता के एक दिन पहले से ही आसमान में बादल छाने लगे तथा रात तक बूंदाबांदी शुरू हो गई। सुबह के समय तो मूसलाधार बारिश होने लगी, जो कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। सड़कों पर चारों तरफ पानी ही पानी भरा हुआ था। रास्ते में कई जगह पेड़ भी गिरे हुए थे। ऐसे में उसे अपने गंतव्य स्थान पर समय से पहुंचना मुश्किल क्या असंभव सा ही लग रहा था। अदिति चाहती तो इसे अपना बैड लक मान कर घर भी बैठी रह सकती थी, मगर उसने ऐसा नहीं किया। हर तरह की मुसीबत झेलती हुई वह अपने गंतव्य स्थान तक पहुंची। मूसलाधार बारिश होने के बावजूद वह प्रतियोगिता भी संपन्न हुई और परिणाम आया तो उसे द्वितीय पुरस्कार भी मिला। इसीलिए कहते हैं

कि भगवान भी उन्हीं की मदद करते हैं, जो अपनी मदद खुद करते हैं। उसे मूसलाधार बारिश के बीच लिए गए अपने सही निर्णय, कर्म और साहस ने वह सम्मान दिलवाया।

२५१) एक बार गुरु द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही। वह एक ऐसी नदी में उतर गए जहां बहुत सारे मगरमच्छ रहते थे। नदी में उतरने के बाद जैसे ही उन्होंने बचाओ, बचाओ की आवाज लगाई तो उनके सारे शिष्य पीछे हट गए। वे डर गए कि कहीं उनके द्वारा चलाया गया तीर मगरमच्छ के स्थान पर गुरुजी को न लग जाए।

पर अर्जुन ने तत्काल अपना धनुष उठाया और उस स्थान को लक्ष्य बनाकर अपने बाण चला दिए। थोड़ी देर बाद गुरु जी सही सलामत बाहर निकल आए। उन्होंने अर्जुन की पीठ थपथपाई और कहा, बस यही फर्क है। मुझ से धनुर्विद्या का ज्ञान यानी प्रशिक्षण तो सबने प्राप्त किया, मगर तुम लोग उचित समय पर कर्म करने की शक्ति और विश्वास अपने अंदर नहीं जुटा पाए। लेकिन अर्जुन ने यही किया।

२५२) दूसरों के लिए जीना सीखें - अनुभव ने उन्हें यह सिखा दिया था कि न तो पुरानी हर चीज बेकार है और न नई हर चीज अच्छी जब तक नौकरी करते रहे उन्होंने अपने अनुभव का खूब इस्तेमाल किया और जिंदगी बड़े आराम से गुजरी। अवकाश लेने के बाद घर पर रहना उन्हें अच्छा नहीं लगा। सोचने लगे कि अनुभव ने जिंदगी को जो दिया, उससे बाकी जिंदगी को लबालब किया जाए।

उन्होंने असहाय, बीमार, अपंग और गरीबों की समस्याओं पर गौर करना शुरू किया। यह अवकाश का बेहतर इस्तेमाल था। कुछ लोगों का मानना था कि साठ साल की उम्र के बाद आराम की जिंदगी जीना चाहिए। वह सबकी सुनते और मुस्करा देते। जिंदगी जीना भी एक कला है। नौकरी जब तक की, तब तक उसकी रचनात्मकता में रचे रहे। अब अनुभव के जरिए संवेदना के रंग को लगातार गाढ़ा करने में लगे थे। इसलिए वह सबके लिए प्रेरणा के स्रोत बन गए थे कि नौकरी से छुट्टी लेने के बाद जिंदगी बेकार नहीं हो जाती। जॉन डेवी नए और पुराने के जोड़ को बेहतर तरीके से जोड़कर आगे बढ़ने को जिंदगी का नव-निर्माण कहते हैं। यह सोचना कि एक उम्र के बाद जिंदगी को सुख-चैन के साथ गुजरना चाहिए, यह मानसिक लोचा या परंपरागत सोच है। नौकरी या व्यवसाय उम्र की सीमा को नहीं रेखांकित करते।

हर पल नए एहसास से जीना ही जिंदगी जीने के मकसद को पूरा कहता है। अपने लिए जीवन को सुख-चैन से जीने में न तो संवेदना व अनुभव का कोई इस्तेमाल होता है और न शरीर, मन और चेतना में ही नई स्फूर्ति उमड़ती है। नया सीखने के लिए दूसरों के लिए जीना सीखना चाहिए।

२५३) मक्खी और मुर्गा - बाप रे बाप। आज तो मैं बहुत ही थक गई मेरी भी जिंदगी क्या है। मक्खी अपने मित्र मुर्गा से कहने लगी। मुर्गा अपने पंजों से जमीन खुरच रहा था। मक्खी की बात सुनकर बोला, क्यों? आज तुम्हें इतनी उदासी और थकावट क्यों मालूम हो रही है? अरे, तुम्हें मेरी मुसीबतों का क्या पता।

आज घर से मंडी तक एक ठेले को खींचने पड़ा। मक्खी बताने लगी। क्यों, तुम्हें यह काम कैसे करना पड़ गया? छकड़े पर क्या लदा था? मुर्गे ने पूछा। मक्खी ने उत्तर दिया, तुम तो मिट्टी खोदते रहते हो। तुम्हारे लिए ये सब बात समझना कठिन है। फिर भी बताती हूं। सुनो, मैंने एक आदमी को ठेला खींचते हुए देखा। मैं उसकी पीठ पर बैठ गई। उसके साथ

मैं भी वह ठेला खींचकर मंडी तक लाई हूं। अरे, तुममें इतनी ताकत कहां से आ गई? छकड़ा तो मैंने सुना है, बहुत भारी होता है। मुर्गे ने अचरज के साथ पूछा। भाई, काम करने के लिए दिल और उमंग चाहिए। ताकत तो अपने आप आ जाती है। बड़े घमंड से मक्खी कहने लगी, घर से मंडी तक कई जगह सड़े गले फल दुकानों पर टंगे हुए दिखाई दिए। मुंह में पानी भर आया। कई बार सोचा भी कि रुक जाऊं। लेकिन इस विचार से कि मेरे बिना ये लोग ठेला नहीं खींच पाएंगे, मैं कहीं नहीं रुकी। तुम ठीक कहती हो। मुर्गे ने कहा। मुर्गे की आंखों में नींद आने लगी थी। वह बोला, अब मैं सो जाना चाहता हूं, नहीं तो सुबह जल्दी उठना मुश्किल हो जाएगा। तुम तो जानती ही हो कि यह सूरज कितना आलसी है। मेरी कुकडु-कुं से ही वह जाग पाता है, नहीं तो सोता ही रह जाए।

२५४) वशीकरण मंत्र - एक शिष्य अपने गुरु के पास जाकर विनीत भाव से बोला- गुरुदेव आप मुझे ऐसा मंत्र दें ताकि देवता मेरे वश में हो जाएं। गुरु ने कहा- जरूर दे दूंगा, पर पहले यह बताओ कि क्या तुम्हारे घर के नौकर-चाकर वश में है। वह बोला- वे तो सब कामचोर है। काम न करने का बहाना ढूंढते रहते है। क्या परिवार वाले तुम्हारे वश में हैं? नहीं, सब स्वार्थी हैं। तुम्हारी पत्नी तो तुम्हारे वश में है? कहां है गुरुदेव। मैंने अपनी पत्नी से कहा- एक हफ्ते बाद पीहर चली जाना। मगर मेरे मना करने पर भी कल अपनी मां से मिलने चली गई। चलो, सबको जाने दो। मुझे यह बताओ कि तुम्हारा अपना मन तो तुम्हारे वश में होगा ही। नहीं गुरुदेव। मन वश में कहां है। यह तो बड़ा चंचल है। एक स्थान पर स्थिर होता ही नहीं है। गुरु ने कहा- अरे भाई। जब परिवार, नौकर, पत्नी तेरा मन भी तेरे वश में नहीं है तो देवता तुम्हारे वश में कैसे होंगे? सबसे पहले तुम अपने मन को वश में करो। मन जिसके वश में हो जाता है, देवता भी उसको नमन करते हैं।

२५५) युवक की ईमानदारी - एक बार राजा भोज अपने दरबार में बैठै थे, तभी द्वारपाल ने आकर सूचना दी, महाराज, एक दुबला-पतला, अत्यंत निर्धन युवक आपसे मिलना चाहता है। हमने उससे पूछने की बहुत कोशिश की कि आखिर वह आपसे क्यों मिलना चाहता है, पर वह कुछ नहीं बता रहरा। वह बस आपसे मिलने की रट लगाए हुए है। राजा भोज ने उस निर्धन युवक को बुलाने की अनुमति दे दी। वह युवक अंदर आया और राजा को नमस्कार कर बोला, महाराज, मेरी मां की तबीयत बहुत खराब है। इसलिए मैं मदद के लिए आपके पास चला आया। भोज ने यह सुनकर कहा, तुम्हारी मां का इलाज होना ही चाहिए। उन्होंने अपने खजांची से उस निर्धन युवक को एक हजार स्वर्ण मुद्राएं देने को कहा। युवक बोला, क्षमा करिए, मां की चिकित्सा के लिए पचास स्वर्ण मुद्राएं ही पर्याप्त हैं। मां के स्वस्थ होने पर मैं कोई न कोई काम अवश्य ढूंढ लूंगा। युवक की यह बात सुनकर राजा भोज समेत वहां उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। भोज बोले, युवक, मैं तुम्हें स्वेच्छा से एक हजार स्वर्ण मुद्राएं दे रहा हूं किंतु तुम उन्हें लेने से इनकार क्यों कर रहे हो? युवक ने उत्तर दिया, महाराज, मैं लेने से इनकार नहीं कर रहा किंतु इस समय मुझे वास्तव में मात्र पचास स्वर्ण मुद्राओं की आवश्यकता है। फिर मैं अधिक क्यों लूं? राजकोष का धन भी तो हमारा ही है और यदि हम उसे व्यर्थ बर्बाद करेंगे तो अन्य जरूरतमंद व्यक्तियों को आगे धन नहीं मिल पाएगा और संभव है कि आगे चलकर आप जैसे नेक व दयालु राजा भी न हों। इसलिए हर व्यक्ति को राजकोष से उतनी ही सहायता लेनी चाहिए जितनी उसे सचमुच आवश्यकता हो। युवक की बात सुनकर राजा भोज समेत सभी लोग उसकी मुक्त कंठ से सराहना करने लगे। भोज ने उस युवक को अपने राजदरबार

में नियुक्त कर दिया और बोले, राज्य को तुम जैसे होनहार व ईमानदार व्यक्तियों की ही आवश्यकता है।

२५६) गीता की महत्ता - चेन्नई में समुद्र के किनारे, एक सज्जन धोती-कुर्ता में भगवत गीता पढ़ रहे थे। तभी वहां एक लड़का आया और बोला कि आज साइंस का जमाना है। फिर भी आप लोग ऐसी किताबें पढ़ते हो।

देखिए, जमाना चांद पर पहुंच गया है और आप लोग ये गीता-रामायण पर ही अटके हुए हो।

उन सज्जन ने लड़के से पूछा कि- तुम गीता के बारे में क्या जानते हो?

वह लड़का जोश में आकार बोला- अरे बकवास। मैं विक्रम साराभाई रिसर्च संस्थान का छात्र हूं। मैं वैज्ञानिक हूं। ये गीता तो बकवास है हमारे आगे।

वह सज्जन हंसने लगे। तभी दो बड़ी-बड़ी गाड़ियां वहां आयी। एक गाड़ी से कुछ ब्लैक कमांडो निकले और एक गाड़ी से एक सैनिक। सैनिक ने कार के पीछे का गेट खोला तो वह सज्जन पुरुष चुपचाप गाड़ी में जाकर बैठ गए।

लड़का ये सब देखकर हक्का-बक्का था। उसने दौड़कर उनसे पूछा- सर... सर आप कौन हैं?

वह सज्जन बोले- तुम जिस विक्रम साराभाई रिसर्च इंस्टीट्यूट में पढ़ते हो, मैं वही विक्रम साराभाई हूं।

लड़के को ४४० वोल्ट का झटका लगा। इसी भगवद्गीता को पढ़कर, डॉ. अब्दुल कलाम ने हिन्दू जीवनशैली अपना ली और आजीवन मांस न खाने की प्रतिज्ञा ली थी। गीता एक महाविज्ञान है गर्व कीजिए।

२५७) टिड्डा, चींटी और सर्दी का मौसम - घास के मैदान में एक टिड्डा परिवार के साथ रहता था। गर्मियों के मौसम में टिड्डा परिवार खुशी-खुशी अपना समय गुजारता था, क्योंकि भोजन की कमी नहीं होती थी। पास में ही एक चींटी अपने परिवार के साथ रहती थी। चींटी की जिंदगी परिश्रम भरी थी। पूरा परिवार सुबह से शाम तक दूर-दूर से खाने की चीजें लाकर बिल में जमा करता रहता था। एक दिन टिड्डे ने चींटी से कहा, तुम गर्मी का आनंद क्यों नहीं लेते? परिवार के मुखिया चींटा ने कहा, दोस्त, अगर हमने अभी कठोर मेहनत नहीं की, तो आनेवाली सर्दी में हम जीवित नहीं रह पाएंगे। अभी तो भोजन उपलब्ध है। ऐसे में, भविष्य के लिए भोजन का संग्रह कर लेना ही बुद्धिमानी है। टिड्डे ने कहा, सर्दी आने में अभी देर है। तुम इतना अधिक क्यों सोचते हो?

चींटी और उसका परिवार पूरी गर्मी अनाज के दाने ढोने में लगा रहा। जबकि टिड्डे का मानना था कि चींटी और उसका परिवार बेहद मूर्ख है, जो इस मस्त मौसम में भी मेहनत कर रहे हैं।

सर्दी आ गई और पूरा मैदान बर्फ से ढक गया। भोजन दुर्लभ हो गया। जीव-जंतुओं से लेकर कीड़े-मकौड़े तक गर्म जगहों की तलाश करने लगे। टिड्डा परिवार भोजन की तलाश में भटकने लगा। टिड्डा देखता कि चींटी अपने परिवार के साथ अपने गर्म बिल में आराम से रह रही है और उसके यहां खाने-पीने की कमी नहीं है। एक दिन चींटी के पास पहुंचकर टिड्डे ने कहा, हमारे परिवार को भी अपने बिल में जगह दो। चींटे ने कहा, तुम बहुत आलसी हो। जब मेहनत की जरूरत थी, तब तुम नाच-गा रहे थे। हमने मेहनत की, इसलिए हमारे पास सर्दी के लिए पर्याप्त भोजन है। पर हमारे पास अतिरिक्त भोजन नहीं है। मुझे माफ करना। अब टिड्डे को पछतावा हुआ। वह सही समय पर मेहनत करता, तो आज भटकना नहीं पड़ता। बैठे रहने के बजाय भविष्य के लिए सोचना बुद्धिमानी है।

२५८) बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है - एक चोर अक्सर एक साधु के पास आता और उससे ईश्वर से साक्षात्कार का उपाय पूछा करता था। लेकिन साधु टाल देता था। वह बार-बार यही कहा कि वह इसके बारे में फिर कभी बताएगा। लेकिन चोर पर इसका असर नहीं पड़ता था। वह रोज पहुंच जाता। एक दिन चोर का आग्रह बहुत बढ़ गया। वह जमकर बैठ गया। उसने कहा कि वह बगैर उपाय जाने वहां से जाएगा नहीं। साधु ने चोर को दूसरे दिन सुबह आने को कहा। चोर ठीक समय पर आ गया। साधु ने कहा, तुम्हें सिर पर कुछ पत्थर रखकर पहाड़ पर चढ़ना होगा। वहां पहुंचने पर ही ईश्वर के दर्शन की व्यवस्था की जाएगी। चोर के सिर पर पांच पत्थर लाद दिए गए और साधु ने उसे अपने पीछे-पीछे चले आने को कहा। इतना भार लेकर वह कुछ दूर ही चला तो उस बोझ से उसकी गर्दन दुखने लगी। उसने अपना कष्ट कहा तो साधु ने एक पत्थर फिंकवा दिया। थोड़ी देर चलने पर शेष भार भी कठिन प्रतीत हुआ तो चोर की प्रार्थना पर साधु ने दूसरा पत्थर भी फिकवा दिया। यही क्रम आगे भी चला। ज्यों-ज्यों चढ़ाई बढ़ी, थोड़े पत्थरों को लेकर चलना भी मुश्किल हो रहा था। अंत में सब पत्थर फेंक दिए गए और चोर सुगमतापूर्वक पर्वत पर चढ़ता हुआ ऊंचे शिखर पर जा पहुंचा। साधु ने कहा, जब तक तुम्हारे सिर पर पत्थरों का बोझ रहा, तब तक पर्वत के ऊंचे शिखर पर तुम्हारा चढ़ सकना संभव नहीं हो सका। पर जैसे ही तुमने पत्थर फेंके वैसे ही चढ़ाई सरल हो गई। इसी तरह पापों का बोझ सिर पर लादकर कोई मनुष्य ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता। चोर ने साधु का आशय समझ लिया। उसने कहा, आप ठीक कह रहे हैं। मैं ईश्वर को पाना चाहता था पर अपने बुरे कर्मों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। उस दिन से चोर पूरी तरह बदल गया।

२५९) खुद की पहचान - उद्दालक ने अपने पुत्र श्वेतकेतु को एक प्रसिद्ध ऋषि के पास पढ़ने भेजा। श्वेतकेतु की दृष्टि में उसके पिता उद्दलक बहुत बड़े विद्वान थे। वह चाहता था कि वह अपने पिता से ही शिक्षा ग्रहण करे पर उद्दालक ने समझाया, गुरु पिता से ऊपर होता है, इसलिए तुम्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरु के पास ही जाना चाहिए। श्वेतकेतु गुरु के पास गया। वहां बारह वर्ष पढ़ने के बाद जब वह अपने घर आया तो उसे लगा कि अपने पिता उद्दालक से भी उसे बहुत अधिक ज्ञान हो गया है। उसके व्यवहार में अहं अधिक व नम्रता कम थी। विद्वान उद्दालक श्वेतकेतु की मनोवृत्ति भांप गए। उन्होंने श्वेतकेतु को बुलाया और पूछा, श्वेतकेतु तुमने क्या- क्या पढ़ा? हमको बताओ। श्वेतकेतु बताने लगा, मैंने व्याकरण पढ़ा, शास्त्र पढ़ा, उपनिषदों को पढ़ा। इस प्रकार उसने एक बड़ी सूची प्रस्तुत कर दी। सूची पूरी होने के बाद उद्दालक ने पूछा, श्वेतकेतु क्या तुमने वह पढ़ा जिसको पढ़ने के बाद और कुछ पढ़ने के लिए शेष नहीं रहता? क्या तुमने वह देखा जिसको देखने के बाद और कुछ देखने के लिए है ही नहीं? क्या तुमने वह सुना जिसको सुनने के बाद और सुनने के लिए कुछ बचता नहीं? श्वेतकेतु अचंभे में पड़ गया। उसने कहा, क्या है वह? मैं नहीं जानता हूं। मैंने वह पढ़ा नहीं। न सुना, न देखा न प्रयत्न किया। वह क्या है? उद्दालक बोले, जाओ फिर से अपने गुरुजी के पास जाओ। उनसे कहो कि वह तुम्हें सिखाएं। जाओ वह पढ़कर आओ। श्वेतकेतु गुरु के पास गया। गुरुजी बोले, वह तुम्हारे पिता जी के पास ही है, उनसे ही वह ले लो। श्वेतकेतु घर लौट आया। अब वह अपने को बदला हुआ सा अनुभव कर रहा था। उसका अहं खत्म हो गया था। व्यवहार में पूर्ण नम्रता थी। वह शांत था। एक दिन उद्दालक ने उसे बुलाया और कहा- श्वेतकेतु वह तुम हो। श्वेतकेतु जीवन का अभिप्राय समझ गया था। वह जान गया कि अपने आपको जानने के बाद कुछ जानना शेष नहीं रहता।

२६०) संघर्ष की राह - बालक ईश्वरचंद्र के पिता को तीन रुपये मासिक वेतन मिलता था। परिवार बड़ा था इसलिए घर का खर्च चलना मुश्किल था। ऐसी स्थिति में बालक ईश्वरचंद्र की पढ़ाई का प्रबंध कैसे होता। ईश्वरचंद्र ने अपने पिता की विवशता को देखकर अपनी पढ़ाई के लिए रास्ता खुद ही निकाल लिया। उसने गांव के उन लड़कों को अपना मित्र बनाया, जो पढ़ने जाते थे। उनकी पुस्तकों के सहारे उसने अक्षर ज्ञान प्राप्त कर लिया। एक दिन कोयले से जमीन पर लिख कर उसने अपने पिता को दिखाया। पिता ने ईश्वरचंद्र की विद्या के प्रति लगन देखकर तंगी का जीवन जीते हुए भी उसे गांव की पाठशाला में भर्ती करा दिया। स्कूल की सभी परीक्षाओं में ईश्वरचंद्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आगे की पढ़ाई के लिए फिर आर्थिक तंगी आड़े आ रही थी। ईश्वरचंद्र ने फिर स्वयं अपनी राह बनाई और आगे पढ़ने के लिए माता-पिता से केवल आशीर्वाद भर मांगा। उसने कहा, आप मुझे किसी विद्यालय में भर्ती करा दें। फिर मैं आपसे किसी प्रकार का खर्च नहीं मांगूंगा। ईश्वरचंद्र का कोलकाता के एक संस्कृत विद्यालय में दाखिला करा दिया गया। विद्यालय में ईश्वरचंद्र ने अपनी लगन और प्रतिभा से शिक्षकों को प्रसन्न कर लिया। उसकी फीस माफ हो गई। ईश्वपरचंद्र के मित्रों ने किताबें उपलब्ध करा दीं। फिर उसने अपना खर्च पूरा करने के लिए मजदूरी शुरू कर दी। ऐसी स्थिति में भी उसने इतना परिश्रम किया कि उन्नीस वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते वह व्याकरण, साहित्य, स्मृति तथा वेदशास्त्र में निपुण हो गया। जिसके लिए पढ़ना ही कठिन था वह एक बड़ा विद्वान बन गया। आगे चलकर यही बालक ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से विख्यात हुआ।

२६१) बुद्ध और सारिपुत्र - बुद्ध एक गांव में भिक्षु-भिक्षुणियों के पास बैठे थे। शांति छाई हुई थी। वहां बुद्ध के एक विशेष शिष्य थे सारिपुत्र। बुद्ध ने उनसे कहा, सारिपुत्र। अब तुम स्वयं बुद्ध हो गए हो, यहां से दूर जाकर मेरे संदेश को लोगों तक पहुंचाओ। सारिपुत्र नमस्कार करके चलने लगे। इसी बीच बुद्ध के दूसरे बड़े शिष्य आनंद कहने लगे, भंते। मुझे सारिपुत्र की तरह दूर न भेज देना। मैं आपके चरणों में ही रहना चाहता हूं। इस पर बुद्ध ने आनंद से कहा, तू समीप नहीं है इसलिए समीप रहना चाहता है। सारिपुत्र कहीं भी रहे, वह मेरे ही समीप रहेगा। उसके और मेरे बीच का फासला अब कोई फासला नहीं रहा। बुद्ध से विदा लेकर सारिपुत्र अलग-अलग स्थान पर जाकर बुद्ध के संदेश देने लगे। वह रोजाना प्रात: उठते ही सर्वप्रथम उस दिशा की ओर सिर झुकाते थे, जिस प्रदेश में बुद्ध भ्रमण कर रहे होते। बुद्ध के जो शिष्य सारिपुत्र के साथ थे, वे उनसे पूछते, सारिपुत्र, अब तो तुम भी स्वयं बुद्ध हो गए हो, तुम किसके चरणों में सिर झुकाते हो? अब इसकी क्या जरूरत है? सारिपुत्र इस प्रश्न का जवाब देते, जिनके कारण मैं शून्य हुआ, जिनके कारण मेरा अहं खत्म हुआ, मैं उनके चरणों में सिर झुकाता हूं। शिष्य प्रश्न करते, बुद्ध तो बहुत दूर हैं, यहां से, तुम्हारा प्रणाम उन तक कैसे पहुंचेगा? सारिपुत्र बोले, यदि वह मुझसे दूर होते तो मैं उन्हें छोड़कर ही नहीं आता। उन्हें छोड़कर इसी भरोसे से आ सका कि अब कहीं भी रहूं, वह मेरे पास हैं।

सारिपुत्र ने इसे विस्तार से समझाया, एक संबंध है बाहर का, जो शरीर से होता है। शरीर कितने ही निकट हो, तो भी दूरी बनी रहती है। आंतरिक समीपता ही एक-दूसरे के नजदीक ले आती है। अगर मैं कहूं कि मैं नहीं हूं, बुद्ध ही है या कहूं कि मैं हूं, बुद्ध नहीं है तो यह एक ही बात है।

२६३) दीन दुखियों की सेवा करना ही सबसे बड़ी पूजा है - नेताजी सुभाषचंद्र बोस अपने हर काम को काफी लगन से करते थे। वे अपने अनुशासन और काम को प्रधानता देने के कारण अपने सभी परिवार वालों और साथियों के बीच सम्मानीय थे। दूसरों की मदद करने को भी वे अपना काम समझते थे।

ऐसी ही एक बार की बात है। उन दिनों बंगाल में भीषण बाढ़ आई हुई थी। गांव के गांव डूब गए थे। समूचा जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। नेताजी सुभाषचंद्र बोस उस समय कॉलेज में पढ़ते थे। वे कुछ स्वयंसेवियों के साथ मिलकर बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत सामग्री इकट्ठा करने में जुट गए। वह दिन-रात इसमें लगे रहते और कभी-कभार आराम करते। एक दिन उनके पिता बोले बेटा, क्या आज भी बाढ़ पीड़ितों की सेवा के लिए जा रहे हो?

सुभाष बोले, जी पिताजी, मेरा जाना आवश्यक है। मुझसे लोगों का दर्द बर्दाश्त नहीं होता। इस बाढ़ ने जबर्दस्त विनाश किया है। तबाही का ऐसा मंजर है कि आंखों से आंसू नहीं सूखते। ऐसे में इंसान ही तो इंसान की मदद करेगा न। अभी कुछ और करने का कोई अर्थ नहीं है।

पिताजी बोले, बेटा, मैं तुम्हारी बात से पूरी तरह सहमत हूं। तुम मानव सेवा अवश्य करो, लेकिन थोड़ा घर पर भी ध्यान दिया करो। अपने गांव में मां दुर्गा की विशाल पूजा का आयोजन किया जा रहा है। वहां और लोगों के साथ तुम्हारा रहना भी जरूरी है, इसलिए तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। पिताजी की बात सुनकर सुभाष बोले, क्षमा कीजिए पिताजी, मैं आपके साथ नहीं चल सकता। आप बस गांव जाकर दुर्गा मां की पूजा करें। मैं दीन-दुखियों की पूजा करूंगा।

२६४) सेवा की भावना - जर्मनी का महान समाजसेवी ओबरलीन एक बार अपनी यात्रा के दौरान मुसीबतों से घिर गया। तेज आंधी-तूफान और ओलों ने उसे बुरी तरह परेशान कर दिया। वह मदद के लिए चिल्लाता रहा, लेकिन सबको अपनी जान बचाने की पड़ी थी, सो उसकी पुकार कौन सुनता? वह बेहोशी की हालत में नीचे गिर पड़ा। कुछ देर बाद उसे अहसास हुआ कि किसी व्यक्ति ने उसे थामा हुआ है और उसे सुरक्षित जगह पर ले जाने की कोशिश कर रहा है। होश में आने पर ओबरलीन ने किसान से कहा कि वह उसकी सेवा करने के एवज में उसे इनाम देगा। फिर उसने किसान से उसका नाम जानना चाहा। यह सुनकर किसान मुस्कराया और बोला, मित्र। बताओ, बाइबिल में कहीं किसी परोपकारी का नाम लिखा है। नहीं न। तो फिर मुझे भी अनाम ही रहने दो। आप भी तो नि:स्वार्थ सेवा में विश्वास रखते हो। फिर मुझे इनाम का लालच क्यों दे रहे हो? वैसे भी पुरस्कार का लालच किसी को भी नि:स्वार्थ सेाव करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। सेवा की भावना तो हमारे अंदर से उत्पन्न होती है। इसे न ही पैदा किया जा सकता है और न ही मिटाया जा सकता है। ओबरलीन उस निर्धन किसान की बातें सुनकर दंग रह गया। वह मन ही मन सोचने लगा कि आज उसे इस किसान ने एक पाठ पढ़ाया है। सेवा जैसा भाव तो अनमोल है। उसकी कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती और सेवा के लिए कोई भी पुरस्कार अधूरा है। यह किसान कितना महान है जो बिना किसी स्वार्थ के परोपकार करने में विश्वास करता है। आज कितने ऐसे लोग हैं जो इस निर्धन किसान की परोपकार की भावना का मुकाबला कर सकते हैं। ओबरलीन को इस बात के लिए अफसोस हुआ कि उसने किसान को इनाम देने की बात कही। ओबरलीन ने किसान से कहा, अगर आपके जैसे इंसान हर जगह हों तो कहीं पर दुराचार शेष नहीं रहेगा।

२६५) कॉलेज प्रबंधन और छात्रों की एकता - महिमा और उसके दोस्त जिस कॉलेज में पढ़ते थे, वहां काफी दिनों से परीक्षाओं के समय नकल के मामले सामने आ रहे थे और यह सब कॉलेज के कुछ अधिकारी करवा रहे थे। महिमा और उसके दोस्तों को जब पता चला, तो उन्होंने छात्रों को जागरूक करने की कोशिश की। महिमा और उसके दोस्तों ने मिलकर कॉलेज में नकल का विरोध किया। अंत में कॉलेज प्रबंधन को झुकना ही पड़ा और उन्होंने जांच कर अपराधियों को कड़ी सजा दिलाने का एलान भी किया। लेकिन इसके तुरंत बाद कॉलेज प्रबंधन ने अगली परीक्षाओं की घोषणा कर दी और साथ ही यह एलान कर दिया कि जो छात्र परीक्षाएं नहीं देंगे, उन्हें फिर से परीक्षा देने का मौका नहीं मिलेगा। लिहाजा सारे छात्र कॉलेज जाकर परीक्षाएं देने लगे। कुछ ही दिनों में स्थितियां पहले जैसी हो गई, लेकिन नकल रोकने की कोई कार्रवाई नहीं की गई। जब महिमा और उसके दोस्त प्रबंधन से उनके वायदों के बारे में पूछने दफ्तर पहुंचे, तो उन्होंने कहा, जो भी एलान हमने पहले किए थे, वे भीड़ के दबाव में किए थे। महिमा और उसके सारे दोस्त अब काफी ठंडे पड़ गये थे। वे अपनी क्लास में आकर बैठ गए। तभी प्रोफेसर सुनील वहां आकर उनसे उनकी मुहिम के बारे में पूछने लगे। फिर वह बोले, एक बार एक समुद्र की एक लहर किसी तट के किनारे पहुंची, तो उसने देखा कि सारी लहरें एक बड़ी-सी चट्टान से टकरा कर चकनाचूर हो जा रही है। वह लहर सहम गई। सामने से चट्टान भी अपना डरावना रूप दिखा रहा था। तभी पीछे से आती एक नन्ही लहर बोली, डरो मत, यह चट्टान इस समुद्र के सामने चींटी भर भी नहीं है। यह चाहकर भी समुद्र का सामना नहीं कर सकती। लेकिन समुद्र जिस दिन अपना रूप दिखा देगा, ऐसी सैकड़ों चट्टानें उसके सामने दम तोड़ देंगी। फिर तो महिमा और उसके दोस्तों ने प्रबंधन से जमकर लड़ाई की और अंतत: उनकी जीत हुई। एकता में वह ताकत है, जो किसी भी चट्टान जैसी चुनौती को क्षणभर में मिट्टी में मिला दे।

२६६) सच्ची सेवा - गाड़गे महाराज सच्चे निष्काम कर्मयोगी थे। उनके कपड़े फटे-चीथड़े होते थे तथा एक लकड़ी, फटी-पुरानी चादर तथा मिट्टी का एक छोटा बर्तन, यही उनकी संपत्ति थी। उनका बर्तन मिट्टी का होने के कारण ही लोगों ने उनका नाम गाड़गे रख दिया था। पौष मास में अमरावती के समीपस्थ ऋषमोचन नामक ग्राम में बड़ा मेला लगा। तब हजारों दर्शनार्थी वहां एकत्रित हुए। मेले में लोग स्वच्छता का खयाल नहीं करते, फलस्वरूप दोने पत्तलों के कूड़े, रसोई के लिए प्रयोग किए गए मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े तथा हर प्रकार की गँदगी जहाँ तहाँ पड़ी थी और लोगों का उस ओर बिलकुल ध्यान नहीं था। पर युवा गाड़गे महाराज नदी की ऊँची कगार को काटकर स्नानार्थियों के लिए राह बनाने में जुट गए। इतना ही नहीं, हाथ में झाड़ू ले वे अकेले गंदगी की सफाई करने लगे। दर्शनार्थियों के मन में कौतूहल के साथ-साथ उनके प्रति आदरभाव जागृत हुआ किंतु किसी की भी इच्छा न हुई कि उनका साथ दे। इतने में उनकी माता की दृष्टि उन पर पड़ी, तो उसने उन्हें घर चलने को कहा। गाड़गे महाराज बोले माँ। अपने आसपास का मानव संसार ही भगवान का प्रत्यक्ष रूप है। इन कोटि लोगों की यथाशक्ति सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची आराधना हो सकती है। सुगंधित फूल-पत्तों को पत्थर की मूर्ति पर चढ़ाने की अपेक्षा अपने आसपास विद्यमान चलती-फिरती दुनिया की सेवा तथा भूखों के लिए रोटी की व्यवस्था करने में ही जीवन की सार्थकता है। ऐसे फूल-पत्तों से तो हमारी झाड़ू श्रेष्ठ है, पर यह बात तुम्हरी समझ में नहीं आ सकती। और यह सुन माता का हृदय गदगद हो उठा।

२६७) उदारता की जीत - राजा चंद्रसेन एक न्यायप्रिय शासक था। वह कभी किसी के साथ अन्याय नहीं होने देता था। एक बार पड़ोसी राजा ने उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया। चंद्रसेन स्वयं पड़ोसी राजा से भिड़ गया। थोड़ी ही देर में चंद्रसेन ने उसे जमीन पर गिरा दिया और उसके सिर पर तलवार का वार करने ही वाला था कि दूसरे राजा के मुंह से कुछ अपशब्द निकल गए। अपशब्द सुनकर चंद्रसेन ने अपनी तलवार रोक ली और कुछ सोचते हुए उसे म्यान में रख लिया। वहां उपस्थित सभी सैनिक आश्चर्य में पड़ गए। वे चंद्रसेन से बोले, आपने अपना हाथ क्यों रोक लिया। इसे मार डालिए। इसे जिंदा छोड़ना ठीक नहीं होगा। सैनिकों की बात सुनकर चंद्रसेन ने कहा, मैं युद्ध अपने देश की रक्षा के लिए लड़ रहा हूं। यदि मैं इसी समय इसे मार देता हूं तो मुझे अफसोस नहीं होगा मगर इसने मुझे अपशब्द कहे, जिसके कारण मेरी लड़ाई हमारे राष्ट्र की न होकर व्यक्तिगत हो गई। देश रक्षा के लिए मैं अपने पूरे युद्ध कौशल से लड़ रहा था, किंतु व्यक्तिगत होने पर मैं गुस्से में आ गया। यदि मैं इसे मार देता तो मैं स्वार्थी कहलाता। इतना कहकर चंद्रसेन ने दूसरे राजा को तलवार दी और युद्ध करने को कहा। लेकिन उस राजा ने लड़ने से इनकार कर दिया और उसके आगे सिर झुकाकर कहा, आपने अपने उच्च विचारों से मुझे जीत लिया है। अब आप चाहे तो मुझे मार दें। चंद्रसेन ने उस पर वार नहीं किया और उसे क्षमा कर दिया। वह राजा सेना सहित लौट गया।

२६८) पीटर, मालिक और गधे का किस्सा - पीटर एक आईटी इंजीनियर था और दफ्तर में उसका पहला दिन था। कंपनी के मालिक ने सभी नए कर्मचारियों से कहा, आज मैं आप सबको एक कहानी सुनाता हूं। एक गधा था। वह अन्य गधों के मुकाबले कई गुना ज्यादा मेहनती और चुस्त रहता था। उसका मालिक उसे बहुत प्रेम करता था। बाकी के गधे उससे बहुत जलते थे। वे बड़े आलसी और कामचोर थे। वे उस गधे को समझाते थे कि वह इतना काम न करे। लेकिन वह गधा सिर्फ अपने काम से मतलब रखता था। उसे बाकी गधों से न कोई मुकाबला करना था और न ही यारी। बाकी गधे उसका काम खराब करने का कोई मौका नहीं छोड़ा करते थे। लेकिन वह उनकी बातों पर कभी ध्यान नहीं देता था। एक बार उन सभी गधों ने एक षडयंत्र किया। उन्होंने चट्टानों के बीच एक काफी गहरा गड्ढा खोद दिया और उस गधे को धोखे से गड्ढे में धकेल दिया। गधे के मालिक ने गधे को निकालने के सारे उपाय कर डाले, पर सफलता नहीं मिली।

अंतत: उसने यह फैसला किया कि वह अपने गधे को घुट-घुटके मरते नहीं देख सकता, इसलिए उसे उसी गड्ढे में दफना देगा। बाकी गधों को यह सुनकर खुशी हुई। उन्होंने गड्ढे में मिट्टी डालनी शुरू कर दी। वे गधे बिना नीचे देखे, गधों की तरफ उस गड्ढे में मिट्टी डालते गए। लेकिन गड्ढा भर गया और वह गधा बाहर निकल आया। मालिक ने गधे से पूछा, तुम कैसे बचकर निकल आए। गधा बोला, मेरे दोस्तों ने इसमें मेरी बहुत मदद की।

वह मिट्टी डालते थे, जो मेरी पीठ पर गिरती थी। मैं उसे झाड़कर नीचे गिरा देता था। इस तरह से गड्ढा भरता गया और मैं ऊपर आ गया। कंपनी मालिक ने पीटर और उसके साथियों से कहा, हम सब परेशानियों से गुजरते हैं। लेकिन यह हम पर निर्भर है कि हम उन्हें ऊपर चढ़ने की सीढ़ी बनाएं या नियति को कोसते रहें। नजरिया बदलने से परेशानियां भी सफलता की सीढ़ी बन जाती हैं।

२६९) संकल्प की जीत - अमेरिकी ट्रैक एंड फिल्ड एथलीट जेसी ओवेंस दस भाई बहनों में सबसे छोटे थे। उन्होंने कई तरह के काम किए। कुछ दिन जूतों की मरम्मत की तो कुछ समय दुकानों में सामान बांटने का भी काम किया,

लेकिन उनका इन कामों में मन नहीं लगता था। उन्हें ऐसा लगता था जैसे उनकी मंजिल कुछ और है। वह बहुत तेज उछल-कूद करते और दौड़ते थे। एक दिन उन्होंने महसूस किया कि उन्हें कूदने का जुनून है। उन्होंने इसका अभ्यास करना प्रारंभ कर दिया। उनकी मेहनत रंग लाई। जल्दी ही वह राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो गए। उनका खेल कई खिलाड़ियों से श्रेष्ठ था, फिर भी अफ्रीकी अमेरिकी नागरिक होने के कारण उन्हें बार-बार दरकिनार कर दिया जाता था। जबकि इसी खेल में जर्मन खिलाड़ियों को बेहद सम्मान दिया जाता था। जेसी ने ठान लिया कि वह अपने खेल में उत्कृष्टता की ऐसी मिसाल कायम करेंगे कि पूरा विश्व दंग रह जाएगा। एक दिन हिटलर खेल देखने के लिए आए। उन्होंने सभी खिलाड़ियों का अभिवादन किया, लेकिन जेसी को नजरअंदाज कर आगे बढ़ गए। जेसी हिटलर के पक्षपातपूर्ण रवैये से परेशान हो गए। अब उनका एक ही लक्ष्य रह गया था, ओलिंपिक का चैंपियन बनना। १९३६ के ओलिंपक गेम्स बर्लिन में प्रारंभ हुए। उसमें भी पक्षपतापूर्ण रवैया अपनाया गया। दर्शकों ने भी जेसी और अन्य अश्वेत खिलाड़ियों को हतोत्साहित किया। उधर दर्शकों की हूटिंग बढ़ती गई और इधर जेसी का पदक जीतने का संकल्प दृढ़ होता गया। आखिर हूटिंग पर संकल्प की विजय हुई। इस ओलिंपिक गेम्स में जेसी ओवेंस ने लंबी छलांग में चार स्वर्ण पदक अपने नाम कर इतिहास रच दिया। वह हमेशा के लिए उन सबके प्रेरणा स्रोत बन गए जिनके साथ किसी तरह का पक्षपात होता है। ऐसे तमाम लोग जेसी से सीख लेकर प्रतिकूलताओं पर अपनी विजय करा सकते हैं।

२७०) रास्ते का खूंटा - विद्यार्थियों की एक टोली पढ़ने के लिए रोजाना अपने गांव से छह-सात मील दूर दूसरे गांव जाती थी। एक दिन जाते-जाते अचानक विद्यार्थियों को लगा कि उनमें एक विद्यार्थी कम है। ढूंढने पर पता चला कि वह पीछे रह गया है। देखा तो वह रास्ते में ही पीछे रुका हुआ था। उसे रुका देखकर एक विद्यार्थी ने आवाज लगाई, तुम वहां क्या कर रहे हो? उस विद्यार्थी ने वहीं से उत्तर दिया, ठहरो, मैं अभी आता हूं। यह कहकर उसने धरती में गड़े एक खूंटे को पकड़ा, जोर से हिलाया, उखाड़ा और एक ओर फेंक दिया। इसके बाद वह संतुष्ट मन से फिर अपनी टोली में आ मिला। उसके एक साथी ने पूछा, तुमने वह खूंटा क्यों उखाड़ा? इसे तो किसी ने खेत की हद बताने के लिए गाड़ा था। इस पर विद्यार्थी बोला, लेकिन वह बीच रास्ते में गड़ा हुआ था। चलने में रुकावट डालता था। जो खूंटा रास्ते की रुकावट बने, उस खूंटे को उखाड़ फेंकना चाहिए। वह विद्यार्थी और कोई नहीं, बल्कि लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल थे। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर मजबूत और एकीकृत भारत के निर्माण में सरदार वल्लभ भाई पटेल का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने युवावस्था में ही राष्ट्र और समाज के लिए अपना जीवन समर्पित करने का निर्णय लिया था। अंग्रेज जाते-जाते अपनी कुटिल चाल चल गए थे और साढ़े पांच सौ से ज्यादा देशी रियासतों को अपने भविष्य के निर्णय का अधिकार दे गए थे। उनका यह कुटिल आदेश एक षडयंत्र जैसा था। वह दिखाना चाहते थे कि भारत अपने को एक नहीं रख सकेगा। देश के सामने आजाद होने के तत्काल बाद इतनी रियासतों को एक रखने की चुनौती थी। सरदार पटेल ने बड़ी कुशलता से एकीकरण की राह में आनेवाली सभी रुकावटों को दूर किया। उन्होंने सैकड़ों छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण किया।

२७१) मां का फैसला - खुले दिल, खुले विचारों के विदेश से लौटे डॉक्टर पार्थ विवाह को महज सामाजिक औपचारिकता मानते थे जो उनके लिए निहायत ही गैरजरूरी बात थी। ऐसा ही सोचती थी, देश की टॉप मॉडल्स में से एक

मिस रिया। दोनों के मन मिले और वो एक साथ एक ही फ्लैट में रहने लगे। रिया न चाहते हुए भी प्रेगनेंट हो गई। गर्भपात के प्रयास में ली हुई सभी गोलियां बेअसर ही रहीं। गोलियों की मार से जन्मा बच्चा एबनार्मल था कटे-मुड़े कान, अष्टावक्र सी टांगे-बाहें। मेरे साथ अमेरिका चलना है तो इससे छुटकारा पाना होगा। डॉक्टर ने दो टूक फैसला सुनाया। क्या? रिया की आंखें भय से विस्फारित थी। तुम इसे मार डालना चाहते हो। इसी की बेहतरी के लिए कह रहा हूं, ऐसे आधा अधूरा जीवन लेकर ये क्या करेगा। नहीं मैं तुम्हें इसे मारने नहीं दूंगी, ये मेरा बच्चा है, इसने मेरी कोख से जन्म लिया है रिया का मातृत्व जाग उठा था। सोच लो। फिर तुम मेरे साथ अमेरिका नहीं जा पाओगी। एक तरफ तुम्हारा करिअर, सफलता तुम्हारी महत्वाकांक्षाएं हैं। दूसरी तरफ यह लिजलिजा मांस-पिंड़। छि: तुम एक इंसान हो, मुझे शर्म आ रही है, अपने पर। घिन आ रही है तुम पर। तुम्हें मुबारक तुम्हारा करिअर, सक्सेस। महत्वकांक्षाएं। जैसा भी है मुझे मेरा बच्चा जान से ज्यादा प्यारा है।

२७२) जाड़ों में असली स्वाद गरम वस्तु में रहता है - एक बार राजमहल में राजा कृष्णदेव राय के साथ तेनालीराम और राजपुरोहित बैठे थे। जाड़े के दिन में सुबह की धूप सेंकते हुए तीनों बातचीत में व्यस्त थे। तभी एकएाक राजा ने कहा- जाड़े का मौसम सबसे अच्छा मौसम होता है। खूब खाओ और सेहत बनाओ। खाने की बात सुनकर पुरोहित के मुंह में पांनी आ गया। बोला- महाराज, जाड़े में तो मेवा और मिठाई खाने का अपना ही मजा और आनंद है। अच्छा बताओ, जाड़े की सबसे अच्छी मिठाई कौन-सी है? राजा ने पूछा। पुरोहित ने हलवा, मालपुआ, पिस्ते की बर्फी आदि कई मिठाइयां मंगवायीं और पुरोहित से कहा- जरा खाकर बताइये, इनमें सबसे अच्छी कौन सी है? पुरोहित को सभी मिठाईयां अच्छी लगती थीं। किस मिठाई को सबसे अच्छा बताता।

तेनालीराम ने कहा, सब अच्छी हैं, मगर वह मिठाई यहां नहीं मिलेगी। कौनसी मिठाई? राजा ने उत्सुकता से पूछा- उस मिठाई का नाम क्या है? नाम पूछकर क्या करेंगे महाराज आप आज रात को मेरे साथ चलें, तो मैं वह मिठाई आपको खिलवा भी दूंगा। राजा मान गये। रात को साधारण वेश में वह पुरोहित और तेनालीराम के साथ चल पड़े। एक जगह दो-तीन आदमी अलाव के सामने बेठै बातों में खोये हुए थे। ये तीनों भी वहां रूक गये। इस वेश में लोग राजा को पहचान भी न पाये। पास ही कोल्हू भी चल रहा था। तेनालीराम उधर गये और कुछ पैसे देकर गरम-गरम गुड़ ले लिया। अंधेरे में राजा और पुरोहित को थोड़ा-थोड़ा गरम-गरम गुड़ देकर बोले- लीजिए, खाइये, जाड़े की असली मिठाई। राजा ने गरम-गरम गुड़ खाया तो बड़ा स्वादिष्ट लगा। राजा बोले- वाह, इतनी बढ़िया मिठाई, यहां अंधेरे में कहां से आई? तभी तेनालीराम को एक कोने में पड़ी पत्तियां दिखाई दीं। वह अपनी जगह से उठा और कुछ पत्तियां इकट्ठी कर आग लगा दी। फिर बोला, महाराज यह गुड़ और इतना स्वादिष्ट महाराज, जाड़ों में असली स्वाद गरम चीज में रहता है।

२७३) नन्हे सुभाष की देशभक्ति - एक बार कुछ अंग्रेज खिलाड़ी भारतीयों के साथ खेल रहे थे। अंग्रेज खिलाड़ियों को अपने खेल पर बहुत घमंड था। वे भारतीय खिलाड़ियों को हमेशा नीचा दिखाने की सोचते रहते थे। एक छात्र को उनका ये व्यवहार बिलकुल पसंद नहीं था। वह अंग्रेजों के साथ ही पढ़ता था लेकिन उसे अपने समाज के बारे में बुरा सुनना बिलकुल पसंद नहीं था। अगर कोई ऐसा करता तो उसे बहुत गुस्सा आ जाता था। इसी बात के कारण अंग्रेज छात्र उससे डरते थे। एक दिन अंग्रेज और भारतीय छात्रों में किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई और विवाद काफी आगे बढ़ गया।

वो लड़का वहां आया और पूछा क्या बात है- तब एक अंग्रेज छात्र ने कहा कि मैं भारतीय छात्रों से बात नहीं करता बल्कि उन्हें ठोकर मारकर गिरा देता हूं। यह सुनकर उस लड़के को बहुत गुस्सा आया। उसने कहा कि हम भारतीय भी कम नहीं है। हम भी अंग्रेजों को ठोकर मारकर गिरा सकते हैं और यह कहकर उसने उस अंग्रेज छात्र को ठोकर मारकर गिरा दिया। यह छात्र सुभाषचंद्र बोस थे जो आगे चलकर नेताजी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

२७४) विश्वास की विजय - ब्रिटिश सेनापति नेल्सन की गिनती विश्व के महान योद्धाओं में होती है। बात उन दिनों की है जब नील नदी की भयानक जंग छिड़नेवाली थी। ब्रिटिश जहाजी बेडे के सभी सेनाधिकारियों के हृदय में निराशा व्याप्त थी। सहसा कैप्टन ने कहा, अगर हमारी जीत हो गई तो दुनिया दंग रह जाएगी। नेल्सन ने एक तीखी दृष्टि कैप्टन पर डाली और पूछा, अगर से तुम्हारा क्या मतलब है? कैप्टन तनिक सकपकाया, फिर साहस बटोरकर बोला, मेरा मतलब है कि दुश्मन हमसे कहीं ज्यादा ताकतवर है। ऐसे में हमारी जीत भाग्य पर ही निर्भर है। नेल्सन ने यह सुनकर गंभीर और दृढ़ स्वर में कहा, कैप्टन, हमारी जीत का भाग्य से कोई संबंध नहीं है। हम जीतेंगे और अवश्य जीतेंगे। यह भी समझ लो कि हमारी जीत भाग्य के सहारे नहीं, बहादुरी, हिम्मत, निष्ठा और विश्वास के बल पर होगी। सेनापति के इस आत्मविश्वास भरे शब्दों ने प्रत्येक सैनिक के हृदय में मंत्र सा फूंक दिया। भाग्य का भरोसा छोड़ वे विश्वास एवं साहस के साथ युद्ध में जूझ पड़े और सचमुच, इस युद्ध में संसार उनकी विजय को देख चकित रह गया। भाग्य से कर्म बड़ा होता है।

२७५) संवेदनशील कवि इगुचि - जापान के टोकिया शहर में एक व्यक्ति धन के अभाव में इतना दुखी हो गया कि वह आत्महत्या के बारे में सोचने लगा। इससे पहले कि वह कुछ गलत करता, एक मनमौजी व्यक्ति ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, क्या तुम जीवन के मूल्य को नहीं जानते हो? यह मानव जीवन क्या धन के अभाव में दुखी होकर आत्महत्या करने के लिए ही मिला है? क्या इससे तुमको मुक्ति मिल जाएगी? इससे अच्छा है हंसो और जीवन के रास्ते में आड़े आनेवाली सभी बाधाओं को पीछे धकेल दो। उस व्यक्ति ने मुड़कर उस मनमौजी व्यक्ति को देखा और सिसकियां भरकर रोने लगा। उसने उस मनमौजी व्यक्ति को अपने आत्महत्या करने के कारणों की सारी कथा एक ही सांस में कह सुनाई कि कैसे पिछले तीन दिनों से उसका परिवार भूख से छटपटा रहा है। उसकी दर्दभरी व्यथा सुनकर उस मनमौजी व्यक्ति की आंखों में भी आंसू भर आए और उसने प्रण किया कि आज से ही वह अपनी कमाई का अधिक से अधिक अंश दान में दिया करेगा। यह संकल्प करने के बाद उसने गुप्तदान की पेटी सड़क के बीचोबीच लगवाकर उस पर लिख दिया कि, जिस व्यक्ति को सचमुच पैसों की आवश्यकता हो, वह इसमें से निकलवाकर निसंकोच भाव से अपना काम चला सकता है और जो कोई जरूरतमंद ऐसा करेगा, उससे मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी। यह मनमौजी व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि जापान के विश्वविख्यात कवि इगुचि थे।

२७६) जो होता है अच्छा ही होता है - एक व्यापारी निकट शहर के मेले से अपने घोड़े पर वापस लौट रहा था। उसके पास काफी माल था, पर मूसलाधार बरसात की वजह से वह बुरी तरह भीग गया। उसे भगवान पर बड़ी झुंझलाहट हो रही थी। मन ही मन वह ईश्वर को कोसने लगा। आगे पहुंचने के लिए उसे एक जंगल से गुजरना था। जैसे ही वह व्यापारी जंगल में घुसा, भय से उसका चेहरा फिका पड़ गया। एक शिकारी की बंदूक का निशाना गलती से उस पर सधा

हुआ था। भारी बरसात और धुंध की वजह से वह गोली नहीं चला पा रहा था। व्यापारी ने इस स्थिति का फायदा उठाया। अपने घोड़े को तेज दौड़ाकर वह खतरे से बाहर हो गया। खतरे से बाहर आकर व्यापारी बोला, अगर आज मौसम अच्छा होता तो निश्चित था कि मैं शिकारी के निशाने से घायल हो मरा पड़ा होता और घर पर मेरे प्यारे बच्चे मेरी प्रतीक्षा में आंखें बिछाए बैठे रहते। बरसात ने ही मेरी रक्षा की, नहीं तो... भगवान जो करता है, अच्छा ही करता है।

२७७) कीर्ति शैली और कीर्ति का पति - कीर्ति और शैली बचपन में हमेशा साथ रहीं। उनकी दोस्ती इतनी मजबूत थी कि बीस साल बाद भी जब वे मिलीं, तो उनके दिलों में एक दूसरे के लिए उतना ही प्रेम था। कीर्ति पति रोहन के साथ ऑस्ट्रेलिया में रहती थी, जबकि शैली भारत से खास तौर पर उनसे मिलने आई थी। उन लोगों ने एक-दूसरे के साथ बहुत अच्छा वक्त बिताया और शैली ने अपनी जिंदगी से जुड़ी हरेक बात कीर्ति से साझा की। मगर शैली जब भी कीर्ति से अपने बारे में कुछ बताने को कहती, तो वह कहती, मेरे पास बताने को ऐसा कुछ है ही नहीं। एक दिन कीर्ति और रोहन के बीच में काफी तेज बहस हो गई। यह देखकर शैली बहुत दुखी हो गई। कुछ देर बाद शैली ने कीर्ति से पूछा, क्या तुम्हारी शादी ठीक नहीं चल रही? मैंने तुम लोगों की लड़ाई सुनी। तुमने मुझे यह बात क्यों नहीं बताई? अगर तुम लोगों में इतना मतभेद है, तो क्या अलग हो जाना बेहतर नहीं होगा? शैली की बात सुनकर कीर्ति जोर-जोर से हंसने लगी और उसने तुरंत रोहन को भी वहां बुला लिया। रोहन भी कीर्ति के साथ हंसने लगा। रोहन बोला, शैली, हमारा हर रिश्ता ऐसा ही होता है। किन्हीं भी दो लोगों को ले लो, फिर वह मां-बेटी हो या तुम दोनों जैसी अच्छी सहेलिया, क्या हमारी सोच एक जैसी हो सकती है? हम अलग-अलग सोच से ही सीखकर आगे बढ़ते हैं। कई बार हमें एक दूसरे की बातें चुभती भी हैं, पर यही बातें हमें सोचने को मजबूर भी करती हैं। यही बातें तो हमारा पूरक होती हैं। कई बार हम सिर्फ एक ही पहलू देख पाते हैं। पर यही वाद-विवाद हमें दूसरे पहलू का भी एहसास दिलाता है। अगर वाद-विवाद न हो, तो लोग एक-दूसरे से कुछ सीखेंगे ही नहीं। ठीक उसी तरह से कीर्ति और मैं, आपस में जितना भी लड़ लें, हम एक दूसरे का बहुत सम्मान करते हैं। एक दूसरे से बेइंतहा प्रेम करते हैं। अगर हम चुप हो जाते, एक दूसरे से बातें छिपाने लगते, तो जरूर सोचने का विषय होता। फिर तीनों ठहाके मारकर हंसने लगे। संवाद ही रिश्तों की गांठें खोलने का माध्यम होता है।

२७८) अभ्यास का फल - गुरु द्रोणाचार्य कौरवों और पांडवों को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा देते थे। उन राजकुमारों के साथ उनका बेटा अश्वत्थामा भी शिक्षा ले रहा था। वह चाहते थे कि उनका बेटा अस्त्र-शस्त्र की विद्या में सभी राजकुमारों से आगे रहे। लेकिन अर्जुन के सामने वह बहुत पीछे छूट रहा था। द्रोण ने कई तरकीबें निकालीं। कोई न कोई बहाना बनाकर वह राजकुमारों को कुछ समय के लिए बाहर भेज देते और अकेले में अश्वत्थामा को नई विद्या सिखाते थे। फिर भी वह पीछे रह जाता। अर्जुन आचार्य की चालाकी समझ रहा था, लेकिन कुछ कह नहीं पा रहा था। एक दिन रात को अर्जुन भोजन कर रहा था कि हवा का झोंका आया और दीया बुझ गया। उसे अंधेरे में ही भोजन करना पड़ा। तब उसका ध्यान इस बात पर गया कि अंधेरे में हाथ हर बार थाली में अन्न पर ही पड़ता था और कौर भी मुंह के भीतर ही जाता था। ऐसा हमारे अभ्यास के कारण होता है। मतलब यह कि अभ्यास से कुछ भी हासिल किया जा सकता है। दूसरे दिन से अर्जुन ने रात के अंधेरे में चुपचाप बाण चलाने का अभ्यास शुरू कर दिया। एक रात धनुष की टंकार

सुन द्रोण की आंख खुल गई तो उन्होंने अर्जुन को अभ्यास करते देख लिया। उसके दृढ़ निश्चय को देखकर द्रोण समझ गए कि अश्वत्थामा अर्जुन की बराबरी कभी नहीं कर पाएगा। अपने को पीछे छूटता देखकर एक बार अश्वत्थामा ने द्रोण से कहा, पिताजी, हमसे ज्यादा आप अर्जुन को चाहते हैं। द्रोण ने कहा, पुत्र तुम्हारा संदेह गलत है। मेरे पास जितना भी ज्ञान था, उसे मैंने तुम्हें दे दिया। तुम समझते हो कि शिक्षा देने से ही ज्ञान हासिल होता है। नहीं, गुरु केवल मार्ग दिखाता है। रास्ता खोजने का काम शिष्य का होता है। उन्होंने रात में अर्जुन के अभ्यास का जिक्र करते हुए कहा, पुत्र, अर्जुन ने अपना रास्ता खोज लिया है। उसे कोई पछाड़ नहीं सकता।

२७९) मन के हारे हार - कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ जो आगे चलकर गौतम बुद्ध हुए और जिन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की, गृह त्यागकर निकले, तो बोध की खोज में काफी भटके। आखिर उनकी हिम्मत टूटने लगी। उनके मन में यह विचार बार बार उठने लगा कि क्यों न वापस राजमहल चला जाए और अंत में एक दिन वे कपिलवस्तु की ओर लौट ही पड़े। चलते-चलते राह में उन्हें प्यास लगी। सामने ही एक झील थी। वे उसके किनारे गए, तभी उनकी दृष्टि एक गिलहरी पर पड़ी। गिलहरी कोई दुर्लभ जीव नहीं किंतु उस गिलहरी की चेष्टाओं ने सिद्धार्थ का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। बात यह थी कि वह गिलहरी बार बार पानी के पास जाती, अपनी पूँछ उसमें डुबोती और उसे निकालकर रेत पर झटक देती। सिद्धार्थ से न रहा गया। वे पूछ ही बैठे, नन्हीं गिलहरी, यह क्या कर रही हो तुम? इस झील को सुखा रही हूँ, उसने उत्तर दिया। यह काम तो तुमसे कभी न हो पाएगा, सिद्धार्थ बोले, भले ही तुम हजार बरस जियो और करोड़ों-अरबों बार अपनी पूँछ पानी में डुबाकर झटको किंतु झील को सुखाना तुम्हारे बस की बात नहीं। तुम्हीं ऐसा मानो, मैं नहीं मानती। मैं तो यह जानती हूं कि मन में जिस कार्य को करने का निश्चय किया, उस पर अटल रहने से वह हो ही जाता है। मैं तो अपना काम करती रहूँगी। और वह अपनी पूँछ डुबोने झील की ओर चल पड़ी। गिलहरी की बात सिद्धार्थ के हृदय में गड़ गई। उन्हें अपने मन की निर्बलता महसूस हुई। वे वापस लौटे और फिर तप में रत हो गए।

२८०) सोच का फर्क - जूतों की एक प्रसिद्ध कंपनी ने अपना कारोबार फैलाने की योजना बनाई। इसके लिए मालिक ने अपनी कंपनी के एक सेल्समैन को पड़ोस के एक देश में जूतों के इस्तेमाल का जायजा लेने भेजा। सेल्वमैन उस देश में जगह-जगह घूमा और उसने वहां हर चीज के बारे में विस्तार से जानकारी हासिल की। फिर वह वापस स्वदेश लौटकर आया और कंपनी के मालिक से बोला, मैंने वहां जगह-जगह घूमकर हर चीज का बारीके से मुआयना किया और अंत में इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि वहां पर जूते की कंपनी खोलने के बारे में सोचना भी बेकार है क्योंकि वहां तो लोग जूते पहनते ही नहीं है। अब भला जो जूतों के बारे में जानते ही न हों वे उसकी खरीदारी कैसे करेंगे? मालिक ने इस पर कुछ नहीं कहा और दूसरे सेल्समैन को भी यही पता करने भेजा। दूसरा सेल्समैन तत्काल चला गया। उसने वहां से लौटकर अपने मालिक से कहा, बहुत ही अच्छी खबर है। वहां हमारा व्यापार बहुत अच्छी तरह जम जाएगा क्योंकि वहां के लोग जूते नहीं पहनते। बस एक बार हमें उन्हें जूतों का महत्व समझाना होगा। जब सभी लोग जूतों के महत्व को समझ जाएंगे तो वे इन्हें जरूर खरीदना चाहेंगे। ऐसे में हमारी कंपनी को वहां बहुत लाभ होगा। इसके बाद हमारी कंपनी वहां स्थायी रूप से स्थापित हो सकती है। मालिक ने तुरंत वहां कंपनी खोली और उस सेल्समैन को वहां का मैनेजर बना दिया और कहा,

दुनिया सकारात्मक सोच से आगे बढ़ती है। सकारात्मक सोच वाला ऊंचाइयों पर पहुंच जाता है।

२८१) जब प्राण बचाकर भागे भैरव नाथ - एक बार भगवान शिव की आज्ञा पर भैरवनाथ ने ब्रह्माजी का पांचवा सिर काट दिया था, क्योंकि ब्रह्माजी ने खुद को श्रेष्ठ बताने के लिए झूठ का सहारा लिया था। लेकिन चूंकि ब्रह्मा जी ब्राह्मण हैं, अत: उनका सिर काटने से भैरव को ब्रह्महत्या का दोष लग गया। ब्रह्माजी का सिर भैरवनाथ के हाथ के साथ ही चिपक गया।

तब शिव शंकर ने भैरव से कहा- हे भैरव, ब्रह्महत्या के इस दोष से मुक्ति पाने के लिए आपको एक हाथ में ब्रह्मा का कटा हुआ सिर तथा दूसरे हाथ में भिक्षापात्र अर्थात खप्पर लेकर त्रिलोक का भ्रमण करना पड़ेगा। तुम्हारे चार हाथ हैं, अत: बाकी दो हाथों में मेरा प्रिय वाद्य डमरू तथा त्रिशूल धारण करो। जब ब्रह्मा जी का कटा सिर तुम्हारे हाथ से गिर जाएगा, तब तुम ब्रह्महत्या के दोष से मुक्त हो जाओगे। परंतु जब तक तुम इस दोष से मुक्त नहीं हो जाते, तब तक यह तुम्हें प्रताड़ित करती रहेगी। ऐसा कहकर भगवान शिव ने उसी समय एक अत्यंत तेजस्वी व विकराल कन्या को प्रकट किया। ब्रह्महत्या नामक कन्या के सम्पूर्ण शरीर पर सिंदूर की एक मोटी परत चढ़ी हुई थी। वह गहरे लाल रंग के वस्त्र धारण किए, एक हाथ में खप्पर तथा दूसरे में तीक्ष्ण धारवाली दोधारी कटार पकड़े थी। भयानक मुखाकृति वाली ब्रह्महत्या अपनी लंबी जीभ को लपलपाकर आकाश से टपकनेवाले रुधिर का पान करके भीषण अट्टहास कर रही थी। भगवान शिव ने उसे भैरव का पीछा करने का आदेश दिया। शिव के वचन सुनते ही ब्रह्महत्या भैरव की और लपकी। भैरव जी जान बचाकर भाग खड़े हुए। समय व्यतीत होता गया। भैरव जी ब्रह्महत्या से मुक्ति पाने के लिए जगह-जगह भटकते रहे। एक दिन भैरव जी काशी में प्रवेश कर गए। काशी की सीमा में ब्रह्महत्या का प्रवेश वर्जित था। अत: ब्रह्महत्या काशी में प्रवेश नहीं कर सकी। इस प्रकार शिव की माया से उत्पन्न ब्रह्महत्या से भैरव का आखिरकार पीछा छूट गया। काशी में गंगा जी में स्नान करने के बाद तट के निकट ही एक स्थान पर भैरव जी के हाथ से ब्रह्मा जी का कटा हुआ सिर गिर गया। जिस जगह पर ब्रह्माजी का सिर गिरा था, वह स्थान कपाल मोचन के नाम से विख्यात हुआ। ब्रह्महत्या के दोष से मुक्त होने पर भगवान भोलेनाथ ने भैरव जी को काशी का कोतवाल नियुक्त कर दिया। अब भैरव जी अदृश्य रूप में ही पृथ्वी पर काशी नगरी में निवास करते हैं।

२८२) सुख का विचार - कर्नाटक के बेलगांव में प्रसिद्ध विद्वान पंडित चिदंबर दीक्षित रहा करते थे। ज्ञान, भक्ति और सेवा कार्यों में उनका कोई सानी न था। आसपास के लोग उनके पास विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए आते रहते थे। एक दिन एक महिला दीक्षित जी के घर पहुंची। वह पंडित जी से संतान प्राप्ति का आशीर्वाद लेने आई थी। उसने बताया कि वह सभी व्रत-उपवास करती है, लेकिन इसके बावजूद उसकी मनोकामना पूरी नहीं हो पा रही है। इसलिए उसका जीवन दुखद हो गया है। वह अपने को अकेली और असहाय समझती है। दीक्षित जी ने उसे पास पड़े चने में से दो मुट्ठी चने दिए और एक कोने में बैठकर इंतजार करने को कहा। वह महिला घर के बाहर एक कोने में बैठकर चने खाने लगी, तभी सड़क पर खेल रहे बच्चे उस महिला का मुंह ताकने लगे। कुछ ने चने पाने की आशा में अपने हाथ भी उस महिला के सामने फैला दिए। महिला ने दूसरी तरफ मुंह मोड़ लिया और चुपचाप चने खाती रही। बच्चे मायूस होकर उसे देख रहे

थे और उसने देखते ही देखते चने खत्म कर दिए। पंडित जी भी दूर से सारा दृश्य देख रहे थे। उन्होंने महिला को बुलाकर कहा, तुम मुफ्त में मिले चने भी भगवान रूपी बच्चों के साथ मिल बांटकर नहीं खा सकती, तो तुम भगवान से कैसे आशा करती हो कि वे तुम्हें बच्चों का सुख प्रदान करेंगे। तुम संतान चाहती हो लेकिन तुम्हारे भीतर बच्चों के लिए कोई ममता नहीं है। तुम यह सोचती हो कि तुम्हारे अपने बच्चे होंगे तभी तुम उन्हें प्यार करोगी। दूसरों के बच्चों से तुम्हें क्या मतलब। यह एक गलत सोच है। तुम अपने हृदय का विस्तार करो। सबको गले लगाओ। सबके ऊपर ममता लुटाओ। दूसरों के बच्चों को भी अपनी ही संतान समझो। तुम देखोगी कि तुम्हारा जीवन एकदम बदल गया है। तुम अपने को अकेली और असहाय समझना बंद कर दोगी। महिला ने वचन दिया कि वह अपनी सोच बदलेगी।

२८३) जो भी छुओगे, सोना हो जाएगा - एक राज्य में एक लालची राजा राज करता था जिसका नाम मिदास था। उसके पास सोने की कोई कमी नहीं थी, लेकिन उसको सोने का बहुत लालच था। उसके पास जितना सोना बढ़ता, वह और अधिक सोना पाने की लालसा करता। उसने सोने को खजाने में जमा कर लिया था और हर रोज उसे गिना करता था। एक दिन जब वह सोना गिन रहा था, तो एक अजनबी कही से उसके पास आया और बोला, तुम मुझसे कोई भी ऐसा वरदान मांग सकते हो, जो तुम्हें दुनिया में सबसे ज्यादा खुशी दे।

राजा खुश हुआ और उसने कहा- मैं चाहता हूं कि जिस चीज को मैं छूऊँ, वह सोना बन जाए।

अजनबी ने राजा से पूछा- क्या तुम सच में यही चाहते हो? राजा ने कहा- हाँ। तो अजनबी बोला- कल सूरज की पहली किरण के साथ ही तुम्हें किसी चीज को छूकर सोना बना देने की ताकत मिल जाएगी।

राजा ने सोचा कि वह सपना देख रहा होगा, यह सच नहीं हो सकता। लेकिन अगले दिन जब राजा नींद से उठा, तो उसने अपना पलंग छुआ और वह सोना बन गया। वह वरदान सच था। राजा ने जिस चीज को छुआ, वह सोना बन गई। उसने खिड़की से बाहर देखा और अपनी नन्ही बच्ची को खेलते पाया। उसने अपनी बिटिया को यह अजूबा दिखाना चाहा और सोचा कि वह बहुत खुश होगी। लेकिन बगीचे में जाने से पहले उसने एक किताब पढ़ने की सोची, उसने जैसे ही उसे छुआ, वह सोने की बन गई। वह किताब को पढ़ न सका। फिर वह नाश्ता करने बैठा, जैसे ही उसने फलों और पानी के गिलास को छुआ, वे भी सोने के बन गए। उसकी भूख बढ़ने लगी और वह खुद से बोला- मैं सोने को खा और पी नहीं सकता। ठीक उसी समय उसकी बेटी दौड़ती हुई वहां आई और उसने उसे बाँहों में भर लिया। वह सोने की मूति बन गई। अब राजा के चेहरे से खुशी गायब हो गई। राजा सिर पकड़कर रोने लगा। वह वरदान देनेवाला अजनबी फिर आया और उसने राजा से पूछा कि क्या वह हर चीज को सोना बना देने की अपनी ताकत से खुश है? राजा ने बताया कि वह दुनिया का सबसे दुखी इंसान है। राजा ने उसे सारी बात बताई।

अजनबी ने पूछा- अब तुम क्या पसंद करोगे, अपनी भोजन और प्यारी बिटिया, या सोने के ढेर और बिटिया की सोने की मूर्ति। राजा ने गिड़गिड़ाकर माफी मांगी और कहा- मैं अपना सारा सोना छोड़ दूंगा, मेहरबानी करके मेरी बेटी मुझे लौटा दो, क्योंकि उसके बिना मेरी हर चीज मूल्यहीन हो गई है।

अजनबी ने राजा से कहा- तुम पहले से बुद्धिमान हो गए हो और उसने अपने वरदान को वापस ले लिया। राजा को

अपने बेटी फिर से मिल गई और उसे एक ऐसी सीख मिली जिसे व जिन्दगी भर भुला नहीं सका।

लालच से बचना- हमें लालच से हमेशा बचना चाहिए। अपने लालच को पूरा करने के लिए अपने उन चीजों को दांव पर मत लगाइए जो आपके लिए बेशकीमती है। उन चीजों के लिए हमेशा एहसानमंद रहिए जो चीजें आपके पास हैं। अगर ये चीजें आपके पास न हों तो शायद आपके पास सब कुछ होते हुए भी कुछ न हो। अपने जीवन के मूल्यों को हमेशा बड़ा बनाओ, घटिया जीवन मूल्य हमेशा दु:ख ही देते हैं। लालच, बेईमानी, विश्वासघात, झूठ बोलना व गुस्सा करना ऐसे घटिया जीवन मूल्य है जो आपको हमेशा दु:ख ही देते रहेंगे। इनके होते हुए आप कभी भी खुश नहीं रह सकते। अगर आप सच में खुश रहना चाहते हैं तो इन्हें अपने जीवन से दूर करें तभी आप जिन्दगी का असली मजा उठा पाओगे।

२८४) राजा प्रसन्न हो गया और राजकवि से क्षमा मांगी - राजा का दरबार लगा था। सबको राजकवि की प्रतीक्षा थी। उनके आए बगैर कोई काम नहीं करते थे। राजा उनका बेहद सम्मान करते थे और समय-समय पर उनसे सलाह भी लिया करते थे आखिरकार राजकवि आए। राजा ने रोज की तरह उठकर उन्हें प्रणाम किया राजकवि ने राजा से कहा- आपके शत्रु चिरंजीव हों। यह सुनकर पूरी सभा दंग रह गई। यह विचित्र आशीर्वाद सुनकर राजा भी नाराज हो गए, पर उन्होंने क्रोध पर नियंत्रण कर लिया।

इस बात को वहां उपस्थित सभी लोगों ने भांप लिया। कई दरबारी ऐसे भी थे, जो राजकवि से जलते थे। वे मन ही मन प्रसन्न हो गए कि, अब राजकवि राजा की नजरों में गिर जाएंगे और उनका महत्व कम हो जाएगा। हो सकता है वे दंडित भी किए जाएं। राजकवि ने भी इस बात को ताड़ लिया कि राजा उनसे नाराज हैं।

उन्होंने तुरंत कहा महाराज, क्षमा करें। मैंने आपको कुछ दिया, पर आपने लिया नहीं। राजा ने पूछा- कौन सी चीज? राजकवि बोले- मैंने आपको आशीर्वाद दिया, पर लगता है कि आपने लिया नहीं।

राजा ने कहा- आप मेरे शत्रुओं को मंगलकामना दे रहे हैं।

इस पर राजकवि ने समझाया- राजन, मैंने यह आशीर्वाद देकर आपका हित ही चाहा है। जब आपके शत्रु जीवित रहेंगे, तो आप में बल, बुद्धि पराक्रम और सावधानी बनी रहेगी। राजा को सदा सावधान रहना चाहिए। सावधानी तभी रह सकती है, जब शत्रु का भय हो। शत्रु के होने पर ही होशियारी आती है। उसके न रहने पर हम निश्चिंत और असावधान हो जाते हैं। इस प्रकार मैंने आपके शत्रुओं को नहीं, आपको मंगलकामना दी है। यह सुनकर राजा प्रसन्न हो गए। उन्होंने राजकवि से क्षमा मांगी और राजकवि से जलनेवाले दरबारी फिर पस्त हो गए।

२८५) और इसके बाद देवी अंतर्ध्यान हो गईं - एक गरीब था। बेहद गरीब। बेचारा बड़ी मुश्किल से अपना जीवन बिता रहा था। एक दिन घूमते-घूमते उसकी भेंट एक महात्मा से हुई। महात्मा ने उसकी दीन हालत देखकर उसे भगवान की आराधना का मंत्र दिया। गरीब बड़ा प्रसन्न हुआ। अब वह महात्मा द्वारा दिए गए मंत्र से भगवान का स्मरण करने लगा। उसकी मंत्र आराधना से प्रसन्न होकर धन एवं ऐश्वर्य की देवी उसके सामने प्रकट हुईं और उससे कहा, मैं तुम्हारी आराधना से बेहद प्रसन्न हूं। बोलो, क्या चाहते हो? देवी को साक्षात सामने देखकर वह गरीब एकाएक घबरा-सा गया। उससे कुछ मांगते न बना तो अनुनय के शब्दों में उसने कहा, देवी जी कल सुबह मांग लूंगा।

देवी ने कहा, ठीक है, मैं कल सुबह फिर से आऊंगी। यह कहकर वे अंतर्ध्यान हो गईं। अब गरीब के चिंतित होने की बारी थी। वह बड़े चक्कर में पड़ा कि देवी से क्या मांगा जाए? वह सोचने लगा- रहने के लिए घर नहीं है, इसलिए यही पहले मांगा जाए। फिर उसने सोचा कि जब देवी मुंह-मांगा वर देने के लिए तैयार हैं, तब घर ही क्यों मांगा जाए? ये जमींदार लोग गांव के सब लोगों पर रौब गांठते हैं। इसलिए मैं भी जमींदार हो जाऊं तो अच्छा है। यह विचार कर उसने जमींदारी मांगने का निर्णय कर लिया।

वह फिर सोचने लगा कि आखिर जब लगान भरने का समय आता है। तब ये जम्मींदार भी तहसीलदार की मिन्नतें करते हैं, इसलिए इनसे बड़ा तो तहसीलदार है, वही क्यों न बन जाऊं। इस प्रकार सोचने के पश्चात वह तहसीलदार बनने की इच्छा करने लगा। कुछ देर बाद उसे जिलाधीश का स्मरण आया, तो तहसीलदार का पद भी फीका दिखाई देने लगा। इस प्रकार उसकी एक-से-एक नवीन इच्छाएं बढ़ती ही गईं। सवेरा हुआ। ज्यों ही सूर्य की पहली किरण पृथ्वी पर पड़ी, त्यों ही देवी एकाएक प्रकट हुईं और उस गरीब से पूछने लगीं, बोलो, अब क्या चाहते हो? गरीब ने उत्तर दिया, देवीजी, मुझे कुछ नहीं चाहिए। सिर्फ भगवान की भक्ति और आत्मसंतोष का गुण दीजिए। देवी ने पूछा, क्यों भाई, तुमने धन-दौलत क्यों नहीं मांगी? गरीब बोला, देवीजी, मेरे पास दौलत नहीं आई, आने की आशा मात्र हुई तो मुझे चिंता से रातभर नींद नहीं आई। यदि वास्तव में दौलत आ गई, तो फिर तो नींद एकदम विदा ही हो जाएगी। उसकी बातें सुनकर देवी बहुत प्रसन्न हुई। उन्होंने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और आशीर्वाद दिया, तुम्हें जिंदगी में कभी किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। इसके बाद देवी अंतर्ध्यान हो गईं।

२८६) काम की ललक - शहर से कुछ दूर एक बुजुर्ग दम्पति रहते थे। वो जगह बिलकुल शांत थी और आसपास इक्का दुक्का लोग ही नजर आते थे। एक दिन भोर में उन्होंने देखा कि एक युवक हाथ में फावड़ा लिए अपनी साइकिल से कहीं जा रहा है। वह कुछ देर दिखाई दिया और फिर उनकी नजरों से ओझल हो गया। दम्पति ने इस बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया, पर अगले दिन फिर वह व्यक्ति उधर से जाता दिखा। अब तो मानो ये रोज की ही बात बन गयी, वह व्यक्ति रोज फावड़ा लिए उधर से गुजरता और थोड़ी देर में आंखों से ओझल हो जाता।

दम्पति इस सुनसान इलाके में इस तरह किसी के रोज आने-जाने से कुछ परेशान हो गए और उन्होंने उसका पीछा करने का फैसला किया। अगले दिन जब वह उनके घर के सामने से गुजरा तो दंपति भी अपनी गाड़ी से उसके पीछे-पीछे चलने लगे।

कुछ दूर जाने के बाद वह एक पेड़ के पास रुका और अपनी साइकिल वहीं खड़ी कर आगे बढ़ने लगा। १५-२० कदम चलने के बाद वह रुका और अपने फावड़े से जमीन खोदने लगा। दम्पति को ये बड़ा अजीब लगा और वे हिम्मत कर उसके पास पहुंचे, तुम यहां इस वीराने में ये काम क्यों कर रहे हो? युवक बोला, जी, दो दिन बाद मुझे एक किसान के यहां काम पाने के लिए जाना है और उन्हें ऐसा आदमी चाहिए जिसे खेतों में काम करने का अनुभव हो, चूंकि मैंने पहले कभी खेतों में काम नहीं किया इसलिए कुछ दिनों से यहां आकर खेतों में काम करने की तैयारी कर रहा हूं। दम्पति यह सुनकर काफी प्रभावित हुए और उसे काम मिल जाने का आशीर्वाद दिया। किसी भी चीज में सफलता पाने के लिए तैयारी बहुत जरूरी है। जिस तल्लीनता के साथ युवक ने खुद को खेतों में काम करने के लिए तैयार किया, कुछ उसी तरह हमें भी

अपने अपने क्षेत्र में सफलता के लिए खुद को तैयार करना चाहिए।

२८७) संस्कारवान और सदाचारी बेटा - एक राजकुमार शहर में घूमने निकला, उस समय अप्सरा सी सुन्दर नगर सेठ की पुत्रवधू भी उसी रास्ते से घर लौट रही थी। राजकुमार ने उस रूपसी को देखा, वे प्रस्तर प्रतिमा की तरह स्थिर हो गए। ऐसा सौन्दर्य तो उसने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था, इतना रूप भी किसी मानवी का होता है यह तो पहली बार ही उसने जाना था। वे कितनी ही देर उसे अपलक निहारते रहे। अचानक उनके विवेक ने झटका दिया- यह क्या, मैं भावी राजा होने के नाते पूरी प्रजा का भाई और बेटा हूं। मेरे से इस प्रकार का घृणित कार्य? किसी राह चलती नगर की बहन बेटी पर दृष्टि डालना उचित नहीं है।

मुझे समस्त प्रजा की नारीजात को मां और बहन समझना चाहिए। धिक्कार है इस नयन युगल को, जिन्होंने विकारी भावों से बहिन समान इस नारी को देखा। मुझे तुरंत प्रायश्चित्त करना चाहिए। वे तत्क्षण पश्चाताप के आंसू बहाते हुए अपनी माता के पास पहुंचे। रोते-रोते उन्होंने पूरा वृत्तांत सुना दिया। किस प्रकार मन में विकार भाव पैदा हुए? साथ सजा भी मांग ली। आज की पुत्र मोह में पगली मां होती तो तुरंत कहती- क्या हो गया बेटा? मन में ही तो कुछ अशुद्ध भाव पैदा हुए थे। चिन्ता मत कर बेटा। इसमें रोने और सजा मांगने जैसा कुछ नहीं है। वह सच्ची मां थी। वर्तमान का नहीं, भविष्य का सोचने वाली थी। उसने तुरंत कहा- तुमने भयंकर भूल की है। पूरी प्रजा की नारियों के सदाचार का दायित्व भविष्य में तुम्हारे ऊपर आने वाला है। अगर तुम ही अपनी नारी प्रजा की सुरक्षा नहीं करोगे तो उसके सदाचार की रक्षा कैसे संभव होगी? यथा राजा तथा प्रजा अगर राजा प्रत्येक की बहिन बेटी को अपनी बहिन बेटी समझे तो शील और सदाचार का रक्षण संभव है। लाखों नारियों की पवित्रता के रक्षण के लिए तुझे अभी से ही कृत संकल्प होना चाहिए। सजा के फलस्वरूप लगातार चार दिनों तक जैसे काजल आंखों में डाला जाता है वैसे ही मैं अपने हाथों तुम्हारी आंखों में नमक डालूंगी ताकि भविष्य में कभी भी तुम्हारी नजरें किसी की ओर नहीं उठे, उठें भी तो वे भाई और पिता की नजर के रूप में उठें। युवराज ने प्रसन्नतापूर्वक सजा स्वीकार की और मां ने अपने ही हाथों से चार दिन तक नमक डाला। इसे कहते हैं संस्कारवान और सदाचारी बेटा।

२८८) ईश्वर की मर्जी के बगैर कुछ भी नहीं होता - बहुत समय पहले की बात है। एक छोटे राज्य का राजा बहुत दयालु था। उसके यहां रोज दो भिखारी भीख मांगने आया करते थे। उनमें एक भिखारी जवान था और एक भिखारी बूढ़ा था। राजा उनको रोजी रोटी और पैसा दिया करता था। भीख लेने के बाद बूढ़ा भिखारी कहता ईश्वर की देन है जवान भिखारी कहता था हमारे महाराज की देन है।

एक दिन राजा ने उन्हें आम दिनों से ज्यादा धन दिया। छोटे भिखारी ने कहा हमारे महाराज की देन है बूढ़े भिखारी ने कहा ईश्वर की देन है यह सुनकर राजा को बहुत गुस्सा आया उसने सोचा इनका भरण पोषण तो मैं करता हूं और यह भिखारी कहता है कि ईश्वर की देन है। राजा ने छोटे भिखारी की और सहायता करने की सोची और अगले दिन राजा ने कहा आज तुम इस नए रास्ते से जाओगे लेकिन पहले छोटा भिखारी जाएगा बाद में बूढ़ा भिखारी जाएगा। यह कहते हुए राजा ने नए रास्ते में एक सोने से भरी थैली रखवा दी ताकि छोटे भिखारी को मिल सके। जब छोटा भिखारी इस नए रास्ते से जा रहा था तो

उसने देखा कि यह रास्ता काफी चौड़ा और समतल है। उसने सोचा इस रास्ते से मैं आंखें बंद करके जा सकता हूं। जहां पर राजा ने सोने की थैली रखी थी छोटा भिखारी वहां से आंखें बंद करके आगे निकल गया और सोने की थैली वहीं रह गई।

कुछ देर बाद जब बूढ़ा भिखारी पीछे से गया तो उसे वह थैली मिल गई। थैली उसने उठाई और भगवान का धन्यवाद किया। अगले दिन जब भिखारी फिर राजा के पास गए तो राजा ने छोटे भिखारी को देखते हुए बोला आपको मेरे भेजे हुए रास्ते में कुछ मिला कि नहीं। छोटे भिखारी ने कहा रास्ता तो बहुत अच्छा था पर मुझे वहां कुछ नहीं मिला। बूढ़े भिखारी ने कहा कि मुझे एक सोने से भरी थैली मिली जो ईश्वर की देन थी।

राजा ने अब निश्चय कर लिया कि वह बूढ़े वाले भिखारी को ये दिखाके रहेगा। जैसे ही दोनों भिखारी जाने लगे राजा ने छोटे भिखारी को बुलाकर उसे एक कद्दू दिया जो सोने-चांदी से भरा हुआ था। पर ऊपर से बंद था। भिखारी यह नहीं जानता था कि यह कद्दू सोने-चांदी से भरा है। रास्ते में एक दुकान में उसने यह कद्दू बेच दिया। अगले दिन राजा ने उन भिखारियों से पूछा कि बताओ पिछले दिन कोई महत्वपूर्ण घटना घटी, छोटे भिखारी ने कहा महाराज जो कद्दू आपने मुझे दिया था वह मैंने एक व्यापारी को बेच दिया जिससे मुझे थोड़ा सा धन मिल गया। राजा को बहुत गुस्सा आया पर राजा ने अपने गुस्से को व्यक्त नहीं किया। बूढ़े भिखारी ने कहा, निश्चय ही कमाया है। मुझे एक व्यापारी ने एक कद्दू दिया जब घर जाकर मैंने कद्दू को चीरा तो उसमें से सोने-चांदी के सिक्के निकले। उसने कहा ईश्वर की देन है इसीलिए कहते हैं कि ईश्वर की मर्जी के बगैर कुछ भी नहीं होता है।

२८९) अपना अपना नजरिया - एक बार एक संत अपने शिष्यों के साथ नदी में स्नान कर रहे थे, तभी एक राहगीर वहां से गुजरा तो महात्मा को नदी में नहाते देख वो उनसे कुछ पूछने के लिए रुक गया। वो संत से पूछने लगा- महात्मन एक बात बताइए कि यहां रहनेवाले लोग कैसे हैं क्योंकि मैं अभी अभी इस जगह पर आया हूं और नया होने के कारण मुझे इस जगह की कोई विशेष जानकारी नहीं है।

इस पर महात्मा ने उस व्यक्ति से कहा कि भाई मैं तुम्हारे सवाल का जवाब बाद में दूंगा, पहले तुम मुझे ये बताओ कि तुम जिस जगह से आए हो वहां के लोग कैसे हैं? इस पर उस आदमी ने कहा- उनके बारे में क्या कहूं महाराज, वहां तो एक से एक कपटी और दुष्ट लोग रहते हैं इसलिए तो उन्हें छोड़कर यहां बसेरा करने के लिए आया हूं। महात्मा ने जवाब दिया- बंधु तुम्हें इस गांव में भी वैसे ही लोग मिलेंगे कपटी दुष्ट और बुरे। वह आदमी आगे बढ़ गया।

थोड़ी देर बाद एक और राहगीर उसी मार्ग से गुजरता है और महात्मा से प्रणाम करने के बाद कहता है- महात्माजी मैं इस गांव में नया हूं और परदेस से आया हूं और इस ग्राम में बसने की इच्छा रखता हूं लेकिन मुझे यहां की कोई खास जानकारी नहीं है इसलिए आप मुझे बता सकते हैं कि ये जगह कैसी है और यहां रहनेवाले लोग कैसे हैं? महात्मा ने इस पर फिर वही प्रश्न किया और उनसे कहा कि मैं तुम्हारे सवाल का जवाब तो दूंगा लेकिन बाद में, पहले तुम मुझे ये बताओ कि तुम पीछे से जिस देश से भी आए हो वहां रहनेवाले लोग कैसे हैं?

उस व्यक्ति ने महात्मा से कहा- गुरुजी जहां से मैं आया हूं वहां भी सभ्य सुलझे हुए और नेकदिल इन्सान रहते हैं। मेरा वहां से कहीं और जाने का कोई मन नहीं था लेकिन व्यापार के सिलसिले में इस ओर आया हूं और यहां की आबोहवा भी

मुझे भा गई है, इसलिए मैने आपसे ये सवाल पूछा। इस पर महात्मा ने उसे कहा- बंधु, तुम्हें यहां भी नेकदिल और भले इन्सान मिलेंगे। वह राहगीर भी उन्हें प्रणाम करके आगे बढ़ गया। शिष्य ये सब देख रहे थे तो उन्होंने उस राहगीर के जाते ही पूछा- गुरुजी ये क्या, आपने दोनों राहगीरों को अलग अलग जवाब दिए हमें कुछ भी समझ नहीं आया? इस पर मुस्कुराकर महात्मा बोले- वत्स आम तौर पर हम अपने आसपास की चीजों को जैसे देखते हैं वैसा वो होती नहीं हैं, इसलिए हम अपने अनुसार अपनी दृष्टि से चीजों को देखते हैं और ठीक उसी तरह जैसे हम हैं। अगर हम अच्छाई देखना चाहें तो हमें अच्छे लोग मिल जाएंगे और अगर हम बुराई देखना चाहें तो हमें बुरे लोग ही मिलेंगे। सब देखने के नजरिये पर निर्भर करता है।

२९०) चालाकी से बचाई राजा की जान - बेहद सुहाना मौसम था। हवा में हल्की ठंड थी। राजा कृष्णदेव राय वनविहार के लिए चल पड़े। साथ में कुछ दरबारी और सैनिक भी चल पड़े। शहर से दूर जंगल में डेरा डाला गया। कभी गीत-संगीत की महफिल जमी तो कभी किस्से-कहानियों का दौर चल पड़ता। इसी तरह मौज-मस्ती में कई दिन गुजर गये। एक दिन राजा कृष्णदेव राय अपने दरबारियों से बोले- जंगल में आये हैं तो शिकार जरूर करेंगे। तुरंत शिकार की तैयारियां हो गयीं। राजा कृष्णदेव राय तलवार और तीर-कमान लेकर घोड़े पर बैठकर शिकार के लिए निकल पड़े। मंत्री और दरबारी अपने घोड़ों पर उनके साथ थे।

तेनालीराम भी जब उन सबके साथ चलने लगे तो मंत्री बोला, महाराज, तेनालीराम को अपने साथ लेकर क्या करेंगे। यह तो अब बूढ़े हो गये हैं। इन्हें यहीं रहने दिया जाये। हमारे साथ चलेंगे तो बेचारे थक जायेंगे।

इस बात पर सारे दरबारी हंस पड़े। लेकिन तेनालीराम चूंकि राजा को बड़े प्रिय थे, इसलिए तेनालीराम को भी अपने साथ ले लिया, थोड़ी देर का सफर तय करके सब लोग जंगल में पहुंच गये। तभी राजा कृष्णदेव राय को एक सुनहरा हिरन दिखायी दिया। राजा ने उसका पीछा किया और पीछा करते-करते वह घने जंगल में पहुंच गये। राजा घनी झाड़ियों के बीच बढ़ते जा रहे थे। एक जगह पर आकर उन्हें सुनहरा हिरन अपने बहुत ही पास दिखायी दिया तो उन्होंने निशाना साधा। घोड़ा अभी भी दौड़ता जा रहा था। राजा कृष्णदेव राय तीर चलाने ही वाले थे कि अचानक तेनालीराम जोर से चिल्लाया रुक जाइये, महाराज, इसके आगे जाना ठीक नहीं, राजा कृष्णदेव राय ने फौरन घोड़ा रोका। इतने में हिरन निकल गया।

राजा को बहुत गुस्सा आया। वह तेनालीराम पर बरस पड़े। तेनालीराम, तुम्हारी वजह से हाथ में आया शिकार निकल गया। तुमने हमें क्यों रोका? मंत्री और अन्य दरबारियों ने भी फबती कसी, महाराज तेनालीराम डरते हैं। वह डरपोक हैं, इसलिए तो हम उन्हें अपने साथ न लाने के लिए कह रहे थे। तभी तेनालीराम को न जाने क्या सूझा, बोले, महाराज जरा मंत्री जी इस पेड़ पर चढ़कर हिरन को देखें तभी कुछ कहूंगा या बताऊंगा। राजा कृष्णदेव राय ने मंत्री जी को पेड़ पर चढ़कर हिरन को देखने का आदेश दिया। मंत्री जी पेड़ पर चढ़े तो उन्होंने एक विचित्र दृश्य देखा। हिरन जंगली झाड़ियों के बीच फंसा जोर-जोर से उछल रहा था। उसका सारा शरीर लहूलुहान हो गया था।

२९१) और बन्दर ने राक्षस का अन्त कर दिया - बहुत दिन पहले की बात हैं। एक नगर में छोटा-सा परिवार रहता था। परिवार में माता-पिता के अतिरिक्त एक पुत्र और एक पुत्री थी। उनके साथ एक पालतू बन्दर भी रहता था। एक दिन मां ने बेटे को पैसे देकर घर का सामान लाने को कहा। बेटा बाजार चला गया। जब वह सामान लेकर लौट रहा था, तब

रास्ते में एक राक्षस मिला। उसने लड़के का रास्ता रोक लिया और सामान छीनकर खा गया। लड़के ने डरकर भागने की कोशिश की, लेकिन राक्षस ने उसे पकड़ लिया और कुछ ही पल में उसे भी निगल गया।

जब लड़का देर तक घर नहीं पहुंचा तो मां ने बेटी को घर का सामान लेने बाजार भेजा। बेटी जब सामान लेकर लौट रही थी, तब राक्षस ने उसका भी रास्ता रोक लिया। पहले उसने सामान खाया और बाद में लड़की को भी खा गया। जब दोनों बच्चे घर नहीं लौटे तो मां को बहुत चिंता होने लगी, उसने अपने पति से बच्चों को खोजने और घर का सामान लाने को कहा। पति भी बाजार गया। बच्चों को इधर-उधर खोजा, किन्तु वे कहीं नहीं मिले। घर का सामान लेकर वह उदास मन से लौट पड़ा। रास्ते में उसे भी वही राक्षस मिला। राक्षस उसका सामान छीनकर खा गया और साथ में उसको भी।

बच्चों और पति में से जब कोई नहीं लौटा तो वह स्त्री बहुत दु:खी हुई। अब वह स्वयं ही उन्हें खोजने और सामान खरीदने चल पड़ी। रास्ते में उसे भी वही राक्षस मिला। स्त्री ने उससे पूछा कि क्या उसने उसके बच्चों और पति को कहीं देखा है? राक्षस ने कहा कि वे उसके पेट में हैं और अब वह उसको भी खाएगा। इतना कहकर वह उस स्त्री को उसके सामान सहित खा गया। घर में जब कोई न रहा तो पालतू बन्दर बहुत परेशान हुआ। वह हाथ में चाकू लेकर उन्हें खोजने चल दिया। रास्ते में उसे भी राक्षस मिला। बन्दर ने उससे दो बच्चों, एक पुरुष और एक स्त्री का अता-पता पूछा। राक्षस बोला वे सब मेरे पेट में है। मैं तुम्हें भी उनके पास अभी पहुंचाए देता हूं। यह कहकर बन्दर को भी निगल गया।

पेट के अन्दर जाकर बन्दर ने देखा कि वहां सचमुच दोनों बच्चे तथा उनके माता-पिता बैठे हैं। उसने अपने चाकू से राक्षस का पेट भीतर से चीर दिया। वे सब हंसते हुए बाहर निकल आए और राक्षस तड़पता हुआ वहीं मर गया।

२९२) पतंग की डोर - बहुत समय की बात है। एक गुरू के आश्रम में दूर दूर से विद्यार्थी उनके पास अध्ययन करने के लिए आते थे। क्योंकि उनके पढ़ने का तरीका भी अनोखा था। वे हर बात को उदाहरण देकर समझाते थे। जिससे शिष्य उसका गूढ़ अर्थ समझकर उसे आत्मसात कर सकें। विभिन्न विषयों पर शास्त्रार्थ भी करते थे ताकि जीवन में उन्हें किसी से शास्त्रार्थ करना पड़े तो वह कभी कमजोर सिद्ध न हो।

एक बार एक शिष्य गुरुजी से बोला मैं आपसे शास्त्रार्थ करना चाहता हूं। गुरुजी ने कहा ठीक है किस विषय पर। शिष्य बोला आप कहते हैं कि सफलता की सीढ़ियां चढ़ चुके मनुष्य को भी नैतिक मूल्य नहीं त्यागने चाहिए।

शिष्य बोला मेरा मानना है कि एक निश्चित ऊंचाई पर पहुंचने के बाद मनुष्य का इन बंधनों से मुक्त होना आवश्यक है। अन्यथा मूल्यों और संस्कारों की बेड़ियां उसकी आगे की प्रगति में बाधक बनती हैं। इसी विषय पर मैं आपके साथ शास्त्रार्थ करना चाहता हूं। शिष्य की बात सुनकर गुरूजी कुछ सोच में डूब गए और बोले- हम इस विषय पर शास्त्रार्थ अवश्य करेंगे लेकिन पहले चलो चलकर पतंग उड़ाए और पेंच लड़ाए। गुरुजी की बात सुनकर शिष्य खुश हो गया।

जब पतंगे एक निश्चित ऊंचाई तक पहुंच गई तो गुरुजी शिष्य से बोले क्या तुम बता सकते हो कि यह पतंगे आकाश में इतनी ऊंचाई तक कैसे पहुंची?

शिष्य ने कहा हवा के सहारे उड़कर यह ऊंचाई तक पहुंच गई। गुरूजी ने कहा अच्छा तो तुम्हारे अनुसार इसमें डोर की कोई भूमिका नहीं है? शिष्य ऐसा नहीं शुरू में डोर ने कुछ भूमिका निभाई है, लेकिन निश्चित ऊंचाई के बाद पतंग को डोर

की आवश्यकता नहीं रहती। अब और आगे की ऊंचाइयां वो हवा के सहारे ही प्राप्त कर सकती है। गुरुजी डोर तो इसकी प्रगति में बाधक ही बन रही न? जब तक मै। इसे ढील नहीं दूंगा, यह आगे नही बढ़ सकती। इस तरह मेरी आज की बात सिद्ध हो गई आप स्वीकार करते हैं इसे?

गुरुजी ने कुछ जवाब नहीं दिया और बोले चलो अब पेंच लड़ाएं। अचानक एक गोता देकर गुरू ने शिष्य की पतंग को काट दिया। कुछ देर हवा में झूलने के बाद पतंग जमीन पर आ गिरी।

इस पर गुरु ने शिष्य से पूछा पुत्र क्या हुआ? तुम्हारी पतंग तो जमीन पर आ गिरी। तुम्हारे अनुसार तो उसे आसमान में और भी ऊंचाई को छूना चाहिए था। जबकि देखों मेरी पतंग अभी भी अपनी ऊंचाई पर बनी हुई है, बल्कि डोर की सहायता से यह और भी ऊंचाई तक जा सकती है। अब क्या करते हो तुम?

शिष्य शांत भाव से सुन रहा था। गुरुजी ने कहा तुम्हारी पतंग ने जैसे ही मूल्यों और संस्कारों रूपी डोर का साथ छोड़ा वो ऊंचाई से सीधे जमीन पर आ गिरा। यही हाल हवा से भरे गुब्बारे का भी होता है। वह सोचा है कि अब मुझे किसी और चीज की जरूरत नहीं और वह हाथ से छूटने की कोशिश करता है। लेकिन हाथ से छूटता है, उसकी सारी हवा निकल जाती है और वह जमीन पर आ गिरता है। गुब्बारे को भी डोर की जरूरत होती है, जिससे बंधा होने पर ही वह अपने फूले हुए आकार को बनाए रख पाता है।

शिष्य को गुरु की सारी बात समझ में आ चुकी थी पतंगबाजी का प्रयोजन भी शास्त्रार्थ के इस अनोखे प्रयोग से अभिभूत वह अपने गुरू के कदमों में गिर पड़ा। गुरू ने आशीर्वाद देते हुए कहा यह सच्चा ज्ञान है।

२९३) तीनों में मौत का दोषी कौन? - बनारस में देवस्वामी नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसके हरिदास नाम का पुत्र था। हरिदास की बड़ी सुंदर पत्नी थी। नाम था लावण्यवती। एक दिन वह महल के ऊपर छत पर सो रहे थे कि आधी रात के समय एक गंधर्व कुमार आकाश में घूमता हुआ उधर से निकला। वह लावण्यवती के रूप पर मुग्ध होकर उसे उड़ाकर ले गया। जागने पर हरिदास ने देखा कि उसकी स्त्री नहीं है तो उसे बड़ा दुख हुआ और वह मरने के लिए तैयार हो गया। लोगों के समझाने पर वह मान तो गया, लेकिन यह सोचकर कि तीरथ करने से शायद पाप दूर हो आए और स्त्री मिल जाए, वह घर से निकल पड़ा।

चलते चलते वह किसी गांव में एक ब्राह्मण के घर पहुंचा। उसे भूखा देख ब्राह्मणी ने उसे कटोरा भरकर खीर दे दी और तालाब के किनारे बैठकर खाने को कहा। हरिदास खीर लेकर एक पेड़ के नीचे आया और कटोरा वहां रखकर तालाब में हाथ-मुंह धोने गया। इसी बीच एक बाज किसी सांप को लेकर उसी पेड़ पर आ बैठा और जब वह उसे खाने लगा तो सांप के मुंह से जहर टपककर कटोरे में गिर गया। हरिदास को कुछ पता नहीं था। वह उस खीर को खा गया। जहर का असर होने पर वह तड़पने लगा और दौड़ा-दौड़ा ब्राह्मणी के पास आकर बोला, तूने मुझे जहर दे दिया है। इतना कहने के बाद हरिदास मर गया। पति ने यह देखा तो ब्राह्मण को ब्रह्मघातिनी कहकर घर से निकाल दिया। इतना कहकर बेताल बोला, राजन्। बताओ कि सांप, बाज और ब्राह्मणी इस तीनों में अपराधी कौन है?

राजा ने कहा, कोई नहीं। सांप तो इसलिए नहीं क्योंकि वह शत्रु के वश में था। बाज इसलिए नहीं कि वह भूखा था। जो

उसे मिल गया, उसी को वह खाने लगा। ब्राह्मणी इसलिए नहीं कि उसने अपना धर्म समझकर उसे खीर दी थी और अच्छी दी थी। जो इन तीनों में से किसी को दोषी कहेगा, वह स्वयं दोषी होगा। इसलिए अपराधी ब्राह्मणी का पति था जिसने बिना विचार ब्राह्मणी को घर से निकाल दिया। इतना सुनकर बेताल फिर पेड़ पर जा लटका।

२९४) दृढ़ निश्चय का कमाल - रॉजर बेनिस्टर ब्रिटेन के एक जाने माने डॉक्टर थे। उन्हें दौड़ने का बड़ा शौक था। जब भी अपने काम से उन्हें वक्त मिलता, वह दौड़ने का अभ्यास करते थे। वह अपने समय के तेज धावकों की सूची में शामिल थे। उन दिनों जितने भी तेज धावक थे, उनमें से कोई भी एक मील की दौड़ चार मिनट से कम समय में पूरी नहीं कर पाया था। यह सुनकर रॉजर ने कहा, यह काम असंभव नहीं है, निरंतर अभ्यास से ऐसा हो पाना संभव है। एक विशेषज्ञ ने कहा, ऐसा हो पाना संभव नहीं है, क्योंकि इंसान के फेफड़े में इतनी शक्ति नहीं है कि वह एक मील की दौड़ चार मिनट से कम समय में पूरी कर पाए। रॉजर बड़े ही दृढ़ निश्चयी और साहसी व्यक्ति थे। उन्होंने विशेषज्ञ से कहा, मैं एक मील की दौड़ चार मिनट से कम समय में पूरी करके दिखाऊंगा। बस मुझे कुछ वक्त दे दें। रॉजर ने विशेषज्ञ से कहा, देखते हैं किसकी बात सच साबित होती है। रॉजर ने अभ्यास शुरू कर दिया। उन्हें पूरा भरोसा था कि यह संभव है। आखिर वह दिन आया, जब उन्हें दौड़ना था। उन्होंने एक मील की दौड़ ३ मिनट और ५९.४ सेकेंड में पूरी कर ली, जिससे पूरा विश्व आश्चर्यचकित रह गया। उन्होंने डॉक्टर, प्रशिक्षक और उन सभी लोगों को गलत साबित कर दिया जो यह मान बैठे थे कि एक मील की दौड़ चार मिनट से कम समय में पूरी नहीं की जा सकती है। सबसे ज्यादा कमाल की बात यह रही कि इस रेकॉर्ड के टूटते ही एक अन्य धावक ने रॉजर का भी रेकॉर्ड तोड़ दिया। इसके एक साल बाद ३७ अन्य धावकों ने भी उस रेकॉर्ड को तोड़ दिया। इस प्रकार रॉजर के दृढ़ निश्चय और मेहनत के बलबूते पर न सिर्फ एक मील की दौड़ के लिए निर्धारित समय सीमा की पुरानी धारणा टूटी, बल्कि उन्होंने धावकों को नई दिशा और प्रेरणा भी दी।

२९५) परमहंस की सीख - स्वामी रामकृष्ण परमहंस की ख्याति सारे विश्व में फैली थी। लेकिन कई संत उनकी इस ख्याति से बहुत ईर्ष्या भाव रखते थे। उन्हीं में से एक योगी था। बढ़ती ईर्ष्या के चलते उसने ठान लिया कि वह रामकृष्ण परमहंस को नीचा दिखाकर रहेगा। वह परमहंस के पास गया और बोला, अगर आप इतनी ख्याति प्राप्त कर रहे हैं, तो आज मुझे अपना चमत्कार दिखाइए। आज मुझे अपना परमहंस होना साबित करके दिखाइए। रामकृष्ण परमहंस ने जवाब दिया, नहीं मित्र मैं तो एक साधारण सा मनुष्य हूं। मेरे पास कोई चमत्कारिक शक्ति नहीं है। योगी ने कहा, आप परमहंस हैं। आज आप यह साबित करके दिखाइए। ईसा मसीह भी पानी पर चले थे, हनुमानजी एक छलांग में समुद्र पार कर गए थे। हमारे सामने ही गंगा नदी है, उस पर चल कर दिखाइए, तब मैं मान लूंगा कि आप सच्चे अर्थों में परमहंस हैं। रामकृष्ण परमहंस ने कहा, तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है। मैं पानी पर नहीं चल सकता। योगी बड़े ही अहंकार के साथ गरजते हुए बोला, मैंने पूरे अठारह वर्षों तक हिमालय में घोर तपस्या की है, तब कहीं जाकर यह शक्ति प्राप्त की है। आज मैं गंगा नदी पर चलकर इस पार से उस पार जा सकता हूं। यह सुनकर परमहंस विनम्र भाव से बोले, मित्र। तुमने अठारह साल बेकार कर दिए। मुझे तो गंगा नदी के उस पार जाना होता है, तो मैं मांझी को आवाज देता हूं। वह सिर्फ दो पैसे लेता है और नदी पार करा देता है। जरा सोचो कि तुमने पानी पर चलने की जो सिद्धि प्राप्त की है, क्या वह दो पैसे से अधिक है? योगी

परमहंस के आगे निरुत्तर हो गया। उसकी नजरें नीची हो गई। परमहंस ने उसे समझाया, सिद्धि पर गर्व नहीं करना चाहिए। योगी का धर्म है कि प्राप्त शक्ति का उपयोग हमेशा लोगों की भलाई के लिए करे।

२९६) मन की शांति - प्रयाग नरेश लक्ष्मेंद्र मन से बड़े अशांत रहते थे। एक दिन भेष बदलकर घूमते हुए वह एक खेत से गुजरे, तभी उनकी नजर फटे-पुराने वस्त्र पहने एक किसान पर पड़ी। किसान पेड़ की छांव में बैठकर भोजन कर रहा था। राजा के मन में आया कि वह किसान को कुछ स्वर्ण मुद्राएं दे दें, ताकि वह खुश हो जाए। वह किसान से बोले, मैं एक राहगीर हूं। तुम्हारे खेत पर मुझे ये चार स्वर्ण मुद्राएं गिरी मिलीं। यह खेत तुम्हारी है, इसलिए इन्हें तुम रखो। किसान बोला, ये मुद्राएं मेरी नहीं हैं। मुझे ये नहीं चाहिए। इन्हें चाहे तो आप रख लें या फिर किसी जरूरतमंद को दान कर दें। यह प्रतिक्रिया राजा को अजीब लगी। वह बोले, आप लक्ष्मी को ना कैसे कर सकते हैं? किसान ने कहा कि वह रोज चार आने कमाकर उसी में प्रसन्न रहता है। यह कैसे संभव है? राजा ने अचरज से पूछा। किसान बोला, प्रसन्नता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप कितना कमाते हैं। प्रसन्नता उस धन के प्रयोग पर निर्भर है। राजा बोले, तो बताओ तुम इन चार आनों का क्या करते हो? किसान ने कहा, इनमें से एक मैं कुएं में डाल देता हूं, दूसरे से कर्ज चुका देता हूं, तीसरा उधाार में देता हूं और चौथा मिट्टी में गाड़ देता हूं। राजा को यह उत्तर समझ नहीं आया। उसने किसान से इसका अर्थ पूछा। किसान बोला, मैं एक आना अपने परिवार के भरण-पोषण में लगाता हूं। दूसरे आने से मैं अपने वृद्ध मां-बाप की सेवा करता हूं। तीसरा आना मैं बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में लगा देता हूं और चौथा आना मैं बचा लेता हूं ताकि समय आने पर मुझे किसी से मांगना ना पड़े। राजा को अपनी अशांति का इलाज मिल चुका था। वे समझ गए थे कि प्रसन्न और संतुष्ट रहना है तो ज्यादा धन कमाने की लालसा छोड़ उपलब्ध धन के सही इस्तेमाल पर ध्यान देना होगा।

२९७) अक्लमंद की पहचान - महान संत जफर सादिक के पास दूर-दूर से लोग विचार-विमर्श के लिए आते थे। एक बार ऐसे ही विचार-विमर्श के दौरान प्रश्न उठा कि अक्लमंद व्यक्ति की सही पहचान क्या है? सभी सोच में पड़ गए और अपनी-अपनी तरह से जवाब देने लगे। किसी ने कहा, जो सोच-समझ कर बोले वह अक्लमंद है। इस पर संत सादिक बोले, अपनी समझ से तो हर व्यक्ति सोच-समझ कर ही बोलना चाहता है, मगर हमेशा ऐसा नहीं होता। ऐसे में उन सभी को अक्लमंद नहीं कहा जा सकता। अक्लमंद तो कुछ लोग ही होते हैं और उनकी पहचान भी कुछ खास ही होती है। संत सादिक का यह जवाब सुनकर सभी गहरी सोच में पड़ गए। तभी उनमें से एक बोला, नेकी और बदी में फर्क कर पाना अक्लमंद का काम है। सादिक बोले, नेकी और बदी का फर्क इंसान ही नहीं, जानवर तक समझते हैं। तभी तो जो उनकी सेवा करते हैं, वे उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। यह सुनकर सभी की बोलती बंद हो गई। अब किसी को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था कि अक्लमंद व्यक्ति की पहचान कैसे हो। कुछ देर बाद व्यक्ति बोला, हुजूर, अब आप ही अक्लमंद व्यक्ति की पहचान बताइए। संत मुस्कुराते हुए बोले, अक्लमंद वह है जो दो अच्छी बातों में यह जान सके कि ज्यादा अच्छी बात कौन सी है। और दो बुरी बातों में यह जान सके कि ज्यादा बुरी बात कौन सी है। अच्छी व बुरी बातों में पहचान करने के बाद यदि उसे अच्छी बात बोलनी हो तो वह बात बोले जो ज्यादा अच्छी हो और यदि बुरी बात बोलने की लाचारी पैदा हो जाए तो वह बात बताए जो कम बुरी हो। इस तरह वह बड़ी बुराई से

बचे। यह बात सुनने में बेशक मामूली लग रही हो, पर यदि इंसान इस राह पर चले तो वह न सिर्फ अक्लमंद कहलाएगा बल्कि बड़ी से बड़ी मुसीबत टालने में भी कामयाब हो जाएगा।

२९८) सफलता का सूत्र - एक दिन राजा रामदत्त शिकार के लिए जंगल गए। वहां एक हिरन के पीछे उन्होंने अपना घोड़ा दौड़ाया। हिरन जंगल से निकलकर पहाड़ी की ओर भाग निकला। राजा उसके पीछे-पीछे चलते हुए अचानक एक पहाड़ी गांव में जा पहुंचे। वहां वह एक मूर्तिकार को मूर्तियां बनाते देख ठिठक गए। इतनी सुंदर मूर्तियां उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थीं। राजा ने मूर्तिकार से कहा, मैं चाहता हूं कि तुम मेरी भी एक सुंदर मूर्ति बना दो। मूर्तिकार ने कहा ठीक है महाराज। मैं आपकी मूर्ति अवश्य बनाऊंगा। उसने राजा की मूर्ति बनाने का काम शुरू कर दिया। कई दिन बीत गए पर मूर्ति तैयार नहीं हुई। मूर्तिकार रोज मूर्ति बनाता और उसे तोड़ देता, फिर बनाता और फिर तोड़ देता। लेकिन जैसी मूर्ति वह बनाना चाहता था, वैसी उससे बन नहीं पा रही थी। अंत में वह निराश होकर मूर्तियों के पास ही बैठ गया। अचानक उसकी नजर दीवार पर चढ़ रही एक चींटी पर पड़ी जो बार-बार गिरी जा रही थी। वह चींटी दरअसल, एक गेहूं के दाने को दीवार के उस पार ले जाना चाहती थी। मूर्तिकार यह दृश्य बड़े गौर से देख रहा था। चींटी बार-बार गिरने पर भी प्रयास में लगी हुई थी। आखिरकार चींटी को सफलता मिल ही गई और वह दीवार के उस पार चली गई। यह दृश्य देख मूर्तिकार ने सोचा- जब यह छोटी सी चींटी निरंतर प्रयास से सफलता पा सकती है तो फिर मैं सफल क्यों नहीं हो सकता। मूतिऋकार को सफलता का सूत्र मिल चुका था। मूर्तिकार फिर से राजा की मूर्ति बनाने में जुट गया। इस बार मूर्ति बिलकुल उसकी कल्पना के अनुरूप बनी। राजा रामदत्त ने जब अपनी सजीव मूर्ति देखी तो बड़े खुश हुए।

२९९) अध्ययन का तरीका - महर्षि रैक्य ने अपने पुत्र यवकीर्ति को ज्ञान की गरिमा का महत्व समझाया। वह इस वचन से पूर्ण आश्वस्त भी हो गया कि सद्ज्ञान से बढ़कर और कुछ भी नहीं है। फिर भी उसके मन में यह भ्रम बना रहा कि मनोयोगपूर्वक अध्ययन से ही ज्ञान की उपलब्धि संभव है। वह चाहता था कि इसका कोई सरल मार्ग मिल जाए। उसने सोचा कि तप करने से जब बहुत सिद्धियां मिल सकती हैं, तो साधना द्वारा ही उसे क्यों न प्राप्त कर लिया जाए। लंबे समय तक पढ़ते रहने का झंझट क्यों उठाया जाए। वह तपस्या करने लगा। पिता ने उसे समझाया कि ज्ञानार्जन भी तप ही है, लेकिन पिता का वचन पुत्र की समझ में नहीं आया। यवकीर्ति स्नान के लिए नदी के जिस घाट पर जाया करता था, उस पर एक वृद्ध ब्राह्मण भी आने लगे। वह मुट्ठी भर कर पानी में रेत डालते रहे। यवकीर्ति ने कई दिनों तक तो ध्यान नहीं दिया, पर आखिरकार उससे रहा न गया और उसने ऐसा करने का कारण पूछ ही लिया। वृद्ध ने कहा, नदी पार जाने में समय लगता है, इसलिए सोचा, क्यों न नदी में रेत डालकर पार जाने के लिए बांध बना लूं। यवकीर्ति हंसने लगा। उसने कहा, भगवन्, हर काम का एक तरीका होता है। उसकी निश्चित प्रक्रिया होती है। आप पार जाने के लिए दूसरे संभव तरीके अपनाएं और इस बाल क्रीड़ा को छोड़ दें। इस पर ब्राह्मण ने कहा, ठीक कहा आपने। इसी तरह ज्ञान प्राप्त करने की भी निश्चित प्रक्रिया होती है। यवकीर्ति को बात समझ में आ गई।

३००) ज्ञान का पहला पाठ - एक युवक देश विदेश का भ्रमण और वहां के ग्रंथों का अध्ययन कर अपने देश लौटा। वह शेखी बघारने लगा कि उसके समान ज्ञानी और कोई नहीं। उसके पास जो भी व्यक्ति जाता, वह उससे प्रश्न किया

करता कि क्या उसने उससे बढ़कर कोई विद्वान देखा है? बात गौतम बुद्ध के कानों तक जा पहुंची। वह ब्राह्मण वेश में उसके पास गए। युवक ने उनसे प्रश्न किया- कौन हो तुम ब्राह्मण? बुद्ध ने कहा- अपनी देह और मन पर जिसका पूर्ण अधिकार है, मैं ऐसा एक तुच्छ मनुष्य हूं। युवक बोला- स्पष्ट करो, मुझे कुछ समझ नहीं आया। बुद्ध ने कहा- जिस तरह कुम्हार घड़े बनाता है, नाविक नौका चलाता है धनुर्धारी बाण चलाता है, गायक गीत गाता है, वादक वाद्य बजाता है और विद्वान वाद-विवाद में भाग लेता है, उसी तरह ज्ञानी पुरुष स्वयं पर ही शासन करता है। युवक ने पुन: प्रश्न किया- ज्ञानी पुरुष भला स्वयं पर शासन कैसे करता है? बुद्ध ने समझाया- लोगों द्वारा स्तुति-सुमनों की वर्षा किए जाने पर या निंदा के अंगार बरसने पर भी ज्ञानी पुरुष का मन शांत ही रहता है। प्रशंसा या निंदा का उस पर कोई भी असर नहीं पड़ता। युवक ने अपने बारे में सोचा तो उसे बड़ी आत्मग्लानि हुई। वह तुरंत बुद्ध के कदमों पर गिरकर बोला- स्वामी, अब तक मैं भूल में था। मैं स्वयं को ही ज्ञानी समझता था पर आज मैंने जाना कि मुझे आपसे बहुत कुछ सीखना है। बुद्ध बोले- हां, ज्ञान का पहला पाठ आज ही तुम्हारी समझ में आया है। तुम मेरे साथ मठ में चलो, आगे के पाठों का अध्ययन वहीं करना। युवक बुद्ध के साथ चला गया और उनका शिष्य बन गया।

३०१) आदमी, सपना और जीवन - एक आदमी ने सपना देखा कि एक शेर उसका पीछा कर रहा है। वह भागते-भागते एक पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ बहुत विशाल था और उसकी कई शाखाएं थीं। वह आदमी एक ऊंची-सी शाखा पर बैठ गया।

उसने देखा कि शेर अब भी नीचे खड़ा उसका इंतजार कर रहा है। उसने यह भी देखा कि जिस शाखा पर वह बैठा है, उसे दो चूहे कुतरने की कोशिश कर रहे हैं। पर शाखा काफी मोटी थी और चूहे छोटे। एक चूहा सफेद था और दूसरा काला। तभी नीचे वाली शाखा पर उसने देखा कि एक विशालकाय काला सांप अपना मुंह खोले हुए उसके फिसलने का इंतजार कर रहा है। वह कोई दूसरी शाखा ढूंढने लगा। उसे ऊपर एक शाखा दिखाई पड़ी, लेकिन उस पर मधुमक्खी का एक बड़ा-सा छत्ता लगा था, जिससे शहद टपक रहा था। शहद देख ललचाए आदमी ने सोचा कि एक बूंद तो चख ही सकता हूं। चूहे, सांप और शेर की बात भूल वह शहद का आनंद ले रहा था कि तभी पत्नी ने उसे जगा दिया। वह आदमी नींद से उठकर हैरत में पड़ गया कि मैंने आज यह कैसा सपना देखा। क्या मेरे लिए इसका कोई संदेश है? वह आदमी उस सपने को भूल नहीं पाया। दिनभर उसके दिमाग में वही सपना चलता रहा। इस गुत्थी को सुलझाने वह शाम को एक मनोवैज्ञानिक के पास गया। मनोवैज्ञानिक ने सपने के बारे में सुनने के बाद कहा, इसमें नई बात क्या है? यह तो आपकी जिंदगी है। जो शेर आपने देखा, वह आपकी मृत्यु दर्शाता है। वह आपका पीछा कर रही है। जो चूहे आपने देखे, वे दिन और रात हैं, जो समय रूपी शाखा को कुतरते जा रहे हैं और आपको मृत्यु के पास पहुंचा रहे हैं। सांप आपका अंत काल दर्शाता है, जो आपके अंत का इंतजार कर रहा है और शहद यह दुनिया है, जिसका आनंद लेते हुए हम भूल जाते हैं कि हमारे पास सीमित समय है। जीवन का महत्व समझकर समय का सदुपयोग करना चाहिए।

३०२) भूख और हवन - विंध्य प्रदेश का राजा धार्मिक और दयालु प्रवृत्ति का था। एक बार सूखे के कारण राज्य में अकाल पड़ गया। आदमी और जानवर भूख से तड़पने लगे। चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच गई। दरबार के आचार्यों ने

सुझाव दिया, राजन इस अकाल से छुटकारा पाने के लिए राज्यभर में हवन करना होगा। राजा ने आचार्यों की बात मान ली। राजमहल से लेकर गली-गांव तक हवन होने लगे। हजारों टन गेहूं और देसी घी हवन कुंड में जला दिए गए, लेकिन न देवता प्रसन्न हुए और न ही अकाल दूर हुआ। जब राजा की मृत्यु हुई तो यमदूतों ने उसे धर्मराज के सामने पेश किया। उसी समय राजा का एक पुराना नौकर भी धर्मराज के सामने लाया गया था। धर्मराज ने वही खाता देखा और राजा को नरक में तथा नौकर को स्वर्ग में भेजने का आदेश दिया। राजा ने कहा, मैंने हमेशा धर्म का काम किया, फिर मुझे नरक और इस नौकर ने कभी कोई धर्म कर्म नहीं किया, फिर भी इसे स्वर्ग यह तो अन्याय है। धर्मराज ने कहा, तुम ठीक कहते हो, लेकिन तुम्हारे एक अकर्म ने सभी अच्छे कर्मों को निष्फल कर दिया। सूखे के समय जब जनता को अनाज की सख्त जरूरत थी, तब उस अनाज को जनता में न बांट कर, तुमने उसे कर्मकांड के लिए जला दिया। तुम्हारे अन्न के भंडार भूखों के लिए बंद थे, लेकिन हवन के लिए खोल लिए गए। इससे बड़ा पाप कोई और नहीं हो सकता। इसी अधर्म के कारण तुम्हें नरक मिला है। रही बात नौकर की। उसने कभी पूजा पाठ नहीं किया लेकिन वह भूखा-प्यासा सात दिन तक आपके हवनकुंड के पास इस आशा में बैठा रहा कि हवन के बाद अनाज के जो दाने बिखरे मिल जाएंगे, उससे वह अपनी भूख मिटा लेगा। लेकिन उसे एक दाना नहीं मिला और वह वहीं भूख से मर गया। उसने जब तक तुम्हारे यहां काम किया पूरी मेहनत और ईमानदारी से किया, इसलिए उसको स्वर्ग मिला।

३०३) सफलता का सूत्र - एक बार एक लड़का परीक्षा में फेल हो गया। साथियों ने उसके फेल होने का खूब मजाक बनाया। वह यह बरर्दाश्त नहीं कर पाया और घर लौटकर तनाव में डूब गया। उसके माता-पिता ने उसे बहुत समझाया- बेटा, फेल होना इतनी बड़ी असफलता नहीं है कि तुम इतने परेशान हो जाओ और आगे के जीवन पर प्रश्नचिन्ह लगा बैठो। जब तक इंसान अच्छे-बुरे, सफलता-असफलता के दौर से खुद नहीं गुजरता, तब तक वह बड़े काम नहीं कर सकता। लेकिन उसे उनकी बातों से संतुष्टि नहीं हुई। अशांति और निराशा में जब उसे कुछ नहीं सूझा और रात में वह आत्महत्या करने के लिए चल दिया। रास्ते में उसे एक बौद्ध मठ दिखाई दिया। वहां से कुछ आवाजें आ रही थीं। वह उत्सुकतावश बौद्ध मठ के अंदर चला गया। वहां उसने सुना, एक भिक्षुक कह रहा था- पानी मैला क्यों नहीं होता? क्योंकि वह बहता है। उसके मार्ग में बाधाएं क्यों नहीं आती? क्योंकि वह बहता रहता है। पानी का एक बिंदु झरने से नदी, नदी से महानदी और फिर समुद्र क्यों बन जाता है? क्योंकि वह बहता है। इसलिए मेरे जीवन तुम रुको मत, बहते रहो। कुछ असफलताएं आती हैं पर तुम घबराओ मत। उन्हें लांघकर मेहनत करते चलो। बहना और चलना ही जीवन है। असफलता से घबराकर रुक गए तो उसी तरह सड़ जाओगे जैसे रुका हुआ पानी। यह सुनकर लड़के ने यह ठान लिया कि उसे भी बहुत जल की तरह बनना है। इसी सोच के साथ वह घर की ओर मुड़ गया। अगले दिन वह सामान्य होकर स्कूल चल दिया। बाद में वह वियतनाम के राष्ट्रनायक हो ची मिन्ह के नाम से जाना गया।

३०४) सम्मान का कारण - एक बार राजपुरोहित देवमित्र ने सोचा, राजा ब्रह्मदत्त मेरा बहुत सम्मान करता है। यह सम्मान मेरे ज्ञान का है या सदाचार का? इसकी पहचान करनी चाहिए। एक दिन राजसभा से लौटते हुए देवमित्र कोषागार के पास से निकल रहा था। उसने चुपचाप एक सिक्का उठाकर अपने पास रख लिया। कोषाध्यक्ष को यह देखकर हैरान

हुआ। वह सोचने लगा, देवमित्र जैसे महान व्यक्ति ने सिक्का क्यों उठाया होगा, और उठाया है तो अवश्य कोई प्रयोजन होगा। आज हो सकता है जल्दी के कारण कुछ नहीं बताया, बाद में बता देगा। दूसरे दिन भी देवदत्त ने यही किया। कोषाध्यक्ष धैर्य बनाए रहा। तीसरे दिन भी देवदत्त ने मुट्ठी भरकर स्वर्ण मुद्राएं उठा लीं। अब कोषाध्यक्ष से नहीं रहा गया। उसने सिपाहियों को बुलाकर देवमित्र को गिरफ्तार कर लिया। दूसरे दिन उसे राजा के समक्ष पेश किया गया। सभी चकित थे कि इतना बड़ा विद्वान और ऐसी चोरी। राजा ने देवमित्र से कहा- आपने बहुत बड़ा अपराध किया है। साथ ही हमारी श्रद्धा को चोट पहुंचाई है। उसने सजा के तौर पर चार उंगलियां काटने का फरमान भी सुना डाला। फैसला सुनने के बाद देवमित्र मुस्कराकर बोला, मैंने धनवान बनने की इच्छा से चोरी नहीं की थी। मैं तो यह जानना चाहता था कि आप मेरा सम्मान ज्ञान के कारण करते हैं या सदाचार के कारण? मैंने परीक्षा ले ली है। मेरा ज्ञान तो जितना कल था वही आज भी है। फर्क सिर्फ इतना आया है कि मेरा सदाचार खंडित हुआ है। इसके कारण मुझे सजा मिली है। राजा को सारा माजरा समझ में आ गया। उन्होंने देवमित्र को सम्मान सहित आजाद कर दिया।

३०५) भाषा और भावना - सन १९१२ में गोपाल कृष्ण गोखले दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर गए। वहां उनका जबर्दस्त स्वागत हुआ। उनके सम्मान में अनेक स्थानों पर भोज का आयोजन किया गया, जिसमें अच्छी-खासी संख्या में यूरोपीय और भारतीय मूल के लोग शामिल रहते थे। गोखले वहां लोगों को संबोधित करते पर भाषण देने में उन्हें कठिनाई होती थी क्योंकि वहां अंग्रेजी का प्रयोग करना अप्रासंगिक था और हिंदी वह धाराप्रवाह बोल नहीं पाते थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि भारतीयों से उनकी भाषा में कैसे संवाद करें। एक दिन उन्होंने गांधीजी से कहा, भाषा की इस विकट समस्या को कैसे सुलझाया जाए? मैं धाराप्रवाह मराठी बोल सकता हूं मगर वह यहां किसी को समझ में नहीं आएगी। हिंदी में मैं कमजोर हूं। गांधीजी कुछ देर सोचकर वह बोले, इसका हल मेरे पास है। आप मराठी में बोलें और मैं उसका हिंदी में अनुवाद करूंगा। इससे विदेश में भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी को भी बढ़ावा मिलेगा। गांधीजी का सुझाव सुनकर गोखले दंग रह गए और उन्होंने मराठी में भाषण देना शुरू कर दिया। गांधीजी उसका हिंदी में अनुवाद करते रहते और लोग आराम से भाषण सुनते। एक दिन गोखले गांधीजी से बोले, आपको तो मराठी अच्छी तरह नहीं आती, फिर भी आप मेरे मराठी भाषण का एकदम सही अनुवाद कैसे कर लेते हैं? इस पर गांधीजी मुस्करा कर बोले, प्रेम, विश्वास और जनहित की बात समझने के लिए भाषा नहीं भावना की जरूरत होती है। वह मेरे पास है। यह सुनकर गोखले जी मंत्रमुग्ध हो गए। बोले, काश यही भावना रखकर विश्व का हर व्यक्ति काम करें।

३०६) मित्र की नेक सलाह - गणेशपुर में एक धोबी रहता था। उसका काम था गांव के समृद्ध लोगों के कपड़े धोना। धोबी के पास एक गधा था। गधा दिन भर धोबी का कार्य करता रहता। उसकी दिनचर्या में धोबी द्वारा धोए गए कपड़ों के गट्ठर नदी से घर और घर से नदी तक ले जाना और लाना था। धोबी गरीब तो था मगर इतना भी नहीं कि वह पेट भर चारा गधे को न दे सके। फिर भी वह गधे को आधे पेट ही रखता था क्योंकि वह महाकंजूस था। वह गधे के लिए चारे का प्रबंध नहीं करता था। बस रात को चरने के लिए खुला छोड़ देता। गांव के आसपास खेत खलिहान तो बहुत थे लेकिन वहां अगर वह चरने जाता तो वह रखवालों के डंडों का शिकार बनता। पेट न भरने की वजह से वह कमजोर होता गया।

एक रात गधा भूख की वजह से परेशान इधर-उधर चारे की तलाश में टहल रहा था। तभी उसने देखा कि एक गीदड़ चला आ रहा है। गधे ने सोचा, चलो इसी से किसी हरे-भरे चरागाह के बारे में पूछता हूं। यह तो दिन-रात इधर-उधर के चक्कर लगाता है। इसे जरूर पता होगा। गीदड के पास आते ही गधे ने राम-राम की। गीदड भी राम-राम करते हुए रुक गया। गधे को कमजोर और निराश देखकर गीदड़ ने पूछा, महाशय, आप इतने कमजोर क्यों हैं।

गधे ने दुखी स्वर में अपनी पीड़ा बताई। उसने गीदड़ से बताया कि कैसे उसे दिन भर काम करना पड़ता है। फिर कुछ हाथ नहीं लगता। तुम ही मेरी मदद करो गीदड़ भाई। गधा रोते हुए गीदड़ से गिड़गिड़ाया। कुछ देर तक गीदड़ चुपचाप सोचता रहा। जब काफी देर हो गई तो गधे ने फिर गीदड़ से याचना की। थोड़ी देर रुककर गीदड़ गंभीर होते हुए बोला, तो समझो अब तुम्हारी भूखमरी के दिन गए। यहां पास में ही सब्जियों का एक बड़ा बाग है। वहां तरह-तरह की सब्जियां उगी हुई हैं। खीर ककड़ियां, गाजर, मूली, शलजम और बैंगनों की बहार है। मैंने बाड़ तोड़कर एक जगह अंदर घुसने का गुप्त मार्ग बना रखा है। बस वहां से हर रात अंदर घुसकर छककर खाता हूं और सेहत बना रहा हूं। तुम भी मेरे साथ आया करो। लार टपकाता गधा गीदड़ के साथ हो लिया। बाग में घुसकर गधे ने महीनों के बाद पहली बार भरपेट खाना खाया। दोनों रातभर बाग में ही रहे और पौ फटने से पहले गीदड़ जंगल की ओर चला गया और गधा धोबी के पास गया। उसके बाद वे रोज रात को एक जगह मिलते। बाग में घुसते और जी भरकर खाते। धीरे-धीरे गधे का शरीर भरने लगा। उसके बालों में चमक आने लगी और चाल में मस्ती आ गई। वह भूखमरी के दिन बिल्कुल भूल गया। एक रात खूब खाने के बाद गधे की तबीयत अच्छी तरह हरी हो गई। वह झूमने लगा और अपना मुंह ऊपर उठाकर कान फड़फड़ाने लगा। गीदड़ ने चिंतित होकर पूछा, मित्र, यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?

गधा आंखें बंद करके मस्त स्वर में बोला मेरा दिल गाने का कर रहा है। अच्छा भोजन करने के बाद गाना चाहिए। सोच रहा हूं कि ढैंचू राग गाऊं, गीदड़ ने तुरंत चेतावनी दी, न-न, ऐसा न करना गधे भाई। गानेवाने का चक्कर मत चलाओ। यह मत भूलो कि हम दोनों यहां चोरी कर रहे हैं। मुसीबत को न्योता मत दो। गधे ने टेढ़ी नजर से गीदड़ को देखा और बोला, गीदड़ भाई, तुम जंगली के जंगली रहे। संगीत के बारे में तुम क्या जानो। गीदड़ ने हाथ जोड़े, मैं संगीत के बारे में कुछ नहीं जानता। केवल अपनी जान बचाना जानता हूं। तुम अपना बेसुरा राग अलापने की जिद छोड़ो, उसी में हम दोनों की भलाई है। गधे ने गीदड़ की बात का बुरा मानकर हवा में दुलत्ती चलाई और शिकायत करने लगा, तुमने मेरे राग को बेसुरा कहकर मेरी बेइज्जती की है। हम गधे शुद्ध शास्त्रीय लय में रेंकते हैं। वह मूर्खों की समझ में नहीं आ सकता। गीदड़ बोला, गधे भाई, मैं मूर्ख जंगली सही, पर मित्र के नाते मेरी सलाह है अपना मुंह मत खोलो। चौकीदार जाग जाएंगे। गधे ने गीदड़ की बात नहीं मानी। गीदड़ वहां से सीधा जंगल की ओर भाग गया। गधे ने उसके जाने के कुछ समय बाद मस्त होकर रेंकने शुरू किया। आवाज सुनते ही बाग के चौकीदार जाग गए और उसी ओर लट्ठ लेकर दौडे, जिधर से रेंकने की आवाज आ रही थी वहां पहुंचते ही गधे को देखकर चौकीदार बोला यही है वह दुष्ट गधा, जो हमारा हरा-भरा बाग चर रहा था। बस सारे चौकीदार डंडों के साथ गधे पर पिल पड़े। कुछ ही देर में गधा पिट-पिटकर अधमरा होकर वहीं गिर पड़ा।

३०७) चतुराई ने बचाई जान और गया अपने घर - कहा गया है कि मुसीबत के समय सिर्फ अपनी बुद्धि ही काम आती है, लेकिन किसी संकट में फंसते ही आदमी इस तरह घबरा जाता है कि वह अपनी बुद्धि से काम ही नहीं ले पाता। उस समय आपा खो देना स्वयं का नुकसान करना होता है। एक नाई जब जंगल से गुजर रहा था, तो एक ऐसे सही संकट में यानि बाघों के बीच घिर गया। लेकिन वह समझदार था। उसे पता था कि यदि इस समय उसने बुद्धि से काम नहीं लिया, तो उसे कोई बचा नहीं सकता। बस, फिर क्या था, वह लगा अपनी बुद्धि के घोड़ों को दौड़ाने। क्या काम आई उसकी तरकीब? वह उन बाघों से बच गया या उनका निवाला बन गया।

उसके पास में हजामत बनाने की पेटी भी थी। रास्ते में एक बहुत बड़ा और घना जंगल पड़ा। नाई अपने रास्ते चला जा रहा थरा कि इसी बीच उसे एक बाघ आता दिखाई पड़ा। नाई घबरा उठा।

सोचा- अब तो बेमौत मरे। यह बाघ मुझे क्यों छोड़ने लगा?

इसी बीच नाई को एक तरकीब सूझी। जैसे ही बाघ पास आया, नाई गरज कर बोला, आ जा कुत्ते। अब तेरी क्या ताकत है कि तू मेरे हाथ से छूट कर भाग सके। देख, इस एक बाघ को तो मैंने अंदर बंद किया ही है और अब तेरी बारी है।

नाई ने बाघ को कुत्ता कहा था, इसलिए बाघ तो आग-बबूला हो उठा था। वह छलांग मार कर नाई पर झपटा। तभी नाई ने आईना उसके आगे कर दिया। बाघ ने आईने में अपना मुंह देखा, तो घबरा गया। उसने सोचा- सचमुच इस नाई की बात तो सही मालूम होती है। एक बाघ तो पकड़ा हुआ दीख ही रहा है। अब यह मुझे भी पकड़ लेगा। फिर तो बाघ इतना डरा कि वहां से जान लेकर भागा।

नाई ने आईना अपनी पेटी में रख लिया और वह आगे बढ़ा। चलते-चलते रात हो गई। नाई एक बड़े से बरगद पर जा बैठा और रात वहीं रह गया। हजामत की पेटी उसने एक डाल पर टांग दी और वह आराम से बैठ गया। कुछ ही देर के बाद बरगद के नीचे बाघ इकट्ठे होने लगे। एक, दो, तीन, चार.. इस तरह कई बाघ जमा हो गए। आज वहां बाघों का अपना वन भोजन था। उन बहुत से बाघों में वह बाघ बोला, अरे भैया। आज तो गजब हो गया।

सब बाघ पूछने लगे, क्या हुआ? बाघ बोला, आज एक नाई मुझे रास्ते में मिला। जब मैं उस पर झपटा और उसे खाने दौड़ा, तो वह बोला, अरे कुत्ते। एक को तो मैंने बंद किया ही है, अब तेरी बारी है। तू भी आ जा। जैसे ही मैं उसे खाने दौड़ा, उसने अपनी पेटी में से एक बाघ निकाला और दिखाया। मैं तो इतना डर गया कि पूंछ उठाकर भाग खड़ा हुआ। एक बाघ ने कहा, बस करो, बस करो, बेमतलब की गप मत हांको। भला, कोई नाई किसी बाघ को इस तरह पकड़ सकता है?

बाघ बोला, अरे भैया। मैंने तो उसे अपनी आंखों से देखा है। दूसरे बाघ ने कहा, ऊंह। तुम तो डरपोक हो, इसलिए डरकर भाग खड़े हुए। तुम्हारी जगह मैं होता, तो उसे वहीं खत्म कर देता।

बाघों की बातें सुनकर नाई तो पसीना पसीना हो गया। वह इस तरह थर-थर कांपने लगा कि बरगद की डालियां हिलने पर वह नीचे आ गिरा। तभी नाई ने होशियारी से काम लेकर कहा, भैया, पकड़ लो उस बाघ को। खबरदार, छोड़ना मत। यह बाघ बहुत सयाना बन रहा है।

सुन कर बाघ ने कहा, देखो, मैं कहता था न कि कोई बाघों को पकड़ने निकला है? संयोग कुछ ऐसा हुआ कि बंदर उसी

बाघ पर आ गिरा था, तो पहले बाघ की बातों पर विश्वास नहीं कर रहा था। वह बाघ तो छलांगे मारता हुआ भाग निकला। उसके पीछे-पीछे दूसरे सब बाघ भी भागे।

सब के सब बाघ गायब हो गए। सबेरा होने पर नाई आराम के साथ बरगद से नीचे उतरा और अपने घर पहुंच गया।

३०८) चालाक लोमड़ी और आत्मविश्वासी बिल्ली - बहुत पहले की बात है। एक बार जंगल से गुजरते हुए एक बिल्ली की मुलाकात एक लोमड़ी से हुई। लोमड़ी को दुनिया के तौर-तरीकों के बारे में बहुत समझदार और अनुभवी जानकर बिल्ली उससे आदरपूर्वक बोली, नमस्ते लोमड़ी महारानी, आप कैसी हैं? आपका जीवन कैसा चल रहा है? इतने मुश्किल समय में आपकी गुजर-बसर कैसे हो रही है?

लोमड़ी ने घमण्ड भरकर बिल्ली को सिर से पैर तक देखा और सोचने लगी कि इसकी बात का जवाब दिया जाए या नहीं। आखिरकार वह बोली, ओ नीच ठगनी चितकबरी मूर्खा। चूहे का शिकार करने वाली भुक्खड़ी। तुम्हें आता ही क्या है? तुम्हें कौन-कौन सी विद्या आती है? बिल्ली ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, मुझे बस एक ही विद्या आती है। लोमड़ी ने पूछा, अच्छा वह विद्या कौन-सी है? बिल्ली बोली, जब कुत्ते मेरा पीछा कर रहे हों तो पेड़ पर चढ़कर अपनी जान बचाना।

लोमड़ी कहने लगी, बस इतनी ही। मैं तो लगभग सौ विद्याएं जानती हूं और साथ-साथ मेरे पास चालाकियों का पिटारा भी है। मुझे तुम पर दया आती है। मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें बताऊंगी कि शिकारी कुत्ते से कैसे अपना बचाव किया जाता है। इतने में चार कुत्तों के साथ एक शिकारी घोड़े पर सवार होकर वहां आया। बिल्ली उसे देखते ही फुर्ती के साथ पेड़ पर चढ़ गई और सबसे ऊंची शाखा पर जाकर बैठ गई। शाखों और पत्तों में वह आराम से छिप भी गई। उसने वहीं से लोमड़ी को आवाज लगाई, अपना पिटारा खोलो लोमड़ी। तुम अपनी चालाकियों का पिटारा क्यों नहीं खोलती? इसी बीच कुत्तों ने लोमड़ी को बुरी तरह दबोच लिया था। उसका अन्त देखकर बिल्ली बोली, आह। लोमड़ी महारानी, अपनी सौ विद्याओं के बावजूद आप कुछ नहीं कर सकीं। यदि आप मेरी तरह पेड़ पर चढ़ना जानतीं, तो इस तरह आपको अपने जीवन से हाथ नहीं धोना पड़ता।

३०९) सुख की खोज - एक राजा था। वह बड़ा निडर और उदार था। उसकी प्रजा उसे बहुत चाहती थी। एक दिन राजा एकान्त में बैठा कुछ सोच रहा था। सोचते-सोचते वह गहराई में उतर गया। उसे लगा, इतनी सारी सुख-निधि पाकर भी आदमी दु:खी है तो क्यों? एक दिन उसने दरबारियों को आज्ञा दी कि सबसे सुखी और तन्दुरुस्त आदमी को पकड़कर लाओ। दरबारी और प्रजा हैरान। वे राजा की आज्ञा का पालन करने के लिए बहुतेरे भटके, पर राजा जैसा चाहता था, वैसा एक भी आदमी नहीं मिला। उन्होंने दरबार में आकर राजा से कहा, हे राजन्, इस धरती पर पूर्ण सुखी और स्वस्थ कोई भी इंसान नहीं है। किसी को कोई दु:ख है तो किसी को कोई। सुनकर राजा स्तब्ध रह गया। फिर बोला, तो क्या मेरे राज्य में सब दुखी और बीमार हैं? इस धरती पर कोई भी सुख नहीं है। नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। जाओ, एक बार फिर खोजो। दरबारी क्या करते। फिर निकले। घूमते-घूमते वे एक निर्जन और वीरान जंगल से गुजरे। देखा, एक संत ध्यान में लीन हैं। वे वहीं जाकर बैठ गए। ध्यान खुलने पर संत ने पूछा, तुम कौन हो? कहां से आये हो? दरबारियों ने कहा, हम राजा की आज्ञा मानकर सबसे सुखी व स्वस्थ प्राणी को खोजने निकले हैं। सुनकर संत बोले, तुम्हें अब तक ऐसा कोई आदमी मिला

है? दरबारियों ने कहा, नहीं। इसके बाद साधु उनके साथ राजा के पास गए। राजा संत को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। संत ने कहा, राजन्। तुम व्यर्थ ही परेशान होते हो। क्या तुम्हें पता है कि मनुष्य के हृदय में ही सुख का अपार भंडार भरा पड़ा है? जरा टटोलो तो अपने को। सुख की खोज में जैसे कस्तूरी मृग इधर-उधर भटकता है, वैसे ही तुम भटक रहे हो। सुख के लिए बाहर नहीं, भीतर देखना होता है। राजा का हृदय पुलक उठा। उसकी समस्या हल हो गई।

३१०) सच्ची मित्रता - एक गांव में एक बहुत धनी व्यापारी रहता था। उसका नाम धनीराम था। धनीराम बहुत दयालु स्वभाव का व्यक्ति था, वह गाँव के सभी लोगों की व्यापार करने में सहायता करता था। धनीराम का एक पुत्र भी था जिसका नाम सुरेश था। धनीराम के पूर्ण गुण सुरेश में भी थे। धनीराम के घर में एक रामू नाम का नौकर भी काम करता था। रामू का एक पुत्र था, जिसका नाम राजेश था। सुरेश और राजेश एक ही उम्र के थे। वे दोनों अच्छे मित्र भी बन गए थे। वे दोनों साथ में खाते, खेलते, पढ़ते और बहुत मस्ती करते थे।

एक दिन सुरेश और राजेश एक पेड़ के नीचे खेल रहे थे। खेलने के बाद राजेश अपने घर चला गया। घर जाकर उसने देखा कि उसके घर में आग लग गई थी। राजेश के माता-पिता ने आग बुझाने की बहुत कोशिश की लेकिन वे दोनों आग को बुझा नहीं सके। उनका घर पूरी तरह से जल गया था। राजेश के परिवार के पास रहने के लिए अब कोई भी घर ना था। रात होनेवाली थी। उनके पास रात बिताने की कोई जगह नहीं थी। वे सब चलते-चलते एक पेड़ के नीचे पहुंचे और उसी पेड़ के नीचे बैठकर वे सो गए।

सुबह होते ही राजेश के पिता घर ढूंढ़ने के लिए चले गए, लेकिन कोई भी उन्हें अपने घर में रहने की जगह देने को तैयार नहीं था। राजेश को बहुत भूख भी लग रही थी, लेकिन उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था। कुछ दिनों तक उन्होंने उसी पेड़ के नीचे रहने का फैसला किया।

जब कुछ दिनों तक राजेश, सुरेश के साथ खेलने नहीं आया तो सुरेश को उसकी चिंता होने लगी। सुरेश को लगने लगा कि कहीं राजेश किसी मुसीबत में तो नहीं है। सुरेश ने यह बात पिता को बताई। सुरेश के पिता धनीराम ने अपने कुछ नौकरों को राजेश के परिवार को ढूंढने के लिए भेज दिया। नौकरों ने रामू के घर जाकर देखा तो उन्हें पता चला कि रामू का घर पूरी तरह जल चुका है और रामू अपने परिवार के साथ कहीं चला गया है।

नौकरों ने जब ये बात धनीराम को बताई तो सुरेश ने ये बात सुन ली थी। सुरेश, राजेश को ढूंढ़ने के लिए निकल पड़ा। वह उसी पेड़ के नीचे पहुंचा, जहाँ राजेश भूखा बैठा था। राजेश को देखकर सुरेश रोने लगा। सुरेश उससे बहुत नाराज हुआ क्योंकि राजेश ने अपने घर जलने की बात अपने दोस्त को क्यों नहीं बताई। सुरेश ने कहा कि तुम अब मेरे घर में रहोगे। राजेश अपने मित्र के साथ उसके घर रहने लगा। कुछ दिनों तक राजेश का परिवार सुरेश के घर पर रहा और फिर धनीराम ने राजेश के परिवार के लिए एक नया घर बनवा कर दिया। सुरेश और राजेश और भी अच्छे मित्र बन गए थे।

३११) कर्ज से अच्छे खजूर - एक स्कूल के छात्रों ने एक बार पिकनिक का प्रोग्राम बनाया। सभी बच्चे इसके लिए अपने घर से कुछ न कुछ खास खाने की चीज बनवा कर लानेवाले थे। स्कूल के विद्यार्थियों में एक गरीब छात्र भी था। उसने घर आकर मां को सारी बात बताई।

मां ने बताया कि घर में बनाने के लिए कोई खास चीज नहीं है। बालक दुखी हो गया। तभी मां ने कहा कि घर में कुछ खजूर रखे हैं तू उन्हें ले जा। कुछ देर बाद मां को लगा कि पिकनिक पर बाकी सभी बच्चे खाने-पीने की अच्छी चीजें लेकर आएंगे, ऐसे में बेटा खजूर ले जाएगा तो ठीक नहीं लगेगा। मां ने तुरंत बेटे से कहा कि तुम्हारे पिताजी आनेवाले हैं। जैसे ही वे आएंगे, मैं बाजार से अच्छी चीज मंगवा लूंगी। बच्चा निराश होकर एक तरफ बैठ गया। थोड़ी देर बाद पिता घर आए। बेटे को उदास बैठा देखकर उन्होंने अपनी पत्नी से पूछा- क्या हुआ? और पत्नी ने उन्हें सारी बात बताई। पति-पत्नी देर तक आपस में विचार कर रहे थे।

आंगन में बैठा बालक उन्हें देखता रहा, उसे दुख था कि उसके कारण उसके माता-पिता परेशानी में हैं। कुछ देर बाद बालक ने देखा कि उसके पिता चप्पल पहनकर बाहर जा रहे हैं।

बालक ने पूछा- पिताजी क्या जान सकता हूं कि आप कहां जा रहे हैं।

पिता बोले- बेटा तेरी उदासी मुझसे देखी नहीं जाती, मैं अपने मित्र से कुछ पैसे उधार लेने जा रहा हूं, जिससे तू भी पिकनिक पर अच्छी चीजें ले जा सकेगा।

बालक ने जवाब दिया- नहीं पिताजी। उधार मांगना अच्छी बात नहीं है। मैं पिकनिक पर यह खजूर ही ले जाऊंगा। कर्ज लेकर शान दिखाना बुरी बात है। पिता ने पुत्र को सीने से लगा लिया। आगे जाकर यही बालक पंजाब के लाला लाजपतराय के नाम से विख्यात हुआ।

३१२) फल खाते ही वह बुढ़िया हो गई - एक गांव में एक बूढ़ा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। उनके कोई बाल-बच्चा नहीं था। मन बहलाने के लिए उन्होंने एक सुग्गा पाल रखा था। उस सुग्गे ने आदमी के बच्चे की तरह बोलना सीख लिया। दोनों उसे अपना बच्चा मानते। सुग्गा भी उन्हें अपने मां-बाप समझता। वह रोज जंगल में चला जाता। दूसरे सुग्गों से बातचीत करता। घूम-टहल कर शाम को घर आ जाता। कुछ सुग्गों से उसकी दोस्ती हो गई।

कुछ दिनों के बाद सुग्गे ने उन जंगली सुग्गों को अपने यहां खाने पर बुलाया। उसके मां-बाप ने उसके मेहमानों के लिए ढेर सारा खाना बनाया। यहां दावत खाकर जंगली सुग्गे बहुत प्रसन्न हुए।

जाते समय उन्होंने सुग्गे को एक वृक्ष का बीज दिया। सुग्गे ने उस बीज को जमीन में बो दिया। धीरे-धीरे बीज एक वृक्ष बन गया। कुछ साल में फल देने लगा। वृक्ष में जब पहला फल पका तो बूढ़े ने उसे देख लिया। दूसरे दिन वह उस फल को तोड़ने लगा। उसने देखा, फल पहले से ही जमीन पर गिरा पड़ा है। उसने सोचा, हो सकता है जहरीले कीड़े ने फल को जूठा कर दिया हो। इसलिए खाने से पहले इसकी जांच कर लेनी चाहिए। ऐसा सोच कर उसने फल एक कुत्ते को खिला दिया। उस फल के खाते ही कुत्ता मर गया। अब गांव के लोग उस वृक्ष को विष वृक्ष कहने लगे।

उसी गांव में सास-बहू रहती थीं। बहू बड़ी ही झगड़ालू थी। वह बात बात में अपनी सास से झगड़ पड़ती। एक दिन सास बहू से तंग आकर सोचने लगी- रोज इस तरह दुखी होने से तो मर जाना अच्छा। फिर वह उस बूढ़े के घर गई। उसने बूढ़े को अपने मन की बात बताई। बूढ़े ने उसे बहुत समझाया, लेकिन बूढ़े के मना करने पर भी सास ने फल खा लिया। फल खाते ही वह युवती बन गई।

युवती बनी सास घर पहुंची। इस बार झगड़े में बहू हार गई। हारने के बाद बहू भी फल खाने गई। फल खाते ही बहू बुढ़िया में बदल गई। लाख पछताने और कोशिश करने पर भी वह युवती नहीं बन सकी।

३१३) तो जीवन की समस्याएं हो जाएंगी हल - बात है उन इलाकों की जहां अमूमन जबर्दस्त तूफान आया करते हैं। ऐसे ही एक तूफान में पानी के तेज बहाव से एक बड़ा पत्थर टूट कर सड़क के बीचो-बीच आ गिरा।

तभी एक व्यक्ति वहां आया, जहां पत्थर गिरा था, वहां वह रुक गया और किसी के आने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर बाद एक दूसरा व्यक्ति अपनी घोड़ागाड़ी से वहां आ पहुंचा।

उसने पहले व्यक्ति से पूछा कि तुम यहां सड़क के बीच में हट जाओ, ताकि मैं यहां से गुजर सकूं। पहले व्यक्ति ने कहा- तुम्हें जल्दी है तो पहले वहां जाकर यह चट्टान हटाओ। पहले व्यक्ति ने कहा क्यों न किसी शक्तिशाली आदमी की प्रतीक्षा करें। वहीं हमारा रास्ता साफ करेगा।

दोनों साथ-साथ बैठ गए। तभी एक ओर घोड़ागाड़ी वाला वहां आ पहुंचा। वह काफी बूढ़ा था। जब उसे पता चला कि दोनों यहां क्यों खड़े हैं तो वह पत्थर के इर्द-गिर्द चहलकदमी करने लगा। समय बीतता रहा। अब वहां एक काफिला इकट्ठा हो गया। इतने में गेरुआ वस्त्र पहने एक सन्यासी वहां आ पहुंचे। वे स्वामी विवेकानंद के गुरुभाई एवं रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी अखंडानंद थे।

वह इन दिनों अपनी एकांत साधना के लिए यहां आए हुए थे। वे सबको परेशान देख बोले- तुम लोग अपनी जवाबदेही दूसरों पर डालने की कोशिश मत करो। आओ हम सभी मिलकर प्रयास करते हैं।

स्वामीजी ने सबसे पहले पत्थर हटाना शुरू किया। उन्हें देख दूसरों ने भी कोशिश की और इस तरह पत्थर हट गया। स्वामीजी ने कहा- हम हर समय दूसरों का मुंह देखते रहते हैं। हमें लगता है कोई आकर हमारी समस्या हल करेगा। कोई आगे बढ़कर खुद पहल नहीं करता। अगर हम ऐसा करने लगें तो जीवन की समस्याएं अपने आप हल हो जाएंगी।

अगर एकता हो तो बड़े से बड़े काम भी आसान हो जाते हैं। समस्याएं वहीं रहतीं हैं, जहां पर एकता नहीं रहती वहां छोटे से छोटे काम भी बमुश्किल हो पाते है।

३१४) कंगाली में आटा गीला - एक समय की बात है। किसी कस्बे में रामलाल नाम का एक आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता था। वह कपास का व्यापार करता था। जिस कस्बे में रामलाल रहता था, उसके आसपास के गांवों में कपास की खेती बहुत होती थी। कपास के मौसम में रामलाल किसानों से सस्ते दामों पर कपास खरीदकर अपने गोदाम में रखवा देता और फिर दाम बढ़ने पर उसे बेच देता। इस तरह उसका अच्छा खासा गुजारा आराम से चल जाता था।

एक साल वर्षा कम होने से कपास की फसल कम हुई। रामलाल को शहर से खबर मिली कि इस साल कपास के दाम ऊंचे जाएंगे, सो उसने लोगों से रुपए उधार लेकर और सालों से दोगुनी कपास खरीद ली। अपने गोदाम के पास उसने एक और गोदाम किराए पर ले लिया, फिर दोनों गोदामों में खरीदी हुई कपास भरवा दी। गोदामों में कपास रखवा कर रामलाल निश्चिंत हो गया। उसे धनी बनने के सपने आने लगे।

एक रात रामलाल ने सपना देखा कि उसकी कपास ऊंचे दामों पर बिकी है और उसके पास रुपयों का ढेर लग गया है।

रामलाल सोचने लगा कि वह अब जल्दी ही अपने लिए एक नया मकान बनवा लेगा।

सपना देखते-देखते रामलाल गहरी नींद में सो गया। सुबह होने पर जब वह उठा तो उसे अपने घर के बाहर कुछ शोरगुल सुनाई दिया। वह सोचने लगा- यह शोरगुल कैसा है। चलो बाहर चलकर देखते हैं।

जब रामलाल बाहर आया तो उसने देखा कि गोदामों के आसपास रहनेवाले कुछ लोग खड़े थे। वे कह रहे थे- पता नहीं कैसे रामलाल के गोदामों में आग लग गई है। यह सुनते ही रामलाल के तो होश उड़ गए। वह तुरन्त ही गोदामों की तरफ दौड़ा, लेकिन उसके वहां पहुंचने से पहले ही सारी कपास जलकर राख बन चुकी थी।

रामलाल ने अपना सिर पीट लिया। उसे बड़ा भारी नुकसान हुआ था। लोगों का कर्ज चुकाने में और कपास की कीमत अदा करने में उसकी जमीन-जायदाद बिक गई। वह बिल्कुल कंगाल हो गया। दाने दाने को तरसने लगा।

एक दिन रामलाल घर में भूख से छटपटा रहा था। उसने अपनी पत्नी से कुछ खाने को मांगा। पत्नी रसोई में गई। वहां थोड़ा सा आटा बचा था। उसने सोचा इसी से जो रोटियां बनेंगी, दोनों मिल बांटकर खा लेंगे। यह सोचकर वह आटा सानने के लिए उसमें पानी डालने लगी तभी रामलाल ने उसे आवाज दी। हड़बड़ाहट में आटे में पानी ज्यादा गिर गया और वह बिल्कुल गीला हो गया। अब उससे रोटियां नहीं बन सकती थीं। यह देखकर रामलाल की पत्नी के मुंह से अचानक निकल पड़ा- लो, कंगाली में आटा गीला, बस उसी दिन से यह कहावत चल पड़ी। जब किसी दुखी व्यक्ति पर और ज्यादा विपत्ति पड़ती है तो यह कहावत दोहराई जाती है।

३१५) मां की अनोखी तरकीब काम आई युद्ध जीतने में - एक जमाने में तेलहदबा नामक एक युवक था। लोग मानते थे कि वह तीर चलाने में काफी माहिर है, इसलिए उसका नाम तेलहइबा रखा गया। पर ऐसा बिलकुल नहीं था। तीर चलाना तो दूर उसने आज तक धनुष बाण को छुआ तक नहीं था। बचपन में उसके छोटे-छोटे हाथ बड़े तेज लगते थे, इसलिए मां ने उसका तेलहइबा नाम रख दिया था। तबसे उसे इस नाम से जानने लगे। जिस राज्य में तलहइबा रहता था, एक बार वहां के पड़ोसी राज्य के राजा ने आक्रमण कर दिया। शत्रुओं के तीर से सामने तेलहइबा के राज्य के सैनिक अधिक समय तक टिक नहीं पाए। राजा ने अपने मंत्रियों से पूछा, मेरे राज्य में तीर चलाने में माहिर कोई शख्स है? एक ने जवाब दिया, महाराज, हमारे गांव में तेलहइबा नामक एक युवक है। तीर चलाने में उसके मुकाबले में कोई नहीं है। उसे अभी बुलाया जाए। राजा ने आज्ञा दी इस पर तेलहइबा को राजमहल लाया गया। राजमहल में राजा ने कहा, तेलहइबाजी, कल से तुम्हें युद्ध में जाना होगा यह मेरी आज्ञा है।

शत्रु पक्ष तीर चलाने में काफी माहिर है। तुझे उन्हें पराजित करना है। यह समाचार शत्रु पक्ष में फैल गया कि कल से एक तीरंदाज युवक युद्ध करने आएगा। तेलहइबा राजा की आज्ञा सुनकर अत्यंत दु:खी मन से घर लौटा। उसने सारी कहानी अपनी मां को सुनाई। मां ने कहा, बेटे। इतना दु:खी क्यों होता है? मैं आखिर किस काम आऊंगी? जा, तू एक अच्छा सा धनुष बना ला। आगे मैं सब संभालूंगी। तेलहइबा ने बांस काटकर एक अच्छा सा धनुष बनाया। मां काफी खुश थी कि उसका बेटा काफी होशियार है। सुबह हुई। तेलहइबा युद्ध के लिए तैयार हो गया। उसने जो धनुष बनाया था, उसे कंधे पर लटकाया। तब मां ने अच्छी तरह ढक्कन लगाए गए सात-आठ तरकश (बांस की नाली से बना) लाकर दिए।

उसने कहा, बेटे, जो तरकश मैं तुम्हें दे रही हूं, उसके ढक्कन अच्छी तरह लगा दिए हैं। शत्रुओं के बीच पहुंचते ही ये सारे ढक्कन खोल देना। तेलहइबा मां को प्रणाम कर युद्ध के लिए निकला। तेलहइबा को धनुष और बिना तीर के तरकश लेकर आते देखकर कुछ सैनिक फुसफुसाने लगे, अरे तेलहइबा के तरकश तो खाली है। चुप, हमारे तेलहइबा को मंत्र आता है। उसके मंत्र के प्रभाव से तरकश खाली दिखाई दे रहा है। एक सैनिक ने कहा। तेलहइबा युद्ध भूमि में पहुंचा।

जिंदा पकड़ो, जिंदा पकड़ों तीरंदाज बहादुर युवक को जिंदा पकड़ों। शत्रु के सैनिक शोर मचाते हुए तेलहइबा को पकड़ने दौड़े। मां के कहने के मुताबिक शत्रुओं के घेरे में आने पर तेलहइबा ने तरकशों के ढक्कन तुरंत खोल दिए। तरकशों में से उसके बाग की सारी मधुमक्खियां निकल आईं। मधुमक्खियां शत्रुओं को बुरी तरह काटने लगीं। घबराहट और पीड़ा के कारण शत्रुओं को भागने के सिवाय कुछ न सूझा, लेकिन तेलहइबा के राजा ने उन सब सैनिकों को पकड़ लिया। अपनी जीत से राजा खुश हुए। तेलहइबा को बहुत बड़ा इनाम दिया और तेलहइबा आनंदमय जीवन बिताने लगा।

३१६) सांप और चूहा दोनों एक ही बिल में रहने लगे - एक बार की बात है, एक बिल में एक चूहा रहता था। एक दिन उसी बिल के पास एक सांप आकर बैठ गया। चूहे ने सोचा अब तो हमारी खैर नहीं, ये सांप हमें खा जाएगा, पर वह सांप ऐसा नहीं सोचता था। वह सांप चूहे से दोस्ती करने आया था, क्योंकि उस सांप के पास अपना घर नहीं था। वह सांप एक घर तलाश कर रहा था जहां पर वो रह सके, पर चूहे के मन में ये डर बैठा रहा कि ये सांप कहीं हमको खा गया तो। सांप ने चूहे को बताया कि वो उसे खाने नहीं आया है, वो तो बस एक घर को तलाश रहा है, जहां पर वो रह सके। यह सुनकर चूहा अपने बिल से बाहर आकर बोला- भाई, आप कौन हो और मेरे घर में क्या करने आए हो। सांप बोला- भाई, मेरा कोई नहीं है और मेरे पास घर भी नहीं है। अगर आप मुझे अपने घर में रख लेंगे तो आप की बड़ी दया होगी, चूहा बोला- ठीक है भाई, रख लेंगे। चूहे ने अपने घर के एक हिस्से में सांप को रहने के लिए जगह दे दी। चूहा और सांप दोनों साथ-साथ रहने लगे। एक दिन सांप बीमार पड़ गया, वो शिकार करने नहीं जा सका, अत: उसे खाने को कुछ नहीं मिला। भूख के मारे सांप के पेट में दर्द होने लगा। सांप ने सोचा कि इस चूहे को ही मार के खा जाते हैं। फिर उसने सोचा कि इस चूहे ने अपनी जान जाने की परवाह किए बिना हमें रहने की जगह दी है, इसको खाना ठीक नहीं होगा। सांप को इस तरह पड़ा देखकर चूहे ने सोचा ये सांप कहीं शिकार के लिए गया भी नहीं और लग रहा है कुछ खाया भी नहीं है। चूहा चुपके से सांप को देखने लगा, सांप भूख के मारे तड़प रहा था। चूहे को यह देखा नहीं गया, उसने पूछा कि तुम खाना क्यों नहीं खाते हो?

सांप ने कहा- मैं बीमार हूं इसलिए शिकार नहीं कर सका, मेरे पास कोई खाना नहीं है। भूख के मारे मेरा बुरा हाल है। कई बार मेरे मन में बुरा ख्याल आया कि मैं तुमको खा जाऊं, मगर नहीं दिल ने मना कर दिया। चूहा यह सुन दौड़कर बाहर गया और उसके लिए खाने का इंतजाम किया। फिर सांप और चूहे दोनों ने साथ में बैठकर भरपेट खाना खाया। अब सांप और चूहे दोनों रोज साथ में खाना खाते और घूमने जाते। सांप और चूहा दोनों मजे से एक ही बिल में रहने लगे। धीरे-धीरे सांप और चूहे की दोस्ती की कहानी पूरे जंगल में फैल गई।

३१७) सबसे बड़ा काम - एक बार बेंजामिन फ्रैंकलिन ने एक धनी व्यक्ति की मेज पर बीस डॉलर की सोने की गिन्नी रखते हुए कहा, सर आपने बुरे वक्त में मेरी सहायता की थी। उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। लेकिन अब मैं अपनी मेहनत

के बल पर इतना सक्षम हो गया हूं कि आपका वह कर्ज लौटा सकूं। यह सुनकर वह व्यक्ति उन्हें गौर से घूरते हुए बोला, क्षमा कीजिए, पर मैंने आपको पहचाना नहीं। न ही मुझे यह याद है कि मैंने किसी को बीस डॉलर उधार दिए थे। बेंजामिन बोले, मैं उन दिनों एक प्रेस में अखबार छापने का काम करता था। एक दिन अचानक मेरी तबीयत खराब हो गई। तभी मैंने आपसे बीस डॉलर लिए थे। उस व्यक्ति ने अपने बीते दिनों के बारे में सोचा तो उसे याद हो आया कि काफी पहले एक लड़का प्रेस में काम किया करता था और एक दिन उसने उसकी मदद भी की थी। इस पर वह बोला, हां मुझे याद आ गया। लेकिन दोस्त, यह तो मनुष्य का सहज धर्म है कि वह मुसीबत में सहायता करे। इन गिन्नियों को अब अपने पास ही रखें। कभी कोई जरूरतमंद आए तो उसे दे दें। उसकी यह बात सुनकर बेंजामिन फ्रैंकलिन बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अभिवादन कर वे गिन्नियां अपने साथ लौटा लाए। इसके बाद एक दिन उन्होंने एक जरूरतमंद व्यक्ति को वह गिन्नियां दे दीं। उस व्यक्ति ने बेंजामिन से गिन्नियां लौटाने की बात कही तो वह उससे बोले, दोस्त, जब तुम सक्षम हो जाओगे तो अपने जैसे किसी जरूरतमंद को ये गिन्नियां दे देना। मैं समझूंगा कि मेरी गिन्नियां मुझे मिल गई। किसी जरूरतमंद की वक्त पर मदद करना ही सबसे बड़ा काम है।

३१८) रागिनी का छोटू डॉगी - एक दिन की बात है। रागिनी स्कूल जा रही थी। रास्ते में उसे एक छोटा-सा कुत्ता दिखाई दिया। एकदम छोटा, मुलायम, अपनी चार टाँगों पर लुढ़कता-पुढ़कता चला जा रहा था। रागिनी उसके पास बैठ गई। रागिनी ने उसे छुआ। वह बहुत ही गुलगुला और नरम-नरम सा था। उसे छुना अच्छा लग रहा था।

ऐ, छोटू मेरे साथ खेलोगे? रागिनी ने पूछा। छोटू ने अपने अगले दोनों पंजे रागिनी के हाथों में रख दिए। भले ही छोटू के पैरों के नाखून अभी छोटे थे, पर थे तो नाखून ही। जैसे ही छोटू के नाखून रागिनी को गड़े, उसने अपने हाथ पीछे हटा लिए। छोटू बेचारा एक ओर लुढ़क गया। अब रागिनी को याद आया कि वह तो स्कूल जा रही थी। वह उठकर स्कूल की ओर चल दी। कुछ दूर चलकर रागिनी ने पीछे मुड़कर देखा। छोटू भी उसके पीछे पीछे चला आ रहा था। रागिनी ने उसके पास जाकर समझाने की कोशिश की- छोटू तुम अभी यहीं रुको। मुझे स्कूल जाना है। छुट्टी के बाद हम मिलकर खेलेंगे। रागिनी उस गुलगुले छोटू को छोड़कर फिर आगे चलने लगी। छोटू अभी रुककर इंतजार करना नहीं चाहता था। वह फिर से रागिनी के पीछे पीछे चलने लगा। रागिनी ने अबकी बार उसे अपने हाथों में उठा लिया। लो, मेरा स्कूल आ गया। तुम वहाँ नहीं जा सकते, समझे। अब तुम जाओ। रागिनी ने उसे नीचे उतारा और स्कूल में अंदर जाने के लिए खड़ी हुई। छोटू उसके पैरों को सूंघता हुआ उसी के आसपास मंडराने लगा।

रागिनी उल्टी दिशा में चलने लगी। छोटू एक पेड़ का चक्कर लगाकर रागिनी के स्कूल की तरफ दौड़ने लगा। रागिनी स्कूल के दरवाजे से अपनी कक्षा में जा पहुंची। छोटू भी दरवाजे के नीचे से निकलकर अंदर आ चुका था। स्कूल में प्रार्थना हो चुकी थी। बच्चे कक्षा में पहुंच रहे थे। अभी तक मैडम कक्षा में नहीं आई थीं। छोटू कक्षा के दरवाजे तक पहुंच गया। उसके आस-पास कई बच्चे जमा हो गए। यह कितना अच्छा है। नरम-नरम है न। कौन लाया इसे? किसका है यह?

मैं इसे अपने घर ले जाऊंगा। छोटू की तारीफ सुनकर रागिनी उसके पास पहुंच गई। उस पर हाथ फेरते हुए वह बोली- यह मेरा छोटू है। तभी मैडम आ गई। वह बोलीं- रागिनी, इसे तुम लाई हो? जी नहीं, यह मेरे पीछे-पीछे आ गया है।

अच्छा, अब तुम इसे वापस छोड़कर आओ। अबकी बार रागिनी छोटू को उठाकर दरवाजे से बाहर निकल गई। उसने बाहर निकलकर उसे एक पेड़ के पास छोड़ दिया। छोटू पेड़ के तने से टकराकर एक ओर लुढ़क गया। रागिनी ने सोचा- यह ठीक है। तुम यहीं आराम करो। फिर रागिनी अपनी कक्षा में पहुंच गई।

३१९) सच्चाई का महत्व - स्वामी विवेकानंद के बचपन की एक घटना है। तब उन्हें सभी नरेंद्र पुकारते थे। बचपन से ही उनमें असाधारण प्रतिभा थी। जब वह बात करते तो हर कोई ध्यानमग्न हो उन्हें सुनने लगता था। एक दिन स्कूल में नरेंद्र एक क्लास के ब्रेक के दौरान अपने दोस्तों से बात कर रहे थे। इस बीच शिक्षक क्लास में आ पहुंचे और उन्होंने अपना विषय पढ़ाना शुरू कर दिया। लेकिन नरेंद्र की बातचीत सुन रहे छात्रों को कक्षा में शिक्षक के आने का जैसे पता ही नहीं चला। वे उन्हें ही सुनते रहे। कुछ समय बाद शिक्षक को अहसास हुआ कि कक्षा के एक हिस्से में कुछ विद्यार्थी आपस में ही बातचीत कर रहे हैं। शिक्षक ने नाराजगी दिखाते हुए पूछा, क्या चल रहा है? जवाब न मिलने पर हरेक छात्र से पूछा, बताओ अब तक मैंने क्या पढ़ाया है? कोई भी विद्यार्थी उत्तर न दे सका। लेकिन नरेंद्र अपने दोस्तों से बात करते हुए भी शिक्षक के व्याख्यान को सुन रहे थे और उसे ग्रहण भी कर रहे थे। अब उनकी बारी थी। शिक्षक ने जब उनसे वही सवाल पूछा तो उन्होंने उस विषय को शुरू से लेकर अंत तक बता दिया जिसे क्लास में शिक्षक ने अभी तक क्या-क्या समझाया था। शिक्षक उनके उत्तर से प्रभावित हुए, लेकिन अन्य छात्रों पर उनका गुस्सा बना रहा। उन्होंने दोबारा उन लड़कों से पूछा, जब मैं पढ़ा रहा था तब कौन-कौन बात कर रहा था? हर किसी ने नरेंद्र की ओर इशारा किया। लेकिन शिक्षक को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने नरेंद्र को छोड़कर उनके दोस्तों को बेंच पर खड़े होने की सजा सुना दी। पर अपने उन दोस्तों के साथ नरेंद्र भी खड़े हो गए। शिक्षक ने कहा, नरेंद्र तुमने तो सही उत्तर दिया है। तुम बैठ जाओ। नरेंद्र ने कहा, सर, सच यह है कि मैं ही इन लड़कों से बात कर रहा था। नरेंद्र की ईमानदारी और मेधा से शिक्षक दंग रह गए।

३२०) राजा की पहचान - एक समय की बात है। चीन के महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस अपने शिष्यों के साथ एक पहाड़ी से गुजर रहे थे। थोड़ी दूर चलने के बाद वह अचानक एक जगह रुक गए। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि कहीं कोई रो रहा है, किसी स्त्री के रोने की आवाज आ रही है। आवाज को लक्ष्य करके वह उस तरफ बढ़ चले। शिष्य भी उनके पीछे-पीछे चल दिए। कन्फ्यूशियस उस स्त्री के पास पहुंचे तो उन्होंने उससे रोने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा, इसी स्थान पर मेरे पुत्र को चीते ने मार डाला। इस पर कन्फ्यूशियस ने उस स्त्री से कहा, तो तुम तो यहां अकेली हो न, तुम्हारे परिवार के बाकी सदस्य कहां हैं? इस पर स्त्री ने जवाब दिया, हमारा पूरा परिवार इसी पहाड़ी पर रहता था, लेकिन अभी थोड़े दिन पहले ही मेरे पति और ससुर को भी उसी चीते ने मार दिया। मैं अपने पुत्र के साथ यहां रहती थी और आज चीते ने मेरे पुत्र को भी मार दिया। इस पर कन्फ्यूशियस हैरान होकर बोले, फिर तुम इस स्थान पर क्यों हो? तुम इस खतरनाक जगह को छोड़ क्यों नहीं देती। इस पर स्त्री ने कहा, इसलिए नहीं छोड़ती, क्योंकि कम से कम यहां किसी अत्याचारी राजा का शासन तो नहीं है और चीते का अंत तो किसी न किसी दिन हो ही जाएगा। इस पर कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों से कहा, निश्चित ही यह स्त्री करुणा और सहानुभूति की पात्र है, लेकिन फिर भी एक महत्वपूर्ण सत्य से इसने हमें अवगत करवाया है कि एक बुरे शासक के राज्य में रहने से अच्छा है किसी जंगल या पहाड़ी पर ही रह लिया जाए। मैं तो कहूंगा

एक समुचित व्यवस्था यह है कि जनता को चाहिए कि ऐसे बुरे शासक का वह पूर्ण विरोध करे और सत्ताधारी को सुधरने के लिए मजबूर करे और हर एक नागरिक इसे अपना समझे।

३२१) तस्वीर की कीमत - एक अमेरिकी करोड़पति ने महान चित्रकार पिकासो को अपनी तस्वीर बनाने को दी। तस्वीर बनाने में पिकासो को दो साल लग गए। वह करोड़पति इस बीच बार-बार अपने आदमी को पिकासो के पास भेजकर पता करता कि तस्वीर बनी या नहीं। हर बार पिकासो का जवाब होता, थोड़ा धैर्य रखिए, भगवान भी आपको बनाते हैं तो नौ महीने लगते हैं, फिर मैं तो ठहरा साधारण मनुष्य। दोबारा आपको बना रहा हूं, दो तीन साल लग सकते हैं। दो वर्ष बाद पिकासो ने उस करोड़पति को खबर भेजी कि चित्र तैयार है, आकर ले जाएं। तस्वीर काफी सुंदर थी। करोड़पति को वह बहुत पसंद आई। उसने पूछा- इसका दाम? पिकासो ने कहा, पांच हजार डॉलर। करोड़पति चौंक उठा और बोला, क्या? थोड़ा सा कैनवास और थोड़े से रंग और इसका दाम पांच हजार डॉलर? क्या मजाक करते हो? इस कैनवास के टुकड़ों और इन रंगों की इतनी कीमत? पांच-दस डॉलर में तो ये सारे समान बाजार में मिल जाएंगे। पिकासो ने अपने सहयोगी को कहा, जा भीतर, इससे बड़ा कैनवास और रंग लेकर आ और इन्हें दे दे। ये जितनी कीमत दें रख ले। उसने ऐसा ही किया। सारा सामान उस करोड़पति के सामने रख दिया और कहा, ये रहा आपका पोर्ट्रेट अब आपकी जो मर्जी दस पांच डॉलर देकर इन्हें ले जाएं। करोड़पति घबराकर बोला, ये सब ले जाकर मैं क्या करूंगा? तब पिकासो ने कहा, फिर याद रखो, तस्वीर रंगों और कैनवास का जोड़ नहीं है, उससे कहीं ज्यादा है। इनके द्वारा तो हम उसे उतारते हैं जो कैनवास और रंग नहीं है। और हम दाम उसके मांगते हैं, जिसका रंग और कैनवास से संबंध नहीं है और अब पांच हजार में निपटारा नहीं होगा। पचास हजार देते हो तो ठीक वरना यह तस्वीर अब नहीं बिकेगी। वह तस्वीर आखिर पचास हजार डॉलर में बिकी।

३२२) स्वप्न का संदेश - एक संत की साधना और भक्तिमय जीवन की बड़ी ख्याति थी। एक रात उन्होंने स्वप्न देखा कि उनकी मृत्यु हो चुकी है और वह एक देवदूत के सामने खड़े हैं। देवदूत सब मृत लोगों से उनके कर्मों का ब्योरा मांग रहा था। काफी देर बाद जब उनकी बारी आई, तो देवदूत ने उनसे पूछा, आप बताएं, आपने जीवन में क्या अच्छे कार्य किए जिनका आपको पुण्य मिला हो? संत सोचने लगे- मेरा तो सारा जीवन ही पुण्य कार्यों में व्यतीत हुआ है, मैं कौन सा एक काम बताऊं। वह बोले, मैं पांच बार तीर्थयात्रा कर चुका हूं। देवदूत बोला, आपने तीर्थयात्राएं तो कीं, लेकिन आप अपने इस कार्य की चर्चा हर व्यक्ति से करते रहे। इसके कारण आपके सारे पुण्य नष्ट हो गए। संत को भारी ग्लानि हुई। फिर कुछ हिम्मत कर उन्होंने कहा, मैं प्रतिदिन भगवान का ध्यान और उनके नाम का स्मरण करता था। देवदूत ने कहा, जब आप ध्यान करते और कोई दूसरा व्यक्ति वहां आता, तो आप कुछ अधिक समय तक जप-ध्यान में बैठते थे। चलिए कोई और पुण्य कार्य बताइए। संत को लगा कि उनकी अब तक की सारी तपस्या बेकार चली गई। उनकी आंखों से पश्चाताप के आंसू बह निकले। इतने में उनकी नींद खुल गई। वह स्वप्न का संदेश समझ गए। वह समझ गए कि उन्हें अपनी साधना पर गर्व हो गया था। वे अपने त्यागमय जीवन के बदले दूसरों से कुछ अपेक्षाएं रखने लगे थे। उस दिन से उन्होंने स्वयं को बदलने का फैसला किया और सहज होकर साधना करने लगे।

३२३) एक पर ध्यान दो - एक आदमी को किसी ने सुझाव दिया कि दूर से पानी लाते हो, क्यों नही अपने घर के पास कुआं खोद लेते? हमेशा के लिए पानी की समस्या से छुटकारा मिल जाएगा।

सलाह मानकर उस आदमी ने कुआं खोदना शुरू किया, लेकिन सात-आठ फीट खोदने के बाद उसे पानी तो क्या, गीली मिट्टी का भी चिन्ह नहीं मिला। उसने वह जगह छोड़कर दूसरी जगह खुदाई शुरू की, लेकिन दस फीट खोदने के बाद भी उसमें पानी नहीं निकला। उसने तीसरी जगह कुआं खोदा, लेकिन निराशा ही हाथ लगी। इस क्रम में उसने आठ-दस फीट के दस कुएं खोद डाले, पानी नहीं मिला। वह निराश होकर उस आदमी के पास गया, जिसने कुआं खोदने की सलाह दी थी। उसे बताया कि मैंने दस कुएं खोद डाले, पानी एक में भी नहीं निकला।

उस व्यक्ति को आश्चर्य हुआ। वह स्वयं चलकर उस स्थान पर आया, जहां उसने दस गड्ढे खोद रखे थे। उनकी गहराई देखकर वह समझ गया। बोला, दस कुआं खोदने की बजाय एक कुएं में ही तुम अपना सारा परिश्रम और पुरुषार्थ लगाते तो पानी कब का मिल गया होता। तुम सब गड्ढों को बंद कर दो, केवल एक को गहरा करते जाओ, पानी निकल आएगा।

कहने का मतलब यही कि आज की स्थिति यही है। आदमी हर काम फटाफट करना चाहता है। किसी के पास धैर्य नहीं है। इसी तरह पचासों योजनाएं एक साथ चलाता है और पूरी एक भी नहीं हो पातीं।

३२४) अद्भुत सवालों के गजब जवाब - बहुत समय पहले की बात है। सारंगल के प्रतापी राजा की आसपास के राज्यों में तूती बोलती थी। एक बार एक युवक राजा के दरबार में रोजगार की आशा लेकर आया और भरी सभा में निडर होकर खुद को मंत्री बनाए जाने की बात रखी। राजा को मन ही मन उसकी हिम्मत देखकर बहुत आश्चर्य हुआ उसने युवक से कहा तुम मेरे तीन प्रश्नों का उत्तर दो अगर तुमने सही उत्तर दिए तो तुम मेरे मंत्री बनोगे। युवक ने बात मान ली। राजा ने प्रश्न पूछना शुरू किया-

वह क्या है जो तुम यहां देते हो उसका फल तुम्हें यही मिल जाता है?

वह क्या है जो तुम देते हो लेकिन उसका फल तुम्हें परलोक में मिलता है?

वह क्या है जो तुम यहां देते हो लेकिन उसका फल न यहां मिलता है और न परलोक में?

युवक ने कहा- राजन। आप मुझे पचहत्तर हजार रुपए दीजिए और एक हफ्ते का समय दीजिए। मैं तीनों प्रश्नों का उत्तर दे दूंगा। राजा ने उस पर विश्वास किया और उसे पचहत्तर हजार रुपए दे दिए। एक हफ्ते प्रतीक्षा करने के बाद युवक वापस आया और उसने राजा से कहा हे राजन। जो धन आपने मुझे दिया था उसमें से पच्चीस हजार मैंने आपके बैंक खाते में डाल दिए हैं। जब भी आप चाहें ब्याज समेत अपना पैसा वापस ले सकते हैं। जो आपने यहां दिया उसका फल आपको यहीं मिल जाएगा। यह आपके पहले प्रश्न का उत्तर है।

पच्चीस हजार रुपऐ मैंने जरूरतमंद और गरीबों के खाने और कपड़े के लिए खर्च कर दिए। इस पुण्य का फल आपको परलोक में मिलेगा। और ये आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर है। बाकी के पच्चीस हजार मैंने शराब, शबाब, नाच गाने जैसी व्यर्थ की चीजों पर लुटा दिए। इन सबका फल न तो आपको यहां मिलेगा और न ही परलोक में। ये आपके तीसरे प्रश्न का उत्तर है। युवक ने राजा से कहा- हे राजन। आशा है आपको अपने तीनों प्रश्नों के उत्तर मिल गए होंगे। राजा मुस्कुराया

और उसने युवक को अपना मंत्री नियुक्त कर दिया।

३२५) डॉ. सी.वी. रमण विलक्षण प्रतिभा के धनी थे - डॉ. सी.वी. रमन एक ऐसे इंसान थे जिनमें विलक्षण प्रतिभा थी। जब वह मात्र ११ वर्ष के थे तब उन्होंने अपनी दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की। १५ वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी पहली उपाधि हासिल की। साथ ही भौतिकीय और अंग्रेजी में सुवर्णपदक भी प्राप्त किए। जब वह १९ के हुए तो उन्होंने अपनी एम.ए. पास की। कॉलेज के प्रोफेसर उन्हें विज्ञान की कक्षा न लगाने की अनुमति दे देते थे क्योंकि वे जानते थे कि रमन को इनकी जरूरत ही नहीं। इसके अलावा और अधिक बुद्धिमान बनने के लिए रमण हमेशा अपने आस-पास की दुनिया को जानते हैं कि किस प्रकार उनकी समुद्र के रंगों के प्रति उत्सुकता से ही रमण इफैक्ट की खोज हुई। इसी तरह उनकी इसी उत्सुकता ने वैज्ञानिक कार्यों को और अधिक बढ़ाया। १९२१ में वह इंग्लैंड दौरे पर गए जहां उन्हें सेंट पॉल कैथेड्रल ले जाया गया। वह इस कैथेड्रल को देखकर इतने उत्तेजित हुए कि उन्होंने इस पर कई शोध पत्र लिख दिए।

बचपन में रमण अक्सर अपने पिता को वायलिन बजाते हुए देखते थे। उनकी ज्यादतर शोध संगीत के पीछे छिपे विज्ञान पर थी। उन्होंने और भी कई खोजें कीं जैसे क्रिस्टल की बनावट और लाइट पर ध्वनि का प्रभाव आदि। उनका क्रिस्टल्स का संग्रह रमन इंस्टीट्यूट ऑफ बंगलुरु में सुरक्षित रखा गया है।

३२६) पेंटिंग करने की शर्त - जैसे ही सौरव के छमाही परीक्षा फल पर उसके अब्बू की नजर पड़ी, उनका मूड खराब हो गया। सौरभ दो विषयों में फेल था। वाकई यह बहुत बड़ी बात थी? उनका मन हुआ कि सौरभ की पिटाई कर दें। खैरियत थी कि सौरव उस समय वहां मौजूद नहीं था। मुझे तो पहले से ही इस लड़के के रंग-ढंग सही नहीं दिख रहे थे। उन्होंने सौरभ की अम्मी से कहा। जब देखो, तब पेंटिंग... पेंटिंग। इसके आगे पढ़ाई-लिखाई सब गोल। आने दो आज उसे.. अरे, किसे डांट रहे हो भाई? यह स्वर वर्माजी का था, जो सौरव के अध्यापक थे और उसी समय वहां आ गये थे। आइये वर्माजी, ये देखिए अपने शिष्य का कारनामा। उनकी तरफ परीक्षाफल बढ़ाते हुए अब्बू बोले, दो विषयों में फेल हैं जनाब। तभी सौरव भी वहां आ गया। वर्मा सर को नमस्ते करके वह अंदर कमरे में चला गया।

कुर्सी पर बैठते हुए वर्मा जी बोले, मैंने इसके दोस्तों से सारी बात पता की है, अगर सही मायनों में देखा जाये, तो इसमें आपकी ही ज्यादती है। मेरी ज्यादती? सौरव के अब्बू चौंके। हां, क्योंकि आपने उसकी भावनाओं को ठीक ढंग से समझा ही नहीं। सो कैसे? देखिए, यह तो आप जानते ही हैं कि सौरव बहुत अच्छे चित्र बनाता है। हां, वो तो है। कहते हुए उन्हें वह दिन याद आ गया जब शाम को दफ्तर से लौटने पर उन्हें वह समाचार लिखा था, तो वे बहुत खुश हुए थे। लेकिन जब उन्हें यह मालूम चला था कि इसके लिए सौरव ने अभ्यास में कितने घंटे खपाए हैं, तो वे बहुत नाराज हुए थे। सौरव के अब्बू के चेहरे को पढ़ते हुए वर्मा जी ने बात आगे बढ़ाई, पर आपने उसकी प्रशंसा में तो दो शब्द कहने तो दूर, उसे बेकार में डांटा। इससे उसकी भावनाएं कुंठित हो गयीं। पहले तो वह सिर्फ खाली समय में चित्र बनाता था, लेकिन जब आपने उसके सम्मान को ठेस पहुंचाई, तो वह चोरी-छुपे पढ़ने के समय में भी चित्रों को बनाने लगा। दरअसल, किसी बालक का यह स्वभाव होता है कि जिस काम को करने से उसे रोका जाये, वह उसी काम को करता है।

ऐसा करके वह दिखाना चाहता है कि उसका भी कोई व्यक्तित्व है। यदि आप उसे डांटने फटकारने के बजाये उसकी

सराहना करते और उसे प्यार से समझाते, तो शायद यह दिन कभी न देखना पड़ता। अब्बू उनसे सहमति दिखा रहे थे। तभी वहां सौरव आया। उसका हाथ थाम कर अब्बू बोले- देखो बेटा, जो कुछ हुआ, उसे तुम भूल जाओ। मुझे तुम्हारे चित्र बहुत पसंद हैं। कल ही मैं तुम्हारे लिए पेंटिंग का सामान ला दूंगा। पर एक शर्त है कि पहले पढ़ाई, फिर चित्रकारी। सौरव ने उनकी शर्त मान ली।

३२७) प्यार का फल - राजा संपत सिंह के मन में कई दिनों से एक सवाल उमड़ घुमड़ रहा था। आखिर एक दिन उन्होंने अपने मंत्री से पूछ ही लिया- दीवान जी, मैं बचपन से देख रहा हूं कि हमारे राज्य में कुत्ते बहुत पैदा होते हैं। एक कुतिया एक बार में सात-आठ बच्चों को जन्म दे देती है। भेड़ें इससे कम बच्चों को जन्म देती हैं। फिर भी भेड़ों के तो झुंड दिखाई देते हैं, परंतु कुत्ते दो चार ही दिखाई देते हैं। इसका क्या कारण है?

मंत्री बहुत समझदार था। उसने कहा- महाराज, इस सवाल का उत्तर मैं आपको कल दूंगा। उसी दिन शाम को मंत्री राजा को अपने साथ लेकर एक स्टोर में गया। वहां उसने राजा के सामने एक कोठे में बीस भेड़ें बंद करवा दी। भेड़ों के बीच में चारे का एक टोकरा रखवा कर कोठा बंद करवा दिया। ऐसे ही उसने एक दूसरे कोठे में बीस कुत्ते बंद करवा दिए। कुत्तों के बीच रोटियों से भरी एक टोकरी रखवा दी। अगली सुबह मंत्री राजा को लेकर उन कोठों की ओर गया। उसने पहले कुत्तों वाला कोठा खुलवाया। राजा ने देखा कि कुत्ते आपस में लड़ कर जख्मी हुए पड़े थे। टोकरी की रोटियां जमीन पर बिखरी पड़ी थीं। कोई भी कुत्ता एक भी रोटी नहीं खा सका था। फिर मंत्री ने भेड़ों वाला कोठा खुलवाया। राजा ने देखा, सभी भेड़ें एक-दूसरे के गले लगी बड़े आराम से सो रहीं थीं। चारे की टोकरी बिल्कुल खाली पड़ी थी। तब मंत्री ने राजा से कहा- महाराज, आपने देखा कि कुत्ते आपस में लड़लड़ कर जख्मी हो गए। वे एक भी रोटी नहीं खा सके। परन्तु भेड़ों ने बहुत प्यार से चारा खाया और एक-दूसरे के गले लग कर सो गईं। यही कारण है कि भेड़ों की संख्या बढ़ती जाती है और वे एक साथ रह सकती हैं। लेकिन कुत्ते एक-दूसरे को सहन नहीं कर पाते। जिस बिरादरी में आपस में इतनी घृणा हो, वह कैसे तरक्की कर सकती है? राजा को अपने सवाल का उत्तर मिल गया था।

३२८) सत्संग - एक राजा बड़ा सनकी था। एक बार सूर्यग्रहण हुआ तो उसने ज्योतिषी से पूछा, सूर्यग्रहण क्यों होता है? ज्योतिषी बोले- राहू के सूर्य को ग्रसने से।

राहू क्यों और कैसे ग्रसता है? बाद में सूर्य कैसे छूटता है?

जब उसे इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर नहीं मिले तो उसने आदेश दिया, हम खुद सूर्य तक पहुंचकर सच्चाई पता करेंगे। एक हजार घोड़े और घुड़सवार तैयार किए जाएं। राजा की इस बिना सिर-पैर की बात का विरोध कौन करे? उसका वफादार मंत्री भी चिंतित हुआ। मंत्री का बेटा था वज्रसुमन। उसे छोटी उम्र में ही सारस्वत्य मंत्र मिल गया था, जिसका वह नित्य श्रद्धापूर्वक जप करता था। गुरुकुल से मिले संस्कारों, मौन व एकांत के अवलंबन से तथा नित्य ईश्वरोपासना से उसकी बुद्धि इतनी सूक्ष्म हो गई थी मानो दूसरा बीरबल हो। वज्रसुमन को जब पिता की चिंता का कारण पता चला तो उसने कहा, पिताजी। मैं भी आपके साथ यात्रा पर चलूंगा।

पिता, बेटा। राजा की आज्ञा नहीं है। तू अभी छोटा है।

नहीं पिताजी। पुरुषार्थ एवं विवेक उम्र के मोहताज नहीं हैं। मुसीबतों का सामना बुद्धि से किया जाता है, उम्र से नहीं। मैं राजा को आनेवाली विपदा से बचाकर ऐसी सीख दूंगा जिससे वह दोबारा कभी ऐसी सनकभरी आज्ञा नहीं देगा। मंत्री ने कहा, अच्छा ठीक है, पर जब सभी आगे निकल जाएं, तब तू धीरे से पीछे-पीछे आना। राजा सैनिकों के साथ निकल पड़ा। चलते-चलते काफिला एक घने जंगल में फंस गया। तीन दिन बीत गए। भूखे-प्यासे सैनिकों और राजा को अब मौत्त सामने दिखने लगी। हताश होकर राजा ने कहा, सौ गुनाह माफ हैं, किसी के पास कोई उपाय हो तो बताओ।

मंत्री, महाराज। इस काफिले में मेरा बेटा भी है। उसके पास इस समस्या का हल है। आपकी आज्ञा हो तो।

हां-हां, तुरंत बुलाओ उसे। वज्रसुमन बोला, महाराज। मुझे पहले से पता था कि हम लोग रास्ता भटक जाएंगे इसीलिए मैं अपनी प्रिय घोड़ी को साथ लाया हूं। इसका दूध-पीता बच्चा घर पर है। जैसे ही मैं इसे लगाम से मुक्त करूंगा, वैसे ही यह सीधे अपने बच्चे से मिलने के लिए भागेगी और हमें रास्ता मिल जाएगा। ऐसा ही हुआ और सब लोग सकुशल राज्य में पहुंच गए। राजा ने पूछा, वज्रसुमन। तुमको कैसे पता था कि हम राह भटक जाएंगे और घोड़ी को रास्ता पता है? यह युक्ति तुम्हें कैसे सूझी?

राजन्। सूर्य हमसे करोड़ों कोस दूर है और कोई भी रास्ता सूरज तक नहीं जाता। अत: कहीं न कहीं फंसना स्वाभाविक था। दूसरा पशुओं को परमात्मा ने यह योग्यता दी है कि वे कैसी भी अनजान राह में हो, उन्हें अपने घर का रास्ता ज्ञात होता है। यह मैंने सत्संग में सुना था। तीसरा, समस्या बाहर होती है, समाधान भीतर होता है। जहां बड़ी-बड़ी बुद्धियां काम करना बंद करती हैं वहां गुरु का ज्ञान, ध्यान और सुमिरन राह दिखाता है। आप बुरा न मानें तो एक बात कहूं?

नि:संकोच कहो। यदि आप ब्रह्मज्ञानी संतों का सत्संग सुनते, उनके मार्गदर्शन में चलते तो ऐसा कदम कभी नही उठाते। अगर राजा सत्संगी होगा तो प्रजा भी उसका अनुसरण करेगी और उन्नत होगी, जिससे राज्य में सुख-शांति और समृद्धि बढ़ेगीं राजा उसकी बातों से बहुत प्रभावित हुआ, बोला, मैं तुम्हें एक हजार स्वर्ण मोहरें पुरस्कार में देता हूं और आज से अपना सलाहकार मंत्री नियुक्त करता हूं। अब मैं भी तुम्हारे गुरुजी के सत्संग में जाऊंगा, उनकी शिक्षा को जीवन में लाऊंगा। इस प्रकार एक सत्संगी किशोर की सूझबूझ के कारण पूरे राज्य में अमन-चैन और खुशहाली छा गई।

३२९) एक चाकू से भी ले सकते हैं सीख - जब एक शिष्य को किसी धर्मसभा में बोलने के लिए आमंत्रित किया गया। तब यात्रा पर जाने से पूर्व वह अपने गुरु की धर्मपत्नी से आशीर्वाद लेने गए। चरण स्पर्श के पश्चात गुरु मां से वह बोला, मुझे संस्कृति पर बोलने के लिए आमंत्रण मिला है। मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। गुरु मां ने कहा, आशीर्वाद के लिए कल आना। मैं पहले देखूंगी कि तुममें पात्रता है भी या नहीं? शिष्य चला गया और दूसरे दिन फिर उनके पास आया। गुरु मां रसोई में थीं। आशीर्वाद की बात पर गुरु मां ने कहा, पहले तुम मुझे वह चाकू उठाकर दो, मुझे सब्जी काटनी है। शिष्य ने चाकू गुरु मां की ओर बढ़ाया। चाकू लेते हुए ही गुरु मां ने बहुत सारी नेक बातें बताईं और कहा, अब मेरा आशीर्वाद तुम्हारे पास है। शिष्य को यह पूरा घटनाक्रम समझ में नहीं आया। शिष्य ने पूछा आपने आशीर्वाद देने से पहले मुझसे चाकू क्यों उठवाया था। तब गुरु मां बोलीं, तुम्हारा मन देखने के लिए। गुरु मां ने कहा, जब तुमने चाकू दिया तो धार वाला हिस्सा अपनी तरफ रखा और सुरक्षित हिस्सा मुझे दिया। संत वह है जो दूसरों की आपदा को दूर कर स्वयं आपदा में जीते हुए लोगों का कल्याण करे।

३३०) कुल का परिचय देता है व्यवहार - एक राजा के दरबार में एक अनजान व्यक्ति नौकरी के लिए पहुंचा। राजा ने उसे घोड़ों के अस्तबल का प्रभारी बना दिया गया। कुछ दिनों बाद राजा ने उससे अपने सबसे महंगे और प्रिय घोड़े के बारे में पूछा। उसने कहा, अच्छी नस्ल का नहीं है। राजा को आश्चर्य हुआ, उसने जंगल से घोड़े की जानकार वालों को बुलाकर जांच कराई तो पता लगा कि घोड़ा वाकई अच्छी नस्ल का नहीं था लेकिन इसके जन्म पर इसकी मां मर गई थी और ये एक गाय का दूध पीकर उसके साथ पला-बढ़ा है। राजा ने उस व्यक्ति से पूछा, उसे कैसे पता चला कि घोड़ा अच्छी नस्ल का नहीं है? उसने कहा, जब ये घास खाता है तो गायों की तरह सिर नीचे करके जबकि अच्छी नस्ल का घोड़ा घास मुंह में लेकर सिर उठा लेता है। राजा उसकी परख से खुश हुआ और उस व्यक्ति को अनाज, गाय, घी आदि पुरस्कार स्वरूप दिए। साथ ही उसे महल में तैनात कर दिया। कुछ दिनों बाद, राजा ने उससे रानी के बारे में राय मांगी तो उसने कहा कि तौर-तरीके से तो रानी जैसी हैं लेकिन राजकुमारी नहीं हैं। राजा ने अपनी सास को बुला भेजा। सास के आने पर राजा ने सारी बातें उन्हें बताईं। सास बोलीं- ये सत्य है। बताया कि उनकी पुत्री जन्म के छह माह बाद ही मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। इसके बाद उन्होंने किसी और की बच्चों को गोद लिया और राजकुमारी की ही तरह पाला। राजा ने उस विदूषक से पूछा कि उसे कैसे जानकारी हुई। उसने कहा, उसका नौकरों के साथ व्यवहार मूर्खों से भी निम्न है। एक कुलीन व्यक्ति का दूसरों से व्यवहार करने का एक शिष्टाचार होता है, जो रानी में बिल्कुल नहीं है। राजा फिर उसकी परख से खुश हुआ और पुरस्कार के रूप में ढेरों बकरियां, भेड़, अनाज, घी आदि वस्तुएं दीं। साथ ही उसे अपने दरबार में शामिल कर लिया। कुछ समय बीता, राजा ने विदूषक से स्वयं के बारे में जानकारी चाही। विदूषक ने कहा, अगर उसे अभयदान मिले तो ही वह सत्य बताएगा। राजा ने वचन दिया, उसने कहा, न तो आप राजा के पुत्र हो, न आपका व्यवहार राजाओं वाला है। राजा सीधे अपनी मां के महल पहुंचा। मां ने कहा, ये सच है कि तुम एक ग्वाले के बेटे हो, हमारे पुत्र न होने के कारण हमने तुम्हें गोद लिया था। राजा ने विदूषक से पूछा कि उसे कैसे पता चला तो उसने कहा, राजा जब किसी को इनाम देते हैं तो हीरे, मोती, जवाहरात आदि देते हैं लेकिन आप भेड़, बकरियां, खाने-पीने की चीजें देते हैं। ये चलन राजा के पुत्र का नहीं हो सकता। महाराज, इंसान की असलियत उसके खून की किस्म, उसके व्यवहार, उसकी नियत से ज्ञात हो जाती है।

३३१) विपदा के साथी - एक बार एक देश में यह निर्णय लिया गया कि वृद्ध किसी काम के नहीं होते, अकसर बीमार रहते हैं और वे अपनी उम्र जी चुके होते हैं अत: उन्हें मृत्यु दे दी जानी चाहिए। देश का राजा भी जवान था, तो उसने यह आदेश देने में देरी नहीं कि कि ५० वर्ष से ऊपर की उम्र के लोगों को खत्म कर दिया जाए और इस तरह से सभी अनुभवी, बुद्धिमान बड़े-बूढ़ों से वह देश खाली हो गया। उनमें एक जवान व्यक्ति था जो अपने पिता से बेहद प्रेम करता था। उसने अपने पिता को अपने घर के एक अंधेरे कोने में छुपा लिया और उसे बचा लिया।

कुछ साल के बाद उस देश में भीषण अकाल पड़ा और जनता दाने-दाने को मोहताज हो गई। बर्फ के पिघलने का समय आ गया था, परंतु देश में बुआई के लिए एक दाना भी नहीं था। सभी परेशान थे। अपने बच्चे की परेशानी देखकर उस वृद्ध ने, जिसे बचा लिया गया था, अपने बच्चे से कहा कि वो सड़क के किनारे-किनारे दोनों तरफ जहां तक बन पड़े, हल चला ले। उस युवक ने बहुतों को इस काम के लिए कहा, परंतु किसी ने सुना, किसी ने नहीं। उसने स्वयं जितना बन

पड़ा, सड़क के दोनों ओर हल चला दिए। थोड़े ही दिनों में बर्फ पिघली और सड़क के किनारे किनारे जहां-जहां हल चलाया गया था, अनाज के पौधे उग आए। लोगों में यह बात चर्चा का विषय बन गई। बात राजा तक पहुंची। राजा ने उस युवक को बुलाया और पूछा कि ये विचार उसे आखिर आया कहां से? युवक ने सच्ची बात बता दी।

राजा ने उस वृद्ध को तलब किया कि उसे यह कैसे विचार आया कि सड़क के किनारे हल चलाने से अनाज के पौधे उग आएंगे? उस वृद्ध ने जवाब दिया कि जब लोग अपने खेतों से अनाज घर को ले जाते हैं तो बहुत सारे बीज सड़कों के किनारे गिर जाते हैं। उन्हीं का अंकुरण हुआ है। राजा प्रभावित हुआ और उसे अपने किए पर पछतावा हुआ। राजा ने अब आदेश जारी किया कि आगे से वृद्धों को ससम्मान देश में पनाह दी जाती रहेगी। विपदा के समय बुजुर्गों का कहा मानना चाहिए।

३३२) दान की महिमा - एक भिखारी सुबह-सुबह भीख मांगने निकला। चलते समय उसने अपनी झोली में जौ के मुट्ठी भर दाने डाल लिए, इस अंधविश्वास के कारण कि भिक्षाटन के लिए निकलते समय भिखारी अपनी झोली खाली नहीं रखते। थैला देखकर दूसरों को भी लगता है कि इसे पहले से ही किसी ने कुछ दे रखा है। पूर्णिमा का दिन था। भिखारी सोच रहा था कि आज अगर ईश्वर की कृपा होगी तो मेरी यह झोली शाम से पहले ही भर जाएगी। अचानक सामने से राजपथ पर उसी देश के राजा की सवारी आती हुई दिखाई दी। भिखारी खुश हो गया। उसने सोचा कि राजा के दर्शन और उनसे मिलने वाले दान से आज तो उसकी सारी दरिद्रता दूर हो जाएगी और उसका जीवन संवर जाएगा। जैसे जैसे राजा की सवारी निकट आती गई, भिखारी की कल्पना और उत्तेजना भी बढ़ती गई। जैसे ही राजा का रथ भिखारी के निकट आया, राजा ने अपना रथ रुकवाया और उतर कर उसके निकट पहुंचे। भिखारी की तो मानो सांसें ही रुकने लगीं, लेकिन राजा ने उसे कुछ देने के बदले उल्टे अपनी बहुमूल्य चादर उसके सामने फैला दी और उससे भीख की याचना करने लगा। भिखारी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अभी वह सोच ही रहा था कि राजा ने पुन: याचना की। भिखारी ने अपनी झोली में हाथ डाला, मगर हमेशा दूसरों से लेनेवाला मन देने को राजी नहीं हो रहा था। जैसे-तैसे करके उसने दो दाने जौ के निकाले और राजा की चादर में डाल दिए। उस दिन हालांकि भिखारी को अधिक भीख मिली, लेकिन अपनी झोली में से दो दाने जौ के देने का मलाल उसे सारा दिन रहा। शाम को जब उसने अपनी झोली पलटी तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। जो जौ वह अपने साथ झोली में ले गया था, उसके दो दाने सोने के हो गए थे। अब उसे समझ में आया कि यह दान की महिमा के कारण ही हुआ। वह पछताया कि काश। उस समय उसने राजा को और जौ दिए होते लेकिन दे नहीं सका, क्योंकि उसकी देने की आदत जो नहीं थी। देने से कोई चीज कभी घटती नहीं। लेनेवाले से देनेवाला बड़ा होता है।

३३३) गन्ने की पहचान - यह घटना उस समय की है जब सिकंदर भारत में था। वह यहां घूमता रहता था और यहां के बारे में जानने की कोशिश करता था। एक दिन उसने देखा कि खेतों में दूर-दूर तक लंबी-लंबी लकड़ियों जैसे पौधे लगे हुए हैं। उसने ऐसे खेत आज तक नहीं देखे थे। फिर उसने देखा कि एक किसान उन लकड़ियों को तोड़ रहा है और फिर उन्हें चूस भी रहा है। किसान के चेहरे पर खुशी थी। यह देखकर सिकंदर बड़ा आश्चर्यचकित हुआ। उसने उस किसान को अपने पास बुलाया और बोला, भइया, आखिर इन लकड़ियों में ऐसी क्या बात है जो इन्हें तोड़कर तुम चूस रहे हो। सिकंदर की बात सुनकर किसान मुस्कराते हुए बोला, लगता है तुमने कभी गन्ना नहीं चूसा। इसके बाद किसान

ने अपने खेत से एक गन्ना तोड़ा, छीला और उसे चूसने के लिए सिकंदर को दिया। सिकंदर ने गन्ना लिया और मुंह से लगाया। शुरू में तो उसे बहुत अजीब सा लगा लेकिन जैसे-जैसे वह गन्ने का रस चूसता रहा, वैसे-वैसे वह एक असीम आनंद में डूबता गया। गन्ने का स्वाद लेने के बाद उसने किसान को एक बड़ा सा उपहार दिया और बोला, भई वाह, वाकई यह गन्ने का स्वाद तो बड़ा आनंद देनेवाला है। आप मुझे यह बताएं कि इसका पौधा कैसे लगाया जाता है? आखिर इस गन्ने को उगाया कैसे जाता है? किसान ने उसे सब कुछ विस्तार से बता दिया और कुछ गन्ने भी दिए। गन्ने लेकर सिकंदर अपने साथियों के पास लौटा और उन्हें सारी बातें बताईं। उसके साथियों ने भी गन्ना चखा तो उन्हें उसका स्वाद बहुत अच्छा लगा। जब सिकंदर भारत से लौटा तो ढेर सारे गन्ने भी अपने साथ यूनान ले गया। इस प्रकार यूनान में भी गन्ने की खेती शुरू हुई।

३३४) जीने की तमन्ना बढ़ जाती है मौत से मुलाकात के बाद - एक लकड़हारा सत्तर साल का था। लकड़ियां ढोते-ढोते जिंदगी बीती जा रही थी। कई बार सोचा कि मर क्यों न जाऊं। कई बार परमात्मा से प्रार्थना की, हे प्रभु, मेरी मौत क्यों नहीं भेज देता। सार क्या है इस जीवन में। रोज लकड़ी काटना, उन्हें उठाना और बेचना, थक गया हूं। इतनी मेहनत के बाद मिलता भी क्या है? एक जून की रोटी मिल जाए तो बहुत। कभी-कभी दिन उपवास में काटना पड़ता है। बूढ़ा भी हो गया हूं। कभी बीमार हो जाता हूं। ये भी कोई जिंदगी है।

एक दिन वह लौट रहा था, खांसता खंखारता अपने गट्ठर को लिए। अचानक उसे लगा कि अब बिल्कुल व्यर्थ है जीना, मैं सब ये क्यों ढो रहा हूं। उसने गट्ठर नीचे पटक दिया, आकाश की तरफ हाथ जोड़कर कहा कि मृत्यु, तू सबको आती है और मुझे ही नहीं आती। हे यमदूत, मुझे क्या भूल गए हो, उठा लो अब।

संयोग ही है, ऐसा बहुत कम होता है। यमदूत वहां से गुजर रहे थे। किसी को लेने जा रहे थे- सोचा कि बड़े हृदय से कातर होकर पुकार रहा है, मुझे जाना ही चाहिए। यमदूत ने लकड़हारे के कंधे पर हाथ रखा और बेाला- क्या भाई, क्या काम है? लकड़हाने ने देखा कि मौत सामने खड़ी है। प्राण कांप गए। कई दफे जिंदगी में बुलायी थी मौत-बुलाने का एक मजा है, जब तक न आए। अब मौत सामने खड़ी थी तो प्राण कांप गए। भूल ही गया मरनेवाली बातें। लकड़हारे ने कहा, कुछ नहीं। हुआ ये कि मेरा यह लकड़ी का गट्ठर नीचे गिर गया है। यहां कोई उठानेवाला नहीं दिखा, इसलिए आपको बुलाया है। जरा उठा दें। और नमस्कार, कोई आने की जरूरत नहीं है। ऐसे तो मैं जिंदगीभर कहता रहा हूं, लेकिन मुझे मरना नहीं है। बस मेरा यह गट्ठर उठाकर मेरे सिर पर रख दें।

लकड़हारा जिस गट्ठर से परेशान था, उसी को यमदूत से उठवाकर सिर पर रख लिया। उस दिन लकड़हारे की पुलक देखते ही बन रही थी। जब वह घर की तरफ आया तो पहले से जवान बन चुका था। बड़ा प्रसन्न था कि बच गए मौत से। मौत के क्षण में जिजीविषा और तेज हो जाती है। एक बार मौत से सामना होने के बाद जिंदगी का मकसद और जिंदगी जीने की वजहें खुद-ब-खुद दिखने लगती हैं।

३३५) राजकुमारी की विदाई - रतनगढ़ में खूब खुशियां मनाई जा रही थी। दो दिन बाद वहां की राजकुमारी का विवाह होनेवाला था। राजा गजपाल सिंह और रानी मधुवती खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। राजकुमारी का विवाह छबीलपुर राज्य

के राजा नागेंद्रपाल सिंह के पुत्र अर्जुनपाल सिंह से तय हुआ था। निश्चित समय पर विधि-विधान से विवाह संपन्न हो गया। विदाई का समय आ गया। राजकुमारी ने सबसे विदा ली। सखियों ने उन्हें हाथी सुमेरु पर बिठाया।

राजा गजपाल सिंह ने बारात को विदा किया। आगे घोड़े थे, उनके पीछे हाथी। महावतों ने हाथियों को उठने का आदेश दिया। सभी हाथी उठ गए पर राजकुमारी का हाथी बैठा रहा।

राजा नागेंद्रपाल सिंह ने महावत से कहा- महावीर, सुमेरू हाथी को क्या हुआ? उठ क्यों नहीं रहा है?

पता नहीं महाराज, यह तो कभी ऐसा नहीं करता। सभी हाथियों में यह सबसे अधिक आज्ञाकारी है। कभी ना नुकुर नहीं करता। महावत ने सुमेरू को उठाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह टस से मस न हुआ।

राजा नागेंद्रपाल ने आदेश दिया- दूसरा हाथी लाओ। जरा ठहरिए महाराज। राजकुमारी सुनयना ने कहा। वे हौदे से उतरीं। सुमेरु के पास गई और उसके कान में कुछ कहा फिर वापस हौदे में बैठ गई।

कुछ पल बाद सुमेरु उठ गया। सभी लोग आश्चर्यचकित थे। सबके मन में एक ही प्रश्न उठ रहा था कि आखिर राजकुमारी ने सुमेरू से ऐसा क्या कह दिया कि वह खड़ा हो गया। वह तो राजकुमारी को जानता तक नहीं था। महावत तक तो सुमेरू को उठा नहीं सका। लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। लगता है जादू-टोना जानती है। जादूगरनी है। मायावी है। जानवरों की भाषा जानती है। कान में कोई मंत्र-वंत्र फूक दिया। तंत्र विद्या जानती है। तभी किसी बाराती ने कहा राज्य में अपशकुन करेगी। महाराज को विदा नहीं करना चाहिए।

राजा नागेंद्रपाल भी हैरान थे। लोगों की बातें उन्हें भी सुनाई पड़ रही थी। उन्हें भी राजकुमारी के चरित्र पर संदेह होने लगा। कहीं राजकुमारी वाकई जादूगरनी तो नहीं? ऐसी बहू राज्य के लिए कोई मुसीबत न ले आए? राजा अपने मंत्री पूर्णचंद्र से सलाह करने लगे। इतने में रतनगढ़ के राजपुरोहित ने राजा गजपाल सिंह से कहा- राजन्, विदाई की रस्म कीजिए वर्ना शुभ घड़ी निकल जाएगी।

तभी राजा नागेंद्रपाल की कड़कती हुई आवाज सुनाई पड़ी- विदाई अभी बात करना चाहता हूं।

क्षमा कीजिए महाराज। आप अनुमति दें तो मैं आपसे कुछ कहना चाहूंगी। राजकुमारी सुनयना ने विनम्रता से कहा। महाराज, सब लोग जो कह रहे हैं वह गलत है। न तो मैं जादूगरनी हूं न ही तंत्र विद्या जानती हूं। हां सुमेरु को अवश्य जानती हूं। पर कैसे? आप तो इससे पहले कभी मिलीं नहीं।

दरअसल मैं इसे पिछले जन्म से जानती हूं। तब हम दोनों मेढ़क-मेढ़की थे और पति-पत्नी थे। मैं दीन-दुखियों की मदद करती थी। उन्हें दान-दक्षिणा देती थी। भूखों को खाना खिलाती थी। प्यासों को पानी पिलाती थी। बीमारों की सेवा करती थभ। मुझसे जो बन पड़ता उतना औरों के लिए करती। राजकुमारी की बात सुनकर सभी दंग थे। मैं सुमेरू, जो मेरे पति थे, से भी सबकी मदद करने को कहती। लेकिन वे कभी किसी की मदद नहीं करते। लोगों से बुरा व्यवहार करते। किसी का आदर-सत्कार नहीं करते। घमंड में चूर रहते। मैं उनसे अक्सर कहती रहती कि अच्छे कर्म करोगे तो अच्छा फल मिलेगा। पर राजन्, इन्होंने मेरी एक न सुनी। अपने कर्मों के कारण मेरा जन्म राजा के घर हुआ और इन्हें हाथी का जन्म मिला। बड़ी विचित्र कहानी है। राजा नागेंद्रपाल ने कहा। महाराज, मैंने सुमेरू से बस यही कहा, अब पछताने से

क्या फायदा। तमाशा मत करो और उठो।

महाराज, राजकुमारी ठीक कह रही हैं। अपने कर्मों का फल तो भुगतना ही पड़ता है। अब विदा कराइए। वर्ना शुभ घड़ी बीत जाएगी। बाजे-गाजे बजने लगे। बारात खुशी-खुशी राजकुमारी को लेकर रवाना हो गई।

३३६) किसका कुआं, किसका पानी? - एक बार एक आदमी ने अपना कुआं एक किसान को बेच दिया। अगले दिन जब किसान ने कुएं से पानी खींचना शुरू किया, तो उस व्यक्ति ने किसान से पानी लेने के लिए मना कर दिया। उसके मन में बेइमानी आ गयी। वह बोला- मैंने तुम्हें केवल कुआं बेचा है न कि कुएं का पानी।

किसान बहुत दुखी हुआ और उसने अकबर के दरबार में गुहार लगायी। उसने दरबार में सब कुछ बताया और अकबर से इन्साफ मांगा।

अकबर ने यह समस्या बीरबल को हल करने के लिए दी। बीरबल ने उस व्यक्ति को बुलाया जिसने कुआं किसान को बेचा था। बीरबल ने पूछा- तुम किसान को कुएं से पानी क्यों नहीं लेने देते? आखिर तुमने कुआं किसान को बेचा है। उस व्यक्ति ने जवाब दिया- बीरबल, मैंने किसान को कुआं बेचा है ना कि कुएं का पानी। किसान का पानी पर कोई अधिकार नहीं है। बीरबल मुस्कुराया और बोला- बहुत खूब, लेकिन देखो, क्योंकि तुमने कुआं किसान को बेच दिया है, और तुम कहते हो कि पानी तुम्हारा है, तो तुम्हें अपना पानी किसान के कुएं में रखने का कोई अधिकार नहीं है। अब या तो अपना पानी किसान के कुएं से निकाल लो या फिर किसान को इसका किराया दो।

वह आदमी समझ गया कि बीरबल के सामने उसकी दाल नहीं गलनेवाली। उसने माफी मांग लेने में ही अपनी भलाई समझी। इस तरह उस बेइमान व्यक्ति को उसके गलत सोच का जवाब बीरबल ने अपनी सूझ-बूझ से दे दिया।

३३७) राजा का घोड़ा - एक बार राजा ने एक शर्त रखी कि जो कोई उसके घोड़े को जंगल में चराकर तृप्त करेगा वो उसे आधा राज्य दे देंगे। किंतु घोड़े का पेट पूरा भरा है या नहीं इसकी परीक्षा राजा खुद करेंगे। इस घोषणा को सुनकर एक आदमी घोड़े को लेकर चला गया। उसने घोड़े को दिनभर घास खिलाई और फिर सोचा की सारे दिन इसने इतनी घास खाई है अब तो इसका पेट भर गया होगा तो अब इसको राजा के पास ले चलूं। घोड़ा के साथ वह राजा के पास आया। राजा ने थोड़ी सी हरी घास घोड़े के सामने रखी तो घोड़ा उसे खाने लगा। इस पर राजा ने कहा, यह तो चरकर तृप्त हुआ ही नहीं? उसके बाद कई लोगों ने राजा की शर्त पूरी करने का प्रयत्न किया लेकिन कोई भी उसे पूरी नहीं कर पाया। फिर एक युवक आया और राजा से कहने लगा- महाराज, मैं आपकी शर्त पूरी करूंगा। वह घोड़े को लेकर गया। उसके सामने चारा डाला लेकिन जब भी घोड़ा चरने लगता युवक उसे डंडे से पीटने लगता। दिन में ऐसा कई बार हुआ। अंत में घोड़े ने सोचा यदि मैं घास खाने का प्रयत्न करूंगा तो मार खानी पड़ेगी। युवक राजा के पास आया। राजा ने घास डाली लेकिन उस घोड़े ने मारे डर के उस ओर देखा ही नहीं। राजा ने कहा, तुमने ये कैसे कर दिखाया? युवक बोला, महाराज यह घोड़ा नहीं है हमारा मन है, इस पर विवेक रूपी डंडे से अंकुश रखना आवश्यक है।

३३८) पड़ोसी की सलाह - विधवा कमला देवी अपनी दो पुत्रियों के साथ बड़ी गरीबी में दिन बिता रही थी। अब तक जो भी जमा-पूँजी उसके पास थी, सब खर्च हो चुकी थी। तिस पर आय का एकमात्र सहारा उसकी गाय भी मर

गई। वह बड़ी परेशान थी। आखिर करे क्या? बस, एक ही रास्ता है, अगर भगवान हमें कहीं से एक गाय दे दे। विश्वास और हिम्मत से काम करो, ईश्वर अवश्य तुम्हारी मदद करेगा। उनके पड़ोसी ने उनसे कहा। पर हम करें क्या? कमला देवी ने निराशा से भरकर कहा। तुम अपनी आमदनी बढ़ाओ। तुम सब बहुत अच्छी कढ़ाई-बुनाई जानती हो। प्रतिदिन तीन-चार घंटा यह काम अतिरिक्त करो, ताकि कुछ ऊपरी आमदनी हो सके। उसे जमा करो। दूसरी बात यह कि अपनी चाय का खर्चा कम कर दो। रोज सुबह दलिया बनाकर उसका पानी पियो जो स्वास्थ्यवर्धक भी होगा और बचत भरा भी। इसी तरह जल्दी ही दूसरी गाय खरीदने के लिए पैसे इकट्ठे हो जाएँगे। कमला देवी और उसकी पुत्रियों ने अपने पड़ोसी के सुझाव के मुताबिक काम करना शुरू कर दिया। साल के अंत में उनके पास इतना पैसा इकट्ठा हो गया कि वे एक अच्छी गाय खरीद सकें।

३३९) धन को सर्वस्व समझना ठीक नहीं - एक वयोवृद्ध धर्मोपदेशक से संबंधित यह कहानी बहुत पुरानी है। कहते हैं कि एक दिन उनका धनी परन्तु कंजूस मित्र उनके घर आया और अपनी संपत्ति के बारे में बढ़-चढ़ कर बातें करने लगा। धर्मोपदेशक ने बातचीत का विषय बदलने का पूरा प्रयास किया, परन्तु वह अपनी संपत्ति और खुशहाली की शेखी बघारने से बाज नहीं आ रहा था।

अन्तत: धर्मोपदेशक अपनी जगह से उठे और कमरे की बंद खिड़की के पास जाकर खड़े हो गए। उन्होंने अपने मित्र को बुलाया और खिड़की में लगे कांच के बाहर की ओर संकेत करते हुए पूछा, मित्र, देखो तो वहां क्या है?

शीशे के उस पार कुछ क्षण देखने के बाद उस धनी मित्र ने हैरानी से गरदन हिलाई और कहा कुछ भी तो नहीं, लेकिन आपका मतलब कहीं फुटपाथ पर खड़े कुछ लोगों से तो नहीं है? वृद्ध धर्मोपदेशक उत्तर देने की अपेक्षा वहां से हटकर अपने कमरे में लगे आदमकद आइने के पास पहुंचकर बोले, अब जरा यहां आओ, तुम्हें कुछ दिखाई देता है? मित्र ने आइने में झांकते हुए जवाब दिया, मैं अपने आपको देख रहा हूं और भला दिखाई भी क्या देगा?

ठीक कहा तुमने धर्मोपदेशक शांत भाव से मुस्कराए और बोले खिड़की में कांच लगा है और यहां भी कांच ही है, लेकिन इस कांच में चुटकी भर चांदी (पारा) भी मिली हुई है। बस चुटकी भर चांदी मिलते ही हम दूसरों को देखना बंद करते हैं। केवल अपने आपको ही देखने लगते हैं। धन को सर्वस्व समझ बैठना और दिन भर उसी का चिन्तन करते रहना ठीक नहीं। यह त्याग एवं सेवा भाव का मार्ग अवरुद्ध कर देता है। बिलकुल चांदी-पुते कांच के समान यह भी मनुष्य को केवल अपना रूख देखने को ही प्रेरित करता है।

३४०) मिट्टी कीमती है या अनमोल है रेत - एक बंजारा था। वह बैलों पर मिट्टी (मुल्तानी मिट्टी) लाद कर दिल्ली की तरफ आ रहा था। रास्ते में कई गांवों से गुजरते समय उसकी बहुत सी मिट्टी बिक गई। बैलों की पीठ पर लदे बोरे आधे तो खाली हो गए और आधे भरे रह गए। अब वे बैलों की पीठ पर कैसे टिकें, क्योंकि भार एक तरफ ज्यादा हो गया था।

नौकरों ने पूछा कि क्या करें?

बंजारा बोला- अरे। सोचते क्या हो, बोरों के एक तरफ रेत (बालू) भर लो। यह राजस्थानी जमीन है, यहां रेत बहुत है। नौकरों ने वैसा ही किया। बैलों की पीठ पर एक तरफ आधे बोरों में मिट्टी हो गई और दूसरी तरफ आधे बोरों में रेत हो गई।

दिल्ली से एक सज्जन उधर आ रहे थे। उन्होंने बैलों पर दले बोरों में से एक तरफ रेत गिरते हुए देखी तो बोले कि बोरों में एक तरफ रेत क्यों भरी है?

नौकरों ने कहा- सन्तुलन करने के लिए। वे सज्जन बोले- अरे, यह तुम क्या मूर्खता करते हो? तुम्हारा मालिक और तुम एक से ही हो। बैलों पर मुफ्त में ही भार ढोकर उनको मार रहे हो। मिट्टी के आधे-आधे दो बोरों को एक ही जगह बांध दो, तो कम से कम आधे बैल तो बिना भार के चलेंगे।

नौकरों ने कहा कि आपकी बात तो ठीक जंचती है, पर हम वही करेंगे, जो हमारा मालिक कहेगा। आप जाकर हमारे मालिक से यह बात कहो और उनसे हमें आदेश दिलवाओ। वह राहगीर (बंजारे) से मिला और उससे बात कही। बंजारे ने पूछा कि आप कहां के हैं? कहां जा रहे हैं?

उसने कहा कि मैं भिवानी का रहने वाला हूं। रुपए कमाने के लिए दिल्ली गया था। कुछ दिन वहां रहा, फिर बीमार हो गया। जो थोड़े रुपए कमाए थे, वे खर्च हो गए। व्यापार में घाटा लग गया। पास में कुछ रहा नहीं, तो विचार किया कि घर चलना चाहिए। उसकी बात सुनकर बंजारा नौकरों से बोला कि इनकी सलाह मत मानो। हम जैसे चल रहे हैं, वैसे ही चलो। इनकी बुद्धि तो अच्छी दिखती है, पर उसका नतीजा ठीक नहीं निकलता, नहीं तो ये अब तक धनवान हो जाते। हमारी बुद्धि भले ही ठीक न दिखे, पर उसका नतीजा ठीक होता है। मैंने कभी अपने काम में घाटा नहीं उठाया। बंजारा अपने बैलों को लेकर दिल्ली पहुंचा। वहां उसने जमीन खरीद कर मिट्टी और रेत दोनों का अलग-अलग ढेर लगा दिया और नौकरों से कहा कि बैलों को जंगल में ले जाओ और जहां चारा-पानी हो, वहां उनको रखो। यहां उनको चारा खिलाएंगे, तो नफा कैसे कमाएंगे? मिट्टी बिकनी शुरू हो गई। उधर, दिल्ली का बादशाह बीमार हो गया। बादशाह के हकीम ने सलाह दी कि अगर बादशाह राजस्थान के धोरे (रेत के टीले) पर रहें, तो उनका शरीर ठीक हो सकता है। रेत में शरीर को निरोग करने की शक्ति होती है, इसलिए बादशाह को राजस्थान भेज देना ठीक रहेगा। तब एक दरबारी ने कहा- राजस्थान क्यों भेजें? वहां की रेत यहीं मंगा लेते हैं। तभी एक अन्य दरबारी बोला- अरे, यह दिल्ली का बाजार है, यहां सब कुछ मिलता है। मैंने एक जगह रेत का ढेर लगा हुआ देखा है।

बादशाह-अच्छा। तो फिर जल्दी रेत मंगवा लो। बादशाह के आदमी बंजारे के पास गए और उससे पूछा कि रेत क्या भाव है?

बंजारा बोला कि चाहे मिट्टी खरीदो, चाहे रेत खरीदो, एक ही भाव है। दोनों बैलों पर बराबर तुलकर आए हैं। बादशाह के कारिंदों ने वह सारी रेत खरीद ली। अगर बंजारा दिल्ली से आए उस सज्जन की बात मानता, तो ये मुफ्त के रुपए कैसे मिलते? जाहिर तौर पर बंजारे की बुद्धि ठीक काम करती थी।

३४१) महादेव तो अनजाने में किये गए व्रत से भी प्रसन्न हो जाते हैं - पूर्व काल में चित्रभानु नामक एक शिकारी था। जानवरों की हत्या करके वह अपने परिवार को पालता था। वह एक साहूकार का कर्जदार था, लेकिन उसका ऋण समय पर न चुका सका।

क्रोधित साहुकार ने शिकारी को शिवमठ में बंदी बना लिया। संयोग से उस दिन शिवरात्रि थी। शिकारी ध्यानमग्न होकर

शिव-संबंधी धार्मिक बातें सुनता रहा। चतुर्दशी को उसने शिवरात्रि व्रत की कथा भी सुनी।

शाम होते ही साहूकार ने उसे अपने पास बुलाया और ऋण चुकाने के विषय में बात की। शिकारी अगले दिन सारा ऋण लौटा देने का वचन देकर बंधन से छूट गया। अपनी दिनचर्या की भांति वह जंगल में शिकार के लिए निकला। लेकिन दिनभर बंदी गृह में रहने के कारण भूख-प्यास से व्याकुल था। शिकार खोजता हुआ वह बहुत दूर निकल गया।

जब अंधकार हो गया तो उसने विचार किया कि रात जंगल में ही बितानी पड़ेगी। वह एक तालाब के किनारे एक बेल के पेड़ पर चढ़ कर रात बीतने का इंतजार करने लगा।

बिल्व वृक्ष के नीचे शिवलिंग था जो बिल्वपत्रों से ढंका हुआ था। शिकारी को उसका पता न चला। पड़ाव बनाते समय उसने जो टहनियां तोड़ीं, वे संयोग से शिवलिंग पर गिरती चली गई। इस प्रकार दिनभर भूखे-प्यासे शिकारी का व्रत भी हो गया और शिवलिंग पर बिल्वपत्र भी चढ़ गए। एक पहर रात्रि बीत जाने पर एक गर्भिणी हिरणी तालाब पर पानी पीने पहुंची। शिकारी ने धनुष पर तीर चढ़ाकर ज्यों ही प्रत्यंचा खींची, हिरणी बोली, मैं गर्भिणी हूं। शीघ्र ही प्रसव करूंगी। तुम एक साथ दो जीवों की हत्या करोगे, जो ठीक नहीं है। मैं बच्चे को जन्म देकर शीघ्र ही तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत हो जाऊंगी, तब मार लेना। शिकारी ने उसे भी जाने दिया। दो बार शिकार को खोकर उसका माथा ठनका। वह चिंता में पड़ गया। रात्रि का आखिरी पहर बीत रहा था। इस बार भी धनुष से लग कर कुछ बेलपत्र शिवलिंग पर जा गिरे तथा दूसरे प्रहर की पूजन भी सम्पन्न हो गई।

तभी एक अन्य हिरणी अपने बच्चों के साथ उधर से निकली। शिकारी के लिए यह स्वर्णिम अवसर था। उसने धनुष पर तीर चढ़ाने में देर नहीं लगाई। वही तीर छोड़ने ही वाला था कि हिरणी बोली, हे शिकारी। मैं इन बच्चों को इनके पिता के हवाले करके लौट आऊंगी। इस समय मुझे मत मारो।

शिकारी की तनी प्रत्यंचा देखकर मृग विनीत स्वर में बोला, हे शिकारी। यदि तुमने मुझसे पूर्व आनेवाली तीन मृगियों तथा छोटे-छोटे बच्चों को मार डाला है, तो मुझे भी मारने में विलंब न करो, ताकि मुझे उनके वियोग में एक क्षण भी दुख न सहना पड़े। मैं उन हिरणियों का पति हूं। यदि तुमने उन्हें जीवनदान दिया है तो मुझे भी कुछ क्षण का जीवन देने की कृपा करो। मैं उनसे मिलकर तुम्हारे समक्ष उपस्थित हो जाऊंगा।

मृग की बात सुनते ही शिकारी के सामने पूरी रात का घटनाक्रम घूम गया, उसने सारी कथा मृग को सुना दी। तब मृग ने कहा, मेरी तीनों पत्नियां जिस प्रकार प्रतिज्ञाबद्ध होकर गई हैं, मेरी मृत्यु से अपने धर्म का पालन नहीं कर पाएंगी। अत: जैसे तुमने उन्हें विश्वासपात्र मानकर छोड़ा है, वैसे ही मुझे भी जाने दो। मैं उन सबके साथ तुम्हारे सामने शीघ्र ही उपस्थित होता हूं।

शिकारी ने उसे भी जाने दिया। इस प्रकार प्रात: हो आई। उपवास, रात्रि-जागरण तथा शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ने से अनजाने में ही, पर शिवरात्रि की पूजा पूर्ण हो गई। पर अनजाने में ही की हुई पूजन का परिणाम उसे तत्काल मिला। शिकारी का हिंसक हृदय निर्मल हो गया। उसमें भगवद्शक्ति का वास हो गया।

थोड़ी ही देर बाद वह मृग सपरिवार शिकारी के समक्ष उपस्थित हो गया, ताकि वह उनका शिकार कर सके, किंतु जंगली

पशुओं की ऐसी सत्यता, सात्विकता एवं सामूहिक प्रेमभावना देखकर शिकारी को बड़ी ग्लानि हुई। उसने मृग परिवार को जीवनदान दे दिया।

अनजाने में शिवरात्रि के व्रत का पालन करने पर भी शिकारी को मोक्ष की प्राप्ति हुई। जब मृत्यु काल में यमदूत उसके जीव को ले जाने आए तो शिवगणों ने उन्हें वापस भेज दिया तथा शिकारी को शिवलोक ले गए। शिव जी की कृपा से ही अपने इस जन्म में राजा चित्रभानु अपने पिछले जन्म को याद रख पाए तथा महाशिवरात्रि के महत्व को जानकर उसका अगले जन्म में भी पालन कर पाए।

३४२) पता चला क्यों सफलता प्राप्त कर रहे हैं - मतंग ऋषि पशु-पक्षियों के प्रति काफी स्नेह रखते थे। अक्सर वह अध्ययन और ईश्वरोपासना के बाद पक्षियों के साथ खेलने लग जाते थे। पक्षियों के साथ खेलना उन्हें बहुत ही अच्छा लगता था। गौरेया और कौवे उनके इशारे पर जमीन पर उतर आते और उनके कंधों व हाथों पर बैठ जाते थे। एक दिन जब वे पक्षियों के बीच चहक रहे थे, तभी अनंत ऋषि वहां आए। वह मतंग ऋषि का बहुत सम्मान करते थे। उन्हें पक्षियों केसाथ खेलते देख वह बोले, महाराज, आप इतने बड़े विद्वान होकर बच्चों की तरह चिड़ियों के साथ खेल रहे हैं। इससे आपका मूल्यवान समय नष्ट नहीं होता? अनंत ऋषि के इस प्रश्न को सुनकर मतंग ऋषि मुस्करा दिए और उन्होंने अपने एक शिष्य को धनुष लेकर आने के लिए कहा। शिष्य कुछ ही देर में धनुष लेकर आ गया। मतंग ऋषि ने धनुष लिया और उसकी डोरी ढीली करके रख दी। अनंग ऋषि हैरानी से मतंग ऋषि को देखकर बोले, आपने धनुष की डोरी ढीली करके क्यों रखी? आप इसके माध्यम से क्या कहना चाहते हैं? मतंग ऋषि बोले, मैंने तुम्हारे प्रश्न का जवाब दिया है। अब मैं इसे विस्तार से बताता हूं। हमारा मन धनुष की तरह है। अगर धनुष पर डोरी हमेशा चढ़ी रहे तो उसकी मजबूती कुछ ही समय में चली जाती है और वह जल्दी टूट जाता है, किंतु अगर काम पड़ने पर ही इस पर डोरी चढ़ाई जाए तो वह न सिर्फ अधिक समय तक टिकता है, बल्कि उससे काम भी अच्छे तरीके से होता है। इसी प्रकार काम करने पर ही मन को एकाग्र करना चाहिए। काम के बाद यदि उसे आराम मिलता रहे तो मन और अधिक मजबूत होगा। उसे स्फूर्ति मिलेगी। इससे वह लंबे समय तक स्वस्थ रहता है। मतंग ऋषि का जवाब सुनकर अनंग ऋषि हाथ जोड़कर बोले, मैं आपकी बात पूरी समझ गया। अब पता चला आप क्यों लगातार हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। यह कहकर वह वहां से चले गए।

३४३) दौलत की चाकरी - बादशाह सिकंदर लोदी के शासन के दिनों में जैनुद्दीन नामक प्रसिद्ध संत हुए थे। उनका बहुत बड़ा और संपन्न मठ था। संत बेहद दयालु और परोपकारी थे। मठ का अधिकतर धन उन्होंने दीन-दुखियों की सेवा में लगा दिया था। लेकिन समय बदला और उनके मठ की संपत्ति जाती रही। एक दिन संत ने मठ में रखे कुछ कागजात निकाले और उन्हें जलाने का हुक्म दिया। उनके एक शिष्य ने इन कागजात को देखा तो पाया कि ये मठ द्वारा शहर के कई सेठों को दिए गए ऋण के कागज हैं। शिष्य ने संत से कहा- यदि ये सारे कर्ज वसूल हो जाएं तो मठ फिर से धन-धान्य से भरपूर हो सकता है। संत ने जवाब दिया- जब मठ धनी था, तब भी मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह धन मठ को वापस मिलेगा। उन लोगों ने तो महज भरोसा बनाए रखने के नाम पर और शासकीय जरूरतों के मुताबिक ये कागजात सौंप दिए थे। अब मठ गरीब हो गया है। ऐसी स्थिति में हमारे मन में लालच आ सकता है और बिलकुल वही बात आ

सकती है जैसा कि तुमने कहा है। इसीलिए मैं ये कागजात जला रहा हूं ताकि मैं इस तरह की संभावना को पूरी तरह समाप्त कर सकूं। दुनिया को प्रेम और त्याग भावना से ही जीता जा सकता है। जैसे-जैसे परहित के लिए धन, संपदा का त्याग होता है वैसे-वैसे दिल में खुशी की तरंगे उठती जाती हैं। संसार में हम जो कुछ हासिल करते हैं, वह नहीं बल्कि जो कुछ हम त्यागते हैं वही हमें धनी बनाता है। धन, संपदा को जब हम सार्थक कामों में लगाते हैं तो वह हमारी सेवा करता है, इंसानियत की खिदमत करता है। लेकिन जब इन्हें जमा किया जाता है या इनके लिए लगाव हो जाता है तो हम इस दौलत की चाकरी में लग जाते हैं। शिष्य ने संत की बातों से सहमति जताई।

३४४) दर्जी की सीख - एक दिन स्कूल में छुट्टी की घोषणा होने के कारण, एक दर्जी का बेटा अपने पापा की दुकान पर चला गया। वहां जाकर वह बड़े ध्यान से अपने पापा को काम करते हुए देखने लगा। उसने देखा कि उसके पापा कैंची से कपड़े को काटते हैं और कैंची को पैर के पास टांग से दबाकर रख देते हैं। फिर सुई से उसको सीते हैं और सीने के बाद सुई को अपनी टोपी पर लगा लेते हैं।

जब उसने इसी क्रिया को चार-पांच बार देखा तो उससे रहा नहीं गया, तो उसने अपने पापा से कहा कि वह एक बात उनसे पूछना चाहता है। पापा ने कहा- बेटा बोलो, क्या पूछना चाहते हो? बेटा बोला- पापा ,मैं बड़ी देर से आपको देख रहा हूं, आप जब भी कपड़ा काटते हैं, उसके बाद कैंची को पैर के नीचे दबा देते हैं और सुई से कपड़ा सीने के बाद उसे टोपी पर लगा लेते हैं, ऐसा क्यों? इसका जो उत्तर पापा ने दिया, उन दो पंक्तियों में मानो उसने जिंदगी का सार समझा दिया।

उत्तर था- बेटा, कैंची काटने का काम करती है और सुई जोड़ने को काम करती है और काटने वाले की जगह हमेशा नीचे होती है परन्तु जोड़ने वाले की जगह हमेशा ऊपर होती है। यही कारण है कि मैं सुई को टोपी पर लगाता हूं और कैंची को पैर के नीचे रखता हूं।

३४५) सफलता के शिखर पर पहुंचने के लिए बस अपने काम में डूबे रहें - बहुत समय पहले की बात है, एक सरोवर में बहुत सारे मेंढक रहते थे। सरोवर के बीचोंबीच एक बहुत पुराना धातु का खंभा भी लगा हुआ था। उसे भी सरोवर बनवाने वाले राजा ने ही लगवाया था। खंभा काफी ऊंचा था और उसकी सतह बिलकुल चिकनी थी। एक दिन मेंढकों के दिमाग में आया कि क्यों न एक रेस करवाई जाए। रेस में भाग लेनेवाले प्रतियोगियों को खंभे पर चढ़ना होगा और जो सबसे पहले ऊपर पहुंच जाएगा, वही विजेता माना जाएगा।

रेस का दिन आ पहुंचा। चारों तरफ बहुत भीड़ा जमा थी। आस-पास के इलाकों से भी कई मेंढक इस रेस में हिस्सा लेने पहुंचे। माहौल में सरगर्मी मची थी। रेस शुरू हो गई। लेकिन खंभे को देखकर वहां जमा हुए किसी भी मेंढक को ये यकीन नहीं हुआ कि कोई भी मेंढक ऊपर तक पहुंच पाएगा। हर तरफ यही सुनाई देता- अरे ये बहुत कठिन काम है। देखना, वो कभी भी ये रेस पूरी नहीं कर पाएंगे।

यहां सफलता का तो कोई सवाल नहीं। इतने चिकने खंभे पर चढ़ा ही नहीं जा सकता। सच में, जो भी मेंढक कोशिश करता, वो थोड़ा ऊपर जाकर नीचे फिसल जाता। कई मेंढक दो-तीन बार गिरने के बावजूद अपने प्रयास में लगे हुए थे। पर भीड़ तो अब भी चिल्लाए जा रही थी, ये नहीं हो सकता। आखिरकार उत्साहित मेंढक भी ये सुन-सुनकर हताश हो गए

और उन्होंने अपना प्रयास छोड़ दिया। लेकिन उन्हीं के बीच एक छोटा-सा मेंढक था, जो बार बार गिरने पर भी उसी जोश के साथ ऊपर चढ़ने में लगा हुआ था। वह लगातार ऊपर की ओर बढ़ता रहा और अंतत: खंभे के ऊपर पहुंच ही गया। वह इस रेस का विजेता बन गया।

उसकी जीत पर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। सभी मेंढक उसे घेर कर खड़े हो गए और पूछने लगे, तुमने ये असंभव काम कैसे कर दिखाया? तुम्हें लक्ष्य पाने की शक्ति कहां से मिली? हमें भी तो बताओ कि तुमने ये विजय कैसे प्राप्त की? तभी पीछे से आवाज आई, अरे उसे तो सुनाई ही नहीं पड़ता। अक्सर हमारे अंदर अपना लक्ष्य प्राप्त करने की काबीलियत होती है। लेकिन हम अपने चारों तरफ मौजूद नकारात्मकता की वजह से खुद को बहुत ही कम आंक बैठते हैं। और इसीलिए, हमने जो बड़े-बड़े सपने देखे होते हैं उन्हें पूरा किए बगैर ही अपनी जिंदगी गुजार देते हैं। आवश्यकता यह है हम अपने आपको कमजोर बनानेवाली हर एक आवाज के प्रति बहरे और ऐसे हर एक दृश्य के प्रति अंधे हो जाएं। अर्थात यह काम तभी संभव होगा जब हम किसी और चीज की परवाह किए बिना सिर्फ अपने काम में डूबे रहें। तब सफलता के शिखर पर पहुंचने से कोई नहीं रोक पाएगा।

३४६) औरों को दुखी कर स्वयं सुख बटोरने की मानसिकता त्यागें- एक भारतीय व्यक्ति लंदन में अपने एक मित्र के घर ठहरा हुआ था उसका मालिक दूध वितरण करता था। एक दिन उसकी लड़की बहुत उदास थी। भारतीय मित्र ने पूछा, बहन। आज इतनी उदास क्यों हो? वह बोली, क्या करूं, दूध की पूर्तता तो पूरी करनी है और मेरे पास आज दूध कम है। बड़ी चिंता हो रही है कि मैं पूर्तता कैसे कर पाऊंगी। उसने कहा, यह इतनी चिंतित और इतनी उदास होने की बात नहीं है। वैसे भी तुम्हारे पास तो इतना दूध है, थोड़ा-सा पानी मिला दो, तुम्हारी समस्या खत्म हो जाएगी।

यह सुनते ही वह अपने पिता के पास जाकर बोली, किस राक्षस को अपने घर में ठहराया है? वह तो ऐसी बुरी सलाह देता है कि दूध में पानी मिला दो। क्या मैं ऐसा कर अपने राष्ट्र के नागरिकों के स्वास्थ्य के प्रति अन्याय करूं? ऐसी सलाह देनेवाले को घर से निकाल दो।

३४७) ईर्ष्या और द्वेष न तो किसी को राजा बना सकते हैं न ही रंक - एक सेठ था। उसे अपने ड्राइंगरूम का रंग-रोगन कराना था। उसने एक पेंटर को बुलया और पूरा काम समझा कर मेहनताना तय कर दिया। पेंटर खुशी-खुशी अपने काम में जुट गया। दोपहर तक काम पूरा न होते देख सेठ ने दो और पेंटर बुला लिए। शाम तक काम पूरा हो गया। सेठ ने तीनों पेंटरों को एक जितने पैसे दिए और विदा करना चाहा। पर पहला पेंटर यह देख असंतुष्ट और नाराज हो उठा। वह शिकायत करते हुए सेठ से बोला, सेठजी, यह आपने ठीक नहीं किया। मैंने उन दोनों से दोगुनी मेहनत की, पर आपने उन्हें भी मेरे जितनी ही मजदूरी दी। यह आपका कैसा इंसाफ है? यह सुन सेठ मुस्कुरा दिया। बोला, भाई, मैंने तुम्हें उतने ही पैसे दिए, जितने हमारे बीच तय हुए थे। दूसरों को क्या मिला, इसकी बाबत सोचना तुम्हारा धर्म नहीं।

३४८) संसार नहीं रुकता - एक घर के मुखिया को यह अभिमान हो गया कि उसके बिना उसके परिवार का काम नहीं चल सकता। उसकी छोटी सी दुकान थी। उससे जो आय होती थी, उसी से उसके परिवार का गुजारा चलता था। चूंकि कमानेवाला वह अकेला ही था इसलिए उसे लगता था कि उसके बिना कुछ नहीं हो सकता। वह लोगों के सामने डींग

हांका करता था। एक दिन वह एक संत के सत्संग में पहुंचा। संत कह रहे थे- दुनिया में किसी के बिना किसी का काम नहीं रुकता। यह अभिमान व्यर्थ है कि मेरे बिना परिवार या समाज ठहर जाएगा। सभी को अपने भाग्य के अनुसार प्राप्त होता है। सत्संग समाप्त होने के बाद मुखिया ने संत से कहा- मैं दिनभर कमाकर जो पैसे लाता हूं उसी से मेरे घर का खर्च चलता है। मेरे बिना तो मेरे परिवार के लोग भूखे मर जाएंगे। संत बोले- यह तुम्हारा भ्रम है। हर कोई अपने भाग्य का खाता है। इस पर मुखिया ने कहा- आप इसे प्रमाणित करके दिखाइए। संत ने कहा- ठीक है। तुम बिना किसी को बताए घर से एक महीने के लिए गायब हो जाओ। उसने ऐसा ही किया। संत ने यह बात फैला दी कि उसे बाघ ने अपना भोजन बना लिया है। मुखिया के परिवार वाले कई दिनों तक शोक संतप्त रहे। गांव वाले आखिरकार उनकी मदद के लिए सामने आए। एक सेठ ने उसके बड़े लड़के को अपने यहां नौकरी दे दी। गांव वालों ने मिलकर लड़की की शादी कर दी। एक व्यक्ति छोटे बेटे की पढ़ाई का खर्च देने को तैयार हो गया। एक महीने बाद मुखिया छिपता-छिपाता रात के वक्त अपने घर आया। घरवालों ने भूत समझकर दरवाजा नहीं खोला। जब वह बहुत गिड़गिड़ाया और उसने सारी बातें बताईं तो उसकी पत्नी ने दरवाजे के भीतर से ही उत्तर दिया- हमें तुम्हारी जरूरत नहीं है। अब हम पहले से ज्यादा सुखी हैं। उस व्यक्ति का सारा अभिमान चूर-चूर हो गया। संसार किसी के लिए भी नहीं रूकता। यहाँ सभी के बिना काम चल सकता है संसार सदा से चला आ रहा है और चलता रहेगा। जगत को चलाने की हामी भरनेवाले बड़े बड़े सम्राट मिट्टी हो गए, जगत उनके बिना भी चला है। इसलिए अपने बल का, अपने धन का, अपने कार्यों का, अपने ज्ञान का गर्व व्यर्थ है। सेवा सर्वोपरि है।

३४९) अच्छाई और सफलता - एक युवक ने एक संत से कहा, महाराज, मैं जीवन में सर्वोच्च शिखर पाना चाहता हूं लेकिन इसके लिए मैं निम्न स्तर से शुरुआत नहीं करना चाहता। क्या आप मुझे कोई ऐसा रास्ता बता सकते हैं जो मुझे सीधा सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा दे।

संत बोले- अवश्य बताऊंगा। पहले तुम आश्रम के बगीचे से सबसे सुंदर गुलाब का फूल लाकर मुझे दो। लेकिन एक शर्त है। जिस गुलाब को तुम पीछे छोड़ जाओगे, उसे पलटकर नहीं तोड़ोगे।

युवक यह आसान सी शर्त मानकर बगीचे में चला गया। वहां एक से एक सुंदर गुलाब खिले थे। जब भी वह एक गुलाब तोड़ने के लिए आगे बढ़ता, उसे कुछ दूर पर उससे भी अधिक सुंदर गुलाब नजर आते औरवह उसे छोड़ आगे बढ़ जाता। ऐसा करते-करते वह बगीचे के मुहाने पर आ पहुंचा। लेकिन यहां उसे जो फूल नजर आए वे एकदम मुरझाए हुए थे। आखिरकार वह फूल लिए बिना ही वापस आ गया। उसे खाली हाथ देखकर संत ने पूछा, क्या हुआ बेटा, गुलाब नहीं लाए? युवक बोला, बाबा, मैं बगीचे के सुंदर और ताजा फूलों को छोड़कर आगे और आगे बढ़ता रहा, मगर अंत में केवल मुरझाए फूल ही बचे थे। आपने मुझे पलटकर फूल तोड़ने से मना किया था। इसलिए मैं गुलाब के ताजा और सुंदर फूल नहीं तोड़ पाया।

उस पर संत मुस्करा कर बोले, जीवन भी इसी तरह से है। इसमें शुरुआत से ही कर्म करते चलना चाहिए। कई बार अच्छाई और सफलता प्रारंभ के कामों और अवसरों में ही छिपी रहती है। जो अधिक और सर्वोच्च की लालसा पाकर आगे बढ़ते रहते हैं, अंत में उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ता है। युवक उनका कहना समझ गया।

३५०) सुनी सुनाई बातों पर विश्वास न करें - एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। जंगल के बीच में बहुत बड़ा तालाब था जहां सारे जानवर पानी पीते थे। तालाब के किनारे पपीते का एक ऊंचा पेड़ था। उस पर बड़े-बड़े पपीते लगते थे। एक बार कुछ खरगोश पानी पीकर तालाब के किनारे पर खेल रहे थे। एक पका हुआ बड़ा सा पपीता टूट कर पानी में गिर गया जिससे बहुत जोर की आवाज आई गड़ाम करके। गड़ाम की आवाज सुनकर खरगोश डर गए और भागने लगे। खरगोशों को भागते देख लोमड़ी ने पूछा क्यों भाग रहे हो? खरगोश ने कहा, गड़ाम आ रहा है भागों लोमड़ी भी उनके साथ भाग ली। आगे चलकर उनको हाथियों का झुंड़ मिला। एक हाथी ने पूछा, क्यों भाग रहे हो? तो उत्तर मिला, गड़ाम आ रहा है भागो। हाथी भी साथ में भागने लगे। धीरे-धीरे गड़ाम आ रहा है सुनकर सारे जानवर भागने लगे। जानवरों का झुंड जब बब्बर शेर की मांद के पास से गुजरा तो शेर ने पूछा, क्यों भाग रहे हो? उत्तर मिला गड़ाम आ रहा है भागो। जैसे ही शेर भी भागने को तैयार हुआ तो शेरनी ने कहा, तुम क्यों भागते हो तुम तो जंगल के राजा हो। तुम्हारे पास शक्तिशाली पंजे हैं। तुम जिसे चाहो अपने पंजे से चीर सकते हो। भागने से पहले सच्चाई तो जान लो। इस पर शेर ने एक जानवर से पूछा कि तुम्हें किसने कहा कि गड़ाम आ रहा है तो उसने कहा, मुझे तो हाथी ने कहा। हाथी से पूछा तो उसने कहा मुझे तो लोमड़ी ने कहा। लोमड़ी ने कहा मुझे तो खरगोश ने कहा था। जब खरगोश से पूछा तो उसने कहा, हम जहां पर खेल रहे थे वहां पर गड़ाम की आवाज आई थी, जिसको सुनकर हम भागे थे शेर ने कहा, मुझे उस स्थान पर ले चलो। सभी उस स्थान की ओर चल पड़े। जैसे ही सभी तालाब के किनारे पर पहुंचे एक बड़ा सा पपीता टूट कर पानी में गिरा और बहुत जोर से गड़ाम की आवाज आई। शेर ने कहा, यह तो पानी की आवाज है, जो पपीते के गिरने से हुई। खरगोश ने कहा, हम तो यही आवाज सुनकर ही डर के मारे भागे थे। तब शेर ने समझाया कि इसमें डरने की कोई बात नहीं है। यह सब सुनी सुनाई बात से हुआ है। शेर ने कहा आगे से कभी भी सुनी सुनाई बात पर विश्वास मत करना।

३५१) अफलातून की सीख - यूनानी दार्शनिक अफलातून के पास हर दिन विद्वानों का जमावड़ा लगा रहता था। सभी लोग उनसे कुछ न कुछ ज्ञान प्राप्त करके ही जाया करते थे, लेकिन स्वयं अफलातून खुद को कभी ज्ञानी नहीं मानते थे क्योंकि उनका मानना था कि इन्सान कभी भी ज्ञानी कैसे हो सकता है जबकि हमेशा वो सीखता ही रहता है।

एक दिन उनके एक मित्र ने उनसे कहा कि आपके पास दुनिया भर के विद्वान आपसे ज्ञान लेने आते है और वो लोग आपसे बातें करते हुए अपना जीवन धन्य समझते हैं लेकिन आपकी एक बात मुझे आज तक समझ नहीं आई। इस पर अफलातून बोले- तुम्हें किस बात की शंका है, जाहिर तो करो जो पता चले।

मित्र ने कहा- आप खुद बड़े विद्वान और ज्ञानी हैं लेकिन फिर भी मैंने देखा है कि आप हर समय दूसरों से शिक्षा लेने को तत्पर रहते हैं। वह भी बड़े उत्साह और उमंग के साथ। इससे बड़ी बात है कि आपको साधारण व्यक्ति से भी सीखने में कोई परेशानी नहीं होती। आप उससे भी सीखने को तत्पर रहते हैं। आपको भला सीखने की जरूरत क्या है? कहीं आप लोगों को खुश करने के लिए तो उनसे सीखने का दिखावा नहीं करते हैं?

अफलातून जोर जोर से हंसने लगे तो मित्र ने पूछा- ऐसा क्यों? तो अफलातून ने जवाब दिया कि इन्सान अपनी पूरी जिन्दगी में भी कुछ पूरा नहीं सीख सकता। हमेशा कुछ न कुछ अधूरा ही रहता है और फिर हर इन्सान के पास कुछ न कुछ

ऐसा जरूर है जो दूसरों के पास नहीं है। इसलिए हर किसी को हर किसी से सीखते रहना चाहिए और फिर हर बात और अनुभव किताबों में तो नहीं मिलते क्योंकि बहुत कुछ ऐसा है जो लिखा नहीं गया है जबकि वास्तविकता में रहकर और लोगों से सीखते रहने की आदत आपको पूरा नहीं पूर्णता के करीब जरूर ले जाती है। यही जिन्दगी का सार है।

३५२) भगवान राम की अंगुलियों के निशान से गिलहरी आकर्षक बनी - बहुत दिनों पहले की बात है, गिलहरी पूरी तरह काली हुआ करती थी। छोटी-छोटी झाड़ियों के बीच, घास के मैदानों में, ऊंचे बड़े पेड़ों पर रेंगती फिरती कूदती फांदती लेकिन लोग उसे सुंदर प्राणी नहीं समझते थे। गिलहरी को गांव के परिवारों के साथ रहना पसंद था, लेकिन गांववाले उसे पसंद नहीं करते थे। वह घरों में पहुंच जाती तो बच्चे डर जाते और लोग उसे भगाने लगते।

गांव में एक आश्रम था जिसमें साधु बाबा रहते थै। गिलहरी उनके पास रहने लगी। जो बाबा खाते वह गिलहरी खाती, वे यज्ञ हवन करते उसकी साक्षी बनती और वे जप मंत्र पढ़ते उसके पुण्य का लाभ उठाती। धीरे-धीरे गिलहरी बीज, कंद और मूल खाने वाली साध्वी बन गई। कुछ समय बाद बाबा रामेश्वरम की तीर्थयात्रा पर निकले तो वह गिलहरी भी उनके साथ हो ली। रामेश्वरम के समुद्र तट पर बाबा ने जहां डेरा डाला वहीं किसी पेड़ पर एक कोने में गिलहरी ने भी अपना घर बना लिया।

रामेश्वरम में थोड़ा ही समय बीता था कि राम और रावण का युद्ध छिड़ गया और रामजी ने सिंधु में सेतु निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया। नल और नील के नेतृत्व में बंदर और भालू समुद्र में पत्थर डालकर सेतु बनाने लगे। यह देखकर गिलहरी भी रेत के कण उठाकर समुद्र में डालने लगी। यह छोटा सा काम था लेकिन बड़े निर्माण में छोटे से छोटे काम का महत्व होता है, यह समझकर नल-नील ने उसे टोका नहीं और वह अपना काम करती रही। भगवान राम भी उसे चुपचाप काम करते देखते। जिस दिन पुल का निर्माण पूरा हुआ, उस दिन, नन्ही सी गिलहरी द्वारा प्रदर्शित उत्तरदायित्व लगन और श्रम की भावना को पुरस्कृत करने के लिए भगवान राम ने उसे अपने हाथों में उठाया और आशीर्वाद से भरी अपनी अंगुलियों को उस पर फेरा।

आश्चर्य। भगवान राम के हाथ और अंगुलियों के निशान जहां लगे वहां का रंग भगवान की त्वचा जैसा सांवला हो गया और वह अत्यंत आकर्षक दिखाई देने लगी। कहते हैं तभी से गिलहरी की गणना सुंदर प्राणियों में होने लगी। गांव के बच्चे उसे देखकर खुश हो जाते, उसे बगीचों से कोई नहीं भगाता और लोग उससे खूब प्रेम करते। गिलहरी को मिले इस वरदान से उसके आगे की संतति भी सुंदर हुई। अंत में जब सेतु निर्माण का इतिहास लिखा गया तब हर कवि और रचनाकार ने उस नन्ही गिलहरी का उल्लेख अपनी रचना में किया।

३५३) फिर कहां से आएगी मां - गर्भवती महिला चिकित्सक के पास गई। उसकी सास और पति बाहर बैठे हुए थे। अंदर केबिन में चिकित्सक के साथ एकांत पाकर वो अपनी मनोवेदना रोक नहीं पायी - डॉक्टर साहब, मेरे घरवाले मेरा भ्रूण परीक्षण करवाना चाहते हैं जबकि मेरी अंतरात्मा इसके लिए तैयार नहीं है, तो आप मेरी मदद कीजिए। आप कोई उपाय बता दीजिए कि यह समस्या टल जाए।

कुछ देर रुकने के बाद उसने डॉक्टर से कहा- एक काम करिए, मेरे पति और सास से कह दीजिए कि अगर आप भ्रूण

चेक करवाते हैं तो मैं यह केस नहीं लूंगी और आप डिलीवरी भी कहीं और करवा लीजिए।

डॉक्टर कहने लगी- वैसे तुम क्यों नहीं चाहती? क्या बेटा नहीं चाहिए तुम्हें? एक बेटी तो है तुम्हें फिर क्यों तुम खतरा मोल ले रही हो? महिला खतरा। वह चौंक पड़ी।

डॉक्टर साहब, आज मैं ही अगर ऐसा सोच लूं और बेटी को दुनिया में आने से रोक दूं तो भविष्य के संसार में माँ कौन बनेगी और सृष्टि कैसे चलेंगी?

३५४) क्या आप भी तैयार हैं? - अस्पताल में खड़े एक सिपाही का हाथ पकड़कर नर्स ने उसे उसके पिता के पास बेड़ तक पहुंचाया। मरीज के पास जाकर नर्स ने उनके कान में कहा, आपका बेटा आ गया उठ जाइए, उसने कई बार अपनी बात दोहराई लेकिन हृदय घात के दर्द के कारण वो आँख नहीं खोल पा रहे थे। उन्होंने हल्की सी बेहोशी में ही बेटे का हाथ कसकर पकड़ लिया। इसके बाद बेटे ने पिता के कान में कुछ कहा और उनका हाथ कसकर पकड़ लिया। नर्स भी सिपाही के लिए एक कुर्सी ले आई ताकि वो उनके पास बैठा रहे।

सिपाही पूरी रात पिता का हाथ पकड़ कर बैठा रहा और उन्हें हिम्मत देता। नर्स ने कई बार सिपाही से कहा कि वह घर जाकर आराम कर ले। लेकिन वो नहीं माना और रात भर कुर्सी पर पिता का हाथ पकड़कर बैठा रहा। उस छोटे से कमरे की कम रोशनी, अस्पताल स्टाफ का शोर, मरीजों के दर्द की आवाजों को सुनकर उसने उफ्फ तक नहीं की। दो रातें इसी तरह गुजर गईं और अगली सुबह वह बूढ़ा आदमी मर गया। नर्स सांत्वना देने सिपाही के पास आई, लेकिन सिपाही का सवाल सुनकर चौंक गई।

सिपाही ने नर्स से पूछा- कौन थे ये बुजुर्ग? नर्स आश्चर्य चकित थी और बोली- वो तुम्हारे पिता थे। तब सिपाही ने कहा- मैं नहीं जानता उन्हें, मैंने अपनी जिन्दगी में कभी नहीं देखा। नर्स ने कहा- तब आपने अभी तक कुछ बोला क्यों नहीं? सिपाही ने कहा- मैं जानता था कि मैं गलती कर रहा हूं लेकिन उस समय उन्हें मेरी जरूरत थी और वो इस हालत में नहीं थे कि मैं उन्हें बता पाता कि उनका बेटा यहां नहीं है। इसलिए जब भी किसी को तुम्हारी जरूरत हो तो उसकी मदद जरूर करना।

३५५) बुद्धिमान साधु - किसी राजमहल के द्वार पर एक साधु आया और द्वारपाल से बोला कि भीतर जाकर राजा से कहे कि उनका भाई आया है। द्वारपाल ने समझा कि शायद ये कोई दूर के रिश्ते में राजा का भाई हो जो संन्यास लेकर साधुओं की तरह रह रहा हो। सूचना मिलने पर राजा मुस्कुराया और साधु को भीतर बुलाकर अपने पास बैठा लिया। साधु ने पूछा- कहो अनुज, क्या हाल-चाल हैं तुम्हारे? मैं ठीक हूं आप कैसे हैं भैया? राजा बोला। साधु ने कहा- जिस महल में मैं रहता था, वह पुराना और जर्जर हो गया है। कभी भी टूटकर गिर सकता है। मेरे ३२ नौकर थे, वे भी एक-एक करके चले गए। पाँचों रानियाँ भी वृद्ध हो गईं और अब उनसे कोई काम नहीं होता।

यह सुनकर राजा ने साधु को १० सोने के सिक्के देने का आदेश दिया। साधु ने १० सोने के सिक्के कम बताए। तब राजा ने कहा, इस बार राज्य में सूखा पड़ा है, आप इतने से ही संतोष कर लें।

साधु बोला- मेरे साथ सात समुन्दर पार चलो, वहां सोने की खदानें हैं। मेरे पैर पड़ते ही समुद्र सूख जाएगा मेरे पैरों की

शक्ति तो आप देख ही चुके हैं। अब राजा ने साधु को १०० सोने के सिक्के देने का आदेश दिया। साधु के जाने के बाद मंत्रियों ने आश्चर्य से पूछा, क्षमा करिएगा राजन्, लेकिन जहाँ तक हम जानते हैं आपका कोई बड़ा भाई नहीं है, फिर आपने इस ठग को इतना इनाम क्यों दिया? राजन् ने समझाया- देखो, भाग्य के दो पहलू होते हैं। राजा और रंक। इस नाते उसने मुझे भाई कहा। जर्जर महल से उसका आशय उसके बूढ़े शरीर से था ३२ नौकर उसके दांत थे और ५ वृद्ध रानियाँ उसकी ५ इन्द्रियाँ हैं। समुद्र के बहाने उसने मुझे उलाहना दिया कि राजमहल में उसके पैर रखते ही मेरा राजकोष सूख गया क्योंकि मैं उसे मात्र दस सिक्के दे रहा था जबकि मेरी हैसियत उसे सोने से तौल देने की है। इसीलिए उसकी बुद्धिमानी से प्रसन्न होकर मैंने उसे सौ सिक्के दिए और कल से मैं उसे अपना सलाहकार नियुक्त करूंगा।

इस कहानी से ये सीख मिलती है कि किसी व्यक्ति के बाहरी रंग रूप से उसकी बुद्धिमत्ता का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता, इसलिए हमें सिर्फ इसलिए कि किसी ने खराब कपड़े पहने हैं या वो देखने में अच्छा नहीं है; उसके बारे में गलत विचार नहीं बनाने चाहिए।

३५६) हाथी के घमंड का इस तरह हुआ अंत - किसी जंगल में एक हाथी रहता था। वह बहुत ही घमंडी था। जब भी वह जंगल से गुजरता, सारे पशु-पक्षी डर के मारे भाग खड़े होते। दुष्ट हाथी जंगल के पशु-पक्षियों को बहुत तंग करता था। एक बार की बात है, एक पेड़ पर अपने घोसले में नन्ही चिड़िया ने अंडे दिये थे। हाथी को पेड़ की ओर बढ़ता देख चिड़िया चींची करते हुए उसको हाथ-पांव जोड़ने लगी कि वह उस पेड़ को न गिराये लेकिन हाथी तो अपनी मस्ती और घमंड में चूर था। उसने बिना कुछ सुने-समझे पेड़ गिरा दिया। पेड़ के गिरते ही चिड़िया के बच्चे घोसले समेत हाथी के पैरों तले कुचल गये। रोते-रोते चिड़िया ने हाथी को कहा कि मैं भी तुम्हें सबक सिखाकर ही दम लूंगी।

यह सुनकर हंसता हुआ हाथी अपनी मस्ती में आगे बढ़ चला तो बेचारी चिड़िया रोते-रोते सोचने लगी कि वास्तव में मैं नन्हीं सी चिड़िया इतने विशालकाय हाथी को क्या सबक सिखा पाऊंगी। तभी दूर कहीं से उड़ते हुए एक कठफोड़वा चिड़िया के पास आया। जब उसने चिड़िया की आपबीती सुनी तो उसे भी हाथी पर बड़ा गुस्सा आया। उसने चिड़िया के कान में हाथी को सबक सिखाने की योजना बता दी। चिड़िया उसे सुनकर खुश हो गई।

योजना के मुताबिक दोनों तुरंत कठफोड़वा के मित्र मक्खी और मेंढ़क के पास पहुंचे। जब उन्हें चिड़िया के दुख और हाथी के घमंड का पता चला तो उन्होंने भी तुरंत उसकी मदद करने का भरोसा दिया। अब चारों उस समय का इंतजार करने लगे जब हाथी खाना खाकर आराम करने के लिए कहीं लेटा हो। आखिर वह घड़ी भी आ गई। हाथी के सुस्ताते ही मक्खी योजना के मुताबिक उसके कान के पास जाकर गाना गाने लगी। जिसे सुनकर उसकी आंखें बंद होने लगी और वह सो गया। हाथी के सोते ही कठफोड़वा ने तुरंत अपनी चुकीली चोंच उसकी आंखों में चुभोकर उन्हें फोड़ दिया। दर्द से बिलबिलाता हाथी जोर-जोर से चिंघाड़ते हुए भागने लगा। पेड़ पर बैठे चिड़िया, कठफोड़वा और मक्खी यह तमाशा देख रहे थे। अंधा हाथी जब पानी की तलाश में पागलों की तरह भाग रहा था, तभी दलदल वाले तालाब के किनारे बैठे मेढ़क ने टर्राना शुरू कर दिया। पानी के लिए व्याकुल मेंढ़क की आवाज की दिशा में दौड़ता हाथी जैसे ही तालाब के किनारे पहुंचा कि दलदल में फंस गया। बाहर निकलने की लाख कोशिश के बावजूद अंतत: वह तड़प-तड़प कर मर गया।

३५७) दलाल जो चित्रकार बन गया - एक आदमी चालीस साल तक लंदन के बाजार में दलाली का काम करता रहा और सामाजिक तौर पर लोग जिस नजरिये से किसी की सफलता को आंकते हैं उन मायनों में वो सफल भी था क्योंकि सभी तरह के सुविधा के साधन उसके पास थे। धन-दौलत, एक सुंदर पत्नी भी। एक रात एकाएक वो घर से गायब हो गया। कुछ पता नहीं चला। जाननेवाले भरोसा नहीं कर पाए कि आखिर गया कहाँ होगा क्योंकि न तो उसका कोई प्रेम प्रसंग था जो सोचे कि किसी लड़की के साथ भाग गया हो और न नही कोई धार्मिक रुझान कि कहीं ये भी मान लें कि सन्यासी हो गया हो।

कुछ साल बाद पता चला कि वह आदमी पेरिस में चित्रकला सीख रहा था और भिखारियों जैसी हालत हो गई थी। सब परिवारवाले उससे मिलने भागे। मिलने वालों ने हैरानी से सवाल किया- ये क्या, तुम ये क्या कर रहे हो? तुम्हारे पास सब कुछ तो था फिर इसकी क्या जरूरत? तो उसने कहा- यही तो समस्या है कि सब ठीक ही था लेकिन जीवन में कोई उमंग नहीं थी न ही कोई नयापन। जीवन में हमेशा से इच्छा थी कि चित्रकार बनूं। दलाल बनने की चाह मैंने नहीं रखी जबकि सफलता मात्र एक संयोग था और ये हो गया। मैं अब खुश हूं, बेशक मेरे पास पहनने को अच्छे कपड़े नहीं हैं और न ही रहने को कोई घर। एक मित्र के यहाँ रहता हूं और चित्र बनाता हूं, बिक जाते हैं तो खाने पीने लायक पैसे आ जाते हैं। मेरी पत्नी से कहना, मुझे किसी से नाराजगी नहीं है और भले ही जिन्दगी में सब ठीक था लेकिन ठीक से कुछ नहीं होता। जिन्दगी में कुछ अधिक चाहिए होता है। ऐसे तो ठीक और हम सुविधापूर्ण जी लिए और जिन्दगी खत्म, कुछ ऐसा नहीं जो नया हो। वह वापस नहीं लौटा और एक दिन बड़ा चित्रकार बन गया।

३५८) मटके में मुंह - एक बार महाराज कृष्णदेव राय किसी बात पर तेनालीराम से नाराज हो गए। गुस्से में आकर उन्होंने तेनालीराम से भरी राजसभा में कह दिया कि कल से मुझे दरबार में अपना मुंह मत दिखाना। उसी समय तेनालीराम दरबार से चले गए।

दूसरे दिन जब महाराज राजसभा की ओर आ रहे थे तभी दरबार के एक तेनालीराम से जलनेवाले व्यक्ति ने उन्हें यह कहकर भड़का दिया कि तेनालीराम आपके आदेश के खिलाफ दरबार में उपस्थित हैं।

बस यह सुनते ही महाराज आग-बबूला हो गए। तेनालीराम की शिकायत करनेवाला दरबारी आगे बोला- आपने साफ कहा था कि दरबार में आने पर कोड़े पड़ेंगे, पर आपके इस आदेश की उन्होंने कोई परवाह नहीं की। इसका सीधा-सीधा मतलब यही है कि तेनालीराम आपके आदेश की अवहेलना करने से भी नहीं डरते हैं।

राजा दरबार में पहुंचे। उन्होंने देखा कि सिर पर मिट्टी का एक घड़ा ओढ़े तेनालीराम विचित्र प्रकार की हरकतें कर रहे हैं। घड़े पर चारों ओर जानवरों के मुंह बने हुए थे।

तेनालीराम। ये क्या बेहूदगी है? तुमने हमारी आज्ञा का उल्लंघन किया है। महाराज ने कहा। दंडस्वरूप कोड़े खाने के लिए तैयार हो जाओ। वह आगे बोले।

मैंने आपकी कौन-सी आज्ञा नहीं मानी महाराज? घड़े में मुंह छिपाए हुए तेनालीराम फिर बोले, आपने कहा था कि कल मै दरबार में अपना मुंह न दिखाऊं। तो क्या आपको अभी भी मेरा मुंह दिख रहा है? हे भगवान। कहीं कुम्हार ने मुझे फूटा

घड़ा तो नहीं दे दिया।

यह सुनते ही महाराज की हंसी छूट गई। वह बोले, तुम जैसे बुद्धिमान और हाजिरजवाब व्यक्ति से कोई नाराज हो ही नहीं सकता। अब इस घड़े को हटाओ और सीधी तरह अपना आसन ग्रहण करो।

३५९) हाथ की सफाई के हुनर से बचाई जान - एक राजा था। दरबार-व्यवस्था से लेकर सुरक्षा व्यवस्था तक सब चाक चौबंद। अपने सैन्य बल को बढ़ाने के लिए उसने खास मेहनत की थी। तलवार बाजी, शासन कला, खेलकूद के अलावा उस राजा में एक ऐसा शौक भी था, जो अमूमन राजाओं में देखने को नहीं मिलता। राजा को कालीन बुनने का बहुत शौक था। उसके हाथ के इस हुनर की सराहना तो सब करते लेकिन साथ ही यह भी कहते कि ये काम राजाओं के करने लायक नहीं हैं। एक बार राजा शिकार खेलने गया तो जंगल में अपने साथियों से बिछड़ गया। घने जंगल में डाकुओं ने उसे घेर लिया। राजा से ज्यादा कुछ न मिलने पर वे उसे मारने लगे। तभी राजा को एक युक्ति सूझी। उसने डाकुओं से कहा कि अगर तुम मुझे कालीन बुनने का सामान ला दो तो मैं तुम्हें इस राज्य के राजा से सौ सोने की अशर्फियां दिलवा सकता हूं। डाकुओं ने उसे सामान ला दिया। कुछ ही दिन में राजा ने कालीन बुनकर उन डाकुओं को दिया और राजमहल भेज दिया। रानी ने जब कालीन खोला तो राजा के काम को पहचान गई और बुनाई में छिपे संदेश को भी पढ़ लिया। उन डाकुओं को पकड़कर वापस जंगल ले जाया गया और राजा को छुड़वा लिया गया। आज राजा के हाथ के हुनर ने उसकी जान बचा ली थी।

३६०) छोटे छोटे काम - एक लड़का सुबह सुबह दौड़ने को जाया करता था। आते जाते वो एक बूढ़ी महिला को देखता था। वो बूढ़ी महिला तालाब के किनारे छोटे छोटे कछुवों की पीठ को साफ किया करती थी। एक दिन उसने इसके पीछे का कारण जानने की सोची।

वो लड़का महिला के पास गया और उनका अभिवादन कर बोला- नमस्ते आंटी। मैं आपको हमेशा इन कछुवों की पीठ को साफ करते हुए देखता हूं। आप ऐसा किस वजह से करती हो? महिला ने उस मासूम से लड़के को देखा और इस पर लड़के को जवाब दिया- मैं हर रविवार यहाँ आती हूं और इन छोटे छोटे कछुवों की पीठ साफ करते हुए सुख शांति का अनुभव लेती हूं। क्योंकि इनकी पीठ पर जो कवच होता है उस पर कचरा जमा हो जाने की वजह से इनकी गर्मी पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए ये कछुवे तैरने में मुश्किल का सामना करते हैं। कुछ समय बाद तक अगर ऐसा ही रहे तो ये कवच भी कमजोर हो जाते हैं इसलिए कवच को साफ करती हूं।

यह सुनकर लड़का बड़ा हैरान था। उसने फिर एक जाना पहचाना सा सवाल किया और बोला- बेशक आप बहुत अच्छा काम कर रही हैं लेकिन फिर भी आंटी एक बात सोचिए कि इन जैसे कितने कछुवे है जो इनसे भी बुरी हालत में है जबकि आप सभी के लिए ये नहीं कर सकते तो उनक क्या? क्योंकि आपके अकेले के बदलने से तो कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा न।

महिला ने बड़ा ही असरदार जवाब दिया कि भले ही मेरे इस काम से दुनिया में कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा, लेकिन सोचो इस एक कछुवे की जिन्दगी में तो बदलाव आएगा ही न। तो क्यों न हम छोटे बदलाव से ही शुरुआत करें?

लोगों की सही परख - गुरुकुल में शिष्यों की शिक्षा पूर्ण हो चुकी थी और आज उनका आखिरी दिन था। गुरुकुल की परम्परा के अनुसार गुरुजी अपने शिष्यों को आखिरी उपदेश देने की तैयारी कर रहे थे। जब सारे शिष्य गुरुकुल के मुख्य कक्ष में इकट्ठे हो गए तो गुरुजी ने अपना उपदेश देना शुरू किया। उनके हाथ में लकड़ी के कुछ खिलौने थे। उन्होंने शिष्यों को वो खिलौने दिखाते हुए बोले- मेरे हाथ में जो ये खिलौने है आपको इन तीनों में से अंतर खोजना है। गुरुजी की आज्ञा पाकर शिष्य बड़े ध्यान से खिलौनों को देखने लगे। वो तीनो लकड़ी के बने हुए खिलौने थे बिलकुल एक सामान दिखने वाले गुड्डे थे, जिनमें अंतर खोजना बहुत मुश्किल था। तभी एक शिष्य ने एक गुड्डे को परखते हुए कहा- अरे ये देखो इसके कान में छेद हैं। यह संकेत काफी था इतने में सारे शिष्यों ने एक एक करके उन तीनों में अंतर खोज लिया। तो उन सबने गुरुजी से कहा कि गुरुजी इस गुड्डों में बस यही एक अंतर है एक के कानों में छेद है। एक के मुंह में और एक कान में छेद है और एक के केवल एक कान में छेद है। उनका जवाब सुनकर गुरुजी बोले- बिलकुल सही कहा। अब गुरुजी ने शिष्यों को धातु का एक पतला तार देते हुए उसे गुड्डों के कान में डालने को कहा। शिष्यों ने वैसा ही किया तो क्या देखते हैं एक गुड्डे के कान से होते हुए वो तार दूसरे कान से निकल गया। एक और गुड्डे के कान से होकर वो तार मुंह से निकल गया, जबकि एक के कान में तार डालने पर वो कहीं से नहीं निकला। इस पर गुरुजी ने उन्हें समझाया कि देखो इसी तरह तुम्हें जिन्दगी में तीन तरह के लोग मिलेंगे। एक वो जिनसे अगर तुम कुछ कहते हो तो वो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं। ऐसे लोगों के साथ कोई भी बात तुम साझा मत करना। एक वो लोग होंगे जो तुम्हारी बातें सुनकर किसी और के सामने जाकर कहेंगे, ऐसे में उनसे कोई भी अहम बात साझा मत करना। और एक वो होंगे जिनसे तुम कोई भी बात कहोगे जिन पर तुम भरोसा कर सकते हो उसी तीसरे गुड्डे की तरह और उनसे तुम किसी भी बात के विषय में सलाह ले सकते हो। ऐसे लोग तुम्हारी ताकत बनेंगें। बस आपको लोगों की सही परख होना आवश्यक है।

३६१) जीवन बदल गया - एक भिखारी एक रेल्वे स्टेशन पर एक पेंसिलों का कटोरा लिए बैठा था कि उधर से एक अधिकारी उसके पास से गुजरा उसने उसे देखा और कोई भी पेंसिल नहीं ली जबकि उसके कटोरे में उसे भिखारी समझ कर दया दिखाकर कुछ पैसे उसके कटोरे में डाल दिए और ट्रेन में बैठ गया।

ट्रेन चलने ही वाली थी कि एकाएक अधिकारी उस डिब्बे में से उतरा और आकर भिखारी से कहा कि- मैं कुछ पेंसिले भी लेना चाहूंगा क्योंकि आखिर तुम भी एक व्यापारी हो और मैं भी। और कुछ पेंसिलें लेकर वह जाकर ट्रेन में बैठ गया। कुछ महीनों बाद वह अधिकारी एक कार्यक्रम में गया तो वहाँ उसने देखा कि वह भिखारी भी उसी पार्टी में अच्छे कपड़ों में बाकी लोगों की ही वेशभूषा में वहाँ मौजूद था।

भिखारी ने अधिकारी को देखा तो उसके पास गया और उससे कहा कि- आप शायद मुझे न पहचानें लेकिन मैं आपको जानता हूं। तो उस पर उस अधिकारी ने उस भिखारी को पहचानते हुए बोला कि हाँ मुझे याद है तुम स्टेशन पर कुछ महीनों पहले भीख मांग रहे थे लेकिन तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तो भिखारी ने जवाब दिया कि आपने उस दिन मुझे भीख देने की बजाय मेरे साथ बड़े सम्मान से पेश आए और मुझे एक बहुत बड़ी सीख दे गए। वैसा करके आपने मुझे मेरा आत्मसम्मान लौटा दिया और आपके जाने के बाद मुझे ये एहसास हुआ कि मैं जो अब हूं उससे कहीं बेहतर कर सकता

हूं। उसके बाद मैंने कुछ करने की ठान ली और मेहनत के साथ काम करने लगा। इसी वजह से आज मैं यहां हूं। आपके उस सम्मानपूर्ण बर्ताव ने मेरी जिन्दगी बदल दी है और मैं मेरा आत्मसम्मान वापस लौटाने में आपने जो मेरी मदद की, उसके लिए आपको धन्यवाद देता दूं। अपने आत्मसम्मान की वजह से उस भिखारी ने अपनी जिन्दगी बदल लीं जबकि हममें से हर कोई जब मुश्किल वक्त आता है तो हम सोचते हैं कि लोग हमसे आगे निकल रहे हैं और खुद को छोटा समझने लगते हैं जबकि सब हमारे हाथ में ही होता है।

३६२) कल की चिंता में आज क्यों करें खराब - एक नगर में एक संपन्न सेठजी रहते थे। वह दिनभर खूब मेहनत से काम करते थे। एक दिन उन्हें न जाने क्या सूझा कि अपने मुनीम को बुलाकर कहा- पता करो हमारे पास कितना धन है कब तक के लिए पर्याप्त है? कुछ दिन बात मुनीम हिसाब लेकर आया और सेठ जी से बोला- जिस हिसाब से आज खर्चा हो रहा है, उस तरह अगर आज से कोई कमाई न भी हो, तो आपकी सात पीढ़ियां खा सकती हैं। सेठ जी चौंक पड़े। पूछा, तब आठवीं पीढ़ी का क्या होगा? सेठ जी सोचने लगे और तनाव में आ गए। फिर बीमार रहने लगे। बहुत इलाज कराया, मगर कुछ फर्क नहीं पड़ा। एक दिन सेठ जी का एक दोस्त हालचाल पूछने आया। सेठजी बोले- इतना कमाया, फिर भी आठवीं पीढ़ी के लिए कुछ नहीं है।

दोस्त बोला- एक पंडित जी थोड़ी दूर पर रहते हैं, अगर उन्हें सुबह खाना खिलाएं, तो आपका रोग ठीक हो जाएगा।

अगले ही दिन सेठ जी भोजन लेकर पंडित जी के पास पहुंचे। पंडित जी ने आदर के साथ बैठाया। फिर अपनी पत्नी को आवाज दी- सेठ जी खाना लेकर आए हैं।

इस पर पंडित जी की पत्नी बोली- खाना तो कोई दे गया है।

पंडित जी ने कहा- सेठ जी, आज का खाना तो कोई दे गया है। इसलिए आपका भोजन स्वीकार नहीं कर सकते। हमारा नियम है कि सुबह जो एक समय का खाना पहले दे जाए, हम उसे ही स्वीकार करते हैं। हमें क्षमा करें।

सेठ जी बोले- क्या कल के लिए ले आऊं? पंडित जी बोले- हम कल के लिए आज नहीं सोचते। कल आएगा, तो ईश्वर अपने आप भेज देगा।

सेठजी घर की ओर चल पड़े। रास्ते भर वह सोचते रहे कि कैसा आदमी है यह। इसे कल की बिल्कुल भी चिंता नहीं है और मैं अपनी आठवीं पीढ़ी को लेकर रो रहा हूं। उनकी आंखें खुल गईं। सेठजी सारी चिंता छोड़कर सुख से रहने लगे।

सीख- कल की चिंता में हमें अपना आज खराब नहीं करना चाहिए। धार्मिक ग्रंथों में भी इस बात को प्रमुखता से बताया गया है कि अगर व्यक्ति वर्तमान में जीए तो उसका जीवन सुखमय हो जाता है। अपने कल को सुखद बनाने के लिए अपना आज खराब नहीं करना चाहिए।

३६३) माँ का बच्चा - एक दिन थॉमस अल्वा एडिसन स्कूल से अपने घर आए और स्कूल से मिले हुए पेपर को अपनी मां से देते हुए बोले- माँ मेरे शिक्षक ने मुझे यह पत्र दिया है और कहा है कि इसे केवल अपनी माँ को ही देना, बताओ माँ आखिर इसमें ऐसा क्या लिखा है मुझे जानने की बड़ी उत्सुकता है।

तब पेपर को पढ़ते हुए माँ की आँखें रुक गई और तेज आवाज में पत्र पढ़ते हुए बोली- आपका बेटा बहुत ही

प्रतिभाशाली है। यह विद्यालय उसकी प्रतिभा के आगे बहुत छोटा है और उसे और बेहतर शिक्षा देने के लिए हमारे पास इतने काबिल शिक्षक नहीं है। इसलिए आप उसे खुद पढ़ाएं या हमारे स्कूल से भी अच्छे स्कूल में पढ़ने को भेजें। ये सब सुनने के बाद एडिसन अपने आप पर गर्व करने लगा और माँ के देखरेख में अपनी पढ़ाई करने लगा। लेकिन एडिसन की माँ की मृत्यु के कई साल बाद एडिसन तो एक महान वैज्ञानिक बन गए और एक दिन अपने कमरों की सफाई कर रहे थे तो उन्हें अलमारी में रखा हुआ वह पत्र मिला जिसे उन्होंने खोला और पढ़ने लगे, उसमें लिखा था कि आपका बेटा मानसिक रूप से बीमार है जिससे उसकी आगे की पढ़ाई इस स्कूल में नहीं हो सकती है इसलिए उसे अब स्कूल से निकाला जा रहा है। इसे पढ़ते ही एडिसन एकदम भावुक हो गए और फिर अपनी डायरी में लिखा कि- थॉमस एडिसन तो एक मानसिक रूप से बीमार बच्चा था लेकिन उसकी माँ ने अपने बेटे को सदी का सबसे प्रतिभाशाली व्यक्ति बना दिया। नैतिक शिक्षा जीवन में हम क्या हैं कैसे हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन अगर अपने ऊपर माँ की ममता और प्यार हो तो मानसिक रूप से भी बीमार बच्चे की भविष्य और नियति को बदला जा सकता है और बच्चा माँ के आँचल से दुनिया का सबसे महान व्यक्ति भी बन सकता है।

३६४) दुष्टता का फल - कंचनपुर के एक धनी व्यापारी के घर में रसोई में एक कबूतर ने घोंसला बना रखा था। किसी दिन एक लालची कौवा उधर से आ निकला। वहाँ मछली को देखकर उसके मुंह में पानी आ गया। तब उसके मन में विचार आया कि मुझे इस रसोईघर में घुसना चाहिए लेकिन कैसे घुसूं, ये सोचकर वो परेशान था तभी उसकी नजर कबूतरों के घोंसले पर पड़ी। उसने सोचा कि मैं अगर कबूतर से दोस्ती कर लूं तो शायद मेरी बात बन जाए। कबूतर जब दाना चुगने के लिए बाहर निकलता है तो कौवा उसके साथ साथ निकलता है। थोड़ी देर बाद कबूतर ने पीछे मुड़कर देखा कि कौवा उसके पीछे है। इस पर कबूतर ने कौवे से कहा- भाई तुम मेरे पीछे क्यों हो? इस पर कौवे ने कबूतर से कहा- तुम मुझे अच्छे लगते हो इसलिए मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूं। इस पर कौवे से कबूतर ने कहा- हम कैसे दोस्त बन सकते है? हमारा और तुम्हारा भोजन भी तो अगल अलग है। मैं बीज खाता हूं और तुम कीड़े। इस पर कौवे ने चापलूसी दिखाते हुए कहा- कौनसी बड़ी बात है, मेरे पास घर नहीं है इसलिए हम साथ साथ तो रह ही सकते हैं न और साथ ही भोजन खोजने आया करेंगे। तुम अपना और मैं अपना। एक दिन घर के मालिक ने देखा कि कबूतर के साथ एक कौवा भी है तो उसने सोचा कि चलो कबूतर का मित्र होगा इसलिए उसने उस बारे में अधिक नहीं सोचा। अगले दिन कबूतर खाना खोजने के लिए साथ चलने को कहता तो कौवे ने पेट दर्द का बहाना बनाकर मना कर दिया। इस पर कबूतर अकेला ही चला गया क्योंकि कौवे ने घर के मालिक को यह कहते हुए सुना था नौकर को कि आज कुछ मेहमान आ रहे हैं इसलिए तुम मछली बना लेना। उधर कौवा नौकर के रसोई से बाहर निकलने का इंतजार ही कर रहा था कि उसके जाते ही कौवे ने थाली को झपटा और मछली उठाकर आराम से खाने लगा। नौकर जब वापस आया तो कौवे को मछली खाते देख गुस्से से भर गया और उसने कौवे को पकड़ कर गर्दन मरोड़ कर मार डाला।

३६५) तूफान से लड़ने की तैयारी - किशन के पास सैकड़ों एकड़ जमीन थी। पर वह जमीन समुद्र तट पर थी। समुद्र तट पर बसे होने के कारण तूफान का खतरा हमेशा बना रहा था। इसीलिए कोई उसके खेतों में काम करने को तैयार

नहीं होता था। किशन को मजदूर मिल तो जाते थे। पर जैसे ही उन्हें पता चलता था कि किशन के खेत समुद्र तट पर हैं, मजदूर लौट जाते थे। फसल तैयार हो गई थी। तुरंत काम शुरू करने का समय था, नहीं तो फसल खराब हो जाती। किशन को मजदूरों की सख्त जरूरत थी।

वह उन्हें दोगुने मेहनताने पर भी मनाने में नाकामयाब रहा। फिर उसे एक मजदूर मिला, जो कुपोषण का मरीज लगता था। पर किशन के पास और कोई चारा नहीं था। उसने उससे पूछा, क्या तुम यह काम कर पाओगे? मजदूर बोला, जब तूफान आता है, तब मैं चैन की नींद सोता हूं। किशन को उसकी बात समझ में नहीं आई। लेकिन उसने उसे काम पर रख लिया। कुछ दिन बीत गए। मजदूर का काम किशन को पसंद आने लगा। वह सूरज की पहली किरण से देर रात तक काम करता।

एक दिन आधी रात को किशन को बादलों के गरजने की आवाज ने उठा दिया। तूफान आनेवाला था। किशन तुरंत मजदूर को ढूंढता हुआ उसके कमरे की तरफ दौड़ा। वहां पहुंचकर किशन ने देखा कि मजदूर चैन की नींद सोरहा है। किशन ने उससे कहा, उठो, नहीं तो तूफान सब तहस-नहस कर देगा। मजदूर बोला, मैंने पहले ही कहा था कि जब तूफान आता है, तो मैं चैन की नींद सोता हूं। किशन को उस पर गुस्सा आया। पर खेत और जानवरों को बचाना ज्यादा जरूरी था। किशन खेतों की तरफ दौड़ा तो उसने देखा, सारी गाय, भैंस और मुर्गियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जा चुका था। सारी फसल सुरक्षित थी। खेतों में बरसाती फैली दी गई थी। अब किशन को मजदूर की बात समझ में आई। पहले से तैयारी बुद्धिमानी है, इससे अफरा-तफरी की आशंका नहीं रहती।

३६६) सत्य आत्मा की खोज - सम्बोधि के बाद बुद्ध वाराणसी चले आए। उन्होंने चारिका-विचरण के लिए उरूबल वन में प्रवेश किया और एक घने वृक्ष की छाया में पद्मासन लगाकर बैठ गए। तभी किसी की खोजबीन करते लोगों की आहट और बोलने की आवाजें सुनाई दीं। किसी ने कहा, वह इधर ही गई होगी दूसरा स्वर सुनाई दिया पर वह इस वन खंड से भागकर जाएगी कहां? कितने अमूल्य थे हमारे रत्नालंकार। दूसरे ने एक वृक्ष की छाया में ठहरकर संतोष की सांस ली। दूसरे साथी आ गए। हम उरूबल का कोना-कोना छान मारेंगे। गणिका का विश्वास करनेवाला धोखा खाता ही है। वन में प्रवेश करते ही उन्हें बुद्ध के दर्शन हुए। दिव्य पुरुष समझ उनकी चरण धूलि मस्तक पर चढ़ाई। फिर पूछा, आपने उसको इधर से जाते देखा है? मुझे अपने-आपके सिवा दूसरा दिख ही नहीं रहा है। भंते, हमारा आशय एक स्त्री से है। वह गणिका है। हम लोग अपनी-अपनी पत्नियों के साथ वन-विहार करने आए थे। पत्नी के अभाव में एक मित्र के मनोरंजन के लिए वह हमारे साथ थी। हमें विशेष रागरंग में लिप्त देखकर हमारे कीमती रत्नालंकार आदि लेकर वह इसी वन खंड में अदृश्य हो गई है। भागकर जाएगी कहां, पकड़ में तो आएगी ही। हमें उसी की खोज है। भद्रे, जगत के विषय-भोग और सुख नश्वर हैं। रत्नालंकार आदि तो आते-जाते रहते हैं। स्त्री की खोज से कहीं अधिक सत्य आत्मा की खोज आवश्यक है। भगवान बुद्ध ने धर्मचक्षु जाग्रत किया। अपनी शीतल मुस्कान बिखेर दी। मुस्कान उन मित्रों को अभिभूत कर गई। कुछ इस तरह कि वे गणिका को खोजना भूल गए और कहने लगे, भंते, हमें स्त्री की आवश्यकता नहीं है, आत्मा की खोज करनी है।

३६७) जैसे को तैसा - एक जादूगर ने घोषणा की कि वह जादू के कुछ नये करतब दिखाना चाहता है, पर दिखाएगा तभी, जब राजकुमार स्वयं सभा में उपस्थित होंगे। राजकुमार ने जब यह आग्रह सुना तो सहर्ष उसका जादू देखने सभा में

आ डटे। जादूगर के हाथ में मटर के दाने थे। जादूगर के सामने एक व्यक्ति सुई लिए खड़ा हुआ था। जादूगर किसी संकेत में धीरे से हाथ हिलाया। सुई में मटर का दाना पिरो गया। इसी तरह उसने कई दाने पिरोए। यह चमत्कार देखकर राजकुमार बोला, जादूगर, मैं तुम्हें इस करतब के लिए इनाम दूँगा। राजकुमार ने अपने मंत्री से कुछ मंत्रणा की। मंत्री महल के भीतर चला गया। कुछ समय बाद थाल में एक बड़ा सा थैला रखे हुए वह वापस सभा में उपस्थित हुआ। जादूगर ने जब भारी-भरकर थैला देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह सोचने लगा, अवश्य इस थैले में स्वर्णमुद्राएं होंगी। पर जैसे ही राजकुमार ने थैला खोलने की आज्ञ दी, सभास्थल पर उपस्थित समुदाय चकित रह गया। थैला मटर के दानों से भरा था। राजकुमार बोला, हे जादूगर। अपने इस महान करतब को दिखाने के लिए तुम्हें मटर की जरूरत पड़ेगी, अत: मैं तुम्हें यही इनाम भेंट करता हूँ। आसान काम मुश्किल से करने का परिणाम शुभ नहीं होता।

३६८) सफेद हाथी - बच्चों के हाथ से बने हस्तकला के कुछ नमूने बेचने के लिए एक महिला की दुकान पर रखे गए थे। हिल्डा ने सोचा, मेरे साथी अपने को मुझसे अधिक कुशल समझते हैं। अगर मैं दुकान की मालकिन से जाकर पूछूं तो वह मुझे सच्चाई बताएगी कि लोग किसके हाथों की बनी चीजें ज्यादा पसंद कर रहे हैं। वह उस दूकान पर गई। उसने एक गुड़िया की तरफ संकेत कर दाम पूछा, जो उसकी एक साथिन के हाथों बनी थी। यह मैं आपको किसी भी हालत में १० रुपये से नीचे नहीं दूंगी। मालकिन ने कहा। और यह? हिल्डा ने दूसरी साथिन के हाथ के बने गुलदस्ते की तरफ संकेत किया। इसकी कीमत २० रुपये हैं। यह इधर जो हाथी है इसकी कीमत? हिल्डा ने अपने हाथ से बने हाथी की तरफ संकेत किया। यह तो मैं तुम्हें मुफ्त उपहार के रूप में दे सकती हूं, अगर तुम पहलेवाली दोनों चीजें खरीदो तो। हिल्डा यह सुनकर शर्म से गड़ गई और अपनी ईर्ष्या भावना पर पछताने लगी। घमंड से आदमी फूल सकता है, फैल नहीं सकता।

३६९) इंसानियत - एक बार बहुत जोर का अकाल पड़ा। आकाश से एक बूंद पानी न टपका। खेत सूख गये। नदियां सूख गईं। ऐसी दशा हो गई कि न तो पहाड़ों पर सब्जी दिखाई देती थी, न बागों में हरी डालियाँ। खेत टिड्डियों ने चाट डाले थे। आदमी टिड्डियों को खा गये थे। इन्हीं दिनों एक मित्र मुझसे मिलने आया। उसकी हड्डियों पर केवल खाल बाकी रह गई थी। उसे देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनवान और अमीर आदमी था। उसके पास सवारी के लिए बीसों घोड़े और रहने के लिए आलीशान हवेलियां थीं। पचासों नौकर थे। मैंने उससे पूछा, तुम्हारी यह हालत कैसे हो गई? वह बोला, आपको क्या इस देश का हाल मालूम नहीं है? कितनी मुसीबतें और आफतें आई हुई हैं। कितना भयंकर अकाल पड़ा हुआ है। हजारों आदमी भूख से मर गये हैं। मैंने कहा, तुमको इस मुसीबत से क्या मतलब? तुम इतने अमीर हो कि अगर ऐसे सैकड़ों अकाल भी पड़े तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वह बोला, आपका कहना सच है, मगर इंसान वही है, जो दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझे। जब मैं लोगों को फाका करते देखता था तो मेरे मुंह में खाने का एक टुकड़ा नहीं उतरता था। इसलिए मैंने अपनी सारी जायदाद और सामान बेचकर पैसा गरीबों और फकीरों में बांट दिया। इस बात को याद रखो कि उस तन्दुरुस्त आदमी का सुख नष्ट हो जाता है, जिसके पास बीमार बैठा हो।

३७०) सुकरात का दर्पण प्रेम - दार्शनिक सुकरात सुंदर नहीं थे। उनकी एक ऐसी आदत थी जो उनके शिष्यों को परेशानी में डालती थी। वे समझ नहीं पाते थे कि सुंदर न होते हुए भी सुकरात बार-बार अपना चेहरा आईने में क्यों देखते

हैं? चेहरा सुंदर हो तो आईने में देखा भी जाए, लेकिन असुंदर चेहरेवाले गुरुदेव का दर्पण प्रेम का क्या रहस्य है, यह उनकी समझ से परे था। एक दिन शिष्यों ने देखा कि सुकरात काफी देर से आईना देख रहे हैं। शिष्य अचानक हंस पड़े। सुकरात उनकी हंसी सुनकर मुस्कुराए। उन्हें अपने पास बुलाया। फिर आईना एक तरफ रखते हुए बोले, तुम लोग क्या इस बात पर हंस रहे हो कि मैं भद्दा हूं, फिर भी शीशा क्यों देखता हूं? तुम्हें शायद नहीं मालूम कि सुंदर आदमी को शीशा देखने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। जो स्वयं सुंदर है वह शीशा क्यों देखे? शीशा देखने की जरूरत उसे है, जिसका चेहरा भद्दा हो। मैं शीशे में देखते हुए यह सोचता हूं कि मेरा यह चेहरा भद्दा तो है, लेकिन मुझसे ऐसा कोई काम न हो जाए, जिससे यह और अधिक भद्दा बन जाए। इसलिए खुद को सावधान करने के लिए मैं बार-बार आईना देखता हूं।

३७१) खुदा का अहसान - एक बार मैं सफर करता हुआ गांव की एक धर्मशाला में रुका। मेरे पैरों में कांटे लग गये थे। पैसे की तंगी के कारण जूता नहीं खरीद सका था। जब मैं कांटे निकाल रहा था तो मुझे बड़ा कष्ट और मानसिक वेदना हो रही थी। सोचता था कि मेरी भी क्या जिन्दगी है कि मुझे जूता तक मअस्सर नहीं हो सका। इतने में ही एक मुसाफिर वहां आया। उसकी एक टांग नहीं थी और वह बगल में लकड़ी लगाकर चल रहा था। उसको देखते ही मैं अपनी तकलीफ भूल गया। मैंने भगवान को धन्यवाद दिया और कहा ऐ खुदा, तूने मुझे जूते नहीं दिये, किन्तु पैर तो दिये। इसके तो पैर भी नहीं है।

३७२) दो मालिकों की सेवा - एक बार एक नौजवान एक महात्मा पुरुष के पास आया और बोला, मैं अमर जीवन प्राप्त करना चाहता हूं। मुझे क्या करना चाहिए? महात्मा ने कहा, जाओ, अपनी सारी संपत्ति बेच दो। जो पैसे प्राप्त हों उन्हें गरीबों में बांट दो। नौजवान बड़ा अमीर था। उसके पास लाखों-करोड़ों की धन संपत्ति थी। महात्मा की बात सुनकर वह स्तब्ध रह गया। उसके लिए यह काम सबसे कठिन था। युवक ने लाचारी से महात्मा की ओर देखा। महात्मा मुस्कुराए और बोले, कोई भी आदमी एक समय में परमात्मा और दौलत दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता। तुम्हें परमात्मा के रास्ते पर चलना है तो दूसरा रास्ता छोड़ना होगा।

३७३) प्रोफेसर, छात्र और चार बीवियां - प्रोफेसर चटर्जी बोले, सोचो, क्या होगा, अगर आप सबकी चार-चार बीवियां हों। सारे छात्र हंसने लगे। प्रोफेसर बोले, एक राजा की चार बीवियां थीं। उसकी पहली बीवी सबसे खूबसूरत थी। हालांकि दूसरी रानी भी कम खूबसूरत नहीं थी। पूरा राज्य उसी की मदद से चलता था। राजा की तीसरी बीवी सलाहकार थी। लेकिन राजा अपनी चौथी बीवी की तरफ एकदम नहीं देखता था। जबकि वही राजा की सबसे ज्यादा देखभाल करती थी।

एक बार राज्य पर हमला हुआ और राजा घायल हो गया। उसका सारा खजाना लुट गया। राजा ने पहली बीवी से कहा, धन तो आता-जाता रहता है। मुझे विश्वास है, तुम मेरा साथ कभी नहीं छोड़ोगी। रानी बोली, मैं तो राजा की बीवी हूं। अब तुम राजा नहीं, मैं चली। उसने अपनी दूसरी बीवी से कहा, मुझे पता है कि तुम मेरा साथ नहीं छोड़ोगी। दूसरी रानी बोली, मैं तुम्हारे साथ रहीं, तो मुझे कोई नहीं देखेगा। मैं चली। वह अपनी तीसरी बीवी से बोला, तुम तो मेरा साथ नहीं छोड़ोगी न? तीसरी बीवी बोली, अब जब कोई निर्णय ही नहीं बचा, तो मेरा यहां क्या काम? राजा एकदम टूट गया। पीछे से राजा की चौथी बीवी आई और उसकी पीठ पर हाथ रखकर बोली, मैं मरते दम तक तुम्हारा साथ दूंगी। राजा को खुशी के साथ

बहुत ग्लानि भी हुई। जिस रानी को उसने कभी भाव नहीं दिया, वह साथ खड़ी थी। प्रोफेसर बोले, अब अगर मैं कहूं कि हम सबकी चार बीवियां हैं तो? छात्र फिर हंसने लगे। प्रोफेसर बोले, हमारी पहली बीवी है, हमारा शरीर। हम जितना भी चाहें, वह अपनी सुंदरता खो देता है और मृत्यु पर हमें छोड़ देता है। हमारी दूसरी बीवी है हमारी दौलत-शोहरत, जो कभी किसे के पास नहीं ठहरती। हमारी तीसरी बीवी है रिश्ते, परिवार, दोस्त। एक सीमा के बाद वे भी हमारा साथ नहीं दे पाते। हमारी चौथी बीवी है हमारी आत्मा, हमारा मन, हमारा विवेक, जो हर स्थिति में साथ रहते हैं। अपने आपको पहचान लोगे, तो जीवन जीना सरल हो जाएगा।

३७५) मिट्टी का थैला - एक अमीर जमींदार ने अपनी विधवा पड़ोसन की जमीन का टुकड़ा हथिया लिया। एक दिन वह उसी जमीन पर चलती हुई उस जमींदार के सामने खड़ी हो गई। फिर आँखों में आँसू भरकर जमींदार से बोली, क्या तुम मेरे बाप-दादों की इस जमीन से मुझे यह थैला भर मिट्टी लेने दोगे। अमीर जमींदार ने उपहास भरे स्वर में कहा, हालांकि तुम्हारी यह इच्छा बड़ी बेवकूफी भरी है, फिर भी तुम जितनी चाहो, मिट्टी थैले में भरकर ले जा सकती हो। विधवा ने मिट्टी से अपना थैला भरा और बोली, मेरी तुमसे एक और प्रार्थना है। क्या तुम यह थैला उठाकर मेरे कंधों पर रख सकोगे। जमींदार ने कुछ पल सोचा, फिर एकदम इन्कार कर दिया। विधवा पुन: गिड़गिड़ाई। अंत में जमींदार को उसकी बात पर राजी होना पड़ा। पर जैसे ही उसने थैला उठाने की कोशिश की, उसके तो पसीने छूट गए। वह झुंझलाकर बोला, इतना भारी थैला उठाना मेरे बूते का नहीं। यह सुनकर विधवा ने कहा, अगर यह मिट्टी का थैला तुम्हारे लिए उठा पाना संभव नहीं तो तुम मेरी सारी जमीन का बोझा किस तरह उठा पाओगे? जमींदार विधवा का यह तर्क सुनकर दंग रह गया। उसे अपनी हरकत पर बड़ी शर्म आई। स्वार्थ में सद्‌गुण ऐसे खो जाते हैं जैसे समुद्र में नदियाँ।

३७६) हीरे की अंगूठी - विली एक व्यापारी था। वह अधिक धन कमाने की इच्छा से समुद्र पार के देशों में गया। कड़ी मेहनत से उसने अच्छा-खासा धन कमाया और तीन साल बाद अपने देश वापस लौटा। जहाज पर ही उसे पता चला कि उसके तमाम रिश्तेदार पास ही के एक बंगले में हो रहे समारोह में उपस्थित हैं। जब वह बंगले में पहुंचा तो उसने पाया कि उसके रिश्तेदारों ने उससे मिलकर कोई गर्मजोशी नहीं दिखाई, क्योंकि उनकी निगाहें सबसे पहले उसके गंदे कपड़ों पर गई थीं और उन्होंने सोचा कि वह विदेश से बड़ी गरीबी में लौटा है। विली का एक नीग्रो दोस्त, जो उसके साथ इस समारोह में आया थ, यह दृश्य देख चिढ़ गया और विली से बोला, कैसे रिश्तेदार हैं तुम्हारे। तुम अपने लोगों से इतने साल बाद मिले हो, फिर भी वे तुमसे मिलकर जरा भी खुश नहीं दिखाई पड़ रहे हैं। विली ने धीरे से कहा, देखना, अभी इनका व्यवहार मेरे प्रति बदल जाएगा। फिर उसने अपनी जेब से हीरे की एक खूबसूरत अंगूठी निकालकर पहन ली। अचानक उसे उन रिश्तेदारों का ध्यान उसकी अंगूठी पर गया। एकएएक उनका व्यवहार विली के प्रति बदल गया। वे उसके करीब घिर आए और उसकी खैरियत पूछने लगे। कुछ उसे अपने घर भोजन का न्यौता देने लगे तो कुछ उसे सुबह के नाश्ते पर बुलाने लगे। यह नजारा देखकर विली के नीग्रो दोस्त ने पूछा, क्या यह कोई चमत्कारी अंगूठी है? इसे पहनते ही तुम्हारे सारे संबंधियों का व्यवहार तुरंत बदल गया। विली ने हंसते हुए जवाब दिया, इस अंगूठी से इन्हें यह आभास हुआ कि मैं एक बड़ा अमीर आदमी बन गया हूं। इन्हें मुझसे ज्यादा मेरा पैसा प्यारा है।

३७७) समय का प्रभाव - महाराज युधिष्ठिर के राज्य में लालाजी ने अपना मकान सुखलाल को बेचा। सुखलाल ने पुराने मकान को गिरवा दिया और उसकी जगह नया मकान बनवाना शुरू किया। उसी समय मकान से सोने की मुहरों से भरा एक घड़ा मिला। सुखलाल मुहरों से भरा घड़ा लेकर मकान के पुराने मालिक के पास पहुंचा। उसने कहा, लालाजी, यह घड़ा आपके मकान की जमीन में गड़ा मिला। इसे आपको वापस करने आया हूं। लालाजी ने हाथ जोड़कर कहा, सुखलालजी, मकान मैंने बेच दिया है और उस मकान के बिकने के बाद आप उसके स्वामी हैं। वहां से निकली मोहरें मैं कैसे ले सकता हूं? इस तरह से दोनों सोने की मुहरों से भरे घड़े को लेने को तैयार नहीं हो रहे थे। अंत में किसी तरह उन्होंने घड़ा राजकोष में जमा करा दिया। महाराज युधिष्ठिर तक जब इस घटना की खबर पहुंची तो उन्होंने भीम से कहा, देखो, मेरे राज्य में लोग कितने ईमानदार हैं? भीम बोले, महाराज, यह द्वापर युग का प्रभाव है। ६ माह बाद कलियुग आएगा। तब देखिएगा प्रजा की नीयत कैसे बदती है। पूरे ६ माह बाद सुखलाल और लालाजी घड़े पर अधिकार का झगड़ा लेकर युधिष्ठिर के दरबार में पहुंचे। सुखलाल का कहना था कि जब उसने मकान खरीद लिया तो उसकी जमीन के अंदर जो भी है, वह उसका है। लालाजी का दावा था कि उसने मकान ही बेचा था, जमीन के अंदर दबे धन पर उसका ही अधिकार है, क्योंकि वह उसके पूर्वजों का है। महाराज युधिष्ठिर ने दोनों से पूछा कि ६ महीने पहले तो तुम दोनों इस घड़े को लेने से इनकार कर रहे थे, अब क्या बात हो गई? पास बैठे भीम ने कहा, महाराज उस समय इन दोनों की बुद्धि ठीक थी, अब कलिकाल के प्रभाव से दोनों की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। दोनों की नीयत में अंतर आ गया है।

३७८) मकड़ी ने जिताया युद्ध - एक राजा के पड़ोसी राजा ने उसके राज्य के कुछ हिस्से पर कब्जा कर लिया। राज्य के इस हिस्से को पाने के लिए राजा शत्रु से ६ बार लड़ाई कर चुका था। हर बार उसे हारना पड़ा। बावजूद इसके, उसने एक बार फिर हिम्मत की और अपनी भूमि प्राप्त करने के लिए ७वीं बार शत्रु राज्य पर चढ़ाई की। उसके सैनिक वीरता से लड़े, किंतु वे ७वीं बार भी हार गए। राजा को प्राणों के लाले पड़ गए। वह अपनी जान बचाकर भागा। भागते-भागते घने जंगल में पहुंच गया। जंगल में बैठकर सोचने लगा कि ७वीं बार हारने के बाद अब शत्रु से राज्य प्राप्त होने की कोई आशा शेष नहीं रही और मुझे अब इस जंगल में रहकर ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। वह बुरी तरह हताश था। इसी स्थिति में उधेड़बुन में खोये हुए कब उसे नींद आ गई, पता ही नहीं चला। सुबह वह उठा तो देखा कि एक मकड़ी उसकी तलवार पर जाला बना रही है। वह ध्यान से इस दृश्य को देखने लगा। मकड़ी बार-बार गिरती और पुन: जाला बनाती हुई तलवार पर चढ़ती। इस तरह वह १० बार नीचे गिरी और हर बार नए जोश और उत्साह से जाला बनाती हुई पुन: चढ़ी। राजा इस दृश्य को बड़ी गंभीरता से देख रहा था कि वहां एक साधु आए। राजा को निराश देखकर बोले- देखो राजन्, मकड़ी जैसा तुच्छ जीव भी बार-बार हारकर निराश नहीं होता। युद्ध हारने को हार नहीं कहते, हिम्मत हारने को हार कहते हैं। राजा ने कहा- बाबा मैं तो सब कुछ हार चुका हूं। तब साधु ने कहा- ऐसा मत कहो, साहस बटोरकर अपने सैनिकों को पुन: एकत्रित करो और युद्ध करो। राजा ने वैसा ही किया और युद्ध में जीत गया। असफलता पर निराश होकर निष्क्रिय हो जाना चाहिए, इससे सफलता एक दिन अवश्य मिलती है।

३७९) वंदनीय है ऐसी सहनशीलता - एक आलिम थे, जो दीनी तालीम दिया करते थे। वह लोगों की समस्याएं सुनकर उनका समाधान भी बताया करते थे। वह बड़े नेक और सच्चे थे, इसलिए उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी।

हर समाज का व्यक्ति उनका सम्मान करता था।

वह कभी किसी से नाराज नहीं होते थे और गुस्सा करते उन्हें कभी नहीं देखा गया, लेकिन जिसका सम्मान जितना अधिक होता है, उसके विरोधियों को वह उतना ही खलने लगता है। विरोधी खेमें में भी यह चर्चा आम थी। विरोधी गुट के आचार्य ने सोचा- देखता हूं, उसे कैसे गुस्सा नहीं आता। मैं आज यह भ्रम तोड़कर रहूंगा।

यह कहकर वह अपने घर आए और भेष बदलकर आलिम की कुटिया में जा पहुंचे। वहां बहुत लोग पहले से ही बैठे थे। उन्होंने पास जाकर अभिवादन किया और बैठ गए। कुछ देर बाद उन्होंने कहा- मुझे कुछ जानना है। आपकी इजाजत हो, तो पूछूं?

आलिम ने कहा- क्या जानना चाहते हो? अगर रब ने चाहा, तो तुम्हें जवाब जरूर मिलेगा।

आचार्य ने पूछा- मल का स्वाद कैसा होता है? यह अटपटा सवाल सुनकर सभी हैरान रह गए।

आलिम बोले- मल का स्वाद शायद कुछ-कुछ मीठा होता है।

उसने पूछा- आपको कैसे पता, मीठा होता है या कड़वा। क्या आपने चखकर देखा है?

आचार्य का सवाल सुनकर वहां बैठे लोग आगबबूला हो गए कि इसकी हिम्मत कैसे हुई यह कहने की? लेकिन आलिम ने सभी को शांत किया।

मुस्कराकर बोले- मैंने मीठा इसलिए कहा कि अक्सर देखा जाता है कि उस पर मक्खियां भिनभिनाती रहती हैं और वे आम तौर पर मीठे पर ही बैठती हैं।

यह सुनकर आचार्य नतमस्तक हो गए और अपना परिचय देते हुए बोले- आपकी सहनशीलता वंदनीय है। आपके बारे में जैसा सुना, वैसा ही पाया।

३८०) आत्मविश्वास - बाबा, खेलो न। दोस्त, अब तुम जाओ, तुम्हारी मां तुम्हें ढूंढ़ रही होगी। मां को पता है- मैं तुम्हारे पास हूं। वो बिल्कुल परेशान नहीं होगी। खेलो न। बच्चे ने बूढ़े को बैठने का आदेश दिया, फिर उसकी आंखों पर पट्टी बांधने लगा। पट्टी बंधते ही उसका ध्यान अपनी आंखों की ओर चला गया। मोतियाबिन्द के ऑपरेशन के बाद एक आँख की रोशनी बिलकुल खत्म हो गई थी। दूसरी आंख की ज्योति भी बहुत तेजी से क्षीण होती जा रही थी। बाबा, पकड़ो पकड़ो बच्चा उसके चारों ओर घूमते हुए कह रहा था। उसने बच्चे को पकड़ने के लिए हाथ फैलाए तो एक विचार उसके मस्तिष्क में कौंधा- जब दूसरी आंख से भी अंधा हो जाएगा तब? वह क्या करेगा? किसके पास रहेगा, बेटों के पास? नहीं नहीं। बारी-बारी से सबके पास रहकर देख लिया, हर बार अपमानित होकर लौटा है तो फिर? मैं यहां हूं मुझे पकड़ो उसने दृढ़निश्चय के साथ धीरे-से कदम बढ़ाए, हाथ से टटोलकर देखा मेज, उस पर रखा गिलास, पानी का जग, यह मेरी कुर्सी और यह रही चारपाई और यह रहा बिजली का स्विच लेकिन तब मुझ अंधे को इसकी क्या जरूरत होगी? होगी तब भी रोशनी की जरूरत होगी अपने लिए नहीं दूसरों के लिए। मैंने तय कर लिया। मैं तब भी सब काम कर लूंगा। बाबा, तुम मुझे नहीं पकड़ पाए। तुम हार गए, तुम हार गए बच्चा तालियां पीट रहा था। बूढ़े की घनी सफेद दाढ़ी के बीच होठों पर आत्मविश्वास से भरी मुस्कान थिरक रही थी।

३८१) ऊपरी कमाई - पिता ने अपनी पूरी जिन्दगी छोटी दुकान पर गुजारी और वह नहीं चाहते थे कि उनका पुत्र भी इसी तरह अपनी जिन्दगी बर्बाद करे। उन्होंने अपने पुत्र को खूब पढ़ाया। पुत्र कहता था- पापा, मुझे नौकरी नहीं करनी। पिता कहते थे- नहीं बेटे, धंधे में न तो इतनी कमाई है, न इज्जत। बड़ा धंधा तो तुम कभी नहीं कर पाओगे और छोटा धंधा मैं करने नहीं दूंगा। नौकरी करोगे तो एक नंबर की तनख्वाह के अलावा ऊपरी कमाई भी होगी। पुत्र ने खूब पढ़ाई की। आखिर उसे एक कंपनी में नौकरी मिल गई। एक दिन पिता ने पूछा, कैसे है नौकरी? कमाई तो ठीक है न? पुत्र ने कहा- हां, पापा नौकरी तो बहुत अच्छी है। अच्छा काम करूंगा तो बोनस भी मिल जाएगा। थोड़ा अतिरिक्त काम करूंगा तो वेतन के अलावा भी पैसा मिल जाएगा। पिता ने कहा- यह सब नहीं पूछ रहा, यह बताओ, कहीं से इसके अलावा ऊपरी कमाई होगी कि नहीं? पुत्र ने कहा- नहीं, ऐसी कोई उम्मीद नहीं है। पिता ने कहा- तुझे पढ़ाना-लिखाना बेकार गया। तुझे ऐसी ही कंपनी मिली नौकरी करने के लिए जहां ऊपरी कमाई करने का अवसर ही न मिले? वैसे तुम अभी यह बात किसी से न कहना। हो सकता है कि आगे ऊपरी कमाई होने लगे। पुत्र ने कहा- इसके आसार तो बिल्कुल नहीं हैं। पिता ने कहा- मैं तुम्हारी शादी की बात चला रहा हूं। इसलिए लोगों से कहना कि ऊपरी कमाई भी होती है। लोग आजकल वेतन से अधिक ऊपरी कमाई के बारे में पूछते हैं। फिर बेटा यह समय है, पता नहीं कब पलट जाए। हो सकता है कि आगे ऊपरी कमाई का जरिया बन जाए। पुत्र चुप हो गया। पिता के जाने के बाद वह घर की छत की तरफ देखता रहा।

३८२) शर्मिंदा हुआ बादशाह - १३वीं शताब्दी में भारत में भयंकर अकाल पड़ा। उन दिनों गोलकुंडा-बेदरशाही के अंतर्गत मंगलबेड़ा प्रांत का कारोबार दामाजी के जिम्मे था। अकाल में भूखे लोगों की चीत्कार उनसे सुनी न गई और उन्होंने बादशाह की अनुमति के बगैर अन्न भंडार प्रजा के लिए खोल दिया। दामाजी के सहायक सूबेदार से यह न देखा गया। उसने मामला बादशाह को पत्र लिखकर बताया तो बादशाह ने सिपाहियों को दामाजी को पकड़ लाने की आज्ञा दी। तभी हाथ में थैली और कंधे पर कंबल लिए एक किशोर बादशाह के दरबार में आया और बताया कि वह मंगलबेड़ा में दामाजी पंत के पास से आया है। बादशाह ने उसके आने का उद्देश्य पूछा। किशोर ने जवाब दिया कि उसका नाम बिठू है और वह दामाजी की दया पर पला है। उसने कहा- आपकी प्रजा भूख से मर रही थी और आपकी अनुमति लेने में विलंब होता इसलिए उन्होंने भंडार खोलकर सबके प्राण बचाये। मैं उसी अन्न का मूल्य चुकाने आया हूं। कृपया इसे सरकारी खजाने में जमा करें। यह सुनकर बादशाह को बड़ा पश्चाताप हुआ कि उन्होंने व्यर्थ ही एक बेकसूर को बंदी बनाने की आज्ञा दी। उधर खजांची ने जेसे ही उसकी थैली उड़ेली, वह फिर भर गई। उसने फिर उड़ेली, वह फिर भर गई। इस तरह दो-तीन बार हुआ। आखिर उसने अनाज की पूरी कीमत गिनकर बाकी उसे लौटा दिए। उसके जाने के बाद खजांची ने वह बात बादशाह को बताई। बादशाह से न रहा गया। वह तुरंत मंगलबेड़ा के लिए रवाना हुआ। वहां पहुंचने पर उसने दामाजी से विठू को बुलाने को कहा। दामाजी की समझ में कुछ भी न आया।

३८३) सेनापति के गुण - महाभारत युद्ध की शुरुआत होनेवाली थी। पांडवों की सेना को सात हिस्सों में बांट दिया गया। द्रुपद, विराट, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, सात्यकि, चेकितान, भीमसेन आदि सात महारथी इन सात दलों के नायक बने। प्रश्न यह था कि सेना का सेनापति किसे बनाया जाए? युधिष्ठिर ने सबसे पहले सहदेव से पूछा। सहदेव

बोले, अज्ञातवास के समय हमने जिनके यहां आश्रय लिया था, जिनकी छत्रछाया में सुरक्षित रहते हुए हम अपना खोया हुआ राज्य फिर से हासिल कर सके हैं, वह विराटराज हमारे सेनापति बनने योग्य हैं। नकुल ने कहा, मेरी नजर में पांचाल नरेश द्रुपद श्रेष्ठ हैं। वह बुद्धिमानी में, वीरता में, बल विद्या में सर्वश्रेष्ठ हैं। वह हमारी सेना में सेनापति की भूमिका में बेहतर रहेंगे। अर्जुन ने कहा, जो जितेंद्रिय हैं वह धृष्टद्युम्न ही हमारे सेनापति बनें। भीम ने कहा, शिखंडी का जन्म ही भीष्म के प्राण लेने के लिए हुआ है, इसलिए मैं इनका नाम प्रस्तावित करता हूं। अंत में युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा, आप क्या कहते हैं वासुदेव, तब श्रीकृष्ण बोले, हम सभी ने जिन वीरों के नाम का प्रस्ताव दिया, वह सभी सेनापति बनने योग्य हैं। लेकिन मुझे अर्जुन की राय ज्यादा बेहतर लगी। हमें धृष्टद्युम्न को संसार के इस यादगार महाभारत युद्ध के लिए पांडवों की सेना का सेनापति बनाना चाहिए।

३८४) सत्संग की महिमा - एक संत अपने शिष्यों के साथ जा रहे थे। रास्ते में वे संत सत्संग की महिमा भी उनको समझाते जा रहे थे। लेकिन शिष्यों के मन में यह बात पूरी तरह से बैठ नहीं रही थी। तभी उन संत महात्मा ने रास्ते के एक किनारे गुलाब के फूलों को देखा। उन्होंने गुलाब के पौधों के नीचे पड़ा मिट्टी का एक ढेला उठाकर एक शिष्य को उसे सूंघने के लिए कहा। शिष्य ने सूंघकर कहा, महात्मन। मिट्टी के इस ढेले में तो गुलाब की सुगंध आ रही है। तब संत ने पूछा, लेकिन मिट्टी की तो अपनी बू होती है, तब यह सुगंध कहां से आई? शिष्य ने कहा, इस ढेले पर गुलाब के फूल टूट-टूटकर गिरते रहते हैं, इसी से इसमें यह सुगंध आ गई है। संत ने गंभीर स्वर में कहा, सत्संग की महिमा भी यही है। जो व्यक्ति जैसी संगति में रहता है, वैसे ही गुण-दोष उसमें आ जाते हैं।

३८५) दिया था शाप, बन गया वरदान - शुक्र असुरराज बली के गुरु थे। इनकी पत्नी का नाम सुषमा और पुत्री का नाम देवयानी था। एक बार शुक्र ने भगवान शिव से पूछा कि असुर देवताओं से कैसे सुरक्षित रह सकते हैं? तब शिव ने उन्हें तप का मार्ग बताया। शुक्र तप के लिए वन चले गए। उन्होंने कई वर्षों तक तप किया। जब शुक्र तप कर रहे थे उस दौरान धरती पर देवताओं और असुरों का युद्ध हुआ। देवासुर संग्राम में विष्णु ने शुक्र की माता का वध किया। जब शुक्र तप करके लौटे, उन्होंने वरदान स्वरूप शिव से मृत संजीवनी मंत्र की दीक्षा प्राप्त की थी जिससे वो मृत व्यक्ति को जीवित कर देते थे। उनकी मां मर चुकी है जब यह बात शुक्र को पता चली तो उन्होंने भगवान विष्णु को शाप दिया कि वह पृथ्वी पर ७ बार मानव रूप में जन्म लेंगे, लेकिन यही शाप श्रीहरि के लिए वरदान बना और दैत्यों के लिए शाप। सात बार मानव रूप में जन्म लेकर श्रीहरि ने अत्याचारी दैत्यों का संहार किया।

३८६) सर्प का रखवाला - एक राजा अपनी वीरता और सुशासन के लिए प्रसिद्ध था। एक बार वो अपने गुरु के साथ भ्रमण कर रहा था, राज्य की समृद्धि और खुशहाली देखकर उसके भीतर घमंड के भाव आने लगा और वो मन ही मन सोचने लगे सचमुच, मैं एक महान राजा हूं, मैं कितने अच्छे से अपनी प्रजा की देखभाल करता हूं। गुरु सर्वज्ञानी थे, वे तुरंत ही अपने शिष्य के भावों को समझ गए और तत्काल उसे सुधारने का निर्णय लिया। रास्ते में ही एक बड़ा सा पत्थर पड़ा था, गुरु ने सैनिकों को उसे तोड़ने का निर्देश दिया। जैसे ही सैनिकों ने पत्थर के दो टुकड़े किये एक अविश्वसनीय दृश्य दिखा, पत्थर के बीचो-बीच कुछ पानी जमा था और उसमे एक सर्प था। पत्थर टूटते ही वो अपनी कैद से निकल कर

भागा। सब अचरज में थे कि आखिर वो इस तरह कैसे कैद हो गया और इस स्थिति में भी वो अब तक जीवित कैसे था? अब गुरु राजा की तरफ पलटे और कहा, अगर आप ऐसा सोचते हैं कि आप इस राज्य में हर किसी का ध्यान रख रहे हैं, तो बताइये पत्थरों के बीच फंसे उस सर्प का ध्यान कौन रख रहा था, बताइये कौन है इस सर्प का रखवाला? राजा को अपनी गलती का एहसास हो चुका था, उसे अपने अभिमान पर पछतावा होने लगा। गुरु की कृपा से वे जान चुका था कि वो ईश्वर ही है जिसने हर एक जीव को बनाया है और वही है जो सबका ध्यान रखता है।

३८७) ईश्वर के निकट - बहुत समय पहले एक संत हुए। उन्हें दुनिया की किसी भी वस्तु से मोह-माया नहीं थी। पहनने के लिए कपड़ों के अलावा उनके पास दूसरी कोई और चीज न थीं। वह मंदिर, मस्जिद और चर्च में कोई भेद नहीं देखते थे। एक बार उनके पास एक युवक कुछ सीखने के लिए उद्देश्य से आया। उन्होंने पूछा, क्या तुम्हें और कोई नहीं मिला? उस व्यक्ति ने कहा, आपसे ही सीखना है। यह बात सुनकर संत ने कहा, अगर कुछ सीखना है तो हमें दूसरे धर्म के लोगों के पास जाना चाहिए। संत की बातें सुनकर युवक हैरान हो गया। संत ने उसकी तरफ एकटक देखा और फिर कहा, मेरे कहने का मतलब है कि आप जिस धर्म को मानते हो, उस धर्म को न माननेवाले के पास जाओ। उनके पास जाने पर वह हमारे धर्म की निंदा करेंगे। हमें सुनते रहना है। इससे हममें सहिष्णुता निर्माण होगी। हमें विरोधियों की बातों का बुरा नहीं लगेगा और यही उस व्यक्ति को दिया गया सही उत्तर होगा। धर्म हमें सहिष्णुता की सीख देता है। उसके बाद ही हम ईश्वर के निकट जा पाएंगे।

३८८) हौसला - डरते-डरते प्रवेश किया था अभिलाष ने उस आलिशान इमारत के अंदर। सुसज्जित कक्षाएं, हाई टेक वातावरण। सभी कुछ व्यवस्थित। यहां मेरे बेटे का भविष्य अवश्य बन जाएगा। आश्वस्त हो अभिलाष ने पुराने फटे हुए बैग से साल भर से पेट का-काट कर जोड़े हुए पैसे काउंटर में जमा कर दिए। शहर के सबसे बड़े स्कूल में अपने बेटे का दाखिला करा वो ऐसे महसूस कर रहा था मानो बहुत बड़ी जंग जीत आया हो। बाहर से सब्जी ले घर पहुंच कर झोला पत्नी सुजाता को थमा दिया उसने। फिर टमाटर, प्याज नहीं लाए आप पत्नी झुंझला उठी थी। सुजाता, बेटे का एडमिशन बड़े स्कूल में कराना और रोज-रोज टमाटर प्याज खाना। बड़ा हौसला चाहिए हम जैसे आम आदमी के लिए। कहते-कहते अभिलाष ने चेहरे पर उभर आए दर्द को हँसी से छुपा लिया। सुजाता चुपचाप रसोईघर में चली गई।

३८९) शैतान का दाहिना हाथ - जब शैतान का मन अपने आप से ऊब गया, तो उसने सन्यास लेने का निश्चय किया। तब उसने अपने गुलामों को बेचना शुरू कर दिया। बुराई, झूठ, ईर्ष्या, निरुत्साह, दर्प- सब पंक्ति बांधकर खड़े हो गये। ग्राहक आते गए और उन्हें पहचान कर एक-एक को खरीदते गये। पर एक ओर एक बहुत ही भौंड़ा और कुरूप गुलाम खड़ा था, जिसे कोई पहचान नहीं पा रहा था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसका मूल्य दूसरे सभी गुलामों से बढ़कर था। अंत में साहस करके एक खरीददार ने पूछा यह कौन हैं? ओह, यह शैतान मुस्कराया, यह मेरा सबसे प्रिय और वफादार गुलाम है। बहुत थोड़े ही लोग जानते हैं कि यह मेरा दाहिना हाथ हैं। मैं इसके सहारे बड़ी आसानी से लोगों को अपने शिकंजे में कस लेता हूं। उन्हें एक-दूसरे के खून का प्यासा बना देता हूं। क्यों, नहीं पहचाना अभी भी? शैतान अट्टहास कर उठा, फिर बोला, यह फूट है, फूट।

३९०) मेनका, दक्षा और ग्राहक - हमारे शब्द और बात करने का तरीका बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह बनते काम को बिगाड़ सकता है और बिगड़ते काम को बना सकता है, प्रोफेसर घोष अपनी क्लास में बोले। निवेदिता ने पूछा, लेकिन सर, ऐसा कैसे मुमकिन है? प्रोफेसर बोले, इसे एक उदाहरण से समझते हैं। मेरे गांव में दो महिलाएं थीं मेनका और दक्षा। दोनों के बीच छत्तीस का आंकड़ा था। एक बार दोनों के बीच शर्त लगी कि कौन ज्यादा सफल हो सकती है। मेनका ने गांव में अचार और शहद की एक दुकान खोली। मेनका की देखादेखी दक्षा ने भी आचार-शहद की दुकान खोल ली। मेनका की वाणी शहद-सी मीठी थी, जबकि दक्षा की वाणी काफी रूखी, कठोर और निष्ठुर थी। एक दिन दक्षा की दुकान पर एक ग्राहक आया। वह एक-एक कर सारी चीजें चखने लगा। दक्षा को गुस्सा आ रहा था कि वह ग्राहक ले कुछ नहीं रहा, लेकिन चख सब रहा है। तभी ग्राहक ने पूछा, क्या यह शहद असली है? ग्राहक का इतना कहा था कि दक्षा उस पर भड़क उठी और बोली, जो खुद नकली होता है, वही दूसरों की चीजों को नकली बताता है। इस पर ग्राहक गुस्सा होकर दुकान से बिना कुछ लिए निकल गया। वह गुस्से में घर वापस लौट रहा था कि उसे मेनका की दुकान दिखी। मेनका ने पूछा, अरे भैया, इतने गुस्से में कहां जा रहे हो? ग्राहक मेनका का आदर भाव देखकर रुक गया। उसने जब मेनका की दुकान का शहद देखा, तो मेनका से भी वही सवाल किया, क्या यह शहद असली है? मेनका बोली, हम असली सामान ही रखते हैं। यकीन नहीं, तो लेकर देख लो। ग्राहक खुश होकर उसकी दुकान से तरह-तरह के अचार और शहद ले गया। प्रोफेसर बोले, यानी हमारे बोलने-बात करने का तरीका ही हमारे व्यक्तित्व को दर्शाता है। हमारे बात करने का तरीका ही लोगों के व्यवहार को निर्धारित करता है। कभी अनजाने में हम ऐसी बातें कह जाते हैं, जिसका खमियाजा हमें जिंदगी भर भुगतना पड़ता है। बोलना तो हम बचपन में सीख लेते हैं, पर कब क्या बोलें, यह सीखने में उम्र बीत जाती है।

३९१) बंधन मुक्त - रमेश ने घर आते ही पिंजरे में बंद तोते को आजाद कर दिया। तोता शायद धन्यवाद बोलता हुआ पिंजरे के चक्कर लगा उन्मुक्त नील गगन में ओझल हो गया। रमेश की आँखें भावावेश में डबडबा गईं। अरे, ये परिवर्तन आज मम्मी ने उससे पूछा क्या हुआ? तुमने तोता को उड़ा दिया, अब फिर नये तोते के लिये कहोगे? नहीं मम्मी, अब मैं समझ गया बंधन का दर्द, आज कॉलेज से अपनी स्कूटी से जब घर आ रहा था तो ट्राफिक पुलिस ने हम सभी स्कूटी चलानेवाले बच्चों को लाइसेंस नहीं होने पर थाने में बैठाकर ३ घंटे तक रोक लिया और कोई पुलिसवाला कहानी सुना रहा, तो कोई गाना सुनाने की जिद्द। वो ३ घंटे? बंधन के। बस आजादी और बंधन मुझे भी समझ आ गया। अब इस पिंजरे में खिलौने का तोता रखूंगा पर जीवित खुले ही रहेंगे।

३९२) पुरुषार्थ ही सफलता की शर्त है - अमेरिका के एक जंगल में एक नवयुवक दिन में लकड़ियां काटता था। वह पढ़ना चाहता था, लेकिन गरीब था। नजदीक में कोई विद्यालय नहीं था। अन्ततः उसने अपने से ही पढ़ने का निश्चय किया। पुस्तकालय भी दस मील दूर था। उसने निश्चय किया कि वह पुस्तकालय से किताबें लाकर पढ़ेगा। वह अपने काम से छुट्टी पाकर १० मील दूर जाकर किताबें लाता, लकड़ी जलाकर पढ़ता और समय से पूर्व किताबें लौटा देता। पढ़-लिखकर अंततः वह वकील बना। उसने स्थानीय अदालत में वकालत शुरू की, लेकिन वकील के रूप में भी वह अपने

को सही स्वरूप में नहीं रख पाता। उसके पास पैसे नहीं थे, कपड़ों को दुरुस्त कैसे रखे? उसके एक मित्र स्टैंसन ने व्यंग्य किया- तू वकील तो लगता ही नहीं, लगता है उजड्ड देहाती, वकालत कैसे चलेगी? उसने कहा- चले या न चले, क्या करूं। मैं केवल पोशाक में ही विश्वास नहीं करता। विश्वास है एक बात है कि मैं झूठा मुकदमा नहीं लूंगा।

३९३) गृहस्थी के साथ परमार्थ - एक सज्जन अक्सर पत्नी से छोटी-मोटी नोकझोंक होने पर उसे घर छोड़कर जाने की धमकी देते। पत्नी से कहते मेरी बात नहीं मानेगी, तो संत संतोबा पवार का शिष्य बन जाऊंगा। एक दिन उस व्यक्ति की अनुपस्थिति में संत संतोबा भिक्षा मांगने उसके घर आए। पत्नी ने संत से कहा, महाराज मेरा पति बात-बात पर घर त्यागने की और आपका शिष्य बनने कीधमकी देता है। संत बोले, बेटी, अब उसे कह देना कि बन जाओ शिष्य संतोबाजी के। मैं ऐसा मंत्र दूंगा कि फिर वह घर छोड़ने की धमकी नहीं देगा। अगले दिन भोजन में विलंब देख वह पत्नी से बोला- मैं घर छोड़कर बाबा बन जाऊंगा। पत्नी बोली- ठीक है, जाओ। वह बड़बड़ाता हुआ चल दिया और संत आश्रम में पहुंचकर बोला, महाराज, मुझे वैराग्य हो गया है। मुझे अपना शिष्य बना लीजिए। संत ने उसे कुटिया में रहने की आज्ञा दी। सुबह नदी में स्नान के बाद संतोबा ने कहा, अपने कपड़े त्यागकर लंगोटी धारण कर लो। उसने कपड़े उतार दिए और ठंड में ठिठुरने लगा। दोपहर में उसे कंदमूल खाने को मिले। स्वादहीन कंदमूल उसके गले से ही नहीं उतरा। कंदमूल न खा सकने के कारण वह भूख से बिलखने लगा। संतोबा उसकी पीड़ा समझ गए। बोले, वत्स, वैराग्य का पहला पाठ जिह्वा के स्वाद पर नियंत्रण करना हे। तुम पहले पाठ के पहले ही दिन रोने लगे, तब संत कैसे बनोगे? अपने घर लौट जाओ। परिवार में प्रेमपूर्वक रहो और दूसरों की सेवा करो। संसार करके भी परमार्थ किया जा सकता है।

३९४) जॉन, नौकरी और संगीत - जॉन बरलिंगटन एक सफल संगीत निर्देशक थे। एक दिन उन्हें एमबीए के कुछ छात्रों को संबोधित करने के लिए बुलाया गया। वह बोले, आज तक आप लोगों ने बहुत लोगों को यह कहते सुना होगा कि मेहनत ही सफलता की कुंजी है, अपना लक्ष्य निर्धारित करो और तत्परता से उसे पाने की कोशिश करते रहो। ये सारी बातें हर कोई जानता और बोलता है। मैं जब आपकी उम्र का था, तब मैंने भी यही किया था, इंजीनियरिंग के बाद मैंने लक्ष्य तय किया कि मुझे अच्छी से अच्छी कंपनी में ऊंचे ओहदे तक पहुंचना है। दो साल के अंदर मैंने वह लक्ष्य हासिल कर लिया। शुरू-शुरू में मैंने काफी मेहनत की। पर फिर मेहनत करने की इच्छा खत्म होने लगीं इसका असर मेरे काम पर पड़ने लगा। मैं भी अपने काम को नजरंदाज करने लगा। पहले कई नौकरियां बदली, लेकिन फिर धीरे-धीरे नौकरी, दोस्त, परिवार सब हाथ से छूटने लगे। हमें यह तो सब बताते हैं कि ऊपर पहुंचना है, लेकिन यह कभी कोई नहीं बताता कि ऊपर पहुंचने के बाद क्या करना है। लिहाजा तीन साल तक मैं बेरोजगार अपने घर पर बैठा रहा, लेकिन उस वक्त एक बात हुई, जिसने मेरी सोच बदल दी। मैंने देखा, नौकरी छूटने के बाद मैं काफी खुश रहने लगा था। मैं जो चाहूं वह कर सकता था। मुझे जबर्दस्ती किसी से कोई रिश्ते बनाने की जरूरत नहीं थी, जबर्दस्ती किसी को खुश करने की जरूरत नहीं थी। मैं दिनभर गाने सुना करता या गाया करता था। मुझे उसमें कभी कोई थकान महसूस नहीं होती थी। फिर एक दिन मुझे लगा कि क्यों न मैं अपने खुद के गाने बनाऊं और सबको सुनाऊं। मैंने अपने शौक को अपना पेशा बना लिया। मुझे इस पेशे में अब बीस साल हो चुके हैं। मेरा संगीत अब खुद बोलता है, मुझे किसी को उन्हें सुनाने की जरूरत नहीं पड़ती,

लेकिन आज भी मैं जब वापस मुड़कर देखता हूं, तो लगता है, मैंने अभी किया ही क्या। अभी तो मेरा मुकाम तक पहुंचना बाकी है। सफल होने के लिए वह काम करो, जिसका तुम्हें शौक हो।

३९५) मेयर का न्याय - न्यूयॉर्क की अदालत में उस दिन खचाखच भीड़ थी। उपस्थित स्त्री-पुरुष कौतूहलवश मेयर ला गुआर्डिया की तरफ देख रहे थे, जो मुकदमे का फैसला सुनाने ही वाले थे। अपराधी कठघरे में चुपचाप मुंह लटकाए खड़ा था। उसने चोरी की थी और वह भी किसी सामान, रुपये पैसे की नहीं, बल्कि पेट की आग को शांत करने के लिए रोटी की। मेयर ला गुआर्डिया ने अपने दिए जानेवाले फैसले पर विचार किया और अपराधी को गौर से देखा। फिर उन्होंने अपना फैसला सुना दिया। अपराधी को दस डॉलर का अर्थदंड दिया जाता है, क्योंकि इसने रोटी चुराने का अपराध किया है। निर्णय सुनाकर अपराधी की ओर बढ़ाते हुए कहा, यह रही जुर्माने की वह रकम, जो अदालत ने तुम पर लगाई है। सभी लोग अचरज से मेयर की तरफ आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। तभी मेयर ला गुआर्डिया ने न्यायालय में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा, धिक्कार है ऐसे समाज को, जिसमें लोगों को पेट की आग शांत करने के लिए चोरी करनी पड़ती है। समाज में पनपी एक-दूसरे पर ध्यान न देनेवाली स्थिति पर रोक लगाने के लिए आप सभी पर आधे-आधे डॉलर का जुर्माना किया जाता है और इसकी वजह यह है कि आप लोगों ने एक ऐसे समाज में रहने का जुर्म किया है, जिसमें एक भूखा मनुष्य रोटी चुराने के लिए मजबूर हो जाता है। व्यवस्था को कोसने के बजाय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम मानवीयता को निभाएं। सदा याद रखें कि समाज में रहते हुए हमें भी लोगों के सहयोग की आवश्यकता हो सकती है। इसके लिए हमें भी सहयोग अवश्य करना चाहिए। सब समझ गए कि मेयर ने जिस प्रकार शब्दों के अतिरिक्त कर्म से भी न्याय किया था, वैसे ही हमें शब्दों के अतिरिक्त कर्म से भी सहयोग करना चाहिए।

३९६) भिक्षा का सदुपयोग - स्वामी रामदास जी पहुंचे हुए संत थे। उनके जीवन के कुछ तय नियम थे और वह अपने नियम पर अटल रहते थे। उनका एक नियम था कि वह स्नान एवं पूजा से निवृत्त होकर केवल पांच घरों में भिक्षा मांगने के लिए जाते थे और वहां से जो कुछ मिल जाता वही लेकर लौट जाते। एक दिन वह ऐसे घर में भिक्षा लेने के लिए पहुंचे, जहां थोड़ी देर पहले ही पति-पत्नी में लड़ाई हुई थी। पत्नी गुस्से में थी। स्वामी जी ने घर के बाहर से आवाज लगाई। उनकी आवाज सुनकर वह स्त्री बाहर आई और बोली, तुम लोगों को भीख मांगने के सिवाय कोई धंधा ही नहीं है। चलो यहां से, मैं कुछ भी नहीं दूंगी। स्वामी जी का नियम था, वह भिक्षा में कुछ लिए बगैर नहीं लौटते थे। स्वामी जी ने उस स्त्री से कहा, मैं भिक्षा में कुछ न कुछ लिए बगैर नहीं जाऊंगा। स्त्री उस वक्त फर्श पर पोंछा लगा रही थी। पोंछा लगाने वाले कपड़े को ही स्वामी जी को देते हुए गुस्से से कहा, तो फिर यह लो, ले जाओ इसे भिक्षा में। स्वामी जी ने प्रसन्न मन से उस कपड़े को लिया और वह नदी के तट पर पहुंच गए। उन्होंने कपड़े को अच्छी तरह साफ किया, सुखाया और फिर उसकी बाती बनाकर वह देवालय पहुंचे। स्वामी जी इस भिक्षा को पाकर मन-ही-मन प्रसन्न थे। उधर, वह स्त्री पश्चाताप कर रही थी कि बेवजह एक सत्पुरुष का अनादर किया। अंत में वह उन्हें ढूंढती हुई देवालय में पहुंच गई। वह देखकर हैरान रह गई कि स्वामी जी ने उस वस्त्र से बातियां बना ली हैं। वह स्वामी जी के चरणों में गिरकर बोली, देव, मैंने आपका निरादार किया, क्षमा करें। रामदास जी बोले, देवी, तुमने उचित ही भिक्षा दी। तुम्हारी भिक्षा का ही परिणाम है कि देवालय

रोशनी से जगमगा रहा है और उसका लाभ अनेक लोगों को मिल रहा है। तुम भोजन देती तो वह सिर्फ मेरे ही काम आता।

३९७) निशातुन्निसा का खत - पहली बार जब हसरत मोहानी जेल जा रहे थे तब उनके घर में एक बच्ची थी और एक बीवी। जब आजादी की धुन में रमे हसरत मोहानी को अंग्रेज खींचकर जेल ले जाने लगे तब उनकी बच्ची बुखार में भुन रही थी। उनकी पत्नी निशातुन्निसा के लिए यह सब बिलकुल नया था। हसरत मोहानी निशातुन्निसा से मिलकर जेल की तरफ चल दिए, मगर बेहद परेशान भी थे कि अब उनके घर की जरूरतें कैसे पूरी होंगी? उनकी बेटी जो सख्त बुखार में है, उसे डॉक्टर तक कौन लेकर जाएगा। उनकी बीवी, जिसने दुनिया को अभी ठीक से देखा ही नहीं, कभी घर की दहलीज लांघी नहीं, वह इस मुसीबत के वक्त कैसे गुजर-बसर करेगी? अंग्रेज, जिनके जुल्म की इंतेहा घर-घर मालूम थी, ऐसे में उनके डर से पार पाकर निशातुन्निसा के साथ कौन खड़ा होगा? यह सोच-सोच कर हसरत जेल में फिक्रमंद थे कि उनको जेलर ने मिलने का बुलावा भेजा। जेलर ने अपने सामने खड़े हसरत से पूछा कि तुम्हारी बीवी कौन है? हसरत हक्का-बक्का होकर जेलर की तरफ देखने लगे। जेलर बोला, वह तो कोई बहुत मजबूत कार्यकर्ता लगती हैं। देखो, उन्होंने तुम्हें खत में क्या लिखा है? हसरत ने निशातुन्निसा का लिखा पहला खत, जो पहली बार उनके जेल में आने के बाद आया था, कांपते हाथों से लिया और पढ़ना शुरू किया। पढ़ते-पढ़ते उनकी आंखें आंसुओं से तर-बतर हो गईं। निशातुन्निसा ने अपने शौहर को खत में लिखा था, तुम पर जो मुसीबत पड़ी है उसे मर्दानावार बर्दाश्त करो। मेरा या घर का बिलकुल ख्याल मत करना। खबरदार, तुम्हें किसी किस्म की कमजोरी का एहसास न हो। खत के यह अल्फाज ताउम्र मौलाना हसरत मोहानी को देश की आजादी के लिए सब कुछ न्योछावर करने की ताकत देते रहे और बेगम निशातुन्निसा धीरे-धीरे खुद को आजादी की लड़ाई में तपाती हुई एक शानदार किरदार बनकर उभरी।

३९८) फूल का मूल्य - सर्दियों में गौतम बुद्ध मगध राज्य के एक गांव में ठहरे हुए थे। वहीं सुदास नाम का एक मोची रहता था जिसकी झोपड़ी के पीछे एक पोखर था। एक सुबह सुदास अपने पोखर से पानी लेने गया तो देखा कि वहां कमल का एक बेहद खूबसूरत फूल बेमौसम खिला हुआ था। उसने अपनी पत्नी को पुकारा, देखो, रात तक पोखर में कहीं एक कली भी न थी, सुबह इतना सुंदर कमल खिला हुआ है। सुदास की पत्नी धर्मपरायण थी। उसने सुदास से कहा- हो न हो, बुद्ध जरूर तालाब के निकट से गुजरे होंगे। फूल देखकर सुदास ने सोचा कि वह इसे राजा प्रसेनजित को देगा। इससे उसे मुंहमांगा मूल्य भी मिल जाएगा। सुदास उसे लेकर राजमहल गया। वहां जाते वक्त राजपथ पर उसे एक और सज्जन मिल गए, जिन्होंने एक माशा स्वर्ण देकर वह फूल खरीद लिया। ठीक उसी वक्त राजा प्रसेनजित भगवान बुद्ध के दर्शन के लिए जा रहे थे। उन्होंने फूल देखकर उसका मूल्य पूछा तो सुदास ने बताया कि वह तो उसे एक माशा स्वर्ण में पहले ही बेच चुका है। राजा ने कहा कि वह इस फूल के लिए दस माशा स्वर्ण देने के लिए तैयार हैं। थोड़ी ही देर में फूल का मूल्य दस से बीस माशा हो गया। जब राजा ने फूल का मूल्य चालीस माशा स्वर्ण देने की बात कही, सुदास ने दोनों से क्षमा मांगते हुए फूल वापस ले लिया और एक माशा स्वर्ण उन सज्जन को वापस कर दिया। फिर वह फूल लेकर खुद महात्मा बुद्ध के पास गया और उसे उनके चरणों में अर्पित कर दिया। बुद्ध ने सुदास से पूछा, क्या चाहते हो? सुदास बोला, भगवन्, पुष्प के बदले में लालच तो बहुत मिला, लेकिन असल

कामना मुझे आपके आशीर्वाद की ही है। मैं आपके आशीर्वाद की महत्ता समझ गया हूं।

३९९) साधु की संपत्ति - प्राचीन काल की बात है। इषुकार नगर में इषुकार नाम का राजा राज्य करता था। इसी नगर के राजपुरोहित भृगु ने पत्नी और दो पुत्रों के साथ वैराग्य धारण कर वन में जाना तय किया। उनके पास अपार धन-संपदा थी। परिवार में और कोई नहीं था। वह अपनी धन-संपदा राजा को देना चाहते थे। राजा के पास समाचार पहुंचा। राजा प्रसन्न हुआ और उसने अपने राज्य कर्मचारियों को आदेश दिया कि भृगु पुरोहित की सारी संपत्ति राजकीय कोष में जमा करा दी जाए। महारानी कमलावती को जब पता लगा कि भृगु पुरोहित अपार संपत्ति को छोड़कर साधु बन रहे हैं औरराजा उनकी संपत्ति से अपना राजकोष बढ़ा रहा है तो उनका मन ग्लानि से भर गया। वह बेचैन होकर राजा से बोलीं, राजन्। आप क्या कर रहे हैं? राजा ने जवाब दिया, भंडार भर रहा हूं। रानी ने फिर प्रश्न किया, कैसे? राजा ने कहा, पुरोहित का परिवार संपत्ति छोड़कर साधु बन रहा है। उनकी संपत्ति का कोई उत्तराधिकारी नहीं है। इसलिए उस पर हमारा अधिकार हो गया है। यह सुनकर महारानी बोलीं, राजन्। पुरोहित संपत्ति को छोड़ रहा हैं और आप उसे बटोर रहे हैं? दूसरी बात, पुरोहित के पास संपत्ति आई कहां से? आपने दान-दक्षिणा में जो कुछ दिया वही तो उनके पास है। क्या दी हुई संपत्ति को वापस लेना आपके लिए श्रेयस्कर है? वैसे तो आपको भी वैराग्य की भावना से प्रेरित होकर स्वयं राजपाट छोड़कर सन्यासी बन जाना चाहिए। यदि आप अपने को इसमें असमर्थ समझते हैं तो उस धन को अपने राजकोष या अपने भोग-विलास में न लगाकर उसे गरीबों में बांट देना चाहिए। महारानी कमलावती के शब्दों ने राजा इषुकार को झकझोर दिया। राजा ने भी राज्य-वैभव छोड़कर साधु बनने का निर्णय किया। भोग के पथ को छोड़कर त्याग के महान पथ पर अग्रसर होते हुए महाराज इषुकार भी साधु बन गए।

४००) प्रार्थना किसके लिए? - एक संत सुबह अपने शिष्यों के बीच बैठकर प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे। उन्होंने सबसे पहले पूरी मानव जाति के कल्याण के लिए प्रार्थना की। उसके बाद उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, हे परम पिता, आप दुष्कर्म करनेवालों को सदबुद्धि प्रदान करें। उनको सही रास्ता दिखाएं, ताकि वे दुष्कर्म करना छोड़ दें। प्रभु, उन भटके हुए लोगों पर विशेष रूप से दया करें। पास बैठे एक शिष्य ने आश्चर्यचकित होकर पूछ लिया, संत तो अच्छे लोगों के कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। आज पहली बार मैंने आपको दुष्टजनों के कल्याण के लिए प्रार्थना करते देखा है। गुरुदेव, इस प्रार्थना का क्या मतलब? संत मुस्कुराए और बोले, सत्कर्म करनेवाले अच्छे लोग तो स्वत: भगवान की दया और स्नेह के अधिकारी बन जाते हैं। अच्छे लोग अच्छे कर्म करके औरों को भी अच्छा बनाते रहते हैं। प्रार्थना तो बुरे लोगों को सद्बुद्धि प्रदान करने के लिए करनी चाहिए, जिससे वे दुष्कर्म त्यागकर सत्कर्मों में लग जाएं। इस तरह भक्त की जिज्ञासा का समाधान हो गया।

४०१) अपना राज्य कहां तक? - जनक के राज्य में रहनेवाले एक ब्राह्मण से एक बार कोई भारी अपराध हो गया। जनक ने उसको दंड स्वरूप देश निकाला दे दियां उसने जनक से पूछा- महाराज। मुझे यह बता दीजिए कि आपका राज्य कहां तक है? ब्राह्मण का यह प्रश्न सुनकर जनक विचारने लगे। पहले तो पूरी पृथ्वी पर उन्हें अपना अधिकार-सा दिखा। फिर मिथिला पर सिमट गया। पुन: उन्हें अपना अधिकार प्रजा पर, फिर अपने शरीर पर आ

गया और अंत में कहीं भी उन्हें अधिकार का भान नहीं हुआ। अंत में ब्राह्मण से कहा कि किसी वस्तु पर मेरा अधिकार नहीं है। आपकी जहां रहने की इच्छा हो, वहीं रहिए। ब्राह्मण को आश्चर्य हुआ और उसने उनसे पूछा- महाराज। आप इतने बड़े राज्य को अपने अधिकार में रखते हुए किस तरह सब वस्तुओं से तटस्थ हो गए हैं और क्या समझकर सारी पृथ्वी पर अपना अधिकार सोच रहे थे?

जनक ने कहा- भगवन्। संसार के सब पदार्थ नश्वर हैं। न कोई अधिकारी ही सिद्ध होता है और न कोई अधिकार योग्य वस्तु ही। अब जिस बुद्धि से सारे विश्व पर अपना अधिकार समझता हूं, उसे सुनिए। मैं अपने संतोष के लिए कुछ भी न कर देवता, पितर, भूत और अतिथि-सेवा के लिए करता हूं। अत: पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश और अपने मन पर भी मेरा अधिकार है। जनक के इन वचनों को सुन ब्राह्मण बोला- महाराज। मैं धर्म हूं। आपकी परीक्षा के लिए ब्राह्मण-वेष से आपके राज्य में आया हूं। अब भली-भांति समझ गया कि आप सत्वगुणरूप नेमियुक्त ब्रह्मप्रतिरूप चक्र के संचालक हैं।

४०२) पहरेदार लड़का - जानी नाम का एक लड़का महल के भीतरी दरवाजे पर पहरेदारी के लिए तैनात किया गया। रात में राजा शयनकक्ष में सोने की कोशिश कर रहा था, पर नींद उससे कोसों दूर थी। ऊबकर उसने पहरेदार को बुलाने के लिए घंटी बजाई। लगातार कई घंटियां बजाने के बाद भी पहरेदार जानी नहीं आया। अंत में राजा अपने बिस्तर से उठकर दरवाजे के करीब आया। देखा तो जानी मेज पर सिर टिकाए गहरी नींद में सो रहा था। बगल में एक मोमबत्ती जल रही थी और सामने एक अधूरा पत्र लिखा पड़ा हुआ था। राजा ने वह पत्र पढ़ा, जो इस तरह शुरू किया गया था- मेरी प्यारी मां, आज यह तीसरी रात है जब मुझे पहरेदारी का मौका दिया गया है। मैं यहां कब तक रहूंगा, कह नहीं सकता; किन्तु कुछ हफ्तों में मैंने करीब १० रुपये कमाए हैं, जो मैं तुम्हें भेज रहा हूं। शायद वह तुम्हारी कुछ जरूरतों को पूरा कर सकें। मां के प्रति लड़के के इस गहरे प्यार ने राजा को द्रवित कर दिया। वे फौरन अपने शयनकक्ष में लौटे और अशर्फियां ले जाकर उस पहरेदार की जेब में डाल दीं। लड़का जब जागा तो अपनी जेब में अशर्फियां पाकर फौरन समझ गया कि यह काम किसने किया होगा। सुबह राजा जब अपने शयनकक्ष से निकले तो वह दौड़कर उनके समक्ष नतमस्तक हो गया और अपनी गलती के लिए क्षमा मांग ली। साथ ही उसने अशर्फियां भी लौटा दीं। राजा ने लड़के के मातृप्रेम की ही नहीं बल्कि ईमानदारी की भी प्रशंसा की और उसे दोगुनी अशर्फियां इनाम में दीं। ईमानदारी और लगन सुनहरे भविष्य के साथी हैं।

४०३) मिट्टी के रंग - उस समय की बात है, जब कि पृथ्वी पर मनुष्य का जन्म नहीं हुआ था। आखिर विधाता ने चन्द्रमा की मुस्कान, गुलाब की सुगन्ध और अमृत की माधुरी को एक साथ मिलाया और मिट्टी के घरौंदों में भर दिया। देवदूतों ने विधाता की इस नई अनोखी रचना को देखा तो आश्चर्य से चकित रह गये। उन्होंने ब्रह्मा से पूछा, यह क्या है? विधाता ने बताया, इसका नाम है जीवन। यह मेरी सर्वश्रेष्ठ कृति है। विधाता की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि एक देवदूत बीच ही में बोल पड़ा, क्षमा कीजिये प्रभु। लेकिन यह समझ में नहीं आया कि इसे मिट्टी का तन क्यों दिया? मिट्टी तो तुच्छ-से-तुच्छ है, जड़ से भी जड़ है। मिट्टी न लेकर आपने कोई धातु क्यों नहीं ली? पर एक

मोहक मुस्कान खिल उठी। बोले, वत्स। यही तो जीवन का रहस्य है। शरीर को महत्ता देने वाला मिट्टी की जड़ता भोगेगा; जो इससे ऊपर उठेगा, उसे आनन्द के परत-परत-परत मिलेंगे। लेकिन ये सब मिट्टी के घरौंदे की तरह क्षणिक हैं। जो जितना सोयेगा, उतना ही खोयेगा। तुम मिट्टी के ही अवगुणों को देखते हो, गुणों को नहीं। मिट्टी में ही अंकुर फूटते हैं। मैंने शरीर का कर्मक्षेत्र बनाया है, उसमें कर्मों के अंकुर जमेंगे। इस भांति मैंने मनुष्य को खेती उसके अपने ही हाथ में दे दी है। जैसा वह बोये, वैसा ही काटे।

४०४) अपने की चोट - एक सुनार था, उसकी दुकान से मिली हुई एक लुहार की दुकान थी। सुनार जब काम करता, उसकी दुकान से बहुत ही धीमी आवाज होती, पर जब लुहार काम करता तो उसकी दुकान से कानों के पर्दे फाड़ देनेवाली आवाज सुनाई पड़ती। एक दिन सोने का एक कण छिटककर लुहार की दुकान में आ गिरा। वहां उसकी भेंट लोहे के एक कण के साथ हुई। सोने के कण ने लोहे के कण से कहा, भाई, हम दोनों का दु:ख समान है। हम दोनों को एक ही तरह आग में तपया जाता है और समान रूप से हथौड़े की चोटें सहनी पड़ती हैं। मैं यह सब यातना चुपचाप सहन करता हूं, पर तुम? तुम्हारा कहना सही है, लेकिन तुम पर चोट करनेवाला लोहे का हथौड़ा तुम्हारा सगा भाई नहीं है, पर वह मेरा सगा भाई है। लोहे के कण ने दु:ख भर स्वर में उत्तर दिया। फिर कुछ रुककर बोला, पराये की अपेक्षा अपनों के द्वारा की गई चोट की पीड़ा अधिक असह्य होती है।

४०५) लचीलापन - एक बार नामी दार्शनिक कन्फ्यूशियस से मिलने एक व्यक्ति आया। वह उनसे काफी देर तक बात करता रहा। आखिर में उसने पूछा, यह बताइए कि लंबी जिन्दगी कौन जीता है कन्फ्यूशियस थोड़ा मुस्कुराए। कहा, जरा उठकर मेरे पास आइये। वह आए, तो कन्फ्यूशियस ने मुंह खोला। व्यक्ति ने झांककर देखा और कहा, हां जीभ तो है। कन्फ्यूशियस ने फिर कहा, अच्छा, अब देखो कि दांत हैं या नहीं। उसने फिर झांककर देखा और कहा, नहीं दांत गायब हैं। कन्फ्यूशियस ने कहा, अरे, यह क्या जीभ तो दांतों से पहले पैदा हुई थी। उसे दांतों से पहले जाना चाहिए। ऐसे क्यों हुआ? आप बताएंगे। व्यक्ति बोला, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा। कन्फ्यूशियस बोले, जीभ कोमल है, दांत कठोर। जिसमें लचीलापन होता है वह अधिक समय तक जीता है।

४०६) जितना दोगे उतना पाओगे - एक मेहनती बढ़ई था। वह काफी पैसे कमाता था, किन्तु उसका खान-पान सादा था। न उसे बढ़िया कपड़े चाहिए थे, न तरह-तरह का खाना। उसे फिजूल खर्च की भी आदत नहीं थी। एक दिन उसके पड़ोसी ने उससे पूछा, मित्र। हर हफ्ते तुम इतने ज्यादा पैसे कमाते हो, आखिर इन पैसों का करते क्या हो? कुछ रुपयों से मैं अपना लेन-देन चुकाता हूं, कुछ को मैं जमा कर देता हूं। उसने जवाब दिया। छोड़ो भी। पड़ोसी ने कहा, मजाक मत करो। मैं अच्छी तरह जानता हूं, न तुम्हें कोई लेन-देन चुकता करना होता है, न तुमने कुछ जमा ही कर रखा है जिसका तुम्हारे पास ब्याज आता हो। समझो। बढ़ई बोला, जन्म से अब तक जो मां-बाप ने मुझ पर खर्च किया है, वह मेरा लेन-देन है, मुझे भरना पड़ता है। जो रुपये मैं अपने बच्चों को उनका भविष्य बनाने के लिए खर्च करता हूं, वही मेरी जमा-पूंजी है। आगे चलकर वह मुझे ब्याज के रूप में तब वापस मिलेगी जब मैं बूढ़ा हो जाऊंगा। जैसे मैं अपने पालन-पोषण के एवज में इस वृद्धावस्था में मां-बाप का ख्याल रखता हूं, मेरे बच्चे भलाई

जितनी ज्यादा की जाती है, उतनी ही ज्यादा मिलती है।

४०७) डर - रविवार का दिन था। सौरभ मेरे सामने बैठा था। उससे बात करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। अखबार से अपना चेहरा छुपा, आंसू रोकते हुए बोलने की कोशिश की, तो दोस्तों के शब्द कानों में बजने लगे- बड़े बेवकूफ हो तुम। मकान बेचकर २० लाख बेटे के हाथ पर रख दिये, इतना विश्वास। अच्छे को बुरा बनते देर नहीं लगती; वह तभी तक अच्छा था जब तक पैसे तुम्हारे पास थे; १०-१५ दिन का कहा था, ३ महीने हो गए; कहीं तुम्हें सड़क पर न पहुंचा दे एक दिन; वैसे उन्हें अब तुम्हारी जरूरत भी क्या है? लगता है सत्तर लाख के विला के चक्कर में तुमने पुराना मकान भी गंवा लिया। खुद को सम्हाला और सौरभ से पूछा, बेटा, बहुत समय हो गया, हम कब शिफ्ट हो रहे हैं? सौरभ बोला, बाबूजी, एक दूसरा डुप्लेक्स भी देखा है। मुझे लोन नही मिल पाएगा; इसलिए विभा अपने दफ्तर में कोशिश कर रही है। शायद काम हो जाये। मन डूबने लगा। जो मुझे दिखाया उसे छोड़ दूसरा मकान क्यों? फिर भी बात तो करनी ही थी। इसलिए बोला, बेटा, जो हमने देखा था, वो भी तो अच्छा था, फिर दूसरा क्यों? बाबूजी, वहां आसपास मन्दिर नहीं था और चौराहा पार करने के बाद ही कोई दुकान थी। आप और मां को अकेले जाने में दिक्कत होती। अभी जो दूसरा डुप्लेक्स देखा है, वहां सब कुछ पास ही है। आप दोनों को आराम रहेगा। बस १० लाख ज्यादा हैं। इसीलिए थोड़ा वक्त लग रहा है। कोई परेशानी है क्या बाबूजी? अब आंखों के आंसू छुपाने की जरूरत नहीं थी। मैंने भर्राई आवाज में कहा, तेरे होते कभी कोई चिंता हो सकती है क्या?

४०८) कर्त्तव्य की उपेक्षा का दंड - चीन में च्यांग नाम का व्यक्ति भेड़ पालने का धंधा करता था। एक बार उसने अपनी भेड़ों को चराने के लिए दो नौकर रखे। थोड़े दिन बाद च्यांग ने देखा कि भेड़ें दुबली हो गईं और कुछ मर भी गईं। च्यांग ने खोजबीन की, तो पता लगा कि दोनों नौकर अपने-अपने व्यसनों में लगे रहते थे। एक नौकर को जुआ खेलने की आदत थी। जब भी उसे मौका मिलता, जुआ खेलने लगता। भेड़ें भूखी-प्यासी रहतीं और मर जातीं। दूसरा नौकर पूजा-पाठ का व्यसनी था। जब भी कोई उपासना-स्थल नजर आता, तो काम भूलकर पूजा-अर्चना करने लगता। च्यांग ने दोनों को पकड़कर न्याय के लिए कंफ्यूशियस के दरबार में पेश किया। दोनों की आदतें अलग थी, पर कर्त्तव्य पालन में दोनों चूक करते थे। कंफ्यूशियस ने दोनों को बराबर दंड दिया और कहा, कर्त्तव्य भाव के बिना जो भी काम किया जाता है, वह व्यसन होता है। व्यसन में जुआ खेला या पूजा की, यह मायने नहीं रखता। कर्त्तव्य-पालन पूजा-पाठ से भी बढ़कर है। इसलिए मैं तुम्हें कर्त्तव्य की उपेक्षा का दंड दे रहा हूं।

४०९) बुलबुल - वह देखो, उस सेब की डाल पर। कितनी सुंदर बुलबुल बैठी है। राकेश ने अपनी छोटी बहन चंपा से कहा। इसके बाद वह दबे पाँव पेड़ पर चढ़ा और ठीक उस डाल पर पहुंच गया जहाँ से वह हाथ लंबा करके आसानी से बुलबुल को पकड़ सकता था। बुलबुल उसके इरादे भाँप गई। राकेश का हाथ उस तक पहुंचता, इसके पूर्व ही वह फुर्र से उड़कर दूसरी डाल पर जा बैठी। राकेश के वहाँ पहुंचते ही तीसरी, फिर चौथी। अचानक इसी आपाधापी में राकेश का संतुलन बिगड़ गया। वह धड़ाम से जमीन पर आ गिरा। चंपा ने कहा, मेरे प्यारे भैया। जरा अपना हाथ देखो। अब तो अक्ल में आ ही गया होगा। आगे से कभी पेड़ पर नहीं चढ़ना। आज हाथ पर चोट आई है, कल गरदन टूट सकती है। बकवास मत करो। राकेश ने ठहाका लगाते हुए कहा, यह तो कुछ भी नहीं है। वह तो मेरी पकड़ से भयभीत हो जान-

बचाकर इधर-उधर भाग रही थी। अगली बार मैं उसे जरूर पकड़ लूंगा। यह संभव नहीं है। चंपा ने कहा, पक्षी तुमसे ज्यादा चालाक और समझदार हैं। वे खतरे की जगह पर दोबारा नहीं बैठते। यही बुलबुल उड़कर अब किसी और पेड़ की फुनगी पर बैठी चहक रही होगी। और तुम सोच रहे हो कि अगली बार फिर तुम पेड़ पर चढ़कर उसे पकड़ने का प्रयत्न करोगे। मूर्ख अनुभव के आधार पर भी कुछ सीख नहीं पाते।

४१०) दोस्ती की मिसाल - सिसली के सिराक्यूज नगर के राजा डायोनीसियस ने किसी सामान्य अपराध के लिए डेमन नाम के एक युवक को प्राणदंड की सजा सुना दी। डेमन ने सिर झुकाकर सजा स्वीकार की, लेकिन राजा से यह प्रार्थना भी की कि उसे एक वर्ष का समय दिया जाए। वह ग्रीस जाकर अपनी संपत्ति व परिवार के लिए जरूरी व्यवस्था करके ठीक समय पर लौट आएगा। राजा ने शर्त रखी, यह तभी मुमकिन है जब कोई तुम्हारी जमानत दे और वचन दे कि तुम न लौटे तो तुम्हारी जगह वह फांसी चढ़ेगा। राजा का निर्णय सुनकर डेमन का मित्र पीथियस आगे आया और उसने डेमन की जमानत ले ली। एक वर्ष पूरा होने पर भी डेमन नहीं लौटा। लोगों ने पीथियस को मूर्ख कहा, किंतु वह खुश था। पीथियस ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि किसी तरह समुद्र में तूफान आ जाए और डेमन का जहाज मार्ग से भटक जाए। आखिर जब तय समय तक डेमन नहीं पहुंचा तो पीथियस को फांसी स्थल पहुंचा दिया गया। उसे बस सजा मिलनी ही थी कि तभी दौड़ता-हांफता डेमन वहां पहुंचा और चिल्लाया, मेरे मित्र को फांसी मत दो। वास्तव में डेमन का जहाज समुद्री तूफान में फंस गया था। किसी तरह किनारे पहुंचकर डेमन को जो भी सवारी मिली उसी से वह भागा। उसका घोड़ा काफी तेज दौड़ने के कारण गिरकर मर गया। डेमन भूखा था और उसके पैरों में छाले पड़ गए थे। राजा दोनों दोस्तों का प्रेम देखकर प्रभावित हुआ। उसने डेमन की सजा माफ कर दी और खुद भी उसका मित्र बन गया।

४११) राजा की उदारता - राजा जनक को राजमार्ग पर आना था, इसलिए उसे खाली कराया जा रहा था। सैनिक इस कार्य में तत्परता से जुटे थे। संयोगवश उस समय वहां से ऋषि अष्टावक्र गुजर रहे थे। जब सैनिकों ने उन्हें राजमार्ग से हटने को कहा तो उन्होंने साफ मना कर दिया। जब सैनिक उनसे इसके लिए प्रार्थना करने लगे तो वह बोले, मेरी बात राजा तक पहुंचा देना कि अपनी सुविधा के लिए वह यह बहुत गलत काम कर रहे हैं। राजा का कार्य प्रजा को सुख-सुविधा देना है कष्ट देना नहीं। एक विद्वान व न्यायप्रिय राजा होते हुए उन्हें यह कार्य शोभा नहीं देता। उनकी यह बात सुनते ही उन्हें बंदी बना लिया गया और राजा जनक के सामने पेश किया गया। जनक ने अष्टावक्र की पूरी बात सुनी। फिर उन्होंने राज दरबार में उपस्थित लोगों से कहा, हम ऋषिवर के साहस की प्रशंसा करते हैं। इन्होंने हमारे गलत कार्य की जानकारी देकर हम पर उपकार किया है। ये अपराधी नहीं हैं। बल्कि इन्होंने तो हमें सच्चाई की राह दिखाई है। यह एक साहसी सत्पुरुष हैं। इसलिए इन्हें दंड नहीं बल्कि पुरस्कार मिलना चाहिए। हम ऋषिवर के अनुसार अपने आचरण में सुधार लाने को तैयार हैं। भविष्य में हमसे ऐसी गलती दोबारा न हो इसलिए हम आज से इन्हें राजगुरु का पद सौंपते हैं। आगे से ये राजकाज से संबंधित प्रमुख कार्यों के बारे में हमें सलाह देंगे। मैं उम्मीद करता हूं कि भविष्य में भी राजगुरु केवल सच्चाई और न्याय पक्ष का ही समर्थन करेंगे। इसके बाद उन्होंने अष्टावक्र को प्रणाम किया। अष्टावक्र ने उन्हें गले से लगा लिया।

४१२) अपना राज किसी को न बताओ - सिकंदरे आजम ने एक दरबारी को अपना राज बताया और दरबारी सिकंदर के लाख मना करने के बावजूद भी उसे राज का राज न रख सका। और राज के खुल जाने से सिकंदर की बहुत तौहीन हुई तो उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद अरस्तू से जो सिकंदर के उस्ताद थे पूछा कि इस शख्स ने शाही राज को फाश (भण्डाफोड़) किया है इसको क्या सजा दी जाये?

अरस्तू ने सुनकर कहा कि इसे रिहा कर दो। क्योंकि असल मुजरिम ये नहीं खुद आप हैं। अगर आप अपने राज को जब कि उसका फाश होना आपके लिए बेइज्जती का कारण था, खुद न छुपा सके, तो फिर इसको क्या जरूरत थी कि छुपाता। जबकि इसके लिए उस राज को खोल देना कोई नुकसान की बात भी नहीं थी। राज उसी वक्त तक राज है जब तक कि एक सीने में है।

४१३) सरलता - इटली के विश्व प्रसिद्ध माइकल एंजेलो को कौन नहीं जानता होगा। वे एक दिन शाम को थके हारे अपने घर की ओर पैदल जा रहे थे। कुछ ही दूरी पर एक छोटा लड़का रास्ते में खड़ा था। ज्यों ही एंजेलो उसके पास आये, वह लड़का उनके सामने जाकर खड़ा हो गया और बोला- आप ही माइकल एंजेलो हैं ना?

हां, मैं ही हूं। यदि आपको घर जाने की जल्दी न हो तो एक निवेदन करना चाहता हूं।

एंजेलो ने मुस्कुराकर प्रेम से कहा- कहो, खुशी से कहो।

मैंने सुना है कि आप बहुत बड़े कलाकार हैं। मेरी इस कॉपी के प्रथम पृष्ठ पर एक सुंदर देवदूत का चित्र बना दीजिए। बस इतना काम कर दीजिए। उस लड़के ने अपनी कॉपी और पेन्सिल एंजेलो के हाथ में थमा दी।

एंजेलो उस लड़के को देखता रहा। उसने सोचा- कितना निर्दोष है यह बच्चा। मेरे नाम से ही उसने मेरे लिए कितनी भव्य कल्पना बांध ली है। तभी तो मुझे अपना मित्र बनाकर रास्ते में खड़ा कर चित्र बनाने को कह रहा है। उसने बच्चे को प्रेम से चूम लिया और सड़क के किनारे बैठकर चित्र बनाने लगा।

चित्र बन गया। लड़के को चित्र दिखाया और पूछा- मेरे दोस्त, देख यह चित्र, पसंद आया तुझे?

बहुत सुंदर, बहुत सुंदर। कहता हुआ लड़का कॉपी लेकर नाचने लगा। और दौड़ता हुआ चला गया। उसके जाने के बाद एंजेलो बोले, कितना प्यारा लड़का था। और सहज भाव से अपने घर की ओर चल दिये।

महान शिल्पकार होने पर भी एंजेलो में कितनी अद्भुत सरलता थी। गुणों की महानता ही मनुष्य को अमर बना देती है।

४१४) धनी भी होता है गरीब - संत इब्राहिम अत्यंत नेक ईमानदार और प्रजा के सुख-दुख का ख्याल रखनेवाले शासक थे। प्रजा की जरूरतों पर ध्यान देने के साथ-साथ वह भक्ति में भी लगे रहते थे।

भक्ति से उनका अभिप्राय दुखी दरिद्रों की सेवा से था। कुछ समय बाद वह सब कुछ त्यागकर फकीर बन गए और उन्होंने सेवा को ही अपना लक्ष्य मान लिया। उनकी नेकी व कर्त्तव्य परायणता की दूर-दूर तक प्रसिद्धि हो गई। बहुत से लोग इब्राहिम के पास अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आने लगे। एक दिन एक व्यक्ति उनके पास ढेर सारा सोना लेकर आया और बोला- यह मैं आपके लिए लाया हूं। इसे स्वीकार कर लीजिए। संत इब्राहिम को उस व्यक्ति के व्यवहार में अहंकार नजर आया। वह उससे बोले- मैं किसी गरीब की एक कौड़ी भी नहीं ले सकता। वह व्यक्ति हैरानी से बोला-

मैं गरीब नहीं हूं। मेरे पास तो दौलत के कई भंडार हैं। इस पर इब्राहिम ने कहा- माना कि तुम्हारे पास बहुत दौलत है, किन्तु और दौलत पाने की तुम्हारी इच्छा बाकी है या खत्म हो गई? वह व्यक्ति बोला- आप तो जानते ही हैं कि दौलत ऐसी चीज है जिसकी चाह कभी खत्म नहीं होती। उस शख्स के जवाब पर इब्राहिम गंभीर होकर बोले- इतनी दौलत का मालिक होते हुए भी तुम्हारी और दौलत पाने की इच्छा है। भला इस समय तुमसे गरीब आदमी और कौन हो सकता है? इसलिए इस समय तुम्हें ही इसकी अधिक जरूरत है। इसे तुम अपने पास ही रखो। मुझे नहीं चाहिए। यह सुनकर वह व्यक्ति शर्मिंदा हो गया। उसने अपने बर्ताव के लिए माफी मांगते हुए कहा- मैं समझ गया। असली सुख दौलत जमा करने में नहीं, जरूरतमंदों व गरीबों को बांटकर उनका दु:ख-दर्द दूर करने में है। इब्राहिम ने उसे माफ कर दिया। उसी क्षण उस व्यक्ति ने सच्चे मन से मनुष्य की सेवा का संकल्प लिया।

४१५) सुखी आदमी की कमीज - एक बार एक राजा था। उसके पास सब कुछ था लेकिन वह सुखी नहीं था। वह समझ नहीं पाता था कि कैसे खुश रहा जाए? उसे यह लगने लगा कि वह बीमार है जबकि वह बिलकुल स्वस्थ दिखता था। राजा के आदेश पर राज्य के एक से एक अच्छे चिकित्सकों को बुलाया गया लेकिन कोई भी उसका इलाज नहीं कर पाया।

अंत में एक बुद्धिमान वैद्य ने राजा का मर्ज समझ लिया। उसे एक युक्ति सूझी उसने कहा, यदि महाराज एक रात्रि के लिए किसी खुश व्यक्ति की कमीज पहन कर सोएं तो इनकी बीमारी दूर हो सकती है। सैनिकों को राज्य भर में किसी खुश आदमी को खोजने और उसकी कमीज लाने का आदेश दिया गया। पूरे राज्य में खोजने पर भी कोई खुश व्यक्ति खोजा नहीं जा सका। किसी को अपनी निर्धनता का दु:ख था तो कोई धनवान और धन की लालसा पाले हुए था। किसी को दु:ख था कि उसकी पत्नी का निधन हो गया था, तो किसी को शिकायत थी कि उसकी पत्नी जीवित क्यों है। किसी को संतान न होने का दुख था तो कोई संतान से दु:खी था। वस्तुत: सब जन दुखी थे। तभी सैनिकों को गांव के द्वार पर एक भिखारी मदमस्त लेटा हुआ दिखाई पड़ा जो अपनी मस्ती में सीटी बजा-बजाकर, हंस-हंसकर गाना गाता हुआ लोटपोट हुए जाता था। वह अत्यधिक प्रसन्नचित्त जान पड़ता था।

सैनिक ने उसके पास रुकते हुए अभिवादन कर उससे कहा, ईश्वर आपका भला करे। आप काफी प्रसन्न दिखाई देते हैं। हां, मैं खुश हूं और मुझे किसी बात का कोई दु:ख नहीं है। सैनिक उसे पाकर अभिभूत हो गये थे। उन्होंने उसे कहा कि यदि वह एक रात के लिए अपनी कमीज उधारी दे दे तो वे उसे एक सौ स्वर्ण मुद्राएं दे देंगे। यह सुनकर वह जोर-जोर से हंसते हंसते लोटपोट हो गया फिर किसी तरह अपनी हंसी रोकते हुए बोला, मैं अवश्य ही अपनी कमीज दे देता पर मेरे तन पर कोई वस्त्र नहीं है। राजा को हर दिन का समाचार दिया जाता था जिससे वह यह जान सका कि दुनिया में कितने दु:ख व्याप्त हैं। अब सैनिकों ने यह समाचार दिया कि उन्हें एक व्यक्ति मिला जो पूर्णतया प्रसन्न व संतुष्ट है लेकिन उसके पास तन ढकने को वस्त्र नहीं है। अब राजा जीवन के गूढ़ तत्व को समझ गया। वह अपने व्यर्थ के भ्रम को छोड़कर जनता की भलाई में लग गया। अब राजा व प्रजा दोनों सुखी थे।

४१६) शरीर का संस्कार - संत डायोनीज का स्वभाव बड़ा विचित्र था, इसीलिए उनके जीवनकाल में उनके परिचितों की संख्या बहुत कम रही। लोग उनसे कतराते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि डायोनीज सनकी हैं। पता नहीं किसे क्या

कह दें। मृत्यु शैया पर लेटे डायोनीज के पास उनका एक दोस्त खड़ा था। डायोनीज ने उससे कहा, दोस्त मैं मर जाऊं तो मेरे लिए एक काम जरूर करना। दोस्त ने हामी भरी तो डायोनीज ने कहा, मेरे शव का संस्कार करने की बजाय उसे जंगल में फेंक आना। सुनकर उनका दोस्त सकते में आ गया। उसने कहा, मैं ऐसा नहीं कर सकता, जंगल में तुम्हें शेर, गिद्ध, कौवे नोच कर खा जाएंगे। डायोनीज ने कहा, ठीक है। फिर तुम मेरे साथ एक छड़ी भी रखना। सुनकर दोस्त ने कहा, लेकिन लाश के पास छड़ी रखने से क्या लाभ होगा? डायोनीज ने कहा, यही तो मैं तुम्हें समझा रहा था। शरीर में जब मैं नहीं रहूंगा तो इसे किसी संस्कार की क्या जरूरत? अगर वह चील-कौओं के पेट भरने के काम आए तब भी बहुत हुआ। किसी के काम आना हमारी सबसे बड़ी सार्थकता है।

४१७) गांधीजी का संकल्प - बात आजादी के पहले की है। लखनऊ में कांग्रेस का महाधिवेशन था जिसमें गांधी जी आए थे। वक्ताओं ने तत्कालीन समस्याओं पर विवेचन किया, लेकिन राजकुमार शुक्ल ने किसानों की जो कष्ट कहानी कही, उसे सुनकर गांधी जी विचलित हो गए। उसकी सच्चाई अपनी आंखों देखने व चंपारण पहुंचे। साथ में कस्तूरबा भी थीं। कस्तूरबा थितिहरवा गांव में गईं तो उन्होंने देखा कि किसानों के पास जीने की मूलभूत जरूरतें पूरी करने लायक संसाधन भी नहीं हैं। उनकी औरतों के कपड़े भी बहुत गंदे और जर्जर थे। कस्तूरबा ने गांव की औरतों की एक सभा बुलाई और उन्हें साफ-सफाई का महत्व समझाने लगीं।

इस पर एक गरीब किसान की औरत सभा के बीच खड़ी हुई। उसके कपड़े बहुत गंदे थे। वह कस्तूरबा को अपनी झोपड़ी में ले गई। अपनी झोपड़ी दिखाकर वह बोली, माताजी। देखो, मेरे घर में कुछ नहीं है। बस, मेरी देह पर यह एक धोती है। बताइए, मैं क्या पहनकर धोती साफ करूं? आप गांधी जी से कहकर मुझे एक धोती दिलवा दें तो फिर मैं पूरी साफ-सफाई से रहूंगी। कस्तूरबा उसकी बातें सुनकर और वहां की दयनीय स्थिति देखकर भाव-विह्वल हो गईं। उन्होंने गांधी जी को सारी स्थिति बताई।

लेकिन गांधीजी पर इसका विचित्र प्रभाव पड़ा। उन्होंने सोचा, इन किसान औरतों जैसी हालत तो देश में लाखों बहनों की होगी। जब तक इन सभी औरतों के तन को ढंकने के कपड़े नहीं मिलते हैं, तब तक मेरा कुर्ता-धोती और चादर पहनना उचित नहीं है। जब मेरी लाखों बहनों को गरीबी एवं अभाव के कारण तन ढंकने को कपड़े नहीं मिलते तो मुझे इतने सारे कपड़े शरीर पर लादे रहने का क्या हक है? बस उसी दिन से गांधी जी ने संकल्प ले लिया कि वे केवल घुटनों तक धोती पहनकर ही रहेंगे। चंपारण की इन स्थितियों ने ही गांधी जी के तन पर से कपड़ उतार दिए।

४१८) रस्सी - दो छोटे लड़कों को सड़क पर एक पुरानी रस्सी पड़ी मिली। दोनों उसे लेने के लिए बुरी तरह छीना-झपटी करने लगे। उनकी चीख-पुकार ऐसी थी कि दूर-दूर तक सुनाई दे रही थी। एक लड़के ने रस्सी को एक तरफ पकड़ा, दूसरे ने दूसरी तरफ। दोनों ने पूरी ताकत से उसे अपनी-अपनी तरफ खींचना शुरू किया। अचानक रस्सी बीच में से टूट गई। एक लड़का कीचड़ में जा गिरा, दूसरा पास के एक नाले में। एक यात्री वहां खड़ा यह तमाशा देख रहा था। वह जोर से हँस पड़ा। बच्चो। किसी चीज के लिए झगड़ा करने से यही नतीजा निकलता है। वह बोला। स्वार्थ से सुख नहीं मिलता।

४१९) सुंदर फूल - रोमी और कैरोलिन एक दिन अपने बगीचे में घूम रही थीं। घूमते-घूमते वे गुलाब के एक पौधे के सामने आकर ठहर गईं। रोमी ने कहा, सारे फूलों में मुझे गुलाब सबसे सुंदर और प्रिय लगता है। सुनकर कैरोलिन ने कहा, उस क्यारी में जो मोगरे लगे हैं, वे सबसे सुंदर और महकदार हैं। मुझे तो इनसे बढ़कर सुंदर कोई फूल नहीं लगता। रोमी ने तुनक कर कहा, इनसे अच्छे तो ये गेंदे हैं। पिछली सर्दियों में देखा नहीं था। कैसे खिले थे कि देखकर जी खुश हो गया था। उनकी माँ, जो पास ही बैठी उन दोनों की बातें ध्यान से सुन रही थी, बोली, हर फूल की अपनी-अपनी खासियत है। अत: कोई एक दूसरे से कम नहीं है। गुंलाब शांति और सौम्यता का प्रतीक है, मोगरा भोलेपन का और गेंदा तेजस्विता व वीरता का। हर चीज में खुशबू हैं, यदि मनुष्य महसूस कर सके।

४२०) सहायता - एक शाम एक विधवा अपने दो बच्चों के साथ पासवाले जंगल से लौट रही थी। मां के सिर पर लकड़ियों का बड़ा गट्ठर था और दोनों बच्चों के सिर पर छोटे-छोटे। रास्ते में उनकी भेंट एक धनी व्यापारी से हुई। मां ने व्यापारी से सहायता की मांग की। व्यापारी ने कहा, तुम्हें किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नहीं है। अपने इन दोनों बच्चों को मुझे दे दो। मैं इन्हें सिखाऊंगा कि बांस तथा सरकंडों को किस तरह सोना बनाया जा सकता है। मां को लगा कि व्यापारी उनका मजाक उड़ा रहा है, पर वह राजी हो गई। कुछ ही दिनों के भीतर व्यापारी ने एक बच्चे को टोकरियां बनाने में निपुण बना दिया तथा दूसरे को हैट बनाने में। करीब तीन साल बाद बच्चे अपनी मां के पास वापस लौट आए और अपने-अपने काम में जुट गए। एक दिन वही व्यापारी उनके घर आया और अच्छे दाम देकर उनसे टोकरियां व हैट खरीदना शुरू कर दिया। विधवा का घर पैसों से भर गया। व्यापारी प्रसन्न हो विधवा से बोला, मैंने कहा था न तुमसे कि इन बांसों और सरकंडों को मैं सोने में बदल दूंगा। अपना हाथ जगन्नाथ।

४२१) खोया हुआ बटुआ - रॉबर्ट एक गरीब व्यक्ति का छोटा बेटा था। एक दिन वह जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ बुरी तरह रो रहा था। जंगल के उसी हिस्से में एक शिकारी आया। रॉबर्ट को रोता देखकर उसने बड़ी आत्मीयता से उसके रोने का कारण पूछा। मेरी मां बहुत दिनों से बीमार है। उसने जवाब दिया, मेरे पिताजी ने मुझे दवाइयां खरीदने भेजा था, पर रास्ते में मेरा बटुआ गिर गया। शिकारी ने अपनी जेब से एक रेशमी बटुआ निकाला, जिसमें सोने के तमाम सिक्के भरे हुए थे। लड़के को बटुआ दिखाकर शिकारी ने पूछा, क्या यही तुम्हारा बटुआ है?

नहीं-नहीं, रॉबर्ट ने उत्तर दिया, मेरे पास जो बटुआ था वह छोटा था- और उसमें पैसे थे, सोने के सिक्के नहीं। कहीं यह तो नहीं है? शिकारी ने उसे दूसरा बटुआ दिखाते हुए पूछा, हां-हां, यही है। वह प्रसन्नता से उछलकर बोला, चमड़े का यही छोटा-सा बटुआ है, जो मुझसे खो गया था। शिकारी उसकी ईमानदारी पर बहुत खुश हुआ। रॉबर्ट का बटुआ तो उसने लौटाया ही, वह सोने के सिक्केवाला बटुआ भी उसे उपहार स्वरूप भेंट किया। ईमानदारी अपना अलग ही प्रभाव छोड़ती है।

४२२) मेरे लिए लंगोटी ही काफी है - गांधीजी उड़ीसा की यात्रा कर रहे थे। यात्रा में उन्होंने एक ऐसी गरीब स्त्री को देखा जो फटा हुआ मैला कपड़ा पहने थी। गांधीजी ने उससे कहा, बहन। तुम अपने कपड़े क्यों नहीं धोती? इतना आलस्य तो तुम्हें नहीं करना चाहिए। स्त्री ने सिर नवाकर कहा, बापूजी। मेरे पास पहनने के लिए इसके अलावा कोई दूसरा कपड़ा ही नहीं है। फिर धोऊं कैसे? यह सुनकर बापू की आंखें डबडबा आई, हाय। आज मेरी भारत माता के पास पहनने

को चिथड़ा भी नहीं है। गांधीजी ने उसी समय प्रतिज्ञा की, जब तक देश स्वतंत्र नहीं होता और गरीब-से-गरीब को भी तन ढकने के लिए कपड़ा नहीं मिलता तब तक मैं कपड़े नहीं पहनूंगा। लाज ढकने के लिए मेरे लिए लंगोटी ही काफी है। महापुरुष दूसरों का दु:ख-दर्द अपनाकर चलते हैं।

४२३) रंगीन चेहरा - एक गांववाले का विचित्र चेहरा देखकर एक चित्रकार को उसका चित्र बनाने की इच्छा हुई। उसने गांववाले से कहा, सुनो भैया। थोड़ी देर बैठोगे क्या? अठन्नी दूंगा। गांववाले ने कोई जवाब नहीं दिया। चित्रकार ने पुन: पूछा, क्यों। क्या सोच रहे हो? मैं यह सोच रहा हूं कि गांववाले ने जरा सिर खुजलाते हुए कहा, तुम मेरा चेहरा बनाना चाहते हो न। पर रंग भरने के बाद जब चेहरा धोना पड़ेगा तब मेरे चेहरे का रंग तो नहीं उतर जाएगा? जीवन में रंग न हो तो वह जीवन फीका लगता है।

४२४) हवा और सूरज - एक बार हवा और सूरज में अपनी-अपनी शक्ति को लेकर बहस छिड़ गई। दोनों ही अपने बड़प्पन की जिद पर अड़े रहे, तभी उनकी दृष्टि घास पर चलते हुए एक यात्री पर गई। दोनों ने अपनी ताकत की आजमाइश उस पर करने का फैसला किया। पहली बारी हवा की थी। वह तूफान बन गई। अपने भीतर ठंड की मात्रा वह बढ़ाती गई, बढ़ाती गई। यात्री ने अपने को कोट से कस लिया। हार-थककर हवा को अपनी कोशिश छोड़ देनी पड़ी। अब सूरज की बारी थी। वह धीरे-धीरे गरम होने लगा। गरमी की तेजी से धरती भी तपने लगी। यात्री ने पहले अपना कोट उतार फेंका, फिर धीरे-धीरे सारे कपड़े। सबसे बड़ी विजय स्वयं अपने ऊपर विजय प्राप्त करना है।

४२५) लोभी बालक - एक लड़के ने मूंगफली निकालने के लिए मटकी में अपना हाथ डाला। मुट्ठी में जितनी मूंगफली आ सकती थीं, उसने भर लीं। ज्यों ही हाथ बाहर निकालने लगा, मटकी का मुंह संकरा होने की वजह से मुट्ठी फंस गई। वह परेशान हो जोर-जोर से रोने लगा। यह देखकर उसके पिताजी ने कहा, बेवकूफ। उतनी मूंगफली मुट्ठी में भर जितनी आसानी से बाहर आ सकें। लोभ बुद्धि भ्रष्ट कर देता है।

४२६) कुल्हाड़ी और लकड़हारा - एक लकड़हारा जंगल में गया और अपनी लोहे की कुल्हाड़ी का हत्था बनाने के लिए उसने बड़े-बड़े पेड़ों से एक शाख की मांग की। मांग छोटी सी थी, पर एक भी बड़ा पेड़ इसके लिए तैयार न हुआ। इतना ही नहीं, उन सभी ने मिलकर करीब के एक छोटे से पेड़ को ललकारा। बेचारे उस पेड़ ने उन सबकी जिद के पीछे अपनी जान दे दी। जैसे ही उस नन्हे पेड़ की लकड़ी से कुल्हाड़ी का हत्था बनकर तैयार हो गया, लकड़हारा बारी-बारी से सारे पेड़ों पर टूट पड़ा। एक के बाद एक पेड़ कट-कट कर गिरने लगे। तब एक घने पेड़ ने अपने एक मित्र पेड़ से कहा, अगर हमने अपने नन्हे पड़ोसी पेड़ को मरने पर मजबूर न किया होता तो आज हम सुरक्षित होते। जहां एकता होती है वहीं सुरक्षा होती है।

४२७) मेंढ़कों का राजा - एक समय मेंढ़कों को महसूस हुआ कि सुखी और अनुशासित जिन्दगी जीने के लिए उन्हें एक राजा की जरूरत है, ताकि सब कायदे से रह सकें। अपनी प्रार्थना लेकर मेंढ़कों का सरदार इंद्रदेव के दरबार में पहुंचा। इंद्रदेव ने उसकी विनती सुन ली। लकड़ी का एक बड़ा-सा बुत उन्होंने आसमान से नीचे फेंका। उस बुत के पानी में गिरते ही जोरों का धमाका हुआ। सारे मेंढ़क भय से कांप उठे। कुछ समय बाद एक मेंढ़क ने हिम्मत की और लकड़ी के उस बुत

को करीब जाकर छुआ। उसकी देखादेखी अन्य मेंढ़कों ने भी उस बुत को छुआ। फिर कुछ तो उस पर चढ़कर नाचा-कूदी करने लगे। उन्हें पुन: इस बात का एहसास हुआ कि यह राजा तो किसी काम का नहीं है। उन्होंने फिर एक मेंढक को इंद्रदेव के दरबार में भेजा। अब की इंद्रदेव को उन पर गुस्सा आ गया। उन्होंने एक बगुले को तालाब पर भेज दिया, जो रोजाना दो मेंढक खा जाता था। मेंढ़कों को बात समझ में आ गई। भूखे राजा से राजा का न होना अच्छा।

४२८) समूह का प्रभाव - एक राजा के पास कोई ज्योतिषी आया और बोला, राजन्। आधे घंटे बाद वर्षा होने वाली है। उसमें मादक पानी बरसेगा। उस पानी को स्नान या पीने के लिए उपयोग में लानेवाला व्यक्ति पागल हो जाएगा। इसलिए आप शहर में घोषणा करा दें कि कोई भी नागरिक उस जल से काम न लें।

राजा ने भविष्यवक्ता की बात सुनी किंतु उस पर ध्यान नहीं दिया। आधा घंटा होते-होते आकाश में घटा उमड़ पड़ी और पानी बरसने लगा। राजा को ज्योतिषी की बात पर विश्वास हुआ। वह मंत्री को साथ लेकर शहर की स्थिति का निरीक्षण करने निकला। थोड़ी दूर जाते ही उसने देखा हजारों लोग पागल हो गए हैं। वे अपने वस्त्र उतारकर नाच रहे हैं, गा रहे हैं और गली-गली में घूम रहे हैं। राजा ने मंत्री से पूछा, यह सब क्या हो गया? कैसे हो गया? इसी बीच राजा और मंत्री सैंकड़ो लोगों से घिर गए। वे चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे थे, ये दो व्यक्ति कौन है? लगता है कि ये पागल हैं, इनको मारो और पागलपन दूर करो। राजा घबरा गया। वह धीरे से बोला, अब तो मारे जाएंगे। मंत्री बोला, राजन्। हम भी इनके साथ हो जाएं तो बच सकते हैं। देखते ही देखते राजा और मंत्री ने अपने वस्त्र उतार दिए। वे भी उनके साथ नाचने लगे। यह है समूह का प्रभाव।

४२९) विधाता की रचना - एक दिन विधाता ने चन्द्रमा की मुस्कान, गुलाब की सुगन्ध और अमृत की माधुरी को एक साथ मिलाया और मिट्टी के घरौंदों में भर दिया। देवदूतों ने विधाता की इस नई अनोखी रचना को देखा तो आश्चर्य से चकित रह गये। उन्होंने ब्रह्मा से पूछा, यह क्या है? विधाता ने बताया, इसका नाम है जीवन। यह मेरी सर्वश्रेष्ठ कृति है। विधाता की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी, कि एक देवदूत बीच ही में बोल पड़ा, क्षमा कीजिये प्रभु। लेकिन यह समझ में नहीं आया कि इसे मिट्टी का तन क्यों दिया? मिट्टी तो तुच्छ से तुच्छ है, जड़ से भी जड़ है। मिट्टी न लेकर आपने कोई धातु क्यों नहीं ली? सोना नहीं तो लोहा ही ले लेते। विधाता के होठों पर एक मोहक मुस्कान खिल उठी। बोले, वत्स। यही तो जीवन का रहस्य है। शरीर को महत्ता देनेवाला मिट्टी की जड़ता भोगेगा, जो इससे ऊपर उठेगा, उसे आनन्द के परत-परत मिलेंगे। लेकिन ये सब मिट्टी के घरौंदे की तरह क्षणिक हैं। जो जितना सोयेगा, उतना ही खोयेगा। तुम मिट्टी के ही अवगुणों को देखते हो, गुणों को नहीं। मिट्टी में ही अंकुर फूटते हैं। मैंने शरीर का कर्मक्षेत्र बनाया है, उसमें कर्मों के अंकुर जमेंगे। इस भांति मैंने मनुष्य को खेती उसके अपने ही हाथ में दे दी है। जैसा वह बोये, वैसा ही काटे।

४३०) गिलहरी से ज्ञान - बात उस समय की है, जब भगवान बुद्ध आत्मसाधना एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए घोर तप में लगे थे। उन्होंने शरीर को काफी कष्ट दिया। घने जंगल में कड़ी साधना की, फिर भी उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। लगातार प्रयत्नों के बावजूद बुद्ध अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। एक दिन निराश होकर बुद्ध सोचने लगे कि मैंने अभी कुछ प्राप्त नहीं किया है। अब आगे भी क्या कर पाऊंगा। उन्हें इन निराश भावों ने निरुत्साहित कर दिया। वे समझ

नहीं पा रहे थे कि उन्हें क्या करना चाहिए। इसी उहापोह में उन्हें प्यास लगी। वे प्यास बुझाने के लिए जल की तलाश करते हुए थोड़ी देर में एक झील के पास पहुंचे। झील पर बुद्ध ने देखा कि एक नन्ही सी गिलहरी पहले तो जड़वत बैठी रही, फिर उठकर झील के पास गई, अपना सारा शरीर भिगोया और फिर आकर शरीर को झाड़ने लगी। ऐसा वह बार-बार करने लगी। वास्तव में उस गिलहरी के दो बच्चे उस झील में डूब गए थे। बुद्ध सोचने लगे कि इस गिलहरी का प्रयास कितना मूर्खतापूर्ण है, क्या यह इस झील को सुखा पाएगी। फिर बुद्ध को लगा मानो गिलहरी कह रही हो यह झील चाहे कभी खाली हो या नहीं, लेकिन मैं अपना प्रयास चालू रखूंगी। बुद्ध इस घटना को देखकर विचारमग्न हो गए। अन्तत: प्रेरणा जागी, निराशा के बादल छंट गए। छोटी सी गिलहरी ने भगवान बुद्ध को अपने मार्ग से विचलित होने से बचा लिया। वे सोचने लगे जब यह नन्हीं सी गिलहरी अपने सामर्थ्य के बाहर झील को सुखा देने के लिए कृतसंकल्पित है, तो मेरे में क्या कमी है? मैं तो इससे हजार गुना अधिक क्षमता रखता हूं। यह सोचकर गौतम बुद्ध पुन: अपनी साधना में लग गए और ध्यान में लीन हो गये। इस तरह एक दिन उन्हें बोधिवृक्ष के तले ज्ञान प्राप्त हुआ।

४३१) आत्मविश्वास की जीत - डेनिस बर्ड अमेरिका के लोकप्रिय फुटबॉल खिलाड़ी थे। एक दिन खेलते समय वह अपनी टीम के साथी से टकराए और जमीन पर गिर पड़े, जिससे उनके हाथ-पैर बेजान हो गए। पूरी टीम, डॉक्टर और प्रशिक्षक मैदान पर दौड़े आए। बर्ड उठने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन उठ नहीं पा रहे थे। उन्होंने चिकित्सक को बताया, मुझे गर्दन के नीचे किसी हिस्से में कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है। डॉक्टर ने कहा, कोई बात नहीं, कभी-कभी ऐसा होता है। इसे स्टिंगर इंजरी कहते हैं। इसमें नर्व्स कुछ समय के लिए काम करना बंद कर देती हैं। कुछ समय बाद चिकित्सक समझ गए कि डेनिस को स्टिंगर नहीं हुआ है, बल्कि उन्हें लकवा मार गया है। चिकित्सक ने कहा, डेनिस, मैं यह कहने के लिए माफी चाहता हूं कि अब तुम कभी चल नहीं पाओगे। वह हैरान रह गए, लेकिन उन्होंने डॉक्टर की बात मानने से इंकार कर दिया। डेनिस बोले, चिकित्सक आप गलत कह रहे हो। मैं चलकर दिखाऊंगा। डेनिस की बात सुनकर चिकित्सक और वहां उपस्थित लोगों को लगा कि शायद उनके दिमाग ने काम करना बंद कर दिया है। लेकिन इसके बाद डेनिस ने प्रतिदिन चलने का अभ्यास जारी रखा। आखिर उनके विश्वास और अभ्यास ने असर दिखाया। वे एक दिन बगैर छड़ी या वॉकर की मदद के उस मैदान पर उतरे जहां वे लकवे का शिकार हुए थे। डेनिस बर्ड को उनके अदम्य विश्वास, साहस और उत्कृष्ट योगदान के लिए अमेरिकन प्रोफेशनल फुटबॉल टीम न्यूयॉर्क जेअृस ने सम्मानित किया। उन्होंने सम्मान लेते समय कहा था, यदि आपके पास आस्था और आत्मविश्वास जीवित है तो दुनिया की विपरीत से विपरीत परिस्थितियां भी आपको नहीं हरा सकतीं। आखिरकार आप जीत ही जाते हैं और आपको जीतना ही है, क्योंकि मुश्किलों के आगे ही जीत है। डेनिस ने डिसेबल बच्चों के लिए एक फाउंडेशन की स्थापना की।

४३२) मृत्यु का ध्यान - उस दिन भरत महाराज अपने दरबार में बैठे थे। दरबार में प्रजा पर लगनेवाले कर पर चर्चा हो रही थी। उसी वक्त एक व्यक्ति दरबार में आया और महाराज भरत से पूछने लगा, महाराज, आप इतने बड़े साम्राज्य का संचालन करते हुए भी जीवन में निर्लिप्त भाव से कैसे रह लेते हैं? राजा भरत ने उस व्यक्ति को कहा, तेल से भरा हुआ एक कटोरा लेकर तुम राज्य के सारे बाजारों में घूम आओ। लेकिन ध्यान रहे कि यदि कटोरे में से तेल की एक बूंद भी नीचे गिरा

दी, तो तुम फांसी के तख्ते पर लटका दिए जाओगे। भरत के आदेश से भयभीत हुआ वह व्यक्ति आदेशानुसार संपूर्ण नगर में पूरी सावधानी के साथ घूमकर राजा भरत के पास लौटा। रास्ते में यद्यपि नृत्य, नाटक, संगीत आदि मनोरंजन के कई आयोजन चल रहे थे, किंतु वह व्यक्ति मृत्यु के भय से किसी पर भी दृष्टि न डाल सका। भरत ने पूछा, तुम पूरे नगर में घूम आए तो बताओ नगर में तुमने क्या देखा? व्यक्ति ने उत्तर दिया कि महाराज, मैंने कटोरे के अलावा और कुछ नहीं देखा। भरत ने फिर सवाल किया, तुमने नगर में हो रहे नाटक, संगीत आदि मंडलियों के अनेक सुंदर कार्यक्रम नहीं देखे? इसपर वह व्यक्ति बोला- राजन्, जिसके सामने मृत्यु नाच रही हो, वह नाटक, नृत्य आदि के मनोरंजक कार्यक्रम कैसे देख सकता है? मृत्यु का भय कैसा होता है, यह तो उससे भयभीत ही जानता है। सच यही है कि मैंने कुछ नहीं देखा। यह सुनकर महाराजा भरत ने कहा, मैं प्रत्येक क्षण जागरूक रहता हूं। मृत्यु का मुझे हर क्षण ध्यान रहता है। इसलिए साम्राज्य का सुख-वैभव मुझे परेशान नहीं करता। मैं इसका आनंद लेते हुए भी उसमें आसक्त नहीं होता। मैं निर्लिप्त रहता हूं। उस व्यक्ति को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। अब उसकी शंका दूर हो चुकी थी।

४३३) संकल्प से निकली राह - हैन्निबाल एक महान अफ्रीकी सेनापति और राजनेता था। उसने संकल्प लेकर चुनौतियों को स्वीकार किया और उन्हें पार कर लोगों को यह बता दिया कि दृढ़ संकल्प से असंभव को संभव बनाया जा सकता है। रोमवासी हैन्निबाल के प्रबल शत्रु थे। वह कारथेज का रहनेवाला था। २२० ईसा पूर्व में रोम और कारथेज के बीच युद्ध हुआ था। रोम की सेना बहुत विशाल थी जबकि हैन्निबाल की सेना के पास रसद, हथियार एवं सैनिक बहुत कम मात्रा में थे। इन सबके बावजूद हैन्निबाल का संकल्प था कि वह रोमन सेना को हराएगा। उसने रोमन सेना को हराने की योजना पर काम शुरू किया। हैन्निबाल को इस बात का अहसास था कि सेना एवं हथियार के मुकाबले में वह रोमन सेना को पराजित नहीं कर पाएगा। उन्हें पराजित करने के लिए चतुराई और बुद्धिमत्ता से काम लेना होगा। हैन्निबाल ने गहराई से सोच विचार किया तो उसे आल्प्स पर्वत का ध्यान आया। आल्प्स पर्वत के पास कोई आता-जाता न था। उस पर्वत को पार करना असंभव माना जाता था क्योंकि उस तक पहुंचना भी कठिन था। सबने यही सुना था कि वहां जाने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। बस हैन्निबाल ने इसी असंभव को संभव बनाने का निश्चय कर लिया। उसने अफ्रीकी हाथियों की मदद से आल्प्स को पार करने की रणनीति बनाई। इसके बाद उसने अपनी सेना को एकत्रित कर इस योजना के बारे में बताया। सभी सैनिक उत्साह में भरकर अजेय खड़े आल्प्स पर्वत को जीतने के लिए चल पड़े। हैन्निबाल अपनी सेना के आत्मविश्वास एवं साहस को मजबूत बनाता रहा। आखिर संकल्प एवं प्रयास से हैन्निबाल ने आल्प्स पर्वत को पार विशाल रोमन सेना को हरा दिया। हैन्निबाल ने अपने इस प्रयास से सभी को एक महत्वपूर्ण सीख दी कि अपने संकल्प के साथ रास्ता खोजें और यदि रास्ता नहीं मिल रहा तो फिर नया रास्ता बनाएं।

४३४) देश सेवा की लगन - साबरमती आश्रम के नियम बड़े ही सख्त थे। कठोर अनुशासन में खुद को तपाने और मजबूत बनाने की यह गांधी जी की प्रयोगशाला अपने नियमों के लिए मशहूर थी। बीबी अम्तुस्सलाम जिन्हें महात्मा गांधी ने अपनी बेटी कहकर बुलाया है, वह साबरमती आश्रम में रहना चाहती थी। उनकी दिली इच्छा थी कि वह देश सेवा के काम आ सकें मगर आश्रम के नियमानुसार सभी को अपने स्वास्थ्य का प्रमाणपत्र देना होता था। अम्तुस्स्लाम को

बचपन से ही फेफड़ों की बीमारी थी। इस वजह से उनके लिए यहां रहना मुश्किल था। जब वह अपने परिचित डॉक्टर के पास प्रमाणपत्र बनवाने पहुंची तो डॉक्टर ने कहा, आप कहें तो आपके प्रमाण पत्र पर लिख देते हैं कि आप स्वस्थ हैं ताकि आपको आश्रम में प्रवेश मिल जाए। लेकिन अम्तुस्सलाम ने चिकित्सक से कहा, नहीं, ऐसा मत कीजिए। आप वही लिखिए जो सही है। डॉक्टर ने लिख दिया कि यह बेहद बीमार हैं और इनके फेफड़े इस लायक नहीं हैं कि इनसे कोई काम हो सके। अम्तुस्सलाम ने उसी प्रमाणपत्र को आश्रम में भिजवा दिया। यह तो तय था कि इस प्रमाणपत्र को देखने के बाद आश्रम में उन्हें प्रवेश नहीं मिलेगा। आश्रम से जवाब आया कि आपको आश्रम में रहने की तो इजाजत नहीं है, मगर आप कुछ वक्त के लिए आश्रम आकर यह देख सकती हैं कि यह कैसे चलता है और यहां क्या-क्या होता है। अम्तुस्सलाम इतने भर से ही खुश हो गईं। आश्रम देखने की इस छोटी अवधि में वह इस कदर सेवा में जुटी रहीं कि महात्मा गांधी ने उन्हें हमेशा साबरमती आश्रम में रहने की इजाजत दे दी। जब हम सब बीमारियों का बहाना बनाकर अपने कामों से जी चुराते हैं, तब हमें अम्तुस्सलम जैसे चरित्र बताते हैं कि सख्त बीमारी को झेलते हुए भी देश के लिए कैसे खड़ा रहा जाता है।

४३५) ध्यान का वरदान - क्लैम लैबाइन बेसबाल की दुनिया में सर्वश्रेष्ठ पिचर के रूप में विख्यात हैं। उन्हें जग हैंडल कर्व के थ्रो में चैंपियन माना जाता है। जब क्लैम छोटे थे, तो उनकी उंगली के पहले और दूसरे जोड़ के बीच स्थायी टेढ़ापन आ गया। एक दिन क्लैम उदास से बैठे हुए थे, तभी उनके कोच बोले, क्या हुआ क्लैम? कोई परेशानी है? यह सुनकर क्लेम की आंखों में आंसू आ गए। वे बोले, सर, अपनी टेढ़ी उंगलियों से मैं कभी भी बेसबाल नहीं खेल पाऊंगा। उसकी बातें सुनकर कोच बोले, क्लैम, इस बात से निराश मत हो कि तुम्हारी उंगली टेढ़ी हो गई है तो तुम बेसबाल नहीं खेल पाओगे। अपने मन में नकारात्मक विचार लाने की जगह सिर्फ सकारात्मक शक्ति पर अपना ध्यान केंद्रित करो। उसी के बल पर परिस्थितियां विपत्ति के बजाए वरदान बन जाती हैं। तुम इस बात को हृदय से स्वीकार कर लो कि अब अपनी उंगलियों के टेढ़ेपन को तुम्हें बेसबाल की शक्ति बनाना है। इन्हीं से तुम्हें बेसबाल खेलना है और स्वयं को साबित करना है। कोच की बातें क्लैम के मन-मस्तिष्क में घर कर गईं। उन्होंने अपनी टेढ़ी उंगुलियों को पिचिंग के लिए उपयुक्त बनाना आरंभ कर दिया। कुछ समय अभ्यास करने के बाद उन्होंने पाया कि उनकी टेढ़ी अंगुलियां ही वास्तव में पिचिंग के लिए फिट बैठती हैं। उनकी अंगुली का टेढ़ापन ही बॉल को वह स्पिन और ट्विस्ट देता था, जो अन्य साधारण अंगुलियों वाले खिलाड़ी नहीं कर पाते थे। वे अपनी टेढ़ी अंगुलियों से वर्ष दर वर्ष कठोर अभ्यास करते रहे। परिणामस्वरूप आज पूरा विश्व उन्हें बेस्ट पिचर के रूप में जानता है। आज तक उनके जैसा सर्वोत्तम पिचर बेसबाल को नहीं मिल पाया है और शायद तब तक नहीं मिल पाएगा, जब तक कि कोई अन्य खिलाड़ी मजबूत इरादे लेकर स्वयं को क्लैम से अधिक सशक्त न साबित कर दे।

४३६) गुण की पहचान - सम्राट चंद्रगुप्त आचार्य चाणक्य का काफी सम्मान करते थे, मगर कहीं उनके मन में श्रेष्ठता की भावना भी घर करने लगी थी। यह बात उनके व्यवहार में जब-तब परोक्ष रूप से झलक जाया करती थी। आचार्य चाणक्य से उनकी यह मनोदशा छिपी नहीं थी। मगर वे सही मौके की तलाश में थे। एक बार जब सम्राट चंद्रगुप्त ने मजाक के स्वर में उनसे कहा, मैं आपकी विद्वत्ता, सूझ-बूझ और चातुर्य की दाद देता हूं, परंतु अच्छा होता भगवान ने आपको

सुंदर रूप भी दे दिया होता। चाणक्य ने जान लिया कि सम्राट को अपने सौंदर्य पर घमंड हो गया है और वे सौंदर्य के सामने विद्या को तुच्छ समझने लगे हैं। पर उस समय वह चुप रह गए। थोड़ी देर बाद सम्राट से विदा लेकर अपने आश्रम आ गए। अगले दिन उन्होंने अपने सेवक को बुलाकर कहा, आज दरबार में महाराज के आने से पहले एक मिट्टी का घड़ा और एक सोने का घड़ा रखवा दो। दोनों घड़े शुद्ध जल से भरे होने चाहिए। समय से सम्राट आए और दरबार का कामकाज शुरू हुआ। थोड़ी देर में सम्राट को प्यास लगी तो चाणक्य के आदेशानुसार उन्हें सोने के घड़े का पानी पेश किया गया। पानी पीते ही सम्राट बिफर उटे, यह कैसा पानी दिया है। इतना गरम क्यों है पानी? चाणक्य के इशारा करते ही उन्हें मिट्टी के घड़ेवाला शीतल जल दिया गया। चाणक्य बोले, महाराज, यह पानी पीकर देखें, क्या यह ठीक है? इस बार सम्राट पानी पीकर संतुष्ट हुए। मगर पूछा कि वह कैसा पानी था और क्यों दिया गया वैसा पानी? आचार्य बोले, वह सोने के घड़े का पानी था। हमने सोचा, मिट्टी के कुरूप घड़े के बजाय सोने के सुंदर घड़े का पानी आपको बेहतर लगेगा। सम्राट को तुरंत पूरी बात समझ में आ गई। उन्हें जवाब मिल चुका था।

४३७) रुक जाना नहीं - स्टीफन हॉकिंग मात्र २१ साल की आयु में न्यूरॉन मोर्टार नामक बीमारी से ग्रस्त हो गए थे। इस बीमारी में शरीर के सारे अंग धीरे-धीरे काम करना बंद कर देते हैं और अंत में श्वास नली बंद हो जाने से रोगी की मौत हो जाती है। इस बीमारी से वे डरे नहीं, बल्कि उन्होंने बीमारी को चुनौती देते हुए वील चेयर पर कैंब्रिज जाना प्रारंभ कर दिया। डॉक्टरों ने दबी जबान से बोल दिया था कि स्टीफन बस चंद दिनों के मेहमान हैं। कुछ डॉक्टरों ने तो स्पष्ट रूप से बोल दिया था कि वे दो वर्ष से ज्यादा जीवित नहीं रह पाएंगे। इस बात पर स्टीफन बोले थे, मैं २ नहीं, २० नहीं बल्कि पूरे ५० सालों तक जियूंगा। मुझे जीना है और अपने लक्ष्य तक पहुंचना है। आज पूरी दुनिया जानती है कि उन्होंने अपनी इस बात को सही साबित करके दिखाया। उनका निधन ७६ वर्ष की आयु में हुआ। उन्होंने अपनी ज्वलंत इच्छाशक्ति से न केवल असाध्य बीमारी को पराजित कर दिया बल्कि अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा का भी लोहा मनवाया। पहले खगोलशास्त्रियों का मानना था कि ब्रह्मांड एक बड़े ठोस पदार्थ के रूप में था। इस बड़े टुकड़े में विस्फोट होकर उसके अनेक छोटे-छोटे टुकड़े बन गए। ये टुकड़े टूट-टूट कर दूर तक छिटक गए। छिटके हुए यही टुकड़े तारे, ग्रह और आकाशगंगा बन गए। स्टीफन हॉकिंग ने लगातार शोध के जरिए अंतरिक्ष और ब्रह्मांड संबंधी हमारी जानकारियों में बढ़ोतरी की, उसे विस्तार दिया। उन्होंने विश्व को अनेक महान खोजें देकर इस बात को साबित कर दिया कि यदि व्यक्ति के अंदर ज्वलंत इच्छा है तो वह न केवल जिंदगी के हर मुश्किल दौर से बाहर निकल आता है, बल्कि सफलता के ऐसे मापदंड भी स्थापित करता है जिसे पूरा करना दूसरों को नामुमकिन जैसा लगने लग जाए। उनका जीवन लंबे समय तक मनुष्य मात्र का प्रेरणा देता रहेगा।

४३८) धर्म की राह - फारस के अजरबैजान में ईसा से करीब ६०० साल पहले एक शासक हुआ बोरशसफ। वह बहुत उदार था। जब उसने अपनी उम्र को बढ़ते देखा और अपने बच्चों को नौजवानी की दहलीज पार करते हुए पाया तो सोचने लगा, क्यों न राज्य के धन-दौलत का बंटवारा इनके बीच कर दिया जाए ताकि इनमें कोई झगड़ा, मनमुटाव न हो और राज्य भी शांति से चलता रहे। उसने अपने सभी पांचों पुत्रों में बराबर धन बांटने का निर्णय किया। वह बारी-बारी से एक-एक पुत्र को बुलाता और उसे उसका हिस्सा देता जाता। तीसरे पुत्र की बारी आई तो उसने अपने हिस्से का धन लेने

से मना कर दिया। अब माता-पिता दोनों परेशान हो गए कि पुत्र हिस्सा क्यों नहीं ले रहा है। उन्होंने इसकी वजह पूछी। तीसरे पुत्र ने कहा, पिताजी। आपका फैसला सही है, मगर मैंने अपने लिए वह रास्ता चुना है जिसमें यह धन-संपदा बाधक है। वह बोला, मैंने तय कर लिया है कि मैं अपने देशवासियों को अज्ञानता और कलह से बाहर निकालूंगा। तब राजा ने पूछा, तुम करना क्या चाहते हो? पुत्र ने कहा, मैं अपने देशवासियों को धर्म का सही अर्थ बताना चाहता हूं। उनके दिलों में प्रेम और सहिष्णुता भरना चाहता हूं। राजा ने कहा, इतने कठिन धर्म मार्ग पर तुम चलोगे कैसे, जबकि तुम्हें धर्म के बारे में कुछ भी पता नहीं, लोग तुम्हें सुनेंगे क्यों? बिना धन के तुम्हारा गुजारा कैसे होगा? पुत्र ने कहा, मैं सीखूंगा। मेरे अंदर एक ऐसा विचार बैठा है जो सीधे ईश्वर का दर्शन देता है। मैं भूखा रहूंगा जैसे देश की जनता रहती है। मैं पेड़ के नीचे लेटूंगा जैसे बहुत लोग लेटते हैं। यह कहते हुए वह केवल एक चादर ओढ़कर सारा तख्त, महल और शासन छोड़कर चला गया। वह आगे जाकर मशहूर संत बना, जिसे दुनिया आज भी महात्मा जरथ्रुष्ट के नाम से जानती है।

४३९) समर्पण का इनाम - अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में क्लर्क का काम करनेवाले पीटर मरफी पत्नी व बच्चों के साथ हंसी-खुशी गुजर बस कर रहे थे। एक दिन वह यात्रा पर थे तो उनकी ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस दुर्घटना में उनके दोनों पैर बोगी में फंस गए। काफी कोशिश के बाद उन्होंने अपना एक पैर बाहर खींच लिया और दूसरा पैर निकालने ही वाले थे कि बोगी की छत का एक हिस्सा उनके पैरों पर आ गिरा। अब वह दोबारा फंस गए। उनकी चीख सुनकर फायर सेफ्टी डिपार्टमेंट का एक अफसर आया। पीटर उससे गिड़गिड़ाते हुए बोले, कृपा करके मेरे ऊपर से यह बोझ उठा दें, बहुत कष्ट हो रहा है। अफसर ने स्थिति भांपकर कहा, मेरे भाई, अगर मैं इसे जरा भी छेड़ता हूं या तुम्हारी टांगें निकालने की कोशिश करता हूं तो बाकी छत का हिस्सा दूसरी ओर गिर पड़ेगा जहां पहले ही कई महिलाएं और बच्चे घायल पड़े हैं। पीटर बेहिसाब दर्द झेल रहे थे, लेकिन अफसर की बात सुनते ही खुद को संभालते हुए कहा, ओह, यह मुझे मालूम न था। आप मुझे छोड़िए और उन घायलों को पहले वहां से निकालिए। मैं तब तक बर्दाश्त कर लूंगा। अफसर ने कहा, धन्यवाद मेरे भाई, आपका यह उपकार व्यर्थ नहीं जाएगा। उन्हें निकालकर मैं शीघ्र ही आपको भी निकलवाता हूं। जब तक दूसरी ओर राहत कार्य चलता रहा, पीटर दर्द बर्दाश्त करते रहे। दूसरी तरफ राहत कार्य पूरा होने के बाद अफसर पहुंचा और उसने पीटर को वहां से निकला। उन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया। फिर भी स्वस्थ होने में दो महीने लग गए। इस बीच उनके अप्रतिम त्याग की कहानी हर तरफ फैल चुकी थी। जब पीटर स्वस्थ होकर अस्पताल से छूटे तो अच्छी खासी भीड़ उन्हें घर तक छोड़ने आई। पीटर के साहस, त्याग और परोपकार को आज भी वहां आदर के साथ याद किया जाता है।

४४०) इंसान वही करना चाहता है जिसकी लोग प्रशंसा करते हैं - एक बरगद के पेड़ पर बहुत सारे पक्षी मिलजुल कर रहते थे। एक दूसरे का सुख-दुख बांटना उनकी आदत बन गई थी। बस एक मोर ऐसा था जो किसी से बात नहीं करता था। सब उसके घमंडी स्वभाव से परेशान थे, लेकिन उसकी सुंदरता पर मुग्ध थे। वे उसकी खूब तारीफ करते। उसे तरह-तरह से रिझाते, हर बात उससे पूछते, पर मोर में दिनोंदिन उनका तिरस्कार करने की आदत बढ़ती जाती। एक दिन एक छोटी सी गौरैया मस्ती में गाती हुई चोंच में एक बड़ा दाना ले आई। उसे मजे से खाते देख पक्षी उससे पूछने लगे- यह दाना कहां से लाई? उसने बता दिया। फिर क्या था, सब अपने अपने लिए दाना ले आए और खाने

लगे। लेकिन मोर वैसे ही बैठा रहा। अब सब सोचने लगे कि मोर को दाने का पता कौन बताए। सबने गौरैया से ऐसा करने को कहा तो उसने कहा- मोर मुझसे पूछेगा तभी बताऊंगी। पक्षी बोले- मोर घमंड के कारण पूछेगा नहीं, इसलिए दाना नहीं खा पाएगा। तो न खा पाए। न तो वह बीमार है, न जंगल की भलाई में किसी बड़े काम में लगा हुआ है। फिर उसे इतना महत्व देने की क्या जरूरत है। हमारे महत्व न देने से उसकी सुंदरता घट तो न जाएगी। अगर घट भी गई तो हमारा या जंगल का क्या बिगड़ जाएगा? सभी ने गौरैया का सुझाव माना। इससे न केवल उनके बीच का तनाव खत्म हुआ, मोर भी सारा माजरा समझ गया।

४४१) नारी को लक्ष्मी और सरस्वती ही नहीं, दुर्गा भी बनना होगा - एक भयंकर काला नाग था। वह देखने में जितना हिंसक लगता था, उससे भी अधिक खतरनाक था। वह जहां रहता था, उस स्थान के आस-पास जाने की हिम्मत किसी में नहीं थी। एक बार उसका किसी संन्यासी से संपर्क हो गया। संन्यासी ने उसको अहिंसा का उपदेश दिया। उपदेश से नागराज की मानसिकता बदल गई। उसने अहिंसा वृत्ति स्वीकार कर ली। उसके बाद उसने काटना छोड़ दिया, फुफकारना छोड़ दिया और अधिक घूमना-फिरना भी बंद कर दिया।

एक दिन कुछ बच्चों ने देखा- नागराज सोया पड़ा है। उन्होंने कुछ ढेले उठाकर फेंके, पर वह हिला तक नहीं। यह बात पूरे गांव में फैल गई। कुछ और लोग वहां आ गए। लकड़ी और ढेलों से नागराज की अच्छी मरम्मत होने लगी। कुछ दिन बाद वही संन्यासी घूमता-फिरता वहां आ पहुंचा। नागराज संन्यासी को पहचानकर बोला- आपकी अहिंसा ने मुझे मार दिया। इधर के लोग इतना सताते हैं कि मेरा जीना दूभर हो गया है। पहले यही मेरे सामने भी नहीं आ पाते थे। क्या मैं इन सबको सहन करता रहूं? संन्यासी ने एक क्षण मुस्कराकर पूछा- तुम किसी को काटते तो नहीं हो? नागराज के मना करने पर संन्यासी ने फिर पूछा- क्या तुम फुफकारते भी नहीं हो? नागराज ने इस बार भी नकारात्मक उत्तर दिया। संन्यासी बोला- देखो भाई। तुम संन्यासी नहीं हो, तुम्हारी अपनी सीमाएं हैं। तुमने अहिंसा का व्रत लिया है, पर इसका अर्थ यह तो नहीं है कि तुम अपने जीवन की सुरक्षा ही न करो। इसके बाद नागराज ने फिर से फुफकारना शुरू कर दिया। एक ही दिन में लोग उससे भय खाने लगे।

४४२) सुखी जीवन के कारणों की खोज बाहर नहीं, भीतर ही करनी होगी - एक दिन शिष्य ने गुरु से पूछा- आपकी दृष्टि में यह संसार क्या है? गुरु ने एक कथा सुनाई- एक नगर में एक शीशमहल था। उसकी हर दीवार पर सैकड़ों शीशे जड़े थे। एक दिन एक गुस्सैल कुत्ता महल में घुस गया। महल के भीतर उसे सैकड़ों कुत्ते दिखे जो नाराज और दुखी लग रहे थे। उन्हें देख वह भौंकने लगा। उसे सैकड़ों कुत्ते अपने ऊपर भौंकते दिखने लगे। वह डरकर वहां से भाग गया। कुछ दूर जाकर उसने मन ही मन सोचा कि इससे बुरी कोई जगह नहीं हो सकती।

कुछ दिनों बाद एक अन्य कुत्ता शीशमहल पहुंचा। वह खुशमिजाज और जिंदादिल था। महल में घुसते ही उसे वहां सैकड़ों कुत्ते दुम हिलाकर स्वागत करते दिखे। उसका आत्मविश्वास बढ़ा और उसने उत्साह में सामने देखा तो उसे सैकड़ों कुत्ते खुशी जताते नजर आए। वह महल से बाहर आया तो उसने महल को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ स्थान और वहां के अनुभव को अपने जीवन का सबसे बढ़िया अनुभव माना। फिर आने के संकल्प के साथ वह वहां से रवाना हुआ।

गुरु ने शिष्य से कहा, संसार भी ऐसा ही शीशमहल है जिसमें व्यक्ति अपने विचारों के अनुरूप ही प्रतिक्रिया पाता है। मनुष्य इस धरती का सबसे समर्थ प्राणी हे। फिर वह कहे कि मैं दुखी हूं तो स्पष्ट है कि उसे अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। यही अज्ञान दुखी बना रहा है। इसलिए सबसे ज्यादा जरूरत है स्व के बोध की, अपनी शक्ति और क्षमता की पहचान की।

प्राय: यह मान लिया जाता है कि शहर का आदमी है, बहुत पैसा कमाता है, इसलिए सुखी है। गांव के गरीब आदमी के बारे में मान लिया जाता है कि थोड़ी-सी खेती है, पास में पैसा नहीं है, मजदूरी करके गुजारा करता है, इसलिए दुखी है। दुखी और सुखी होने का कारण वस्तु की सुलभता या दुर्लभता नहीं, बल्कि व्यक्ति का अज्ञान है। वास्तविकता यह है कि जिसके पास संतोष का धन है, वह अभावग्रस्त होकर भी कभी दुखी नहीं बनेगा।

४४३) सिद्धांतों की चर्चा से नहीं, अच्छे व्यवहार से आती है खुशहाली - एक बार गुरु नानक एक बड़ी रियासत में पहुंचे। वहां का राजा हर समय धन प्राप्त करने की युक्तियों में लगा रहता था। राजमहल में प्रवेश करने से पहले गुरुजी ने कुछ कंकड़-पत्थर बीन कर अपनी मुट्ठियों में दबा लिए। राजा उन्हें उदारतापूर्वक महल में ले गया। गुरुजी आसन पर बैठ ही रहे थे कि उनकी मुट्ठी से छिटक कर दो तीन कंकड़ गिर गए। राजा ने आश्चर्य से पूछा, यह कंकड़-पत्थर आपने क्यों इकट्ठा कर रखे हैं।

गुरुजी बोले, राजन, मरने के बाद मैं इन्हें साथ लेकर जाऊंगा और ईश्वर को उपहार दूंगा। राजा जोर से हंसा और बोला, आप जैसा परम ज्ञानी भी मरने के बाद कुछ ले जाने की बात सोचता है। क्या आप भूल गए कि आत्मा अपने साथ कुछ नहीं ले जा सकती? यह सुनकर नानकजी हंसने लगे क्योंकि सत्य को जाननेवाला राजा मूर्खतावश जी नहीं रहा था। मुद्दे की बात पर आते हुए नानकजी ने कहा, यही तरकीब पूछने तो मैं आपके पास आया हूं। आप प्रजा का शोषण करके अनीति से जो धन एकत्र कर रहे हैं, उसे मरने के बाद जरूर ले जाना चाहते होंगे। मुझे भी बताएं कि मैं कंकड़ों को कैसे ले जा सकता हूं? राजा निरुत्तर हो गया। आज हर व्यक्ति अनीति से अर्जित धन के संग्रह को ही जीवन की सफलता मान बैठा है। ऐसे ही व्यक्ति प्रशंसा भी पा रहे हैं। जरूरत है प्रशंसा नीति की, हो सफलता की नहीं। क्योंकि अनीति की सफलता के लिए व्यक्ति ने कितना झूठ बोला है, कितनी रिश्वत दी है, कितने गरीबों का पेट काटा है, कितनी मिलावट की है, यह कोई नहीं देखता। परंतु आज ऐसे लोगों की सफलता के आगे हम सिर झुकाते हैं क्योंकि उन्होंने धन अर्जित किया है।

४४४) अनुभव का महत्व - एक जंगल में एक विशाल पेड़ था। उस पर बहुत सारे कबूतर रहते थे। उनमें एक बहुत बुजुर्ग कबूतर था। वह पुराना होने के कारण बहुत दूरदर्शी हो गया था, किंतु सभी युवा कबूतर अपने आपको बुद्धिमान व चतुर समझते थे। एक दिन उसने एक नन्ही सी बेल को पेड़ के नीचे जड़ पर लिपटे हुए पाया। बुजुर्ग कबूतर ने दूसरे कबूतर को बुलाकर कहा देखो, इस बेल को नष्ट कर दो। एक दिन यह बेल हम सबको मौत के मुंह में ले जाएगी। एक युवा कबूतर हंसते हुए बोला, यह छोटी-सी बेल हमें कैसे मौत के मुंह में ले जाएगी?

बुजुर्ग कबूतर ने समझाया आज यह तुम्हें छोटी-सी लग रही हैं। धीरे-धीरे यह पेड़ के सारे तने को लपेटा मारकर ऊपर तक आएगी। फिर बेल का तना मोटा होने लगेगा व पेड़ से चिपक जाएगा। तब नीचे से ऊपर तक पेड़ पर चढ़ने के लिए सीढ़ी सी बन जाएगी। कोई भी शिकारी सीढ़ी के सहारे चढ़कर हम तक पहुंच जाएगा व हम मारे जाएंगे।

दूसरे कबूतर को यकीन न आया उसने कहा, एक छोटी-सी बेल कैसे सीढ़ी बनेगी? तीसरा कबूतर बोला, एक छोटी सी बेल खींचकर इतना ज्यादा थोड़े न लंबी हो जायेगी, आप तो बेवजह ही लम्बा कर रहे हैं। एक कबूतर बड़बड़ाया, आप अपनी अक्ल का रौब डालने के लिए अंट-शंट कहानी बना रहे हो। इस प्रकार किसी ने बुजुर्ग कबूतर की बात को गंभीरता से नहीं लिया। समय बीतता रहा। बेल लिपटते-लिपटते ऊपर शाखों तक पहुंच गई। बेल का तना मोटा होना शुरू हुआ, और सचमुच ही पेड़ के तने पर सीढ़ी बन गई। जिस पर आसानी से चढ़ा जा सकता था। सबको बुजुर्ग कबूतर की बात की सच्चाई सामने नजर आने लगी। पर अब कुछ नहीं किया जा सकता था, क्योंकि बेल इतनी मजबूत हो गई थी कि उसे नष्ट करना कबूतरों के बस की बात नहीं थी। एक दिन जब सभी कबूतर दाना चुगने बाहर गए हुए थे, तब एक बहेलिया उधर आ निकला। पेड़ पर बनी सीढ़ी को देखा और फिर उसने पेड़ पर ऊपर चढ़कर देखा, फिर उसने पेड़ पर जाल बिछाया और चला गया। सांझ को सारे कबूतर लौट आए पेड़ पर उतरे तो बहेलिए के जाल में बुरी तरह फंस गए। जब वे जाल में फंस गए तब वह सब फड़फड़ाने लगे और तब उन्हें बुजुर्ग कबूतर की दूरदर्शिता का पता लगा। सभी कबूतर बुजुर्ग कबूतर की बात न मानने के लिए लज्जित थे और अपने आपको कोस रहे थे। किसी भी कबूतर को बाहर निकलने की कोई भी तरकीब नहीं सूझ रही थी। तब सभी कबूतरों ने शर्मिंदा होकर बुजुर्ग कबूतर से जिन्दा बच निकलने का तरीका पूछा और कहा कि आज से हम सब आपकी हर बात मानेंगे। तब बुजुर्ग कबूतर ने कहा, मेरी बात ध्यान से सुनो। सुबह जब बहेलिया आएगा, तब मुर्दा होने का नाटक करेंगे। बहेलिया तुम्हें मुर्दा समझकर जाल से निकाल कर जमीन पर फेकता जाएगा। वहां भी सबको मरे के समान पड़े रहना है। जैसे ही वह अंतिम कबूतर को नीचे फेकेगा, मैं सीटी बजाऊंगा। मेरी सीटी सुनते ही सब उड़ जाना। सुबह बहेलिया आया। सभी कबूतरों ने वैसा ही किया, जैसा उस बूढ़े कबूतर ने समझाया था। सचमुच बहेलिया कबूतरों को मुर्दा समझकर जमीन पर पटकता गया और जैसे ही उसने अंतिम कबूतर फेका बुजुर्ग ने सीटी बजा दी और सीटी की आवाज के साथ ही सारे कबूतर उड़ गए। बहेलिया अवाक होकर देखता रह गया।

जिंदगी में याद रखना अनुभव हमेशा बुद्धिमत्ता पर भारी पड़ता है।

४४५) व्यापारी की बुद्धिमत्ता बहुत काम आई - एक व्यापारी था। उसका नाम था धर्मदास। अपने नाम के अनुरूप वह बड़ा ही धार्मिक प्रवृत्ति व दयालु स्वभाव का इंसान था। साथ ही वह बड़ा बुद्धिमान भी था। एक बार वह अपनी उगाही लेकर किसी गांव से वापस आ रहा था कि तेज आंधी चल पड़ी। कुछ समय बाद बारिश भी शुरू हो गई। रात होनेवाली थी। ऐसे में जंगल में से गुजरना खतरे से खाली नहीं था। यही सोचकर व्यापारी ने एक कुम्हार की झोपड़ी का दरवाजा खटखटाया। कुम्हार ने दरवाजा खोला तो व्यापारी ने पूछा, क्या आप मुझे अपने घर में रात गुजारने की जगह दे सकते हैं? खराब मौसम की वजह से आगे जाना बहुत ही कठिन है।

कुम्हार बड़े आदर से व्यापारी को अंदर ले गया। जो रूखा-सूखा था, उसके सामने रख दिया। खा-पीकर व्यापारी सो गया। आधी रात के करीब शोरगुल सुनकर व्यापारी की नींद टूटी उसने देखा कि कुम्हार बड़ी बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था। व्यापारी ने उत्सुकतावश उससे पूछा, क्यों भाई, क्या बात हो गई?

कुम्हार घबराए स्वर में बोला, गांव पर डाकुओं ने धावा बोल दिया है। मैंने तीन हजार रुपए अपनी बेटी की शादी के लिए

जोड़े हैं। समझ में नहीं आता कि क्या करूं? व्यापारी ने झोपड़ी के बीचों-बीच गड्ढा खुदवा कर रुपए उसमें रखवा दिए। कुछ देर बाद ही कुछ डाकू जबरदस्ती कुम्हार के घर में घुस आए। उनमें से एक ने गुर्राते हुए कहा, अपना धन कहां छुपा रखा है? चुपचाप सारा धन हमारे हवाले कर दो वरना।

कुम्हार कुछ कहता, उससे पहले ही व्यापारी बोल पड़ा, मैं जानता हूं कि इसने अपना सारा धन उस गड्ढे में छुपाया हुआ है। इतना कहकर उसने एक गड्ढा की ओर इशारा किया। डाकुओं ने गड्ढा खोदा, उसमें से धन निकाला और वहां से चल दिए। व्यापारी काफी थक गया था। इसलिए वह तुरंत सो गया। इधर कुम्हार की पत्नी कुम्हार के कान में बोली, लगता है, यह व्यापारी डाकुओं से मिला हुआ है। व्यापारी की हरकत पर कुम्हार को पहले ही बहुत क्रोध आ रहा था। पत्नी की बात ने जले पर नमक छिड़कने का काम किया। कुम्हार ने तुरंत पास पड़ी हंसिया उठाई और सोते हुए व्यापारी की ओर बढ़ा।

तभी कुम्हार की लड़की उसका रास्ता रोकते हुए बोली, यह आप क्या कर रहे हैं? आप ही तो कहा करते थे, अतिथि देवो भव। यदि वह डाकुओं का साथी होता तो उन्हीं के साथ चला जाता। बेटी की बात सुनकर कुम्हार ने व्यापारी की हत्या का इरादा छोड़ दिया, पर वह सारी रात सो न सका।

सुबह होने पर व्यापारी ने कुम्हार से माफी मांगते हुए कहा, डाकुओं को तुम्हारे धन का पता मैंने जानबूझ कर बताया था। जानते हो अगर वह तुम्हारे घर की तलाशी लेते तो मेरा धन भी उनके हाथ लग जाता। मेरे पास तीस हजार रुपए नकद थे। तुम्हारे धन के बारे में बताकर मैंने उनका ध्यान अपने धन से हटा लिया। इतना कह कर व्यापारी ने कुम्हार को पांच हजार रुपए दिए और कहा, दो हजार रुपए बेटी की शादी पर मेरी ओर से उपहार है। रुपए लेते समय कुम्हार की आंखों से पश्चाताप के आंसू निकल पड़े। वह सोच रहा था, अगर मैंने अपनी बेटी का कहना न माना होता तो।

४४६) आत्मविश्वास ही सबसे बड़ा हथियार - अकबर और बीरबल के बीच कभी-कभी ऐसी बातें भी हुआ करती थीं जिनकी परख करने में जान का खतरा रहता था। एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा- बीरबल, संसार में सबसे बड़ा हथियार कौन-सा है? बादशाह सलामत। संसार में सबसे बड़ा हथियार है आत्मविश्वास बीरबल ने जवाब दिया।

अकबर ने बीरबल की इस बात को सुनकर अपने दिल में रख लिया और किसी समय इसकी परख करने का निश्चय किया। संयोग से एक दिन एक हाथी पागल हो गया। ऐसे में हाथी को जंजीरों में जकड़ कर रखा जाता था। अकबर ने बीरबल के आत्मविश्वास की परख करने के लिए बीरबल को बुलवा भेजा और इधर हाथी के महावत को हुक्म दिया कि जैसे ही बीरबल को आता देखे, वैसे ही हाथी की जंजीर खोल दे।

बीरबल को इस बात का पता नहीं था। जब वे बादशाह अकबर से मिलने उनके दरबार की ओर जा रहे थे तो पागल हाथी को छोड़ा जा चुका था। बीरबल अपनी ही मस्ती में चले जा रहे थे कि उनकी नजर पागल हाथी पर पड़ी, जो चिंघाड़ता हुआ उनकी तरफ आ रहा था। बीरबल हाजिर जवाब, बेहद बुद्धिमान, चतुर और आत्मविश्वासी थे। वे समझ गए कि बादशाह ने आत्मविश्वास और बुद्धि की परीक्षा के लिए ही पागल हाथी को छुड़वाया है। दौड़ता हुआ हाथी सूंड को उठाए तेजी से बीरबल की ओर चला आ रहा था। बीरबल ऐसे स्थान पर खड़े थे कि वह इधर-उधर भागकर भी नहीं बच सकते थे। ठीक उसी वक्त बीरबल को एक कुत्ता दिखाई दिया। हाथी बहुत निकट आ गया था। इतना करीब कि वह बीरबल को

अपनी सूंड में लपेट लेता। तभी बीरबल ने झटपट कुत्ते की पिछली दोनों टांगे पकड़ी और पूरी ताकत से घुमाकर हाथी पर फेंका। घबराकर चीखता हुआ कुत्ता जब हाथी से जाकर टकराया तो उसकी भयानक चींखे सुनकर हाथी भी घबरा गया और पलटकर भागा। अकबर को बीरबल की इस बात की खबर मिल गई और उन्हें यह मानना पड़ा कि बीरबल ने जो कुछ कहा है, वह सच है। आत्मविश्वास ही सबसे बड़ा हथियार है।

४४७) शार्क - गरमी के दिन थे। समुद्र में बहुत गहरे एक नन्ही मछली मजे से तैर रही थी। उसकी नानी भी उसके साथ थी। थोड़ी ही देर में नानी बहुत थक गई। फिर एक चट्टान पर बैठकर बोली, मैं तो थक गई हूं। तुम्हें और तैरना है तो तैरो, पर अधिक दूर नहीं जाना। शार्क के चंगुल में फँस गई तो वह तुम्हें जिन्दा निगल जाएगी।

नन्ही मछली ने बड़े आत्मविश्वास से हँसते हुए नानी को जवाब दिया, मैं शार्क से नहीं डरती। अगर वह मेरे सामने पड़ जाए तो मैं उसे ऐसा नचाऊँगी कि वह याद रखेगी।

नन्ही मछली मजे से तैरने लगी। उसे खयाल ही नहीं था कि वह अपनी धुन में उछलती-कूदती कितनी दूर निकल आई है। कई मछलियों ने उसे टोका भी कि वह यहाँ अकेली न घूमे, मगर उसने किसी की बात न सुनी। तभी अचानक शार्क का आगमन हुआ। अब तो नन्ही मछली सचमुच डर गई। सबसे मदद के लिए प्रार्थना करने लगी, पर कोई तैयार नहीं हुआ। अंत में एक ऑक्टोपस को दया आई। उसने नन्ही मछली को अपने पीछे छिपा लिया। जब शार्क आगे बढ़ गई तो उसे अपनी नानी के पास लौट जाने को कहा।

नन्ही मछली को अपनी गलती का एहसास हुआ। उस क्षण से उसने तय किया कि वह बड़ों का कहना मानेगी। बड़े-बूढ़ों की नसीहत हमारी भलाई के लिए ही होती है।

४४८) शेर की उदारता - एक गरीब गुलाम ने अपने मालिक के घर से भागने का प्रयत्न किया, पर वह अपने इरादे में सफल न हो सका और पकड़ा गया। मालिक ने उसे शेर के पिंजरे में डाल देने की आज्ञा दी। गुलाम को पिंजरे में डालकर शेर को फौरन खोल दिया गया। शेर ने पिंजरे की परिक्रमा की। पिंजरे के बाहर खड़े हुए हजारों दर्शकों को देखा, फिर अपने शिकार की तरफ बढ़ा। सहसा गुलाम पर झपटने वाला ही था कि ठहर गया और पूँछ हिलाते हुए गुलाम की बाँह चाटने लगा। दर्शक हैरान रह गए कि आखिर शेर के इस हैरतअंगेज व्यवहार का कारण क्या है। गुलाम ने दर्शकों का समाधान किया, जब भागकर मैं एक गुफा में जा छिपा था, तभी मैंने एक शेर को देखा जो दर्द से तड़प रहा था। वह पैरों पर खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। मैंने उसके पैरों को ध्यान से देखा तो पाया कि एक बड़ा सा काँटा चुभा हुआ है। मैंने काँटा निकल दिया। शेर कृतज्ञता से दहाड़ा। फिर तो हम दोनों बहुत गहरे दोस्त हो गए। मेरे लिए कुछ खाने का जुगाड़ भी उसने किया। पिछले साल शिकार के मौसम में हम दोनों अलग हुए। मुझे लगता है, शायद हम दोनों को साथ-साथ पकड़ा गया होगा और यह वही शेर है जिसके साथ मैं गुफा में रहा था।

४४९) सुस्त घोंघा - घोंघा दंपति अपने तीनों बच्चों के साथ सो रहे थे। सूरज सिर पर चमक रहा था। उठकर करें भी क्या। इतनी धूप में सैर को तो जाया भी नहीं जा सकता। मगर तभी अचानक बादल घिर आए और रिमझिम रिमझिम वर्षा होने लगी। चलो, जल्दी से उठ जाओ। सैर करने चलते हैं। मौसम बढ़िया हो गया है। पिता घोंघे ने बच्चों को जगाया।

सभी फटाफट उठ गए। सबसे छोटा डब्बू बड़ी मुश्किल से उठा। कभी चट्टानों पर से फिसलते, कभी रेत पर चलते उन सबको बड़ा मजा आ रहा था। तभी घोंघा माँ को कुछ खयाल आया। वह बोली, अरे। डब्बू कहाँ है? कहीं रास्ते में तो नहीं छूट गया? वे उसे जगह-जगह खोजने लगे। पिता ने मछली से पूछा, क्या तुमने डब्बू को देखा है। नहीं तो। उसने फिर मेढक से सवाल दुहराया, तुमने डब्बू को देखा है? नहीं तो। फिर उसने साँप से पूछा, उसने भी वही जवाब दिया। थक-हारकर वे घर लौट आए तो यह देखकर हैरान रह गए कि नन्हा डब्बू आराम से सो रहा था। माँ ने उसे जगाया तो था, मगर जैसे ही वे आगे बढ़े थे, वह लौटकर फिर सो गया था। जब पिता घोंघा ने उसे उठाया तो वह बोला, लगता है, बारिश हो रही है। आज सैर पर नहीं जाएंगे क्या? आलसी लोग जीवन में बहुत कुछ गँवाते हैं।

४५०) एक चूहे की मौत - एक बार एक चूहे ने एक हाथी की बड़ी छाया देखी। उस छाया पर वह इतना मोहित हुआ कि उसने ठान लिया कि अब वह भी अपनी छाया को वैसा ही बड़ा करेगा। उसने उपाय सोचा और आग जलाई। फिर उसने देखा कि वह जैसे-जैसे उस आग के पास जाता वैसे-वैसे उसकी छाया बड़ी बनकर सामने की दीवार पर दिखाई देती। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। इसी इसी खुशी में अपनी छाया को और और बढ़ाने में वह इतना खो गया कि आगे बढ़कर आग में ही गिर पड़ा। आग ने उसे जलाकर भस्म कर दिया। अपने पैर दूसरों के जूतों में न डालो।

४५१) मृत्यु अनिवार्य है - गोमती का प्यारा इकलौता पुत्र मर गया। वह पगला सी गई। पुत्र की लाश छाती से चिपकाकर भागती हुई महात्मा बुद्ध के चरणों पर जा गिरी और रो-रोकर उनसे अपने बच्चे को जीवित करने की प्रार्थना करने लगी। भगवान बुद्ध ने कहा, बड़ा अच्छा किया जो तुम यहां चली आईं। बच्चे को मैं जीवित कर दूंगा। तुम बस इतना काम करो, गाँव में जाकर जिस घर में आज तक कोई मरा न हो उस घर से सरसों के कुछ दाने माँग लाओ।

गोमती लाश को छाती से चिपकाए दौड़ी और लोगों से सरसों माँगने लगी। जब किसी ने उसे सरसों के दाने देने चाहे तो उसने पूछा, तुम्हारे घर में आज तक कोई मरा तो नहीं है न? उसकी बात सुनकर घरवालों ने कहा, भला ऐसा भी कोई घर होगा जिसमें कोई मरा न हो। मनुष्य तो हर घर में मरते हैं। गोमती घर-घर फिरी, पर सभी जगह उसे एक सा जवाब मिला अंतत: उसकी समझ में बात आ गई कि मृत्यु अनिवार्य है। यह बात कुछ महत्व नहीं रखती कि आदमी कैसे मरता है, बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि वह कैसे जीता है।

४५२) जूते का लालच - जैक गरीब चरवाहा था। वह रोज सुबह भेड़-बकरियों को चराने पहाड़ों की ढलान पर जाया करता था। सर्दी के दिन थे और उस बेचारे के पास पहनने के लिए जूते तक नहीं थे एक दिन जब वह भेड़ों को चरा रहा था कि अचानक एक गाड़ी उसके करीब आकर ठहर गई। उनमें से एक चोर निकला, जो जेल की सजा काट चुका था। वह जैक से बोला, तुम मेरे साथ काम करोगे? यदि करो तो मैं तुम्हें बढ़िया जूते खरीद दूं। तुम्हें अपने भोजन और कपड़ों की भी चिंता नहीं करनी पड़ेगी। यह सुनकर उस छोटे से लड़के जैक ने तपाक से जवाब दिया, मुझे नंगे पाँव रहना मंजूर है, पर धोखाधड़ी और चालाकी से कमाए पैसों का सुख मुझे नहीं चाहिए।

ईमानदारी की सूखी रोटी बेईमानी से कमाई गई घी चुपड़ी रोटी से कई अधिक श्रेष्ठ है।

४५३) राष्ट्र लगन की भावना भी होनी चाहिए - एक थे गुरुजी। वे अपने शिष्यों को लेकर इधर-उधर जाया करते। प्रकृति के रंग व मानव कार्य देखकर शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते। एक बार गुरुजी अपने शिष्यों को एक ऐसे

स्थान पर ले गये, जहां बांध बन रहा था। हजारों मजदूर पत्थर तोड़ रहे थे। गुरुजी ने अपने शिष्यों से कहा जानते हो ये लोग पत्थर तोड़ रहे हैं कौन हैं।

शिष्य एक स्वर में बोले- ये तो मेहनत करनेवाले मजदूर हैं। अब गुरुजी ने पत्थर तोड़ रहे एक मजदूर से सवाल किया तुम यह क्या कर रहे हो। मजदूर गुस्से में तमतमाते हुए बोला- अपनी किस्मत फोड़ रहा हूं। गुरुजी ने आगे बढ़कर दूसरे मजदूर से पूछा क्यों भाई। तुम ये पत्थर क्यों तोड़ रहे हो।

वह पसीना पोंछते हुए बोला- अपने परिवार का पेट भरने का प्रबंध कर रहा हूं। अब गुरुजी ने आगे बढ़कर तीसरे मजदूर से पूछा- क्यों भाई। ये पत्थर किसलिए तोड़ रहे हो।

वह युवा मजदूर मधुर मुस्कान के साथ बोला- राष्ट्र के एक महान कार्य में अपना योगदान देने के लिए। यह उत्तर सुनकर गुरुजी बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने उस मजदूर को आशीर्वाद देते हुए कहा- सफलता तुम्हारे कदम चूमे। तुम्हारे अरमान तुमसे ऊंचे उठे।

शिष्यों ने गुरुजी से पूछा, आप उन दोनों मजदूर से संतुष्ट क्यों नहीं हुए जबकि उन्होंने भी जवाब तो सही दिये थे। जवाब देना भी एक कला है। हालांकि मजदूरों के नसीब में मेहनत और पसीना लिखा है। लेकिन जो मेहनत और पसीने की बात अपने होठों से नहीं निकाले और मेहनत का दिखावा नहीं करते, वे सचमुच महान हैं। जैसे कि पहले मजदूर ने जो जवाब दिया था, वह मनहूस ओर मरियल जवाब था। दूसरे मजदूर से जवाब में जीवन यापन की परिभाषा छिपी थी। लेकिन तीसरे मजदूर क जवाब ने हमें एक शिक्षा दी। क्योंकि उसके विचारों में मेहनत के साथ राष्ट्र लगन की भावना छिपी थी।

गुरु के मुख से यह सुनकर सभी शिष्य बोले- सचमुच। जवाब देना भी एक कला है। आज हम जवाब की कला की नसीहत पाकर बेहद खुश हैं।

४५४) पत्नी की चूड़ियां - बीरबल की बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए बादशाह अकबर अक्सर बेसिर पैर की बातें पूछते थे। एक दिन बादशाह ने पूछा- बीरबल। तुम दिन में अपनी पत्नी का हाथ एक या दो बार तो पकड़ते ही होंगे। बीरबल बोले- हां, जहांपनाह। क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारी पत्नी के हाथ में कितनी चूड़ियां हैं? यह बात सुनकर बीरबल एक बार तो असमंजस में पड़ गए। उन्होंने कभी पत्नी के हाथ की चूड़ियों की गिनती नहीं की। थोड़ी देर सोचने के बाद अचानक बीरबल की बुद्धि दौड़ी और वे बोले- हां, मैं इस बात का जवाब दे सकता हूं। इसके पहले मेरी एक बात का जवाब देना होगा। अकबर ने कहा- पूछो-पूछो अपनी बात। बीरबल बोला- जहांपनाह, मैं तो पत्नी के हाथ दिन में एक आध बार ही लगाता हूं। पर आप हर वक्त अपनी मूंछ पर हाथ रखते हो इसलिए पहले आप बताओ की आपकी मूंछ में कितने बाल हैं। अकबर बीरबल की बात सुनकर निरुत्तर हो गए। बीरबल के ठहाके के बीच बात आई गई हो गई।

४५५) स्वभाव का भी अंग होता है - एक महिला शहद बेचती थी। उसका बोलचाल का ढंग इतना आकर्षक था कि उसकी दूकान के चारों ओर ग्राहकों की भीड़ लगी रहती थी। एक व्यक्ति ने जब देखा कि वह महिला इस व्यवसाय से बहुत लाभ उठा रही है तो उसने भी इसी व्यवसाय को अपनाने का निश्चय किया। दूकान तो उसने खोल ली, पर शहद के सजे-सजाये बर्तनों के पीछे उसकी अपनी आकृति कठोर ही बनी रही। ग्राहकों का स्वागत वह सदा अपनी कुटिल भृकुटि से

करता था। इसलिए सब उसकी चीज छोड़ आगे बढ़ जाते थे। एक मक्खी भी उसके शहद के पास फटकने का साहस नहीं करती थी। शाम हो जाती, पर उसके हाथ खाली के खाली ही रहते। एक दिन एक महिला उसे देखकर अपने पति से बोली, कड़ुआ मुख शहद को भी कड़ुआ बना देता है। क्या वह शहद बेचनेवाली महिला केवल ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए मुस्कराती थी? हम तो यही सोचते हैं कि उसका उल्लास उसके भले स्वभाव का एक अंग था। संसार में हमारा कार्य केवल बेचना और खरीदना ही नहीं है, हमें यहां एक दूसरे का मित्र बनकर रहना है। उस भली स्त्री के ग्राहक यह जानते थे कि वह एक व्यवसायी के अलावा कुछ और भी थी। वह संसार की एक प्रसन्नमुख नागरिक थी।

४५६) बार बार नाम स्मरण - एक साधु थे। उन्होंने अपने शिष्य से कहा, राम-नाम जपने से मनुष्य हर संकट से पार हो सकता है। गुरु वाक्य पर शिष्य को श्रद्धा तो थी, लेकिन पूरा-पूरा विश्वास नहीं था कि राम-नाम चाहे जिस संकट से उबार देगा। एक बार उसे नदी पार करनी थी। वह बेचारा अर्धश्रद्धालु राम-नाम रटता हुआ नदी पार करने लगा। जैसे-जैसे गले तक पानी में गया और वहां से गोते खाता हुआ बड़ी मुश्किल से वापस आ गया। गुरु से कहने लगा, लगातार नाम स्मरण किया, लेकिन पानी कम नहीं हुआ। सब अकारथ गया। गुरु बोले, अनेक बार नाम-स्मरण किया, इसलिए अकारथ गया। अगर नामस्मरण में श्रद्धा थी तो एक बार किया हुआ नाम स्मरण तुझे काफी क्यों नहीं लगा? श्रद्धा कम थी इसीलिए तूने बार बार नाम स्मरण किया और इसीलिए गोते खाए।

४५७) भले लोगों को मुसीबत नहीं रहती - नंदन कानन में एक शेर रहता था। उसे दो दिन से भोजन नहीं मिला था। वह भोजन की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। तभी वह एक गड्ढे में जा गिरा। गड्ढे में कीचड़ एवं गंदगी भरी हुई थी। गड्ढे में गिरते ही शेर कीचड़ में फंस गया और जोर-जोर दहाड़ने लगा। शेर की दहाड़ सुनकर एक गाय वहां आई। तभी शेर गाय से विनम्र स्वर में बोला, बहन गाय, क्या तुम्हें भूख लगी है? गाय बोली, हां, मैं भूखी हूं।

तो शेर बोला- तुम यहां क्यों नहीं आ जाती? देखो, कितनी हरी-हरी घास यहां उगी हुई है। शेर की बात सुनकर भोली-भाली गाय गड्ढे में कूद पड़ी, इसके तुरंत बाद ही शेर गाय की पीठ पर चढ़ गया और फिर एक झटके से कीचड़ से बाहर आ गया। बाहर आकर शेर बोला, ओ मूर्ख गाय, इतनी जल्दी किसी की बातों पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए।

गाय ने नम्रता से कहा- तुम नहीं जानते हो कि सज्जन लोग अपना स्वभाव नहीं छोड़ते हैं। वे हमेशा दूसरों की सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं। यदि तुम यहां कीचड़ में रहते तो मर जाते, लेकिन मैं मीठा गुणकारी दूध देती हूं, इसलिए मुझे तो कोई भी बाहर निकाल लेगा। अत: तुम जाओ और मेरी चिंता मत करो। यह सुनकर शेर वहां से चला गया। कुछ देर बाद ही वहां ग्रामवासी आ गए। उन्होंने गाय को गड्ढे में फंसे देखा तो तुरंत ही उसे बाहर निकाल लिया और अपने घर ले गए।

४५८) पूर्णमद: पूर्णमिदम् - एक बार पिता और पुत्र भोजन करने बैठे। पिता की थाली में मां ने एक पूरा लड्डू रखा और बच्चे की थाली में आधा। बच्चा रोने लगा, हठ करने लगा कि हमें पूरा ही लड्डू चाहिए। मां कुशल थी। उसने उस आधे को ही गोल कर एक छोटा सा लड्डू बनाया और बच्चे को परोस दिया। बच्चा खुश हुआ, क्योंकि उसे पूरा लड्डू मिल गया। इसका अर्थ यह हुआ कि बच्चा कहता है, मेरे पिता में जितनी पूर्ण आत्मा है, उतनी ही पूर्ण आत्मा मुझमें भी है। मैं छोटा हूं, पर टुकड़ा नहीं हूं। जैसे विश्व का राज होगा, वह बड़ा होगा और गांव का राज छोटा होगा। पर वह भी पूर्ण तो है।

इसलिए हम हमेशा कहते हैं- पूर्णमद: पूर्णमिदम्।

४५९) मुक्ति का मार्ग - एक बार संत से उनके एक शिष्य ने पूछा, गुरुदेव, कृपा करके मुझे मुक्ति का मार्ग बता दें, जिससे मैं अपने जीवन को सुखी बना सकूं। गुरुदेव ने अपने उस प्रिय शिष्य से नम्रता के साथ कहा, बेटे, मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग तो बहुत ही सरल है। तुम ऐसा करो कि पहले कब्रिस्तान में जाओ और कब्रों में जो लोग सोए पड़े हैं उन पर पत्थर फेंको। फिर मेरे पास आओ, मैं तुम्हें मुक्ति का मार्ग बता दूंगा। दूसरे दिन वह गुरुजी के पास लौट आया और बोला, गुरुदेव, आपकी आज्ञा के अनुसार मैं सारे काम पूरे कर आया हूं। गुरुजी ने कहा, तुम फिर उसी कब्रस्तान में जाओ और इस बार उन कब्रों पर फूल चढ़ाओ? कब्रिस्तान में पहुंचकर शिष्य ने वैसा ही किया। फिर वह गुरुजी के पास लौट आया। गुरुजी ने पूछा, अब यह बताओ कि जब तुमने उन कब्रों पर पत्थर फेंके तो उन्होंने तुमसे क्या कहा? और जब तुमने उन पर फूल चढ़ाएं तो उस समय उन्होंने तुमसे क्या कहा? शिष्य ने नम्रता से कहा, गुरुजी, मुझसे तो उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। वे तो उसी तरह शांत रहे। संत ने कहा, बेटे, बस उन्हीं कब्रों की तरह तुम भी अपना जीवन बिताओ। जो तुम्हें बुरा-भला कहे, उससे भी प्रेम से बोलो और आशीर्वाद दो। उन कब्रों की तरह जब तुम सबके साथ एक जैसा व्यवहार करोगे तो तुम्हें मुक्ति का मार्ग दिखाई देने लगेगा।

४६०) बुराइयों को छुपाओ मत - एक गुरु के कई शिष्य थे। वह सभी गुरु के नियमों का पालन करते थे लेकिन उनमें से भास्कर एक ऐसा शिष्य था जिसका आचरण सही नहीं था। वह नियमों का पालन करने से भी कतराता था। कई बार नियम तोड़ देता। जब गुरु वृद्ध हुए तो आश्रम में कानाफूसी शुरू हुई कि वह किसे अपना रहस्य बताएंगे और किसे उत्तराधिकारी घोषित करेंगे। सभी का अनुमान था कि गुरु अपने कुछ प्रिय शिष्यों में से ही किसी को जिम्मेदारी सौपेंगे। अनी अंतिम अवस्था निकट आने पर मास्टर ने भास्कर को बुलाया और सारे रहस्य बताकर उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। यह फैसला किसी के गले नहीं उतरा। एक शिष्य ने कहा, गुरु का यह कैसा निर्णय है। उन्होंने हमारे जैसे गुणवान शिष्यों को चुनने के बजाय एक भास्कर को चुन लिया जो हमेशा गलतियां करता है। उसकी बात सुनकर गुरु बोले, पुत्र, मैं अपने रहस्य केवल उसी शिष्य को बता सकता था, जिसे मैं अच्छी तरह से जानता हूं। इसमें कोई शक नहीं कि तुम सभी बड़े गुणवान हो, लेकिन तुम सभी ने मेरे सामने हमेशा अपनी अच्छाई ही रखी। अपनी बुराइयों को कभी मेरे सामने नहीं आने दिया। यह खतरनाक है, क्योंकि अक्सर इन गुणों के पीछे व्यक्ति का घमंड, गर्व और असहिष्णुता छिपी रह जाती है। इसलिए मैंने उस शिष्य को चुना, जिसकी बुराइयों को भी मैं देख सकता हूं और जिसे मैं सबसे अच्छी तरह से जानता भी हूं।

४६१) जब भगवान ने संत नामदेव से रोटी का टुकड़ा ले लिया - प्रभु अपने भक्तों की परीक्षा लेते रहते हैं। वे यह देखना चाहते हैं कि वे उनको सभी जीवों में देख पाते हैं या नहीं, आजकल के भक्त तो ऐसे हैं कि वे किसी प्यासे को दो बूंद पानी भी न दें। वे महान भक्त होने का ढोंग करेंगे, ऊंची आवाज में हे राम, हे कृष्ण पुकारेंगे, परंतु क्या वे ऐसे भगवान वास्तव में प्रेम कर पायेंगे, जो दिखायी तक नहीं देता? संत नामदेव की परीक्षा लेने हेतु भगवान विट्ठल ने एक कुत्ते के रूप में अपने आपको उनके सम्मुख प्रकट किया था। जब कुत्ते के रूप में भगवान ने रोटी के टुकड़े को

संत नामदेव के हाथों से छीन लिया था और संत नामदेव उसके पीछे यह कहते हुए हाथों में घी की कटोरी लिये दौड़ पड़े- भगवान। मुझसे दूर मत भागिये, मुझे रोटी पर घी लगा लेने दीजिए, ताकि खाते समय यह आपके गले में अटके नहीं। क्या अद्‌भुत घटना थी यह, जहां एक सच्चे भक्त की खरी भक्ति उभरकर सामने आयी। आदि शंकराचार्य की भी परीक्षा ली गयी थी। स्वयं भगवान शिव ही चांडाल के वेश में आकर मेरी परीक्षा ले रहे हैं। ऐसा सोच उसी क्षण शंकराचार्य उस चांडाल के चरणों में गिर पड़े और दंडवत् प्रणाम किया। तत्काल प्रभु अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हो गये और फिर इस प्रकार से शंकराचार्य की परीक्षा पूर्ण हुई।

४६२) नास्तिक - बस में मेरी बगलवाली सीट पर बैठे अजनबी से बस चलने के साथ ही बातों का सिलसिला चल निकला। बात चलते-चलते आ पहुंची दुनिया के सृजक पर, उसके अस्तित्व के होने न होने पर। इस बात को लेकर हम दोनों में बहस छिड़ गई। वह उसके अस्तित्व को पूरी तरह नकार रहा था और मैं इस बात पर अड़ा था की वो इस दुनिया मैं है, चाहे किसी भी रूप में हो। मेरे अपने तर्क थे तो उसकी अपनी काटें। इससे पहले की हमारी बहस आगे बढ़ती ब्रेकों की चरमराहट केसाथ ही बस रुक गई। पता चला की नदी में पानी ज्यादा आ गया है। ऐसे में बस पुल पर से नहीं गुजर सकती। नदी के दोनों ओर वाहनों की लाइन लगी थी। इधर वाले इस किनारे खड़े थे तो उधर वाले उस किनारे। तभी एक ट्रक आया, उसमें से चालक और खलाशी उतरे पानी का अंदाजा लगाया और ट्रक घुसा ले गए पानी में। देखते ही देखते ट्रक नदी के पार निकल गया। यह देख हमारी बस के चालक को भी जोश आ गया और उसने भी घुसा दी बस पानी में। नदी के बीच में पहुंचते ही बस ने अचानक धक्का सा खाया, इासी के साथ ही पूरी बस श्रीजी के जयकारों से गूंज उठी, सबसे पहले जय बोलनेवाला मेरी बगल में बैठा वही शख्स था जो पूरे रास्ते ऊपर वाले के अस्तित्व को नकार रहा था।

४६३) जरूरत - घर की साफ-सफाई धूमधाम से चल रही थी। बेटा-बहू, पोता-पोती सभी, पूरे मनोयोग से लगे हुए थे। वे सुबह से ही छत पर चले आए थे। सफाई में एक पुराना एलबम हाथ लग गया था, सो कुनकुनी धूप में बैठे पुरानी यादों को ताजा कर रहे थे। ज्यादातर तस्वीरें उनकी जवानी के दिनों की थीं जिनमें वे अपनी दिवंगत पत्नी के साथ थे। तकरीबन हर तस्वीर में पत्नी किसी बुत की तरह थी, तो वे मुस्कुराते हुए, बल्कि ठहाका लगाते हुए कैमरा फेस कर रहे थे। उन्हें सदा से ही खासा शौक था तस्वीरें खिंचवाने का। वे पत्नी को अक्सर डपटते- तस्वीर खिंचवाते वक्त मुस्कुराया करो। हमेशा सन्न सी खड़ी रह जाती हो- भौंचक्की सी। चाय की तलब के चलते नीचे उतरकर आये तो देखा, घर का सारा पुराना सामान इकट्ठा करके अहाते में करीने से जमा कर दिया गया था और पोता अपने फोन कैमरा से उसकी तस्वीरें ले रहा था। यह उनके लिए एक नई बात थी। पता चला कि आजकल पुराने सामान को ऑनलाइन बेचने का चलन है। वे बेहद दिलचस्पी से इस फोटो-सेशन को देखने लगे। एकाएक, उनके शरीर में एक सिरहन सी उठी और ठीक उसी वक्त पोते ने शरारत से मुस्कुराते हुए कैमरा उनकी तरफ करके क्लिक कर दिया- ग्रैंडपा, स्माइल। कैमरा की फ्लैश तेजी से उनकी तरफ लपकी और वे पहली बार तस्वीर खिंचवाते हुए सन्न से खड़े रह गये।

४६४) कौन बने राजा - भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ को पक्षियों का राजा माना गया है। लेकिन वे अपने स्वामी की सेवा में इतना व्यस्त रहते थे कि उन्हें पक्षियों का हालचाल जानने का समय ही नहीं मिल पाता था। एक दिन पक्षियों ने

अपनी सभा बुलाई और इस बात पर विचार-विमर्श किया कि ऐसे राजा का क्या लाभ, जो कभी हमें देखने तक नहीं आता। सभी ने काफी सोच-विचार कर उल्लू को राजा घोषित कर दिया। उल्लू के राजतिलक की तैयारी होने लगी, तभी एक कोने में बैठे कौवे ने चिल्लाते हुए कहा कि यह फैसला हमें मंजूर नहीं है। राजा गरुड़ को भले ही हमारे पास आने का समय न मिलता हो, लेकिन जब भी मौका मिलेगा वह अवश्य आएंगे। मगर उल्लू को राजा बनाने का क्या लाभ, जिसे दिन में दिखाई ही नहीं पड़ता। वह हमारी परेशानियों को कैसे हल करेगा। वह दूसरों की बातें सुनकर फैसला करेगा जिसका परिणाम यह होगा कि चाटुकारों का बोलबाला हो जाएगा। किसी ने तर्क दिया कि उल्लू रात में देख सकते हैं इसलिए वह रात में हमारी समस्या सुलझा देंगे। कौवे ने कहा- ऐसा राजा मुझे मंजूर नहीं जो रात में आकर हमारी नींद हराम करे। फिर हम पक्षी रात में ठीक से देख नहीं पाते। हम पहचानेंगे कैसे कि उल्लू ही आया है। इस बात का लाभ उठाकर कोई राक्षस उसकी जगह आ सकता है और हमें मारकर खा सकता है। पक्षियों ने मान लिया कि राजा ऐसा होना चाहिए, जिसे प्रजा के दुख-दर्द दिखाई तो पड़ें। अंत में गरुड़ को ही राजा बनाए रखने का फैसला किया गया।

४६५) भूख स्वाद नहीं देखती - पप्पू बुरी तरह घबरा गया था। हड़बड़ी में किसी और का ऑर्डर मिस्टर बवेजा को दे आया था। बवेजा का गुस्सा वो पहले देख चुका था। नमक कम होने पर ही वो कई बार खाना फेंक चुका था। कंपकंपाता वो ढाबा मालिक रामलाल के पीछे जाकर खड़ा हो गया। रामलाल ने उसे इस तरह खड़ा देखा तो डाँटते हुए बोला, अबे ओये पप्या यहाँ खड़ा-खड़ा क्या कर रहा है, ग्राहकों को देख। लेकिन पप्पू वहां से हिला तक नहीं। यह देख रामलाल समझ गया कि कुछ गड़बड़ हो गयी है। उसने पप्पू को पुचकारा तो उसने सारी बात बता दी। अब क्या होगा दादा पप्पू ने डरते हुए पूछा। तभी किसी ग्राहक ने आवाज दी, हाँ भइया कितना देना है रामलाल ने देखा बवेजा काउंटर पर खड़ा था, लेकिन वह सामान्य दिखाई दे रहा था। गुस्से का कोई भाव उसे नहीं दिखा, तो उसकी चिंता खत्म हो गई और उसने पप्पू से पूछ कर पेमेंट ले लिया, जब वह चला गया तो पप्पू रामलाल के पास आकर बोला, आज तो कमाल ही हो गया दादा, नमक कम होने पर ही थाली फेंक देनेवाला सादा खाना खाकर चला गया और वो भी बिना कुछ बोले। भूख स्वाद नहीं देखती पप्या, भूख मैं भुटे भी स्वादिष्ट लगते हैं। पप्पू की कुछ समझ में नहीं आया था, लेकिन उसने समझनेवाले अंदाज में सिर हिला दिया।

४६६) संगठन में शक्ति - किसी गांव में एक किसान रहता था। उसके चार पुत्र थे। किसान को इस बात की बड़ी चिंता रहती थी कि उसके बेटे आपस में हमेशा लड़ते-झगड़ते रहते हैं। एक दिन किसान बहुत बीमार पड़ गया। उसने सोचा कि अब मेरा अंतिम समय आ गया है। मुझे अपने बेटों को एक बार और समझाने का प्रयास करना चाहिए। उसने अपने चारों पुत्रों को बुलाया। बेटों के आने पर उसने उनके सामने एक लकड़ी का गट्ठर रख दिया और उनसे कहा- इस गट्ठर को तोड़ो। चारों लड़कों ने बारी-बारी से उस गट्ठर को तोड़ने का प्रयास किया, लेकिन वे उसे तोड़ न सके। अब किसान ने एक बेटे से कहा, इस गट्ठर को खोल दो। उसने गट्ठर को खोल दिया तो सारी लकड़ियाँ अलग-अलग हो गई। अब किसान ने बेटों से कहा, अब तुम लोग एक-एक लकड़ी उठाकर तोड़ो। चारों बेटों ने एक-एक लकड़ी उठा ली और सभी ने बड़ी आसानी से लकड़ी तोड़ दी। किसान ने बेटों से कहा, बेटा, तुम सबने देखा कि जब तक ये

लकड़ियाँ एक जगह बँधी हुई थीं तब तक तुम इन्हें तोड़ नहीं पाए। जैसे ही ये लकड़ियाँ अलग-अलग हो गई, तुमने इन्हें बड़ी आसानी से तोड़ दिया। इसी प्रकार यदि तुम आपस में मिलकर एक साथ रहोगे तो कोई भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। यदि तुम अलग-अलग रहोगे तो कमजोर पड़ जाओगे और कोई भी तुम्हें आसानी से तोड़ देगा, जैसे तुमने इन लकड़ियों को तोड़ दिया।

अब पुत्रों को पिता की बात समझ में आ गई। उन्होंने अपने पिता की इस बात पर वचन दिया कि वे अब आपस में कभी नहीं लड़ेंगे और हमेशा मिल जुल कर रहेंगे। हमें आपस में मिल-जुल कर रहना चाहिए। संगठन में ही शक्ति है।

४६७) ऐसा भी होता है - गोद में बच्चा लिए और हाथ में झोला लटकाए एक महिला बस में चढ़ी। सीट खाली नहीं देख वह निराश हो गई, फिर भी जैसा कि बस में चढ़ने वाला हर यात्री सोचता है कि शायद किसी सीट पर अटकने की जगह मिल जाए, वह भी पीछे की ओर चली गई। तभी उसकी नजर एक सीट पर पड़ी। उस पर बस एक युवक बैठा था। आंखों में संतोष की चमक आ गई। पास जाने पर जब उस पर कोई कपड़ा या कुछ सामान नहीं दिखाई दिया तो वह उस पर बैठने लगी। अरे... रे कहाँ बैठ रही हो, यहाँ सवारी आएगी आँखों में उभरी चमक घुप्प से गायब हो गयी। आगे और सीट देखने की हिम्मत उसमें नहीं रही और वह वहीं सीटों के बीच गैलरी में ही बैठ गई। इसके बाद उस खाली सीट को देखकर कई आंखों में चमक आती रही और बुझती रही। तभी एक युवती बस में चढ़ी। अन्य लोगों को खड़ा देख उसने समझ लिया कि वह सीट खाली नहीं है। वह भी खड़ी हो गई महिला के पास। बैठ जाइये न, यहाँ कोई नही आएगा इस आवाज पर युवती ने मुड़कर देखा तो युवक उससे ही मुखातिब था, उसने आश्चर्य से पूछा कोई नहीं आएगा, जी नहीं युवक उसी मुस्कान के साथ बोला, इस पर युवती मुड़ी और नीचे बैठी उस बच्चे वाली महिला को वहां बैठा दिया, अब युवक का चेहरा देखने लायक था।

४६८) ईश्वर के निकट - बहुत समय पहले एक संत हुए। उन्हें दुनिया की किसी भी वस्तु से मोह-माया नहीं थी। पहनने के लिए कपड़ों के अलावा उनके पास दूसरी कोई और चीज न थी। वह मंदिर, मस्जिद और चर्च में कोई भेद नहीं देखते थे। एक बार उनके पास एक युवक कुछ सीखने के उद्देश्य से आया। उन्होंने पूछा, क्या तुम्हें और कोई नहीं मिला? उस व्यक्ति ने कहा, आपसे ही सीखना है। यह बात सुनकर संत ने कहा, अगर कुछ सीखना है तो हमें दूसरे धर्म के लोगों के पास जाना चाहिए। संत की बातें सुनकर युवक हैरान हो गया। संत ने उसकी तरफ एकटक देखा और फिर कहा, मेरे कहने का मतलब है कि आप जिस धर्म को मानते हो, उस धर्म को न माननेवाले के पास जाओ। उनके पास जाने पर वह हमारे धर्म की निंदा करेंगे। हमें सुनते रहना है। इससे हममें सहिष्णुता निर्माण होगी। हमें विरोधियों की बातों का बुरा नहीं लगेगा और यही उस व्यक्ति को दिया गया सही उत्तर होगा। धर्म हमें सहिष्णता की सीख देता है। उसके बाद ही हम ईश्वर के निकट जा पाएंगे।

४६९) कॉन्टैक्ट और कनेक्शन - विश्व धर्म सभा शिकागों में अंग्रेज विवेकानंद का मजाक उड़ाते थे। उन्हीं में से एक पत्रकार ने उनका मजाक उड़ाने हेतु प्रश्न पूछा, महोदय, आपके आखिरी व्याख्यान में आपने हमें जोग-संजोग और कॉन्टैक्ट-कनेक्शन के बारे में बताया। यह वास्तव में उलझा हुआ है। क्या आप समझा सकते हैं? विवेकानंद मुस्कुराए

और पत्रकार से पूछा, आप न्यूयॉर्क से हो? पत्रकार ने कहा- हां। फिर विवेकानंद ने पूछा, घर पर कौन-कौन हैं? पत्रकार ने कहा- पिताजी, तीन भाई और एक बहन। विवेकानंद फिर पूछा, क्या आप अपने पिता से बात करते हैं? आखिरी बार उनसे कब बात की?

हिचकते हुए पत्रकार बोला, एक महीने पहले। विवेकानंद - क्या आप भाई और बहन से अक्सर मिलते हैं? आखिरी बार कब मिले? इस पर पत्रकार के माथे पर पसीना आ गया। अब स्वामीजी पत्रकार का साक्षात्कार कर रहे थे। दुख के साथ पत्रकार ने कहा, हम दो साल पहले क्रिसमस में मिले थे। स्वामीजी- आप सभी कितने दिन एक साथ रहे? पत्रकार ने कहा, तीन दिन। आपने अपने पिता के साथ कितना समय बिताया? स्वामी जी ने पूछा। फिर तो पत्रकार शर्मिंदा दिखने लगो। स्वामीजी, क्या उनके साथ नाश्ता, दोपहर का भोजन या रात का खाना खाया? क्या कभी पूछा कि तुम्हारी मां की मृत्यु के बाद उनके दिन कैसे गुजर रहे हैं?

यह सुनकर पत्रकार की आंखें छलछला गईं। विवेकानंद ने कहा, रोइए मत। मुझे खेद है। मैंने अनजाने में आपको चोट पहुंचाई। लेकिन यह मूल रूप से कॉन्टैक्ट और कनेक्शन, जोग और संजोग के बारे में आपके प्रश्न का उत्तर है। आपके पिता के साथ आपका कॉन्टैक्ट है, लेकिन कनेक्शन नहीं है। कनेक्शन दिल और दिल के बीच होता है। एक साथ बैठकर भोजन करना, दुख-सुख साझा करना, एक दूसरे की देखभाल करना। पत्रकार उनकी बात सुनकर थोड़ी देर उन्हें देखता रहा, फिर उसने अपनी आंखें पोंछीं और कहा, मुझे अविस्मरणीय सबक सिखाने के लिए धन्यवाद।

४७०) वित्त में अमृतत्व नहीं - पुरानी कहानी है। याज्ञवलक्य ऋषि की दो पत्नियां थीं। एक सामान्य, संसार में आसक्ति रखनेवाली और दूसरी विवेकशील, जिसका नाम मैत्रेयी था। याज्ञवल्क्य को लगा कि अब घर छोड़कर आत्मचिंतन के लिए बाहर जाना चाहिए। जाते समय उन्होंने दोनों पत्नियों को बुलाया और कहा, अब मैं घर छोड़कर जा रहा हूं। जाने से पहले जो भी संपत्ति है, आप दोनों में बांट दूं। मैत्रेयी ने पूछा, क्या पैसे से अमृत-जीवन प्राप्त हो सकता है? याज्ञवल्क्य ने जवाब दिया, नहीं, अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन- वित्त से अमृतत्व की आशा करना बेकार है। उससे तो वैसा जीवन बनेगा, जैसा कि श्रीमानों का होता है। वह तो मृत-जीवन है। अमृत जीवन की अगर इच्छा है तो आत्मा की व्यापकता का अनुभव करो। सबकी सेवा करो। सबसे एकरूप हो जाओ।

४७१) तीन धारियों की विशेषता - एक था चूहा, एक थी गिलहरी। चूहा शरारती था। दिन भर मौज उड़ाता। एक दिन अपनी प्रशंसा करते हुए चूहे ने कहा, मुझे लोग मूषकराज कहते हैं। मेरे पैने-पैने हथियार सरीखे दांत लोहे के पिंजरे तो क्या, किसी भी चीज को काट सकते हैं। यह सुनकर गिलहरी मासूमियत से बोली, भाई, तुम दूसरों का नुकसान करते हो, फायदा नहीं। यदि अपने दाँतों पर तुम्हें इतना गर्व है, तो इनसे कोई नक्काशी क्यों नहीं करते? इनका उपयोग करो, तो जानूं। जहां तक मेरा सवाल है, मुझमें तुम सरीखा कोई गुण नहीं है। मेरे बदन पर तीन धारियां देख रहे हो न, बस ये ही मेरी खास चीज हैं। जो दाना-पानी मिल जाता है, उसका कचरा साफ करके संतोष से खा लेती हूं। चूहा बोला, तुम्हारी तीन धारियों की विशेषता क्या है? गिलहरी बोली, वाह। तुम्हें पता नही।? आसपास दो काली धारियां हैं, उनके बीच में एक सफेद है। इनका मतलब है कि कठिनाइयों की परतों के बीच से ही असली सुख झांकता है। दो काली अंधेरी रातों के बीच

में ही एक सुनहरा दिन छिपा रहता है। सुनकर चूहा लज्जित होकर वहां से भाग गया।

४७२) दुख में भी प्रसन्नता - एक राजकुमार था। उसकी खूब ठाट-बाट की जिंदगी थी। एक बार जब वह लड़ाई में गया तो उसके रसोईघर के सामान को लेकर ३०० ऊंट भी उसके साथ गये। दुर्भाग्य से वह शत्रु देश द्वारा बंदी बना लिया गया। दुर्भाग्य भूख को तो नहीं टाल सकता। उसने पास खड़े अपने मुख्य रसोइये से कहा, भाइ, कुछ खाने को तो तैयार कर दे। उस बेचारे के पास कुछ आटा बचा था। उसने देगची में आटे से हलुआ बनाना शुरू किया और भोजन को कुछ अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए स्वयं दूध की खोज में निकला। इतने में एक कुत्ता वहां से गुजरा। हलुए की सुगंध से आकर्षित हो उसने अपना मुंह देगची में डाल दिया। पर भाप की गर्मी पर वह तेजी से और कुछ ऐसे बेढ़ंगे तरीके से पीछे हटा कि देगची उसके गले में अटक गई। अब तो घबराकर वह देगची के साथ ही वहां से भागा। राजकुमार ने जब यह देखा तो जोर से हंस पड़ा। उसके अफसर ने, जो उसकी चौकसी पर नियुक्त था, उससे पूछा, यह हंसी कैसी? इस दु:ख के समय भी आप हंस रहे हो? राजकुमार ने तेजी से भागते हुए कुत्ते की ओर इशारा करते हुए कहा, मुझे यह सोचकर हंसी आ रही है कि आज प्रात:काल तक मेरी रसोई का सामान ले जाने के लिए ३०० ऊंटों की आवश्यकता पड़ती थी और अब उसके लिए एक कुत्ता ही काफी है। लेकिन दुख के समय में भी प्रसन्न रहने में एक स्वाद मिलता है।

४७३) चालाक व्यापारी - एक था व्यापारी। एक दिन वह एक गांव जाने को निकला। रास्ते में उसे चार चोर मिले। दूर से चारों चोरों को देखने के बाद व्यापारी ने सोचा कि इससे पहले कि ये चोर मेरा सामान लूट ले, मुझे ही उन्हें किसी-न-किसी तरकीब से ठगना होगा। मैं तो अकेला हूं और चोर चार हैं। मुझे एक थप्पड़ मारकर ये मेरा सब कुछ ले जायंगे और मैं कुछ बोल भी नहीं पाऊंगा। इतने में चोर व्यापारी के पास आ पहुंचे। चोरों को पास आया देखकर व्यापारी नीचे बैठ गया और बोलने लगा, मेरे साथ बारह लोग और हैं, लेकिन वे अभी आ नहीं पाए हैं। मैं उनकी बाट देखते-देखते थक चुका हूं। कुछ देर और बैठकर मैं तो आगे बढ़ जाऊंगा। उन लोगों के लिए मैं यहां कब तक बैठा रहूं? व्यापारी की बातें सुनकर चोरों ने उससे पूछा, तुम्हारे बारह साथी कौन-कौन हैं? व्यापारी बोला, कमर करधनी और कच्छा, हम तीन, तेल, तली और तसला, छह, लाठी, छड़ी और बूढ़ा नौ, सेठ, मुनीम और दूकानदार, बारह। यह सुनकर चारों की तो छाती दहल गई। उन्होंने मान लिया कि ये बारह हैं और हम चार हैं। इनके सामने हमारा कोई जोर नहीं चलेगा। यह सोचकर चोर वहां से चल दिए और वह चालाक व्यापारी भी अपने घर पहुंच गया।

४७४) धुन के धनी - उनसे पहले जेल में अनशन करते हुए एक बौद्ध संन्यासी फुंगी विजय अपने प्राण दे चुके थे। रामरक्खा भी अनशन के दौरान प्राण दे चुके थे। लाहौर षड्यंत्र के क्रांतिकारी महावीर, रामकृष्ण, नामादास और मोहित मोहन भी प्राण दे चुके थे, मगर इनसे अलग एक जिंदगी थी, जो भूख प्यास से दूर रोज मौत की ओर बढ़ रही थी। वह जिंदगी पहले भी तीन बार जेल में पूरे प्रशासन को घुटने के बल ला चुकी थी। उस नवयुवक की दीवानगी ऐसी थी कि अंग्रेज भी हमेशा बेचैन रहते। उस पर महात्मा गांधी का जबरदस्त असर था, जो जेल में अपने साथी क्रांतिकारियों के हक के लिए अंत तक जूझा था।

भगत सिंह के साथ जब वह जेल में था, तब पूरे देश इन्हें देख रहा था। भगत सिंह ने कहा कि हमारे साथ राजनीतिक

कैदियों सा व्यवहार किया जाए। अंग्रेजों ने बात नहीं मानी। फिर आजादी के इन परवानों ने जेल में अनशन शुरू किया। खबर सुनकर गणेश शंकर विद्यार्थी जेल आए। उनका कहा मानकर कई क्रांतिकारियों ने अनशन तोड़ा, लेकिन वे अनशन पर कायम रहे। मोतीलाल नेहरू ने ब्रिटिश हुकूमत को कड़ा संदेश दिया, लेकिन हुकुमत नहीं मानी। विचलित होकर जवाहर लाल नेहरू ने भी जेल आकर उन्हें समझाया, लेकिन उनकी जिद के आगे सब फेल था।

सोलह-सोलह सिपाहियों ने मिलकर उनकी नाक में खाना डालना चाहा, मगर वे तो चट्टान थे। आखिरकार लंबे अनशन के बाद यतींद्रनाथ बोस जेल में ही शहीद हो गए। शहादत के बाद उनके पार्थिव शरीर को सुभाष चंद्र बोस बंगाल ले जाना चाहते थे तो बंबई वाले उन्हें अपने यहां ले जाना चाहते थे। फिर पंजाब से भी आवाज उठी कि यतींद्र तो उसके हैं और फिर पूरा देश यतींद्रनाथ का यह संदेश कि सब मिलकर, एक साथ जुड़कर, अपने हक को छीन लो, जिसे तुमसे छीन लिया गया है, दोहराते हुए अंग्रेजों को ललकारने लगा।

४७५) मेंढ़क और गिलहरी - एक था मेंढ़क और एक थी गिलहरी। एक दिन दोनों में दोस्ती हो गई। रोज दोनों साथ-साथ खेलते और मौज मनाते। खेलते-खेलते एक दिन मेंढक ने कहा, गिलहरी दीदी, मुझे तो अब ब्याह करना है। गिलहरी बोली, बड़ी अच्छी बात है। इसमें देर क्यों हो? चलो, मैं तुम्हारा ब्याह अभी करा देती हूं। यह काम तो झटपट हो सकेगा। तुम चाहोगे, तो मैं तुम्हारा ब्याह किसी राजकुमारी से करवा दूंगी। मेंढ़क बोला, तो फिर चलो। गिलहरी और मेंढ़क दोनों चल पड़े। चलते-चलते रास्ते में ताड़ का एक पेड़ मिला। गिलहरी की इच्छा हुई कि वह इस पेड़ पर चढ़ जाए। उसने कहा, मेंढक भैया, तुम कुछ देर यहीं खड़े रहो। मुझे जरा इस पेड़ पर ले चलो। गिलहरी ने कहा, आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ। तुम मुझे अच्छी तरह पकड़े रहना। ऊपर चढ़कर गिलहरी ने मेंढ़क को एक पत्ते पर बैठा दिया। कुछ देर बाद गिलहरी एक ही सपाटे में पेड़ से नीचे उतर गई और मेंढ़क आंखें फाड़े पेड़ पर बैठा रहा। मन-ही-मन बोला, गिलहरी से दोस्ती की, ताड़ पर डेरा डाला। ब्याह तो एक ओर, पेड़ से नीचे उतरना भी भारी पड़ गया।

४७६) सत्य, न्याय, त्याग जैसे आत्मरक्षकों की लक्ष्मण रेखा में है सुखी जीवन- एक नदी के दोनों किनारों पर दो राज्य बसे हुए थे। दोनों के राजा परस्पर मित्र थे। एक राजा की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। आसपास के सभी राजा उसके मित्र बनते गए, प्रजा सुख-शांति से रहने लगी। लेकिन दूसरे राज्य में प्रजा अशांत थी और अभाव में जी रही थी। आए दिन राज्य में उपद्रव और उत्पात होते रहते थे। दुखी होकर राज्य के बहुत से लोग नदी के पार दूसरे राज्य में जाकर बसने लगे। प्रजा की इस अशांति और पीड़ा से राजा बहुत चिंतित रहता था। सोचता कि अगर ऐसे ही प्रजा पलायन करती रही तो हमारा राज्य ही समाप्त हो जाएगा। आखिर एक दिन अपने मंत्री के साथ मंत्रणा के पश्चात वह पड़ोस के राजा से मिलने गया। वह देखना चाहता था कि पड़ोस के राज्य में ऐसी क्या खूबी है।

वहां के राजा ने कहा- मैंने कोई ऐसा जादुई चमत्कार नहीं किया है। बस निम्न चार चौकीदार नियुक्त कर दिए हैं जो राज्य में व्यवस्था बनाए रखते हैं और सुरक्षा भी करते हैं। पहला चौकीदार सत्य है। वह अंतरात्मा की शुद्धि की वाणी है। यह मुझे असत्य बोलने से बचाता है। उसके कारण मैं अपनी प्रजा का विश्वासपात्र बना हुआ हूं। प्रजा मेरे हर कथन पर भरोसा करती है।

दूसरा चौकीदार जो मुझे घृणा और तिरस्कार करने से बचाता है, वह है प्रेम। मैं राज्य के सभी व्यक्तियों से प्रेम सहित बोलता हूं। बदले में प्रजा भी अपना पूरा आदर-सत्कार और सहयोग देती है। मैं अपनी ही तरह सभी के अस्तित्व का आदर करता हूं। हर किसी के प्रति संवेदनशील रहता हूं। तभी मेरे राज्य के प्रजाजन तथा पड़ोसी राजा मुझसे मित्रवत संबंध रखते हैं। तीसरा चौकीदार न्याय है। वह मुझे सबसे समता दृष्टि रखने को प्रेरित कर अन्याय से दूर रखता है। प्रजा भी न्याय मार्ग पर चलकर अपना जीविकोपार्जन करती है। इसी नीति की कमाई से मेरे राज्य में धन-धान्य की वृद्धि हुई है। चौथा चौकीदार त्याग मुझे स्वार्थी होने से बचाता है। हम जो कुछ प्राप्त करते हैं वह नहीं, बल्कि जो कुछ हम त्यागते हैं वह हमें धनी बनाता है। यही मानकर मैं कुछ करने से पहले अपनी जनता और अपने मित्रों के हित के बारे में सोचता हूं। यही कारण है कि मेरी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई है। यही चारो चौकीदार मेरे राज्य में शांति और सद्भाव रखते हैं। इन्हीं के कारण मेरे राज्य का विस्तार भी हो रहा है।

अतिथि राजा ने उसका आभार ज्ञापित करते हुए अपने राज्य में भी ऐसी ही व्यवस्था करने का निश्चय किया। हमें भी हमें अपने जीवन में समता, सुख, शांति और मित्रता बनाए रखनी है, सद्गुणों का विकास और विस्तार करना है तो सत्य, प्रेम, न्याय और त्याग रूपी चारों आत्मरक्षकों की लक्ष्मण रेखा के भीतर ही सुख से जीने की आदत डालनी होगी।

४७७) आप समय को नष्ट करेंगे तो समय भी आपको बर्बाद कर देगा - महान वैज्ञानिक बेंजामिन फ्रैंकलिन की किताबों की एक दुकान थी। एक दिन एक ग्राहक ने उनकी दुकान पर एक किताब की ओर इशारा करते हुए काउंटर पर बैठे व्यक्ति से पूछा कि इस किताब का मूल्य क्या है? उसने जवाब दिया- दो डॉलर। कुछ देर वह चुप रहा, फिर उसने पूछा कि इस दुकान के मालिक कहां है? जवाब मिला- वह आधे घंटे के बाद ही यहां पहुंचेंगे। ग्राहक बोला- ठीक है, मैं आधे घंटे बाद ही आता हूं। मालिक फ्रैंकलिन के आने के बाद फिर उसने पूछा कि इसका मूल्य क्या है? फ्रैंकलिन ने कहा- सवा दो डॉलर। तो ग्राहक ने कहा- अभी तो आपका स्टाफ दो डॉलर बता रहा था। थोड़ी देर तक वह चुप रहा और कुछ सोचने के बाद उसने फिर पूछा- अच्छा बताइए, मैं आपको इसका क्या उचित मूल्य दूं?

फ्रैंकलिन ने इस बार दाम बढ़ाकर बताया, कहा- ढाई डॉलर। इस बार ग्राहक सकते में आ गया और शिकायत के लहजे में कहने लगा- पर अभी-अभी तो आपने इसका मूल्य सवा दो डॉलर बताया था। तब फ्रैंकलिन ने उसे शांतिपूर्वक समझाया- शायद तुमको समय की कीमत का ज्ञान नहीं है। इतने देर से तुम मेरा और मेरे स्टाफ का समय खर्च कर रहे हो, उसका मूल्य भी तो इसमें सम्मिलित है। यह सुनते ही ग्राहक को समय का ज्ञान हुआ और वो पैसे देकर किताब ले गया। बेंजामिन फ्रैंकलिन समय के महत्व को जानते थे इसी वजह से वह अमेरिका के महान वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ और चिंतक बन सके। फ्रैंकलिन ने कहा है- समय बर्बाद मत करो।

४७८) हमेशा अपनी क्षमताओं पर भरोसा करने से सच्ची खुशी मिलती है - एक बार एक संत ने बहुत सुंदर बगीचा लगाया। उसमें तरह-तरह के पेड़ पौधे लगाए। एक दिन संत को किसी काम से बाहर जाना पड़ा। लेकिन जब वह लौटे तो देखा कि सारे पेड़-पौधे मुरझाए हुए हैं। संत चिंतित हो गए और एक-एक कर उन सबसे इस हालत की वजह पूछी। एक वृक्ष ने कहा- मैं मर रहा हूं क्योंकि मुझे ईश्वर ने देवदार जितना ऊंचा नहीं बनाया।

संत ने देवदार की ओर देखा तो उसके भी कंधे झुके हुए थे। वह इसलिए मुरझा गया था कि वह अंगूर के पेड़ की तरह फल नहीं पैदा कर सकता था।

अंगूर की बेल इसलिए मरी जा रही थी क्योंकि वह गुलाब की तरह सुगंधित फूल नहीं दे रही थी। गुलाब भी कांटों के बीच होने की शिकायत कर रहा था।

संत थोड़ा आगे बढ़े तो उन्हें एक ऐसा पेड़ नजर आया जो पूरा खिला और ताजगी से भरा था। संत ने उससे पूछा- बड़े कमाल की बात है, मैं पूरे बगीचे में घूमा हूं। तुम केवल एकमात्र संतुष्ट और शांत मिले जबकि बाकी अन्य कई मायने में तुमसे अधिक मजबूत हैं और पेड़ पौधे हैं, फिर भी वे मुरझाए हुए हैं।

वह पौधा बोला- ये सब अपनी खूबियां नहीं पहचानते। ये नहीं जानते कि वे भी अपने आप में बहुत विशेष हैं। ये केवल दूसरों की खूबियों से ईर्ष्या करते हैं, इसलिए दुखी हैं जबकि मैं जानता हूं कि मेरे मालिक ने मुझे लगाया है तो उसके पीछे कुछ न कुछ उसका उद्देश्य होगा। वह चाहता होगा कि मैं इस बगीचे की समृद्धि का हिस्सा बनूं। इसलिए मैं खुश हूं। मैं जानता हूं, मेरा यहां होना औचित्यहीन नहीं है। मैं किसी और की तरह बनने की अपेक्षा खुद की क्षमताओं पर अधिक भरोसा करता हूं, यही मेरी प्रसन्नता का राज है।

अपनी समझ को बढ़ाना जरूरी है, इसी से जीवन में खुशियां आ सकती हैं। एक अच्छा दिमाग भर होना काफी नहीं है। अहम बात यह है हमें इसका बेहतर इस्तेमाल करना भी आता हो।

४७९) छल कपट को त्याग कर अपने अंदर का परम आनंद प्राप्त करें- एक जगह दो चीटियां मिलीं। एक ने पूछा- तू कहां रहती है? दूसरी बोली- मैं तो चीनी के पहाड़ पर रहती हूं। वह बोली- चीनी क्या होती है? जवाब मिला- मीठी चीज होती है। पूछा- मैं तो नमक के पहाड़ पर रहती हूं। मैंने चीनी कभी चखी ही नहीं। तो चीनी के पहाड़वाली चींटी बोली- तू एक दिन मेरे पास आ, मैं तुझे चीनी चखने के लिए दूंगी।

नमक के पहाड़ से चलने के पहले चींटी ने सोचा कि अगर वहां मैं पहुंची और मैंने चीनी खाई और वह मुझे पसंद नहीं आई तो फिर गड़बड़ होगी। भूखा रहना पड़ेगा। इसलिए थोड़ा-सा नमक मैं अपने मुंह में डाल लेती हूं। उसने अपने मुंह में नमक डाल लिया और चल पड़ी। पहुंचते ही आदर-सत्कार के बाद चीनी वाली चींटी ने कहा, यह चीनी है, इसे खाकर देखो। दूसरी चींटी ने चखा और कहा- यह तो बिल्कुल मेरे नमक जैसी है। तब दूसरी चींटी बोली, नहीं, यह नहीं हो सकता। नमक और चीनी में बहुत अंतर है। दूसरी बोली, नहीं, कोई अंतर नहीं। ये और नमक एक ही चीज है। तब चीनी वाली चींटी बोली, अपना मुंह खोलो। नमक वाली चींटी ने मुंह खोला तो दूसरी चींटी ने देखा कि पीछे नमक का एक डला रखा हुआ है। उसने कहा, नमक के डले को निकाल। उसने डला निकाला, तब कहीं उसको चीनी के स्वाद का पता चला। तो यही छल-कपट है। इसीलिए जीवन का आनंद लेने के लिए छल-कपट त्यागो। ज्ञान को तुम हृदय से पकड़ सकते हो।

४८०) सच्चे प्रेमी आध्यात्मिक ऊंचाई छूकर प्रेम का परिणाम तय करते हैं - किसी गांव में एक साधु हर दिन उपदेश देता था। उसी गांव में एक नर्तकी लोगों का मनोरंजन करती थी। एक दिन बाढ़ आ गई। साधु और नर्तकी नहीं

रहे। यमलोक में उनके कर्मों और उनके पीछे छिपी भावनाओं के आधार पर स्वर्ग या नरक दिए जाने की बात कही गई। साधु को स्वर्ग मिलने की आशा थी, लेकिन नर्तकी को बस निर्णय की प्रतीक्षा थी। तभी घोषणा हुई कि साधु को नरक और नर्तकी को स्वर्ग दिया जाता है। यह सुन साधु ने क्रोधित हो पूछा, यह कैसा न्याय है? मैं जीवन भर उपदेश देता रहा और मुझे नरक नसीब हुआ। यह स्त्री रिझाने के लिए नाचती रही और इसे स्वर्ग मिला।

यमराज ने उत्तर दिया- नर्तकी अपना पेट भरने को नाचती थी, लेकिन इसकी भावना यह थी कि अपनी कला ईश्वर के चरणों में अर्पित कर रही हूं। तुम उपदेश देते हुए भी सोचते थे कि काश, नर्तकी का नृत्य देखने को मिल जाता। तुम इस ईश्वर के इस महत्वपूर्ण संदेश को भूल गए कि इंसान के कर्म से अधिक उसके पीछे की भावनाएं मायने रखती हैं

कुछ पाकर खो देने का डर, कुछ न पा सकने का भय या संबंध की गाड़ी पटरी से उतर न जाए, इन्हीं छोटी-छोटी चिंताओं के डर से निकलने का दिन है।

४८१) हिम्मत की जीत - मेवाड़ के महाराजा समरसिंह की मृत्यु का समाचार सुनकर मोहम्मद गोरी बहुत प्रसन्न हुआ। महाराजा के कोई पुत्र नहीं था। शासन की बागडोर महारानी के हाथ में थी। इसलिए गोरी को मेवाड़ पर आक्रमण कर उस पर कब्जा करना आसान लगा। गोरी ने अपने सेनापति को बुलाकर कहा, इस समय मेवाड़ पर महारानी राज कर रही हैं। इसलिए फौरन मेवाड़ पर चढ़ाई कर दो। गोरी की सेना के सामने मेवाड़ की सेना बहुत छोटी थी। जैसे ही मेवाड़ की महारानी और उनके सेनापति को यह खबर मिली, वहां के सेनापति ने तुरंत आपात बैठक बुलाई। अनुभवी सलाहकारों से पूछा गया कि ऐसे समय में क्या कदम उठा जाने चाहिए। मंत्री परिषद के सभी सदस्यों ने कहा कि इस समय तो आप ही कुछ उपाय कीजिए। सेनापति ने कहा, सीधा ही मुकाबला करना होगा। लेकिन सीधे मुकाबले का मतलब है आत्महत्या। गौरी की सेना में लाखों सैनिक हैं, जबकि हमारी सेना कुछ हजार की है। साफ था सेनापति का साहस भी डिग गया था, क्योंकि शत्रु ने चारों ओर से मेवाड़ को घेर लिया था। तभी अंदर से आती हुई महारानी की ललकार सुनाई दी, जो कुछ विधाता जानता है, हम भी जानते हैं। विजय हमारी ही होगी। आओ मेरे साथ, हम आखिरी दम तक लड़ेंगे। हमारी जमीन पर कोई कब्जा करने आए, हम यह कैसे सहन कर सकते हैं। सभी ने देखा कि रानी सैनिक के वेश में साहस की प्रतिमूर्ति बनी हुई खड़ी हैं। सभी रानी के साथ हो लिए और भूखे शेर की तरह शत्रुओं पर टूट पड़े। शीघ्र ही गौरी की सेना के पैर उखड़ गए और वह भाग खड़ी हुई। सैनिकों का कहना था कि हमारी नहीं, रानी के साहस की जीत हुई है। कहा गया है कि बड़ी से बड़ी विपत्ति भी आ जाए तो बहादुरी और हिम्मत से उसका सामना करना चाहिए, संकट दूर हो जाता है।

४८२) सेवा और इबादत - हजरत अबुल हसन खिरकानी दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी के एक बहुत महान सूफी संत हुए हैं। यह घटना उनके जीवन से संबंधित है। एक बार उनकी माताजी बीमार पड़ गई। हजरत अबुल हसन खिरकानी साहस के एक छोटे भाई भी थे। वे भी परमात्मा के भक्त थे। दोनों भाइयों का अधिकतर समय इबादत में ही गुजरता था, लेकिन मां की सेवा और इबादत दोनों में ही व्यवधान न आए, इसके लिए दोनों भाइयों ने काम इस तरह बांट लिया कि एक भाई मां की सेवा में रहता तो दूसरा इबादत में। दोनों भाई बारी-बारी से रात मां की सेवा और इबादत में बिताते। एक रात भाई

की बारी मां की खिदमत करने की थी और हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब की इबादत करने की। उस रात उनके छोटे भाई का मन हुआ कि वह रात परमात्मा की इबादत में गुजारें। उन्होंने हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब से निवेदन किया कि आज रात आप मां की खिदमत करें, मैं आज की रात इबादत में बिताना चाहता हूं। हजरत अबुल हसन खिरकानी खुशी-खुशी अपने छोटे भाई की बात मान गए और अपनी मां की खिदमत में लग गए। उनके भाई इबादतखाने में चले गए और परमात्मा की इबादत करने लगे। इबादत शुरू करते ही उन्हें एमक दिव्य वाणी सुनाई दी, हमने तेरे भाई को बख्शा (मोक्ष दी) और उसके तुफैल में (हेतु) तुझे भी बख्शा। यह दिव्य वाणी सुनकर छोटे भाई को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे बोले या अल्लाह। मैं तेरी इबादत में हूं। चाहिए तो यह था कि मेरा भाई मेरी इबादत के तुफैल में बख्शा जाता। आवाज आई तू हमारी इबादत करता है, जिसकी हमे जरूरत नहीं और तेरा भाई मां की खिदमत में है, जिसकी उसे जरूरत है। इतना सुनना था कि छोटे भाई को समझ आ गया कि मां की सेवा भी अल्लाह की इबादत ही है।

४८३) अजीजन का देश - लखनऊ की मशहूर तवायफ अजीजन बाई कानपुर में रहने लगी थीं। उनकी खूबसूरती पूरे अवध में मशहूर थी। उनकी हनक अंग्रेज हुक्मरानी के यहां भी महसूस की जाती थी। वह दिल की बेहद उदार और अपने वतन से बेपनाह मोहब्बत करनेवाली थीं। कहते हैं कि ईश्वर ने उन्हें नृत्य और कला का अद्भुत मिश्रण दिया था। जब वह किरदार में होती तो लगता चांद झील में तैर रहा हो। मगर एक वक्त आया जब उन्हें लगा कि मुल्क खतरे में है। उन्होंने अपने गहने, दौलत और दूसरी चीजें क्रांतिकारियों के कदमों में रख दीं और कहा कि इससे मुल्क की हिफाजत के लिए जरूरी इंतजाम करो। तात्या टोपे के नजदीक पहुंचकर उन्होंने सभी क्रांतिकारियों की खूब मदद की, मगर यह ज्यादा दिन चल नहीं सका। एक रोज उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जब वह अंग्रेज अधिकारियों के सामने लाई गईं तो उनकी खूबसूरती और कला की इज्जत रखते हुए उन्हें मशविरा दिया गया कि वह सिर्फ यह बता देंगी कि उन्होंने किसे मदद पहुंचाई है, तो उनके सभी गुनाह माफ करके बाइज्जत शहर में रहने दिया जाएगा। वह मुस्कराईं और बोलीं, भले तुम मेरी जबान खींच लो, मगर खूबसूरत गजलें गानेवाली यह जुबान उफ भी नहीं करेगी। मेरी खाल खींच लो, यह खूबसूरत खाल जिस पर जमाना आहें भरता है, उसे इसकी जरा भी फिक्र नहीं होगी। भले तुम मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दो, हर टुकड़ा जो कुदरत के दिए नायाब हुनर की गवाही है, वह शिकवा भी नहीं करेगा। मगर तुम जान लो कि अजीजन जान से भले चली जाए, पर अपनी जुबान से उन पाक शफ्फाक क्रांतिकारियों का नाम नहीं लेगी। वह मेरे मुल्क को तुम्हारी घिनौनी साजिशों से आजाद करके रहेंगे। अजीजन की देशभक्ति से भरे इस बेखौफ जवाब को सुनकर अंग्रेज तिलमिला उठे। अजीजन को सबके सामने तोप के मुंह पर बांधकर उड़वा दिया गया।

४८४) तीन कसौटियां - प्राचीन यूनान में सुकरात अपने परीक्षण के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। वह बिना परीक्षण किए किसी बात को नहीं मानते थे। एक दिन उनका एक परिचित उनसे मिलने आया और बोला, मैंने आपके एक मित्र के बारे में कुछ सुना है। सुकरात ने कहा, आपके कुछ बताने से पहले मैं चाहता हूं कि हम एक छोटा सा परीक्षण कर लें। मैं इसे तीन कसौटियों का परीक्षण कहता हूं। परिचित ने पूछा- तीन कसौटियां क्या हैं? सुकरात ने कहा, ये कसौटियां बताएंगी कि आप मुझसे कैसी बात कहने जा रहे हैं। आगे उन्होंने कहा, इसमें पहली सत्य की कसौटी है। क्या आप सौ फीसदी

दावे से यह कह सकते हैं कि जो बात आप मुझे बताने जा रहे हैं वह पूर्णत: सत्य है? परिचित ने कहा, नहीं, दरअसल मैंने सुना है कि... । सुकरात ने कहा, ठीक है । इसका अर्थ यह है कि आप आश्वस्त नहीं है कि वह बात पूर्णत: सत्य है । चलिए, अब दूसरी कसौटी का प्रयोग करते हैं जिसे मैं अच्छाई की कसौटी कहता हूं । मेरे मित्र के बारे में आप जो भी बताने जा रहे हैं क्या उसमें कोई अच्छी बात है? परिचित ने कहा, नहीं, बल्कि वह तो... । सुकरात ने कहा, अच्छा, इसका मतलब यह है कि आप मुझे जो कुछ सुनानेवाले थे उसमें कोई भलाई की बात नहीं है और आप यह भी नहीं जानते कि वह सच है या झूठ । लेकिन हमें अब भी आस नहीं खोनी चाहिए, क्योंकि आखिरी यानी तीसरी कसौटी का एक परीक्षण अभी बचा हुआ है और वह है उपयोगिता की कसौटी । जो बात आप मुझे बतानेवाले थे, क्या वह मेरे किसी काम की है? परिचित ने असहज होते हुए जवाब दिया, नहीं, ऐसा तो नहीं है । सुकरात ने कहा, बस, हो गया । जो बात आप मुझे बतानेवाले थे वह न तो सत्य है, न ही अच्छी बात है और न ही वह मेरे काम की है, तो मैं उसे जानने में अपना कीमती समय क्यों नष्ट करूं?

४८५) सफलता का रहस्य - बचपन में चार्ल्स डार्विन को ग्रीक, लैटिन एवं बीजगणित में कोई रुचि नहीं थी । इससे उनके डॉक्टर पिता को बेहद चिंता रहती थी । उन्हें लगता था कि उनका छोटा बेटा चार्ल्स उनका नाम डुबो देगा । चार्ल्स स्कूल जाते तो पुस्तकों के बजाय शिकार करने, बीटल्स की दुर्लभ प्रजातियां खोजने, फूलों और धातुओं के नमूने इकट्ठा करने में जुट जाते । पक्षियों के व्यवहार का अवलोकन करने में घंटो बिताते थे, उन पर लंबे नोट लिख सकते थे, लेकिन पुस्तक के छोटे से सवाल हर करते-करते उन्हें नींद आने लगती थी । यह देखकर चार्ल्स को मेडिकल स्कूल भेज दिया गया । लेकिन वहां पशु-पक्षियों का खून देखकर वह चिल्ला पड़ते । एक दिन वहां से लौट आए । अंत में चार्ल्स का दाखिला कैम्ब्रिज में करा दिया गया । उन्होंने वनस्पति शास्त्र में रुचि ली । प्रोफेसर हेन्सलो के साथ चार्ल्स की अच्छी दोस्ती हो गई । १८३१ में वह डिग्री लेकर लौटे । कुछ दिनों बाद प्रोफेसर हेन्सलो का पत्र उन्हें मिला । उन्होंने एचएमएस बीगल जहाज पर प्रकृतिवादी के पद के लिए चार्ल्स की अनुशंसा कर दी थी । पिता की असहमति के बावजूद चार्ल्स ने इस पद को स्वीकार कर लिया । कुछ दिनों तक तो उनका मन जहाज पर बिल्कुल नहीं लगा, पर धीरे-धीरे उन्होंने वहां के रोजमर्रा के जीवन से तालमेल बैठा लिया । बीगल के ब्राजील पहुंचने पर वह पौधों और जंगली जीवन की अत्यधिक विविधता देखकर मंत्रमुग्ध हो गए । इसके बाद तो उन्होंने भ्रमण के दौरान अध्ययन में अंतहीन समय बिताना प्रारंभ कर दिया । उन्होंने क्रमविकास के सिद्धांत का प्रतिपादन किया । उनकी पुस्तक जीवजाति का उद्भव ने पूरी दुनिया में तहलका मचा दिया । इस तरह चार्ल्स डार्विन ने यह साबित कर दिया कि बच्चों को जिस कार्य में रुचि हो, उन्हें वही करने देना चाहिए । रुचि के अनुरूप कार्य करनेवाले बच्चे इतिहास रचते हैं ।

४८६) श्रेष्ठता का अहंकार - सम्राट ब्रह्मदत्त के चारों पुत्र विद्या अध्ययन कर लौटे तो खुशहाली का माहौल था । कुछ ही दिन बाद चारों राजकुमारों में श्रेष्ठता को लेकर विवाद खड़ा हो गया । पहले राजकुमार का मानना था कि उन्होंने खगोल विद्या पढ़ी है, इसलिए उनकी विद्या सर्वश्रेष्ठ है । दूसरे का तर्क था कि तारों की स्थिति और उनके स्वभाव का ज्ञान प्राप्त कर लेने से कोई सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता नहीं हो जाता, ज्ञान तो मेरा सार्थक है क्योंकि मैंने वेदांत में आचार्य किया है । तीसरे ने कहा,

वेदांत को व्यवहार में प्रयोग न किया जाए, तो वाचिक ज्ञानमात्र से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। मैंने समाजशास्त्र पढ़ा है। मेरा दावा है कि श्रेष्ठता का अधिकारी मैं ही हो सकता हूं। चौथे राजकुमार रसायनशास्त्री थे। वह बोले, बंधुओं। झगड़ो मत। इस संसार में श्रेष्ठता का मापदंड है लक्ष्मी। मैंने लोहे और तांबे को भी सोना बनानेवाली विद्या पढ़ी है। तुम सबकी विद्या खरीद लेने जितना अर्थ उपार्जन कर सकता हूं। तो फिर बोलो, मेरी विद्या श्रेष्ठ हुई या नहीं? यह देख सम्राट अत्यंत दुखी हुए। सारी स्थिति पर विचार कर उन्होंने चार महीने में चारों राजकुमारों को बारी-बारी से जंगल भेजा और उन्हें किंशुक तरु को पहचानकर आने को कहा। पहले महीने किंशुक ठूंठ पड़ा हुआ था। दूसरे महीने कोंपलें फूट चुकी थीं। तीसरे महीने उसमें पुष्प आ चुके थे और चौथे महीने फल लग गए थे। हर राजकुमार ने किंशुक की अलग-अलग पहचान बताई। तब राजपुरोहित ने उन्हें पास बुलाया और कहा, तात। किंशुक तरु में चार महीने परिवर्तन के होते हैं। तुम लोगों में से हरेक ने उसका भिन्न रूप देखा, पर यथार्थ कुछ और ही था। इसी प्रकार संसार में ज्ञान अनेक प्रकार के हैं, पर सत्य उन सबके समन्वय में है। किसी एक में नहीं। राजकुमार संतुष्ट हो गए और उन्होंने श्रेष्ठता के अहंकार का परित्याग कर दिया।

४८७) फकीरी में त्याग - आजर कैवां फारस के शाही खानदान से थे। बाद में वह पारसी धर्म के मशहूर संत बने। इनका ज्यादातर वक्त भारत में गुजरा। बिहार में योग परंपरा और ध्यान दर्शन पर आजर कैवां ने खूब काम किया। यह भी कह सकते हैं कि उनके कारण ही पारसी धर्म की एक शाखा पल्लवित हुई। इस्लाम से निकला सूफिज्म जब आजर तक पहुंचा तो उन्होंने इसका खूब विस्तार किया, साथ ही अपने पारसी धर्म को भी बचाए रखा। एक बार उनके पास साधुओं का एक झुंड आया। उस झुंड में जितने भी साधु थे, उन्होंने पूरी तरह से भौतिक दुनिया से नाता तोड़कर ईश्वर की साधना का मार्ग चुन लिया था। फिर भी उनके मन में कुछ उलझनें चल रही थीं। परेशान होकर वह आजर के सामने आकर बैठ गए। उनके चेहरों को देखकर आजर ने पूछा, भला साधुओं को क्या गम हो सकता है? उनमें से एक बूढ़ा साधु बोला, हम बहुत बड़े घरों से थे। हमारे पास जिंदगी गुजारने की सब प्रकार की सुविधाएं थीं। हमने वह सब छोड़कर इधर का रुख किया। आजर खुश हुए और बोले कि फिर फिक्र किस बात की है? साधु बोले, हमारे पास न तो कमंडल है, न माला है, न गुदड़ी है और न ही संतों वाला आसन। वह बोल ही रहे थे कि उन्हें रोकते हुए आजर कौवां खुद बोल उठे, भाई, तुम तो संसार को छोड़कर भी संसार में फंसे हुए हो। फकीरी तो हर चीज के मोह को छोड़ने में हैं न कि उन्हें पाने की ख्वाहिश में। आपका दिल अब भी दुनिया की चीजों में फंसा हुआ है। आप सभी लौट जाइए और समाज में रहकर ईश्वर को याद करते हुए भजन-पूजन कीजिए। फकीरी अभी आपके बस का नहीं है। आगे आजर ने कहा, जो भी संसार के किसी मोह में फंसा रह जाएगा, वह कभी भी फकीर नहीं हो सकता।

४८८) सेवा का अवसर - पुराने जमाने की बात है। राजा बालीक ने किसी छोटी सी बात पर नाराज होकर अपने प्रधानमंत्री भद्रजित को उनके पद से हटा दिया। उन्होंने क्रोध में भद्रजित से कहा, तुम अपने आपको बहुत श्रेष्ठ समझते थे न? अब जब तुम इधर-उधर भटकोगे, तब तुम्हें पता चलेगा कि पद का महत्व क्या होता है। भद्रजित शांति व शालीनता से राजा को प्रणाम कर दरबार से चले गए। उन्होंने पद से हटाए जाने को ईश्वर का वरदान माना और मन में

किसी तरह का द्वेष भाव नहीं रखा। उन्होंने अपना समय ईश्वर की उपासना, स्वाध्याय तथा जनसेवा में लगाना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में उनकी लोकप्रियता बढ़ने लगी। भद्रजित अधिक से अधिक समय सत्संग और सदकार्यों में लगाते। एक दिन राजा बालीक को भद्रजित की याद आई। राजा ने सोचा कि भद्रजित की हालत निश्चय ही दयनीय हो गई होगी, क्यों न चलकर देखा जाए। राजा वेश बदलकर नगर में जा पहुंचा। राजा को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि भद्रजित श्रेष्ठ लोगों से घिरे थे। भद्रजित ने वेश बदले राजा को पहचान लिया। उन्होंने खड़े होकर राजा का अभिनंदन किया और कहा, राजन्, यदि आप मुझे मेरे पद से हटाते नहीं तो मुझे लोगों की सेवा का अवसर भला कहां मिलता? यह तो मेरा सौभाग्य है कि आपने मुझै पद से हटा दिया। इससे मुझे जीवन के एक अलग अध्याय को जानने और एक नई भूमिका निभाने का अवसर मिला। मैं आपका आजीवन आभारी रहूंगा। राजा बालीक भद्रजित की विनम्रता और धैर्य को देखकर हैरान रह गए। उनसे कुछ बोलते न बना। कुछ लोग अपने मंतव्य के प्रति इतने समर्पित होते हैं कि कोई पद पा जाने या उसे गंवाने का उन पर कोई असर होता ही नहीं। भद्रजित थे तो राजा के प्रधानमंत्री, किंतु हृदय से वह एक संत थे, इसलिए सफल रहे।

४८९) हरिदास की परीक्षा - कृष्ण भक्त हरिदास थे तो मुसलमान, मगर हरि के परम भक्त थे। हिंदू देवता के प्रति उनकी भक्ति देख गौराई काजी को ईर्ष्या हुई और उन्होंने हरिदास के खिलाफ मुलकपति के कान भरे और कहा, इस काफिर को ऐसी सजा दीजिए कि ऐसी नापाक हरकतें करने की वह फिर कभी जुर्रत न करे। मुलकपति ने उसकी बात मानते हुए सेवकों को आदेश दिया, जाओ हरिदास को पकड़ लाओ और बेंत मारो। हरिदास को पकड़कर मुलकपति के पास लाया गया और सेवकों ने उन्हें बेंत से मारना चालू किया, किंतु तब भी वह हरिनाम का जप कर रहे थे। यह देख मुलकपति बोला, हरिनाम बंद करोगे तो तुम्हें माफ कर दिया जाएगा। हरिदास ने कहा, भैया। यदि तुम खुद मारना चाहते हो, तो मारते रहो, लेकिन अच्छा होता, तुम भी मेरे साथ हरि का नाम लेते। इससे मुलकपति को गुस्सा आया और उसने फिर से मारने का आदेश दिया। हरिदास पर बेंतों की मार का कोई असर नहीं हुआ। अब तो वह जोर-जोर से हरिनाम लेने लगे और उसी में लीन हो गए। आखिर उन्हें मरा हुआ जान मुलकपति ने मारना बंद करने का आदेश दिया और उन्हें गंगा नदी में फेंक दिया गया। किंतु हरिदास जीवित थे। लोगों ने उन्हें बाहर निकाला और उनके घर पहुंचा दिया। बात मुलकपति तक पहुंची कि हरिदास तो जीवित हैं, तब उसे पश्चाताप हुआ और उसने हरिदास के चरण पकड़े। तब वह बोले, अपराध आपका नहीं है। यह तो होने ही वाला था। मनुष्य अपने-अपने कर्मों का फल भोगता है, अन्य लोग तो निमित्त मात्र होते हैं। वास्तव में भगवान यह जानना चाहते थे कि मैं ढोंगी तो नहीं हूं? क्या मुझे भगवान के नाम-जप में सचमुच ही रुचि है? यह सुनते ही उपस्थित लोगों के मुंह से धन्य-धन्य शब्द निकल पड़े। मुलकपति और गौराई पर भी इसका असर पड़ा और वे उनके शिष्य बन गए।

४९०) जो डूबा सो पार - आचार्य रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद के बीच गुरु-शिष्य परंपरा का जो दर्शन था, वह बहुत कम जगहों पर देखने को मिलता है। अगर आचार्य महान गुरु थे, तो इसमें कोई दो राय नहीं कि विवेकानंद भी महान शिष्य थे। दोनों के संबंध में गौर करनेवाली बात यह थी कि परमहंस जानते थे, शिष्य को कैसे मांजा जाता है। इसके लिए

अक्सर रामकृष्ण विवेकानंद से सवाल पूछते, फिर उन्हें सही उत्तर देते। कोई उलझानेवाली समस्या बताते, जिससे निकलने का रास्ता वह उनसे पूछते और जब विवेकानंद उस सवाल में उलझ जाते तो परमहंस उनको रास्ता सुझाते। इस तरह से उन्होंने अपने शिष्य को हर प्रकार से खूब तपाया और पकाया। फिर जब वह चमका तो दुनिया ने उसकी चमक देखी। ऐसे ही एक रोज विवेकानंद से आचार्य ने पूछा, नरेंद्र, एक पल के लिए कल्पना करो कि तुम एक मक्खी हो और सामने रखे इस प्याले में अमृत भरा हुआ है। अब तुम इसके किनारे बैठकर इसे धीरे-धीरे स्पर्श करोगे या तुरंत उसमें बीच में कूद जाओगे? आचार्य के सवाल का उत्तर देते हुए विवेकानंद बोले, मैं इसे किनारे से धीरे-धीरे स्पर्श करूंगा, क्योंकि बीच में कूद जाने से जीवन का अस्तित्व ही संकट में आ जाएगा। नरेंद्र का इतना कहना था कि उसके साथी उसकी पीठ थपथपाने लगे। सब कहने लगे कि उसने समझदारी वाला उत्तर दिया, मगर रामकृष्ण परमहंस क्रोधित होकर बोल पड़े, मूर्ख, जिसके स्पर्श से तू अमरता की कल्पना करता है, उसके बीच में भी कूद कर तुझे मृत्यु का भय आता है? जिसके स्पर्श मात्र से तू अमर होने की चाहत रखता है, उसके बीच में डूबते हुए डरता है? यह बात तुम सभी लोग गांठ बांध लो, चाहे भौतिक उन्नति हो या आध्यात्मिक, जब तक उसके लिए मिटने की हद तक का संपूर्ण समर्पण नहीं होता, सफलता नहीं मिलती।

४९१) भलाई - एक आदमी एक गाँव के समीप अपनी घोड़ा गाड़ी धीरे-धीरे हाँकते हुए आसपास कोई तालाब खोज रहा था, क्योंकि उसके घोड़े बहुत ही थके और प्यासे थे। इतने में उसे दूर एक छोटी झोंपड़ी नजर आयी। आँगन में १०-१२ साल का एक लड़का बैठा दिखा। दूर से आते हुए थके-प्यासे घोड़ों को देखकर तुरन्त ही वह लड़का उठा और झोंपड़ी में जाकर पानी से भरी हुई बाल्टी लेकर आया। घोड़ागाड़ी आने से पहले ही वह सड़क पर जाकर खड़ा हो गया। घोड़ागाड़ी वाले आदमी ने उसे देखकर गाड़ी खड़ी कर दी और उस लड़के से पूछा- बेटे तुम क्या चाहते हो? लड़के ने कहा- मैं कुछ नहीं चाहता, मैं तो आपके घोड़ों को पानी पिलाने आया हूं। इतना कहकर उसने पानी की बाल्टी घोड़ों के सामने रख दी। घोड़े पानी पीकर तृप्त हो गए। घोड़े वाला बहुत खुश हुआ, क्योंकि वह अपने घोड़ों के लिए पानी की तलाश कर ही रहा था। उसने कुछ रुपये निकाले और लड़के को देने लगा, परन्तु लड़का बोला- महाशय मैं पैसे के लिए पानी नहीं लाया। मैं एक गरीब अपाहिज लड़का हूं, मेरी माँ खेत में काम करती है, जिससे हम दोनों का पेट भर जाता है। परन्तु मेरी माँ ने ही मुझसे कहा है कि जब ईश्वर ने तुझे ऐसी स्थिति में डाला है तो इसमें भी उसका कुछ अच्छा उद्देश्य होगा, क्योंकि ईश्वर जो करता है, अच्छे के लिए करता है। तू अधिक चल नहीं सकता है, तो यहीं रहकर प्यासे राहगीरों और जानवरों को पानी पिलाया कर, इससे भी ईश्वर का काम हो सकेगा। यहाँ से ८ मील तक पानी का झरना या कोई गाँव नहीं है। इसलिए अपने कुँए में से पानी निकाल कर आते-जाते मुसाफिरों को पानी पिलाया कर। इसलिए माँ का कहना मानकर मैं यह काम करता हूँ। इसे ईश्वर का काम और अपना कर्त्तव्य समझता हूं और पैसा नहीं लेता। उस आदमी को लड़के के मुख पर परोपकार का तेज दिखाई दिया। वह लड़के की दयालुता और सदाचार देखकर बहुत खुश हुआ और लड़के का आभार मानकर आगे चला गया। एक अशक्त लड़का भी नि:स्वार्थ भाव से कैसे परोपकार कर सकता है, यह बात समझ में आने पर उस

आदमी के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसने भी जीवन भर लोगों की भलाई करने का संकल्प लिया।

४९२) बीरबल की चतुराई - एक दिन बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा बीरबल जरा बताओ तो इस दुनिया में किसकी संख्या अधिक है, जो देख सकते हैं या जो अंधे हैं? बीरबल बोले इस समय तुरंत आपके इस सवाल का जवाब देना मेरे लिए संभव नहीं है लेकिन मेरा विश्वास है कि देखने वालों की तुलना में, अंधों की संख्या अधिक होगी। बादशाह ने कहा- तुम्हें अपनी बात सिद्ध करके दिखानी होगी। अगले दिन बीरबल बीच बाजार में एक बिना बुनी हुई चारपाई लेकर बैठ गए और उसे बुनना शुरू कर दिया, उसके अलग-बगल दो आदमी कागज-कलम लेकर बैठे हुए थे।

थोड़ी ही देर में वहां भीड़ इकट्ठी हो गयी, यह देखने के लिए कि यहां हो क्या रहा है। वहां मौजूद हर व्यक्ति ने बीरबल से एक ही सवाल पूछा- बीरबल तुम क्या कर रहे हो, बीरबल के अगल-बगल बैठे दोनों आदमी ऐसा सवाल करनेवालों का नाम पूछ-पूछ कर लिखते जा रहे थे, जब बादशाह के कानों तक यह बात पहुंची कि बीच बाजार बीरबल चारपाई बुन रहे हैं, तो वो भी वहां जा पहुंचे और वही सवाल किया- यह तुम क्या कर रहे हो? कोई जवाब दिये बिना बीरबल ने अपने बगल में बैठे एक आदमी से बादशाह अकबर का भी नाम लिख लेने को कहा। तभी बादशाह ने आदमी के हाथ में थमा कागज का पुलिंदा लिया उस पर लिखा था- अंधे लोगों की सूची बादशाह ने बीरबल से पूछा? इसमें मेरा नाम क्यों लिखा है? बीरबल ने कहा जहांपनाह, आपने भी देखा कि मैं चारपाई बुन रहा हूं। फिर भी आपने सवाल पूछा कि- मैं क्या कर रहा हूं। बादशाह ने देखा उन लोगों की सूची में एक भी नाम नहीं था। जो देख सकते थे, लेकिन अंधे लोगों की सूची बहुत बड़ी थी। बीरबल ने कहा- हुजूर, अब तो आप मेरी बात से सहमत हो गये होंगे की दुनिया में अंधों की तादाद ज्यादा है। बीरबल की इस चतुराई पर बादशाह मंद-मंद मुस्करा दिये।

४९३) दूसरों के हित के लिए किया गया कार्य अधिक पुण्यदायी - एक अमीर विभिन्न मंदिरों में जनकल्याणकारी कार्यों के लिए धन देता था। विभिन्न उत्सवों व त्योहारों पर भी वह दिल खोलकर खर्च करता। शहर के लगभग सभी मंदिर उसके दिए गए दान से उपकृत थे, इसीलिए लोग उसे काफी इज्जत देते थे।

उस संपन्न व्यक्ति ने एक नियम बना रखा था। वो यह कि वह प्रतिदिन मंदिर में शुद्ध घी का दीपक जलाता था। दूसरी ओर एक निर्धन व्यक्ति था, जो नित्य तेल का दीपक जलाकर एक अंधेरी गली में रख देता था, जिससे लोगों को आने-जाने में असुविधा न हो।

संयोग से दोनों की मृत्यु एक ही दिन हुई। दोनों यमराज के पास साथ-साथ पहुंचे। यमराज ने दोनों से उनके द्वारा किए गए कार्यों का लेखा-जोखा पूछा। सारी बात सुनकर यमराज ने धनिक को निम्न श्रेणी और निर्धन को उच्च श्रेणी की सुख-सुविधाएं दों।

संपन्न व्यक्ति ने क्रोधित होकर पूछा- यह भेदभाव क्यों? मैंने अपनी पूरी जिंदगी भगवान के मंदिर में शुद्ध घी का दीपक जलाया और इसने तेल का दीपक रखा। वह भी अंधेरी गली में, न कि भगवान के समक्ष? तब यमराज ने कहा- पुण्य की महत्ता मूल्य के आधार पर नहीं, कर्म की उपयोगिता के आधार पर होती है। मंदिर तो पहले से ही प्रकाशयुक्त था। इस निर्धन व्यक्ति ने ऐसे स्थान पर दीपक जला कर रखा, जिसका लाभ अंधेरे में जानेवाले लोगों को मिला।

उपयोगिता इसके दीपक की अधिक रही। तुमने तो केवल अपना परलोक सुधारने के स्वार्थ से दीपक जलाया था। कहने का अर्थ है कि ईश्वर की आराधना में धन प्रदर्शन का कोई स्थान नहीं है, बल्कि दूसरों के हित के लिए कार्य करना अधिक पुण्यदायी होता है और ऐसा करनेवाला ही सही मायनों में पुण्यात्मा होता है। ईश्वर ऐसे लोगों से ज्यादा प्रसन्न होता है, क्योंकि स्व से पर सदा वंदनीय होता है।

४९४) मगध की नई राजधानी श्मशान भूमि पर बनी - ईसा पूर्व भारत में मगध के सम्राट बिंबिसार की राजधानी कुशागपुर में थी। एक समय नगरी पर एक विचित्र विपत्ति टूट पड़ी। किसी न किसी के घर में रोज ही आग लग जाती थी। नगरवासियों के सावधान रहने पर भी कहीं न कहीं आग लगती रहती थी। बिंबिसार ने बहुत जांच-पड़ताल करवाई, लेकिन आग लगने के कारणों का पता नहीं चला।

बिंबिसार ने सोचा कि नगरवासी यदि सतर्क रहेंगे और अपने घरों की रक्षा करेंगे, तो आग लगने की घटनाओं पर अंकुश लग सकेगा। उन्होंने सारे नगर में घोषणा करा दी कि जिस व्यक्ति के घर में आग लगेगी, उसे नगर के बाहर श्मशान में रहना पड़ेगा। संयोगवश एक दिन राजभवन में ही आग लग गई। बिंबिसार उसी दिन राजभवन छोड़कर श्मशान में रहने की तैयारी करने लगे। मंत्रियों एवं परामर्शदाताओं ने उन्हें मनाने का प्रयास किया और राजभवन न त्यागने के लिए कहा, लेकिन वे नहीं माने।

बिबिसार ने सभासदों से कहा- मेरा आदेश प्रत्येक कुशागपुर वासी के लिए था। इस नगर का शासक और निवासी दोनों होने के कारण मेरा प्रत्येक आदेश और हर नियम मुझ पर भी लागू होता है। मैं अपने बनाए किसी भी नियम का उल्लंघन नहीं कर सकता। यदि राजा ही नियमों और मर्यादाओं का पालन नहीं करेगा, तो प्रजा अनुशासन का पालन क्यों करेगी?

इस प्रकार सम्राट बिंबिसार श्मशान में रहने लगे। उनकी अनुशासनप्रियता और कर्त्तव्यपरायणता ने प्रजा के हृदय में अपार श्रद्धा पैदा कर दी, परंतु मगध के शत्रुओं को ऐसे में मगध पर आक्रमण करने का अवसर मिल गया। लेकिन अपने प्रिय राजा और राज्य की रक्षा के लिए सभी नागरिक राजधानी छोड़ कर श्मशान भूमि में रहने लगे। मगध के शत्रु समझ गए कि ऐसे गुणी राजा और उसकी प्रजा को परास्त करना संभव नहीं है। वे पीछे हट गए। बाद में उस श्मशान भूमि पर ही मगध की नई राजधानी बन गई, जो प्राचीन काल में राजगृह के नाम से विख्यात थी।

४९५) प्यार से बोले गए दो शब्द - विशाल एक लड़ाकू विमान के पायलट थे। एयर फोर्स में रहते हुए उन्होंने अवार्ड जीते। एक बार एक मिशन के दौरान उनके फाइटर प्लेन पर एक मिसाइल लगी। परन्तु वह ठीक समय पर पैराशूट की सहायता से सुरक्षित बाहर आ गए। घटना के ५ साल बाद वे अपने परिवार के साथ एक रेस्टोरेंट में बैठे थे। समीप की टेबल से एक आदमी उनके पास आया और पूछा- आप कैप्टन विशाल है न? आपका फाइटर प्लेन मिसाइल का निशाना बना था?

विशाल ने आश्चर्य से कहा- हाँ। पर आप कैसे जानते हैं? उस आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा- आपको याद नहीं होगा, परन्तु उस दिन मैंने ही आपका पैराशूट पैक किया था। सुनकर विशाल अवाक रह गए और सोचने लगे कि यदि उस दिन उनके पैराशूट ने काम नहीं किया होता तो क्या आज वे यहाँ होते? विशाल उस रात सोच रहे थे कि अवश्य कई बार उस आदमी से मुलाकात हुई होगी, पर मैंने कभी इस बारे में नहीं सोचा, उसे धन्यवाद नहीं दिया। क्या सिर्फ इसलिए कि वह

सिर्फ एक साधारण सेफ्टी वर्कर था? हम सभी को भी अपने जीवन में कभी न कभी एक पैराशूट की जरूरत हुई है। हम आज सुरक्षित हैं? क्या हमने उन्हें जानने की कोशिश की, जिन्होंने हमारा पैराशूट पैक किया? अपना पैराशूट पैक करने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया? हमें जीवन में बहुत सारे पैराशूट की जरूरत पड़ती है, जब हमारा प्लेन गिरनेवाला होता है। हर आदमी के साथ ऐसा कोई है, जो उसे वह सपोर्ट देता है जिससे हमारा जीवन सहजता से चलता है। जीवन में कभी कठिनाइयाँ आने पर, कोई समस्या में उलझने पर या जीवन को सहजता के साथ सुचारू रूप से चलाने के लिए किसी न किसी रूप में हमें पैराशूट रूपी सहारे की जरूरत होती है।

४९६) दानव और तीन बकरे - जंगल के पास एक गांव था। गांव के किनारे से एक नदी बहती थी। नदी पर एक पुल था। पुल के नीचे एक दानव रहता था। जंगल में तीन बकरे चर रहे थे। सबसे बड़े बकरे ने सबसे छोटे बकरे से कहा- नदी के पार गांव के खेतों में खूब फल-सब्जी उग हुए हैं। उनकी महक यहां तक आ रही हैं। उन्हें खाने का मन कर रहा है, लेकिन हम एक-एक कर खाने जाएंगे। सभी एक साथ गए, तो रखवाले हमें देख सकते हैं, जा, सबसे पहले पुल पर से नदी पार करके तू वहां जा। फिर मंझला जाएगा और सबसे बाद मैं आऊंगा।

छोटा बकरा पुल पार करने लगा। जब वह पुल के बीच तक पहुंच गया, तो दानव पुल के ऊपर चढ़ आया और अपने बड़े-बड़े खांग और नाखून दिखा कर नन्हे बकरे को डराते हुए बोला- मुझे बड़ी भूख लगी है। मैं तुझे खा जाऊंगा।

डर से कांपते हुए नन्हा बकरा बोला- मुझे मत खाओं दानव। मैं बहुत छोटा हूं। मुझसे तुम्हारी भूख नहीं मिटेगी। मेरे दो बड़े दोस्त हैं। वे अभी इसी ओर आनेवाले हैं। उन्हें खा लेना।

दानव बड़े बकरों को खाने के लालच में आ गया। बोला- अच्छा, तू जा। मैं बड़े बकरों का इंतजार करूंगा।

नन्हा बकरा सिर पर पांव रखकर वहां से भागा और गांव के खेत में पहुंच कर ताजा फल-सब्जी खाने लगा। सबसे बड़े बकरे ने तब मंझले बकरे से कहा- अब तू पुल पर से गांव की ओर जा।

मंझला बकरा पुल पार करने लगा। जब वह पुल के बीच पहुंचा, तो दानव ऊपर चढ़ आया और अपने खांग और नाखून से उसे डराते हुए बोला- मुझे बड़ी भूख लगी है। मैं तुझे खा जाऊंगा।

मंझले बकरे ने कहा- मुझे जाने दो दानव। मैं अभी छोटा ही हूं। मुझसे तुम्हारी भूख नहीं मिटेगी। अभी मेरा एक दोस्त आनेवाला है। वह मुझसे बहुत बड़ा है। उसे खा लेना। दानव बोला- अच्छा तू जा। मंझला बकरा वहां से भाग कर नन्हे बकरे के पास पहुंच गया। अब बड़ा बकरा पुल पार करने लगा। वह खूब मोटा और तगड़ा था। उसके चलने से पुल चरमरा उठा। उसके सींग लंबे और खूब नुकीले थे। जब वह पुल के बीच पहुंचा, तो दानव एक बार फिर पुल के ऊपर चढ़ आया और अपने खांग और नाखून से उसे डराते हुए बोला- मुझे बड़ी भूख लगी हैं। मैं तुझे अभी खा जाऊंगा। पर बड़ा बकरा जरा भी नहीं डरा। उसने अपने अगले पांवों से जमीन कुरेदते हुए हुंकार भरी और सिर नीचा करके दानव के पेट पर अपने सींगों से जोर से प्रहार किया। दानव दूर नदी में जा गिरा।

अब बड़ा बकरा इत्मीनान से पुल पार कर गया और अपने दोनों साथियों के पास पहुंच कर मनपसंद भोजन करने लगा।

४९७) अष्टावक्र का जवाब - मिथिला नरेश जनक की मानवीयता एवं सहृदयता की चर्चाएं दूर-दूर तक होती थीं।

एक बार वह अपने दरबार में विद्वानों और अपने मंत्रियों के साथ मंत्रणा कर रहे थे, तभी वहां ऋषि अष्टावक्र पहुंच गए। उनका चेहरा तो कुरूप था ही, नाम के अनुरूप उनके शरीर के अंग भी टेढ़े-मेढ़े थे। वह किसी तरह अपने शरीर को संभालते हुए सभा में आए। उनकी कुरूप देह को देखकर सभा में बैठे विद्वानों ने हंसना शुरू कर दिया। उन्हें हंसता देख अष्टावक्र भी जोरों से हंसने लगे। महाराज जनक इस असामान्य स्थिति में सिंहासन से उठकर अष्टावक्र के पास आए और उन्हें प्रणाम करते हुए बोले- महाराज। आपके हंसने का कारण विदित नहीं हुआ, कृपया समाधान करें? अष्टावक्र बोले, क्या आप इन विद्वज्जनों के हंसने का खुलासा करेंगे? इतने में एक सभासद खड़ा हुआ और बोला, हमें तेरी व्यंग्यात्मक काया को देखकर हंसी आ रही है। अष्टावक्र बोले, महाराज मैंने सुना था कि आपके दरबार में विद्वान, समझदार और संवेदनशील लोग हैं, इंसान की कद्र करने वाले पारखी लोग आपकी मंत्रिपरिषद के सदस्य हैं, परंतु यहां आकर देखा तो मुझे बहुत कष्ट हुआ कि आपने तो अज्ञानियों की जमात इकट्ठा कर रखी है। यही देखकर मुझे हंसी आ गई। राजा जनक बोले, महाराज। आप यह क्या कह रहे हैं। आपको इस तरह विद्वानों एवं मंत्रिपरिषद के काबिल सदस्यों का अपमान नहीं करना चाहिए। अष्टावक्र बोले, महाराज। मैं ठीक ही तो कह रहा हूं। इन लोगों को मैं और क्या कहूं जो मेरे शरीर की बनावट को देखकर हंस रहे हैं, मेरी चेतना को परखने की कोशिश भी नहीं कर रहे। इनसे पूछकर मुझे इतना भर बता दें कि ये घड़े पर हंस रहे हैं या कुम्हार पर? यह सुनते ही राजा जनक सहित सभी विद्वानों को अपनी भूल का अहसास हो गया।

४९८) सादगी की बात - चाणक्य राजा चंद्रगुप्त मौर्य के महामंत्री थे। एक बार यूनान का राजदूत भारत आया हुआ था। उसने चाणक्य की बहुत प्रशंसा सुन रखी थी। वह चाणक्य का रहन-सहन देखना चाहता था। वह राजदूत चाणक्य से मिलने उनके निवास स्थान गंगा तट की ओर चल पड़ा। वहां जाकर देखा कि गंगातट पर एक ऊंचा लंबा दृढ़ व्यक्तित्व का धनी नहा रहा है। राजदूत ने उस व्यक्ति से पूछा कि क्या मुझे बता सकते हो कि चाणक्य कहां रहता है। उसने जवाब दिया सामने झोपड़ी में। राजदूत को विश्वास नहीं हुआ कि एक राज्य का महामंत्री एक झोपड़ी में रह सकता है। वह झोपड़ी के द्वार पर पहुंचा तो देखा कि भीतर कोई नहीं है। यह सब देखकर लगा कि किनारे पर मिले व्यक्ति ने उसके साथ मजाक किया है। वह मुड़ने लगा तो वही व्यक्ति सामने खड़ा था। उसे देखकर राजदूत ने पूछा- तुमने तो कहा था कि महामंत्री चाणक्य यहां रहते हैं, लेकिन यहां तो कोई नहीं है। वह व्यक्ति बोला- आपका स्वागत है। मैं ही चाणक्य हूं। अब राजदूत के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसे लगा कि सामने खड़ा व्यक्ति अवश्य ही मजाक कर रहा है। उसने कहा- मौर्य राज्य का महामंत्री झोपड़ी में? यह कैसे संभव है? चाणक्य ने जवाब दिया कि जब महामंत्री सुख और वैभव से लबालब भरे महलों में रहने लग जाएंगे तो फिर जनता का दुख दर्द कैसे जाना जाएगा? मैं झोपड़ी में रहकर ही जनता के दुख-सुख में भागी हो सकता हूं। शासन की बागडोर संभालनेवाले जिम्मेदार लोग जब सुख-सुविधाओं का भोग करते हैं, तो उनका सारा ध्यान अपने ही ऐशो-आराम पर केंद्रित हो जाता है और वे जनता के साथ न्याय नहीं कर पाते। ऐसे राज्य में अराजकता फैलने लगती है। राजदूत पर न केवल चाणक्य की सादगी का असर हुआ बल्कि उनकी बातों ने उसे झकझोर दिया।

४९९) शैतान लड़का और आम का पेड़ - परवेज भाई मलिहाबाद के जाने-माने लोगों में थे। उनके पास आम के

कई बाग थे। वह हर पेड़ से प्रेम करते थे। इस बार भी आम बहुत अच्छे आए थे। पूरा बाग आम की खूशबू से महक रहा था। आम को पेटियों में भरकर बाजार ले जाने का समय आ गया था। वह अपने कुछ सहयोगियों के साथ बाग का जायजा लेने निकले ही थे कि एक पेड़ पर उन्हें एक शैतान लड़का आम तोड़ते हुए दिखा। उसने आम खाने के लिए आसपास की कई शाखाएं तोड़ दी थीं।

पर लड़के के चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। वह उतनी ही बेफिक्री से आम तोड़ता और खाता रहा। परवेज भाई ने नीचे से उसे काफी आवाजें लगाई और चेतावनी भी दी। पर लड़के पर कोई फर्क नहीं पड़ा। उल्टे वह परवेज भाई से बोला, यह जमीन जरूर आपकी होगी, पर यह संसार और प्रकृति आपकी नहीं है। आपको मुझे रोकने का कोई हक नहीं है। परवेज भाई भौचक्के रह गए। वह सोचने लगे, क्या मैं इतना बुरा हूं? क्या मैं प्रकृति के नियमों को तोड़ रहा हूं? थोड़ी देर बाद वह फिर लौटे तो देखा कि वह लड़का अब भी मजे से आम खा रहा है। उन्होंने जोर से पेड़ को हिलाया। तो लड़का जमीन पर गिरा। फिर उन्होंने वहीं पड़ी एक लकड़ी का मोटा डंडा उठाया और लड़के को पिटाई शुरू कर दी। लड़का बोला।

आपको शर्म नहीं आती एक बेसहारा लड़के को मारते हुए? परवेज भाई बोले। मैं भी प्रकृति का हिस्सा हूं। मेरे हाथ में जो लक़डी है, यह भी और तुम भी प्रकृति का हिस्सा हो। मैं तो बस वही कर रहा हूं, जो प्रकृति के प्रति मेरा कर्त्तव्य है। लड़के ने कहा, मुझसे गलती हो गई, माफ कर दीजिए। परवेज भाई बोले, तुमने सही कहा कि प्रकृति हम सबके लिए समान है। पर इसका मतलब यह नहीं कि हम इसका गलत फायदा उठाने लगें। तुम्हारी हरकत से बाग को क्षति पहुंच सकती हैं। प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने का हमें कोई हक नहीं।

५००) मेहनत की कीमत - महान चित्रकार पाब्लो पिकासो कहीं जा रहे थे। उनकी पेंटिंग की बहुत बड़ी प्रशंसक एक महिला उसी समय उनसे पेंटिंग बनाने का आग्रह करने लगी। पिकासो उस समय खाली हाथ थे। उन्होंने बाद में पेंटिंग बनाने की बात कहकर महिला को टालना चाहा। लेकिन वह जिद पर अड़ गई। पिकासो उसे निराश नहीं करना चाहते थे। उन्होंने अपनी जेब से कागज का टुकड़ा निकाला और उस पर पेन से कुछ बनाने लगे। दस सेकंड के बाद महिला को कागज थमाते हुए कहा, यह लो मिलियन डॉलर की पेंटिंग। महिला को लगा शायद पिकासो मजाक कर रहे हैं। मात्र दस मिनट में बनाई हुई पेंटिंग मिलियन डॉलर की कैसे हो सकती है? लेकिन महिला ने इसका जिक्र नहीं किया और पिकासो को धन्यवाद देकर वह अपने घर लौट आई। वह चैन से बैठी नहीं। दूसरे दिन महिला उस पेंटिंग की कीमत आंकने के लिए बाजार गई। पेंटिंग की पारखियों से महिला ने उसकी कीमत पूछी तो वह दंग रह गई। वास्तव में वह मिलियन डॉलर की पेंटिंग थी। अब महिला से रहा नहीं गया और वह सीधे पिकासो के पास पहुंची। महिला ने कहा, सर, मैंने आपकी बनाई हुई पेंटिंग की कीमत पता की और वह सच में मिलियन डॉलर की निकली। कृपया, आप मुझे भी पेंटिंग बनाना सिखा दीजिये, ताकि मैं भी दस सेकंड में मिलियन डॉलर की पेंटिंग बना सकूं। पिकासो मुस्कराए और बोले, जो पेंटिंग मैंने दस सेकंड में बनाई है, उसके पीछे तीस साल की कड़ी मेहनत छिपी हुई है। अपने जीवन के तीस साल मैंने अपनी कला को सीखने और निखारने में दिए है। तब कहीं जाकर दस सेकंड में वह पेंटिंग बना पाया हूं। तुम भी सीखने में समय लगाओ, जरूर सीख जाओगी? महिला लगन और मेहनत की कीमत समझ चुकी थी। वह पिकासो को फटी आंखों से देखती रह गई।

५०१) शहद की हांडी - तुर्की के राष्ट्रपति कमाल पाशा का जन्मदिन मनाया जा रहा था। सैकड़ों लोग अपने राष्ट्रपति को बधाइयां देने उपहार लेकर पहुंच रहे थे और मंगल कामना कर रहे थे। इस अवसर पर एक वृद्ध ने भी राष्ट्रपति भवन में प्रवेश करना चाहा तो पहरेदारों ने उसे रोक दिया वह वृद्ध बोला, मैं इस शुभ अवसर पर अपने प्रिय राष्ट्रपति को शुभकामनाएं देने के लिए अपने घर से पैदल चलकर आ रहा हूं। एक क्षण के लिए मुझे भी उनसे मिलने की अनुमति दे दीजिए। राष्ट्रपति का अंगरक्षक बोला, देखो भाई, अब तो उत्सव भी समाप्ति की ओर हैं। सारे लोग अपनी अपनी कारों की ओर बढ़ रहे हैं। वृद्ध बोला, मैं गरीब हूं, मेरे पास कार नहीं है। यदि होती तो मैं पहले ही आ जाता और तुम भी मेरा रास्ता रोकने के बजाय अंदर जाने देते। राष्ट्रपति कमाल पाशा खिड़की के पास उनकी बातें सुन रहे थे। उन्होंने अपने अंरक्षक को बुलाया और कहा, उस वृद्ध को अंदर भेज दो। राष्ट्रपति को देखकर वह वृद्ध गदगद् हो गया और बोला, आपको जन्मदिन मुबारक। कमाल पाशा ने वृद्ध का हाथ थाम लिया और कहा, आप जैसे वृद्धजनों के आशीर्वाद से हम कुशल-मंगल रहते हैं। वृद्ध ने उसी समय पुलकित होकर मिट्टी की एक हड्डियों को आगे बढ़ाकर कहा, इस अवसर के लिए मेरे पास शहद था, वही भेंट करने को लेकर आया हूं। कमाल पाशा ने अपनी उंगलियां शहद में डुबोकर बाहर निकाली और उसका स्वाद चखा और वृद्ध से कहा, बहुत ही मधुर है। मैं आपकी मंगल कामना स्वीकार करता हूं और आमंत्रित करता हूं आप हमारे भोज में आप भी शामिल हो। वृद्ध राष्ट्रपति का निश्छल प्रेम देखकर अभिभूत हो गया। उसने कहा, मुझे लगा कि केवल जनता ही अपने राष्ट्रपति से प्रेम नहीं करती, बल्कि राष्ट्रपति के हृदय में भी अपनी जनता के प्रति अपार प्रेम है, जो शहद से भी अधिक मिठास लिए हुए है।

५०२) गुरुभक्ति का फल - ऋषि आयोद धौम्य के दूसरे शिष्य का नाम उपमन्यु था। आचार्य ने उसको गाय चराने का काम सौंपा। वह गाय चराने लगा। एक दिन ऋषि आयोद धौम्य ने उपमन्यु से पूछा कि तुम हट्टे-कट्टे कैसे लग रहे हो? उपमन्यु ने कहा कि मैं भिक्षाटन कर पेट भर लेता हूं। तब ऋषि ने कहा कि तुम्हें भिक्षा मेरे पास लाना चाहिए। अब उपमन्यु भिक्षा से प्राप्त अन्न ऋषि को देते, ऋषि उसे रख लेते। कुछ दिनों पश्चात गुरु ने उपमन्यु से पूछा, भिक्षा के बगैर भी तुम्हारी सेहत बनी हुई है, कैसे? उपमन्यु ने गाय का दूध पीने की बात बताई। गुरु ने कहा, दूध पर बछड़ों का हक होता है। कुछ दिन बाद फिर आचार्य ने पूछा अब भी तुम्हारी सेहत कैसे बेहतर है? उपमन्यु ने कहा कि दूध पीने के बाद बछड़े जो फेन उगलते हैं उसका सेवन करता हूं। आचार्य ने इसके लिए भी मना कर दिया। उसके बाद उपमन्यु ने भूख से विवश होकर आक के जहरीले पत्ते खा लिए, जिससे वह अंधा होकर एक कुएं में गिर गया। उसे खोजते हुए आचार्य अन्य शिष्यों के साथ कुएं के पास पहुंचे तो उपमन्यु मिला। आचार्य ने उसको देवताओं के चिकित्सक अश्विनी कुमार की स्तुति की सलाह दी। उपमन्यु ने अश्विनी कुमार की स्तुति की। अश्विनी कुमार ने प्रकट होकर उपमन्यु को एक फल दिया, लेकिन उपमन्यु ने कहा, मैं आचार्य की अनुमति के बगैर यह फल नहीं खा सकता। अश्विनी कुमार बोले, आचार्य के आदेशों ने ही तो तुम्हारी यह दशा की है। फिर भी तुम आचार्य की अनुमति के पीछे पड़े हो? उपमन्यु ने विचलित हुए बिना कहा, आचार्य की आज्ञा मेरे लिए सर्वोपरि है। तभी दिव्य वाणी सुनाई पड़ी, बेटा, तुम्हारी परीक्षा पूर्ण हुई। तुमने अपनी पात्रता साबित कर दी। तुम मेरी सभी विद्या के अधिकारी हो। उपमन्यु ने नजरें उठाईं तो देखा सामने आचार्य खड़े मुस्करा रहे थे।

५०३) विकी, पिता और नया घर - विकी की जिंदगी में सब कुछ था, पर परिवार के नाम पर सिर्फ उसके पिता थे। पर विकी की कभी अपने पिता से नहीं बनी। उसके पिता एक ऑटो ड्राइवर थे। उन्होंने बड़ी मेहनत से विकी को बड़ा किया। विकी की वकालत चल जाने के बाद उन्होंने ड्राइवरी छोड़ दी और घर की देखभाल करने लगे। पर फिर विकी को उनसे दिक्कत होने लगी। विकी ने फैसला किया कि वह अपने पिता के साथ और नहीं रह सकता। उसने एक अलग घर खरीद लिया। एक दिन विकी अपने एक दोस्त के घर खाने पर गया। वहां दोस्त के पिता भी मिले। उसके पिता ने विकी से पूछा, तुम्हारे पिताजी नहीं आए? विकी ने उन्हें सारी बात बताई और कहा, पंद्रह दिन बाद मैं अपने नए घर में चला जाऊंगा और सारी परेशानियों का अंत हो जाएगा। दोस्त के पिता बोले, बेटा जरूर जाना। पर वादा करो कि जाने से पहले एक हफ्ता तुम सिर्फ उनके साथ रहोगे। बिना उन्हें दुखी किए। विकी ने सोचा, वैसे भी उसे कुछ दिन छुट्टी लेना ही है, कहने को तो उनके साथ ही रहूंगा। लिहाजा विकी ने उनसे वायदा कर लिया। अगले दिन से विकी छुट्टी लेकर घर पर रहने लगा और सामान की शिफ्टिंग की तैयारी करने लगा। पहले दिन उसने देखा कि पिताजी कमरे में बैठे किताब पढ़ रहे थे। दूसरे दिन विकी पिता से बात करने गया, तो उसका ध्यान उनकी झुर्रियों पर पड़ा। पिता से बातचीत के बाद विकी को एहसास हुआ कि वर्षों से वह पिताजी को कहीं बाहर नहीं ले गया। मां के देहांत के बाद पिताजी किसी रिश्तेदार के घर भी नहीं गए।

उसे ग्लानि होने लगी कि अपने काम में व्यस्त रहने के कारण वह पिता का ध्यान ही नहीं रख पाया। उसने तय कर लिया कि वह पिताजी को अपने नए घर में ले जाएगा। वह तुरंत पिता को इस बारे में बताने और उनसे माफी मांगने उनके कमरे में पहुंचा। पर उसने देखा कि उसके पिता अपनी जिंदगी की सबसे सुखद और कभी न टूटनेवाली नींद में सो चुके थे। अपनों से बेरुखी इतनी भी नहीं होनी चाहिए कि पछताने में देर हो जाए।

५०४) खिल उठे फूल - मातंग ऋषि के आश्रम में ऋषि-मुनि और विद्यार्थी रहते थे। एक बार चातुर्मास के समय आश्रम में ईंधन समाप्त होनेवाला था। वर्षा होने से पहले सूखी लकड़ियां लाने की जरूरत थी। आलस्यवश विद्यार्थी लकड़ी लेने वन में नहीं जा रहे थे। विद्यार्थियों की उदासीनता देखकर स्वयं वृद्ध मातंग ऋषि ने अपने कंधे पर कुल्हाड़ी रखी और लकड़ियां काटने जंगल की ओर चल पड़े। गुरु को जाते देखा तो विद्यार्थी भी उनके पीछे चले। मातंग ऋषि ने सूखी लकड़ियां काटीं और उन्हें बांधकर अपने कंधे पर रख आश्रम की ओर लौटने लगे। मातंग ऋषि आगे चल रहे थे और विद्यार्थी उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। अचानक एक शिष्य ने देखा कि आचार्य के शरीर से पसीने की बूंदें टपक रही हैं। लेकिन आश्चर्य तो यह था कि जहां-जहां आचार्य के पसीने की बूंदें गिरीं, वहां-वहां सुंदर फूल खिल उठे। वहीं फूल बढ़ते-बढ़ते सारे वन में फैल गए। उस श्रम का प्रभाव ऐसा रहा कि सदियों तक वे फूल कुम्हलाएं नहीं हैं और चारों ओर अपनी मधुर सुगंध फैलाते रहे। श्रम एवं पवित्रता से जो अपना जीवन महकाते हैं, उनकी महक सदियों तक कायम रहती है।

५०५) खुशहाली का रास्ता - एक बार हकीम लुकमान से उनके बेटे ने पूछा, अगर मालिक ने फरमाया कि कोई चीज मांग, तो मैं क्या मांगू? लुकमान ने जवाब दिया, परमार्थ का धन। बेटे ने फिर कहा, दूसरी चीज मांगनी हो तो?

लुकमान ने कहा, पसीने की कमाई मांगना। बेटे ने फिर पूछा, तीसरी चीज? जवाब मिला, उदारता। चौथी चीज, शर्म। पांचवी चीज, अच्छा स्वभाव। बेटे ने फिर पूछा, और कुछ मांगने के लिए कहें तो? लुकमान ने उत्तर दिया, बेटा, जिसको ये पांच चीजें यानी परमार्थ का धन, कौड़ी, उदारता, शर्म और अच्छा स्वभाव मिल गया हो, उसके लिए मांगने के लिए क्या बचता है। यही खुशहाली का रास्ता है और इस रास्ते पर जाकर दुनिया का हर व्यक्ति खुशी से अपनी जिन्दगी गुजार सकता है।

५०६) धूर्त की पहचान - बात मुगल काल की है। उस समय अकबर का शासन था। अकबर के मंत्री अब्दुल रहीम खानखाना थे। एक दिन एक व्यक्ति ने आकर रहीम के द्वारपाल से कहा, मैं बहुत सिद्ध रसायनी हूं, लोहे से सोना बनाना आता है मुझे और इस बारे में मंत्री से कुछ बातें करना चाहता हूं। द्वारपाल ने आकर रहीम को यह संदेश दिया तो रहीम ने उसे बाहर निकाल देने का आदेश दिया। रहीम के एक मित्र ने उनसे कहा, मिल लेने में क्या हर्ज है, हो सकता है वह सचमुच कोई सिद्ध पुरुष हो। रहीम हंसकर बोले, अगर वह वाकई ऐसी कोई कला जानता, तो इस समय मारा-मारा न फिरता और न ही मेरे पास आता। वह तो मेरे जैसे हजारों आदमियों को अपने वश में रखने की क्षमता प्राप्त कर चुका होता। वह एक धूर्त है और ऐसों से दूर रहना ही बेहतर है।

५०७) चमक - गर्मी का मौसम खत्म होने को था। आंधी-बारिश कभी भी आ सकती थी। रीमा को चिंता थी अपने घर की छत साफ करवाने की। पिछले साल नालियों में कचरा फंसने से पूरी छत पानी से भर गई थी और सीढ़ियों के रास्ते पानी घर में घुस आया था। बड़ी विकट समस्या खड़ी हो गई थी, घर साफ करते हुए कमर के दर्द को याद करके ही रीमा सिहर गई। सफाई वाली पहले से बीमार चल रही थी। नौकर हरि भी अकेला करने में असमर्थ था। अब करे तो क्या करे। उसने काफी समझा-बुझाकर, अनुनय-विनय कर, अधिक पैसों का लालच देकर माली को तैयार किया इस काम के लिए। अगले दिन सुबह-सुबह माली आ गया। उसने नौकर हरि को भी साथ लगा दिया उसकी मदद को। दोनों ने मिलकर थोड़ी-ही देर में छत साफ कर दी। अब रह गया तो एक पुराना बड़ा-सा टब, जिसमें कुछ दिनों पूर्व कराए गए मरम्मत के काम में से बची रेत रखी थी। इसे भी खाली कर दो। रेत कट्टे में भरकर, टब नीचे आंगन में ले जाकर रख दो। रीमा ने कहा। अब टैम ना है मैडम जी, मुझे और काम करने भी जाना है, पहले ही बहुत देर हो गई है, फिर कभी आकर कर दूंगा। माली ने असमर्थता जता दी। अरे, जरा सी देर लगेगी, निपटा दे। अब ना, बहुत टैम लग जाएगा, फिर कर दूंगा। माली नहीं माना। न चाहते हुए भी रीमा को माली की बात माननी पड़ी। वह काम निपटाकर नीचे उतर आया और अपनी साइकिल उठाकर चलने को हुआ, तभी रीमा ने आवाज लगाई, अरे सुन, अपने पैसे तो लेता जा, रीमा ने एक सौ का नोट उसके हाथ पर रखा, कम तो नहीं हैं न। माली ने नोट झट से जेब में रखा और साइकिल फिर से स्टैंड पर चढ़ा दी।

५०८) परमात्मा का पता हो जाएगा पहले अपना पता तो कर लें - स्वामी रामतीर्थ विदेश यात्रा से लौटे। टिहरी गढ़वाल के राजा उनके बड़े भक्त थे। उन्होंने स्वामी रामतीर्थ से अनुरोध किया, कोई ऐसा मार्ग बताएं, जिससे मुझे परमात्मा के साक्षात दर्शन हो जाएं।

रामतीर्थ ने कहा- आपको परमात्मा के दर्शन करा दूंगा। आप बस अपना नाम और पता दे दें ताकि मैं वह परमात्मा

तक पहुंचा दूं। राजा ने अपना नाम और पता लिख कर उन्हें दे दिया। तब रामतीर्थ ने पूछा कि यह पता स्थायी है ना? राजा के हां कहने पर उन्होंने सवाल किया, क्या आप साठ साल पहले यहीं थे और क्या पचास साल बाद भी आपका पता यही रहेगा? राजा ने अकचकाते हुए कहा, क्या बात करते हैं आप? साठ साल पहले तो मेरा जन्म ही नहीं हुआ था और पचास साल बाद मैं रहूंगा कि नहीं यह कौन जानता है।

स्वामीजी ने कहा- जब आपको अपना ही पता नहीं, तब परमात्मा का पता कैसे पाएंगे? पहले अपना पता कर लें, परमात्म-दर्शन अपने आप हो जाएगा।

५०९) आकाश का चांद - एक व्यक्ति एक प्रसिद्ध संत के पास गया और बोला, गुरुदेव, मुझे जीवन के सत्य का पूर्ण ज्ञान है। मैंने शास्त्रों का काफी अध्ययन भी किया है। फिर भी मेरा मन किसी काम में नहीं लगता। जब भी कोई काम करने बैठता हूं तो मन भटकने लगता है और मैं उस काम को छोड़ देता हूं। इस अस्थिरता का कारण क्या है? कृपया मेरी इस समस्या का समाधान कीजिए।

संत ने उसे रात का इंतजार करने को कहा। रात होने पर वह उसे एक झील के पास ले गए और झील के अंदर चांद के चमचमाते प्रतिबिंब को दिखाकर बोले, एक चांद आकाश में है और एक झील में। तुम्हारा मन इस झील की तरह है। तुम्हारे पास ज्ञान तो है लेकिन तुम उसका उपयोग करने के बजाय सिर्फ उसे अपने मन में लेकर बैठे हो, ठीक उसी तरह जैसे झील असली चांद का प्रतिबिंब लेकर बैठी है। तुम्हारा ज्ञान तभी सार्थक हो सकता है जब तुम उसे व्यवहार में एकाग्रता व संयम के साथ अपनाने की कोशिश करो। झील का चांद तो मात्र एक भ्रम है। भला यह चांद मुक्त आकाश के चंद्रमा की बराबरी कहां कर सकता है? उसी तरह तुम्हें काम में मन लगाने के लिए स्वयं को आकाश के चंद्रमा की तरह बनाना है, झील के चंद्रमा की तरह नहीं। झील का चंद्रमा पानी में कंकड़-पत्थर गिरने पर हिलने लगता है, जिस तरह तुम्हारा मन जरा-जरा सी बात में डोलने लग जाता है। तुम्हें अपने ज्ञान व विवेक को जीवन में नियमपूर्वक प्रयोग में लाना होगा तभी तुम्हारा जीवन सार्थक हो सकेगा और तुम अपना लक्ष्य हासिल कर सकोगे। खुद को आकाश का चांद बनाओ फिर तुम्हें कोई शिकायत नहीं होगी। इसमें तुम्हें शुरू में थोड़ी परेशानी आएगी किंतु कुछ समय बाद तुम अभ्यस्त हो जाओगे। व्यक्ति संत के इस उदाहरण को भलीभांति समझ गया और अपने जीवन में दृढ़ निश्चय कर एकाग्रता से काम करने लगा।

५१०) शायर की उदारता - प्रख्यात शायर जिगर मुरादाबदी बहुत ही उदार और दयालु थे। किसी की मदद करने का कोई मौका वह छोड़ते नहीं थे। अपने इस स्वभाव के चलते वह काफी लोकप्रिय थे और लोग उन्हें सम्मान देते थे। एक बार वह अपने एक मित्र के साथ कहीं जा रहे थे। जिगर साहब के दोस्त ने देखा कि एक व्यक्ति उन्हें देखकर आंखें चुरा रहा है और मुंह छुपाने की कोशिश कर रहा है। दोस्त ने कहा- हजरत। माजरा क्या है? वह आदमी आपको देखकर इस तरह झेंप क्यों रहा था? और आंखें क्यों चुरा रहा था? अगर वह आपको जानता था तो सामने क्यों नहीं आया। दुआ सलाम करता। और जनाब आप भी कुछ नहीं बोले। आप उसे जानते हैं क्या? जिगर मुरादाबादी बोले- अच्दी तरह जानता हूं उसे। हकीकत यह है कि एक दिन इस आदमी ने मेरी जेब से पैसे चुराए थे इसलिए मुझे पहचान कर झेंप रहा था। इस पर

मित्र ने कहा- जब तुम्हें पता चल गया कि यह वही है तो तुमने मुझे बताया क्यों नहीं? मैं उसकी खबर लेता। तुम तो बड़े आराम से देख रहे थे। जिगर मुरादाबादी ने हंसकर कहा- अरे भाई, उसकी खबर लेने के लिए मैं गया था उसके घर। पर वहां जो देखा उसे बयान करना मुश्किल है। क्या बताऊं, उसके घर की हालत बेहद खराब थी। उसके बीवी-बच्चों के पास खाने को कुछ नहीं था। अब तुम ही बताओ मैं क्या करता। मैं चुपचाप वहां से लौट आया। जिगर मुरादाबादी का दोस्त यह सुनकर अवाक रह गया। उसके भीतर मुरादाबादी के लिए इज्जत थोड़ी और बढ़ गई।

५११) ध्यान का अर्थ - एक ऋषि जंगल में अपने शिष्यों के साथ रहते थे। उनके रहने के लिए झोपड़ियां बनी थीं। उन्हीं झोपड़ियों के बीच में झाड़-फुस का एक कक्ष भी था। पूरा माहौल देखकर लगता था मानो वह जगह कोई विद्यापीठ हो। राजा को जब ऋषि के इस विद्यापीठ के बारे में पता लगा तो उसके मन में उस स्थान को देखने की उत्सुकता जागी। एक दिन वह जंगल जा पहुंचा। ऋषि ने राजा का स्वागत किया और जैसी कि राजा की इच्छा थी उसे वहां घुमाना शुरू किया। वह राजा को एक-एक झोपड़ी के पास ले गए और बताने लगे कि उनके शिष्य कहां रहते हैं। कहां स्नान करते हैं, कहां खाना खाते हैं। लेकिन राजा की उत्सुकता तो उन झोपड़ियों के बीच अलग से दिखाई देनेवाले कक्ष में थी। राजा ने ऋषि से कई बार पूछा कि वह इस कक्ष में क्या करते हैं, लेकिन ऋषि ने एक बार भी उसके बारे में कुछ नहीं कहा। आखिरकार राजा झुंझला गया। उसने जोर से कहा, आपने मुझे हर जगह घुमाया। हरेक स्थान के बारे में बताया पर इस कक्ष को न तो आपने दिखाया और न नही मेरे बार-बार पूछने पर भी यह बताया कि आप और आपके शिष्य इसमें क्या करते हैं? ऋषि बोले, राजन हम इस कक्ष में कुछ नहीं करते हैं? हम यहां मात्र ध्यान में जाते हैं। ध्यान कुछ करना नहीं है। अगर मैं आपके पूछने पर यह उत्तर दूं कि हम यहां ध्यान करते हैं तो यह गलत होगा। क्योंकि ध्यान कोई क्रिया नहीं हैं। इसलिए जब भी आपने इस कक्ष के बारे में पूछा मुझे चुप रहना पड़ा। ध्यान तो वह स्थिति है जब ध्यानी कुछ भी नहीं करता। उसका शरीर भी शांत होता है और मन भी। राजा ध्यान का अर्थ समझ गया।

५१२) चमत्कारी पौधा - एक थका-हारा भिखारी एक गांव में आया। उसने दो दिन से कुछ नहीं खाया था। पेट में बैठी भूख ने उसको एक सुझाव दिया। भिखारी को जो भी आदमी मिलता उसके कान में कहता- मैं एक ऐसे चमत्कारी पौधे के बारे में जानता हूं जो ऐसे आदमी में भी जान डाल सकता है तो कब्र में जाने ही वाला हो। मैं उसका रहस्य आपको बता सकता हूं। एक अमीर आदमी से जब उसने यह बात कही तो उसने उसे अपने घर पर बुलाया। उसको बढ़िया खाना खिलाया। जब खाना पूरा हो गया तो अमीर आदमी ने उसको वायदे की याद दिलाई। मेहमान बने भिखारी ने कहा, आइए मेरे साथ। वह पौधा आपके इस गांव में ही है। वे दोनों साथ-साथ निकले। जब गांव के कुछ ही बाहर निकले तो भिखारी ने उस आदमी को धान के खेत की ओर इशारा किया- यह रहा वह चमत्कारी पौधा। अमीर आदमी ने पूछा- क्या? धान? तुम मजाक कर रहे हो क्या? नहीं, बिल्कुल नहीं। अगर आपके घर मैंने अभी धान नहीं खाया तो मैं अब तक मर गया होता। भिखारी ने अपनी बात समझाई। अमीर आदमी उसकी चालाकी पर गुस्साया तो वह धूर्त भाग खड़ा हुआ।

५१३) बालिका की वाणी - भगवान बुद्ध श्रावस्ती में ठहरे हुए थे। वहां उन दिनों भीषण अकाल पड़ा था। यह देखकर बुद्ध ने नगर के सभी धनिकों को बुलाया और कहा, नगर की हालत आप लोग देख ही रहे हैं। इस भयंकर समस्या का

समाधान करने के लिए आगे आइए और मुक्त हाथों से सहायता कीजिए। लेकिन गोदामों में बंद अनाज को बाहर निकालना सहज नहीं था। श्रेष्ठि वर्ग की करुणा जाग्रत नहीं हुई। उन्होंने उन अकाल पीड़ित लोगों की सहायता के लिए कोई तत्परता नहीं दिखाई। उन धन कुबेरों के बीच एक बालिका बैठी थी। भगवान बुद्ध की वाणी ने उसको झकझोर दिया। वह उठकर बुद्ध के सामने पहुंची और सिर झुका कर बोली, हे प्रभु, मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं लोगों के इस दुख को हल्का कर सकूं। उस बालिका के ये शब्द सुनकर भगवान बुद्ध चकित रह गए। उन्होंने कहा कि बेटी जब नगर के सेठ कुछ नहीं कर पा रहे तो तुम क्या करोगी? तुम्हारे पास है ही क्या? तब हाथ जोड़कर लड़की बोली, भगवन, आप मुझे आशीर्वाद तो दीजिए। मैं घर-घर जाकर एक-एक मुट्ठी अनाज इकट्ठा करूंगी और उस अनाज से मैं भूखों की मदद करूंगी। भगवन, जो मर रहे हैं वे भी तो हमारे ही भाई-बहन हैं उनकी भलाई में ही हमारी भलाई है। इतना कहकर वह बालिका फूट पड़ी। उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी।

भगवान बुद्ध अवाक रह गए। सारी सभा स्तब्ध रह गई। आंसुओं के बीच लड़की ने कहा, बूंद-बूंद से घट भर जाता है। सब एक-एक मुट्ठी अनाज देंगे तो उससे इतना अनाज इकट्ठा हो जाएगा कि कोई भूखा नहीं मरेगा। मैं शहर-शहर घूमूंगी, गांव-गांव में चक्कर लगाऊंगी और घर-घर झोली फैलाऊंगी। बालिका की वाणी ने धनपतियों के भीतर के सोते इंसान को जगा दिया। उन्हें बालिका की निर्मलता और सामाजिक सरोकार देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। अनाज के गोदामों के दरवाजे खुल गए और अकाल की समस्या जल्दी ही समाप्त हो गई।

५१४) राजा का सपना - एक राजा को शिकार का नशा था। वह राजकाज छोड़कर हर समय शिकार में लगा रहता था। वह जिससे मिलता उससे शिकार के किसी प्रसंग पर ही बात करता। एक बार जब वह शिकार करने पहुंचा तो एक हिरन उसके सामने आ खड़ा हुआ। राजा उसे देखकर चकित रह गया। तभी कोमल वाणी में हिरन ने कहा, राजन्, आप प्रतिदिन वन में जाकर जीवों का शिकार करते हैं। कुछ जीव आपके हाथी घोड़ों द्वारा कुचल दिए जाते हैं। मेरे शरीर के भीतर कस्तूरी का भंडार है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस भंडार को ले लें और वन के प्राणियों का शिकार करना छोड़ दें। हिरन की बात सुन राजा विस्मय से बोला, क्या तुम उन्हें बचाने के लिए अपने प्राण देना चाहते हो? तुम जानते हो कस्तूरी पाने के लिए मुझे तुम्हारा वध करना होगा। हिरन बोला, राजन्, आप मुझे मारकर कस्तूरी का भंडार ले लीजिए, पर निरपराध जीवों को मारना छोड़ दीजिए। राजा ने पुन: कहा, तुम्हारा शरीर बहुत सुंदर है। तुम्हारे भीतर कस्तूरी का भंडार है। हिरन ने जवाब दिया, राजन यह शरीर तो नश्वर है। मैं दूसरों के प्राण बचाने के लिए मर जाऊं इससे अच्छी बात क्या हो सकती है। मृग की ज्ञान भरी वाणी ने राजा के मन में प्रकाश पैदा कर दिया। वह सोचने लगा, यह जानवर होकर दूसरों के लिए अपने प्राण दे रहा है और मैं मनुष्य होकर रोज जीवों को मारता हूं। धिक्कार है मुझ पर। तभी उसकी नींद टूट गई। इस सपने ने उसकी आंखें खोल दी थीं। उस दिन से राजा हिंसा छोड़कर सब पर दया करने लगा।

५१५) मित्र की आदतों में आया बदलाव - युगल के परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो चुकी थी कि अब उसका शुल्क भी जमा कर पाना मुश्किल हो रहा था।

युगल के परिवार की हालत किसी से छिपी नहीं थी। साथी ने युगल की पुरानी आदतों को भुलाकर उसका साहस बंधाते

रहे। सवाल यह था कि उनके साहस बंधाने से युगल की फीस तो नहीं भरी जा सकती थी। युगल परेशान रहने लगा। मास्टरजी ने आज ही युगल से कहा था कि तीन दिन के भीतर फीस के तीन सौ रुपए जमा करने हैं। युगल को कुछ नहीं सूझ रहा था कि वह क्या करे... लेकिन पीछे खड़े किशोर ने यह बात सुन ली थी। किशोर अपने पिता से मिले जेब खर्च से कुछ पैसे बचा लिया करता था। इस समय उसके पास डेढ़ सौ रुपए थे लेकिन बाकी रुपयों का इंतजाम कैसे हो? किशोर अपने मित्रों के पास गया और सारी बातें बताई। बस मित्रों ने आपस में बात कर अपनी अपनी जेब टटोली तो डेढ़ सौ रुपयों का भी इंतजाम हो गया। दोस्तों ने मिलकर युगल को बिना बताए फीस जमा करा दी। लेकिन युगल ने शुल्क के पैसे नहीं होने के कारण स्कूल आना बंद कर दिया था। किशोर ने जब देखा कि युगल दो दिन से स्कूल नहीं आ रहा है तो वह उसके घर आया। उसके पिता की तबियत का हालचाल जाना और उसके स्कूल नहीं आने का कारण पूछा। युगल ने मास्टरजी वाली बात बता दी। तब किशोर ने कहा कि उसे चिंता करने की जरूरत नहीं है, दोस्तों ने मिलकर उसकी फीस जमा कर दी है और उसकी पढ़ाई जारी रहेगी।

किशोर की बात सुनकर युगल हैरत में डूब गया। उसे अपनी गलती का अहसास हो गया। वह तुरंत किशोर के साथ स्कूल गया और दोस्तों से अपने किए की माफी मांगी और सहायता करने के लिए उनका धन्यवाद कहा। युगल की आंखों में आंसू थे। ये आंसू दुख के नहीं बल्कि पश्चाताप के थे। कहते हैं ना, सुबह का भूला शाम को लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते। युगल ने भी अपनी भूल सुधार ली और भविष्य में सभी की मदद करने का उसने वादा किया।

५१६) राजा का अमर फल - पुराने जमाने में एक राजा हुए, वे कवि भी थे। उनकी पत्नी अत्यंत रूपवती थी। उन्हीं के राज्य में एक महात्मा भी रहता था, जिसने अपनी नि:स्वार्थ पूजा से देवता को प्रसन्न कर लिया। देवता ने उसे वरदान के रूप में अमर फल देते हुए कहा कि इससे आप लंबे समय तक युवा रहोगे। महात्मा ने सोचा कि भिक्षा मांग कर जीवन बिताता हूं, मुझे लंबे समय तक जी कर क्या करना है। हमारा राजा बहुत अच्छा है, उसे यह फल दे देता हूं। वह लंबे समय तक जीएगा तो प्रजा भी लंबे समय तक सुखी रहेगी। वह राजा के पास गया और उनसे सारी बात बताते हुए वह फल उन्हें दे आया। राजा फल पाकर प्रसन्न हो गए, फिर मन ही मन सोचा कि यह फल मैं अपनी पत्नी को दे देता हूं। वह ज्यादा दिन युवा रहेगी तो ज्यादा दिनों तक उसके साहचर्य का लाभ मिलेगा। मैंने अगर फल खाया तो वह मुझसे पहले ही मर जाएगी और उसके वियोग में मैं भी नहीं जी सकूंगा। उन्होंने वह फल अपनी पत्नी को दे दिया। उधर, रानी तो नगर के कोतवाल से प्यार करती थी, वह अत्यंत सुदर्शन, हृष्ट-पुष्ट और बातूनी था। अमर फल उसको देते हुए रानी ने कहा कि इसे खा लेना, इससे तुम लंबी आयु प्राप्त करोगे और मुझे सदा प्रसन्न करते रहोगे। फल लेकर कोतवाल सोचने लगा कि रानी के साथ तो मुझे धन-दौलत के लिए झूठे प्रेम का नाटक करना पड़ता है। यह फल खाकर मैं भी क्या करूंगा, इसे मैं अपनी परम मित्र राज नर्तकी को दे देता हूं। वह कभी मेरी कोई बात नहीं टालती। मैं उससे प्रेम भी करता हूं और यदि वह सदा युवा रहेगी, तो दूसरों को भी सुख दे पाएगी। उसने वह फल उस नर्तकी को दे दिया। राज नर्तकी ने चुपचाप अमर फल अपने पास रख लिया। कोतवाल के जाने के बाद उसने सोचा कि कौन मूर्ख यह पाप भरा जीवन लंबा जीना चाहेगा। हमारे राजा बहुत अच्छे हैं, सदा ही प्रजा का ध्यान रखते हैं, उन्हें ही लंबा जीवन जीना चाहिए। यह सोचकर उसने किसी प्रकार

से राजा से मिलने का समय लिया और एकांत में उस फल की महिमा सुनाकर उसे राजा को दे दिया। राजा फल को देखते ही पहचान गया और भौंचक रह गया। पूछताछ और जांच पड़ताल के बाद पूरी बात पता चली तो राजा को वैराग्य हो गया और वह राज-पाट छोड़कर जंगल में चला गया।

संसार की वास्तविकता यही है, एक व्यक्ति किसी अन्य से प्रेम करता है और चाहता है कि वह व्यक्ति भी उसे उतना ही प्रेम करे। विडंबना यह है कि दूसरा व्यक्ति किसी अन्य से प्रेम करता है। इसका कारण यह है कि संसार व इसके सभी प्राणी अपूर्ण हैं। सब में कुछ न कुछ कमी है। सिर्फ एक पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण ही एक मात्र पूर्ण हैं। एक वही हैं जो हर जीव से उतना ही प्रेम करते हैं, जितना जीव उनसे करता है बल्कि उससे कहीं अधिक, बस हम ही उन्हें सच्चा प्रेम नहीं करते।

५१७) देवता महाराज की प्रशंसा कर अंतर्ध्यान हो गए - उशीनर देश के राजा शिबि एक दिन अपनी राजसभा में बैठे थे। उसी समय एक कबूतर उड़ता हुआ आया और राजा की गोद में गिर कर उनके कपड़ों में छिपने लगा। कबूतर बहुत डरा जान पड़ता था। राजा ने उस पर प्रेम से हाथ फेरा और उसे पुचकारा।

कबूतर के पीछे-पीछे एक बाज उड़ता हुआ आया और वह राजा के सामने बैठ गया। बाज ने मनुष्य की भाषा में कहा, आप न्याय को जाननेवाले राजा हैं। आपको किसी का भोजन नहीं छीनना चाहिए। यह कबूतर मेरा भोजन है। आप इसे मुझे दे दीजिए।

महाराज शिबि ने कहा, तुम मनुष्य की भाषा बोलते हो। तुम साधारण पक्षी नहीं हो सकते। लेकिन तुम चाहे जो कोई हो, यह कबूतर मेरी शरण में आया है। मैं शरणागत का त्याग नहीं करूंगा।

बाज बोला, मैं बहुत भूखा हूं। आप मेरा भोजन छीन कर मेरे प्राण क्यों लेते हैं?

राजा शिबि बोले, तुम्हारा काम तो किसी भी मांस से चल सकता है। तुम्हारे लिए यह कबूतर ही मारा जाए, इसकी क्या आवश्यकता है। तुम्हें कितना मांस चाहिए?

बाज कहने लगा, महाराज। कबूतर मरे या दूसरा कोई प्राणी मरे, मांस तो किसी को मारने से ही मिलेगा। सब प्राणी आपकी प्रजा हैं, सब आपकी शरण में हैं। उनमें से जब किसी को मारना ही है, तो इस कबूतर को ही मारने में क्या दोष हैं? मैं तो ताजा मांस खानेवाला प्राणी हूं और अपवित्र मांस मैं खाता नहीं। मुझे कोई लाभ भी नहीं है। इस कबूतर के बराबर तौल कर किसी पवित्र प्राणी का ताजा मांस मुझे दे दीजिए। मेरी भूख उतने से बुझ जाएगी।

राजा ने विचार किया और बोले, मैं दूसरे किसी प्राणी को नहीं मारूंगा। अपना मांस ही मैं तुमको दूंगा।

बाज बोला, एक कबूतर के लिए आप चक्रवर्ती सम्राट होकर अपना शरीर क्यों काटते हैं? आप फिर से सोच लिजिए।

राजा ने कहा, बाज। तुम्हें तो अपना पेट भरने से काम है। तुम मांस लो और अपनी भूख मिटाओ। मैंने सोच-समझ लिया है। मेरा शरीर अजर-अमर नहीं है। शरण में आए एक प्राणी की रक्षा में शरीर लग जाए, इससे अच्छा इसका दूसरा कोई उपयोग नहीं हो सकता।

महाराज शिबि की आज्ञा से वहां तराजू मंगाया गया। एक पलड़े में कबूतर बैठाया गया और दूसरे पलड़े में महाराज ने अपने हाथ से बाईं भुजा काट कर रख दी। लेकिन कबूतर का पलड़ा भूमि से उठा नहीं। महाराज शिबि ने अपना एक पैर

काटकर रखा फिर भी कबूतर भारी रहा, तो दूसरा पैर भी काट कर चढ़ा दिया। इतने पर भी कबूतर का पलड़ा भूमि पर ही टिका रहा। महाराज शिबि का शरीर रक्त से लथपथ हो गया था लेकिन उन्हें इसका कोई दुख नहीं था। इस बार वह स्वयं पलड़े पर बैठ गए और बाज से बोले, तुम मेरे इस शरीर को खाकर अपनी भूख मिटा लो।

महाराज जिस पलड़े पर थे, वह पलड़ा इस बार भारी होकर भूमि पर टिक गया था और कबूतर का पलड़ा ऊपर उठ गया था लेकिन उसी समय सबने देखा कि बाज तो साक्षात देवराज इन्द्र के रूप में प्रकट हो गए हैं और कबूतर बने अग्नि देवता भी अपने रूप में खड़े हैं। अग्निदेवता ने कहा, महाराज। आप इतने बड़े धर्मात्मा हैं कि आपकी बराबरी मैं तो क्या, विश्व में कोई भी नहीं कर सकता।

इन्द्र ने महाराज का शरीर पहले के समान ठीक कर दिया और बोले, आपके धर्म की परीक्षा लेने के लिए हम लोगों ने बाज और कबूतर का रूप बनाया था। आपका यश अमर रहेगा।

दोनों देवता महाराज की प्रशंसा करके और उन्हें आशीर्वाद देकर अंतर्ध्यान हो गए।

५१८) पत्थर का दर्द - बहन शिला, किसान नहीं जानते कि उस खंडहर महल और हम पर देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकताओं में कितना कुछ छपा है। विदेशी विद्वान कितनी मुसीबतें उठाकर यहां तक आते हैं और हम पर खुदे लेखों को कितनी सावधानी से पढ़ने की कोशिश करते हैं या फोटो उतारते हैं। शिला से पढ़ने की कोशिश करते हैं या फोटो उतारते हैं। शिला बोली- भाई मेरे, इस गुमटी के आसपास उस वक्त भी खेती होती थी, जब हमें यहां पर राजा की आज्ञा से उसकी यशोगाथा खुदवाकर गाढ़ा गया था। आज इन बातों को हजारों साल बीत गए हैं। उस राजा के जमाने में भी किसान रोता था और आज भी ये लोग रोते हैं। जबकि अनेक किसान समर्थक नेता और राजनीतिक लोग इनके समर्थन में जुलूस और रैली आयोजित करते रहते हैं। हां, ये चमत्कार क्या है बहन? आज खेती करना कितना असान हो गया है। ट्रैक्टर, खाद, बीज, थ्रेशर, बिजली-पानी की सुविधा आज के किसान को उपलब्ध है। फिर इनके रोने का कारण क्या है? इस पर शिला कुछ सोचते हुए बोली- खेती चाहे कितनी भी आधुनिक क्यों न हो जाए, पर गरीब किसान वही हल बैल से आगे नहीं बढ़ पाएगा। सच में इनकी नियति हमारी तरह है। शासक आएंगे, चले जाएंगे, पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी ये लोग ऐसे ही रहेंगे जैसे कि हम। क्या कभी किसान के नाम का पत्थर या शिलाखंड कहीं गाढ़ा गया है, जिस पर किसान के दुख और कष्ट उकेरे गए हों। तभी चंद्रमा के मुख पर काले बादल छा गए और उस घोर अंधकार में पत्थर कुछ सोचने लगा।

५१९) मृगतृष्णा - जब महात्मा बुद्ध ने राजा प्रसेनजित की राजधानी में प्रवेश किया तो वे स्वयं उनकी अगवानी के लिए आये। वे महात्मा बुद्ध के पिता के मित्र थे। एवं उन्होंने बुद्ध के संन्यास लेने के बारे में सुना था। अत: उन्होंने बुद्ध को अपना भिक्षुक जीवन त्यागकर महल के जीवन में लौटने के लिए मनाने का प्रयास किया। वे ऐसा अपनी मित्रता की खातिर कर रहे थे। बुद्ध ने प्रसेनजित की आंखों में देखा और कहा, सच बताओ, क्या समस्त आमोद-प्रमोद के बावजूद आपके साम्राज्य ने आपको एक भी दिन का सुख प्रदान किया है? प्रसेनजित चुप हो गए और उन्होंने अपनी नजरें झुका लीं। बुद्ध ने कहा, दु:ख के किसी कारण के न होने से बड़ा सुख और कोई नहीं है और अपने में संतुष्ट रहने से बड़ी कोई संपत्ति नहीं है।

५२०) पांवों ने सुन लिया संगीत - नींद में भी कसमसा रही थी निक्कू, ठीक से सो नहीं पा रही थी। मां समझ गई, उसने तेल मालिश की व थोड़ी देर पैर दबाए, तब जाकर उसे नींद आ पाई। सारा दिन उछलती-कूदती रहती है, एक मिनट भी चैन से नहीं बैठती, खाने में चोर और नाचने में मोर है, पैर तो दुखेंगे ही ना। कहते हुए मां ने उसका माथा प्यार से चूम लिया व चादर ओढ़ा दी। सच ही तो था। जब से निक्कू के दादा-दादी आए थे। सारा दिन उन्हें अपने खिलौने, किताबें दिखाने में लगी रही, उनके साथ खेलती रही। शाम को डांस भी करके दिखाया। सबने रोका कि अब बस करो, पर वह कहां रुकनेवाली थी, घंटे भर तक डांस करती रही। मम्मा, आज चाचू भी आएंगे न? सुबह उठते ही उसने मां से पूछा। हाँ बेटा। मम्मा, मैं उनको डांस करके दिखाऊंगी। नहीं बेटा, इस बार खिलौने दिखा देना, डांस अगली बार दिखा देना। माँ ने समझाने की कोशिश की। नहीं, मम्मा, मुझे डांस करके दिखाना है। अच्छे बच्चे मम्मा का कहना मानते हैं न। मां ने उसका चेहरा अपनी हथेलियों में लेकर कहा। उसने उदास मन से सहमति में गरदन हिलाई। शाम को जब चाचू आए तो उन्होंने निक्कू को आवाज लगाई, पहले नाच के नहीं दिखाओगी? मम्मा ने मना किया है। उसने मायूसी से कहा। चाचू ने उसका मूड ठीक करने की कोशिश की, अच्छा चलो, हम यहां बैठकर मोटू-पतलू देखेंगे। मुझे नहीं देखना। कहकर वो रूठकर जाने लगी। आखिरकार चाचू टीवी के सामने बैठकर चैनल बदलने लगे। पर ये क्या, निक्कू तो नाचने लगी।

५२१) हिम्मत मत हारो - एक दिन एक किसान का गधा कुएं में गिर गया। वह गधा घंटों जोर जोर से रोता रहा और किसान सुनता रहा और विचार करता रहा कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। अंतत: उसने निर्णय लिया कि चूंकि गधा काफी बूढ़ा हो चुका था, अत: उसे बचाने से कोई लाभ होनेवाला नहीं था और इसलिए उसे कुएं में ही दफना देना चाहिए। किसान ने अपने सभी पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया। सभी ने एक-एक फावड़ा पकड़ा और कुएं में मिट्टी डालनी शुरू कर दी। जैसे ही गधे कि समझ में आया कि यह क्या हो रहा है, वह और जोर-जोर से चीख चीख कर रोने लगा और फिर, अचानक वह आश्चर्यजनक रूप से शांत हो गया। सब लोग चुपचाप कुएं में मिट्टी डालते रहे। तभी किसान ने कुएं में झांका तो वह आश्चर्य से सन्न रह गया। अपनी पीठ पर पड़नेवाले हर फावड़े की मिट्टी के साथ वह गधा एक आश्चर्यजनक हरकत कर रहा था। वह हिल-हिलकर उस मिट्टी को नीचे रिगा देता था और फिर एक कदम बढ़ाकर उस पर चढ़ जाता था। जैसे-जैसे किसान तथा उसके पड़ोसी उस पर फावड़ों से मिट्टी गिराते वैसे-वैसे वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को गिरा देता और एक सीढ़ी ऊपर चढ़ आता। जल्दी ही सबको आश्चर्यचकित करते हुए वह गधा कुएं के किनारे पर पहुंच गया और फिर कूदकर बाहर भाग गया।

५२२) कुदरत की नियामत - पालतू कुत्ता टॉमी, जब भी गले में चमचमाते पट्टे व जंजीर के साथ घूमने निकलता तो उसका सामना रोज ही मोती व अन्य गली के कुत्तों से होता। वो उन्हें मुंह चिढ़ाता, हिकारत भरी नजरों से देखता, नाक-भौं सिकोड़ता हुआ शान से गरदन उठाकर चलता। गली के कुत्तों को उसकी ये हरकत नागवार गुजरती। एक दिन जैसे ही वो घर से निकला, सबक सिखाने के इरादे से मोती व अन्य कुत्तों ने उसे घेर लिया। मोती ने पूछा, क्यों रे। ऐसा क्या है तेरे पास, जो तू इतना इतराता फिरता है? टॉमी ने मूंछों पर ताव देते हुए कहा, देखो। मैं कितनी शान से रहता हूं। बढ़िया-बढ़िया खाता हूं, मखमली बिस्तर पर सोता हूं। तो इसमें कौन-सी बड़ी बात है। खुश तो हम भी

रहते हैं, अच्छा ही खाते हैं, पांव पसार कर सोते भी हैं। कालू ने जवाब में पूंछ अकड़ा कर कहा। मालकिन मुझे बड़े प्यार से रखती हैं। तुझे तो एक मालकिन ही प्यार करती हैं, हमें तो सारा मोहल्ला प्यार करता है। भूरे ने मूँछों को ताव दिया। मैं वफादारी से उनके घर की चौकीदारी करता हूं। क्या तुम्हारे पास मेरे जितनी सुविधाएं हैं? अब जवाब देने की बारी मोती की थी। मोती ने भी मूंछों को ताव दिया और बोला, देखो, वफादारी से हम भी सारे मोहल्ले के लोगों के घरों की देखभाल करते हैं। जो-जो तुम्हारे पास है, वो सब कम या ज्यादा हमारे पास भी है। हाँ। बस एक चीज नहीं है हमारे पास और उसका न होना ही कुदरत की सबसे बड़ी नेमत है। टॉमी ने आंखें फाड़ते हुए पूछा, वो क्या? मोती ने गरदन उठाकर शान से कहा, गले का पट्टा।

५२३) सन्यास मार्ग - पुरातन काल की बात है। युवराज मृगापुत्र, राजभवन की खिड़की के पास बैठा हुआ राजमार्ग पर आते-जाते लोगों को देख रहा था। अकस्मात उसकी दृष्टि एक सन्यासी पर टिक गई। सन्यासी के मुख पर अत्यंत तेज था। युवराज मन ही मन सोचने लगा, ऐसा व्यक्तित्व और सूर्य के समान दमकता मुखमंडल नहीं देखा। विचारों की उच्चता एवं भावना की प्रबलता के फलस्वरूप उसने अपने लिए भी उस सन्यासी जैसा जीवन अपनाने का निर्णय लिया। इसके लिए वह अपने माता-पिता के पास गया और उनसे सन्यास ग्रहण की आज्ञा मांगी। माता-पिता कहने लगे, बेटा सन्यास का पालन करना अति कठिन है। जिसका जीवन महलों में बीता हो, जिसके चारों ओर भोग सामग्री बिखरी हो, जो कभी नंगे पैर न चला हो, जिसने भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी का कष्ट भी न देखा हो, जो मखमल के गद्दों पर आराम करनेवाला हो, वह भला जमीन पर कैसे सो सकता है? जिस प्रकार पानी के बहाव की दिशा से उलटी दिशा में तैरना पीड़ादायक है, वैसे ही सन्यास ग्रहण करना भी कठिनतम है। मन को स्थिर करना लोहे के चने चबाने जैसा है। जंगल में रोग आदि होने पर तुम्हारी चिकित्सा कौन करेगा?

यह सब सुनकर मृगापुत्र बोला, जैसे मृग अकेला ही जंगल में भ्रमण करता है, वैसे ही मैं भी एकांत सन्यासी बन कर रहूंगा। जंगल में मृग को रोग होने पर कौन चिकित्सा करता है? कौन उसको औषधि देता है? कौन उसके सुख की बात पूछता है? कौन उसे खाना और पानी लाकर देता है? मृग को प्रकृति अपने आप ठीक करती है। जब वह स्वस्थ हो जाता है, तब वह चरने की भूमि में स्वयं ही चला जाता है और खाने के लिए बेलें आदि तथा जल पीने के लिए तालाबों की खोज स्वयं ही करता है। मृग लताओं में से पत्ते आदि खाकर और तालाबों में से पानी पीकर चौकड़ियां भरता हुआ मृगों के रहने योग्य स्थान में पहुंच जाता है। मैं भी मृग के समान आचरण करके भिक्षा आदि से संतुष्ट रहूंगा। अपने पुत्र की यह बात सुनकर माता-पिता ने मृगापुत्र को सन्यास ग्रहण की अनुमति दे दी।

५२४) चिड़िया का सबक - एक शिकारी ने छोटी-सी चिड़िया पकड़ ली। वह इतनी छोटी थी कि शिकारी की एक मुट्ठी में दो चिड़िया समा सकती थीं। वह कहने लगा कि उसे पकाकर खा जाएगा। चिड़िया बोली, कृपा करके मुझे छोड़ दो। लेकिन शिकारी नहीं माना। उसकी बात सुनकर चिड़िया बोली, अगर मैं तुम्हें ऐसा मोती देने का वादा करूं, जो शुतुरमुर्ग के अंडे से भी बड़ा हो, तो क्या तुम मुझे आजाद कर दोगे? उसकी बात सुनकर शिकारी बहुत खुश हो गया और तत्काल उसने मुट्ठी खोलकर उसे उड़ा दिया। चिड़िया आजाद होते ही कुछ दूर पर एक पेड़ की थोड़ी ऊंची डाल पर जा

बैठी, जहां तक शिकारी का हाथ नहीं पहुंच पाता था। शिकारी ने उसे बैठा देखकर बड़ी बेसब्री से कहा, जाओ, जल्दी जाओ, मेरे लिए वह मोती लेकर आओ। चिड़िया हंसकर बोली, वह मोती तो मुझसे भी बड़ा है, मैं उसे कैसे ला सकती हूं? उसकी बात सुनकर किसान हाथ मलने लगा। चिड़िया बोली, लेकिन दुखी मत हो, मैंने आज तुम्हें वह पाठ पढ़ाया है, जो ऐसे हर मोतियों से ज्यादा कीमती है। हमेशा कुछ भी करने से पहले सोच-विचार करो।

५२५) गणित - गणेश नाम का एक बालक जब पांचवी कक्षा में पढ़ता था, तब उसे गणित विषय से बहुत डर लगता था। जैसे ही कक्षा में गणित के अध्यापक का प्रवेश होता, वह सहम जाता। डर के कारण न तो उसका पढ़ाई में मन लगता और न ही कक्षा में। परीक्षाओं के समय बाकी विषयों में तो गणेश सहज रहा, लेकिन गणित की परीक्षा आते ही उसका चेहरा पीला पड़ जाता। हालत यह हुई कि घबराहट के चलते वे सवाल भी गलत हो गए जिन्हें वह हल करना जानता था। फिर परीक्षा का परिणाम आया, गणेश गणित में फेल हो गया। अध्यापक ने एक नजर गणेश की ओर देखा और कहा, तुम बिल्कुल फिसड्डी हो। तुम्हें एक छोटा सा और सरल सवाल भी हल करना नहीं आता। तुम जिंदगी भर फिसड्डी रहोगे। बिना गणित के जीवन में सफल होना सरल नहीं है। यह सुनकर गणेश डरते-डरते बोला, सर, मुझे गणित कठिन लगता है। अध्यापक बोले, कठिन केवल वह चीज होती है जिसका हम अभ्यास नहीं करते या जिसे हम नहीं जानते। यदि तुम्हें गणित से डर लगता है तो इसका सीधा अर्थ यह है कि तुम गणित की किताब खोलकर ही नहीं देखते और यदि देखते भी हो तो किताब में न होकर कहीं और होते हो। अध्यापक की इस बात ने उस बालक को हिला दिया। स्कूल से आने के बाद न तो वह आराम से बैठ सका और न ही खा-पी सका। शिक्षक की बात उसके दिमाग में घूमती रही। उसे जब समय मिलता गणित की पुस्तक लेकर बैठ जाता और एकाग्रता से सवाल हल करता। कुछ समय बाद उसे गणित में रुचि हो गई, उसे गणित समझ आने लगा था। गणित में गणेश की सफलता की चर्चा होने लगी। बड़ा होकर यही बालक प्रसिद्ध गणितज्ञ डॉ. गणेश प्रसाद के नाम से मशहूर हुआ।

५२६) झूठ के खिलाफ - काम से थका मांदा हुसिनेत्स जब घर आया तो दरवाजे पर खड़ी उसकी पत्नी ने देरी की वजह जाननी चाही। हुसिनेत्स ने बताया कि आज उसके मालिक को स्वर्ग की फीस जमा करने के लिए रोम जाना था। सो तैयारी में वक्त लग गया। काश हमारे पास भी पैसे होते तो हम भी फीस जमा करके स्वर्ग में अच्छा स्थान प्राप्त कर लेते। दोनों पति-पत्नी ने गरीबी में आह भरी और लेटने को हुए। इतने में उनका एक बेटा उठकर बोला, यह कैसी विचित्र बात है कि स्वर्ग के लिए भी फीस? वह भली तब, जब शरीर यहीं मिट्टी में रह जाना है। यह तो धर्म की पाखंड है। पिता हुसिनेत्स ने बच्चे को समझाया कि यह धर्म का मामला है, तुम्हारे सिर पर पढ़ाई सवार हो गई है। यह बात इस कमरे से बाहर मत कहना। मगर बेटा बोला, मैं तो कहूंगा। धर्म के पाखंड और वास्तविक धर्म को सबके सामने लाऊंगा। समय के साथ उसके विरोध का स्वर ऊंचा होता चला गया। इससे धार्मिक वर्ग उसके खिलाफ हो गया। जर्मनी में होनेवाले विश्व ईसाई सम्मेलन में उसे यह कहकर बुलाया गया कि उसकी हर तरह रक्षा की जाएगी और उसके विरोध को सुना जाएगा। जैसे ही वह वहां पहुंचा, उसे गिरफ्तार कर लिया गया। भरी सभा में उससे पूछा गया कि वह धर्म की मौजूदा व्यवस्था के साथ है या उसके विरुद्ध? उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, यह तो तुम्हारा दिल भी जानता है कि

मैं धर्म के साथ हूं और धर्म मार्ग पर ही हूं। अगर तुम चाहते हो कि मैं झूठ और मृत्यु में से एक को चुनूं तो यकीनन मैं मृत्यु ही चुनूंगा। इतना कहना था कि उसे कांटों का ताज पहनाकर आग में झोंक दिया गया। यह समाज सुधारक यानहूस थे जो सत्य के लिए आखिरी सांस तक लड़ते रहे।

५२७) एक तार का वायलिन - बात तब की है जब इटली के प्रसिद्ध वायलिन वादक पेगानिनी छोटे-छोटे संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियां देते थे। अभी उन्हें बहुत ख्याति नहीं मिली थी, लेकिन संगीत के प्रति उनके समर्पण की चर्चा चारों तरफ होने लगी थी। एक बार उन्हें बहुत बड़े संगीत समारोह में वायलिन बजाने का आमंत्रण मिला। वह बहुत उत्साहित थे कि उन्हें बड़े मंच पर अपनी कला को दिखाने का अवसर मिला। उन्होंने उस समारोह की तैयारी बड़े जोर-शोर से शुरू की। वह नियमित रूप से वायलिन का रियाज करते थे, लेकिन इस समारोह के लिए उन्होंने वायलिन के रियाज करने का समय भी बढ़ा दिया। आखिर वह दिन आ ही गया, जब उन्हें अपनी प्रतिभा दिखानी थी। पेगानिनी मंच पर पहुंचे और सभी का अभिवादन कर अपने आपको एकाग्र करने के लिए आंखें बंद कर लीं। इसके बाद उन्होंने वायलिन बजाना शुरू कर दिया। वायलिन की धुन इतनी मधुर थी कि सभी श्रोता आंख बंद करके संगीत का आनंद उठाने लगे। वह पूरी तन्मयता के साथ वायलिन बजा रहे थे, कि अचानक वायलिन का एक तार टूट गया। लेकिन पेगानिनी घबराए नहीं। वह एकाग्र होकर फिर से वायलिन बजाने लगे। कुछ देर बाद दूसरा तार भी टूट गया। अब वायलिन में केवल एक ही तार रह गया। एक तार से वायलिन का बजाना संभव नहीं था, लेकिन श्रोताओं के भरपूर आग्रह पर उन्होंने एक तार से ही वायलिन बजाना जारी रखा। पेगानिनी ने एक तार से ही इतनी मधुर धुन बजाई कि सभी श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे। धुन पूरी होने के बाद पूरे हॉल के श्रोताओं ने बहुत देर तक तालियां बजाकर उन्हें धन्यवाद दिया। समारोह खत्म होने पर श्रोताओं ने उनसे पूछा, यह कैसे संभव हुआ? पेगानिनी ने उन्होंने जवाब दिया, आत्मविश्वास सफलता का सबसे बड़ा सूत्र है। आत्मविश्वास और सच्ची भावना के कारण यह सब संभव हो पाया।

५२८) दरिद्रता और अपराध - राजा भोज के समय की बात है। एक गरीब ब्राह्मण अपनी मां व पत्नी के साथ एक झोपड़ी में रहता था। भिक्षा मांगकर गुजारा होता था। एक दिन भिक्षा में कुछ नहीं मिला। पत्नी को पता चला तो वह नाराज हो गई। कलह हो गई और ब्राह्मण ने अपनी पत्नी को पीट दिया। राजा के पास शिकायत पहुंची। राजा ने उस गरीब ब्राह्मण को बुलाया और अपने कोष के भंडारी से ब्राह्मण को सौ मोहरें देने को कहा। राजा की आज्ञा सुनकर भंडारी ने आश्चर्य से कहा, इस ब्राह्मण ने अपराध किया है। अपनी स्त्री को मारा-पीटा है और आप अपराध की सजा न देकर इनाम दे रहे हैं? इस प्रकार तो राज्य में स्त्रियों पर घोर संकट आ पड़ेगा। लोग अपनी-अपनी स्त्री को पीटकर इनाम लेने के लिए आ खड़े होंगे। इस पर राजा ने कहा, जो आदमी खाता-पीता है, सुखी है, वह अगर अपनी स्त्री को पीटे तो उसे जरूर कठोर दंड मिलेगा। दंड और कानून अन्याय और अत्याचार रोकने के लिए है, बढ़ाने के लिए नहीं। इस व्यक्ति का दुख दूसरा है। उस दुख को दूर करने के लिए ही मोहरें दे रहा हूं। यदि इस ब्राह्मण को कैद कर दिया जाए तो इसका परिवार तितर-बितर हो जाएगा। दंड देने से अपराध का जो मूल कारण है, वह दूर नहीं होगा। इसके अपराध का कारण दरिद्रता है। मैंने मोहरें देकर दरिद्रता को ही दंडित किया है। मेरी समझ में राजा का यही धर्म है। राजा को अपराध के मूल कारणों पर विचार

करना चाहिए और जिन कारणों से लोग अपराध में प्रवृत्त होते हैं, उनका निवारण करना चाहिए। रोग का ऊपरी इलाज पर्याप्त नहीं है, रोग के कारणों को दूर करना महत्वपूर्ण है। भंडारी को अब राजा की दूरदर्शिता समझ में आ गई थी। उसने राजा के आदेशानुसार सौ मोहरें खुशी-खुशी ब्राह्मण को दे दीं।

५२९) दर्द पर मरहम - वह अपने शौहर को खत भेजती रहीं और उधर से जवाब आते रहे। मसूरी में फैले सांप्रदायिक दंगों की सिलसिलेवार खबरें जब वह अपने शौहर से पातीं और भी ज्यादा फिक्रमंद हो उठतीं। बेचैने होकर कहतीं कि लौट आइए, ये दंगे हमें कमजोर कर देंगे। मगर शौहर का एक ही जवाब कि कैसी भी जिंदगी हो, उससे वह मौत कहीं अधिक खूबसूरत होगी, जब हम दो दिलों को जोड़ते हुए शहीद होंगे। वह सोचती कि यह कैसा शख्स है जो दंगों में अमन के लिए खुद को खत्म कर रहा है? आखिरी खत मिलने के हफ्ते भर के अंदर टुकड़ों में बंटी शौहर की लाश आई तो वह चीख उठीं। पर शौहर को खोने का गम उन पर हावी नहीं हुआ। शौहर के लफ्जों का यह सच उनके अंदर उतरता गया कि दो दिलों को जोड़ने की कोशिश के दौरान हासिल हुई मौत जिंदगी से ज्यादा हसीन होती है। तमाम औरतें भले अपने शौहर की मौत पर रोते-रोते इद्दत के दिन पूरे करती, गम मनाती हों वह ऐसा नहीं कर सकीं। शौहर की शहादत के पीछे काम कर रहे जज्बे ने उन्हें बैठे नहीं रहने दिया। वह उठीं और सैकड़ों किलोमीटर दूर दिल्ली में महात्मा गांधी के पास पहुंच गईं। महात्मा गांधी ने उनके दुख को महसूस किया। भर्राई भारी आवाज में बोले, अनीस, तुम्हारा दर्द इतना भारी है कि इसकी कल्पना ही मुश्किल है। लेकिन तुम अनीस हो। तुम उन कैंपों में जाओ, जहां ऐसे ही मायूस दिलों की भीड़ लगी हुई है। जाओ और उन्हें दिलासा दो। तमाम गमों की मारी अनीस महात्मा की सलाह पर विभाजन के मारे लोगों के दुखों पर मरहम लगाने लगीं। उनके कदमों से शरणार्थी कैंप गुलजार हो जाते। वे रोने वालों को गले लगातीं। अनगिनत अपहृत लड़कियों को दूर-दूर से खोजकर लातीं और परिवार से मिलवातीं। यह थी स्वतंत्रता सेनानी बेगम अनीस किदवई।

५३०) दो थैले - हमारे गांवों में अक्सर एक कथा सुनने को मिलती है। ईश्वर ने जब मनुष्य की रचना की तो उसे अपनी अन्य सभी कृतियों से श्रेष्ठ बनाया। सुघड़ और सुंदर बनाने के साथ उसे बुद्धि भी दी। जब मनुष्य इस पृथ्वी पर पहुंचा तो ब्रह्मा ने उससे पूछा, अब यहां आकर तुम क्या चाहते हो? मनुष्य ने कहा, प्रभु, मैं तीन बातें चाहता हूं। एक, मैं सदा प्रसन्न रहूं। दूसरा, सभी मेरा सम्मान करें। और तीसरा, मैं सदा उन्नति के पथ पर चलता रहूं। मनुष्य की ये इच्छाएं जान कर ब्रह्मा जी ने उसे दो थैले दिए और कहा, एक थैले में तुम अपनी सभी कमजोरियां डाल दो और दूसरे थैले में दूसरे लोगों की कमियां डालते रहो। साथ ही यह भी कहा कि इन दोनों थैलों को हमेशा अपने कंधों पर लेकर चलना। लेकिन हां, एक बात का ध्यान और रखना कि जिस थैले में तुम्हारी अपनी खामियां हैं, उसे तो अगली तरफ रखना। और जिसे थैले में दूसरों की कमजोरियां रखी हैं, उन्हें पीछे की तरफ यानी पीठ पर रखना। समय-समय पर सामनेवाला थैला खोलकर निरीक्षण भी करते रहना, ताकि अपनी त्रुटियां दूर कर सको। परंतु दूसरे लोगों के अवगुणों का थैला, जो पीठ पर डाला होगा, उसे कभी न खोलना और न ही दूसरों के ऐब देखना या कहना। यदि तुम इस परामर्श पर ठीक से आचरण करोगे, तो तुम्हारी तीनों इच्छाएं पूरी होंगी- तुम सदा प्रसन्न रहोगे, सबसे सम्मान पाओगे और सदा उन्नति करोगे। मनुष्य ने ब्रह्मा जी को नमस्कार किया और अपने दुनियावी कामकाज में लग गया। लेकिन

इस बीच उसे थैलों की पहचान भूल गई। जो थैला पीछे डालना था उसे तो आगे टांग लिया और जिस थैले को आगे रखकर देखते रहने को कहा था, वह पीछे की तरफ कर दिया। तब से मनुष्य दूसरों के अवगुण ही देखता है, अपनी कमजोरियों पर ध्यान नहीं देता। इसी वजह से उसे फल भी उलटा ही मिलता है।

५३१) कर्म के पुजारी - गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर दिन में कभी आराम नहीं करते थे। एक बार वह बीमार पड़ गए। चिकित्सकों ने सलाह दी कि वह दिन में खाना खाने के बाद थोड़ी देर विश्राम करें। पर टैगोर ने उनकी सलाह अनसुनी कर दी और पहले की तरह काम करते रहे। स्वास्थ्य और बिगड़ने लगा। शांति निकेतन के अध्यापकों और मित्रों ने उन्हें समझाया लेकिन उन पर कोई असर नहीं पड़ा। एक दिन उनके सहायक ने कहा, गुरुदेव गांधी जी की बात नहीं टालते। यदि वह आकर उन्हें समझाएं तो टैगोर जरूर मान जाएंगे। जब गांधीजी को सारी बातों का पता चला तो वह शांति निकेतन पहुंचे। गुरुदेव रोज की तरह दिन का खाना खाने के बाद कुर्सी पर बैठकर काम कर रहे थे। गांधी जी ने उनके पास जाकर कहा, आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है गुरुदेव। आपको चिकित्सक की सलाह मानकर दिन में कुछ देर विश्राम करना चाहिए।

टैगोर ने कहा, कैसे करूं बापू। जब मैं बारह वर्ष का था तभी मेरा यज्ञोपवीत हो गया। उस समय मैंने प्रण किया था कि दिन में कभी आराम नहीं करूगा। सड्सठ वर्षों से उसी का पालन कर रहा हूं। आप उस प्रण को भंग करने का आदेश क्यों दे रहे हैं। गांधीजी बोले, मैं प्रण भंग करने को नहीं कह रहा हूं। मैं तो यह कह रहा हूं कि आप दिन में थोड़ा आराम करें।

टैगोर ने कहा, यह कैसे हो सकता है? गांधीजी ने कहा, हो सकता है। आप भोजन के बाद कुर्सी पर थोड़ी देर राम नाम जपते हुए भी आराम कर सकते हैं। यह भी आपके काम का एक हिस्सा ही होगा। यह सुन टैगोर हंसकर बोले, तो आप काम के साथ राम का नाम भी जोड़ना चाहते हैं। इस प्रकार कर्म के एक पुजारी की सलाह कर्म के दूसरे पुजारी ने मान ली। उसके बाद टैगोर दोपहर को खाने के बाद थोड़ी देर के लिए अपना काम छोड़कर राम नाम जपते हुए विश्राम करने लगे।

५३२) अधिकार की रोटी - बहुत पुरानी बात है। एक राजा था। उसके पास एक दिन एक संत आए। उन्होंने कई विषयों पर चर्चा की। राजा और संत में कई प्रश्नों पर खुलकर बहस भी हुई। अचानक बातों ही बातें में संत ने अधिकार की रोटी की चर्चा की। राजा ने इसके बारे में विस्तार से जानना चाहा तो संत ने उसे एक बुढ़िया का पता दिया और कहा कि वही उसे इसकी सही जानकारी दे सकती है।

राजा तत्काल बुढ़िया की तलाश में राजमहल से निकल पड़ा। काफी देर ढूंढने के बाद वह बुढ़िया राजा को मिल गई। राजा बहुत खुश हुआ। वह दौड़कर उसकी झोपड़ी में जा पहुंचा, जहां बैठी वह चरखा कात रही थी। राजा उसके सामने खड़ा हो गया और बोला, माई, मैं एक विचित्र सवाल का जवाब खोज रहा हूं, क्या आप मेरी मदद करेंगी? बुढ़िया ने एकटक राजा को देखा फिर हां कर दी। राजा ने पूछा, माई, अधिकार की रोटी क्या होती है? मैं आज आप से वही लेने आया हूं। बुढ़िया ने राजा को पहचान कर कहा, मेरे पास एक रोटी है। उसमें आधी अधिकार की है और आधी बिना अधिकार की।

राजा की समझ में कुछ नहीं आया। उसने आश्चर्य से बुढ़िया की ओर देखा और कहा, यह आप क्या कह रही हैं। साफ-साफ बताएं। बुढ़िया बोली, कल मैं यहां बैठी चरखा कात रही थी। दिन ढल गया था। अंधेरा फैल गया था। तभी

सड़क पर एक जूलूस आया। उसमें मशालें जल रही थीं। मैं अपना चिराग न जलाकर आधी पूनी मशालों की रोशनी में कातती रही। आधी पहले कात चुकी थी। उस सूत को बेचकर आटा खरीद लाई। आटे की रोटी बनाई। इस तरह आधी रोटी मेरे अधिकार की है और आधी बिना अधिकार की। उस पर मेरा नहीं, जुलूस वालों का अधिकार है। बुढ़िया की बात सुनकर राजा चकित रह गया। उसकी धर्म-बुद्धि पर उसका सिर झुक गया।

५३३) समझाने का तरीका - यह देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की युवावस्था की घटना है। उन दिनों उनके घर कई रिश्तेदार आए हुए थे। उनके कई बच्चे थे। सारे बच्चे घर में खूब धमाचौकड़ी मचाते थे। एक दिन उन लोगों ने राजेंद्र बाबू की एक किताब के कुछ पन्ने फाड़े हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी राजेंद्र प्रसाद को एक युक्ति सूझी। उन्होंने उन बच्चों को बुलाकर कहा, जिस बच्चे ने इस पुस्तक के जितने ज्यादा पन्ने फाड़े हैं, उसको उतने ज्यादा पैसे मिलेंगे। यह युक्ति काम कर गई। बच्चों ने खुशी-खुशी बता दिया कि किसने कितने पन्ने फाड़े हैं। राजेंद्र बाबू खुश हो गए कि बिना सख्ती बरते ही सच्चाई सामने आ गई। पैसे देने के बाद राजेंद्र बाबू ने उन बच्चों को समझाया, देखो बच्चों तुम्हें पैसे मिल गए। लेकिन तुम्हारा यह काम बिल्कुल ठीक नहीं। किसी भी किताब के पन्ने फाड़ना बहुत गलत बात है। किताबों से हम ज्ञान प्राप्त करते हैं। उनसे बहुत कुछ सीखते हैं। उन्हें नुकसान पहुंचाकर हम अपना ही नुकसान करते हैं। आगे से ऐसा कभी मत करना। राजेंद्र बाबू की बातों का उन बच्चों पर गहरा असर पड़ा। सभी बच्चों ने उन्हें वचन दिया कि वे आगे से कभी ऐसा नहीं करेंगे। राजेंद्र बाबू ने बाद में भी लोगों को समझाने, उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए ऐसी ही युक्तियों का सहारा लिया और वह हमेशा अपने मकसद में कामयाब भी रहे।

५३४) संकल्प और साहस - खेल की कक्षा शुरू हुई तो एक दुबली-पतली अपंग लड़की किसी तरह अपनी जगह से उठी। वह खेलों के प्रति जिज्ञासा प्रकट करते हुए शिक्षक से ओलिंपिक रेकॉर्डस् के बारे में सवाल पूछने लगी। इस पर सभी छात्र हंस पड़े। शिक्षक ने भी व्यंग्य किया- तुम खेलों के बारे में जानकर क्या करोगी। अपने ऊपर कभी नजर डाली है? तुम तो ठीक से खड़ी भी नहीं हो सकती, फिर ओलिंपिक से तुम्हें क्या मतलब है? तुम्हें कौन सा खेलना है जो यह सब जानोगी। चुपचाप बैठकर सुनो। रुआंसी लड़की कुछ कह न सकी। सारी क्लास उस पर हंसती रही। अगले दिन जब खेल पीरियड में उसे बाकी बच्चों से अलग बठाया गया तो उसने कुछ सोचकर बैसाखियां संभालीं और दृढ़ निश्चय के साथ बोली- सर अगर लगन सच्ची हो और इरादे बुलंद हों तो सब कुछ संभव है। आप देखना एक दिन यही लड़की हवा से बातें करके दिखाएगी। उसकी इस बात से भी ठहाका गूंज उठा। सबने इसे मजाक के रूप में लिया। लेकिन वह लड़की तेज चलने के अभ्यास में जुट गई। वह अच्छी और पौष्टिक खुराक लेने लगी, फिर वह कुछ दिनों में दौड़ने भी लगी। कुछ दिनों के बाद उसने छोटी-मोटी दौड़ में भाग लेना भी शुरू कर दिया। उसे दौड़ते देख लोग दांतों तले उंगली दबा लेते थे। उसके हौसले बुलंद होने लगे। फिर उसने १९६० के ओलिंपिक में हिस्सा लिया और तीन स्वर्ण पदक जीतकर सबको हतप्रभ कर दिया। ओलिंपिक में इतिहास रचनेवाली वह थी अमेरिकी धाविका विल्मा रुडोल्फ।

५३५) प्रतिभा और ज्ञान - एक संत को जंगल में एक नवजात शिशु मिला। वह उसे अपने घर ले आए। उन्होंने उसका नाम जीवक रखा। उन्होंने जीवक को अच्छी शिक्षा-दीक्षा प्रदान की। जब वह बड़ा हुआ तो उसने संत से

पूछा, गुरुजी, मेरे माता-पिता कौन हैं? संत को जीवक के मुंह से यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन उन्होंने उसे सच बताने का निश्चय किया और बोले, पुत्र, तुम मुझे घने जंगलों में मिले थे। मुझे नहीं मालूम कि तुम्हारे माता-पिता कौन हैं और कहां हैं? जीवक अत्यंत उदास होकर बोला, गुरुजी, अब आत्महीनता का भार लेकर मैं कहां जाऊं? इस पर संत उसे सांत्वना देते हुए बोले, पुत्र, इस बात से दुखी होने के बजाय तुम तक्षशिला जाओ और वहां विद्याध्ययन करके अपने ज्ञान के प्रकाश से संपूर्ण समाज को आलोकित करो। जीवक अध्ययन के लिए चल पड़ा। वहां पहुंचकर वहां के आचार्य को उसने अपने बारे में सब कुछ बता दिया। आचार्य ने उसकी स्पष्टवादिता से प्रभावित होकर उसे विश्वविद्यालय में प्रवेश दे दिया। जीवक वहां पर कठोर परिश्रम के साथ विद्या प्राप्त करने लगा। वहां उसने आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की। संपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के बाद एक दिन आचार्य जीवक से बोले, पुत्र, अब तुम मगध जाकर वहां के लोगों की सेवा करो। यह सुनकर जीवक परेशान हो गया। आचार्य उसे दुखी देखकर बोले, कौन सी बात तुम्हें टीस रही है? जीवक बोला, आचार्य, आप तो जानते ही हैं कि मेरा कोई कुल और गोत्र नहीं है। मैं जहां भी जाऊंगा, लोग मुझ पर उंगलियां उठाएंगे। क्या आप मुझे अपने पास ही नहीं रख सकते? उसकी बात सुनकर आचार्य बोले, वत्स। तुम्हारी प्रतिभा और ज्ञान ही तुम्हारा कुल-गोत्र है। इन्हीं से तुम्हें सम्मान मिलेगा। आचार्य की बातों ने जीवक को नई दिशा दिखाई और वह मगध आ गया। वहां उसने लगन और मेहनत से काम किया। कुछ ही समय में वह पूरे मगध में आयुर्वेदाचार्य के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

५३६) पाप की जड़ - एक राजा ने एक दिन अपने पुरोहित से अचानक पूछा, मान्यवर, कृपया बताएं कि दुनिया में हो रहे इतने पाप का असली कारण क्या है? क्यों करते हैं लोग पाप? सवाल सुनकर पुरोहित सोच में पड़ गए। बोले, राजन्, इस सवाल का उत्तर देने में कुछ समय लगेगा। इसके लिए मुझे दो दिन चाहिए। राजा ने कहा, ठीक है, आप दो दिन ले लीजिए। अगर आपने इसका सही उत्तर दिया तो मैं आपको बहुत सा इनाम दूंगा। पुरोहित इनाम के लोभ में और अपनी प्रतिष्ठा की खातिर सवाल का जवाब ढूंढने घर से निकल पड़े। उन्हें यह आशंका भी सता रही थी कि अगर वह उत्तर नहीं ढूंढ पाए तो राजा की नजर में गिर जाएंगे। पुरोहित दिन-रात चलते रहे और रास्ते में मिलनेवाले हर साधु-मनीषी से यह सवाल पूछते रहे। लेकिन किसी का जवाब उन्हें अच्छा नहीं लगा। अंतत: वह नगर की सरहद पर पहुंचे। वहां एक गड़रिया अपनी भेड़ें चरा रहा था। पुरोहित ने जब गड़रिए से यह सवाल पूछा तो वह हंसने लगा। वह हंसते हुए बोला, मैं आपको इसका जवाब नहीं बता सकता। आप इस लायक है ही नहीं। यह सोचकर कि वह गड़रिया वास्तव में इस सवाल का उत्तर जानता है, पुरोहित बोले, मैं आपके लिए कुछ भी कर सकता हूं। मेहरबानी कर इसका जवाब बता दीजिए। तब गड़रिए ने कहा, उत्तर जानने के लिए क्या आप मेरा जूठा दूध पी सकते हैं? पुरोहित इसके लिए सहर्ष तैयार हो गए। तब गड़रिए ने फिर हंसते हुए कहा, यही आपके प्रश्न का उत्तर है। आप पद, प्रतिष्ठा और इनाम के लोभ में कुछ भी करने को तेयार हो गए। ऐसे तो आप मेरा जूठा दूध कभी नहीं पीते लेकिन स्वार्थवश आप इसके लिए मान गए। लोभ के लिए व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। इसी लोभ और तृष्णा के कारण दुनिया में सारे पाप होते हैं। यह लोभ ही पाप का सबसे बड़ा कारण है।

५३७) दुख दूर कर सको, बेहिचक करो - भावनगर में एक महान संत थे, बाबा मस्तराम। वह त्याग और तपस्या की साक्षात मूर्ति थे। बाबा भगावन की याद में सदा मस्त रहते थे, जिससे उनके भक्त उन्हें मस्तराम कहा करते थे। एक दिन की बात है। सर्दी का मौसम था। भीषण ठंड पड़ रही थी। बाबा मस्तराम अपने आश्रम के बाहर एक खुली जगह पर सोए हुए थे। उनके शिष्य आसपास बैठे थे। भावनगर के राजा घोड़ागाड़ी में उधर से गुजर रहे थे। राजा की नजर सोते हुए मस्तराम पर पड़ी। राजा ने देखा कि बाबा के बदन पर गरम कपड़े नहीं हैं। इस सर्दी में बाबा को कितनी तकलीफ हो रही होगी, यह सोचकर राजा ने अपनी कीमती शॉल उन्हें ओढ़ा दी और चुपचाप आगे बढ़ गए। कुछ देर बाद बाबा की आंखें खुलीं तो उन्होंने देखा कि उनके शरीर पर एक शॉल है। शिष्यों ने बताया कि राजा खुद उन्हें शॉल ओढ़ा गए हैं तो बाबा बोले, साधु को शॉल से क्या काम? मेरा शरीर तो ठंड को सहन करने का आदी हो चुका है। यह शॉल किसी को ठंड से बचाने में काम आना चाहिए। बाबा वहां से उठे और अपने भक्तों के साथ आगे चल दिए। वह अभी कुछ ही दूर चले थे कि उन्होंने एक कुत्ते को ठंड से ठिठुरता-कांपता देखा। वह कुत्ते के नजदीक गए और इतमीनान से वह शॉल उसके पीठ और पेट वाले हिस्से में लपेट दी। इसके बाद वह बेफिक्र भाव से आगे बढ़ गए। एक भक्त से रहा नहीं गया। उसने पूछा, बाबा, राजा की दी हुई यह कीमती शॉल आपने कुत्ते को ओढ़ा दी।

५३८) पानी की कमाई पानी में - एक गांव में कुछ ग्वाले रहते थे। वे अपनी गाय भैंसों का दूध बेचने शहर में जाया करते थे। उन ग्वालों में एक ग्वाला बहुत लालची था। वह रोज दूध बेचने जाते समय रास्ते में नदी से दूध में पानी मिला दिया करता था। एक दिन जब सब ग्वाले बाजार से अपनी बिक्री के पैसे लेकर घर आ रहे थे तो दोपहर की गर्मी से तंग आकर उन्होंने नदी में नहाने का मन बनाया। सभी ग्वालों ने अपने कपड़े उतार कर एक पेड़ के नीचे रख दिए और नहाने के लिए नदी के बीच में चले गए। कुछ ही देर में पेड़ से एक बंदर उतरा और उस लालची ग्वाले के कपड़े उठाकर पेड़ पर ले गया। उसने उसकी जेबसे सिक्कोंवाली थैली निकाली और एक-एक कर नदी में फेंकने लगा। ग्वाला चिल्लाया और पैसे छुड़ाने के लिए बंदर के पीछे भागा। इतनी देर में वह बंदर बहुत सारे सिक्के नदी में गिरा चुका था। लालची ग्वाला अपने भाग्य को कोसने लगा और कहने लगा कि देखो मेरी महीने की कमाई के आधे पैसे बंदर ने पानी में मिला दिए। इस पर उसके साथी ग्वालों ने कहा, तुमने जितने पैसे पानी मिलाकर कमाए थे उतने पैसे पानी में ही चले गए। उस दिन से उस ग्वाले ने दूध में पानी मिलाना छोड़ दिया।

५३९) शिक्षक की तरकीब रंग लाई - डेविड एक शरारती और चुलबुला विद्यार्थी था। वह कक्षा में बहुत शोर मचाता था और उस छोटी सी उम्र में वह चुटकुलों को टेढ़े-मेढ़े अंदाज में सुनाकर सबको हंसा-हंसा कर लोट-पोट कर देता था। सभी शिक्षक डेविड से परेशान थे क्योंकि वह कक्षा में ऐसे अजीबोगरीब चुटकुले सुनाता कि सबका ध्यान पढ़ाई से भटक जाता था। एक दिन स्कूल में भौतिकी के प्रोफेसर डॉ. जैकब आए, कुछ ही समय में उन्हें डेविड का मिजाज पता चल गया। उन्होंने उसे सुधारने की ठान ली। उनका तरीका आम शिक्षकों से एकदम अलग था। उन्होंने एक दिन डेविड को अपने पास बुलाया और प्रेम से बोले, बेटा, तुम बहुत प्रतिभाशाली हो, तुम इतनी कम उम्र में जिस अंदाज से चुटकुले सुनाते हो, वह काबिले तारीफ है। डेविड अपनी प्रशंसा सुनकर खुशी से मुस्कराने लगा। इसके

बाद जैकब बोले, मैं पढ़ाने में लगा होता हूं और तुम चुटकुले सुना देते हो, तो मैं उसका ठीक से मजा नहीं ले पाता। आज से जब भी मेरी कक्षा होगी तो पहले पांच मिनट मैं तुम्हारे नाम के रखूंगा। इन पांच मिनटों में तुम चुटकुले सुनाना, लेकिन उन पांच मिनटों के बाद तुम पूरा समय पढ़ाई पर ध्यान दोगे। अब तो यह रोज का नियम बन गया। डॉ. जैकब क्लास में आते और डेविड चुटकुले सुनाने लगता। फिर बिना किसी व्यवधान के पढ़ाई चलती। शिक्षकों को भी अब डेविड से कोई शिकायत न थी। समय और डेविड दोनों बढ़ते रहे।

५४०) मौलाना की राष्ट्रभक्ति - मौलाना अबुल कलाम आजाद स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख स्तंभ थे। आजादी पाने की इसी जद्दोजहद में एक बार अंग्रेज सरकार ने उन्हें पकड़कर अहमदाबाद की जेल में बंद कर दिया था। मौलाना तो थे ही संतोषी व त्यागी पुरुष, जेल के जीवन को भी उन्होंने अत्यंत सहजता से अंगीकार कर लिया। इसी दौरान कोलकाता में उनकी पत्नी का अवसान हो गया। उन्होंने इस दुख को शांति से झेला। कृतज्ञ राष्ट्रवासियों ने बेगम आजाद की स्मृति में एक स्मारक बनाने का निश्चय किया और इस कार्य को अंजाम देने के लिए बेगम आजाद स्मृति कोष बनाकर धन एकत्रित करना प्रारंभ कर दिया। धीरे-धीरे कोष में धन इकट्ठा होता रहा और मौलाना आजाद के जेल से बाहर आने तक उसमें बड़ी रकम जमा हो गई। आजाद की रिहाई के बाद उन्हें इस कोष के बारे में बताया गया। उन्हें जब इस तरह चंदे से धन इकट्ठा करने और उसके पीछे के मकसद का पता चला तो वे बहुत नाराज हुए। उन्होंने कहा, इसी समय यह सब बंद कर दीजिए। कोष में अब तक जमा हुई रकम इलाहाबाद के कमला नेहरू अस्पताल को दे दी जाए। मौलाना की इस बात को सिर माथे पर लिया गया और सारा एकत्र धन कमला नेहरू अस्पताल को दे दिया गया। वह मौलाना अबुल कलाम आजाद का देशप्रेम था जिसने उन्हें देश का धन लोकहित में व्यय करने हेतु प्रेरित किया।

५४१) डटे रहना ही जीवन है - दिसंबर १९५५ की बात है। उन दिनों अमेरिका नस्लभेद की आग में जल रहा था। अमेरिका में रहनेवाले काले लोगों को रोज ही कहीं न कहीं अपमानित किया जाता था। वहां के सारे कानून और नीतियां श्वेत लोगों के पक्ष में झुके हुए थे। जैसे अपने यहां अंग्रेजों के राज में उनके साथ भारतीय नहीं बैठ सकते थे, वैसे ही वहां भी श्वेत लोगों के साथ काले लोगों का बैठना पूरी तरह से वर्जित था। यहां तक कि बस के बीच में एक विभाजन रेखा बना दी गई थी और ड्राइवर की ओर सिर्फ श्वेत लोगों को बैठने का हक था। उस दिन रोजा नाम की एक अश्वेत महिला भी बस पर अश्वेतों के लिए नियत पिछले हिस्से की सबसे आगेवाली पंक्ति में बैठी हुई थीं। गोरों के लिए तय आगे का हिस्सा पूरी तरह भर चुका था। इसके बाद जब एक और श्वेत व्यक्ति बस में चढ़ा तो बस ड्राइवर ने रोजा की पूरी कतार से सीटें खाली करने को कहा। बाकी सभी अश्वेत लोगों ने अपना-अपना स्थान छोड़ दिया लेकिन रोजा ने इस अपमानजनक आदेश को मानने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि इस तरह के अमानवीय बर्ताव को वे अब और सहन नहीं करेंगी। आदेश न मानने के चलते उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर १४ डॉलर का जुर्माना लगाया गया जो उस समय के लिहाज से काफी अधिक था। इस घटना ने पूरे अश्वेत समाज में बिजली सी दौड़ा दी। वे अपना हक पाने के लिए उठ खड़े हुए। उनके अहिंसात्मक आंदोलन का नेतृत्व मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने किया। आखिरकार रोजा पार्क्स को नागरिक अधिकारों के संघर्ष में प्रथम महिला कहा जाता है। यह उनका साहस ही था,

जिसने मानवता के इतिहास में उनका नाम अमर कर दिया।

५४२) अश्वपति के आगे झुक गया सिकंदर - अश्वपति ने राज्य विस्तार तो नहीं किया पर समर्थ नागरिक तैयार करने के लिए जो भी उपाय संभव थे, उसने किए। उनके राज्य में सभी स्वस्थ, वीर और बहादुर नागरिक थे। यही कारण था कि उस छोटे-से राज्य से भी कोई टक्कर लेने की हिम्मत नहीं कर पाता था। सिकंदर ने अश्वपति की वीरता की गाथाएं सुन रखीं थी, इसीलिए उसने छल से रात में अश्वपति पर आक्रमण कर दिया। महाराज अश्वपति बंदी बना लिए गए। सिकंदर ने अश्वपति के शौर्य की परीक्षा लेने के इरादे से उसे बंधनमुक्त कर दिया और संधि कर ली। अश्वपति अपने पास हमेशा चार कुत्ते रखते थे। जब वह दरबार में पहुंचे तब कुत्ते भी उनके साथ थे। सिकंदर ने उनके पहुंचते ही व्यंग्य किया- महाराज ये भारतीय कुत्ते हैं? अश्वपति ने तुरंत उत्तर दिया- हां, ये छिपकर आक्रमण नहीं करते, शेरों से भी मैदान में लड़ते हैं। सिकंदर ने शेर और कुत्तों की लड़ाई के आयोजन का निर्देश दिया। शेर और कुत्तों की लड़ाई छिड़ गई। कुत्तों ने ऐसे दांत चुभाए कि शेर वहीं गिर पड़ा। अश्वपति ने ललकार कर कहा, आपकी सेना में कोई वीर है, जो कुत्ते को शेर से अलग कर दे? कई योद्धा आए पर वे कुत्तों के दांत न छुड़ा सके। अश्वपति के अपने अंगरक्षक को संकेत दिया।

५४३) देने का आनंद - स्वामी विवेकानंद के जीवन की यह एक घटना है। भ्रमण करने एवं भाषणों के बाद स्वामी विवेकानंद अपने निवास स्थान पर आराम करने के लिए लेटे हुए थे। उन दिनों वे अमेरिका में ठहरे हुए थे और वे अपने ही हाथों से भोजन बनाते थे। वे भोजन करने की तैयारी कर ही रहे थे कुछ बच्चे उनके पास आकर खड़े हो गए। उनके अच्छे व्यवहार के कारण बहुत बच्चे उनके पास आते थे। वे सभी बच्चे भूखे मालूम पड़ रहे थे। स्वामी जी ने अपना सारा भोजन बच्चों में बांट दिया। वहीं पर एक महिला बैठी ये सब देख रही थीं। उसने बड़े ही आश्चर्य से पूछा- आपने अपनी सारी रोटियां तो इन बच्चों को दे डाली, अब आप क्या खाएंगे? स्वामी जी मुस्कुराते हुए बोले- माता, रोटी तो मात्र पेट की ज्वाला शांत करनेवाली वस्तु है। यदि इस पेट में न सही तो उनके पेट में ही सही। आखिर वे सब भगवान के अंश ही तो हैं। देने का आनंद, पाने के आनंद से बहुत बड़ा है। अपने बारे में सोचने से पहले दूसरों के बारे में सोचना ज्यादा आनन्ददायी होता है।

५४४) पुरानी नाक ही ठीक है - एक गरीब मनुष्य ने देवता से वर प्राप्त किया था। देवता संतुष्ट होकर बोले- तुम ये पासा लो। इस पासे को जिन किन्हीं तीन कामनाओं से तीन बार फेंकोगे वे तीनों पूरी हो जाएंगी।

वह आनंदित हो घर जाकर अपनी स्त्री के साथ परामर्श करने लगा कि क्या वर मांगना चाहिए। स्त्री ने कहा- धन दौलत मांगो, किंतु पति ने कहा- देखो हम दोनों की नाक चपटी है, उसे देखकर लोग हमारी बड़ी हंसी करते हैं।

अत: प्रथम बार पासा फेंककर सुंदर नाक की प्रार्थना करनी चाहिए। किंतु स्त्री का मत वैसा नहीं था। अंत में दोनों में खूब तर्क प्रारंभ हुआ। आखिर पति ने क्रोध में आकर यह कहकर पासा फेंक दिया- हमें सुंदर नाक मिले, सुंदर नाक मिले, सुंदर नाक मिले।

आश्चर्य, जैसे ही उसने पासा फेंका, वैसे ही उसके शरीर में तीन नाकें उत्पन्न हो गईं। तब उसने देखा यह तो विपत्ति आ पड़ी। फिर उसने दूसरी बार पासा फेंक कर कहा- नाक चली जाए। इस बार सभी नाकें चली गईं। साथ ही अपनी नाक भी

चली गई। अब शेष रहा एक वर, तब उन्होंने सोचा यदि इस बार पास फेंककर चपटी नाक के बदले में सुंदर नाक प्राप्त करें, तो लोग अवश्य ही चपटी नाक के स्थान पर अच्छी नाक देखकर उसके बारे में पूछताछ करेंगे। फिर तो हमें सभी बातें बतानी पड़ेगी। तब वे हमें मूर्ख समझ कर हमारी और भी हंसी उड़ाएंगे। कहेंगे कि ये लोग ऐसे तीन वरों को प्राप्त करके भी अपनी अवस्था की उन्नति नहीं कर सके। यह सोचकर उन्होंने पासा फेंककर अपनी पुरानी चपटी नाक ही मांग ली। ठीक है, समझ बूझकर काम न करनेवाले लोग अवसरों को अपने हाथ से यूं ही गंवा देते हैं उनका लाभ नहीं उठा पाते।

५४५) सादगी का पाठ - ईरानी बादशाह अब्बास शिकार के लिए जंगल में भटक रहे थे। वहां उनकी भेंट एक चरवाहे बालक से हुई, जिसका नाम था मुहम्मद अली बेग। बादशाह उसकी हाजिरजवाबी से बेहद प्रभावित हुए और उसे अपने साथ ले आए। उन्होंने उसे अपना खजांची बना दिया। अली बेग पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ काम करने लगा। शाह अब्बास की मृत्यु के बाद उनका अल्पवयस्क पोता शाह सफी राजगद्दी पर बैठा। किसी ने शाह के कान भर दिए कि अली बेग राज्य के धन का गलत इस्तेमाल कर रहा है। शाह ने उस प्रकरण की जांच स्वयं अपने पास रखी और एक दिन बिना सूचना के उसकी हवेली का निरीक्षण करने जा पहुंचा। शाह ने हवेली के सब कमरों का निरीक्षण किया। थोड़ी सी वस्तुओं के अतिरिक्त वहां कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था। शाह निराश लौटने लगा तो खोजियों के संकेत पर शाह की नजर एक बंद कमरे की ओर गई। उसमें तीन मजबूत ताले लटक रहे थे। अब शाह की शंका को कुछ आधार मिला। उन्होंने पूछा, इसमें क्या चीज है, जिसके लिए इतने मजबूत ताले लगाए हैं? ताले खोले गए। शाह ने कमरे के बीच मेज पर एक लाठी, सुराही, कुछ बर्तन, कुछ पोशाक और दो मोटे कंबल देखे। अली बेग ने कहा, जब स्वर्गीय शाह मुझे यहां लाए थे, उस समय मेरे पास यही वस्तुएं थीं और आज भी मेरे पास अपना कहने को यही है। मैं इन चीजों से ही प्रेरणा ग्रहण करता हूं और उसी स्तर का जीवन बनाए रखता हूं। युवा बादशाह यह देखकर लज्जित हो गया।

५४६) बड़ों की बात मानो - एक बहुत घना जंगल था, उसमें पहाड़ थे और शीतल निर्मल जल के झरने बहते थे। जंगल में बहुत-से पशु रहते थे। पर्वत की गुफा में एक शेर-शेरनी और इनके दो छोटे बच्चे रहते थे।

शेर और शेरनी अपने बच्चों को बहुत प्यार करते थे। जब शेर के बच्चे अपने माँ बाप के साथ जंगल में निकलते तो उन्हें बहुत अच्छा लगता था, लेकिन शेर-शेरनी अपने बच्चों को बहुत कम अपने साथ ले जाते थे। वे बच्चों को गुफा में छोड़कर वन में अपने भोजन कही खोज में चले जाया करते थे। शेर और शेरनी अपने बच्चों को बार-बार समझाते थे कि वे अकेले गुफा से बाहर भूलकर भी न निकलें, लेकिन बड़े बच्चे को यह बात अच्छी नहीं लगती थी। एक दिन शेर-शेरनी जंगल में गए थे, बड़े-बच्चे ने छोटे से कहा- चलो झरने से पानी पी आएँ और वन में थोड़ा घूमें। हिरनी को डरा देना मुझे बहुत अच्छा लगता है। छोटे बच्चे ने कहा- पिता जी ने कहा है कि अकेले गुफा से मत निकलना। झरने के पास जाने को बहुत मना किया है। तुम ठहरो, पिताजी या माताजी को आने दो, हम उनके साथ जाकर पानी पी लेंगे।

बड़े बच्चे ने कहा- मुझे प्यास लगी है। सब पशु तो हम लोगों से डरते ही हैं। फिर डरने की क्या बात है?

छोटा बच्चा अकेला जाने को तैयार नहीं हुआ। उसने कहा- मैं तो माँ-बाप की बात मानूंगा। मुझे अकेला जाने में डर लगता है। बड़े भाई ने कहा- तुम डरपोक हो, मत जाओ, मैं तो जाता हूं। बड़ा बच्चा गुफा से निकला और झरने के पास

गया। उसने पेट भर पानी पिया और तब हिरनों को ढूंढते हुए इधर-उधर घूमने लगा। जंगल में उस दिन कुछ शिकारी आये हुए थे। शिकारियों ने दूर से शेर के बच्चे को अकेले घूमते देखा तो सोचा कि इसे पकड़कर किसी चिड़िया घर में बेच देने से अच्छे रुपये मिलेंगे। शिकारियों ने शेर के बच्चे को चारों ओर से घेर लिया और एक साथ उस पर टूट पड़े। उन लोगों ने कम्बल डालकर उस बच्चे को पकड़ लिया।

बेचारा शेर का बच्चा क्या करता, वह अभी कुत्ते जितना बड़ा भी नहीं हुआ था। उसे कम्बल में खूब लपेटकर उन लोगों ने रस्सियों से बाँध दिया। वह न तो छटपटा सकता था, न गुर्रा सकता था।

शिकारियों ने इस बच्चे को एक चिड़िया घर को बेच दिया। वहां वह एक लोहे के कटघरे में बंद कर दिया गया। वह बहुत दु:खी था। उसे अपने माँ बाप की बहुत याद आती थी। बार-बार वह गुर्राता और लोहे की छड़ों को नोचता था, लेकिन उसके नोचने से छड़ तो टूट नहीं सकती थी।

जब भी वह शेर का बच्चा किसी छोटे बालक को देखता तो बहुत गुर्राता और उछलता था। यदि कोई उसकी भाषा समझा सकता तो वह उससे अवश्य कहता- तुम अपने माँ-बाप तथा बड़ों की बात अवश्य मानना। बड़ों की बात न मानने से पीछे पश्चाताप करना पड़ता है। मैं बड़ों की बात न मानने से ही यहाँ बंदी हुआ हूं।

५४७) शेर को सवा शेर - मगन के काका बड़े चालाक थे। वह एक दिन मगर से बोले- मगन। पाव भर दूध तो ले आ। मगन-काका। पैसा निकालो। काका- पैसे से तो सभी दूध ले आते हैं। बिना पैसों के लाकर दिखाओ तो मानें। मगन- लो काका। दूध पिओ। काका- पर मगन, इसमें दूध हैं कहाँ? मगन- दूध हो तो सभी पी सकते हैं, पर बिना दूध के पीकर दिखाओ तो मानें। शेर को सवा शेर मिल ही जाता है।

५४८) कुत्ते के नाम कई - कई दिन से राजू का कुत्ता लापता था। आज वह अपने आप लौट आया था। राजू ने अपने दोस्तों को बुलाकर कहा, सब लोग देखो। कितना प्यारा कुत्ता है। यह खो गया था। अब फिर वापस आ गया है। इसका नाम मैंने जलेबी रखा है। अजीत बोला, राजू, तुमने कितना बेकार नाम रखा है। इसका नाम तो रसगुल्ला होना चाहिए। उन सबकी बहस के बीच राजू की माँ आ गई और बोली, सब लोग तैयार हो जाओ। हम सब मेले में चलेंगे। सभी बच्चे तैयार होकर मेले में गए। वहाँ भरपेट मिठाइयाँ खाईं और खूब मस्ती की। इधर राजू का कुत्ता फिर कहीं गायब हो गया। राजू इधर-उधर ढूंढ़ने लगा। इतने में राजू ने देखा कि एक छोटा लड़का उस कुत्ते को गोद में लेकर प्यार कर रहा है। उसके डैडी उसके पास खड़े देख रहे थे। वह लड़का अपने डैडी से कह रहा था, देखो डैडी। यह कितना प्यारा कुत्ता है। मैंने इसका नाम लड्डू रखा है। इतने में वह लड़का उस कुत्ते को लेकर राजू के पास आया और बोला, क्या नाम है तुम्हारा, दोस्त? राजू। मेरा नाम कमल है। आज से हम दोनों ही इसे प्यार किया करेंगे। राजू खुश हो गया। उसे अपना कुत्ता वापस मिल गया था और एक नया दोस्त कमल भी। आनंद बाँटकर खाने में हैं।

५४९) गीदड़ भी हो जाता है शेर - एक बूढ़ा शेर इतना कमजोर हो गया कि उसके लिए चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया। सारा दिन वह अपनी गुफा में चुपचाप पड़ा रहता था। जब इस बात का पता जंगल के अन्य प्राणियों को चला तो उन्होंने सोचा, मौका बढ़िया है पुराना हिसाब-किताब बराबर कर लेने का। सबसे पहले एक बैल गुफा में दाखिल हुआ और

उसने शेर को जोर से सींग मारी। शेर चुपचाप पड़ा रहा। फिर लोमड़ी अंदर आई और उसने शेर को काट खाया। एक के बाद एक छोटे-बड़े प्राणी गुफा में आते गए और वैर चुकाते गए। अंत में जब एक गधे ने आकर शेर को दुलत्ती मारी तब शेर की आँखों में आंसू आ गए। शक्तिशाली के अशक्त होते ही गीदड़ भी शेर हो जाता है।

५५०) भालू ने कहा था - दो मुसाफिर जंगल में मिले। दोनों खुश हुए। सोचा, एक से दो भले। अचानक कोई मुसीबत आ पड़े तो मिलकर सामना तो कर सकेंगे। तभी झाड़ियों में से एक भालू बाहर आया। भालू को देखकर एक मुसाफिर, जो पतला-दुबला था, फौरन पेड़ पर चढ़ गया। दूसरा, जो काफी मोटा था, उसके लिए तो पेड़ पर चढ़ना या तुरंत भाग निकलना संभव नहीं था। वह फौरन जमीन पर औंधा लेट गया। भालू उसके करीब आया। उसने साँस रोक ली। भालू ने सोचा, यह तो मुरदा है, इसको क्या मारना। सूंघ-साँघकर वह आगे बढ़ गया।

थोड़ी देर बाद पेड़ पर चढ़ा यात्री नीचे उतरा और मोटे सहयात्री से पूछा, यार। मैंने देखा, भालू तुमसे कानाफूसी कर रहा था। क्या कहा उसने? मोटे मुसाफिर ने जवाब दिया, भालू ने कहा कि जो वक्त पर काम न आए उसे मित्र नहीं कहते।

५५१) दादी मां का दोस्त - जब जूही स्कूल जाती तो उसकी दादी का घर रास्तें में पड़ता। दादी अकेली रहती थीं। उन्होंने एक तोता पाल रखा था। दादी सारे दिन तोते से बातें करती रहतीं। जैकी सुबह स्कूल जाती तो उसकी दादी खिड़की से कहतीं, गुड़ मॉर्निंग, जैकी। दादी खिड़की में बैठकर जैकी के आने का इंतजार करती रहतीं। रोज की तरह जैकी आज भी स्कूल जा रही थी। उसने आवाज सुनी, गुड मॉर्निंग, जैकी। किंतु जब उसने खिड़की की तरफ देखा तो दादी वहां नहीं थीं। जैकी को आश्चर्य हुआ। आज दादी खिड़की पर क्यों नहीं हैं? फिर भी यह आवाज तो उन्हीं की लगती है। वह दादी के घर का दरवाजा खोल तेजी से अंदर गई। दादी ने उसे देखा और पलंग पर लेटे लेटे ही बोलीं, आज मुझे जुकाम हो गया है बेटी। अत: गले में तकलीफ होने के कारण चिल्ला नहीं सकती। लेकिन आपने तो अभी अभी गुड मॉर्निंग किया था, दादी। दादी माँ मुस्कराईं। इतने में आवाज आई, गुड मॉर्निंग जैकी। जैकी इधर-उधर देखने लगी। अब दादी माँ को हँसी आ रही थी। तभी जैकी की नजर खिड़की के पास बैठे तोते पर पड़ी। तोता फिर बोला, गुड मॉर्निंग, जैकी। शुभ दिन। अच्छा, तो आप हैं जनाब। जैकी ने तोते के सिर पर हाथ फिराया, अब मैं तुम्हें रोज सुबह देखने आया करूंगी। नकल अच्छों की करो, बुरों की नहीं।

५५२) अपने अपने गधे - एक किसान और उसका बेटा एक गधे को शहर ले जा रहे थे। रास्ते में एक पनिहारिन ने उन्हें देखा और बोल उठी, लगता है, दोनों की अक्ल घास चरने गई है। साथ में गधा है, फिर भी दोनों पैदल जा रहे हैं। यह बात सुनकर बूढ़े किसान ने अपने बेटे को गधे पर बिठा दिया। कुछ दूर जाने पर उन्हें एक लकड़हारा मिला। उसने लड़के को गधे पर बैठा देखकर कहा, घोर कलियुग आ गया है। बूढ़ा बाप पैदल चल रहा है और मुस्टंडा बेटा गधे पर आराम से बैठा है। यह सुनना था कि बेटा गधे की पीठ से नीचे कूद पड़ा और उसने पिता को गधे पर बिठा दिया। अभी उसने सफर का आधा रास्ता भी तय नहीं किया था कि एक तेली सामने से गुजरा। वह पिता-पुत्र को देखकर बोला, वाह। क्या अंधेर है। बाप मजे से गधे पर बैठा है और बेटा... वह आगे कुछ कहे, इससे पहले ही बूढ़े किसान ने अपने बेटे को भी अपने साथ गधे की पीठ पर चढ़ा लिया। तभी कहीं से एक ब्राह्मण टपक पड़ा। पिता-पुत्र दोनों को गधे पर सवार देखकर वह बोला,

इस बेचारे गधे पर दोनों कैसे तनकर बैठे हैं। जरा भी दया-माया नहीं। राम, राम। पिता पुत्र ने ब्राह्मण का ताना सुनकर सिर खुजलाया और गधे पर से उतर गए। फिर दोनों ने मिलकर गधे को ही उठा लिया। आगे बढ़ते हुए दोनों एक पुल पर आए तो एक नाई की दृष्टि उन पर पड़ी। उससे हँसे बिना न रहा गया। भला गधे को कोई सिर-आँखों पर बैठाता है। उसके ठहाके से बिचककर गधा उछला और सीधा नदी के गहरे पानी में जा गिरा। पिता-पुत्र अवाक् देखते रह गए। सभी को प्रसन्न करनेवाले खुद दु:खी हो जाते हैं।

५५३) उपकार का बदला - हाथी पकड़नेवालों ने अफ्रीका के जंगल में एक बार हाथी फँसाने के लिए गढ्ढा बनाया और ढक दिया। रात में एक सिंह उस गढ्ढे में गिर पड़ा। सिंह किसी छोटे पशु को पकड़ने दौड़ा होगा और भूल से गड्ढे में जा पड़ा होगा। एक शिकारी उधर से निकला। उसने सिंह को गड्ढे में गिरा देखा। वीर पुरुष किसी को दु:ख में देखकर उसे मारते नहीं, उसकी सहायता करते हैं। सिंह बार-बार उछलता था, परन्तु गड्ढे के चारों ओर गड़ी नोकवाली लकड़ियों से उसे चोट लगती थी और वह फिर गड्ढे में गिर जाता था। शिकारी ने एक रस्सी में दो लकड़ियों को बाँधा और पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ पर रस्सी खींचकर उसने लकड़ियाँ उखाड़ दी। शिकारी ने नीचे से लकड़ियाँ इसलिये नहीं उखाड़ी कि कहीं गड्ढे से निकलने पर सिंह उसे मार न डाले। दो लकड़ियाँ उखाड़ने से सिंह को रास्ता मिल गया। वह उछलकर गड्ढे से बाहर निकल आया और जंगल में चला गया। वही शिकारी एक दिन एक झरने के किनारे पानी पीकर बंदूक रखकर बैठा था। वह बहुत थका था, इसलिए लेट गया और उसे नींद आ गयी। इतने में वहाँ एक चीता आया और शिकारी को मारने के लिए उस पर चढ़ बैठा, बेचारा शिकारी डर के मारे चिल्ला भी न सका।

इतने में एक सिंह जोर से गर्जा। उसकी गर्जना सुनकर चीता पूँछ दबाकर भागने लगा; पर सिंह चीते के ऊपर कूद पड़ा और उसने चीते को मार डाला। शिकारी समझता था कि चीते को मारकर सिंह अब उसे मारेगा; लेकिन सिंह आया और शिकारी के सामने बैठकर पूँछ हिलाने लगा। शिकारी ने पहचान लिया कि यह वही सिंह है, जिसे गड्ढे में से निकलने में शिकारी ने सहायता की थी। सिंह जैसा भयंकर पशु भी अपने उपकार करनेवाले को नहीं भूला था। तुम मनुष्य हो तुम्हें तो कोई थोड़ा भी उपकार करे तो नहीं भूलना चाहिए।

५५४) मूर्तिकार का सपना - एक मूर्तिकार ने एक रात विचित्र स्वप्न देखा। वह किसी छायादार पेड़ के नीचे बैठा था। अचानक उसे सामने एक पत्थर का टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया। उसने उसे उठा लिया फिर उसे सामने रखा और औजारों के थैले से छेनी-हथौड़ी निकालकर उसे तराशने के लिए जैसे ही पहली चोट की, पत्थर जोर से चिल्ला पड़ा- मुझे मत मारो। दूसरी बार वह रोने लगा। मूर्तिकार ने उसे छोड़ दिया। फिर उसने अपनी पसंद का एक अन्य टुकड़ा उठाया और उसे तराशने लगा। वह टुकड़ा चुपचाप वार सहता गया और देखते ही देखते उसमें से एक एक देवी की मूर्ती उभर आई। मूर्ति वहां पेड़ के नीचे रख वह आगे चला गया। फिर कुछ समय बाद वह उसी पुराने रास्ते से गुजरा। उस स्थान पर पहुंचकर उसने देखा कि उस मूर्ति की पूजा-अर्चना हो रही है, जो उसने बनाई थी। भीड़ लगी है, भजन आरती हो रही है, भक्तों की पंक्तियां लगी हैं। जब उसके दर्शन का समय आया, तो पास आकर उसने देखा कि उसकी बनाई मूर्ति के सामने न जाने क्या-क्या रखा है। जो पत्थर का पहला टुकड़ा उसने, उसके रोने

चिल्लाने पर फेंक दिया था वह भी एक ओर पड़ा है और लोग उसके सिर पर नारियल फोड़-फोड़ कर देवी की मूर्ति पर चढ़ा रहे हैं। तभी मूर्तिकार की नींद टूट गई। वह सपने के बारे में सोचने लगा। उसने निष्कर्ष निकाला कि जो लोग थोड़ा कष्ट झेल लेते हैं, उनका जीवन बन जाता है। विश्व उनका सत्कार करता है। पर जो डर जाते हैं और बचकर भागना चाहते हैं वे जीवन भर कष्ट झेलते हैं, उनका सत्कार कोई नहीं करता।

५५५) वैज्ञानिक बनने की चाह - किसी समय लंदन की एक बस्ती में एक अनाथ बालक रहता था। वह अखबार बेचकर किसी तरह अपना गुजारा करता था। कुछ समय बाद उसे एक जिल्दसाज की दुकान पर जिल्द चढ़ाने का काम मिल गया। उस बालक को पढ़ने का बहुत शौक था। वह पुस्तकों पर जिल्द चढ़ाते समय महत्वपूर्ण बातें व जानकारियां पढ़ता रहता था। एक दिन जिल्द चढ़ाते समय उसकी नजर एक विद्युत संबंधी लेख पर पड़ी। वह लेख उसे बहुत ही मनोरंजक लगा। उसने दुकान के मालिक से एक दिन के लिए वह पुस्तक मांग ली और रातभर में उस लेख के साथ ही पूरी पुस्तक भी पढ़ डाली। पुस्तक का उसके ऊपर गहरा असर पड़ा। इससे उसकी प्रयोग करने में जिज्ञासा बढ़ती गई और धीरे धीरे वह अध्ययन एवं परीक्षण के लिए विद्युत संबंधी छोटी-मोटी चीजें इधर-उधर से जुटाने लगा। बालक की इस बारे में रुचि देखकर एक ग्राहक उससे बहुत प्रभावित हुआ। वह खुद भी विज्ञान में गहरी दिलचस्पी रखता था। एक दिन वह बालक को अपने साथ भौतिकशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान डेवी का भाषण सुनाने ले गया। बालक ने डेवी की बातें ध्यान से सुनीं और उन्हें नोट भी किया। इसके बाद बालक ने उनके भाषण की समीक्षा करते हुए अपने कुछ परामर्श लिखकर डेवी के पास भेज दिए। डेवी को बालक की सलाह बहुत पसंद आई। उन्होंने उसे अपने यंत्र व्यवस्थित करने के लिए अपने पास रख लिया। बालक उनके साथ रहने लगा। वह उनके सहयोगी और नौकर दोनों की भूमिका निभाता रहा। वह दिनभर कामों में व्यस्त रहता, रात को अध्ययन करता। थकान होने पर भी उसके चेहरे पर शिकन तक नहीं आती थी। वह भौतिकी के क्षेत्र में खासकर विद्युत के क्षेत्र में बहुत कुछ करना चाहता था। आखिरकार अपनी मेहनत और संकल्प से उसने अपना सपना पूरा किया। वह एक महान वैज्ञानिक बन गया। आज दुनिया उस बालक को माइकल फैराडे के नाम से जानती है।

५५६) पुण्यात्मा का धर्म - राजा जनक का अंतिम समय आ गया था। उन्हें लेने के लिए स्वयं धर्मराज अपने साथियों के साथ आए। राजा जनक न्यायप्रिय व कर्त्तव्यनिष्ठ राजा थे। उन्होंने राजा होकर भी निर्लिप्त जीवन जिया और अपने तप में कोई कमी नहीं आने दी। स्वर्ग जाने से पहले मार्ग में पहले नरक आया। वहां प्राणियों को तरह-तरह की यातनाएं दी जा रही थीं। उनकी चीख-पुकार सुनकर राजा जनक ठहर गए। उन्होंने चीख-पुकार का कारण पूछा तो धर्मराज बोले, महाराज, यह नरक है। यहां पर उन व्यक्तियों को सजा दी जा रही है जिन्होंने अपने जीवन में बुरे कर्म किए हैं। यह सुनकर जनक बोले, क्या इन व्यक्तियों को इस पीड़ा से छुटकारा नहीं मिल सकता? धर्मराज बोले, नहीं महाराज, इन्होंने अपने जीते जी अनेक प्राणियों को सताया, कष्ट दिया, ऐसे में भला इन्हें मुक्ति कैसे मिल सकती है? जनक बोले, पर कोई तो उपाय होगा। इस पर धर्मराज कुछ सोचते हुए बोले, हां महाराज, एक उपाय तो है किंतु बहुत कठिन। यदि कोई व्यक्ति अपने तप का सारा पुण्य देने को तैयार हो जाए तो इन्हें मुक्ति दी जा सकती है। यह सुनते ही जनक बोले, तो

ठीक है। मैं अपने पूरे जीवन के पुण्य की कमाई इन पापात्माओं को मुक्त कराने के लिए दान करता हूं। यह सुनकर धर्मराज अचंभित रह गए और बोले, महाराज, जो कमाई आपने अपने कठिन तप के बल पर हासिल की, उसे आप इन पापात्माओं के लिए दान कर रहे हैं। यह सुनकर जनक बोले, धर्मराज, व्यक्ति का पहला धर्म मानव सेवा ही है। कहा भी गया है कि बुरों को मत मिटाओ बल्कि उनके अंदर छिपी बुराई को मिटाओ। मैं वही करने जा रहा हूं। हो सकता है कि मेरे ऐसा करने से आनेवाली पीढ़ियां भी मानव सेवा को ही सर्वोपरि समझ ईमानदारी व नेकी के रास्ते पर चलें। धर्मराज जनक की बात से संतुष्ट हो गए और उन्होंने सभी पापात्माओं को मुक्त कर दिया।

५५७) त्याग और लोभ - किसी नगर में एक व्यापारी रहता था। उसके पास बहुत धन था। संयोग की बात कि एक दिन उसके यहाँ एक साधु आया। उसे देखकर अचानक व्यापारी को जाने क्या हुआ कि उसकी झोली में उसने एक पैसा डाल दिया। साधु चला गया। व्यापारी अपने काम में लग गया। लेकिन उसके आश्चर्य का ठिकाना न हरा, जब उसने देखा कि शाम को उसे एक मोहर प्राप्त हुई। पैसे के बदले में मोहर। वह मारे खुशी के कूदने लगा, परंतु थोड़ी देर में उसकी सारी खुशी काफूर हो गई। उसके भीतर कोई कह रहा था, ओ मूर्ख। तूने साधु को सिर्फ एक पैसा ही क्यों दिया? यदि एक मोहर दी होती तो तू मालामाल हो जाता। अगले दिन वही साधु फिर आया। उसे देखते ही फौरन व्यापारी ने एक मोहर निकाली और उसकी झोली में डाल दी। मोहर लेकर साधु अपने रास्ते चला गया। पर अब व्यापारी के लिए वक्त काटना मुश्किल हो गया। एक-एक पल एक-एक युग जैसा लग रहा था। शाम ढल गई, रात हो गई; लेकिन उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई। वह सिर धुनने लगा। तभी भीतर से फिर आवाज फूटी-याद रख, त्याग फलता है, लोभ छलता है।

संसार में सबसे दयनीय वह है जो धनवान होकर भी बड़े दिलवाला नहीं है।

५५८) मैं तुझे तो कल देख लूंगा - सूफी संत जुनैद के बारे में एक कथा है। एक बार संत को एक व्यक्ति ने खूब अपशब्द कहे और उनका अपमान किया। संत ने उस व्यक्ति से कहा कि मैं कल वापस आकर तुम्हें अपना जवाब दूंगा। अगले दिन वापस जाकर उस व्यक्ति से कहा कि अब तो तुम्हें जवाब देने की जरूरत ही नहीं है। उस व्यक्ति को बेहद आश्चर्य हुआ। उस व्यक्ति ने संत से कहा कि जिस तरीके से मैंने आपका अपमान किया और आपको अपशब्द कहे, तो घोर शांतिप्रिय व्यक्ति भी उत्तेजित हो जाता और जवाब देता। आप तो सचमुच विलक्षण, महान हैं। संत ने कहा- मेरे गुरु ने मुझे सिखाया है कि यदि आप त्वरित जवाब देते हैं तो वह आपके अवचेतन मस्तिष्क से निकली हुई बात होती है। इसलिए कुछ समय गुजर जाने दो। चिंतन मनन हो जाने दो। कड़वाहट खुद ही घुल जाएगी। तुम्हारे दिमाग की गरमी यूं ही ठंडी हो जाएगी। आपके आंखों के सामने का अंधेरा जल्द ही छंट जाएगा। चौबीस घंटे गुजर जाने दो फिर जवाब दो। क्या आपने कभी सोचा है कि कोई व्यक्ति पूरे २४ घंटों के लिए गुस्सा क्षणिक ही होता है और बहुत संभव है कि आपका गुस्सा हो सकता है २४ सेकंड भी न ठहरता हो।

५५९) सुख और आनंद का इत्र - एक नगर के लोग बड़े दु:खी थे। अचानक एक दिन आकाशवाणी हुई कि लोग अपना-अपना दु:ख गठरी में बाँधकर ले जाएँ और शहर के बाहर अमुक जगह पर पटककर वहाँ से सुख बाँध ले जाएँ। लोग बड़े खुश हुए। उन्होंने अपने दु:खों की गठरी बाँधी और चल दिए। फिर दु:ख को फेंककर और सुख को लेकर वे

अपने अपने घर लौट आए। सारे शहर में सुख का साम्राज्य छा गया। लेकिन मुश्किल से दो दिन बीते होंगे कि लोग फिर दु:खी होने लगे- यह सोचकर कि उनका पड़ोसी जितना सुखी है, वे उतने सुखी क्यों नहीं हैं? दूसरे के पास यह है, वह है- पर उनके पास तो उतना नहीं है। लेकिन एक साधु मस्त थे और हँस रहे थे। वे उसके पास गए और बोले, महाराज, दु:ख हमारा पीछा नहीं छोड़ता, लेकिन आप इतने सुखी कैसे हैं? साधु बोले, बात यह है कि तुम लोग सुख बाहर खोजते हो, पर सुख बाहर है कहाँ, सुख तो अपने अंदर है।

सुख और आनंद ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना अधिक तुम दूसरों पर छिड़कोगे उतनी ही अधिक सुगंध तुम्हारे अंदर आएगी।

५६०) घर - एक सुबह छोटी सफेद चुहिया अपने पिंजरे में बंद ऊब रही थी। वह चुपचाप किसी तरह दरवाजा खोलकर बाहर निकल आई और दुनिया देखने चल दी। खुशबू लिए हुए प्यारी ठंडी हवा चल रही थी। वह दीवार पर बैठे अनेक पक्षियों से मिलती हुई फूलों की ओर भागी। तभी अचानक उसने एक बड़ी सी काली बिल्ली को आते हुए देखा। वह भागी और डरकर एक बड़े से पत्ते के नीचे छुप गई। तभी बूढ़े कछुए ने गरदन बाहर निकालकर पूछा, तुम मेरी क्यारी में क्या कर रही हो ? वह चुहिया अपने को कहीं और छुपाने के लिए भागी। भागते भागते वह माली के पांवों पर से गुजरी, जो वहां पौधों को पानी दे रहा था। शरारती चुहिया। इससे पहले कि तुम किसी खतरे में पड़ो, अपने बिल में वापस चली जाओ। उसने कहा। चुहिया बिल में लौट आई। वह अपने को सुरक्षित पा खुश थी। ठंडी सांस ले, उसने पनीर के टुकड़े को कुतरते हुए कहा, घर से बढ़कर और कोई स्थान नहीं है। अगर घर में शांति है तो अपने घर से बढ़िया जगह और क्या हो सकती है।

५६१) छिपा हुआ खजाना - एक बहुत बड़ा नगर था। उसके एक मोहल्ले में एक भिखारी रोज एक ही स्थान पर बैठकर भीख माँगा करता था। एक दिन वहीं उसके प्राण निकल गए। श्मशान में उसका क्रिया-कर्म कर दिया गया। उस मोहल्ले के लोग उस भिखारी को बराबर देखते थे। उन्हें लगा कि वह लगातार उसी जगह पर बैठता था, पता नहीं उसे क्या रोग था। वहाँ की मिट्टी गंदी हो गई होगी। यह सोचकर वे लोग फावड़े ले आए और उन्होंने उस स्थान की मिट्टी खोदना शुरू कर दिया। उन्होंने थोड़ा ही खोदा था कि उन्हें वहाँ छिपा खजाना दिखाई दिया। वे चकित रह गए। बेचारा भिखारी पैसे-पैसे के लिए तरसता रहा, जबकि उसके नीचे अपार धन था। जिस समय वे हैरानी से उस खजाने को देख रहे थे, कहीं से आवाज आई, हम सबकी यही हालत है। हमारे अंदर अनमोल संपदा छिपी पड़ी है, पर हम उसे नहीं पहचानते और रात-दिन दुनिया के आगे दीन बने रहते हैं।

५६२) सोना और पत्थर - एक आदमी के पास काफी सोना था। उसने उसे एक बक्से में भरकर खेत में गाड़ दिया। रोज रात को वह अकेला छिपकर खेत में पहुंचता, बक्सा खोदकर बाहर निकालता, सोने की अशर्फियों को टुकुर-टुकुर देखता और फिर बक्सा बंद कर वापस जमीन में गाड़ देता। एक दिन एक चोर ने उसे ऐसा करते देख लिया। जैसे ही वह आदमी अपने घर की ओर मुड़ा, चोर ने बक्सा खोद निकला। बक्से का ढक्कन खोलते ही अशर्फियों की चमक से चोर की आंखें चौंधिया गईं। फौरन उसने सारी अशर्फियां अपने झोले में भर लीं और खाली बक्से में पत्थर भरकर पुन: उसे गाड़ दिया। दूसरे दिन रात में वह आदमी जब अपने खेत पर आया तो उसने बक्सा पत्थरों से भरा

पाया। उसे चक्कर आ गया। कुछ देर बाद होश आने पर वह दहाड़ें मारकर चीखने-चिल्लाने लगा। गांववाले उसकी आवाज सुन खेत पर दौड़े आए। जब उन्हें हकीकत का पता चला तो उनमें से एक बूढ़े किसान ने कहा- जो धन किसी के काम नहीं आता उस धन का होना न होना बराबर है।

५६३) हवा पानी और धूप - गणेश ने अपनी छोटी बहन रमा को आवाज लगाई, रमा, तुम कहाँ हो? वह घर के पीछे खेत में थीं। बोली, मैं यहाँ हूं। तुम भी यहाँ आ जाओ। देखो, मैंने क्या ढूंढ़ निकाला है। गणेश बाहर गया तो रमा एक पौधे की पत्तियों को धीरे-धीरे छू रही थी, देखो, कितना सुंदर पौधा है। अपने आप उग आया है। गणेश बोला, इसे घर ले चलते हैं। रमा ने बात मान ली। वे दोनों उसे उखाड़कर घर ले आए और गमले में लगाने लगे। अरे। यह क्या कर रहे हो? माँ दौड़ती हुई बाहर आई। कुछ नहीं, माँ। इस पौधे को लगा रहे हैं। दोनों बोले। लेकिन यह बढ़ेगा कैसे? इसे बढ़ने के लिए हवा, पानी तथा धूप की जरूरत होती है। फिर क्या करें मम्मी? दोनों ने पूछा। इस पौधे के लिए खेत की मिट्टी ले आओ और गमले को आँगन में रख दो। दोनों खेत से मिट्टी खोद लाए और पौधे को लगा दिया। फिर गमला भी आँगन में रख दिया। रमा और गणेश दोनों उसमें पानी देते। कुछ ही दिनों में पौधा हरा-भरा हो गया। अब उसे हवा, पानी व धूप पर्याप्त मात्रा में मिलने लगी थी। दोनों उसे देखकर बहुत खुश थे। पलभर सोचे कि ईश्वर हमें हवा, पानी और धूप न दे तो?

५६४) पीड़ा की बात - शनिवार का दिन था, प्रात:काल का स्कूल और सायंकाल ४ बजे खेलों का आयोजन। बालक गांधी के पास घड़ी न थी और आकाश में बादल छाए रहने की वजह से उन्हें सही समय का अंदाजा न लगा। अत: वे खेल के आयोजन में देरी से पहुंचे। मास्टरजी ने कारण पूछा तो बालक गांधी ने सही बात बता दी, किन्तु मास्टरजी को उनकी बात का विश्वास न हुआ। उन्होंने उन पर एक आना जुर्माना कर दिया। बालक गांधी रो पड़े। एक आना जुर्माना देने की बात पर ही रो पड़ा, मोहन? उनके एक साथी ने कहा, अरे, तेरे पिता तो बड़े आदमी हैं। मैं इसलिए नहीं रो रहा, मेरे दोस्त कि मुझे एक आना जुर्माना देना पड़ेगा, मैं तो इसलिए दु:खी हो रहा हूं कि मुझ पर अविश्वास किया गया।

५६५) चीते से बदतर कौन - एक बार चीन के महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस अपने कुछ शिष्यों के साथ ताई नामक पहाड़ी से होकर कहीं जा रहे थे। एक स्थान पर वह सहसा रुक गए। शिष्यों ने जिज्ञासु नेत्रों से उनकी ओर देखा। वे बोले, आसपास कहीं कोई रो रहा है। इतना कहकर वे रुदन को लक्ष्य करके चल पड़े। शिष्यों ने उनका अनुगमन किया।

कुछ दूर जाकर उन्होंने पाया, एक स्त्री रो रही है। उन्होंने बड़ी सहानुभूति से उससे रोने का कारण पूछा। स्त्री ने बताया कि इस स्थान पर उसके पुत्र को एक चीते ने मार डाला। कन्फ्यूशियस ने कहा, किंतु तुम अकेली ही दिख रही हो। तुम्हारे परिवार के अन्य लोग कहां हैं? स्त्री ने कातर स्वर में कहा, अब मेरे परिवार में है ही कौन? इसी पहाड़ी पर मेरे ससुर और पति को भी चीते ने फाड़ डाला था। कन्फ्यूशियस ने आश्चर्य से कहा, तो तुम इस भयंकर स्थान को छोड़ क्यों नहीं देती? स्त्री बोली, इस स्थान को इसलिए नहीं छोड़ती कि यहां पर किसी अत्याचारी का शासन नहीं है।

कन्फ्यूशियस यह सुनकर शिष्यों से बोले, यद्यपि यह स्त्री करुणा और सहानुभूति की अधिकारिणी है तथापि इसकी बात ने हम लोगों को एक महान सत्य प्रदान किया हे। वह यह कि अत्याचारी शासक एक चीते से अधिक भयंकर होता है। अत्याचारी शासन में रहने की अपेक्षा अच्छा है कि किसी पहाड़ी अथवा वन में रह लिया जाए। किन्तु यह व्यवस्था

सार्वजनिक नहीं हो सकती। इसलिए जनता को चाहिए कि वह अत्याचारी शासन का समुचित विरोध करे और सत्ताधारी को अपना सुधार करने के लिए विवश करने का उपाय करे। अत्याचारी शासन को भय के कारण सहन करनेवाला समाज किसी प्रकार की उन्नति नहीं कर पाता। विकासहीन जीवन बिताता हुआ वह युगों तक नारकीय यातना भोगा करता है तथा सदा-सर्वदा अवनति के गर्त में ही पड़ा रहकर जिस तिस प्रकार जीवन व्यतीत करता रहता है। अत: दुष्ट के शासन को पलटने के लिए जनता सदैव जागरूक रहे।

५६६) हमशक्ल - एक बिल्ली ने दो बच्चों को जन्म दिया। दोनों रंग-रूप में एक जैसे थे। बिल्ली ने प्यार से एक का नाम पूपू रखा तथा दूसरे का नाम पीपी। दिन भर दोनों बच्चे हल्की गुनगुनी धूप में कुलांचे भरते-खेलते रहते। बिल्ली ने सोचा, मैंने इनका नाम तो रख दिया है, मगर दोनों एक जैसे होने की वजह से मुझे यह लगता है कि मैं जब पूपू को पुकारती हूं तो पीपी आ जाता है और पीपी को बुलाती हूं तो पूपू आ जाता है। उसने लाख कोशिश की कि बच्चे अपना नाम पहचानें, मगर वे बड़े नासमझ हैं, क्या करें? तभी उसे एक उपाय सूझा। क्यों न पूपू के गले में लाल फीता बांध दें और पीपी के गले में नीला, ताकि वह उन्हें पुकारे तो जो भी पास आए, उसे सही नाम से पहचान सके और उन्हें भी समझा सके कि तुम पूपू नहीं, पीपी हो। बिल्ली ने यही किया। अब वह पुकारती- पूपू... तो पीपी दौड़ता। उसे वह टोक देती, तुम पीपी हो। धीरे-धीरे बच्चे अपने नाम को खुद पहचानने लगे। वह पुकारती- पीपी... तो पीपी दौड़कर उसके पास आता। अब उनकी शक्ल से हू-ब-हू पहचानने में उसे कतई गड़बड़ नहीं होती थी। हर पहेली बूझी जा सकती है।

५६७) जड़ के प्रति भी दुर्व्यवहार नहीं होना चाहिए - एक दिन एक आदमी दौड़ता हुआ एक महात्मा के निवास पर पहुंचा। वहां पहुंचते ही उसने अपने जूते उतारकर दूर फेंक दिए और दरवाजे को जोर से धक्का दे दिया। उसके ऐसा करते ही जोरदार आवाज के साथ दरवाजा खुल गया। वह आदमी अंदर जाकर महात्मा के चरणों पर गिर पड़ा और बोला, मुझे आप ईश्वर का साक्षात्कार करा दीजिए। और कुछ नहीं चाहिए, मुझे बस प्रभु से मिलना है। कुछ देर तक महात्मा उसे देखते रहे, फिर थोड़ा नाराज हुए और बोले- यह भी कोई तरीका है। जरा सोच, तूने किस तरह जूतों को फेंका है और किस प्रकार से दरवाजा खोला। यह दरवाजा मेरी रक्षा करता है। यह जूते तेरी रक्षा करते हैं। कंकर-पत्थर से तेरे पैरों को बचाते हैं। मेरे निवास के द्वार ने और तेरे पैरों के जूते ने आखिर तेरा क्या बिगाड़ा है? महात्मा ने कहा, इस द्वार का मुझ पर और इन जूतों का तुझ पर बड़ा उपकार है। उनके साथ इस प्रकार का दुर्व्यवहार तुझे शोभा नहीं देता। ईश्वर से मिलने की बात बाद में करना। जा, पहले ईश्वर से क्षमा मांग कर आ। फिर अपने जूते और मेरे द्वार को छूकर क्षमा मांग। इसे बाद मेरे पास आना। तभी कुछ बात हो सकती है।

महात्मा की यह सुनकर वह आदमी बड़े अचंभे में पड़ गया। सोचने लगा कि मैंने जो किया उसमें तो मेरी भगवान से मिलने की प्यास दिखनी चाहिए थी। लगना चाहिए था कि मैं भगवान की प्राप्ति के लिए कितना लालायित हूं, मुझे कितनी जल्दी है। उसकी सराहना करने के स्थान पर महात्मा मुझे डांट रहे हैं। कह रहे हैं जूतों से क्षमा मांगो।

महात्मा ने उसकी यह हालत देखी तो बोले, जब तक किसी के भी प्रति तेरा दुर्व्यवहार बना रहेगा, तब तक तू भक्ति के पथ पर आगे बढ़ने की योग्यता नहीं रखता।

५६८) भूखे का धर्म - एक बार एक गुरु के शिष्य ने भूख से व्याकुल भिखारी को धरती पर तड़पते देखा तो बोला, अरे। इस तरह धरती पर क्यों पड़ा है? भगवान की शरण में चल। तेरे मन को शांति मिलेगी। पर शिष्य की बात मानो उस भिखारी ने सुनी ही नहीं। शिष्य ने अपने गुरु से जाकर सारी बात कही। गुरु स्वयं चलकर भिखारी के पास गए। उसकी दशा देखकर उसके लिए भोजन मँगाया और फिर प्यार से उसे खिलाया। शिष्य को बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला, भगवन्, आपने इसे कुछ उपदेश तो दिया ही नहीं। भोजन करके आराम से सुला दिया। भला ऐसे जीवोद्धार कैसे होगा? गुरु मुस्कुराए और बोले, यह भिखारी कई दिनों का भूखा था। भूखा मनुष्य भला धर्म का क्या पालन करेगा। भूखे को भोजन कराना ही सबसे पहला और बड़ा धर्म है। जब यह स्वस्थ हो लेगा, तभी तो ज्ञान और धर्म की बातें सुनेगा। दुर्बल शरीर मन को भी दुर्बल बना देता है।

५६९) चमत्कारी रंग का डिब्बा - पिंकी को चित्रकला बहुत पसंद थी। वह हमेशा बैठी-बैठी चित्रकारी करती रहती। एक दिन उसके चाचा उसके लिए एक सुंदर सा रंग का डिब्बा ले आए और पिंकी से बोले, यह डिब्बा चमत्कारी है। पिंकी डिब्बा लेकर कमरे में गई। कागज-ब्रश निकालकर उसने सोचा कि उसे क्या बनाना चाहिए। उसने तितली बनाने का निश्चय किया और थोड़ी ही देर में दो सुंदर तितलियां बना दीं। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह इतना सुंदर चित्र बना सकती है। वह मन-ही-मन खुश हुई और अपनी ही प्रशंसा करने लगी। जैसे ही उसने अपनी प्रशंसा की, दोनों तितलियां फुर्र से उड़ गईं। अब पिंकी ने चिड़िया बनाने की सोची और थोड़ी ही देर में बहुत ही खूबसूरत दो चिड़ियां बना डालीं। चिड़ियों की खूबसूरती देखकर वह प्रसन्न हुई। पर जैसे ही उसने अपनी प्रशंसा की, दोनों चिड़ियां चीं-चीं करती हुई फुर्र हो गई। पिंकी इनके पीछे दौड़ने लगी। वह उन्हें पकड़ लेना चाहती थी कि इतने में उसके चाचा आ पहुंचे। वे उससे बोले, मैंने तुमसे कहा था न कि रंग का डिब्बा चमत्कारी हे। अपने मुंह से अपनी तारीफ नहीं करनी चाहिए।

५७०) नन्हा भूरा मेमना - सुबह की सुनहरी धूप में एक नन्हा भूरा मेमना टहलने निकला। कहां जा रहे हो, मेमने? सब बड़ों ने पूछा। घूमने। उसने शांति से उत्तर दिया। पर उसके मन में तो कुछ और था। वह गांव की पाठशाला में जा पहुंचा। उसने पाठशाला का दरवाजा खटखटाया। कौन है? मास्टरजी ने पूछा। मैं हूं नन्हा मेमना। क्या काम है? पढ़ना चाहता हूं, मास्टरजी। मास्टरजी हैरान रह गए। उन्होंने तुरंत मेमने को भीतर बुला लिया। कक्षा खत्म हुई तो शाम को वह पहाड़ी के नीचे अपने परिवार के पास पहुंचा। सारा दिन वह गायब रहा था। सब लोग बेचैन थे। प्रश्न पर प्रश्न करने लगे, कहां थे दिनभर? क्या कर रहे थे? वह चुप रहा। कुछ भी न बोला। फिर एक दिन लोग चकित रह गए। नन्हा भूरा मेमना तस्वीरों से भरी कहानियों की किताब लाया अरौर सबसे बोला, आओ, मेरे पास बैठो। मैं तुम्हें कहानियां सुनाता हूं। बस, फिर क्या था। उसके आसपास एक भीड़ जमा हो गई। सब दिलचस्पी से रंग-बिरंगे चित्र देखते रहे और कहानी सुनते रहे। यह आज से हमारा नन्हा भूरा राजकुमार मेमना है। सब एक साथ बोले। नेक बच्चे सभी को प्यारे लगते हैं।

५७१) गुरु चेला - एक गुरु थे। उनके पास एक शिष्य रहता था। उसे एक दिन किसी काम से कहीं जाना था। वह चला तो रास्ते में जोरों से वर्षा होने लगी। शिष्य लौट आया और गुरु से बोला, गुरुजी, मूसलाधार बरसात हो रही है। रास्ते में नाले पड़ेंगे, मैं नाले कैसे पार करूंगा? गुरुजी ने कहा, भगवान का नाम लेना, पार हो जाओगे। शिष्य को गुरु के प्रति

बड़ी श्रद्धा थी। वह चल दिया। रास्ते में उसे गहरा नाला मिला। उसने पूरी श्रद्धा से गुरु के नाम का स्मरण किया और नाला पार कर गया। अगले दिन गुरु को कहीं जाना था। वह चले। आगे बढ़ने पर नाला आया। नाला बड़ा गहरा था और धारा तेजी से बह रही थी। पानी में पैर डालते ही गुरु के मन में शंका उत्पन्न हुई कि क्या मैं नाला पार कर सकूँगा? शंका उपजी कि गुरुजी वहीं डूब गए। शंका डुबाती है, श्रद्धा उबारती है।

५७२) मजबूर तोता - एक चिड़ियाघर में शरारती तोता रहता था। रोज सुबह वह अपने मालिक के हाथ से हरी मिर्च , सेब, फलियाँ इत्यादि अच्छी अच्छी चीजें खाता रहता। लेकिन उसे पिंजरे में बंद रहना पसंद नहीं था। दूसरे दिन सुबह मालिक ने उसे नाश्ता कराने के लिए जैसे ही पिंजरा खोला, वह फुर्र से उड़कर पेड़ की डाली पर जा बैठा। मालिक परेशान हो गया। देखो तो, आज तुम्हारे लिए कितनी अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए लाया हूं। मालिक काफी देर तक उसे ललचाता रहा, लेकिन तोता नहीं आया। मालिक की आवाज सुनकर चिड़ियाघर की बिल्ली बाहर आकर बोली, अच्छी बात है। अगर तू मालिक की बात नहीं मानता तो मैं तुझे बताती हूं। इतना कहकर वह तोते के ऊपर झपट पड़ी। बचाओ, बचाओ। तोता चिल्लाया और घबराकर फिर अपने पिंजरे में घुस गया।

५७३) मां और सर्वज्ञ पुत्र - सदियों पुरानी बात है। आठ साल का एक बालक लौकिक संसार के सुखों का परित्याग कर वीतरागी मार्ग पर चलने निकला तो उसके सामने यह बड़ा सवाल खड़ा हो गया कि अपनी मां के स्नेहांचल को कैसे छोड़ा जाए। त्याग के बिना तत्वज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती थी। समय ने उस बच्चे के लिए कुछ और ही तय कर रखा था। शंकर नाम का वह तेजस्वी बालक बाद में आदि शंकराचार्य के नाम से विख्यात हुआ। जब उनकी माता विशिष्टा देवी ने उन्हें रोकना चाहा तो उन्होंने अपनी माता को एक ज्ञानगाथा सुनाई, जो महर्षि महाज्ञानी नारद से संबंधित है। दासी पुत्र नारद जब मात्र पांच वर्ष के थे, तब वे अपने स्वामी की अतिथिशाला में अतिथि महात्मनों के मुख से हरिकथा सुनकर साक्षात हरि से मिलने के लिए व्याकुल हो गए। मगर अपनी मां के स्नेह के कारण गृह त्याग का साहस न जुटा पाए। एक रात सर्पदंश से मां की मृत्यु हो गई। इसे भगवत्कृता मानकर नारद ने गृह त्याग कर दिया। यह कथा सुनाकर बालक शंकर ने अपनी मां से कहा, मां जब नारद ने गृह त्याग किया तब वे मात्र पांच वर्ष के थे। उन्हें मातृ वियोग सहन करना पड़ा था। मैं तो आठ वर्ष का हूं और मेरे ऊपर तो मातृछाया सदैव रहेगी चाहे कहीं भी क्यों न रहूं। मां के प्रति शंकराचार्य की अटूट भक्ति थी।

जब उन्होंने मां को छोड़ा तो बार-बार आदि शंकराचार्य ने अपने निर्णय पर कहा, मैं कोई पाषाण हृदय नहीं हूं, जो मां को रोता-बिलखता छोड़कर जा रहा हूं। मेरी मां ने जब संतान मांगी थी तो उन्हें बता दिया गया था कि पुत्र यदि अल्पज्ञ होगा तो दीर्घजीवी होगा और सर्वज्ञ होगा तो अल्पजीवी होगा। मां ने तब सर्वज्ञ मांगा था। अल्पायु में ही मुझे बहुत कुछ करना है, इसलिए वृहत्तर कल्याण की बलिवेदी पर मैं अपनी मातृभक्ति का अर्घ्य दे रहा हूं। बालक के रूप में भी ऐसा था आदि शंकराचार्य का तेज।

५७४) मेहनत बनी पहचान - निकोला टेस्ला को बचपन से ही दृष्टिभ्रम की शिकायत थी। उनके बड़े भाई की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई, उस समय निकोला की आयु बहुत कम थी। भाई की मृत्यु का उनके जीवन पर बहुत बुरा असर पड़ा। उनके

माता-पिता एवं मित्रों को लगता था कि वह जीवन में कभी कुछ नहीं कर पाएंगे। परंतु उन्हें बचपन से ही बिजली के उपकरणों को ठीक करना बेहद पसंद था। वह बिजली के उपकरणों को लेकर उनसे कुछ न कुछ बनाते रहते थे। उन्हें ऐसा करते देख दोस्तों ने उन्हें पागल कहना शुरू कर दिया। लेकिन वह अपने मित्रों की इन बातों पर ध्यान नहीं देते थे। उन्होंने बिजली के उपकरणों का इतनी गहनता से अध्ययन कर लिया कि उन्हें लगता था वह उनसे अनेक नए एवं लाभकारी उपकरण बना सकते हैं। उनके पास सुविधाओं का अभाव था, दूसरा उन्हें दृष्टिभ्रम की शिकायत थी और सभी उन्हें मानसिक रूप से कमजोर समझते थे। ऐसे में किसी को भी उनसे बहुत उम्मीद नहीं थी। इन बातों को जानकर उन्होंने अपनी कल्पना को अपना हथियार बनाया और कल्पना के दम पर अपनी खोज शुरू कर दी। उन्होंने कई आविष्कार किए, जिनमें ऑल्टरनेटिंग करंट मोटर, रेडियो, एंप्लीफायर, वायरलेस, फ्लोरोसेंट लाइट, लेजर बीम, रिमोट कंट्रोल आदि प्रमुख हैं। उन्होंने तीन सौ से ज्यादा आविष्कार पेटेंट कराए। कुछ ही समय में दुनिया में उनके आविष्कारों की धूम मच गई और निकोला टेस्ला अनेक परेशानियों और बाधाओं के बावजूद एक प्रसिद्ध आविष्कारक बन गए। उनका कहना था कि यदि आप लोगों की परवाह किए बिना पूर्ण समर्पण के साथ अपने नेक कार्यों को पूरा करने में लगे रहते हैं तो आप इतिहास रच देते हैं। इसलिए आप अपनी रुचि के कार्यों में लगे रहें, लगातार मेहनत से कमजोर दिमाग भी हर बाधा पर विजय प्राप्त कर लेता है।

५७५) साध्वी का संदेश - कैथेरिन इटली की एक स्नेहमयी साध्वी थी। बचपन से ही उन्होंने अपना जीवन परमात्मा के ध्यान-भजन और लोकसेवा में लगा दिया था। उनकी दयालुता, सेवा-भाव और भगवतप्रेम से प्रभावित होकर उनकी कई शिष्याएं बन गई थी। इन्हीं में एक शिष्या एण्ड्रिया भी थी, किंतु वह कैथेरिन से मन ही मन ईर्ष्या करती थी। जब उसे कैथरिन के खिलाफ कोई और बात नहीं मिली, तो उसने उन पर व्यभिचार का कलंक लगाकर उन्हें बदनाम करना शुरू किया। कैथेरिन ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। दैवयोग से एण्ड्रिया के शरीर में एक फोड़ा हो गया, जो सड़ गया और उससे बड़ी दुर्गंध आने लगी। सभी शिष्याएं उससे दूर रहने लगीं। जब कैथेरिन को यह मालूम हुआ तो वह नियमित रूप से उसकी सेवा-सुश्रुषा करने लगी। एण्ड्रिया पर इसका भी कोई असर नहीं हुआ। वह इसे ढोंग कहती थी। कैथेरिन की माता ने जब यह सुना, तो उससे रहा न गया और वह बोली, बेटी, यह तेरी इतनी बदनामी करती है, फिर भी तू इसकी सेवा करती है। इस आश्रम को छोड़कर आराम से जीवन बिता। कैथेरिन ने जवाब दिया, मां, मनुष्य न मालूम कितनी बार ईश्वर के अस्तित्व को नकार देता है, मगर उस दयालु परमेश्वर की करुणा में क्या कभी कमी आई? जब प्रभु की इच्छा है कि मैं लोगों की सेवा करूं, तो मैं अपने को इससे अलग क्यों कर लूं? यह सुनकर माता की आंखें छलछला आईं। कैथेरिन नियमित रूप से एण्ड्रिया की सुश्रूषा करती रहीं। आखिर उसकी आंखें खुलीं, उसके पापी मन ने उसे फटकार लगाई कि नाहक ही वह एक पवित्र स्त्री को बदनाम करती रही है। पश्चात्ताप से उसका पाषाण हृदय पिघल गया। वह कैथेरिन के चरणों पर गिरकर बोली, बहिन। तू मनुष्य नहीं, देवी है। मैंने तुझे नाहक बदनाम किया मुझे क्षमा करो। कैथेरिन ने उसे क्षमा करते हुए गले लगा लिया।

५७६) छोटी सी बात - जर्मनी के उद्योगपति कनिंघम व्यापार जगत में नामी हस्ती थे। कोई ऐसा दिन नहीं होता था, जब उनके बारे में कोई समाचार चर्चा बनकर अखबारों में ना छपता हो। एक बार उनके बारे में एक समाचारपत्र में कुछ

आलोचनात्मक समाचार प्रकाशित हो गया। कनिंघम ने जब यह सुना तो उत्तेजित हो गए और समाचारपत्र लेकर अपने मंत्री मित्र के घर की ओर चल दिए। मित्र के सामने पहुंचकर अखबार उसके सामने रखकर गुस्से में बोले, अरे भाई, मैं तुम्हारा मित्र हूं, फिर भी अखबार वाले मेरे बारे में ऐसा उल्टा सीधा छाप रहे हैं। लानत है हमारी मित्रता पर। मैं चाहता हूं कि इस अखबार पर मानहानि का मुकदमा कर दूं और इस काम में तुम मेरी मदद करोगे। मंत्री जी ने देखा तो कनिंघम गुस्से से इधर-उधर टहल रहे थे। उन्होंने कनिंघम को पहले तो कुर्सी पर बैठाया और फिर उसे ठंडा पानी पिलाते हुए बोले, मुकदमा दायर करने से क्या हासिल होगा? पहले यह बताओ कि यह समाचार तुमने स्वयं पढ़ा था या किसी और ने तुम्हें इसके बारे में बताया था? कनिंघम झिझकते हुए बोले, अरे भाई, मेरे पास इतना वक्त ही कहां है कि अखबार पढ़ सकूं? कनिंघम के मंत्री दोस्त ने उन्हें समझाते हुए कहा, मैंने भी यह अखबार सुबह पढ़ा था, मगर मेरी नजर इस समाचार पर नहीं गई थी। आधे से ज्यादा लोग तो मोटी-मोटी खबरें पढ़कर ही अखबार किनारे कर देते हैं। जिन्होंने पढ़ा भी होगा, उन्होंने भी इस समाचार को अपने महत्व का न जानकर इसकी चर्चा ही नहीं की होगी। इसलिए अपना दिमाग ठंडा रखो और इस खोखले समाचार और मुकदमे की बात को दिमाग से निकाल दो। इसे तूल देकर तुम नाहक इसकी अहमियत बढ़ाना क्यों चाहते हो? मित्र की बात कनिंघम की समझ में आ गई और राई का पहाड़ बनते-बनते रह गया।

५७७) संत की पहचान - शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास ने शिवाजी को बचपन से ही आध्यात्मिक शिक्षा दी थी। वह समय-समय पर अपने कुछ शिष्यों को लेकर शिवाजी का हालचाल जानने और गंभीर विषयों पर परामर्श देने के लिए उनके पास जाते थे। एक बार वह कुछ शिष्यों को साथ लेकर शिवाजी से मिलने जा रहे थे। रास्ते में उनके शिष्यों को भूख-प्यास सताने लगी। गुरु उनसे कुछ दूर आगे-आगे चल रहे थे। बीच में उन्होंने एक गन्ने का खेत देखा। भूख और प्यास न रोक पाने के कारण वे उस खेत में घुस गए और सबने एक-एक गन्ना अपने लिए उखाड़ लिया और चूसने लगे। तभी खेत का मालिक वहां आ पहुंचा और देखते ही वह समर्थ रामदास के शिष्यों की ओर डंडा लेकर दौड़ा। वे सब अपने गुरु की शरण में भागे। तब खेत का मालिक भी उनका पीछा करते हुए वहां गया। उसे आते देख रामदास ने अपने शिष्यों को आगे बढ़ने के लिए कहा। शिष्य बिना पीछे मुड़े तेजी से आगे बढ़े। बाद में रामदास आए। उन्होंने उन शिष्यों को गलत आचरण के लिए काफी फटकारा। कुछ देर बाद सभी शिवाजी के महल में पहुंच गए। वह अपने गुरु के स्वागत के लिए स्वयं बाहर आए और गुरु को प्रणाम किया। वे गुरु को नहाने-धोने के लिए स्नान घर ले गए, वहां अचानक उनकी नजर गुरु की खुली पीठ पर पड़ी, जिस पर डंडे की चोट के लाल निशान और घाव थे। शिवाजी ने चिंतित होकर उसका कारण पूछा। रामदास उत्तर में मौन ही रहे। तब शिवाजी ने उनके शिष्यों से अपने गुरु की ऐसी बुरी दशा का कारण पूछा तब उन लोगों ने बहुत ही संकोच के साथ रास्ते में हुई घटना का विवरण सुना दिया। शिवाजी को यह सुन आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि वह जानते थे कि एक सच्चा संत प्रियजनों पर आई विपदा अपने ऊपर ले लेता है। यही उसकी पहचान है।

५७८) मुक्ति की तलाश - जापान में नानहेन नामक एक परम ज्ञानी फकीर थे। एक दिन एक व्यक्ति उनके पास पहुंचकर बोला, मैं सन्यास लेना चाहता हूं। इसके लिए मैंने अपने घर-परिवार, रिश्ते-नाते सबको छोड़ दिया है। फकीर ने पूछा, क्या तुम बिल्कुल अकेले हो? तुम्हारे साथ वास्तव में कोई नहीं है। व्यक्ति बोला, आप मेरे आगे-पीछे देख

लीजिए, कोई नहीं मिलेगा। फकीर बोले, अपनी आंखें बंद करो। अंदर झांककर देखो कि वहां कोई और तो नहीं है? कुछ देर वटवृक्ष की छाया में बैठकर सोचो। थोड़ी देर बाद आना। वह व्यक्ति वटवृक्ष की छाया में बैठकर ध्यान करने लगा। जब उसने आंखें बंद कीं तो उसे अपने वृद्ध माता-पिता, पत्नी और बच्चों की छवि नजर आने लगी। वह चिंतित हो गया। घबराकर उसने अपनी आंखें खोलीं तो फकीर को अपने पास खड़ा पाया। व्यक्ति ने कहा मैं तो अपना परिवार, नाते-रिश्ते सब पीछे छोड़ आया था, लेकिन यहां पर आंखें बंद करते ही उनकी छवि सामने घूम रही है। इस पर फकीर बोले, ध्यानमग्न होकर उन व्यक्तियों को अपने दिमाग से निकालने का प्रयत्न करो। कुछ देर बाद मेरे पास आना। दो घंटे बाद युवक ने फकीर का दरवाजा खटखटाया तो फकीर बोले, कौन है? युवक बोला, मैं हूं। फकीर ने कहा, अब भी तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारा मैं तुम्हारे साथ है। अगर तुम इस मैं और भीड़ को छोड़ सको तो फिर यहां आने की जरूरत ही नहीं रह जाएगी। तुम मैं से मुक्ति पा लो तो फिर सन्यास लेने का भी कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। व्यक्ति फकीर की बात समझ गया।

५७९) गुरु नानक की नमाज - एक बार गुरुनानक सुल्तानपुर पहुंचे। उनके प्रति लोगों की श्रद्धा देख वहां के काजी को ईर्ष्या हुई। उसने सूबेदार दौलतखां के खूब कान भरे और कहा कि यह कोई पाखंडी है जो लोगों को बहकाता है। सूबेदार ने नानकदेव को बुलावा भेजा, किंतु उन्होंने उस ओर ध्यान नहीं दिया। दोबारा सिपाही के आने पर वह गए तो सूबेदार ने डांटते हुए पूछा, पहली बार बुलाने पर क्यों नहीं आए? नानक देव ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया, मैं खुदा का बंदा हूं, तुम्हारा नहीं। सूबेदार ने कहा, अच्छा। तो क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि किसी से मिलने पर पहले उसे सलाम किया जाता है? नानकदेव ने कहा, मैं खुदा के अलावा और किसी को सलाम नहीं करता। क्रोधित होकर सूबेदार बोला, तब फिर खुदा के बंदे। मेरे साथ नमाज पढ़ने चल। नानकदेव उसके साथ मस्जिद गए। सूबेदार और काजी नीचे बैठकर नमाज पढ़ने लगे, मगर गुरुनानक वैसे ही खड़े रहे। नमाज पढ़ते-पढ़ते काजी सोचने लगा कि आखिर उसने इस दंभी को झुका ही दिया, जबकि सूबेदार का ध्यान घर की ओर लगा हुआ था क्योंकि उस दिन अरब का एक व्यापारी बढ़िया घोड़े लेकर उसके पास आने वाला था। नमाज खत्म होने पर वे दोनों जब उठ खड़े हुए, तो उन्होंने नानकदेव को चुपचाप खड़ा पाया। सूबेदार को गुस्सा आया। वह बोला, तुम सचमुच ढोंगी हो। खुदा का नाम लेते हो, मगर नमाज नहीं पढ़ते। नानकदेव बोले, नमाज पढ़ता भी तो किसके साथ, आप लोगों के साथ, जिनका ध्यान खुदा की तरफ था ही नहीं? क्या आपका ध्यान उस समय बढ़िया घोड़े खरीदने की तरफ था या नहीं? और ये काजी जी तो उस समय मन ही मन खुश हो रहे थे कि उन्होंने मुझे मस्जिद में लाकर बड़ा तीर मार लिया है। दोनों शर्मिंदा हो गए और वे गुरुनानक के चरणों पर गिरकर उनसे क्षमा मांगने लगे।

५८०) राजकुमारी का ज्ञान - राजकुमारी मल्लिनाथ जैनों की उन्नीसवीं तीर्थंकर मानी जाती हैं। सुंदर होने के साथ वह विदुषी भी थी। उनके सौंदर्य पर मुग्ध होकर उनसे विवाह के लिए राजकुमारों के प्रस्ताव आने लगे, किंतु उनके पिता मिथिला नरेश कुम्भा ने उन प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया। इससे वे राजकुमार नाराज हो गए और उन्होंने मिथिला पर आक्रमण कर दिया। अकेला राजा उन सबका मुकाबला करने में असमर्थ थे। अपने पिता को पराजित होते देख मल्लिनाथ ने सभी राजाओं को राजमहल के एक कमरे में बुलवाया। वे राजा कमरे में खड़ी मल्लिनाथ का अनुपम सौंदर्य

देख कर दंग रह गए। लेकिन उन्हें यह देख और आश्चर्य हुआ कि हूबहू वैसी ही आकृति द्वार के अंदर से आ रही है। यह और कोई नहीं स्वयं मल्लिनाथ थीं, कमरे में उनकी स्वर्ण प्रतिमा रखी हुई थी। मल्लिनाथ अंदर आईं और उन्होंने प्रतिमा के सिर का ढक्कन खोल दिया। इससे कमरे में इतनी दुर्गंध भर गई कि सबका वहां बैठना मुश्किल हो गया। सबने नाक-भौं सिकोड़ी और वे वहां से जाने लगे। तब मल्लिनाथ बोलीं, यह दुर्गंध इस स्वर्ण-प्रतिमा के मुख में डाली हुई सड़ी वस्तु की थी। जब इसकी दुर्गंध असह्य हो सकती है, तब यह भी सत्य है कि मनुष्य देह में संचित नाना द्रव्यों की दुर्गंध असहनीय हो सकती है। आप लोग मेरे बाह्य सौंदर्य पर मुग्ध हैं, मगर इस शरीर में भी सड़ा-गला तत्व विद्यमान है। सांसारिक सुख-भोग क्षणिक रहता है और वह मनुष्य के पाप की गर्त की ओर ले जाता है। इसीलिए मैंने निश्चय किया है कि राजसी सुख-वैभव त्यागकर साधुओं जैसा निर्मल जीवन व्यतीत करूं। आपकी भलाई भी इसी में हैं कि सत्कर्म करते हुए आप प्रजा की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखें। इन शब्दों का इतना असर पड़ा कि उनमें से कई राजाओं ने अपना राजपाट उत्तराधिकारियों को सौंप दिया और जैन भिक्षु बन गए।

५८१) घरवाली ने वहां से खिसकने में ही भलाई समझी - एक जंवाईजी पहली बार पत्नी को लेने ससुराल पधारे। ससुराल में उनका बहुत मान-सम्मान हुआ। जंवाईजी अकेले ही आए थे। भोजन का समय आया और सबसे पहले मिठाई खाई। मिठाई से तृप्त करवाने के बाद साग और रोटी का समय आया। जंवाईजी के लिए बहुत छोटे और पतले फुलके बनाए जा रहे थे क्योंकि लड़की ने मां से कहा था कि मेरे पति टिक्कड़ नहीं खाते। नफासत से खाना पसंद करते हैं इसलिए फुलके छोटे और पतले बनाना। सासूमां खुद पास बैठकर बहुत प्रेम से खिला रही थी। इतने पतले और छोटे फुलके देखकर जंवाईजी ने एक निवाले में एक रोटी खानी शुरू कर दी। यह देखकर साथ में बैठे साले-संबंधी मन ही मन हंसने लगे। जब पत्नी ने यह देखा तो सोचा कि इस तरह तो वे पीहर में मेरी और अपनी इज्जत खराब करवा देंगे। जग-हंसाई को टालने के लिए उसने एक जतन किया। वह दरवाजे की आड़ में खड़ी हो गई और जैसे ही पति से नजरें मिलीं उसने पहले एक उंगली फिर चार उंगलियां उठा कर इशारा किया कि एक रोटी के चार ग्रास करो। जंवाईजी ने समझा कि पत्नी कह रही है कि फुलके इतने छोटे और पतले हैं कि चार फुलके एक ग्रास में खाओ। उन्होंने चार फुलके एक ग्रास में खाना शुरू कर दिया। यह देखकर घरवाली ने माथा ठोक लिया और वहां से खिसकने में ही भलाई समझी।

५८२) मन साफ होना चाहिए - एक बार स्वामी रामदास जी भिक्षा मांगते हुए किसी घर के सामने खड़े हुए और उन्होंने आवाज लगाई रघुवीर समर्थ। घर की स्त्री बाहर आई। उसने उनकी झोली में भिक्षा डाली और कहा, महात्मा जी कोई उपदेश दीजिए। स्वामी रामदास जी बोले, आज नहीं कल दूंगा। दूसरे दिन स्वामी रामदास जी ने पुन: उस घर के सामने आवाज लगाई रघुवीर समर्थ।

उस घर की स्त्री ने उस दिन खीर बनाई थी। वह खीर का कटोरा लेकर बाहर आई। स्वामी जी ने अपना कमंडल आगे कर दिया। वह स्त्री जब खीर डालने लगी तो उसने देखा कि कमंडल में कूड़ा भरा है। उसके हाथ ठिठक गए वे बोली, महाराज कमंडल तो गंदा है। स्वामी रामदास जी बोले, हां गंदा तो है किंतु खीर इसमें डाल दो।

स्त्री बोली, नहीं महाराज तब तो खीर खराब हो जाएगी। कमंडल दें मैं धो लाती हूं। स्वामी जी बोले, मतलब जब

कमंडल साफ होगा तभी खीर डालोगी। स्त्री बोली, जी महाराज।

स्वामी जी बोले, मेरा भी यही उपदेश है। मन में जब तक चिंताओं का कूड़ा करकट और बुरे संस्कार रूपी गोबर भरा है। तब तक उपदेशामृत का कोई लाभ नहीं होगा। यदि उपदेशामृत प्राप्त करना है तो प्रथम अपने मन को शुद्ध करना चाहिए, कुसंस्कारों का त्याग करना चाहिए, तभी सच्चे सुख और आनंद की प्राप्ति होगी। मन साफ हो स्वच्छ हो तभी वह आनंद की अनुभूति कर सकता है।

५८३) बुद्धिमान कौन - वजीर के अवकाश लेने के बाद बादशाह ने वजीर के रिक्त पद पर नियुक्ति के लिए उम्मीदवार बुलवाए। कठिन परीक्षा से गुजर कर तीन उम्मीदवार योग्य पाए गए। तीनों उम्मीदवारों से बादशाह ने एक-एक कर एक ही सवाल किया, मान लो मेरी और तुम्हारी दाढ़ी में एक साथ आग लग जाए तो तुम क्या करोगे? जहाँपनाह, पहले मैं आप की दाढ़ी की आग बुझाऊंगा, पहले ने उत्तर दिया। दूसरा बोला, जहाँपनाह पहले मैं अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा। तीसरे उम्मीदवार ने सहज भाव से कहा, जहाँपनाह, मैं एक हाथ से आपकी दाढ़ी की आग बुझाऊँगा और दूसरे हाथ से अपनी दाढ़ी की। इस पर बादशाह ने फरमाया, अपनी जरूरत नजरंदाज करनेवाला नादान है। सिर्फ अपनी भलाई चाहनेवाला स्वार्थी है। जो व्यक्तिगत जिम्मेदारी निभाते हुए दूसरे की भलाई करता है। यही बुद्धिमान है। इस तरह बादशाह ने वजीर के पद पर तीसरे उम्मीदवार की नियुक्ति कर दी।

५८४) हारती संवेदनाएं - पसीने से लथपथ बूढ़े ने कहा- मालिक पूरा अनाज गोदाम में रखवा दिया है, जरा देख लीजिए। कर्कश आवाज में मालिक ने कहा- ठीक है। अब तुम जाओ।

पर मालिक मजदूरी तो दे दो, बिटिया आई है गांव से, उसका बच्चा बीमार है, दवा लेना है।

मालिक अकड़ के बोला- आज नहीं है कल लेना।

बूढ़े ने कहा- बच्चे को दिखाना जरूरी है। यह सुनकर मालिक ने गुस्से में पैसे उसके मुंह पर फेंकते हुए कहा- तुम छोटे लोग एक दिन भी सब्र नहीं कर सकते। बूढ़े मजदूर की आंखें भर आई, जमीन से रुपये उठाकर वो लाचार सा घर चला आया। उसके पास आय का कोई साधन नहीं था, सिर्फ मजदूरी करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। पति-पत्नी जैसे तैसे गुजारा कर रहे थे। लेकिन अब बिटिया के लड़के की तबीयत खराब हो गई तो उसका गुजारा मुश्किल से हो पा रहा था। बूढ़े ने झोपड़ी के बाहर से आवाज लगाई- बिटिया आओ, तुम्हारे बेटे को डॉक्टर को दिखा लाएं।

उधर डॉक्टर ने बच्चे को देखा और डांटते हुए कहा- बच्चा इतना बीमार है और तुम अब लेकर आ रहे हो। डॉक्टर साहब पैसा की व्यवस्था नहीं हो पाई, इसलिए देर हो गई। डॉक्टर ने जांच के बाद कहा- बच्चे को एडमिट करना पड़ेगा, हालत खराब है। बुखार तेज है। बूढ़े ने कहा- हमारे पास तो केवल १००० रुपया है। डॉक्टर ने कहा- किसी सरकारी अस्पताल में लेकर जाते, यहां क्यों लेकर आए। पैसे की व्यवस्था हो तो बताओ, नहीं तो ले जाओ।

बूढ़ा रोने लगा, डॉक्टर के पांव पकड़ कर कहा- डॉक्टर साहब- दया करो, हमारी बिटिया का यही एक सहारा है। डॉक्टर ने धक्का देते हुए कहा- धर्मशाला नहीं खोल रखी। ले जाओ इसे यहां से। अब बिटिया भी डॉक्टर के पांव में लिपट कर रोने लगी। लेकिन डॉक्टर ने दोनों को धक्का देकर बाहर निकलवा दिया। दोनों जैसे-तैसे सरकारी

अस्पताल पहुंचे। बच्चे को भर्ती कराया। डॉक्टर बोले- आने में देर कर दी। अब बस कोशिश कर सकते हैं। बाकी दुआ करो। बूढ़ा और उसकी बिटिया रोने लगे। दोनों ऊपर वाले से दुआ करने लगे कि बेटा ठीक हो जाए। इंसान पत्थर हो सकता है पर ऊपरवाला दिल से की गई दुआ सुन लेता है। चार दिन से अस्पताल में भर्ती बच्चा बच गया, पर मानवता हार गई। बूढ़ा और उसकी बेटी ने डॉक्टर को धन्यवाद दिया। डॉक्टर ने कहा- मुझे नहीं ऊपरवाले को धन्यवाद दो जिसने इतनी खराब हालात में भी चमत्कार कर दिखाया। सीख- आज का इंसान खुद को बड़ा समझने लगा है, पर भगवान से बढ़कर नहीं हो सकता जिसने दुनिया बनाई है।

५८५) ध्यान रहे, मदद के बदले चालाकी करना अच्छी बात नहीं - एक अमीर व्यापारी बाजार में घूम रहा था। काफी चहल-पहल थी। लोगों की भीड़ बाजार की रंगीनियां देखने में मस्त थी। अचानक व्यापारी का हाथ कमर में गया। वहां अशर्फियों की थैली को नदारद पा उसका दिल धक से रह गया। थैली में सोने की पूरी सौ मोहरें थी। व्यापारी ने आसपास नजरें दौड़ाईं, वापस जाकर सड़क पर भी देखा, लेकिन थैली नहीं मिली। उसने बीच चौराहे में पहुंचकर ऐलान के अंदाज में ऊंची आवाज में कहना शुरू किया, भाइयो, मेरी थैली खो गई है। जो कोई उसे खोजकर लाएगा, उसे मैं ईनाम दूंगा। बात फैल गई।

लोग चारों तरफ देखने-ढूंढने लगे। इसी बीच, एक मजदूर को प्याऊ के पास वो थैली पड़ी हुई मिल गई। मोहरें देखकर भी उसका ईमान नहीं डोला। उसने व्यापारी को थैली सौंपी और ईनाम की आस में चेहरा देखने लगा। मोहरें गिनने के बाद व्यापारी को चैन आया। अब उसकी धूर्तता जाग गई। उसने मजदूर को ईनाम देने की बजाय उस पर चोरी का इल्जाम लगा दिया, मेरी थैली में तो दो सौ मोहरें थीं, बाकी की मोहरें कहां हैं? मजदूर तो सौ फीसदी सच्चा था, इसलिए मामले को काजी के पास ले गया। पूरी कहानी सुनने के बाद काजी को यकीन हो गया कि व्यापारी झूठ बोल रहा है। काफी देर सोचने के बाद उन्होंने फैसला सुनाया, व्यापारी के हिसाब से उसकी थैली में दो सौ मोहरें थीं, लेकिन मजदूर को जो थैली मिली, उसमें सौ ही मोहरें थीं। जाहिर है, यह थैली व्यापारी की नहीं है। इसलिए ५० मोहरें मजदूर को देकर बाकी सरकारी खजाने में जमा कर ली जाएं।

सबक- दुख, डर व निराशा की हालत में कोई वादा न करें, वर्ना हालात अच्छे हो जाने पर वादा बोझ लगेगा। लेकिन जब भी कोई वादा करें, जरूर निभाएं। वर्ना बड़ी हानि भी संभव है।

५८६) धूर्त सियार - एक घने जंगल में चम्पक वृक्ष के नीचे एक हिरण रहता था। उसी वृक्ष की डाली पर एक कौवा बसेरा लेता था। कौवे और हिरण में बड़ी मित्रता थी। कौवा हिरण की सींग पर बैठा रहता और हिरण की आहट पाकर जो टिड्डियां उड़तीं, उन्हें पकड़कर खाया करता था। इस तरह दोनों आनन्दपूर्वक दिन बिता रहे थे।

एक दिन जब वे चरने के लिए बाहर निकले तो उन्हें एक सियार ने देख लिया। हिरण के सुन्दर कोल शरीर को देखकर सियार के मुंह में पानी आ गया। उसने सोचा यदि कोई इसे मार देता तो मुझे खाने के लिए इसका मांस मिल जाता। उसे एक उपाय सूझ गया। उसने निश्चय किया कि पहले हिरण से मित्रता कर लूं। फिर अवसर देखकर उसे मार डालूं। उसने हिरण के पास जाकर कहा, आओ, हिरण भाई। आज से हम लोग मित्र बनकर रहें।

हिरण सरल स्वभाव का था, इसलिए उसने सियार की बात मान ली। एक दिन सियार ने हिरण से कहा- चलो मित्र, मैं तुम्हें चरने के लिए एक अच्छी जगह पर ले चलता हूं। वहां मसूर की खेती लहलहा रही थी। देखकर हिरण बहुत खुश हुआ। ऐसी जगह हिरण को कभी नहीं मिली थी। दोनों रोज ही वहां जाने लगे।

कुछ दिनों बाद खेत के मालिक को पता लगा कि उसका खेत कोई जानवर चरता जा रहा है। तब उसने खेत में जाल बिछा दिया। जाल तांत का बना हुआ था। जब हिरण खेत में पहुंचा तो वह जाल में जाकर फंस गया। सियार रोज की तरह किनारे खड़ा था।

हिरण ने कहा- मित्र मैं बुरी तरह जाल में फंस गया हूं। जल्दी से जाल काटकर मुझे निकालो। बिना तुम्हारी सहायता के मेरी जान नहीं बच सकती।

सियार बोला- आज मैं उपवास में हूं यह जाल तांत का बना हुआ है। मैं इसे कैसे काट सकता हूं? मेरा उपवास टूट जायेगा। उसी समय अपने मित्र को खोजते हुए कौवा वहां आ पहुंचा। हिरण ने कौवे से कहा- मित्र, सियार के धोखे में पड़कर मैं संकट में पड़ गया हूं। किसी तरह मुझे बचाओ।

कौआ बड़ी चिन्ता में पड़ गया। सोचते-सोचते उसे एक उपाय सूझा। उसने हिरण से कहा- मित्र, तुम पैरों को ऊपर उठाकर और अपनी आंखों को फाड़कर चुपचाप पड़े रहो। मैं तुम्हारे ऊपर बैठकर अपनी चोंच से तुम्हारी आंखों को खोदने जैसा काम करूंगा। जब खेत का मालिक आयेगा तो तुम्हें मरा हुआ समझकर छोड़ देगा और तब तुम मौका पाकर भाग जाना। सबेरे जब खेत का मालिक आया तो हिरण को जाल में फंसा हुआ देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। जब निकट जाकर देखा तो पाया कि हिरण मरा पड़ा था और उसकी आंखों को कौवा खोद रहा था। उसे मरा हुआ जानकर खेत के मालिक ने तुरन्त जाल से खींचकर बाहर निकाला।

जाल से बाहर निकलते ही कौवे ने हिरण को इशारा किया। मित्र का इशारा पाते ही हिरण अचानक उठकर वहां से भाग खड़ा हुआ। खेत के मालिक ने भागते हुए हिरण की ओर गुस्से में आकर जोर से कुल्हाड़ी फेंकी जो झाड़ी में छिपे हुए सियार को जा लगी। सियार छटपटाकर वहीं पर मर गया। उसके बाद हिरण और कौवा दोनों मित्र पहले की तरह सुखपूर्वक रहने लगे।

५८७) घी चुराओ, घी चुराओ - पति-पत्नी दोनों अपने-अपने फन में पूरे उस्ताद थे। एक बार पति के एक यजमान के घर ब्याह निकला। पति ने सोचा, ब्याह में दक्षिणा तो मिलेगी ही, लेकिन अगर थोड़ा घी चुराया जा सके तो अच्छा हो। कुछ दिन लड्डू-लापसी खा सकेंगे। पति ने पत्नी से कहा, सुनती हो? मैं यजमान के घर उनकी कन्या का ब्याह कराने जा रहा हूं। तुम कुछ देर बाद वहां पहुंच जाना। ब्याह का समय हुआ। पति मंत्र पढ़ने लगा। घर के सब लोग मंडप में आकर बैठ गए। औरतों ने गीत गाने शुरू किए, उनमें पत्नी भी थी। अन्दर रसोई में कोई भी नहीं रहा। पति ने मौका देखकर हवन के मंत्र बोलने शुरू किए। बीच में वे बोले, घी चुराओ, घी चुराओ पत्नी सुनकर खिसक कर उठी और रसोई में पहुंची। लेकिन घी चुराने के लिए कोई बरतन उनके हाथ में था नहीं, इसलिए वह वापस मंडप में आ गई। अपनी मोटी आवाज में वह सबको गीत गवाने लगी- घी लेने की इच्छा तो बहुत है जी, पर घी लें किसमें जी। पति ने सुना और वे मंत्र बोलने लगे-

घी चुराओ, घी चुराओ, कोठी पर गगरी धरी है फिर तो पत्नी घी चुराकर घर पहुंच गई। दोनों ने हलुआ बनाकर खाया, लेकिन दूसरे ही दिन दोनों को खूब दस्त लगे। पति ने पत्नी से कहा, हराम का यह माल हराम हम हजम नहीं कर पाए।

५८८) सबसे बड़ा जीवन धन है आत्मसंतोष - दो बीज धरती की गोद में जा पड़े। मिट्टी ने उन्हें ढंक दिया। दोनों रात को सुख की नींद सोएं प्रात:काल दोनों जागे, तो एक के अंकुर फूट गए और वह ऊपर उठने लगा। यह देख छोटा बीज बोला- भैया। ऊपर मत जाना, वहां बहुत भय है। लोग तुझे रौंद डालेंगे, मार डालेंगे।

बीज सब सुनता रहा और चुपचाप ऊपर उठता रहा। धीरे-धीरे धरती की परत पार कर ऊपर निकल आया और बाहर का सौंदर्य देखकर मुस्कराने लगा। सूर्य देवता ने धूप में स्नान कराया और पवन देव ने पंखा डुलाया। वर्षा आई और शीतल जल पिला गई। किसान आया और चक्कर लगा कर चला गया।

बीज बढ़ता ही गया। झूमता, लहलहाता, फूलता और फलता हुआ बीच एक दिन परिपक्व अवस्था तक जा पहुंचा। जब इस संसार से विदा हुआ, तो अपने जैसे अनेक बीज छोड़कर हंसता और आत्म संतोष अनुभव करता विदा हो गया। मिट्टी के अन्दर दबा बीज यह देखकर पछता रहा था। भय और संकीर्णता के कारण मैं जहां था, वहीं पड़ा रहा और मेरा भाई असंख्य गुना समृद्धि पा गया।

५८९) सपनों का कॉलेज - राजा राममोहन राय का मानना था कि अगर समाज से कुप्रथाओं और अंधविश्वास को मिटाना है और दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना है, तो भारतीयों को अंग्रेजी, विज्ञान और तकनीकी की शिक्षाएं भी हासिल करनी चाहिए। उनका सपना था कि कोलकाता में एक ऐसा कॉलेज खोला जाए जिसमें देश की नई पीढ़ी आधुनिक ज्ञान प्राप्त करे। इसके लिए शहर की जानी-मानी हस्तियों की एक बैठक बुलाई गई। बैठक में राममोहन राय के काफी सारे समर्थक एवं कुछ विरोधी भी उपस्थित थे। कॉलेज खोलने के लिए पैसा इकट्ठा करने और प्रबंध समिति बनाने पर चर्चा शुरू हुई। किसी ने राममोहन राय को प्रबंध समिति का अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव रख दिया। इस प्रस्ताव पर उनके विरोधी उखड़ गए। उनका कहना था कि राममोहन राय को प्रबंध समिति का सदस्य बनाया गया या उनसे एक पैसा भी इस कॉलेज के लिए लिया गया तो वे कॉलेज खुलने ही नही देंगे। राममोहन राय चाहते तो इस प्रबंध समिति में आसानी से आ सकते थे और कॉलेज खुलवाने का सारा श्रेय ले सकते थे पर उन्होंने इससे हटने का फैसला किया। उनके एक मित्र ने इसका कारण पूछा तो वह बोले, यह महत्वपूर्ण नहीं है कि मैं प्रबंध समिति में हूं या नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि ऐसा कॉलेज खुल रहा है जिसमें शिक्षा प्राप्त करके, नए विचारों के साथ युवक देश की सेवा करेंगे। मेरे अहं से बढ़कर देश की उन्नति है। उनका सपना पूरा हुआ और कॉलेज खुला जो बाद में प्रेसीडेंसी कॉलेज ऑफ कलकत्ता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भी कुछ समय तक इसके प्रधानाचार्य रहे।

५९०) जीवन में संघर्ष क्यों है जरूरी - एक दुखी किसान ने कहा, हे भगवान। अगर आप किसान होते तो आपको हमारी समस्याओं का एहसास होता। यह सुनकर भगवान प्रकट हुए और बोले, मांगो जो मांगना चाहते हो? अचंभित और आनंदित किसान ने कहा, मुझे एक वर्ष के लिए अपनी शक्तियां दे दो। मैं जो चाहूंगा, वो हो। तब आप देखेंगे कि दुनिया से समस्याएं, गरीबी, भुखमरी सब समाप्त हो जाएंगी। ईश्वर ने किसान को अपनी शक्ति दे दी। किसान ने चारो दिशाओं में

सर्वोत्तम कर दिया। मौसम पूरे समय खुशगवार रहने लगा। न आंधी न तूफान। किसान जब चाहता बारिश हो, तब बारिश होती, जब वो चाहता कि धूप निकले, तब धूप निकलती। सब कुछ एकदम परिपूर्ण हो गया था। फसलें भी लहलहा रही थीं। जब फसलों को काटने की बारी आई तब किसान ने देखा कि फसलों में दाने ही नहीं हैं। किसान चकराया और दौड़ा-दौड़ा भगवान के पास गया। उसने तो सबकुछ सर्वोत्तम ही किया था और यह क्या हो गया था? उसने भगवान को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। भगवान ने स्पष्ट किया- सब कुछ सही था, कोई संघर्ष नहीं था। तुमने सब कुछ सर्वोत्तम कर दिया था तो फसलें नपुंसक हो गईं। उनकी उर्वरा शक्ति खत्म हो गई। जीवन जीने के लिए संघर्ष अनिवार्य है। ये आत्मा को झकझोरते हैं और उन्हें जीवंत से भरपूर बनाते हैं।

५९१) हुनर अमूल्य होता है - एक उद्योगपति का बहुत बड़ा कारोबार था। उसकी फैक्ट्री में बड़ी-बड़ी मशीनें थीं। रोज का करोड़ों का कारोबार होता। एक बार एक बड़ी मशीन में कोई खराबी आ गई। कंपनी का कोई भी इंजीनियर उसे ठीक नहीं कर पा रहा था। काम ठप पड़ा था, इसलिए उद्योगपति ने कहा- किसी को भी बुलाओ, लेकिन मशीन ठीक होनी चाहिए।

आखिरकार बाहर से एक विशेषज्ञ को बुलाया गया। उसने अपने बैग से पेचकस निकाला और मशीन के भीतर एक पेच को थोड़ा सा घुमा दिया। मशीन शुरू हो गई। अब उस विशेषज्ञ ने अपना शुल्क बताया- १० हजार रुपये। उद्योगपति चौंक गया। उसने कहा- सिर्फ एक पेच घुमाने के १० हजार रुपये? विशेषज्ञ बोला- नहीं, पेच घुमाने के तो सिर्फ एक रुपये हुए, बाकी ९९९९ रुपये इस बात के हैं कि कौन सा पेच किस दिशा में घुमाना है। किसी काम के करने का मूल्य इतना नहीं होता, जितना उस काम को दक्षता से करने का होता है।

५९२) सफलता का रहस्य - किसी गांव में रमेश और दीपक नामक दो मूर्तिकार रहते थे। रमेश की बनाई प्रतिमाएं इतनी सुंदर होती थी कि लोग उन्हें मुंहमांगे दामों पर खरीद लेते थे। दीपक की मूर्तियां कोई नहीं खरीदता था एक दिन दीपक ने देखा कि रमेश प्रतिमाएं बनाने में व्यस्त है। उस समय पास से एक सेठ की बरात गुजर रही थी। बरात में बहुत सारे लोग शामिल थे। ढोल-नगाड़े बज रहे थे और आतिशबाजी भी हो रही थी। रमेश प्रतिमाएं बनाने में व्यस्त रहा, उसने बरात की ओर देखा तक नहीं। यह देखकर दीपक रमेश के पास पहुंचा और बोला, अभी यहां से बरात गुजरी थी। गांव के सभी लोगों ने अपने-अपने काम छोड़कर बरात को देखा, पर तुमने तो नजर भी नहीं उठाई। दीपक की बात सुनकर रमेश भौंचका रह गया। उसने आश्चर्य से कहा, तुम किस बरात की बात कर रहे हो। मैंने तो किसी बरात के गुजरने की आवाज नहीं सुनी। दीपक ने कहा, अरे भाई कुछ ही देर पहले एक बरात गुजरी है। सभी ने उसे देखा और ढोल नगाड़ों की आवाज भी सुनी। ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम्हें पता ही न लगा हो? दीपक की बात सुनकर रमेश बोला, मैं जब अपना कार्य करता हूं तो मेरा संपूर्ण ध्यान सिर्फ उस कार्य पर ही केंद्रित रहता है। यहां तक कि उस समय मुझे अपने शरीर की भी सुध नहीं रहती। रमेश की बात सुनकर दीपक को उसकी सफलता का कारण समझ में आ गया। वह जान गया कि एक कलाकार के लिए एकाग्रता सबसे बड़ी चीज है। उस दिन से वह भी ध्यान लगाकर काम करने लगा।

५९३) इच्छा - आकाश मुस्कुराता हुआ अपने मोबाइल पर फटाफट उंगलियां दौड़ा रहा था। उसकी पत्नी आश्मती देर से उसके पास बैठी खामोशी से देख रही थी, जो उसकी रोज की आदत हो गई थी और जब भी कोई बात आकाश से करती

तो जवाब हां हूं में ही होता या नपे तुले शब्दों में। किससे चैटिंग कर रहे हो? फेसबुक फ्रेंड से। मिले हो कभी अपने इस फ्रेंड से? नहीं फिर भी इतने मुस्कुराते हुए चैटिंग करते हो? और क्या करूं बताओ? कुछ नहीं, फेसबुक पर आपकी महिला मित्र भी बहुत सी होंगी ना? हूं उंगलियों को हल्का सा विराम दे मुस्कुराते हुए आकाश ने हुंकार भरी। उनसे भी यूंही मुस्कुराते हुए चैटिंग करते हो, क्या आप सभी को भली-भांति जानते हो? आश्मती ने मासूमियत भरा प्रश्न किया। भलीभांति तो नहीं मगर रोजाना चैटिंग होते होते बहुत कुछ हम आपस में एक दूसरे को जानने लगते हैं और बातें ऐसी होने लगती हैं कि मानो बरसों से जानते हो और मुस्कुराहट होठों पर आ ही जाती है, अपने से लगने लग जाते हैं फिर ये हूं और पास बैठे पराये से। आश्मती बुदबुदाई। अभी मजेदार टॉपिक चल रहा है हमारे ग्रुप में। अरे, अभी तुमने क्या कहा था, ध्यान नहीं दे पाया। बोलो ना फिर से, अरे यार किस सोच में डूब गईं। आकाश मुस्कुराता हुआ तेजी से मोबाइल पर अपनी उंगलियां चलाता हुआ एक नजर आश्मती पर डाल बोला। किसी सोच में नहीं। सुनो, बस मेरी एक इच्छा पूरी करोगे? आश्मती टकटकी लगाए बोली। क्या अब तक तुम्हारी कोई अधूरी इच्छा रखी है मैंने? खैर, बोलो क्या चाहिए? मेरा मतलब ये नहीं था, मेरी हर इच्छाएं आपने पूरी की हैं मगर ये बहुत ही अहम है। ऐसी बात, तो बोलो क्या इच्छा? एंड्रॉयड मोबाइल मोबाइल। बस इतनी सी बात, ओके डन। मगर क्या करोगी बताना चाहोगी? आकाश चौंकता हुआ बोला।

५९४) तेल और पानी - एक हिकायत (ज्ञानवर्धक कहानी) है कि एक गिलास में पानी और तेल थे। ऐसी सूरत में तेल ऊपर रहता है क्योंकि पानी वजनी होता है। पानी ने तेल से शिकायत की और पूछा कि ये क्या बात है मैं नीचे रहता हूं और तू ऊपर, हालांकि मैं पानी हूं और पानी की ये विशेषता है कि वो साफ, रौशन, खूबसूरत, गरज सारी खूबियां मौजूद हैं और तू तेल जो खुद भी मैला और जिस पर गिरे उसको भी मैला करे। कोई चीज तुझसे धोई नहीं जा सकती, चाहिए था कि तू नीचे होता और मैं ऊपर मगर मामला उल्टा है कि मैं नीचे हूं और तू ऊपर।

तेल ने जवाब दिया कि हां ये सब कुछ है लेकिन तुमने कोई बड़ा काम नहीं किया हमेशा लाड़ व प्यार में रहे बचपन से अब तक। बचपन में फरिश्ते आसमान से उतार कर बड़ी इज्जत से तुमको लाये, फिर जिसने देखा इज्जत के साथ बर्तनों में भर लिया, बड़ी चाहत से पिया। गरज हमेशा इज्जत और नाज ही नाज देखा, तुम्हारी धूप से हिफाजत की जाती है मैल कुचैल और गर्द व गुबार से हिफाजत की जाती है। चाहे अपने मतलब के लिए ही क्यों न हो। लेकिन एक मैं हूं कि जबसे मेरी आरम्भ हुई है हमेशा मुसीबतें ही मुसीबतें झेली हैं, सबसे पहले बीज था सरसों या तिल का। इसके बाद मुसीबत का ये सामना हुआ कि सैकड़ों मन मिट्टी हमारे ऊपर डाली गई। मेरे सीने पर पत्थर रखा गया। फिर मेरा दिल फटा, ये दूसरी मुसीबत पड़ी।

तीसरी मुसीबत ये पड़ी कि जमीन को तोड़कर बाहर निकले। चौथी ये कि जब बाहर निकले तो सूरज की गर्मी ने मेरे जिगर को भून डाला। पांचवी मुसीबत ये झैलनी पड़ी कि जब कुछ बड़े हो गये तो दरांती से काटा गया, छटी मुसीबत ये कि ऊपर-नीचे किया गया और बैलों के पैरों तले रौंदा गया और आखिर में सातवीं मुसीबत तो गजब की थी कि कोल्हू में डालकर जो पिरोया गया कि मेरा जिगर टुकड़े टुकड़े कर दिया। इस तरह मैं वजूद में आया। मेरी तमाम उम्र तो संघर्ष में ही गुजरी और ये बात तय है कि संघर्ष के फल ने ही मुझे ऊंचा उठाया।

५९५) क्रोधाग्नि पर प्रेम का पानी - एक बार संत ज्ञानेश्वर को क्रोध आ गया। तब उन्होंने अपनी झोपड़ी का दरवाजा बंद कर खुद को अंदर कैद कर लिया। कई बार कहने पर भी उन्होंने दरवाजा नहीं खोला। यह देख उनकी बहन मुक्ताई आगे आईं। उन्होंने कहा, शांत हो जाओ ज्ञानेश्वर, क्रोधाग्नि बुझा दो। गुस्सा कम करो। उन्होंने ज्ञानेश्वर से आगे कहा, यदि दुनिया आगबबूला हो उठे तो संतों को चाहिए कि स्वयं पानी बन जाएं। अग्नि को पानी बुझा देता है। अगर पानी में आग डाल दें तो क्या वह पानी को जला देगी या खुद बुझ जाएगी? संतों का स्वभाव भी ऐसा होना चाहिए। कोई कितना ही क्रोधित क्यों न हो, उन्हें शांत रहना चाहिए। मुक्ताई द्वारा कही गई बातों के बाद ज्ञानेश्वर ने दरवाजा खोला और कहा- मैंने क्रोधाग्नि पर प्रेम का पानी डाल दिया है।

५९६) चरित्र की सीढ़ियां - एक आदमी अपने हाथ में दो ऊंचे डण्डे लेकर एक महल की ऊपरी मंजिल पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था। दूसरे आदमी ने देखा तो पूछा, तुम यह क्या कर रहे हो? वह बोला, मेरे पास सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन के दो डंडे हैं। मैं इनके सहारे इस महल की ऊपरी मंजिल पर पहुंचना चाहता हूं। पहले ने कहा, मैंने बड़ी मेहनत से इन्हें प्राप्त किया है। क्या सारा श्रम व्यर्थ जायेगा? दूसरे आदमी ने कहा तुम्हारा श्रम व्यर्थ नहीं जाएगा, यदि तुम सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन के इन दो खड़े डंडों में सम्यक चरित्र की आड़ी सीढ़ियां लगा सको। सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन के दो खड़े डंडों में सम्यक चरित्र की आड़ी सीढ़ियां लगाने से एक ऐसी नसैनी तैयार हो जाती है, जिस पर एक-एक कदम उठाकर आदमी अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है।

५९७) अवसर की पहचान - एक गांव में एक साधु रहते थे जो दिन रात कड़ी तपस्या करते थे और उनका भगवान पर अटूट विश्वास था। एक बार गांव में भयंकर बारिश हुई। बढ़ते हुए पानी को देखकर गांववाले सुरक्षित स्थान पर जाने लगे। लोगों ने साधु को सुरक्षित स्थान पर चलने को कहा, लेकिन साधु ने यह कहकर मना कर दिया कि तुम लोग जाओ मुझे मेरे भगवान पर पूरा भरोसा है, वे मुझे बचाने जरूर आएंगे। धीरे-धीरे पूरा गांव पानी से लबालब हो गया और पानी साधु के घुटनों तक आने लगा तभी वहां पर एक गाड़ी आई और उसमें सवार व्यक्ति ने साधु को गाड़ी में आने के लिए कहा लेकिन साधु ने फिर यह कहकर मना कर दिया- मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं, मुझे भगवान जरूर बचाने आएगा। गाड़ी वाला वहां से चला गया। पानी बढ़ने लगा और साधु भगवान को याद करने लगा तभी वहां पर एक नाव आई। बचावकर्मी ने कहा जल्दी से आइये मुनिवर, मैं आपको सुरक्षित स्थान पर छोड़ देता हूं। साधु ने कहा, मेरे भगवान मुझे बचाने जरूर आयेंगे। तुम यहां से चले जाओ। बचावकर्मी ने कहा- मुनिवर, मुझे अन्य लोगों को भी सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना है, आप समय बर्बाद मत कीजिए, जल्दी आइये। लेकिन साधु ने अपनी जिद नहीं छोड़ी, वह नाव वाला अन्य लोगों को बचाने के लिए वहां से चला गया। कुछ ही देर बाद साधु बाढ़ में बह गए और उनकी मृत्यु हो गयी। मरने के बाद साधु जब स्वर्ग पहुंचे तो उन्होंने भगवान से कहा हे भगवान मैंने कई वर्षों तक कड़ी तपस्या की और आप पर इतना विश्वास किया लेकिन आप मुझे बचाने नहीं आये। भगवान ने कहा- मैंने तुम्हें बचाने एक बार नहीं बल्कि तीन बार प्रयत्न किया। तुम्हें क्या लगता है तुम्हारे पास लोगों को, गाड़ी को और नाव को किसने भेजा था?

५९८) इंसाफ की अदालत और काजी का फैसला - आपने बिना भय किये सुल्तान को सम्मन भेज अपनी अदालत में हाजिर होने का हुक्म दिया। खुद सुल्तान ने इसे अपनी प्रतिष्ठा का विषय न बनाया और आपकी अदालत में

एक आम आदमी की तरह हाजिर हुए। सुल्तान ने अपनी गलती मानकर मुझे हर्जाना भेंट किया। उन्होंने अपनी भूल के लिए अदालत से माफी भी मांगी। मेरे बेटे को कुछ भी हो जाये, तो अब मुझे गम नहीं। क्योंकि इस सल्तनत में इंसाफ फल-फूल रहा है। वृद्धा आशीर्वाद देते हुए चली गई।

काजी सिराजुद्दीन अब आसन से उठे तथा सुल्तान गयासुद्दीन आजमशाह से कहा, जनाबे आली, इस आसन पर विराजें। सुल्तान गयासुद्दीन काजी के आसन पर बैठ गया। सुल्तान ने काजी की तरफ गंभीर दृष्टि से देखा, फिर अपने वस्त्रों के अंदर छिपाए गये खंजर को निकालकर कहा। काजी सिराजुद्दीन, तुम्हारा सम्मन पाकर मैं यहां हाजिर हुआ हूं। आज यहां आकर मैं देखता कि इंसाफ करने में तुम डगमगा रहे हो, तो खुदा की कसम, मैं यह खंजर तुम्हारे पेट में घोंप देता। काजी सिराजुद्दीन ने तत्क्षण उत्तर दिया।

जनाबे आली, ऐसा कर मैं खुदा की अदालत में क्या जवाब देता। फिर खुद सुल्तान का भी हुक्म है कि कोई भी इंसाफ से वंचित न हो।

काजी सिराजुद्दीन धीरे-धीरे अपने आसन की तरफ बढ़े। वहां छुपाई एक छड़ी को उठाकर अपने हाथ में लेते हुए उन्होंने गयासुद्दीन की तरफ मुखाबित होकर बोले, जनाब आली, खुदा गवाह है, आज यदि काजी के रूप में यह देखता कि आप अदालत की जरा भी अवमानना कर रहे हैं, तो इस छड़ी से आपकी पीठ को लहूलुहान कर देता।

सुल्तान गयासुद्दीन के साथ आये अंगरक्षक एवं अमीर काजी की धृष्टता पर कुपित हुए और तलवार लेकर उनकी ओर बढ़े, किंतु सुल्तान उनके बीच में आ गया और उन्हें रोकता हुआ काजी से बोला, काजी सिराजुद्दीन, मुझे तुम पर नाज है। तुमसे गले मिलने का जी कर रहा है।

जनाबे आली, मुझे भी, क्योंकि मुझे ही नहीं, पूरी इंसानियत को आप पर फख्र है।

सुल्तान और काजी गले मिले। दोनों के नेत्रों से उस समय टप-टप आंसू बह रहे थे। सल्तनत में जिसने भी इस घटना को सुना, आनंद के दो बूंद बरबस उसके नेत्रों से टपक पड़े।

५९९) दादाजी का पोता - श्याम अकसर अपने दादाजी से तमाम सवाल पूछा करता था। एक दिन उसने पूछा, दादाजी, जब पृथ्वी गोल-गोल घूमती है तो हम औंधे मुंह नीचे क्यों नहीं गिर जाते? दादा ने जवाब दिया, बेटे। यह गुरुत्वाकर्षण का नियम है। श्याम कुछ देर सोचता रहा, फिर अपनी बाल सुलभ उत्सुकता से बोला, दादाजी, यह तो ठीक है, किन्तु इस नियम के बनाने से पहले तो जरूर लोग नीचे गिरते रहे होंगे न। पूछने से ज्ञान बढ़ता है।

६००) फूल ही फूल - प्रसिद्ध रूसी विचारक मैडम ब्लावत्स्की अपनी हर यात्रा में एक थैला रखती थी, जिसमें कई तरह के फूलों के बीज होते थे। वह जगह-जगह उन बीजों को जमीन पर बिखेरती रहती थीं। लोगों को उनकी यह आदत बड़ी बेतुकी लगती थी। लोग समझ नहीं पाते थे कि इस तरह बीज बिखेरते रहने से क्या होगा। उन्हें आश्चर्य होता था कि मैडम ब्लावत्स्की जैसी समझदार महिला सब कुछ जानते हुए भी ऐसा क्यों कर रही हैं। पर लोगों को उनसे इस बारे में पूछने का साहस ही नहीं होता था। लेकिन एक दिन एक व्यक्ति ने पूछ ही लिया- मैडम अगर आप बुरा न मानें तो कृपया बताएं कि आप इस तरह क्यों फूलों के बीज बिखराती रहती हैं? मैडम ने सहज होकर कहा- वह इसलिए कि बीज सही

जगह अंकुरित हो जाएं और जगह-जगह फूल खिलें। उस व्यक्ति ने इस पर फिर सवाल किया- आपकी बात तो सही है पर क्या आप यह दोबारा देखने जाएंगी कि बीज अंकुरित हुए या नहीं, फूल खिले कि नहीं? इस पर मैडम मे कहा- इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं उन रास्तों पर दोबारा जाऊं या नहीं। मैं अपने लिए फूल नहीं खिलाना चाह रही। मैं तो बस बीज डाल रही हूं ताकि चारों तरफ फूल खिलें और धरती का श्रृंगार हो जाए। धरती सुंदर हो जाए। फिर जो इन फूलों को देखेगा उनकी आंखों से भी मैं ही देखूंगी। फूल हों या अच्छे विचार, उन्हें फैलाने के काम में हर किसी को योगदान करना चाहिए बिना परिणाम की चिंता किए। अगर प्रयासों में ईमानदारी है तो सफलता मिलेगी ही।

६०१) संगति का प्रभाव - एक संत अपने शिष्यों के साथ जा रहे थे। रास्ते में वे संत सत्संग की महिमा भी उनको समझाते जा रहे थे। लेकिन शिष्यों के मन में यह बात पूरी तरह से बैठ नहीं रही थी। तभी उन संत महात्मा ने रास्ते के एक किनारे गुलाब के फूलों को देखा। उन्होंने गुलाब के पौधों के नीचे पड़ा मिट्टी का एक ढेला उठाकर एक शिष्य को उसे सूंघने के लिए कहा। शिष्य ने सूंघकर कहा, महात्मन। मिट्टी के इस ढेले में तो गुलाब की सुगंध आ रही है। तब संत ने पूछा, लेकिन मिट्टी की तो अपनी बू होती है, तब यह सुगंध कहां से आई? शिष्य ने कहा, इस ढेले पर गुलाब के फूल टूट-टूटकर गिरते रहते हैं, इसी से इसमें यह सुगंध आ गई है। संत ने गंभीर स्वर में कहा, सत्संग की महिमा भी यही है। जो व्यक्ति जैसी संगति में रहता है वैसे ही गुण-दोष उसमें आ जाते हैं।

६०२) कछुआ और चील - छोटे से तालाब में रहते हुए कछुआ अपनी स्थिति से बड़ा असंतुष्ट था। विशेषकर जब वह अपने साथी पक्षियों को खुले आसमान में पंख पसारे उड़ता देखता। उसे लगा, वह भी उड़ना सीख सकता है। उसने चील से प्रार्थना की कि वह उसे अपने साथ ऊँचे आसमान में ले चले, ताकि वह भी उड़ना सीख सके। चील ने उसे समझाया, बेवकूफ मत बनो। यह तुम्हारे बस का नहीं है। पर कछुए ने एक न सुनी। वह अपनी बात पर अड़ा रहा। आखिर चील ने उसकी प्रार्थना सुन ली और अपने साथ उसे आसमान में ले उड़ी। काफी ऊंचे पहुंच जाने पर चील ने कछुए से पूछा, इतने ऊंचे ठीक है? कछुआ इतनी ऊंचाई से भयभीत तो हो उठा था, पर झूठा रोब जमाने के चक्कर में बोला, मैं और ऊपर जाना चाहता हूं। तभी उसके हाथों पर चील के पंजों की पकड़ ढीली पड़ गई। वह धड़ाम से धरती पर आ गिरा और उसके प्राण-पखेरु उड़ गए। बुद्धिमान वह है जो व्यर्थ के काम न करे।

६०३) गूंज की गूंज - नन्हा पप्पू एक दिन घाटी में खड़े होकर जोर से बोला, बाप रे। तुरंत घाटियों से आवाज टकराई और गूंज उठी, बाप रे। बाप रे। यह सुनकर नन्हा पप्पू चकित रह गया। उसने जरा ऊंची आवाज में प्रश्न किया, कौन हो तुम? फौरन आवाज पलटी, कौन हो तुम? कौन हो तुम? यह सुनकर पप्पू को बहुत गुस्सा आया। उसे लगा, अवश्य कोई कहीं छिपा है जो उसकी नकल उतार रहा है। धर लौटकर उसने अपनी मां से इस बात की शिकायत की। घाटी में कोई छिपा है, जो ठीक उसकी आवाज की नकल उतारकर उसे चिढ़ा रहा है। तब मां ने उसे समझाया, बेटे, वह आवाज किसी और की नहीं, खुद तुम्हारी अपनी थी जो घाटियों से गूंजकर तुम्हें सुनाई पड़ रही थी। अगर तुम कोई अच्छी बात बोलते तो तुम्हें वहीं शब्द सुनाई पड़ते। पर तुमने गुस्से से पूछा कि तुम कोन हो, तो तुम्हें वही शब्द सुनाई पड़े। ठीक इसी तरह जीवन में भी होता है। तुम किसी से बुरे ढंग से बोलोगे तो बदले में तुम्हें बुराई ही मिलेगी और अगर अच्छा बोलोगे, करोगे तो बदले

में अच्छाई मिलेगी। आदमी जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा।

६०४) नेता की पहचान - यह घटना उस समय की है जब रूस के जननेता लेनिन पर उनके कुछ शत्रुओं ने हमला कर दिया था। वह उस हमलें में घायल हो गए थे और बिस्तर पर थे। डॉक्टरों ने उन्हें आराम की सख्त हिदायत दी हुई थी। वह अभी पूरी तरह स्वस्थ भी नहीं हो पए थे कि एक दिन उन्हें समाचार मिला कि देश की सबसे प्रमुख रेल लाइन टूटी हुई है। रेललाइन की शीघ्र मरम्मत आवश्यक थी। सभी देशभक्त लोग समाचार मिलते ही उनके पास जमा होने लगे। एक ने कहा, हम लोग वैतनिक मजदूरों पर निर्भर नहीं रह सकते, वे यह काम पूरा नहीं कर सकेंगे। यह सुनकर वहां उपस्थित अन्य देशभक्त बोले, हां, हम खुद ही इसे पूरा करेंगे। कार्य कठिन था लेकिन सभी के मन में उत्साह व जोश भरा हुआ था। सभी लेनिन को पसंद करते थे और उनमें राष्ट्रवाद तथा समाज हित की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। सब लोगों के साथ मिलकर काम किया था। लेनिन से जब पूछा गया कि वह वहां क्यों आए तो उन्होंने सहजता से जवाब दिया, अपने साथियों के साथ काम करने। एक प्रतिष्ठित नागरिक बोला, लेकिन साथी भी तो यह काम कर ही सकते थे। दुर्बल शरीर से भारी-भारी लट्ठे ढोने की अपेक्षा जन नेता को स्वास्थ्य की चिंता करते हुए आराम करना चाहिए। इस पर लेनिन मुस्करा कर बोले, जो जनता के बीच में न रहे, जनता के कष्टों को न समझे, अपना आराम पहले देखे, उसे भला कौन जन नेता कहेगा?

६०५) आदमी और शेर - एक बार एक शेर और एक आदमी साथ-साथ यात्रा कर रहे थे, उनके मध्य यह बहस होने लगी कि कौन ज्यादा ताकतवर और श्रेष्ठ है। उनके मध्य नोक-झोंक तीखी हुई ही थी कि वे चट्टान पर उकेरी गयी एक मूर्ति के पास से गुजरे जिसमें एक आदमी को शेर का गला दबाते हुए दर्शाया गया था। वो देखो हमारी श्रेष्ठता को साबित करने के लिए क्या तुम्हें और किसी प्रमाण की आवश्यकता है? आदमी ने गर्व से कहा। शेर ने उत्तर दिया, ये कहानी कहने का तुम्हारा नजरिया है। यदि हम लोग शिल्पकार होते तो शेर के एक पंजे के नीचे बीस आदमी दबे होते। इतिहास सिर्फ विजेताओं द्वारा ही लिखा जाता है।

६०६) सीमित शब्द - एक बार एक गुरुकुल के कुछ छात्र लाओ त्जू की इस सूक्ति पर विचार-विमर्श कर रहे थे- जिन्हें मालूम है, वे कहते नहीं, जो कहते हैं उन्हें मालूम नहीं। इस सूक्ति का सटीक अर्थ जब उनमें से कोई नहीं बता पाया तो वे इसका अर्थ जानने अपने गुरु के पास पहुंचे। गुरु ने पूछा- तुममें से कितने लोग गुलाब की खुशबू के बारे में जानते हो? सभी शिष्यों ने सहमति में सिर हिलाया। यदि तुम सबको यह मालूम है तो मुझे इसे शब्दों में समझाओ। सबके सब चुप थे क्योंकि वे इसे शब्दों में कह नहीं सकते थे।

६०७) धूर्त बंदर और कछुआ - एक जंगल में कछुआ और बंदर रहते थे। कछुआ सीधा-सादा था, जबकि बंदर घमंडी और उत्पाती था। एक दिन कछुए ने एक केले के पेड़ को देखा। उसने बंदर से कहा, दोस्त, हम उस केले के पेड़ को अपने बगीचे में लगाते हैं और जो फल होंगे, उसे आपस में बांट लेंगे। बंदर भी सहमत हो गया। दोनों ने पेड़ को अपने बगीचे में लगा दिया। पेड़ में फल आ गए। जब फल पकने लगे, तो कछुए ने बंदर से केले तोड़ने को कहा। लेकिन बंदर खुद ही सारे केले हजम करने पर तुला था। उसने कछुए को एक भी केला नहीं मिलने दिया। कछुए ने उसे सजा देने की

सोची। वह कुछ कांटे ले आया और पेड़ के नीचे डाल दिए। जब बंदर केले खाकर नीचे आया, तो उसे कांटे चुभ गए। उसने भी कछुए से बदला लेने की सोची। बंदर ने कछुए को पकड़ लिया और उससे बोला, बता तुझे क्या सजा दी जाए? कछुआ घबरा गया, पर उसने हिम्मत नहीं हारी। वह बोला, चाहे तुम मुझे पहाड़ से गिरा दो, बस मुझे पानी में न डुबोना। यह सुनकर बंदर खुश हो गया कि इसने अपने मन की बात मुझे खुद ही बता दी। अब इसे वही सजा दूंगा, यह सोचते हुए बंदर ने उसे पानी में फेंक दिया। पानी में जाते ही कछुआ बोला, अरे मूर्ख मेरा तो जीवन ही पानी में है। अब बंदर को अपने किये पर बहुत रोना आया। पर क्रोध ने उसकी अक्ल छीन ली थी।

६०८) अच्छा सोचेंगे तो अच्छा ही होगा - एक घने जंगल में एक इच्छापूर्ति वृक्ष था, उसके नीचे बैठकर कोई भी इच्छा करने से वह तुरंत पूरी हो जाती थी। यह बात बहुत कम लोग जानते थे क्योंकि उस घने जंगल में जाने की कोई हिम्मत ही नहीं करता था। एक बार संयोग से एक थका हुआ व्यापारी उस वृक्ष के नीचे आराम करने के लिए बैठ गया, उसे पता ही नहीं चला कि कब उसकी नींद लग गई। जागते ही उसे बहुत भूख लगी, उसने आस-पास देखकर सोचा- काश कुछ खाने को मिल जाए। तत्काल स्वादिष्ट पकवानों से भरी थाली हवा में तैरती हुई उसके सामने आ गई।

व्यापारी ने भरपेट खाना खाया और भूख शांत होने के बाद सोचने लगा। काश कुछ पीने को मिल जाए। तत्काल उसके सामने हवा में तैरते हुए अनेक शरबत आ गए। शरबत पीने के बाद वह आराम से बैठकर सोचने लगा- कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूं। हवा में से खाना-पानी प्रकट होते पहले कभी नहीं देखा न ही सुना। जरूर इस पेड़ पर कोई भूत रहता है जो मुझे खिला पिला कर बाद में मुझे खा लेगा। ऐसा सोचते ही तत्काल उसके सामने एक भूत अया और उसे खा गया। हमारा दिमाग ही इच्छापूर्ति वृक्ष है आप जिस चीज की प्रबल इच्छा करेंगे, वह आपको अवश्य मिलेगी। अधिकांश लोगों को जीवन में बुरी चीजें इसलिए मिलती हैं क्योंकि वे बुरी चीजों की ही इच्छा करते हैं।

६०९) भीतरी और बाहरी सम्पदा - एक महर्षि थे। किसान जब अपना खेत काट लेते थे तो उसके बाद जो अन्न कण पड़े रह जाते थे, उन्हें बीन करके वे अपना जीवन चलाते थे। उन जैसा दरिद्र कौन होगा। देश के राजा को उनके कष्ट का पता चला। उसने बहुत-सी धन सामग्री लेकर अपने मंत्री को उन्हें भेंट करने भेजा। मंत्री पहुंचा तो महर्षि ने कहा, मैं सकुशल हूं। इस धन को तुम उन लोगों में बांट दो, जिन्हें इसकी जरूरत है। इस भांति राजा ने तीन बार अपने मंत्री को भेजा और तीनों बार महर्षि ने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। अंत में राजा स्वयं उनके पास गया। वह अपने साथ बहुत-सा धन ले गया। उसने महर्षि से प्रार्थना की कि वे उसे स्वीकार कर लें, किन्तु वे बोले, उन्हें दे दो, जिनके पास कुछ नहीं है। मेरे पास तो सब कुछ है। राजा को विस्मय हुआ जिसके तन पर एक लंगोटी मात्र है, वह कह रहा है कि उसके पास सब कुछ है। उसने लौटकर सारी कथा अपनी रानी से कही। वह बोली, आपने भूल की। ऐसे साधु के पास कुछ देने के लिए नहीं, लेने के लिए जाना चाहिए। राजा उसी रात महर्षि के पास गया और क्षमा मांगी। महर्षि ने कहा, गरीब कौन है? मुझे देखो और अपने को देखो। बाहर नहीं, भीतर। मैं कुछ भी नहीं मांगता, कुछ भी नहीं चाहता। इसलिए अनायास ही सम्राट हो गया हूं। एक सम्पदा बाहर है, एक भीतर है। जो बाहर है, वह आज या कल छिन ही जाती है। इसलिए जो जानते हैं, वे उसे सम्पदा नहीं, विपदा मानते हैं। जो भीतर है, वह

मिलती है तो खोती नहीं। उसे पाने पर फिर कुछ भी पाने को नहीं रह जाता।

६१०) परिवार है तो जीवन में खुशियां - एक पार्क में दो बुजुर्ग बैठे बातें कर रहे थे। पहला- मेरी एक पोती है, शादी के लायक है। बी.ई. किया है, जॉब करती है, कद ५.२ इंच है, सुन्दर है, कोई लड़का नजर में हो तो बताइएगा। दूसरा- आपकी पोती को किस तरह का परिवार चाहिए? पहला- कुछ खास नहीं- लड़का एम.ई.:एम.टेक. किया हो, अपना घर हो, कार हो, घर में एसी हो, अपना बाग-बगीचा हो, अच्छा जॉब, अच्छी सैलरी, कोई लाख रु. तक हो। दूसरा- और कुछ, इन सबके अलावा?

पहला- हां, सबसे जरूरी बात, अकेला होना चाहिए, माँ-बाप, भाई-बहन नहीं होने चाहिए, वो क्या है... लड़ाई-झगड़े होते हैं। दूसरे की आंखें भर आईं... फिर आंसू पोंछते हुए बोले- मेरे एक दोस्त का पोता है। उसके भाई-बहन नहीं हैं, माँ-बाप एक एक्सीडेंट में चल बसे, अच्छी जॉब है, डेढ़ लाख सैलरी है, गाड़ी है, बंगला है, मगर उसकी भी यही शर्त है कि लड़की वालों के भी माँ-बाप, भाई-बहन या कोई रिश्तेदार ना हों। कहते-कहते उनका गला भर आया। फिर बोले- अगर आपका परिवार आत्महत्या कर ले तो बात बन सकती है। आपकी पोती की शादी उससे हो जाएगी और वो बहुत सुखी रहेगी। पहला- ये क्या बकवास है, हमारा परिवार क्यों आत्महत्या करे? कल को उसकी खुशियों में, दु:ख में कौन उसके साथ, उसके पास होगा? दूसरा- वाह मेरे दोस्त, खुद का परिवार, परिवार और दूसरे का कुछ नहीं। मेरे दोस्त, अपने बच्चों को परिवार का महत्व समझाओ, घर के बड़े, घर के छोटे सभी अपनों के लिए जरूरी होते हैं, वरना इंसान खुशियों का और गम का महत्व ही भूल जाएगा, जिन्दगी नीरस बन जाएगी। पहला बुजुर्ग अब बेहद शर्मिंदा हुआ। परिवार है तो जीवन में हर खुशी, खुशी लगती है। अगर परिवार नहीं तो किससे अपनी खुशियां और गम बांटेंगे।

६११) परीक्षा - मनु महाराज की पुत्री का नाम देवहूति था। वह बड़ी सौम्य और ज्ञानी थी। बड़ी हुई तो मनु महाराज को उसके ब्याह की चिंता हुई। तभी एक दिन देवर्षि नारद ने सुझाव दिया, कर्दम ऋषि से बढ़कर योग्य वर आपकी अपनी कन्या के लिए दूसरा नहीं मिलेगा। मनु महाराज को भी बात जँच गई। वे पत्नी शतरूपा तथा कन्या देवहूति के साथ कर्दम ऋषि के आश्रम पहुंचे। कर्दम ऋषि तीक्ष्ण बुद्धिवाले थे। उनके आगमन का अभिप्राय समझ गए। परखना था उन्हें देवहूति को। अत: उन्होंने मेहमानों के लिए तीन आसन बिछाए और बैठने के लिए कहा। मनु महाराज बैठ गए और शतरूपा भी बैठ गईं। किन्तु देवहूति के मन में विचार आया- पिता और माता के समक्ष भावी पति खड़ा है तब वह कैसे बैठे? फिर कर्दम ऋषि ने अपने बैठने के लिए तो आसन बिछाया ही नहीं है। साथ ही उन्होंने तीनों को आसन ग्रहण करने का अनुरोध किया है। उसे टालना भी अनुचित है। उसने एक उपाय सोचा। अपना एक हाथ आसन पर रख वह जमीन पर बैठ गई। देवहूति की इस चतुराई पर कर्दम ऋषि रीझ गए और उन्होंने उसे पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। हर मुश्किल का एक हल होता है।

६१२) फेराडे जिनकी रुचि विज्ञान में थी - माइकल फेराडे एक अनाथ बालक था। वह लंदन घुड़साल में रहता था। कभी उसने पेट भरने के लिए अखबार बेचे, कभी तरह-तरह के दूसरे कामों में वक्त लगाया। जब वह अखबार बेचता था उसी दौरान उसको पढ़ने का शौक लग गया। फिर १३ साल की उम्र में फेराडे एक जिल्दसाज के यहां

नौकरी करने लगा। फेराडे में पढ़ने की बड़ी ललक थी। एक दिन एनसायक्लोपीडिया पर जिल्द चढ़ाते समय उसकी नजर बिजली के बारे में एक लेख पर पड़ी। उसने उस लेख को कई बार पढ़ा और छोटी-छोटी चीजें जुटाकर प्रयोग करने प्रारंभ कर दिए। एक दिन एक सज्जन ने इस बच्चे को इस तरह प्रयोग करता देखा तो वे उसे सर हम्फ्री डेवी का भाषण सुनाने ले गए। फेराडे ने डेवी के भाषणों के नोट्स लिए, फिर उन पर अपनी टिप्पणियां लिखीं। उसके बाद उसने उन्हें सर डेवी के पास भेज दिया। सर डेवी फेराडे की टिप्पणियों से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने फेराडे को बुलाकर अपने यंत्रों की देखभाल करने के लिए रख लिया। फेराडे सर डेवी के प्रयोग देखता और धीरे-धीरे विज्ञान में अपनी रुचि के चलते ही वह एक बड़ी अकादमी में अध्यापक नियुक्त किया गया। इन्हीं फेराडे महाशय ने आगे चलकर विज्ञान की दुनिया में कई चमत्कार किए।

६१३) कमाई की रोटी - एक संत अपने शिष्यों के साथ धर्म-उपदेश देते घूमते रहते थे। वे भूखे-प्यासे एक बस्ती में पहुंचे। शिष्यों ने सवाल किया कि यहां हमें भोजन कौन देगा ? तभी एक दीन-हीन बढ़ई वहां आकर बोला, आप सब मेरे घर चलें। उसके घर में खाने को कुछ न था। उसने सोचा कि दिनभर मेहनत करके जो कमाऊंगा, उससे खाने-पीने का बंदोबस्त करके शाम को इनकी सेवा करूंगा। वह अपने मालिक के यहां काम करने चला गया। संत और उनके शिष्य भूखे ही सो गए। बढ़ई का नाम था लालो और जिस धनाढ्य के यहां वह काम करता था, उसका नाम था भागो। धनाढ्य ने उस दिन नगरभोज किया था। सबको खाना खिलाते-खिलाते शाम हो गई। भागो के नौकरों ने बताया कि लालो बढ़ई के घर कुछ साधु भूखे सो रहे हैं। सेठ ने बढ़ई के घर सोए संत सहित सभी साधुओं को बुलवा लिया और भोजन करने का आग्रह करने लगा। संत बोले, आपके नौकर लालो के यहां भी अब तक रोटियां बन गई हैं। उन्हें भी मंगवा लें सेठ ने लालो बढ़ई के घर से रोटियां मंगवा लीं, फिर संत से पूछा, महाराज, मेरे खाने में ऐसी क्या कमी है, जो मेरे नौकर के घर से खाना मंगवाया है। संत बोले, अभी बताता हूं। यह कहकर उन्होंने भागो सेठ की रोटी तोड़ी तो उसमें से खून बहने लगा। फिर लालो बढ़ई की रोटी तोड़ी तो उसमें से दूध की धार बह निकली। संत ने सेठ से कहा, तेरी कमाई गरीबों के शोषण की है। और लालो बढ़ई की कमाई मेहनत की है।

६१४) मृत्यु से अभय - एक युवा संन्यासी था। उस पर एक राजकुमारी मोहित हो गई। राजा को पता चला तो उसने संन्यासी से राजकुमारी के साथ विवाह करने को कहा। संन्यासी बोला, मैं तो हूं ही नहीं। विवाह कौन करेगा? संन्यासी की यह बात सुनकर राजा ने अपने को बड़ा अपमानित अनुभव किया। उसने अपने मंत्री को आदेश दिया कि उसे तलवार से मार डाला जाय। संन्यासी उसके आदेश पर बोला शरीर के साथ मेरा आरम्भ से ही कोई संबंध नहीं रहा। जो अलग ही हैं, आपकी तलवार उन्हें और क्या अलग करेगी? मैं तैयार हूं और आप जिसे मेरा सिर कहते हैं, उसे काटने के लिए उसी प्रकार आमंत्रित करता हूं, जैसे वसंत की यह वायु पेड़ों से उनके फूलों को गिरा रही हैं। वह मौसम सचमुच वसंत का था और पेड़ों से फूल गिर रहे थे। राजा ने उन फूलों को देखा और देखा मौत को सामने उपस्थित जानते हुए भी उस संन्यासी की आनंदित आंखों को। उसने एक क्षण सोचा, जो मृत्यु से भयभीत नहीं है और जो मृत्यु को भी जीवन की भांति स्वीकार करता है, उसे मारना व्यर्थ है। उसे तो मृत्यु भी नहीं मार सकती। राजा ने अपना आदेश तुरन्त वापस ले लिया।

६१५) मैं का ताला - एक साधु किसी गांव से गुजर रहा था। उसका एक मित्र साधु उस गांव में रहता था। उसने सोचा, चलो, उससे मिलता चलूं। रात आधी हो रही थी। फिर भी वह उससे मिलने गया। एक बन्द खिड़की से प्रकाश आते देख कर उसने दरवाजा खटखटाया। भीतर से आवाज आई, कौन है? इसके बाद भीतर से कोई उत्तर नहीं आया। उसने बार बार दरवाजा खटखटाया, पर भीतर से कोई नहीं बोला। उसे ऐसा लगने लगा, जैसे वह घर बिल्कुल सूना है। उसने जोर से कहा, मेरे लिए तुम दरवाजा क्यों नहीं खोल रहे हो? चुप क्यों हो गये हो भीतर से आवाज आई, तुम कौन ना-समझ हो, जो अपने को मैं कहते हो? मैं कहने का अधिकार सिवाय परमात्मा के और किसी को नहीं है। प्रभु के द्वार पर मैं का ही ताला है। जो उसे तोड़ देते हैं, वे पाते हैं कि द्वार तो सदा से ही खुले थे।

६१६) मीठी सजा - मिथिला के प्राचीन राजवंशी में नरहन (सरसा) राज्य का भी बड़ा महत्व था। वहां का राजा बड़ा उदार और विद्वान था। प्रजा को वह सन्तान की तरह चाहता था। प्रजा भी उसे पिता की तरह मानती थी; किन्तु उसकी राजधानी में एक गरीब आदमी था, जो हर घड़ी राजा की आलोचना करता। राजा इसे जानकर भी चुप रहता। एक दिन राजा ने इस बारे में गहराई से सोचा। फिर अपने एक निजी सेवक को उसके यहां भेजा। साथ में गेहूं के आटे की बोरियां, साबुन का बक्सा, गुड़ की चक्कियां भी बैलगाड़ी पर लादकर भेजीं। इन चीजों को पाकर वह आदमी गर्व से फूल उठा। हो न हो, राजा ने ये चीजें उससे डरकर भेजी हैं। सामान को घर में रखकर वह अभिमान के साथ राजगुरु के पास पहुंचा। सारी बात बताकर बोला, गुरुदेव। आप मुझसे हमेशा चुप रहने को कहा करते थे। यह देखिये, राजा मुझसे डरता है। राजगुरु ने उत्तर दिया, बलिहारी है तुम्हारी समझ की, अरे राजा ने इन उपहारों के द्वारा तुम्हें यह समझाने की कोशिश की है कि हर समय गालियों का ही प्रयोग नहीं करो, कभी-कभी अच्छी बातें भी सोचा करो। आटे की ये बोरियां तुम्हारे खाली पेट के लिए हैं, साबुन तुम्हारे शरीर का मैल धोने के लिए है और गुड़ की ये चक्कियां तुम्हारी कड़वी जबान को मीठी बनाने के लिए हैं।

६१७) सत्य का ज्ञान - एक दिन गुरु नानक अपनी शिष्य मंडली के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक बड़ी हवेली पर सात झंडे लहरा रहे हैं। जिज्ञासा हुई तो उन्होंने शिष्यों से पूछा- यह हवेली किसकी है? इस पर लगे हुए सात झंडों का क्या आशय है? शिष्यों ने बताया- यह एक लखपति सेठ की हवेली है। जब व्यापार में उसे एक लाख का लाभ होता है तो वह हवेली पर एक झंडा लगा देता है। लगता है कि उसने सात लाख रुपये कि संपत्ति एकत्र कर ली है। थोड़ी देर बाद गुरुनानक उस हवेली में जा पहुंचे। सेठ को पता चला तो वह दौड़ा चला आया। और उनसे विश्राम करने का अनुरोध करने लगा। गुरु नानक बोले- अभी तो समय नहीं है सेठ। हम लोगों को काफी दूर जाना है। हमारे पास एक सोने की सूई है। रास्ते में डाकुओं का डर है। हम चाहते हैं कि इसे आप अपने पास रख लें। अगले जन्म में हमें लौटा देना। इस जन्म में क्या पता, आपसे फिर मिलना हो या न हो। सेठ के आश्चर्य का पार न रहा। हाथ जोड़कर बोला- गुरूदेव, आप यह क्या कह रहे हैं? परलोक में तो मनुष्य कुछ भी नहीं ले जा सकता। सब यहीं धरा रह जाता है। गुरु नानक बोले- जब आप झंडे लगाकर सात लाख रुपये की संपत्ति को परलोक में साथ ले जाने का दावा कर रहे हैं, तब मेरी सूई में भला कितना वजन है। यह सुनते ही सेठ के ज्ञान-चक्षु खुल गए और अहं का नशा पलभर में काफूर हो गया। वह गुरुनानक के चरणों पर गिर पड़ा- गुरुदेव, आपने मुझे सत्य का ज्ञान करा दिया। अब ऐसी भूल कभी न करूंगा।

६१८) प्रभु प्रार्थना समझो - फारस में एक सूफी संत रहते थे। उनके साथ बहुत से अनुयायी सूफी भी थे। एक समय तत्कालीन शासक ने इन्हें ईशद्रोही एवं काफिर कहकर सजा-ए-मौत की सजा सुनाई। अदालत का हुक्म था कि पहले दूसरों का कत्ल किया जाए और बाद में सूफी संत का। जल्लाद नंगी तलवार लेकर आया। जैसे ही उसने दूसरों पर वार करने के लिए तलवार उठाई, संत ने उसकी जगह खुद को पेश कर दिया। वह भी अत्यंत प्रसन्नता तथा विनम्रता के साथ। चूँकी सजा-ए-मौत सार्वजनिक रूप से दी जाती थी, सो वहाँ इकट्ठे सैकड़ों लोग सकते में आ गए। जल्लाद भी भौचक्का रह गया। उसने कहा, नौजवान एक तो तुम्हारी बारी अभी आई नहीं है, दूसरे तलवार कोई ऐसी चीज नहीं है जिससे मिलने के लिए लोग इतने व्याकुल हों। संत बोले, मेरे उस्ताद ने मुझे यही सिखाया है कि तुम्हारा दीन सिर्फ मुहब्बत है। मुहब्बत का मतलब है दूसरे के दु:ख को अपना दु:ख समझकर उसे सहने के लिए खुद को पेश करना। जिंदगी खेल है। मुहब्बत श्रेष्ठ है। मौत आए तो मित्र के आगे हो जाओ जीवन मिलता हो तो पीछे हो जाओ। इसे हम प्रार्थना कहते हैं।

६१९) आंखें - माइकल और ऐनी घर में अकेले थे। माइकल ने ऐनी से कहा, चलो, चलकर कुछ खाने के लिए खोजते हैं। ऐनी ने कहा, अगर तुम मुझे ऐसी जगह ले चलो जहाँ कोई हमें न देख सके, तो मैं तुम्हारे साथ चलने के लिए तैयार हूँ। अच्छा, तो ठीक है। हम लोग गौशाला में चलते हैं। वहां चलकर एक-एक कटोरा दूध पीते हैं। बाप रे, वहां तो ग्वाला हमें जरूर देख लेगा। तो फिर रसोई में चलते हैं। माइकल ने दूसरा प्रस्ताव रखा, वहां अलमारी में शहद की भरनी रखी है। पड़ोसन अपनी खिड़की से देख लेगी तो? उनकी रसोई बिलकुल अपनी रसोई की खिड़की के सामने है। तब बगीचे में चलते हैं। सेब के पेड़ से लाल-लाल सेब तोड़कर खाएंगे। काफी अंधेरा भी है। कोई देख नहीं पाएगा। माइकल ने अंतिम प्रस्ताव रखा। यह सुनकर उसकी नन्ही बहन ऐनी ने कहा, क्या तुम्हें विश्वास है कि वहां तुम्हें कोई नहीं देखेगा? ईश्वर की आंखें हर जगह तुम्हें देख सकती हैं। वे सर्वज्ञाता हैं। माइकल यह सुनकर डर गया। वह बोला, तब तो हमें कोई भी काम चोरी छिपे नहीं करना चाहिए। ईश्वर सर्वज्ञाता है, यह हम कभी न भूलें।

६२०) कर्ज लेकर नहीं भूलना - नेपोलियन बोनापार्ट बचपन में बहुत निर्धन थे, किन्तु अपने साहस और प्रयत्नों से वे एक दिन फ्रांस के सम्राट बन बैठे। सम्राट होने के बाद वे घूमते हुए एक दिन उस स्कूल के पास जा पहुंचे, जहां बचपन में पढ़ते थे। अचानक उन्हें कुछ याद आया और वे पास बनी एक टूटी-फूटी झोंपड़ी के सामने जा पहुंचे। झोंपड़ी में रहनेवाली बुढ़िया बाहर आई तो उससे पूछा, क्या तुम्हें याद है? बहुत पहले इस स्कूल में बोनापार्ट नाम का एक लड़का पढ़ता था? हां-हां, खूब अच्छी तरह याद है। बड़ा भला लड़का था। वह बोली। नेपोलियन ने फिर कहा, वह तुमसे फल और मेवा खरीदा करता था। क्या उसने तुम्हारे सारे पैसे चुका दिए थे या कुछ उधार रह गया था? वह कभी उधार नहीं रखता था। बुढ़िया ने जवाब दिया, यहां तक कि कभी उसके साथी कुछ उधार लेते तो वही चुकता कर देता था। नेपोलियन ने बताया, मां, तुम बहुत बूढ़ी हो गई हो। अत: तुम्हारी याददाश्त अब कमजोर हो गई है। तुमने उस लड़के को एक बार कर्ज दिया था। तुम भूल गईं, पर वह नहीं भूला है। आज वही लड़का तुम्हारा कर्ज चुकाने आया है। बुढ़िया अवाक रह गई। नेपोलियन ने रुपयों की एक भारी-भरकम थैली बुढ़िया के चरणों में रख दी। कर्ज बोझ के समान होता है।

अनुकूल अवसर आने पर उसे तुरंत उतारकर फेंक देना चाहिए।

६२१) शेर और सियार - एक शेर को शक हुआ कि उसके मुंह से बदबू आ रही है। उसने एक गधे को रोककर पूछा, जरा देखो तो सूंघ के। मेरे मुंह से बदबू आ रही है क्या? गधे ने शेर का मुंह सूंघकर सच-सच कह दिया, हां, महाराज। आ तो रही हे। शेर से सच बरदाश्त न हुआ। वह उसे मारकर खा गया। कुछ समय के बाद वहां से एक बकरी गुजरी। शेर ने बकरी को बुलाकर वही प्रश्न दोहराया। बकरी गधे की अपेक्षा कुछ सयानी थी। फौरन बोली, नहीं तो, महाराज। किसने कहा कि आपके मुंह से बदबू आ रही है? शेर उसे भी मारकर खा गया, क्योंकि वह चापलूसों को पसंद नहीं करता था। थोड़ा समय और बीता। अचानक एक सियार रास्ते पर दिखाई दिया। शेर ने उसे हांक लगाई और वही पुराना सवाल दोहरा दिया। सियार छंटा हुआ सयाना था। फिर उसने गधे और बकरी की हड्डियां भी पास पड़ी देख ली थीं। बोला, महाराज। मुझे बुरी तरह जुकाम हुआ है। क्षमा कीजिए। मैं बता नहीं सकूंगा। ज्ञान का पहला काम असत्य को मालूम करना है, दूसरा सत्य को जानना।

६२२) बर्नार्ड शॉ की जिंदादिली - एक अस्वस्थ व्यक्ति ने डॉक्टर को बुलवाया। उसके घर की लिफ्ट खराब थी, इसलिए डॉक्टर को सीढ़ियां चढ़कर पहुंचना पड़ा। वह काफी जोरों से हांफने लगा। जब अस्वस्थ व्यक्ति ने उनकी यह हालत देखी, तो बिस्तर से उठकर उसने डॉक्टर को बैठने के लिए कुर्सी दी और एक गोली उसे देते हुए बोला- यह तुम्हें फौरन आराम पहुंचाएगी। तुम गरिष्ठ भोजन फौरन बंद कर दो और साग-सब्जी व फल खाया करो। मैं तुमसे उम्र में करीबन दुगना हूं, फिर भी सौ गुना चुस्त हूं। चिकित्सक से मरीज ने पूछा- क्या तुम नृत्य कर सकते हो? चिकित्सक ने इन्कार कर दिया तो उसने संगीत बजाया और नृत्य भी किया। साथ ही चिकित्सक को सलाह दी- रोजाना कम से कम पंद्रह मिनट तक नृत्य करने से तुम छरहरे और चुस्त हो जाओगे। तुम चिकित्सक मरीजों को हमेशा ऐसी सलाह देते हो, जो उनके लिए उपयोगी नहीं होतीं। अब तुम मुझे लिखने के लिए मना करोगे क्योंकि उसमें मेहनत होगी। लेकिन मैं एक लेखक हूं, इसलिए लिखने से ही स्वस्थ रहता हूं। अब तुम यह अनुभवी सलाह देने के लिए मुझे पांच शिलिंग दो। चिकित्सक ने हंसते हुए कहा- ठीक है, आप उन्हें काटकर मुझे दो पौंड दे दीजिए। कारण पूछने पर चिकित्सक बोले- क्योंकि मैंने आपको स्वस्थ कर दिया। मुझे मरीज समझकर आप अपना कष्ट भूल गए। स्वभाव की जिंदादिली व्यक्ति को सदैव स्वस्थ व ऊर्जावान बनाए रखती है। चिकित्सक का तो पता नहीं, लेकिन इस कहानी के मरीज का नाम है जॉर्ज बर्नार्ड शॉ।

६२३) दान का विज्ञापन - जमशेदजी मेहता कराची के प्रसिद्ध कारोबारी व समाजसेवी थे। एक बार उनके पास कराची के जन चिकित्सालय की संचालक समिति के सदस्य चंदा लेने के लिए आए। ये उस अस्पताल को बेहतर बनवाने के लिए लोगों से दान इकट्ठा कर रहे थे। उनमें से एक सदस्य मेहता जी से बोला, महोदय, हमारी प्रबंध समिति ने यह निर्णय लिया है कि जो दस हजार रुपये दान देगा उसका नाम अस्पताल के मुख्य द्वार पर लगनेवाले शिलालेख पर लिखा जाएगा। उनकी बात सुनकर मेहता जी मुस्कराने लगे। उन्हें बैठने का संकेत कर उन्होंने अपनी तिजोरी से रुपये निकालकर सदस्यों के सामने रख दिए। सदस्य रुपये गिनने लगे। कुल नौ हजार नौ सौ पचास रुपये थे। सभी

सदस्य हैरानी से एक दूसरे को देखने लगे। उन्हें लगा शायद मेहता जी उनकी बात नहीं समझ पाए या उन्होंने गलती से यह राशि दे दी है। तभी एक सदस्य थोड़ा सकुचाते हुए उनसे बोला, महोदय, आपके द्वारा नौ हजार नौ सौ पचास रुपये दिए गए हैं। यदि आप पचास रुपये और दे दें तो पूरे दस हजार हो जाएंगे। इस तरह अस्पताल के मुख्य द्वार के शिलालेख पर आपका नाम आ जाएगा। सदस्य की बात सुनकर मेहता जी विनम्रतापूर्वक बोले, मेरे लिए इतना दान ही उत्तम है। मैं पूरे दस हजार रुपये देकर अपने दान का विज्ञापन नहीं करवाना चाहता। विज्ञापन से दान का महत्व नष्ट हो जाता है। महत्व चिकित्सालय के उद्देश्य का रहना चाहिए न कि दानदाता का। यदि दान प्रचारित किया जाता है तो निर्धन व्यक्तियों को त्याग और सेवा करने की प्रेरणा कैसे और कहां से मिलेगी? वे कम राशि देने में संकोच करेंगे। सच बात तो यह है कि नि:स्वार्थ सेवा में जो आनंद है, वैसा पत्थर पर नाम लिखवाने में नहीं। सभी सदस्य उनकी बात सुनकर दंग रह गए। वे मन ही मन उनके उदार विचारों के कायल हो गए।

६२४) छोटी सी बात - एक बार बाप बेटा गली से गुजर रहे थे। बाप ने बेटे से कहा, वह देखो, धूल में घोड़े की नाल पड़ी है। उठा लो और अपनी जेब में रख लो। बाप रे। बेटे ने जवाब दिया, कौन झुके और कौन इसे मिट्टी में से उठाए। बाप ने कुछ न कहा। उसने चुपचाप नाल उठाई और जेब में डाल ली। जब वे करीब के एक गांव में पहुंचे तो बाप ने एक लुहार को नाल बेच दी। बदले में जो पैसे मिले उससे उसने रसभरी खरीद ली। बाप-बेटे आगे बढ़े। सूरज सिर पर चमक रहा था। वे एक सुनसान रास्ते से गुजर रहे थे। दूर-दूर तक कोई घर नजर नहीं आता था। बेटे को बुरी तरह प्यास लगी थी। वह बेचैन हो रहा था। बाप ने बेटे की स्थिति भांप ली। उसने एक रसभरी रास्ते पर फेंकी। बेटे ने चट से उसे उठाया, धूल पोंछी और मुंह में डाल ली। यह सिलसिला तब तक चला जब तक सारी रसभरी खत्म न हो गई। तब पिता ने कहा, यह जान लो कि ये रसभरियां उसी नाल की बदौलत थीं, जिसे धूल में से उठाना तुम्हें बुरा लगा था। अगर मैं नाल को न उठाता तो आज तुम्हारी प्यास बुझाने का कोई उपाय हमारे पास न होता। वक्त आने पर छोटी सी चीज भी काम आती है।

६२५) धन और सुख शान्ति - किसी राज्य के खजांची पर यह शक किया गया कि वह राजकोष से हीरे-मोती चुराकर अपने घर के तहखाने में छिपाकर रखता है। राजा ने जब यह अफवाह सुनी तो वह खजांची के घर जाँच पड़ताल के लिए पहुंचा और तहखाने का दरवाजा खोलने की आज्ञा दी। तुरंत तहखाने का दरवाजा खोल दिया गया। किन्तु यह क्या। वहाँ जो कुछ था, देखकर सब हैरान रह गए। तहखाने के भीतर एक खाली कमरा था, जिसमें एक टूटी-फूटी मेज पड़ी थी और उस पर एक बाँसुरी रखी हुई थी। बाँसुरी की बगल में ही एक थैला रखा था। साथ में एक चरवाहे की लाठी भी रखी थी। उस कमरे में एक खिड़की थी, जहाँ से हरी-भरी घाटी का ढलान दिखाई पड़ रहा था, जो किसी स्वर्ग का हिस्सा प्रतीत होता था। खजांची ने कहा, मैं बचपन में अपनी भेड़-बकरियाँ चराते हुए कितना प्रसन्न था, तभी आप मुझे महल में ले आए और आपने मुझे खजांची बना दिया। पर मैं अपने पुराने दिनों को नहीं भुला पाया। हर रोज मैं इस तहखाने में आता हूं और बाँसुरी की धुन पर उस समय को दोहराता हूं जो गरीबी के होते हुए भी कितने सुख के थे, शांति के थे। इस महल में सारी शान-शौकत के बाद भी मुझे वह सुख नसीब नहीं है। धनवान होना ही सुखी होना नहीं है।

६२६) दीप से दीप जलाओ - ईश्वर चन्द्र विद्यासागर कलकत्ता में अध्यापन कार्य करते थे। वेतन का उतना ही अंश घर परिवार के लिए खर्च करते जितने में कि औसत नागरिक स्तर का गुजारा चल जाता। शेष भाग वे दूसरे जरूरतमंदों

की, विशेषत: छात्रों की सहायता में खर्च कर देते थे। आजीवन उनका यही व्रत रहा। वे गरीबी में पढ़े थे और निर्धनों के लिए आवश्यकताएँ पूरी करने में लगा देते।

एक दिन वे बाजार में चले जा रहे थे। एक हताश युवक ने भिखारी की तरह उनसे एक पैसा माँगा। विद्यासागर दानी तो थे पर सत्पात्र की परीक्षा किए बिना किसी की ठगी में न आते। युवक से जवानी में हट्टे कट्टे होते हुए भी भीख माँगने का कारण पूछा। सारी स्थिति जानने पर माँगने का औचित्य लगा। सो एक पैसा तो दे दिया पर उसे रोककर उससे पूछा कि यदि अधिक मिल जाय तो क्या करोगे? युवक ने कहा कि यदि एक रुपया मिले तो उसका सौदा लेकर गलियों में फेरी लगाने लगूंगा और अपने परिवार का पोषण करने में स्वावलम्बी हो जाऊंगा। विद्यासागर ने एक रुपया उसे ओर दे दिया। उसे लेकर उसने छोटा व्यापार आरंभ कर दिया। काम दिन दिन बढ़ने लगा। कुछ दिन में वह बड़ा व्यापारी बन गया।

एक दिन विद्यासागर उस रास्ते से निकल रहे थे कि व्यापारी दुकान से उतरा उनके चरणों में पड़ा और दुकान दिखाने ले गया और कहा- यह आपका दिया एक रुपया पूंजी का चमत्कार है। विद्यासागर प्रसन्न हुए और कहा कि जिस प्रकार तुमने सहायता प्राप्त करके उन्नति की उसी प्रकार का लाभ अल्प जरूरतमंदों को भी देते रहना। पात्र उपकरण लेकर ही निश्चिंत नहीं हो जाना चाहिए वरना वैसा ही लाभ अन्य अनेकों को पहुंचाने के लिए समर्थता की स्थिति में स्वयं कभी उदारता बरतनी चाहिए। व्यापारी ने वैसा ही करते रहने का वचन दिया।

६२७) बोझ का सम्मान - प्रसिद्ध उद्योगपति जमशेदजी अपने सेवकों के साथ सड़क पर जा रहे थे कि उनकी बगल से भारी बोरा उठाए एक मजदूर गुजरा। बोरे का धक्का लगने से जमशेदजी गिर पड़े और उनकी पगड़ी उछलकर नाले में जा पड़ी। एक सेवक ने फुर्ती से उन्हें उठाया। वह मजदूर सहम गया और हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा। सेवकों ने सोचा, अब तो इस मजदूर की खैर नहीं, पर वे चकित रह गए, जब जमशेदजी ने उसे बिना डांटे-डपटे क्षमा कर दिया और बोले, इस बेचारे का इसमें क्या कसूर। यह तो बोझ से दबा हुआ था। यह भला कैसे देख सकता था। कसूर तो मेरा है, मुझे देखकर चलना चाहिए था। यह कहकर उन्होंने ५ का नोट उस मजदूर को दिया और अपने सेवक से बोझ उठवा देने के लिए कहा। बुद्धिमान पुरुष अपने किए का दोष दूसरों के सिर नहीं मढ़ते।

६२८) सच्ची भक्ति - यह उन दिनों की बात है जब पांचों पांडव जुए में अपना पूरा राजपाट हारकर जंगल-जंगल भटक रहे थे। धर्मराज युधिष्ठिर घंटों पूजा-पाठ में लगे रहते। एक बार जब वे पूजा से उठे तो द्रौपदी ने कहा, महाराज, आप भगवान का इतना भजन-पूजन करते हैं, फिर भगवान से यह क्यों नहीं कहते कि वे हमारे संकट दूर कर दें? हमारी कितनी बुरी अवस्था हो रही है। सुनो द्रौपदी, धर्मराज युधिष्ठिर ने शांत स्वर में कहा, मैं परमात्मा का भजन सौदे के लिए नहीं करता, अपने मन की शांति के लिए करता हूं, शक्ति पाने के लिए करता हूं। इससे मुझे दु:ख सहने की क्षमता प्राप्त होती है। सच्ची भक्ति स्वार्थ के लिए नहीं होतीं।

६२९) सच्चा झूठा - एक पेड़ पर मधुमक्खियों ने अपना शानदार घर बनाया। जैसे ही वे शहद की तलाश में बाहर गईं, मधुमक्खों ने उस पर फौरन कब्जा कर लिया। वे कहने लगे, यह घर तो हमने बनाया है। यह घर हमारा है। मधुमक्खियां बोलीं, तुम लोग झूठे हो। यह घर हमने बनाया है। यह घर हमारा है। दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़े

रहे। अंत में मामला एक टिड्डे के पास पहुंचा। टिड्डे ने दोनों पक्षों की बात सुनकर अपना फैसला सुनाया, आप लोग फिर से एक-एक घर बनाओ। जिसका घर इस घर से मिलता-जुलता होगा वही इस घर का सच्चा मालिक होगा। यह सुनकर मधुमक्खे बोले, यह फैसला हमें मंजूर नहीं। टिड्डा समझ गया सबके सब मधुमक्खे झूठे हैं। सच यही है कि यह घर मधुमक्खियों का है। लोगों से काम लेने के लिए मखमल की म्यान में तलवार जैसा तेज दिमाग होना चाहिए।

६३०) इन्सानियत - नेपोलियन तब फ्रांस का ही शासक था। आसपास के देशों को जीत कर अपने राज्य में मिलाने के विश्व विजय अभियान पर निकलने के शुरुआती दौर में उसने आन्द्रिया पर आक्रमण किया। उनके सैनिक युद्धकला में माहिर थे ही, उनमें जोश और शौर्य की भावनाएं भी भरी गईं। इस जोश और शौर्य का परिणाम भी विजय के रूप में मिल रहा था। सेना नए-नए मोर्चों पर प्रतिपक्षी सेनाओं को हराती हुई आगे बढ़ रही थी। विजय यात्रा विएना नगर तक जा पहुंची। सिंहद्वार पर पहुंचकर सेना रुकी और नेपोलियन ने संधि का झंडा देकर राजदूत को नगर में भेजा। लेकिन वहां के सैन्य अधिकारियों ने रोष और खीझ से भरकर शांति संदेश लानेवाले उस दूत की हत्या कर दी। इससे नेपोलियन ने क्रोधित होकर अपनी तोपों को नगर पर गोलाबारी करने की आज्ञा दी। वहां के कई विशाल भवन तोप के गोलों की मार से ध्वस्त हो गए। एकाएक नगर का द्वार खुला और उसमें से दूत संधि का झंडा लिए बाहर निकला। नेपोलियन ने दूत का सम्मान करके संदेश पूछा। उसी नगर के अधिकारियों ने फ्रांस के दूत को बिना उसकी बात सुने ही मार दिया था। दूत ने कहा कि नगर में आपकी तोपों के गोले जहां गिर रहे हैं, वहीं पास में सम्राट की पुत्री बीमार पड़ी है। अगर तोपें इसी प्रकार चलती रहीं, तो विवश होकर सम्राट को अपनी पुत्री को अकेले छोड़कर चले जाना पड़ेगा। नेपोलियन ने इतना सुनते ही गोलाबारी रोकने का आदेश दिया। सेनापतियों के मत से तोपों से गोलाबारी करना जरूरी था, पर नेपोलियन ने कहा कि युद्ध नीति की निगाह से तो आपकी बात ठीक है, पर मानवता की दृष्टि से एक रोगी पर दया करना उससे भी अधिक महत्व की बात है। तोपें वहां से हटा ली जाएं।

६३१) काठ का उल्लू - किसान का एक लड़का था। वह काठ का उल्लू था। एक बार खेत से घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक घोड़ेवाला मिला। घोड़ा देखकर लड़के का जी चाहा कि वह उसे खरीद ले। उसने घोड़ेवाले से पूछा, क्यों भाई, इस घोड़े का क्या लोगे? घोड़ेवाले ने कहा, इसके पूरी सौ रुपये लगेंगे। लड़का बोला, मेरे पास तो सिर्फ पचास रुपये है। घोड़ेवाले ने कहा, दफा हो जाओ। यह घोड़ा है, गधा नहीं जो पचास रुपये में मिल जाए। लड़का सोचकर बोल, भाई, हम ऐसा करते हैं- तुम मुझे घोड़ा दो, मैं ये पचास रुपये तुम्हें नकद देता हूं और बाकी के पचास? उसके बदले तुम अपना घोड़ा वापस ले लो। सौदा कैसा रहा? बात घोड़ेवाले की समझ में आ गई। वह कोई नेक आदमी तो था नहीं। पचास रुपये और घोड़ा लेकर वह वहां से बेखटके चल पड़ा। यहां लड़का भी बहुत खुश था। वह टिक-टिक आवाज करता, घोड़ा हांकने का खेल खेलता हुआ अपने घर आया। घर पहुंचकर बोला, बापू-बापू। आज मैंने एक घोड़ा खरीदा। पिता ने पूछा, कहां है घोड़ा? लड़का बोला, बापू, दरअसल बात यह हुई कि घोड़ा मैंने सौ रुपये में खरीदा, लेकिन मेरे पास तो सिर्फ पचास रुपये थे। वह पचास रुपये मैंने घोड़ेवाले को दे दिए और बाकी के पचास के बदले मैंने उसे उसका घोड़ा लौटा दिया। हम अपने सिर पर बेकार कर्ज क्यों रखें? पिताजी ने कहा, वाह रे काठ के उल्लू, वाह। तेरी अक्ल के क्या कहने।

मूर्ख हर जगह अपनी बेवकूफी का प्रदर्शन करते हैं।

६३२) लोभ से विनाश - किसी गांव में एक किसान रहता था। किसान अपने खेतों में बहुत मेहनत से काम करता लेकिन इसमें उसे कभी लाभ नहीं हुआ। एक दिन दोपहर में धूप से पीड़ित होकर वह अपने खेत के पास एक पेड़ की छाया में आराम कर रहा था। सहसा उसने देखा कि एक एक सर्प उसके पास ही बांबी से निकल कर फन फैलाए बैठा है। किसान आस्तिक और धर्मात्मा प्रवृत्ति का सज्जन व्यक्ति था। उसने विचार किया कि ये नागदेव अवश्य ही मेरे खेत के देवता हैं, मैंने कभी इनकी पूजा नहीं की, लगता है इसीलिए मुझे खेती से लाभ नहीं मिला। यह सोचकर वह पास जाकर बोला- हे क्षेत्ररक्षक नागदेव, मुझे अब तक मालूम नहीं था कि आप यहाँ रहते हैं, इसलिए मैंने कभी आपकी पूजा नहीं की, अब आप मेरी रक्षा करें। ऐसा कहकर एक कटोरे में दूध लाकर नागदेवता के लिए रखकर वह घर चला गया। प्रात:काल खेत में आने पर उसने देखा कि कटोरे में एक स्वर्ण मुद्रा रखी हुई है। अब किसान प्रतिदिन नागदेवता को दूध पिलाता और बदले में उसे एक स्वर्ण मुद्रा प्राप्त होती। यह क्रम बहुत समय तक चलता रहा।

६३३) मछली और बंदर - एक जहाज कलकत्ता जा रहा था। उसमें मुसाफिरों के साथ एक बंदर भी यात्रा कर रहा था। अचानक समुद्र में तूफान उठा। जहाज डांवाडोल होने लगा। कुछ देर बाद डूब भी गया। ज्यादातर मुसाफिर डूब गए। कुछ, जो बच गए थे, किसी-न-किसी सहारे किनारे तक पहुंचने की कोशिश करने लगे। तभी एक बड़ी-सी मछली पानी में दिखाई पड़ी। बंदर उसी की पीठ पर बैठ गया। मछली बड़ी भली थी। वह बंदर को लेकर किनारे की ओर बढ़ने लगी। रास्ते में उसने बंदर से पूछा, तुम भारत देश के वासी हो? बंदर ने हौले से जवाब दिया, हां। मछली ने दोबारा प्रश्न किया, तब तो तुम कलकत्ता से परिचित होगे। बंदर सोच में पड़ गया। कुछ क्षणों बाद बोला, हां-हां, क्यों नहीं। कलकत्ता तो मेरा लँगोटिया यार है। मछली समझ गई कि उसकी पीठ पर कोई मक्कार बैठा है। उसने तुरंत गोता मारा और बंदर को उसके हाल पर छोड़कर चलती बनी। दोस्तों से ईमानदारी बरतनी चाहिए।

६३४) तसला और कटोरा - गांधीजी बड़ौदा जेल में थे, तब सुपरिटेंडेंट मेजर मार्टिन ने उनके लिए कुछ आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध करवाना आरंभ किया। गांधीजी ने सुपरिटेंडेंट से पूछा, ये सारी वस्तुएं किसके लिए आ रही हैं? सुपरिटेंडेंट ने उत्तर दिया, आपके लिए। मैंने सरकार को लिखा था कि इतने महान पुरुष पर ३०० रुपये महीने खर्च होने चाहिए। गांधीजी ने कहा, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। किन्तु मेरा मासिक व्यय ३५ रुपये से अधिक नहीं होगा। यदि मैं स्वस्थ होता तो खाना भी सी क्लास का खाता। गांधीजी के आग्रह पर वे सारी वस्तुएं वापस कर दी गईं। उनके स्थान पर वही तसला और कटोरा आ गया, जो सामान्य कैदी को दिया जाता था। महान पुरुष कभी अपने को साधारण लोगों से अलग नहीं समझते।

६३५) परिवार की लाड़ली - एक साथ तीन पीढ़ियां गांव के बस स्टैंड पर बस का इंतजार कर रही थीं। दादी, मां, पिता, बेटा और उसकी नई नवेली बहू। बस स्टैंड हाइवे के किनारे था हालांकि यातायात की कमी नहीं थी लेकिन लोकल बसों की कमी थी। फलस्वरूप लोगों को घंटों इंतजार करना पड़ता था। समय गुजारने के लिये बेटे ने एक तरीका ढूंढ निकाला। वह आते-जाते ट्रकों के पीछे की लिखावटों को पढ़ने लगा। जरा जोर से ताकि सब सुन लें। कोई रोमांटिक सी

बात होती तो बहू की ओर देखकर और जोर से बोलता। बहू घूंघट कुछ ऊपर उठाती नीचे का ओंठ दांतों तले दबाती और सबकी नजरें बचाते हुए पति की ओर आंखें तरैरती। पति को पत्नी के चेहरे की यह लिखावट से भी ज्यादा रोमांचित कर देती। उसे इंतजार में भी अनोखा आनंद आने लगा। अभी-अभी मार्बल से लदा एक ट्रक गुजरा था। ओवरलोड। धीमी रफ्तार। दर्द से कराहता हुआ सा, लिखा था, परिवार की लाड़ली। बेटे ने कहा, वो देखो परिवार की लाडली जा रही है और बड़े लाड से पत्नी को निहारा। हुंह, इतना तो बोझा लाद रखा है और परिवार की लाड़ली। पत्नी ने व्यंग्य किया। सासूजी सुन रही थी। उन्होंने तिरछी निगाहों से अपने पति व सास की तरफ देखा, फिर बोली, इतना बोझा लाद रखा है तभी तो परिवार की लाड़ली है। वरना... बहू ने महसूस किया कि सासूजी की आवाज घुटकर रह गई है।

६३६) कंजूस - एक बार एक विद्वान और एक कंजूस साथ-साथ कहीं जा रहे थे। दिन बीत गया, रात हुई। सर्दी इतनी थी कि कंजूस को नींद ही नहीं आ रही थी। उसने तय किया कि लकड़ी खोजकर वह आग जलाएगा, ताकि ठिठुरन से बच सके। उसने आसपास लकड़ियाँ खोजीं, पर उसे कहीं सूखी घास भी न मिली। तभी उसकी निगाह सोए हुए विद्वान के सिरहाने रखी हुई किताबों के पुलिंदे पर गईं। बस, बात बन गई। उसने धीरे से किताबों का पुलिंदा सरकाया और आग जला ली। गरमाहट से उसे नींद आने लगी और वह आराम से सो गया। थोड़ी देर बाद आग बुझ गई और सर्दी से विद्वान की नींद खुल गई। मगर आग जलाने का कोई साधन उन्हें न सुझाई पड़ा। तभी दृष्टि कंजूस की बगल में रखे नोटों की गड्डियों पर गई। विद्वान ने सोचा, यह बड़ी बेकार की चीज है। उन्होंने उसी से आग जलाई और आराम से सो गए। सुबह हुई तो दोनों को अपने नुकसान का एहसास हुआ, मगर बिना एक दूसरे से कुछ बोले वे अपने अपने रास्ते हो लिए। आज पढ़ना सब जानते हैं, पर क्या पढ़ना चाहिए, यह बहुत कम लोग जानते हैं।

६३७) बादामी रंग का भालू - एक बार किसी चिड़ियाघर में दो भालू मिले। एक सफेद रंग का था और दूसरा बादामी रंग का। दोनों मित्र बन गए। बादामी भालू बोला, मित्र। कुछ दिनों में मैं यहां से भाग जाना चाहता हूं। सफेद भालू ने कहा, मैं भी वही सोच रहा था कि इस गुलामी से निकल भागना ही अच्छा है।

मौका पाकर दोनों ही वहाँ से भाग निकले। दिन-रात भागते-भागते वे दोनों एक समुद्र के किनारे जा पहुंचे। समुद्र में पानी का एक जहाज था। दोनों ही उस पर उछलकर चढ़ गए। कई दिनों तक समुद्र यात्रा करने के बाद उन्होंने उत्तरी ध्रुव पर बर्फ का ढेर देखा। वे जहाज से कूद पड़े और बर्फ में छेद करके मछलियाँ ढूंढ़ने लगे। दोनों ने पेट भरकर मछलियाँ खाई और वहीं रहने लगे और इस तरह बादामी रंग का भालू उत्तरी ध्रुव पर पाया जाने लगा। जिन्हें स्वतंत्र होना होता है उन्हें स्वयं ही प्रयास करना पड़ता है।

६३८) सेवा हमारा धर्म है - किसी जमाने की बात है, बगदाद में एक धनी आदमी रहता था। एक दिन उसकी हवेली में आग लग गई। अन्य सब तो बाहर निकल आए, पर एक नौकर भीतर रह गया। अमीर बड़ा दु:खी हुआ। उसने घोषणा की कि जो कोई उस नौकर को जलते घर से बाहर निकाल लाएगा, उसे वह एक हजार दीनार इनाम में देगा।

इतने में एक फकीर वहाँ पर आया। उसने आव देखा न ताव, एकदम भीतर की तरफ दौड़ा और नौकर को निकाल लाया। लोगों ने देखा कि जलते हुए घर में घुसने के बाद भी न फकीर के कपड़े जले, न बदन झुलसा। वे अचरज से भर

उठे। धनी आदमी फकीर के सामने श्रद्धा से झुक गया। फौरन उसने एक हजार दीनार उसके सामने रख दिए। फकीर ने उत्तर दिया, सेवा हमारा धर्म है। हम इनाम के लिए सेवा नहीं करते। अब लोगों की समझ में आया कि फकीर आग में से बेदाग क्यों निकल आया था। साँच को आँच नहीं लगती।

६३९) देखने का नजरिया - महाभारत काल की घटना है। दुर्योधन और युधिष्ठिर दोनों श्रीकृष्ण से मिलने द्वारका गए। श्रीकृष्ण ने दोनों का स्वागत किया और कहा- आप दोनों मुझे समान रूप से प्रिय हैं। कुरूकुल के आप दोनों ज्येष्ठ और श्रेष्ठ हैं, मतिमान और नीतिमान हैं। आप दोनों मेरा एक काम करें। आप दोनों द्वारका नगरी में व्यापक परिभ्रमण करें और अन्वेषण करके मुझे बताएं कि यहां कितने अच्छे और कितने बुरे आदमी हैं? युधिष्ठिर और दुर्योधन ने श्रीकृष्ण का आदेश स्वीकार कर लिया।

निश्चित समय-सीमा के भीतर दोनों श्रीकृष्ण के समक्ष उपस्थित हुए। किंतु श्रीकृष्ण द्वारा दी गई दोनों की सूची बिल्कुल खाली थी। श्रीकृष्ण ने दुर्योधन से पूछा- कुरुराज। आपने सूची नहीं बनाई?

दुर्योधन ने कहा- द्वारकाधीश। आपने जो काम हमें सौंपा, उसे हमने यथासंभव पूरा करने का प्रयत्न किया। इसके लिए आपके आदेशानुसार पूरी द्वारका का परिभ्रमण भी किया, किंतु हम सूची क्या बनाते? हमें बहुत प्रयत्न करने पर भी आपकी द्वारका में एक भी अच्छा आदमी नहीं मिला। सब बुरे ही बुरे मिले? युधिष्ठिर की ओर अभिमुख होकर श्रीकृष्ण ने पूछा- और आपने पांडुपुत्र? आपकी भी ऐसी ही राय है क्या? हां राय कुछ ऐसी ही है, किंतु थोड़ा सा अंतर है। मुझे बहुत प्रयास और खोज करने के बाद भी द्वारका में कोई बुरा आदमी नहीं मिला। इस नगरी में सभी बहुत अच्छे और भले हैं। इसे कहते हैं देखने का नजरिया।

६४०) कैथरीन और भेड़िया - कैथरीन एक बार किसी फैंसी ड्रेस पार्टी में जाना चाहती थी। उसने वहाँ रेड राइडिंग हुड बनकर जाने की बात सोची। तभी माँ ने कहा, बस, इस लिबास में सिर्फ एक बात की कमी है- और वह है एक भेड़िए की। फिर तो पहला इनाम तुम्हारा है।

कैथरीन एक छोटे से जंगल के रास्ते से गुजर रही थी, तभी अचानक एक भेड़िया उसके सामने निकल आया। कहो, कैसी हो, रेड राइडिंग हुड? भेड़िया बोला, मैंने तुम्हारे और तुम्हारी प्रिय दादी माँ के बारे में खूब सुना है। मैं रेड राइडिंग हुड नहीं हूं। वह सच-सच बोली, मैं कैथरीन हूं।

ओह, भेड़िया हैरान सा होता हुआ बोला। क्या तुम वह खूँखार भेड़िए हो? कैथरीन ने डरते-डरते पूछा। नहीं। उसने भी सच-सच जवाब दिया। अच्छा, कैथरीन बोली, चूँकि मैं नन्ही रेड राइडिंग हुड बनी हुई हूँ, तुम भी वह खूँखार भेड़िया बनकर मेरे साथ पार्टी में चलो। भेड़िए ने सोचा, यह अच्छा रहेगा। दोनों मित्र उस पार्टी में गए और पहला इनाम जीत लाए। दो दुश्मन दोस्त बन जाएँ तो जीवन खुशी से महक उठता है।

काम बताओ नहीं तो जान गंवाओगे - एक राक्षस हमेशा विभिन्न देशों के राजाओं के पास जाता और कहता कि मुझे नौकर रख लो। लगातार काम दो। अगर काम नहीं मिला तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा। इस तरह वह कई देशों के राजाओं को खा चुका था। एक बार वह बीकानेर के राजा के पास पहुंचा और अपनी इच्छा दोहराई। राजा ने उसे युद्ध पर भेज

दिया। युद्ध से लौटा तो उसे महल तैयार करने के लिए कहा। उसने झटपट महल खड़ा कर दिया। इस तरह जो काम राजा उसे बतलाता, वह झटपट कर देता। राजा यह देख घबड़ाया। उसने मंत्री से सलाह ली। मंत्री चालाक था। बोला, आप चिंता न कीजिए। इतने में राक्षस आकर काम के लिए पूछने लगा। मंत्री ने एक कुत्ता मँगवाया और उससे बोला कि इसकी पूँछ सीधी कर दो। राक्षस कुत्ते की पूँछ सीधी करके छोड़ता तो वह फिर से टेढ़ी हो जाती। राक्षस पूँछ सीधी करते-करते परेशान हो उठा। तंग आकर उसने राजा से क्षमा मांगी और वापस चला गया। कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी।

६४१) खुद का ही जाल - एक राजा ने किसी दूसरे राज्य पर आक्रमण कर दिया। आक्रान्ता शक्तिशाली था और जिस पर चढ़ाई की गई, वह राज्य बहुत छोटा था। स्वाभाविक ही था, बड़े राज्य ने छोटे पर अधिकार कर लिया और उस राज्य के जो भी प्रभावशाली लोग थे, उन्हें कैद कर लिया। राजा ने केवल अधिकारियों को ही बंदी नहीं बनाया बल्कि उस राज्य के जितने भी कार्यशील और कारीगर व्यक्ति-व्यापारी, शिल्पी आदि थे, सभी को बंदीगृह में डाल दिया।

इस राज्य का एक लोहार जो हथकड़ी बनाने में बहुत कुशल था, उसने सोचा हथकड़ी तोड़ना मेरे बाएं हाथ का खेल है, मैं इसे आसानी से तोड़कर भाग जाऊंगा, किंतु जब मालूम हुआ कि वे हथकड़ियां उसी की बनाई हुई हैं, तो उसे बड़ी निराशा हुई। उसने हथकड़ी तोड़ने की काफी कोशिश की, पर भाग नहीं पाया।

आज की स्थिति कुछ ऐसी ही है कि स्वयं के हाथों से बनाई हुई हथकड़ी स्वयं के हाथों में ही जकड़ी हुई है। व्यक्ति दूसरों के लिए करता है, तो उसका उपयोग स्वयं के लिए भी हो जाता है। हम पहले से ही जागरूक रहें कि स्वयं के लिए समस्या बन जाएं ऐसी हथकड़ी, ऐसा जाल न बनाएं।

अपने पर अनुशासन करना सीखें। भोजन के संदर्भ में जिसका अपनी जीभ पर अनुशासन है, वह अधिक अच्छी तरह से स्वस्थ रह सकता है और जिस व्यक्ति का जीभ पर अनुशासन नहीं है, वह स्वस्थ रहे, बहुत कठिन है।

६४२) मित्रता - एक गिलहरी और पिल्ले में गाढ़ी मित्रता थी। वे दोनों साथ रहते, साथ खेलते। गिलहरी हर खेल में बाजी मार ले जाती। जब भी उसे लगता कि वह हार जाएगी, लपककर पेड़ पर चढ़ जाती और वहाँ से झुककर अपने मित्र पिल्ले को चिढ़ाया करती। दोनों ही खुश रहकर अपना समय गुजार रहे थे। गरमी खत्म होते ही ठंड के दिन आए। बर्फ का गिरना शुरू हो गया। पिल्ला तो किसी तरह अपना बचाव करता रहा, लेकिन गिलहरी अपना बचाव नहीं कर पा रही थी। एक दिन गिलहरी पेड़ पर चढ़कर गूलर खा रही थी कि अचानक बरसात शुरू हो गई। आँधी चलने लगी। पेड़ पुराना था। जड़ समेत टूटकर जमीन पर गिर पड़ा। पेड़ के साथ ही गिलहरी भी पानी में जा गिरी। बचाओ, बचाओ। गिलहरी चिल्लाई। पिल्ले ने जब अपनी मित्र की आवाज सुनी तो पानी में कूद पड़ा। गिलहरी उसकी पीठ पर बैठकर किनारे पर आ गई। इस तरह पिल्ले ने अपनी मित्र की जान बचाई और दोनों प्रेमपूर्वक रहने लगे। जहाँ प्यार होता है, वहीं ईश्वर होता है।

६४३) चील और चिड़िया - मैं शर्त लगाती हूं कि मैं तुमसे ज्यादा ऊँची उड़ान भर सकती हूं। चिड़िया ने चील से कहा, ठीक है, मैं तुम्हारी शर्त मंजूर करता हूं। चील ने कहा, हालांकि मैं चाहूंगा कि तुम जैसा छोटा पक्षी एक चील जितनी ऊँची उड़ान भरे। उसमें कौन सी बड़ी बात है। चिड़िया बोली, मैं अभी दिखाती हूं। चील ने अपने चौड़े पंख

फैलाकर उड़ना शुरू कर दिया। वह नीले आसमान में और भी ऊँची उड़ानें भरने लगा। मैं पक्षियों का राजा हूं और सबसे ऊँचा उड़ सकता हूं। वह चिल्लाया। चीं, चीं। मैं यहां हूं। उसके ऊपर चिड़िया बोली। चील ने नीचे, दायें-बायें देखा, लेकिन चिड़िया उसे कहीं भी नजर नहीं आई। तुम कहाँ हो? वह बोला। यहाँ, तुमसे ऊपर चील भाई। चिड़िया बोली। चील को अचंभा हुआ। वह ज्यादा ऊँची उड़ान भरने में असमर्थ था- और इसीलिए चिड़िया शर्त जीत गई। दरअसल हुआ यह था कि चिड़िया उचककर उसकी पीठ पर बैठ गई थी। जब वह पूरी ऊँचाई पर पहुंच गया तो उसकी पीठ से उड़कर वह उसके और ऊपर हो ली। इस तरह वह शर्त जीत गई। ताकतवर विरोधी को हराने के लिए ताकत की नहीं बल्कि बुद्धि की जरूरत होती है।

६४४) बुराई का जोर बुरे पर - दो भाई थे। एक शैतान को मानता तो दूसरा भगवान को। भगवान की पूजा करनेवाले भाई को शैतान नाना प्रकार को लोभ-प्रलोभन दिखाता था, जिससे वह उसकी ओर आकृष्ट हो, परन्तु जब वह भाई इनसे विचलित नहीं हुआ तब वह भूत उसे तरह-तरह से डराने लगा। परन्तु जब इससे भी वह भाई अपनी भगवद्भक्ति में अटल रहा, तब तो शैतान बड़ा निराश हुआ। एक दिन शैतान अपनी पूजा करनेवाले भाई के सपने में आया और कहने लगा, देख तू अपने भगवान की पूजा करनेवाले भाई को मना ले वरना तुझे मार डालूंगा। उसने शैतान से कहा, वाह, यह खूब रही, मैं तुम्हारी पूजा करूं और तुम मुझे ही मारो। शैतान ने कहा, क्या करूं मेरा वश तुम्हारे ऊपर ही चलता है, क्योंकि वह दूसरा तो मुझे मानता ही नहीं। शैतान का जोर शैतान पर ही चलता है जिसमें शैतानियत नहीं, उसका शैतान क्या बिगाड़ सकता है। काम, क्रोध, लोभ ही बड़े शैतान है। गीता में इन्हीं तीनों को नरक के द्वार बताया गया है, परन्तु इन तीनों में से एक को भी जो अपने अन्दर घर करने नहीं देता उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है?

६४५) जो हिम्मत हारा वह जीवन हारा - वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन से एक बार एक बालक ने पूछा, अंकल। मुझे कोई ऐसा मंत्र बताएं जिससे जीवन में शत-प्रतिशत सफलता मिल सके। आइंस्टीन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, हिम्मत न हारो। बालक ने पूछा, यह कैसे? अंकल? आइंस्टीन ने बताया, जब मैं तुम्हारी तरह बालक था तो स्कूल के साथी मुझे बहुत तंग करते थे और बुद्धू कहकर मुझे चिढ़ाया करते थे। गणित के अध्यापक मेरा इतना अपमान करते थे कि मैं शर्म से गड़ जाता था। वे हमेशा ताना कसते थे कि तुम सात जन्म में भी गणित नहीं सीख पाओगे। इन सब बातों से चिढ़कर मैंने निश्चय किया कि मैं पूरी मेहनत से सारी चीजें सीखूंगा। किसी के भी अपमानित करने से हिम्मत नहीं हारूंगा। इसीलिए मैं कुछ कर सका। सोचो, यदि मैं डरकर हिम्मत हार बैठता तो मेरी क्या गति हुई होती।

६४६) पहचान - उस चित्रकार की प्रदर्शनी में यूं तो कई चित्र थे लेकिन एक अनोखा चित्र सभी के आक़र्षण का केंद्र था। बिना किसी शीर्षक के उस चित्र में एक बड़ा सोने का हीरों से जड़ित सुंदर दरवाजा था जिसके अंदर एक रत्नों का सिंहासन था जिस पर मखमल की गद्दी बिछी थी। उस सिंहासन पर एक बड़ी सुंदर महिला बैठी थी, जिसके वस्त्र और आभूषण किसी रानी से कम नहीं थे। दो दासियां उसे हवा कर रही थीं और उसके पीछे बहुत से व्यक्ति खड़े थे जो शायद उसके समर्थन में हाथ ऊपर किये हुए थे। सिंहासन के नीचे एक दूसरी बड़ी सुंदर महिला बेड़ियों में जकड़ी दिखाई दे रही थी जिसके वस्त्र मैले-कुचैले थे और वो सर झुका कर बैठी थी। उसके पीछे चार व्यक्ति हाथ जोड़े खड़े थे और कुछ अन्य

व्यक्ति आश्चर्य से उस महिला को देखकर इशारे से पूछ रहे थे यह कौन है? उस चित्र को देखने आई दर्शकों की भीड़ में से आज किसी ने चित्रकार से पूछ ही लिया, इस चित्र में क्या दर्शाया गया है? चित्रकार ने मैले वस्त्रों वाली महिला की तरफ इशारा करके उत्तर दिया, यह महिला जो अपनी पहचान खो रही है वो हमारी मातृभाषा है। अगली पंक्ति कहने से पहले वह कुछ क्षण चुप हो गया, उसे पता था अब प्रदर्शनी कक्ष लगभग खाली हो जायेगा।

६४७) नाम नहीं, कर्म प्रधान - पुरानी बात है। किसी बालक के मां-बाप ने उसका नाम पापक (पापी) रख दिया। बालक बड़ा हुआ तो उसे यह नाम बहुत बुरा लगने लगा। उसने अपने आचार्य से प्रार्थना की, भन्ते, मेरा नाम बदल दें। यह नाम बड़ा अप्रिय है, क्योंकि अशुभ और अमांगलिक है। आचार्य ने उसे समझाया कि नाम तो केवल प्राप्ति के लिए, व्यवहार जगत में पुकारने के लिए होता है। नाम बदलने से कोई मतलब सिद्ध नहीं होगा। कोई पापक नाम रखकर भी सत्कर्मों से धार्मिक बन सकता है और धार्मिक नाम रहे तो दुष्कर्मों से कोई पापी बन सकता है। मुख्य बात तो कर्म की है। नाम बदलने से क्या होगा?

पर वह नहीं माना। आग्रह करता ही रहा, आग्रह करता ही रहा। तब आचार्य ने कहा, अर्थ सिद्ध तो कर्म के सुधारने से होगा, परन्तु यदि तू नाम भी सुधारना चाहता है तो जा, गांवभर के लोगों को देख और जिसका नाम तुझे मांगलिक लगे, वह मुझे बता। तेरा नाम वैसा ही बदल दिया जाएगा। पापक सुन्दर नामवालों की खोज में निकल पड़ा। घर से बाहर निकलते ही उसे शव-यात्रा के दर्शन हुए। पूछा, कौन मर गया? लोगों ने बताया जीवक। पापक सोचने लगा- नाम जीवक, पर मृत्यु का शिकार हो गया। आगे बढ़ा तो देखा, किसी दीन-हीन गरीब दुखियारी स्त्री को मारपीट कर घर से निकाला जा रहा है। पूछा, कौन है यह? उत्तर मिला, धनपाली। पापक सोचने लगा नाम धनपाली और पैसे-पैसे को मोहताज। और आगे बढ़ा तो एक आदमी को लोगों से रास्ता पूछते पाया। नाम पूछा तो पता चला- पंथक। पापक फिर सोच में पड़ गया- अरे, पंथक भी पंथ पूछते हैं? पंथ भूलते हैं? पापक वापस लौट आया। अब नाम के प्रति उसका आकर्षक या विकर्षण दूर हो चुका था। बात समझ में आ गई थी। क्या पड़ा है नाम में? जीवक भी मरते हैं, अजीवक भी, धनपाली भी दरिद्र होती है, अधनपाली भी, पंथक राह भूलते हैं, अपंथक भी, जन्म का अंधा नाम नयनसुख, जन्म का दुखिया, नाम सदासुख। सचमुच नाम की थोथी महत्ता निरर्थक ही है। रहे नाम पापक, मेरा क्या बिगड़ता है? मैं अपना कर्म सुधारूंगा। कर्म ही प्रमुख है, कर्म ही प्रधान है।

६४८) उत्साह से ऊर्जा का संचार - एक राजा के पास कई हाथी थे, लेकिन एक हाथी बहुत शक्तिशाली था, बहुत आज्ञाकारी, समझदार व युद्ध-कौशल में निपुण था। बहुत से युद्धों में वह भेजा गया था और वह राजा को विजय दिलाकर वापस लौटा था, इसलिए वह महाराज का सबसे प्रिय हाथी था। समय गुजरता गया और एक समय ऐसा भी आया, जब वह वृद्ध दिखने लगा। अब वह पहले की तरह कार्य नहीं कर पाता था। इसलिए अब राजा उसे युद्ध क्षेत्र में भी नहीं भेजते थे। एक दिन वह सरोवर में जल पीने के लिए गया, लेकिन वहीं कीचड़ में उसका पैर धंस गया और फिर धंसता ही चला गया। उस हाथी ने बहुत कोशिश की, लेकिन वह उस कीचड़ से स्वयं को नहीं निकाल पाया। उसकी चिंघाड़ने की आवाज से लोगों को यह पता चल गया कि वह हाथी संकट में है। हाथी के फंसने का समाचार राजा तक भी पहुंचा। राजा समेत सभी

लोग हाथी के आसपास इकट्ठा हो गए और विभिन्न प्रकार के शारीरिक प्रयत्न उसे निकालने के लिए करने लगे। जब बहुत देर तक प्रयास करने के उपरांत कोई मार्ग नहीं निकला तो राजा ने अपने सबसे अनुभवी मंत्री को बुलवाया। मंत्री ने आकर घटनास्थल का निरीक्षण किया और फिर राजा को सुझाव दिया कि सरोवर के चारों ओर युद्ध के नगाड़े बजाए जाएं। सुननेवालों को विचित्र लगा कि भला नगाड़े बजाने से वह फंसा हुआ हाथी बाहर कैसे निकलेगा, जो अनेक व्यक्तियों के शारीरिक प्रयत्न से बाहर निकल नहीं पाया। आश्चर्यजनक रूप से जैसे ही युद्ध के नगाड़े बजने प्रारंभ हुए, वैसे ही उस मृतप्राय हाथी के हाव-भाव में परिवर्तन आने लगा पहले तो वह धीरे-धीरे करके खड़ा हुआ और फिर सबको स्पष्ट किया कि हाथी की शारीरिक क्षमता में कमी नहीं थीं, आवश्यकता मात्र उसके अंदर उत्साह के संचार करने की थी। हाथी की इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि यदि हमारे मन में एक बार उत्साह-उमंग जाग जाए तो फिर हमें कार्य करने की ऊर्जा स्वत: ही मिलने लगती है और कार्य के प्रति उत्साह का मनुष्य की उम्र से कोई संबंध नहीं रह जाता। जीवन में उत्साह बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य सकारात्मक चिंतन बनाए रखे और निराशा को हावी न होने दे। कभी-कभी निरंतर मिलनेवाली असफलताओं से व्यक्ति यह मान लेता है कि अब वह पहले की तरह कार्य नहीं कर सकता, लेकिन यह पूर्ण सच नहीं है। सकारात्मक सोच ही आदमी को आदमी बनाती है उसे अपनी मंजिल तक ले जाती है।

६४९) सजा बनी सीख - एक राजा था। वह बड़ा सनकी था। उसे यदि किसी व्यक्ति पर गुस्सा आता, तो उसे रातभर बर्फ जैसे ठंडे पानी में खड़े होने की सजा दे देता। एक दिन उसे किसी बात पर अपने महामंत्री अरुणेश पर गुस्सा आ गया। उसने अरुणेश को रातभर ठंडे पानी में खड़े होने की सजा दे दी। अरुणेश बहुत बुद्धिमान था। वह सोच रहा था कि राजा के दंड से किस तरह छुटकारा मिले और उसे सबक भी सिखाया जा सके। तभी उसके दिमाग में एक विचार आया। जब रात में राजा ने अरुणेश को दंड देने के लिए बुलाया, तो वह खुशी से ठंडे पानी में जाने लगा। यह देखकर राजा को आश्चर्य हुआ। उसने अरुणेश से पूछा कि क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा? तब उसने राजा से कहा कि इसमें डर कैसा? यह तो मेरे लिए बहुत फायदेमंद है। राजा ने आश्चर्य से पूछा- कैसे? उसने कहा, मैंने एक वैद्यजी से सुना था कि जो ज्यादा गुस्सा करता है, उसे जल्दी बुढ़ापा आ जाता है। इसका एकमात्र इलाज रातभर बर्फ जैसे ठंडे पानी में खड़े रहना है। राजा सोचने लगा कि गुस्सा तो मैं भी बहुत करता हूं। इसका मतलब मुझे भी बुढ़ापा जल्दी आएगा। राजा ने कहा कि आज मैं पानी में खड़ा होऊंगा। यह कहकर राजा ठंडे पानी में खड़ा हो गया। जब थोड़ा समय बीता, तो राजा को ठंड लगने लगी, पर जवानी पाने के लालच में वह खड़ा रहा। वह सोचने लगा कि रातभर ठंडे पानी में खड़े होकर कोई कैसे बुढ़ापा दूर कर सकता है? इससे व्यक्ति बीमार पड़ सकता है। यहां तक कि उसकी मौत भी हो सकती है। तभी उसे एहसास हुआ कि उसके अजब-गजब आदेश से लोग कितना परेशान होते होंगे। शायद उसे उसकी गलती का एहसास दिलाने के लिए ही अरुणेश ने उससे ऐसा कहा। अब राजा अपनी गलती पर बहुत पछताने लगा। उसने तुरंत अरुणेश को बुलाकर माफी मांगी और उसकी आंखें खोलने के लिए धन्यवाद भी दिया। राजा ने कभी-भी बेकार में गुस्सा न करने की कसम भी खाई।

६५०) वचनों का चमत्कार - संत दादू के पास अनेक लोग आया करते थे ताकि अपनी विभिन्न समस्याओं का समाधान पा सकें। एक संभ्रांत परिवार की एक महिला संत के पास आई और बोली, कोई ऐसा वशीकरण मंत्र या कवच

दें, जिससे मेरा पति पूरी तरह मेरे वश में आ जाए। दादू ने कहा, मेरी ताकत तो केवल ईश्वर के प्रति विश्वास है। मैं कोई तंत्र-मंत्र नहीं जानता और न ही किसी को अंधविश्वास की राह दिखाता हूं। पर वह महिला अड़ी रही। दादू ने उस महिला के परिवार की सारी परिस्थितियां जानीं और एक कागज पर कुछ लिखकर उसे दे दिया और कहा, इसका ताबीज बनाकर गले में पहनना तथा मंत्र की सिद्धि के लिए पति की खूब सेवा तथा सहायता करना। महिला चली गई। उसके बाद से वह अपने पति की खूब सेवा करने लगी। वह इस बात का ख्याल रखती कि उसके पति को किसी भी तरह की कोई परेशानी न हो। उसके पति का प्रेम उस पर पहले से भी ज्यादा बढ़ गया। कई वर्ष बीत गए। एक दिन पत्नी से रहा नहीं गया। उसने उस ताबीज की बात अपने पति से कर ही दी। पति ने उसे खोलकर देखना चाहा। पत्नी बोली, पहले संत को दक्षिणा देंगे, तब ताबीज गले से उतारूंगी। वे दोनों दादू के पास पहुंचे। दादू उन्हें देखकर सोचने लगे कि इस तरह ताबीजों और मंत्रों के अंधविश्वास में फंसकर तो लोग पलायनवादी हो जाएंगे और साधना की उपेक्षा करने लगेंगे। दादू ने कहा, देखो भाई। इसमें कोई विशेष कुछ भी नहीं लिखा था। मैंने तुमसे जो कहा था, वही बात उस पुर्जे में लिखी हुई है। यह कहकर संत ने ताबीज खोलकर कागज का पुर्जा पढ़कर सुना दिया। उसमें लिखा था- सेवा और साधना से तो ईश्वर भी वश में हो जाता है फिर मनुष्य की बात ही क्या है। पत्नी समझ गई कि सारा चमत्कार उन वचनों का था, जो दादू ने कहे थे।

६५१) एक बार की बात है, मगध के व्यापारी को व्यापार में बहुत लाभ हुआ। इसके बाद से वह अपने अधीनस्थों से अहंकारपूर्ण व्यवहार करने लगा। व्यापारी का अहंकार इतना प्रबल था कि उसे देखते हुए उसके परिजन भी अहंकार के वशीभूत हो गए। जब सभी के अहंकार आपस में टकराने लगे तो घर का वातावरण नरक की तरह हो गया। दु:खी होकर एक दिन वह व्यापारी भगवान बुद्ध के पास पहुंचा और बोला- भगवान। मुझे इस नरक से मुक्ति दिलाइए। मैं भी भिक्षु बनना चाहता हूं। भगवान बुद्ध गंभीर स्वर में बोले, अभी तुम्हारे भिक्षु बनने का समय नहीं आया है। उन्होंने कहा, तुम्हें पलायनवादी नहीं होना चाहिए। जैसे व्यवहार की अपेक्षा तुम दूसरों से करते हो; स्वयं भी दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो। ऐसा करने से तुम्हारा घर ही मंदिर बन जाएगा। उस व्यापारी ने भगवान बुद्ध की सीख को अपनाया और घर का वातावरण स्वत: बदल गया। दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसंद नहीं।

६५२) ऊंचाई - पिताजी के अचानक आ धमकने से पत्नी तमतमा उठी, लगता है बूढ़े को पैसों की जरूरत आ पड़ी है, वर्ना यहां कौन आनेवाला था। मैं नजरें बचाकर दूसरी ओर देखने लगा। पिताजी नल पर हाथ-मुंह धोकर सफर की थकान दूर कर रहे थे। इस बार मेरा हाथ कुछ ज्यादा ही तंग हो गया। बड़े बेटे का जूता मुंह बा चुका है। वह स्कूल जाने के वक्त रोज भुनभुनाता है। पत्नी के इलाज के लिए पूरी दवाइयां नहीं खरीदी जा सकीं। बाबूजी को भी अभी आना था। घर में बोझिल चुप्पी पसरी हुई थी। मैं शंकित था कि कोई आर्थिक समस्या लेकर आए होंगे। पिताजी कुर्सी पर उकड़ बैठ गए। एकदम बेफिक्र, सुनो कहकर उन्होंने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। मैं सांस रोककर उनके मुंह की ओर देखने लगा। रोम-रोम कान बनकर अगला वाक्य सुनने के लिए चौकन्ना था। वे बोले, खेती के काम में घड़ी भर की फुर्सत नहीं मिलती है। इस बखत काम का जोर है। रात की गाड़ी से ही वापस जाऊंगा। तीन महीने से तुम्हारी कोई चिट्ठी तक नहीं मिली। जब तुम परेशान होते हो, तभी ऐसा करते हो उन्होंने जेब से सौ-सौ के दस नोट निकालकर मेरी तरफ बढ़ा दिए रख लो, तुम्हारे काम आ जाएंगे। इस बार धान की फसल अच्छी हो गई है। घर में कोई दिक्कत नहीं है। तुम बहुत कमजोर लग रहे हो।

ढंग से खाया-पिया करो। बहू का भी ध्यान रखो। मैं कुछ नहीं बोल पाया। शब्द जैसे मेरे हलक में फंसकर रह गए हों। मैं कुछ कहता इससे पूर्व ही पिताजी ने प्यार से डांटा- ले लो, बहुत बड़े हो गए हो क्या? नहीं तो मैंने हाथ बढ़ाया। पिताजी ने नोट मेरी हथेली पर रख दिए। बरसों पहले पिताजी मुझे स्कूल भेजने के लिए इसी तरह हथेली पर इकन्नी टिका दिया करते थे, परन्तु तब मेरी नजरें आज की तरह झुकी नहीं होती थीं।

६५३) राजा का आदर्श - किसी छोटी सी बात पर नाराज होकर महाराज प्रसिचेत ने अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया। उनके इस अहंकारपूर्ण कृत्य से दुखी होकर राज पुरोहित ने उनका साथ छोड़ दिया। धीरे-धीरे यह बात पूरे राज्य में फैल गई। यह बात प्रजा के कानों तक पहुंची। लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। कहने लगे, जो राजा अपने सौम्य, सरल, स्वजन संबंधी की रक्षा नहीं कर सकता, वह प्रजा की रक्षा क्या करेगा? लोग राजा की आज्ञाओं का उल्लंघन करने लगे। इस स्थिति का लाभ उठाकर पड़ोसी राजा ने आक्रमण कर दिया। प्रसिचेत सेना लेकर शत्रु का मुकाबला करने के लिए चल पड़े। मार्ग में महर्षि अंगिरा का आश्रम पड़ता था। वह महर्षि से मिलने के लिए रुके। पहले तो महर्षि ने शासकोचित स्वागत की तैयारी की, पर तभी उन्हें पता चला कि महाराज ने रानी का परित्याग कर दिया है, तो उन्होंने स्वागत की सारी तैयारियां स्थगित कर दी और उनकी आवभगत एक साधारण नागरिक की तरह की। राजा ने साधारण स्वागत का कारण पूछा, तो महर्षि ने कहा, राजन। पत्नी का परित्याग करना अधर्म है और यह अधर्म करने से पति की मर्यादा वैसे ही नष्ट हो जाती है जैसे आप की। एक राजा के नाते आपको गृहस्थ और पारिवारिक जीवन में भी उच्च आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए। लेकिन आपने ऐसा नहीं किया। इसलिए आप प्रजा की नजर में भी गिर गए। वैसे देर अब भी नहीं हुई है। आप इसे सुधार सकते हैं। महर्षि की बात सुनकर राजा को अपने किए पर पछतावा हुआ। उसने रानी को वापस बुलाया और अपने व्यवहार के लिए उससे क्षमा मांगी।

६५४) गरीबी रेखा का कार्ड - सुखी काछी गरीबी रेखा का कार्ड बनवाने के लिए आज पांचवी बार सरकारी बाबू के पास आया है। बाबू-अरे भैया। तुमने साबित कर दिया की भैंस अक्ल से बड़ी होती है। दस बार कह चुका हूं की जब तक पूरे कागजात सही नहीं लाओगे, कार्ड नहीं बन पायेगा। सुखी- हुजूर, डेढ़ हजार रुपया तक की औकात ही है गरीब की, ले लिया जाए और गरीब की अरज सुन ली जाए सरकार बाबू- अरे, मरवाएगा क्या? खुद का कोई ईमान धरम नहीं हैं तो क्या सबको अपने जैसा समझा है? चल जा अभी, साहब आएंगे तब आना। सुखी जिस मालगुजार के खेत में काम करता था, वहां उसे पता चला कि मालगुजार का कार्ड बना हुआ है। वह हिम्मत करके और हैरानी के साथ मालगुजार से पूछता है- बड़े सरकार, मेरा गरीबी रेखा वाला कार्ड नहीं बन रहा है, बाबू बार-बार परेशां कर रहा है मालिक। आपई कुछ मदद करो प्रभु। मालगुजार जोर का ठहाका लगाते हुए कहता है- अरे काछी। गरीबी रेखा का कार्ड पाने के लिए गरीब नहीं, अमीर होना पड़ता पगलादीन मालगुजार फिर जोर से हंसता है, सुखी काछी अपनी आंखों में पीढ़ियों की विवशता लिए असहाय खड़ा है।

६५५) मुफ्त अनारों की कीमत नहीं समझी - एक समय की बात है। एक शहर में एक धनी आदमी रहता था। उसकी लंबी-चौड़ी खेती-बाड़ी थी और वह कई तरह के व्यापार करता था। बड़े विशाल क्षेत्र में उसके बगीचे फैले हुए थे,

जहां पर भांति-भांति के फल लगते थे। उसके कई बगीचों में अनार के पेड़ बहुतायत में थे, जो दक्ष मालियों की देख-रेख में दिन दूनी और रात चौगुनी गति से फल फूल रहे थे। उस व्यक्ति के पास अपार संपदा थी, किंतु उसका हृदय संकुचित न होकर अति विशाल था। शिशिर ऋतु आते ही वह अनारों को चांदी के थालों में सजाकर अपने द्वार पर रख दिया करता था। उन थालों पर लिखा होता था आप कम से कम एक तो ले ही लें। मैं आपका स्वागत करता हूं। लोग इधर-उधर से देखते हुए निकलते किंतु कोई भी व्यक्ति फल को हाथ तक नहीं लगाता था। तब उस आदमी ने गंभीरतापूर्वक इस पर विचार किया और किसी निष्कर्ष पर पहुंचा। अगली शिशिर ऋतु में उसने अपने घर के द्वार पर उन चांदी के थालों में एक भी अनार नहीं रखा, बल्कि उन थालों पर उसने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हमारे पास अन्य सभी स्थानों से कहीं अच्छे अनार मिलेंगे, किंतु उनका मूल्य भी दूसरे के अनारों की अपेक्षा अधिक लगेगा और तब उसने पाया कि न केवल पास-पड़ोस के, बल्कि दूरस्थ स्थानों के नागरिक भी उन्हें खरीदने के लिए टूट पड़े। कथा का संकेत यह है कि भावना से दी जानेवाली अच्छी वस्तुओं को हेय दृष्टि से देखने की मानसिकता गलत है।

६५६) हिंसा वैचारिक हो या शारीरिक पहले खुद को शिकार बनाती है - जैन पुराणों में प्रसंग है कि एक बार भगवान महावीर के मुख से नरक गमन की भविष्यवाणी सुनकर मगधपति बिंबसार बहुत विचलित हो उठे। सम्राट ने चिंतातुर स्वर में भगवान महावीर से नरक बंधन को टालने का उपाय पूछा। महावीर ने कहा, तुम्हारे नगर का कालसौरिक कसाई एक दिन के लिए अगर भैसों का वध न करे तो नरक बंधन टल जाएगा। बिंबसार ने कालसौरिक को बुलाकर उससे आग्रह किया, प्रलोभन भी दिया लेकिन वह नहीं माना। उसने वंश और परंपरा की दुहाई देकर आग्रह को मानने से इनकार कर दिया। सम्राट ने झुंझलाते हुए उसे एक दिन के लिए अंधकूप में छोड़ दिया कि अब वह कैसे करेगा वध?

दूसरे दिन बिंबसार महावीर के पास पहुंचे और कहा कि कालसौरिक को वध करने से रोक दिया, लेकिन महावीर ने उनसे असहमति व्यक्त की। यह रहस्य सामने आया कि कालक ने कुएं की मिट्टी से भैंसे बनाए और अपने हाथ को तलवार बनाकर तबतक वध जारी रखा, जब तक कि संख्या पूरी नहीं हो गई। इसे अगर अहिंसा की कसौटी पर कसें तो उसने हिंसा का आचरण नहीं किया, लेकिन महावीर कहते हैं कि उसने हिंसा की। घटना के स्तर पर चाहे उसने किसी का वध न किया हो, किंतु चित्त की भूमिका पर वह वध कर चुका है। किसी भी शासन के लिए कालक एक प्रतीक भर है कि हिंसक धारणा कैसे जीवित रहती है।

६५७) मेरे एक मित्र का किसी से झगड़ा हो गया। झगड़े को लेकर वह थोड़ा परेशान हो गया। उसने सोचा कि उस व्यक्ति से फेसबुक पर बात कर, इस झगड़े को सुलझा लिया जाए, जब उसने फेसबुक पर उससे चैट करने की कोशिश की, तो पता चला कि दोस्त ने उससे बात नहीं करने के लिए ब्लॉक कर दिया।

मेरे मित्र को इस बात से धक्का लगा। वह दिनभर इन्हीं विचारों में खोया रहा कि सामनेवाले की हिम्मत इतनी बढ़ गयी कि मुझे अनफ्रेंड करे। वह गुस्से और दुख से भर गया। उसे इतना ज्यादा अपमान महसूस हुआ कि उसने अपना फेसबुक अकाउंट ही डिलीट कर दिया। दोस्तों ने पूछा कि फेसबुक से क्यों गायब हो? तो उसने कोई जवाब नहीं दिया।

एक दिन फेसबुक पर जब परिवार के लोगों से चर्चा छिड़ी, तो किसी ने उससे पूछा, तुम क्या करते हो। दोस्त ने बिना

देर किये कहा, जिससे भी मेरी चैट पर नहीं बनती, बहस होती है, उसे मैं तुरंत ब्लॉक कर देता हूं। सामनेवाले ने पूछा, जिन्हें तुम अनफ्रेंड करते होगे या ब्लॉक करते होगे, उन्हें तो बहुत बुरा लगता होगा। दोस्त ने कहा, इसमें मैं क्या कर सकता हूं? मुझे जो पसंद नहीं आयेगा, उसे ब्लॉक करना मेरा हक है। सामनेवाले ने कहा, जब तुम किसी को ब्लॉक करना अपना हक समझते हो तो सामनेवाले के ब्लॉक करने पर इतना गुस्सा क्यों आया कि अपना अकाउंट ही डिलीट कर दिया। दोस्त को उसकी गलती समझ में आयी वह अब जान गया था कि हर इंसान को उसकी जिंदगी जीनें का उसके दोस्त चुनने का हक है। आप किसी से जबरदस्ती दोस्ती नहीं कर सकते।

किसी ने अगर ब्लॉक कर दिया है या हमसे बात करना बंद कर दिया है, तो इसमें बुरा मानने जैसी कोई बात नहीं है। इसे अपना अपमान नहीं समझना चाहिए। हम भूल जाते हैं कि दरवाजे की कुंडी दोनों तरफ से लगती है, अगर सामनेवाले ने अपनी तरफ से दरवाजा बंद कर दिया है, तो आपके पास भी कुंडी लगाने का विकल्प है।

६५८) हंसते-हंसाते पंडितजी - शांति निकेतन में हो रहे एक कार्यक्रम में पंडित जवाहर लाल नेहरू पहुंचे। उन्हें देखने के लिए भीड़ लग गई। उनका भाषण शुरू होने से पहले ही वहां मौजूद फोटोग्राफर धड़ाधड़ उनकी फोटो लेने लगे। रात का वक्त था। फ्लैश की तेज चमक से नेहरू जी की आंखें चुंधियाने लगी। इस बात को वहां खड़े नेहरू जी के एक परिचित सज्जन ने भांप लिया। उन्होंने उन फोटोग्राफरों को कड़ी डांट पिलाने के उद्देश्य से पंडित जी से कहा, पंडित जी, इन फोटोग्राफरों ने तो परेशान कर दिया है, आंखें ही चुंधियाने लगी हैं। इस पर पंडित जी बोले, वाह साहब, बड़ी नाजुक आंखें मालूम हो रही हैं आपकी, रोशनी से परेशान हैं आप। नेहरू जी की विनोदप्रियता से सब खिलखिलाकर हंस पड़े। वहीं उपस्थित एक अमेरिकी लड़की ने उनसे कहा, आपकी महानता की चर्चा तो सारे संसार में है। इस पर नेहरू बोले, यह तो बड़ी खौफनाक बात है। यह सुनकर लड़की सकपका गई। कुछ देर बाद अन्य विषयों पर बात करने के बाद वह बोली, मैं तो रेडियो, टेलिविजन और अन्य मंचों पर आपको और भी देखना-सुनना चाहती हूं। लड़की की इस बात पर नेहरूजी ने कहा, तुम्हें पता भी है कि हमारे एक साथी ने हाल में कहा है कि मुझे मुंह और पैर की बीमारी है। मैं हमेशा मारा-मारा फिरता हूं और हर समय बकता रहता हूं। फिर उन्होंने गंभीर मुद्रा बनाकर कहा, मैं तो चाहता हूं कि तुम दुआ करो कि मेरी ये बीमारियां और आगे न बढ़ें। इस पर सभी खिलखिलाकर हंस पड़े। नेहरू जी इसी तरह हंसते-हंसाते रहते थे। हंसी-हंसी में ही वह ऐसी बात कह देते थे जिससे उनके विरोधी भी निरुत्तर हो जाते थे।

६५९) चूहे और बिल्ली की दोस्ती - एक बार की बात है। एक बिल्ली थी जिसका नाम बाटी था और एक चूहा, जिसका नाम चोखा था। दोनों में अच्छी दोस्ती थी। वे जहां भी जाते, एक साथ जाते और एक-दूसरे की मुसीबत में सहायता करते थे। एक दिन बिल्ली किसी के घर दूध पीने गई। उसने देखा कि दूध से भरा हुआ कटोरा रसोईघर में है, वो रसोईघर में घुस गयी। तभी चूहा भी पीछे से आ धमका, बाटी ने दूध का कटोरा गिरा दिया। दूध जमीन पर गिर गया। बाटी और चोखा दोनों मस्त होकर दूध पीने लगे। थोड़ी देर में चूहे का पेट भर गया वो एक तरफ जाकर आराम फरमाने लगा। तभी बाटी के ऊपर किसी ने जाल डाल दिया और उसे जाल में बांधकर रसोईघर के एक कोने में रख दिया। उस आदमी के जाने के बाद चोखा धीरे से बाहर आया और बाटी को आजाद करने के लिए जल्द से उस जाल को काट दिया और

बाटी को मरने से बचा लिया। घर का कोई आदमी फिर आकर मारे, उससे पहले दोनों वहां से भाग लिए। इस तरह से चूहे ने बिल्ली की जान बचाई और अपनी मित्रता की शान बढ़ा ली।

६६०) दर्जी और गुरु - उन दिनों स्वामी विवेकानंद अमेरिका में थे। एक दिन वे पगड़ी बांधे, चादर डाले शिकागो की एक गली में घूम रहे थे। उनकी वेशभूषा को देख एक महिला ने अपने पुरुष मित्र से कहा, जरा इन महाशय को देखो। कैसी अनोखी पोशाक है। स्वामी जी ने हेय दृष्टि से देख रही उस महिला से कहा, बहन। मैं जिस देश से आया हूं वहां पर कपड़े नहीं, चरित्र सज्जनता की कसौटी है। इस जवाब से महिला सन्न रह गई। उन दिनों स्वामी जी की ख्याति न सिर्फ अमेरिका में बल्कि पूरी दुनिया में फैल चुकी थी। एक दिन स्वामी जी के एक अमेरिकी मित्र ने उनसे कहा, मैं आपके गुरु को देखना चाहता हूं। मैं जानना चाहता हूं कि आखिर कैसा होगा वह व्यक्ति जिसने आप जैसे शिष्य को तैयार किया। स्वामी जी ने अपने मित्र का प्रस्ताव सहज ही स्वीकार कर लिया और वे अपने साथ उसे लेकर भारत आ गए। मित्र ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस के दर्शन किए तो वह नाक-मुंह सिकोड़कर बोला, क्या। यही लंगोटधारी, जंगली व्यक्ति आपका गुरु है? इसे तो कपड़ा पहनने की तमीज नहीं हैं। क्या इसे किसी प्रकार से सभ्य कहा जा सकता है? सुनकर स्वामी विवेकानंद बोले, मेरे मित्र। तुम्हारे देश में सभ्य पुरुषों का निर्माण आचार-विचार करते हैं। इस कसौटी पर कसकर बताओ कि तुम्हारे मुल्क के सूट-बूटधारी जेंटलमैन सभ्य हैं या मेरे गुरु परमहंस? अमेरिकी मित्र स्वामी जी की इस व्याख्या को सुनकर निरुत्तर हो गया। उसने स्वीकार किया कि स्वामी जी के उदाहरण से उसे व्यक्तियों को परखने की नई दृष्टि मिली।

६६१) सच्ची सेवा - एक थी बिल्ली। मुर्गी के बच्चे उसे बहुत ही भाते थे। रोजाना दो-चार बच्चों को वह कहीं-न-कहीं से खोज-खाजकर खा जाती थी। एक दिन उसे भनक मिली कि एक मुर्गी बीमार है। वह हमदर्दी जताने मुर्गी के दरबे के पास आई और कहा, कहो बहन, कैसी हो? क्या मैं तुम्हारी ऐसी हालत में तुम्हारे कुछ काम आ सकती हूं? तुम्हारी सेवा करना मेरा फर्ज भी तो है।

बीमार मुर्गी क्षण भर सोचती रही। फिर बोली, अगर तुम सचमुच मेरी सेवा करना चाहती हो तो मेरे परिवार से दूर रहो- और अपनी जमातवालों से भी ऐसा ही करने को कहो। दुश्मन की शुभकामनाओं पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

६६२) बेहतर भविष्य का संकरा मुहाना - एक शिक्षण संस्थान की यह परंपरा थी- अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों में जो योग्यतम आठ-दस होते थे, उन्हें देश की औद्योगिक संस्थाएँ नियुक्त कर लेती थीं। उस साल भी वही हुआ। ऊपर के नौ लड़के ऊँची पद-प्रतिष्ठावाली नौकरियां पाकर खुशी-खुशी चले गएं लेकिन उनके बीच का एक लड़का जो चुने गए साथियों से कम नहीं था, रह गयां चूँकि वह बहुत परिश्रमी था और अपने संस्थान को उसकी सेवा से लाभ ही होता इसलिए उसे अस्थायी तौर पर कुछ भत्ता देकर काम पर लगा लिया गया। फिर भी अपने साथियों की तुलना में उसकी यह नियुक्ति आर्थिक दृष्टि से बड़ी मामूली थी। वह उदास रहने लगा। लोग भी उसके भाग्य को दोष देने लगे थे। लेकिन यह स्थिति अधिक दिन नहीं रही। एक बहुत नामी औद्योगिक संस्था ने अचानक उस शिक्षण संस्थान से संपर्क कर जैसे व्यक्ति की माँग की, यह युवक पूरी तरह उसके अनुकूल सिद्ध हुआ। उसे अपनी योग्यता के अनुरूप काम और वेतन मिला, बात इतनी ही नहीं थी, उसकी यह नियुक्ति अपने साथियों की तुलना में बहुत ऊँची भी थी। अर्थ और सामाजिक प्रतिष्ठा दोनों

ही दृष्टि से यह उन सबसे श्रेष्ठ हो गया था। इसी तरह कभी कभी अनुकूल समय के लिए प्रतीक्षा की घड़ियाँ आया करती है। अक्सर ही जिसे लोग भाग्य का दोष मान बैठते हैं, वह होता है एक बेहतर भविष्य का संकरा मुहाना।

६६३) नेता की पहचान - यह घटना उस समय की है जब रूस के जननेता लेनिन पर उनके कुछ शत्रुओं ने हमला कर दिया था। वह उस हमलें में घायल हो गए थे और बिस्तर पर थे। डॉक्टरों ने उन्हें आराम की सख्त हिदायत दी हुई थी। वह अभी पूरी तरह स्वस्थ भी नहीं हो पए थे कि एक दिन उन्हें समाचार मिला कि देश की सबसे प्रमुख रेल लाइन टूटी हुई है। रेललाइन की शीघ्र मरम्मत आवश्यक थी। सभी देशभक्त लोग समाचार मिलते ही उनके पास जमा होने लगे। एक ने कहा, हम लोग वैतनिक मजदूरों पर निर्भर नहीं रह सकते, वे यह काम पूरा नहीं कर सकेंगे। यह सुनकर वहां उपस्थित अन्य देशभक्त बोले, हां, हम खुद ही इसे पूरा करेंगे। कार्य कठिन था लेकिन सभी के मन में उत्साह व जोश भरा हुआ था। सभी लेनिन को पसंद करते थे और उनमें राष्ट्रवाद तथा समाज हित की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। सब लोगों के साथ मिलकर काम किया था। लेनिन से जब पूछा गया कि वह वहां क्यों आए तो उन्होंने सहजता से जवाब दिया, अपने साथियों के साथ काम करने। एक प्रतिष्ठित नागरिक बोला, लेकिन साथी भी तो यह काम कर ही सकते थे। दुर्बल शरीर से भारी-भारी लट्ठे ढोने की अपेक्षा जन नेता को स्वास्थ्य की चिंता करते हुए आराम करना चाहिए। इस पर लेनिन मुस्करा कर बोले, जो जनता के बीच में न रहे, जनता के कष्टों को न समझे, अपना आराम पहले देखे, उसे भला कौन जन नेता कहेगा?

६६५) धन, कुटुंब और धर्म - किसी आश्रम में अनेक छात्र शिक्षा ग्रहण करते थे। एक दिन कुछ छात्रों ने अपने गुरु से प्रश्न किया, गुरुजी- धन, कुटुंब और धर्म में कौन सच्चा सहायक होता है? गुरु ने प्रश्न का सीधा उत्तर न देते हुए एक कथा सुनाई- एक व्यक्ति के तीन मित्र थे। जिनमें एक सबसे प्रिय था, जिसके साथ वह अधिक समय बिताता था। कही भी जाना होता तो उसी के साथ जाता। दूसरे मित्र से उसकी कम घनिष्ठता थी और तीसरा मित्र बिल्कुल उपेक्षित था। वह उससे बहुत कम मिलता था। एक बार वह व्यक्ति किसी मुसीबत में फंस गया जिसके कारण उसे राज दरबार में बुलाया गया। वह थोड़ा घबरा गया। उसे अकेले जाने में डर लगा, इसलिए उसने अपने किसी मित्र को साथ ले जाने की सोची। वह अपने सबसे प्रिय मित्र के पास गया, लेकिन उसने उसके साथ जाने से इनकार कर दिया। फिर वह दूसरे मित्र के पास गया। उसने व्यस्तता के कारण साथ जाने से इनकार कर दिया। हां, यह जरूर कहा कि और कोई मदद हो तो कर दूंगा। वह व्यक्ति निराश हो गया। फिर वह तीसरे मित्र के पास पहुंचा। तीसरे मित्र ने उसकी पूरी बात सुनी और सहायता करने का वचन देकर उसके साथ राजदरबार गया। राजदरबार में उसने अपने मित्र का पक्ष रखा और उसे संकट से बचाकर ले आया। कथा पूरी होने पर गुरुजी ने अपने शिष्यों को तीनों मित्रों के प्रतीकात्मक अर्थ बताए, पहला मित्र धन है जिसे परमप्रिय समझा जाता है लेकिन वह मृत्यु के बाद घर से बाहर एक कदम नहीं निकालता। दूसरा मित्र कुटुंब है जो यथासंभव सहायता तो करता है लेकिन उसका सहयोग भी शरीर रहने तक ही रहता है। धर्म ही वह मित्र है जो इस लोक और परलोक दोनों में साथ देता है। हालांकि हम इसके प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं लेकिन यह चिरस्थायी सुख-शांति प्रदान करता है। सभी शिष्यों को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया।

६६६) दिल में बसते हैं भगवान - एक संत से उनके शिष्य ने प्रश्न किया गुरुदेव, सुना है कोई महात्मा आकाश में उड़ते हैं, तो कोई पानी पर चल सकते हैं, क्या ये वाकई सच है? शिष्य के प्रश्न को सुनकर संत ने कहा, मेंढ़क पानी में तैर सकता है और आवासील (एक जीव) पानी पर चल सकता है तो क्या ये सभी महात्मा हो सकते हैं। बिल्कुल भी नहीं। महात्मा वो है, जिसे परमात्मा के दर्शन हुए हों। उसके लिए भगवान तक पहुंचने के सारे रास्ते धर्म से शुरू होते हों। मनुष्य और भगवान के बीच प्रकाश या पृथ्वी का परदा नहीं है। भगवान तो हर जगह मौजूद है। परदा है घमंड का, अभिमान का। जब तक तुम्हें अपना ख्याल रहेगा, तब तक तुम्हारा दिल भगवान की तरफ नहीं फिरेगा और जब ईश्वर की याद में तुम खुद को भूल जाओगे, तब तुम्हारे दिल में बस ईश्वर ही होगा।

६६७) घोड़ा और बारहसिंगा - बहुत पहले, घोड़ा सारे चरागाह का अकेला मालिक था, तभी एक बारहसिंगे ने आकर उस चरागाह में चरना शुरू कर दिया। घोड़ा यह बरदाश्त नहीं कर सका। वह दौड़ा-दौड़ा आदमी के पास गया और बारहसिंगे से बदला लेने में उसकी सहायता करने की प्रार्थना की। ठीक है। आदमी ने जवाब दिया, पर जरा यह लगाम मुझे तुम अपने मुंह में लगाने दो। फिर देखो, हम बारहसिंगे का सफाया कैसे करते हैं। घोड़ा राजी हो गया। आदमी ने फौरन घोड़े के मुंह में नकेल डाली और उछलकर उसकी पीठ पर सवार हो गया। कुछ देर बाद बारहसिंगे को खोजकर आदमी ने उसे मौत के घाट उतार दिया, पर वह स्वयं घोड़े पर से नहीं उतरा। तब से घोड़ा आदमी का गुलाम है। मुझे मेरे मित्रों से बचाओ, शत्रुओं से बचने का प्रबंध मैं स्वयं कर लूंगा।

६६८) शास्त्री जी का फटा कुर्ता - एक बार बापू से मिलने एक व्यक्ति आए। उनका कुर्ता फटा हुआ था। बापू ने उन्हें बैठाया, फिर कहने लगे- भले ही तुम कपड़े पुराने पहनो पर फटा हुआ कुर्ता सिलकर पहनो। व्यक्ति कहने लगा, क्या करूं बापू सिलाने दर्जी के पास गया था, पर उसे समय नहीं था इसलिए फटा पहन लिया। इस पर बापू बोले- अपना काम खुद करना चाहिए। यदि तुम्हें नहीं आता तो लाओ मैं तुम्हें सिलकर देता हूं। व्यक्ति बोला- मैं आज स्वयं सिलकर पहनूंगा। व्यक्ति ने कुर्ता स्वयं सिला व पहना। वह व्यक्ति कौन था वे थे लालबहादुर शास्त्रीजी।

६६९) आदमी और शेर - एक बार एक शेर और एक आदमी साथ-साथ यात्रा कर रहे थे, उनके मध्य यह बहस होने लगी कि कौन ज्यादा ताकतवर और श्रेष्ठ है। उनके मध्य नोक-झोंक तीखी हुई ही थी कि वे चट्टान पर उकेरी गयी एक मूर्ति के पास से गुजरे जिसमें एक आदमी को शेर का गला दबाते हुए दर्शाया गया था। वो देखो हमारी श्रेष्ठता को साबित करने के लिए क्या तुम्हें और किसी प्रमाण की आवश्यकता है? आदमी ने गर्व से कहा। शेर ने उत्तर दिया, ये कहानी कहने का तुम्हारा नजरिया है। यदि हम लोग शिल्पकार होते तो शेर के एक पंजे के नीचे बीस आदमी दबे होते। इतिहास सिर्फ विजेताओं द्वारा ही लिखा जाता है।

६७०) डिप्लोमेसी - अरिंजय वैसे तो मां को काफी फरमाबरदार बेटा लगता, लेकिन बीवी के सामने आते ही वह रंग बदल लेता। अकारण ही वह माँ से झगड़ा कर उसके काम में नुक्स निकालता, बदतमीजी से बोलते हुए बीवी के चेहरे पर आई खुशी की लाली में संतुष्टि खोजता। बीवी की अनुपस्थिति में जब माँ आंखों में आंसू लिए शिकवा करती तो वो लाड़ में माँ की गोद में सिर रखकर कहता, मां प्लीज, मेरी खुशी के लिए इतना-सा सहन कर लिया करो। मेरे

आपसे इस शैली में बात करने से जरा रैना खुश हो जाती है बस। आपको तो पता ही है वह कैसी बिगड़ैल घोड़ी है। जरा उसे साध लूं, फिर आपको शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। बेटा बीवी से ज्यादा मुझे अपना समझता है माँ के झिलमिलाते आँसुओं के पीछे इंद्रधनुष लहरा उठता।

६७१) सीमित शब्द - एक बार एक गुरुकुल के कुछ छात्र लाओ त्जू की इस सूक्ति पर विचार-विमर्श कर रहे थे- जिन्हें मालूम है, वे कहते नहीं, जो कहते हैं उन्हें मालूम नहीं। इस सूक्ति का सटीक अर्थ जब उनमें से कोई नहीं बता पाया तो वे इसका अर्थ जानने अपने गुरु के पास पहुंचे। गुरु ने पूछा- तुममें से कितने लोग गुलाब की खुशबू के बारे में जानते हो? सभी शिष्यों ने सहमति में सिर हिलाया। यदि तुम सबको यह मालूम है तो मुझे इसे शब्दों में समझाओ। सबके सब चुप थे क्योंकि वे इसे शब्दों में कह नहीं सकते थे।

६७२) सच्चा कर्मयोगी - एक बार सेवाग्राम में गांधीजी से एक कार्यकर्ता ने पूछा, आप के जीवन पर किस व्यक्ति का प्रभाव सबसे अधिक पड़ा? गांधीजी ने कहा, भाई रायचन्द्र, टाल्स्टाय और रस्किन से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं, मगर मेरे ऊपर सबसे ज्यादा प्रभाव भाई रायचन्द्र का ही पड़ा है। कार्यकर्ता ने पूछा, वह कैसे? गांधीजी ने कहा, भाई रायचन्द्र का बहुत बड़ा व्यापार था। वह हीरे मोती की परख करते थे और लाखों का कारोबार करते थे। कार्यकर्ता ने गांधीजी को आश्चर्य से देखा। उसे यह बात थोड़ी अटपटी लग रही थी कि गांधीजी आखिर एक व्यापारी से क्यों प्रभावित हुए। गांधीजी ने उसकी मनोदशा को भांपकर कहा, लेकिन वह साधारण कारोबारी नहीं थे। वह एक संत थे। उनकी गद्दी पर कोई और चीज हो या न हो, कोई धार्मिक पुस्तक अवश्य रखी होती थी। बगल में वह एक डायरी भी रखते थे। जब भी उन्हें फुरसत मिलती, वह पढ़ने लगते। पुस्तक में मन को छूनेवाली कोई बात होती तो वह उसे डायरी में नोट कर लेते। जो व्यक्ति लाखों की लेन-देन की बात करके फौरन ज्ञान की पुस्तक पढ़ने लगे और आत्मज्ञान की बात लिखने लगे, वह व्यापारी नहीं बल्कि शुद्ध ज्ञानी कहा जाएगा। मेरे साथ उनका कोई स्वार्थ नहीं था। मगर जब भी मैं उनकी दुकान पर पहुंचता, वह धर्म चर्चा शुरू कर देते थे। उस समय मुझे धर्म चर्चा में रुचि नहीं थी फिर भी मैं भाई रायचन्द्र की बातों को ध्यान से सुनता था। इसके बाद मैं कई संत महात्माओं से मिला, मगर किसी ने मुझे इतना प्रभावित नहीं किया। मुझसे लोग पूछते हैं कि आखिर रायचन्द्र में क्या खास बात है जिससे मैं इतना प्रभावित हुआ। मुझे उनके कर्मयोग ने प्रभावित किया। आम धारणा यह है कि एक काम करते हुए दूसरा काम करना कठिन है। मगर रायचन्द्र को देखकर लगा कि मनुष्य सांसारिक जीवन जीते हुए भी संत और ज्ञानी हो सकता है। इसी कारण मुझे रायचन्द्र सच्चे कर्मयोगी नजर आए।

६७३) गैरजरूरी - क्यों सता रखा है उसे तुमने? बेटे ने माँ से नई-नवेली पत्नी के विषय में आक्रोश से भरकर कहा। अत्यंत संवेदनशील वह नारी जो चींटी भी नहीं मार सकती थी, किसी का दिल दुखाने सताने की तो दूर की बात। हैरत से पहले तो बेटे को देखती रही। फिर कुछ न बोल अपने भीतर उतरती चली गई। बहू कुछ रोज के लिए मायके गई थी। अब घर में सिर्फ माँ और बेटा ही थे। जो माँ बेटे की पीड़ा की कल्पना मात्र से काँपने लगती। हर समय अपनी ममता का सागर उस पर लुटाती। न जाने किस सूत्र से बेटे के अंदर का सब कुछ जान लेनेवाली माँ अब जैसे राख हो गई थी। बेटे के एक वाक्य ने उस पर कहर ढा दिया। अब बेटे की उपस्थिति को नकारती-छुपाती। अपने ऊपर विश्वास मानो खो चुकी थी।

उसके भीतर जैसे सब चुक गया था और फिर वो एक दिन निकल गई। घर से दूर एक अनजाने सफर पर।

६७४) बर्नार्ड शॉ की जिंदादिली - एक अस्वस्थ व्यक्ति ने डॉक्टर को बुलवाया। उसके घर की लिफ्ट खराब थी, इसलिए डॉक्टर को सीढ़ियां चढ़कर पहुंचना पड़ा। वह काफी जोरों से हांफने लगा। जब अस्वस्थ व्यक्ति ने उनकी यह हालत देखी, तो बिस्तर से उठकर उसने डॉक्टर को बैठने के लिए कुर्सी दी और एक गोली उसे देते हुए बोला- यह तुम्हें फौरन आराम पहुंचाएगी। तुम गरिष्ठ भोजन फौरन बंद कर दो और साग-सब्जी व फल खाया करो। मैं तुमसे उम्र में करीबन दुगना हूं, फिर भी सौ गुना चुस्त हूं। चिकित्सक ने मरीज से पूछा- क्या तुम नृत्य कर सकते हो? चिकित्सक ने इन्कार कर दिया तो उसने संगीत बजाया और नृत्य भी किया। साथ ही चिकित्सक को सलाह दी- रोजाना कम से कम पंद्रह मिनट तक नृत्य करने से तुम छरहरे और चुस्त हो जाओगे। तुम चिकित्सक मरीजों को हमेशा ऐसी सलाह देते हो, जो उनके लिए उपयोगी नहीं होतीं। अब तुम मुझे लिखने के लिए मना करोगे क्योंकि उसमें मेहनत होगी। लेकिन मैं एक लेखक हूं, इसलिए लिखने से ही स्वस्थ रहता हूं। अब तुम यह अनुभवी सलाह देने के लिए मुझे पांच शिलिंग दो। चिकित्सक ने हंसते हुए कहा- ठीक है, आप उन्हें काटकर मुझे दो पौंड दे दीजिए। कारण पूछने पर चिकित्सक बोले- क्योंकि मैंने आपको स्वस्थ कर दिया। मुझे मरीज समझकर आप अपना कष्ट भूल गए। स्वभाव की जिंदादिली व्यक्ति को सदैव स्वस्थ व ऊर्जावान बनाए रखती है। चिकित्सक का तो पता नहीं, लेकिन इस कहानी के मरीज का नाम है जॉर्ज बर्नार्ड शॉ।

६७५) दयालु लोग - टीवी एंटीना पर बैठी एक चिड़िया दूसरी चिड़िया से बोली- आज का आदमी बड़ा दयालु हो गया है। वह जानता है कि हम दिनभर उड़ती-फिरती थक जाती होंगी, इसलिए उसने हम लोगों के आराम करने के लिए छतों पर स्टैंड लगवा दिए हैं। तू बड़ी भोली है बहन, दूसरी चिड़िया ने कहा- ये हमारे बैठने का स्टैंड नहीं है। ये तो आदमी को मजबूरी में लगाना पड़ा है। इसकी सहायता से आदमी अपने टेलीविजन सेट पर फोटो आदि देखता है, जैसे लोग सिनेमा में देखते हैं। तू यह सब कैसे जानती है, बहन? मुझे तेरी बात पर यकीन नहीं आता। अच्छा चल, मैं तुझे एक करिश्मा दिखाऊं। मैं तुझे एक कोठी में ले चलती हूं। दोनों चिड़िया रोशनदान के रास्ते से कोठी के उस कमरे में पहुंची जहां वीडियो कैसेट चल रहा था। विशिष्ठ लोग ऐसा दृश्य देख रहे थे, जिसमें एक लड़की से बलात्कार किया जा रहा था। दोनों चिड़िया की टीबीटुट-टुट और फड़फड़ाहट से विशिष्ट लोगों के आनंद में बाधा पड़ रही थी। उनमें एक, शायद वह मिल-मालिक का लड़का था, बोला- इनको यहां से भगाओ। इस पर एक कालिजिएट लड़की उठी। उसने अपने गले के दुपट्टे से उन दोनों चिड़िया को भगाना चाहा। दोनों चिड़िया घबराकर बाहर निकल आईं। पहली चिड़िया दूसरी से बोली- तू ठीक कहती है, बहन, आज का आदमी दयालु नहीं, बड़ा दुष्ट हो गया है।

६७६) नेत्रहीन लड़का बन गया डॉक्टर - पेन्सल्वेनिया के डेविड डब्ल्यू हार्टमैन बहुत कम उम्र से ही चिकित्सक बनने का सपना देखते थे। जब भी कोई उनसे पूछता कि बड़े होकर क्या बनोगे तो वह चहक कर जवाब देते, बहुत बड़ा डॉक्टर। दुर्भाग्यवश बहुत कम उम्र में ही उनकी आंखें खराब हो गईं। काफी इलाज के बाद भी वे नेत्रहीन हो गए। खुली आंखों से सपने देखने के लिए डेविड हार्टमैन के पास अब नेत्र नहीं थे, लेकिन फिर भी सपने देखना उन्होंने नहीं

छोड़ा। अब भी उनसे कोई पूछता कि बड़े होकर क्या बनोगे, तो वह वैसे ही चहक कर कहते, डॉक्टर सुननेवाले उन पर व्यंग्य करते। एक दिन तो एक विद्यार्थी ने बोल दिया, तुम सबके सामने यह मत बोला करो। इस जन्म में तुम कभी डॉक्टर नहीं बन सकते। डेविड ने उस विद्यार्थी से कहा, तुम्हें मेरा सपना छोटा मुंह और बड़ी बात कैसे लगा? अगर ऐसा ही है तो मैं संकल्प लेता हूं कि मैं मेहनत और लगन से डॉक्टर बनकर दिखा दूंगा। इसके बाद उन्होंने यह कहना आरंभ कर दिया कि वह केवल और केवल डॉक्टर बनने के लिए ही पैदा हुए हैं। उन्होंने मेडिकल में प्रवेश के लिए आवेदन किया, लेकिन वहां उन्हें निराशा मिली। कहा गया, दृष्टि बाधित छात्र कभी चिकित्सा की पढ़ाई पूरी नहीं कर सकते। उसके बाद उनके साथ लोग जितना नकारात्मक रुख अपनाते, उनका आत्मविश्वास उतना ही सकारात्मक होता जाता। उन्होंने खुद ही चिकित्सा की पढ़ाई आरंभ कर दी। उन्होंने पच्चीस पुस्तकों को अपने लिए ऑडियो रिकॉर्ड करवाया और उन्हें सुनना आरंभ कर दिया। सत्ताइस साल की उम्र में हार्टमैन की मेहनत रंग लाई और वह पहले ऐसे दृष्टिहीन छात्र बन गए, जिन्होंने चिकित्सा की पढ़ाई पूरी की। संकल्प और दृढ़ इच्छा शक्ति की बदौलत उन्होंने वाकई बड़ी बात को छोटा साबित करके दिखा दिया।

६७७) तीर्थ पर न जाकर भी मिला तीर्थयात्रा का फल - हरिहर एक सीधा-सादा किसान था। दिनभर खेतों में मेहनत से काम करता और शाम को प्रभु का गुणगान करता। उसके मन की एक ही साध थी वह उडुपि के भगवान कृष्ण के दर्शन करना चाहता था। उडुपि दक्षिण कन्नड़ जिले का प्रमुख तीर्थ था। प्रतिवर्ष जब तीर्थयात्री जाने को तैयार होते हो हरिहर का मन भी मचल जाता। किंतु धन की कमी के कारण जाना न हो पाता। इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए।

हरिहर ने कुछ पैसे जमा कर लिए। घर से निकलते समय पत्नी ने बहुत-सा खाने-पीने का सामान बांध दिया। उन दिनों यातायात के साधनों का अभाव था। तीर्थयात्री पैदल ही जाया करते। रास्ते में हरिहर की भेंट एक बूढ़े व्यक्ति से हुई। बूढ़े के कपड़े फटे-पुराने थे और पांव में जूते तक न थे। अन्य तीर्थयात्री उससे कतराकर निकल गए, किंतु हरिहर से न रहा गया। उसने बूढ़े से पूछा- बाबा, क्या आप भी उडुपि जा रहे हैं? बूढ़े की आंखों में आंसू आ गए। उसने रुंधे स्वर में उत्तर दिया- मैं भला तीर्थ कैसे कर सकता हूं? एक बच्चा तो बीमार है और दूसरे बेटे ने तीन दिन से कुछ नहीं खाया।

हरिहर भला व्यक्ति था। उसका मन पसीज गया। उसने निश्चय किया कि वह उडुपि जाने से पहले बूढ़े के घर जाएगा। बूढ़े के घर पहुंचते ही हरिहर ने सबको भोजन खिलाया। बीमार बच्चे को दवा दी। बूढ़े के खेत, बीजों के अभाव में खाली पड़े थे। लौटते-लौटते हरिहर ने उसे बीजों के लिए भी धन दे दिया। जब वह उडुपि जाने लगा तो उसने पाया कि सारा धन तो खत्म हो गया था। वह चुपचाप अपने घर लौट आया। उसके मन में तीर्थयात्रा न करने का कोई दु:ख न था बल्कि उसे खुशी थी कि उसने किसी का भला किया है।

हरिहर की पत्नी भी उसके इस कार्य से प्रसन्न थी। रात को हरिहर ने सपने में भगवान कृष्ण को देखा। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और कहा- हरिहर, तुम मेरे सच्चे भक्त हो। जो व्यक्ति मेरे ही बनाए मनुष्य से प्रेम नहीं करता, वह मेरा भक्त कदापि नहीं हो सकता। तुमने उस बूढ़े की सहायता की और रास्ते से ही लौट आए। उस बूढ़े व्यक्ति के वेष में मैं ही था। अनेक तीर्थयात्री मेरी उपेक्षा करते हुए आगे बढ़ गए, एक तुमने ही मेरी विनती सुनी। मैं सदा तुम्हारे साथ रहूंगा।

अपने स्वभाव से दया, करुणा और प्रेम का त्याग मत करना। हरिहर को तीर्थयात्रा का फल मिल गया था।

६७८) डॉक्टर नहीं तो पेंटर - छह वर्ष की बच्ची फ्रीडा पोलियो से ग्रस्त थी। उसकी उम्र के सभी साथी उसे अकेला छोड़ देते थे। वह खेलने के लिए जब भी अपना पैर बढ़ाती तो नीचे गिर जाती। उसने अपना ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित किया। पढ़ने में उसे कोई दिक्कत नहीं होती थी। उसके टैलंट की सभी तारीफ करने लगे। उसने सोचा, वह बड़ी होकर डॉक्टर बनेगी। लेकिन एक दिन जब वह स्कूल से घर आ रही थी, भीषण सड़क दुर्घटना का शिकार हो गई। उसकी पसलियां, दोनों पैर और कॉलरबोन टूट चुके थे। कई महीनों तक असाध्य पीड़ा झेलकर वह किसी तरह सांसें ले पा रही थी। लेकिन वह अपना जीवन यूं जाया नहीं करना चाहती थी। डॉक्टर तो अब वह बन नहीं सकती थी। क्या करे। उसे पेंटिंग का भी शौक था। अब फ्रीडा ने पेंटिंग में अपना भविष्य बनाने की ठान ली। इसके लिए उसने विशेष रूप से बनाए गए ईजल को बिस्तर के पास रखा और उसके ऊपर एक दर्पण रख कर पेंटिंग करनी आरंभ कर दी। जब भी वह टूटने लगती तो दर्पण में अपनी छवि को निहारती और स्वयं को मजबूत करके फिर पेंटिंग बनाने में लग जाती। प्रारंभ में उसने अपनी बहनों और मित्रों के चित्र बनाए। इसके बाद उसकी कल्पना विस्तार लेती गई और वह आश्चर्यजनक चित्र बनाने लगी। धीरे-धीरे उसकी ख्याति दूर तक फैलती गई। इतनी ही नहीं, उसकी पेंटिंग को पेरिस अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय के लिए खरीदा गया। जब उसकी पेंटिंग अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय में रखी गई तो वह बीसवीं सदी की पहली मैक्सिकन पेंटर थी जिसे यह सम्मान प्राप्त हुआ था। उसे दुनिया विख्यात चित्रकार फ्रीडा काहलो के रूप में जानती है। उन्होंने अपने शरीर की बुरी तरह टूट-फूट के बावजूद अपने संकल्प के सहारे शोहरत और सम्मान अर्जित करके साबित किया कि व्यक्ति तब तक नहीं टूट सकता जब तक वह स्वयं टूटना न चाहे।

६७९) अधिकार की सीमा - एक बार एक ब्राह्मण से कोई अपराध हुआ। यह बात महाराज जनक को पता चली तो उन्होंने उसे अपने राज्य से निकालने का दंड दे दिया। ब्राह्मण ने पूछा, महाराज। मुझे आप बस इतना बता दें कि आपका राज्य कहां तक है, ताकि मैं उसके बाहर जा सकूं। ब्राह्मण का सवाल सुनकर राजा जनक सोचने लगे कि वास्तव में उनके राज्य की सीमा कहां तक है। पहले तो उन्हे संपूर्ण पृथ्वी पर अपना अधिकार सा प्रतीत हुआ और फिर मिथिला नगरी पर। आत्मज्ञान के झोंके में वह अधिकार घटकर प्रजा तक और फिर उनके शरीर तक सीमित हो गया, मगर अंत में उन्हें अपने शरीर पर भी इस अधिकार का भान नहीं हुआ। वे ब्राह्मण से बोले, आप जहां भी चाहें रहें, मेरा किसी भी वस्तु पर अधिकार नहीं है। ब्राह्मण को आश्चर्य हुआ, उसने पूछा- महाराज। इतने बड़े राज्य का अधिकारी होते हुए भी आप सभी वस्तुओं के प्रति ऐसे कैसे निर्मम हो गए हैं? अभी-अभी तो आप संपूर्ण पृथ्वी पर अपना अधिकार होने की सोच रहे थे न? राजा जनक बोले, संसार के सभी पदार्थ नश्वर हैं। शास्त्रानुसार न तो कोई अधिकारी सिद्ध होता है और न कोई अधिकार योग्य वस्तु ही है। अत: मैं किसे अपने अधिकार में समझूं। जहां तक स्वयं को पृथ्वी का अधिकारी समझने की बात है, मैं स्वयं के लिए तो कुछ करता ही नहीं हूं। जो कुछ भी करता हूं, वह देवता, पितर, भूत और अतिथि-सेवा के लिए ही करता हूं। इसलिए पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, प्रकाश और अपने मन पर मेरा अधिकार कैसे हुआ? यह सुनते ही ब्राह्मण अपने असली रूप में आकर बोला, महाराज। मैं धर्म हूं। आपकी परीक्षा

लेने के लिए ब्राह्मण वेश में आपके राज्य में वास कर रहा था। मैं समझ गया कि सत्वगुण रूप नेमियुक्त ब्रह्म प्राप्तिरूप चक्र के आप ही संचालक हैं।

६८०) समर्पण और खुशहाली - एक बार एक राजा ज्ञान प्राप्ति के लिए एक प्रसिद्ध मठ पर गया। मठ में गुरु के अलावा बाकी सभी राजा को देखकर अति उत्साहित थे। राजा ने मठाधीश से अपने आने का मंतव्य बताया और कहा, गुरुदेव, मैं आपके ज्ञान व प्रसिद्ध मठ से बेहद प्रभावित हूं और मैं अपने राज्य में अपने शासन से खुशहाली लाना चाहता हूं। कृपया कुछ दिशा दर्शन करें। गुरुदेव ने कहा, अच्छी बात है, मगर खुशहाली शासन व नियंत्रण से नहीं आती है, बल्कि सभी के अपने कार्यों के प्रति समर्पण से प्राप्त होती है। अपने कार्य के प्रति समर्पण का भाव पैदा करें, खुशहाली, प्रगति स्वयमेव प्राप्त होगी।

६८१) खतरा किस ओर से - सांभर जब भी नदी के किनारे घास चरता तो अपनी नजर जंगल की ओर डालता। अपने आपको किसी संभावित हमले से बचाने के लिए उसकी दृष्टि हमेशा झाड़ियों पर रहती। उसे लगता था कि पानी से तो उसे कोई खतरा नहीं है लेकिन जंगल से उस पर शेर, बाघ या चीता हमला कर सकते हैं। वह नदी की तरफ से निश्चिंत रहता क्योंकि उसे पानी की ओर से किसी हमले की आशंका नहीं थी। एक दिन ऐसे ही वह नदी किनारे की हरी-हरी मुलायम घास चर रहा था। तभी पानी के रास्ते से कुछ नाविक उस ओर आए। जब उन्होंने सांभर को चरते हुए देखा तो आराम से उस पर निशाना साधकर अपना शिकार बना लिया। अंतिम आहें भरते हुए सांभर बोला- मैं भी कितना अभागा हूं। मैंने अपना सारा ध्यान जंगल की ओर लगा रखा था जबकि पानी की ओर से मैं आश्वस्त था। पर अंत में शत्रु ने उसी ओर से हमला किया। खतरा प्राय: उसी ओर से दस्तक देता है जिस ओर से आपने अपेक्षा न की हो। इसलिए हमेशा चौकस नजर रखनी चाहिए।

६८२) विजिटिंग कार्ड - चीन के मैजी साम्राज्य काल में कैचू नामक चीनी जैन विद्या के एक गुरु हुआ करते थे। वे क्योटो के एक किले में रहते थे। एक दिन क्योटो प्रांत के गवर्नर पहली बार उनसे मिलने आये। उन्होंने गुरुजी के शिष्य को अपना विजिटिंग कार्ड दिया जो शिष्य ने गुरुजी के समक्ष प्रस्तुत किया, जिस पर लिखा था किटागाकी, गवर्नर ऑफ क्योटो कार्ड को पढ़कर गुरुजी बोले- मुझे ऐसे किसी आदमी से नहीं मिलना। उससे कहो कि यहां से चला जाये। इसके बाद शिष्य ने अफसोस जताते हुए वह विजिटिंग कार्ड गवर्नर को वापस कर दिया। गवर्नर ने बात समझते हुए कहा- दरअसल मुझसे ही गलती हो गयी है। यह कहकर उन्होंने गवर्नर ऑफ क्योटो शब्द काट दिये और पुन: वह कार्ड देते हुए कहा- एक बार गुरुजी से फिर पूछ लो। जब गुरुजी ने पुन: वह कार्ड देखा तो तत्परता से बोले- अच्छा। किटागाकी आया है। उसे तुरंत बुलाओ। मैं उससे मिलना चाहता हूं।

६८३) अन्याय के विरुद्ध - लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक बचपन से ही सच्चाई पर अडिग रहते थे। वे स्वयं कठोर अनुशासन का पालन करते थे, परंतु कभी भी किसी की चुगली नहीं करते थे। एक दिन उनकी कक्षा के कुछ छात्रों ने मूंगफली खाकर छिलके फर्श पर बिखेर दिए और पूरी कक्षा में चारों ओर गंदगी फैला दी। कुछ देर बाद जब अध्यापक आए तो कक्षा को गंदा देखकर बहुत नाराज हुए। उन दिनों अध्यापक बेहद कठोर हुआ करते थे। अध्यापक ने पूछा तो

किसी भी छात्र ने अपनी गलती नहीं स्वीकारी। इस पर अध्यापक ने सारी कक्षा को दंडित करने का निश्चय किया और अपनी छड़ी निकाली। उन्होंने कक्षा में उपस्थित छात्रों से कहा, बारी-बारी से आओ और हाथ आगे बढ़ाओ। छात्र हाथ आगे करता और अध्यापक उस पर तड़ातड़ बेंत जड़ देते। जब तिलक की बारी आई तो उन्होंने अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाया। तिलक ने अपने हाथ बगल में दबा लिए और बोले, मैंने मूंगफली नहीं खाई है। इसलिए बेंत भी नहीं खाऊंगा। अध्यापक ने कहा, तो तुम सच-सच बताओ कि मूंगफली किसने खाई है? मैं किसी का नाम नहीं बताऊंगा और बेंत भी नहीं खाऊंगा, तिलक ने कहा। उनकी बात सुनकर अध्यापक का गुस्सा और बढ़ गया। अध्यापक ने उनकी शिकायत प्राचार्य से कर दी। बात तिलक के घर तक पहुंची और उनके पिता को स्कूल आना पड़ा। तिलक के पिता ने बेटे का समर्थन करते हुए कहा, उसके पास पैसे ही नहीं थे। वह तो मूंगफली खरीद ही नहीं सकता था। पिता के इस उत्तर के फलस्वरूप तिलक को स्कूल से निकाल दिया गया, फिर भी उन्होंने बिना किसी अपराध के दंड स्वीकार नहीं किया। हर तरह के अन्याय का डटकर मुकाबला करने के अपने रुख पर तिलक आजीवन कायम रहे। इसके लिए उन्होंने तरह-तरह के कष्ट उठाए, जेल भी गए, लेकिन कभी अन्याय के आगे सिर नहीं झुकाया।

६८४) मॉडर्न कल्चर का ढोंग - कुंज की चिल्लाहट से कुंती की आंखें खुल गईं। आखिर ऐसा क्या हो गया कि आज तड़के उनके बेटे कुंज ने पूरा घर सिर पर उठा रखा है। उन्हें कुछ समझ नहीं आया। कुंज के पिता के गुजरने के बाद उसकी मां गुमसुम रहती, मगर पोते के अपनेपन ने उनको कभी कोई कमी महसूस नहीं होने दी।

बहू तो जॉब वाली थी, दुनिया के पचड़ों से फुर्सत मिलती तभी तो अपनी सास की तकलीफ समझती। आधुनिक संस्कृति का ढोंग दिखाकर वो ये साबित कर रही थी कि उसके वेतन से घर खर्च चल रहा है। कुंज भी कुछ नहीं कहता, शायद उसको अपनी पत्नी की तकलीफें समझ आ रही थीं। बेटा मृदुल अपनी मम्मी की हरकतें जानता था कि दादी से कैसे काम करवाना है बस, सिरदर्द का बहाना बना देती उनकी बहू और बेचारी कुंती सुबह से शाम तक काम में जुटी रहती। उनसे ज्यादा तो उस नौकरानी की इज्जत थी उस घर में, जो काम के बदले पैसे भी लेती और नखरे अलग से।

मगर आज तो हद ही हो गई जब उनके घर में आज पहली बार कुंज की आवाज तेज थी और बहू नीरजा भी आगबबूला हो रही थी। मगर माजरा क्या था, यही पता करना बाकी था। जैसे ही कुंती, कुंज के कमरे में दाखिल हुई और बोली- बेटा कुंज, बेचारी बहू को क्यों डांट रहा है? बेचारी के ऊपर कितना भार है, नौकरी भी करे और घर भी संभाले। मैंने पुण्य किए हैं कि नीरजा बहू हमारे घर की बहू है।

कुंज- अच्छा, तभी ये अच्छी बहू जिद पर अड़ी है कि इस बुढ़िया को वृद्धाश्रम में छोड़ आओ। मां तुम्हे कैसे छोड़ दूं, तुमने ही तो ये जिन्दगी दी और तुम्हारा अधिकार है मुझ पर। बहू की जिद सुनकर कुंती चुपचाप उसके कमरे से चली गयी और बहू नीरजा बहुत शर्मिंदा थी कि जिस सास ने मां की तरह ख्याल रखा, उसको ही बेघर करना चाहती थी वो।

६८५) राजकुमारी से ब्याह - एक नगर में लक्खू नामक जवान रहता था। एक दिन उसने भोजन में स्वाद की कमी की शिकायत की तो भाभी ने ताना देते हुए कहा कि इतने ही ठाठ हैं तो तुम अभिमानी राजकुमारी को ब्याह कर ले आओ। बात लक्खू को चुभ गई। वह तुरंत घर से निकल गया।

चलते-चलते जंगल में पहुंच गया। वहां देखा कि तीन योगी बातें कर रहे थे। एक के पास जादुई छड़ी है, जो तरह-तरह के भोजन बना देती, दूसरे के पास एक उड़न खटोला था और तीसरे के पास एक रस्सी थी जो सबको बांध देती थी। लक्खू ने योगियों के सो जाने के बाद चुपके से तीनो चीजें ले लीं और उड़न खटोले पर सवार होकर सीधे उस देश की राजकुमारी के पास पहुंच गया जो खुद को बहुत अभिमानी समझती थी।

राजकुमारी उसे देखकर जाग गई और चिल्लाने लगी। सैनिक आए तो लक्खू ने जादू की रस्सी से सबको बांध दिया। जादू की लकड़ी से उसने राजकुमारी के सामने तरह-तरह के भोजन बनाकर पेश करने शुरू किए। लेकिन राजकुमारी बिलकुल भी खुश नहीं हुई। शोरगुल बढ़ने लगा तो लक्खू को वहां से जाना पड़ा। निराश होकर वह वापस जंगल में पहुंचा और योगियों से क्षमा-याचना करते हुए तीनों चीजें उनको लौटा दीं। योगी लक्खू की ईमानदारी से बहुत खुश हुए और कहा कि ऐसी राजकुमारी को तो बंदरिया बना देना चाहिए। एक योगी ने लक्खू को एक जड़ी दी जिसे एक बार सुंघाने पर इंसान बंदर बन जाता था और दूसरी बार सुंघाने से फिर से मनुष्य बन जाता था। योगियों की सलाह मानकर लक्खू एक बार फिर महल पहुंचा और राजकुमारी को जड़ी सुंघाकर चला आया। अगले दिन ही नगर में हल्ला मच गया कि राजकुमारी बंदरिया बन गई है। अपनी पुत्री की यह दशा देखकर राजा बहुत परेशान हुआ और उसने मुनादी करवा दी कि जो कोई भी उसकी बेटी को ठीक कर देगा, उसे मुंह मांगा इनाम दिया जाएगा।

लक्खू वैद्य बनकर महल पहुंचा और राजा से कहा कि वह उनकी बेटी को ठीक कर देगा लेकिन बदले में उन्हें अपनी बेटी का ब्याह उससे करना होगा। राजा मान गया। लक्खू ने अपने पास रखी जड़ी बंदरिया को सुंघाई तो वह फिर से राजकुमारी बन गई। राजकुमारी से बंदरिया बनने के बाद उसका घमंड भी चूर हो गया था। राजा ने धूमधाम से राजकुमारी का विवाह लक्खू के साथ कर दिया।

६८६) पाने से ज्यादा सुख देने में है - मनीष बैंक में एक सरकारी अफसर था। रोज बाइक से दफ्तर जाता और शाम को घर लौट कर आता। शहर में चकाचौंध तो बहुत रहती है लेकिन जीवन कहीं सिकुड़ सा गया है, आत्मीयता की भावना तो जैसे किसी में है ही नहीं, बस हर इंसान व्यस्त है, खुद की जिंदगी में। यही सोचता हुआ मनीष दफ्तर से घर की ओर जा रहा था। फुटपाथ पर एक छोटी सी डलिया लिए एक बूढ़ी औरत बैठी थी, शायद कुछ बेच रही थी। मनीष पास गया तो देखा कि छोटी सी डलिया में वो बूढ़ी औरत संतरे बेच रही थी। देखो कैसा जमाना है, लोग मॉल जाकर महंगा सामान खरीदना पसंद करते हैं, कोई इस बेचारी की तरफ देख भी नहीं रहा, मनीष मन ही मन ये बात सोच रहा था। बाइक रोककर मनीष बुढ़िया के पास गया, बोला- अम्मा एक किलो संतरे दे दो। बुढ़िया की आंखों में उसे देखकर एक चमक सी आई और तेजी से वो संतरे तौलने लगी। पैसे देकर मनीष ने थैली से एक संतरा निकाला और खाते हुए बोला अम्मा संतरे मीठे नहीं हैं और यह कहकर वो एक संतरा उस बुढ़िया को दे गया। वो संतरा चखकर बोली, मीठा तो है बाबू। मनीष बिना कुछ बोले, थैली उठाए चलता बना। अब ये रोज का क्रम हो गया, मनीष रोज उस बुढ़िया से संतरे खरीदता और थैली से एक संतरा निकालकर खाता और बोलता- अम्मा संतरे मीठे नहीं हैं और कहकर बचा संतरा अम्मा को देता, बूढ़ी महिला संतरा खाकर बोलती- मीठा तो है बाबू। बस फिर वह थैली लेकर चला जाता।

कई बार मनीष की बीवी भी उसके साथ होती थी। वो ये सब देखकर बड़ा आश्चर्यचकित होती थी। एक दिन उसने मनीष से कहा- सुनो जी, ये सारे संतरे रोज इतने अच्छे और मीठे होते हैं, फिर भी तुम क्यों रोज उस बेचारी के संतरों की बुराई करते हो। मनीष हल्की मुस्कान के साथ बोला- उस बूढ़ी मां के सारे संतरे मीठे ही हो हैं लेकिन वो बेचारी कभी खुद उन संतरों को नहीं खाती। मैं तो बस ऐसा इसलिए करता हूं कि वो मेरे संतरों में से एक खा ले और उसका नुकसान भी न हो। उनके रोज का यही क्रम पास ही सब्जी बेचनेवाली भी देखती थी। एक दिन वो बूढ़ी अम्मा से बोली- ये लड़का रोज संतरा खरीदने में कितना चिकचिक करता है। रोज तुझे परेशान करता है, फिर भी मैं देखती हूं कि तू उसको एक संतरा फालतू तौलती है, क्यों? बूढ़ी बोली- बहन, वो लड़का मेरे संतरों की बुराई नहीं करता बल्कि मुझे रोज एक संतरा खिलाता है और उसको लगता है कि जैसे मुझे पता ही नहीं है लेकिन उसका प्यार देखकर खुद ही एक संतरा उसकी थैली में फालतू चला जाता है। विश्वास कीजिए, कभी-कभी ऐसी छोटी-छोटी बातों में बहुत आनंद भरा होता है। खुशियां पैसे से नहीं खरीदी जा सकतीं, दूसरों के प्रति प्रेम और आदर की भावना जीवन में मिठास घोल देती है।

६८७) मुझ पर भरोसा है या गधे पर? - एक बार एक किसान, शेखचिल्ली के पास आया और उसका गधा दोपहर तक के लिए उधार मांगा ताकि वो अपने खेत पर कुछ सामान ढो सके। शेखचिल्ली ने जवाब दिया- मेरे मित्र, मैं हमेशा तुम्हें खेतों में काम करते देखता हूं और खुश होता हूं। तुम फसलें पैदा करते हो और हम सब उसका उपयोग करते हैं, यह वास्तविक समाज सेवा है। मेरा दिल भी तुम्हारी सहायता करने को सदैव तत्पर रहता है। मैं हमेशा ख्वाब देखा करता था कि मेरा गधा तुम्हारे खेतों में उगाए गए फसलों को प्रेमपूर्वक ढो रहा है। आज तुम मुझसे गधा उधार मांग रहे हो, यह मेरे लिए बेहद खुशी की बात है। मगर क्या करूं, मेरा गधा आज मेरे पास नहीं है। मैंने आज अपना गधा किसी और को उधार दे रखा है। ओ शेखचिल्ली, कोई बात नहीं। मैं कोई अन्य व्यवस्था कर लूंगा और मुझे तुम्हारे इन दयालु शब्दों और मेरे प्रति आपकी भावना से बेहद प्रसन्नता हुई। आपको बहुत बहुत धन्यवाद किसान ने कहा और वापस जाने लगा। इस बीच घर के पिछवाड़े से शेखचिल्ली के गधे के रेंकने की आवाज आई। किसान रुक गया। उसने शेखचिल्ली की ओर प्रश्नवाचक नजरों से देखा और कहा- चिल्ली, तुम तो कहते थे कि तुमने गधा किसी और को दे दिया है, पर वो तो पीछे बंधा हुआ है। अजीब आदमी हो तुम भी। तुम्हें मेरी बात पर यकीन होना चाहिए, कि गधे के रेंकने पर? शेखचिल्ली ने किसान से प्रश्न किया।

६८८) न मिटनेवाले दाग - पुत्र किसी के घर में डाका डालकर आता तो माँ कमरे में एक कील गाड़ देती थी। किसी का खून करता तो एक और कील गाड़ देती। यह सिलसिला काफी दिनों से पुत्र देख रहा था। एक दिन पुत्र ने पूछा- माँ, तुमने सारा कमरा किलों में भर दिया है। यह सब क्या है? पुत्र, यह सब तुम्हारे बुरे काम हैं। अब तो पूरा कमरा कीलों से भर गया है। पुत्र का हृदय पछतावे से भर गया। उसने निश्चय किया कि अब से वह बुरे काम छोड़ अच्छे काम करेगा और उसने अच्छे काम करने शुरू कर दिए। अब माँ को वह अपने अच्छे काम बताता। माँ उन कीलों में से एक कील उखाड़ देती। कई वर्षों तक इसी प्रकार चलता रहा। एक दिन सब कीलें उखड़ गईं। तब पुत्र ने माँ से पूछा, माँ, अब तो कोई पाप नहीं रहा? माँ ने उत्तर दिया, बेटा। कीलें तो सभी निकल गईं हैं, पर कीलों के न मिटनेवाले दाग दीवार पर रह गए हैं, जो

तुम्हारे बुरे कामों की हमेशा याद दिलाते रहेंगे। प्रायश्चित हृदय की वेदना है और निर्मल जीवन का उदय।

६८९) सफाई के मायने - एक बार पत्रकारों की गोष्ठी में महात्मा गांधी राजनीतिक प्रसंगों पर उत्तर दे रहे थे। उसी समय हास्य-विनोद की मुद्रा में एक पत्रकार ने बापू से पूछा, आपको एक दिन के लिए भारत का डिक्टेटर बना दिया जाए, तो क्या करेंगे? बापू थोड़ा रुके और फिर अपनी बात कहना शुरू की, मैं देश के सभी विचारशील व्यक्तियों और सरकारी कर्मचारियों को सफाई में जुटा दूंगा। सफाई ही सुव्यवस्था है। जब तक इसका महत्व न समझा जाएगा, तब तक किसी व्यक्ति या किसी देश की वास्तविक उन्नति होना असंभव है। उनका यह जवाब सुनकर पत्रकार वार्ता में मौजूद सभी लोग उनके विचारों से अभिभूत हो गए और बापू की प्रशंसा करने लगे। बापू ने आगे कहा, अगर व्यक्ति अपने आसपास फैले कचरे रूपी भ्रष्ट वातावरण की सफाई कर दे तो देश काफी आगे बढ़ सकता है।

६९०) भेड़िए की चाल - एक भेड़िया बीमारी की वजह से कुछ कमजोर हो गया। जंगल में शिकार कर अपने लिए भोजन जुटाना अब उसके लिए संभव न रहा। उसने एक चाल चली। भेड़ की खाल ओढ़कर वह भेड़ों के एक झुंड में घुस गया। किसी को पता न चला। चरवाहे को भी नहीं। भेड़िया रोज चुपके से एक भेड़ के बच्चे को अलग ले जाता और मिनटों में गड़प कर जाता। कुछ रोज तक यह युक्ति चलती रही। एक दिन चरवाहे के घर पर कुछ मेहमान आनेवाले थे। उसने एक बड़ी सी भेड़ को काटकर उसका सालन बनाने का निश्चय किया। अचानक उसकी दृष्टि भेड़ की खाल ओढ़कर भेड़ बने भेड़िये पर गई। चरवाहे ने फौरन उसकी गरदन धड़ से अलग कर दी। जैसी करनी वैसी भरनी।

६९१) अभय का संदेश - स्वामी रामकृष्ण के निधन के बाद दक्षिणेश्वर मंदिर की व्यवस्था बदलने लगी थी। उनके तमाम शिष्य भी यहां-वहां बिखरने लगे। स्वामी विवेकानंद भी दीन-दुखियों की सेवा के लिए निकले। उन्होंने तीर्थाटन का मन बनाया। यात्रा के दौरान कुछ समय वह बनारस में भी रहे। वहीं किसी दिन वह मां दुर्गा के मंदिर के पास से निकल रहे थे कि तभी बंदरों ने उन्हें घेर लिया। वे नजदीक आने लगे और डराने लगे। बंदर उनके हाथ में रखा प्रसाद भी छीनने लगे। स्वामी खुद को बचाने के लिए भागने लगे। पर बंदर तो पीछे ही पड़ गए थे, वे उन्हें दौड़ाने लगे। पास खड़े एक वृद्ध संन्यासी यह सब देख रहे थे। उन्होंने स्वामी को रोककर कहा, रुको, डरो मत, उनका सामना करो। यह सुनकर स्वामी तुरंत पलटे और बंदरों की तरफ बढ़ने लगे। उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि उनके ऐसा करते ही सभी बंदर तुरंत भाग गए। इस घटना का स्वामी ने कई बार जिक्र किया। वह कहते थे कि बंदरों से डरकर मैं चुप रह जाता, तो स्वामी परमहंस के बाद हम लोगों की जैसी दशा हो गई थी, उसे संभालते और खुद को बचाते हुए ही हम अपना जीवन गुजार देते। वह स्वामी ही थे, जो संन्यासी के रूप में मुझे अभय का संदेश देकर चले गए। तभी से यह मंत्र मिला कि कभी डरकर भागो मत, पलटो और सामना करो।

६९२) धर्म का मतलब और मकसद - उन दिनों कि बात है जब स्वामी विवेकानंद अमेरिका में थे। वहां कई महत्वपूर्ण जगहों पर उन्होंने व्याख्यान दिए। उनके व्याख्यानों का जबरदस्त असर हुआ। लोग स्वामी जी को सुनने और उनसे धर्म के विषय में अधिक से अधिक जानने को उत्सुक हो उठे। एक दिन एक अमरीकी प्रोफेसर उनके पास पहुंचे। उन्होंने स्वामी जी को प्रणाम कर कहा, स्वामी जी, आप मुझे अपने हिंदू धर्म में दीक्षित करने की कृपा करें। इस पर स्वामी

जी बोले, मैं यहां धर्म प्रचार के लिए आया हूं न कि धर्म परिवर्तन के लिए। मैं अमरीका धर्म-प्रचारकों को यह संदेश देने आया हूं कि वे धर्म परिवर्तन के अभियान को बंद कर प्रत्येक धर्म के लोगों को बेहतर इंसान बनाने का प्रयास करें। यही धर्म की सार्थकता है। यही सभी धर्मों का मकसद भी है। हिंदू संस्कृति विश्व बंधुत्व का संदेश देती है, मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानती है। वह प्रोफेसर उनकी बातों से अभिभूत हो गए और बोले, स्वामी जी, कृपया इस बारे में और विस्तार से कहिए। स्वामी जी ने कहा, महाशय, इस पृथ्वी पर सबसे पहले मानव का आगमन हुआ था। उस समय की कहीं कोई धर्म, जाति या भाषा न थी। मानव से अपनी सुविधानुसार अपनी-अपनी भाषाओं, धर्म तथा जाति का निर्माण किया और अपने मुख्य उद्देश्य से भटक गया। यही कारण है कि समाज में तरह-तरह की विसंगतियां आ गई हैं। लोग आपस में विभाजित नजर आते हैं। इसलिए मैं तुम्हें कहना चाहता हूं कि तुम अपना धर्म पालन करते हुए अच्छे ईसाई बनो। हर धर्म का सार मानवता के गुणों को विकसित करने में है इसलिए तुम भारत के ऋषियों-मुनियों के शाश्वत संदेशों का लाभ उठाओ और उन्हें अपने जीवन में उतारो। वह प्रोफेसर मंत्रमुग्ध सब सुन रहे थे स्वामी जी के प्रति उनकी आस्था और बढ़ गई।

६९३) भीड़ नहीं काम के लोग चाहिए - एक बार गौतम बुद्ध को एक जगह प्रवचन देना था। वक्त हो गया, बुद्ध आए और बिना कुछ बोले वहां से चल दिए। वहां पर करीब-करीब १५० श्रोता उपस्थित होंगे। दूसरे दिन फिर प्रवचन करना था, करीब १०० लोग उपस्थित थे। ५० कम हो गए। बुद्ध आए, इधर-उधर देखकर बिना कुछ कहे वापस चले गए। तीसरा दिन हुआ ६० के लगभग श्रोता थे। बुद्ध फिर आए बिना कुछ कहे चले गए। ऐसे ही चौथा दिन आ गया, कुछ लोग और कम हो गए। बुद्ध तब भी कुछ नहीं बोले। जब ५वां दिन हुआ तो देखा सिर्फ १४ लोग थे।

गौतम बुद्ध ने प्रवचन दिया और उपस्थित १४ लोग उनके साथ हो गए। किसी ने बुद्ध से पूछा, आपने पिछले ४ दिन कुछ नहीं बोला, इसका क्या कारण था। तब बुद्ध ने उसकी जिज्ञासा को शांत किया। वे बोले मुझे भीड़ नहीं, काम करनेवाले चाहिए थे। यहां वही टिक सकेगा जिसमें धैर्य हो वह जिनमें धैर्य था वे रह गए।

६९४) रानी के भक्ति भाव ने शेर को जीता - उत्तर भारत में आंबेरगढ़ के राजा थे माधवसिंह। उनकी पत्नी रत्नावली भले स्वभाव की थी। एक दिन उसने अपनी प्रिय दासी को रोते हुए देखा। कारण पूछने पर बोली, ये तो भगवान की भक्ति से मिले अपार सुख के कारण उपजे प्रेमाश्रु हैं। दासी की बातों ने रानी में भक्ति-भाव जाग्रत कर दिया। वह सादे वस्त्र पहनकर भगवान श्रीकृष्ण की उपासना में लीन रहने लगी। राजा माधवसिंह उस समय उज्जैन गए हुए थे। इस बीच, आंबेरगढ़ में कुछ संत-महात्माओं का आगमन हुआ। रत्नावली ने उनके साथ सत्संग किया और लंबी आध्यात्मिक चर्चा भी की। यह जनचर्चा का विषय बना।

माधवसिंह को वजीर ने पत्र लिखा कि रानी महल छोड़कर साधु-संतों के साथ घंटों तक बैठी रहती हैं। यह पत्र पढ़कर माधवसिंह क्रोधित हुआ। जब वह आंबेरगढ़ लौटा तो पहले रानी को मृत्युदंड देना चाहा, किंतु उसके मंत्रियों ने राज्य में आक्रोश फैलने की आशंका जताई। फिर तय हुआ कि भूखे शेर को रानी के महल के द्वार पर छोड़ देंगे। भूखा शेर रानी का शिकार कर लेगा और हम इसे दुर्घटना बता देंगे। जब शेर भावमग्न रानी की ओर दौड़ा तो दासी शेर-शेर कहकर चिल्लाई पर रत्नावली उसे देखकर बोलीं, नहीं, ये तो नृसिंह भगवान हैं। मेरे गिरधर आज यह वेश लेकर आए हैं। रानी ने सिंह की

आरती उतारी। शेर चुपचाप खड़ा रहा और फिर पलटकर चला गया। राजा अटारी से देख रहा था। माधवसिंह ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी। तब रानी बोलीं- क्षमा मैं नहीं, मेरे गिरधर गोपाल ही कर सकते हैं।

६९५) दान का विज्ञापन - जमशेदजी मेहता कराची के प्रसिद्ध कारोबारी व समाजसेवी थे। एक बार उनके पास कराची के जन चिकित्सालय की संचालक समिति के सदस्य चंदा लेने के लिए आए। ये उस अस्पताल को बेहतर बनवाने के लिए लोगों से दान इकट्ठा कर रहे थे। उनमें से एक सदस्य मेहता जी से बोला, महोदय, हमारी प्रबंध समिति ने यह निर्णय लिया है कि जो दस हजार रुपये दान देगा उसका नाम अस्पताल के मुख्य द्वार पर लगनेवाले शिलालेख पर लिखा जाएगा। उनकी बात सुनकर मेहता जी मुस्कराने लगे। उन्हें बैठने का संकेत कर उन्होंने अपनी तिजोरी से रुपये निकालकर सदस्यों के सामने रख दिए। सदस्य रुपये गिनने लगे। कुल नौ हजार नौ सौ पचास रुपये थे। सभी सदस्य हैरानी से एक दूसरे को देखने लगे। उन्हें लगा शायद मेहता जी उनकी बात नहीं समझ पाए या उन्होंने गलती से यह राशि दे दी है। तभी एक सदस्य थोड़ा सकुचाते हुए उनसे बोला, महोदय, आपके द्वारा नौ हजार नौ सौ पचास रुपये दिए गए हैं। यदि आप पचास रुपये और दे दें तो पूरे दस हजार हो जाएंगे। इस तरह अस्पताल के मुख्य द्वार के शिलालेख पर आपका नाम आ जाएगा। सदस्य की बात सुनकर मेहता जी विनम्रतापूर्वक बोले, मेरे लिए इतना दान ही उत्तम है। मैं पूरे दस हजार रुपये देकर अपने दान का विज्ञापन नहीं करवाना चाहता। विज्ञापन से दान का महत्व नष्ट हो जाता है। महत्व चिकित्सालय के उद्देश्य का रहना चाहिए न कि दानदाता का। यदि दान प्रचारित किया जाता है तो निर्धन व्यक्तियों को त्याग और सेवा करने की प्रेरणा कैसे और कहां से मिलेगी? वे कम राशि देने में संकोच करेंगे। सच बात तो यह है कि नि:स्वार्थ सेवा में जो आनंद है, वैसा पत्थर पर नाम लिखवाने में नहीं। सभी सदस्य उनकी बात सुनकर दंग रह गए। वे मन ही मन उनके उदार विचारों के कायल हो गए।

६९६) लोभ से विनाश - किसी गांव में एक किसान रहता था। किसान अपने खेतों में बहुत मेहनत से काम करता लेकिन इसमें उसे कभी लाभ नहीं हुआ। एक दिन दोपहर में धूप से पीड़ित होकर वह अपने खेत के पास एक पेड़ की छाया में आराम कर रहा था। सहसा उसने देखा कि एक एक सर्प उसके पास ही बांबी से निकल कर फन फैलाए बैठा है। किसान आस्तिक और धर्मात्मा प्रवृत्ति का सज्जन व्यक्ति था। उसने विचार किया कि ये नागदेव अवश्य ही मेरे खेत के देवता हैं, मैंने कभी इनकी पूजा नहीं की, लगता है इसीलिए मुझे खेती से लाभ नहीं मिला। यह सोचकर वह पास जाकर बोला- हे क्षेत्ररक्षक नागदेव, मुझे अब तक मालूम नहीं था कि आप यहाँ रहते हैं, इसलिए मैंने कभी आपकी पूजा नहीं की, अब आप मेरी रक्षा करें। ऐसा कहकर एक कटोरे में दूध लाकर नागदेवता के लिए रखकर वह घर चला गया। प्रात:काल खेत में आने पर उसने देखा कि कटोरे में एक स्वर्ण मुद्रा रखी हुई है। अब किसान प्रतिदिन नागदेवता को दूध पिलाता और बदले में उसे एक स्वर्ण मुद्रा प्राप्त होती। यह क्रम बहुत समय तक चलता रहा।

६९७) परिवार की लाड़ली - एक साथ तीन पीढ़ियां गांव के बस स्टैंड पर बस का इंतजार कर रही थीं। दादी, मां, पिता, बेटा और उसकी नई नवेली बहू। बस स्टैंड हाइवे के किनारे था हालांकि यातायात की कमी नहीं थी लेकिन लोकल बसों की कमी थी। फलस्वरूप लोगों को घंटों इंतजार करना पड़ता था। समय गुजारने के लिये बेटे ने एक तरीका ढूंढ

निकाला। वह आते-जाते ट्रकों के पीछे की लिखावटों को पढ़ने लगा। जरा जोर से ताकि सब सुन लें। कोई रोमांटिक सी बात होती तो बहू की ओर देखकर और जोर से बोलता। बहू घूंघट कुछ ऊपर उठाती नीचे का ओंठ दांतों तले दबाती और सबकी नजरें बचाते हुए पति की ओर आंखें तरैरती। पति को पत्नी के चेहरे की यह लिखावट से भी ज्यादा रोमांचित कर देती। उसे इंतजार में भी अनोखा आनंद आने लगा। अभी-अभी मार्बल से लदा एक ट्रक गुजरा था। ओवरलोड। धीमी रफ्तार। दर्द से कराहता हुआ सा, लिखा था, परिवार की लाड़ली। बेटे ने कहा, वो देखो परिवार की लाडली जा रही है और बड़े लाड से पत्नी को निहारा। हुंह, इतना तो बोझा लाद रखा है और परिवार की लाड़ली। पत्नी ने व्यंग्य किया। सासूजी सुन रही थी। उन्होंने तिरछी निगाहों से अपने पति व सास की तरफ देखा, फिर बोली, इतना बोझा लाद रखा है तभी तो परिवार की लाड़ली है। वरना... बहू ने महसूस किया कि सासूजी की आवाज घुटकर रह गई है।

६९८) चिड़िया और इंसानियत - वह एक निहायत शरीफ सा दिखनेवाला इन्सान था और एक होटल का मालिक था। होटल से उसे ठीक-ठाक आमदनी हो जाती थी। उसका गुजारा चल जाता था। घर-परिवार में उसका कोई नहीं था। मां-बाप चल बसे थे। भाई-बहन कोई थे नहीं और विवाह उसने किया नहीं।

होटल मालिक की एक खासियत थी। अपने होटल में आनेवाले हर विकलांग को वह मुफ्त में खाना खिलाता था। किसी विकलांग के आग्रह करने पर भी वह उससे कोई पैसा नहीं लेता था। कई सालों तक इसी तरह विकलांगों को खाना खिलाकर उसने बहुत पुण्य कमाया था। विकलांगों के दिल से उसके लिए दुआएं निकलती।

होटल मालिक की एक और आदत थी। सुबह हर रोज वह चिड़ियों को दाना पानी देता था। उसके होटल के सामने तड़के दाना चुगने के लिए पंछियों के झुंड के झुंड इकट्ठा होते थे। उनकी चहचहाहट से पूरा वातावरण भर जाता था। ग्राहक आने तक वह दाना चुगते पंछियों को निहारता रहता था, इस काम में उसे गजब का सुकून मिला करता था।

एक दिन एक सज्जन ने उससे पूछा, आप हर विकलांग को मुफ्त में खाना क्यों खिलाते हो? इससे तो आपको काफी नुकसान उठाना पड़ता होगा? इस पर होटल मालिक उससे बोला, हररोज दाना चुगती इन चिड़ियों को मैं देखता हूं। कई बार मैंने देखा कि किसी भी अपाहिज चिड़िया के आसपास का दाना अन्य चिड़ियाएं नहीं चुगतीं। जब पहली बार मैंने यह देखा, तो मुझे लगा कि चिड़िया होकर भी वे विकलांगों का इतना ख्याल रखती हैं तो मैं तो इन्सान हूं। मैं सोचने लगा कि विकलांगों के लिए मैं क्या कर सकता हूं। मुझे लगा कि अपने होटल में विकलांगों को मैं मुफ्त में खाना खिला सकता हूं। तभी से मैंने इस राह पर चलना शुरू किया। उसकी बात सुनकर वह सज्जन नतमस्तक हो गए।

६९९) मनुष्य खोज रहा हूं - एक फकीर प्रतिदिन सुबह के समय हाथों में दो मशालें लेकर बाजार में जाता। हर दुकान के सामने थोड़ी देर ठहरता और आगे बढ़ जाता। एक व्यक्ति ने पूछा- बाबा, तुम दिन के समय मशालें लेकर क्या देखते फिरते हो? क्या ढूंढ़ते हो? फकीर ने उत्तर दिया- मैं मनुष्य खोज रहा हूं। इतनी भीड़ में हमें अभी तक कोई मनुष्य नहीं मिला। उस व्यक्ति द्वारा मनुष्य की परिभाषा पूछने पर फकीर बोला- मैं उसको मनुष्य कहता हूं, जिसमें काम की वासना और क्रोध की अग्नि न हो, जो इंद्रियों का दास न होकर उनका स्वामी हो और क्रोध के आवेश में आकर अपने लिए और दूसरों के लिए आग की लपटें उभारने का प्रयास नहीं करता हो।

७००) आत्मविश्वास की जड़ें - एक बार स्वयं विधाता के मन में अपनी सृष्टि देखने की इच्छा हुई। अभी वे धरती पर पहुंचे ही थे कि उन्होंने एक किसान को हाथ में कुदाली लिए एक विशाल पर्वत को खोदते देखा। उसके दुस्साहस पर विधाता को हंसी भी आई और अचरज भी हुआ। उन्होंने किसान से पूछा, भाई, तुम यह क्या कर रहे हो? किसान ने उत्तर दिया, मैं इस पहाड़ को यहाँ से हटा रहा हूं। इसके कारण बादल इस पार आकर मेरे खेत में पानी नहीं बरसा पाते। इससे टकराकर वे उस पार ही खाली हो जाते हैं। लेकिन क्या तुम इसे हटा सकोगे? विधाता ने पूछा। क्यों नहीं। किसान ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, मैं इसे हटाकर ही दम लूंगा। विधाता मुस्कराकर आगे बढ़ गए। अभी वे कुछ कदम ही आगे गए होंगे कि स्वयं पर्वतराज ने उनके आगे हाथ जोड़कर कहा, प्रभु, मेरी रक्षा करें। विधाता ने पूछा, क्या तुम सचमुच किसान से डर गए? मेरा डर सच्चा है, प्रभु। पर्वतराज ने कहा, किसान के भीतर जो आत्मविश्वास है, वह मुझे समाप्त करके ही छोड़ेगा। अगर अपने जीवनकाल में वह मुझे उखाड़ न सका तो उसके बेटे, पोते, पड़पोते मुझे खत्म कर देंगे। आत्मविश्वास की जड़ें बड़ी लंबी और गहरी होती हैं।

७०१) कौआ बना नकली मोर - एक गाँव में एक पेड़ पर एक कौआ और कुछ मोर रहते थे। एक दिन की बात है मौसम बहुत अच्छा था और मोर नीचे नाच रहा था। मोर को नाचता देखकर लोग वाह, वाह कर रहे थे। यह सब कौआ भी देख रहा था और देखकर सोचने लगा। सभी मोर की तारीफ कर रहे हैं, क्यों न मैं भी मोर बन जाऊं और फिर सभी लोग मेरी भी तारीफ करेंगे।

कौऐ को एक तरकीब सूझी, उसने बगीचे में से मोर के सारे पंख इकट्ठे किए और अपने पंखों से चिपका लिए। अब वह भी खुशी-खुशी उनके पास गया और बोला, देखो, मैं भी मोर बन गया हूं। अब मुझे भी अपने साथ मिला लो। यह देखकर सारे मोर हँस पड़े और बोले, अरे कोए। हमारे पंख चुराकर अपने पीछे लगा लिए और अपने आपको मोर कहता है। भाग जा यहाँ से वर्ना मार-मार कर तुझे यहाँ से भगा देंगे।

यह सुनकर बेचारा वहाँ से चुपचाप चला गया और अपने दोस्तों के पास पहुंचा और बोला, दोस्तों, मोर मुझे मार रहे हैं, मेरी मदद करो। यह देखकर वह बोले, तू हमसे बड़ा बनना चाहता है तो हम तेरी मदद क्यों करें। अच्छा होता मोर तुझे मार ही देते। यह कहकर उन्होंने भी उसे वहाँ से भगा दिया। वह बहुत दुखी हो गया था और नदी किनारे चला गया। उससने अपने सारे पंख उतार दिए और फिर से वह कौआ बन गया।

बिना सोचे विचारे कभी भी नकल नहीं करनी चाहिए, इससे किसी का लाभ नहीं होता है बस नुकसान ही होता है।

७०२) लाजवाब - चाणक्य एक जंगल में झोपड़ी बनाकर रहते थे। यहां अनेक लोग उनसे परामर्श और ज्ञान प्राप्त करने आते थे। जिस जंगल में वह रहते थे, वह पत्थरों और कंटीली झाड़ियोंवाला था। उस समय लोग नंगे पैर ही यात्रा करते थे। इसलिए उनके निवास तक पहुंचने में लोगों को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता था। वहां पहुंचते-पहुंचते लोगों के पैर लहूलुहान हो जाया करते थे। एक दिन कुछ लोग उस मार्ग से बहुत परेशानियों का सामना कर चाणक्य के पास पहुंचे। एक व्यक्ति ने उनसे निवेदन किया कि महाराज से कहकर जमीन को चमड़े से ढंकवाने की व्यवस्था करें। इससे लोगों को आराम होगा। उस व्यक्ति की बात सुनकर चाणक्य मुस्कराए और बोले, महाशय

चमड़ा बिछाने से यह समस्या हल नहीं होगी। कंटीले व पथरीले पथ तो इस विश्व में अनगिनत हैं। ऐसे में पूरे विश्व में चमड़ा बिछवाना असंभव है। यदि आप चमड़े से अपने पैरों को सुरक्षित कर लें तो अवश्य ही पथरीले पथ व कंटीली झाड़ियों के प्रकोप से बच सकते हैं।

७०३) सहनशीलता से हृदय परिवर्तन - एक बार महात्मा सरयूदास रेलगाड़ी से कहीं जा रहे थे। गाड़ी में भारी भीड़ थी। सरयूदास के पास ही एक मजबूत कद-काठी का व्यक्ति बैठा था। वह बार-बार उनकी ओर पैर बढ़ाकर ठोकर मार देता था। सरयूदास ने बड़े दयाभाव से कहा, भाई संकोच मत करना। लगता है तुम्हारे पैर में कहीं पीड़ा है और उस पीड़ा को दिखाने के लिए तुम बार-बार अपना पैर मेरी ओर बढ़ाते हो, मगर फिर वापस खींच लेते हो, मुझे कम से कम सेवा का मौका तो दो। मुझे तुम अपना ही समझो। सरयूदास ने उसके दोनों पांव अपनी गोद में रख लिए और उसे सहलाने लगे। वह यात्री शर्मिंदा हुआ और क्षमा याचना करते हुए कहने लगा, महाराज मेरा अपराध क्षमा करें। आप महात्मा हैं। यह बात मुझे अब पता चली है। सहनशीलता ऐसा गुण है, जिसे हमें अपने अंदर विकसित करना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति का सहनशील होना उसे इस दुनिया में आगे ले जाता है।

७०४) शिक्षक या सेवक - डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति थे। एक दिन सेवानिवृत्त होनेवाले शिक्षक उनका आशीर्वाद लेने के लिए उनके निवास स्थान पर पहुंचे। डॉ. राधाकृष्णन ने उनसे पूछा, सेवानिवृत्त होने के बाद आप क्या करेंगे? शिक्षक ने जवाब दिया, कोई नौकरी ढूंढूंगा। डॉ. साहब ने गंभीर होकर कहा, जीवनभर छात्रों को शिक्षा देकर गुरु का दायित्व निभाया और अब कहते हैं कि नौकरी करूंगा। उन्होंने कहा, हमारे धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य पर माता-पिता के ऋण के साथ देवता और समाज का भी कर्ज होता है। अब अपना समय समाज सेवा में लगाइए। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की सेवा कीजिए और उन्हें संस्कारित कीजिए। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा केवल पुस्तकीय शिक्षा दे देने से ही शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं होता। छात्रों को संस्कारित किया जाना भी परम आवश्यक है।

७०५) खुद का ही जाल - एक राजा ने किसी दूसरे राज्य पर आक्रमण कर दिया। आक्रान्ता शक्तिशाली था और जिस पर चढ़ाई की गई, वह राज्य बहुत छोटा था। स्वाभाविक ही था, बड़े राज्य ने छोटे पर अधिकार कर लिया और उस राज्य के जो भी प्रभावशाली लोग थे, उन्हें कैद कर लिया। राजा ने केवल अधिकारियों को ही बंदी नहीं बनाया बल्कि उस राज्य के जितने भी कार्यशील और कारीगर व्यक्ति-व्यापारी, शिल्पी आदि थे, सभी को बंदीगृह में डाल दिया।

इस राज्य का एक लोहार जो हथकड़ी बनाने में बहुत कुशल था, उसने सोचा हथकड़ी तोड़ना मेरे बाएं हाथ का खेल है, मैं इसे आसानी से तोड़कर भाग जाऊंगा, किंतु जब मालूम हुआ कि वे हथकड़ियां उसी की बनाई हुई हैं, तो उसे बड़ी निराशा हुई। उसने हथकड़ी तोड़ने की काफी कोशिश की, पर भाग नहीं पाया।

आज की स्थिति कुछ ऐसी ही है कि स्वयं के हाथों से बनाई हुई हथकड़ी स्वयं के हाथों में ही जकड़ी हुई है। व्यक्ति दूसरों के लिए करता है, तो उसका उपयोग स्वयं के लिए भी हो जाता है। हम पहले से ही जागरूक रहें कि स्वयं के लिए समस्या बन जाएं ऐसी हथकड़ी, ऐसा जाल न बनाएं।

अपने पर अनुशासन करना सीखें। भोजन के संदर्भ में जिसका अपनी जीभ पर अनुशासन है, वह अधिक अच्छी तरह

से स्वस्थ रह सकता है और जिस व्यक्ति का जीभ पर अनुशासन नहीं है, वह स्वस्थ रहे, बहुत कठिन है।

७०६) नानी मर गई कौए की - एक कौआ था। वह रोज एक व्यवसायी के बेटे के हाथ से पूडी छीनकर ले जाता था। व्यवसायी ने उसे सबक सिखाने का निश्चय किया। एक रोज उसने अपने मुंह में दही भरी, फिर वह गाँव के बाहर खड़े बरगद तले जाकर ऐसे लेट गया मानो वह मुर्दा हो। तभी वह कौआ उड़ता हुआ वहाँ आ पहुंचा। उसने सोचा, यह आदमी तो मर गया। अब मैं इसके मुंह में भरी हुई दही खा सकता हूं। जैसे ही कौए ने उसके मुंह में अपनी चोंच डाली, उस आदमी ने अपना मुंह बंद कर लिया। कौए की चोंच उसके दाँतों के बीच फँस गई। अब कौआ तेजी से सोचने लगा, चोंच छुड़पाने की कोई तरकीब खोजनी होगी। कौए ने किसी तरह उससे पूछा, कौन? नंदू काका हैं, आप? व्यवसायी ने सोचा, अगर जवाब दिया तो मुंह खुल जाएगा और कौआ उड़ जाएगा। इसलिए दाँत भींचकर वह बोला, हूं, तेरा काका हूँ। कौए की तो नानी मर गई, क्योंकि दाँत भींचकर बोलने से उसकी चोंच बुरी तरह दबी ओर वह अधमरा सा हो गया। अब उस आदमी ने सोचा- कौए को काफी सजा मिल चुकी है, इसे छोड़ देना चाहिए। अब उसने कौए को छोड़ दिया। इसके बाद कौआ व्यवसायी के बेटे के हाथ से पूड़ी छीनना भूल ही गया। अपराध करनेवाले को एक दिन सजा अवश्य मिलती है।

७०७) भैंसे की सहन शक्ति - सृजन वन में रहनेवाला हर प्राणी अपने स्वभावानुसार हरकतें करता, लेकिन एक जंगली भैंसा अपने स्वभाव से विपरीत एकदम शान्त प्रकृति का था। जंगल में एक नटखट बंदर उसका हमजोली था। उसे भैंसे को तंग करने में बड़ा आनंद आता। वह कभी उसकी पीठ पर सवार हो जाता तो कभी पूंछ से लटक कर झूलता, कभी कान में अंगुली डाल देता तो कभी नथुने में। कई बार गर्दन पर बैठकर दोनों हाथों से सींग पकड़ कर झकझोरता। भैंसा उससे कुछ नहीं कहता। उनकी सहन शक्ति और वानर की धृष्टता देखकर जंगल के राजा ने कहा, भैंसे तुम इस नटखट बंदर को दंड क्यों नहीं देते। यह तुम्हें बहुत सताता है और तुम चुपचाप सह लेते हो। यह सुनकर भैंसा बोला, मैं इसे सींग से चीर सकता हूं, माथे की टक्कर से पीस सकता हूं; परन्तु मैं ऐसा नहीं करता, न करूंगा। अपने से बलशाली के अत्याचार को सहने की शक्ति तो सभी जुटा लेते हैं, परन्तु सच्ची सहन शक्ति तो अपने से बलहीन की बातों को सहन करने में है।

७०८) जलपरी - यह कहानी तब शुरू हुई जब एक मछुआरा नदी किनारे बैठा मछली पकड़ रहा था। जब उसने काँटा बाहर खींचा तो देखा कि मछली की जगह एक अत्यंत सुंदर जलपरी फँसी हुई है। उसने मछुआरे से कहा, तुम चाहो तो मुझसे शादी कर सकते हो; लेकिन एक शर्त पर कि तुम मेरे विषय में कभी किसी से कुछ भी नहीं कहोगे। यह सुनकर मछुआरा बहुत खुश हुआ। वह उसे अपने साथ ले आया। उसने एक कुटिया बना ली और वह सुंदरी उसके साथ एक साधारण स्त्री की तरह रहने लगी। कई लोगों ने यह बात जानने की कोशिश की कि उस जैसे गरीब मछुआरे को इतनी खूबसूरत बीवी कैसे मिल गई? लेकिन उसने राज को सबसे छिपाए रखा। कुछ साल बाद उसके चार संतानें हुईं- दो पुत्र और दो पुत्रियाँ। वह मछुआरा अपने गाँव का सबसे सुखी व्यक्ति था। लेकिन एक दिन, जब वह पीकर धुत्त था तो दूसरे मछुआरों ने उसे घेरकर उससे यह राज उगलवाना चाहा कि उसकी बीवी कहाँ से आई है। डींगें हाँकते हुए

उसने अपनी शादी का राज बता दिया। जैसे ही उसकी पत्नी ने यह बात सुनी, वह अपने पति को छोड़ फिर उस नदी में समा गई। उसकी बेटियाँ भी उसके साथ चली गई और जलपरी बन गईं। बेटे पिता के साथ ही रहने लगे; लेकिन उन्होंने अपनी उस रहस्यमयी माँ को फिर कभी भी नहीं देखा।

७०९) घर को बनाने की कोशिश - अगर मन में चाहत हो तो सब कुछ किया जा सकता है। एक छोटा बच्चा समुद्र के किनारे खेल रहा था। वहीं से गुजरते एक आदमी ने पूछा- बेटा तुम यह क्या कर रहे हौ? मिट्टी से क्यों खेल रहे हो? बच्चे ने कहा- मैं मिट्टी से नहीं खेल रहा। मैं घर बनाने की कोशिश कर रहा हूं। वह आदमी हँस पड़ा और बोला- हां, मिट्टी का घर न? मिट्टी से भला कोई घर बनता है। यह तो जल्दी से टूट जाएगा। बच्चे ने इसका जवाब देते हुए कहा- जब घर मिट्टी के ऊपर बनाया जाता है तो मिट्टी से घर क्यों नहीं बन सकता। मैं मिट्टी से घर बनाऊंगा भी और दुनिया में अपने माता-पिता का नाम ऊँचा भी करूंगा। पूरी दुनिया मुझे देखती रहेगी। बच्चे के आत्मविश्वास से उस आदमी को लगा कि अगर मन में चाहत हो तो सब कुछ किया जा सकता है। जहां चाह होती है, वहीं राह होती है।

७१०) बुराई का जोर बुरे पर - दो भाई थे। एक शैतान को मानता तो दूसरा भगवान को। भगवान की पूजा करनेवाले भाई को शैतान नाना प्रकार को लोभ-प्रलोभन दिखाता था, जिससे वह उसकी ओर आकृष्ट हो, परन्तु जब वह भाई इनसे विचलित नहीं हुआ तब वह भूत उसे तरह-तरह से डराने लगा। परन्तु जब इससे भी वह भाई अपनी भगवद्भक्ति में अटल रहा, तब तो शैतान बड़ा निराश हुआ। एक दिन शैतान अपनी पूजा करनेवाले भाई के सपने में आया और कहने लगा, देख तू अपने भगवान की पूजा करनेवाले भाई को मना ले वरना तुझे मार डालूंगा। उसने शैतान से कहा, वाह, यह खूब रही, मैं तुम्हारी पूजा करूं और तुम मुझे ही मारो। शैतान ने कहा, क्या करूं मेरा वश तुम्हारे ऊपर ही चलता है, क्योंकि वह दूसरा तो मुझे मानता ही नहीं। शैतान का जोर शैतान पर ही चलता है जिसमें शैतानियत नहीं, उसका शैतान क्या बिगाड़ सकता है। काम, क्रोध, लोभ ही बड़े शैतान है। गीता में इन्हीं तीनों को नरक के द्वार बताया गया है, परन्तु इन तीनों में से एक को भी जो अपने अन्दर घर करने नहीं देता उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है?

७११) लेने से बड़ा देनेवाला - एक बार एक शिक्षक संपन्न परिवार से सम्बन्ध रखनेवाले एक युवा शिष्य के साथ कहीं टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे पड़े हैं, जो संभवत: पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे जो अब अपना काम खत्म कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था।

शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा- गुरुजी, क्यों न हम ये जूते कहीं छिपाकर झाड़ियों के पीछे छिप जाएं; जब वो मजदूर इन्हें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा।

शिक्षक गंभीरता से बोले- किसी गरीब के साथ इस तरह का भद्दा मजाक करना ठीक नहीं है। क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिप कर देखें कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है? शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास की झाड़ियों में छुप गए।

मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों की जगह पर आ गया। उसने जेसे ही एक पैर जूते में डाले, उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ। उसने जल्दी से जूते हाथ में लिए और देखा कि अन्दर कुछ सिक्के पड़े थे। उसे बड़ा

आश्चर्य हुआ और वह सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें पलट-पलट कर देखने लगा। फिर इधर-उधर देखने लगा, दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब में डाल लिए।

अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भावविभोर हो गया। उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने हाथ जोड़ ऊपर देखते हुए कहा- हे भगवान, समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख लाख धन्यवाद, उसकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चे को रोटी मिल सकेगी। मजदूर की बातें सुन शिष्य की आंखें भर आयीं। शिक्षक ने शिष्य से कहा- क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली? शिष्य बोला- आपने आज मुझे जो पाठ पढाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूं जिन्हें मैं पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनंददायी है। देने का आनंद असीम है।

७१२) लॉकर की दो चाबियाँ - एक पानवाला था। जब भी पान खाने जाओ, ऐसा लगता कि वह हमारा ही रास्ता देख रहा हो। हर विषय पर बात करने में उसे बड़ा मजा आता। कई बार उसे कहा कि भाई देर हो जाती है, जल्दी पान लगा दिया करो पर उसकी बात खत्म ही नहीं होती। एक दिन अचानक कर्म और भाग्य पर बात शुरू हो गई। तकदीर और तदबीर की बात सुन मैंने सोचा कि चलो आज इसकी फिलासफी देख ही लेते हैं। मैंने एक सवाल उछाल दिया। मेरा सवाल था कि आदमी मेहनत से आगे बढ़ता है या भाग्य से? और उसके जवाब से मेरे दिमाग के सारे जाले ही साफ हो गए। कहने लगा, आपका किसी बैंक में लॉकर तो होगा? उसकी चाबियाँ ही इस सवाल का जवाब है।

हर लाकर की दो चाबियाँ होती हैं। एक आपके पास होती है और एक मैनेजर के पास। आपके पास जो चाभी है वह है परिश्रम और मैनेजर के पास वाली भाग्य। जब तक दोनों नहीं लगतीं, ताला नहीं खुल सकता।

आपको अपनी चाभी भी लगाते रहना चाहिए। पता नहीं, ऊपर वाला कब अपनी चाबी लगा दे। कहीं ऐसा न हो कि ईश्वर अपनी भाग्यवाली चाबी लगा रहा हो और हम परिश्रम वाली चाबी न लगा पाएं और ताला खुलने से रह जाए। बारिश में नहाना आसान तो है, लेकिन रोज नहाने के लिए हम बारिश के सहारे नहीं रह सकते; इसी प्रकार भाग्य से कभीं-कभी चीजे आसानी से मिल जाती है; किन्तु हमेशा भाग्य के भरोसे नहीं जी सकते।

७१३) आशियाना - शहर में अचानक आए एक नये कुत्ते से शहर बोला, तुम यहां क्यों आए हो? कुत्ता- क्योंकि वहां के लोगों ने दावत करना बंद कर दी है इसलिए यहां आया हूं। शहर- तुम पुराने शहर लौट जाओ। कुत्ता- क्यों? शहर- क्योंकि यहां लोग दावत तो नहीं करते लेकिन गोलियां खाते हैं, बम खाते हैं, कभी आजादी के नाम पर तो कभी मजहब के नाम पर नेता यहां रोज दंगे भड़काते हैं। कुत्ता- ठीक है मैं जा रहा हूं- जहां जान पर ही बन आए, वहां मुझे एक पल नहीं रुकना। मैं उसी शहर जा रहा हूं जहां से आया हूं। वहां लोग दावत करना तो बंद कर चुके हैं पर बेजुबानों को रोटी देना नहीं भूलते।

७१४) बूढ़ा कौआ - एक बूढ़ा कौआ बीमार पड़ा। उसने आखिरी सांसें लेते हुए अपने बच्चों से कहा, जाओ, ईश्वर से प्रार्थना करो, ताकि मैं स्वस्थ हो जाऊं। पिताजी। उसके छोटे बच्चे ने तपाक से जवाब दिया, हम किस भगवान से प्रार्थना करें? आपने अपना सारा जीवन मंदिरों से प्रसाद चुराने में बिताया है और हमें भी आपने वही सीख दी। जीवन के

आखिरी क्षणों में पछताने से अच्छा है कि जीवन में कभी पछताने का मौका ही न आने दें।

७१५) मध्यम मार्ग - रोग, जरा और मृत्यु पर विजय पाने के लिए एक महात्मा कई स्थानों पर भटके। अंत में एक वन में घोर तप करके शरीर सूखा लिया, पर लक्ष्य से डिगे नहीं। अस्थिपंजर हो जाने पर भी उन्होंने कठोर-साधना का कष्ट नहीं माना। सांसारिक प्रलोभन उन्हें रिझा न सका। एक दिन जब वे तपस्या में लीन थे तो पास के रास्ते से कुछ गायिकाएं गुजरीं, जो अपनी भाषा में गीत गा रही थीं। गीत का भाव था- सितार के तारों को ढील मत दो। स्वर ठीक नहीं निकलता; पर उन्हें इतना कसो भी नहीं कि टूट जाये बस, महात्मा को मार्ग मिल गया। उन्होंने घोर तपस्या, निद्रा, भोजन आदि के त्याग को तिलांजलि दे, नियमित निद्रा और संयमित भोजन को अधिक व्यावहारिक समझा। फिर वह जीवन भर मध्यम मार्ग पर ही चलते रहे।

७१६) पहचान - उस चित्रकार की प्रदर्शनी में यूं तो कई चित्र थे लेकिन एक अनोखा चित्र सभी के आक़र्षण का केंद्र था। बिना किसी शीर्षक के उस चित्र में एक बड़ा सोने का हीरों से जड़ित सुंदर दरवाजा था जिसके अंदर एक रत्नों का सिंहासन था जिस पर मखमल की गद्दी बिछी थी। उस सिंहासन पर एक बड़ी सुंदर महिला बैठी थी, जिसके वस्त्र और आभूषण किसी रानी से कम नहीं थे। दो दासियां उसे हवा कर रही थीं और उसके पीछे बहुत से व्यक्ति खड़े थे जो शायद उसके समर्थन में हाथ ऊपर किये हुए थे। सिंहासन के नीचे एक दूसरी बड़ी सुंदर महिला बेड़ियों में जकड़ी दिखाई दे रही थी जिसके वस्त्र मैले-कुचैले थे और वो सर झुका कर बैठी थी। उसके पीछे चार व्यक्ति हाथ जोड़े खड़े थे और कुछ अन्य व्यक्ति आश्चर्य से उस महिला को देखकर इशारे से पूछ रहे थे यह कौन है? उस चित्र को देखने आई दर्शकों की भीड़ में से आज किसी ने चित्रकार से पूछ ही लिया, इस चित्र में क्या दर्शाया गया है? चित्रकार ने मैले वस्त्रों वाली महिला की तरफ इशारा करके उत्तर दिया, यह महिला जो अपनी पहचान खो रही है वो हमारी मातृभाषा है। अगली पंक्ति कहने से पहले वह कुछ क्षण चुप हो गया, उसे पता था अब प्रदर्शनी कक्ष लगभग खाली हो जायेगा।

७१७) खुद का चौकीदार - एक बार स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने अपने शिष्यों को एक अजीब कार्य सौंपा। उन्होंने अपने सारे शिष्यों को बुलाया और सभी लोगों को अपने-अपने घर से थोड़ा चावल चुराकर लाने को कहा। लेकिन शर्त यह थी कि चोरी करते हुए उन्हें कोई देख न पाए। एकबार तो शिष्यों को यह सुनकर अटपटा लगा, लेकिन अपने गुरु की आज्ञा का पालन करना उन्होंने अपना धर्म समझा। कई दिनों की कोशिश के बाद सभी शिष्य अपनी पोटलियों में थोड़ा-थोड़ा चावल लेकर वापस आश्रम में आए। सभी शिष्यों के चेहरे पर एक संतोष का भाव था कि उन्होंने अपने गुरु द्वारा सौंपे गए कार्य को पूरा किया। लेकिन सिर्फ एक शिष्य था जो खाली हाथ लौटा था। स्वामी परमहंस को जब पता चला तो उन्होंने उस शिष्य से खाली हाथ लौटने की वजह पूछी। शिष्य ने बड़ी विनम्रता से कहा, गुरुजी, मैंने सभी से छिपकर चोरी करने की कई बार कोशिश की, लेकिन हर बार मैंने स्वयं को वहां मौजूद पाया। इसलिए कभी ऐसा अवसर ही नहीं आया, जब मुझे कोई देख न रहे हो। गुरुजी ने अपने छात्र की ओर संतुष्ट भाव से देखा और चावल लेकर आए अपने शिष्यों को समझाते हुए बोले, जब भी कभी हम कोई गलत काम करते हैं तो दुनिया से भले छिपा लें, मगर अपने आप से नहीं छिपा सकते। इसलिए मेरे शिष्यों, कोई अनैतिक कार्य करने से

पहले हमेशा याद रखना कि तुम्हें कोई देख रहा है। खाली हाथ आनेवाला छात्र और कोई नहीं स्वामी विवेकानंद थे जो आगे चलकर महान दार्शनिक हुए। उन्होंने शिकागो में आयोजित धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया और भारत के आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदांत दर्शन को अमेरिका और यूरोप के सभी देशों में फैलाया। उनके द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन आज भी काम कर रहा है।

७१८) मजदूर का हक - एक युवक अपने काम के लिए जा रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक मजदूर दीवार पर सफेदी कर रहा है। वह सड़क पार करने के लिए वहां रुका रहा और एकाग्रता से मजदूर के काम करने का तरीका देखता रहा। जब सड़क खाली हो गई तो उसने पाया कि मजदूर जिस ढंग से दीवार पर सफेदी कर रहा था, उससे सामान और समय- दोनों की बर्बादी हो रही थी। कुछ सोचकर वह मजदूर के पास गया और उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोला, दोस्त, इससे भी कम समय और कम सामान में अच्छी तरह से सफेदी हो सकती है। क्या तुम सीखना चाहोगे? यह सुनकर मजदूर हैरानी से युवक को देखते हुए बोला, यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं उस तरकीब को जरूर सीखना चाहूंगा। युवक अपनी कमीज की बाहें ऊपर कर ब्रश और सफेदी का सामान लेकर काम में लग गया। कुछ ही समय में उसने अपनी बात सिद्ध करके दिखा दी, जिससे समय के साथ ही काफी सारा सामान भी बच गया और सफेदी भी बहुत सुंदर हुई। मजदूर अपने काम को जल्दी व सफाई से होते देखकर बोला, मेरा काम सफेदी करना ही है। आज आपने मुझे मेरे काम को अच्छे तरीके से करने की जो तरकीब सिखाई है, मैं भविष्य में उसी तरह से काम करूंगा। मालिक वहां खड़ा यह सब देख रहा था। जब युवक नीचे उतरकर आया तो उसने युवक के हाथ में इनाम थमाया। युवक बोला, सर इनाम व पारिश्रमिक पर मेरा नहीं, बल्कि मजदूर का हक है। यह काम तो इसने ही किया है, मैंने तो बस थोड़ी तरकीब और अक्ल लगाकर काम को सही ढंग से करने का तरीका समझाया है। यह युवक कोई और नहीं बल्कि कार्ल मार्क्स थे, जिन्होंने आगे चलकर साम्यवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन कर एक नई शासन प्रणाली को जन्म दिया।

७१९) नेमिनाथ की बारात - जैन धर्म के २२ वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ जब युवावस्था में थे, उनका विवाह जूनागढ़ नरेश राजा उग्रसेन की कन्या राजमती से होना निश्चित हुआ। विवाह की तैयारियां शुरू की गईं। बारात में बड़े राजा, वीर योद्धा और हजारों कुमार सम्मिलित हुए। नेमिनाथ दूल्हा बनकर रथ में बैठे। चारों ओर वाद्यों और गीतों के मधुर स्वर गूंज रहे थे, लेकिन मधुर मंगल ध्वनियों को चीरता हुआ, वेदना से भरा करुण क्रंदन और कोलाहल भी उठ रहा था। पशु-पक्षियों के करुण क्रंदन ने नेमिनाथ के मन को उद्वेलित कर डाला। उन्होंने सारथि से कहा- सारथि। रथ को रोको। सारथि चौंका और रथ को रोककर विस्मय से उनकी ओर देखकर बोला, राजकुमार जी, क्या बात है? नेमिनाथ बोले, सारथि, इन सुखाभिलाषी मूक पशु, पक्षियों, प्राणियों को बाड़ों में क्यों बंद कर रखा है? ये मूक पशु-पक्षी हृदय को वेदना देनेवाले करुण-क्रंदन क्यों कर रहे हैं? मेरी आत्मा कांप रही है। सारथि ने कहा, भगवन्, ये सब तो आपके विवाह के अवसर पर आए बारातियों, राजकुमारों, मेहमानों आदि मांसाहारियों की दावत के लिए लाए गए हैं। इसलिए इन्हें बाड़े में बंद कर रखा है और ये करुण चीख पुकार कर रहे हैं। इस पर नेमिनाथ ने कहा, मेरे विवाह के लिए हजारों मूक पशुओं का वध? यह घोर हिंसा। मैं इस क्रूर पाप का भागी नहीं बनूंगा। यह अनुचित है, महापाप हे। वे रथ से

एकाकी उतर पड़े और पशु-पक्षियों के बाड़े को खुलवा दिया। बंद किए हुए पशु-पक्षी आनंद सागर में निमग्न होकर बाहर निकल आए। नेमिनाथ ने अपने राजकीय वस्त्रादि सारथि को देकर कहा, यह लो, तुमने मुझे इस घोर अपराध से बचा लिया। अब रथ को वन की ओर ले चलो, मैं वहीं तपस्या करूंगा। वन जाकर नेमिनाथ ने दीक्षा लेकर तपस्या की और महज ५६ दिनों की कठोर साधना से उन्हें कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ।

७२०) द्वेष का समाधान - एक बार स्वामी दयानंद सरस्वती फर्रुखाबाद में गंगा तट पर रुके हुए थे। उन्होंने तट पर ही अपने लिए एक छोटी सी कुटिया बनाई हुई थी। उनके साथ उनके शिष्य भी थे। उस कुटिया से थोड़ी ही दूरी पर एक दूसरे साधु ने भी अपनी कुटिया बनाई हुई थी। वह स्वामी जी से बिना किसी कारण द्वेष रखता था। वह रोज स्वामी जी की कुटिया के पास आकर उन्हें गालियां दिया करता था। पर स्वामी जी उसकी किसी भी गाली का जवाब नहीं देते थे। इससे वह साधु थक हारकर वापस अपनी कुटिया में चला जाया करता था। एक दिन स्वामी जी के किसी शिष्य ने उन्हें फलों से भरा एक टोकरा भेंट किया। स्वामी जी ने उस टोकरे में से कुछ फल निकाल कर एक पोटली बनाई और अपने एक शिष्य से बोले, जाओ उस साधु को ये फल देकर आओ। जब उनका शिष्य वह फल लेकर उस साधु के पास पहुंचा और साधु से कहा कि ये फल स्वामी जी ने आपके लिए भेजे हैं, तो वह क्रोध से पागल हो गया और उनके शिष्य से बोला, तुमने सुबह-सुबह किस मनहूस का नाम मेरे सामने ले लिया। यहां से तुरंत चले जाओ। यह सुनकर शिष्य स्वामी जी के पास लौट आया। उसने स्वामी जी को उस साधु की सारी बातें बता दीं। इस पर स्वामी जी ने अपने शिष्य से कहा, वापस जाओ और उस साधु से यह कहो कि ये फल इसलिए भिजवाए गए हैं कि आप जो अमृत वचन हमारी कुटिया पर आकर देते हैं उससे आपकी काफी ऊर्जा नष्ट हो जाती है। ये फल आपकी ऊर्जा को बनाए रखेंगे जिससे कि हमें आपके अमृत वचनों से वंचित न होना पड़े। स्वामी जी के शिष्य ने जब यह संदेश उस साधु तक पहुंचाया तो वह काफी शर्मिंदा हुआ। उस साधु ने स्वामी जी के पास जाकर अपने व्यवहार के लिए उनसे माफी मांगी।

७२१) अथक संघर्ष का फल - एक रोज उनके पिता समुद्र यात्रा पर गए, जहां तूफान में फंसकर वह डूब गए। अब उनकी मां के कंधों पर घर की जिम्मेदारी आ गई। वह दाई का काम करने लगीं, जिससे उन्हें अपने बच्चे के लिए काफी कम वक्त मिलता था। घर आर्थिक और सामाजिक हालत में बुरी तरह पिछड़ गया तो इस दस साल के बच्चे को काम पर निकलना पड़ा। सबसे पहले वह एक मोची की दुकान पर काम करने लगा और फिर उसने बढ़ई का काम सीखा। आगे चलकर उसने एक छापेखाने में काम कर लिया। वह पढ़ा लिखा बिलकुल नहीं था, मगर यहां उसने अक्षर पहचानना सीख लिया। अब उसे लगने लगा कि यहां आनेवाली किताबों को पढ़ना चाहिए। उसने दिन-रात मेहनत करके पढ़ना सीखा। किताबों के सिलसिले में जो भी वहां आता, वह उससे बात करने की कोशिश करता ताकि वह अपने को और निखार सके। अब उसकी उम्र सोलह साल थी और वह अखबार में छपने लायक लेख लिखने लगा था। लेकिन उसकी हैसियत तो अक्षर मिलाने वाले कंपोजिटर की थी। वह डरता था कि कोई संपादक उसके लेख को क्यों छापेगा और हो सकता है उसके बारे में पता चलने पर उसे नौकरी से भी निकाल दिया जाए। उसने दूसरे नाम से लिखना शुरू किया, जो हिट हो गया। इक्कीस साल की उम्र में उसने फ्री प्रेस अखबार निकाला और बाद में विश्व

उद्धार का देवता और मुक्तिदाता नाम से अखबार निकाले। उसके दिल में अमेरिकी दास प्रथा से बड़ा असंतोष था। उसने ताउम्र उसके खिलाफ संघर्ष किया, जिसके चलते जेल भी गया और भीड़ ने भी उसे मरणासन्न अवस्था तक पीटा। मगर भूख, प्यास, गरीबी से जूझने के बावजूद बिना शिकवा किए लड़ते हुए अंत में अब्राहम लिकन के साथ मिलकर, विश्व के इस महानायक गैरिसन ने दास प्रथा को हमेशा के लिए खत्म कर दिया।

७२२) कोयल - एक सुबह घनिष्ठ मित्र तोताराम और कल्लू एक जंगल में गए। सहसा उन्हें कोयल की कुहूक सुनाई पड़ी। यह एक पक्षी की आवाज है जो किसी मंगल की सूचना देती है। अंधविश्वासी तोताराम ने कहा, मैंने इसकी आवाज सुबह-सुबह सुनी है। मुझे विश्वास है कि आज का दिन बड़ा भाग्यशाली होगा। अवश्य ही मुझे रुपयों से भरा थैला मिलेगा।

नहीं, कल्लू ने तोताराम की बात का प्रतिवाद किया, जो उससे भी अधिक वहमी था, तुम मुझसे अधिक भाग्यशाली नहीं हो। मुझे विश्वास है, यह आवाज मेरे लिए अधिक भाग्यशाली साबित होगी। तुम देखना, जरूर मुझे अच्छी-खासी रकम प्राप्त होगी। दोनों इसी बात पर लड़ने लगे। तू-तू, मैं-मैं के बाद हाथापाई पर उतारू हो गए। कुछ ही समय में वे बुरी तरह जख्मी हो गए। दोनों डॉक्टर के पास पहुंचे। डॉक्टर ने उनसे पूछा कि वे आखिर इस स्थिति में पहुंचे कैसे? सारी घटना बयान करने के बाद उन दोनों ने डॉक्टर से पूछा, आप बताएं कि कोयल ने किसके भाग्यशाली होने की सूचना दी थी?

डॉक्टर ने हंसते हुए कहा, कोयल ने मेरे भाग्यशाली होने की सूचना दी थी। अगर तुम दोनों इसी तरह लड़-झगड़कर हाथ-पैर तोड़ते रहे तो मुझे रुपयों का ढेर तुम्हारे इलाज के एवज में मिलता रहेगा। बेकार के झगड़े से दूसरों को फायदा होता है।

७२३) ऊंचाई - पिताजी के अचानक आ धमकने से पत्नी तमतमा उठी, लगता है बूढ़े को पैसों की जरूरत आ पड़ी है, वर्ना यहां कौन आनेवाला था। मैं नजरें बचाकर दूसरी ओर देखने लगा। पिताजी नल पर हाथ-मुंह धोकर सफर की थकान दूर कर रहे थे। इस बार मेरा हाथ कुछ ज्यादा ही तंग हो गया। बड़े बेटे का जूता मुंह बा चुका है। वह स्कूल जाने के वक्त रोज भुनभुनाता है। पत्नी के इलाज के लिए पूरी दवाइयां नहीं खरीदी जा सकीं। बाबूजी को भी अभी आना था। घर में बोझिल चुप्पी पसरी हुई थी। मैं शंकित था कि कोई आर्थिक समस्या लेकर आए होंगे। पिताजी कुर्सी पर उकड़ बैठ गए। एकदम बेफिक्र, सुनो कहकर उन्होंने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। मैं सांस रोककर उनके मुंह की ओर देखने लगा। रोम-रोम कान बनकर अगला वाक्य सुनने के लिए चौकन्ना था। वे बोले, खेती के काम में घड़ी भर की फुर्सत नहीं मिलती हे। इस बखत काम का जोर है। रात की गाड़ी से ही वापस जाऊंगा। तीन महीने से तुम्हारी कोई चिट्ठी तक नहीं मिली। जब तुम परेशान होते हो, तभी ऐसा करते हो उन्होंने जेब से सौ-सौ के दस नोट निकालकर मेरी तरफ बढ़ा दिए रख लो, तुम्हारे काम आ जाएंगे। इस बार धान की फसल अच्छी हो गई है। घर में कोई दिक्कत नहीं है। तुम बहुत कमजोर लग रहे हो। ढंग से खाया-पिया करो। बहू का भी ध्यान रखो। मैं कुछ नहीं बोल पाया। शब्द जैसे मेरे हलक में फंसकर रह गए हों। मैं कुछ कहता इससे पूर्व ही पिताजी ने प्यार से डांटा- ले लो, बहुत बड़े हो गए हो क्या? नहीं तो मैंने हाथ बढ़ाया। पिताजी ने नोट मेरी हथेली पर रख दिए। बरसों पहले पिताजी मुझे स्कूल भेजने के लिए इसी तरह हत्तेली पर

इकन्नी टिका दिया करते थे, परन्तु तब मेरी नजरें आज की तरह झुकी नहीं होती थीं।

७२६) गरीबी रेखा का कार्ड - सुखी काछी गरीबी रेखा का कार्ड बनवाने के लिए आज पांचवी बार सरकारी बाबू के पास आया है। बाबू-अरे भैया। तुमने साबित कर दिया की भैंस अक्ल से बड़ी होती है। दस बार कह चुका हूं की जब तक पूरे कागजात सही नहीं लाओगे, कार्ड नहीं बन पायेगा। सुखी- हुजूर, डेढ़ हजार रुपया तक की औकात ही है गरीब की, ले लिया जाए और गरीब की अरज सुन ली जाए सरकार बाबू- अरे, मरवाएगा क्या? खुद का कोई ईमान धरम नहीं हैं तो क्या सबको अपने जैसा समझा है? चल जा अभी, साहब आएंगे तब आना। सुखी जिस मालगुजार के खेत में काम करता था, वहां उसे पता चला कि मालगुजार का कार्ड बना हुआ है। वह हिम्मत करके और हैरानी के साथ मालगुजार से पूछता है- बड़े सरकार, मेरा गरीबी रेखा वाला कार्ड नहीं बन रहा है, बाबू बार-बार परेशां कर रहा है मालिक। आपई कुछ मदद करो प्रभु। मालगुजार जोर का ठहाका लगाते हुए कहता है- अरे काछी। गरीबी रेखा का कार्ड पाने के लिए गरीब नहीं, अमीर होना पड़ता पगलादीन मालगुजार फिर जोर से हंसता है, सुखी काछी अपनी आंखों में पीढ़ियों की विवशता लिए असहाय खड़ा है।

७२७) शास्त्री जी की किताब - पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जब प्राइमरी में थे, तभी उनके सिर से पिता का साया उठ गया। घर की आर्थिक हालत पहले से ही खराब थी, अब गुजारा चलाना और मुश्किल हो गया। शास्त्री जी पढ़ने में बेहद होशियार थे। एक अध्यापक रोज उनसे पुस्तक लाने को कहते, पर वे बिना किताब स्कूल आ जाते। एक दिन अध्यापक ने चेतावनी दी- अगर तुम कल पुस्तक नहीं लाए तो क्लास में बैठने नहीं दिया जाएगा। उस दिन शास्त्रीजी अपने एक मित्र के घर गए और उससे उसकी वह पुस्तक इस वादे के साथ ले ली कि कल सुबह स्कूल में लौटा देंगे। वे रात को घर के बाहर बिजली के खंभे के नीचे जा बैठे और उसकी रोशनी में पूरी रात उस पुस्तक की नकल अपनी एक कॉपी में कर ली। अब शास्त्री जी की यह कॉपी पुस्तक बन चुकी थी। अगले दिन स्कूल पहुंचे तो अध्यापक ने पुस्तक दिखाने को कहा। शास्त्री जी ने वह कॉपी उनके सामने रख दी। अध्यापक गुस्से से लाल होकर बोले- मैं पुस्तक मांग रहा हूं और तू मुझे यह कॉपी दिखा रहा है। शास्त्री जी ने जब कॉपी खोलकर दिखाई तो अध्यापक यह देखकर दंग रह गए कि पुस्तक का एक-एक शब्द हूबहू उस कॉपी में लिखा था। शास्त्री जी बोले- मेरे पिता नहीं हैं। हमारे पास इतने पैसे नहीं कि पुस्तक खरीद सकूं। अध्यापक की आंखों में आंसू आ गए। अध्यापक ने शास्त्री जी के सिर पर स्नेह से हाथ फिराते हुए कहा- मुझे उम्मीद है, एक दिन देश तुम पर गर्व करेगा। अध्यापक की बात सच साबित हुई।

७२८) सौवें ऊंट की तरह - एक दिन ऊंटों का एक कारवां एक धर्मशाला के पास आकर ठहरा। ऊंटवाला एक एक खूंटा गाड़ता जाता और उसके साथ हर ऊंट को बांधता जा रहा था। निन्यानवे खूंटे गाड़ चुका और उतने ही ऊंट बांध चुका था। पर उसके पास एक खूंटा कम पड़ गया। वह धर्मशाला के व्यवस्थापक के पास गया और उसे अपनी समस्या कह सुनाई। व्यवस्थापक भी खूंटा ढूंढने में असफल रहा। इस पर ऊंट वाला परेशान हो गया कि इस ऊंट का क्या किया जाए। इस बीच व्यवस्थापक को कुछ सूझा और उसने ऊंट वाले को एक तरकीब सुझाई। तरकीब के अनुसार उसने ऊंट के पास जाकर झूठमूठ का एक अभिनय किया, जैसे कि वह सचमुच ही खूंटा गाड़ रहा हो। फिर उसने अभिनय किया मानो वह

रस्सी से उसे खूंटे के साथ बांध रहा हो। सुबह ऊंटवाले को आगे जाना था। उसने सभी ऊंटों को खोला तो वे खड़े हो गए और चलने को तैयार हो गए, लेकिन सौवां ऊंट टस से मस नहीं हुआ। आखिर हारकर वह फिर व्यवस्थापक के पास पहुंचा और उसे अपनी विपदा कह सुनाई। व्यवस्थापक ने उससे कहा- जैसे तुमने बांधने का अभिनय किया था, अब ठीक वैसे ही खोलने का अभिनय करो। तभी वह ऊंट उठेगा। ठीक वही हुआ। ऊंटवाले ने व्यवस्थापक के बताए अनुसार ठीक वैसे ही किया। अब न केवल ऊंट उठकर खड़ा हो गया, बल्कि चलने को भी तैयार हो गया। व्यवस्थापक ने ऊंटवाले से कहा- हमारी स्थिति भी इसी ऊंट जैसी ही है। हम स्वयं को दुनिया से बंधा समझते हैं पर असलियत यह है कि उसी ऊंट की तरह हम कहीं भी बंधे हुए नहीं है, पर भ्रमवश अपने को बंधा हुआ मान रहे हैं। सच्चाई यही है कि अपने कष्टों एवं समस्याओं के लिए स्वयं ही जिम्मेदार हैं।

७२९) कड़वा सच - एक फकीर कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक सौदागर मिला, जो पांच गधों पर बड़ी बड़ी गठरियां लादे हुए जा रहा था। गठरियां बहुत भारी थीं, जिसे गधे बड़ी मुश्किल से ढो पा रहे थे। फकीर ने सौदागर से प्रश्न किया, इन गठरियों में तुमने ऐसी कौन सी चीजें रखी हैं, जिन्हें ये बेचारे गधे ढो नहीं पा रहे हैं? सौदागर ने जवाब दिया, इनमें इंसान के इस्तेमाल की चीजें भरी है। उन्हें बेचने मैं बाजार जा रहा हूं। फकीर ने पूछा, अच्छा कौन-कौन सी चीजें हैं, जरा मैं भी तो जानूं। सौदागर ने कहा, यह जो पहला गधा आप देख रहे हैं इस पर अत्याचार की गठरी लदी है। फकीर ने पूछा, भला अत्याचार कौन खरीदेगा? सौदागर ने कहा, इसके खरीदार हैं राजा महाराजा और सत्ताधारी लोग। काफी ऊंची दर पर बिक्री होती है इसकी। फकीर ने पूछा, इस दूसरी गठरी में क्या है? सौदागर बोला, यह गठरी अहंकार से लबालब भरी है और इसके खरीदार हैं पंडित और विद्वान। तीसरे गधे पर ईर्ष्या की गठरी लदी है और इसके ग्राहक हैं वे धनवान लोग, जो एक दूसरे की प्रगति को बर्दाश्त नहीं कर पाते। इसे खरीदने के लिए तो लोगों का तांता लगा रहता है। फकीर ने पूछा, अच्छा। चौथी गठरी में क्या है भाई? सौदागर ने कहा, इसमें बेईमानी भरी है और इसके ग्राहक हैं वे कारोबारी, जो बाजार में धोखे से की गई बिक्री से काफी फायदा उठाते हैं। इसलिए बाजार में इसके भी खरीदार तैयार खड़े हैं। फकीर ने पूछा, अंतिम गधे पर क्या लदा है? सौदागर ने जवाब दिया, इस गधे पर छल-कपट से भरी गठरी रखी है और इसकी मांग उन औरतों में बहुत ज्यादा है जिनके पास घर में कोई काम-धंधा नहीं है और जो छल-कपट का सहारा लेकर दूसरों की लकीर छोटी कर अपनीं लकीर बड़ी करने की कोशिश करती रहती हैं। वे ही इसकी खरीदार हैं। तभी महात्मा की नींद खुल गई। इस सपने में उनके कई प्रश्नों का उत्तर मिल गया था।

७३०) धर्म का आधार - यह घटना उस समय की है, जब डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन मद्रास के एक ईसाई मिशनरी स्कूल के छात्र थे। वह बचपन से बेहद कुशाग्र एवं तीव्र बुद्धि के थे। कम उम्र में ही उनकी गतिविधियां व उच्च विचार लोगों को हैरानी में डाल देते थे। एक बार उनकी कक्षा में एक अध्यापक पढ़ा रहे थे, जो बेहद संकीर्ण मनोवृत्ति के थे। पढ़ाने के क्रम में वह धर्म के बारे में बच्चों को बताने लगे और बताते बताते ही वह हिंदू धर्म पर कटाक्ष करते हुए उसे दकियानूसी, रूढ़िवादी, अंधविश्वासी और न जाने क्या क्या कहने लगे। बालक राधाकृष्णन अध्यापक की ये बातें सुन रहे थे। अध्यापक के बोलने के बाद राधाकृष्णन अपने स्थान पर खड़े होकर अध्यापक से बोले, सर। क्या

आपका ईसाई मत दूसरे धर्मों की निंदा करने में विश्वास रखता है? एक छोटे से बालक का इतना गूढ़ व गंभीर प्रश्न सुनकर अध्यापक चौंक गए। वाकई बालक की बात में शत प्रतिशत सत्यता थी। दुनिया का प्रत्येक धर्म समानता व एकता का ही संदेश देता है। मगर अध्यापक एक नन्हे बालक के आगे अपनी पराजय कैसे मानते। वह संभलकर बोले, क्या हिंदू धर्म दूसरे धर्म का सम्मान करता है? अध्यापक के यह कहते ही बालक राधाकृष्णन बोले, बिल्कुल सर। हिंदू धर्म किसी भी अन्य धर्म में कभी बुराई नहीं ढूंढ़ता। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के गीता में कहा था- पूजा के अनेक तरीके हैं। अनेक मार्ग हैं। हर मार्ग एक ही लक्ष्य पर पहुंचता है। क्या इस भावना में सब धर्मों को स्थान नहीं मिलता, सर? इसलिए हर धर्म के पीछे एक ही भावना है, वह तो व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह अपनी आस्था किस में मानता है? किंतु कोई भी धर्म किसी अन्य धर्म की निंदा करने की शिक्षा कभी नहीं देता। एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है जो सभी धर्मों का सम्मान करें और उनकी अच्छी बातें ग्रहण करे। बालक राधाकृष्णन का जवाब सुनकर अध्यापक हैरान हो गए। उन्होंने फिर कभी भविष्य में ऐसी बातें न करने का प्रण किया।

७३१) भगवान को पत्र - एक गांव में एक किसान रहता था। वह बहुत ही अच्छा किसान था और खेती से ही अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। समय बीतता गया और एक दिन की बात है कि तूफान जोर से आया और उसकी सारी फसल नष्ट हो गई। वह बहुत ही दु:खी हुआ और मन ही मन सोचने लगा कि मेरा और मेरे परिवार का क्या होगा? कुछ दिन मौन रहने के बाद उसको एक उपाय सूझा, उसने मन बनाया कि भगवान को एक पत्र लिखेगा और अपनी फसल की दशा उसमें लिखेगा। पूरा दिन सोचने के बाद उसने भगवान को एक पत्र लिखा। पत्र लिखने के बाद वह पास ही एक डाकखाने में पोस्ट करके आ गया।

जब उसका पत्र डाकखाने में पहुंचा तो सब लोग हंसने लगे और बोले- पहली बार भगवान के नाम का लेटर आया है, लेकिन कुछ समय बाद जब एक क्लर्क ने उस पत्र को पढ़ना शुरू किया तो उसमें किसान ने अपनी पूरी दशा को बता रखा था। पत्र पढ़ने के बाद सब लोगों की आंखों में आंसू आ गए और सब लोग किसान की मदद करने की सोचने लगे। सब लोग अपने वेतन का कुछ हिस्सा किसान को देने को राजी हो गए। किसान ने भगवान से ३००० रुपया मांगा था। लेकिन सब मिलाकर पोस्ट ऑफिसवालों ने २००० ही उसको भेजा। सारे पोस्ट दफ्तर वाले बहुत ही खुश थे कि उन लोगों ने उस किसान की मदद की।

७३२) संसार की रीति - एक नगर में एक मशहूर चित्रकार रहता था। चित्रकार ने एक बहुत सुन्दर तस्वीर बनाई और उसे नगर के चौराहे में लगा दिया और नीचे लिख दिया कि जिस किसी को, जहाँ भी इसमें कमी नजर आये वह वहाँ निशान लगा दे। जब उसने शाम को तस्वीर देखी। उसकी पूरी तस्वीर निशानों से खराब हो चुकी थी। यह देख वह बहुत दुखी हुआ। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करे वह दु:खी बैठा हुआ था।

तभी उसका एक मित्र वहाँ से गुजरा उसने उसके दु:खी होने का कारण पूछा तो उसने उसे पूरी घटना बताई। उसने कहा एक काम करो कल दूसरी तस्वीर बनाना और उसमें लिखना कि जिस किसी को इस तस्वीर में जहाँ कहीं भी कोई कमी नजर आये उसे सही कर दे। उसने अगले दिन यही किया।

शाम को जब उसने अपनी तस्वीर देखी तो उसने देखा कि तस्वीर पर किसी ने कुछ नहीं किया। वह संसार की रीति समझ गया। कमी निकालना, निंदा करना, बुराई करना आसान, लेकिन उन कमियों को दूर करना अत्यंत कठिन होता है।

७३३) गरीबी उसे राष्ट्रपति बनने से रोक न सकी - एक गरीब युवक निराश अवस्था में सड़क के किनारे चला जा रहा था। तभी उसने एक व्यक्ति को बोझा लादे हुए जाते देखा। उसने दौड़कर उसकी मदद की। बाद में यह कार्य उसकी कमाई का जरिया ही बन गया।

वह एक छोटे से गांव के गरीब परिवार का साधारण युवक था। उसके पास पहनने के लिए न तो अच्छे वस्त्र थे, न स्कूल जाने के लिए फीस के पैसे और न ही रहने के लिए ढंग का मकान ही था। ऐसी दयनीय दशा में भी उस युवक को पढ़ने की बड़ी इच्छा होती थी किंतु कैसे साधन जुटाए? इसलिए वह बड़ा उदास रहता था। एक दिन ऐसी ही निराश अवस्था में वह सड़क के किनारे चला जा रहा था। तभी उसकी दृष्टि ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जो सिर पर ढेर सारा सामान लादे जा रहा था। बोझ अधिक था और उस व्यक्ति के कदम लड़खड़ा रहे थे। अचानक वह चलते-चलते किसी चीज से टकराकर गिर पड़ा। यह देखकर युवक उसकी ओर दौड़ा उसकी सहायता की। उसका कुछ सामान युवक ने उठाकर उसका बोझ हल्का कर दिया और स्टेशन तक उसे पहुंचा दिया। उस व्यक्ति ने युवक को भेंट स्वरूप कुछ रुपए दिए। उस रुपयों से उसने पुस्तकें खरीदीं। अब तो वह युवक नित्य ही स्टेशन पर जाकर लोगों की मदद कर रुपए कमाता। इस प्रकार प्राप्त रुपयों से उसने शिक्षा प्राप्त करनी शुरू की। वह दिन-रात अथक परिश्रम करता और अध्ययन भी मन लगाकर करता। इस प्रकार उसने अपनी शिक्षा पूर्ण की। आगे चलकर वही युवक अमेरिका का राष्ट्रपति बना- अब्राहिम लिंकन। इस सत्य घटना का सार यह है कि साधनों के अभाव की स्थिति में भी प्रतिभा और परिश्रम के बलबूते बड़ी से बड़ी उपलब्धि हासिल की जा सकती है। इसलिए आगे बढ़ने के लिए सदैव अपनी योग्यता व मेहनत को ही प्रथम व अंतिम साधन मानना चाहिए और निराशा में डूबने की बजाय उत्साह से कार्य करना चाहिए।

७३४) बादशाह या चौकीदार - एक शाहजादा जब बादशाह बना तो उसने सिंहासन पर बैठते ही खजाने की दौलत लोगों में बांटनी शुरू कर दी। खजाने का मुंह गरीबों, अनाथों के लिए खोल दिया और दिन रात ये सिलसिला जारी रहने लगा। तो बादशाह के सलाहकारों ने एक दिन बादशाह से कहा- शहनशाह ये दौलत आपके बुजुर्गों ने बड़ी मेहनत करके हासिल की है और आप इसे इस तरह लुटा रहे हैं। अगर किसी दुश्मन ने अचानक हमला कर दिया तो फिर उसके मुकाबले के लिए माल कहां से आयेगा?

बादशाह को ये नसीहत बहुत बुरी मालूम हुई। उसने कहा-खुदा ने मुझे दौलत इसलिए दी हैं कि मैं भी खाऊं और हकदारों में तकसीम भी करूं। गरीबों, अनाथों का ख्याल रखूं। परेशानों की मदद करूं न कि इस मालो दौलत का चौकीदार बनकर इसकी हिफाजत करूं। मेरा दुश्मन तो शैतान है, जो मुझे नेक कामों से रोकता है।

७३५) खुशी का राज - एक दिन शंभु दुकानदार के बेटे मुरली ने पिता से पूछा- पिताजी, खुश रहने का राज क्या है? शंभु ने अपने बेटे से कहा- यहां से कई मील दूर पहाड़ी पर एक महल है, उसमें एक व्यक्ति रहता है। वही तुम्हें इस बात का सही जवाब दे सकता है। कई दिनों तक पैदल चलने के बाद मुरली को वह महल दिखाई दे गया। जब वह

उस महल में पहुंचा, तो देखा काफी लोग एक आकर्षक और रौबीले व्यक्ति को घेरकर खड़े हुए हैं और अपनी समस्याओं का हल पूछ रहे हैं। वे उसे राजा साहब कहकर संबोधित कर रहे थे। मुरली को उससे मिलने के लिए लगभग दो घंटे इंतजार करना पड़ा। राजा साहब ने मुरली के आने का कारण गौर से सुना और बोला- इसका जवाब देने के लिए अभी मेरे पास समय नहीं है। तुम दो घंटे बाद आना। तब तक तुम मेरे महल में घूम सकते हो। जब मुरली जाने लगा, तो राजा सहाब ने उसके हाथ में एक चम्मच पकड़ा दिया जिसमें दो बूंद तेल था। राजा साहब ने कहा- ध्यान रखना घूमते समय चम्मच का तेल गिरने न पाए।

मुरली कई सीढ़ियां चढ़ा और उतरा लेकिन अपनी नजरें चम्मच से नहीं हटाईं। दो घंटे बाद वह राजा साहब के पास लौट आया। मुरली को देखते ही राजा साहब ने पूछा- तुमने मेरे कक्ष में टंगी सुंदर तस्वीर देखी? मेरा विशाल बगीचा देखा? पुस्तकालय में रखी पुस्तकें देखीं? मुरली बहुत शर्मिंदा था। उसने राजा साहब को बतया कि उसका सारा ध्यान तो चम्मच के तेल पर था। इसलिए वह ये सब चीजें नहीं देख पाया। राजा साहब ने कहा- तो फिर जाओ और मेरे महल की सभी सुन्दर चीजों को ध्यान से देखो। मुरली ने इस बार महल की सभी वस्तुओं को ध्यान से देखा और उनका भरपूर आनंद उठाया। वापस आकर उसने जो भी देखा था उसका विवरण राजा साहब को बताया। सब कुछ सुनने के बाद उन्होंने मुरली से पूछा- वह तेल की बूंदे कहां हैं, जो तुम्हें मैंने दी थी? मुरली ने चम्मच की ओर देखा, उसमें तेल नहीं था। राजा साहब ने कहा- खुश रहने का राज यही है कि दुनिया की सभी सुंदर वस्तुओं का आनंद लो लेकिन चम्मच के तेल को भी न भूलो।

७३६) उन्नति का लाभ - ईश्वर चन्द्र विद्यासागर कलकत्ता में अध्यापन कार्य करते थे। वेतन तो उन्हें काफी मिलता था लेकिन वे उसका उतना ही अंश घर-परिवार के लिए खर्च करते, जितने में औसत नागरिक जीवन स्तर का निर्वाह हो जाता। शेष भाग वे दूसरे जरूरतमंदों की, विशेषकर छात्रों की सहायता में खर्च कर देते थे। आजीवन उनका यही व्रत रहा। वे गरीबी में पढ़े थे, इसलिए निर्धनों की आवश्यकताएं पूरी करने में ही लगे रहते थे। एक दिन वे बाजार से गुजर रहे थे तो एक हताश युवक उनके सामने आ गया। उस युवक ने भिखारी की तरह उनसे एक पैसा मांगा। विद्यासागर दानी तो थे, पर सत्पात्र की परीक्षा किए बिना किसी को कुछ न देते थे। इसलिए उन्हें ठगना मुमकिन नहीं था। उन्होंने युवक को ऊपर से नीचे तक देखकर पूछा कि वह हट्टा कट्टा होने के बावजूद जवानी में भीख क्यों मांग रहा है? युवक ने अपनी स्थिति बताई तो संतुष्ट होकर विद्यासागर ने उसे एक पैसा दे दिया, पर फिर रोककर उससे पूछा कि यदि इससे अधिक मिल जाए तो क्या करोगे? युवक ने कहा, यदि एक रुपया मिला तो उसका सौदा लेकर गलियों में फेरी लगाने लगूंगा और अपने परिवार का पोषण करने में स्वावलंबी हो जाऊंगा। विद्यासागर ने उसे एक रुपया दे दिया और चले गए। उस युवक ने सचमुच उस एक रुपये के सहारे धंधा शुरू कर लिया। कुछ दिनों में वह बड़ा व्यापारी बन गया। एक दिन विद्यासागर उस रास्ते से निकल रहे थे कि व्यापारी दुकान से उतरा उनके चरणों में झुक गया। वह पूरे आदर से उन्हें अपनी दुकान पर लाकर बोला, यह आपके दिये हुए एक रुपए का चमत्कार है। विद्यासागर प्रसन्न हुए और कहा कि जिस प्रकार तुमने सहायता प्राप्त करके उन्नति की उसी प्रकार अपनी उन्नति का लाभ अन्य जरूरतमंदों

को भी देते रहना। व्यापारी ने उन्हें वैसा ही करते रहने का वचन दिया।

७३७) राष्ट्र का हित - बात तब की है जब यूनान तुर्की के अधीन था। तुर्की सरकार ने यूनान के लिए एक अपमानजनक कानून बनाने का निर्णय किया। इस पर यूनान का एक प्रतिनिधि मंडल कानून न बनाने की प्रार्थना लेकर तुर्की आया। तुर्की सरकार ने उस प्रतिनिधि मंडल का हार्दिक स्वागत एवं सम्मान किया तथा उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। लेकिन उस प्रतिनिधि मंडल को नगर से दूर एक बंगले में ठहराया गया और उसकी प्रार्थना स्वीकार किए जाने की बात को भी गुप्त रखा गया। यूनानी प्रतिनिधि मंडल के प्रधान ने विदाई के समय तुर्की के प्रधानमंत्री को धन्यवाद देते हुए कहा, आपने हमारी प्रार्थना स्वीकार करके यूनान को हमेशा के लिए अपना कृतज्ञ बना लिया है। मगर हमें एक बात विचित्र लगी। आखिर आपने हमारे चारों ओर गुप्त पहरा क्यों लगा दिया, जिस कारण हम स्वतंत्रतापूर्वक कहीं आ जा नहीं सके। तुर्की के प्रधानमंत्री ने कहा, ऐसा हमारी ओर से कुछ नहीं है। आप यूनान जाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है। प्रतिनिधि मंडल के प्रधान ने कहा, हम अपने देश जाने के लिए स्वतंत्र है किंतु आपके देश में घूमने और नागरिकों से मिलने के लिए स्वतंत्र नहीं है। प्रधानमंत्री ने विनम्र शब्दों में कहा, केवल समय ही आप लोगों से मिलने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं। फिर कभी दोबारा आकर तुर्की के कोने-कोने में घूमिए और यहां के सभी नागरिकों से मिलिए। चूंकि इस समय आप एक प्रार्थना लेकर आए जिसे तुर्की सरकार ने स्वीकार कर लिया है। अभी तक हमारे देश के लोग यह समझते हैं कि अधिकार और न्याय शक्ति से मिलते है। आप लोगों से मिलकर वह सीखेंगे कि इन्हें प्रार्थना से भी पाया जा सकता है इसलिए वह आलसी बन जाएंगे। हम आपको इस समय तुर्की में घूमने की आज्ञा देकर अपने राष्ट्र का अहित नहीं कर सकते। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। तुर्की के प्रधानमंत्री का यह उत्तर सुनकर यूनानी प्रतिनिधि मंडल ठगा सा रह गया।

७३८) सोचें समझें, फिर कुछ करें, सदैव अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे - गुरुनानक प्रतिदिन शाम को भ्रमण करते थे। मार्ग में जो भी मिलता उसके हालचाल पूछना और उसकी यदि कोई कोई समस्या हो तो उसका समाधान सुझाना उनकी दिनचर्या का अहम हिस्सा था। एक दिन गुरुनानक यमुना किनारे टहल रहे थे। तभी उन्हें किसी व्यक्ति के जोर-जोर से रोने की आवाज आई।

उन्होंने पास जाकर देखा तो पाया कि एक हाथी बेसुध पड़ा था और उसका महावत रोते हुए ईश्वर से हाथी को पुन: जीवित करने की प्रार्थना कर रहा था। उन्होंने महावत से रोने का कारण पूछा। तो वह बोला मेरा हाथी अचानक चलते-चलते गिर पड़ा। मैंने इसे कितना पुकारा और हिलाया-डुलाया परंतु यह उठता ही नहीं है।

तब गुरुनानक बोले तुम हाथी को सिर पर पानी डालो। यह ठीक हो जाएगा। महावत ने ऐसा ही किया। कुछ ही देर बाद हाथी होश में आ गया और वह उठ बैठा। महावत ने तत्काल गुरुनानक के चरण पकड़ते हुए कहा- महाराज आपकी कृपा से मेरा हाथी जिंदा हो गया। गुरुनानक बोले- हाथी मरा नहीं था। वह दिमाग में गर्मी हो जाने से बेहोश हो गया था। उसके सिर पर पानी की ठंडक से दिमाग की गर्मी दूर हो गई। इसमें मेरी कोई कृपा या चमत्कार नहीं है। हर व्यक्ति को पहले सोच विचार कर समस्या का कारण जानना चाहिए। फिर उसके निदान का प्रयास करना चाहिए। बिना सोचे-विचारे, घबराने से काम बिगड़ता ही है। अत: खूब सोच-विचार कर कार्य करें। सदैव अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

७३९) बिना विचारे जो करे सो पाछै पछताय, काम बिगाड़े आपना जग में होत हसाय - एक दानशील व गरीबों के मददगार व्यापारी को व्यापार में घाटा हुआ। उसका मकान व दुकान बिक गए। मित्रों व परिजनों ने साथ छोड़ दिया। निराश होकर जिस दिन उसने नगर छोड़ने का फैसला किया, उसी रात उसने स्वप्न में एक भिक्षु को देखा, जो कह रहा था, मैं तेरा भाग्य हूं। तू नगर छोड़कर मत जा। कल मैं तेरे घर आऊंगा। मुझे देखते ही मेरे सिर पर डंडा मारना, तेरा भाग्य चमक जाएगा। सुबह जब व्यापारी घर पर ही नाई से बाल बनवाने बैठा था कि द्वार पर दस्तक हुई।

व्यापारी ने द्वार खोला तो सामने वही भिक्षु था। व्यापारी ने डंडा उठाकर उसके सिर पर मार दिया। ऐसा करते ही भिक्षु सोने की अशर्फियों के ढेर में बदल गया। नाई यह देख हैरान तो हुआ पर व्यापारी से कुछ पूछ न सका। उसके मन में लोभ जाग्रत हो गया। वह बौद्ध भिक्षुओं के मठ में जाकर भिक्षुओं को भोजन का निमंत्रण दे आया। नाई कई भिक्षुओं को डंडा मारकर अधिकाधिक अशर्फियां पाना चाहता था। उसके जाने के बाद भिक्षुओं के गुरु ने कहा, इस नाई ने कभी हमें भिक्षा देना तो दूर, एक लोटा पानी तक नहीं पिलाया। फिर यह हमें भोज क्यों दे रहा है, अवश्य कुछ गड़बड़ है। हम लोग इसके घर नहीं जाएंगे। अधिकांश शिष्य मान गए, किंतु तीन भिक्षु अच्छे व्यंजनों के लोभ में नाई के घर पहुंचे। घर में प्रवेश करते ही नाई उनके सिर पर डंडे बरसाने लगा। तीनों लहूलुहान होकर जमीन पर गिरे, किंतु वे अशर्फियों में न बदले। यह देख नाई ने भिक्षुओं के सिर पर और डंडे मारे। ऐसा करने पर तीनों की मृत्यु हो गई और नाई को राजा ने मृत्युदंड दिया। किसी अद्भुत या असामान्य बात के भेद को पूर्णतया जाने बगैर उस पर काम करना आत्मघातक सिद्ध हो सकता है। इसलिए पहले भली-भांति पड़ताल कर तत्पश्चात उचित निर्णय लेना चाहिए।

७४०) जब उसने पूछा स्त्री-सौंदर्य को किस दृष्टि से देखना चाहिए? - आम्रपाली अपूर्व सुंदरी, कुशल गायिका और नर्तकी थी। राजकुमार बिंबिसार से उसने प्रेम विवाह किया था। मगर राजमहल में उसे अपमान के घूंट पीने पड़ें वह वैशाली नगर के बाहर एक आम्र वन में अपने पुत्र जीवक के साथ रहकर संगीत साधना में लीन रहा करती थी। एक दिन जीवक के साथ वह भगवान बुद्ध के दर्शन करने के लिए पहुंची। उसने कहा, गुरुवर, मेरे पास अपार धन-संपदा है, फिर भी मेरा जीवन अतृप्त है। बुद्ध ने कहा, आम्रपाली, सुंदरता अन्य सांसारिक वस्तुओं की तरह ही आती है और चली जाती है। धन-संपदा और ख्याति भी क्षणभंगुर हैं। ध्यान-साधना के माध्यम से जो आत्मिक संतोष मिलता है, वही शाश्वत रहता है। इस जीवन के जो क्षण शेष रह गए हैं, उन्हें साधना, ध्यान, प्राणायाम और संयम पूर्ण जीवन में लगाओ, जीवन सहज ही सार्थक हो जाएगा।

बुद्ध के चंद शब्दों से आम्रपाली को प्रेरणा मिली। उस समय कालदुयी और सारिपुत्र भी वहां उपस्थित थे। सारिपुत्र ने बुद्ध से पूछा, स्त्री-सौंदर्य को किस दृष्टि से देखना चाहिए?

बुद्ध ने कहा, सुंदरता और कुरूपता, दोनों का सृजन पांच तत्वों के संयोग से होता है। मुक्त पुरुष न तो शारीरिक सौंदर्य से सम्मोहित होता है और न ही कुरूपता से विरक्त। एक ही सौंदर्य शाश्वत है और वह है, करुणामय हृदय। करुणा का अर्थ है, अहेतुक प्रेम यानी प्रेम में किसी प्रकार की अपेक्षा न करना। बुद्ध की बात सुनकर सारिपुत्र की जिज्ञासा शांत हो गई।

७४१) ऋषि दुर्वासा का श्राप - देवराज इन्द्र अपने राजसी ठाटबाट के लिए प्रख्यात हैं। वह देवों के राजा तो हैं ही, सुख सम्पत्ति के महान उपभोक्ता भी कहे जाते हैं। उनके दरबार में सर्वदा नृत्य-संगीत की वर्षा होती रहती है। मेनका, रम्भा आदि ऐसी अप्सरायें इन्द्र दरबार की शोभा बढ़ानेवाली गणिकाएं थीं, जो अपने नृत्य-संगीत से इन्द्र को प्रसन्न रखती हैं। उनके अतिरिक्त अन्य अप्सरायें भी रहती रही हैं, जो गन्धर्वों के साथ मिलकर इन्द्र दरबार में नृत्य-संगीत का आयोजन करती हैं। एक दिन इन्द्र देव का दरबार बहुत सजाया गया था। नृत्य चलने लगा। इन्द्र के साथ अन्य देव भी आनंद में मग्न थे। जब नृत्य संगीत समाप्त हुआ, तो एक नृत्यांगना और एक गन्धर्व की विशेष प्रशंसा हुई, वे दोनों इन्द्रदेव द्वारा प्रशंसित भी हुए और पारितोषिक भी प्राप्त किये। पारितोषिक प्राप्त करके वे दोनों कुछ अहंकार में हो गये। अहंकार की ही मुद्रा में दोनों इधर-उधर देखने लगे। सभी दर्शक शोभनम कह करके दोनों को बहुत सम्मानित करने लगे। अहंकार में चूर उन दोनों ने एक पृथ्वीवासी संत को देखा। वह संत दुर्वासा जी ही थे। दुर्वासा ऋषि ने न उनके संगीत-नृत्य-संगीत की न प्रशंसा की और न तो आनंद विभोर होकर अपना सिर ही हिलाया था। आत्मानंद का आनंद लेनेवाले संत को संगीत-नृत्य से क्या लेना-देना? नृत्यांगना और गन्धर्व ने दुर्वासा जी की ओर उपेक्षात्मक दृष्टि से देखकर कहा, यह संत तो नृत्य-संगीत का महत्व नहीं समझते? अत: इन्हें कुछ सुखानुभूति नहीं हुई? ये नीरस हैं। दुर्वासा जी को उस अप्सरा और गन्धर्व द्वारा किया गया अपमान सहन नहीं हुआ। उन्होंने उन दोनों को अलग-अलग श्राप दिया। अप्सरे। जाओ, तुम मकड़ी हो जाओ, और हे घमण्डी गंधर्व, तुम राक्षस हो जाओ। ऋषि द्वारा दिया गया श्राप देवों ने भी सुना। किसी को भी क्रोधी दुर्वासा से बोलने की हिम्मत नहीं हुई। गन्धर्व और अप्सरा दोनों घबराये और दुर्वासा से क्षमा याचना करने लगे। उनके पैरों पर गिर पड़े, रोने लगे। तब जाकर दुर्वासा को उन पर दया आ गयी, किन्तु उन्होंने श्राप वापस नहीं लिया। श्राप से सिर्फ मुक्ति का उपाय बतला दिया। इतना करके दुर्वासा जी इन्द्रलोक से चलते बने।

७४२) यमराज ने परोपकारी को भक्त से श्रेष्ठ माना - एक अमीर आदमी विभिन्न मंदिरों में जनकल्याणकारी कार्यों के लिए धन देता था। विभिन्न उत्सवों व त्योहारों पर भी वह दिल खोलकर खर्च करता। शहर के लगभग सभी मंदिर उसके दिए दान से उपकृत थे। इसीलिए लोग उसे काफी इज्जत देते थे। उस संपन्न व्यक्ति ने एक नियम बना रखा था कि वह प्रतिदिन मंदिर में शुद्ध घी का दीपक जलाता था। दूसरी ओर एक निर्धन व्यक्ति था नित्य तेल का दीपक जलाकर एक अंधेरी गली में रख देता था जिससे लोगों को आनेजाने में असुविधा न हो। संयोग से दोनों की मृत्यु एक ही दिन हुई। दोनों यमराज के पास साथसाथ पहुंचे। यमराज ने दोनों से उनके द्वारा किए गए कार्यों का लेखाजोखा पूछा। सारी बात सुनकर यमराज ने धनिक को निम्न श्रेणी और निर्धन को उच्च श्रेणी की सुखसुविधाएं दीं। धनिक ने क्रोधित होकर पूछा यह भेदभाव क्यों? जबकि मैंने आजीवन भगवान के मंदिर में शुद्ध घी का दीपक जलाया और इसने तेल का दीपक रखा और वह भी अंधेरी गली में, न कि भगवान के समक्ष? तब यमराज ने समझाया पुण्य की महत्ता मूल्य के आधार पर नहीं, कर्म की उपयोगिता के आधार पर होती है। मंदिर तो पहले से ही प्रकाशयुक्त था। इस निर्धन ने ऐसे स्थान पर दीपक जलाकर रखा, जिसका लाभ अंधेरे में जानेवाले लोगों को मिला। उपयोगिता इसके दीपक की अधिक रही। तुमने तो अपना परलोक सुधारने के स्वार्थ से दीपक जलाया था।

७४३) गुरु की भावना - यह उन दिनों की बात है जब मशहूर तबला वादक पंडित किशन महाराज जी से अनेक लड़के तबला सीखने आते थे। कुछ तो उनके घर पर रहकर सीखते थे। एक बार कुछ नए लड़के आए जिन्हें उनके घर पर ही रहकर शिक्षा लेनी थी। किशन महाराज ने उन्हें रोज घर के नजदीक पार्क में बढ़ी हुई घास तोड़ने और बिना पीछे देखे घास को पीछे की ओर फेंकने का आदेश दिया। वे शिष्य रोज सुबह पार्क में जाते और घंटा डेढ़ घंटा घास तोड़कर अपने पीछे की ओर फेंकते। लगभग महीना भर ऐसा ही चलता रहा। कुछ शिष्यों के मन में सवाल भी उठे कि तबले का रियाज कराने के बजाय उनसे घास क्यों तुड़वाई जा रही है। लेकिन किसी ने कोई सवाल नहीं किया। फिर एक दिन किशान जी ने उन सबको बुलाया और पूछा कि मैं तुम्हें रोज पार्क में घास तोड़ने भेजता हूं। क्या तुम जानते हो मैं ऐसा क्यों करता हूं? वे बोले, नहीं गुरुजी। हम तो बस आपके आदेश का पालन करते हैं और आपके कहे अनुसार ही घंटा डेढ़ घंटा घास तोड़ते हैं और बिना पीछे देखे उसे पीछे की ओर फेंक देते हैं। इस पर किशन महाराज बोले, दरअसल एक तबलावादक के अंदर धैर्य होना बहुत जरूरी है। साथ ही उसकी बाजुओं का मजबूत होना भी आवश्यक है। तभी वह देर तक तबला वादन कर सकेगा। तबला वादन करते वक्त कई बार हाथ ऊपर जाता है फिर तबले पर आता है ऐसे में जब तुम लोग अगर हाथों का अभ्यास नहीं करोगे तो देर तक तबला नहीं बजा सकोगे। घास तोड़ने के बहाने मैं तुम्हें तबले का अभ्यास ही तो करा रहा था। किशन महाराज की यह बात सुनकर वे शिष्य दंग रह गए।

७४४) ज्ञानी पंडित को एक निर्धन व्यक्ति से मिला ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग - एक पंडित प्रतिदिन प्रार्थना करते कि हे भगवान, ऐसा कोई मार्गदर्शक मिल जाए, जो सत्य का मार्ग बता सके। उनकी प्रार्थना सुन एक संत ने उन्हें पास के मंदिर जाने को कहा और बताया कि वहीं तुम्हें सच्चा मार्गदर्शक मिलेगा। पंडितजी तत्काल मंदिर पहुंचे। वहां उन्हें एक फटेहाल व्यक्ति मिला। पंडितजी उससे हैरानी से बोले- भगवान तुम्हें अच्छे दिन दिखाए। उनकी बात सुनकर उसने कहा- मेरे लिए तो बुरा दिन कोई हुआ ही नहीं। पंडित फिर बोले- ईश्वर तुम्हारे भाग्य पर पड़ी धूल को हटा दे। उसने तत्काल कहा- मेरे भाग्य पर धूल पड़ी ही कहां है? पंडित ने कहा- भाई। तुम हर प्रकार से सुखी रहो, ऐसी मैं शुभकामना प्रकट कर रहा हूं। इसमें ऐसा क्या है, जो तुम उल्टे जवाब दे रहे हो?

उसने कहा- उल्टा सीधा मैं नहीं जानता, लेकिन इतना कह सकता हूं कि दुख का मुंह मैंने कभी नहीं देखा। पंडित ने जिज्ञासा व्यक्ति की- तुम्हारी दशा तुम्हें दुखी दिखाने के लिए पर्याप्त है।

उसने अपनी बात स्पष्ट की- तुमने कहा कि भगवान मुझे अच्छे दिन दिखाए, किंतु मैं हर स्थिति में निरंतर प्रभु-स्मरण में मस्त रहा। इसलिए दुख की अनुभूति कभी हुई ही नहीं। फिर तुमने कहा कि मेरे भाग्य पर पड़ी धूल हट जाए, तो मेरा जवाब यह है कि अच्छी-बुरी दोनों स्थितियों को मैं भगवान की देन मानता हूं। इसके बाद तुमने कहा कि मैं सुखी रहूं तो भाई मेरे। जब भगवान की इच्छा में मैंने अपनी इच्छा को मिला दिया है, तो मैं सदा के लिए सुखी हो गया हूं। उसकी बातों ने पंडितजी को ईश्वर प्राप्ति का सच्चा मार्ग बता दिया।

७४५) सावधान रहकर हिरण ने बचाई जान, सुविधा से अधिक ध्यान सजगता पर हो - किसी जंगल में हिरण बहुतायत में रहते थे। उनकी अच्छी तादाद देखकर एक शिकारी प्राय: उस जंगल में आता और एक फलदार वृक्ष पर

मचान बांधकर बैठ जाता।

जब हिरण फल खाने उस वृक्ष के नीचे आते, तो वह हिरण का शिकार कर उनका मांस बेचकर अपनी गृहस्थी चलाता था। हिरणों के समूह के एक हिरण ने जब अपने साथियों की कम होती संख्या पर गौर किया, तो वह समझ गया कि कोई शिकारी उनका शिकार कर रहा है।

उसने अपने शेष साथियों को जंगल में सावधान रहने की सलाह दी, किंतु किसी ने उसकी चेतावनी पर विशेष ध्यान नहीं दिया। एक दिन वह हिरण अपने एक साथी हिरण के साथ फल खाने निकला, तो सावधानी से इधर-उधर देखते हुए चला। चलते-चलते जब दोनों उस फलदार वृक्ष के पास पहुंचे, तो उस हिरण ने अपने मित्र को कहा कि कई बार ऐसे घने फलदार वृक्षों के पत्तों व फलों की ओट से छिपाकर शिकारी मचान बांधते हैं, इसलिए हमें इस वृक्ष के नीचे नहीं जाना चाहिए।

मित्र उसकी बात मानकर रुक गया। उधर वृक्ष पर बैठे शिकारी ने जब दोनों हिरणों को वृक्ष के नीचे नहीं आते देखा, तो उन्हें लुभाने के लिए ओट में छिपकर फल उन दोनों की ओर फेंकना शुरु किया। चतुर हिरण समझ गया कि पेड़ पर शिकारी है। किंतु उसका मित्र इतने फल गिरते देख उनके लोभ में वृक्ष के नीचे चला गया और तब शिकारी ने उसे अपना शिकार बना लिया।

चतुर हिरण ने वहां से भागकर अपनी जान बचा ली। कहानी का निहितार्थ यह है कि सुविधा से अधिक ध्यान सजगता पर होना चाहिए, क्योंकि अनेक बार सुविधा छल का प्रतिरूप होती है। इसलिए सुविधा के उपभोग के पूर्व उसकी सूक्ष्म पड़ताल करनी चाहिए।

७४६) उन दिनों स्वामी विवेकानंद देश भ्रमण में लगे थे। साथ में उनके एक गुरुभाई भी थे। स्वाध्याय, सत्संग एवं कठोर तप का अविराम सिलसिला चल रहा था। जहां कहीं अच्छे ग्रंथ मिलते, वे उनको पढ़ना नहीं भूलते थे। किसी नई जगह जाने पर उनकी सबसे पहली तलाश किसी अच्छे पुस्तकालय की रहती। एक जगह एक पुस्तकालय ने उन्हें बहुत आकर्षित किया। उन्होंने सोचा, क्यों न यहां थोड़े दिनों तक डेरा जमाया जाए। उनके गुरुभाई उन्हें पुस्तकालय से संस्कृत और अंग्रेजी की नई-नई किताबें लाकर देते थे। स्वामी जी उन्हें पढ़कर अगले दिन वापस कर देते।

रोज नई किताबें वह भी पर्याप्त पृष्ठोंवाली- इस तरह से देते एवं वापस लेते हुए देख उस पुस्तकालय का अधीक्षक बड़ा हैरान हो गया। उसने स्वामी जी के गुरु भाई से कहा- क्या आप इतनी सारी नई-नई किताबें केवल देखने के लिए ले जाते हैं? यदि इन्हें देखना ही है तो मैं यों ही यहां पर दिखा देता हूं। रोज इतना वजन उठाने की क्या जरूरत है। लाइब्रेरियन की इस बात पर स्वामी जी के गुरुभाई ने गंभीरतापूर्वक कहा- जो आप समझते हैं वैसा कुछ भी नहीं है। हमारे गुरु भाई इन सब पुस्तकों को पूरी गंभीरता से पढ़ते हैं, फिर वापस कर देते हैं। इस उत्तर से आश्चर्य चकित हो लाइब्रेरियन ने कहा- यदि ऐसा है तो मैं उनसे मिलना चाहूंगा। अगले दिन स्वामी जी उससे मिले और कहा- महाशय आप हैरान न हों। मैंने न केवल उन किताबों को पढ़ा है बल्कि उनको याद भी कर लिया है। इतना कहते हुए उन्होंने वापस की गई कुछ किताबें उसे थमाईं और उनके कई महत्वपूर्ण अंशों को शब्दश: सुना दिया। लाइब्रेरियन चकित रह गया। उसने उनकी याददाश्त

का रहस्य पूछा। स्वामीजी बोले- अगर पूरी तरह एकाग्र होकर पढ़ा जाए तो चीजें दिमाग में अंकित हो जाती हैं। पर इसके लिए आवश्यक है कि मन की धारण शक्ति अधिक से अधिक हो और वह शक्ति अभ्यास से आती है।

७४७) एक बार लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एक सभा में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। कार्यक्रम की समाप्ति पर जब उन्होंने अपना वक्तव्य दिया तो लोग चकित रह गए। उनमें से ज्यादातर लोग उन्हें पहली बार सुन रहे थे। उनके भाषण ने सबका मन मोह लिया। जब उनका वक्तव्य समाप्त हुआ तो लोग मानो नींद से जागे। तालियों से हॉल गूंज उठा। कुछ श्रोतागण उन्हें घेरकर खड़े हो गए। एक श्रोता ने पूछा, तिलक जी, आप अत्यंत ओजस्वी वक्ता हैं, प्रकांड विद्वान और देशभक्त हैं। आखिर आप इतने सारे कार्य एक साथ कैसे कर पाते हैं? इस पर तिलक जी बोले, समय-सारिणी बनाकर व्यक्ति ढेर सारे कार्यों को अंजाम दे सकता है। मैं निरंतर पुस्तकों का अध्ययन करता हूं, राजनीति में होनेवाले प्रत्येक परिवर्तन पर नजर रखता हूं, समयानुसार कार्य करता हूं। किसी से द्वेष भाव नहीं रखता। यह बात सुनकर दूसरा श्रोता बोला, समय-सारिणी बनाकर भी अधिक कार्यों को करना संभव नहीं होता। फिर कई बार अधैर्य और चिंता, समय-सारिणी के अनुसार काम ही नहीं करने देतीं। आप तो बस हमें अपनी सफलता का राज बताएं। दूसरे श्रोता की बात पर तिलक मुस्करा कर बोले, भइया, मेरी सफलता का राज केवल इतना है कि मैं हर कार्य को तनावमुक्त होकर अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार करता हूं, इस पर ध्यान नहीं देता कि लोग मेरे बारे में क्या बातें कर रहे हैं। समय सबके पास इतना ही होता है लेकिन वे उसे अधिकतर इस बात में व्यर्थ कर देते हैं कि दूसरे उनके बारे में क्या बातें कर रहे हैं। फिर अपनी निंदा अक्सर लोग सहन नहीं कर पाते और दूसरे व्यक्ति से उलझ कर उसमें अपना समय व्यर्थ कर देते हैं। ऐसे में वे सफल कैसे हो सकते हैं? सफलता का मूलमंत्र है बिना किसी दबाव, तनाव और किसी बात को मन में रखे अपने नेक लक्ष्य पर ध्यान देना। सभी श्रोता लोकमान्य तिलक की इस बात से सहमत हो गए।

७४८) ईश्वर हमारे एकदम करीब होता है लेकिन हम उसे भुला देते हैं - दूसरे महायुद्ध के समय केन नाम का अमेरिकी फौजी बुरी तरह से घायल हो गया। डॉक्टरों को उसके दोनों पैर और हाथ की एक उंगली काटनी पड़ गई। इसी बीच उसकी दोनों आंखों की रोशनी भी चली गई। जिस डॉक्टर ने केन की जान बचाने के लिए ऑपरेशन किया था, वह उसकी इस दयनीय हालत से बहुत दुखी रहने लगा। दिन-रात वह उसी फौजी के बारे में सोचता रहता। डॉक्टर से वह यह कहता कि वह अपनी उम्र कैसे और किसके सहारे गुजारेगा। अभी तो वह सिर्फ बीस वर्ष का है।

आखिरकार एक दिन फौजी को अस्पताल से घर जाने की छुट्टी मिल गई। कई वर्ष बीत जाने पर भी वह डॉक्टर को नहीं भूल पाया। एक दिन वर्षों बाद वह डॉक्टर से मिलने उनके घर जा पहुंचा। केन डॉक्टर से मिलकर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी कहानी डॉक्टर को सुनाई, ऑपरेशन के बाद जिस दिन मुझे पता चला कि मुझे घर वापस भेजा जा रहा है, उस दिन मेरा बीसवां जन्म दिन था। मैं जान चुका था कि मेरे शरीर की क्या हालत है, पर मैं जीवित रहना चाहता था। मेरी जिजीविषा ने मुझे साहस दिया। इसके बाद की कहानी उसकी पत्नी थेरेसा ने सुनाई, युद्ध से लौटकर आने के बाद मैं इनसे पहली बार एक म्यूजिक प्रोग्राम में मिली। इनका यह गुण मुझे बहुत अच्छा लगा कि यह किसी भी परिस्थिति में ईश्वर को याद करके खुश रह सकते हैं। इनके गुणों से प्रभावित होकर ही मैंने इनसे विवाह किया। विवाह के बाद इन्होंने हाई स्कूल

की परीक्षा भी पास कर ली और धीरे-धीरे लकड़ी का काम भी सीख लिया।

अक्सर हम अपनी समस्याओं को लेकर चिंतित रहते हैं और यह भूल जाते हैं कि हम पर विधाता की कितनी कृपा है? जिस दिन इस कृपा को समझ लेंगे, उस दिन जीवन आनंद से भर जाएगां यह तो एक स्वाभाविक बात है कि जब आप अच्छा महसूस करते हैं, तो आप मुस्कराते हैं, अंदर की खुशी प्रकट होती है। अंदर की खुशी हमेशा बरकरार रहे, इसके लिए जीवन में उत्साह होना जरूरी है। यह उत्साह प्राप्त करने के लिए स्व को जानकर स्व-चिंतन करना चाहिए।

७४९) किसी पक्षी दंपती के एक बच्चा पैदा हुआ। उसके पंख भी लग आए, पर वह उड़ना नहीं चाहता था। उसके माता-पिता ने उसे आकाश में उड़ने के लिए बहुत प्रेरित किया, पर वह आकाश को देखते ही डर के मारे आंखें मूंद लेता, अपने नीड़ को और मजबूती से पकड़ लेता। आखिर पक्षी दंपती ने एक योजना बनाई और बच्चे को घोंसले से धक्का मारा। वह जमीन पर गिरता, उससे पहले ही झटके से उसके पंख खुल गए। वह जमीन तक पहुंचा, लेकिन एक पल भी वहां ठहरे बिना, पंखों को फड़फड़ाता हुआ वापस अपने घोंसले में पहुंच गया। बच्चा कांप रहा था, पर पक्षी दंपती प्रसन्न था। मां ने उसे प्यार से अपनी पंखों में समेट लिया। यदि मन की मानते रहोगे तो घोंसले से आगे नहीं बढ़ पाओगे। मन को बुझाओ, समझाओ, उसे तैयार करो। ज्ञात से अज्ञात में उड़ान भरने में डर जरूर लगेगा, पर जिसने आगे बढ़ने का संकल्प ले लिया, वह अपने प्रयास को प्रमाद की सीढ़ियों पर नहीं बैठने देगा। तिरुवल्लुर के कुरल की कही वह सीख सदा ध्यान में रखो, जब खराब दिन हों तो सारस की तरह समय पर टकटकी लगाकर रखो और जब अच्छे दिन आएं बाज की तरह झपट्टा मारो।

७५०) सिकंदर और फकीर- सिकंदर महान जब फारस के राजा दारा को जीतकर नगर में प्रवेश कर रहा था तो हजारों-हजार लोग दोनों ओर पंक्तिबद्ध स्वागत में खड़े थे। वे सब एकटक सिकंदर की ओर देख रहे थे कि उसकी एक दृष्टि उन पर पड़ जाए और वे निहाल-धन्य हो जाएं। सिकंदर ने देखा यह दृश्य और बहुत प्रसन्न हुआ। वह लोगों की अपने प्रति भक्ति और श्रद्धा देकर अपने पर मुग्ध था। लोगों का अभिवादन स्वीकार करते हुए वह आगे बढ़ा। थोड़ी दूर गया तो उसने देखा कि सामने से फकीरों की एक टोली आ रही है।

सिकंदर उधर से गुजरा मगर फकीरों ने उसकी ओर ध्यान भी नहीं दिया। नाराज सिकंदर ने आदेश दिया, इन्हें बंदी बनाकर लाओ। सिपाही गए और फकीरों को पकड़ लाए सिकंदर के सामने। फिर भी वे निर्विकार खड़े रहे। सिकंदर ने कुपित दृष्टि से देखा और कहा, तुम नहीं जानते कि विश्व-विजेता सिकंदर तुम्हारे सामने से जा रहा है? सिकंदर के गुस्से से अप्रभावित फकीरों ने कहा, हमें क्या जरूरत है पता रखने की? सिकंदर ने थोड़े दर्प के साथ कहा इसलिए कि मैं विश्वविजयी हूं।

इस बार फकीरों में से एक ने पूछा, क्यों करते हो विश्व-विजय? इसीलिए न कि तुम्हारे मन में एक प्यास है, तृष्णा है। तुम देख नहीं पा रहे कि हमने उस तृष्णा को मिटा दिया। जो तृष्णा तुम्हारे पैरों की दासी है। साफ शब्दों में समझो कि तुम हमारी उस दासी के दास हो। इसके बावजूद चाहते हो कि हम तुम्हें नमस्कार करें, तुम्हारे सामने झुकें। बात कुछ अजीब नहीं लगती तुम्हें? सिकंदर के भीतर तक बात पहुंच चुकी थी, उसका सारा गर्व चूर हो गया था। उसने तत्काल सभी फकीरों के मुक्त करने का आदेश दिया और झुककर उन सबसे माफी मांगी।

७५१) जब चेरी को उसकी गलती का एहसास हुआ - उस रात, चेरी ने मां से झगड़ा किया और घर से भाग ली। रास्ते में उसे याद आया कि उसकी जेब खाली है। उसके पास उतने भी पैसे नहीं हैं कि किसी को फोन करके बुला सके।

उस समय वह एक नूडल्स की दुकान के सामने से गुजर रही थी। दुकान से आ रही खुशबू के कारण उसे जोरों से भूख लगने लगी। पर समस्या थी कि उसके पास पैसे नहीं थे। दुकानदार ने उसका मुरझाया हुआ चेहरा देखा और पूछा, क्या हुआ, नूडल्स खाने हैं?

पर मेरे पास पैसे नहीं है उसने संकोच के साथ कहा। ठीक है, अंदर आ जाओ। मैं तुमसे पैसे नहीं लूंगा।

थोड़ी देर बाद दुकान का मालिक गर्म नूडल्स से भरा कटोरा ले आया। चेरी ने थोड़े ही नूडल्स खाए थे कि वह रोने लगी।

क्या हुआ? दुकानदार ने पूछा

कुछ नहीं, चेरी ने आंखें पोंछते हुए कहा। मुझे आपकी दया व करुणा ने भावुकर कर दिया है। एक अजनबी ने मुझे नूडल्स खाने को दिए और मेरी मां ने क्या किया? मुझे घर से भगा दिया। वह बिल्कुल भी अच्छी नहीं हैं।

दुकानदार ने कहा- बच्ची, तुम ऐसा क्यों सोच रही हो? मैंने तुम्हें केवल थोड़े से नूडल्स दिए और तुम मेरा गुणगान करने लगी। लेकिन तुम्हारी मां ने तो तुम्हें बड़ा किया है, तुम्हारे लिए कितना कुछ किया है। तुम मेरा आभार व्यक्त कर रही हो और अपनी मां को बुरा कह रही हो। क्या यह गलत नहीं है? चेरी चुप हो गयी। उसे लगा कि वाकई उसने यह क्यों नहीं सोचा? किसी अजनबी के एक कटोरा नूडल्स की वह इतनी ऋणी हो रही है और अपनी मां के प्रति कोई आभार नहीं है। चेरी वापस घर लौटने लगी। वह सोच रही थी कि जैसे ही मां दिखेगी, उनसे लिपटकर कहूंगी, सॉरी मां, गलती मेरी थी, मुझे माफ कर दो।

जैसे ही वह घर पहुंची, उसने मां को चिंता में डूबे हुए पाया। मां चेरी को देखते ही बोली, अंदर आओ चेरी, तुम्हें भूख लग रही होगी? मैंने चावल बनाए हैं। भावुक होकर चेरी मां से लिपटकर रोने लगी। हम भी यही करते हैं। किसी अजनबी के छोटे से काम की तारीफ करना हमारे लिए आसान होता है, पर अपने करीबियों के किए कामों को हम सामान्य मान लेते हैं। उन्हें नजरअंदाज कर देते हैं।

७५२) बुलंद हौसलों से कामयाबी - रिचर्ड हूकर ने ७ साल की मेहनत के बाद अपना उपन्यास लिखने में सफलता पाई। इस उपन्यास को पूरा करने के लिए उन्हें दिन-रात तक का बोध नहीं रहा। कई-कई दिनों तक उन्होंने खाना तक नहीं खाया। यहां तक कि जब उनके मित्र उनके पास आते तो वह उनसे बात तक न करते, बस अपना उपन्यास लिखने में लगे रहते। अथक मेहनत के बाद उपन्यास पूरा हुआ। वह इसे लेकर एक प्रतिष्ठित प्रकाशक के पास गए। प्रकाशक ने उपन्यास के प्रथम पृष्ठ को देखते ही रिचर्ड पर व्यंग्य करते हुए कहा, यह उपन्यास केवल रद्दी की टोकरी में डाले जाने लायक है। इसे मैं तो क्या, कोई छोटा-मोटा प्रकाशक भी प्रकाशित नहीं करेगा। अथक मेहनत के बाद पहली बार ही मिले इतने बड़े नकारात्मक जवाब से रिचर्ड के विचारों में जंग शुरू हो गई। उनके सकारात्मक विचारों पर नकारात्मक विचार हावी होने लगे। एक दिन जब उनका मन यह कह रहा था कि यह उपन्यास कभी भी प्रकाशित नहीं हो पाएगा तो उन्होंने उस धारणा को दबाकर मंद-मंद स्वर में बोलना आरंभ कर दिया कि यह उपन्यास न केवल प्रकाशित होगा, अपितु पूरी

दुनिया में यह ऐसी धूम मचा देगा कि लोग देखते रह जाएंगे। वह हर प्रकाशक के पास जाने से पहले और बाद तक यही बोलते रहते। २१ प्रकाशकों ने उनके उपन्यास को अस्वीकृत कर दिया। लेकिन रिचर्ड का आत्मविश्वास और उत्साह बलवती होता रहा। आखिर एक दिन एक प्रकाशक ने उसे प्रकाशित करने पर अपनी सहमति की मुहर लगा दी। कुछ ही समय बाद यह उपन्यास न केवल बेस्टसेलर बन गया, अपितु इस उपनयस पर एक सफल फिल्म और एक सफल टेलीविजन धारावाहिक भी बना।

७५३) **धर्म साधना -** एक व्यक्ति ने किसी साधु से कहा, मेरी पत्नी धर्म-साधना में श्रद्धा नहीं रखती। यदि आप उसे थोड़ा समझा दें तो बड़ा अच्छा हो। साधु बोले, ठीक है। अगले दिन सवेरे ही वह साधु उसके घर गया। पति वहां नहीं थे। उसने उसके संबंध में पत्नी से पूछा। पत्नी ने कहा, जहां तक मैं समझती हूं, वह इस समय मोची की दूकान पर झगड़ा कर रहे हैं। पति पास के पूजाघर में माला फेर रहा था। उसने पत्नी की बात सुनी। उससे यह झूठ सहा नहीं गया। बाहर आकर बोला, यह बिल्कुल गलत है। मैं पूजाघर में था। साधु हैरान हो गया। पत्नी ने यह देखा तो पूछा, सच बताओ कि क्या तुम पूजाघर में थे? क्या तुम्हारा शरीर पूजाघर में, माला हाथ में और मन और कहीं नहीं था। पति को होश आया। पत्नी ठीक कह रही थी। माला फेरते-फेरते वह सचमुच मोची की दूकान पर ही चला गया था। उसे जूते खरीदने थे और रात को ही उसने अपनी पत्नी से कहा था कि सवेरा होते ही खरीदने जाऊंगा। माला फेरते-फेरते वास्तव में उसका मन उसी दूकान पर पहुंच गया था और मोची से जूते के मोल-तोल पर कुछ झगड़ा हो रहा था। विचार को छोड़ो और निर्विचार हो जाओ तो तुम जहां हो, वहीं प्रभु का आगमन हो जाता है।

७५४) **मजबूत किला -** एक साधु से उसके मित्रों ने पूछा, यदि दुष्ट लोग आप पर हमला कर दें तो आप क्या करेंगे? वह बोला, मैं अपने मजबूत किले में जाकर बैठा रहूंगा। यह बात उस साधु के शत्रुओं के कान तक पहुंच गई। उन्होंने एक दिन एकांत में साधु को घेर लिया और कहा, यह बताइये कि आपका मजबूत किला कहां हैं? साधु खूब हंसने लगा। फिर अपने हृदय पर हाथ रखकर बोला, यह है मेरा किला। इसके पर कभी कोई हमला नहीं कर सकता। शरीर तो नष्ट किया जा सकता है, पर जो उसके भीतर है, उसके रास्ते को जानना ही मेरी सुरक्षा है जो व्यक्ति इस मजबूत किले को नहीं जानता, उसका पूरा जीवन असुरक्षित है। प्रतिक्षण शत्रुओं से घिरा है।

७५५) **सबसे बड़ा मूर्ख -** एक साहूकार को धन एकत्र करने का बड़ा शौक था। उसे अपनी योग्यता पर बहुत घमंड था। जब कोई महात्मा उसके दर पर आते, तो वो उनका सम्मान तो करता लेकिन मन ही मन उन्हें भला बुरा भी कहता रहता। एक दिन उस साहूकार ने एक महात्मा जी को भोजन कराया। फिर एक आईना देते हुए कहा, महाराज जहां भी आपको दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख दिखाई दे, उसे ये आईना दे दीजिएगा।

महात्मा वह आईना लेकर चले गए। कई साल बीत जाने के बाद वह महात्मा पुन: उस शहर में आए। लेकिन वो साहूकार मृत्यु शय्या पर अपनी अंतिम सांसें गिन रहा था। वह साहूकार के घर पहुंचे। महात्मा जी ने साहूकार से पूछा, सेठजी क्या आप कोई ऐसी विद्या जानते हैं, जिससे आपके प्राण बच सकें? साहूकर ने न में उत्तर दिया। महात्मा जी ने फिर पूछा, क्या तुम्हारा धन तुम्हें मृत्यु से बचा सकता है।

साहूकार बोला, नहीं महात्मा जी। जब महात्मा ने उसे आईना देते हुए कहा, सेठ जी। मुझे अब तक सबसे बड़ा मूर्ख तुम ही मिले हो, जिसने धन के आगे अपनी जिंदगी व्यर्थ में गंवा दी।

७५६) सच्चा गुरु हमेशा शिष्य की भलाई करता है - सम्राट चंद्रगुप्त के बारे में तो सभी जानते हैं। चंद्रगुप्त के गुरु का नाम चाणक्य था। वे राजा के महामंत्री थे। एक बार चंद्रगुप्त की तबीयत ज्यादा खराब हो गई। महामंत्री चाणक्य ने कई प्रसिद्ध वैद्यों से उनका इलाज करवाया, लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ।

इधर चंद्रगुप्त की बीमारी की खबर सुनकर पाटलीपुत्र नगर के शत्रु प्रसन्न होकर सम्राट की हत्या के लिए अच्छा मौका देखकर सक्रिय हो गए। शत्रुओं ने सोचा क्यों न किसी वैद्य से ही चंद्रगुप्त की हत्या करवा दी जाए और योजनानुसार शत्रुओं ने एक अच्छे जानकार श्रेष्ठ वैद्य को वहां भेजा। वैद्य राज दरबार में पहुंचा और उसने घोषणा की कि दावे के साथ वह शीघ्र ही महाराज को ठीक कर देगा।

महामंत्री चाणक्य की देखरेख में वैद्य ने महाराज चंद्रगुप्त का इलाज शुरू कर दिया। महाराज चंद्रगुप्त धीरे-धीरे सचमुच स्वस्थ होने लगे। वैद्यजी के प्रति लोगों का विश्वास जम गया। लोगों पर विश्वास जमने के बाद वैद्य ने अपनी योजना को अंतिम रूप देने का निश्चय किया। एक रात वह वैद्य जहरीली औषधि का घोल लेकर चंद्रगुप्त के कमरे में पहुंचा। महाराज चंद्रगुप्त को उसने औषधि दी और पीने का आग्रह किया। महाराज चंद्रगुप्त ज्यों ही उसे पीने को तत्पर हुए कि एक आवाज आई ठहरिए महाराज।

अचानक प्रकट हुए सामने महामंत्री चाणक्य को देखकर वैद्यराज भय से सिहर उठे। चंद्रगुप्त ने वैद्यराज को देखा और कहा आदरणीय गुरुदेव। वैद्यजी ने यह औषधि विशेष रूप से मेरे लिए तैयार की है चाणक्य ने कहा। नहीं- औषधि वैद्यराज ने स्वयं अपने लिए तैयार की है। वैद्यराज, यह औषधि महाराज के हाथों से लेकर अब आप पीजिए, वैद्य ठिठका, किंतु चाणक्य के तेज स्वर को सुनकर वह आगे बढ़ा। महाराज के हाथों से प्याला लेकर औषधि के नाम पर दिए गए जहर का पान कर लिया। शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। आचार्य चाणक्य ने ही चंद्रगुप्त के राज्य को सुव्यवस्थित किया था। राजा बनने के बाद कभी-कभी चंद्रगुप्त एवं चाणक्य में मतभेद हो जाता था। ऐसे अवसरों पर लोग आश्चर्य करते कि महाराज चंद्रगुप्त अपनी बातें वापस क्यों लेते हैं। इस घटना ने इसका रहस्य खोल दिया और सभी को यह स्वीकारना पड़ा कि महामंत्री चाणक्य का हर कदम राजा और राज्य की भलाई के लिए ही उठता है।

हमारे देश की गुरु शिष्य परंपरा में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं, जिससे पता चलता है कि गुरु हमेशा शिष्य की चिंता में रत रह उसकी भलाई हेतु बेचैन रहा करते थे। ऐसे ही व्यक्ति गुरु कहलाने के सच्चे अधिकारी होते हैं। क्षेत्र-विद्या चाहे कोई भी हो।

७५७) संयम बिना सिद्धि नहीं - मिस्र में जुनून नाम के एक महात्मा हुए। उनके पास प्रसिद्ध मुस्लिम संत यूसुफ हुसैन धर्म की दीक्षा लेने गए। महात्मा जुनून ने उन्हें एक छोटा सा बक्सा देते हुए कहा- मेरे एक मित्र यहां से दूर नील नदी के किनारे रहते हैं। इस बक्से को उन्हें दे आओ, लौटकर मुझसे दीक्षा लेना। रास्ते में यूसुफ हुसैन ने सोचा कि जब बक्से को खोलकर देखा जाए। यही सोचते हुए कौतूहलवश उन्होंने बक्से का ढक्कन खोला, तो उसमें से एक चूहा निकलकर

भागा। उस बक्से में चूहे के अतिरिक्त और कुछ न था।

अब यूसुफ हुसैन को बड़ा पछतावा हुआ कि उन्होंने व्यर्थ ही ढक्कन खोला। किंतु अब पछताने से कोई लाभ न था। वह नील नदी के किनारे पहुंचे और वह खाली बक्सा ही महात्मा जुनून के संत मित्र को दिया। बक्स खोलने पर जब उस संत को उसमें कुछ भी न दिखाई दिया, तो वे बोले, महात्मा जुनून तुम्हें दीक्षा नहीं देंगे, क्योंकि तुममें संयम नहीं है। उन्होंने इस बक्स में जरूर कुछ न कुछ भेजा होगा। सच-सच बताओ उन्होंने इसमें क्या भेजा था? यूसुफ ने सच बताकर उनसे माफी मांगी। इस पर उन संत मित्र ने उन्हें महात्मा जुनून से माफी मांगने के लिए कहा।

हताश यूसुफ हुसैन महात्मा जुनून के पास लौट आए और उन्होंने सारा वृत्तांत बताकर क्षमा मांगी। जुनून बोले, अब तुम परम ज्ञान के अधिकारी नहीं हो। मैंने तुम्हें एक चूहा सौंपा था, जिसे तुमने गंवा दिया। तब भला धर्म-ज्ञान जैसी अमूल्य निधि को तुम कैसे सुरक्षित रख पाओगे? उसके लिए अतीव संयम की जरूरत है। जाओ, अपने चित्त को वश में करने का अभ्यास करो, क्योंकि संयम के बिना सिद्धि दुर्लभ है। यूसुफ हुसैन वापस लौटे और आत्मसंयम का अभ्यास करने लगे। कई साल साधना के बाद वे फिर महात्मा जुनून के पास गए और इस बार उनका मनोरथ सफल हुआ।

७५८) अटल सत्य - भगवान विष्णु गरुड पर बैठकर कैलाश पर्वत पर गए। द्वार पर गरुड़ को छोड़कर खुद शिव से मिलने अंदर चले गए। तब कैलाश की अपूर्व प्राकृतिक शोभा को देखकर गरुड़ मंत्रमुग्ध थे कि तभी उनकी नजर एक खूबसूरत छोटी सी चिड़िया पर पड़ी। चिड़िया कुछ इतनी सुंदर थी कि गरुड़ के सारे विचार उसकी तरफ आकर्षित होने लगे। उसी समय कैलाश पर यमदेव पधारे और अंदर जाने से पहले उन्होंने उस छोटे से पक्षी को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। गरुड़ समझ गए उस चिड़िया का अंत निकट है और यमदेव कैलाश से निकलते ही उसे अपने साथ यमलोक ले जाएंगे। गरुड़ को दया आ गई। इतनी छोटी और सुंदर चिड़िया को मरता हुआ नहीं देख सकते थे। उसे अपने पंजों में दबाया और कैलाश से हजारो कोस दूर एक जंगल में एक चट्टान के ऊपर छोड़ दिया और खुद वापिस कैलाश पर आ गया। आखिर जब यम बाहर आएं तो गरुड़ ने पूछ ही लिया कि उन्होंने उस चिड़िया को इतनी आश्चर्य भरी नजर से क्यों देखा था। यमदेव बोले गरुड़ जब मैंने उस चिड़िया को देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वो चिड़िया कुछ ही पल बाद यहां से हजारों कोस दूर एक नाग द्वारा खा ली जाएगी। मैं सोच रहा था कि वो इतनी जल्दी इतनी दूर कैसे जाएगी, पर अब जब वो यहां नहीं है तो निश्चित ही वो मर चुकी होगी। गरुड़ समझ गये मृत्यु टाले नहीं टलती। चाहे कितनी भी चतुराई की जाए।

७५९) झोपड़ी का झंझट - राजा परीक्षित को भागवत कथा सुनाते हुए शुकदेव को छह दिन बीत गए और उनकी मृत्यु में बस एक दिन शेष रह गया। लेकिन राजा का शोक और मृत्यु का भय कम नहीं हुआ। तब शुकदेवजी ने राजा को एक कथा सुनाई- एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया और रास्ता भटक गया। रात होने पर वह आसरा ढूंढने लगा। उसे एक झोपड़ी दिखी जिसमें एक बीमार बहेलिया रहता था। उसने झोपड़ी में ही एक ओर मलमूत्र त्यागने का स्थान बना रखा था और अपने खाने का सामान झोपड़ी की छत पर टांग रखा था। उसे देखकर राजा पहले तो ठिठका, पर कोई और आश्रय न देख उसने बहेलिए से झोपड़ी में रातभर ठहरा लेने की प्रार्थना की। बहेलिया बोला- मैं राहगीरों को अकसर

ठहराता रहा हूं। लेकिन दूसरे दिन जाते समय वे झोपड़ी छोड़ना ही नहीं चाहते। इसलिए आपको नहीं ठहरा सकता। राजा ने उसे वचन दिया कि वह ऐसा नहीं करेगा। सुबह उठते-उठते उस झोपड़ी की गंध में राजा ऐसा रच-बस गया कि वहीं रहने की बात सोचने लगा। इस पर उसकी बहेलिए से कलह भी हुई। वह झोपड़ी छोड़ने में भारी कष्ट और शोक का अनुभव करने लगा। कथा सुनाकर शुकदेव ने परीक्षित से पूछा- क्या उस राजा के लिए यह झंझट उचित था? परीक्षित ने कहा- वह तो बड़ा मूर्ख था, जो अपना राज-काज भूलकर दिए हुए वचन को तोड़ना चाहता था। वह राजा कौन था? तब शुकदेव ने कहा- परीक्षित, वह तुम स्वयं हो। इस मलमूत्र की कोठरी देह में तुम्हारी आत्मा की अवधि पूरी हो गई। अब इसे दूसरे लोक जाना है। पर तुम झंझट फैला रहे हो। क्या यह उचित है? यह सुनकर परीक्षित ने मृत्यु के भय को भुलाते हुए मानसिक रूप से निर्वाण की तैयारी कर ली और अंतिम दिन का कथा-श्रवण पूरे मन से किया।

७६०) परिश्रम का जादू - इटली के क्रेसिन नामक किसान की फसल की पैदावार इतनी अच्छी हुई कि देखकर लोग हैरान रह गए। लोगों को लगा कि निश्चय ही यह कोई जादू करता है, तभी तो इसके खेत में अच्छी गुणवत्ता वाली फसल अधिक मात्रा में पैदा होती है। क्षेत्र के दूसरे किसानों को उससे ईर्ष्या होने लगी। उन्होंने न्यायालय में इसकी शिकायत की। न्यायाधीश ने वादी का बयान सुनने के बाद प्रतिवादी किसान क्रेसिन से पूछा, इस पर तुम्हारा क्या कहना है? क्रेसिन ने अपना पक्ष पूरी निडरता एवं साहस के साथ पेश किया और अपनी एक हृष्ट-पुष्ट लड़की, खेती के अपने औजार, बैल आदि को अदालत में ले आए। उसने अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा, मैं कोई जादूगर नहीं हूं और न ही खेती करते हुए कोई टोना-टोकता करता हूं। मेरा श्रम, खेत जोतने की तकनीक और अच्छी खाद ही मेरी फसल को अच्छा तैयार करते हैं। मेरी लड़की बीज बोती है और पानी देकर खेत की अच्छी देख-रेख करती है। इसी तरह मेरे औजार भी टूटे-फूटे नहीं, उपयोगी हैं। मेरे बैलों को देखिए। कितनी लुभावनी जोड़ी है। मैं इन्हें खूब खिलाता पिलाता हूं, इनकी सेवा-शुश्रूषा करता हूं। मेरे खेत में काफी पैदावार होने में इन्हीं जादू का असर है। कोई भी किसान यदि ईमानदारी से, परिश्रम के साथ श्रम करे तो वह भी जादू कर सकता है। विद्वान न्यायाधीश ने क्रेसिन के कथनों एवं उसके द्वारा प्रस्तुत प्रमाणों को गंभीरता से लिया। जज ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा, आज तक अनेक अपराधी मेरे सामने आए, पर अपने पर किए गए अभियोगों के निवारण के लिए इतने सबल प्रमाण किसी ने भी पेश नहीं किए। इसलिए प्रस्तुत साक्ष्यों की यह भी कहूंगा कि इनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। यह कहकर न्यायाधीश ने क्रेसिन को बाइज्जत बरी कर दिया।

७६१) पद से बड़ा व्यक्ति - चीन के राजा क्वांग का प्रधानमंत्री सुनशू आओ था। किन्हीं कारणों से राजा ने उसे उसके पद से हटा दिया। कुछ दिनों के पश्चात राजा को अपनी भूल का अहसास हुआ तो उन्होंने फिर से सुनशू आओ को पुन: प्रधानमंत्री बना दिया। कुछ संयोग ऐसे घटित हुए कि तीन बार सुरशू आओ को प्रधानमंत्री पद से हटना पड़ा और दोबारा पदासीन होना पड़ा। लेकिन राजा ने यह अनुभव किया कि सुनशू आओ इन अवसरों पर ना कभी प्रसन्न हुआ और ना कभी उदास ही बना। वह निर्लिप्त अपने कार्य में जुटा रहता था। एक दिन राजा ने सुनशू आओ से पूछ ही लिया कि इसका क्या कारण है? सुनशू आओ ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया, जब आपने मुझे प्रधानमंत्री का पद दिया तो मैंने उसे अपना सम्मान समझ कर इसलिए ग्रहण कर लिया कि सम्मान को अस्वीकार करना सम्मान का अपमान है। इसके बाद जब

आपने मुझे उस पद से हटाया तो मैंने सोचा, जहां आवश्यकता नहीं है वहां चिपके रहना ठीक नहीं है। मेरे मन में यह प्रश्न भी उठा कि जिसे मैं सम्मान समझ रहा था वह किसका था मेरा या मेरे उस पद का? यदि पद का है तो उससे मुझे कुछ भी लेना देना नहीं है और यदि मेरा है तो चाहे पद रहे या ना रहे मुझे उससे क्या अंतर पड़ेगा? इसलिए उसके बाद प्रधानमंत्री पद मिलने या जाने से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। राजा क्वांग समझ गया कि प्रसन्नता और अप्रसन्नता का मोल कहां छिपा हुआ है। कभी भी पद व सामर्थ्य पाकर अहंकार का पालन नहीं करना चाहिए। मनुष्य को हमेशा अच्छे चरित्र और व्यवहार का पालन करना चाहिए। इससे समस्याएं अपने आप दूर भागती हैं। सत्ता, पद, प्रतिष्ठा, धन-संसाधन, संपन्नता के मद से आया अहंकार सामाजिक पतन का प्रमुख कारण बनता है। जल कभी उस पात्र पर गर्व नहीं कर सकता जिसमें उसे रखा गया है।

७६२) हंसी का संत - जापान में महात्मा बुद्ध के एक अनुयायी थे होतेई। ऐसा विश्वास किया जाता है कि आत्मज्ञान होते ही वह हंसने लगे और आजीवन हंसते ही रहे। इसके बाद उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य लोगों को हंसाना बना लिया। होतेई एक करिश्माई चरित्र के व्यक्ति थे। वह जहां जाते, लोग चुबंक की तरह उनकी ओर आकर्षित हो जाते और उनके चारों ओर भीड़ लग जाती। वह उन्हें हंसाते। उनकी उपस्थिति मात्र से लोग अपने दुखों को भूलकर आनंद का अहसास करने लगते थे। जब उनका उद्देश्य पूरा हो जाता तो वह थैला उठाकर दूसरे स्थान की ओर लोगों को हंसाकर उनका दुख-दर्द दूर करने के लिए चल पड़ते। इसी कारण जापान के लोग उन्हे हंसता हुआ बुद्ध या लाफिंग बुद्धा कहने लगे। इन्हीं को चीन में पू ताई कहकर बुलाते। होतेई जानते थे कि जब आप हंसते हैं तो शरीर में कुछ परिवर्तन होता है और शरीर की ग्रंथियों से अच्छा हार्मोन और एंजाइम पैदा होता हे, जो आपको अच्छा महसूस कराता है। तब आप जीवन की समस्याओं को सकारात्मक तरीके से देखते और उन्हें हल करने में आसानी रहती है। होतेई जीवनभर लोगों को हंसाते रहे और उनमें पॉजिटिव ऊर्जा भरते रहे। यह कार्य उन्होंने अपने जीवन के अंतिम समय तक किया। जब उन्हें लगा कि उनका अंत निकट आ रहा है, तो उन्होंने अपने करीबी साथियों से कहा कि मृत्यु के बाद मेरे शरीर को जला दिया जाए। वे सभी आश्चर्यचकित हुए, क्योंकि बौद्ध धर्म में अंतिम संस्कार का यह तरीका नहीं था। लेकिन उनके शिष्यों ने उनकी यह इच्छा पूरी की। उनकी मृत्यु के बाद जैसे ही उनके शरीर पर आग लगाई चारों ओर आतिशबाजियां उड़ने लगीं। निश्चित ही उन्होंने अपने कपड़ों में बहुत सारे पटाखे और रॉकेट छिपाए होंगे, ताकि उस गम के माहौल में भी हंसी बनी रहे और उनके अनुयायी दुखी न हों।

७६३) महल का मोह - एक राजा था। उसने बहुत ही सुंदर और विशालकाय महल बनवाया। उसे उस महल से मोह हो गया। जो भी उसके पास आता, वह उससे महल की प्रशंसा अवश्य करता। राजा महल की अद्भुत नक्काशी और सुंदरता में ही खोया रहता। उसने राजकाज में रुचि लेना भी बंद कर दिया। लोग राजा को महल के ख्यालों में खोए देखकर चिंतित हो गए। चतुर महामंत्री ने इसका एक उपाय सोचा। एक दिन एक वृद्ध साधु राजा के पास आया और महल देखकर उसकी खूब प्रशंसा करने लगा। राजा अपने महल की तारीफ सुनकर बहुत प्रसन्न हो गया और बोला, बताइए, भला इसके जैसा महल होगा कहीं? साधु मुस्कराते हुए बोला, हो सकता है, ऐसा अद्भुत महल न हो, लेकिन मुझे

तो इस महल में भी दो भारी कमियां दिखाई देती हैं। यह सुनकर राजा हैरानी से बोला, असंभव। बताइए वे दो कमियां कौन सी हैं? साधु बोला, पहली कमी तो यह है कि एक दिन यह महल नष्ट हो जाएगा और दूसरी कमी यह कि इस महल में रहनेवाले का भी एक न एक दिन अंत होगा। फिर यह महल अद्भुत कहां हुआ? अद्भुत तो व्यक्ति के सद्कर्म होते हैं, जो उसके बाद भी जिंदा रहते हैं। यह सुनकर राजा की आंखें खुल गईं। उसका महल के प्रति मोह मिट गया। तभी साधु अपने मूल रूप में आ गया। वह कोई और नहीं महामंत्री था। यह देख राजा आश्चर्य से बोला, महामंत्री जी आप। आज आपने मेरी आंखें खोल दीं। मैं अब इस निर्जीव महल की सुंदरता में खोने के बजाय अपनी प्रजा की उचित देखभाल और सद्कर्मों पर ध्यान दूंगा। यह सुनकर रानी और राजपरिवार के सभी लोगों ने राहत की सांस ली। प्रजा भी प्रसन्न हुई। लोग महामंत्री की सूझबूझ की प्रशंसा करने लगे।

७६४) बहादुरी की जीत - राठौर सामंत अमर सिंह शाहजहां के दरबार में उच्च पद के सरदार थे। एक बार बादशाह के साले सलावत खां के अपमान करने पर उन्होंने दरबार में ही उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया। अमर सिंह का एक साला था अर्जुन गौड़। वह बड़ा ही धूर्त, नीच और लालची स्वभाव का व्यक्ति था। बादशाह ने उसे धन का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया। अर्जुन गौड़ अमर सिंह के पास गया और उसे समझा-बुझाकर बादशाह के महल में ले गया। अमर सिंह जब एक छोटे से दरवाजे से होकर भीतर जा रहे थे तभी उसने धोखे से उन्हें मार डाला बादशाह ने अमर सिंह की लाश को किले की बुर्ज पर चील-कौवों के खाने के लिए डलवा दिया। अमर सिंह की पत्नी ने जब यह समाचार सुना तो उन पर जैसे वज्रपात हो गया। मगर, उन्हें चिंता हुई पति की अंतिम क्रिया की। वह चाहती थीं, उनके पति की आखिरी विदाई उनकी शान के अनुरूप हो। इसके लिए अमर सिंह की लाश लाना जरूरी था। उन्होंने अन्य सरदारों से मदद मांगी, पर बादशाह के डर से कोई तैयार नहीं हुआ। अंत में उन्होंने अपनी तलवार और घोड़ा मंगवाया और पति की लाश लाने वह स्वयं निकल पड़ी। उसी समय अमर सिंह का भतीजा रामसिंह राठौर वहां आया और बोला, चाची आप रुको या तो मैं चाचा की लाश लेकर आऊंगा या मेरी भी लाश वहां गिरेगी। वह उस समय मात्र १५ वर्ष का था। वह घोड़ा दौड़ाते हुए महल के अंदर बुर्ज के नीचे पहुंच गया। सैनिकों से लड़ते-लड़ते वह खून से लथपथ हो गया, लेकिन हिम्मत नहीं हारी। बुर्ज पर पहुंचकर उसने अपने चाचा की लाश को कंधे पर उठाया और तलवार लहराते हुए चाची के पास लौट आया। १५ वर्ष के इस बालक ने बहादुरी की अमर गाथा गढ़ी।

७६५) फुटबॉल रहस्य - एक बार एक युवक स्वामी विवेकानंद के पास आया और उनसे निवेदन करने लगा कि वह उसे गीता का ज्ञान करा दें। स्वामी विवेकानंद ने उस युवक को परामर्श दिया कि पहले छह महीने तो वह फुटबॉल खेले और अपनी क्षमता के अनुसार गरीबों और असहायों की सहायता करे, उसके बाद वह उनके पास आए, तब वह उसे गीता का ज्ञान देंगे। युवक को बहुत आश्चर्य हुआ। आखिर गीता के ज्ञान का संबंध फुटबॉल या सेवा कार्यों से कैसे है? कहीं ये मुझे टालने के लिए तो ऐसा नहीं कर रहे हैं? उसने अपनी जिज्ञासा स्वामी जी के सामने रखी और कहा, महात्मा जी, गीता एक धार्मिक ग्रंथ है। उसको सीखने के लिए फुटबॉल खेलना या गरीबों की सेवा करना क्यों आवश्यक है? इस पर स्वामीजी ने उसे समझाया, सुनो युवक। गीता, वीरों और त्यागियों का महाग्रंथ है। इसलिए जो व्यक्ति वीरत्व और सेवा

भाव से भरा नहीं होगा वह गीता के गूढ़ श्लोकों को और कृष्ण अर्जुन संवाद का रहस्य नहीं समझ सकता और न ही वास्तविक जीवन से उसका निहितार्थ समझ सकता है। युवक को स्वामीजी का आशय समझ में आ गया और उसी समय उसने प्रण किया कि वह गीता को समझने के लिए स्वयं को सुपात्र बनाएगा। उसने फुटबॉल और कसरत से अपना तन बलशाली बनाया और सेवा से जीवन को पवित्र किया। फिर छह महीने के बाद वह स्वामी जी के पास पहुंचा। तब स्वामी जी ने कहा कि अब तुम वास्तव में गीता को समझने के पात्र हो चुके हो। उन्होंने उस युवक को बड़े प्रेम से अपने आश्रम में ठहराया और उसे गीता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने गीता प्रचार मंडल की स्थापना की और गीता का काव्य रूपांतरण बांग्ला भाषा में किया। वह युवक कोई और नहीं सतेंद्र बनर्जी थे।

७६६) विनम्रता में स्वाभिमान - बात उस समय की है, जब अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति बने थे। अपने गांव के ही नजदीक एक गांव में एक विशाल जनसभा आयोजित की गई थी। भारी भीड़ थी। अब्राहम लिंकन भाषण दे रहे थे। भाषण के बीच एक महिला उठ खड़ी हुई और उसने आश्चर्य भरे शब्दों में कहा, अरे, यह कब राष्ट्रपति बन गया। यह तो हमारे गांव के मोची का लड़का है। लिंकन के कानों में जब ये शब्द पड़े तो उन्होंने बड़े ही विनम्र शब्दों में कहा, मैडम आपने बिल्कुल सही कहा। मैं उसी मोची का बेटा हूं। आपने बड़ा ही अच्छा किया जो उपस्थित जनता को मेरे यथार्थ का परिचय करा दिया। मैं आपको धन्यवाद देता हूं। क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकता हूं? महिला ने कहा, हां, हां। पूछ सकते हैं। अब्राहम लिंकन ने कहा, मैडम। मेरे पिताजी ने आपके चप्पल, जूतों की मरम्मत ठीक से की थी न? उनसे आपकी कोई शिकायत तो नहीं रह गई थी? महिला ने बेझिझक कहा, बिल्कुल नहीं, वह समय पर और कुशलतापूर्वक अपना काम करते थे। उनसे किसी को शिकायत कैसे रह सकती है। लिंकन ने कहा, आपने राष्ट्रपति के रूप में मुझे सेवा करने का अवसर दिया। मैं आश्वस्त करता हूं कि जिस तरह से मेरे पिता के काम से कोई शिकायत नहीं रही थी, उसी तरह मैं भी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से इस महान पद की जिम्मेदारी निभाऊंगा। मेरी कोशिश होगी कि मेरे काम में भी आपको कोई शिकायत का मौका न मिले। यह है अमेरिका के इतिहास में सर्वाधिक सफल राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की विनम्रता का उदाहरण, जिन्हें आज भी श्रद्धा एवं सम्मान के साथ याद किया जाता है। इस महान व्यक्ति ने हमें यह सिखाया है कि विनम्रता का मतलब अपने आपको गिराना नहीं होता। विनम्रता के बिना स्वाभिमान का कोई अस्तित्व नहीं है।

७६७) नकल की सजा - एक पहाड़ की ऊंची चोटी पर एक गरुड़ रहता था। उसी पहाड़ की तलहटी में एक विशाल वृक्ष था, जिस पर एक कौआ अपना घोंसला बनाकर रहता था। तलहटी में आसपास के गांवों में रहनेवाले पशु पालकों की भेड़-बकरियां चरने आया करती थीं। जब उनके साथ उनके मेमने भी होते तो गरुड़ प्राय: उन्हें अपना शिकार बना लेता था। चूंकि गरुड़ विशाल पक्षी होता है और उसकी शक्ति अधिक होती है, इसलिए वह ऐसा आसानी से कर लेता था। कौआ प्राय: यह दृश्य देखता था कि जैसे ही कोई मेमना नजर आया कि गरुड़ अपनी चोटी से उड़ान भरता और तलहटी में जाकर मेमने को झपट्टा मारकर सहज ही उठा लेता। रोज देख-देखकर एक दिन कौए को भी जोश आ गया। उसने सोचा कि यदि गरुड़ ऐसा पराक्रम कर सकता है तो मैं क्यों नहीं कर सकता? आज मैं भी ऐसा ही करूंगा। वह तलहटी पर चौकन्ना होकर निगाह रखने लगा। कुछ देर बाद कौए ने एक मेमने को तलहटी में घास खाते हुए देखा। उसने भी गरुड़

की ही तरह हवा में जोरदार उड़ान भरी और आसमान में जितना ऊपर तक जा सकता था, उड़ता चला गया। फिर तेजी से नीचे आकर गरुड़ की भांति झपट्टा मारने की कोशिश की, किंतु इतनी ऊंचाई से हवा में गोता लगाने का अभ्यास न होने के कारण वह मेमने तक पहुंचने की बजाय एक चट्टान से जा टकराया। उसका सिर फूट गया, चोंच टूट गई।

७६८) ❋ बादशाह सिकंदर विशाल साम्राज्य का अधिकारी था। एक दिन वह अपनी प्रजा के सुख-दु:ख की जानकारी के लिए शाही महल से बाहर आया। हजारों लोग दंडवत होकर, हाथ जोड़े बादशाह सिकंदर को नमन करने लगे। बादशाह सभी का अभिवादन स्वीकार करने के बाद उनके सुख-दु:ख की जानकारी लेता हुआ आगे बढ़ रहा था। सिकंदर जहां से गुजरता, हजारों लोग कतारबद्ध खड़े बादशाह का अभिवादन करते रहे। इस बीच बादशाह एक खुले मैदान के पास से गुजरा तो देखा एक व्यक्ति वहां खड़ा है। सिकंदर उससे शाही शासन की व्यवस्था एवं सुख दु:ख की बात जानने के लिए उसके पास पहुंचा। सिकंदर ने व्यक्ति के हालचाल पूछे। तब भी उस व्यक्ति ने बादशाह को सम्मान के रूप में किसी प्रकार का अभिवादन नहीं किया, न ही हाथ जोड़े। इस पर सिकंदर को क्रोध भी आया। बादशाह ने उस व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा- तुम नहीं जानते मैं कौन हूं? व्यक्ति ने जवाब दिया- मुझे तुम्हारा परिचय जानने की आवश्यकता नहीं है। इस पर सिकंदर ने कहा- मैं यहां का बादशाह हूं और तुमने मुझे नमस्कार क्यों नहीं किया? व्यक्ति बोला- मैं जिसका गुलाम हूं तुम भी उसके गुलाम हो। गुलाम को नमस्कार करना मैंने ठीक नहीं समझा। सिकंदर ने क्रोधित होते हुए अपनी म्यान में से तलवार निकाली। लेकिन फिर कुछ सोचते हुए पूछा- बताओ मैं गुलाम कैसे हुआ। व्यक्ति ने कहा- मैं अपने शरीर की पांचों इंद्रियों का गुलाम हूं। क्योंकि मैंने इस पर अभी तक विजय प्राप्त नहीं की है। यही पांचों इंद्रियां तुम्हें भी गुलाम बनाए हुए हैं। भला ऐसी स्थिति में मैं जिसका गुलाम हूं और तुम भी उसके गुलाम हो तो ऐसे गुलाम को नमस्कार, अभिनंदन, नमन करने से क्या लाभ? सिकंदर ने तत्क्षण व्यक्ति के चरणों में गिरकर अपने कृत्य के लिए क्षमा मांगी।

७६९) सत्य की खोज - एक राजा था। उसने परमात्मा को खोजना चाहा। वह किसी आश्रम में गया। उस आश्रम के प्रधान साधु ने कहा, जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे छोड़ दो। परमात्मा को पाना तो बहुत सरल है। राजा ने यही किया। उसने राज्य छोड़ दिया और अपनी सारी सम्पत्ति गरीबों में बांट दी। वह बिल्कुल भिखारी बन गया, लेकिन साधु ने उसे देखते ही कहा, अरे, तुम तो सभी कुछ साथ ले आए हो। राजा की समझ में कुछ भी नहीं अया, पर वह बोला नहीं। साधु ने आश्रम के सारे कूड़े-करकट का फेंकने का काम उसे सौंपा। आश्रमवासियों को यह बड़ा कठोर लगा, किन्तु साधु ने कहा, सत्य को पाने के लिए राजा अभी तैयार नहीं है और इसका तैयार होना तो बहुत ही जरूरी है। कुछ दिन और बीते। आश्रमवासियों ने साधु से कहा कि अब वह राजा को उस कठोर काम से छुट्टी देने के लिए उसकी परीक्षा ले लें। साधु बोले, अच्छा अगले दिन राजा अब कचरे की टोकरी सिर पर लेकर गांव के बाहर फेंकने जा रहा था तो एक आदमी रास्ते में उससे टकरा गया। राजा बोला, आज से पंद्रह दिन पहले तुम इतने अंधे नहीं थे। साधु को जब इसका पता चला तो उसने कहा, मैंने कहा था न कि अभी समय नहीं आया है। वह अभी वही है। कुछ दिन बाद फिर राजा से कोई राहगीर टकरा गया। इस बार राजा ने आंखें उठाकर उसे सिर्फ देखा, पर कहा कुछ भी नहीं। फिर भी आंखों ने जो भी कहना था, कह ही

दिया। साधु को जब इसकी जानकारी मिली तो उसने कहा, सम्पत्ति को छोड़ना कितना आसान है, पर अपने को छोड़ना कितना कठिन है। तीसरी बार फिर यही घटना हुई। इस बार राजा ने रास्ते में बिखरे कूड़े को बटोरा और आगे बढ़ गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। उस दिन साधु बोला, अब यह तैयार है।

७७०) एक मां अपने बेटे की शरारतों से बहुत परेशान रहती थी। वह अपने बेटे को समझाने के लिए उस पर बहुत गुस्सा करती थी लेकिन बच्चा कोई बात नहीं समझता था। बच्चे की हरकतों से वह परेशान रहने लगी। एक दिन वह अपने बेटे को लेकर एक फकीर के पास गई। उसने फकीर से कहा, मेरा बेटा बहुत शरारतें करता है, यह उपद्रवी है, आप अगर इसे थोड़ा डरा दें तो हो सकता है, यह ठीक हो जाए। फकीर ने जब यह सुना तो वह खड़ा होकर अपनी आंखें निकालकर इतनी जोर से चिल्लाया कि वह बच्चा तो भय के मारे भाग ही गया, उसकी मां भी घबराकर बेहोश हो गईं थोड़ी देर बाद बच्चा अपनी मां के पास लौटा। तब तक मां को भी होश आ गया। मां ने होश में आने पर फकीर से कहा, आपने तो हद ही कर दी। मैंने आपसे इतना डराने के लिए तो नहीं कहा था।

फकीर ने कहा, भय का कोई पैमाना नहीं होता। भय तो भय होता है। जब भय दिखाया जाता है तो पता ही नहीं चलता कि उसे कहां रोका जाएं। मां बोली, मैंने तो बच्चे को डराने के लिए कहा था, आपने तो मुझे भी डरा दिया। फकीर बोला, भय जब प्रकट होता है तो ऐसा नहीं हो सकता कि वह एक को डराए, दूसरे को न डराए। तुम्हारी क्या बात करें, मैं तो स्वयं भयभीत हो गया था। देखो, जहां भय है वहां प्रेम पैदा नहीं हो सकता। इसलिए अब कभी भी अपने बच्चे को भयभीत करने की कोशिश न करना। सुधारने का काम डर से नहीं, प्रेम से होता है। प्रेम का बल डर के बल से बहुत अधिक होता है। बच्चे को सही रास्ते पर लाना है तो उसके प्रति स्नेह का व्यवहार करो। उस दिन के बाद मां ने बच्चे पर कभी गुस्सा नहीं किया। अब वह उसे सभी बातें प्यार से समझाने लगी।

७७१) विचार की यात्रा - उन दिनों महात्मा बुद्ध मगर में थे। नियमित रूप से उनका प्रवचन चलता रहता था। कई बार कुछ लोग प्रवचन के बाद उनसे व्यक्तिगत रूप से भी मिलने आया करते थे। बुद्ध उन्हें निराश नहीं करते थे। एक दिन वह व्यक्ति बुद्ध के पास आकर बोला- मैं लगभग एक महीने से आपका प्रवचन सुन रहा हूं। पर क्षमा करें, मेरे ऊपर उनका कोई असर नहीं हो रहा है। इसका कारण क्या है? क्या मुझमें कोई कमी है? बुद्ध ने मुस्कराकर पूछा- यह बताओ, तुम कहां के रहनेवाले हो? उस व्यक्ति ने कहा- श्रावस्ती। बुद्ध ने पूछा- श्रावस्ती यहां से कितनी दूर है? उसने दूरी बताई। बुद्ध ने पूछा- तुम वहां कैसे जाते हो? व्यक्ति ने कहा- कभी घोड़े पर तो कभी बैलगाड़ी में बैठकर जाता हूं। बुद्ध ने फिर प्रश्न किया कितना समय लगता है? उसने हिसाब लगाकर समय बताया। बुद्ध ने कहा- यह बताओ क्या तुम यहां बैठे-बैठे श्रावस्ती पहुंच सकते हो? व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा- यहां बैठे-बैठे भला वहां कैसे पहुंचा जा सकता है। वहां पहुंचने के लिए कोई वाहन तो चाहिए ही। बुद्ध मुस्कराकर बोले- यानी लक्ष्य तक पहुंचने के लिए वहां तक पहुंचने का प्रयत्न आवश्यक है। इसी तरह अच्छी बातों का प्रभाव भी तभी पड़ता है जब उन्हें जीवन में उतारा जाए। कोई भी ज्ञान तभी सार्थक है जब उसे व्यावहारिक जीवन में उतारा जाए। मात्र प्रवचन सुनने या अध्ययन करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। उस व्यक्ति ने कहा- अब मैं आपके उपदेश को जीवन में उतारूंगा।

७७२) मुर्गा और आभूषण - एक मुर्गा अपनी मुर्गियों व स्वयं का पेट भरने के लिए भोजन की तलाश में खेत की जमीन खोद रहा था। तभी उसे जमीन में दबा एक आभूषण मिला। वह समझ गया कि यह जरूर कोई बेशकीमती चीज है। जब उसे समझ में नहीं आया कि उस आभूषण का क्या किया जाए, तो वह बोला- ऐसे व्यक्तियों के लिये जो तुम्हारी कीमत समझते हैं, तुम निश्चय ही बेहतरीन हो। लेकिन मैं एक दाना अनाज के बदले संसार के सभी आभूषणों को कुर्बान कर सकता हूं। किसी वस्तु का मूल्य उसे देखनेवाले की आंखों में होता है।

७७३) जादुई घड़ा - एक गरीब युवक, अपनी गरीबी से परेशान होकर, अपना जीवन समाप्त करने नदी पर गया, वहां एक साधु ने उसे ऐसा करने से रोक दिया।

साधु ने युवक की परेशानी को सुनकर कहा कि मेरे पास एक विद्या है, जिससे ऐसा जादुई घड़ा बन जायेगा कि जो भी इच्छा इस घड़े से मांगोगे, ये जादुई घड़ा पूरी कर देगा, पर जिस दिन भी ये घड़ा फूट गया, उसी समय, जो कुछ भी इस घड़े ने दिया है, वह सब गायब हो जायेगा। अगर तुम मेरी दो साल तक सेवा करो, तो ये घड़ा मैं तुम्हें दे सकता हूं और, अगर पाँच साल तक तुम मेरी सेवा करो, तो मैं ये घड़ा बनाने की विद्या तुम्हें सीखा दूंगा। बोलो तुम क्या चाहते हो, युवक ने कहा, महाराज मैं तो दो साल ही आपकी सेवा करना चाहूंगा, मुझे तो जल्द से जल्द बस ये घड़ा ही चाहिए, मैं इसे बहुत संभाल कर रखूंगा, कभी फूटने नहीं दूंगा। इस तरह दो साल सेवा करने के बाद, युवक ने वो जादुई घड़ा प्राप्त कर लिया और अपने घर पहुंच गया। उसने घड़े से अपनी हर इच्छा पूरी करवानी शुरू कर दी, महल बनवाया, नौकर चाकर मांगे, सभी को अपनी शान शौकता दिखाने लगा, सभी को बुला-बुलाकर दावतें देने लगा और बहुत ही विलासिता का जीवन जीने लगा, उसने शराब भी पीना शुरू कर दी और एक दिन नशे में, घड़ा सर पर रख नाचने लगा और ठोकर लगने से घड़ा गिर गया और फूट गया। घड़ा फूटते ही सभी कुछ गायब हो गया, अब युवक सोचने लगा कि काश मैंने जल्दबाजी न की होती और घड़ा बनाने की विद्या सीख ली होती, तो आज मैं फिर से कंगाल न होता।

ईश्वर हमें हमेशा दो रास्ते पर रखता है एक आसान-जल्दीवाला और दूसरा थोड़ा लम्बे समय वाला, पर गहरे ज्ञानवाला, ये हमें चुनना होता है कि हम किस रास्ते पर चलें।

कोई भी काम जल्दी में करना अच्छा नहीं होता, बल्कि उसके विषय में गहरा ज्ञान आपको अनुभवी बनाता है।

७७४) समर्पण किसी को भी दिला सकता है बड़ी सफलता - एक बार १९३९ में महात्मा गांधी शांति निकेतन गए। वहां भाषण देने के बाद कुछ देर गुरुदेव टैगोर के साथ बातचीत की फिर दोपहर के भोजन के बाद आराम करने चले गए। तभी गुरुदेव के कुछ भक्त उनके पास पहुंचे। उन्होंने गांधी जी से कहा, हम गुरुदेव के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हैं। चिकित्सकों ने उनको आराम करने की सलाह दी है पर वे मानते नहीं हैं। दोपहर को भोजन के बाद वे फौरन काम पर लग जाते हैं। आप उनसे आराम करने को कह दें। आपकी बात वह टालेंगे नहीं। गांधीजी तैयार हो गए।

थोड़ी देर आराम करने के बाद गांधीजी गुरुदेव के पास पहुंचे। गुरुदेव अपने काम में रोज की तरह डूबे हुए थे। जैसे ही नजर बापू पर पड़ी उन्होंने पूछा, क्या आपको यहां आराम नहीं मिला जो इतनी जल्दी उठकर आ गए।

बापू ने कहा, मैं तो आपसे कुछ मांगने आया हूं। पहले मुझे बताएं कि वह चीज क्या है? गुरुदेव ने कहा। मैं चाहता हूं

कि आप दोपहर के भोजन के बाद आराम कर लिया करें ताकि स्वास्थ्य बिगड़े नहीं। गुरुदेव बोले, मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं? जब मैं बारह वर्ष का था, मैंने जनेऊ धारण किया था। तब मैंने यह प्रण लिया था कि मैं किसी भी कारण से, दिन के किसी भी समय कभी आराम नहीं करूंगा। अब तक मैंने अपना प्रण पूरा किया है। मैं वह प्रण अब क्यों तोड़ूं? प्रण के प्रति उनके दृढ़ संकल्प और समर्पण से गांधीजी भावुक हो उठे और बोले, अब मैं आपकी सफलता का राज जान गया हूं।

७७५) अहिंसा का मूल पाठ - महात्मा गांधी जब दक्षिण अफ्रीका में थे, उनकी मित्रता एक विदेशी हरमन कॉलनबॉक से हुई। कॉलनबॉक गांधी जी की सत्यता, सादगी, सद्गुणों से अत्यंत प्रभावित हुए और उनके साथ ही रहने लगे। एक बार कॉलनबॉक को पता चला कि कुछ व्यक्ति बापू की हत्या का षडयंत्र रच रहे हैं। यह मालूम होते ही वह जेब में एक पिस्तौल रखने लगे। एक दिन जब दोनों घूमने जा रहे थे, गांधीजी को संदेह हुआ कि कॉलनबॉक की जेब में पिस्तौल रखी है। गांधी जी ने उनकी कोट की जेब में हाथ डालकर उसमें से पिस्तौल निकाल ली और पूछा, क्या महात्मा टॉलस्टॉय के शिष्य भी पिस्तौल जैसी हिंसक वस्तु अपने पास रखते हैं? कॉलनबॉक ने कहा, अगर जरूरत है तो रखने में क्या हर्ज है? इस पर बापू ने पूछा, किंतु अभी ऐसी कौन सी जरूरत इसे रखने की आन पड़ी है? कॉलनबॉक ने जवाब दिया, बात यह है कि मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि कुछ लोग आपकी हत्या का षडयंत्र रच रहे हैं। अत: आपकी सुरक्षा के लिए मैं इसे हर समय अपने पास रखता हूं। यह सुनकर गांधी जी बोले, मित्र, आप मेरी रक्षा करेंगे? यह असंभव है। वैसे यह आत्मा अमर है, इसे कोई नहीं मार सकता। दूसरे, हम अहिंसा के सिद्धांत को माननेवाले हैं, अत: हमें अहिंसा पर ही निर्भर रहना चाहिए, न कि हिंसा पर। यह शरीर तो एक दिन नष्ट होना ही है, पर इसके लिए किसी का खून करना मैं सहन नहीं कर सकता। अगर आप मेरे हितैषी मित्र हैं तो इसी समय यह पिस्तौल फेंक दीजिए। भले ही कोई मुझे मारना चाहता हो, पर अगर मेरे कारण किसी को मारा गया तो मैं आपको कभी क्षमा नहीं करूंगा। अहिंसा का मूल पाठ गांधी जी से समझते ही कॉलनबॉक ने अपनी भूल के लिए उनसे क्षमा मांगी और पिस्तौल से किनारा कर लिया।

७७६) कर्त्तव्य का मोल - अचानक एक रात चंद्रशेखर आजाद, अपने गुरु का दरवाजा खटखटाते हैं। गुरुजी उन्हें देख चिंतित हो उठते हैं और पूछते हैं, आजाद क्या बात है? आजाद कहते हैं कि आपकी बेटी यानी हमारी बहन की शादी है, कुछ काम मुझे भी बताएं। गुरुजी नाराज हो जाते हैं और कहते हैं, तुम्हारी जान जोखिम में है, तुम देश सेवा जैसे पुनीत कर्त्तव्य कर रहे हो, तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था, यहां काफी लोग हैं। आजाद तब कहते हैं, वह सब सही है, मगर मेरें अंदर भी किसी गुरु ने मानवता और प्रेम का बीज बोया था। उस बीज की भी कोई खुराक मेरे अंदर है। क्या, मैं इतना बदनसीब हूं कि अपनी बहन की शादी में कोई काम नहीं आ सकता। गुरुजी निरुत्तर हो जाते हैं और आजाद को कुछ रुपये देते हुए कहते हैं कि ये रुपये रख लो, अपने पास से खर्च मत करना। झांसी में घी महंगा है, ओरछा में काफी सस्ता घी मिल जाता है। दो टिन घी किसी के हाथ भेज देना। हफ्ते भर बाद आधी रात को कोई दरवाजा खटखटाता है। गुरुजी निकलकर देखते हैं कि आजाद कंधे पर लाठी के सहारे दो टिन घी लिए खड़े हैं। गुरुजी को समझते देर नहीं लगी कि कितना छिप-छिपाकर जंगलों, बीहड़ों से होता हुआ आया होगा, क्योंकि आजाद को तो पुलिस ढूंढ रही थी। वह आजाद पर भड़क उठे, आजाद, तुम इतने लापरवाह कैसे हो सकते हो? कोई और रास्ता नहीं सूझा था जो खुद ही चले आए। यह

घी पहुंचना उतना जरूरी नहीं था, जितना तुम्हारे जीवन का सुरक्षित रहना है। चंद्रशेखर आजाद विनम्रता से कहते हैं, गुरुजी इस पवित्र कार्य के लिए मुझे एक ही तो मौका मिला था, वह भी मैं दूसरे से कैसे करा लेता? आजाद ऐसे क्रांतिकारी थे, जिन्हें कर्त्तव्य के आगे जान की परवाह नहीं थी।

७७) खोज पर भरोसा - महान वैज्ञानिक गैलीलियो को अपनी खोजों के आधार पर पूर्ण विश्वास हो गया था कि ब्रह्मांड का केंद्र सूर्य है और पृथ्वी तथा अन्य ग्रह उसकी परिक्रमा कर रहे हैं। गैलीलियों का यह सिद्धांत उन दिनों धर्मग्रंथों में प्रचलित विचारधारा के विरुद्ध था। उन दिनों पृथ्वी को स्थिर और सूर्य को उसकी परिक्रमा करते हुए बताया जाता था। सन १६१५ में गैलीलियो को रोम में पादरियों के सम्मुख उपस्थित होना पड़ा। उनसे पूछा गया, गैलीलियो। क्या यह सत्य है कि तुमने अपनी कक्षाओं में विद्यार्थियों को यह पढ़ाया है कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी घूमती है। गैलीलियो ने कहा, जी हुजूर। फिर पूछा गया, क्या तुमने यह भी विद्यार्थियों को सिखाया है कि ब्रह्मांड का केंद्र पृथ्वी नहीं, सूर्य है? गैलीलियो बोले, जी हां। ऐसा ही कहा है। फिर प्रश्न किया गया, मगर क्या तुम भूल गए कि हमारे धर्मग्रंथों में क्या लिखा है? गैलीलियो बोले, मालूम है, बहुत अच्छी तरह मालूम है। लिखा है कि धरती स्थिर है और सूर्य उसका चक्कर लगाता है। पादरियों ने पुन: प्रश्न किया, फिर भी तुमने इस प्रकार गलत पढ़ाने का दुस्साहस किया? गैलीलियो ने कहा, दुस्साहस नहीं, यह तो सत्य है। जो कुछ मैंने अध्ययनों में पाया उसे सही-सही प्रस्तुत करना तो मेरा कर्त्तव्य था। मैंने असत्य के स्थान पर सत्य को स्थापित करना चाहा था। पादरी बोले, बंद करो अपनी यह बकवास। खबरदार, जो आगे से तुमने अपने बेतुके सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। गैलीलियो ने अपने सिद्धांत को हर तरह से समझाने की कोशिश की, लेकिन वे सुननेवाले नहीं थे। अनावश्यक विरोध से कोई लाभ न होता देख गैलीलियो ने पादरियों की आज्ञा का पालन करने का वचन दिया। लेकिन शांत रहते हुए भी वह अपने अध्ययनों में जुटे रहे, निरंतर अपनी खोज में लगे रहे। आज दुनिया गैलीलियो के सिद्धांत पर ही आगे बढ़ रही है।

७८) सत्य की तलाश में जीना - लाओत्से ने वृद्ध होने के बाद अज्ञात में प्रवेश करने का निर्णय लिया। जब इस बात की जानकारी वहां के सम्राट को हुई तो उन्होंने उनसे कहा कि आपने जो साधना की है और जो अनुभव प्राप्त किए हैं, उन अनुभवों को पहले हमें बताएं, फिर आप यहां से प्रस्थान करें। लाओत्से ने कहा कि मैंने जो कुछ भी पाया है और जो कुछ अनुभव प्राप्त किया है, उसे बताया नहीं जा सकता। सम्राट ने बहुत दबाव डाला, पर लाओत्से बता नहीं पाए।

सम्राट को पता लगा कि बिना कुछ कहे लाओत्से वहां से चले गए हैं तो उन्होंने अपने राज्य की सीमा चैकियों पर सूचित कर दिया कि लाओत्से अपने देश की सीमाओं से बाहर निकलने न पाएं। जहां भी वे मिलें, उन्हें पकड़ लें और उनसे उनके अनुभव लिखवाए जाएं। एक चौकी पर उन्हें पकड़ लिया गया। वहां नियुक्त राज्यकर्मी ने कहा कि अपने जीवन के अनुभवों को लिखे बिना आप नहीं जा सकते। लाओत्से ने कहा कि यही सबसे बड़ी मुश्किल है। सत्य को कभी कहा नहीं जा सकता। जैसे ही सत्य को कहा जाएगा वह असत्य हो जाएगा। राज्यकर्मी ने कहा कि मैं कुछ नहीं जानता। यदि मैंने आपको यहां से जाने दिया तो मुझे मौत की सजा हो जाएगी। मुझे बचाने के लिए ही आप कुछ-न-कुछ लिख दीजिए। कहते हैं कि विवश होकर लाओत्से को लिखना पड़ा और उन्होंने जो कुछ लिखा, उसमें

पहला वाक्य था- सत्य को कहा नहीं जा सकता।

लाओत्से जैसे अनेक मनीषी सत्य को पाने के लिए कठोर साधना करते हैं, जो उन्हें अनुभव होता है वह अलौकिक एवं दिव्य होता है। जब वे उसे व्यक्त करने में, कहने में असमर्थ होते हैं, तब भला हम जैसे लोग सत्य के संदर्भ में क्या कह सकेंगे? सत्य की तलाश में जी सकते हैं, उसे जीवन का ध्येय बना सकते हैं।

७७९) मैगडलन के आंसू - ईसा मसीह को साइमन नाम के एक भक्त ने भोजन के लिए अपने घर आमंत्रित किया। कुछ देर बाद ही मैगडलन नाम की एक महिला ने भी उन्हें भोजन के लिए बुलाया। ईसा मसीह दोनों के ही घर गए। जब वे मैगडलन के घर गए तो उस महिला ने ईसा के चरण पकड़े और उन्हें अपने आंसुओं से धोकर उन पर तेल मला। यह देखकर साइमन को गुस्सा अ गया। मैगडलन दुश्चरित्र थी और उसने ईसा को स्पर्श कर दिया था।

पर वह कुछ कहता उससे पहले ही ईसा बोल पड़े, साइमन, एक महाजन से एक व्यक्ति ने पांच सौ और दूसरे ने पचास मुद्राओं का ऋण लिया। किंतु वे उसे नहीं चुका पाए। महाजन को उन पर दया आई और उसने दोनों का ऋण माफ कर दिया। तो बताओ, उन दोनों में से महाजन की कौन अधिक प्रशंसा करेगा? साइमन ने कहा, जिसने पांच सौ मुद्राओं का ऋण लिया था। ईसा बोले, बिलकुल ठीक विचार हैं तुम्हारे। मैंने तुम्हारे घर में प्रवेश किया, तुमने केवल पधारो कहा। पर इस देवी ने जिसे तुम पापिनी कहते हो, अपने आंसुओं से मेरे चरण धोए। केशों से उन्हें पोंछा। तेल से खुद मेरे पैरों की मालिश करके मेरी थकावट दूर की। इस निष्काम सेवा के कारण इसके सारे पाप खत्म हो गए।

फिर ईसा मैगडलन से बोले, तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं। उपस्थित लोगों ने कहा, दूसरों के पापों को क्षमा करने की आप में शक्ति कहां है? इधर मैगडलन के आंसू झरने की तरह गिर रहे थे। ईसा बोले, यदि किसी व्यक्ति को अपने पापों के लिए पश्चाताप हो तो कोई भी व्यक्ति उसके पापों को क्षमा कर सकता है। इस देवी को विश्वास है कि संत, महात्मा की सेवा से पाप नष्ट हो जाएंगे। तो यह अपने उद्देश्य में सफल हो गई। विश्वास में सत्य की शक्ति होती है। इससे परमात्मा मिल जाते हैं।

७८०) प्रिय खिलाड़ी की सोच - ऑर्थर रॉबर्ट ऐश टेनिस में सर्वोच्च स्तर पर खेलने वाले प्रथम अफ्रीकी- अमेरिकी खिलाड़ी थे। बिंबल्डन जीतने के साथ ही वह तीन ग्रैंड स्लैम जीतनेवाले पहले अश्वेत खिलाड़ी बन गए। विश्व में उनके अनेक चाहनेवाले हो गए। दुर्भाग्यवश एक बार हृदय की शल्यचिकित्सा के दौरान एचआईवी संक्रमित रक्त चढ़ाने के कारण उन्हें एड्स जैसी खतरनाक बीमारी हो गई। जब उनके चाहनेवालों तक यह खबर पहुंची तो वे चकित रह गए।

अपने प्रिय खिलाड़ी को इस बीमारी से संक्रमित देखकर उनके चाहनेवाले उनका हाल-चाल पूछते रहते। रोजाना उनके पास ढेरों पत्र आते थे। एक पत्र में उनके एक फैन ने बीमारी के प्रति दुख व्यक्त करते हुए लिखा, मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि मेरे प्रिय खिलाड़ी को कभी ऐसी बीमारी हो सकती है? ईश्वर ने इस भयंकर बीमारी के लिए आपको ही क्यों चुना? ऐसा करके ईश्वर ने बहुत अन्याय किया है।

ऑर्थर ऐश ने उस पत्र का उत्तर लिखा, प्रिय मित्र, पूरे विश्व में ५ करोड़ बच्चे टेनिस खेलना शुरू करते हैं, ५० लाख खेलना सीख पाते हैं, ५ लाख पेशेवर टेनिस खेल पाते हैं। पचास हजार लोग प्रतियोगिताओं तक पहुंच पाते हैं, ५ हजार

ग्रैंड स्लेम तक, ५० विंबल्डन में, ४ सेमीफाइनल में और केवल २ फाइनल में। इसके बाद इतने लोगों में विजेता कोई एक। जब विंबल्डन कप की ट्रॉफी जीतने के बाद मैंने कभी ईश्वर से नहीं पूछा, मैं ही क्यों? तो आज पीड़ा के समय भी मुझे नहीं पूछना चाहिए कि मैं ही क्यों? बल्कि मैं क्यों नहीं? उनके सकारात्मक दृष्टिकोण ने उन्हें बीमारी से लड़ने का संबल प्रदान किया और इंसानियत के रूप में बहुत ऊपर उठा दिया।

लोगों ने जब उनके इस जवाब को पढ़ा तो उनकी आंखें नम हो गईं। ऑर्थर ऐश का यह जवाब आज भी टूटे हुए लोगों को नई दिशा दिखाता है।

७८१) कैसे आया जूता - एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा सा राज्य था। एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौटकर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़-पत्थर थे, वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए। कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली। उसने राजा से कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूं। इससे अनावश्यक रूप से बर्बाद होनेवाला रुपया बच सकता है। उसने कहा, बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने की बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े से अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनाने का आदेश दे दिया। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए, जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है।

७८२) इंसानियत - एक बार बहुत जोर का अकाल पड़ा। आकाश से एक बूंद पानी न टपका। खेत सूख गये। नदियां सूख गईं। ऐसी दशा हो गई कि न तो पहाड़ों पर सब्जी दिखाई देती थी, न बागों में हरी डालियां। खेत टिड्डियों ने चाट डाले थे। आदमी टिड्डियों को खा गये थे। इन्हीं दिनों मेरा एक मित्र मुझसे मिलने आया। उसकी हड्डियों पर केवल खाल बाकी रह गई थी। उसे देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनवान और अमीर आदमी था। उसके पास सवारी के लिए बीसों घोड़े और रहने के लिए आलीशान हवेलियां थीं। पचासों नौकर थे। मैंने उससे पूछा, तुम्हारी यह हालत कैसे हो गई? वह बोला, आपको क्या इस देश का हाल मालूम नहीं है? कितनी मुसीबतें और आफतें आई हुई हैं। कितना भयंकर अकाल पड़ा हुआ है। हजारों आदमी भूख से मर गये हैं। मैंने कहा, तुमको इस मुसीबत से क्या मतलब? तुम इतने अमीर हो कि अगर ऐसे सैकड़ों अकाल भी पड़े तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वह बोला, आपका कहना सच है, मगर इंसान वही है, जो दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझे। जब मैं लोगों को फाका करते देखता था तो मेरे मुंह में खाने का एक टुकड़ा नहीं उतरता था। इसलिए मैंने अपनी सारी जायदाद और सामान बेचकर पैसा गरीबों और फकीरों में बांट दिया। उस तन्दुरुस्त आदमी का सुख नष्ट हो जाता है, जिसके पास बीमार बैठा हो।

७८३) खुदा का अहसान - एक बार मैं सफर करता हुआ गांव की एक धर्मशाला में रुका। मेरे पैरों में कांटे लग गये थे। पैसे की तंगी के कारण जूता नहीं खरीद सका था। जब मैं कांटे निकाल रहा था तो मुझे बड़ा कष्ट और मानसिक वेदना हो रही थी। सोचता था कि मेरी भी क्या जिन्दगी है कि मुझे जूता तक मअस्सर नहीं हो सका। इतने में ही एक मुसाफिर वहां आया। उसकी एक टांग नहीं थी और वह बगल में लकड़ी लगाकर चल रहा था। उसको देखते ही मैं अपनी तकलीफ भूल गया। मैंने भगवान को धन्यवाद दिया और कहा ऐ खुदा, तूने मुझे जूते नहीं दिये, किन्तु पैर तो दिये। इसके तो पैर भी नहीं है।

७८४) परमात्मा पर ध्यान - मिथिला में एक बड़े ही धर्मात्मा एवं ज्ञानी राजा थे, राजमहल में भारी ठाट-बाट होते हुए भी वे उसमें लिप्त नहीं थे। एक बार एक साधु उनसे मिलने आया। राजा ने साधु का हृदय से सम्मान किया और दरबार में आने का कारण पूछा। साधु ने कहा, राजन, सुना है कि इतने बड़े महल में इतने ठाट-बाट के बीच रहते हुए भी आप इनसे अलग रहते हैं। मैंने वर्षों हिमालय में तपस्या की, अनेक तीर्थों की यात्राएं कीं, फिर भी ऐसा न बन सका। आपने राजमहल में रहकर ही यह बात कैसे साध ली? राजा ने उत्तर दिया, महात्माजी, आप असमय में आये हैं। यह मेरा काम का समय है। आपके सवाल का जवाब मैं थोड़ी देर बाद दूंगा। तब तक आप इस दीये को लेकर मेरे महल को पूरा देख आइये। पर इसका खयाल रखिये कि दीया बुझने न पाये, नहीं तो आप रास्ता भूल जायेंगे। साधु दीया लेकर राजमहल को देखने चल दिए। कई घन्टे बाद वह लौटे तो राजा ने मुस्कराकर पूछा, कहिये स्वामीजी, मेरा महल कैसा लगा? साधु बोले, राजन् मैं आपके महल के हर भाग में गया। सब कुछ देखा, फिर भी वह अनदेखा रह गया। राजा ने पूछा, क्यों? साधु ने कहा, राजन् मेरा सारा ध्यान इस दीये पर लगा रहा कि कहीं यह बुझ न जाय। राजा ने उत्तर दिया, महात्माजी, इतना बड़ा राज चलाते हुए मेरे साथ भी यही बात हे। मेरा सारा ध्यान परमात्मा पर लगा रहता है। चलते-फिरते, उठते-बैठते एक ही बात सामने रहती है कि सब कुछ उसी का है और मैं जो कुछ कर रहा हूं, उसी के लिए कर रहा हूं। साधु राजा के चरणों में सिर झुका कर चले गए।

७८५) ऊंचाई का रास्ता - एक व्यापारी के पास एक नौकर था। वह एक दिन किसी बात पर नाराज हो गया और नौकरी छोड़कर चला गया। इसके बाद व्यापारी कहीं जा रहे थे तो नौकर चुपचाप वहां पहुंचा और व्यापारी पर वार किया। व्यापारी को गहरी चोट आई। कुछ लोगों ने उन्हें उठाया और तुरंत उनकी सेवा में जुट गए। एक व्यक्ति ने दौड़कर नौकर को पकड़ लिया। तभी व्यापारी ने पानी मांगा। लोग दौड़े और पानी ले आए। गिलास जब उनकी ओर बढ़ाया गया तब उन्होंने नौकर की ओर इशारा करके कहा, मुझे नहीं, पहले इसे पिलाओ। देखो न, बेचारा कितना बुरी तरह हांफ रहा है। लोगों ने नौकर की तरफ गिलास बढ़ाया तो उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। व्यापारी ने बड़े प्यार से कहा, भाई मेरे, रोओ मत, गलती हम सबसे ही हो जाती है। पानी पी लो। जो अपनी गलती जान लेता है और फिर न दोहराने का फैसला करता है, वह जिन्दगी में बहुत ऊंचा उठता है।

७८६) प्रधानमंत्री का चुनाव - राजा नृप सिंह के प्रधानमंत्री वृद्ध हो गए थे। राजा ने प्रजा के बीच से किसी योग्य और व्यवहार कुशल व्यक्ति को यह पद देने का निर्णय किया। घोषणा करवा दी गई। प्रधानमंत्री बनने को इच्छुक अनेक लोग

आए। सभी उम्मीदवारों की छंटनी करने के बाद तीन को चुना गया। वे काफी पढ़े-लिखे विद्वान थे पर उनकी व्यवहार कुशलता की परीक्षा के लिए राजा ने उनसे कहा, तुम तीनों को अलग-अलग कमरों में बंद कर दिया जाएगा और बाहर से ताला लगा दिया जाएगा। तुममें से जो भी व्यक्ति आधे घंटे के अंदर ताला खोल कर बाहर आ जाएगा, उसे ही प्रधानमंत्री नियुक्त किया जाएगा। यह सुनकर तीनों हैरत से एक-दूसरे को देखने लगे। उन्हें यह असंभव सी परीक्षा लगी। कुछ देर बाद उन्हें कमरे में बंद कर दिया गया। पहले कमरे में बंद व्यक्ति ने सोचा कि मात्र आधे घंटे में बाहर से बंद ताले को खोलना असंभव है। वह चुपचाप वहां रखे बिस्तर पर लेट गया। दूसरे कमरे में बंद व्यक्ति इधर-उधर घूमता रहा और सोचता रहा कि किस तरह बाहर के ताले को अंदर से खोला जा सकता है। लेकिन उसे भी कुछ नजर नहीं आया। तभी तीसरे कमरे का दरवाजा खुला और बाहर खड़े दूतों ने आवाज लगाई- नए प्रधानमंत्री की जय हो। दोनों कमरों में बंद व्यक्ति बेचैनी से सोचते रहे कि तीसरे व्यक्ति ने दरवाजा कैसे खोला? इसके बाद दोनों उम्मीदवारों को राजा के सामने बुलाया गया। राजा ने कहा, तीसरे उम्मीदवार ने परीक्षा में सफलता पाई है। प्रधानमंत्री को शिक्षित होने के साथ-साथ व्यवहार कुशल होना भी जरूरी है। वास्तव में कमरों में ताला लगाया ही नहीं गया था। केवल तीसरे को छोड़कर आपने इसे खोलने का प्रयास ही नहीं किया। जबकि तीसरे ने इस पर विचार किया कि जब सवाल दिया गया है तो निश्चित समय में ही उसका हल भी आसपास होगा। इसलिए वह विजयी रहा। दोनों उम्मीदवार लज्जित हो गए।

७८७) उदार दृष्टि - पुराने जमाने की बात है। ग्रीस देश के स्पार्टा राज्य में पिडार्टस नाम का एक नौजवान रहता था। वह पढ़-लिखकर बड़ा विद्वान बन गया था। एक बार उसे पता चला कि राज्य में ३०० जगहें खाली हैं। वह नौकरी की तलाश में था ही इसलिए उसने तुरन्त अर्जी भेज दी। लेकिन जब नतीजा निकला तो मालूम पड़ा कि पिडार्टस को नौकरी के लिए नहीं चुना गया था। जब उसके मित्रों को इसका पता लगा तो उन्होंने सोचा कि इससे पिडार्टस बहुत दुखी हो गया होगा, इसलिए वे सब मिलकर उसे आश्वासन देने उसके घर पहुंचे।

पिडार्टस् ने मित्रों की बात सुनी और हंसते-हंसते कहने लगा, मित्रों, इसमें दुखी होने की क्या बात है? मुझे तो यह जानकर आनन्द हुआ है कि अपने राज्य में मुझसे अधिक योग्यतावाले ३०० मनुष्य हैं।

७८८) एक दिन गांधीजी के सान्निध्य में अनोखा विवाह हुआ। वर-वधू दोनों दक्षिण भारत के थे। वेलायुधन त्रिवांकुर के थे और दाक्षायिणी कोचीन की थीं। दोनों सुशिक्षित थे और काम-धंधे से लगे थे। दोनों थे तो हरिजन, लेकिन अलग-अलग जाति के थे; इसलिए शादी करना आसान काम नहीं था। इन झंझटों से बचने के लिए ही वेलायुधन ने गांधीजी की शरण ली। गांधीजी बोले, मैं तो केवल धार्मिक क्रिया करा दूंगा।

अब प्रश्न यह था कि ब्राह्मण कहां से आए? सहसा गांधीजी को परचुरे शास्त्री की याद आई। वे कुष्ठरोगी थे, परंतु थे परम विद्वान। हरिभजन और संस्कृत अध्यापन में अपना समय बिताते थे। उन्होंने यह विवाह कराना स्वीकार कर लिया। ६ दिसंबर, १९४० का दिन विवाह के लिए निश्चित हुआ। शास्त्रीजी की कुटिया के सामने वेदी बनाई गई। वर-वधू दोनों वहीं हाजिर हो गए, लेकिन उन्हें तो अंग्रेजी के अतिरिक्त और कोई भाषा आती नहीं थी। तब शास्त्रीजी अपनी प्रत्येक बात का अंग्रेजी में उलटा करके समझाते थे। संस्कृत के श्लोक वह बहुत धीरे-धीरे बोलते। एक-एक शब्द करके बोलते।

गांधीजी उनको दोहराते। चूंकि कन्यादान तो उन्हीं को करना था, उन्होंने वेलायुधन से कहा, मैं संस्कृत में क्या बोलता हूं, आप समझते हैं? मैं आपको कन्यादान दे रहा हूं। मैं दाक्षायिणी को सेवा के लिए और धर्म-रक्षा के लिए आपको सौंप रहा हूं। इसे आप याद रखेंगे न? इस प्रकार यह अनोखा विवाह समाप्त हुआ।

गांधीजी भी एक नई लग्न-विधि का आविष्कार करके बहुत प्रसन्न थे। न कोई आडंबर, न समय की अधिकता और कैसी गंभीरता से यह काम संपन्न हुआ।

७८९) फर्ज तुम्हारा और मेरा - उम्र होते ही मां-बाप ने तो लड़का डॉक्टर है, यह जानकर ही शादी कर दी थी। तब लड़कियों से पूछने का चलन ही कहां था। शादी के बाद शुरू में तो पति अपने छोटे से दवाखाने में देसी इलाज कर थोड़ा बहुत पैसा जुटा लेते थे, पर विभिन्न तरह के प्रयोगों की सनक ने उन्हें कहीं का न छोड़ा। दूकान तो धीरे-धीरे बंद हो गई, पर सनक बढ़ती ही गई। घर खर्च चलाना भी मुश्किल हो गया। आखिरकार घर चलाने के लिए सविता को बाहर निकलना ही पड़ा। किस्मत से सरकारी स्कूल में नौकरी लग गई व दुगुनी जिम्मेदारी आ गई उसके कंधों पर। फिर भी कभी उफ्फ न की उसने, अपना कर्त्तव्य मानकर निभाती चली गई। अपनी अनेक छोटी-बड़ी इच्छाओं को दबाकर जो मिला, उसी में संतुष्टि का अहसास करते हुए जीवनधारा में बहती रही। आज सेवानिवृत्ति के बाद वही घर का रास्ता कुछ ज्यादा ही लम्बा हो गया था। आते ही पर्स एक ओर पटक कर आराम से चाय बनाकर बैठी ही थी चुस्कियों का आनंद लेने कि पति की बातों ने जैसे चाय में जहर-सा घोल दिया- मैं चाहता था कि तुम बहुत नामी शिक्षक बनो, किताबें लिखो, अवार्ड पाओ। कुछ हद तक तो तुम सफल हुई हो पर पूरी तरह नहीं। सुनकर सुन्न-सी हो गई सविता। मैं भी चाहती थी कि मेरा पति भी कुछ काम करे, इतने बड़े-बड़े न सही, कम-से-कम अपनी पत्नी व बच्चों का खर्च तो उठाए, जो कि तुम्हारा फर्ज भी था।

७९०) बारहसिंगा का भ्रम - एक दिन एक बारहसिंगा तालाब में पानी पी रहा था कि उसकी दृष्टि अपनी परछाईं पर पड़ी। पानी में अपनी छाया देखकर वह सोचने लगा- वाह। मेरे सींग कितने सुंदर हैं। काश, मेरे पैर भी इतने सुंदर होते। तभी उसके कानों में शिकारी कुत्तों की आवाज टकराई। चौंककर वह फुरती से दौड़ा। अपने पैर, जिन्हें वह बदसूरत समझता था उन्हीं की सहायता से वह उछलता-कूदता हुआ दूर पहुंचकर एक झाड़ी में घुस गया, पर शिकारी कुत्ते बढ़ते ही आ रहे थे। किन्तु वह उस झाड़ी से निकलकर आगे न भाग सका। उसके सुंदर सींग झाड़ी की टहनियों में बुरी तरह फँस गए थे। वह निकल भागने की जद्दोजहद में ही था कि तभी शिकारी कुत्ते करीब आ पहुंचे और उसे धर दबोचा। वह सुंदरता किस काम की जिसका कोई उपयोग नहीं हो।

७९१) बुराई के बदले अच्छाई - सन १९३७ के जाड़ों की बात है। पटना जंक्शन पर गाड़ी आकर रुकी तो मोटा कंबल ओढ़े एक प्रौढ़ व्यक्ति तीसरे दरजे के डिब्बे में सवार हुआ। उसी डिब्बे में कुछ मनचले छात्र भी थे। वे लगे उसका मजाक उड़ाने, पर उस व्यक्ति पर मानो उनकी फब्तियों और मजाक का कुछ भी असर नहीं हो रहा था। वह तो खोया सा खामोश बैठा था। तभी उस डिब्बे में टिकट चेकर आया और टिकट चेक करने लगा। उन छात्रों की भी बारी आई, पर उनमें से किसी के पास भी टिकट नहीं था। बिना टिकट यात्रा करने पर चेकर उनको डाँटने लगा। यह देखकर उस व्यक्ति

से रहा नहीं गया। उसने अपनी जेब से किराया चुकाकर चेकर से उन लोगों का पिंड छुड़ाया। सभी छात्र खिसियाए से बगलें झाँकने लगे। वे सोचने लगे, जरूर यह कोई महान व्यक्ति है। गाड़ी स्टेशन पर रुकी और सारा प्लेटफॉम देशरत्न राजेन्द्र बाबू की जय से गूंज उठा। अब जब छात्रों को असलियत का पता चला तो उनकी गरदनें शर्म से झुक गई। महानता वटवृक्ष सी विशाल होती है।

७९२) झूठ का फल - न्यायालय में दो मित्र उपस्थित हुए। नाम था सुंदरलाल और गुंदरलाल। सुंदरलाल जज से बोला, साहब, तीन साल पहले जब मैं अपना घर छोड़कर विदेश गया तो गुंदरलाल को अपना परम मित्र जानकर अपनी हीरे की एक अँगूठी अमानत के रूप में दे गया था। मैंने इससे कहा था कि वह तब तक उस हीरे की अँगूठी को सँभालकर रखे जब तक मैं लौट न आऊँ। पर अब यह कहता है कि इसे अँगूठी के विषय में कुछ नहीं पता। गुंदरलाल अपने दिल पर हाथ रखकर बोला, सरकार। सुंदरलाल झूठ बोल रहा है। मैंने उसकी अँगूठी कभी नहीं ली। हाँ, जब यह यहाँ से गया था तब इसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। जज ने कहा, सुंदरलाल, क्या तुम्हारी इस बात का कोई साक्षी है? उसने कहा, हुजूर। जब मैंने गुंदरलाल को अँगूठी दी उस समय दुर्भाग्य से वहाँ कोई उपस्थित नहीं था, सिवा एक देवदार के पेड़ के, जिसके नीचे हम खड़े थे। गुंदरलाल ने यह सुनकर जवाब दिया, मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि न मैं अँगूठी के विषय में जानता हूं और न इस देवदार के वृक्ष के ही विषय में। जज ने सुंदरलाल से कहा, तुम खेत में वापस जाओ और उस देवदार के पेड़ से एक टहनी लेकर वापस आओ। मैं उसे देखना चाहता हूं। सुंदरलाल चला गया। कुछ देर के बाद जज ने गुंदरलाल से कहा, सुंदरलाल वापसी में इतनी देर कैसे लगा रहा है? तुम जरा खिड़की के पास खड़े होकर देखो तो सही कि वह देवदार की टहनी लिए रास्ते पर आता दिखाई दे रहा है या नहीं। गुंदरलाल ने कहा, मालिक, अभी तो वह उस पेड़ तक भी नहीं पहुंचा होगा। वहाँ तक पहुंचने में उसे कम-से-कम एक घंटा लगेगा। जज ने जब गुंदरलाल का यह तर्क सुना तो सारा माजरा उनकी समझ में आ गया। वे बोले, गुंदरलाल, जितना तुम पेड़ के विषय में जानते हो उतना ही अँगूठी के विषय में भी जानते हो।

७९३) नकल बिना अकल - एक कौआ था। वह रोज नदी किनारे जाता और बगुले को नमस्कार करता। धीरे-धीरे दोनों में दोस्ती हो गई। बगुला मछलियाँ पकड़ता और कौए को खिलाता। बगुला अपने अनोखे ढंग से रोज नई-नई मछलियाँ पकड़ता। कौए को हर दिन नया भोजन मिलता। बगुला आसमान में उड़ता, लेकिन निगाह उसकी बराबर नीचे रहती। मछली दिखाई देते ही वह सरसराता हुआ नीचे आता, अपनी लंबी चोंच पानी में डालता और पैर ऊँचे रख झट से मछली पकड़कर किनारे पर आ बैठता। कौआ यह सब देखता। उसका मन होता कि वह भी ऐसे ही मछलियाँ पकड़े। वह मन ही मन सोचा करता, इसमें कौन सी बड़ी बात है? ऊपर उड़ना, निगाह नीचे की ओर रखना, मछली दिखते ही फौरन नीचे आना, चोंच खोलकर पानी में डालना, औंधा सिर करके पाँव ऊपर की तरफ उठाना। मछली चोंच में नहीं आएगी, तो आखिर जाएगी कहाँ? सब कुछ सोच विचारकर एक रोज कौआ आसमान में उड़ा। बहुत ऊँचा उड़ा। आखिर उसे पानी में एक मछली दिखाई पड़ी। कौआ सरसराता हुआ नीचे आया। पाँव ऊँचे रख, चोंच नीची कर फुरती के साथ मछली पर झपटा; लेकिन मछली वहाँ से खिसक गई। कौए की चोंच काई और जालों

में उलझ गई। पाँव ऊँचे रह गए। कौआ छटपटाने लगा। ऊपर आने की उसने बहुत कोशिश की, पर सिर तो पानी में डूबता चला गया, तभी बगुला वहाँ आ पहुंचा। उसको दया आ गई। उसने बड़ी मुश्किल से कौए को पानी से बाहर खींच निकाला। फिर कौए से कहा- करते हो सो कीजिए नकल न कीजे काग। चोंच फँसेगी जाल में, पाँव रहेंगे काठ। उस दिन से कौआ समझ गया और किसी की भी नकल करना छोड़ दिया।

७९४) गरजने वाले बादल - महात्मा सुकरात यूनान के बहुत बड़े विद्वान और दार्शनिक हुए हैं। कहते हैं, वे जितने शांत स्वभाव के थे, उनकी पत्नी उतनी ही गरम और क्रोध की साक्षात मूर्ति थीं। सुकरात जब भी कोई पुस्तक पढ़ते, वह चिल्ला उठतीं, आग लगे इन मरी पुस्तकों को। इन्हीं के साथ ब्याह कर लेना था। मेरे साथ क्यों किया? एक दिन जब सुकरात अपने कुछ शिष्यों के साथ घर आए तो उनकी पत्नी उन पर बरस पड़ीं। सुकरात शांत बैठे रहे। सुकरात की चुप्पी ने उन्हें और आगबबूला कर दिया। वह तुरंत एक लोटे में घर की नाली से कीचड़ भर लाई और सुकरात के सिर पर उलट दिया। सुकरात के शिष्यों ने सोचा कि अब तो सुकरात अवश्य क्रोधित हो उठेंगे। किन्तु वे हँसकर बोले, देवी, आज तो तुमने पुरानी कहावत झुठला दी। कहते हैं कि गरजनेवाले बादल बरसते नहीं, पर आज देख लिया कि गरजने वाले बरसते भी हैं। उनके एक शिष्य को सुकरात का यह अपमान बरदाश्त न हुआ। वह क्रोध से चिल्लाकर बोला, यह स्त्री तो दुष्ट है। आपके योग्य नहीं है। सुकरात बोले, नहीं, यह मेरे ही योग्य है, क्योंकि यह ठोकर लगा-लगाकर देखती रहती है कि सुकरात कच्चा है या पक्का। इसके बार-बार उत्तेजित करने से मुझे यह भी पता चलता रहता है कि मुझमें सहनशक्ति है या नहीं। शांत स्वभाव स्वस्थ चित्त की निशानी है।

७९५) बापू को चित्रकार की भेंट - महात्मा गांधी देश के अलग-अलग हिस्सों की यात्रा पर थे। घूमते-घूमते वह अपने सहयोगियों के साथ आंध्र प्रांत में जा पहुंचे। एक दिन उन्होंने वहां अपना भाषण समाप्त ही किया था कि दूर से एक नवयुवक अपने हाथों में खादी में लिपटा हुआ कोई सामान लेकर उनकी ओर बढ़ने लगा।

स्वयंसेवकों ने सोचा कि कहीं यह उनका कोई विरोधी तो नहीं है जो सबके सामने उनसे बहस करना चाहता हो या फिर इसकी मंशा बापू पर हमला करने की ही हो। लेकिन नवयुवक तो शांत भाव से मंच की ओर बढ़ा चला आ रहा था। चेहरे पर क्रोध का कोई भाव नहीं था। वह सेवकों से प्रार्थना कर रहा था कि कृपया एक बार बापू से मिलवा दीजिए। बार-बार रोकने पर उसने बताया, मुझे बापू को यह भेंट देनी है, बस। कृपया एक बार मिलने दो। यह सुनकर एक स्वयंसेवक उसे बापू के पास ले गए।

बापू के सामने आने पर उसने खादी में लिपटा हुआ बापू का एक चित्र निकालकर उनके चरणों में रख दिया और बोला, बापू, मै। एक छोटा सा चित्रकार हूं और आपको भेंट देने के लिए ही यह चित्र बनाया है, कृपया इसे स्वीकार करें। बापू अपना वह चित्र देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उनके चेहरे पर भी संतुष्टि के भाव थे। फिर भी हंसते हुए उससे बोले, भाई, इसे मैं कहां ले जाऊंगा। मेरे दिन-रात का कोई ठिकाना नहीं। न घर है न द्वार। चित्रकार नि:शब्द सुन रहा था। गांधीजी ने उसी गंभीरता से कहा, मेरी तरफ से तुम ही इस चित्र को अपने पास रखो। गांधीजी ने उस चित्र पर अपने हस्ताक्षर करके चित्रकार को लौटा दिया। चित्रकार कुछ बोल नहीं सका। बस आदरपूर्वक वह चित्र गांधीजी के हाथों से ग्रहण कर लिया,

मानो यह चित्र बापू ने ही बनाया हो उसके लिए और उसे यह अनमोल उपहार दे रहे हों।

७९६) सरकारी गाड़ी से काम - यह घटना उस समय की है जब लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री थे। एक दिन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के पुत्र सुनील शास्त्री रात को सरकारी गाड़ी से कहीं चले गए। देर रात वह उस गाड़ी से वापस लौटे तो देखा कि पिताजी अभी तक सोए नहीं है और बेचैनी में इधर-उधर घूम रहे हैं। वह तुरंत शास्त्रीजी के पास गए और बोले, पिताजी, आप अभी तक सोए नहीं? इस पर लाल बहादुर शास्त्री बोले, तुम इतनी रात गए सरकारी गाड़ी से कहां आ रहे हो? सुनील सहमते हुए बोले, पिताजी, दरअसल हम लोग ड्राइव पर निकल गए थे।

बेटे की बात सुनकर शास्त्री जी ने कहा, यदि कहीं जाना हो तो सरकारी गाड़ी न ले जाकर घरवाली गाड़ी ले जाया करो। उनकी बात सुनकर सुनील शास्त्री सिर झुकाकर बोले, पिताजी, आज से ऐसी गलती नहीं होगी। मुझे माफ कर दीजिए। इसके बाद सुनील शास्त्री सोने के लिए चले गए। लेकिन लाल बहादुर शास्त्री का काम अभी पूरा नहीं हुआ था। सुबह शास्त्री जी ने ड्राइवर को बुलाकर पूछा, कल शाम हमें दफ्तर से घर छोड़ने के बाद गाड़ी कितने मील चली? ड्राइवर ने माइलोमीटर देखने के बाद बताया कि गाड़ी दफ्तर से छोड़ने के बाद चौंतीस मील चली है।

ड्राइवर की बात सुनकर शास्त्री जी बोले, आगे से ध्यान रखा करो कि सरकारी गाड़ी का प्रयोग केवल सरकारी कार्यों के लिए ही हो, उसे अन्य कार्यों के लिए प्रयोग न किया जाए। यह कहकर उन्होंने अपनी जेब से रुपए निकाले और ड्राइवर को देते हुए बोले, चौंतीस मील चलने का जो खर्चा आया है उसका पता लगाकर रुपए ट्रांसपोर्ट विभाग में जमा करा देना। ड्राइवर उनकी ईमानदारी पर हैरान सा कुछ पल उन्हें देखता रह गया, फिर उनसे पैसे लेकर चल पड़ा उनके आदेश का पालन करने। काश हमारे देश के अन्य नेता भी शास्त्री जी की तरह ईमानदार होते तो शायद अपने देश की सूरत आज कुछ और ही होती।

७९७) मकड़ी से मिली सीख - तब स्कॉटलैंड एक स्वतंत्र राज्य हुआ करता था, जिस पर लोकप्रिय राजा रॉबर्ट ब्रूस का राज था। राज्य में चारों ओर शांति, सुख, समृद्धि फैली हुई थी। राजा ब्रूस अपनी प्रजा के हितों का बहुत ध्यान रखना था, प्रजा भी उससे बहुत प्रेम करती थी। एक दिन इंग्लैंड के राजा ने स्कॉटलैंड पर आक्रमण कर दिया। दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ। इंग्लैंड की सेना शक्तिशाली थी इसलिए रॉबर्ट ब्रूस की हार हो गई और उसे युद्धभूमि छोड़कर भागना पड़ा। स्कॉटलैंड पर इंग्लैंड का कब्जा हो गया।

रॉबर्ट ब्रूस ने हार नहीं मानी वह अपने राज्य को आजाद कराना चाहता था। कुछ दिनों बाद उसने अपनी सेना एकत्र की और इंग्लैंड की सेना पर आक्रमण कर दिया, लेकिन उसे कामयाबी नहीं मिली। रॉबर्ट ब्रूस ने १४ बार प्रयास कर दिया, लेकिन उसे कामयाबी नहीं मिली। अब वह शरीर और मन से पूरी तरह टूट चुका था। उसे लगने लगा था कि वह अब अपने राज्य को कभी आजाद नहीं करा पाएगा। एक दिन वह एक गुफा में छिपा हुआ था। उसने देखा की एक मकड़ी गुफा की छत पर जाला बुनने का प्रयास कर रही है। वह बार-बार गुफा की छत पर चढ़ती और फिसलकर नीचे गिर जाती। यह क्रम लगातार चलता रहा। रॉबर्ट ब्रूस बहुत ही ध्यान से यह सब देख रहा था। मकड़ी बार बार गिरती रही और फिर फिर चढ़ने की कोशिश करती रही। आखिरकार एक समय ऐसा आया जब मकड़ी छत पर चढ़कर जाला बुनने में

कामयाब हो गई।

यह सब देख राजा ब्रूस सोचने लगा कि जब इस मकड़ी ने हार नहीं मानी तो वह क्या इससे भी गया गुजरा है। वह उत्साह से उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी सेना को फिर एकत्र किया और युद्ध छेड़ दी। राजा ब्रूस की मानसिकता पूरी तरह से बदली हुई थी। इस बार उसने युद्ध में जीत हासिल की और अपना खोया हुआ राज्य व सम्मान फिर से प्राप्त कर लिया।

७९८) जवाहरलाल के रफी - रफी अहमद किदवई यूं तो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का जाना-पहचाना नाम हैं, लेकिन उनकी उससे बड़ी पहचान तमाम सीमाओं से परे जाकर लोगों की मदद करने की रही है। उन पर अपने विरोधियों की मदद करने के भी आरोप लगे, मगर उनकी नजर में मानवता पार्टी बंधन से ऊपर की चीज रही। उनकी इस खासियत का जवाहरलाल नेहरू बेहद सम्मान करते थे, मगर एक बार उनके मदद करने से ऐसा हुआ कि पूरी पार्टी ही विचलित हो गई। खुद नेहरू जी भी बेहद परेशान हो गए।

हुआ यह कि रफी साहब ने अपनी पार्टी कांग्रेस के खिलाफ खड़े निर्दलीय उम्मीदवार गोविंद सहाय की आर्थिक मदद कर दी। गोविंद सहाय खुद नेहरू जी के बेहद करीबी थे, लेकिन किसी कारणवश वे कांग्रेस के ही खिलाफ चुनाव लड़ गए। रफी साहब से उनकी अच्छी दोस्ती थी। चुनाव के लिए उन्होंने मदद मांगी जो रफी साहब ने पूरी कर दी। मगर उनकी यह मदद कांग्रेस में भूचाल ले आई। अमूमन रफी साहब के किसी कदम पर उंगली न उठानेवाले नेहरू भी पार्टी के दबाव में आकर रफी साहब को तलब कर बैठे।

कांग्रेस की मीटिंग में रफी साहब पर आरोप लगा कि उन्होंने पार्टी लाइन के विरुद्ध जाकर ऐसे उम्मीदवार की मदद की है, जो कांग्रेस को हराने के लिए खड़ा है। जवाहरलाल जी ने भी रफी साहब से पूछा। रफी साहब बोले, मुझे बेहद अफसोस है। मैं बेहद शर्मिंदा हूं, माफी मांगता हूं। गोविंद सहाय जी से जितनी मदद का मैंने वादा किया था, उतनी मैं नहीं कर पाया। आइंदा से पूरी मदद करने की कोशिश करूंगा। यह कहकर रफी साहब बैठ गए और जवाहरलाल नेहरू खूब मुस्कुराए, क्योंकि रफी साहब के दिल को एक वह ही तो समझते थे। यह किरदार था हमारे पूर्वजों का, जिसे हमें सीखकर दोस्त हो या दुश्मन, हर एक की मदद करने के लिए आगे आना चाहिए।

७९९) आखिर सुधर गया डाकू - एक डाकू गुरु नानक देव के पास आया और उनके चरणों में माथा टेकते हुए बोला, मैं डाकू हूं, अपने जीवन से तंग आ गया हूं। मैं सुधरना चाहता हूं, मेरा मार्गदर्शन कीजिए। मुझे अंधकार से उजाले की ओर ले चलिए। नानक देव जी ने कहा, तुम आज से चोरी करना और झूठ बोलना छोड़ दो, सब ठीक हो जाएगा। डाकू उन्हें प्रणाम करके चला गया। कुछ दिनों बाद वह फिर आया और कहने लगा, मैंने झूठ बोलने और चोरी करने से मुक्त होने का भरसक प्रयत्न किया लेकिन मुझसे ऐसा न हो सका और चाहकर भी मैं स्वयं को बदल नहीं सका। आप मुझे कोई और उपाय बताइए। गुरु नानक देव ने सोच-विचार कर डाकू के सुधरने के उपाय बताए। उन्होंने कहा, तुम्हारे मन में जो आए करो, लेकिन दिन भर झूठ बोलने, चोरी करने और डाका डालने के बाद शाम को लोगों के सामने किए हुए कामों का बखान कर दो। डाकू को यह उपाय सरल जान पड़ा। इस बार वह काफी दिनों तक नानक देव के पास नहीं आया। वह दिनभर चोरी करता, डाका डालता और जिसके घर में चोरी करता उसकी चौखट

पर यह सोचकर पहुंचता कि नानक देव ने कहा था कि अपने दिनभर के कर्म का बखान करके आना। लेकिन अपने बुरे कामों के बारे में लोगों को बताने में बहुत संकोच करता और आत्मग्लानि से पानी-पानी हो जाता। वह बहुत हिम्मत करता कि अपने किए को बता दे, लेकिन वह बता नहीं पाता था। हताश-निराश मुंह लटकाए एक दिन फिर वह नानक देव के पास आया। अब तक न आने का कारण बताते हुए उसने कहा, मैंने तो उस उपाय को बहुत आसान समझा था, लेकिन वह तो बहुत कठिन निकला। लोगों के सामने अपनी बुराइयां कहने में लज्जा आती हैं। इसलिए मैंने बुरे काम करना ही छोड़ दिया। डाकू पूरी तरह सुधर चुका था।

८००) वह तो इंसान है - बात उन दिनों की है, जब भारत भूषण पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित सेंट्रल कॉलेज बनारस में प्रो. रिचर्डसन नामक अंग्रेज प्रधानाचार्य थे। बनारस में रहते हुए रिचर्डसन पर भारतीय संस्कृति और भारतीय जीवन दर्शन का बड़ा प्रभाव पड़ा। वह लगातार दर्शन और अध्यात्म का अध्ययन करते और उसी राह पर स्वयं भी चलने की कोशिश करते। धीमे-धीमे उनका जीवन सात्विक होता गया और किसी संत की ही तरह वह सच्चा और सात्विक जीवन जीने लगे। भगवत चिंतन हो या नीति नियम, लगभग हर क्षेत्र में उन्होंने अपने आपको भारत की आध्यात्मिकता से आत्मसात कर लिया।

एक वक्त ऐसा आया, जब बनारस में लोग उन्हें भारतीय ही मानने लगे। उन्होंने अपनी मृत्यु से पूर्व इच्छा व्यक्त की, मेरे पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार घाट पर पूर्ण वैदिक विधि से किया जाए। जून १९१२ में जब उनकी मृत्यु हुई तो उनका अग्नि संस्कार करने के लिए उन्हें गंगा घाट पर ले जाया गया। गंगा घाट पर कुछ विद्वान पंडित वैदिक रीति से संस्कार करने में आनाकानी करने लगे। भारत रत्न डॉ. भगवानदास भी वहीं थे। जब डॉ. भगवानदास ने पंडितों को अग्नि संस्कार के लिए आनाकानी करते देखा तो उन्होंने रामायण का एक प्रसंग सुनाया।

वह प्रसंग था गिद्धराज जटायु के बारे में, जिसे रावण ने मार दिया था। लेकिन जटायु का दाह संस्कार स्वयं भगवान राम ने किया था। डॉ. भगवानदास बोले, जब एक पक्षी गिद्धराज जटायु का अग्नि संस्कार स्वयं भगवान राम ने वेद मंत्रों से किया, तो रिचर्ड तो फिर भी मानव हैं। हम इनका अग्नि संस्कार न करके अपनी छोटी मनोवृत्ति का ही परिचय देंगे और कृतघ्न कहलाएंगे। डॉ. भगवानदास के इस चिंतन के आगे सबको झुकना पड़ा और प्रो. रिचर्डसन के पार्थिव शरीर का वैदिक विधि से अग्नि संस्कार संपन्न हुआ।

८०१) कंकड़ हैं ये हीरे - विजयनगर के कृष्णदेव राय ने राजगुरु व्यास राय से संत पुरंदर दास के सादगी भरे जीवन और लोभहीन मन की प्रशंसा सुनी, तो उन्होंने संत की परीक्षा लेने की ठानी। एक दिन संत को बुलाकर उन्हें भिक्षा में चावल दिए गए। संत बोले, महाराज। प्रतिदिन मुझे इसी तरह कृतार्थ किया करें। घर लौटकर पुरंदर दास ने भिक्षा की झोली पत्नी सरस्वती देवी के हाथ में दे दी। जब वह चावल बीनने बैठी तो देखा कि उसमें छोटे-छोटे हीरे हैं। उसने पति से पूछा, आज भिक्षा कहां से लाए हैं? पति ने कहा, राजमहल से। संत पत्नी ने वे हीरे घर के पास ही बने घूरे में फेंक दिए। अगले दिन भी सम्राट ने फिर से झोली में चावल के साथ हीरे डाल दिए। ऐसा एक सप्ताह चला। सप्ताह के अंतिम दिन राजा ने व्यास राय से कहा, महाराज। आप कहते थे पुरंदर जैसा बैरागी दूसरा नहीं, मगर मुझे तो वे लोभी

लगे। यदि विश्वास न हो तो उनके घर चलिए और सच्चाई देख लीजिए। दोनों संत की कुटिया पहुंचे तो देखा कि तुलसी के पौधे के समीप सरस्वती देवी चावल बीन रही हैं। कृष्णदेव राय ने पूछा, बहन। चावल बीन रही हो? सरस्वती देवी ने कहा, हां भाई। क्या करूं, कोई गृहस्थ भिक्षा में ये कंकड़ डाल देता है, इसलिए बीनना पड़ता है। ये कहते हैं कि भिक्षा देनेवाले का मन न दुखे, इसलिए प्रसन्न मन भिक्षा ले लेता हूं। राजा बोले, बहन। तुम बड़ी भोली हो। यह कंकड़ नहीं, मूल्यवान हीरे हैं। इस पर सरस्वती देवी ने कहा, आपके लिए ये हीरे होंगे, हमारे लिए तो कंकड़ ही हैं। हमने जब तक धन के आधार पर जीवन व्यतीत किया, तब तक हमारी दृष्टि में ये हीरे थे। जब से भगवान विठोबा का आधार लिया है ये हीरे हमारे लिए कंकड़ हैं। यह कहते हुए वह हीरों को उसी घूरे पर डाल आईं। यह देख व्यास राय दंग रह गए और कृष्णदेव राय सरस्वती के चरणों में झुक गए।

८०२) झंडे - डॉक्टर साहब मरीजों को देख रहे थे। सरकारी अस्पताल है तो भीड़ भी काफी थी। मुफ्त या बहुत सस्ते इलाज की उम्मीद में बहुत दूर-दूर से मरीज यहां इलाज कराने आते हैं।

रामअवतार चपरासे ने आवाज दी। कोई उत्तर नहीं। रामअवतार कौन है यहां पर? इस बार उसकी आवाज में झुंझलाहट थी। आयेन साहेब एक साठ साल के बुजुर्ग जो इस वक्त घर से लाई पूरी सब्जी खाने में जुटे थे, हाथ कुर्ते में ही पोछते हुए लगभग दौड़ पड़े। सुनते क्यों नहीं? जाइए अंदर... चपरासी ने हिकारत की नजर से देखा। बुजुर्ग सर झुकाए केबिन में दाखिर हो गये। क्या परेशानी है? डॉक्टर मोबाइल में आंखें गड़ाये किसी से चैट करने में व्यस्त थे। सांस फूलती है डॉक्टर साहेब। बूढ़े ने हाथ जोड़ दिये। कोई धुएं वाला काम तो नहीं करते न साहेब। ठीक है दवा लिख देता हूं। अचानक अस्पताल परिसर में भूचाल आ गया। एक-एक करके कई लग्जरी गाड़ियां परिसर में घुस गईं। हर तरफ अफरा-तफरी का माहौल। ऐ हटो.. हटो तुम सब। नंगे भूखे। जाने कहां-कहां से चले आते हैं। रौब का असर हुआ। सारी मरीजों की भीड़ तितर-बितर हो गई। रास्ता बन चुका था। उन्हीं में से तीन-चार लोग धड़धड़ाते हुए डॉक्टर के केबिन में घुस गये। डॉक्टर कौन है? मैं हूं। बताएं हमारा एक पेशेंट गंभीर हालत में है। आप उसका इलाज तुरंत के तुरंत शुरू करिये। मगर हुआ क्या? दंगा दंगा कहां कब कैसे? डॉक्टर के चेहरे की रंगत बदल गयी। ये डॉक्टर ज्यादा पूछताछ नहीं। अपने काम से काम रखो। बहुत काम का आदमी है वो। अगर उसे कुछ हुआ तो तुम्हारी खैर नहीं। धमकी... डॉक्टर के चेहरे की हवाइयां उड़ने लगीं। डॉक्टर साहेब हमारी दवाई। बुजुर्ग घिघियाये भाड़ में गई तुम्हारी दवाई। जाओ कल आना। बहुत दूरि से आये हम साब। बूढ़े ने हाथ जोड़ दिये। कितनी दूर से? स्वर्ग से तो नहीं। बूढ़ा बैठा ही रह गया। बद्हवास डॉक्टर ने बाहर निकल कर देखा असंख्य झंडे अस्पताल परिसर में मंडरा रहे थे।

८०३) चीटियों में एकता का गुण होता है - ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना की है। उन्होंने तरह-तरह के जीवधारी उत्पन्न किये हैं। प्राणियों को तरह-तरह के सद्गुण प्रदान किये हैं। जब कोई मनुष्य अपने सुरीले कंठ से कुछ गाता है तो हम कह उठते हैं यह तो कुदरत का वरदान हैं।

एक बार चींटियों को लगा कि उनमें कोई सद्गुण नहीं है अत: ईश्वर के पास जाकर शिकायत करनी चाहिए। ऐसा सोचकर चींटियां एक बार ईश्वर के पास पहुंच गईं। बोलीं- प्रभु। आपने सबको कुछ न कुछ दिया है। सिंह गर्जना करता

है, उसी से सब डरते हैं, गाय दूध देती है सो लोग उसकी पूजा करते हैं। कुत्ते भी रखवाली करके मालिक की प्रशंसा पाते हैं। लेकिन हम लोगों को तो आपने ऐसा कोई गुण दिया ही नहीं। ईश्वर ने जवाब दिया- दूसरों की तरह मैंने, तुम्हें भी एक गुण दिया है और वह है एकता का, यह एक ऐसा गुण है कि जिससे तुम दुनिया पर राज कर सकती हो।

बस, जवाब सुनकर चीटियां लौट गईं। तबसे अब तक चीटियां आपस में जब कभी मिलती हैं तो थोड़ी देर के लिए अटकती हैं। शायद पूछती हैं कब होगा हमारा राज?

८०४) जरूरी है खुद में सुधार - पुराने समय की बात है। शिष्य ने दर्पण में देखा कि उसके गुरुजी के मन में मोह, अहंकार, क्रोध आदि बुरी बातें हैं। यह देखकर शिष्य को दुख हुआ, क्योंकि वह अपने गुरुजी को सभी बुराइयों से रहित समझता था। शिष्य दर्पण लेकर गुरुकुल से रवाना हुआ। उसने अपने मित्रों और परिचितों के सामने दर्पण रखकर परीक्षा ली। शिष्य को सभी के मन में कोई न कोई बुराई दिखाई दी। उसने अपने माता-पिता की भी दर्पण से परीक्षा ली। माता-पिता के मन में भी उसे कुछ बुराइयां दिखाई दीं। यह देखकर शिष्य को बहुत दुख हुआ और इसके बाद वह एक बार फिर गुरुकुल पहुंचा। गुरुकुल में शिष्य ने गुरुजी से कहा कि गुरुदेव, मैंने इस दर्पण की मदद से देखा कि सभी के मन में कुछ न कुछ बुराई जरूर है। तब गुरुजी ने दर्पण का रुख शिष्य की ओर कर दिया। शिष्य ने दर्पण में देखा कि उसके मन में भी अहंकार, क्रोध जैसी बुराइयां हैं। गुरुजी ने शिष्य को समझाते हुए कहा कि यह दर्पण मैंने तुम्हें अपनी बुराइयां देखकर खुद में सुधार करने के लिए दिया था। दूसरों की बुराइयां देखने के लिए नहीं। जितना समय दूसरों की बुराइयां देखने में लगाया, उतना समय खुद को सुधारने में लगाया होता तो अब तक तुम्हारा व्यक्तित्व बदल चुका होता। हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि हम दूसरों की बुराइयां जानने में ज्यादा रुचि दिखाते हैं। जबकि खुद को सुधारने के बारे में नहीं सोचते हैं। हमें दूसरों की बुराइयों को नहीं, बल्कि खुद की बुराइयों को खोजकर सुधारना चाहिए। तभी जीवन सुखी हो सकता है।

८०५) मोह किससे और क्यों? - एक बार किसी धनी व्यक्ति ने स्वामी जी को कीमती दुशाला भेंट दिया स्वामीजी ऐसी वस्तुओं के शौकीन नहीं थे लेकिन भक्त के आग्रह पर उन्होंने भेंट स्वीकार कर ली। उस दुशाले को क़भी वे चटाई की तरह बिछाकर सोते तो कभी ओढ़ लेते। दुशाले का ऐसा उपयोग उनके एक शिष्य से नहीं देखा गया। उसने स्वामी जी से कहा- यह तो बहुत मूल्यवान दुशाला है। आप जिस तरह इसका उपयोग कर रहे हैं, उस तरह तो यह जल्दी खराब हो जाएगा। स्वामी जी ने मुस्कुराकर जवाब दिया- जब मैंने जीवन की समस्त मोह माया को त्याग दिया है, तो भला इस कपड़े से कैसा मोह? क्या अपना ध्यान भगवान से हटाकर इस दुशाले पर लगाना उचित होगा? यदि मैं ऐसा करता हूं, तो यह कहां की बुद्धिमानी होगी? ऐसा कहकर उन्होंने दुशाले का एक कोना जला दिया और शिष्य से बोले- अब न तो यह दुशाला मूल्यवान रहा और न ही सुंदर। अब तुम्हारे मन में भी इसके लिए मोह नहीं रहेगा। और तुम अपना सारा ध्यान ईश्वर की साधना में लगा सकोगे। यह सुनकर शिष्य निरुत्तर हो गया। उसे समझ आ गया कि वह जितनी जल्दी सांसारिक वस्तुओं से मोह त्यागेगा, उतनी जल्दी सुखी जीवन के निकट पहुंच पाएगा।

८०६) तेनालीराम की सूझबूझ - विजयनगर राज्य में कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। राजा कृष्णदेव राय के दरबार में इस डंठ की बहुत चर्चा हुई। पुरोहित ने महाराज को सुझाया। महाराज, यदि इन दिनों यज्ञ किये जाये, तो उसका फल

उत्तम होगा। दूर-दूर तक उठता यज्ञ का धुआं सारे वातावरण को स्वच्छ और पवित्र कर देगा। दरबारियों ने एक स्वर में कहा, बहुत उत्तम सुझाव है पुरोहित जी का। महाराज को यह सुझाव अवश्य पसंद आया होगा। यह सुनकर महाराज कृष्णदेव राय ने कहा, ठीक है। आप आवश्यकता के अनुसार हमारे कोष से धन प्राप्त कर सकते हैं।

महाराज, यह महान यज्ञ सात दिन तक चलेगा। कम से कम एक लाख स्वर्ण मुद्राएं तो खर्च हो ही जाएंगी। प्रतिदिन सवेरे सूर्योदय से पहले मैं नदी के ठंडे जल में खड़े होकर तपस्या करूंगा और देवी-देवताओं को प्रसन्न करूंगा और अगले ही दिन से यज्ञ शुरू हो गया। इस यज्ञ में दूर-दूर से हजारों लोग आते और ढेरों प्रसाद बंटता।

पुरोहितजी यज्ञ से पहले सुबह-सवेरे कड़कड़ाती ठंड में नदी के ठंडे जल में खड़े होकर तपस्या करते, देवी-देवताओं को प्रसन्न करते। लोग यह सब देखते और आश्चर्यचकित होते। एक दिन राजा कृष्णदेव राय भी सुबह-सवेरे पुरोहितजी को तपस्या करते देखने के लिए गये। उनके साथ तेनालीराम भी था। ठंड इतनी थी कि दांत किटकिटा रहे थे। ऐसे में पुरोहितजी को नदी के ठंडे पानी में खड़े होकर तपस्या करते देख राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम से कहा, आश्चर्य, अद्‌भुत करिश्मा है। कितनी कठिन तपस्या कर रहे हैं हमारे पुरोहितजी।

राज्य की भलाई की उन्हें कितनी चिंता व परवाह है। वह तो है ही, आइए महाराज, जरा पास चलकर देखें पुरोहितजी की तपस्या को। तेनालीराम ने कहा। परंतु पुरोहितजी ने तो यह कहा है कि तपस्या करते समय कोई पास ना आये, इससे उनकी तपस्या में विघ्न पैदा होगा। राजा ने कहा। तो महाराज हम दोनों ही कुछ देर तक उनकी प्रतीक्षा कर लें। जब पुरोहितजी तपस्या समाप्त करके ठंडे पानी से बाहर आयें, तो फल-फूल देकर उनका सम्मान करें।

राजा कृष्णदेव राय को तेनालीराम की यह बात जंच गयी। वह एक ओर बैठकर पुरोहित को तपस्या करते देखते रहे। काफी समय गुजर गया, लेकिन पुरोहितजी ने ठंडे पानी से बाहर निकलने का नाम तक ना लिया। तभी तेनालीराम बोल उठा। अब समझ में आया। लगता है ठंड की वजह से पुरोहितजी का शरीर अकड़ गया है। इसीलिए शायद इन्हें पानी से बाहर आने में कष्ट हो रहा। मैं इनकी सहायता करके आता हूं।

तेनालीराम नदी की ओर गया और पुरोहितजी का हाथ पकड़कर उन्हें बाहर खींच लाया। पुरोहितजी के पानी से बाहर आते ही राजा हैरान रह गये। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था, वह बोले, अरे पुरोहितजी की तपस्या का चमत्कार तो देखो। इनकी कमर से नीचे का सारा शरीर नीला हो गया।

तेनालीराम हंसकर बोला। यह कोई चमत्कार नहीं है, महाराज यह देखिए, सर्दी से बचाव के लिए पुरोहितजी ने धोती के नीचे नीले रंग का जलरोधक पायजामा पहन रखा है। राजा कृष्णदेव राय हंस पड़े और तेनालीराम को साथ लेकर अपने महल की ओर चल दिये। पुरोहित दोनों को जाते हुए देखता रह गया।

८०७) आसक्ति की स्थिति में ध्यान कैसे लगेगा ? - एक शिष्य ने अपने गुरु से कहा- मेरा मन ध्यान में नहीं लग रहा, मैंने बहुत कोशिश की, पर मैं हार गया हूं। आप ही मार्ग बताइए। गुरुदेव ने उस पर गंभीर दृष्टि डालकर कहा, तुम ठीक कहते हो, यहां ध्यान लगेगा भी नहीं। चलो, कहीं और चलकर साधना करते हैं। हम आज सायंकाल ही यह स्थान छोड़ देंगे। सूर्यास्त होने के साथ ही गुरु और शिष्य किसी अन्य स्थान ही ओर चल पड़े। गुरु के साथ में एक कमंडल था और

शिष्य के हाथ में एक झोला था।

गुरु बिल्कुल शांत भाव से चल रहे थे और शिष्य झोले को अत्यंत यत्नपूर्वक संभालते हुए सावधानी से चल रहा था। मार्ग में एक कुआं दिखाई दिया। शिष्य को प्यास लगी। उसने गुरुजी से पानी पीने को कहा। दोनों ने वहां रुककर पानी पिया। फिर शिष्य ने शौच की इच्छा व्यक्त की। उसने बहुत सावधानी के साथ अपना झोला गुरु के पास रखा और शौच के लिए चल दिया। जाते-जाते उसने कई बार झोले की ओर देखा।

जब वह उस स्थान से चला गया और शौच से निवृत्त हुआ ही था कि उसे एक जोरदार आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा कि कोई भारी वस्तु कुएं में फेंकी गई है। वह तेजी से दौड़ता हुआ आया और अपना झोला टटोल कर देखा। फिर रुआंसे स्वर में बोला, गुरुजी, इसमें सोने की ईंट थी। उसका क्या हुआ? गुरुदेव ने शांति से जवाब दिया, कुएं में चली गई। अब हम भी वहीं लौटकर चलते हैं, जहां से चले थे। अब तुम्हें ध्यान न लगने की चिंता नहीं रहेगी। आसक्ति का मन से पूरी तरह परित्याग किए बिना कोई भी व्यक्ति ईश्वर में मन नहीं लगा सकता।

अब शिष्य का स्वर्ण के प्रति लगाव मिट चुका था। अब मन एकाग्र होने लगा। मन की खटपट मिटते ही वो ध्यान से जुड़ने लगा। अब मन ध्यान में डूबने लगा।

शिष्य का दिन-ब-दिन प्रभु चिंतन बढ़ने लगा। वह असीम आनंद और शांति को पा गया। शिष्य ने गुरु के पास जाकर उनके चरणों में बार-बार वंदन किया और कहा, हे गुरुदेव आपकी कृपा से मेरा मन निर्मल हो गया। आज मैंने स्वर्ण से भी कहीं अधिक, जिसका कोई मोल नहीं है, उस ज्ञान-ध्यान व ईश को पा लिया है।

८०८) सच्चा पुरुषार्थ - बात उन दिनों की है जब स्वामी विवेकानंद की चर्चा दुनिया भर में फैल चुकी थी। उनके कथन-उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ, तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए- चारों ओर चर्चित हो रहे थे। उन्हें एक आदर्श के रूप में स्थापित होता देख एक विदेशी महिला बहुत प्रभावित हुई। उसने स्वामी विवेकानंद से विवाह करने का मन बना लिया। वह हरदम उन्हीं के बारे में सोचती रहती। एक सम्मेलन में हिस्सा लेने स्वामी विवेकानंद उसके शहर आएंगे, यह खबर महिला को मिली तो उसने मन ही मन उनसे मुलाकात करने की ठान ली। निश्चित दिन वह उस स्थान पर जा पहुंची जहां सम्मेलन हो रहा था। महिला स्वामी विवेकानंद जी के समीप जाकर निर्भीकता से बोली, स्वामीजी मैं आपसे विवाह करना चाहती हूं। स्वामी विवेकानंद जी ने उससे पूछा, क्यों? विवाह तुम आखिर मुझसे ही क्यों करना चाहती हो? क्या तुम यह नहीं जानती कि मैं एक संन्यासी हूं? महिला ने पूरी विनम्रता के साथ कहा, देखिए, बात यह है कि मैं आपके जैसा ही गौरवशाली, सुशील और तेजमय पुत्र चाहती हूं। और वह तभी संभव होगा जब आप मुझसे विवाह करेंगे। यह सुनकर स्वामी विवेकानंद ने उत्तर दिया, देखो हमारी शादी तो संभव नहीं है, परंतु एक उपाय अवश्य है। महिला बोली, कैसा उपाय? स्वामी विवेकानंद बोले कि आज से मैं ही आपका पुत्र बन जाता हूं और आप मेरी मां बन जाएं। आपको मेरे जैसा पुत्र मिल जाएगा। विवेकानंद की इस बात ने उस महिला की आंखें खोल दीं। उसने कहा, स्वामी जी आपने अपने संन्यास की महत्ता बनाए रखते हुए मेरी समस्या भी सुलझा दी। धन्य हैं आप और धन्य है आपका वह ज्ञान जो आपके व्यक्तित्व को रोशन किए हुए है, जिसकी रोशनी पूरे संसार में फैल रही है। मैं आपको

पुत्र रूप में तो नहीं स्वीकार कर सकती लेकिन आपकी शिष्या जरूर बनी रहूंगी आजीवन।

८०९) मैरी क्यूरी का इंटरव्यू - बालिका मेरी के पिता भौतिकी के शिक्षक थे और माता एक विद्यालय में मुख्य अध्यापिका थी। वह पढ़ाई के साथ-साथ घर के कामकाज में भी हाथ बंटाती थी। मैरी काफी मेधावी छात्र थीं। उनका विवाह गणित के प्रोफेसर पियरे क्यूरी के साथ हुआ और वह मैरी क्यूरी कहलाने लगी। वह वैज्ञानिक के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी भी थीं। सन १९०३ में भौतिकी के नोबेल पुरस्कार के लिए वैज्ञानिकों में संयुक्त रूप से हेनरी बेकेरल और प्रोफेसर पियरे क्यूरी के साथ मेरी क्यूरी का भी नाम था। इसके आठ साल बाद यानी कि सन १९११ में मैरी क्यूरी को स्वतंत्र रूप से रसायन में नोबेल पुरस्कार मिला। चारों तरफ उनके नाम की चर्चा थी, लेकिन त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति मैरी क्यूरी को अपनी प्रसिद्धि में अरुचि थी। एक बार एक संवाददाता उनसे मिलने के लिए उनके घर पर पहुंचा। संवाददाता ने देखा कि घर के एक कोने में एक महिला बैठी हुई कोई काम कर रही है। संवाददाता को लगा कि वह घर की नौकरानी है और उसने सवाल किया, क्या आप यहां पर काम करती हैं? उस महिला ने जवाब दिया, जी हां, कहिए क्या बात है? आगंतुक ने फिर पूछा, क्या मालकिन घर पर हैं? उस महिला ने कहा, नहीं, वह बाहर गई है। क्या, वह जल्दी ही लौटेगी? महिला ने जवाब दिया, शायद नहीं। तो क्या आप उनके बारे में कुछ बता सकती हैं? अपने काम में मग्न वह महिला लगातार संवाददाता के प्रश्नों का जवाब दे रही थीं। अब मैरी क्यूरी से रहा नहीं गया, उन्होंने कहा, वह बता गई हैं कि अगर कोई आए और उनके बारे में पूछे तो बस इतना कह देना कि किसी व्यक्ति के बारे में लोगों को उत्सुक होने की अपेक्षा उनकी विचारधाराओं में उत्सुकता रखनी चाहिए। संवाददाता अनभिज्ञ था कि जिस महिला से वह संवाद कर रहा था, वह स्वयं मैरी क्यूरी थीं।

८१०) त्याग में सुख - राजा बृजेंद्र बड़े प्रतापी और धार्मिक थे। उन्हें कोई संतान नहीं थी। उन्हें चिंता लगी रहती थी कि उनके बाद इस राज्य का क्या होगा? गुरु माधवाचार्य ने उन्हें पुत्रेष्टि यज्ञ कराने की सलाह दी। राजा ने यज्ञ तो किया ही, यज्ञ की समाप्ति पर गरीबों और ब्राह्मणों को भोजन कराया और उन्हें दक्षिणा भी दी। उनका आशीर्वाद धरती से लेकर आकाश तक छा गया। तभी आकाशवाणी हुई, राजन्। तुम्हारे भाग्य में अपना पुत्र नहीं है। तुम किसी सत्पात्र को अपना पुत्र बना लो। आकाशवाणी ने राजा बृजेंद्र को चिंता में डाल दिया। उन्हें कोई सत्पात्र दिखाई नहीं पड़ रहा था। राजा की कसौटी भी अद्भुत थी। वह मानते थे कि मनुष्य में दूसरे के दुखों को अपना दुख समझने का गुण अवश्य होना चाहिए। दोपहर का समय था। राजा बृजेंद्र खिड़की के पास बैठकर बाहर की ओर देख रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि फटे कपड़े पहने एक युवक ने पत्तल में कुछ रोटियां रखकर खाना शुरू किया। सहसा एक वृद्ध व्यक्ति उसके पास पहुंचा और उससे रोटियां मांगने लगा। उस युवक ने अपनी पत्तल उठाकर उसे दे दी। राजा बृजेंद्र को लगा, जिसकी उन्हें तलाश थी, यह वही है। वह उसे आदर सहित अपने महल में ले आए। उसे सुंदर आसन पर बैठने को कहा, परंतु वह धरती पर बैठ गया। राजा बृजेंद्र उस युवक से बोले, मैं आपको अपना दत्तक पुत्र बनाकर संपूर्ण राज्य भार से मुक्त होना चाहता हूं। वह युवक बोला, मैं आपका दत्तक पुत्र तो बन सकता हूं, लेकिन राज्य ग्रहण नहीं कर सकता। मैं राज्य लेकर क्या करूंगा? त्याग ही मोक्ष है। राजा बृजेंद्र प्रसन्न होकर बोले, तुम ही मेरे दत्तक पुत्र के योग्य हो। मेरी आंखें खुल गई हैं। त्याग ही सुख है। फिर

राजा बृजेंद्र ने उसे राज्य सौंप दिया और रानी के साथ भिक्षुक बनकर प्रचार करने लगे।

८११) मिनट का मोल - बात आजादी के आंदोलन के वक्त की है। पूरा देश गांधीजी के पीछे रामधुन गाते हुए चल पड़ा था। इसी बीच गांधी जी उत्तर प्रदेश का दौरा करने निकले। इस दौरान लगभग रोज ही उनका दिन रेल में सफर करते हुए बीतता था। अपनी आदत के अनुसार गांधी जी रेल के तीसरे दर्जे में बैठे हुए थे। उस वक्त उनका पौत्र कांति भी उनके साथ ही था। तेज गति से चलती गाड़ी में भी गांधी जी अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त थे और अपने साप्ताहिक पत्रों यंग इंडिया और नवजीवन के लिए लेखों में काट-छांट कर रहे थे। उनके आसपास उनकी सीट पर हर तरफ पत्रिकाएं और कागज तितर-बितर पड़े थे। इन्हीं कागजों के नीचे कहीं गांधीजी की घड़ी भी दबी हुई थी। जब गांधीजी को वक्त देखने की जरूरत पड़ी तो उन्होंने अपनी घड़ी खोजनी शुरू की। काफी खोजबीन के बाद जब उन्हें घड़ी दिखाई नहीं दी तो उन्होंने कांति से समय पूछा। कांति ने बताया- बाबा, पांच बजे है। तभी गांधीजी की नजर भी कांति की घड़ी पर पड़ी तो उन्होंने देखा कि अभी तो पांच बजने में एक मिनट शेष है। इस पर उन्होंने तनिक रोष से कांति से कहा, जरा ठीक से देखकर बताओ, क्या बजा है? कांति ने ध्यान से देखते हुए बताया- जी, अभी पांच बजने में एक मिनट शेष है। गांधी जी फिर बोले- मगर तुमने तो अभी कोई दूसरा ही समय बताया था। अगर अनुमान ही लगाना है तो फिर घड़ी रखने से क्या लाभ। तीस करोड़ मिनटों को जोड़ो तो देखना कितने महीने, दिन और घंटे बनते हैं। तुम सत्य ही बोल देते तो क्या हो जाता। यह एक गलत आदत है जो बाद में एक जाती है और चाहे- अनचाहे हमें नुकसान देती है। यह सत्य की अवहेलना ही है। आगे से ऐसी लापरवाही ना हो, इसका ध्यान रखना।

८१२) न निराश करो मन को - वह वर्ष २०१० का अगस्त था। चिली की एक खदान में ५४ वर्षीय खनिक लुइस उर्जुआ एक दिन शिफ्ट लीडर के रूप में काम पर गए। उनके साथ तैंतीस लोगों का दल भी था। ये सभी जमीन से दो हजार फुट नीचे काम कर रहे थे। अचानक एक सुरंग धंस गई और पूरा दल खान में फंस गया। दुनिया को लगा कि कोई भी नहीं बचेगा। जमीन के नीचे भी सारे मजदूर डर गए। ऐसे में लुइस उर्जुआ बोले, व्यक्ति केवल तब मरता है, जब वह हार मान लेता है। इसलिए मरने का इंतजार करने के बजाए खुद को जिंदा निकालने की कोशिश की जाए, तो हम सब बच सकते हैं। एकजुट रहने से बाहर निकलने के उपाय मिल जाएंगे। खदान में राशन उपलब्ध रहता था, क्योंकि कई बार श्रमिक कई-कई दिनों तक वहीं काम करते थे। लुइस ने खदान में रखे राशन को ऐसे बांटा कि सभी उसके माध्यम से केवल जीवित रह सकें। अगर सारा राशन तुरंत खत्म हो जाता तो लोग दम तोड़ देते। उधर बाहर की दुनिया में बेहतरीन खनिक नीचे फंसे लोगों को बचाने में लगे थे। लगभग ६० दिनों के अंदर सभी व्यक्तियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। हर ओर खुशी की लहर दौड़ पड़ी।

सभी ने इसका श्रेय लुइस उर्जुआ को दिया, जिसने कठिन वक्त में सभी को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी ली थी। खदान से बाहर निकलने के बाद लुइस उर्जुआ मजबूत नेतृत्व वाले प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व के रूप में विश्व में प्रसिद्ध हो गए। जब उर्जुआ से इस बारे में बात की गई तो वे बोले, कठिन परिस्थितियों में बस एक ही बात मेरे अंदर घूम रही थी कि थोड़ी सी बुद्धिमत्ता और साहस इस मुश्किल समय को स्वर्णिम इतिहास में बदल सकता है। मैंने वही करने का प्रयास किया और सब

हो गया। कठिन समय में भी साहस और बुद्धि का साथ न छोड़ा जाए तो सफलता तय है।

८१३) छोटी बात, बड़ा इतिहास - आविष्कारक एडविन लैंड को नए-नए आविष्कार करना बेहद पसंद था। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वे छोटी से छोटी बात को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। एक दिन उनकी बेटी उनके पास आई और बोली, पिताजी, आप बहुत व्यस्त रहते हैं। मुझे आपके साथ घूमना है। मेरा आपके साथ घूमने का बहुत मन करता है। उस समय एडविन एक महत्वपूर्ण आविष्कार में लगे थे। नन्ही बेटी की बात सुनकर उन्होंने उसे तुरंत गोद में उठाया और सारा काम छोड़कर बोले, अगर ऐसा है तो हम कल ही घूमने चलते हैं। नन्ही बच्ची यह सुनकर खुशी से झूम उठी।

अगले दिन ही एडविन अपनी पत्नी व बच्ची को लेकर घूमने चले गए। प्राकृतिक वादियों को देखकर बच्ची चहक कर इधर-उधर घूमने लगी। तभी एडविन ने बेटी की मुस्कराती हुई तस्वीर खींच ली। तस्वीर खिंचती देख बच्ची बोली, दिखाइए न मेरी तस्वीर कैसी आई है? एडविन बोले, बेटा, अभी इस तस्वीर को निकालने में समय लगेगा। यह सुनकर बच्ची जिद करते हुए बोली, क्या कोई ऐसा कैमरा नहीं बनाया जा सकता जिससे तस्वीर को तुरंत कैमरे से बाहर निकाला जा सके और तस्वीर देखी जा सके?

एडविन ने अपनी बेटी की इस छोटी सी बात को गंभीरता से लिया और वापस आकर इसके आविष्कार में जुट गए। उनकी मेहनत रंग लाई और पांच साल बाद उन्होंने इंस्टेंट कैमरे का आविष्कार कर दिया। उनका यह आविष्कार कुछ ही समय में बेहद प्रसिद्ध हो गया। एडविन ने अपने इस आविष्कार का श्रेय अपनी बेटी को दिया और कहा, मेरा तो यही मानना है कि छोटे-छोटे कामों को गंभीरतापूर्वक किया जाए, सुना जाए और हर छोटी खुशी का आनंद उठाया जाए तो बड़ी खुशियां स्वयं ही जीवन का एक अंग बन जाती हैं। छोटे-छोटे काम ही बड़ी सफलता का इतिहास रचते हैं।

८१४) सच्चे शासक की पहचान - महान सम्राट नेपोलियन एल्वा छोड़कर जब पारिकल्की ओर जा रहे थे, तब उनके एक सेनापति मरचेरा ने उनसे विद्रोह करते हुए छह हजार सैनिकों के साथ उनका रास्ता रोका। नेपोलियन के साथ इतनी कम सेना नहीं थी कि सरलता से पराजित की जा सके। किंतु नेपोलियन ने कहा, मैं अपने ही देशवासियों का रक्त नहीं बहाना चाहता। उन्होंने आत्मसमर्पण का निर्णय लिया। अपनी सेना छोड़कर नेपोलियन घोड़े पर चढ़कर अकेले शत्रु सेना की ओर चल पड़े। शत्रुसेना से सौ हाथ दूर आकर उसने घोड़ा भी छोड़ दिया और पैदल ही आगे बढ़े।

जब वे शत्रु सेना से केवल दस हाथ दूर रह गए तो सेनापति मरचेरा ने नेपोलियन पर गोली चलाने की आज्ञा दी। एक उंगली हिलती और फ्रांस का भाग्य बदल जाता। किंतु कोई उंगली नहीं हिली। सेनापति के आदेश पर सैनिकों ने ध्यान ही नहीं दिया। अब नेपोलियन ने गंभीर स्वर में कहा, सैनिकों, तुममें से कोई अपने सम्राट की हत्या करना चाहे तो अपनी इच्छा पूरी कर ले। मैं यहां खड़ा हूं। लेकिन एक-एक करके सभी सैनिकों ने अपनी बंदूकें नीचे गिरा दीं। पूरी सेना स्वयं नि:शस्त्र हो गई। सैनिक पुकार रहे थे- सम्राट नेपोलियन की जय।

मरचेरा यह देख चकित हो गया। नेपोलियन ने एक बूढ़े सैनिक की दाढ़ी आदरपूर्वक हिलाकर कहा, तुमने मुझे मारने को बंदूक उठाई थी? सैनिक के नेत्र भर आए। उसने अपनी बंदूक दिखाते हुए कहा कि बंदूक में गोली ही नहीं थी।

नेपोलियन अपनी सेना की निष्ठा एवं शासक के प्रति वफादारी देखकर गर्वित हो गए। यदि नेपोलियन अपने अद्भुत साहस का प्रदर्शन न करते और युद्ध करते तो संभव था कि हजारों सैनिकों को अपने प्राण गंवाने पड़ते। सच्चे शासक की पहचान ऐसे साहसिक निर्णयों से बनती है।

८१५) सूरा सो पहचानिए - वह पुर्तगाल की सेना में एक छोटे से अफसर थे। उनकी जिंदगी सुख से बीत रही थी। धीरे-धीरे वह पुर्तगाल में सालाजार के बेहद भरोसेमंद जनरल बन गए। जाहिर है यह तरक्की उन्हें आसमान की ओर ले जाती क्योंकि जनरल बनने के बाद उनके पास असीम अधिकार आ गए थे। एक रोज उन्हें सालाजार की उन जेलों के बारे में पता चला जिनसे वह अब तक अनजान थे। उन्हें पता चला कि उनके देश में ऐसी जेले हैं जिनमें उनके नागरिक वर्षों से कैद हैं और भयंकर यातनाएं पा रहे हैं।

उन्हें पता चला कि उन जेलों में तैनात विशेष सिपाही विश्व में यातना देने के लिए कुख्यात हैं तो उन्होंने सेना को त्यागकर जनता को इनसे बचाने का निश्चय किया। कल तक जो सेना उनके इशारों पर थी, अब वह उनकी दुश्मन हो गई। उन्हें पुर्तगाल छोड़कर भागना पड़ा, दूसरे देशों से उन्होंने देश में इस अत्याचार के विरुद्ध क्रांति शुरु की, मगर जल्द ही अल्जीरिया में उन्हें धोखे से पकड़ लिया गया। देश ने उनके सामने आत्मसमर्पण करके माफी मांगने का विकल्प रखा, जिसे उन्होंने ठुकरा दिया। उनको भी उसी यातना गृह में भेज दिया गया, जहां रोज बेंत से उन्हें पीटा जाता और चीखने भी नहीं दिया जाता।

यातना सहते हुए भी वह न तो टूटे और न ही झुके। यातना से उन्होंने जेल में ही दम तोड़ दिया। वह थे अमर हो चुके जनरल हंबरटो डेलगाडो जिनके ये शब्द हमेशा सबक देनेवाला इतिहास हो गए, एक योद्धा, राजनीतिक पैशाचिकता से लड़कर, अपने देशवासियों के लिए अपना सुख, वैभव और प्रतिष्ठा दांव पर लगाकर उनकी रक्षा करता है। एक योद्धा अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध लड़ते-लड़ते अपनी जान न्योछावर कर देता है, तब ही वह योद्धा कहलाता है।

८१६) गांधी जी के लिए - एक दिन एक व्यक्ति गांधी जी के दर्शन के लिए आया। उसके पास टिन की एक संदूकची और छोटा सा बिस्तर था। उसने आते ही गांधी जी के पैर पकड़ लिए। वह रोता रहा। गांधी जी के पांव छोड़ने को तैयार ही नहीं था। शांत होने पर उसने अपनी संदूकची खोली और उसमें से सौ का नोट और हाथ से काता थोड़ा सा सूत निकाला और गांधी जी को देते हुए बोला, मेरी कामनाएं पूरी हो गईं। मैं मारवाड़ से आ रहा हूं। काम तो मैं कुछ नहीं करता, केवल आपका नाम जपता हूं। उसने कहा, मैं पैसेवाला आदमी हूं, पर अब फकीर हूं। सब छोड़ दिया है, जायदाद बच्चों में बांट दी है। मुझे अपने आश्रम में काम दे दीजिए। गांधीजी मजाक में बोले, सारी जायदाद बांट दी और मेरे लिए कुछ नहीं छोड़ा? वह बोला, सर्वस्व आपका है। लड़कों ने तो मुझे केवल पांच सौ रुपये दिए हैं। यह कहकर उसने सारे रुपये गांधी जी के सचिव महादेव भाई देसाई को दे दिए। गांधी जी हंसते हुए बोले, भाड़े के लिए तो कुछ रख लेते। वह बोला, महात्मा जी, सबकुछ आपका है।

गांधी जी ने पूछा कि अब क्या करोगे? उसने कहा, केवल आपकी सेवा में रहना चाहता हूं। गांधी जी ने महादेव भाई से उसके रुपये वापस करने को कहा। लेकिन उसने रुपया लेने से इनकार कर दिया। इस पर गांधी जी बोले, जितना मैं

चाहता हूं, क्या उतना दे दोगे? मुझे एक करोड़ रुपये चाहिए। बोलो, दोगे? गांधी जी का वह दीवाना बोला, मैं दूंगा। मुझे भगवान के पास हुंडी भेजनी होगी। सांवरिया शाह जब नरसी मेहता की हुंडी स्वीकारता है तो उसे मेरी भी हुंडी स्वीकारनी होगी। यह सुनकर गांधी जी बोले कि कितना अच्छा हो कि सारे धनी तुम्हारे जैसे ही उदार हों। तुमने तो मुझे अपना सर्वस्व दे डाला। तुम्हारी इस बात के सामने तो बड़े-बड़ दान छोटे हैं।

८१७) और बुखार उतर गया - एक दिन महात्मा गांधी लोगों से कुछ बातचीत कर रहे थे, तभी एक युवक उनके पास आया और श्रद्धावश गांधी जी को नमस्कार करते हुए उनके चरणों में झुक गया। उसे अपने चरणों में झुकते देखकर गांधीजी ने पूछा, भाई, क्या बात है? क्या किसी समस्या का समाधान चाहते हो? यह सुनकर युवक बोला, महात्मा जी, मेरी समस्या का समाधान तो मात्र आपका नाम लेने से ही हो गया। कई दिनों से मैं ज्वर से पीड़ित था। दवाई भी चल रही थी, लेकिन जैसे ही मैंने आपका नाम लिया, वैसे ही ज्वर तेजी से उतर गया। अब मैं स्वस्थ महसूस कर रहा हूं। आप सचमुच चमत्कारी हैं। मात्र आपका नाम लेने से जब बुखार उतर सकता है तो अन्य समस्याएं तो स्वत: ही सुलझ जाएंगी। मैं आपका शुक्रिया अदा करने आया हूं।

यह कहकर उसने गांधी जी के पास कुछ रुपए रख दिए और बोला, मेरी तरफ से यह भेंट स्वीकार करें। गांधी जी ने उसके रुपये लौटाते हुए बोले, भाई, माना कि मुझे याद करने से आपका बुखार उतर गया। इसलिए आप मुझे चमत्कारी मान रहे हैं। यदि आपका बुखार नहीं उतरता तो फिर तो आप मुझे जी भरकर कोसते। किसी व्यक्ति का स्मरण करने से बुखार दूर हो जाएगा, या समस्या का हल हो जाएगा- यह मात्र मन का वहम और अंधविश्वास है। मैं अंधविश्वास की ऐसी या कैसी भी धारणा को नापसंद करता हूं। कृपा करके आप मेरे नाम का स्मरण न करके अपने कर्म में विश्वास रखें तो ज्यादा अच्छा होगा। आपका बुखार मेरा नाम स्मरण करने से दूर नहीं हुआ है, अपितु आपके द्वारा भली-भांति इलाज करने से दूर हुआ है। गांधी जी की बातें सुनकर युवक ने निश्चय किया कि वह अपने मन में अंधविश्वास की धारणा नहीं पालेगा। उसने वहीं संकल्प लिया कि वह अंधविश्वास से आजीवन लड़ेगा।

८१८) मां को भी दी सीख - मां पुतलीबाई प्यार से मोहन को मोनिया कहकर पुकारतीं। मोहन भी अपनी मां को बहुत चाहता था। बचपन से मोहन की बुद्धि बहुत तेज थी। वह सवाल पूछ-पूछ कर मां को परेशान कर डालता। मोहन के घर में एक कुआं था। कुएं के चारों ओर पेड़ पौधे लगे हुए थे। कुएं के कारण बच्चों का पेड़ पर चढ़ना मना था।

मोहन सबकी आंख बचा, जब-तब पेड़ पर चढ़ जाता। एक दिन उसके बड़े भाई ने मोहन को कुएं के पासवाले पेड़ पर चढ़े देखा। उन्होंने मोहन से कहा कि मोहन, तुझे पेड़ पर चढ़ने को मना किया था। पेड़ पर क्यों चढ़ाहै ? चल नीचे उतर। इस पर मोहन ने कहा, नहीं, हम नहीं उतरेंगे। हमें पेड़ पर मजा आ रहा है। क्रोधित भाई ने मोहन को चांटा मार दिया।

रोता हुआ मोहन मां के पास पहुंचा और बड़े भाई की शिकायत करने लगा, मां, बड़ेभइया ने हमें चांटा मारा। तुम भइया को डांटो। मां काम में उलझी हुई थी। मोहन मां से बार-बार भाई को डांटने की बात कहता गया। तंग आकर मां कह बैठीं, उसने तुझे मारा है न? जा, तू भी उसे मार दे। मेरा पीछा छोड़, मोनिया। तंग मत कर। आंसू पोंछ मोहन ने कहा, तुम तो कहती हो अपने से बड़ों का आदर करना चाहिए। भइया मुझसे बड़े हैं। मैं बड़े भइया पर हाथ कैसे उठा सकता हूं? हां, तुम

भइया से बड़ी हो। तुम उन्हें समझा सकती हो कि वह मुझे न मारें।

मोहन की बात सुन मां को अपनी भूल समझ में आ गई। काम छोड़ मां ने मोहन को सीने से लगा लिया। उनकी आंखों से खुशी के आंसू बह चले। बोलीं, मोनिया, आज तूने अपनी मां की भूल बता दी। हमेशा सच्चाई और ईमानदारी की राह पर चलना, मेरे लाल। वही मोनिया आगे चलकर मोहन दास करमचंद गांधी यानी बापू के रूप में पूरी दुनिया में मशहूर हुए।

८१९) ❋ गांधीजी एक बार स्वास्थ्य लाभ के लिए बेंगलुरु के पास नंदी पर्वत पर जाकर ठहरे थे। उस समय एक बालिका विद्यालय की लड़कियां उनसे मिलने आई थी। उनसे विनोद करते हुए गांधीजी ने पूछा, क्या तुम्हें मालूम है कि खद्दर क्या चीज है? क्या वह एक सुंदर चिड़िया है या कोई सुंदर खिलौना है?

गांधीजी के इस विनोद पर वे लड़कियां हंस पड़ीं। एक ने कहा, खद्दर माने कपड़ा। सहसा विनोद परीक्षा में बदल गया। गांधीजी ने पूछा, कैसा कपड़ा।

लड़कियां यह रहस्य नहीं जानती थीं, कई क्षण मौन रहीं। फिर एक लड़की ने कहा, खुरदरा कपड़ा।

उन्हें खद्दर का अर्थ समझाते हुए गांधीजी बोले, हाथ के सूत का हाथ से बुना कपड़ा खद्दर कहलाता है। अच्छा, बताओ इसे क्यों पहनना चाहिए? लड़कियों ने अपनी-अपनी समझ से उत्तर देने शुरु किए, किसी ने कहा, यह टिकाऊ है किसी ने कहा, यह जल्दी साफ हो जाता है।

गांधीजी ने कहा, यह तो ठीक है, लेकिन इसे क्यों पहनना चाहिए, इसका और क्या कारण है। क्या तुम जानती हो, खद्दर का सूत कौन कातता है? अमीर लोग? नहीं, इसे कातते हैं गरीब लोग। हमारे देश के लोग बहुत गरीब हैं। क्या तुम कहीं देहातों में गई हो? जाओ तो देखोगी कि उन्हें पेट भर खाने को भी नहीं मिलता। दूध भी नहीं मिलता। ऐसे ही लोग इसे कातते हैं। उससे उन्हें एक दमड़ी भी मिले तो उनके लिए सौभाग्य की बात है। अगर तुम खद्दर खरीदोगी तो वही दमड़ी उन्हें मिलेगी। उससे वे नमक, मिर्च या गुड़ आदि खरीदेंगे। तो मालूम हुआ कि क्यों खद्दर पहनना है?

८२०) ज्ञान - क्षमा बड़न को चाहिए - समर्थ रामदास चाफल से सतारा जा रहे थे। साथ में दत्तूबुवा भी थे। मार्ग में दत्तूबुवा बोले, महाराज कुछ खाने की व्यवस्था करने जा रहा हूं। वह समीप के खेत से ज्वार के चार भुट्टे तोड़ लाए। जब उन्होंने भुट्टों को भूनना शुरू किया, तो धुआं निकलता देख खेत का मालिक पाटिल वहां आ पहुंचा। चुराए हुए भुट्टे देखकर उसे बहुत गुस्सा आया। दत्तूबुवा के मन में विचार आया कि वह प्रतिकार करें, किंतु रामदास जी ने वैसा न करने का इशारा किया। थोड़ी देर बाद उन्हें गालियां देता हुआ पाटिल लौट गया। दत्तूबुवा को पश्चाताप हुआ कि उनके कारण व्यर्थ ही संत को मार खानी पड़ी। दूसरे दिन वे लोग सतारा पहुंचे। समर्थ की पीठ पर डंडे के निशान देख लोगों में कानाफूसी होने लगी। छत्रपति शिवाजी ने जब इस संबंध में स्वामी से पूछा, तो उन्होंने पाटिल को बुलवाने को कहा। पाटिल वहां उपस्थित हुआ। जब उसे मालूम हुआ कि जिन्हें उसने कल पीटा था, वह राजा शिवाजी के साक्षात गुरु थे, तब वह बेहद डर गया कि न मालूम, उसे कौन-सा दंड दिया जाएगा। शिवाजी ने समर्थ से पूछा, महाराज इसे क्या दंड दूं? पाटिल ने स्वामी जी के चरणों पर गिरकर क्षमा मांगी। समर्थ बोले, राजा, इसने कोई गलत काम नहीं किया है। हमारी मानसिक शांति की परीक्षा पाटिल के अलावा और कोई नहीं कर पाया, इस कारण कीमती वस्त्र देकर इसका सम्मान करना चाहिए। इसका दंड यही है।

८२१) रसायन - बारिश थम गई। घोंसले से चिड़िया निकली। तीनों बच्चों ने बाय-बाय किया और कहा- माँ जल्दी आना। चिड़िया भरोसा देकर उड़ गई। एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से कहा- हमें बारिश से बचाने के कारण मां के पूरे पंख भीग गये पर हमें एक बूंद पानी ना लगने दिया। तीसरे बच्चे ने कहा- हां, माँ के पंख फैलाने पर ही मैं ठण्डी हवा व बारिश से बच पाया। दूसरे बच्चे ने कहा- ये सब तो ठीक है लेकिन मां, गीले पंखों से ठीक से उड़ भी पा रही होगी या नहीं। दूसरे बच्चे के कहते ही तीनों ने घोंसले से झाँका, मौसम सुहाना लगा लेकिन माँ ने सख्त हिदायत दी थी कि घोंसले से बाहर कतई न निकलना अभी तुम्हें उड़ना भी कहाँ आता है? तीनों चुपचाप इंतजार कर रहे थे कि कुछ देर में चिड़िया दाना लेकर आ गई। तीनों की चोंच दानों से भरकर, चिड़िया फिर उड़ गई। चिड़िया ने अब हरे-ताजे दाने की खोज में उड़ान भरी। मक्के के खेत से कुछ दाने चुनकर, बच्चों के पास लौटी। बच्चे हरे-हरे ताजे दाने खाये और सो गये। चिड़िया थक गई थी। पास में लगे पेड़ से कुछ जामुन खाये और शाम को घोंसले में लौटी। तीनों बच्चे अभी भी सोये हुए थे। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा कौन-सा रसायन किसान ने मक्के पर छिड़का था जिससे मेरे बच्चे दुनिया देखे बिना ही जिंदगी भर के लिए सो गये।

८२२) मुनादी बनी परेशानी - एक बार राजा कृष्णदेव राय से पुरोहित ने कहा- महाराज, हमें अपनी प्रजा से सीधे जुड़ना चाहिए, वे पुरोहित की बात समझ न पाये। तब पुरोहित ने बात समझाते हुए कहा- दरबार में जो भी चर्चा होती है, हर सप्ताह उसे चर्चा की प्रमुख बातें जनता तक पहुंचायी जाये। मंत्री ने कहा- महाराज, विचार अच्छा है। तेनालीराम जैसे चतुर व्यक्ति ही इस कार्य को कर सकते हैं। राजा ने तेनालीराम को यह काम सौंप दिया। तय हुआ- तेनालीराम प्रजा-हित की सारी बातें, जो राज दरबार में होंगी, चौराहों पर मुनादी करा कर जनता और प्रजा को उन बातों की सूचनाएं देंगे। तेनालीराम समझ गया कि मंत्री ने उसे जबरदस्ती फंसाया है। उसने एक योजना बनायी। सप्ताह के अंत में उसने मुनादी करने के लिए एक पर्चा मुनादीवाले को पकड़ा कर कहा- जाओ और मुनादी करा दो। मुनादीवाला मुनादी करते हुए बोला- महाराज चाहते हैं कि दरबार में किये गये फैसलों को नगरवासी जानें। उन्होंने तेनालीराम को यह काम सौंपा है। ध्यान से सुनो। महाराज ने पुरोहित जी से न्याय-व्यवस्था के बारे में जानना चाहा किंतु वह दरबार में बैठे ऊंघ रहे थे। उन्हें देखकर महाराज ने भरे दरबार में पुरोहित जी को फटकारा। सीमाओं की सुरक्षा पर चर्चा हुई किंतु सेनापति उपस्थित नहीं थे, इस कारण चर्चा आगे न हो सकी। राजा ने मंत्री को कड़े आदेश दिये हैं कि राजदरबार में सारे सभासद ठीक समय पर आयें। इस प्रकार जगह-जगह मुनादी होने लगी। हर मुनादी में तेनालीराम की चर्चा होती थी। यह बात मंत्री, सेनापति और पुरोहित के कानों में भी पहुंची। वे तीनों बड़े चिंतित हो गये, कहने लगे- तेनालीराम ने सारी बाजी उलटकर रख दी। वह जानबूझकर हमें बदनाम कर रहा है। दूसरे ही दिन मंत्री ने कहा- महाराज, संविधान कहता है कि राजकाज की बातें गोपनीय होती हैं। जनता या प्रजा को बताना ठीक नहीं। तेनालीराम ने कहा- आपको भी तभी याद आया, जब आपने नाम का ढोल पिट गया। सारे दरबारी हंस पड़े मंत्री जी की शक्ल देखने लायक थी। राजा कृष्णदेव राज भी तेनालीराम की सराहना कर रहे थे।

८२३) रवींद्रनाथ की अहिंसा की दृष्टि - एक बहुत अद्‌भुत घटना मुझे याद आती हैं। गांधीजी रवींद्रनाथ के पास मेहमान थे। सांझ को घूमते निकलते थे, तो रवींद्रनाथ ने कहा; रुकिए, मैं थोड़े बाल बना आऊं। एक बूढ़ा आदमी बाल

बनाए। गांधीजी की समझ के बिलकुल बाहर है। उन्होंने कहा- बाल। लेकिन रवींद्रनाथ से कुछ कह भी न सके। कोई और होता तब तो वह उपदेश देते, लेकिन रवींद्रनाथ को उपदेश देना जरा मुश्किल था। दस पंद्रह मिनट हुये। आधा घंटा हुआ। रवींद्रनाथ बाहर आते नहीं हैं। गांधीजी समय को लेकर बहुत सतर्क। गांधीजी का गुस्सा बढ़ता चला गया। भीतर जाकर देखा, वे आदमकद आईने के सामने बड़े मंत्रमुग्ध बाल संवार रहे हैं।

गांधीजी ने कहा; आप और इस उमर में बाल संवार रहे हैं? आप यह कर क्या रहे हैं? तो रवींद्रनाथ ने कहा कि जब मैं जवान था तो बिना संवारे भी चल जाता था, जबसे बूढ़ा हो गया, तबसे संवारना पड़ता है और फिर मैं सड़क पर निकलूं और किसी को असुंदर मालूम पड़ूं तो भी मैं मानता हूं, मैंने दूसरे को दुख पहुंचाया। वह मेरी दृष्टि में हिंसा ही है। मैं सड़क पर चलूं और किसी को अच्छा लगूं तो मैं उसे मानता हूं, मैंने सुख पहुंचाया। वह मेरी दृष्टि में अहिंसा है।

गांधीजी की पकड़ में ऐसी अहिंसा कभी नहीं आ सकती थी। लेकिन रवींद्रनाथ कुछ बात बड़ी कीमती ही कह रहे हैं। गांधीजी की अहिंसा से कहीं ज्यादा कीमत अहिंसा की बात कह रहे हैं। वह यह कह रहे हैं कि आपकी आंख को भी मैं अप्रीतिकर लगूं, अरुचिकर लगूं, बेहूदा लगूं तो मैंने आपको चोट पहुंचाई हैं। मैं आपको प्रीतिकर लगूं, आनंदपूर्ण लगूं अच्छा है।

८२४) मूर्खों का साथ हमेशा दुखदायी - विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय जहां कहीं भी जाते, जब भी जाते, अपने साथ हमेशा तेनालीराम को जरूर ले जाते थे। इस बात से अन्य दरबारियों को बड़ी चिड़ होती थी। एक दिन तीन-चार दरबारियों ने मिलकर एकांत में महाराजा से प्रार्थना की, महाराज, कभी अपने साथ किसी अन्य व्यक्ति को भी बाहर चलने का अवसर दें। राजा को यह बात उचित लगी। उन्होंने उन दरबारियों को विश्वास दिलाया कि वे भविष्य में अन्य दरबारियों को भी अपने साथ घूमने-फिरने का अवसर अवश्य देंगे।

एक बार जब राजा कृष्णदेव राय भेष बदलकर कुछ गांवों के भ्रमण को जाने लगे तो अपने साथ उन्होंने इस बार तेनालीराम को नहीं लिया बल्कि उसकी जगह दो अन्य दरबारियों को साथ ले लिया। घूमते-घूमते वे एक गांव के खेतों में पहुंच गए। खेत से हटकर एक झोपड़ी थीं, जहां कुछ किसान बैठै गपशप कर रहे थे। राजा और अन्य लोग उन किसानों के पास पहुंचे और उनसे पानी मांगकर पीया। फिर राजा ने किसानों से पूछा, कहो भाई लोगों, तुम्हारे गांव में कोई व्यक्ति कष्ट में तो नहीं? अपने राजा से कोई असंतुष्ट तो नहीं है? इन प्रश्नों को सुनकर गांववालों को लगा कि वे लोग अवश्य ही राज्य के कोई अधिकारीगण हैं। वे बोले, महाशय, हमारे गांव में खूब शांति है, चैन है। सब लोग सुखी हैं। दिनभर कड़ी मेहनत करके अपना कामकाज करते हैं और रात को सुख की नींद सोते हैं। किसी को कोई दुख नहीं है। राजा कृष्णदेव राय अपनी प्रजा को अपनी संतान की तरह प्यार करते हैं, इसलिए राजा से असंतुष्ट होने का सवाल ही नहीं पैदा होता।

इस गांव के लोग राजा को कैसा समझते हैं? राजा ने एक और प्रश्न किया। राजा के इस सवाल पर एक बूढ़ा किसान उठा और ईख के खेत में से एक मोटा-सा गन्ना तोड़ लाया। उस गन्ने को राजा को दिखाता हुआ वह बूढ़ा किसान बोला, श्रीमान जी, हमारे राजा कृष्णदेव राय बिल्कुल इस गन्ने जैसे हैं। अपनी तुलना एक गन्ने से होती देख राजा कृष्णदेव सकपका गए। उनकी समझ में यह बात बिल्कुल भी न आई कि इस बूढ़े किसान की बात का अर्थ क्या है? उनकी यह भी

समझ में न आया कि इस गांव के रहनेवाले अपने राजा के प्रति क्या विचार रखते हैं?

राजा कृष्णदेव राय के साथ जो अन्य साथी थे, राजा ने उन साथियों से पूछा, इस बूढ़े किसान के कहने का क्या अर्थ है? साथी राजा का यह सवाल सुनकर एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। फिर एक साथी ने हिम्मत की और बोला, महाराज, इस बूढ़े किसान के कहने का साफ मतलब यही है कि हमारे राजा इस मोटे गन्ने की तरह कमजोर हैं।

उसे जब भी कोई चाहे, एक झटके में उखाड़ सकता है। जैसे कि मैंने यह गन्ना उखाड़ लिया है। राजा ने अपने साथी की इस बात पर विचार किया तो राजा को यह बात सही मालूम हुई। वह गुस्से से भर गए और इस बूढ़े किसान से बोले, तुम शायद मुझे नहीं जानते कि मैं कौन हूं? राजा की क्रोध से भरी वाणी सुनकर वह बूढ़ा किसान डर के मारे थर-थर कांपने लगा। तभी झोपड़ी में से एक अन्य बूढ़ा उठ खड़ा हुआ और बड़े नम्र स्वर में बोला- महाराज, हम आपको अच्छी तरह जान गए हैं, पहचान गए हैं, लेकिन हमें दुख इस बात का है कि आपके साथी ही आपके असली रूप को नहीं जानते। मेरे साथी किसान के कहने का मतलब यह है कि हमारे महाराज अपनी प्रजा के लिए तो गन्ने के समान कोमल और रसीले हैं किंतु दुष्टों और अपने दुश्मनों के लिए महानतम कठोर भी। उस बूढ़े ने एक कुत्ते पर गन्ने का प्रहार करते हुए अपनी बात पूरी की। इतना कहने के साथ ही उस बूढ़े ने अपना लबादा उतार फेंका और अपनी नकली दाढ़ी-मूछें उतारने लगा। उसे देखते ही राजा चौंक पड़े। तेनालीराम, तुमने यहां भी हमारा पीछा नहीं छोड़ा।

तुम लोगों का पीछा कैसे छोड़ता भाई? अगर मैं पीछा न करता तो तुम इन सरल हृदय किसानों को मौत के घाट ही उतरवा देते। महाराज के दिल में क्रोध का ज्वर पैदा करते, सो अलग। तुम ठीक कह रहे हो, तेनालीराम। मूर्खों का साथ हमेशा दुखदायी होता है। भविष्य में मैं कभी तुम्हारे अलावा किसी और को साथ नहीं रखा करूंगा। उन सबकी आपस की बातचीत से गांववालों को पता चल ही गया था कि उनकी झोपड़ी पर स्वयं महाराज पधारे हैं और भेष बदलकर पहले से उनके बीच बैठा हुआ आदमी ही तेनालीराम है तो वे उनके स्वागत के लिए दौड़ पड़े। कोई चारपाई उठवाकर लाया तो कोई गन्ने का ताजा रस निकालकर ले आया। गांववालों ने बड़े ही मन से अपनी मेहमानों का स्वागत किया।

उनकी आवभगत की। राजा कृष्णदेव राय उन ग्रामवासियों का प्यार देखकर आत्मविभोर हो गए। तेनालीराम की चोट से आहत हुए दरबारी मुंह लटकाए हुए जमीन कुरेदते रहे और तेनालीराम मंद-मंद मुस्करा रहे थे।

८२५) न्यायप्रिय रानी-देवी अहिल्याबाई होल्कर का सच्चा न्याय - एक बार मध्यप्रदेश के इन्दौर नगर में एक रास्ते से महारानी देवी अहिल्याबाई होल्कर के पुत्र मालोजीराव का रथ निकला तो उनके रास्ते में हाल ही की जनी गाय का एक बछड़ा सामने आ गया। गाय अपने बछड़े को बचाने दौड़ी तब तक मालोजीराव का रथ गाय के बछड़े को कुचलता हुआ आगे बढ़ गया। किसी ने उस बछड़े की परवाह नहीं की। गाय बछड़े के पास ही सड़क पर बैठ गई।

थोड़ी देर बाद अहिल्याबाई वहाँ से गुजरीं। अहिल्याबाई ने गाय को और उसके पास पड़े मृत बछड़े को देखकर घटनाक्रम के बारे में पता किया।

सारा घटनाक्रम जानने पर अहिल्याबाई ने दरबार में मालोजी की पत्नी मेनाबाई से पूछा- यदि कोई व्यक्ति किसी माँ के सामने ही उसके बेटे की हत्या कर दे, तो उसे क्या दंड मिलना चाहिए?

मालोजी की पत्नी ने जवाब दिया- उसे प्राण दंड मिलना चाहिए।

देवी अहिल्याबाई ने मालोजीराव को हाथ-पैर बांधकर मार्ग पर डालने के लिए कहा और फिर उन्होंने आदेश दिया मालोजी को मृत्युदंड रथ से टकराकर दिया जाए। यह कार्य कोई भी सारथी करने को तैयार न था। देवी अहिल्याबाई न्यायप्रिय थी। अत: वे स्वयं ही माँ होते हुए भी इस कार्य को करने के लिए रथ पर सवार हो गईं। वे रथ को लेकर आगे बढ़ी ही थीं कि तभी एक अप्रत्याशित घटना घटी। वही गाय फिर रथ के सामने आकर खड़ी हो गई, उसे जितनी बार हटाया जाता उतनी बार पुन: अहिल्याबाई के रथ के सामने आकर खड़ी हो जाती। यह दृश्य देखकर मंत्री परिषद ने देवी अहिल्याबाई से मालोजी को क्षमा करने की प्रार्थना की, जिसका आधार उस गाय का व्यवहार बना। उस तरह गाय ने स्वयं पीड़ित होते हुए भी मालोजी को द्रौपदी की तरह क्षमा करके उनके जीवन की रक्षा की।

अक्रोध से क्रोध का, प्रेम से घृणा का और क्षमा से प्रतिशोध की भावना का शमन होता है।

भारतीय ऋषियों ने यूं ही गाय को माँ नहीं कहा है बल्कि इसके पीछे गाय का महत्वपूर्ण व्यवहार, मानव जीवन में कृषि में गाय की उपयोगिता बड़ा आधारभूत कारण है। गौसंवर्धन करना हर भारतीय का संवैधानिक कर्त्तव्य भी है।

८२६) तुमसे न हो पाएगा - शुभम ने एक पिछड़े गांव में चश्मे बनाने की दुकान खोली। वह गांव में घर-घर जाकर लोगों से जानने लगा कि कहीं किसी को देखने या पढ़ने में कोई समस्या तो नहीं हे। जैसे ही कोई बताता कि उसे पढ़ने में परेशानी होती है, शुभम तुरंत उसको मुफ्त में आंखें परीक्षण कराने अपनी दुकान पर बुला लेता। पूरे गांव में घूमने के बाद उसे समझ आया कि गांव में ज्यादातर लोगों को पढ़ने में दिक्कत हो रही है। शुभम मन-ही-मन बहुत खुश हो रहा था कि इतने लोगों का चश्मा बनाकर वह अच्छे पैसे कमा लेगा। अगले दिन उसकी दुकान पर एक अधेड़ उम्र की महिला आई। पहले ग्राहक को देखकर वह बहुत खुश हुआ। वह पूरे जोश के साथ उसकी आंखों का टेस्ट करने लगा। शुभम ने अक्षर लिखे हुए बोर्ड की तरफ उंगली दिखाते हुए कहा कि आप सामने देखकर अक्षरों को पढ़ें। महिला पहले तो काफी देर तक ध्यान से देखती रही फिर बोली, ना बेटा ,मुझसे ना पढ़ा जा रहा। शुभम ने दूसरा लेंस लगाकर फिर से वही पढ़ने के लिए कहा। महिला ने इस बार भी वही जवाब दिया। शुभम एक के बाद दूसरा लेंस लगाता रहा, लेकिन महिला का जवाब वही रहता।

अब शुभम का दिमाग चकराने लगा। शुभम ने उसे कल फिर से आने को कहकर भेज दिया। महिला ने जाते समय फिर से पूछा, कल पक्का मैं पढ़ पाऊंगी ना? शुभम ने कहा, हां क्यूं नहीं। महिला के जाने के बाद शुभम सिर पकड़कर बैठ गया। ऐसा कौन-सा नंबर है आंखों का, जो मेरे पास नहीं है। उसी दिन शहर जाकर वह कुछ और बेहतर गुणवत्ता के लेंस खरीद लाया।

अगले दिन महिला फिर दुकान पर आ पहुंची। शुभम ने उसे बैठाकर फिर से एक-एक लेंस लगाकर अक्षरों को पढ़वाना शुरू किया। वह महिला हर बार ना में सिर हिला देती। अंत में शुभम हाथ जोड़कर बोला, मुझे माफ करो। मेरी दुकान में ऐसा कोई चश्मा नहीं, जिससे आप साफ-साफ पढ़ सकें। शुभम को परेशान देखकर महिला बोली, कोई ना बेटा, दिल छोटा मत कर। इतने साल स्कूल में मास्टर मुझे पढ़ना ना सिखा पाए, तेरा यह चश्मा एक दिन में क्या सिखा देगा। महिला की बात सुनकर शुभम ने अपना माथा पीट लिया।

८२७) अपनी गलती पर जीत - एक बालक अपनी बहन अलिसा के साथ घूमने निकला। रास्ते में एक किसान की लड़की मिली। वह सिर पर अमरूदों से भरा टोकरा रखे हुए उन्हें बेचने बाजार जा रही थी। अलिसा ने भूल से टक्कर मार दी, जिससे सारे अमरूद गिरकर गंदे हो गए। अब मेरे माता-पिता को कई दिनों तक भूखा रहना पड़ेगा। कहकर वह लड़की रोने लगी। अलिसा ने अपने भाई को वहां से भाग जाने की सलाह दी और कहा, अभी तो यहां कोई देखता भी नहीं। बहन, अगर हम मान लेते हैं कि यहां कोई नहीं देख रहा है, इसलिए सजा नहीं मिलेगी तो यह गलत है। किसी व्यक्ति के अंदर बैठी हुई आत्मा ही मर गई तो फिर ईश्वर भले ही दंड न दे, वह आप ही मर जाता है। इतना कहकर उस बालक ने अपनी जेब में रखे तीन आने उस कन्या को दिए और उससे कहा, बहन, तू हमारे साथ चल। हमने गलती की है तो उसका दंड भी हमें सहर्ष स्वीकार करना चाहिए, तुम्हारे फलों का मूल्य घर चलकर चुका दूंगा। तीनों घर पहुंचे, बालक ने सारी बात मां को सुनाई। मां को गुस्सा आ गया। वह बोली, तुम लोग नाहक घूमने क्यों निकले? घर खर्च के लिए पैसे नहीं, अब यह दंड कौन भुगते? उस लड़के ने कहा, मां, मेरे जेबखर्च के पैसे इस लड़की को दे दो। मेरा विद्यालय का नाश्ता बंद रहेगा, मुझे जैसे कागज पर छपे हैं। कागज के पहले टुकड़े से दस रुपये की चीज खरीदी जा सकती है तो दूसरे से सौ रुपये की और तीसरे से हजार की। ये कागज पर लगी मोहर या छाप द्वारा निर्धारित हुआ है। हमारा जीवन भी एक कोरे कागज की तरह ही है। हम चाहें तो उस पर दस रुपये के बराबर छोटी-मोटी विशेषता या गुण की मोहर लगा सकते हैं और चाहें तो हजार रूपये या उससे भी अधिक की कीमत के गुणों की मोहर लगा सकते हैं। जैसी छाप या सोच वैसा जीवन। इस संसार रूपी छापेखाने में मन रूपी कागज पर केवल सात्विक व जीवनोपयोगी उच्च विचारों की मोहर लगाकर ही जीवन को हर प्रकार की उत्कृष्टता प्रदान की जा सकती है।

८२८) मन की चंचलता पर काबू पा लें तो हमसे बड़ा सुखी और कोई नहीं - दुनिया का रंग-ढंग देखकर एक सन्यासी के मन में विशाल आश्रम बनाने का जूनून सवार हो गया। आर्किटेक्ट को बुलाकर उसका नक्शा तैयार कराया और इस बात की खास तौर पर हिदायत दी कि पूरा आश्रम सुख-सुविधा से संपन्न होना चाहिए। उसकी भव्यता का कोई मुकाबला नहीं कर सके और देश-विदेश में फैले उनके अनुयायियों को आश्रम आने पर किसी कठिनाई का अनुभव भी नहीं हो। वह उसके लिए रात-दिन परिश्रम करने लगे। गांव-गांव, शहर-शहर घूमकर धन इकट्ठा करने लगे। समय के साथ उनकी लालसा भी बढ़ने लगी। उनकी साधना पर धन हावी हो गया। एक दिन सांझ ढले उनकी मुलाकात अपने ही एक शिष्य से हो गई। शिष्य ने आग्रह करके उन्हें अपने घर रोक लिया। गुरु ने बात-बात में खुशी-खुशी अपनी योजना बता दी।

शिष्य ने गुरु का मन-प्राण से आवभगत किया। भोजन कराने के बाद उनके सोने के लिए खाट पर अपनी एकमात्र दरी बिछा दी और खुद खुरदुरी जमीन पर सो गया। उसके चेहरे पर सुकून था। लेकिन सन्यासी को दरी पर नींद नहीं आ रही थी, मोटे गद्दे पर सोने की आदत जो हो गई थी। वह रात भर सो नहीं पाए। सुबह सन्यासी ने शिष्य से पूछा कि कठोर जमीन पर चैन से कैसे सो लेते हो? उसने जवाब दिया, आपने ही तो कहा था कि सत्कर्म और संतोष के विचार को अपने मन में जिंदा रखो, जीवन में न तो कभी दु:ख होगा और न साधना से डिगोगे। यह सुनकर सन्यासी जाने को खड़े हुए तो शिष्य ने

अपना धर्म निभाते हुए पूछा, क्या मैं भी आपके साथ आश्रम के लिए धन एकत्र करने चल सकता हूं? तब सन्यासी ने उत्तर दिया, अब उसकी जरूरत नहीं। तुमने मुझे वह ज्ञान दिया जो मैं भूल बैठा था। तुमने सिखा दिया कि मन का सच्चा सुख कहां है। अब किसी आश्रम की इच्छा नहीं है।

८२९) वेशभूषा की लाज - एक बहुरूपिये ने राजा भोज के दरबार में आकर राजा से पांच अशर्फी की याचना की। राजा ने कहा कि वे कलाकार को पुरस्कार दे सकते हैं, दान नहीं। बहुरुपिये ने स्वांग प्रदर्शन के लिए तीन दिन की मोहलत मांगी। अगले दिन राजधानी के बाहर टीले पर एक जटा-जूटधारी तपस्वी समाधि-मुद्रा में बैठा दिखाई दिया। उत्सुकतावश कुछ चरवाहे वहां जुट गए। महाराज, आप कहां से पधारे? उनमें से एक ने पूछा। किंतु महाराज मौन ही रहे। न तो उनके नेत्र खुले और न उनका शरीर रंचमात्र हिला। बाबा, क्या कुछ भिक्षा ग्रहण करोगे? किंतु इसका भी उन्हें उत्तर न मिला। नगर लौटे चरवाहों से उस महान तपस्वी का वर्णन सुनकर सभ्य नागरिकों, सेठों और दरबारियों की सवारियां नगर के बाहर की ओर दौड़ पड़ीं। फल, फूल, मेवा-मिष्ठान के अंबार लग गए, किंतु साधु ने आंखें न खोली। दूसरे दिन प्रधानमंत्री ने सोने और अशर्फियां चरणों पर रखते हुए महात्मा से केवल एक बार नेत्र खोलकर कृतार्थ करने की प्रार्थना की, किंतु इसका भी उस साधु पर कोई असर नहीं हुआ। तीसरे दिन राजा भोज स्वयं वहां आ पहुंचे। लाखों अशर्फियां चरणों पर रख वे साधु से आशीर्वाद की प्रार्थना करते रहे, किंतु तपस्वी मौन ही थे। चौथे दिन बहुरूपिया दरबार में उपस्थित हुआ और उसने अपने सफल स्वांग के लिए पांच अशर्फी पुरस्कार के रूप में मांगी। मूर्ख, सारे राज्य का वैभव तेरे चरणों पर रखा था, तब तो तूने एक बार भी आंख नहीं खोली और अब मात्र पांच अशर्फी की याचना कर रहा है? राजा ने कहा, उस समय सारे वैभव तुच्छ थे, महाराज। बहुरुपिए ने उत्तर दिया, तब मुझे वेश की लाज रखनी थी, लेकिन अब पेट की आग अपने श्रम का पुरस्कार चाहती है। बहुरुपिए के मुख से वेशभूषा की लाज की बात सुनकर राजा भोज अति प्रसन्न हुए और बहुरुपिए को इनाम देकर विदा किया।

८३०) क्या बोलें, कैसे बोलें - दास प्रथा के दिनों में एक मालिक के पास अनेकों गुलाम थे। लुकमान उन्हीं में से एक था। लुकमान था तो सिर्फ एक गुलाम, लेकिन बड़ा ही चतुर था। उसकी ख्याति दूर-दराज तक फैलने लगी थी। एक दिन इसकी खबर उसके मालिक को लगी। मालिक ने लुकमान को बुलाया और कहा, सुनते हैं, तुम बहुत बुद्धिमान हो। मैं तुम्हारी बुद्धिमानी की परीक्षा लेना चाहता हूं। अगर तुम पास हो गए तो तुम्हें गुलामी से मुक्ति दे दी जाएगी। जाओ और एक मरे हुए बकरे को काटो और उसका जो हिस्सा बढ़िया हो, उसे ले आओ। लुकमान ने आदेश का पालन किया और मरे हुए बकरे की जीभ लाकर मालिक के सामने रख दी। मालिक ने पूछा तो लुकमान ने कहा, अगर शरीर में जीभ अच्छी हो तो सब कुछ अच्छा होता है। मालिक ने आदेश देते हुए कहा, अच्छा। इसे उठा ले जाओ और अब बकरे का जो हिस्सा बुरा हो, उसे ले आओ। लुकमान बाहर गया और थोड़ी ही देर में उसने उसी जीभ को लाकर मालिक के सामने फिर रख दिया। फिर से कारण पूछने पर लुकमान ने कहा, अगर शरीर में जीभ अच्छी नहीं तो सब बुरा-ही-बुरा है। उसने आगे कहा- मालिक। वाणी तो सभी के पास जन्मजात होती है, परंतु बोलना किसी-किसी को ही आता है। क्या बोलें, कब बोले और कैसे बोलें, इस कला को बहुत ही कम लोग जानते हैं। कड़वी बातों ने संसार में न जाने कितने झगड़े पैदा किए

हैं। जीभ तीन इंच का वह हथियार है जिससे कोई छह फुट के आदमी को भी मार सकता हैं और दुरुपयोग से स्वर्ग भी नरक में बदल सकता है। यह सुनकर मालिक बहुत खुश हुआ और उसने लुकमान को आजाद कर दिया।

८३१) लगन और परिश्रम - बात लगभग दो सौ साल पुरानी है। स्कॉटलैंड के एक गरीब परिवार में एक बच्चे ने जन्म लिया। उस बच्चे का पिता फेरी लगाकर परिवार का भरण-पोषण करता था, उसकी मां घर पर केक बनाकर सड़क के नुक्कड़ पर बैठकर बेचा करती थी। बच्चे ने देखा कि इस गरीबी के वातावरण में यहां रहकर उसका विकास नहीं हो सकता। एक दिन घरवालों को बिना बताए वह अमेरिका चला गया। वहां उसे एक इस्पात कंपनी में चपरासी का काम मिल गया। काम बहुत थोड़ा था। जब घंटी बजती तभी उसे मैनेजिंग डायरेक्टर के सामने हाजिर होना पड़ता था और काम पूरा करके वह कार्यालय के बाहर रखे एक स्टूल पर बैठ जाता। उसे बेकार समय गुजारते अच्छा न लगता था, मैनेजिंग डायरेक्टर की अलमारी से कोई पुस्तक निकाल लाता और खाली समय में पढ़ता रहता। एक दिन किसी विषय पर डायरेक्टरों में विवाद होने लगा। वे किसी निर्णय पर पहुंचने की स्थिति में न थे। वह चपरासी सब सुन रहा था। उससे रहा नहीं गया, वह अपने स्थान से उठा और अलमारी से एक पुस्तक निकाल कर उस पृष्ठ को खोलकर उनके सामने मेज पर रख दिया, जिसमें उस प्रश्न का उत्तर था। एक स्वर से सभी ने उसकी समझदारी की सराहना की। मिल्टन की कही बातों को दुहराते हुए उनमें से एक ने कहा कि मन की चाहत से स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बनाया जा सकता है। संस्कार, व्यक्तिगत तथा सामाजिक समृद्धि को प्राप्त करने का उपाय है उद्देश्यपूर्ण ढंग से स्वाध्याय। उस बालक ने उद्देश्यपूर्ण और योजनाबद्ध ढंग से स्वाध्याय करके यह साबित किया कि एक चपरासी भी मैनेजिंग डायरेक्टर की योग्यता को प्राप्त कर सकता है। वही बालक बाद में करोड़पति उद्यमी एंड्रयू कार्नेगी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अपने परिश्रम, लगन और निरंतर स्वाध्याय की बदौलत उसने यह मुकाम हासिल किया।

८३२) बापू की बा - कस्तूरबा और गांधी जी का विवाह बहुत कम आयु में ही हो गया था। सभी लोग गांधीजी को बापू और कस्तूरबा को बा कहकर पुकारते थे। बा ने जहां स्वयं को पूरी तरह गांधी जी के अनुरूप ढाल लिया था, वहीं गांधी जी भी उनके बिना अपने जीवन की कल्पना तक नहीं करते थे। बात उन दिनों की है जब बा की सेहत कुछ खराब चल रही थी। कमजोरी के बावजूद वे अपना काम जारी रखे हुए थीं। लेकिन धीरे-धीरे उनकी हालत बिगड़ने लगी। अब वे चाहकर भी काम नहीं कर पा रही थीं। जब गांधी जी ने बा की बिगड़ती हालत देखी तो वह स्वयं उनकी देखभाल करने लगे। बीमारी के क्षणों में बापू बा को एक मिनट के लिए भी नहीं छोड़ते थे। हालांकि लाख प्रयासों के बावजूद वे ठीक नहीं हो सकीं। पर गांधी जी ने अपनी तरफ से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। अंतिम समय में बा को निमोनिया हो गया था। उनके मुंह में जल्दी जल्दी बलगम जम जाती थी, जिससे उन्हें बार-बार थूकना पड़ता था। गांधी जी ऐसे समय में जब भी बा के पास होते थे, स्वयं रुमाल से उनका मुंह पोंछते थे और उस रुमाल को स्वयं ही धोते थे। अनेक सेवक बा का काम करने के लिए तैयार रहते थे और वे गांधी जी को ऐसा करने के लिए मना भी करते थे। पर गांधी जी उन लोगों से कहते थे, मुझे यह सब करना अच्छा लगता है। ईश्वर ने मुझे बा की सेवा का जो अवसर दिया है, उसे मैं अमूल्य मानता हूं। गांधी जी इस बात को सुनकर सभी सेवक निरुत्तर रह जाते थे और पत्नी के प्रति उनकी असीम

श्रद्धा देखकर नतमस्तक हो उठते थे। उस समय गांधीजी ने अपनी पत्नी की सेवा की जो मिसाल कायम की थी, वह आजकल सब दंपतियों के लिए एक उदाहरण है।

८३३) देश की उन्नति - एक बार वी.वी. गिरि कहीं से गुजर रहे थे तो उन्होंने देखा कि कड़ी धूप में अनेक मजदूर अपने सिर पर पत्थर ढो रहे हैं, कुछ मजदूर महिलाएं दीवार बनाने में लगी हुई हैं और उनके बच्चे वहीं भूख-प्यास से व्याकुल घूम रहे हैं। मजदूरी की ऐसी हालत देखकर वी.वी. गिरि के कदम उनकी ओर मुड़ गए। वे लोग उन्हें नहीं पहचानते थे। वी.वी. गिरि उनसे बोले, मुझे आपके मालिक से मिलना है। एक मजदूर उन्हें मालिक के पास छोड़ आया। वी.वी. गिरि मालिक से बोले, मैं आपसे सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि इतनी तेज धूप में क्या इन्हें कुछ देर आराम करने के लिए नहीं कहा जा सकता? मजदूर अपना पसीना बहाकर भवन व पुल बनाता है, मरम्मत करता है। पर उसे उसकी योग्यता के अनुरूप पारिश्रमिक भी नहीं मिलता। इन्हें पर्याप्त भोजन तक प्राप्त नहीं होता। यदि हम देशवासी ही अपने मजदूर भाइयों के हितों की रक्षा नहीं करेंगे तो हमारा देश कैसे उन्नति करेगा? देश का विकास और उद्योगों की तरक्की तभी संभव है, जब मजदूरों को आराम, उचित वेतन और काम का सम्मान मिले। वी.वी. गिरि की मजदूरों के प्रति आत्मीयता देखकर मालिक बोला, महोदय, आप खुद चलकर मेरे द्वार तक आए, यह मेरे लिए बेहद सम्मान की बात है। मैं मानता हूं कि ये दिनभर धूप में कार्य करते हैं, मगर ये सब मेरे यहां सिर्फ आठ घंटे ही काम करते हैं। इससे ज्यादा काम अगर ये करते हैं तो मैं इन्हें अतिरिक्त मजदूरी देता हूं। आज मैं आपसे यह वादा करता हूं कि न ही मजदूरों का शोषण करूंगा और न ही करने दूंगा। मालिक के मुंह से यह आश्वासन सुनकर वी.वी. गिरि उनका शुक्रिया अदा करते हुए बोले, यदि आप और देश के सारे मालिक इस जज्बे पर टिके रह सके तो देश की तकदीर बदलते देर नहीं लगेगी।

८३४) दान का अहंकार - एक बार श्रीकृष्ण से अर्जुन ने पूछा, दान तो मैं भी बहुत करता हूं, परंतु सभी लोग कर्ण को ही सबसे बड़ा दानी क्यों कहते हैं? यह प्रश्न सुन श्रीकृष्ण मुस्कराए। श्रीकृष्ण ने पास में ही स्थित दो पहाड़ियों को सोने का बना दिया। इसके बाद वह अर्जुन से बोले, हे अर्जुन, इन दोनों सोने की पहाड़ियों को तुम गांव वालों में बांट दो। अर्जुन ने सभी गांव वालों को बुलाया और सोना बांटना शुरू कर दिया। जो व्यक्ति जितना सोना मांगता अर्जुन पहाड़ी में से उतना सोना तोड़कर उसे दे देते। लगातार सोना बांटते रहने से उनमें धीरे-धीरे अहंकार आ गया। इसके साथ ही वह थकने भी लगे। जब थकान बहुत बढ़ गई और काम जारी रखना अर्जुन के लिए मुमकिन नहीं रहा तो उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा कि अब मुझसे यह काम और न हो सकेगा। इसके बाद श्रीकृष्ण ने कर्ण को बुला लिया। उन्होंने कर्ण से कहा कि इन दोनों पहाड़ियों का सोना इन गांव वालों में बांट दो। कर्ण ने गांव वालों को बुलाया और उनसे कहा, यह सारा सोना आप लोगों का है। जिसको जितना चाहिए यहां से ले जाएं। यह देख अर्जुन ने कहा, ये तो मैं भी कर सकता था। ऐसा करने का विचार मेरे मन में क्यों नहीं आया? श्रीकृष्ण बोले, तुम्हें सोने से मोह हो गया था। तुम खुद यह निर्णय कर रहे थे कि किस गांव वाले की कितनी जरूरत है। तुममें दाता होने का भाव आ गया था। दूसरी तरफ कर्ण ने ऐसा नहीं किया। वह नहीं चाहते थे कि उनके सामने कोई उनकी जय-जयकार करे या उनकी प्रशंसा करे। दान देने के बदले में धन्यवाद की उम्मीद करना उपहार नहीं सौदा कहलाता है। बिना किसी उम्मीद या आशा के दान करना चाहिए ताकि यह हमारा सत्कर्म हो, न कि हमारा अहंकार।

८३५) महापुरुषों की आत्मा - एक विदेशी पत्रकार ने एक बार महात्मा गांधी से पूछा, आप अभी जिस रूप में हैं, वह बनने की प्रेरणा आपको कहां से मिली? गांधी जी ने कहा, कर्मयोगी श्रीकृष्ण, महापुरुष ईसा मसीह, दार्शनिक रस्किन और संत टॉल्स्टॉय से। पत्रकार ने पुन: पूछा, इनमें से कई तो आपके समय में रहे भी नहीं, फिर आपको इनसे प्रेरणा कैसे मिली? गांधी जी बोले, यह ठीक है कि महापुरुष सदैव बने नहीं रहते, समय के साथ उन्हें भी जाना पड़ता है, किंतु विचारों और पुस्तकों के रूप में उनकी आत्मा इस भूमंडल पर चिरकाल तक बनी रहती है। जिन्हें लोग कागज के निर्जीव पन्ने समझते हैं, उन्हीं में उन महापुरुषों की आत्मा लिपटी हुई रहती है। उनमें जीवित और दिवंगत, दोनों ही अवस्थाओं में लोगों को दीक्षित कर सुसंस्कृत बनाने और उत्कृष्ट जीवन पथ पर अग्रसर होने के लिए शक्ति, प्रकाश और प्रेरणा देने की सामर्थ्य रहती है। मुझे भी इन चारों महान व्यक्तियों से प्रेरणा मिली है। संसार में रहकर अनासक्त और कर्मयोगी कैसे रह सकते हैं, यह प्रेरणा गीता से मिली। दलित वर्ग से प्रेम और उनके उद्धार की प्रेरणा मुझे बाइबिल से मिली। विचारों में प्रौढ़ता, कर्त्तव्य परायणता और सुखों-प्रलोभनों के आकर्षण से बचने की विद्या मैंने टॉल्स्टॉय की किताब द किंगडम ऑफ गॉड इज विदइन यू से सीखी। सशक्त विचारों की प्रतिमूर्ति इन पुस्तकों के संपर्क में मैं नहीं आया होता तो आज मैं जिस रूप में हूं, उस तक पहुंचने वाली सीढ़ी से मैं उसी तरह वंचित रहा होता, जिस तरह काफी लोग वंचित रहते हैं।

८३६) प्रतिभा से इंसाफ - इरविंग बर्लिन अमेरिका के प्रसिद्ध गीतकार एवं संगीतकार थे। वे जो भी लिखते थे तुरंत लोगों की जुबान पर चढ़ जाता था। उनकी ख्याति दुनिया भर में फैल चुकी थी। उन्हीं दिनों जॉर्ज गर्शविन एक संघर्षशील युवा गीतकार थे। वे इरविंग के बहुत बड़े फैन थे और उन्हें अपना रोल मॉडल मानते थे। इरविंग से मिलने की उनकी दिली तमन्ना थी। संयोगवश एक कार्यक्रम में उन्होंने इरविंग को देखा। उन दिनों गर्शविन मात्र पैंतीस डॉलर प्रति सप्ताह पर टिन पैन एली में काम कर रहे थे। इरविंग गर्शविन से बात करके बेहद प्रभावित हुए। कुछ देर बाद वे गर्शविन से बोले, तुममें काफी प्रतिभा है। मैं तुम्हें इसी समय अपना संगीत सचिव बनाने का प्रस्ताव रखता हूं। इसके बाद उन्होंने गर्शविन को तनख्वाह भी बताई। गर्शविन अवाक रह गए। इरविंग ने उन्हें जितनी तनख्वाह बताई, वह गीत लिखकर मिलनेवाली कमाई से तीन गुना से भी अधिक थी। गर्शविन हां कहने ही वाले थे कि इरविंग फिर बोल पड़े, जॉर्ज, मेरी सलाह है कि तुम यह प्रस्ताव स्वीकार मत करो। अगर तुम ऐसा करते हो, तो तुम दूसरे दर्जे के बर्लिन बनकर रह जाओगे। लेकिन अगर तुम अपने बुनियादी वजूद पर डटे रहोगे, तो किसी न किसी दिन पहले दर्जे के गर्शविन जरूर बन जाओगे।

यह सुनकर गर्शविन भौंचक्के रह गए। बहरहाल उन्होंने इरविंग की बात मानकर इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और दिन-रात अपनी पहचान बनाने के लिए कड़ी मेहनत करने लगे। एक दिन ऐसा आया कि गर्शविन ने अपनी ऐसी पहचान बना ली कि वह इरविंग से भी अधिक प्रसिद्ध हो गए। उन्होंने अमेरिकी पॉप यूजिक को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया। प्रसिद्धि के शिखर पर उन्होंने इरविंग को नमन करते हुए कहा कि काश। इरविंग बर्लिन जैसे व्यक्तित्व इस पृथ्वी पर दो-चार भी हो जाएं तो अनेक प्रतिभाओं को नए आयाम मिल जाएं।

८३७) इज्जत किसकी - खलीफा सुलेमान के राज्य में विद्वानों का बहुत आदर होता था। उन्हें राज्य की ओर से तमाम सुविधाएं दी जाती थीं। एक बार खलीफा ने अपने दोनों शहजादों को बेहतरीन तालीम देने के लिए एक विद्वान

उस्ताद की नियुक्ति की। उस्ताद की देखरेख में दोनों शहजादों की तालीम शुरू हुई। उस्ताद जितना अच्छा पढ़ाते थे, दोनों शिष्य उससे कहीं ज्यादा उन्हें अपनी सेवाएं देने को तत्पर रहते थे। दोनों के मन में उस्ताद के लिए गहरी इज्जत का भाव था। कुछ ही दिन में दोनों बगैर बताए समझने लगे कि उनके उस्ताद की जरूरतें क्या हैं। एक बार पढ़ाते-पढ़ाते उस्ताद अपने आसन से उठे और किसी कार्यवश दूसरे कमरे में गए। उनके जाते ही दोनों शहजादे तुरंत दौड़े और उस कमरे के बाहर रखे उस्ताद के जूते साफ करने का पुण्य कर्म कमाने को लेकर आपस में विवाद करने लगे। आखिरकार दोनों उस्ताद का एक-एक जूता साफ करने पर राजी हो गए। जूते साफ करने के बाद दोनों शहजादों ने तय किया कि जब उस्ताद बाहर आएंगे तो दोनों एक-एक जूता उन्हें अपने हाथों से पहनाएंगे। दोनों शहजादों के जूते साफ करके पहनाने की खबर उड़ते-उड़ते खलीफा तक भी जा पहुंची और उन्होंने तुरंत उस्ताद को दरबार में तलब किया। खलीफा ने उस्ताद से पूछा, इस जहान में आज सबसे ज्यादा प्रतिष्ठित और पूज्यनीय कौन है? उस्ताद ने सिर झुकाते हुए जवाब दिया, जहांपनाह, खलीफा सुलेमान के अलावा और कोई भी नहीं हो सकता है और यह बात तो सभी जानते हैं। खलीफा मुस्कुराते हुए बोले, नहीं बरखुरदार, सर्वाधिक सम्माननीय और वंदनीय तो वह महापुरुष है जिनके जूते साफ करने और अपने हाथों से उन्हें पहनाने के लिए शहजादे भी आपस में झगड़ते हैं। उसके आगे इस अदना खलीफा की भी क्या औकात? इसके बाद खलीफा ने उस्ताद का तहेदिल से सम्मान करते हुए उन्हें उपहारों के साथ विदा किया।

८३८) खुशी देने में धन्यता - फूल और कांटा एक हरे-भरे उद्यान में आजू बाजू पल रहे थे। एक दिन बातों बातों में कांटे ने फूल से कहा- मित्र, कितने कोमल और नाजुक हो तुम। शीत और ताप के हल्के झोंके भी सहन नहीं कर सकते। तुम आज इस डाल पर खिले हो, पर पता नहीं कल तक तुम यहां रहो या न रहो। एक-दो दिन खिलकर मुरझा जाने की तुम्हारी इस क्षणभंगुरता पर मुझे तरस आता है। इधर मेरी ओर देखो। मैं कितने दिनों से आराम से यूं ही जी रहा हूं। कांटा आगे कहता ही गया, तुम्हारे कितने ही पूर्वजों को इसी डाली पर खिलते और मुरझा जाते मैंने देखा, पर मेरा अब तक कुछ भी नहीं बिगड़ा। जानते हो क्यों? ऐसा इसलिए, क्योंकि जो भी मेरे पास आता है, मेरे दंश से बचे बगैर नहीं रह पाता। इस वजह से लोग मुझसे भय खाते हैं और मुझे हाथ भी नहीं लगाते। दूसरी ओर तुम हो। तुम्हें जो चाहे तोड़ ले और मरोड़कर इधर-उधर फेंक दे। पर तुम इतने सीधे हो कि इसका प्रतिकार तक नहीं करते। यह सुनकर फूल थोड़ी देर चुप रहा और फिर बोला- बंधुवर, तुम्हारा कहना यथार्थ है। किंतु मैं क्या करूं। मुझे इस संसार में अपने जीने-मरने का कभी ख्याल ही नहीं आता। मुझे लगता है कि मेरे जरिए यदि किसी को खुशी मिलती है, तो समझ लो मेरा जीवन धन्य हो गया।

८३९) नकलची का हश्र - एक गधे को अपनी भद्दी सी आवाज कतई पसंद न थी। एक दिन जब गधा घास चर रहा था तो उसकी भेंट गीत गुनगुनाते एक टिड्डे से हुई। गधा उसकी आवाज सुनकर मोहित हो गया और पूछ बैठा- भई टिड्डे अपनी इस मधुर आवाज का राज मुझे भी तो बताओ ओस की बूंदें टिड्डा बोला- जिन्हें मैं रोज सुबह खाता हूं। गधा आखिर गधा ही था। अब उसने और भी जोशो-खरोश से घास खाना शुरू कर दिया। खासकर वह सुबह के समय ही घास खाता था, जब वह ओस से भीगी रहती थी। लेकिन उसकी आवाज न बदलनी थी, न ही बदली। हां, घास खा-खाकर वह इतना मोटा जरूर हो गया कि किसी काम के लायक न रहा।

८४०) पराजित होना भी श्रेष्ठ है - भगवान का अवतार होने पर भी श्रीकृष्ण पर युद्ध से भागने का कलंक लगा। युद्ध यानी रण से भागने के कारण ही उन्हें रणछोड़ भी कहा गया। बलराम अक्सर इस बात को लेकर श्रीकृष्ण से नाराज हो जाते थे, लेकिन श्रीकृष्ण हर बार उनकी बात हंसकर टाल देते थे। श्रीकृष्ण कहते थे कि हर बार जरूरी नहीं कि युद्ध जीता ही जाए। युद्ध का परिणाम सिर्फ जीतने या हारने तक सीमित नहीं होता, इसका परिणाम तो इसके बाद की स्थिति पर निर्भर है। एक युद्ध में हजारों सैनिक मारे जाते हैं। उनसे जुड़े लाखों परिजन असहाय और दु:खी होते हैं। अगर सैनिकों की बलि चढ़ाकर जीत हासिल कर भी ली तो उसका लाभ ही क्या? मैदान से भागने पर युद्ध टल जाता है, हजारों-लाखों जानें बच जाती हैं। अगर इसके लिए कोई आरोप लगता है तो यह कोई घाटे का सौदा नहीं है। मैदान से भागने पर युद्ध टल जाता है। यह मेरे लिए शांति और संतुष्टि दोनों की बात है कि मेरे भागने से हजारों सैनिकों की जानें बच गईं।

८४१) सभी तीर निशाने पर - एक बार एक राजा एक छोटे से शहर की यात्रा पर था। वहां उसने आश्चर्य से देखा कि पेड़ों के तनों पर, घरों की दीवारों पर तीर बिंधे हुए हैं और हर तीर ठीक निशान के बीचों बीच है। उसने ऐसे विलक्षण धनुर्धर से मिलना चाहा। राजा ने उस धनुर्धर को बुलाया और पूछा कि वह हर बार इस तरह का सटीक निशाना कैसे लगा लेता है? उस धनुर्धर ने स्पष्ट किया, बहुत आसानी से श्रीमान। मैं पहले तीर चलाता हूं, फिर जहां तीर लगता है उसके चारों ओर निशान बना देता हूं। हम अपनी धारणा पहले बना लेते हैं, वस्तुस्थिति जानने की कोशिश बाद में करते हैं। हम देखते हैं तो इसलिए नहीं कि कुछ नया देखें, बल्कि अपने विचारों को पुख्ता करनेवाली चीजों को ढूंढने के लिए। और, हम वाद-विवाद करते हैं तो सत्य का पता लगाने के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ अपनी धारणा को ऐन-केन-प्रकारेण पुख्ता बनाने के लिए।

८४२) आजादी का इशारा - एक गांव में एक आदमी अपने प्रिय तोते के साथ रहता था। एक बार जब वह आदमी किसी काम से दूसरे गांव जा रहा था, तो उसके तोते ने उससे कहा- मालिक, जहां आप जा रहे हैं, वहां मेरा गुरु-तोता रहता है। उसके लिए मेरा एक संदेश ले जाएंगे? क्यों नहीं। उस आदमी ने जवाब दिया। मेरा संदेश है, तोते ने कहा- आजाद हवाओं में सांस लेनेवालों के नाम एक बंदी तोते का सलाम। वह आदमी दूसरे गांव पहुंचा और वहां उस गुरु तोते को अपने प्रिय तोते का संदेश बताया। संदेश सुनकर गुरु-तोता तड़पा, फड़फड़ाया और मर गया। जब वह आदमी अपना काम समाप्त कर वापस घर आया तो उस तोते ने पूछा कि क्या उसका संदेश गुरु-तोते तक पहुंच गया था? आदमी ने तोते को पूरी कहानी बताई कि कैसे उसका संदेश सुनकर उसका गुरु तोता तत्काल मर गया था। यह बात सुनकर वह तोता भी तड़पा, फड़फड़ाया और मर गया। उस आदमी ने बुझे मन से तोते को पिंजरे से बाहर निकाला और उसका दाह-संस्कार करने के लिए ले जाने लगा। जैसे ही उस आदमी का ध्यान थोड़ा भंग हुआ, वह तोता तुरंत उड़ गया और जाते-जाते उसने अपने मालिक को बताया- मेरे गुरु- तोते ने मुझे संदेश भेजा था कि अगर आजादी चाहते हो तो पहले मरना सीखो।

८४३) इच्छा - एक विद्यार्थी था। उसे विविध विषयों पर ज्ञान की प्राप्ति का बड़ा शौक था। उसने प्रकाण्ड विद्वान सुकरात का नाम सुन रखा था। ज्ञान की लालसा में एक दिन अंतत: वह सुकरात के पास पहुंच ही गया और सुकरात से

पूछा कि वह भी किस तरह से सुकरात की तरह प्रकाण्ड पंडित बन सकता है। सुकरात बहुत कम बात करते थे। विद्यार्थी को यह बात बोलकर बताने के बजाए उसे वे समुद्र तट पर ले गए। जब किसी बात को सिद्ध करना होता था तब सुकरात इसी तरह की विचित्र किस्म की विधियाँ अपनाते थे। समुद्र तट पर पहुंच कर वे बिना अपने कपड़े उतारे समुद्र के पानी में उतर गए। विद्यार्थी ने समझा कि यह भी ज्ञान प्राप्ति का कोई तरीका है, अत: वह भी सुकरात के पीछे-पीछे कपड़ों सहित समुद्र के गहरे पानी में उतर पड़ा। अब सुकरात पलटे और विद्यार्थी के सिर को पानी में बलपूर्वक डुबा दिया। विद्यार्थी को लगा कि यह कुछ बपतिस्मा जैसा करिश्मा हो जिसमें ज्ञान स्वयंमेव प्राप्त हो जाता हो। उसने प्रसन्नता पूर्वक अपना सिर पानी में डाल लिया। परंतु एकाध मिनट बाद जब उस विद्यार्थी को सांस लेने में समस्या हुई तो उसने अपना पूरा जोर लगाकर सुकरात का हाथ हटाया और अपना सिर पानी से बाहर कर लिया। हाँफते हुए और गुस्से से उसने सुकरात से कहा- ये क्या कर रहे थे आप? आपने तो मुझे मार ही डाला था। जवाब में सुकरात ने विनम्रता पूर्वक विद्यार्थी से पूछा- जब तुम्हारा सिर पानी के भीतर था तो सबसे ज्यादा जरूरी वह क्या चीज थी जो तुम चाहते थे? विद्यार्थी ने उसी गुस्से में कहा- सांस लेना चाहता था और क्या? सुकरात ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया- जिस बदहवासी से तुम पानी के भीतर सांस लेने के लिए जीवटता दिखा रहे थे, वैसी ही जीवटता जिस दिन तुम ज्ञान प्राप्ति के लिए अपने भीतर पैदा कर लोगे, तो समझना कि तुम्हें ज्ञान की प्राप्ति हो गई है।

८४४) दोष निकालना आसान - एक कथा के अनुसार स्वर्ग में ज्यूपिटर (बृहस्पति), नेप्च्यून (वरूण) और मिनर्वा (ग्रीक मान्यता के अनुसार कला और ज्ञान की देवी) में यह शर्त लग गयी कि उनमें से कौन इस संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु बना सकता है। मोमस भी स्वर्ग में रहने वाले एक देवता थे। उन्हें इस प्रतियोगिता का निर्णायक बनाया गया। ज्यूपिटर ने इंसान, मिनर्वा ने घर और नेप्च्यनू ने सांड को बनाया। निर्णायक की सीट पर बैठे मोमस ने सभी रचनाओं में दोष निकालने शुरू कर दिये। सबसे पहले उसने सांड में यह दोष निकाला कि उसके सींग आँखों के नीचे नहीं हैं जिससे वह उन्हें देख नहीं पाता। फिर उसने इंसान में यह दोष ढूंढा कि उसकी छाती में कोई खिड़की नहीं है जिससे उसके मन के विचार और भावनायें दिखायी नहीं देती हैं। अंत में उसने घर में दोष निकाला कि इसमें पहिए नहीं लगे हैं। पहिए न होने के कारण उसके निवासी उसे बुरे पड़ोसियों से दूर नहीं ले जा सकते। जैसे ही मोमस ने अपना निर्णय समाप्त किया, ज्यूपिटर ने उसे स्वर्ग से बाहर का रास्ता दिखा दिया और कहा कि किसी भी रचना में दोष निकालना बहुत आसान है। उसे दूसरों की रचना में तब तक दोष निकालने का हक नहीं है, जब तक वह स्वयं कोई अनूठी रचना न करें।

८४५) मित्र और शत्रु - महान दार्शनिक सुकरात से एक दिन एक व्यक्ति ने पूछा- इस संसार में आपका सबसे करीबी और प्रिय मित्र कौन है? सुकरात ने जवाब दिया- मेरा मन। उसने फिर अगला प्रश्न किया- और आपका शत्रु कौन है? सुकरात ने उत्तर दिया- मेरा शत्रु भी मेरा मन ही है। इस पर वह व्यक्ति हैरत में पड़ गया। उसने सुकरात से निवेदन किया- यह बात मेरी कुछ समझ में नहीं आई। आखिर मन ही मित्र भी है और मन ही शत्रु भी। ऐसा कैसे हो सकता है? कृपया इस बारे में जरा विस्तार से बताएं। तब सुकरात ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा- देखो, मेरा मन इसलिए मेरा सबसे प्रिय साथी है क्योंकि यह मुझे सच्चे मित्र की तरह सही मार्ग पर ले जाता है। और वही मेरा दुश्मन भी है क्योंकि वही मुझे गलत रास्ते

पर भी ले जाता है। मन ही में तो सारा खेल चलता रहता है। मन ही व्यक्ति को पाप कर्मों में लगा सकता है। वह बड़े से बड़ा अपराध करा सकता है। लेकिन वही उसे उच्च विचारों के क्षेत्र में लगा सकता है। वह व्यक्ति ध्यान से सुकरात की बातें सुन रहा था। उसने पूछा- लेकिन जब शत्रु और मित्र दोनों हमारे साथ ही हों तो फिर हमारे ऊपर किसका ज्यादा असर होगा? सुकरात ने कहा- हां, यही असल में हमारी चुनौती है। यह हमें तय करना होगा कि हम मन के किस रूप को हावी होने देंगे। हमने ज्यों ही उसके बुरे रूप को हावी होने दिया वह शत्रु की तरह व्यवहार करता हुआ हमें गर्त में ले जाएगा। लेकिन सकारात्मक बातों पर ध्यान देने से वह मित्र की तरह हमें उपलब्धियों की ओर ले जाएगा।

८४६) वाणी से मित्र को शत्रु व शत्रु को मित्र बना सकते हैं - गुरुकुल के विद्यार्थियों में इस बात पर बहस छिड़ गई कि संसार में सबसे शक्तिशाली वस्तु क्या है? कोई कुछ कहता, कोई कुछ, जब पारस्परिक वाद-विवाद का कोई निर्णय न निकला तो फिर सभी विद्यार्थी गुरुजी के पास पहुंचे। गुरुजी ने शिष्यों की बात सुनकर कहा, तुम सबकी बुद्धि खराब हो गई है और शांत हो गए। शिष्य गुरु की छोटी बात को भी सहन नहीं कर पाए।

उनके चेहरे पर रोष उभरने लगा और थोड़ी ही देर में उनके चेहरे तमतमा गए। वे रोष भरी नजरों से अपने गुरुजी को घूरने लगे। गुरु ने शिष्यों के चेहरों पर आते-जाते भाव देखे पर कहा कुछ नहीं। देर तक वे शांत रहे फिर पहले जैसी ही शांत वाणी में कहने लगे, तुम सब पर आश्रम को गर्व है, तुम लोग अपना एक भी क्षण व्यर्थ नहीं खोते, अवकाश के समय में भी ज्ञान चर्चा करते हो। सुनकर शिष्यों को बहुत अच्छा लगा उनका चित्त प्रफुल्लित हो गया और मन में स्वाभिमान जाग्रत हुआ। गुरुजी ने कहा, मेरे प्यारे शिष्यों। इस संसार में वाणी से बढ़कर कोई शक्तिशाली वस्तु नहीं है। वाणी से मित्र को शत्रु तथा शत्रु को मित्र बनाया जा सकता है। ऐसी शक्तिशाली वस्तु का उपयोग प्रत्येक व्यक्ति को सोच-समझकर करना चाहिए। वाणी का माधुर्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है और नहीं बननेवाला कार्य भी बन जाता है। यह वाणी ही एक ऐसी चीज है जो बिगड़ते काम बना देती है और बने हुए बिगाड़ देती है। शिष्यों को अपने गुरु द्वारा की गई निंदा और प्रशंसा का रहस्य समझ आ गया तथा मन में उठ रही जिज्ञासा का समाधान भी हो गया।

८४७) ❋ एक बार एक राजा के राज्य में महामारी फैल गयी। चारों ओर लोग मरने लगे। राजा ने इसे रोकने के लिये बहुत सारे उपाय करवाये मगर कुछ असर न हुआ और लोग मरते रहे। दुखी राजा ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। तभी अचानक आकाशवाणी हुई। आसमान से आवाज आयी कि हे राजा तुम्हारी राजधानी के बीचों बीच जो पुराना सुखा कुआ है, अगर अमावस्या की रात को राज्य के प्रत्येक घर से एक-एक बाल्टी दूध उस कुएं में डाला जाये तो अगली ही सुबह से महामारी समाप्त हो जायेगी और लोगों का मरना बन्द हो जायेगा। राजा ने तुरन्त ही पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दी कि महामारी से बचने के लिए अमावस्या की रात को हर घर से कुएं में एक-एक बाल्टी दूध डाला जाना अनिवार्य है।

अमावस्या की रात जब लोगों को कुएं में दूध डालना था, उसी रात राज्य में रहनेवाली एक चालाक एवं कंजूस बुढ़िया ने सोचा कि सारे लोग तो कुएं में दूध डालेंगे, अगर मैं अकेली एक बाल्टी पानी डाल दूं तो किसी को क्या पता चलेगा। इसी विचार से उस कंजूस बुढ़िया ने रात में चुपचाप एक बाल्टी पानी कुएं में डाल दिया। अगले दिन जब सुबह हुई तो लोग वैसे ही मर रहे थे। कुछ भी नहीं बदला था क्योंकि महामारी समाप्त नहीं हुयी थी। राजा ने जब कुएं के पास जाकर इसका

कारण जानना चाहा तो उसने देखा कि सारा कुआं पानी से भरा हुआ है। दूध की एक बूंदी भी वहां नहीं थी। राजा समझ गया कि इसी कारण से महामारी दूर नहीं हुई और लोग अभी भी मर रहे हैं।

दरअसल ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि जो विचार उस बुढ़िया के मन में आया था, वही विचार पूरे राज्य के लोगों के मन में आ गया और किसी ने भी कुएं में दूध नहीं डाला।

जैसा इस कहानी में हुआ वैसा ही हमारे जीवन में भी होता है। जब भी कोई ऐसा काम आता है जिसे बहुत सारे लोगों को मिलकर करना होता है तो अक्सर हम अपनी जिम्मेदारियों से यह सोचकर पीछे हट जाते हैं कि कोई न कोई तो कर ही देगा और हमारी इसी सोच की वजह से स्थितियां वैसी की वैसी बनी रहती है। अगर हम दूसरों की परवाह किये बिना अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने लग जायें तो पूरे देश में ऐसा बदलाव ला सकते है जिसकी आज हमें जरूरत है।

८४८) निरक्षर को पंडितजी बना दिया बीरबल ने - एक ब्राह्मण को पंडित बनने की बड़ी इच्छा थी। वह चाहता था कि किसी प्रकार पंडित बन जाये, लेकिन वह ब्राह्मण मूर्ख था। एक बार उसे बीरबल से मिलने का अवसर मिला। वह बीरबल से बोला महोदय मैं गैर पढ़ा-लिखा ब्राह्मण हूं। पढ़ना-लिखना नहीं जानता, लेकिन पंडित बनना चाहता हूं।

बीरबल ब्राह्मण की बात सुनकर थोड़ा मुस्कुराये। वो समझ गये कि यह व्यक्ति किसी भी प्रकार पंडित बनना चाहता है। बीरबल बोले- भाई यह कैसी बात है, बगैर पढ़ा-लिखा व्यक्ति क्या पंडित बन सकता है? पंडित बनने के लिए तो ज्ञान प्राप्त करना बहुत जरूरी है। काफी समझाने के बाद भी वह ब्राह्मण अपनी जिद पर अड़ा रहा। वह बोला- दीवानजी, मैं अब ज्ञान तो प्राप्त नहीं कर सकता, लेकिन मेरी पंडित बनने की इच्छा आप ही पूरी कर सकते हैं।

बीरबल समझ गये कि अब तो कुछ उपाय खोजना ही पड़ेगा। वे ब्राह्मण से बोले- देखो, मैं तुम्हें पक्का पंडित तो नहीं बना सकता, लेकिन ऐसा उपाय जरूर कर सकता हूं कि सब लोग तुम्हें पंडितजी कहने लगें। वह ब्राह्मण बड़ा प्रसन्न हो गया। वह बोला- ठीक है, ऐसा इंतजाम ही कर दीजिये। बीरबल ने कहा- तो फिर ऐसा करना एक-दो माह तक, जो भी व्यक्ति तुम्हें पंडित कहे, उसे मारने दौड़ना। ब्राह्मण के तैयार होते ही बीरबल ने कुछ बच्चों को समझाया कि बच्चों, जो सामने व्यक्ति दिखाई दे रहा है, इसे पंडितजी नाम से चिढ़ है।

इतना कहना था कि सब बच्चे उस मूर्ख ब्राह्मण को पंडितजी कहकर चिढ़ाने लगे। यह सुनकर वह ब्राह्मण बच्चों को मारने दौड़ता। बच्चों और कुछ बड़ों ने भी उस ब्राह्मण को पंडितजी-पंडितजी नाम से छेड़ना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में सभी लोग उस ब्राह्मण को पंडितजी कहने लगे। अब उस ब्राह्मण ने चिढ़ना बंद कर दिया था। इस तरह बीरबल ने एक मूर्ख ब्राह्मण को पंडित बना डाला।

८४९) थैली में रखे पैसों की खनखनाहट - जानू भालू जंगल का सीधा साधा जानवर था। वह गरीब जरूर था, लेकिन था ईमानदार। एक दिन वह शहद खाने जा रहा था। रास्ते में सोनू भेड़िये की मिठाई की दुकान आई। वहां तरह-तरह की मिठाइयां बन रही थीं।

जानू के पैर में अचानक कांटा लगा, तो वह वहीं बैठकर उसे निकालने लगा। इतने में सोनू भेड़िया उसके पास आकर बोला- तुमने मेरे पकवानों की खुशबू सूंघ ली है और तुम्हें इसके पैसे देने होंगे। सोनू भेड़िये की अजीब बात सुनकर बेचारा

जानू चकराया, बोला- तुम गरीब को इस तरह ठगते हो, तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें किसी भी हालत में दाम तो देने ही होंगे, यदि दाम नहीं दिये तो मैं इस मामले को वनराज की अदालत में ले जाऊंगा।

ठीक है तुम मुझ पर दावा कर दो। जानू ने कहा। फिर जानू अपने बुद्धिमान मित्र स्वामी बंदर के पास आया। उसने धूर्त सोनू भेड़िये की दास्तान सुनाई। सुनकर बंदर बोला- चिंता न करो, तुम्हारे साथ अदालत में मैं चलूंगा।

पेशीवाले दिन वनराज की अदालत में दोनों पक्ष पहुंचे। अब वनराज ने जानू से कहा- तुम्हें शर्म नहीं आती। मिठाइयों की खुशबू सूंघने के उपरांत भी तुम पैसे देने से इन्कार कर रहे हो। तुरन्त सोनू को रकद अदा करो।

वनराज के मुख से ऐसी बात सुनकर स्वामी बंदर ने कहा- वनराजजी, मिठाइयों को सूंघने की रकम मैं अदा कर दूंगा। फिर बंदर ने अपने थैले में से एक छोटी सी लाल थैली निकाली, जिसमें सिक्के भरे हुए थे। उसने थैली को भेड़िये के कान के पास ले जाकर कई बार हिलाया और पूछा- सोनूजी। क्या थैली में रखे पैसों की खनखनाहट आप सुन रहे हैं? हां, सुन रहा हूं, जरूर सुन रहा हूं। भेड़िये ने कहा। तो ठीक है। कल मेरे मित्र जानू ने तुम्हारे पकवानों की खुशबू सूंघी थी और आज तुमने मेरे पैसों की खनखनाहट सुन ली है। अब हमारा हिसाब साफ हो गया है।

यह सुनकर भेड़िया बुरी तरह झेंप गया। वनराज बोला- चलो, आज की अदालत में अच्छा फैसला हुआ। जैसे को तैसा। और फिर जानू अपने मित्र स्वामी बन्दर केसाथ हंसते हुए अपने घर पहुंचा।

८५०) गुरु दक्षिणा - बालक मनु होटल में काम करता था। लेकिन स्कूल जाते बच्चों को देखकर उसके मन में भी पढ़ने की लालसा जाग उठती थी। वह होटल का काम करता और रात में वहीं जमीन पर सो जाता। होटल मालिक उसे खाना देता और उसका वेतन उसके पापा को भेज देता। उसी होटल में एक बुजुर्ग टीचर रोज चाय पीने आया करते और मनु को काम करते देख उन्हें बुरा लगता। बुजुर्ग टीचर ने मालिक से कहा- ये बच्चा पढ़ना चाहता है। मैं इसकी हसरत भरी आंखों में पढ़ने की चाह देखता हूं। मेरे पास रात ९ बजे भेज दिया करिये, मैं इसे पढ़ाया करूंगा। लेकिन मालिक तैयार नहीं हुआ।

एक दिन अचानक होटल मालिक ने टीचर से अपने बेटे को पढ़ाने को कहा। तब टीचर ने शर्त रखी कि वो मनु को भी उसके बेटे के साथ पढ़ाएंगे। मालिक का लड़का आलसी और कामचोर था, बार-बार फेल हो जाता था। मालिक, टीचर की बात मजबूरी में मान गया। इस तरह टीचर ने रात्रिकालीन स्कूल में मनु का दाखिला करा दिया। रात में मनु मन लगाकर पढ़ता, दिनभर होटल में काम करता। वह रात को सिर्फ ४ घंटे ही सो पाता। मेहनत से पढ़ने के कारण उसने १०वीं की परीक्षा फर्स्ट क्लास में पास की। टीचर खुशी से फूले नहीं समाए। मेहनत रंग लाई। अब तो मनु को स्कॉलरशिप भी मिलने लगी। इसी तरह १२वीं की परीक्षा भी उसने पास कर ली। प्रसन्नता से मनु, टीचर के पैर छूकर बोला- सर, मैं आपके सिद्धांत और मूल्यों पर चलूंगा और उन बच्चों के लिए कुछ करूंगा जो मजबूरी के कारण पढ़ नहीं पाते। अब मनु ने ट्यूशन पढ़ाकर अपनी पढ़ाई जारी रखी। एक दिन टीचर ने मनु से कहा- बेटा, तुम गरीब बच्चों को पढ़ाना और आगे बढ़ने में उनकी मदद करना। यही मेरे लिए सच्ची गुरु दक्षिणा होगी। मनु ने नम आंखों से टीचर को प्रणाम किया और कहा - सर, मैं हमेशा मजबूर बच्चों में शिक्षा प्रसार करूंगा और कुछ बनकर बाल मजदूरी को भी बंद करा दूंगा।

८५१) चांद कैसे लाया जा सकता है? - पेश है अमेरिकी लेखक जेम्स थर्बर की कहानी मेरी मून्स। इसमें उन्होंने यह बताने की कोशिश की है कि बुद्धि और युक्ति से हर मुश्किल आसान हो सकती है और बुद्धि किसी के पास भी हो सकती है। एक जोकर के पास भी।

एक था राजा। एक बार उसकी दस साल की बेटी राजकुमारी लेनोर बीमार पड़ गई। कई डॉक्टर बुलाए गए, लेकिन कोई उसकी बीमारी समझ न सका। राजा परेशान था कि वह ऐसा क्या करे कि उसकी लाड़ली बेटी ठीक हो जाए। यही सवाल उसने राजकुमारी से किया, तो उसने कह दिया- मुझे चांद चाहिए। अगर आप मुझे चांद ला दें, तो मेरी तबीयत ठीक हो जाएगी। यह सुनकर राजा पसोपेश में पड़ गया। लेकिन उसे हर हालत में अपनी बेटी को ठीक करना था, इसलिए बिना देर किए उसने अपना दरबार लगाया। वह दरबारियों से राय-मशविरा करना चाहता था। उसे उम्मीद थी कि वे कुछ न कुछ हल जरूर निकालेंगे।

सबसे पहले राज खजांची को बुलाया गया। राजा ने सारी बात बताते हुए कहा- खजांची जी, आपने अब तक हमारे लिए काफी कुछ किया है। क्या आप राजकुमारी के लिए चांद ला सकते हैं?

खजांची चौका- आप कहें, तो मैं अनमोल हीरे-जवाहरात ला सकता हूं। लेकिन चांद... उसके चेहरे पर पसीना छलक आया। हीरे-जवाहरात लेकर मैं क्या करूंगा। मेरी प्यारी बेटी तो ठीक नहीं हो पाएगी।

अब बारी आई राज तांत्रिक की। राजा ने पूछा- क्या आप राजकुमारी के लिए चांद ला सकते हैं।

सुनते ही तांत्रिक सन्न रह गया। वह बोला महाराज, मैं दुनिया के किसी भी कोने से कोई भी चीज मंगा सकता हूं, लेकिन चांद..., चांद तो कोई भी नहीं ला सकता।

राजा ने लगभग चीखते हुए आदेश दिया- गणितज्ञ को बुलाया जाए। तभी वहां एक गंजा व्यक्ति पेश हुआ। वह अपने दोनों कानों के ऊपर पैंसिल दबाए हुए था। यह था राज गणितज्ञ। राजा ने उससे भी अपनी इच्छा दोहराई- आप बड़ी-बड़ी गणना कर सकते हैं, चांद कैसे लाया जा सकता है, क्या आप यह बता सकते हैं? गणितज्ञ ने गणना कर बता दिया कि चांद जमीन से इतने मील की दूरी पर है। इसका आकार पूरे राज्य का आधा हो सकता है। इसलिए चांद लाना संभव नहीं है। राजा की आशा टूटती जा रही थी। अब बारी आई दरबारी जोकर की। उसने आते ही राजा को झुककर सलाम किया। तब तक राजा की आंखें भर आई थीं। वह भर्राए गले से बोले- जब तक रानी बेटी को चांद नहीं मिलेगा, तब तक उसकी तबीयत ठीक नहीं होगी। क्या तुम चांद ला सकते हो? हां, क्यों नहीं?

राजा हैरान था। वह चुपचाप जोकर को देख रहा था। जोकर ने फिर कहा- महाराज, पहले यह पता करना होगा कि राजकुमारी को कितना बड़ा चांद चाहिए?

राजा जोकर को राजकुमारी के कमरे में ले गया। राजकुमारी ने जोकर को देखते ही पूछा, क्या तुम चांद ले आए?

अभी नहीं, लेकिन जल्दी ही ला दूंगा। पहले यह बताओ कि चांद है कितना बड़ा? राजकुमारी ने कहा- मेरे अंगूठे के नाखून के बराबर। दरअसल, जब मैं आंख के सामने अंगूठे का नाखून कर लेती हूं, तो चांद नजर नहीं आता। अच्छा यह बताओ कि चांद किस चीज का बना है और कितनी ऊंचाई पर रहता है? जोकर ने पूछा।

चांद सोने का बना है और सामने वाले पेड़ के ऊपर रहता है। ठीक है, आज रात को मैं पेड़ पर चढ़कर चांद उतार लाऊंगा, जोकर ने कहा। जोकर ने राजा से कहा कि मैं कल तक राजकुमारी के लिए चांद ले आऊंगा। अगले दिन जोकर सुनार से सोने का एक चांद बनवा कर ले आया। उसने यह चांद राजकुमारी को दे दिया। राजकुमारी बहुत खुश हुई। उसने चांद को जंजीर में डालकर गले में लटका लिया।

राजकुमारी तो ठीक हो गई, लेकिन राजा को चिंता खाए जा रही थी कि रात को जब राजकुमारी खिड़की से असली चांद को देखेगी, तो कहीं उसकी तबीयत फिर से खराब न हो जाए।

रात को जब चांद निकला, तो राजकुमारी उसे देखने लगी। जोकर ने राजकुमारी से पूछा, अच्छा राजकुमारी जरा यह तो बताओ कि जब चांद तुम्हारे गले में लटका है, तो आसमान में कैसे निकला? राजकुमारी हंस पड़ी तुम सचमुच बहुत मूर्ख हो। तुम्हें नहीं मालूम, जब एक दांत टूट जाता है, तो दूसरा निकल आता है। उसी तरह यह दूसरा चांद निकल आया है। यह सुनकर राजा ने राहत की सांस ली और जोकर भी काफी खुश नजर आ रहा था।

८५२) सम्राट, पूर्व मंत्री और सहनशीलता - चीन में जिनहई नामक एक सम्राट हुए थे। उनका एक पूर्व मंत्री था, जिसका नाम था वांग किम। इस मंत्री का परिवार बहुत बड़ा था। उसकी पांच पीढ़ियों में लगभग एक हजार सदस्य थे। किम के परिवार की खूबी यह थी कि पांचों पीढ़ियों के लोग एक ही छत के नीचे एक साथ बेहद प्रेम से रहते थे। वे मिल-जुलकर सारे काम निपटाते और सबके सुख-दु:ख में भागीदार बनते। परिवार के किसी भी सदस्य पर अगर कभी कोई मुसीबत आती, तो सभी एकजुट होकर उसका निदान करते। इस परिवार की ख्याति पूरे देश में थी। सम्राट ने एक दिन सोचा कि अगर चीन के सारे परिवार ऐसे हो जाएं, तो चीन अपने आप में एक अनोखा देश बन सकता है। ऐसा सोचकर वह स्वयं अपने एक मंत्री के साथ अचानक किम के घर पर जा पहुंचे। किम उस समय तक बहुत बूढ़े हो चुके थे। जब उन्होंने सम्राट को अपने द्वार पर देखा, तो उनका यथोचित सत्कार किया और कक्ष में ले जाकर आदर सहित बिठाया। सम्राट ने किम से पूछा, आपके परिवार की एकता और सौहार्द्र की कहानियां मैंने बहुत सुनी हैं। मैं जानना चाहता हूं कि इतने बड़े परिवार में यह सब भला कैसे संभव हो पाता है? किम बोल नहीं पा रहे थे, इसलिए उन्होंने अपने प्रपौत्र को इशारा कर कागज और कलम मंगवाई। प्रपौत्र उनकी बताई चीजें ले आया। किम ने कागज पर कुछ लिखने की कोशिश की, मगर उनके हाथ कांप रहे थे, जिसकी वजह से कलम नीचे गिर गई। उन्होंने फिर से कलम उठाई और कांपते हुए हाथों से तीन बार लिखा, सहनशीलता, सहनशीलता, सहनशीलता। सम्राट आश्चर्य से भर गए। किम ने बुदबुदाते हुए सम्राट से कहा कि यदि सहनशीलता का मंत्र हमारे पास हो, तो एक परिवार क्या, पूरा राष्ट्र, या कहें कि पूरा विश्व इसी तरह प्रेम से रह सकता है। आखिर यह समूचा जगत भी तो एक परिवार की तरह ही है। यह सुनकर सम्राट को अपनी जिज्ञासा का समाधान मिल गया। वह खुशी-खुशी अपने महल में लौट गए। मन में सहनशीलता हो, तो आसपास हमेशा एकता बनी रह सकती है।

८५३) एक बार एक महात्मा के पास एक व्यक्ति आया और उनसे उसने शांति-सुख का उपाय पूछा। महात्मा ने उसे श्रीमद्भगवत गीता देते हुए कहा कि इसकी पूजा करना, रोजाना एक अध्याय पढ़ना और उसके बारे में चिंतन करना। वह

व्यक्ति ऐसा ही करने लगा। सुबह गीता की पूजा करता, अध्याय का पाठ करता, फिर अपने काम पर निकल जाता। एक दिन जब वह लौटा तो उसने देखा कि गीता की पुस्तक को चूहे ने काट दिया है। कई बार ऐसा होने पर वह उपाय खोजने लगा। फिर किसी की सलाह पर वह बिल्ली ले आया। अब चूहे की समस्या तो खत्म हो गई, परंतु बिल्ली के लिए दूध की व्यवस्था की जरूरत पड़ने लगी।

दूध के लिए उसने एक गाय पाल ली। कुछ दिन अच्छे बीते। फिर सोचने लगा कि मैं तो दिनभर घर से बाहर रहता हूं। गाय को रोजाना घास-पानी देता हूं, बिल्ली के लिए दूध दूहता हूं। कोई पीछे से अगर गाय को चुरा ले गया तो? ऐसा सोचकर उसके मन में विवाह करने का विचार आया। उसने योग्य कन्या की तलाश कर ली और गाय की देखभाल और रखवाली की बात सोचकर अपनी शादी कर ली। फिर कुछ ही साल में घर में संतानें आ गईं। उसके दो पुत्र, दो पुत्रियां हो गईं। गाय व बिल्ली के भी वंशज आ गए।

एक दिन वही महात्मा उसके घर पधारे। उसने उनकी खूब आवभगत की। भोजन के बाद महात्मा ने पूछा, ये सब कौन हैं? आप तो अकेले ही थे? उसने तपाक से कहा, महाराज, ये गीता का संसार है। साधु ने हैरानी से पूछा- गीता का संसार। तब उसने सारी बात सुना दी। महात्मा ने कहा- अरे भाई। समस्या थी तो मुझसे तो पूछना था। किस मार्ग पर चल दिए? शांति के लिए गीता पढ़ने के लिए कहा था, अब तो शांति न जाने कहां चली गई।

जब हम गुरु की बात को अनसुना करते हैं, अक्सर असफलता ही हाथ लगती है।

८५४) नजर बदलें, नजारे बदल जाएंगे सोच बदलें, सितारे बदल जाएंगे - एक गुरु के सामने कुछ शिष्य बैठे हुए थे। गुरु ने बातों-बातों में एक सवाल पूछा- सबसे अधिक मूल्यवान कौन सी रोशनी है? एक शिष्य ने उठकर जवाब दिया- सूरज की रोशनी। यह न केवल उजाला देती है बल्कि प्राण और आरोग्य भी देती है। दूसरे शिष्य ने चांद की रोशनी को मूल्यवान बताया क्योंकि रात के अंधेरे को वही चीरती है। उस समय सूरज कोई काम नहीं आता। गुरु के चेहरे पर संतुष्टि न पाकर अन्य शिष्यों ने भी अपने अपने उत्तर सामने रखे। किसी ने रत्न-मणियों को तो किसी ने दीपक और मोमबत्तियों को बेशकीमती कहा। लेकिन गुरुदेव को किसी का भी उत्तर संतोष नहीं दे सकता। सभी शिष्यों ने उनसे निवेदन किया- अब आप ही सही उत्तर बताएं। तब उन्होंने कहा- तुम सबके उत्तर भी अपनी-अपनी जगह सही हैं। किंतु इन सब रोशनियों का महत्व तभी है जब हमारी आंखों की रोशनी सही सलामत हो। इसके बिना इन सबका कोई उपयोग नहीं। इसलिए सबसे मूल्यवान है- आंखों की रोशनी। इसके बाद वे कुछ रुके और बोले- यह जवाब भी अपनी जगह आधा अधूरा है। इतनी मूल्यवान होते हुए भी इन आंखों की सबसे बड़ी कमी यह है कि ये दूसरों का चेहरा तो देख लेती हैं, लेकिन खुद का चेहरा नहीं देख पातीं।

इस धरती पर ऐसा एक भी प्राणी नहीं मिलेगा जो अपना चेहरा अपनी ही आंखों से देख लेता हो। ये आंखें सदा औरों के चेहरों को देखने में लगी रहती हैं।

८५५) हंसी के सहारे हर मुश्किल का सामना किया जा सकता है - दिल्ली के प्रसिद्ध सूफी संत निजामुद्दीन औलिया अपने भांजे सैय्यद नूह से बहुत प्रेम करते थे। नूह छोटी उम्र में ही सूफी मत का विद्वान बन गया था। हजरत

निजामुद्दीन नूह को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। नूह का आकस्मिक निधन हो गया। अपने प्रिय भांजे के देहांत से निजामुद्दीन औलिया को बड़ा आघात लगा और वे बेहद उदास व गुमसुम रहने लगे। अमीर खुसरो अपने प्रिय गुरु की इस अवसादग्रस्त स्थिति से बड़े दुखी थे और हर क्षण इस कोशिश में रहते थे कि किसी तरह गुरु के चेहरे पर मुस्कान लौट आए।

वसंत का महीना था। खुसरो अपने कुछ सूफी साथियों के साथ सैर करने निकले। उन्होंने देखा कि प्राचीन कालका देवी के मंदिर परिसर के निकट कुछ श्रद्धालु पीले वस्त्र धारण कर ढोल-मंजीरे बजाकर मस्ती से नाच-गा रहे थे। उत्सुकतावश खुसरो ने मस्ती में डूबे लोगों से पूछा कि आप लोग क्या कर रहे हैं? एक व्यक्ति ने बताया कि आज वसंत पंचमी है। हम सब ज्ञान की अधिष्ठात्री को प्रसन्न करने के लिए उन पर सरसों के फूल चढ़ाने जा रहे हैं। तब खुसरो ने सोचा कि मेरे गुरु उदास हैं। उन्हें खुश करने के लिए मैं भी उन्हें सरसों के फूल अर्पित करूंगा। खुसरो ने सरसों के फूल मुकुट की तरह अपनी पगड़ी में सजा लिए और अपने पीर भाइयों व सूफी कव्वालों के साथ सज-संवर कर नाचते गाते हजरत निजामुद्दीन की खानकाह की ओर चल दिए। वहां पहुंचकर खुसरो खूब नाचे-गाये और अपने साथियों के साथ ठहाके लगाकर हंसते रहे। खुसरो के नाचने-गाने और अपने साथियों के साथ खिलखिलाकर हंसने की मस्त अदा व विचित्र वेशभूषा देखकर निजामुद्दीन औलिया भी हंसने लगे और अवसादग्रस्त अवस्था से निजात पा गए।

८५६) अहंकार हमें बड़ा नहीं बनाता बड़प्पन को कम कर देता है - सिपाहियों की एक टोली युद्ध क्षेत्र में काम पर लगी थी। वह एक भारी-भरकम लट्ठे को उठाने का प्रयास कर रही थी ताकि उसकी मदद से किले की दीवार गिराई जा सके। बगल में एक नायक खड़ा था, वह सिपाहियों से दूर खड़ा उन्हें आदेश दे रहा था कि ऐसे नहीं वैसे उठाए, जरा और जोर लगाओ। इतने में एक अनजान घुड़सवार व्यक्ति वहां से गुजरा। उसने नायक से पूछा, क्या तुम्हें नहीं लगता कि यदि तुम भी उनकी मदद करो तो इस लट्ठ को उठाना आसान हो जाएगा? क्यों नहीं तुम भी इन लोगों की मदद करते हो? नायक ने कहा, यह मेरी जिम्मेदारी नहीं है। मैं एक नायक हूं। लट्ठ को उठाना उनका काम है। मेरा काम यह देखना है कि वे इसे ठीक से उठा रहे हैं या नहीं।

यह सुनकर वह अनजान व्यक्ति घोड़े से उतरा और उन सिपाहियों की टोली के साथ मिलकर लट्ठ उठाने में जुट गया। एक अतिरिक्त व्यक्ति की ताकत जुड़ जाने से लट्ठ आसानी से उठा लिया गया। काम पूरा हो जाने के बाद वह अनजान व्यक्ति अपने घोड़े पर चढ़कर आगे बढ़ गया। लेकिन जाते-जाते उसने नायक की ओर मुड़कर कहा, अगली बार, जब तुम्हें किसी लट्ठे को उठाने की जरूरत पड़े तो अपने सेनापति को बुला लेना। तब जाकर सिपाहियों को बोध हुआ कि वह अनजान व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि उनका सेनापति यानी जॉर्ज वॉशिंगटन था। यही जॉर्ज वॉशिंगटन बाद में अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति बने। यह कहानी सच्ची नम्रता की प्रतीक है। कई लोग ये सोचते हैं कि वे इतने महान हैं कि घर-गृहस्थी के दैनिक कार्य, श्रमिक वाले कार्य या अपने दफ्तर के पर्दे के पीछे के छोटे-छोटे कार्य नहीं कर सकते हैं। हम अपने आपको ऊंचा और महत्वपूर्ण समझते हैं। पर यह रोचक है कि हम सचमुच के महान व्यक्तियों के जीवन में अविश्वसनीय नम्रता पाते हैं जिससे वे निम्न श्रमिकों के साथ कार्य करने को तत्पर रहते हैं।

८५७) एक फ्रीजर प्लांट में एक इंजीनियर थे। वह वहां कार्य करनेवाले सभी कर्मचारियों से अत्यंत विनम्रता से पेश आते और आते-जाते सबका अभिवादन करना कभी नहीं भूलते थे। उनकी इस अच्छी आदत के कारण सभी लोग उनका बहुत सम्मान करते थे। एक दिन छुट्टी के समय जब सभी कर्मचारी घर जाने की तैयारी कर रहे थे तो अचानक प्लांट में कोई तकनीकी खराबी आ गई। इंजीनियर महोदय प्लांट में आई गड़बड़ी को सुधारने में लग गए। जब तक उनका कार्य पूरा हुआ काफी देर हो चुकी थी। वह प्लांट के एक ऐसे कोने में कार्य कर रहे थे जिधर किसी का भी ध्यान नहीं गया। प्लांट के दरवाजे सील करके सभी कर्मचारी अपने-अपने घर चले गए। इंजीनियर महोदय ने जोर जोर से आवाज लगाई पर अंदर की आवाज बाहर नहीं जा रही थी। ठंड बढ़ती जा रही थी। बचने का कोई उपाय नहीं दिखाई पड़ रहा था। इंजीनियर महोदय ठंड के मारे अपनी चेतना खोते जा रहे थे। तभी एक चमत्कार हुआ।

अचानक प्लांट का दरवाजा खुला और एक सिक्युरिटी गार्ड अंदर आया। उसने सारी लाइटें जला दीं और इंजीनियर महोदय को पुकारने लगा। उसने उन्हें बाहर निकलने में मदद की और भूल के लिए क्षमा मांगी। इंजीनियर महोदय ने गार्ड से पूछा, आपको कैसे पता चला कि मैं अंदर रह गया हूं? गार्ड ने जवाब दिया, सर इस प्लांट में कई दर्जन लोग काम करते हैं और जाते हुए बाय कहकर जाते हैं। मुझे याद आया कि आपने सुबह तो मेरा हालचाल पूछा था लेकिन शाम को आपसे मुलाकात ही नहीं हुई। मुझे कुछ अनहोनी का शक हुआ और मैं आपको देखने अंदर चला आया। हमारी अच्छी आदतें विशेष रूप से हमारा किसी को प्यार व सम्मान देना विषय परिस्थितियों में हमारे जीवन तक को बचा सकता है।

८५८) हार्दिक, पिता और कार - श्यामलाल जी का इकलौता बेटा था हार्दिक। श्यामलाल जी ने हमेशा हार्दिक को अपनी ख्वाहिशों के लिए लड़ना सिखाया। वह कहते थे, अगर तुममें कुछ पाने की ललक है, तो तुम्हें उसके काबिल बनना पड़ेगा। हार्दिक जब कॉलेज में पहुंचा, तो उसके दोस्तों ने बाइक खरीदी। कुछ ने तो कारें भी ले लीं। हार्दिक भी चाहता था कि वह कार या बाइक से कॉलेज जाए। उसने पिता से बात की, तो वह बोले, मैंने तुम्हारे लिए एक खूबसूरत-सी कार देख रखी है। वह अनोखी कार है। पर उसे पाने के लिए तुम्हें अपने कॉलेज में अव्वल नंबर लाने होंगे। हार्दिक बोला, उसके लिए तो मुझे उपाधि पूरी करने तक इंतजार करना होगा। उसे लगा कि उसके पिता दुनिया के सबसे क्रूर पिता हैं। वह पिता से बोला, आप मुझे कार ला दीजिए, मैं वायदा करता हूं कि अव्वल आकर दिखाऊंगा। श्यामलाल जी बोले, मैं यह कैसे मान लूं? यह सुनकर हार्दिक को बहुत गुस्सा आया। उसने ठान लिया कि वह सबसे अधिक नंबर लाकर ही दिखाएगा। चार साल बीत गए। हार्दिक पिता से नाराज तो था। पर उसने अपनी मेहनत में कोई कसर नहीं छोड़ी। उसने कॉलेज में टॉप किया। श्यामलाल जी का सीना गर्व से फूल गया। पर उन्हें पता था कि हार्दिक उनसे बहुत नाराज है। उन्होंने हार्दिक के लिए वह महंगी कार मंगवा ली। हार्दिक घर लौटते ही सबसे पहले अपने पिता के पास गया। श्यामलाल जी ने जब उसे कार की चाभी दी, तो वह बोला, पहले मैं आपसे बहुत नाराज था। मेरे सारे दोस्तों के पिता ने उन्हें बड़ी-बड़ी कार और बाइक दिलाई, जबकि आपने मुझे आज तक कुछ नहीं दिलाया। लेकिन आज मुझे एहसास हो गया कि अगर बाकी पिताओं की तरह आपने भी मेरी हर ख्वाहिश पूरी की होती, तो मुझे चीजों की अहमियत समझ में नहीं आती। कॉलेज में अव्वल आने के साथ ही मेरा एक

बहुराष्ट्रीय कंपनी में चयन भी हो गया है। मैं अब अपने दम पर कार खरीद सकता हूं।

८५९) सरदार के सींग - चूहे और बिल्लियों के बीच युद्ध चल रहा था। चूहे मैदाने जंग में आते और बिल्लियों से पिटकर लौट जाते थे। इस बार हारने के बाद चूहे अपनी पराजय पर सोच-विचार करने के लिए भूगर्भ में जमा हुए और यह तय किया कि युद्ध में हारने की वजह उनके ऊपर किसी सरदार का न होना है। फौरन सरदार का चुनाव हुआ। तीन अलग-अलग दलों के तीन सरदार चुने गए। सरदारों ने अपने सिर पर सींग लगा लिए। ताकि वे अन्य सैनिक चूहों से महान लगें। दूसरे दिन वे फिर मैदाने जंग में गए और फिर पिटने लगे। कुछ ही देर में चूहों में भगदड़ मच गई। सारे चूहे जान बचाकर अपने-अपने बिलों में जा घुसे, पर सरदार चूहे अपने सींगों की वजह से बिलों में नहीं घुस पाए। बिल्लियों ने उन्हें घेर लिया और मारकर खा गईं। सरदार बनना जितना असान है, सरदार बने रहना उतना ही मुश्किल है।

८६०) दु:ख का साथी - जॉन और मारिन एक दिन खरीदारी के लिए गए। काफी फल खरीदने की वजह से उनके थैलों का बोझ बढ़ गया। बोझ से परेशान जॉन रास्ते में बड़बड़ाता हुआ चल रहा था, पर मारिन पर उसकी झुंझलाहट का कोई असर नहीं पड़ रहा था। उल्टा वह हँसती-हँसती उसे एक चुटकुला सुनाने लगी। जॉन चिढ़ गया और गुस्से में बोला, मारिन। क्या तुम चुप नहीं रह सकतीं? बड़ी चुहल सूझ रही है न। मेरी तरह अगर तुम्हें यह भारी बोझा उठाना पड़ता तो सारी हँसी भूल जातीं। मारिन बोली, प्यारे जॉन। बोझा तो मेरा भी कम नहीं; पर हाँ, मैंने उसे अपने एक साथी से बाँट लिया है, इसीलिए महसूस नहीं हो रहा। जॉन सुनकर हैरान रह गया। बोला, मुझे भी बताओ, कौन है वह साथी? मैं भी उसे अपना मित्र बना अपना बोझा बाँटूँगा। मारिन ने उत्तर दिया, जिस साथी को अपना मित्र बना लेने से सारा बोझ हल्का हो जाता है उसका नाम है- धैर्य। धैर्य कठिनाइयों का सच्चा साथी है।

८६१) नूरी, भिखारी और कागज का टुकड़ा - नूरी दफ्तर से घर वापस लौट रही थी। रास्ते में वह एक दुकान में गई और एक कॉफी व बर्गर खरीदकर खाने लगी। खाते-खाते उसकी नजर बाहर बैठे एक भिखारी पर पड़ी। उसके हाथ में एक कटोरा था। आते-जाते लोग उसमें कुछ-कुछ पैसे डाल रहे थे। जब तक नूरी का बर्गर खत्म होता उसने देखा कि वह भिकारी बर्गर की दुकान में आया था। लेकिन दुकान के सेल्समैन ने उसे भगा दिया। नूरी को यह अच्छा नहीं लगा। नूरी ने काउंटर से एक बर्गर और दो कप कॉफी खरीदी तथा बाहर जाकर भिखारी के पास बैठ गई। उसने भिखारी से पूछा, क्या तुम बर्गर ऑर कॉफी लोगे? भिखारी ने मना कर दिया। नूरी उसके पास में बैठकर अपनी कॉफी पीने लगी और उसमें पूछनें लगी, क्या नाम है, कहां से आए हो, भीख क्यों मांगते हो आदि। धीरे-धीरे भिखारी थोड़ा खुला और फिर उसने बर्गर और कॉफी भी ली। उसने बताया कि वह जब छोटा था, तब उसके माता-पिता उससे बिछड़ गए। उसने उन्हें बहुत ढूंढा, पर वह नहीं मिले। उसने कभी बूट पॉलिश की, कभी मजदूरी की, तो कभी होटलों में बर्तन साफ किए। उसने नूरी को बताया कि वह पहली इंसान है, जिसने उसके लिए बिना बदले में कुछ मांगे कुछ किया। यह सुनकर नूरी को बहुत खराब लगा। वह सोचने लगी कि सच में परिस्थितियां इंसान को क्या बना देती हैं। नूरी घर जाने के लिए उठ ही रही थी कि भिखारी ने उसे एक मिनट रुकने को कहा। उसने अपने झोले से एक कागज का टुकड़ा और कलम निकाली और कुछ लिखने लगा। फिर कागज नूरी को दिया और वहां से चला गया। नूरी ने जब वह पढ़ा, तो उसकी आंखों में आंसू थे। उसने चारों तरफ

उसे ढूंढने की कोशिश की, पर वह नहीं दिखा था, मैं आज अपना जीवन हमेशा के लिए खत्म करने जा रहा था। तुमने मुझे एक बार फिर से जीने की उम्मीद दी। तुमने एहसास दिलाया कि मैं अकेला नहीं हूं। मेरी जिंदगी बचाने के लिए शुक्रिया।

८६२) कायर की पीड़ा - हिरन के एक बच्चे ने अपनी माँ से पूछा, माँ, माँ। आप कुत्ते से काफी बड़ी हैं। आपके पास सींग भी हैं, जिनसे आप कुत्ते का मुकाबला कर सकती हैं। फिर आप कुत्ते से क्यों डरती हैं? हिरन की माँ ने बताया, बेटे। तुमने जो कहा, सच ही कहा। फिर भी, न जाने क्यों, कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनते ही मेरे पैर भागने के लिए तेजी से दौड़ने लगते हैं। कायर में हिम्मत भरना आसान नहीं।

८६३) लापरवाही का नतीजा - एक दिन एक किसान अपने घोड़े के साथ शहर जा रहा था, तभी उसने देखा कि घोड़े के अगले पैर का नाल ढीला हो गया है। पर बिना इस बात पर अधिक ध्यान दिए वह इत्मीनान से आगे चल पड़ा।

अभी वह कुछ कदम ही आगे बढ़ा होगा कि सहसा घोड़े के पैर से वह ढीला नाल निकल गया। तभी अचानक जंगल में दो डाकुओं ने उस किसान पर हमला बोल दिया। जो कुछ भी उन्हें किसान के पास मिला, छीन-झपटकर भाग गए। किसान निरुपाय था, करता भी क्या। आखिर उसको अपनी लापरवाही का नतीजा भुगतना पड़ा। अगर वह थोड़ी सी तकलीफ उठा, आसपास ढूंढकर घोड़े के पैर में नाल लगवा देता तो सरपट भागने में उसे तनिक भी देर न लगती। अपनी ही गलती पर किसान बहुत पछताया। किसी भी चीज के प्रति लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए।

८६४) मन का स्वामी - बात उन दिनों की है, जब यूनान में गुलामी की प्रथा प्रचलित थी और प्रत्येक धनी के घर गुलाम रखना अनिवार्य समझा जाता था। डायोजिनीज नामक एक धनी के पास केवल एक ही गुलाम था। दूसरे धनी अपने गुलामी के साथ मनमाने अत्याचार करते थे जबकि डायोजिनीज अपने गुलाम के साथ बड़ी नम्रता से पेश आता। फिर भी उसका गुलाम एक दिन उसे छोड़कर भाग गया। डायोजिनीज चाहता तो अन्य धनिकों की तरह उसे पकड़वा कर मंगवाता, पर उसने ऐसा नहीं किया, न मन में बुरा ही माना, बल्कि उसके जाने के बाद से वह सारे काम अपने हाथों से करने लगा। लोगों से यह बरदाश्त न हुआ। वे उसकी निंदा करने लगे कि वह पक्का डरपोक है। यह आरोप डायोजिनीज से सहन न हुआ। वह उन धनिकों से शांत स्वर में बोला, सोचो तो, मेरा गुलाम मेरे बिना रह सकता है तो मैं उसके बिना क्यों नहीं रह सकता। हर एक को अपने स्वर्ग आप बनाना होता है और अपनी रात भी आप ही बनानी होती है।

८६५) रिश्वत - एक विधवा स्त्री के पास ऊँचे नस्ल की एक मुरगी थी, जो साल के तीन सौ पैंसठ दिन एक बड़ा सा अंडा प्रतिदिन देती थी। स्त्री ने सोचा, अगर मैं इस मुरगी को दोगुना दाना डालूँ तो यह मुरगी रोजाना मुझे दो अंडे दे सकती है। उसी दिन से उस स्त्री ने मुरगी को दोगुना दाना डालना शुरू कर दिया। कुछ दिनों बाद मुरगी इतनी मोटी हो गई कि उसने अंडे देने ही बंद कर दिए।

८६६) दूसरे का बुरा - दो मित्र थे। उनमें एक कुम्हार था। वह मिट्टी के तैयार बरतन गाँव-गाँव बेचने जाता। दूसरा था माली। वह भी बाग में उगी सब्जी टोकरी में भरकर गाँव-गाँव बेचता फिरता। दोनों ने सोचा-क्यों न हम एक ऊँट खरीद लें। ऊँट पर एक ओर बरतन तथा दूसरी ओर सब्जी लादकर बाहर जाया करेंगे। सोचने भर की देर थी कि दोनों ने मिलकर एक ऊँट खरीद लिया। अब वे ऊँट पर अपना-अपना सामान लादकर बाहर जाने लगे। देखते-देखते

दोनों की आमदनी बढ़ गई। एक दिन जब वे ऊँट पर अपना-अपना माल लादकर मंडी में बेचने जा रहे थे कि हरी-हरी ताजा सब्जी को देखकर ऊँट का मन ललचा आया। उसने अपनी लंबी गरदन तिरछी की और सब्जी से मुंह भर लिया। कुम्हार ऊँट की हरकत देख रहा था। पर उसने सोचा, कौन सा मेरा नुकसान हो रहा है और आगे जाकर घास-दाना तो खिलाना ही पड़ेगा। दाम और खर्च होंगे, सो चरने दो। ऊँट मजे से गरदन घुमा-घुमाकर सब्जी चरता रहा। सब्जी खा लेने से एक तरफ का बोझा कम हो गया, जिससे दूसरी तरफ रखे बरतन धीरे-धीरे नीचे खिसकने लगे और कुछ देर बाद जमीन पर गिरकर चूर-चूर हो गए। अब तो कुम्हार मन-ही-मन बहुत पछताया। उसने सोचा, कहाँ तो मैं माली का नुकसान चाहता था, मेरा तो उससे अधिक नुकसान हो गया।

८६७) युवराज, स्वीमिंग और दादा जी - युवराज पिछले कुछ दिनों से स्वीमिंग सीखने पास के एक स्वीमिंग क्लब में जा रहा था। एक दिन युवराज और उसके दोस्तों में मुकाबला हुआ कि पूल के दूसरी तरफ गहरे पानी में कौन सबसे पहले जाकर लौट सकता हे। गिनती शुरू हुई और सभी ने तैरना शुरू कर दिया। पर गहरे पानी में पहुंचने ही युवराज घबरा गया और डूबने लगा। उसे डूबते देख सभी दोस्त चिल्लाए और स्वीमिंग कोच ने आकर युवराज को बचा लिया। घर पहुंचकर उसने घरवालों के सामने उसा घटना का जिक्र किया। युवराज बोला, मैं जैसे ही गहरे पानी में पहुंचा, मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं डूबने लगा। युवराज के दादाजी ने पूछा, फिर क्या हुआ? दादाजी को बताते-बताते युवराज को ऐसा लग रहा था, जैसे वह पूरी घटना फिर से घट रही हो। उसके रोंगटे खड़े होने लगे। वह बोला, मैं डूबता जा रहा था। मुझे लग रहा था कि मैं बस मरनेवाला हूं, कि तभी स्वीमिंग सर ने मुझे बचा लिया। दादा जी समझ गए कि वह बेहद डरा हुआ है। उन्होंने पूछा, तो अब तुम कल स्वीमिंग करने कैसे जाओगे? युवराज ने कहा, अब मैं कभी स्वीमिंग नहीं करूंगा। दादा जी बोले, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं। तुम्हारी उम्र का एक लड़का था। उसके घर में एक बहुत पुरानी अलमारी थी, जिसमें से कुछ दिनों से किसी के चिल्लाने की आवाजें आती थीं। लोग कहते थे कि उसमें कोई भूत छिपा है। कोई उसे खोलता नहीं था। उस लड़के को भी डर लगता था। पर वह जानना चाहता था कि उसमें क्या है। एक दिन उसने वह अलमारी खोल दी। पता चला, वह भूत नहीं, एक आदमी था, जिसे किसी ने बंद कर दिया था। वह उस लड़के को देखकर डर के मारे वहां से भाग गया। युवराज बोला, इसका मतलब? दादाजी बोले, मतलब यह कि हर डर का कोई कारण होता है। अगर हम वह कारण ढूंढ लें, तो वह डर हमारे मन से निकल जाएगा। अगर तुम अपने डर का सामना नहीं करोगे, तो उम्र भर वह तुम्हें सताएगा। डर से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उसका डटकर सामना करना चाहिए।

८६८) भूख देश प्रेम से बड़ी नहीं है - बात उन दिनों की है जब स्पेन में गृहयुद्ध छिड़ा हुआ था। फासिस्ट सेना ने मैड्रिड शहर को चारों तरफ से घेर लिया था। बेचारे नागरिक अन्न संकट से गुजर रहे थे। जब फासिस्ट सेना के सेनापति को इस स्थिति का पता चला तो उसने अपने सहायक को बुलाया और आज्ञा दी, शीघ्र ही नगर में बढ़िया किस्म की डबलरोटी पहुंचाने की व्यवस्था करो। लेकिन कैसे? सहायक ने परेशानी व्यक्त की, नगर के द्वार तो बंद हैं। सेनापति ने क्षणभर सोचा, फिर बोला, हवाईजहाज से बरसाओ। डबलरोटियां बरसाई गईं, पर परिणाम उलटा निकला। भूख के बावजूद बच्चों ने उन रोटियों पर कोई लूटपाट नहीं की, बल्कि बड़े आराम से उन्हें इकट्ठा कर-करके पुलिस थाने में जमा

कर दिया। दूसरे दिन सभी रोटियां कागजों में लपेट-लपेटकर फासिस्टों की खंदकों में वापस फेंक दी गईं। जिन कागजों में उन्हें लपेटा गया था, उन पर लिखा था- मैड्रिड को फासिस्टों की रोटियों से नहीं जीता जा सकता। हमारी भूख हमारे देश-प्रेम और सम्मान से बड़ी नहीं है। यदि चिड़िया भी एकता कर लें तो शेर की खाल खींच सकती हैं।

८६९) सोचना जरूरी है - भेड़ियों के सरदार ने भेड़-बकरियों के सरदार को संदेश भेजा। संदेश में लिखा गया था कि कई साल से हमारे बीच दुश्मनी चली आ रही है। हम यह नहीं चाहते कि हमारे बीच यह दुश्मनी जारी रहे। वास्तव में हमारे और आपके बीच दुश्मनी की वजह वह चरवाहा है जो अपना डंडा पछाड़कर हमें ललकारता रहता है। अगर हमारे बीच से उसे हटा दिया जाए तो हम लोग अच्छे दोस्त की तरह रह सकते हैं। यह संदेश पढ़कर मूर्ख भेड़-बकरियों ने सींग मार-मारकर चरवाहे को खदेड़ दिया। भेड़िए तो यही चाहते थे। जैसे ही उन्हें इस बात का पता चला, वे भेड़-बकरियों पर टूट पड़े। मित्र की बुराई सुनकर उससे रिश्ता तोड़ने से पहले सौ बार सोचना चाहिए।

८७०) संगति का प्रभाव - एक बार एक धनी व्यक्ति ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस से निवेदन किया, भगवान, यह रुपयों की थैली मैं आपके चरणों में भेंट करना चाहता हूं। कृपया आप इसे स्वीकार करें। परमहंस मुस्कराए, भाई, मुझे माया के जाल में न फंसाओ। मैं तुम्हारा धन ले लूंगा तो मेरा चित्त उसमें लग जाएगा। इससे मेरी मानसिक शांति भंग होगी। धनिक ने तर्क दिया, स्वामी। आप तो परमहंस हैं। आपका मन उस तेल-बिंदु के समान है जो कामिनी-कंचन के महासमुद्र में स्थित होकर भी सदैव उससे अलग रहेगा। परमहंस गंभीर हो गए, भाई, क्या तुम नहीं जानते कि अच्छे से अच्छा तेल भी यदि बहुत दिनों तक पानी के सम्पर्क में रहे तो वह अशुद्ध हो जाता है और उससे दुर्गंध आने लगती है। धनी ने अपना आग्रह त्याग दिया। मोह माया जीवन का बंधन है।

८७१) सुनहरे पंखोंवाली चिड़िया - सुनहरे पंखोंवाली एक चिड़िया भोजन के लिए पेड़ों के तने में रहनेवाले कीड़ों को ढूंढ रही थी। अचानक उसने देखा कि एक व्यक्ति जंगल के रास्ते कहीं जा रहा था। उसने हाथ में एक लकड़ी का बक्सा था और वह व्यक्ति इस तरह जा रहा था, जैसे उसे बहुत जल्दी हो। चिड़िया ने उस व्यक्ति से पूछा कि आप कौन हैं? इतनी हड़बड़ी में कहां जा रहे हैं? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि मैं जंगल के उस पार के एक गांव का एक किसान हूं और पास के गांव में लगे बाजार जा रहा हूं। चिड़िया ने फिर पूछा। इस बक्से में क्या है? किसान ने उत्तर दिया, इसमें पेड़ों के तनों में रहनेवाले कीड़े हैं, जिन्हें बाजार में बेचने का इरादा है। सुनते ही सुनहरी चिड़िया के मुंह में पानी आ गया, उसने पूछा, आप यह बक्सा मुझे दे सकते हैं? मैं इसके बदले अपना एक सुनहरा पंख दूंगी। सुनकर किसान भी खुश हो गया। उसे आधे रास्ते में ही बिना बाजार गए सुनहरा पंख मिल रहा था। चिड़िया ने किसान से कहा कि आप हर दिन कीड़ों से भरा बक्सा मुझे दीजिए। मैं आपको हर दिन एक पंख दूंगी। किसान प्रतिदिन कीड़ों से भरा बक्सा लाने लगा। चिड़िया भी अपना एक पंख किसान को देती। एक दिन चिड़िया के सभी पंख समाप्त हो गए और वह उड़ने में असमर्थ हो गई। कहीं जाना भी मुश्किल गया। कुछ ही दिनों में उसकी मृत्यु हो गई।

८७२) कुछ न करने की बात - महान चित्रकार आगस्टी केन्वायर का कला प्रेम उनकी वृद्धावस्था के साथ बढ़ता ही गया। युवावस्था में चित्रकारी से उनकी रोजी-रोटी चलती थी, पर दुर्भाग्य से हाथ-पैरों में गठिया की शिकायत हुई और

उनका दो कदम चलना भी मुश्किल हो गया।

जब हाथों से ब्रश पकड़ना कठिन हो गया, तब वह उंगलियों से ब्रश बांध लेते और चित्रकारी करते। कई बार दर्द इतना बढ़ जाता कि पहियेदार कुर्सी से उतरने-चढ़ने वक्त कराहना कड़ता। ब्रश को रंग की प्लेट तक ले जाने, डुबाने और उठाने में कई बार उंगलियों में कसक होती और वह उसे रखने के लिए मजबूर हो जाते। थोड़ा चैन मिलने पर फिर हाथ उठता, पर उनकी तन्मयता में कोई कुछ अंतर नहीं आया। उनको देखने दूर-दूर से नौसिखिए चित्रकार आते थे। वह कहते कि यदि कोई अपनी कृति और प्रगति देखकर संतोष कर बैठे या अहंकार करने लगे, तो समझना चाहिए उसके विकास का अंत हो गया।

प्रगति तो अनंत है इसलिए उसकी साधना भी असीम ही होनी चाहिए। आगस्टी केन्वायर बहुत वृद्ध हो गए, तो बीमारी ने उन्हें नर कंकाल बना दिया। फिर भी उन्होंने कला-साधना छोड़ी नहीं। अंतिम दिनों में वह बेटे के लिए एक गुलदस्ता तैयार कर रहे थे, तो डॉक्टरों ने उन्हें विश्राम के लिए कहा। उन्होंने उत्तर दिया, मेरी प्रकृति कुछ न करने और न सोचने की बात स्वीकार ही नहीं कर पाएगी।

८७३) मानव जन्म दुर्लभ है - महर्षि रमण के आश्रम के पास एक गांव में एक अध्यापक रहता था। परिवार में रोज-रोज के कलह से वह उब गया था। आखिर में उसने आत्महत्या करने की सोची, ताकि रोज-रोज की अशांति से छुटकारा पा सके। लेकिन आत्महत्या करने का निर्णय लेना इतना आसान भी नहीं था। इसी उहापोह में पड़कर एक दिन महर्षि के आश्रम में पहुंचा और अपनी परेशानी की बात बताकर आत्महत्या करने के निर्णय के बारे में भी उन्हें बताया।

महर्षि उस समय आश्रमवासियों के भोजन के लिए बड़ी सावधानी से पत्तलें बना रहे थे। वह चुपचाप उस व्यक्ति की बात सुनते रहे और अपना काम करते रहे। उस व्यक्ति ने सोचा कि पता नहीं क्यों। महर्षि मेरा समस्या पर कुछ कह नहीं रहे। मेरी परेशानी से ज्यादा उन्हें पतल बनाने की चिंता है। क्षुब्ध होकर उसने महर्षि से कहा, आप इतनी मेहनत से पतल बना रहे पर यह कूड़े में फेंक दिए जाएंगे। इस पर महर्षि मुस्कराते हुए कहने लगे, आप ठीक कह रहे हैं। लेकिन किसी वस्तु का पूरा उपयोग हो चुकने के बाद उसे फेंकना बुरा नहीं हैं। बुरा तब कहा जाएगा, जब उपयोग के बिना ही उसे फेंक दिया जाए। आप तो सुविज्ञ हैं। मेरे कहने का अर्थ आप समझ ही गए होंगे। महर्षि के इन शब्दों से उस व्यक्ति की जिज्ञासा का समाधान हो गया। उसने आत्महत्या करने का विचार छोड़ा और महर्षि को धन्यवाद देकर लौट गया।

८७४) अधर्म को क्षमा - एक बार की बात है। धर्म और अधर्म दोनों अपने अपने रथ पर बैठकर कहीं जा रहे थे। तभी उन दोनों के रथ एक ही राह में आमने सामने हो गए। अब कौन दूसरे के लिए रास्ता छोड़ें, इस पर उनमें विवाद छिड़ गया। देखते ही देखते वहां भीड़ जुट गई। धर्म ने अधर्म को समझाया, भाई, तू अधर्म है, मैं धर्म हूं। मेरा मार्ग ठीक होता है। अपना रथ हटाकर मुझे रास्ता दे। मैं फलदायक, पुण्यदायक, विद्वानों द्वारा प्रशंसित और देवों तथा मनुष्यों सभी के द्वारा पूजित हूं। इसलिए मार्ग दिए जाने योग्य मैं ही हूं। अधर्म ने जवाब दिया, हे धर्म, मैं अधर्म हूं और निर्भय-बलवान हूं। मैंने आज तक कभी भी किसी को मार्ग नहीं दिया। यह मेरे स्वभाव के ही विरुद्ध है। मैं तुझे कैसे मार्ग दे सकता हूं? धर्म ने फिर समझाया, देखो भाई, लोक में पहले धर्म का प्रादुर्भाव हुआ, बाद में अधर्म का। धर्म ही ज्येष्ठ है, धर्म ही श्रेष्ठ है, सनातन

है। इसलिए हे कनिष्ठ, तू मुझ ज्येष्ठ के लिए मार्ग छोड़ दे। इस पर अधर्म बोला, यह सब कोई उचित कारण नहीं हैं। और तू मुझसे याचना थोड़े ही कर रहा है। इस तरह मैं मार्ग छोड़ूंगा भी नहीं। आओ, युद्ध करें। जिसकी जीत हो, रास्ता उसी का। फिर धर्म ने समझाने की कोशिश की, हे अधर्म। मैं चारों दिशाओं में फैला हूं, महाबलवान हूं, अनन्त यशस्वी और अतुलनीय हूं। सभी गुणों से युक्त हूं। मुझसे युद्ध में तू कैसे जीतेगा? व्यंग्य करते हुए अधर्म ने जवाब दिया, लोहे से सोना पिघलता है, सोने से लोहा नहीं। आज अधर्म ही धर्म को पराजित करेगा। यह सुनकर धर्म को बड़ा दुख हुआ। लेकिन फिर अपने को संभालते हुए सहज भाव से वह बोला, भाई, तुझे यदि युद्ध करने की ही चाह है, तेरे लिए न कोई ज्येष्ठ है न आदरणीय, तो मैं अप्रिय की अपेक्षा प्रिय की तरह ही तुझे स्वयं मार्ग देता हूं और तेरे वचनों को भी क्षमा करता हूं। और शांत भाव से अधर्म को जाने का मार्ग दे दिया।

८७५) उपदेश और कर्म - एक बार गौतम बुद्ध एक गांव में अपने किसान भक्त के यहां गए। शाम को किसान ने उनके प्रवचन का आयोजन किया। बुद्ध का प्रवचन सुनने के लिए गांव के सभी लोग उपस्थित थे, लेकिन वह भक्त ही कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। गांव के लोगों में कानाफूसी होने लगी कि कैसा भक्त है कि प्रवचन का आयोजन करके स्वयं गायब हो गया। प्रवचन खत्म होने के बाद सब लोग घर चले गए। देर रात किसान घर लौटा। बुद्ध ने पूछा- कहां चले गए थे? गांव के सभी लोग तुम्हें पूछ रहे थे। किसान ने कहा- प्रवचन की ही व्यवस्था में मैं पास के हाट में गया था। वहां कुछ आवश्यक सामग्री खरीदकर लौट रहा था। तभी रास्ते में एक वृद्ध सज्जन मिले जो धीरे-धीरे चल रहे थे। अचानक वह गिरकर अचेत हो गए। मैंने पास के घर से किसी तरह जल की व्यवस्था की और उनकी मूर्छा दूर की। लेकिन वे अकेले घर नहीं जा सकते थे, सो मैं उन्हें घर पहुंचाने चले गया। वहां उन्होंने मुझे रोक लिया। कहा कि उनका पुत्र पास के नगर में किसी काम से गया है। उसके आने तक मैं रूक जाऊं। मैं ठहर गया और उसके आने की प्रतीक्षा करता रहा। आखिरकार वह आया, तब मैं आश्वस्त होकर लौट सका हूं। मैंने वृद्ध को अकेले नहीं छोड़ा क्योंकि मुझे डर था कि मेरे जाते ही उन्हें कहीं कुछ हो न जाए। आपका प्रवचन तो मैं बाद में भी सुन लूंगा। अगले दिन सुबह जब गांव वाले पुन: बुद्ध के पास आए तो उन्होंने किसान की शिकायत करते हुए कहा- यह आपके भक्त होने का दिखावा करता है। पर प्रवचन का आयोजन कर स्वयं ही गायब हो जाता है। बुद्ध ने उन्हें पूरी घटना सुनाई और फिर समझाया- उसने प्रवचन सुनने की जगह कर्म को महत्व देकर यह सिद्ध कर दिया कि मेरी शिक्षा को उसने बिल्कुल ठीक ढंग से समझाया है। मैं यही तो समझाता हूं कि अपने विवेक और बुद्धि से सोचो कि कौन सा काम पहले आवश्यक है।

८७६) सबसे सुंदर कौन? - दरिद्रा देवी लक्ष्मी की बड़ी बहन है। एक दिन की बात है दरिद्रा और लक्ष्मी स्वर्ग नन्दनवन में भ्रमण कर रही थीं। स्फटिक की मणियों से स्वर्ग का फर्श बना हुआ था। नन्दनवन की शोभा देखते ही बनती थी। घूमते हुए लक्ष्मी एक जगह स्फटिक की मणियों में अपना ही प्रतिबिम्ब देखकर ठगी-सी खड़ी रह गई। लक्ष्मी को उनकी सुंदरता ने इतना मगन कर दिया कि इस बात का भान ही नहीं रहा कि वो यहां कब से खड़ी हैं। बड़ी बहन दरिद्रा के उलाहने ने लक्ष्मी का ध्यान भंग किया।

दरिद्रा ने पूछा- लक्ष्मी, क्या तुम अपने आपको बहुत सुंदर समझती हो? लक्ष्मी ने कोई उत्तर नहीं दिया। इससे दरिद्रा

देवी का क्रोध और भी भड़क गया। दरिद्रा देवी भी सुंदर थी। उन्होंने लक्ष्मी को डांटते हुए कहा- लक्ष्मी, तुम यह बात मान लो कि तुम मुझसे कम सुंदर हो।

लक्ष्मी ने हां नहीं की और कहा- हम दोनों ही अब दो पक्ष बन गए हैं। इसलिए निर्णय तो कोई तीसरा ही कर सकता है। तीसरा व्यक्ति निर्णायक के रूप में कौन हो सकता है। दरिद्रा के पूछने पर लक्ष्मी ने नारायण के महल की ओर इशारा किया और कहा कि नारायण से ही निर्णय लिया जाए।

दरिद्रा देवी ने इस बात पर असहमति व्यक्त की और कहा- तुम उनकी पत्नी हो और वे निर्णय तुम्हारे ही पक्ष में देंगे। इतने में दोनों ने देखा कि देवर्षि नारद वीणा के साथ गगन मार्ग से कहीं जा रहे हैं। दरिद्रा देवी ने देवर्षि नारद को आवाज दी। नारद सामने खड़े थे। उन्होंने दोनों देवियों को प्रणाम किया। दरिद्रा देवी ने नारद से पूछा- लक्ष्मी और मुझमे कौन अधिक सुंदर है?

नारद ने क्षणभर सोचकर उत्तर दिया कि मुझे आपका आदेश स्वीकार है। मेरा अनुरोध है कि मेरे निर्णय में सहायता के लिए आप दोनों सामने खड़े कल्पवृक्ष तक जाकर वापस आओ, तब तक मैं अपना निर्णय कर लूंगा। दोनों ने कल्पवृक्ष तक जाकर चहल-कदमी की। थोड़ी देर में ही दोनों वापस आ गईं। अब दोनों निर्णय की प्रतीक्षा में देवर्षि नारद के पास खड़ी थी।

दरिद्रा ने नारद से पूछा- आपने निर्णय कर लिया? नारद ने कहा- निर्णय प्रस्तुत है, आज्ञा हो तो कहूं। आज्ञा है, कहो दरिद्रा देवी ने खनकती हुई आवाज में कहा। नारद ने कहा- मैंने आप दोनों को कल्पवृक्ष तक आते और जाते बड़े ध्यान से देखा। मुझे निर्णय करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। देवी दरिद्रा आप जाते समय बहुत सुंदर दिख रही थीं, जबकि आते समय देवी लक्ष्मी ही सबसे सुंदर लग रही थीं। बात भी सही है कि लक्ष्मी आती हुई अच्छी लगती है और दरिद्रता जाती हुई अच्छी लगती है।

८७७) एक बार की बात है कबीर जी के गुरु के पिता का श्राद्ध था। श्राद्ध का अर्थ एक ऐसी परंपरा है जिसके तहत पंडितों को बुलाकर भरपेट भोजन कराया जाता हैं, ताकि जिस मृत रिश्तेदार का श्राद्ध मनाया जा रहा हो उस तक इन पंडितों को खिलाया जानेवाला भोजन पहुंच जाए। सो अपने मृत पिता तक भोजन पहुंचाने हेतु गुरु ने काफी पंडितों को भोजन पर बुलावाया और इधर अपने शिष्यों को सुबह से ही तैयारियों में भी लगा दिया। कबीर के जिम्मे दूध ले आने का कार्य आया। गुरु की आज्ञा थी, कबीर एक बाल्टी लेकर दूध लाने निकल पड़े। पर जाने क्या हुआ कि सुबह के निकले कबीर दोपहर चढ़ते-चढ़ते भी वापस नहीं आये। इधर गुरु को बिना दूध के ही पंडितों का भोजन निपटाना पड़ा। यह तो ठीक पर कार्यक्रम निपटने के बाद गुरु को चिंता हुई की कबीर अभी तक वापस क्यों नहीं आया। वे अपने दो-चार शिष्यों के साथ बनारस की तंग गलियों में कबीर को खोजने निकल पड़े।

जल्द ही उन्हें एक मरी हुई गाय के पास बाल्टी हाथ में लिए व सर पे हाथ रखकर बैठै नन्हें कबीर दिख गए। गुरु के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने तत्क्षण जिज्ञासावश पूछा- तुम यहां क्या कर रहे हो? कबीर बड़ी मासूमियत से बोले- गाय के दूध देने का इंतजार कर रहा हूं। इस पर गुरु बड़े लाड़ से कबीर का गाल सहलाते हुए बोले- अरे मेरे भोले, मरी गाय भी कहीं दूध देती है? यह सुनकर कबीर बड़े नटखट अंदाज में बोले- जब आपके मृत पिता तक भोजन पहुंच सकता है तो मरी गाय भी दूध दे ही सकती है। गुरुजी को अपनी गलती का अहसास हुआ, उन्होंने कबीर को गले लगा लिया और तुरंत

बोले- आज तुमने मेरी आंखें खोल दी। तू तो अभी से सही परमज्ञान की ओर एक बड़ा कदम बढ़ा चुका है।

८७८) भ्रमजाल - मिथिला नगरी के राजा जनक थे। एक रात वे अपने महल में सो रहे थे, तभी उन्होंने एक सपना देखा कि उनके राज्य में विप्लव हो गया है और प्रजा ने उन्हें नगर से निकाल दिया है। भूखेप्यासे वे इधर-उधर घूम रहे थे कि उन्हें एक सेठ की हवेली के बाहर खिचड़ी का सदाव्रत बंटता दिखाई दिया। वे वहां गए और मिट्टी के बर्तन में थोड़ी सी खिचड़ी ले आए। जैसे ही वे खाने बैठे कि दो गाय लड़ती हुई वहां आई। बीचबचाव करने के लिए वे दौड़े। उनकी टक्कर में खिचड़ी का बर्तन फूट गया और सारी खिचड़ी मिट्टी में मिल गई। राजा निराश हो गए और दुख से रोनेबिलखने लगे, तभी अचानक उनकी आंखें खुल गईं। सवेरा हो गया था और उनके दरबार के भाट महाराज की जय के नारे लगा रहे थे। राजा चकित थे, आखिर सच क्या है। सपने की बात या जयजयकार के नारे? खिचड़ी के लिए उनका रोना, या इतना बड़ा राजा होना? जब वह दरबार में गए तो उन्होंने वहां उपस्थित ज्योतिषियों और पण्डितों को सारी बात बताकर पूछा कि सच क्या है? राजा की शंका का कोई भी समाधान नहीं कर पाया। चारों ओर सन्नाटा छा गया। तभी परम ज्ञानी अष्टावक्र वहां आए। राजा ने वही प्रश्न परमज्ञानी अष्टावक्र से किया। उन्होंने उत्तर दिया राजन्, न वह सच्चा था न ही यह सच्चा है। सपना तो एक भ्रमजाल था, यह संसार भी एक भ्रमजाल है। न सपना शाश्वत था, न दुनिया का यह भोग और वैभव ही शाश्वत है।

८७९) नहीं कोई खुशहाल मियां पूछो न कोई सवाल मियां, देख रहे हैं सारे देश का बद से बदतर हाल मियां - इन्सान को भगवान की दी हुई पांच चीजें हैं- धन, धर्म, कला, राजसत्ता और प्रतिभा। ये पांचों चीजें जिनके पास भी हैं उन्हें अनुभव करना चाहिये कि भगवान ने उन्हें कुछ खास वरदान दिये हैं। उसे सोचना चाहिये कि जो चीज भगवान ने सर्वसाधारण आदमी को नहीं दी, वो विशेष अमानत उसे दी है। भगवान ने उन्हें इस लायक समझा कि जो हर किसी को नहीं दिया जा सकता। बहुत पुरानी बात है कि राजस्थान में हीरालाल शास्त्री नाम के ४५ रु. मासिक वेतन पानेवाले एक संस्कृत के अध्यापक हुए हैं। सिर्फ २६ वर्ष की उम्र में ही उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। पास-पड़ोस के लोगों ने कहा कि दूसरी शादी कर लो। अध्यापक ने कहा- पहली पत्नी ने उसकी जो सेवा की है, उसका कर्ज मैं अब तक चुका नहीं पाया हूं, फिर दूसरी शादी की कैसे सोच सकता हूं? कुछ ही दिन बाद वे नौकरी छोड़कर अपनी पत्नी के गांव चले गए और निश्चय किया कि इसी गांव की लड़की ने मेरी इतनी सेवा की है तो मैं भी इस गांव की सेवा करूंगा। इसके बाद वे लड़कियों का स्कूल खोलने के इरादे से उस गांव की लड़कियों को एक पेड़ के नीचे पढ़ाने लगे। यह देखकर कुछ लोगों ने उनका मजाक भी उड़ाया, पर वे अपनी निष्ठा पर टिके रहे। यह देखकर गांव के कुछ पैसेवाले लोगों ने उस पेड़ के पास खाली जगह पर छप्पर डलवा दिये और उसके नीचे लड़कियां पढ़ने लगीं। कुछ दिन बाद वहां के अच्छे लोगों ने सोचा कि जो आदमी मुसीबतें सहकर दूसरों की सुविधा और देश की प्रगति तथा गांव की उन्नति के लिये काम कर रहा है, उसका नाम इन्सान के रूप में भगवान होना चाहिए। देखते ही देखते लोगों ने रूपया-पैसा, सोना-चांदी, लोहा-सीमेंट उस स्कूल पर लगा दिया और वहां वनस्थली नाम का हाईस्कूल खड़ा हो गया। भारत में यह लड़कियों का स्कूल पहले नंबर का है। आजादी के बाद जब पहली सरकार बनाई गई इन्हीं हीरालाल शास्त्री को राजस्थान का मुख्यमंत्री बनाया गया।

८८०) चिड़िया आई थी - बहुत दिनों के बाद सोमू के कमरे में गौरैया आई। सोमू की निगाह अचानक ही उस पेड़ पर पड़ गई। वह दीवार में धंसी लकड़ी की धन्नी की जड़ में घोंसला बनाने को फड़फड़ा रही थी। बहुत दिनों के बाद वह आई थी। छतवाला पंखा बंद था। पंखा चल रहा होता तो शायद वह न आ पाती।

पहले जब सोमू खा रहा होता तो गौरैया उसके आस-पास आ जाती थीं। वह रोटी में से छोटे-छोटे टुकड़े तोड़कर उनको दे दिया करता था। खाकर वे उड़ जाती थीं। या चोंच में दबाकर बच्चों को खिलाने को ले जाती थीं। फिर लौट आती थीं। कमरे में इसी जगह उनका घोंसला था। कमरे में आते-जाते फुर्र-फुर्र की ध्वनि होती थीं। सोमू को सुकून मिलता था कि चलो चिड़ियां उसके कमरे में रहती हैं। कितनी समझदार हैं खाते समय आ जाती हैं। वह अपने दोस्तों में इस बात की चर्चा करता रहता था।

गर्मियों में एक दिन पंखा रफ्तार से चल रहा था। गर्मी तेज थी। चिड़िया धूप में से उड़ती हुई आई और अपने घोंसले की तरफ न जाकर पंखे की तरफ मुड़ गई। पंखे के पास आना था कि टकरा गई। खट् की ध्वनि सुनकर उसका दिल धक् से हो गया। सीलिंग पंखे ने चिड़िया को दूर उछाल दिया था। वह कोर्निस पर जाकर गिर पड़ी थी। उसकी चोंच से खून बहने लगा था। सोमू ने तुरंत दौड़ कर उसे उठाया तो उसका एक डैना टूटा हुआ था। सोमू ने उसके मुंह में पानी की बूंदें टपकाई। पर बेकार रहा। चिड़िया इस दुनिया से उठ गई थी। पंखे के कारण हुई इस दुर्घटना से सोमू बहुत दुखी हुआ।

उनके साथ ही चिड़िया कई दिन तक मंडराती रहीं। चीं-चीं करती रही। सोमू ने भी पंखा बंद रखा। उसे डर लगता रहा कि कहीं पंख से दूसरी चिड़िया भी न टकरा जायें। मगर शायद चिड़िया दुर्घटना का कारण समझ गई थीं। इसलिए उन्होंने कहीं दूसरी जगह घोंसला बना लिया था।

आज बहुत दिनों के बाद कमरे में गौरैया आई थी। घोंसला बनाने की उसकी इच्छा थी। पंखा बंद था। मगर सोमू सहम गया था। गर्मियां आ रही हैं। पंखा चलेगा। चिड़िया को दुर्घटना से बचाने के लिए सोमू कुर्सी से उठा। हुस-हुस करके उसे कमरे से बाहर निकाल दिया। उसे अपनी इस निष्ठुरता पर दु:ख हुआ। उसने पंखे की ओर देखा। पंखा शायद सोमू को मुंह चिढ़ा रहा था।

८८१) प्रजा और परमात्मा का ध्यान - म्यांमार के राजा थिबा महान ज्ञानयोगी थे। जितना गहरा उनका ज्ञान था, उतने ही वे सरल और निरहंकारी थे। एक बार एक अहंकारी साधक उनके पास आया और बोला, राजन्, मैं वर्षों से अखंड जप-तप करता आ रहा हूं, कठोर साधना करता रहा हूं, लेकिन आज तक मुझे ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई, जबकि आप राजवैभव में लिप्त होने के बावजूद परमात्मा के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हैं। क्या वजह है राजा बोले, आपके प्रश्न का उत्तर मैं उचित समय पर दूंगा। अभी तो तुम यह दीपक लेकर मेरे महल में निस्संकोच प्रवेश करो। मनचाही चीज ले सकते हो, महल के सारे सुख भोग सकते हो। तुम्हारे लिए कोई रोक-टोक नहीं है। पर यह ध्यान रहे कि दीपक हरगिज न बुझे। अगर दीपक बुझ गया तो तुम्हें कठोर दंड भोगना होगा। साधक पूरे महल में दीपक लेकर घूमा, सुख-भोग के साधन देखे, राजवैभव देखा, सब कुछ देख-घूमकर वापस आया। राजा थिबा ने उनसे पूछा, कहो बंधु, आपको मेरे महल में क्या चीज पसंद आई राजन्, मेरा अहोभाग्य जो आपने मेरे लिए राजवैभव के सारे द्वार खुले रख छोड़े। पर चाहकर भी मैं सुखों

का आनंद नहीं ले पाया, क्योंकि मेरा सारा ध्यान आपके दिए हुए इस दीपक की ओर था। राजा ने कहा, बस यही वजह है कि मैं राजा होकर भी राजवैभव, ऐशोआराम से अलग हूं। मेरा ध्यान या तो प्रजा पर रहता है या फिर परमात्मा में।

८८२) जान बची लाखों पाए - बहुत पुरानी बात है। चार मित्र थे। एक दिन चारों ने संपूर्ण देश का भ्रमण कर हर प्रकार का ज्ञान अर्जित करने का निश्चय किया। चारों ने चार दिशाएं पकड़ीं और अलग-अलग स्थानों पर रहकर अनेक प्रकार की विद्याएं सीखीं। पांच वर्ष बाद चारों अपने गृहनगर लौटे और एक जंगल में मिलने की बात तय की। चूंकि चारों परस्पर एक दूसरे को अपनी गूढ़ विद्याओं व सिद्धियों को बताना चाहते थे, अत: इसके लिए जंगल से उपयुक्त अन्य कोई स्थान नहीं हो सकता था। जब चारों जंगल में एक स्थान पर एकत्रित हुए तो वहां उन्हें शेर के शरीर की एक हड्डी पड़ी हुई मिली। एक ने कहा, मैं अपनी विद्या से इस एक हड्डी से शेर का पूरा अस्थि पंजर बना सकता हूं। उसने ऐसा कर भी दिखाया। तब दूसरे ने कहा, मैं इसे त्वचा, मांस और रक्त प्रदान कर सकता हूं। फिर उसने यह कर दिया। अब उन लोगों के समक्ष एक शेर पड़ा था, जो प्राणविहीन था। अब तीसरा बोला, मैं इसमें अपनी सिद्धि के चमत्कार से प्राण डाल सकता हूं। चौथे ने उसे यह कहते हुए रोका, यह मूर्खता होगी। हमें तुम पर विश्वास है, किंतु यह करके न दिखाओ। किंतु तीसरे का तर्क था कि ऐसी सिद्धि का क्या लाभ जिसे कार्यान्वित न किया जाए। उसका हठ देखकर चौथा तत्काल पास के पेड़ पर चढ़कर बैठ गया। तीसरे के मंत्र पढ़ते ही शेर जीवित हो गया। प्राणों के संचार से शेर को आहार की आवश्यकता महसूस हुई और उसने सामने मौजूद तीनों को मारकर खा लिया। चौथे ने समझदारी से अपने प्राण बचा लिए।

८८३) हैसियत - कुमारबाबू जैसे ही दूकान में घुसे, सत्यनारायण ने उन्हें आदर से बिठाया और उनके मना करने के बावजूद लड़के को चाय लेने के लिए भेज दिया। उसके बाद सत्यनारायण ने पूछा, कहिए बाबू क्या सेवा करूं? एक ऊनी शॉल या चद्दर दिखाइए। कुमारबाबू, सत्यनारायण की दूकान के पुराने ग्राहक हैं। वो जानते हैं कि उनकी पसंद हमेशा ऊंची होती है। उन्होंने एक से एक बढ़िया ऊनी शॉलों और चद्दरों का ढेर लगा दिया। सत्यनारायण भाई इतनी भारी नहीं कोई हल्की दिखाइए। यह सुनकर सत्यनारायण को विश्वास नहीं हुआ हल्की और आप? क्यों मजाक कर रहे हो बाबू? हल्की शॉल का क्या करेंगे आप? सत्यनारायण भाई हमारी बहन उर्मिला है न, उसकी सास शांतिदेवी के लिए भिजवानी है। सत्यनारायण ने सबसे हल्की शॉलों का बंडल खोला। कुमार ने साढ़े चार सौ रुपये की एक शॉल चुन ली और उसे पैक करवाकर घर ले आए। उसी दिन शाम को उसने वो शॉल बहन की सास को भिजवा दी। दो माह बाद सुबह-सुबह सत्यनारायण अपनी दुकान खोल ही रहे थे कि कुमारबाबू वहां पहुंचे और कहा, भाई उर्मिला की सास गुजर गई है एक चद्दर दे दो। ओह, अभी कुछ दिन पहले ही तो आप उनके लिए गरम शॉल लेकर गए थे। कितने दिन ओढ़ पाईं बेचारी? सत्यनारायण ने अफसोस के साथ कहा, उसके बाद उन्होंने चद्दरों का एक बंडल उठाकर खोला और उसमें से कुछ चद्दरें निकालीं। कुमारबाबू ने चद्दरें देखीं तो उनका चेहरा बिगड़-सा गया और उन्होंने कहा, भाई जरा ढंग की चद्दरें निकालो। कई बंडल खुलवाने के बाद कुमार ने जो चद्दर पसंद की उसकी कीमत थी २५०० रुपए। सत्यनारायण ने कहा, बाबू वैसे आपकी मर्जी, पर मुर्दे पर इतनी महंगी चद्दर कौन डालता है? कुमार ने कहा, बात महंगी-सस्ती की नहीं, हैसियत की होती है।

८८४) निकोलस का साहस - द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्र संगठित होकर जर्मनी से टक्कर ले रहे थे। २४ मार्च १९४४ को ब्रिटेन के सार्जेंट निकोलस ने बर्लिन पर बमबारी के लिए हवाई जहाज से उड़ान भरी। बमबारी के बाद जब निकोलस वापस लौट रहा था तो शत्रु सेना की विमानभेदी तोपों ने उसके जहाज पर आग उगलना शुरू कर दिया। इससे विमान में आग लग गई जो अंदर तक फैलती जा रही थी। निकोलस ने वायरलैस द्वारा कप्तान से सहयोग मांगा। कप्तान का स्वर सुनाई पड़ा, हम सहयोग करने में असमर्थ है। स्वयं बचाव का प्रयत्न करें।

निकोलस ने पैराशूट नहीं पहन रखा था। पैराशूट निकालने के लिए वह केबिन की ओर मुड़ा। मगर जैसे ही उसने दरवाजा खोला, केबिन के अंदर आग के एक गोले के आने से पैराशूट जलकर राख हो गया। विमान में आग फैलती जा रही थी, इसलिए परमात्मा को याद करके निकोलस नीचे कूद पड़ा। जब चेतना लौटी तो उसने अपने आपको बर्फ से ढंका पाया। रात के दो बज रहे थे। उसे अनुमान था कि यह क्षेत्र शत्रु का होना चाहिए। जीवन की सुरक्षा के लिए उसने कमर में बंधी सीटी बजा दी। कई बार सीटी बजाए जाने पर शत्रु सैनिकों ने आकर उसे बंदी बना लिया।

बंदी बनाने के बाद निकोलस को जेल में बंद करके कड़ी पूछताछ शुरू की गई। निकोलस ने शत्रु सेना के अधिकारियों को विमान गिरने की सारी घटना बताई किंतु किसी को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन जले हुए विमान के अवशेष मिलने पर अधिकारियों को विश्वास करना पड़ा। युद्ध समाप्त होने पर युद्धबंदियों को छोड़ दिया गया। निकोलस सकुशल इंग्लैंड पहुंचा। यह घटना मानवीय साहस का परिचय देने के साथ ही यह संदेश भी देती है कि जीवन के प्रति अदम्य प्रेम रखनेवाले लोग प्रतिकूलताओं को चीरते हुए अपना अस्तित्व बनाए रखने में समर्थ होते हैं।

८८५) तीन डाकू - एक समय जंगल से एक यात्री अपनी मंजिल की ओर जा रहा था। अचानक उसे तीन डाकुओं ने घेर लिया और उसका सारा धन लूट लिया। उस व्यक्ति को लूट लेने के बाद एक डाकू बोला, अब इस आदमी को जिंदा छोड़ देने से क्या लाभ? यह कहकर उसने म्यान से तलवार खींच ली। तब दूसरे डाकू ने उसे रोका और कहा, जब हम इसका सब कुछ धन ले ही चुके हैं तो इसे मारने से क्या लाभ? इसे रस्सी से बांधकर यहीं छोड़ जाते हैं। अगर भाग्य ने साथ दिया तो यह बच जाएगा नहीं तो यहीं किसी जंगली जानवर का भोज बन जाएगा। तय रणनीति के तहत डाकुओं ने ऐसा ही किया। कुछ देर बाद तीसरा डाकू लौटकर आया, उसने उस यात्री की रस्सी खोल उसे मुक्त कर दिया और बोला, भाई, मुझे अफसोस है। मैं तुम्हें सही रास्ते तक छोड़ देता हूं। तीसरे डाकू की कृतज्ञता देख यात्री ने कहा, आप मेरे यहां आतिथ्य ग्रहण करो। तीसरे डाकू ने कहा, मैं किसी ओर दिन तुम्हें दूसरे वेश में मिलूंगा। यात्री अपने घर पहुंचा तो उसके चेहरे पर गम की वजह मुस्कान आ गई, क्योंकि उसका लुटा हुआ सामान पहले से यहां मौजूद था। साथ में एक पत्र रखा हुआ था उसमें लिखा था दुनिया एक जंगल है। उसमें तीन डाकू रहते हैं। वे हैं सत्व, रजस और तमस। तमस मनुष्य को समाप्त करने का प्रयत्न करता है। रजस उसे संसार में बांधता है। परंतु सत्व उसे तमस और रजस के चंगुल से छुड़ाकर उस मार्ग पर छोड़ता है, जहां कोई भय नहीं। यानी ईश्वर के चरणों में।

८८६) महिला ने जगाया विवेक - पाटलीपुत्र की एक नगरवधू थी। उसकी सुंदरता की चर्चा दूर-दूर तक होती थी। एक दिन शाल्वन बुद्ध पीठ के मठाधीश वसंत गुप्त उधर से निकले तो नगरवधू पर उनकी नजर पड़ी। उन्होंने उसे देखा तो

सब कुछ भूल गए। वे उसी संत वेश में नगरवधू के घर जा पहुंचे। नगरवधू का अनुमान था कि वे भिक्षा के लिए आए होंगे, इसलिए उसने उनका खूब स्वागत-सत्कार किया और अपनी एक सेविका को उन्हें भिक्षा देने के लिए कहा। पर वसंत गुप्त का इरादा तो कुछ और ही था। वह तो प्रणय निवेदन कर रहे थे। नगरवधू के लिए यह किसी आघात से कम न था। लेकिन उसने तिरस्कार करना तो ठीक न समझा, पर शर्त लगा दी कि इतना धन वे दे सकें, तो ही उनक मनोकामना पूर्ण हो सकेगी। वसंत गुप्त चल दिए और जिन धनिकों से उनका परिचय था, उन सभी से रत्न मांगकर उन्होंने उतनी संपदा जुटा ली। फिर वे लंबे डग भरते हुए आए और वही सब कुछ नगरवधू के चरणों में रख दिया। नगरवधू ने उन रत्नों से अपने पैर रगड़-रगड़ कर घिसे और उन्हें नाली में फेंक दिया। यह देख वसंत गुप्त घबराए। नगरवधू ने उनसे कहा, देव, आपका वेश और तप मेरे मलिन शरीर से कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है। उसका उपार्जन इसी प्रकार नाली में चला जाएगा, जैसे कि यह रत्नराशि इस गंदी नाली में बह गई। नगरवधू की यह बात वसंत गुप्त के हृदय को तीर की तरह चुभी। अचानक उनका विवेक जागा। वे लज्जित हुए। वे नगरवधू को प्रणाम कर उल्टे पैर लौट गए।

८८७) साड़ी के टुकड़े - कबीर दास स्वभाव से शांत थे। कोई कुछ भी करे, वे क्रोधित नहीं होते थे। एक बार कुछ लड़कों को शरारत सूझी। वे सब कबीर दास के पास यह सोचकर पहुंचे कि देखें उन्हें गुस्सा कैसे नहीं आता। उनमें एक लड़का धनवान था। वहां पहुंचकर वह बोला, यह साड़ी कितने की दोगे? कबीर ने कहा, दस सिक्के की। तब लड़के ने उन्हें चिढ़ाने के उद्देश्य से साड़ी के दो टुकड़े कर दिए और एक टुकड़ा हाथ में लेकर बोला, मुझे पूरी साड़ी नहीं चाहिए, आधी चाहिए। इसका क्या दाम लोगे?

कबीर ने बड़ी शांति से कहा, पांच सिक्के। इतना सुनते ही उस लड़के ने उस टुकड़े के भी दो भाग किए और दाम पूछा। कबीर अब भी शांत थे। उन्होंने बताया, ढाई सिक्के। लड़का इसी प्रकार साड़ी के टुकड़े करता गया और साथ-साथ साड़ी का दाम भी पूछता गया। अंत में बोला, अब मुझे यह साड़ी नहीं चाहिए। ये टुकड़ मेरे किस काम के? कबीर ने शांत भाव से कहा- बेटे। अब ये टुकड़े तुम्हारे ही क्या, किसी के भी काम के नहीं रहे। अब लड़के को शर्म आई और वह बोला, मैंने आपका नुकसान किया है। मैं आपकी साड़ी का दाम दे देता हूं। संत कबीर ने कहा, जब आपने साड़ी ली ही नहीं, तब मैं आपसे उसके पैसे कैसे ले सकता हूं?

लड़के का अभिमान जागा और वह कहने लगा, मैं बहुत अमीर आदमी हूं। तुम गरीब हो। मैं सिक्के दे दूंगा तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पर तुम यह घाटा कैसे सहोगे? और नुकसान मैंने किया है तो घाटा भी मुझे ही पूरा करना चाहिए। संत कबीर मुस्कुराते हुए कहने लगे, तुम यह घाटा पूरा नहीं कर सकते। सोचो, किसान ने कपास पैदा किया, मेरी स्त्री ने कपास से सूत काता। मैंने उसे रंगा और बुना। मेहनत तभी सफल होती, जब इसे कोई पहनता। पर तुमने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालें। सिक्कों से यह घाटा कैसे पूरा होगा? लड़का शर्म से पानी-पानी हो गया।

८८८) पेड़ से बांध दी बिल्ली - एक महात्मा अपने कुछ शिष्यों के साथ जंगल में आश्रम बनाकर रहते थे। एक दिन बिल्ली का एक बच्चा रास्ता भटककर आश्रम में आ गया। महात्मा ने उस भूखे-प्यासे बच्चे को दूध-रोटी खिलाई। वह बच्चा वहीं आश्रम में रहकर पलने लगा लेकिन उसके आने के बाद महात्मा को एक परेशानी होने लगी। जब वह शाम को

ध्यान में बैठते तो वह बच्चा कभी उनकी गोद में चढ़ जाता, कभी कंधे या सिर पर बैठ जाता। महात्मा ने अपने एक शिष्य को बुलाकर कहा, देखो मैं जब शाम के ध्यान पर बैठूं तो उससे पहले तुम इस बच्चे को दूर एक पेड़ से बांध आया करो।

अब तो यह नियम हो गया। महात्मा के ध्यान पर बैठने से पहले बिल्ली का बच्चा पेड़ से बांधा जाने लगा। एक दिन महात्मा की मृत्यु हो गई तो उनका एक काबिल शिष्य उनकी गद्दी पर बैठा। वह भी जब ध्यान पर बैठता तो उससे पहले बिल्ली का बच्चा पेड़ से बांधा जाता। कुछ दिनों तक ऐसा ही चला। बिल्ली का बच्चा बड़ा हो गया। एक दिन बिल्ली की भी मौत हो गई। सारे शिष्यों की मीटिंग हुई। आखिरकार काफी ढूंढने के बाद एक बिल्ली मिली जिसे पेड़ से बांधने के बाद महात्मा ध्यान पर बैठे। इसके बाद उस आश्रम में हर महात्मा के ध्यान के वक्त बिल्ली को बांधे जाने का चलन हो गया। बिल्लियां बदलती रही और यह परम्परा बन गई। परम्परा के नाम पर कई चीजें अंधविश्वास में इजाफा करती हैं। जरूरत इस बात की है कि हम अंधविश्वास की ऐसी परम्पराओं को न पनपने दें। हम अच्छी तरह से सोच लें कि कहीं अनजाने में हम अंधविश्वास रूपी बिल्ली तो नहीं पाल रहे।

८८९) ज्ञान की कीमत - अकबर की सभा में एक दार्शनिक थे, उनका नाम था अबू अली। एक बार सहारा रेगिस्तान का एक अमीर उनके पास आया और बोला- मैं आपके चरणों में बैठकर अध्ययन करना चाहता हूं। अबू ने कहा- मैं तुम्हें पढ़ाने के लिए तैयार हूं, लेकिन सौ अशर्फी हर माह लूंगा। अमीर व्यक्ति उन्हें त्याग और तप की मूर्ति समझता था, लेकिन अशर्फी मांगने पर उसे अच्छा नहीं लगा। लेकिन उसने अशर्फी देने की बात को स्वीकार कर लिया। वह ज्ञान प्राप्त करने लगा। जब शिक्षा पूरी हो गई तो उसने घर जाने की आज्ञा मांगी। तब अबू अली ने अलमारी से सौ अशर्फी निकालीं और उसे वापस कर दीं। अमीर हैरान हो गया। उसने कहा, जब आपको मेहनताना ही नहीं लेना था तो आपने यह शर्त क्यों रखी थी कि सौ अशर्फी मैं आपको हर माह दूं। अबू अली ने कहा, मैं यह परखना चाहता था कि तुम ज्ञान की कीमत देने की इच्छा रखते हो या नहीं। जो कीमत नहीं दे सकता है उसे किसी से कुछ पाने का हक नहीं है। अमीर व्यक्ति अबू की विरक्ति देख भावविभोर हो गया।

८९०) उद्‌भव के पापा और गाने के बोल - उद्‌भव के पापा पहली बार उसकी गाड़ी में बैठे थे। बैठते ही बोले, यह क्या शोर मचा रखा है? स्पीकर की आवाज थोड़ी कम करोगे। उद्‌भव उनको देखकर मुस्कराया और फिर गाना बंद कर दिया। पापा बोले, तुम लोग इतना शोर कैसे सुन लेते हो? उद्‌भव जानता था कि उसके पापा हमेशा इसी तरह बोलते थे।

उसकी मां और पापा के बीच कभी नहीं पटती थी। उनको मां की ही नहीं, हर किसी की हर बात बुरी लगती थी। शायद इसी वजह से वह हमेशा उखड़े हुए रहते थे। पापा सोचते थे कि जिंदगी उनके लिए एक सजा है और किसी तरह सजा काटनी है। वहीं मां उद्‌भव पर पापा का साया नहीं पड़ने देना चाहती थीं।

उद्‌भव अपनी मां पर गया था और जिंदगी को पूरी तरह से जीता था। गाड़ी चलाते-चलाते उद्‌भव बोला, पापा आप गाने के बोल आने से पहले ही उसे बंद कर देते हैं। गाना सुने बिना गाना अच्छा कैसे लग सकता है? इस गाने के बोल सचमुच बहुत खूबसूरत हैं। तभी एकदम सामने से एक तेज रफ्तार से आती गाड़ी बेकाबू हो गई और सीधा उद्‌भव की कार के दरवाजे पर टकराई। कई दिनों के बाद उद्‌भव के पापा को जब होश आया, तो वह अस्पताल में थे।

आंख खुलते ही उन्होंने उद्भव की मां से पूछा, उद्भव कहां है, कैसा है? उन्होंने रोते-रोते बताया, उसे बहुत चोटें आई थीं। डॉक्टर उसे नहीं बचा पाए। दोनों फूट-फूटकर रोने लगे।

तभी वहां वह डॉक्टर आए, जिन्होंने उद्भव का ऑपरेशन किया था। वह उद्भव के पिता से बोले, उद्भव बहुत बहादुर लड़का था। वह आपके लिए एक संदेश छोड़कर गया है। मुझे नहीं पता, इसका मतलब क्या है। कागज के एक टुकड़े पर उद्भव ने लिख रखा था, पापा... गाने के बोल आपका इंतजार कर रहे हैं। एक बार सुनकर तो देखिए। हमारे पास जो है, वह वर्तमान है। हम चाहे, इसे खुशी से बिता लें, या दुख से।

८९१) सोने का कमंडल - संत सदानंद ने एक बार एक सेठ के बेटे को बुरी आदतों और कुसंगति से छुटकारा दिलाया था, जिससे प्रसन्न होकर सेठ ने उन्हें सोने का एक कमंडल दिया था। संत उसे लेना नहीं चाहते थे पर सेठ ने यह कहकर दे दिया कि वे इसे किसी योग्य व्यक्ति को दे दें। एक बार संत को रास्ते में एक युवक मिला जो भूखा-प्यासा था। संत ने पेड़ पर लटकी अपनी पोटली की ओर इशारा करते हुए उससे कहा, उसमें कुछ रोटियां है। तुम ले सकते हो। रोटियां निकालते समय युवक की नजर कमंडल पर पड़ी। वह संत के पास आकर बोला, बाबा, आपके पास बड़ी सुंदर चीज है। संत बोले, उसे मैं तुम्हें उपहार में देता हूं। युवक कमंडल लेकर भूख-प्यास भूलकर तेजी से वहां से चल पड़ा कि कहीं बाबा अपनी बात से पलट न जाएं। पर कुछ सोचकर तेजी से संत के पास आकर बोला, आपके पास अवश्य सोने से भी कीमती कोई वस्तु है तभी तो आपने इसे त्यागने में पलभर भी नहीं लगाया। मुझे वही चाहिए। संत ने कहा, हां, सोने से भी ज्यादा मूल्यवान चीज है। वह है परमार्थ। वह तुम्हें सीखना होगा। युवक सदानंद के साथ रहने लगा। कुछ समय बाद वह लोगों की सहायता में जुट गया।

८९३) विश्वास लौटाना है तो दूसरों के बारे में भी सोचना होगा - एक संत शिष्यों के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में विश्राम के लिए वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए। पेड़ पर अनेक पक्षी बैठे हुए थे। संत के एक शिष्य ने एक पक्षी पर गुलेल से निशाना साधा। पक्षी फड़फड़ाता हुआ नीचे आ गिरा और मर गया। अपने निर्दोष साथी को इस प्रकार से मरता देख दूसरे पक्षी चीख-चीखकर मंडराने लगे। संत को कुछ अजीब लगा। उन्होंने पक्षियों से पूछा, भाई क्या बात है, इस प्रकार से पेड़ के ऊपर क्यों मंडरा रहे हो? पक्षियों ने कहा कि आपके एक शिष्य ने हमारे एक साथी पक्षी को मार गिराया है। संत ने अपने शिष्य से पूछा, क्या यह सच है?

उस शिष्य ने कहा, हां मैंने ऐसा किया है। मुझे भूख लगी थी। संत ने अपने शिष्य का उत्तर पक्षियों को भी बता दिया। लेकिन पक्षियों के नेता को इस जवाब से तसल्ली नहीं हुई। उसने कहा, यह विश्वासघात है। आप संत के भेष में यहां आए। हमने आप पर विश्वास किया क्योंकि संत हिंसक नहीं होते। हम सब इस वृक्ष पर बैठे आराम करते हुए, अपने दुख-सुख, सुन-सुना रहे थे। हमें आपसे भय होता, तो आपके पेड़ तले डेरा डालते ही हम उड़ जाते। लेकिन आपकी संतों वाली वेशभूषा ने हमें धोखा दिया।

सूफी संत ने अपने शिष्यों से कहा कि उस पक्षी की बात सही है। संत इस प्रकार धोखे से किसी के प्राण लेंगे, तो यह अनर्थ होगा। वे दयालु, कृपालु और मार्ग दर्शक होते हैं। प्रेम बांटते और लोगों को सही दिशा में चलने का रास्ता सुझाते हैं। किसी का

जीवन छीननेवाला संत नहीं हो सकता। पक्षियों ने संत के पहनावे पर विश्वास किया। लेकिन उन्हें धोखा मिला।

८९४) यदि हमारी दृष्टि नहीं बदल सकी तो धर्म का प्रयोजन ही क्या रहा - संन्यासी- शिष्य, आज मैं कहीं जा रहा हूं। तुम नए-नए आए हो, आश्रम का यह नियम है कि रात को अंधेरा नहीं रहना चाहिए। ध्यान रखना, आश्रम में अंधेरा न आ जाए। शिष्य नया-नया और भोला था। बहुत भोला। संन्यासी बाहर चला गया। संध्या हुई। अंधेरा होने लगा। शिष्य ने सारे दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दीं। अंधेरा घना हो गया। वह हाथ में लाठी ले अंधेरे को पीटने लगा। हाथ लहूलुहान हो गए, पर अंधेरा बना रहा। संन्यासी आया और शिष्य से पूछताछ की। उसने लहू से रिसते हाथ आगे कर दिए। संन्यासी बोला, क्या दरवाजे बंद करने से और लाठी पीटने से कभी अंधेरा गया है? शिष्य बोला, तो कैसे जाता है? संन्यासी ने हाथ में माचिस ली और दो-चार दीए जलाए- एकदम प्रकाश हो गया। संन्यासी बोला, पीटने से अंधकार नहीं जाता। अंधकार जाता है- दीया जलाने से।

लगता है, हम लोग भी लाठियां बजा-बजाकर अंधेरे को मिटाना चाहते हैं। यथार्थ उपाय नहीं जानते, बिजली जलाना नहीं जानते, प्रकाश करना नहीं जानते।

८९५) एक फकीर दुनिया की सैर कर लौटा। बादशाह और उसके बचपन के दोस्त ने उसे अपने यहां बुलाया। बादशाह ने फकीर से पूछा, दोस्त, सारी दुनिया घूम आए। मेरे लिए कुछ नहीं लाए?

यह सुन फकीर मुस्कराया और बोला, मैं दुनिया के कोने-कोने में घूमा, अनूठी चीजें देखीं, पर लगा कि तुम्हें किस चीज की कमी होगी। फिर भी मैं तुम्हें एक नायाब तोहफा देना चाहता था। यह कहकर फकीर ने अपनी झोली उसकी ओर बढ़ा दी। झोली से एक छोटा-सा आईना मिला। फकीर बोला, मैंने सोचा तुम्हारे पास वैसे तो सब कुछ है, लेकिन ऐसी कोई चीज नहीं, जिसमें तुम खुद को देख सको। फकीर का संकेत समझ बादशाह लज्जित हो गया।

८९६) गुरु, शिष्य और सिक्के - कौशांबी में संत रामानंद नगर के बाहर एक कुटिया में अपने शिष्य गौतम के साथ रहते थे। नगरवासी उनका सम्मान करते हुए उन्हें पर्याप्त दान-दक्षिणा दिया करते थे। एक दिन अचानक संत ने गौतम से कहा- यहां बहुत दिन रह लिया। चलो अब कहीं और रहा जाए। गौतम ने जवाब दिया- गुरुदेव, यहां तो बहुत चढ़ावा आता है। कुछ दिन बाद चलेंगे। संत ने समझाया- बेटा हमें धन और वस्तुओं के संग्रह से क्या लेना-देना, हमें तो त्याग के रास्ते पर चलना है। यह कहकर संत गौतम को लेकर चल पड़े। गौतम ने जमा किए अपने कुछ सिक्के झोले में छिपा लिए। दोनों नदी तट पर पहुंचे। वहां उन्होंने नाववाले से नदी पार कराने की प्रार्थना की। नाव वाले ने कहा- मैं नदी पार कराने के दो सिक्के लेता हूं। आप लोग साधु-महात्मा हैं। आपसे एक ही लूंगा। संत के पास पैसे नहीं थे। वे वहीं आसन जमा कर बैठ गए। शाम हो गई। नाव वाले ने कहा- यहां रुकना खतरे से खाली नहीं है। आप कहीं और चले जाएं। सिक्के हों तो मैं नाव पार करा दूंगा। खतरे की बात सुनकर गौतम घबरा गया। उसने झट अपने झोले से दो सिक्के निकाले और नाव वाले को दे दिए। नाव वाले ने उन्हें नदी पार करा दिया। गौतम बोला- देखा गुरुदेव, आज संग्रह किया हुआ मेरा धन ही काम आया। पर आप संग्रह के विरुद्ध हैं। संत ने मुस्कराकर कहा- जब तक सिक्के तुम्हारे झोले में थे, हम कष्ट में रहे। ज्यों ही तुमने उनका त्याग किया, हमारा काम बन गया। इसलिए त्याग में ही सुख है।

८९७) खाने के बाद लेटना - जब बीरबल दरबार में पहुंचे, तो अकबर ने कहा- खाना खाने के बाद आज भी लेटे या नहीं? बिल्कुल लेटा जहांपनाह। बीरबल बोला।

अकबर बीरबल के किस्सों में बीरबल की हाजिर जवाबी और बुद्धिमत्ता से तो आप परिचित ही हैं। वह बादशाह के सामने हर बात ऐसे पेश करते कि बादशाह खुश हो जाते।

किसी समय बीरबल ने अकबर को यह कहावत सुनाई थी कि खाकर लेट जा और मारकर भाग जा- यह सयानें लोगों की पहचान है। जो लोग ऐसा करते हैं, जिंदगी में उन्हें किसी भी प्रकार का दुख नहीं उठाना पड़ता। ऐसे लोग ही सफलता की ऊंचाइयों को छूते हैं। बीरबल बादशाह को अक्सर तरह-तरह की बातें सुनाते रहते थे। चूंकि उनकी बादशाह से घनिष्ठता थी, इसलिए बादशाह ने भी उन्हें कुछ भी कहने की आज्ञा दे रखी थी। उनके पूरे दरबार में एक बीरबल ही तो थे, जो उनके साथ खुल्लम-खुला पर सलीके से मजाक कर सकते थे। एक दिन अकबर को अचानक ही बीरबल की कहावत याद आ गई।

दोपहर का समय था। उन्होंने सोचा, बीरबल अवश्य ही खाना खाने के बाद लेटता होगा। आज हम उसकी इस बात को गलत सिद्ध कर देंगे। उन्होंने एक नौकर को अपने पास बुलाकर पूरी बात समझाई और बीरबल के पास भेज दिया।

नौकर ने अकबर का आदेश बीरबल को सुना दिया। बीरबल बुद्धिमान तो थे ही, उन्होंने समझ लिया कि बादशाह ने उसे क्यों तुरंत आने के लिए कहा है। इसलिए बीरबल ने भोजन करके नौकर से कहा- ठहरो, मैं कपड़े बदलकर तुम्हारे साथ ही चल रहा हूं। उस दिन बीरबल ने पहनने के लिए चुस्त पैजामा चुना। पैजामा को पहनने के लिए वह कुछ देर के लिए बिस्तर पर लेट गए। पैजामा पहनने के बहाने वे काफी देर बिस्तर पर लेट रहे। फिर नौकर के साथ चल दिए।

जब बीरबल दरबार में पहुंचे, तो अकबर ने कहा- कहो बीरबल, खाना खाने के बाद आज भी लेटे या नहीं?

बिल्कुल लेटा था जहांपनाह। बीरबल की बात सुनकर अकबर ने क्रोधित स्वर में कहा- इसका मतलब, तुमने हमारे हुक्म की अवहेलना की है। हम तुम्हें हुक्म उदूली करने की सजा देंगे। जब हमने खाना खाकर तुरंत बुलाया था, फिर तुम लेटे क्यों? बादशाह सलामत। मैंने आपके हुक्म की अवहेलना कहां की है। मैं तो खाना खाने के बाद कपड़े पहनकर सीधा आपके पास ही आ रहा हूं। आप चाहें, तो पैगाम ले जानेवाले से पूछ सकते हैं। अब यह अलग बात है कि यह चुस्त पैजामा पहनने के लिए ही मुझे लेटना पड़ा था। बीरबल ने सहज भाव से उत्तर दिया। अकबर बादशाह बीरबल की चतुरता को समझ गए और मुस्करा पड़े।

८९८) बुद्ध का संदेश - यह उस समय की बात है जब गौतम बुद्ध संन्यास ग्रहण कर चुके थे और उन्होंने अपना जीवन दूसरों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। वह अनेक स्थानों की यात्रा करते और अपने अनमोल उपदेशों से लोगों का जीवन सुधारने का प्रयास करते। बुद्ध अनेक कथाओं और उदाहरणों के माध्यम से अपनी बात लोगों के सामने रखते, जो सीधे उसके हृदय में उतर जाती। स्वयं अपना जीवन भी बुद्ध ने इतना सरल बना लिया था कि वे सादगी और समरसता का प्रत्यक्ष उदाहरण बन गए थे। एक बार एक धनी सेठ ने उनसे अपने घर आने का आग्रह किया। बुद्ध ने सहर्ष यह प्रस्ताव मान लिया। सेठ ने इसे अपना सौभाग्य माना और सबको बताया कि उसके घर बुद्ध आ रहे हैं। उसने इस बात का खूब

ढिंढोरा पीटा। लोगों को थोड़ा आश्चर्य भी हुआ कि इस तरह के व्यक्ति का आमंत्रण बुद्ध ने कैसे स्वीकार किया। सेठ ने बुद्ध के लिए मेवों की खीर बनवाई। बुद्ध उसके घर पहुंचे और धूल-मिट्टी से सना कमंडल आगे बढ़ाते हुए खीर उसमें डालने के लिए कहा। गंदा कमंडल देख सेठ ने उसे पहले खूब रगड़-रगड़कर धोया और फिर उसमें खीर भरकर बुद्ध के हाथ में दे दिया। यह देख बुद्ध ने सेठ से कहा- हमारे आशीर्वाद को भी यदि आप खीर जितना ही मूल्यवान समझते हो तो उसे रखने के लिए मन रूपी पात्र को भी शुद्ध व पवित्र करो। धूल-मिट्टी जैसी मलिनता अपने मन के भीतर भरे रखने पर ये दान-धर्म आपके किसी काम न आ सकेगा। केवल लोगों को दिखाने के लिए दान-पुण्य करने का कोई अर्थ नहीं है। धार्मिक कर्मकांड, तीर्थ स्थलों की यात्रा, व्रत-उपवास और दानादि तभी पुण्य देते हैं, जबकि मन विकार रहित और हमारी भावना शुद्ध हो। यह सुनकर सेठ की आंखें खुल गईं।

८९९) किस्सा महामूर्ख का - एक लड़का था। अपने मां-बाप के साथ रहता था। उसकी एक बहन थी, जिसकी शादी हो गयी थी। एक दिन मां की तबीयत खराब हो गयी, वह कराहने लगी। दवा करवायी गयी, परंतु वह चल बसी। यही पिता का हाल हुआ। लड़का यह सब देखता रहा। उसकी बुद्धि में यह बात घर कर गयी कि इसी प्रकार सबका अंत होगा। वह बुद्धि से कमजोर था। एक दिन घर में खटखट की आवाज आयी तो वह परेशान हो गया। लगता है मकान की तबीयत खराब हो गयी उसने सोचा, लेकिन थोड़ी देर में आवाज बंद हो गयी। वह सोचने लगा कि मकान तो अब मर गया है, इसका अंतिम संस्कार सुबह करना पड़ेगा। सुबह उसने लकड़ी-घास इकट्ठा किया और मकान को जला दिया।

अब उसने सोचा कि बहन के यहां ही जाना चाहिए। बहन के यहां पहुंचा तो वह बहुत खुश हुई। बहन ने पूछा मकान ठीक से बंद कर दिया था? तब भाई ने उदास मन से कहा अब वह कहां? वह तो मर गया। मैं उसका अंतिम संस्कार कर आया हूं। इसलिए तुम्हारे पास आ गया हूं। बहन ने समझाया मकान नहीं मरते, इंसान मरते हैं। लेकिन वो अपनी बात पर अड़ा रहा। बहन ने सोचा इसको कौन समझाये। बहन बोली ठीक है, अब तुम यही रहना और कुछ काम करना। तुम्हारे जीजाजी से कहकर कुछ काम दिलवा देंगे। बहनोई साहब दुकान से खाना खाने घर आये तो साले के आने का कारण पूछा। बहन ने सोचा सही बात बताने पर वे उसके भाई को घर में नहीं रखेंगे इसलिए कुछ और कारण बताना चाहिए।

बहन ने कहा इसे उधर कुछ काम नहीं मिल रहा था, काम की तलाश में यह यहां आया हैं। वे बोले ठीक है, दुकान में तो कोई काम नहीं, तुम अपने छोटे-मोटे काम करवाती रहो। एक दिन बहन ने कहा भैया बैलों का भूसा समाप्त हो गयी है, क्या तुम खेत से बैलगाड़ी में भूसा भरकर ला सकते हो?

भाई ने कहा ये तो आसान काम है। मैं स्वयं ही कर लूंगा।

सुबह वह बैलगाड़ी लेकर खेत पर जा पहुंचा और नौकरों से कहा कि इसमें भूसा भर दो, मैं ले जाऊंगा। नौकर ने कहा मैं भी तुम्हारे साथ चलूं तो कोई परेशानी तो नहीं होगी? वह बोला नहीं, तुम्हें जाने की कोई जरूरत नहीं, यह छोटा सा काम है, मैं ही बैलगाड़ी ले जाता हूं।

बैलगाड़ी को लेकर वह थोड़ी दूर पहुंचा था कि उसमें से आवाज आने लगी। वह परेशान हो गया। उसने सोचा कि बैलगाड़ी की तबीयत खराब हो गयी और उसके कराहने की आवाज आ रही है। मन ही मन वह बहुत परेशान था। थोड़ी

दूर पर एक नाला था। उसमें पानी था। जैसे ही बैलगाड़ी का पहिया पानी में भीगा तो गीले होने के कारण आवाज आना बंद हो गयी। उसने सोचा अब तो गाड़ी का स्वर्गवास हो गया है, इसका अंतिम संस्कार करना पड़ेगा। उसने बैलों को गाड़ी से अलग कर दिया और बैलगाड़ी में आग लगा दी। बैलों को लेकर वह बहन के पास पहुंचा। बहन ने सोचा उसका भाई काम करके आया है। वह बाहर भूसा देखने गयी तो बैलगाड़ी दिखी न भूसा।

९००) शहादत और आईना - सरदार पटेल जितने अच्छे नेता और समाजसेवी थे, उतने ही बड़े वकील भी थे। उनकी हाजिरजवाबी से अच्छे अच्छों की बोलती बंद हो जाया करती थी। बात उन दिनों की है, जब सरदार वल्लभ भाई पटेल वकालत किया करते थे। हमारा देश तब आजाद नहीं हुआ था, अंग्रेजों के अधीन था। पराधीनता के उस दौर में सरदार पटेल अक्सर क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों के मुकदमे लड़ते थे। उन दिनों एक गोरा मजिस्ट्रेट अदालत में एक अजीबोगरीब हरकत किया करता था। वह गवाही के दौरान गवाहों के सामने एक आदमकद शीशा रखवा दिया करता था फिर गवाहों को उस शीशे में देखकर बयान देने के लिए कहा करता था। बताते हैं, ऐसा वह गोरा इसलिए किया करता था, ताकि भारतीय गवाह शर्मिंदगी महसूस करें। एक दिन जब सरदार पटेल के एक मुवक्किल का मुकदमा उस अदालत में गया और गोरे मजिस्ट्रेट ने गवाह को शीशा देखकर बयान देने के लिए कहा, तब सरदार पटेल ने फौरन अदालत से निवेदन कर दिया, इस बात को भी दर्ज कर लिया जाए कि यह बयान आईने को सामने रखकर दिया गया है। जवाब में उस मजिस्ट्रेट ने गुस्से में भरकर कहा, नहीं, इस बात का उल्लेख करने की कोई जरूरत नहीं है। यह सुनकर सरदार पटेल ने व्यंग्यपूर्वक कहा। इसकी जरूरत अभी इसलिए है कि यह आईना भी शहादत में पेश हुआ माना जाएगा और मुकदमे में कागजातों के साथ इसे भी सेशन कोर्ट में भेजा जाएगा। यह सुनकर गोरा मजिस्ट्रेट सरदार पटेल के इस व्यंग्य से पानी पानी हो गया और उसने तुरंत वह शीशा वहां से हटवा दिया। ऐसी थी सरदार पटेल की हाजिरजवाबी।

९०१) अपनापन - वृद्धाश्रम के दरवाजे से बाहर निकलते ही उसे किसी कमी का अहसास हुआ, उसने दोनों हाथों से अपने चेहरे को टटोला और फिर पीछे पलट कर खोजी आंखों से वृद्धाश्रम के अंदर पड़ताल करने लगा। उसकी यह दशा देख उसकी पत्नी ने माथे पर लकीरें डालते हुए पूछा, क्या हुआ? उसने बुदबुदाते हुए उत्तर दिया, अंदर कुछ भूल गया। पत्नी ने उसे समझाते हुए कहा, अब उन्हें भूल ही जाओ, उनकी देखभाल भी यहीं बेहतर होगी। हमने फीस देकर अपना फर्ज तो अदा कर ही दिया है, चलो। कहते हुए उसकी पत्नी ने उसका हाथ पकड़कर उसे कार की तरफ खींचा। उसने जबरन हाथ छुड़ाया और ठंडे लेकिन द्रुत स्वर में बोला, अरे। मोबाइल फोन अंदर भूल गया हूं। ओह। पत्नी के चेहरे के भाव बदल गए और उसने चिंतातुर होते हुए कहा, जल्दी से लेकर आ जाओ, कहीं इधर-उधर हो गया तो? मैं घंटी करती हूं, उससे जल्दी मिल जायेगा वह दौड़ता हुआ अंदर चला गया। अंदर जाते ही वह चौंका, उसके पिता, जिन्हें आज ही वृद्धाश्रम में दाखिल करवाया था, बाहर बगीचे में उनके ही घर के पालतू कुत्ते के साथ खेल रहे थे। पिता ने उसे पलभर देखा और फिर कुत्ते की गर्दन को अपने हाथों से सहलाते हुए बोले, बहुत प्यार करता है मुझे, कार के पीछे भागता हुआ आ गया, जानवर है ना। डबडबाई आंखों से अपने पिता को भरपूर देखने का प्रयास करते हुए उसने थरथराते हुए स्वर में उत्तर दिया, जी पापा, जिसे जिनसे प्यार होता है वे उनके पास भागते हुए पहुंच

ही जाते हैं और उसी समय उसकी पत्नी द्वारा की हुई घंटी के स्वर से मोबाइल फोन बज उठा।

९०२) बोलनेवाला बुत- तेनालीराम - दशहरे का त्योहार निकट था। कृष्णदेव राय के दरबारियों ने भी जब दशहरा मनाने की बात उठायी, तो राजा कृष्णदेव राय बोले- मेरी इच्छा है कि इस बार दशहरा खूब धूमधाम से मनाया जाये। सभी दरबारी, मंत्रीगण, सेनापति और पुरोहित अपनी-अपनी झांकियां सजाएं। जिसकी झांकी सबसे अच्छी होगी, हम उसे पुरस्कार देंगे। सभी दूसरे दिन से ही झांकियां बनाने में जुट गये। झांकियां एक से बढ़कर एक थीं। राजा को सभी की झांकियां नजर आयीं, मगर तेनालीराम की झांकी उन्हें कहीं दिखाई नहीं दी। उन्होंने पूछा- तेनालीराम कहां है? उसकी झांकी भी दिखाई नहीं दे रही है। महाराज, उसे झांकी बनानी आती ही कहां है? वह देखिए उधर उस टीले पर काले रंग से रंगी एक झोपड़ी और उसके आगे खड़ा है एक बदसूरत बुत। यही है उसकी झांकी। मंत्री ने व्यंगपूर्ण स्वर में कहा। राजा उस टीले पर गये और तेनालीराम से पूछा, यह तुमने क्या बनाया है? क्या यही है तुम्हारी झांकी? जी महाराज। यही मेरी झांकी है और मैंने यह क्या बनाया है, इसका उत्तर मैं इसी से पूछकर बताता हूं। कहते हुए तेनालीराम ने बुत से पूछा, महाराज के सवाल का उत्तर दे। मैं उस पापी रावण की छाया हूं, जिसके मरने की खुशी में तुम दशहरे का त्योहार बना रहे हो। मगर मैं मरा नहीं। आज जो तुम भुखमरी, गरीबी, अत्याचार, आदि देख रहे हो न। ये सब मेरा ही किया- धरा है। अब मुझे मारनेवाला है ही कौन। बुत ने एक जोरदार कहकहा लगाया। राजा कृष्णदेव राय को क्रोध आ गया। वे गुस्से में बोले, मैं अभी इस बुत के टुकड़े-टुकड़े कर देता हूं। बुत के टुकड़े कर देने से क्या मैं मर जाऊंगा? क्या प्रजा के दुख दूर हो जायेंगे? इतना कहकर बुत के अंदर से एक आदमी बाहर आया और बोला, महाराज क्षमा करें। यह सच्चाई नहीं, झांकी का नाटक था नहीं, यह नाटक नहीं था। सत्य था। यही सच्ची झांकी है। मुझे मेरे कर्त्तव्य की याद दिलानेवाली यह झांकी सबसे अच्छी है। प्रथम पुरस्कार तेनालीराम को दिया जाता है। राजा कृष्णदेव राय ने कहा, सभी दरबारी आश्चर्य से एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे।

९०३) तेनालीराम के व्यंग को समझ राजा हंस पड़े - ठंड के मौसम में एक दिन राजा कृष्णदेव राय के दरबार में काफी दिलचस्प बातें हुईं। कुछ दरबारियों ने कही, कुछ तेनालीराम ने और फिर राजा ने फैसला सुनाया। आओ पढ़ते हैं यह छोटी सी कहानी।

कड़ाके की ठंड थी। दरबार में कुछ दरबारी सिकुड़े-सिमटे हुए बैठे थे। राजा कृष्णदेव राय ने उनसे बस ऐसे ही पूछ लिया, क्या बात है, बहुत ठंड लग रही है?

तेनालीराम बोले, महाराज, ठंड तो खास नहीं है। यह सुनकर एक दरबारी ने कुछ गुस्से से कहा, महाराज, तेनालीराम जी की आदत है। वह सच्ची बात कभी नहीं कहते। हमेशा ही आपको धोखे में रखते हैं।

राजा ने पास बैठे सेनापति और मंत्री से पूछा। उन्होंने भी कहा, महाराज, ठंड सचमुच खास नहीं है।

तब राजा ने तेनालीराम की ओर देखकर कहा, तुम्हें, मंत्री और सेनापति को ठंड नहीं लग रही है और ये दरबारी ठंड से क्यों सिकुड़ रहे हैं?

तेनालीराम बोले, महाराज, सेनापति हमेशा जोश में रहते हैं। इन्हें ठंड क्यों लगे? मंत्री जी राजकाज की जिम्मेदारी ओढ़े

हैं, उन्हें भी सर्दी नहीं सता सकती। रही मेरी बात। मुझसे कुछ दरबारी जलते हैं। इनकी जलन की वजह ये निठल्ले हैं, इसीलिए इन्हें ठंड लगती है। गर्मी से मेरा जाड़ा भाग जाता है। इनमें कुछ ऐसे दरबारी भी हैं, जिन्हें मौज-मस्ती के अलावा कोई काम नहीं। इन्हें तो जाड़े में ठंड भी ज्यादा लगेगी और गर्मियों में गर्मी भी।

तेनालीराम के व्यंग को समझ, राजा हंस दिए। फिर बोले, आज के बाद दरबार बीस दिन बाद लगेगा। इस बीच सभी दरबारी अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर काम करें।

९०४) तेनालीराम मंत्रों का जादू - एक बार कुछ दरबारियों ने राजा कृष्णदेव राय से कहा, महाराज, आजकल तेनालीराम को ज्योतिष का शौक चढ़ा है। कहते फिरते हैं, मंत्रों से मैं कुछ भी कर सकता हूं।

राजा बोले, अच्छा, परखकर देखते हैं, तेनालीराम के मंत्रों में क्या दम-खम है। यह कहते हुए राजा ने एक दरबारी से कहा, तुम मेरी अंगूठी छिपा लो। आज इसी के बारे में पूछेंगे। तभी तेनालीराम दरबार में आए। राजा बोले, तेनालीराम अभी-अभी मेरी अंगूठी कहीं गायब हो गई। जरा पता तो लगाओ। सुना है, तुम मंत्र-तंत्र से बहुत कुछ कर सकते हो?

तेनालीराम ने कनखियों से दरबारियों की ओर देखा। वह समझ गए कि उनके खिलाफ राजा के कान भरे गए हैं। कुछ सोचकर उन्होंने कागज पर आड़ी-तिरछी रेखाएं खींचीं। फिर बोले, महाराज, आप इस पर अपना हाथ रखें, अंगूठी जहां भी होगी, अपने आप उंगली में आ जाएगी। राजा ने उस कागज पर हाथ रख दिया। तभी तेनालीराम चावल हाथ में लेकर दरबारियों की ओर फेंकने लगे। जिस दरबारी के पास अंगूठी थी, वह सोचने लगा, कहीं सचमुच अंगूठी निकलकर राजा के पास न पहुंच जाए। उसने कसकर जेब पर हाथ रख लिया। तेनालीराम यह देख रहे थे। बोले, महाराज, अंगूठी तो मिल गई। लेकिन उस दरबारी ने कसकर पकड़ रखी है। राजा तेनालीराम का संकेत समझ हंस पड़े। उन्होंने अंगूठी पुरस्कार में तेनालीराम को दे दी। चुगली करने वालों के सिर शर्म से झुक गए।

९०५) सच - मां स्कूल में टीचर जी कहती है कि बच्चे जैसा देखते हैं, वे वैसा ही सीखते है। क्या यह सच है, मां? बेटे ने खाना खाते हुए मां से प्रश्न किया। हां बेटा, ये सच है। बेटे को रुआंसा देख, मां ने कारण पूछा तो बेटा फूट पड़ा, मां, तुम पापा को समझाना कि वो दादी पर चिल्लाए नहीं। उनकी इज्जत करें क्योंकि मैं तुमसे ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहता। बेटे को खाना खिलाते-खिलाते स्वयं भी खाना खाती मां के गले में जैसे निवाला जा अटका।

९०६) राज दरबार में रंगों की बारिश - राजा कृष्णदेव राय की बात सुनते ही जादूगर खिलखिलानंद ने अपनी पगड़ी उतार दी। नकली वेश भी उतारा। सामने तेनालीराम खड़ा मुस्करा रहा था।

फागुन के दिन थे राजा कृष्णदेव राय मंत्री, पुरोहित और दरबारियों के साथ हंसाने वाली बातें कह रहे थे। तभी पुरोहित ने कहा, महाराज, तेनालीराम अभी तक नहीं आया। जरूर वह कोई नया करिश्मा करने में लगा होगा। मंत्री ने भी पुरोहित की हां में हां मिला दी। इतने में ही बड़ी पगड़ी पहने एक व्यक्ति आया। पहरेदार बोला, महाराज, ये दूर देश से आए हैं। नाम है जादूगर खिलखिलानंद। आपको अपना जादू दिखाना चाहते हैं।

राजा ने हां कह दी। जादूगर ने एक बड़े कटोरे के पानी में कुछ डाला और छूमंतर कहा। देखते ही देखते कटोरे का पानी सूख गया। सभी ने ऊपर देखा तो वहा रंग-बिरंगे बादल नजर आए। थोड़ी ही देर में वे झमाझम बरसे। कृष्णदेव राय और

दरबारियों के रेशमी वस्त्रों पर भी रंगों के छींटें गिर गए।

पुरोहित ने कहा, देखिए महाराज, इस जादूगर की करतूत। सभी के कपड़े खराब हो गए।

जादूगर ने मुस्कराते हुए कहा, महाराज, पुरोहित जी से कहें कि मन ही मन बीस तक गिनती गिनें।

पुरोहित ने खीजकर गिनती पूरी की। फिर अपने कपड़ों की ओर देखा। रंग उड़ चुके थे। सभी के कपड़े साफ चमक रहे थे। इतने में जादूगर खिलखिलानंद मुड़ा, अच्छा महाराज, मैं तो चला। आपको होली मुबारक हो।

आप थोड़ी देर रुकिए। अभी तेनालीराम आता होगा। वह भी शायद कोई अपना जादू दिखाए।

राजा कृष्णदेव राय की बात सुनते ही जादूगर खिलखिलानंद ने अपनी पगड़ी उतार दी। नकली वेश भी उतारा। सामने तेनालीराम खड़ा मुस्करा रहा था।

अरे, तुम तो पक्के जादूगर निकले। हंसते हुए कृष्णदेव राय ने तेनालीराम को गले से लगा लिया।

९०७) मरा हुआ घोड़ा कहां से लाओगे वापस - एक बार राजा कृष्णदेव राय के दरबार में एक विचित्र मुकदमा पेश हुआ। फरियादी ने एक व्यक्ति पर आरोप लगाते हुए कहा, महाराज, इसने मेरा अरबी घोड़ा लिया था। अब यह उसे लौटा नहीं रहा है। राजा ने आरोपी की ओर देखा। उसने हाथ जोड़कर कहा, महाराज, एक दुर्घटना में उस घोड़े की मृत्यु हो गई। अब मैं इस घोड़े की दोगुनी कीमत देने के लिए तैयार हूं। पर यह मुझसे उसी घोड़े की मांग कर रहा है। राजा कृष्णदेव ने तेनालीराम की ओर देखा।

तेनालीराम ने फरियादी के हाथ में कपूर की एक टिकिया थमाते हुए कहा, इसमें कपूर है। इसे पकड़े रहो। शाम को इसे वापस लेने के बाद मैं तुम्हारे मुकदमे का फैसला कर दूंगा। फरियादी अचरज के साथ बोला, शाम तक तो कपूर उड़ जाएगा। उसे मैं कैसे लौटाऊंगा? हां, बाजार से मैं दूसरा कपूर लाकर दे सकता हूं। तेनालीराम ने फौरन कहा, जब तुम उड़ा हुआ कपूर फिर से नहीं ला सकते तो यह मरा हुआ घोड़ा कहां से ला पाएगा। फरियादी चुप रह गया। राजा ने भी तेनालीराम की बुद्धिमानी की प्रशंसा की।

९०८) जब चार्ल्स ने मारा नहले पे दहला - कथाकार चार्ल्स डिकेंस की इंग्लैंड में ख्याति फैल गई, तो एक दिन महारानी विक्टोरिया ने उन्हें अपने महल में आमंत्रित किया। जब वे वहां पहुंचे, तो उन्होंने उनसे कहानी सुनाने का आग्रह किया। चार्ल्स परम स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उन्हें महारानी के महल में पहुंच कर कहानी सुनाने में अपना अपमान महसूस हुआ। वह अदब से झुक कर बोले- महारानी जी मैं अभी तक राजमहल में सुनाने के लायक कोई कहानी नहीं लिख पाया हूं। कभी इस योग्य हुआ, तो आपकी मदद जरूर करूंगा। मैं सिर्फ सामान्य लोगों पर कहानियां लिखता हूं।

महारानी बोलीं- तब तो आप मुझे वही कहानियां सुनाइए। चार्ल्स से कहा कि महारानी मेरी कहानी तभी आपको आनंदित कर पाएंगी, जब आप उन्हें सामान्य लोगों के बीच बैठ कर सुनें।

इस तरह नहले पे दहला मारते हुए चार्ल्स ने अपनी बात मनवा ली। महारानी कथाकार का आशय समझ गईं।

९०९) जमीन का लेखा - वह सितारों को देखकर भविष्य बताता था। एक दिन अंधेरी रात में वह आसमान में सितारों की गति देखता हुआ चला जा रहा था। वह रास्ता भटक गया, नजरें आसमान पर थी। आगे एक गहरा गड्ढा था। वह उसमें

गिर गया। बहुत चिल्लाया पर वहां कोई था ही नहीं जो उसे बचाता। सुबह एक बुढ़िया ने उसे गड्ढे से निकाला। उसने बुढ़िया से कहा- मैं सितारों को देखकर भविष्य बताता हूं, तुमने मुझे बचाया है इसलिए आज रात मैं तुम्हारा भविष्य बताऊंगा। बुढ़िया ने कहा- जो आदमी जमीन के गड्ढों को नहीं देख पाता वह भला आसमान के तारों को देखकर क्या बताएगा। और जिसे अपना भविष्य नहीं मालूम था वह भला मेरा क्या बताएगा। मैं अपना भविष्य खुद बना लूंगी।

९१०) समय की समझ और प्यार का महत्व - एक बार की बात है, सभी भाव व एहसास मिलकर छुट्टी मनाने किसी द्वीप पर गए। सभी अपने स्वभाव के अनुसार मजा ले रहे थे। अचानक एक भयंकर तूफान आने की चेतावनी देते हुए सभी को द्वीप छोड़कर जाने को कहा गया। अचानक हुई इस घोषणा से अफरातफरी मच गयी। सभी अपनी नावों की ओर भागने लगे। जिनकी नाव टूट-फूट भी गयी थी, वे भी तुरंत उसे ठीक करने लगे।

प्रेम को हड़बड़ी नहीं थीं। उसे भी बहुत कुछ करना था। लेकिन जैसे-जैसे बादल गहराने लगे, प्रेम को लगा कि अब यहां से जाने का समय आ गया है। लेकिन अब वहां कोई नाव नहीं थी। प्रेम आशा से सब ओर देखने लगा। तभी खुशहाली एक आलीशान नाव पर बैठी दिखायी दी। खुशहाली, क्या तुम मुझे अपनी नाव में जगह दोगी, नहीं, मेरी नाव में बहुत सारा धन, सोना व चांदी रखे हैं। उसमें और जगह नहीं है, खुशहाली ने कहा। थोड़ी देर बाद सुंदरता नाव पर जाती हुई दिखायी दी। प्रेम चिल्लाया, मैं पीछे छूट गया हूं। मुझे अपने साथ लेकर चलोगी।

सुंदरता ने घमंड से कहा, नहीं, मिट्टी और कीचड़ में सने तुम्हारे पैरों से मेरी नाव गंदी हो जाएगी। कुछ देर बाद दुख वहां से गुजरा। मदद मांगे जाने पर उसने कहा, मैं बहुत दुखी हूं और अकेला रहना चाहता हूं। खुशी इतनी खुश थी कि उसे प्रेम की आवाज सुनायी ही नहीं दी।

प्रेम उपेक्षित महसूस करने लगा। उसे लगा कि किसी को उसकी जरूरत नहीं। आओ प्रेम, मैं तुम्हें अपने साथ लेकर चलूंगा। प्रेम आवाज को नहीं पहचान पाया, पर देर न लगाते हुए वह नाव में बैठ गया। अब वह निश्चिंत था। नाव से उतरने के बाद प्रेम को ज्ञान मिला। विचारों में उलझे प्रेम ने पूछा, ज्ञान, क्या तुम बता सकते हो कि किसने मेरी मदद की? ज्ञान ने कहा, वह समय था। समय मेरी मदद क्यों करेगा?

ज्ञान मुस्कुराते हुए बोला, क्योंकि समय ही आपकी महानता जानता है और यह भी कि आप क्या कर सकते हैं। अक्सर खुशहाली, खुशी और दुख में हम प्रेम को नजरअंदाज कर देते हैं। समय के साथ ही हमें जीवन में प्यार का महत्व समझ आता है।

९११) शेखचिल्ली का इलाज - शेखचिल्ली रोज जंगल में घास खोदने जाया करता था। एक दिन जब वह घास खोदकर घर लौटा, तो अचानक उसे ध्यान आया कि उसका खुरपा जंगल में ही रह गया है। वह खुरपा लेने तुरंत जंगल की ओर चल दिया। तेज धूप के कारण खुरपा बहुत गरम हो चुका था। जैसे ही शेखचिल्ली ने उसे हाथ लगाया वह बुरी तरह तप रहा था। उसने सोचा खुरपे को बुखार हो गया है। वह उसे लेकर हकीम के पास गया और बोला- हकीम साहब, मेरे खुरपे को बुखार हो गया है। जरा दवाई दे दीजिए। हकीम ने सोचा शेखचिल्ली उससे शरारत कर रहा है। उसने खुरपे को हाथ लगाकर कहा- हां, तुम्हारे खुरपे को बुखार हो गया है। इसे रस्सी से बांधकर कुएं में लटका दो, सारा बुखार उतर

जाएगा। शेखचिल्ली ने वैसा ही किया जैसा हकीम ने कहा था। पानी में जाने के कारण खुरपा ठंडा हो गया और शेखचिल्ली ने समझा हकीम साहब की सलाह असर कर गई।

एक दिन शेखचिल्ली के पड़ोस में रहने वाली बुढ़िया को तेज बुखार हो गया। जब उसके घरवाले उसे हकीम के पास ले जाने लगे, तो शेखचिल्ली ने कहा तुम इन्हें हकीम साहब के पास क्यों ले जा रहे हो? वे जो इलाज वहां बताएंगे, मैं यहीं बता देता हूं। इन्हें किसी कुएं या तालाब में डुबकी लगवाओ, बुखार उतर जाएगा। हकीम साहब ने ही मुझे यह तरकीब बताई थी। लोगों ने शेखचिल्ली की बात मानकर बुढ़िया को तालाब में कई गोते लगवाएं थोड़ी देर बाद जब उन्होंने बुढ़िया को हाथ लगाकर देखा, तो उसके प्राण पखेरु उड़ चुके थे।

बुढ़िया के घरवालों को गुस्सा आ गया और वे शेखचिल्ली पर चिल्लाने लगे। उनको चिल्लाता देख शेखचिल्ली ने कहा- मैंने सिर्फ बुखार उतरने की बात कही थी, वो तो उतर गया है। देखो, बुढ़िया ठंडी हो गई है। अब मुझ पर क्यों चिल्ला रहे हो। जो कहना है हकीम साहब से कहो। यह उनका ही नुस्खा था। गुस्से में भुनभुनाते लोग हकीम के पास पहुंचे और सारा किस्सा कह सुनाया। उनकी बात सुनकर हकीम ने अपना माथा पीटा और बोला- मैंने यह इलाज शेखचिल्ली के तपते हुए खुरपे को ठंडा करने के लिए बताया था। लेकिन वह बुढ़िया इंसान थी, खुरपा नहीं। उसे इलाज के लिए मेरे पास लाना चाहिए था। शेखचिल्ली को इस हरकत के लिए लोगों का गुस्सा और घरवालों की डांट दोनों झेलनी पड़ी। साथ ही उसने भविष्य में कोई इलाज न बताने की कसम खा ली।

९१२) तोता, चोंच और मगरमच्छ - मगरमच्छ की कहानी, जिसने तोते को समझा कि उसकी पहचान ही उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

एक तोता बहुत उदास था। मां ने पूछा क्या हो गया तुम्हें? तोतो बोला, मुझे अपनी चोंच पसंद नहीं। इसकी वजह से मैं बहुत भद्दा दिखता हूं। मां ने कहा, मुझे तो तुम्हारी लाल चोंच बहुत अच्छी लगती है। तोता बोला, पर सारस, हंस, गौरेया, बतख के आगे मेरी चोंच बेढ़ंगी लगती है। मां बोली, बेटा तुम एक काम करो मगरमच्छ से मिलो। जंगल में वही सबसे ज्ञानी है। शायद वही कुछ हल निकालें। तोता मगरमच्छ के पास जा पहुंचा और कहने लगा, मुझे अपनी चोंच से छुटकारा पाना है। मगरमच्छ हैरत में पड़कर बोले, पर क्यों? तुम्हारी चोंच तो एकदम ठीक दिखती है। तोता बोला, हंस बतख, बाज की चोंच कितनी खूबसूरत है। मुझे अपनी चोंच से छुटकारा पाना है। मगरमच्छ बोले, अच्छा देखते है, तुम पर कौन-सी चोंच अच्छी लगती है। तुम्हे खाने में चूहे, खरगोश या छोटे जानवर पसंद है क्या? तोता बोला, कैसी बात कर रहे हैं। मैं यह सब कैसे खा सकता हूं? मगरमच्छ बोले, अच्छा तो तुम्हें मछलियां पसंद होंगी। या फिर पानी में तैरने वाले छोटे कीड़े? तोता नाराज होकर बोला, यह सब खाने की बात तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता। मगरमच्छ बोले, तुम्हें मिर्च, बादाम, टमाटर या अन्य कोई फल या सब्जी तो बिल्कुल भी पसंद नहीं होगी? तोता बोला, यह आप क्या कह रहे है।? आप तो जानते हैं, हम तोतों को यही पसंद हैं और मुंगफली तो मुझे सबसे स्वादिष्ट लगती है। मगरमच्छ बोले, हममें से हरेक में कुछ खास गुण, खास हुनर, खान-पान और रहन-सहन होता है। जैसे कि बाज की चोंच और पंजे मजबूत होते है, ताकि वह चूहों या छोटे जानवरों का शिकार कर सके। बतख को तैरने वाले पंजे, हंस को लंबी टांग और लंबी चोंच

दी जाती है, जिससे कि वे पानी में जाकर मछलियों व पानी के कीड़े-मकोड़ों को पकड़ सकें और तुम तोतों को ऐसी चोंच दी जाती है, जो मुंगफली, बादाम आदि चोंच से तोड़ सके। तुम्हारी चोंच से ही तुम्हारी पहचान है।

९१३) जिसकी लाठी उसकी भैंस - एक पुजारी को यजमान ने एक भैंस दी। भैंस लेकर जंगल के रास्ते वह अपने घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक लुटेरा मिला जिसके हाथ में एक लाठी थी। उसने पुजारी को जमीन पर लाठी ठोकते हुए ललकारा यह भैंस मुझे दे दे और अपने रास्ते चला जा, कुछ बोला तो तेरी हड्डी पसली एक कर दूंगा। पुजारी के पास लुटेरे से निबटने के लिए कोई हथियार नहीं था। उसने कुछ सोचते हुए कहा मेरा रास्ता छोड़ दे नहीं तो तेरे सिर के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। जब लाठी तेरे हाथ में थी, अब मेरे हाथ में है इसलिए जिसके हाथ में लाठी, भैंस भी उसी की होगी। अब लुटेरा कुछ नहीं कर सकता था। पुजारी भैंस लेकर अपने रास्ते चल दिया।

९१४) सबक- मिलेगी अपने कर्म की सजा - अरब का बादशाह शाहरूम भारत यात्रा पर आया। उसने यहां के संतों की बहुत प्रशंसा सुनी थी। जिस नगर भी जाता, वहां संत फकीरों से मिलता। पंजाब में सिखों के सातवें गुरु हरराय जी के बारे में लोगों ने उन्हें बताया कि बहुत ही उच्च कोटि के संत हैं। मन की सारी दुविधाएं दूर कर देते और हर शंका का समाधान कर देते हैं। शाहरूम अफगानिस्तान की ओर लौटते समय गुरुजी के डेरे पर भी पहुंचा। वहां पहुंचकर गुरु के चरणों में अपने देश से लाए मेवा आदि भेंट किए और चुपचाप बैठ गया। गुरुजी के चेहरे पर छाया नूर देखकर वह चकित था। बादशाह ने उनसे कहा- बाबा आप बताने की मेहरबानी करेंगे कि धर्म गुरु खुदा के घर में पहुंचने में कितने मददगार साबित होते हैं, क्या उन संतों की मेहर से कल्याण संभव है? गुरुजी ने बादशाह की बातों को सुना और कुछ देर सोचने के बाद बोले- बादशाह, जीव का कल्याण उसके सदाचार से ही हो सकता है। पीर, औलिया, गुरु यह सारे तो सिर्फ सत्कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं। बंदों को बुरे कर्मों से बचने की प्रेरणा ही दे सकते हैं। हमारा कल्याण तो हमारे अपने सत्कर्मों से ही होगा। गुरु हरिराय ने कुछ क्षण मौन रहने के बाद फिर कहा- अपने कर्मों का फल तो औलिया, फकीर, साधु-संतों सभी को भोगना पड़ता है। इसलिए इंसान को स्वत: सेवा व परोपकार आदि सत्कर्म करते रहना चाहिए। बादशाह शाहरूम ने अपने सफरनामे में गुरुजी के उपदेशों की चर्चा की है। कभी किसी को अपने बारे में नहीं कहा कि वह शहंशाह हैं।

९१५) भाग्य नहीं बदला जा सकता - बहुत समय पहले की बात है। एक महात्मा अपनी पत्नी के साथ जंगल में नदी के किनारे कुटिया बनाकर रहते थे। उनकी कोई औलाद नहीं थी। एक दिन महात्माजी नदी में नहाने के बाद हाथ से पानी का अर्घ्य दे रहे थे तो उनके हाथों में ऊपर उड़ रही एक चील के मुंह से एक चुहिया गिर गई। चुहिया को देखकर महात्माजी बहुत प्रसन्न हुए महात्माजी ने अपने तपोबल से चुहिया को लड़की में बदल दिया।

अब वह उस लड़की को लेकर अपनी पत्नी के पास गए महात्मा की पत्नी लड़की को पाकर बहुत खुश हुई और उसे अपनी लड़की की तरह पालने का निश्चय किया। धीरे-धीरे लड़की बड़ी होती गई कुछ सालों में लड़की शादी के योग्य हो गई। महात्मा जी चाहते थे कि उनकी लड़की की शादी किसी ताकतवर के साथ हो उन्होंने सबसे पहले सूर्य भगवान का आवाहन किया सूर्य भगवान प्रकट हो गए। सूर्य को देखते ही लड़की ने कहा, इसमें तो गर्मी ही बहुत है मैं इससे शादी नहीं करूंगी। सूर्य ने कहा, मुझसे ज्यादा ताकतवर बादल है वह मेरी रोशनी को भी रोक लेता है आप उसी से इसका विवाह कर दें।

महात्मा जी ने बादल का आवाहन किया। बादल को देखते ही लड़की ने कहा, यह तो बहुत काला है इसके साथ में शादी नहीं करूंगी। बादल ने कहा, मुझसे ज्यादा ताकतवर हवा है जो मुझे उड़ाकर कहीं भी ले जा सकती है।

महात्माजी ने हवा का आवाहन किया। बड़े जोर से हवा आई तो लड़की ने कहा, नहीं, नहीं मैं इस से शादी नहीं कर सकती यह तो मुझे उड़ाकर ले जाएगा। हवा ने कहा, मुझसे ताकतवर पहाड़ है जो मेरी गति को भी रोक लेता है। आप इसकी शादी पहाड़ से कर दो। महात्माजी ने आवाहन करके पहाड़ को बुलाया। पहाड़ को देखते ही लड़की ने कहा, नहीं, नहीं, इससे मैं शादी नहीं कर सकती।

पहाड़ ने कहा, मुझसे ताकतवर तो चूहा है जो मेरे में छेद करके मुझे गिरा सकता है। चूहे का नाम सुनते ही लड़की खुश हो गई और शादी को राजी हो गई। महात्माजी ने लड़की को चुहिया में बदल दिया और दोनो की शादी कर दी। दोनों खुशी से अपनी जिंदगी बिताने लगे। इसलिए कहते हैं कि कोई किसी का भाग्य नहीं बदल सकता है।

९१६) सन्यासी की सेवा सत्कार से राजा को मिला आशीर्वाद - एक राजा था। उसके दो रानियां थी। राजा को कोई संतान नहीं थी। इस बात से राजा बहुत दु:खी रहता था। एक बार उसके राज्य में एक संन्यासी आया। राजा साधु महात्माओं का आदर-सत्कार किया करता था। इसलिए उस संन्यासी को राजा ने अपने दरबार में बुलाया। राजा ने संन्यासी को अपनी समस्या भी बताई। बड़ी रानी तो संन्यासी के सत्कार में जुट गई लेकिन छोटी रानी ने उसका उपहास उड़ाया। सन्यासी ने जाने से पहले बड़ी रानी को आशीर्वाद दिया कि जल्दी ही इस महल में बच्चों की किलकारी गूंजेगी।

समय बीतता गया और कुछ दिनों बाद बड़ी रानी गर्भवती हो गई। उसे खूब सम्मान मिलने लगा। इससे छोटी रानी को ईर्ष्या होने लगी। उसने महल की दाई को धन का लालच देकर अपनी तरफ कर लिया। समय आने पर रानी ने दो बच्चों को जन्म दिया- एक बेटा और एक बेटी। लेकिन दाई ने मौका देखकर दोनों बच्चे छोटी रानी को दे दिए और बड़ी रानी के पास दो पत्थर रख दिए। छोटी रानी ने बच्चे चौकीदार को देकर उन्हें मारने का आदेश दिया। चौकीदार दयालु था। वह उन्हें मारने की बजाय जंगल में छोड़ आया। भूख-प्यास से दोनों बच्चों ने दम तोड़ दिया। राजकुमारी चंपा और राजकुमार बांस का पेड़ बन गए।

एक दिन बड़ी रानी ने सिपाही को पूजा के लिए फूल लेने जंगल भेजा। उसने वहां चंपा और बांस का झाड़ देखा। जैसे ही सिपाही चंपा के फूल तोड़ने लगा चंपा ने अपना कद बढ़ा दिया। यह देखकर सिपाही आश्चर्यचकित रह गया। उसने जाकर यह बात राजा को बताई। राजा तुरंत अपनी दोनों रानियों को लेकर जंगल की ओर रवाना हो गया।

राजा ने जैसे ही फूल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया चंपा ने बांस से कहा- भैया, राजा फूल तोड़ना चाहता है। बांस ने कहा- तू अपना कद और बढ़ा दे। यह सुनकर राजा ने पूछा- क्या तुम दोनों भाई बहिन हो, चंपा और बांस कैसे बन गए? उन दोनों ने राजा को सारी बात बता दी। राजा ने उसी वक्त छोटी रानी को बंदीगृह में डलवा दिया। इतने में चंपा की नजर बड़ी रानी पर पड़ी। उसने कहा- भैया, बड़ी रानी भी फूल तोड़ने आई है। बांस ने कहा- इनके सामने झुक जा। यह सुनकर चंपा बड़ी रानी के पैरों में झुक गई। बांस भी झुककर बड़ी रानी के पैरों को छूने लगा। बड़ी रानी दोनों से लिपटकर रोने लगी। जैसे ही रानी के आंसुओं ने दोनों को छुआ वे मनुष्य बन गए। राजा, रानी दोनों बच्चों को लेकर राजमहल की ओर चल दिए।

९१७) दुर्योधन और युधिष्ठिर में सोचने की दृष्टि का बहुत बड़ा अंतर है - एक बार भगवान कृष्ण ने दुर्योधन और युधिष्ठिर को एक काम सौंपा, युधिष्ठिर को काम सौंपते हुए उन्होंने कहा- तुम जाओ और एक ऐसे व्यक्ति को ढूंढ लाओ जो बहुत दुष्ट हो, जिसमें गुणों का सर्वथा अभाव हो और जो दोषों से पूर्ण हो। कृष्ण ने दुर्योधन को अलग बुलाकर आदेश दिया- तुम ऐसा व्यक्ति खोजकर लाओ, जो सद्गुणों से पूर्ण हो, जिसमें एक भी दोष न हो। युधिष्ठिर और दुर्योधन चले गये और कुछ दिनों के बाद दोनों ही वापस आकर कृष्ण से अलग-अलग मिले। श्रीकृष्ण ने दोनों से पूछा कि क्या जिस व्यक्ति को खोजने गये थे, उसे ले आये? दुर्योधन कहता है- मैंने ऐसे व्यक्ति को, जो सद्गुणों से संपन्न हो और जिसमें दुर्गुणों का सर्वथा अभाव हो, खोजने का अथक परिश्रम किया, किंतु ऐसा व्यक्ति कहीं भी न मिल सका, जो सर्वथा निर्दोष हो। यदि किसी में एक गुण है, तो उसमें दर्जनों दोष भी हैं। पूरी खोज-बीन के बाद मैंने पाया कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जिसमें कोई दोष न हो, तो वह मेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। अब आप जैसा चाहें, मेरे साथ करें। श्रीकृष्ण मुस्कुराये और बोले- बहुत अच्छा हुआ। दोषों से सर्वथा मुक्त व्यक्ति के दर्शन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। युधिष्ठिर के आने पर कृष्ण पूछते हैं- तुम्हारा व्यक्ति कहां है? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया- हे प्रभु। संसार का निकृष्टतम पापियों में भी मैंने अनुकरणीय गुण पाये है, उनमें भी श्रेष्ठ लक्षण पाये। अत: ऐसा व्यक्ति पाने मे मैं सफल न हो सका, जो दोषों से ही पूर्ण हो।

९१८) मिट्टी और कुंभकार - बार-बार पैरों तले कुचले जाने के कारण मिट्टी अपने भाग्य पर रो पड़ी। अहो। मैं कैसी बदनसीबी हूं कि सभी लोग मेरा अपमान करते हैं। मिट्टी के अंदर से निकलती हुई आह को जानकर कुंभकार बोला- मिट्टी बहन। तुम यदि सम्मान पाना चाहती हो तो तुम्हें बड़ा सम्मान दिला सकता हूं लेकिन एक शर्त है। एक क्या तुम्हारी जितनी भी शर्ते हों, मुझे सभी स्वीकार हैं। बस मुझे लोगों के पैरों तले से हटा दो, कुंभकार की बात को बीच में ही काटते हुए मिट्टी ने कहा। तो फिर ठीक है, तैयार हो जाओ कहते हुए कुंभकार ने जमीन खोदकर मिट्टी बाहर निकाली। गधों की सवारी कराता हुआ उसे घर ले आया। उसे बहुत समय तक गीली रखा। इतना ही नहीं फिर पैरों से उसे खूब रौंदा। कष्टों को सहते हुए मिट्टी बोली, अरे भाई। बहुत कष्ट दे रहे हो। कब मुझे सम्मान का पात्र बनाओगे? मिट्टी बहन। धैर्य रखो। अभी सहती जाओ, तुम्हें इसका मधुर फल जरूर मिलेगा। कुंभकार की बात सुनकर मिट्टी कुछ नहीं बोली। कुंभकार ने मिट्टी को चाक पर चढ़ाया और उसे तेजी से घुमाते हुए घड़े का रूप दिया। फिर धूप में सुखाया। कष्ट सहते-सहते जब मिट्टी का धैर्य टूटने लगा तो कुंभकार बोला, बस बहन। अब केवल एक अग्नि-परीक्षा ही शेष है। आखिर मिट्टी ने सब कुछ सह कर अग्नि-परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली। फिर क्या था। सचमुच सुंदरियां उसे सिर पर उठाए फिरने लगी। मिट्टी अपने सम्मान पर प्रफुल्लित हो उठी। आखिर सम्मान पाने के लिए कष्ट तो सहने ही पड़ते हैं।

९१९) मृत्युंजय - आतंकवादियों से लड़ते समय शहीद हुए सैनिक के शव जैसे ही गांव के पास पहुंचने का सन्देश मिला, तो पूरे परिवार के सब्र का बांध टूट गया। उसकी मां और पत्नी का क्रंदन हृदय विदारक था। जब से उसकी शहादत का पता चला था, उसी समय से उसकी पत्नी उसकी तस्वीर को लेकर केवल रो ही रही थी। अपनी उस तस्वीर पर शहीद सैनिक ने अपने ही हाथ से लिखा था- मैं। उस विलाप में एक दूसरी महिला बिलखती हुई बोली, इतनी सी उम्र में देश पर

कुरबान हो गया, अभी तो जिन्दगी देखी ही कितनी थी। एक अन्य महिला ने उसकी पत्नी को देखते हुए कहा, कोई बेटा भी नहीं है, किस आसरे से जिएगी ये? उसी समय उस शहीद सैनिक की बेटी वहां आई। बेटी ने रूंधे गले से कहा, मां, पापा जैसी बनकर मैं दुश्मनों से बदला लूंगी। कहते-कहते बेटी की आंखें लाल होने लगी। उसने मां के हाथ में रखी तस्वीर को एक सैनिक की तरह जोश के साथ सैल्यूट किया, वहीं पास रखी सिन्दूर की डिबिया उठाई, उसमें से सिन्दूर निकाल कर अपनी अंगुली पर लिया, और तस्वीर में लिखे मैं के आगे लिख दिया हूँ।

९२०) ध्यान लक्ष्य पर हो तो सटीक होगा निशाना - एक बार स्वामी विवेकानंद अमेरिका में भ्रमण कर रहे थे। अचानक, एक जगह से गुजरते हुए उन्होंने पुल पर खड़े कुछ लड़कों को नदी में तैर रहे अंडे के छिलकों पर बंदूक से निशाना लगाते देखा। किसी भी लड़के का एक भी निशाना सही नहीं लग रहा था।

तब उन्होंने एक लड़के से बंदूक ली और खुद निशाना लगाने लगे। उन्होंने पहला निशाना लगाया और वह बिलकुल सही लगा, फिर एक के बाद एक उन्होंने कुल १२ निशाने लगाए। सभी बिलकुल सटीक लगे। ये देख लड़के दंग रह गए और उनसे पूछा- स्वमीजी भला आप ये कैसे कर लेते हैं? आपने सारे निशाने बिलकुल सटीक कैसे लगा लिए? स्वामी विवेकानंद बोले- असंभव कुछ नहीं है। तुम जो भी कर रहे हो, अपना पूरा दिमाग उसी एक काम में लगाओ। अगर तुम निशाना लगा रहे हो, तो तुम्हारा पूरा ध्यान सिर्फ अपने लक्ष्य पर होना चाहिए। तब तुम कभी चुकोगे नहीं। यदि तुम अपना पाठ पढ़ रहे हो, तो सिर्फ पाठ के बारे में सोचो।

९२१) दर्द नहीं, खुशियां बांटो - एक बार तैलंगस्वामी को तंग करने के इरादे से एक व्यक्ति ने दूध के बदले चूना घोल कर एक पात्र में रख दिया। स्वामीजी ने पात्र की ओर देखा और घोल को चुपचाप पी लिया। वह व्यक्ति सोचने लगा कि शीघ्र ही चूना असर करेगा, मगर यह देख वह हैरान हो गया कि उन पर तो कोई असर ही नहीं हुआ, बल्कि उसका ही जी घबराने लगा और वह दर्द से तड़पने लगा। वह समझ गया कि यह स्वामीजी को तंग करने का ही परिणाम है। वह उनके चरणों में गिर कर माफी मांगने लगा। स्वामीजी ने पास ही रखी स्लेट पर चूने की खड़िया से लिखा, चूने का पानी मैंने पिया और इसका परिणाम तुझे भोगना पड़ा। इसका एक ही कारण है, वह यह कि हम दोनों के शरीर में आत्मा का वास है। यदि दूसरे की आत्मा को कष्ट दिया जाए, तो वह कष्ट स्वयं को भी भोगना पड़ता है, इसलिए दूसरों को कष्ट देने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए। इसके बाद स्वमीजी ने उस व्यक्ति के सिर पर हाथ रखा और उसका दर्द चला गया। उस व्यक्ति ने स्वामीजी से माफी मांगी और कहा कि अब वह किसी को भी तंग नही करेगा।

हमें बेवजह किसी भी व्यक्ति को तंग नहीं करना चाहिए, क्योंकि जितना आप किसी को परेशान करते हैं, उससे दोगुना दर्द आपको मिलता है। इसलिए जिंदगी में खुशियां बांटनी चाहिए, दर्द नहीं।

९२२) कौवे उड़ाने वाली मां - एक राजा की सात रानियां थीं। सबसे छोटी रानी गर्भवती हुई तो बाकी सभी उससे जलने लगीं। समय पूरा होते ही रानी ने दो राजकुमारों को जन्म दिया। लेकिन पैदा होते ही छोटी रानी के बच्चों को सभी रानियों ने मिलकर संदूक में डालकर जंगल में छुड़वा दिया और राजा से कह दिया कि रानी ने तो ईंट-पत्थर को जन्म दिया है। राजा ने उनकी बातों में आकर छोटी रानी को महल की छत पर फटे पुराने कपड़े पहनाकर बैठा दिया और उसे

कौवे उड़ाने का काम दिया। लोग उसे काग-बिडारनी कहने लगे। उधर, वह संदूक एक साधु के हाथ लग गया। उसने नवजात बच्चों को पाल-पोस कर किसी तरह बड़ा किया। वे बड़े सुंदर थे। साधु ने अपने तपोबल से पता लगा लिया कि ये बच्चे किसके हैं। बड़े होने पर साधु ने कहा कि तुम राजा के महल के आगे जाकर कुटिया बनाओ और एक दिन महल भी। दोनों भाइयों ने साधु का कहा किया। उन्होंने खूब मेहनत की और तपस्वी के आशीर्वाद से एक दिन राजा के घर के आगे महल खड़ा कर लिया।

रानियों को भी यह शंका हुई कि इन बच्चों की शक्ल काग बिडारनी से मिलती है तो कहीं यह उसके बच्चे तो नहीं। उन्होंने जादू जाननेवाली दूतियों से उनके काम बिगाड़ने की कोशिश की लेकिन सफल नहीं हुई। राजा आता-जाता उन्हें देखता और सोचता कि कितने सुंदर बच्चे हैं। उन्होंने अल्प समय में ही अपनी बुद्धिमता और मेहनत से कुटिया से महल खड़ा कर लिया।

एक दिन की बात है। साधु के कहने से दोनों भाइयों ने राजा को अपने महल में भोजन के लिए आमंत्रित किया और थाली में कंकर-पत्थर परोस दिए। राजा बहुत क्रोधित होकर तलवार निकालने को आतुर होते हुए कहने लगा, इंसान क्या कंकर-पत्थर खाते है? तुमने मेरा अपमान किया है। तब साधु बोला, यह तो आपके सोचने की बात है राजन कि अगर आप कंकर-पत्थर नहीं खा सकते तो आपकी छोटी रानी कंकर-पत्थर कैसे जन सकती है।

राजा के आग्रह पर साधु ने सारी बात राजा और बच्चों को बताई कि काग बिडारनी ही उनकी मां है। असलियत पता चलते ही राजा ने दोषी रानियों को कारागार में डाला और छोटी रानी से क्षमायाचना करते हुए उसे महल में लेकर आ गया। एक समय के बाद रानियों के पाप का घड़ा फूटा और बाकी की उम्र उन्हें कारागार में निकालनी पड़ी। रानी और बच्चे सुखपूर्वक रहने लगे।

९२३) एक बार मुस्लिम संत राबिया धर्मग्रंथ पढ़ रही थीं कि एक फकीर वहां आया और उसने उनके प्रति दुर्वचन कहने शुरू कर दिए। राबिया ने उस ओर ध्यान नहीं दिया और वह ग्रंथ पढ़ती रहीं। काफी देर तक फकीर अपशब्द कहता रहा। राबिया पर जब कोई असर न हुआ तो फकीर को क्रोध आ गया। उसने करीब जाकर ग्रंथ पर नजर डाली तो उसने एक वाक्य के कुछ शब्दों को काटा हुआ पाया। उसका क्रोध और भड़क उठा। उसने चिल्लाकर राबिया से पूछा, ये शब्द किसने काटे हैं? राबिया ने शांत स्वर में जवाब दिया, मैंने। फकीर ने प्रश्न किया, क्या किसी मनुष्य को धर्मग्रंथ में लिखे अंश को काटने का अधिकार है?

हां, जैसे-जैसे धर्मग्रंथ की नसीहतों के जरिए हमारा ज्ञान बढ़ता जाता है, उसी तरह हमारी बुद्धि परिपक्व होती जाती है। तब यदि हमें कोई अंश गलत प्रतीत हो तो हमें उसमें आवश्यक सुधार करने में कोई हर्ज नहीं, राबिया ने उत्तर दिया।

उसने आगे पूछा, तुमने किस अंश को गलत माना है? राबिया ने बताया, इसमें लिखा है कि शैतान का धिक्कार करना चाहिए। यह वाक्य मुझे ठीक नहीं लगा और मैंने उसे काटकर लिख दिया, शैतान से भी प्यार करना चाहिए। फकीर ने कहा, ठीक ही तो लिखा था। नहीं, यह वाक्य सही नहीं है। राबिया ने उसे समझाते हुए कहा, यदि किसी व्यक्ति का धिक्कार करना हो तो उसके प्रति हमारे दिल में क्रोध होना चाहिए और क्रोध तब आता है, जब हमारे दिल में उसके

प्रति नफरत होती है। मैं अपने दिल में क्रोध, नफरत जैसे दुर्गुणों को फटकने ही नहीं देती, क्योंकि मेरे दिल में खुदा का वास है। इस कारण मेरे दिल में जो प्रेम है, अनुराग है, वहां घृणा और धिक्कार के लिए कोई स्थान नहीं है। फिर शैतान के प्रति नफरत न होने के कारण उसका धिक्कार क्यों करूं? इन शब्दों से फकीर के दिल में हलचल मच गई। फकीर को बात जंच गई। राबिया पर व्यर्थ ही क्रोध करने का उसे पछतावा हुआ। उसने उनसे माफी मांगी और वह वहां से चुपचाप चला गया।

९२४) प्रशंसा से उपजे अहंकार का दमन करते हैं अंतर्बोध व आत्मविश्वास - एक मूर्तिकार के हाथों में गजब का जादू था। वह मूर्ति गढ़ता तो लगता जैसे वह अगले ही पल बोल उठेगी। उसके शिल्प में निरंतर नई चमक आती जा रही थी। लेकिन बुढ़ापा घिर आने से अब उसे मौत का साया सताने लगा था। उसने संकल्प लिया कि वह यम के आगे बिना बाजी खेले घुटने न टेकेगा। उसने अगले कुछ दिनों में अपने चारों ओर अपने जैसे कई बुत बनाकर खड़े कर दिए।

जिस समय यमराज आए, मूर्तिकार उन बुतों के बीच जा छुपा। यमराज चक्कर में पड़ गए। वह उसे ढूंढते कैसे। तभी उन्हें एक युक्ति सूझी। उन बुतों पर नजर गड़ाकर यमराज बोले, कैसी अद्भुत कला है। यह किसी इंसान का रचा शिल्प नहीं, बल्कि इसमें तो साक्षात ब्रह्मा जी का हाथ नजर आता है। लगता है मुझे यहां से खाली ही हाथ लौटना होगा। यह सुनना था कि मूर्तिकार की बांछें खिल गईं, आंखों में दंभ उतर आया और चेहरे पर विजय की मुस्कान खिल आई। यहीं उससे चूक हो गई, वह हार गया। यमराज की तेज आंखों ने उसे पहचान लिया। मूर्तिकार के प्राण अपनी डोर में बांध यमराज यमलोक की ओर कूच कर गए।

९२५) उसे बोध नहीं हुआ कि परमेश्वर के कितने करीब था - बहुत पुरानी बात है। कहीं एक भला आदमी रहता था, जो सभी से असीम प्रेम करता था और सारे जीवों के प्रति उसके हृदय में अपार करुणा थी। उसके गुणों से प्रसन्न होकर ईश्वर ने उसके पास अपना देवदूत भेजा।

ईश्वर ने मुझे आपके पास यह कहने के लिए भेजा है कि वे आपसे बहुत प्रसन्न है और आपको कोई दिव्य शक्ति देना चाहते हैं- देवदूत ने कहा, क्या आप लोगों को रोगमुक्त करने की शक्ति प्राप्त करना चाहेंगे? बिलकुल नहीं - भले आदमी ने कहा, मैं यह चाहूंगा कि ईश्वर स्वयं इस बात का निर्णय करे कि किसे रोगमुक्त किया जाए। तो फिर आप पापियों को सद्मार्ग पर वापस ले आने की शक्ति ग्रहण कर लें।

यह तो आप जैसे देवदूतों का काम है। मैं नहीं चाहता कि लोग मसीहा जान कर मेरा सम्मान करें या मुझे ऐसे प्रतिमान के रूप में स्थापित कर दिया जाए। आपने तो मुझे संकट में डाल दिया - देवदूत ने कहा, आपको कोई शक्ति दिए बिना मैं स्वर्ग नहीं लौट सकता। यदि आप स्वयं कोई शक्ति नहीं लेना चाहेंगे, तो मुझे विवश होकर आपके लिए खुद चयन करना पड़ेगा। भले आदमी ने कुछ क्षणों के लिए सोचा, फिर कहा- ठीक है। यदि ऐसा है, तो मैं चाहता हूं कि ईश्वर मुझसे जो भी शुभ कर्म करवाना चाहता है, वे स्वत: घटित होते जाएं, परन्तु उनमें मेरा हाथ होने का पता किसी को भी नहीं चले, मुझे भी नहीं, ताकि स्वयं को ऐसी क्षमता से युक्त जानकर मुझमें कभी अहंकार न उपजे। ऐसा ही हो- देवदूत ने कहा।

उसने भले आदमी की परछाई को रोगमुक्त करने की दिव्य शक्ति से संपन्न कर दिया, परन्तु केवल उसी समय काल के

लिए जब उसके चेहरे पर सूर्य की किरणें पड़ रही हों। इस प्रकार, वह भला आदमी जहां कहीं भी गया, वहां लोग रोगमुक्त हो गए, बंजर धरती में फूल खिल उठे और दुखियों के जीवन में वसंत आ गया। अपनी दिव्य शक्तियों से अनभिज्ञ वह भला आदमी सालों तक दूर देशों की यात्राएं करता रहा। उसके पीछे सदैव चल रही उसकी परछाई ईश्वरीय इच्छा को पूर्ण करती रही। उसे जीवनपर्यंत इसका बोध नहीं हुआ कि वह परमेश्वर के कितना करीब था।

९२६) मत बदलो - वर्षों तक मैं मानसिक रोगी रहा, चिंताग्रस्त, अवसादग्रस्त और स्वार्थी। हर कोई मुझे अपना स्वभाव बदलने को कहता। मैं उन्हें नाराज करता, पर उनसे सहमत भी था। मैं अपने आपको बदलना चाहता था लेकिन अपने तमाम प्रयासों के बावजूद मैं चाहकर भी ऐसा नहीं कर पाया। मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ तब होती थी जब दूसरों की तरह मेरे सबसे नजदीकी मित्र भी मुझसे बदलने को कहते। मैं ऊर्जारहित और बंधा-बंधा सा महसूस करता। एक दिन उसने कहा, अपने आपको मत बदलो तुम जैसे भी हो मुझे प्रिय हो। ये शब्द मेरे कानों को मधुर संगीत की तरह लगे मत बदलो, मत बदलो, मत बदलो तुम जैसे भी हो मुझे प्रिय हो। मैंने राहत महसूस की। मैं जीवंत हो उठा और अचानक मैंने पाया कि मैं बदल गया हूं। अब मैं समझ गया हूं कि वास्तव में, मैं तब तक नहीं बदला था जब तक कि मैंने ऐसे व्यक्ति को नहीं खोज लिया जो मुझसे हर हाल में प्रेम करता हो।

९२७) सच्ची लगन सफलता की शर्त है - मैक्समूलर की मां की हार्दिक इच्छा थी कि उसका बेटा देश का कोई बड़ा अधिकारी बने। एक विधवा होते हुए भी उसने मैक्समूलर की पढ़ाई में कोई कमी नहीं की, लेकिन मैक्समूलर को तो दूसरी ही धुन थी। वह कहता, नहीं माँ, मुझे संस्कृत पढ़ना है, पढ़ने दो। वे संस्कृत के अध्ययन में जुट गए। लिपजिग कॉलेज में अध्ययन के दौरान उन्हें यह आश्चर्य हुआ कि अंग्रेजी के अनेक शब्द संस्कृत से निकले हैं यथा- डॉक्टर-दुहित्र से, फादर-पितर से, मदर-मातृ से, वाइफ-वधु से तथा ब्रदर-भ्रातर से। उन्हें गुरु कीखोज में पेरिस जाना पड़ा। पेरिस में बर्नूफ को पाकर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हुई। जब इन्होंने वेद अध्ययन की इच्छा व्यक्त की, तो गुरु ने कहा- तुम में प्रतिभा है, एकनिष्ठता है। तुम हिन्दू धर्म या वेद दोनों में से किसी एक को अपना जीवन अर्पित कर दो। मैक्समूलर ने वेद पढ़ने की जब इच्छा व्यक्त की तो गुरु ने दो हिदायतें दीं- वेद का भाष्य करते समय तुम धूम्रपान नहीं करोगे। मूल और भाष्य का एक शब्द -एक अक्षर भी नहीं छोड़ोगे। उन्होंने इन वचनों का दृढ़ता से पालन किया और अपने २७ वर्षों के कठोर श्रम से ऋग्वेद का उद्धार किया, जो ईस्ट इंडिया कंपनी के संग्रहालय में कैद थे। हिन्दू धर्म के इस पवित्र ग्रंथ के जीर्णोद्धार का श्रेय इन्हीं विद्वानों को जाता है, जिन्होंने अपने जीवन के लगभग पचास वर्ष भारतीय वांगमय में विचरते हुए बिताया।

९२८) मेहनत से हासिल होती है महानता - एक दिन एक निर्धन बालक लकड़ी का गट्ठर लेकर शहर में बेचने आया। उसने लकड़ी के गट्ठर को इस कलात्मक ढंग से बांधा था कि एक सेठजी को पसंद आया।

सेठजी ने पूछा- बेटा। ये गट्ठर इतने कलात्मक ढंग से किसने बांधा है?

उस लड़के ने उत्तर दिया- जी मैंने।

सेठजी को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा- क्या तुम इस गट्ठर को खोल कर ऐसे ही बांध सकते हो। बालक ने भीनी

मुस्कान के साथ उत्तर दिया- हां-हां क्यों नहीं, बिलकुल। उस बालक ने गट्ठर को खोला और तुरंत वैसे ही बांध दिया।

सेठ उस बालक की एकाग्रचित्तता, लगन और प्रतिभा का कायल हो गया। उसने उस बालक से कहा- बेटा, तुम मेरे साथ चलो मैं तुम्हें शिक्षा दिलवाऊंगा।

उस लड़के ने कुछ देर सोचा और फिर चलने के लिए तैयार हो गया। सेठजी ने उस लड़के की शिक्षा का प्रबंध किया। वह स्वयं भी उसे पढ़ाते। थोड़े दिन बाद उस लड़के ने कुशाग्र बुद्धि के चलते उच्च शिक्षा हासिल कर ली। बड़ा होने पर यही बालक यूनान के महान दार्शनिक पाइथागोरस के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

और वे सेठजी, जिन्होंने उस बालक की कला और लगन को एक दृष्टि में परखा, यूनान के विख्यात तत्वज्ञानी डेमोक्रीटस् थे। जो व्यक्ति छोटा सा कार्य भी पूरी मेहनत के साथ करते हैं, उन्हीं में महानता छिपी होती है।

९२९) ध्यान रहे, सब्र का फल हमेशा मीठा होता है - किसी गांव में पिता-पुत्र रहते थे। किसान श्यामलाल का बेटा रामू दिनभर निठल्ला घूमता रहता था। श्यामलाल उसे बहुत समझाता लेकिन रामू पर उसका कोई असर नहीं होता। एक दिन रामू को न जाने क्या सूझी कि वह पिता के साथ खेत पर चला गया। वहां उसने बीज बोने में श्यामलाल की मदद की।

उस दिन रामू को समझ आया कि खेतीबाड़ी का महत्व क्या है और इसमें कितनी मेहनत होती है। उस दिन के बाद वह रोज श्यामलाल के साथ खेत पर जाने लगा। दिन रात की मेहनत के बाद अब वह चाहता था कि उसकी धान की फसल जल्दी ही खेत में लहलहाने लगे। फसल अपनी गति से बढ़ रही थी। वह रोज फसल देखने जाता लेकिन फसल बढ़ी हुई नहीं दिखती। वह निराश होकर अपने घर लौट जाता।

एक दिन रामू ने फसल को जल्दी उगाने का तरीका सोचा और खेत पर चला गया। वहां जाकर उसने सभी पौधों को जमीन से खींचकर थोड़ा-थोड़ा बाहर कर दिया। बढ़ी हुई फसल को देखकर वह बहुत खुश हुआ। वह दौड़ा-दौड़ा घर गया और सारी बात पिता को बताई। यह सुनकर श्यामलाल तुरंत खेत की ओर भागा लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। सारी फसल नष्ट हो चुकी थी। श्यामलाल को अपने बेटे की करनी पर बहुत गुस्सा आया लेकिन अब वह कर भी क्या सकता था। उसने नष्ट फसल रामू को दिखाई और समझाया कि जल्दबाजी में काम बनता नहीं बिगड़ता है। सब्र का फल ही मीठा होता है। यह सुनकर रामू को अपनी गलती का अहसास हो गया और उसने पिता से अपने किए की माफी मांगी।

९३०) किसान मेहनत के बदले में धन पाकर खुश हो गया - एक बार राजा चंद्रसेन अपनी सेना के साथ विजय प्राप्त करके लौट रहा था। एक गांव के पास पड़ाव डाला। राजा ने सेना के सरदार से कहा तुम वहां के सबसे बड़े खेत पर जाओ और सारी फसल कटवा कर ले आओ। सरदार तुरंत कुछ सैनिकों के साथ रवाना हो गया। उसे एक किसान उन्हें एक खेत पर ले गया। जैसे ही सैनिक फसल काटने लगे, किसान ने उन्हें रोकते हुए कहा, मेरे साथ चलिए। काफी दूर चलने पर किसान उन्हें एक छोटे से खेत पर ले गया और बोला, मुझे मालूम नहीं था कि आप खेत के लिए क्यों पूछ रहे थे। मैं पहले जिस खेत पर ले गया था वह मेरा नहीं था। उसकी फसल का फैसला मैं कैसे कर सकता था? लेकिन यह मेरा खेत है। अपना खेत बचाने के लिए मैं दूसरे के खेत को नहीं उजाड़ सकता था। उसकी बात सुनकर सरदार का गुस्सा शांत हो गया। वह बिना फसल लिए राजा के पास पहुंचा और सारी बात बता दी।

किसान की बातों से राजा प्रभावित हुए और उसने ढेर सारी अशर्फियां देकर उसके खेत की सारी फसल कटवा ली। किसान मेहनत के बदले में धन पाकर खुश हो गया।

९३१) हाथी रामू को मिल गया सबक - एक थी हथिनी शर्मिला। उसका बेटा था रामू। शर्मिला को अपने बेटे से बहुत प्यार था और वह उसे हर बात प्यार से समझाती थी। शर्मिला ने रामू से कहा कि बेटा नाले के मैले पानी में मत खेलना, शेर की गुफा के पास मत जाना आगे-पीछे देखे बगैर चलना मत और मुझसे दूर जाना मत। रामू के मन में मगर यही खयाल रहता कि मैं सारी दुनिया देख तो लूं। क्या सचमुच नाला मैला है? क्या जंगल सचमुच दूर-दूर तक फैला है?

एक दिन जब मां लेटी थी थककर चूर-चूर रामू भाग गया मां से दूर। शेर की गुफा के के पास था गन्ने का खेत बड़ा। रामू को गन्ना खाने का शौक चढ़ा। उसका पाव गन्नों के खेत की और बढ़ा। तभी दांत दिखाकर शेर जो दहाड़ा तो रामू गन्ना छोड़ मां के पास दौड़ा। उसने आगे देखा न पीछे, ऊपर देखा न नीचे। रास्तों में गड्ढा था वह उसमें जा गिरा। खूब चिल्लाया बेचारा।

उसकी चिल्लाहट सुनकर शामू शिकारी आया। उसने कहा कि तुम जैसे हाथी को बेचकर मिलेंगे रुपए बीस हजार। उन पैसों से मैं खरीदूंगा एक सेकंड हैंड कार। अभी तुम्हें बांधने की रस्सी लाता हूं। अब तो रामू और जोर से चिल्लाया। तभी मां शर्मिला ने सुन ली रामू की पुकार। वह दौड़कर उस गड्ढे तक आ पहुंची। रामू को गड्ढे में देखकर वह हुई बहुत उदास। उसने तरह-तरह के तरीके आजमाए पर ये तरीके बिलकुल काम न आए। तभी उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने एक पेड़ को जड़ से उठाया और उसे गड्ढे में उल्टा गिराया। इस पेड़ पर चढ़कर रामू बाहर आया। तो मां ने उसे प्यारसे गले लगाया। जब शिकारी शामू रस्सी लेकर आया तो रामू को मां के साथ गड्ढे से बाहर देखकर घबराया। उसकी शक्ल पड़ गई पीली और धोती हो गई ढीली। वह सिर पर पैर रखकर तिकड़म तोप तिकड़म तोप भागा। इस तरह हाथी रामू को मिल गया एक सबक।

९३२) बंदरों का उपवास शुरू होने से पहले खत्म - बंदरों के एक समूह ने उपवास रखने का फैसला किया। मेरा ख्याल है कि उपवास शुरू करने से पहले हमें उपवास तोड़ने के लिए भोजन की तैयार करके रख लेनी चाहिए। बुजुर्ग बंदर मुखिया ने सलाह दी। सभी बंदरों ने सिर हिला कर हामी भरी। नौजवान बंदरों को भोजन की खोज में भेजा गया। बंदर गए और बड़े-बड़े स्वादिष्ट दिखाई पड़ने वाले केलों के गुच्छे उठा लाए।

मेरा ख्याल है कि उपवास शुरू करने से पहले ही हमें अपने-अपने हिस्से के केले लेकर अपने पास रख लेने चाहिए ताकि उपवास तोड़ते समय केले बांटने में समय न लगे। जरा सोचो तो सही कि तब तक हमें कितनी भूख लगी होगी। मुखिया की पत्नी ने कहा सभी बंदरों को यह तरकीब पसंद आई। उन्होंने अपने-अपने हिस्से के केले लेकर अपने पास रख लिए। क्यों न हम एक केला छील कर तैयार रख लें ताकि समय होते ही उसे फौरन मुंह में डाल लें? एक नौजवान बंदर ने कहा। बिल्कुल सही, चलो यह भी कर लेते हैं। एक मोटे बंदर ने हामी भरी क्योंकि केले देखकर उसके मुंह में पानी आने लगा था। ठीक है। मुखिया ने कहा हम केले छील तो लेंगे लेकिन ध्यान रहे कि किसी भी हाल में खाएंगे नहीं।

इसलिए सभी बंदरों ने फौरन अपने-अपने केले छील लिए और शाम के समय खाने के लिए तैयार कर रख लिए।

क्या मैं यह केला मुंह में रख लूं? मैं वायदा करता हूं कि मैं इसे शाम तक अपने मुंह में रखूंगा। लेकिन खाऊंगा नहीं? कृपया इजाजत दे दीजिए। एक छोटे-से बंदर ने अपने पिता से कहा।

क्यों न हम सभी केले अपने मुंह में रख लें? इस तरह समय पूरा होते ही हम केला निगल सकते हैं। उस बंदर के पिता ने अपने बच्चे की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा। वैसे भी उसका उपवास रखने का कोई इरादा नहीं था। उसने तो अपनी पत्नी के दबाव में आकर उपवास रखा था। मेरा मानना है कि जब हम केले को निगलेंगे ही नहीं तो मुंह में रखने में हर्ज क्या है? उसने आगे कहा। इसलिए सभी बंदरों ने झट से केले मुंह में डाल लिए। अब शुरू हुआ उपवास लेकिन केला मुंह में होने की वजह से सभी को बड़ी असुविधा हो रही थी। केले मुंह में डालने के कुछ देर बाद ही खुद-ब-खुद घुलने लगे और देखने ही देखते गले से नीचे उतर गए और इस तरह से बंदरों का उपवास शुरू होने से पहले ही खत्म हो गया।

९३३) शेर सुपारी से डर गया - एक पहाड़ी पर एक शेर रहता था। वह बूढ़ा हो गया था, इसलिए वह शिकार कर पाने के काबिल नहीं था। कई दिनों तक शिकार नहीं मिलने पर उसने सोचा कि इसी तरह वह भूखा रहा, तो उसकी जान चली जाएगी। उसने एक उपाय सोचा। पास ही एक गांव था। वह जानता था कि इंसान को शेर से डर लगता है उसने तय किया कि वह इंसानों की बस्ती में जाएगा और आसानी से इंसान का शिकार कर अपन भूख मिटाएगा। अंधेरा होते ही शेर गांव में चला गया। एक झोपड़ी के बाहर उसे एक बच्चे के रोने की आवाज आई।

शेर उस झोपड़ी की खिड़की के बाहर ही बैठ गया। बच्चा अपनी मां से मीठी चीज देने की जिद कर रहा था। मां के पास कुछ भी मीठा नहीं था। उसने उसे चुप करते हुए कहा- बेटा, चुप हो जा, नहीं तो बाहर लोमड़ी आ जाएगी। यह सुनने के बाद भी बच्चा लगातार रोता रहा और चुप नहीं हुआ। अब उसकी मां ने उससे कहा, बेटा, चुप हो जा, नहीं तो भालू आ जाएगा। बच्चे पर इस धमकी का भी कोई असर नहीं हुआ। वह बैठा हुआ सुबकता ही रहा।

इधर, बाहर बैठा शेर सोच रहा था कि यह कैसा बहादुर बच्चा है, जो लोमड़ी और भालू से नहीं डरता। तभी मां ने बच्चे को डांटकर कहा, बेटा, तू इसी तरह रोता रहा, तो शेर आ जाएगा। शेर ने सोचा कि उसका नाम सुनकर शायद बच्चा चुप हो जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। शेर को इस बात पर काफी अचरज हुआ उसने सोचा कि वह अब अंदर जाएगा और देखेगा कि यह बच्चा कौन है, जो शेर से भी नहीं डरता। इतने में मां को एक मीठी सुपारी मिल गई। उसने बेटे से कहा, बेटा, यह ले सुपारी। अब तो चुप हो जा।

इतना सुनते ही बच्चा बिलकुल चुप हो गया। शेर सुपारी के बारे में कुछ नहीं जानता था उसने सोचा कि जो बच्चा लोमड़ी, भालू और शेर के नाम से चुप नहीं हुआ, वह सुपारी के नाम से बिल्कुल चुप हो गया। शेर ने सोचा कि सुपारी जरूर कोई भयानक जीव है, जिससे इंसान काफी डरते हैं। अब उसे सुपारी नामक जीव को देखने की उत्सुकता थी।

तभी शेर की पीठ पर एक व्यक्ति कूदा। दरअसल वह एक चोर था, जो उस झोपड़ी में अनाज चुराने आया था और पेड़ पर छिपकर रात होने का इंतजार कर रहा था। शेर को देखकर वह डर गया और संतुलन बिगड़ने से गिर पड़ा।

अपने ऊपर वजन महसूस करते ही शेर ने सोचा कि जरूर सुपारी ने उस पर हमला कर दिया है। वह अपनी जान बचाकर वहां से भागा। उसकी पीठ पर चोर था, वो भी अपनी जान बचाने की जुगत में था। काफी दूर तक जाने के बाद

शेर अपनी गुफा के पास पहुंच गया। वहां उसने चोर को उतारा और कहा, सुपारी जी, मैं आपसे माफी मांगता हूं। आज से यह गुफा आपकी है और आप जंगल के राजा हैं। मैं दूसरे जंगल में जा रहा हूं। कृपया मुझे छोड़ दीजिए। चोर को यह माजरा समझ नहीं आया लेकिन शेर का शिकार नहीं बनने पर वह काफी खुश था।

९३४) सेठ कंजूस और सेठानी बहुत चटोरी - एक थे सेठ और एक थी सेठानी। सेठानी खाने-पीने की बहुत शौकीन और चटोरी थीं। सेठ बड़ा कंजूस था। जब सेठ घर में होते तो वह कम खाती और सेठ के बाहर जाते ही वह पकवान बनाकर खाया करती।

एक दिन सेठ के मन में शक पैदा हुआ। आखिर इतना सारा सामान मैं लाता हूं और यह इतनी जल्दी खत्म कैसे हो जाता है? उसने सोचा कहीं सेठानी तो नहीं खा जाती?

सेठ ने कहा, पांच-सात दिन के लिए मुझे दूसरे गांव जाना है। मेरे लिए खाना तैयार कर दो। सेठानी खुश हो गई। झटपट खाना तैयार कर सेठ को विदा किया।

सेठ सारा दिन अपने एक मित्र के घर रहे। शाम को जब सेठानी मंदिर गई तो सेठ चुपचाप घर में एक बड़ी कोठी में छिपकर बैठ गए। रात हुई। सेठानी की तो खुशी का पार न था। सेठानी ने सोचा- अच्छा ही हुआ। अब पांच दिन पकवान बनाकर मजे से खाती रहूंगी।

रात में अपने पास सोने के लिए सेठानी पड़ोस से अपनी देवरानी की लड़की को बुला लाई। लड़की का नाम था रानी। जल्दी भोजन करने के बाद दोनों सो गई। आंधी रात बीतने पर सेठानी जागी। उसने रानी से पूछा- रानी-रानी रात कितनी? रानी बोली, मां। अभी तो आधी रात हुई है।

सेठानी ने कहा, मुझको तो भूख लगी है। उधर उस कोने में गन्ने के सात टुकड़े पड़े है। उन्हें ले आओ। हम खा लें। बाद में दोनों ने जी भरकर गन्ने खाए और फिर से सो गई।

अंदर बैठे-बैठै सेठजी कोठी के छेद से सबकुछ देखते रहे। फिर दो बजे सेठानी जागी और उसने रानी से पूछा- रानी-रानी रात कितनी? रानी बोली, मां। अभी दूसरा पहर हुआ है।

सेठानी ने कहा- लेकिन मुझे तो बहुत जोर की भूख लगी है। तुम छह-सात मठरी बना लो। आराम से खा लेंगे।

कोठी में बैठै सेठ जी मन ही मन बड़बड़ाए, अरे यह तो कमाल की शैतान लगती है।

कुछ देर बाद रानी ने मठरी बनाई। दोनों ने मठरियां खाई और फिर सो गईं। इसी तरह सुबह तक दोनों खीर, हलुआ और कई तरह के पकवान खाती रहीं।

कोठी में बैठे सेठजी ने मन-ही-मन कहा उजाला होते ही मैं इसको सबक सिखाऊंगा। रानी अपने घर चली गई और सेठानी पानी भरने गई। इसी बीच सेठजी कोठी में से बाहर निकले और गांव में गए। थोड़ी देर बाद हाथ में गठरी लेकर घर लौटे। सेठ को देखकर सेठानी सहम गई। उसे लगा, सेठ सबकुछ जान गए है।

सेठानी ने पूछा- आप तो पांच सात दिन के लिए दूसरे गांव गए थे। फिर इतनी जल्दी क्यों लौट आए?

सेठ ने कहा- रास्ते में मुझे अपशकुन हुआ, इसलिए वापस आ गया।

कौन सा अपशकुन हुआ सेठानी ने पूछा? सेठ ने कहा- एक बड़ा-सा सांप रास्ता काटकर निकल गया। सेठानी ने कहा- हाय राम बताइए तो सांप कितना बड़ा था?

सेठ बोले- पूछती हो तो बताता हूं। वह तो गन्ने के सात टुकड़ों के बराबर था। उसका फन कितना बड़ा था सेठानी ने उत्सुकतापूर्वक पूछा? सेठ ने कहा- फन तो इतना बड़ा था, जितनी सात मठरियां होती हैं। सेठानी ने सेठ से फिर पूछा- क्या वह सांप उड़ता भी था? सेठ ने कहा- हां-हां जिस तरह तवे में खील उड़ती है, उसी तरह सांप भी उड़ रहा था। सेठानी को शक हो गया कि सचमुच सेठ सारी बातें जान चुके हैं। उसी दिन से सेठ ने अपनी कंजूसी छोड़ दी और सेठानी ने अपना चटोरा-पन छोड़ दिया।

९३५) ६० प्लस - कार से उतरकर भागते हुए हॉस्पिटल में पहुंचे नौजवान बिजनेस मैन ने पूछा- डॉक्टर, अब कैसी हैं मां? डॉक्टर ने कहा अब ठीक हैं। माइनर सा स्ट्रोक था। ये बुजुर्ग लोग उन्हें सही समय पर ले आए, वरना कुछ बुरा भी हो सकता था। डॉक्टर ने पीछे बेंच पर बैठै दो बुजुर्गों की तरफ इशारा करके जवाब दिया। रिसेप्शन से फॉर्म इत्यादि की फॉर्मेलिटी करनी है अब आपको। थैंक यू डॉक्टर वो सब काम मेरी सेक्रेटरी कर रही हैं। अब वो रिलैक्स था। फिर वो उन बुजुर्गों की तरफ मुड़ा। थैंक्स अंकल, पर मैंने आप दोनों को नहीं पहचाना।

एक बुजुर्ग बोला, सही कह रहे हो बेटा, तुम नहीं पहचानोगे क्योंकि हम तुम्हारी मां के वाट्सअप फ्रेंड हैं। नौजवान बिजनेस मैन ने कहा- क्या वाट्सअप फ्रेंड? चिंता छोड़, उसे अब अचानक से अपनी मां पर गुस्सा आया। बुजुर्ग ने कहा- ६० प्लस नाम का वाट्सअप ग्रुप है हमारा। सिक्स्टी प्लस नाम के इस ग्रुप में ६० साल व इससे ज्यादा उम्र के लोग जुड़े हैं। इससे जुड़े हर मेम्बर को उसमें रोज एक मेसेज भेज कर अपनी उपस्थिति दर्ज करानी अनिवार्य होती है, साथ ही अपने आसपास के बुजुर्गों को इसमें जोड़ने की भी जिम्मेदारी दी जाती है। महीने में एक दिन हम सब किसी पार्क में मिलने का प्रोग्राम बनाते हैं। जिस किसी दिन कोई भी मेम्बर मैसेज नहीं भेजता है तो उसी दिन उससे लिंक लोगों द्वारा, उसके घर पर, उसके हालचाल का पता लगाया जाता है। आज सुबह तुम्हारी मां का मैसेज न आने पर हम दो लोग उनके घर पहुंच गए। नौजवान गम्भीरता से सुन रहा था। पर मां ने तो कभी नहीं बताया। नौजवान ने धीरे से कहा। मां से अंतिम बार तुमने कब बात की थी बेटा? क्या तुम्हें याद है? एक बुजुर्ग ने पूछा। बिजनेस में उलझा, ३० मिनट की दूरी पर बने मां के घर जाने का समय निकालना कितना मुश्किल बना लिया था खुद उसने। हां, पिछली दीपावली को ही तो मिला था वह उनसे गिफ्ट देने के नाम पर। बुजुर्ग बोले, बेटा तुम सबकी दी हुई सुख-सुविधाओं के बीच, अब कोई और मां या बाप अकेले घर में कंकाल न बन जाएं। बस यही सोचकर ये ग्रुप बनाया है हमने। वरना दीवारों से बात करने की तो हम सब की आदत पड़ चुकी है। उसके सिर पर हाथ फेर कर दोनों बुजुर्ग अस्पताल से बाहर की ओर निकल पड़े। नवयुवक एकटक उनको जाते हुए देखता ही रह गया।

९३६) ईश्वर बहुत दयालु है - एक राजा का एक विशाल फलों का बगीचा था, उसमें तरह-तरह के फल होते थे और उस बाग की सारी देखरेख एक किसान अपने परिवार के साथ करता था। वह किसान हर दिन बगीचे के ताजे फल लेकर राजा के राजमहल में जाता था। एक दिन किसान ने पेड़ों पे देखा नारियल अमरूद, अनार और अंगूर पककर तैयार हैं।

किसान सोचने लगा आज कौन सा फल महाराज को अर्पित करूं, फिर उसे लगा अंगूर करने चाहिये क्योंकि वो तैयार हैं इसलिए उसने अंगूरों की टोकरी भर ली और राजा को देने चल पड़ा।

किसान राजमहल में पहुंचा, राजा किसी दूसरे ख्याल में खोया हुआ था और नाराज भी लग रहा था किसान ने रोज की तरह मीठे रसीले अंगूरों की टोकरी राजा के सामने रख दी और थोड़ी दूर बैठ गया, अब राजा उसी ख्यालों ख्यालों में टोकरी में से अंगूर उठाता एक खाता और एक खींच कर किसान के माथे पर निशाना साधकर फेंक देता।

राजा का अंगूर जब भी किसान के माथे या शरीर पर लगता था तो किसान कहता था, ईश्वर बड़ा दयालु है। राजा फिर और जोर से अंगूर फेंकता था किसान फिर वही कहता था ईश्वर बड़ा दयालु है। थोड़ी देर बाद राजा को एहसास हुआ की वो क्या कर रहा है और प्रत्युत्तर क्या आ रहा है वो संभलकर बैठा, उसने किसान से कहा, मैं तुम्हें बार बार अंगूर मार रहा हूं और फिर भी तुम बार बार क्यों कह रहे हो की ईश्वर बड़ा दयालु है।

किसान नम्रता से बोला, महाराज बागान में आज नारियल, अनार और अमरूद भी तैयार थे पर मुझे भान हुआ क्यों न आज आपके लिए अंगूर ले चलूं। लाने को मैं अमरूद और अनार भी ला सकता था पर मैं अंगूर लाया। यदि अंगूर की जगह नारियल, अनार या बड़े बड़े अमरूद रखे होते तो आज मेरा हाल क्या होता? इसीलिए मैं कह रहा हूं कि ईश्वर बड़ा दयालु है। इसी प्रकार ईश्वर भी हमारी कई मुसीबतों को बहुत हल्का करके हमें उबार लेता है पर हम लोग ईश्वर को ही सारा दोष दे देते हैं। आज हमारे पास जो कुछ भी है अगर वास्तविकता के धरातल पर खड़े होकर देखेंगे तो वास्तव में हम इसके लायक भी नहीं है।

९३७) भरोसे की चोरी - एक नगर में ज्ञानजी नामक सेठ रहता था। ज्ञानजी बड़े ही सज्जन स्वभाव का था। आभूषणों की उसकी दुकान पर लोगों को बड़ा भरोसा था। ज्ञानजी कभी अमानत में खयानत नहीं करता और सौ टका शुद्ध माल देता। भगवान की दया से घर में खूब बरकत थी। बस एक ही संताप था जो ज्ञानजी को खाए जाता था। उसका इकलौता पुत्र मोहन बुरी संगत में फंस गया था। पुत्र के भविष्य की चिंता ज्ञानजी के मन को घुन की तरह खाती रहती। ज्ञानजी ने लाख समझया लेकिन मोहन का मन अपने मित्र को गलत मानता ही नहीं था।

एक दिन की बात, ज्ञानजी ने मोहन को बुलाया और कहां बेटा मेरे पास एक बक्सा है, उसमें सोने की ईंटें हैं, मैंने इसलिए संभाल कर रख रखी हैं ताकि आड़े समय में काम आएं। अगर तुम्हें अपने मित्र पर भरोसा है तो तुम यह बक्सा उसे संभला दो ताकि हम सही समय आने पर उससे यह वापस ले सकें। मोहन ने बड़ी खुशी के साथ ज्ञानजी की यह इच्छा पूरी की साथ ही अपने मित्र से कहा कि पिताजी ने कहा है, इस बक्से को खोलना नहीं, हमारे बुरे वक्त में यही धन हमारे काम आएगा। अभी कुछ दिन ही बीते थे कि मोहन भुनभुनाते हुए दुकान पर आया और बोला, पिताजी आपने मेरे मित्र का अपमान किया है, उस बक्से में तो पत्थर भरे हुए थे। बुरे समय में यही पत्थर हम सिर पर खाएंगे, इसलिए आपने बक्से में यह रख छोड़े थे क्या? ज्ञानजी ने मुस्कुराते हुए कहां, बुरी संगत ने पत्थर तो तुम्हारी अकल पर डाल दिए हैं बेटा, तनिक भी नहीं सोचा कि तुम्हारे मित्र को कैसे पता चला कि उसमें पत्थर थे? इसका मतलब यही है कि उसने पेटी का ताला तोड़ा और तुम्हारे भरोसे की चोरी कर ली। मोहन की जैसे अकल जगी। क्षण

भर में ही समझ आ गई कि विश्वासघाती मित्र से दूरी ही भली।

९३८) हाथी की रस्सी और नाकामियों का बोझ - एक बार एक व्यक्ति अपनी ही धुन में कहीं चला जा रहा था। तभी उसकी नजर एक विशाल हाथी पर पड़ी, जिसे महावत ने एक पतली रस्सी से बांध रखा था। उत्सुकतावश वह व्यक्ति महावत के पास गया। उस व्यक्ति ने पूछा, यह हाथी अपनी जगह से इधर-उधर क्यों नहीं भागता या रस्सी क्यों नहीं तोड़ता है? महावत ने जवाब दिया, जब यह हाथी छोटा था तब भी हम इसी रस्सी से इसे बांधते थे। जब यह छोटा था, तो बार-बार इस रस्सी को तोड़ने की कोशिश करता था पर कभी तोड़ ही नहीं पाया। कारण तब उसमें इतनी शक्ति नहीं थी। मगर, बार बार रस्सी तोड़ने की नाकाम कोशिश करने के कारण हाथी को यह विश्वास हो गया कि रस्सी को तोड़ना असंभव है। आज बड़ा हो जाने और काफी शक्तिशाली हो जाने के बाद भी उसके मन में यह बात जम गई है कि वह रस्सी को नहीं तोड़ पाएगा। यही सोचकर वह रस्सी को तोड़ने की अब कोशिश भी नहीं करता है। उस हाथी की तरह हममें से भी कई लोग ऐसे हैं, जो अपने जिंदगी में कई नाकामियों के बाद हार मानकर बैठ जाते हैं। कोशिश करना छोड़ देते हैं। मगर, सफलता उन्हें ही मिलती है, जो बार-बार प्रयास करते रहते हैं।

९३९) विग्रह रूप में साक्षात रहते हैं भगवान - संत पुंडलिक माता-पिता के परम भक्त थे। एक दिन वे अपने माता-पिता के पैर दबा रहे थे कि श्रीकृष्ण रुक्मिणी के साथ वहां प्रकट हो गए। वे पैर दबाने में इतने लीन थे कि अपने इष्टदेव की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया। तब प्रभु ने उन्हें स्नेह से पुकार कर कहा, पुंडलिक, हम तुम्हारा आतिथ्य ग्रहण करने आए हैं। पुंडलिक ने जब उस तरफ देखा, तो भगवान के दर्शन हुए। उन्होंने कहा कि मेरे पिताजी शयन कर रहे हैं, इसलिए आप इस ईंट पर खड़े होकर प्रतीक्षा कीजिए और वे पुन: पैर दबाने में लीन हो गए। भगवान पुंडलिक की सेवा और शुद्ध भाव देखकर प्रसन्न हो गए और कमर पर दोनों हाथ धरकर और पैरों को जोड़कर ईंटों पर खड़े हो गए। कुछ देर बाद पुंडलिक ने फिर भगवान से कह दिया कि आप इसी मुद्रा में थोड़ी देर और इंतजार करें। भगवान को पुंडलिक द्वारा दिए गए स्थान से भी बहुत प्रेम हो गया। उनकी कृपा से पुंडलिक को अपने माता-पिता के साथ ही ईश्वर से साक्षात्कार हो गया। ईंट पर खड़े होने के कारण श्रीविट्ठल के विग्रह रूप में भगवान आज भी धरती पर विराजमान हैं। यही स्थान पुंडलिकपुर या अपभ्रंश रूप में पंढरपुर कहलाया।

९४०) ईश्वर दिखते नहीं हैं - एक गांव में एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला रहती थी। वह हर रोज सुबह-सुबह अपने घर से निकलती और जोर-जोर से चिल्ला कर भगवान के नाम के जयकारे लगाती। उसकी इस हरकत से उसका पड़ोसी, जो कि पूरी तरह से नास्तिक था, बहुत चिढ़ता था। जैसे ही महिला जयकारा लगाती, वह भी बाहर निकल कर उससे कहता- क्यों गला फाड़ रही है, दुनिया में कोई भगवान नहीं है। लेकिन महिला उसकी बात को अनसुना कर देती और जयकारा लगाना जारी रखती। एक दिन महिला के घर में खाने को कुछ भी नहीं था, तो वह बाहर आकर चिल्लाने लगी- भगवान तेरी जय हो आज मेरे लिए खाना भेज देना तब तक मैं मंदिर होकर आती हूं। पड़ोसी ने यह सब सुना तो मजे लेने के लिए वह फौरन दुकान पर गया और खाने की सामग्री लेकर महिला के घर के बरामदे में छोड़ गया। महिला मंदिर से लौटकर आई तो खाना देखकर प्रसन्नता से चिल्लाई- भगवान तेरी जय हो खाना भेजने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

पड़ोसी ने सुना तो वह फौरन बाहर आकर बोला- अरे मूर्ख, यह सब तेरा भगवान नहीं लाया। मैं लाया हूं अपने पैसे से। पड़ोसी की बात सुनकर महिला दुगुने जोश से चिल्लाई- भगवान तेरी हजार बार जय हो। मुझे खाना भेजने के लिए और उसका भुगतान इस कमबख्त नास्तिक की जेब से।

९४१) कला का पारखी - जुम्मन मियां की बाजार की एक गली में छोटी सी मगर बहुत पुरानी कपड़े सीने की दूकान थी। उनकी इकलौती सिलाई मशीन के बगल में एक बिल्ली बैठी एक पुराने गंदे कटोरे में दूध पी रही थी। एक बहुत बड़ा कला पारखी जुम्मन मियां की दुकान के सामने से गुजरा। कला पारखी होने के कारण जान गया कि कटोरा एक एंटीक आइटम है और कला के बाजार में बढ़िया कीमत में बिकेगा। लेकिन वह ये नहीं चाहता था कि जुम्मन मियां को इस बात का पता लगे कि उनके पास मौजूद वह गंदा सा पुराना कठोरा इतना कीमती है। उसने दिमाग लगाया और जुम्मन मियां से बोला- बड़े मियां, आबाद, आपकी बिल्ली बहुत प्यारी है, मुझे पसंद आ गई है। क्या आप बिल्ली मुझे देंगे? चाहे तो कीमत ले लीजिए। जुम्मन मियां ने पहले तो इनकार किया मगर जब कला पारखी कीमत बढ़ाते-बढ़ाते १०००० रुपयों तक पहुंच गया तो जुम्मन मियां बिल्ली बेचने को राजी हो गए और दाम चुकाकर कला पारखी बिल्ली लेकर जाने लगा। अचानक वह रुका और पलटकर जुम्मन मियां से बोला- बड़े मियां बिल्ली तो आपने बेच दी। अब इस पुराने कटोरे का आप क्या करोगे? इसे भी मुझे ही दे दीजिए। बिल्ली को दूध पिलाने के काम आएगा। चाहे तो इसके भी १००-५० रुपए ले लीजिए। जुम्मन मियां ने बड़े प्यार से कटोरे को सहलाते हुए जवाब दिया, नहीं साहब, कटोरा तो मैं किसी कीमत पर नहीं बेचूंगा, क्योंकि इसी कटोरे की वजह से आज तक मैं ५० बिल्लियां बेच चुका हूं।

९४२) सबसे शक्तिशाली इंसान - एक दिन एक कम्पनी में उच्च पर आसीन बेटे से मिलने उसके वृद्ध पिता पहुंचे। पिता ने देखा उनका बेटा एक शानदार दफ्तर का अधिकारी बना हुआ है। उसके दफ्तर में सैकड़ों कर्मचारी उसके अधीन कार्य कर रहे हैं। ये सब देखकर पिता का सीना गर्व से फूल गया। उन्होंने बेटे के चेंबर में प्रवेश किया और बेटे के कंधे पर हाथ रख पूछा, बेटा इस दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान कौन है? बेटे ने पिता को बड़े प्यार से हंसते हुए कहा, मेरे अलावा कौन हो सकता है पिताजी। पिता को इस जवाब की आशा नहीं थी, उसे विश्वास था कि उसका बेटा गर्व से कहेगा कि पिताजी इस दुनिया के सबसे शक्तिशाली इंसान आप है, जिन्होंने मुझे इतना योग्य बनाया। पिता की आँखें छलक गईं। वो चेंबर का गेट खोलकर बाहर निकलने लगे। लेकिन फिर एक बार पीछे मुड़े और पुन: बेटे से पूछा, बेटा एक बार फिर बताओ इस दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान कौन है बेटे ने कहा, आप पिताजी, इस दुनिया के सबसे शक्तिशाली इंसान आप हैं। पिता सुनकर आश्चर्यचकित हो गए उन्होंने कहा, अभी तो तुम अपने आपको इस दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान बता रहे थे और अब मुझे बता रहे हो। बेटा मुस्कुराया और पिता को अपनी कुर्सी पर बैठाते हुए कहा, पिताजी उस समय आपका हाथ मेरे कंधे पर था, जिस पुत्र के कंधे पर या सिर पर पिता का हाथ हो वो पुत्र तो दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान ही होगा न, बोलिए पिताजी। पिता की आँखें भर आई उन्होंने अपने पुत्र को कसकर के अपने गले लगा लिया।

९४३) नीलम का हार - एक जौहरी के निधन के बाद उसका परिवार संकट में पड़ गया। खाने के भी लाले पड़ गए।

एक दिन उसकी पत्नी ने अपने बेटे को नीलम का एक हार देकर कहा- बेटा, इसे अपने चाचा की दुकान पर ले जाओ, कहना इसे बेचकर कुछ रुपये दे दें। बेटा वह हार लेकर चाचा के पास गया। चाचा ने हार को अच्छी तरह से देख-परखकर कहा- बेटा, मां से कहना कि अभी बाजार बहुत मंदा है, थोड़ा रुककर बेचना, अच्छे दाम मिलेंगे। चाचा ने बच्चे को थोड़े रुपये देकर कहा, तुम कल से दुकान पर आकर बैठना। अगले दिन से वह लड़का रोज दुकान पर जाने लगा और वहां हीरों रत्नों की परख का काम सीखने लगा। एक दिन वह बड़ पारखी बन गया। लोग दूर-दूर से अपने हीरे की परख कराने आने लगे। एक दिन उसके चाचा ने कहा, बेटा अपनी मां से वह हार लेकर आना और कहना कि अब बाजार बहुत तेज है, उसके अच्छे दाम मिल जाएंगे। बेटे ने मां से नीलम का हार लेकर उसे परखा तो पाया कि वह तो नकली है। वह उसे घर पर ही छोड़कर दुकान लौट आया। वह तो नकली है तब चाचा ने कहा- मुझे पता था। जब तुम पहली बार हार लेकर आए थे, तब मैं उसे नकली बता देता तो तुम्हारी मां सोचती कि किस्मत ही खराब है। लेकिन उस एक हार ने ही तुम लोगों में आत्मविश्वास जगाए रखा और आज तुम खुद अपने परिवार का संबल बनने लायक हो गए।

९४४) गधे को मंत्री बनाने की प्रथा - एक राजा ने अपने जीजा की सिफारिश पर एक आदमी को मौसम विभाग का मंत्री बना दिया- एक बार राजा ने शिकार पर जाने से पहले उस मंत्री से मौसम की भविष्यवाणी पूछी- मंत्री बोले, जरूर जाइए, मौसम कई दिनों तक बहुत अच्छा है। राजा थोड़ी दूर गया था कि रास्ते में कुम्हार मिला। वो बोला, महाराज, तेज बारिश आनेवाली है कहाँ जा रहे हैं? अब मंत्री के मुकाबले कुम्हार की बात क्या मानी जाती, राजा ने उसे वहीं चार डंडे मारने की सजा सुनाई और आगे बढ़ गया। वही हुआ, थोड़ी देर बाद तेज आंधी के साथ बारिश आई और जंगल दल-दल बन गया। राजा जैसे-तैसे महल में वापस आए, पहले तो उस मंत्री को बर्खास्त किया। फिर उस कुम्हार को बुलाया, इनाम दिया और मौसम विभाग के मंत्रिपद की पेशकश की- कुम्हार बोला, हुजूर मैं क्या जानूं मौसम-वौसम क्या होता है, वो तो जब मेरे गधे के कान ढीले होकर नीचे लटक जाते हैं तब मैं समझ जाता हूं वर्षा होने वाली है। मेरा गधा कभी गलत साबित नहीं हुआ। राजा ने तुरंत कुम्हार को छोड़कर उसके गधे को मंत्री बना दिया।

९४५) जब रखोगे तभी तो उठाओगे - धनीराम बैठै-ठाले ठगी का काम करता। उसने जान पहचान वालों से उधार लेना शुरू कर दिया। जब लोग पैसे वापस मांगते तो तरह-तरह के बहाने बना देता। एक दिन वह एक साधु प्रवृत्ति के व्यक्ति के पास गया और कहने लगा, घर में तंगी आ गई है, यदि कुछ रुपये उधार दे दे तो हालत संभल जाएगी। वह व्यक्ति बात करते हुए उठा और सामने आले में ५० रुपये रख आया। धनीराम चलने के लिए खड़ा हुआ तो उस व्यक्ति ने आले की ओर इशारा करते हुए कहा- सामने आले में ५० रुपये रखे हुए हैं, ले जाओ, जब हो जाए इसी में रख जाना। उसने आले में से रुपये उठाये और चला गया। इसी प्रकार ठगी से वह अपनी नैया खेता रहा। किसी ने दोबारा दे दिया, किसी ने नहीं दिया। ३ साल बाद उसे साधु प्रवृत्ति वाले व्यक्ति की याद आई। सोचा अब तो वह भूल गया होगा, उसी के पास चलते हैं। धनीराम उनके पास गया और कहने लगा- बच्चे भूखे हैं, काम भी नहीं मिल रहा है, कुछ पैसे उधार दे देते तो काम चल जाता। ले जाओ उसमें से। आले की ओर इशारा करते हुए उस व्यक्ति ने कहा। वह खुश होता हुआ उठा कि यह वास्तव में पिछले पैसे भूल गया है, उसने आले में हाथ डाला तो कुछ

नहीं मिला। धनीराम ने उस व्यक्ति की ओर देखते हुए कहा- इसमें तो कुछ नहीं है। इतना सुनकर वह बोला- जो तुम पैसे पहले ले गए थे क्या रखकर नहीं गए थे? उसके मुंह से कोई उत्तर नहीं निकला। उस साधु प्रवृत्ति वाले व्यक्ति ने सहज रूप से कहा- तब फिर कहां से मिलेंगे जब रखोगे तभी तो उठाओगे।

९४६) अपने काम को कम मत आंको - एक कुम्हार के परिवार में आठ लोग थे। घर संभालने के लिए बड़ा लड़का मिट्टी के बर्तन बनाने में अपने पिता की मदद करता था। अचानक एक दिन उसके पिता की मौत हो गई। अब परिवार की सारी जिम्मेदारी उस लड़के पर ही आ गई। हालांकि वह मिट्टी के बर्तन बनाने में पिता की मदद बहुत समय पहले से ही करता आ रहा था, लेकिन फिर भी वह इस कला में पारंगत नहीं हो पाया था। पिता की अनुपस्थिति में उसे घड़े बनाने का काम अकेले ही करना पड़ रहा था। अपने काम को लेकर उसके मन में संशय रहने लगा कि उसके बनाए घड़े ठीक बने भी हैं या नहीं? इन घड़ों का कोई खरीददार मिलेगा या नहीं? अपने बनाए घड़ों को लेकर वह लड़का दुकान पर इसी उहापोह के बीच शाम तक बैठा रहा। उस दिन शाम तक उसका एक भी घड़ा नहीं बिका। उसके पिता का दोस्त जो कि पास में ही फल का ठेला लगता था, लड़के की मनोदशा समझ रहा था। फलवाले ने बच्चे से घड़े का मूल्य पूछा। बच्चे ने घड़े का मूल्य ५० रुपये बताया। ये मूल्य सुनकर फलवाले ने उससे मोलभाव करने का इरादा बनाया। फलवाले ने मोलभाव करते हुए उससे दाम कुछ कम करने को कहा। कुछ सोचने के बाद लड़का ३० रुपये में घड़ा देने को राजी हो गया। फलवाले ने फिर मोलभाव करते हुए कहा कि इस घड़े के इतने दाम तो ज्यादा हैं, तुम्हें इसके दाम कुछ और कम करने चाहिए। इस पर लड़के ने कुछ देर सोचने के बाद पहले २० फिर १० में हां कर दी। लड़का सोच रहा था कम से कम एक मटका तो आज बिक जाए। पर फलवाले ने उस घड़े के पूरे ५० रुपये देते हुए लड़के से कहा, मैं तुम्हारे पिता का मित्र हूं, इसलिए समझा रहा हूं कि कभी भी अपने काम को कम मत आंको।

९४७) टच थेरेपी - टेम्पो में सिर्फ एक व्यक्ति बैठा था। जगह भर जाने की आशंका एवं जल्द घर पहुंचने के लोभ में वे तुरंत बैठ गईं। अपने पास बिटिया को बैठाया, तब तक पतिदेव भी कुली को पैसे देकर आ गए। वे सबसे कोने में बैठ गए। सफर की थकान से थक कर चूर-चूर हो रही थीं। फिर भी एकदम सहज-शांत बैठी थीं वे। दरअसल उन्हें अब तक सज्जन ही मिले थे... तो अभद्रता की कल्पना ही नहीं थी। भीड़भाड़ की वजह से हो जाती है ऐसी गलतफहमी। लेकिन टेम्पो स्टार्ट होते ही वे समझ गईं, गलत जगह बैठ गई हैं वे। जितना ज्यादा वे सिमटती जा रही थीं, पास बैठा अधेड़ व्यक्ति उतना ही ज्यादा फैलता जा रहा था। उन्हें क्या... किसी भी स्त्री को बुरी नीयत भांपते देर नहीं लगती है। वे भी भांप गई और ज्यों ही अगले स्टॉप पर टेम्पो रुका। उन्होंने बिटिया और पति को भी उतरने को एवं खुद कोने में बैठ गईं। अब भी एकदम सहज शांत बैठी थीं वे। किंतु बैठक व्यवस्था परिवर्तित होते ही उस व्यक्ति की मुखमुद्रा भी परिवर्तित हो गई। इतनी देर से उनका अपमान कर वह प्रसन्न था, पर अपनी अनैतिकता पकड़े जाने के अपमान से वह तिलमिला उठा। बड़बड़ाने लगा- मेरे बैठने से ज्यादा ही तकलीफ हो रही है साब। तो हुकूम करो उतर जाऊं? वे चुप और अन्य पैसेंजर भी चुप तो उस खडूस की हिम्मत बढ़ गई। नेपथ्य में देख पुन: बोला- इतना ही मिजाज है तो खुद की गाड़ी में चलो ना। सुनते ही सामने बैठी एक अन्य महिला लगभग चिल्ला पड़ीं -चोप्प... डिफेक्टिव पीस..

अभी गाल पर ऐसा झापड़ रसीद करूंगी कि भूल जाएगा सारी टच थेरेपी लेना। महिला की दहाड़ सुनते ही वह गंदा आदमी ही नहीं, टेम्पो में बैठे अच्छे आदमी तक संभलकर बैठ गए।

९४८) जीवन के पन्नों पर - एक पंडित थे, बड़े स्वाध्यायी। शास्त्रार्थ करने के लिए उन्होंने कई ग्रंथों से सामग्री उतार ली और शास्त्रार्थों में उनकी धाक जम गई। ऐसे ही एक दिन उन्हें कुछ चोरों ने मार्ग में घेर लिया। पंडितजी के पास जितनी भी सामग्री थी, सब दे दी, परंतु वह कागजों का पुलिंदा अपने हाथ में उठाए रखा। जब एक डाकू ने वह भी लेना चाहा, तब अनुनय करते हुए बोले- इन कागजों से शास्त्रार्थ करने में मुझे बहुत सहायता मिलती है, इनमें मैंने धर्म लिख रखा है। डाकुओं का सरदार इस पर बोला- अरे पंडित, धर्म तो जीवन में उतारने की चीज है। कागज में लिख रखने की चीज थोड़ी है। तुमने सारा समय यों ही गंवा दिया। उसने कागज लौटाते हुए कहा। पंडितजी सलज्ज भाव से बोले- यह पहला शास्त्रार्थ है, जिसमें मैं पराजित हुआ हूं। अब से मैं धर्म को जीवन के पन्नों पर लिखूंगा।

९४९) तस्वीर की बात - एक बार मुझे उनके कक्ष में जाने का सुअवसर मिला। वे प्रत्येक संत का चित्र बताते हुए उनका परिचय देते जा रहे थे। किस उम्र में साधु बने? कितने वर्ष तपस्या की? कौनसा मठ बनवाया? साथ ही उनके लौकिक-आलौकिक किस्से भी बताए। एक मुख्य बात, उक्त संत ने कहाँ? कब कैसा चमत्कार किया? यह बताना वे कभी नहीं भूलते। उनकी संतों में गहरी श्रद्धा थी। थोड़ा-बहुत भी समय मिलता तो सत्संग में अवश्य जाते। जीवन के गूढ़ प्रश्न संतों से पूछते। जिन संतों से वे जीवन में प्रभावित रहे, उन संतों के चित्र अपने कक्ष में लगाते। उनके कक्ष की दीवारें साधु-संतों की तस्वीरों से पटी रहती थीं। जो भी उनसे मिलने जाता वे उन्हें अपना वह कक्ष दिखाना नहीं भूलते। लोग उनकी सराहना करते नहीं अघाते। सारे चित्रों को देखकर वे मेरी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में थे। मेरे मुख से प्रशंसा के भाव सुनने को आतुर थे। मैंने कहा, आपके इन संत संग्रह में सब कुछ ठीक है, पर एक बात की कमी है। वे चौंके, क्या कमी हे? दास उस कमी को पूरा करने का प्रयत्न करेगा। मैंने धीमे स्वर में कहा, इस संपूर्ण कक्ष में आपके पिताजी की तस्वीर नहीं है।

९५०) काम के आदमी - एक समय था जब वर्माजी अपनी मिलनसारिता हेतु कॉलोनी में पहचाने जाते थे। किसी के यहाँ शादी-ब्याह हो या कोई अन्य मंगल प्रसंग, सार्वजनिक गणेशोत्सव हो या कोई अन्य गतिविधि, वर्माजी वहाँ अवश्य दिखाई देते। गाहे-बगाहे हमारे घर भी आ जाते। हम भी जब कभी उनके घर जाते वे बड़ी आत्मीयता से पेश आते। रास्ते में जब भी मिलते, कुछ समय के लिए रुककर बात अवश्य करते। यदि आप दूर हों या जल्दी में हों, तो आवाज लगाते, मुस्कुरा देते और हाथ हिला देते। आते-जाते कॉलोनी की सड़कों पर खेलते बच्चों से भी बतियाते या उनके साथ हँसी-मजाक कर लेते। ऐसे ही किसी छुट्टी के दिन, सुबह वर्माजी घर आए, जैसे कि आते ही रहते थे। हमें कुछ अचरज न लगा। थोड़ी गपशप की और फिर काम की बात पर आ गए, भाई साहब, फलाँ-फलाँ कंपनी का मैं मेंबर बन गया हूं। १००० रुपए देने पर हमें १४०० रुपए की रोजमर्रा की चीजें मिलती हैं। फिर वर्माजी ने अगले एक घंटे तक सेमिनारों और वर्कशॉपों में सिखी-सिखाई, रटी-रटाई स्टाइल और भाषा में लेक्चर पिलाना शुरू किया। मैं किसी आज्ञाकारी बच्चे की तरह बड़ी ही तन्मयता और एकाग्रता से उनका वह ज्ञान पीता रहा। वर्माजी के रटे-रटाए लेक्चर

को जब फूल स्टॉप लग गया तो मैंने उन्हें कहा- वर्माजी, ऐसे अपनों को ही मेंबर बनाकर पैसा कमाने में न तो मुझे रुचि है और न नही मेरी पत्नी को। फिर मैंने इधर-उधर की बातें कीं। खैर... थोड़ी देर बाद वर्माजी मेरे घर से उठकर चले गए। अब कभी भी रास्ते में मिलते हैं, मुंह फेर लेते हैं।

९५१) बुराई और भलाई - उभरती बुराई ने दबती सी अच्छाई से कहा, कुछ भी हो, लाख मतभेद हों, लेकिन हो तो तुम मेरी सहेली। मुझे अपने सामने तुम्हारा दबना अच्छा नहीं लगता। आओ, अलग खड़ी न हो, मुझमें मिल जाओ, मैं तुम्हें भी अपने साथ बढ़ा लूंगी, समाज में फैला लूंगी। अच्छाई ने शांति से उत्तर दिया, तुम्हारी हमदर्दी के लिए धन्यवाद, पर रहना मुझे तुमसे अलग ही है। क्यों? आश्चर्यभरी अप्रसन्नता से बुराई ने पूछा। बात यह है कि मै। तुमसे मिल जाऊं तो फिर मैं कहां रहूंगी, तब तो तुम ही तुम होगी सब जगह। अच्छाई ने और भी शान्त होकर उत्तर दिया और आगे कहा जानती हूं अपने अस्तित्व को बचाकर मुझे व्यक्तित्व की ओर बढ़ने में पूरा संघर्ष करना पड़ेगा, पर तुम यह न भूलना कि कांटे-कांटे के बीच से गुजर कर जब मैं आगे जाऊंगी तो यह जानना भी कठिन होगा कि तुम हो कहाँ। व्यंग्य की शेखी से इठलाकर बुराई ने कहा, दिल के बहलाने को यह ख्याल अच्छा है। जिस पर गहरे सन्तुलन में अपने को समेटकर अच्छाई ने कहा, तुम हंसना चाहो, तो जरूर हंसो, मुझे आपत्ति नहीं, पर जीवन के इस सत्य को हंसी से झुठलाया नहीं जा सकता कि तुम्हारे फैलाव की भी एक सीमा है; क्योंकि उस सीमा तक तुम्हारे पहुंचते-न-पहुंचते तुम्हारे सहायकों और अंगरक्षकों का ही दम घुटने लगता है। इसके विरुद्ध मेरे फैलाव की कोई सीमा ही प्रकृति ने नहीं बाँधी, बुराई बहन। बुराई गंभीर हो गई और उसे लगा कि उसके काँटों की शक्ति आप-ही-आप पहले से कम होती जा रही है और अच्छाई का अंकुर तेजी से बढ़ रहा है।

९५२) धैर्य नहीं खोना - नाथानिएल हौथोर्न अंग्रेजी के लेखक थे। एक दिन उन्हें कस्टम हाउस की नौकरी से निकाल दिया गया। जब वह घर पहुंचे तो पत्नी से बोले, आज मुझे नौकरी से निकाल दिया गया है। उनकी पत्नी सोफिया यह सुनकर कुछ परेशान हुई और फिर मुस्कुराकर बोलीं, नाकामयाबी में धैर्य से काम करते रहना है। इतने हताश और उदास मत हो। अगर आपका यह रास्ता बंद हुआ है तो इसके साथ ही एक ऐसा रास्ता खुला है जो आपको भविष्य में सबके सामने प्रसिद्ध कर देगा। नाथानिएल हैरानी से बोले, भला मेरी नौकरी छूटने से क्या अच्छा होगा? तब उनकी पत्नी बोलीं, आप बहुत अच्छा लिखते हैं। लेकिन नौकरी के कारण आप लेखन को पूरा समय नहीं दे पा रहे थे। अब समय ही समय है। आप लिखिए, सफलता अवश्य मिलेगी। पत्नी की बात सुनकर नाथानिएल बोले, लेकिन तब तक घर का खर्च कैसे चलाऊंगा। इसके बाद नाथानिएल लेखन में जुट गए और सोफिया ने घर संभाल लिया। दिन बीतते गए और एक साल बाद उन्होंने विक्टोरिया युग का महान उपन्यास द स्कारलेट लैटर लिखा, जिसने नाथानिएल हौथोर्न को नई पहचान दी। आज भी उन्हें इसी उपन्यास से पहचाना जाता है।

हुनर सभी में होता है। बस जरूरत है, सही समय पर अपने हुनर को तराशते हुए, उससे एक सुंदर रचना करने की। यह हुनर किसी भी विषय में हो सकता है।

९५३) अपने का दर्द - मोहन और चंदर दो पड़ोसी थे। दोनों के घर के सामने एक आम का पौधा वर्षों से लगातार बड़ा हो रहा था। वह पेड़ बना तो गर्मी आते ही उस पर आम भी आ गए। रसीले फलों ने पड़ोसियों में दरार डाल दी। दोनों पेड़

पर अपना-अपना दावा जताते हुए झगड़ने लगे। दोनों कह रहे थे कि इस पेड़ को उन्होंने लगाया और पाला-पोसा है। झगड़ा बढ़ा तो राजा के पास पहुंच गया। पूरी बात सुनने के बाद राजा ने कहा- पेड़ को काट कर बेच दिया जाए। यह सुनते ही मोहन बोला- आप पेड़ को ना कटवाएं, सारे फल चंदर को दे दें। राजा ने फैसला सुनाया- पेड़ को पालने पोसनेवाला उसे कटते हुए नहीं देख सकता। पेड़ मोहन का ही है और फलों पर उसका ही हक है।

९५४) सबसे बड़ा आश्रम - एक राजा को एक ऐसे गुरू की तलाश थी, जिसका आश्रम सबसे बड़ा हो। धीरे-धीरे यह बात पूरे देश में फैल गई। फिर क्या था। राजगुरू का पद पाने के लिए संतों में होड़ लग गई। वे अपना अपना आश्रम बढ़ाने के लिए सहायता हेतु राजा के पास पहुंचे। राजा ने पाँच विद्वानों को चुना और कहा कि वे जो भी आवश्यक वस्तुएँ चाहते हैं, नि:संकोच मंत्री से प्राप्त करें। उनमें से चार तो जमीन तथा आवश्यक सामग्री ले आश्रम बनवाने में जुट गए, पर एक साधु चुपचाप एक वृक्ष की छाया में जा बैठा। राजा ने उसे देखा तो पास आकर पूछा, महाराज, क्या आपको आश्रम नहीं बनाना है? उत्तर मिला, राजन्। मेरा आश्रम तैयार है। राजा आश्चर्यचकित हो उठा। कहा, भगवन्। जरा मैं भी तो देखू। महात्मा ने उत्तर दिया, राजन्। धरती को इस छोर से उस छोर तक देखो। दूर, जहाँ धरती और आकाश एक जगह मिलते हैं, वहाँ तक मेरा आश्रम फैला है। यह सुनकर राजा गदगद् हो उठा। उसने साधु के पाँव पकड़ लिए, भगवन्। आज से आप मेरे गुरु हैं। सचमुच आपका आश्रम सबसे बड़ा है। साधुता की कोई सीमा नहीं होती।

९५५) वसंत में चिड़िया की वापसी - एक शाम स्कूल से लौटने पर रमा ने देखा कि घर के दरवाजे के सामने चिड़िया का एक बच्चा पड़ा है। उसे हल्की सी चोट लगी थी। रमा ने उसे उठाया और अंदर ले आई। फिर अपने हाथों से उसने एक मुलायम सा घोंसला बनाया और उसमें बच्चे को लिटा दिया। रोज वह उस बच्चे की देखभाल करती। धीरे-धीरे बच्चा स्वस्थ होने लगा। रमा ने महसूस किया कि वह स्वस्थ तो हो गया है, पर उसकी भूख मर गई है। यह देख रमा बड़ी दु:खी हुई। रमा की मम्मी को लगा, शायद बंद माहौल में रहने से चिड़िया के बच्चे को अच्छा नहीं लग रहा है। अत: एक सुबह उन्होंने घोंसला उठाकर खुली खिड़की पर रख दिया। शाम को जब रमा स्कूल से लौटी तो पाया कि बच्चा उड़ गया है। एक दिन बहुत सवेरे रमा को अपनी खिड़की पर हल्की सी दस्तक सुनाई दी। देखा तो वही बच्चा था। अब बड़ा हो गया था। चूँ-चूँ करता चहक रहा था। उसे देख रमा बहुत खुश हुई। वह उसे भूला नहीं था, यह बात रमा को बहुत अच्छी लगी। ऐसे ही रोज वह रमा से मिलने आया करता। गरमियाँ शुरू हो गई। सभी पक्षी सर्द प्रदेशों में जाने लगे। वह भी एक सुबह आया और रमा के कंधे पर बैठ पड़ी देर तक उसे दुलराता रहा। वह आज्ञा लेने आया था वसंत की वापसी तक के लिए।

९५६) पीटर और तितली - एक नन्हा मेढक और पीटर बड़े अच्छे दोस्त थे। एक दिन वे घर के बगीचे में टहलते हुए गुनगुनी धूप का मजा ले रहे थे, तभी एक खूबसूरत तितली फूलों पर मँडराने लगी। मैं इसे पकडूंगा। पीटर ने कहा और हौले से उस गुलाब के पौधे की ओर बढ़ा, जिस पर तितली बैठी थी। उसे लगा कि वह एक ही प्रयत्न में तितली को पकड़ लेगा, मगर यह उसका भ्रम था। जेसे ही हाथ तितली की ओर बढ़ा, वह झट से उड़कर दूसरे फूल पर जा बैठी। पीटर वहाँ पहुँचा, मगर फिर वही बात। तितली उड़कर दूसरी जगह जा पहुंची। पीटर हताश हो उठा। तुम अगर उसे पकड़ना चाहते

हो फिर देखना। कुछ देर बाद वह तुम्हारे कंधों पर आकर बैठ जाएगी। नन्हे मेढक ने पीटर को समझाया। ठीक है। तुम्हारी बात ही सही। पीटर ने हथियार डाल दिया। मेढक और पीटर तितली को भूल खेलने में मशगूल हो गए। सहसा मेढक चिल्लाया, पीटर। देखो, तुम्हारे कंधे पर वही तितली बैठी है। सचमुच पीटर के कंधे पर वही तितली आ बैठी थी।

९५७) जीवन का रहस्य - एक जिज्ञासु शिष्य ने टॉलस्टाय से पूछा, जीवन क्या है? टॉलस्टाय ने कहा- एक बार एक यात्री जंगल की राह पर चला जा रहा था। सामने से एक हाथी उसकी ओर लपका। अपने प्राण बचाने के लिए तत्काल वह एक कुएं में कूद गया। कुएं में वटवृक्ष था। उसकी एक शाखा को पकड़कर वह झूल गया। उसने नीचे देखा- साक्षात मौत खड़ी थी। एक मगरमच्छ मुंह खोल बैठा था। भय कंपित वह मृत्यु का साक्षात दर्शन कर रहा था। उसने ऊपर देखा- शहद के छत्ते से बूंद बूंद टपक रहा था। वह सब कुछ भूल मधु पीने में तल्लीन हो गया। लेकिन यह क्या? जिस पेड़ से वह लटका था, दूसरा काला। जिज्ञासु ने पूछा- इसका अर्थ? टॉलस्टाय ने कहा- वह हाथी काल था, मगरमच्छ मृत्यु, मधु जीवन-रस था और दो चूहे दिन-रात। बस यही तो जीवन है। शिष्य सन्तुष्ट हो गया।

९५८) पोतन्ना की सीख - बम्मेर पोतन्ना नाम के एक संत श्रीमद्भावगत का तेलुगु में रूपांतरण कर रहे थे। एक दिन वे गजेंद्र मोक्ष प्रसंग लिख रहे थे कि पीछे से आकर उनका साला श्रीनाथ पढ़ने लगा- मगर ने गजेंद्र यानी हाथी का पैर पकड़ा और वह उसे धीरे-धीरे निगलने लगा। प्राण संकट में पड़े देख गजेंद्र ने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की। उसकी पुकार सुनकर श्रीकृष्ण तुरंत वहां आ पहुंचे। जल्दबाजी में उन्हें अपना सुदर्शन चक्र लेने का ध्यान भी नहीं रहा। इसी प्रसंग पर श्रीनाथ रुक गया और मजाक उड़ाने के लिए बोला- आपने कैसे लिखा कि भगवान को सुदर्शन चक्र लेने का ध्यान नहीं रहा। सुदर्शन चक्र साथ में न लाएंगे तो गजेंद्र को मुक्ति कैसे मिलेगी? कुछ लिखने से पहले उसे अनुभव की कसौटी पर परखना जरूरी होता है। पोतन्ना उस समय चुप रहे। दूसरे दिन उन्होंने श्रीनाथ के बेटे को दूर खेलने भेज दिया और पास के एक कुएं में एक बड़ा पत्थर डाल दिया। आवाज होते ही पोतन्ना चिल्लाने लगे- श्रीनाथ, तुम्हारा बच्चा कुएं में गिर गया। श्रीनाथ दौड़ता आया और बिना सोचे समझे कुएं में कूदने लगा। यह देख पोतन्ना ने उसे पकड़ लिया और बोले- बिना विचारे इस तरह कुएं में कूद रहे हो? बच्चे को निकालोगे कैसे? रस्सी-बाल्टी भी साथ में नहीं लाए। श्रीनाथ गंभीर हो गया तो पोतन्ना बोले- घबराओ मत, तुम्हारा बच्चा सामने से आ रहा है। मैं तुम्हें यह समझाना चाहता था कि अपने प्रिय पर संकट पड़ने पर क्या दशा हो जाती है। जैसे पुत्र-प्रेम के कारण तुम्हें रस्सी-बाल्टी लेना याद नहीं रहा, वैसे ही श्रीकृष्ण भी सुदर्शन चक्र लेना भूल गए। श्रीनाथ उनका आशय समझ गया।

९५९) दयालु शेर - एक जंगल में एक शेर सो रहा था कि अचानक एक चूहा शेर को सोता देखकर उसके ऊपर आकर खेलने लगा जिसके कारण उछलकूद से शेर की नींद खुल गई और उसने उस चूहे को पकड़ लिया। चूहा डर से काँपने लगा और शेर से बोला- हे राजन हमें माफ कर दो। जब कभी आपके ऊपर कोई दु:ख आएगा तो मैं आपकी सहायता कर दूंगा। शेर हँसते हुए बोला- मैं सबसे अधिक शक्तिशाली हूं। मुझे किसी की सहायता की क्या जरूरत? यह कहते हुए उसने चूहे को छोड़ दिया। कुछ दिनों बाद वही शेर शिकारी द्वारा फैलाए गए जाल में फँस गया और फिर खूब जोर लगाया लेकिन वह जाल से छूटने की अपेक्षा और अधिक फँसला चला गया। यह सब देखकर पास में ही उस चूहे

की नजर शेर पर पड़ी तो उसने शेर की सहायता वाली बात याद दिलाकर अपने नुकीले दांतों से जाल काट दिया और फिर शेर जाल से आजाद हो गया। इस प्रकार चूहे ने अपनी जान की कीमत शेर की जान को बचाकर पूरा किया।

कभी किसी को छोटा समझकर उसकी शक्ति नहीं आँकनी चाहिए क्योंकि मुसीबत में किसी की भी सहायता की जरूरत पड़ सकती है।

९६०) अक्लमंद चूहे की करामात - सांझन वन के पास से होकर बहनेवाली नदी के किनारे एक छोटा सा गाँव बसा था। उस गाँव में एक किसान रहता था। किसान गरीब था लेकिन उसके पास थोड़ी-बहुत जमीन नदी के किनारे पर थी। जानवरों से फसल की सुरक्षा करने के लिए उसने वहीं नदी किनारे अपना एक छोटा सा आशियाना बना रखा था। किसान पूरी मेहनत लगाकर जी-जान से अपने खेतों में काम करता था। महंगाई के दौर में उसके घर का गुजारा ठीक नहीं चल पा रहा था। एक दिन उसने विचार किया कि क्यों न खेतों में कुछ ऐसा उगाया जाए जिसका भाव बाजार में ज्यादा हो। उसने नदी किनारे अपने खेत में नशीला पेय बनाना शुरू कर दिया। ताकि उसके घर का खर्चा चल सके। रोज वह नशीला पेय बनाकर एक डिब्बे में रखता था। एक दिन एक चूहा खाने की तलाश में वहाँ आ गया। खाना ढूंढते हुए चूहा उस नशीले पेय के डिब्बे के ऊपर चढ़ गया। डिब्बे का ढक्कन कुछ खुला हुआ था। चूहा उससे नीचे झांकने लगा और उस नशीले पेय में गिर गया।

काफी हाथ-पांव मारे पर बाहर निकल नहीं सका। आखिर में वह बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगा। उसकी आवाज सुनकर एक बिल्ली वहां आ गई। उसने देखा कि चूहा नशीने पदार्थ में गिरा हुआ है। बिल्ली ने चूहे को कहा कि मैं तुम्हे बचा तो लूंगी पर बाहर निकालकर तुम्हें खा जाऊंगी। चूहे ने कहा, नशीले पेय में डूबकर मरने से तो अच्छा है किसी के काम आ सकूं। कम से कम आपके पेट की भूख तो मिटेगी। बिल्ली ने चूहे को बाहर निकाल लिया और खाने लगी। चूहे ने कहा, मेरे शरीर से नशीले पेय की बदबू आ रही है। कम से कम धो तो ले लो। बिल्ली ने सोचा वह ठीक ही कह रहा है। जैसे ही बिल्ली चूहे को धोने लगी पकड़ थोड़ी सी ढीली हुई और चूहा भाग कर पास के बिल में जा छुपा। बिल्ली ने कहा कि तुमने तो वादा किया था कि तुम मेरा भोजन बनोगे पर अब भाग गए। चूहे ने कहा, तब तो मैं नशे में कह गया। लेकिन अब तो नशा उतर चुका है। वादा तो आदमी तक नहीं निभाता फिर मैं कैसे निभा सकता हूं।

९६१) रास्ते की तलाश - एक राजा राजकाज से मुक्ति चाहते थे। एक दिन उन्होंने राजसिंहासन अपने उत्तराधिकारी को सौंपा और राजमहल छोड़ चल पड़े। उन्होंने विद्वानों के साथ सत्संग किया, तपस्या की पर उनके मन में अतृप्ति बनी रही। मन में खिन्नता का भाव लिए वे तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। एक दिन चलते-चलते वे काफी थक गए और भूख के कारण निढाल होने लगे। पगडंडी से उतर एक खेत में रुके और एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगे। खेत में आए पथिक को देखकर एक किसान उनके पास जा पहुंचा। वह उनका चेहरा देखकर ही समझ गया कि यह व्यक्ति थका होने के साथ ही भूखा भी है। किसान ने हांडी में उबालने के लिए चावल डाले, फिर राजा से कहा, उठो, चावल पकाओ। जब चावल पक जाएं तब मुझे आवाज दे देना। हम दोनों इससे पेट भर लेंगे। राजा मंत्रमुग्ध होकर किसान की बात सुनते रहे। किसान के जाने के बाद उन्होंने चावल पकाने शुरू कर दिए। जब चावल पक गए, तो उन्होंने किसान को बुलाया और

दोनों ने भरपेट चावल खाए। फिर किसान काम में लग गया और राजा को ठंडी छांव में गहरी नींद आ गई। सपने में उन्होंने देखा कि एक दिव्य पुरुष खड़ा होकर कह रहा है, मैं कर्म हूं और मेरा आश्रय पाये बगैर किसी को शांति नहीं मिलती। तुम्हें सब कुछ बिना कर्म किए प्राप्त हो गया है। तुम एक बनी बनाई प्रणाली का संचालन कर रहे हो। इसलिए तुम्हें जीवन से विरक्ति हो रही है। तुम कर्म करो। कर्म करने का एक अलग ही सुख है। इससे तुम्हारे भीतर जीवन के प्रति लगाव पैदा होगा। राजा की आंखें खुल गईं। उन्हें लगा उन्हें रास्ता मिल गया।

९६२) लालची कुत्ता - एक गाँव में एक कुत्ता था। वह बहुत लालची था। वह भोजन की खोज में इधर-उधर भटकता रहा, लेकिन कहीं भी उसे भोजन नहीं मिला। अंत में एक होटल के बाहर से मांस का एक टुकड़ा मिला। वह उसे अकेले में बैठकर खाना चाहता था, इसलिए वह उसे लेकर भाग गया। एकांत जगह की खोज करते-करते वह एक नदी के किनारे पहुंच गया। अचानक उसने अपनी परछाई नदी में देखी। उसने सोचा कि पानी में कोई दूसरा कुत्ता है जिसके मुंह में भी मांस का टुकड़ा है। उसने सोचा, क्यों न इसका टुकड़ा भी छीन लिया जाए तो खाने का मजा दोगुना हो जाएगा। यह उस पर जोर से भौंका। भौंकने से उसका अपना मांस का टुकड़ा भी नदी में गिर पड़ा। अब वह अपना टुकड़ा भी खो बैठा। अब वह बहुत पछताया तथा मुंह लटकाता हुआ गांव को वापस आ गया।

लालच बुरी बला है। हमें कभी भी लालच नहीं करना चाहिए। जो भी इन्सान लालच करता है वह अपनी जिंदगी में कभी भी खुश नहीं रह सकता। हमें अपनी मेहनत या किस्मत का जितना भी मिल गया, उससे अपना काम निकालना चाहिए। लेकिन अगर हम थोड़ा ज्यादा के चक्कर में लालच करेंगे तो हमारे पास अभी जितना है उससे भी हाथ धोना पड़ सकता है। इसलिए कहते हैं कि ज्यादा लालच अच्छा नहीं होता।

९६३) आनंदी कौआ - एक कौआ था। एक बार राजा ने उसे अपराधी ठहराया और अपने आदमियों से कहा, जाओ, इस कौए को गांव के कुएं के किनारे के दलदल में रौंदकर मार डालो। कौए को दलदल में डाल दिया। वह खुशी-खुशी गाने लगा। दलदल में फिसलना सीखते हैं, भाई। दलदल में फिसलना सीखते हैं।

राजा को और उसके आदमियों को यह देखकर अचम्भा हुआ कि दलदल में डाल देने के बाद दुखी होने के बदले कौआ आनंद से गा रहा है। राजा को गुस्सा आया। उसने हुक्म दिया, इसे कुएं में डाल दो, जिससे यह डूबकर मर जाए। कौए को कुएं में डाल दिया गया। कौआ कुएं में पड़े-पड़े बोला- कुएं में तैरना सीखते हैं, भाई। कुएं में तैरना सीखते हैं।

राजा ने कहा, अब इसको इससे भी कड़ी सजा देनी चाहिए। बाद में कौए को कांटों की एक बड़ी झाड़ी में डाल दिया गया। लेकिन कौआ तो वहां भी वैसे ही रहा। बड़े आनंदित स्वर में गाते-गाते बोला- कोमल कान छिदवा रहे हैं भाई, कोमल कान छिदवा रहे हैं। राजा ने कहा, कौआ तो बड़ा जबरदस्त है। दु:ख कैसा भी क्यों न हो, यह तो दुखी होता ही नहीं। अब यह देखते हैं कि सुख वाली जगह में रखने से दु:ख होता है या नहीं? उन्होंने उसे तेल की एक कोठी में डलवा दिया। कौए भाई के लिए तो यह भी मौज की जगह रही। वह खुश होकर बोला- कान में तेल डलवा रहे हैं, भाई, कान में तेल डलवा रहे हैं।

इसके बाद राजा ने कौए को घी की नांद में डलवा दिया। नांद में पड़ा-पड़ा कौआ बोला- घी के लोंदे खाता हूं भाई, घी के लोंदे खाता हूं। राजा बहुत ही गुस्सा हुआ और उसने कौए को गुड़ की कोठी में डलवा दिया। कौए भाई मौज में आकर

बोले- गुड़ के चक्के खाते हैं, भाई। गुड़ के चक्के खाते हैं।

राजा क्या करे। उसने अब कौए को झोपड़े पर फिकवा दिया। पर वहां बैठे-बैठे भी कौआ बोला- खपरैल डालना सीखते हैं, भाई। खपरैल डालना सीखते हैं।

आखिर राजा ने थककर कहा, इस कौए को हम कोई सजा नहीं दे सकेंगे। यह तो किसी दु:ख को दु:ख मानता ही नहीं है। इसलिए अब इसे खुला छोड़ दो, उड़ा दो। कौए को उड़ा दिया गया।

९६४) सच्ची शिक्षा - महाभारत का युग था। हस्तिनापुर के सभी राजकुमार कौरव और पांडव गुरु से शिक्षा पाते थे। एक दिन गुरुजी ने पाठ पढ़ाया, कभी क्रोध न करो। सदा सत्य बोलो। अगले दिन सबने अपना पाठ सुना दिया। परंतु युधिष्ठिर ने कहा, मुझे अभी याद नहीं हुआ। गुरुजी बोले, ठीक है, कल सुना देना। किन्तु दूसरे दिन भी युधिष्ठिर नहीं सुना पाए। उनका वही उत्तर था। इस प्रकार कई दिन बीत गए। अब तो गुरुजी गुस्से में पागल हो उठे और उनको खूब पीटा। पिटाई के बाद युधिष्ठिर ने गुरुजी के पैर पकड़ लिए। बोले, गुरुदेव। आपने मुझे मारा, फिर भी मुझे क्रोध नहीं आया। अत: पाठ का पहला भाग कभी क्रोध न करो मुझे अब याद हो गया है; परंतु पाठ का दूसरा भाग सदा सत्य बोलो अभी मुझे याद नहीं हुआ। अभ्यास कर रहा हूं। गुरुजी ने ये शब्द सुने तो वे समझ गए। असली पढ़ाई वही है जिसका पालन किया जाए, अन्यथा पुस्तक पढ़ने से क्या लाभ? हम दूसरों के आर-पार देखना चाहते हैं, परंतु स्वयं अपने आर-पार देखा जाना पसंद नहीं करते।

९६५) भालू का बच्चा और आसमान के सितारे - चांदनी रात में भालू के बच्चे ने आसमान की ओर देखा तो तारों को देख उसका जी ललचा गया। कैसे झिलमिला रहे हैं ये। मैं इन्हें तोडूंगा। तारे तोड़ने के लिए वह चटपट एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। आसमान तब भी उसकी पहुंच के बाहर था फिर उससे भी ऊँचे पेड़ पर चढ़कर आसमान की तरफ हाथ बढ़ाया, पर अब भी हाथ कुछ न आया। सहसा उसकी निगाह पेड़ से लगे स्वच्छ जल के सरोवर पर गई। पानी की उजली सतह पर तारों की परछाइयाँ तारों के होने का आभास दे रही थीं। आह। तब तो मैं इन्हें तोड़ सकता हूं। कहकर वह पेड़ पर से सरोवर में कूदा। जैसे ही वह पानी में गिरा, सारे तारे गायब हो गए। जो कोशिश करता है, उससे भूलें भी होती हैं।

९६६) समझदारी - एक लोभी आदमी था। उसके पास एक बंदर था, जिसे वह काफी महंगे दामों में बेचना चाहता था। लोभी आदमी एक दिन किसी काम से घर से बाहर गया। बंदर घर पर अकेला था। सहसा उसकी दृष्टि एक बक्से पर पड़ी जो सोने की अशर्फियों से भरा था। अब क्या था, बंदर ने बक्से से अशर्फियाँ निकालकर खिड़की से बाहर फेंकना शुरू किया। आस-पड़ोस के लोगों ने यह देखा तो वे अशर्फियाँ लूटने टूट पड़े। जिससे जितना बन पड़ा, अपनी जेबे भरने लगा। बक्सा तकरीबन खाली ही हो गया था, तभी लोभी आदमी घर वापस लौटा। बक्सा खाली देखकर वह सारा माजरा समझ गया। वह बंदर पर चिल्लाया, पर कोई फायदा न हुआ। बंदर को उसकी बात समझ में न आई। उसका पड़ोसी यह देखकर बोला, चुप रहो। यह ठीक है कि तुम्हारे बंदर ने खिडकी में से अशर्फियों को लुटाकर बड़ी बेवकूफी की है, पर तुमसे तो अधिक समझदार है। धन को गाड़कर रखने से क्या फायदा? उसका तो उपयोग होना चाहिए- और बंदर ने यही किया।

९६७) शिकारी - लच्छीराम तब बहुत छोटा था जब उसके पिता की मृत्यु हो गई। उसके पिता एक शिकारी थे। उन्हें घने जंगल में किसी शिकारी ने मार डाला। माँ ने उसे बड़ी मुसीबतों से पाला। बींस साल का होते-होते लच्छीराम पिता की तरह निपुण शिकारी बन गया और शीघ्र ही अपने पिता के स्थान पर नौकरी पा गया। एक दिन जब वह जंगल में अपने एक शिकारी मित्र के साथ घूम रहा था, सहसा एक हिरन पर उसकी दृष्टि पड़ी। उसने हिरन पर निशाना साधा, पर वार खाली गया। कुछ देर बाद उसने झाड़ियों के पीछे से हल्की सी कराह सुनी। लच्छीराम दौड़कर उस आवाज के निकट पहुंचा। उसने देखा, एक वृद्ध खून से लथपथ जमीन पर पड़ा है। वृद्ध के समक्ष नतमस्तक हो वह क्षमा-याचना करने लगा। वह अपने गलत निशाने से पछता रहा था। तब उस घायल वृद्ध ने कहा, माफी तो मुझे माँगनी चाहिए। मैं अब वह गुप्त रहस्य तुम्हें बता देना चाहता हूं जिसे मैं बरसों से अपने सीने में छिपाए बैठा हूं। मैं ही वह शिकारी हूं जिसने तुम्हारे पिता को मार डाला था। यह ठीक वही स्थान है जहाँ तुम्हारे पिता ने साँस तोड़ी थी। भगवान कितना न्यायी है। उसने तुमसे अनजाने ही पिता का बदला लिया। इतनी बात कहकर वृद्ध शिकारी ने दम तोड़ दिया।

९६८) चींटी और घमंडी हाथी - एक जंगल में चींटियों का झुंड रहता था, उसकी रानी बहुत मेहनती थी। सुबह-सुबह ही वो अपनी टोली के साथ खाने की तलाश में निकल पड़ती। इसी जंगल में एक घमंडी हाथी भी रहता था। वो जंगल में सभी जानवरों को परेशान करता था। कभी गंदे नाले से सूंड में पानी भरकर उन पर फेंक देता, तो कभी अपनी ताकत का प्रदर्शन करके उन्हें डराता।

उस हाथी को इन चींटियों से बड़ी ईर्ष्या होती थी। वो उन्हें जब भी देखता, तो पैरों से कुचल देता। एक दिन चींटी रानी ने हाथी से विनम्रता से पूछा कि आप दूसरों को क्यों परेशान करते हो? यह आदत अच्छी नहीं है।

यह सुनकर हाथी क्रोधित हो गया और उसने चींटी को धमकाया कि तुम अभी बहुत छोटी हो, अपनी जुबान पर लगाम लगाकर रखो, मुझे मत सिखाओ कि क्या सही है, क्या गलत वरना तुम्हें भी कुचल दूंगा।

यह सुन चींटी निराश हुई, लेकिन उसने मन ही मन हाथी को सबक सिखाने की ठानी। चींटी पास ही एक झाड़ी में छिप गई और मौका देखते ही चुपके से हाथी की सूंड में घुस गई। फिर उसने हाथी को काटना शुरू कर दिया। हाथी परेशान हो उठा। उसने सूंड को जोर-जोर से हिलाया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। हाथी दर्द से कराहने और रोने लगा। यह देख चींटी ने कहा कि हाथी भइया, आप दूसरों को परेशान करते हो, तो बड़ा मजा लेते हो, तो अब खुद क्यों परेशान हो रहे हो?

हाथी को अपनी गलती का एहसास हो गया और उसने चींटी से माफी माँगी कि आगे से वो कभी किसी को नहीं सताएगा। चींटी को उस पर दया आ गई। वो बाहर आकर बोली कि कभी किसी को छोटा और कमजोर नहीं समझना चाहिए। यह सुन हाथी बोला कि मुझे सबक मिल चुका है। मुझे अच्छी सीख दी तुमने। अब हम सब मिलकर रहेंगे और कोई किसी को परेशान नहीं करेगा।

घमंडी का सिर सदा नीचे होता है। कभी किसी को कमजोर और छोटा न समझें। दूसरों के दर्द व तकलीफ को समझना ही जीने का सही तरीका है।

९६९) देशभक्ति की राह - उन दिनों १८५७ का गदर अपने चरम पर था। इसके एक प्रमुख सेनानी नाना साहब की गिरफ्तारी पर अंग्रेज सरकार ने पचास हजार रुपये का इनाम घोषित किया हुआ था। अंग्रेजों से बचते-बचाते भूख-प्यास

से पीड़ित नाना साहब ने एक मुंहबोली बहन के दरवाजे पर दस्तक दी। वह नाना साहब को देखकर चौंकी फिर उन्हें अंदर ले गई। प्रेम से भोजन कराया। कुछ ही देर में उसके पति आ गए जो पुलिस इंस्पेक्टर थे। जैसे ही उन्हें पता चला कि नाना साहब उनके घर में छिपे हैं, वैसे ही वह अपनी पत्नी से बोले, नाना साहब पर घोषित पुरस्कार यदि हमें मिला तो हमारा सारा जीवन संवर जाएगा। पत्नी बोली, यह तो देशद्रोह होगा। हमें नहीं चाहिए ऐसा धन-वैभव जो देशभक्त को पकड़वा कर मिले। उनकी बातें सुनकर नाना साहब स्वयं ही सामने आ गए और बोले, यह रहा आपका नाना साहब। मुझे अंग्रेजों को सौंप दो। यह देखकर इंस्पेक्टर खुश हो गया और अपनी पिस्तौल ऊपर की ओर करने लगा। यह देखकर वह महिला बोली, खबरदार जो तुमने नाना साहब पर गोली चलाई। ये देशभक्त होने के साथ ही हमारे माननीय अतिथि हैं। तुम्हें पचास हजार रुपये का इनाम चाहिए न। मेरे जीते जी मैं तुम्हें यह पाप नहीं करने दे सकती। मुझ पर चलाओ गोली। यह देखकर नाना साहब इंस्पेक्टर से बोले, तुम कर्त्तव्य का पालन करो। इंस्पेक्टर कुछ देर पत्थर की तरह खड़ा रहा। फिर उसने पिस्तौल फेंककर कहा, मुझे कर्त्तव्य का बोध हो चुका है, नाना साहब। मेरा जीवन अब देश के लिए समर्पित है। हमारे महान देशभक्तों ने इसी तरह कई लोगों का हृदय परिवर्तन कर दिया था।

९७०) कहां गया दिमाग - किसी जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। इस जंगल में एक शेर भी था। शेर ने एक लोमड़ी को अपना सहायक बनाया हुआ था। अपने शिकार में से वह थोड़ा सा हिस्सा लोमड़ी को भी दे दिया करता था। एक दिन शेर का मुकाबला हाथी से हो गया। हाथी ने बहुत बुरे तरीके से शेर को घुमाया और बहुत दूर फेंक दिया। शेर को बहुत सी चोंटें आईं, जिससे वह शिकार करने के काबिल नहीं रहा।

भूखों मरने की नौबत आ गई। शेर के साथ-साथ लोमड़ी भी भूखी ही रह गई। एक दिन शेर ने लोमड़ी से कहा कि तुम बहुत चतुर हो। क्यों न तुम किसी जानवर को अपने साथ यहां तक ले आती। यहां लाने के बाद में उसे मार गिराऊंगा औरा हमारे भोजन का इंतजाम हो जाएगा। लोमड़ी ने कहा ठीक है। लोमड़ी जंगल में किसी मूर्ख जानवर को ढूंढने चल पड़ी। बहुत दूर जाने के बाद उसे एक मूर्ख गधा चरता हुआ दिखाई दिया। उसने सोचा इसी को पटाना चाहिए। वह गधे के पास गई और उसको लालच देते हुए बोली आप यहां क्या कर रहे हैं, यहां तो कोई हरी घास चरने को नहीं है। आप लोग कितने कमजोर हैं। गधे को पहली बार किसी ने इतने मीठे शब्दों में बोला था, तो गधे ने जवाब दिया लोमड़ी बहन अब मैं तुम्हें क्या बताऊं मेरा मालिक जरूरत से ज्यादा बोझ मेरे ऊपर लादता है और पेट भर कर खाना भी नहीं देता है। लोमड़ी ने उसके साथ सहमति जताते हुए कहा कि तुम मेरे साथ जंगल में चलो। वहां तो बहुत सारी हरी घास है। इस पर गधे ने कहा वहां जंगल में बहुत सारे शिकारी जानवर भी तो हैं। यह सुनते ही लोमड़ी सावधान हो गई और बोली तुम्हें किसी जंगली जानवर से डरने की जरूरत नहीं है। तुम जानते हो मुझे यहां जंगल के राजा शेर ने भेजा है। शेर चाहता है कि आदमी के सताए हुए सभी जानवरों का जंगल में शरण दी जाए। उन्होंने तो तुम्हें मंत्री बनाने का भी फैसला किया है। इस बात को सुनकर गधा बहुत खुश हो गया और लोमड़ी के साथ जंगल को चल दिया। बहुत दिनों से भूखा होने पर जैसे ही गधा शेर के सामने गया शेर उस पर कूद पड़ा। गधा डर गया और वहां से भाग खड़ा हुआ। बेचारा शेर फिर भूखा रह गया। लोमड़ी ने शेर से कहा आप ने इतनी जल्दी क्यों हमला कर दिया? उसको अपने नजदीक तो आने देना था। कोई बात नहीं, मैं गधे

को दुबारा यहां ले आती हूं। आप चिंता मत करें। यह कहते हुए लोमड़ी गधे के पीछे भागी। शेर ने एक लंबी सांस ली और सोचने लगा गधा दोबारा यहां क्यों आएगा। जैसे ही लोमड़ी गधे के पास पहुंची उसने उसको विश्वास दिलाते हुए कहा जंगल का राजा तुम्हारे स्वागत के लिए आगे आया और तुम वहां से भाग खड़े हुए।

मुझे यह बताओ कि अगर राजा ने तुम्हें मारना ही होता तो क्या तुम अपने प्राणों को बचा पाते, राजा तुम्हें एक ही पंजे से खत्म कर सकता था। अब आओ तुम्हारे पास एक मौका है मंत्री बनने का। मैं भी तुम्हारी सिफारिश करूंगी। राजा तुम्हें मंत्री बना देंगे। यह सुनते ही गधा फिर शेर के पास जाने को तैयार हो गया। इस बार शेर ने गधे को बहुत नजदीक आने दिया। नजदीक आने पर शेर ने एक पंजा मारा। गधा मर गया। इसके बाद शेर ने लोमड़ी से कहा यहां बैठकर इसकी रखवाली करो तब तक मैं नहा आता हूं।

नहाकर इसे खाएंगे। लोमड़ी बहुत भूखी थी। उसने चुप करके गधे का दिमाग निकाला और खा गई। कुछ देर बाद शेर नहाकर आया उसने देखा कि गधे का दिमाग गायब है। उसने गुस्से में आकर लोमड़ी से कहा लोमड़ी मुझे इस गधे का दिमाग दिखाई नहीं दे रहा है, यह कहां गया। लोमड़ी ने चतुराई से कहा, राजा जी अगर इस गधे के पास दिमाग होता तो क्या यह मरने के लिए हमारे पास आता। इस गधे के पास तो दिमाग ही नहीं था।

९७१) झगड़ालू मेंढ़क - एक कुएं में ढेर सारे मेंढ़क रहते थे। मेंढ़कों के राजा का नाम था गंगदत्त। वह बहुत झगड़ालू स्वभाव का था। आसपास दो तीन और कुए थे जिनमें भी मेंढ़क रहते थे। हर कुएं के मेंढ़कों का अपना राजा था। हर राजा से किसी न किसी बात पर गंगदत्त का झगड़ा होता रहता था। वह अपनी बेवकूफी कोई गलत काम करने लगाता और कोई बुद्धिमान मेंढ़क उसे रोकने की कोशिश करता, तो मौका मिलते ही वह अपने पाले हुए गुंडे मेंढ़कों से सलाह देनेवाले की पिटाई करवा देता। कुएं के मेंढ़क गंगदत्त के इस व्यवहार से बहुत गुस्से में थे।

एक दिन गंगदत्त की पास के पड़ोसी मेंढ़क राजा से खूब लड़ाई हुई। जमकर तू-तू मैं-मैं हुई। गंगदत्त ने अपने कुएं में आकर बाकी मेंढ़कों को बताया कि पड़ोसी राजा ने उसका अपमान किया है और इस अपमान का बदला लेने के लिए उसने अपने मेंढ़कों को पड़ोसी कुएं पर हमला करने को कहा, मगर सब जानते थे कि झगड़ा गंगदत्त ने ही शुरू किया होगा। इसलिए कुछ बुद्धिमान मेंढ़कों ने एकजुट होकर एक स्वर में कहा, राजन, पड़ोसी कुएं में हमसे दुगुने मेंढ़क हैं। वे स्वस्थ और हमसे ज्यादा ताकतवर हैं। हम यह लड़ाई नहीं लड़ेंगे। गंगदत्त सन्न रह गया और बुरी तरह तिलमिला गया। मन ही मन में उसने ठान ली कि इन गद्दारों को भी सबक सिखाना होगा। गंगदत्त ने अपने बेटों को बुलाकर भड़काया, बेटा, पड़ोसी राजा ने तुम्हारे पिता का घोर अपमान किया है। जाओ, उस राजा के बेटों की ऐसी पिटाई करो कि वे पानी मांगने लग जाएं।

गंगदत्त के बेटे एक दूसरे का मुंह देखने लगे। आखिर बड़े बेटे ने कहा, पिताश्री, आपने कभी हमें टर्राने की इजाजत नहीं दी। टर्राने से ही मेंढ़कों में बल आता हैं, हौसला आता हैं और जोश आता है। आप ही बताइए कि बिना हौसले और जोश के हम किसी की क्या पिटाई करेंगे?

अब गंगदत्त सबसे चिढ़ गया। एक दिन वह कुढ़ता और बड़बड़ाता कुएं से बाहर निकल इधर-उधर घूमने लगा। उसने

एक भयंकर नाग को पास ही बने अपने बिल में घुसते देखा। ये देखकर उसकी आंखें चमकी। जब अपने दुश्मन बन जाए, तो दुश्मन को दोस्त बना लेना चाहिए। यही सोचकर वह बिल के पास जाकर बोला, नागदेव, मेरा प्रणाम। नागदेव फुफकारें, अरे मेंढ़क मैं तुम्हारा बैरी हूं, तुम्हें खा सकता हूं और तू मेरे ही बिल के आगे आकर मुझे आवाज दे रहा है। गंगदत्त टर्राया, हे नाग, कभी-कभी शत्रुओं से ज्यादा अपने दुख देने लगते हैं। मेरा अपनी जातिवालों और सगों ने इतना घोर अपमान किया हैं कि उन्हें सबक सिखाने के लिए मुझे तुम जैसे शत्रु के पास सहायता मांगने आना पड़ा। तुम मेरी दोस्ती स्वीकार करो और मजे करो। नाग ने बिल से अपना सिर बाहर निकाला और बोला, मजे, कैसे मजे? गंगदत्त ने कहा, मैं तुम्हें इतने मेंढ़क खिलाऊंगा कि तुम अजगर जैसे मोटे हो जाओगे। नाग ने शंका व्यक्त की, पानी में मैं जा नहीं सकता। कैसे पकड़ूंगा मेंढ़क? गंगदत्त ने ताली बजाई, नाग भाई, यहीं तो मेरी दोस्ती तुम्हारे काम आएगी। मैंने पड़ोसी राजाओं के कुओं पर नजर रखने के लिए अपने जासूस मेंढ़कों से गुप्त सुरंगे खुदवा रखी हैं। हर कुएं तक उनका रास्ता जाता है। सुरंगे जहां मिलती हैं वहां एक कक्ष है, तुम वहां रहना और जिस जिस मेंढ़क को खाने के लिए कहूं, उन्हें खाते जाना।

नाग गंगदत्त से दोस्ती के लिए तैयार हो गया, क्योंकि उसमें उसका लाभ ही लाभ था। एक मूर्ख बदले की भावना में अंधे होकर अपनों को ही दुश्मन के हवाले करने को तैयार हो, तो दुश्मन क्यों न इसका लाभ उठाए?

नाग गंगदत्त के साथ सुरंग कक्ष में जाकर बैठ गया। गंगदत्त ने पहले सारे पड़ोसी मेंढ़क राजाओं और उनकी प्रजाओं को खाने के लिए कहा। नाग कुछ ही हफ्ते में सारे दूसरे कुओं के मेंढ़क को सुरंग के रास्ते जा-जाकर खा गया। जब सारे मेंढ़क समाप्त हो हो गए, तो नाग गंगदत्त से बोला, अब किसे खाऊं? जल्दी बता। गंगदत्त ने कहा, अब मेरे कुएं के सभी स्याने और बुद्धिमान मेंढ़कों को खाओ।

नाग ने फन फैलाया और फुफकारने लगा, मेंढ़क, मैं अब कहीं नहीं जानेवाला। तू अब मेरे खाने का इंतजाम कर वरना हिस्सा साफ। गंगदत्त की बोलती बंद हो गई। उसने नाग को अपने मित्र खिलाए फिर उसके बेटे नाग के पेट में गए। गंगदत्त ने सोचा कि मैं और मेंढ़की जिंदा रहे तो बेटे और पैदा कर लेंगे। बेटे खाने के बाद नाग फुफकारा और खाना कहां हैं? गंगदत्त ने डरकर मेंढ़की की ओर इशारा किया। गंगदत्त ने स्वयं के मन को समझाया चलो बूढ़ी मेंढ़की से छुटकारा मिला। नई जवान मेंढ़की से विवाह कर नया संसार बसाऊंगा।

मेंढ़की को खाने के बाद नाग ने मुंह फाड़ा खाना। गंगदत्त ने हाथ जोड़कर कहा, अब तो केवल मै। बचा हूं, तुम्हारा दोस्त गंगदत्त। अब लौट जाओ। नाग बोला तू कौन-सा मेरा मामा लगता हैं और उसे भी खा गया।

९७२) किसान और सांप - एक गांव में एक किसान रहता था। उसकी सारी जमीन पिछले दो-तीन सालों से सूखे की मार झेल रही थी और वो पूरी तरह सूख चुकी थी। सर्दी का मौसम आ चुका था। किसान पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। शाम हो चुकी थी। तभी उसकी नजर पास बने बिल पर गई, वहां एक सांप अपना फन उठाए बैठा था।

किसान के मन में एक बात आई कि यह सांप तो सालों से यहीं रहता होगा, लेकिन मैंने इसकी कभी पूजा नहीं की और शायद यही वजह है कि मेरी सारी जमीन सूख चुकी है। किसान ने ठान लिया कि मैं हर रोज सांप की पूजा किया करूंगा।

किसान एक कटोरे में दूध ले आया और बिल के पास रखकर कहने लगा, हे नागराज, मुझे नहीं पता था कि आप यहां

रहते हैं, इसलिए मैंने कभी आपकी पूजा नहीं की। मुझे क्षमा करें, अब से मैं रोज आपकी पूजा करूंगा किसान सोने चला गया। सुबह देखा, तो उस दूध के कटोरे में कुछ चमक रहा था। पास जाकर किसान ने देखा, तो वह सोने का सिक्का था। अब तो यह रोज का सिलसिला हो गया था। किसान रोज सांप को दूध पिलाता और उसे सुबह एक सोने का सिक्का मिलता। एक दिन किसान को किसी काम से दूसरे गांव जाना पड़ा, तो उसने अपने बेटे को रोज सांप को दूध पिलाने को कहा। किसान के बेटे ने वैसा ही किया।

अगली सुबह उसे भी सोने का सिक्का मिला। उसके बेटे ने सोचा कि यह सांप तो बड़ा कंजूस है। जरूर उसके बिल में बहुत-से सोने के सिक्के होंगे, लेकिन यह तो बस रोज एक ही सिक्का देता है। अगर मैं इसको मार दूं, तो मुझे सारा का सारा सोना मिल जाएगा। अगली शाम लड़का जब दूध देने गया, तो उसने सांप को देखते ही उस पर छड़ी से वार किया, जिससे सांप ने विकराल रूप धारण कर लिया और उसे डस लिया। जख्मी सांप उसके बाद अपने बिल में चला गया। किसान के रिश्तेदारों ने उसके बेटे का अंतिम संस्कार कर दिया। जब किसान लौटा, तो अपने बेटे की मृत्यु की खबर से बहुत व्यथित हुआ। उसे सांप पर भी बहुत क्रोध आया, लेकिन सांप ने उसे सारी सच्चाई बताई, तो किसान ने कहा। मुझे पता है कि गलती मेरे बेटे की थी, उसकी तरफ से मैं माफी मांगता हूं। किसान ने उसे दूध दिया और उससे फिर माफी मांगते हुए कहा, कृपया मेरे बेटे को माफ करें। सांप ने कहा, उन लकड़ियों के ढेर को और मेरे सिर को देखो, दरअसल यह न तो तुम्हारे बेटे का दोष था और न ही मेरा। परिस्थिति ही कुछ ऐसी बन गई थी कि यह सब कुछ हो गया। यह भाग्य का ही खेल था। भाग्य के आगे हम सब मजबूर हैं।

९७३) भाई का त्याग - पंद्रहवीं शताब्दी में जर्मनी के नुरेमबर्ग में एक छोटा गांव था। गांव में एक सुनार अपने अठारह बच्चों के साथ रहा करता था। इतने बड़े परिवार के पालन-पोषण के लिए वह पूरे दिन में अठारह घंटे काम किया करता। फिर भी वह इतनी कमाई नहीं कर पाता था कि सभी बच्चों को पढ़ाई के लिए स्कूल भेज सके। सुनार के दो बेटे अलब्रैक्ट और अलबर्ट पेंटर बनना चाहते थे। लेकिन वे जानते थे कि उसके पिता के पास इतने पैसे नहीं हैं कि वे दोनों अपने सपनों को पूरा कर पाएं। इसलिए काफी विचार-विमर्श के बाद दोनों ने एक उपाय निकाला। उन दोनों ने यह तय किया कि एक सिक्का टॉस किया जाएगा।

उन दोनों में जो कोई भी हारेगा, वह पास वाली खदान में काम करने चला जाएगा और उसकी कमाई से दूसरा भाई अपने सपने को पूरा करेगा। रविवार की सुबह चर्च से आने के बाद उन दोनों ने सिक्का उछाला। संयोगवश, अलब्रैक्ट टॉस जीत गया। इसलिए शर्त के अनुसार, वह अपने सपने को पूरा करने के लिए नुरेमबर्ग में रह गया। वहीं, दूसरी ओर अलबर्ट अगले चार वर्षों के लिए समीप के एक खदान में काम करने चला गया। वहां से वह अपने भाई को लगातार पैसे भेजता रहा। अलब्रैक्ट अपनी पढ़ाई पूरी कर एक ख्यातिप्राप्त पेंटर बन गया। वह अपनी बनाई पेंटिंग से पैसे भी खूब कमाने लगा था।

इसलिए अल्ब्रैक्ट की सफलता से खुश होकर उसके पिता ने एक भोज का आयोजन किया। भोज के दौरान अल्ब्रैक्ट अपनी खाने की मेज से उठा और वहां उपस्थित सभी लोगों को संबोधित करते हुए कहा, आज मैं जो कुछ भी हूं, अपनी

भाई की बदौलत हूं। इसलिए मेरे भाई अलबर्ट अब तुम अपने सपने को पूरा करो और मैं तुम्हारी सहायता के लिए खदान में काम करूंगा। सभी लोग उधर ही देखने लगे जिधर अलबर्ट बैठा हुआ था। अलबर्ट की आंखों में आंसू थे और वह कांप रहा था। वह धीमी आवाज में एक ही बात को दुहरा रहा था, नहीं-नहीं। मैं ऐसा नहीं कर सकता हूं। अलबर्ट अपने आंसुओं को पोंछता हुआ उठा और कहा कि मेरे भाई मैं नुरेमबर्ग नहीं जा सकता। अब काफी देर हो चुकी है। पिछले चार वर्षों में खदान ने मेरा बड़ा बुरा हाल किया है। मेरे हाथों की अधिकतर हड्डियां टेढ़ी हो गई हैं। मैं अर्थराइटिस से पीड़ित हो गया हूं। यहां तक कि मैं दाहिने हाथ से एक गिलास पानी तक नहीं पी पाता हूं। तो फिर कैनवास पर बारीक लकीरें कैसे खीच पाऊंगा? यह सुनकर सभी आश्चर्यचकित हो गए। वे लोग अल्बर्ट का यशोगान करने लगे कि भाई के सपने को पूरा करने के लिए इसने अपना जीवन दांव पर लगा दिया।

अल्ब्रैक्ट के भी आंखों में आंसू आ गए और उसने आगे बढ़कर भाई को गले से लगा लिया। बाद में अल्ब्रैक्ट ने अपने भाई के टेढ़े हो चुके दोनों जुड़े हाथों की पेंटिंग बनाई। अपने समय की यह सबसे लोकप्रिय पेंटिंग कहलाई। इस भावात्मक पेंटिंग की चर्चा पूरे विश्व में हुई।

९७४) कठिन जिंदगी की आसानी - कठिन जिंदगी सबसे आसान होती है। कोई और कहता तो मैं नहीं मानता, पर ये बात वह कह रहा था जिसकी जिंदगी सचमुच कठिन रही है। देखता तो मैं बचपन से आ रहा था, लेकिन उससे मिलना पहली बार ही हो रहा था। गर्मियों की दोपहर में वह आइसक्रीम का ठेला लिए आता था। उसके ठेले में बिल्कुल अलग तरह की घंटी होती थी। इसके अलावा हम बच्चों को देखकर उसके चेहरे पर एक ऐसी मुस्कान खेलती थी, जो बाकी ठेले वालों के पास नहीं होती थी। इस वजह से भी हम उसके साथ एक तरह की करीबी महसूस करते थे। दिन, महीने और साल बीतते रहे। अब मैं कॉलेज में पहुंच गया था। छोटी बहन के बोर्ड एग्जाम चल रहे थे और उसे सेंटर से घर लाने की जिम्मेदारी मुझ पर थी। उस दिन मैं सेंटर पर समय से थोड़ा पहले पहुंच गया।

सोच ही रहा था कि कैसे टाइमपास करूं कि पास ही एक पेड़ के नीचे वही आइसक्रीम वाला दिख गया। मैं पहुंचा और आइसक्रीम खरीदते हुए पूछ बैठा, इस इलाके में भी आते हैं आप? हां साहब, जिस भी इलाके में सामान बिके, वहीं चले जाते हैं। हमारा क्या है। साफ था कि उसने मुझे पहचाना नहीं। मैंने कहा, पुनाईचक के हमारे मुहल्ले में तो आप रोज ही आते थे, इस बीच शायद नहीं आते हैं। चेहरे पर थोड़ी दिलचस्पी के भाव आए, हां कई बरस लगातार जाता था उधर। अब उमर हो गई है। बात बढ़ाने को कुछ और नहीं सूझा तो कहा, छोड़ क्यों नहीं देते अब यह काम? बहुत दिन कर लिया। वह बोला, मेरा बेटा भी यही कहता है, बहू तो बिल्कुल नहीं चाहती। लेकिन क्या करें, जैसी भी गुजरी जिंदगी तो इसी काम से गुजरी है।

क्या करता है बेटा? बैंक में मैनेजर है। अरे वाह। फिर तो सही है। छोड़िए भटकना, बेटे-बहू के पास आराम से रहिए। बोला, इतना आसान नहीं है बेटा, अभी आपकी उमर नहीं हुई है ये सब समझने की। मैंने पूछा क्यों? तो बताया, उसे मेरा काम छोटा लगता है। दोनों की इज्जत कम होती है इस बात से कि मैं यह काम करता हूं। जब उनके मन में मेरे काम की इज्जत नहीं तो मेरी क्या होगी? इसी काम ने तो मेरे बेटे को अफसर बनाया है। इस काम

से हम दोनों मियां-बीवी को दो वक्त का खाना आज भी मिल ही जाता है। बेटा, जो जिंदगी कठिन दिखती है, उसमें अगर मन रहे तो वह आसान होती है। और आसानी के चक्कर में पड़े तो जीवन नरक हो जाता है। कठिन जीवन दर्शन का यह सरल रूप मुझे विस्मित कर चुका था।

९७५) उत्साह का चमत्कार - एक महिला कर्करोग से बुरी तरह पीड़ित थी। डॉक्टरों ने उसे बता दिया था कि उसके पास जीवन के छह महीने शेष हैं। इस दौरान उसे महंगा इलाज कराना होगा। महिला के पास इलाज के लिए पैसे नहीं थे। जीवन के मात्र छह महीने बाकी देखकर उसने तय किया कि वह एक-एक क्षण का सदुपयोग करेगी। उसने गरीबों और निराश्रितों की सेवा शुरू कर दी। वह सारा दिन गरीब बच्चों के चेहरों पर खुशियां लाने का प्रयास करती। उनके साथ हंसती-खेलती। उत्साह में उसके दिन तेजी से बीत रहे थे। एक दिन महिला ने कर्करोग पीड़ितों की सेवा हेतु देशवासियों से आर्थिक सहायता की अपील की। उसने जन-जन तक कर्करोग पीड़ितों की हालत बयां करने के लिए समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन आदि का सहारा लिया। लोगों ने तुरंत पैसा देना शुरू भी कर दिया। दो-तीन महीने में ही इतना धन एकत्र हो गया कि उनसे एडवांस तकनीक की तीन-चार मशीनें आ गईं और एक कर्करोग अस्पताल का निर्माण भी होने लगा। अपनी सफलता देखकर महिला का उत्साह चरम पर था। महिला इन कार्यों में इतनी व्यस्त रही कि उसे इस बात का भान ही न रहा कि वह खुद कर्करोग से पीड़ित है। एक साल बाद उसे ध्यान आया कि चिकित्सकों ने तो उसके जीवन के छह माह ही बाकी बताए थे। लेकिन अब वह पहले से अधिक स्वस्थ महसूस कर रही थी। जांच में पाया गया कि उसका कर्करोग गायब था। यह देख चिकित्सक दंग रह गए। महिला मुस्करा कर बोली, यह कर्करोग उत्साह और सेवा भावना से डरकर भाग गया है। सभी उसकी बात से सहमत थे।

९७७) ईमानदारी महान गुण है - नाव गंगा के इस पार खड़ी है। यात्रियों से लगभग भर चुकी है। रामनगर के लिए खुलने ही वाली है। बस एक दो सवारी चाहिए। उसी की बगल में एक नवयुवक खड़ा है। नाविक उसे पहचानता है। बोलता है- आ जाओ, खड़े क्यों हो, क्या रामनगर नहीं जाना है? नवयुवक ने कहा- जाना है, लेकिन आज मैं तुम्हारी नाव से नहीं जा सकता? क्यों भैया रोज तो इसी नाव से आते-जाते हो, आज क्या बात हो गई? आज मेरे पास उतराई देने के लिए पैसे नहीं हैं। तुम जाओ। अरे। यह भी कोई बात हुई। आज नहीं, तो कल दे देना। नवयुवक ने सोचा- बड़ी मुश्किल से तो मां मेरी पढ़ाई का खर्च जुटाती हैं। कल भी यदि पैसे का प्रबन्ध नहीं हुआ, तो कहां से दूंगा? उसने नाविक से कहा- तुम ले जाओ नौका, मैं नहीं जानेवाला। वह अपनी किताब कॉपियां एक हाथ में ऊपर उठा लेता है और छपाक से नदी में कूद जाता है। नाविक देखता ही रह गया। मुख से निकला- अजीब मनमौजी लड़का है। छप-छप करते नवयुवक गंगा नदी पार कर जाता है। रामनगर के तट पर अपनी किताबें रखकर कपड़े निचोड़ता है। भीगे कपड़े पहनकर वह घर पहुंचता है। मां रामदुलारी इस हालत में अपने बेटे को देखकर चिंतित हो उठी। अरे। तुम्हारे कपड़े तो भीगे हैं? जल्दी उतारो। नवयुवक ने सारी बात बतलाते हुए कहा- तुम्हीं बोलो मां, अपनी मजबूरी मल्लाह को क्यों बतलाता? फिर वह बेचारा तो खुद गरीब आदमी है। उसकी नाव पर बिना उतराई दिए बैठना कहां तक उचित था? यही सोचकर मैं नाव पर नहीं चढ़ा। गंगा पार करके आया हूं। मां रामदुलारी ने अपने पुत्र को सीने से लगाते हुए कहा- बेटा, तू जरूर एक दिन बड़ा आदमी

बनेगा। वह नवयुवक अन्य कोई नहीं लालबहादुर शास्त्री थे।

९७८) एक जिज्ञासु अपनी समस्याओं के समाधान के लिए संत तुकाराम के पास जा पहुंचा। उसने देखा तुकाराम एक दुकान में बैठे कारोबार में व्यस्त थे। वह दिनभर उनसे बात करने की प्रतीक्षा करता रहा और संत तुकाराम सामान तौल-तौल कर बेचते रहे। दिन ढला तो वह बोला, मैं आप जैसे परम ज्ञानी संत की शरण में ज्ञान पाने आया था, समाधान पाने आया था, लेकिन आप तो सारा दिन केवल दुकानदारी ही करते रहे। आप कैसे ज्ञानी हैं? आपको प्रभु भजन या धूप, दिया-बाती करते तो एक बार भी नहीं देखा। मैं समझ नहीं पाया कि लोग आपको संत क्यों मानते हैं? इस पर संत तुकाराम बोले, मेरे लिए मेरा काम ही पूजा है। मैं कारोबार भी प्रभु की आज्ञा मानकर करता हूं। जब-जब सामान तौलता हूं, तराजू के कांटे पर नजर रहने के साथ मेरे मन में यह सवाल रहता है कि तू जाग रहा है न? तू समता में स्थित है या नहीं? साथ-साथ हर बार ईश्वर का स्मरण करता हूं। मेरा हर पल और हर कार्य ईश्वर की आराधना है। इस तरह जिज्ञासु ने कर्म और भक्ति का पाठ सीख लिया।

कोई भी काम हो, कैसा भी उद्देश्य हो, उसमें सफलता सिर्फ प्रार्थना करने, दूसरों की खामियां निकालने, व्यवस्था को कोसने अथवा अभावों का रोना रोने से नहीं मिलती। किसी भी कार्य में सफलता तब मिलती है जब किसी उद्देश्य को लेकर हम एकाग्र हों और पूरे समर्पण से वह कार्य करें। फिर चाहे यह उद्देश्य ईश्वर को पाना ही क्यों न हो।

९७९) समय और सुख-दुख बदलता रहता है, हर हाल में रहो खुश - एक फकीर हज के लिए निकला। रात होने पर वह एक गांव में रहनेवाले शाकिर के यहां रुका। शाकिर ने फकीर की सेवा की। जाते समय फकीर को उपहार भी दिए। फकीर ने शाकिर के लिए दुआ की, खुदा करे तू खूब आगे बढ़े। शाकिर हंस पड़ा, बोला, अरे, फकीर। जो है यह भी नहीं रहनेवाला। फकीर वहां से चला गया।

दो वर्ष बाद फकीर फिर आया। शाकिर का सारा वैभव समाप्त हो चुका था। वह एक जमींदार के यहां नौकरी कर रहा था। शाकिर ने फकीर की अपनी हैसियत के अनुसार सेवा की। झोंपड़ी में फटी चटाई पर बिठाया। खाने के लिए सूखी रोटी दी। जाते समय फकीर दुखी होकर बोला, हो खुदा। ये तूने क्या किया?

शाकिर फिर हंसकर बोला, फकीर तू क्यों दुखी हो रहा है? हमें हर हाल में खुश रहना चाहिए। समय बदलता रहता है और सुनो। यह भी नहीं रहनेवाला।

फकीर सोचने लगा कि मैं तो केवल भेष से फकीर हूं। सच्चा फकीर तो यही है। दो वर्ष बाद फकीर फिर आया। शाकिर से मिला तो देखकर हैरान रह गया कि शाकिर तो अब जमींदारों का जमींदार बन गया है। मालूम हुआ कि जिस जमींदार के यहां शाकिर नौकरी करता था, उसके कोई संतान नहीं थी। मरते समय वह सारी जायदाद शाकिर को दे गया। फकीर ने शाकिर से कहा, वो दुख की घड़ी गुजर गई। खुदा करे, अब कोई मुसीबत ना आए। यह सुनकर शाकिर फिर हंस पड़ा। कहने लगा, फकीर। अभी भी तेरी नादानी बनीं हुई है। फकीर ने पूछा, क्या यह भी नहीं रहनेवाला?

शाकिर ने उत्तर दिया, हां, या तो यह चला जाएगा या फिर इसको अपना माननेवाला ही चला जाएगा। कुछ भी रहनेवाला नहीं है। फकीर वहां से चला गया।

फकीर करीब डेढ़ साल बाद आया तो देखता है कि शाकिर का महल वीरान पड़ा है। शाकिर जा चुका है। फकीर सोचने लगा, यहां कुछ भी टिकनेवाला नहीं है। दुख या सुख कुछ भी सदा नहीं रहता। हम सोचते हैं कि पड़ोसी मुसीबत में है और मैं मौज में हूं। लेकिन ना मौज रहती है और ना ही मुसीबत। सदा तो वही खुश रहता है, जो यह बात समझ लेता है।

९८०) मदद के तरीके कई हैं सिर्फ मन में तीव्र इच्छा चाहिए - मैं पैदल घर आ रहा था। रास्ते में एक बिजली के खंभे पर एक कागज लगा हुआ था। पास जाकर देखा, लिखा था: कृपया पढ़ें।

इस रास्ते पर मैंने कल एक ५० का नोट गंवा दिया है। मुझे ठीक से दिखाई नहीं देता। जिसे भी मिले कृपया इस पते पर दे सकते हैं। यह पढ़कर पता नहीं क्यों उस पते पर जाने की इच्छा हुई। पता याद रखा। यह उस गली के आखिरी में एक घर था। वहां जाकर आवाज लगाई तो एक वृद्धा लाठी के सहारे धीरे-धीरे बाहर आई। मुझे मालूम हुआ कि वह अकेली रहती है। उसे ठीक से दिखाई नहीं देता।

मां जी, मैंने कहा- आपका खोया हुआ ५० मुझे मिला है उसे देने आया हूं। यह सुन वह वृद्धा रोने लगी। बेटा, अभी तक करीब ५०-६० व्यक्ति मुझे ५०-५० रुपये दे चुके हैं। मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूं, ठीक से दिखाई नहीं देता। पता नहीं कौन मेरी इस हालत को देख मेरी मदद करने के उद्देश्य से लिख गया है।

बहुत ही कहने पर मां जी ने पैसे तो रख लिए। पर एक विनती की- बेटा, वह मैंने नहीं लिखा है। किसी ने मुझ पर तरस खाकर लिखा होगा। जाते-जाते उसे फाड़कर फेंक देना बेटा। मैंने हां कहकर टाल तो दिया पर मेरी अंतरात्मा ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि उन ५०-६० लोगों से भी मां ने यही कहा होगा। किसी ने भी नहीं फाड़ा। जिंदगी में हम कितने सही और कितने गलत हैं, ये सिर्फ दो ही शख्स जानते हैं।

परमात्मा और अपनी अंतरात्मा। मेरा हृदय उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता से भर गया जिसने इस वृद्धा की सेवा का उपाय ढूंढा। सहायता के तो बहुत से मार्ग हैं, पर इस तरह की सेवा मेरे हृदय को छू गई और मैंने भी उस कागज को फाड़ा नहीं। मदद के तरीके कई हैं सिर्फ कर्म करने की तीव्र इच्छा मन में होनी चाहिए।

९८१) महावत बन गया राजा - लकड़हारा जोर से हंस पड़ा और बोला, लकड़ी काटकर पेट भरनेवाला तुम्हारा पति गद्दी पर बैठनेवाला है। लो, इस मुर्गे को काटकर इसकी तरकारी बनाओ। उसने पत्नी के सामने मुर्गे के मांस का रहस्य खोल दिया। उसकी पत्नी खुशी से फूली न समायी। उसने उसी वक्त मुर्गे का मांस पकाया।

लकड़हारा बोला, पहले हम नदी में नहायेंगे, फिर खाना खायेंगे। इसके उन दोनों ने मुर्गे के मांस को एक मटके में भरकर उस पर ढक्कन लगाया और उसे साथ लेकर वे दोनों नदी की ओर चल पड़े। वे मटके को किनारे रखकर नहाने के लिए नदी में उतर पड़े। देखते-देखते नदी में बाढ़ आ गयी। मटका बाढ़ के पानी में बह गया।

लकड़हारा सर पीटते हुए बोला, हमारी किस्मत में राजा और रानी बनना नहीं बदा है। दोनों चिंता में डूबकर घर की ओर चल पड़े। उस वक्त बोधिसत्व को आतिथ्य देनेवाला महावत नदी में एक हाथी को नहला रहा था। पानी में बहनेवाले मटके पर उसकी नजर पड़ी।

उसने मटका उठाया और ढक्कन खोल कर देखा। थोड़ी ही देर पहले पकाया गया चावल और मांस उसमें पड़ा था। वह

नदी में ताजा भोजन बहता देख कर चकित था। वह भूखा था, इसलिए उसने तुरंत उसे खाकर अपनी भूख मिटा ली। इस घटना के तीन दिन बाद दुश्मन ने वाराणसी पर हमला बोल दिया। राजा ने शत्रु द्वारा मारे जाने के डर से महावत का वेष धारण कर लिया और महावत को अपना वेष पहना दिया।

शत्रु राजा ने राजा को जीवित पकड़ने की योजना बनाई। इसलिए दुश्मनों ने महाराजा को बंदी बनाने के लिए महावत पर बाणों की वर्षा की। वे लोग नहीं जानते थे कि महावत के वेष में रहनेवाला व्यक्ति ही उस देश का राजा है।

बाणों के आघात से महावत के वेष में राजा मर गया। पर महावत ने दुश्मन के साथ बदला लेने के ख्याल से डटकर उनका सामना किया। इस पर वाराणसी के सैनिकों की हिम्मत बढ़ गयी। वे भूखे सिंह-शावकों की भांति दुश्मन पर टूट पड़े। थोड़ी ही देर में दुश्मन के अधिकतर सैनिक मारे गये और बाकी भाग खड़े हुए। तब उनका राजा महावत के भाले की चोट खाकर वहीं पर ठंडा हो गया।

लड़ाई समाप्त होने पर मंत्री और राज-कर्मचारियों को पता चल गया कि शत्रु पर विजय का कारण उनका राजा नहीं, बल्कि महावत है। महाराजा का देहांत हो चुका था। पर उनकी जगह उन्हें एक और राजा की जरूरत थी। वैसे मृत राजा के कोई संतान भी न थी।

राज पुरोहित ने सलाह दी कि वाराणसी के राजा ने स्वयं अपने पोशाकें महावत को दी थीं, इसलिए महावत ही राजा बनने के योग्य है। प्रधानमंत्री ने उसका समर्थन करते हुए कहा- महावत की वीरता के कारण ही शत्रु पर हमें विजय मिली। इसलिए वहीं राजा बनने योग्य है।

९८२) बीरबल एक सच्चे दोस्त - बीरबल से भला कौन परिचित नहीं है। वे सम्राट अकबर के दरबारी नवरत्नों में से एक थे और अपनी विनोद प्रियता एवं सूझबूझ के कारण अकबर को अत्यंत प्रिय थे। वे अकबर के इतने प्रिय थे कि बीरबल को हमेशा अपने साथ रखते थे, यहां तक कि युद्ध के समय भी वे उन्हें अपनी आंखों से ओझल नहीं होने देते। बीरबल की विनोदप्रियता के किस्से दूर दूर तक फैले थे। वे अकबर के इतना निकट थे कि राज्य के दरबारी अधिकारी उनसे ईर्ष्या करते। कहा जाता है कि बीरबल नहीं रहे तो अकबर ने कई दिनों तक खाना नहीं खाया, यहां तक कि मारे दु:ख के लोगों से बोलना छोड़ दिया था।

बीरबल में बहुत से गुण थे जिसकी वजह से अकबर ने उन्हें विशेष ओहदे दिए थे। वे एक उच्चकोटि के योद्धा भी थे। वे एक उत्कृष्ट तलवारबाज थे एवं उन्होंने अनेक युद्ध में भाग लिया था। इतिहासकार बदायूंनी ने अनेक जगहों में बीरबल के पराक्रम का वर्णन किया है। वास्तव में, बीरबल का नाम महेशदास था एवं वे ब्राह्मण थे। उनकी वीरता से प्रभावित होकर अकबर उन्हें वीरवर या वीरवल पुकारते। स्पष्ट है कि बदायूंनी ने लिखा है कि अकबर ने अटक से जिस सेना को युसुफजई कबीले का दमन करने भेजा था उसका नेतृत्व बीरबल ने ही किया था।

बीरबल उच्चकोटि के एक कवि थे और ब्रजभाषा में ऊंचे दर्जे की कविताएं लिखते थे। उनकी कविताओं में उनके गहन तात्विक विचारों की अभिव्यक्ति हुई हैं। बीरबल की काव्य प्रतिभा से ही प्रभावित होकर अकबर ने उन्हें कविराज की उपाधि दी थम। बीरबल उच्चकोटि के एक दार्शनिक भी थे। उनका आध्यात्मिक ज्ञान काफी विशद था। अकबर अक्सर

उनसे धार्मिक विषयों पर चर्चा करना पसंद करते थे। अबुल फजल ने आइने-अकबरी में उनकी दार्शनिक प्रवृत्ति का उल्लेख किया है। उनका वाक्चातुर्य निराला था। अकबर ने कई स्थानों पर उन्हें अपना दूत बनाकर भेजा। बीरबल शाही मनसबदार भी थे। सबसे बड़ी बात यह कि बीरबल स्वयं राजा थे एवं नगरकोट पर शासन करते थे। राजा के रूप में एक कुशलप्रशासक एवं न्यायविद् थे।

बीरबल का विदूषक वाला रूप सिर्फ किस्सों एवं कहानियों में ही मिलता है जो झूठा एवं अविश्वसनीय है। अंग्रेज इतिहासकारों ने इन झूठे किस्सों को ओर हवा दी। फलत: कवि, पराक्रमी एवं विनोदप्रिय बीरबल को लोग सिर्फ विदूषक के रूप में ही जान पाए।

युसुफजई कबीले को हरा कर जब वे मलंदराई दर्रे से होकर लौट रहे थे कि कबाइलियों ने शाही सेना पर पुन: हमला बोल दिया। लड़ाई इतनी घमासान थी कि करीब आठ हजार शाही सैनिक मारे गए। बीरबल भी वीरगति को प्राप्त हुए। दुर्भाग्य से बीरबल का शव भी न मिल सका।

बीरबल की मृत्यु का समाचार सुन अकबर भावविह्वल हो गए। उन्होंने कई दिनों तक कुछ भी नहीं खाया-पीया। यहां तक कि लोगों से बोलना तक छोड़ दिया था। अकबर ने सेनापति जैन खां को लताड़ा कि हार हुई तो क्या हुआ, कम से कम बीरबल का तो शव लाते। दाहसंस्कार तो किया जाता। बहुत कोशिश करने के बाद भी बीरबल का कुछ भी पता नहीं चल सका। बाद में यह अफवाह फैली कि बीरबल जिंदा हैं और संन्यासी बनकर नगरकोट में रह रहे हैं तो कुछ ने कहा, वे कालिंजर में हैं। अपने अतिशय प्रेम के कारण अकबर ने अपने आदमी दोनों स्थानों पर भेजे, पर ये अफवाहें झूठी निकलीं। एक अच्छे दोस्त को खोकर अकबर को बहुत अफसोस हुआ।

९८३) मेहनत का रास्ता - एक गांव में १२ वर्षीय बालक दीपक अपने परिवार के साथ रहता था। एक दिन उसके पिताजी खेत में काम कर रहे थे। तभी वह वहां पहुंच गया। वह खेत में बीज डाल रहे थे। दीपक ने जिज्ञासावश पूछा, पिताजी, आप इन बीजों को जमीन पर क्यों फेंक रहे हैं? पिताजी उसका सवाल सुनकर हंसने लगे। वह बोले, बेटे, मैं बीज फेंक नहीं रहा हूं, उन्हें बो रहा हूं। अभी दीपक आगे प्रश्न पूछता, तभी पिताजी बोल पड़े। इसके बाद इन बीजों को पानी देना होगा। फिर इनमें अंकुरण होगा और इनमें से पौधे निकलेंगे, जो हमारी सेवा के बाद बड़े होकर हमें अन्न या फल देंगे। दीपक ने पिताजी से पूछा, तब तो इसमें काफी समय लगेगा। उनका जवाब था, हां, बिल्कुल। इसमें खूब समय लगेगा, लेकिन जब यह पौधे हमें कुछ देंगे, तब हमारी मेहनत सफल मानी जाएगी। तुमने भी तो सुना होगा कि मेहनत का फल मीठा होता है। इसलिए हमें खूब मेहनत करनी चाहिए और फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। इसी तरह तुम भी पढ़ाई में खूब मेहनत करो, तभी जाकर अच्छे अंकों से पास होंगे और तुम्हारे स्वर्णिम भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा। पिताजी की बात सुनकर दीपक को समझ में आ गया कि वाकई मेहनत का फल मीठा होता है।

९८४) सत्य के प्रति दृढ़ता - परीक्षाफल सुनाने प्राचार्य खड़े हुए। सभी विद्यार्थियों के नाम पढ़े जाने के बाद एक शिक्षार्थी खड़ा हुआ और बोला- मेरा नाम नहीं बोला गया। अनुशासनप्रिय प्राचार्य ने कहा- तुम अनुत्तीर्ण होंगे। उस वर्ष वह बालक बहुत लम्बे समय तक मलेरिया ज्वर से पीड़ित था, किन्तु अपनी सफलता पर उसे इतना विश्वास था कि वह

बोल पड़ा- नहीं ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा ही है। प्राचार्य ने दृढ़तापूर्वक कहा। नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं कहता हूं बैठ जाओ और कुछ भी बोले तो जुर्माना होगा। मैं उत्तीर्ण हूं इसमें संदेह नहीं। बालक बोला। पांच रुपये जुर्माना। कुछ भी हो मैं उत्तीर्ण हूं। दस रुपये। बालक बोलता रहा और प्राचार्य ५-५ रुपये बढ़ाते गए। नीलामी की बोली जैसा दंड बढ़ता हुआ ५० रुपये के लगभग हो गया। गुरु शिष्य के अनुशासन और आत्मविश्वास दोनों में होड़ लगी थी। तभी लिपिक दौड़ता हुआ प्राचार्य के पास आया और बालक को संकेत से समझा दिया। बालक बैठ गया। बाद में पता चला कि बालक ने सर्वोच्च अंक पाए थे। यह बालक था राजेंद्र प्रसाद जो आगे चलकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने।

९८५) प्रेम से जीतो दिल - एक बार एक अनजबी किसी के घर गया। वह अंदर गया और मेहमान कक्ष में बैठ गया। वह खाली हाथ आया था तो उसने सोचा कि कुछ उपहार देना अच्छा रहेगा। तो उसने वहां टंगी एक पेंटिंग उतारी और जब घर का मालिक आया, उसने पेंटिंग देते हुए कहा, यह मैं आपके लिए लाया हूं। घर का मालिक, जिसे पता था कि यह मेरी चीज मुझे ही भेंट दे रहा है, सन्न रह गया। क्या वह भेंट पाकर, जो कि पहले से ही उसकी है, उस आदमी को खुश होना चाहिए? नहीं न, लेकिन यही चीज हम भगवान के साथ भी करते हैं। हम उन्हें फूल, फल और हर चीज जो उनकी ही बनाई है, उन्हें भेंट करते हैं और सोचते हैं कि ईश्वर खुश हो जाएंगे। हम यह नहीं समझते कि उनको इन सब चीजों कि जरूरत नहीं। अगर आप सच में उन्हें कुछ देना चाहते हैं तो अपना प्यार दीजिए, उन्हें अपने हर एक श्वास में याद करके और विश्वास मानिए प्रभु जरूर खुश होगा। महानता से बिल्कुल न डरें। कुछ लोग महान पैदा होते हैं, कुछ महानता हासिल करते हैं और कुछ लोगों में महानता समाहित होती है।

९८६) अस्तित्व - एक बार देवी लक्ष्मी पृथ्वी भ्रमण कर रही थी। उन्होंने देखा एक मूर्तिकार के यहां अन्य देवी-देवताओं की मूर्ति के साथ लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की मूर्ति भी बिक्री के लिए रखी गई है। देवी लक्ष्मी ने एक युवती का रूप धारण किया। सरस्वती की मूर्ति की ओर इशारा करते हुए उन्होंने पूछा, इसकी क्या कीमत है? मूर्तिकार ने कहा, बहनजी इसकी कीमत दो सौ रुपए है। देवी लक्ष्मी बहुत प्रसन्न हुई। उन्होंने सोचा, दुनिया में सरस्वती की कीमत सिर्फ दो सौ रुपए है। फिर उन्होंने दुर्गा की मूर्ति की ओर इशारा करते हुए पूछा, इसकी क्या कीमत है? मूर्तिकार ने कहा, बहनजी, इसकी कीमत भी दो सौ रूपए है। देवी लक्ष्मी ने सोचा, दुनिया में सरस्वती और दुर्गा एक ही भाव बिकती हैं। फिर उन्होंने स्वयं अपनी, लक्ष्मी की मूर्ति, की ओर इशारा करते हुए पूछा, इसकी क्या कीमत है मूर्तिकार ने कहा, बहनजी, जो भी हमारे यहां से सरस्वती और दुर्गा की मूर्ति खरीदते हैं, उनको हम यह मूर्ति भेंट में देते हैं। कारण, लोग लक्ष्मी देकर कोई लक्ष्मी नहीं खरीदता। मूर्तिकार की बात से देवी लक्ष्मी ने मन ही मन कहा मैं तो खुद को ही सबसे बड़ी मानकर चल रही थी लेकिन सरस्वती और दुर्गा के बिना तो मेरा अस्तित्व कुछ भी नहीं है।

९८७) कलाम की दरियादिली - थुम्बा में रॉकेट प्रक्षेपण स्टेशन पर वैज्ञानिक एक दिन में लगभग १२ से १८ घंटे के लिए काम करते थे। इस परियोजना पर काम कर रहे वैज्ञानिकों की संख्या ७० के लगभग थी। एक दिन सुबह ९ बजे एक वैज्ञानिक अपने बॉस के पास आया और उनसे कहा, सर, मैंने अपने बच्चों को वादा किया है कि मैं उन्हें प्रदर्शनी दिखाने के लिए ले जाऊँगा इसलिए मैं शाम ५.३० बजे कार्यालय छोड़ना चाहता हूं। बॉस ने कहा, ठीक है। वैज्ञानिक ने काम

शुरू कर दिया। उसने दोपहर के भोजन के बाद भी अपना काम जारी रखा। हमेशा की तरह वह इस हद तक अपने काम में व्यस्त थे कि जब उन्होंने घड़ी में देखा तो ८.३० बज चुके थे। अचानक उन्हें अपना वह वादा, जो उसने अपने बच्चों को किया था, याद आया। वो घर के लिए चल दिया। बच्चे वहां नहीं थे। पत्नी अकेली हॉल में बैठी थी और पत्रिकाओं को पढ़ने में मशगूल थी। स्थिति विस्फोटक थी, उसे लगा कोई भी बात करने पर वह उस पर फट पड़ेगी। उन्होंने पूछा बच्चे कहां है? पत्नी ने कहा- आपको नहीं पता, आपके बॉस ५.१५ बजे आए और प्रदर्शनी के लिए बच्चों को ले गए। बॉस ने दी गई अनुमति के अनुसार उसे ५.०० बजे गंभीरता से काम करते देखा और सोचा कि यह व्यक्ति काम को नहीं छोड़ सकता है, लेकिन उसने अपने बच्चों से वादा किया है कि वो उन्हें प्रदर्शनी के लिए ले जाएगा। तो वह उन्हें प्रदर्शनी के लिए स्वयं लेकर गए। वो बॉस थे हमारे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम।

९८८) पापी का भविष्य - एक बार एक चोर राजा के महल से चोरी करके भागा। सिपाहियों की एक टुकड़ी उसका पीछा करने लगी। भागते-भागते वह थक गया। सामने एक ऋषि का आश्रम देख वह उसी में घुस गया। चुराई हुई वस्तुओं को वहीं छिपाकर वह पिछवाड़े से पुन: निकल भागा। सिपाहियों ने उसे आश्रम में घुसते देखा था। उन्होंने आश्रम का कोना-कोना छान मारा। तलाशी में उन्हें चुराई हुई वस्तुएं मिल गईं। अत: वे माल सहित ऋषि को पकड़कर राजा के समक्ष ले आए। तब चोर की सजा एक ही हुआ करती थी- फांसी। ऋषि को भी फांसी की सजा सुनाई गई। पर राजा ने देखा कि फांसी की सजा सुनकर भी ऋषि एकदम शांत है, जैसे कुछ हुआ ही न हो। राजा को शक हुआ। उन्होंने ऋषि से सच्चाई पूछी। ऋषि ने सच्चाई बता दी। राजा ने ऋषि को रिहा कर दिया। ऋषि को यमराज के इस कृत्य पर बहुत गुस्सा आया। आखिर एक तपस्वी के साथ इस तरह का मजाक करने की उनकी हिम्मत कैसे हुई। वे सीधा यमपुरी जा पहुंचे। यमराज ने शांत स्वर में कहा, ऋषिराज, क्रोध न करिए। यह मजाक नहीं था। आपको शायद याद न होगा। आप जब ३ साल के बालक थे, आपने एक तितली का पंख अपने हाथों से तोड़ दिया था। यह सजा उसी पाप की है।

९८९) सच्चे ज्ञान की खोज - एक राजा ने अपने मंत्रिपरिषद के समक्ष तीन प्रश्न किए। पहला- सबसे अच्छा मित्र कौन? दूसरा- सबसे अच्छा समय कौन? तीसरा- सबसे अच्छा काम कौन? प्रत्येक मंत्री ने उत्तर अलग-अलग सुझाए। किसी ने कहा- ज्योतिषी द्वारा निर्धारित समय, कर्म तथा मित्र सर्वश्रेष्ठ हैं, किसी ने राजा के मित्र के रूप में मंत्री और सेनापति के नाम सुझाए। इन बातों से राजा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह जंगल की ओर चला, जहां एक ऋषि रहते थे। शाम के समय राजा अपने सिपाहियों सहित घोड़े पर सवार वन में पहुंचा। देखा ऋषि तो वहां नहीं, लेकिन एक कुटिया के बगल में एक बूढ़ा व्यक्ति खेत में काम कर रहा है। अपने सिपाहियों को बाहर खड़ा रहने का आदेश देकर उस बूढ़े के निकट गया। ऋषि के बारे में पूछा। बूढ़े ने कहा- यह नाम तो उसी का है। राजा ने तीनों प्रश्न ऋषि से किए। ऋषि बीज बो रहे थे, राजा से भी मदद करने को कहा। राजा बीज बोता रहा, लेकिन उसे अपने प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं मिला। जब अंधेरा घना हो गया, तो एक घायल के कराहने, चिल्लाने की आवाज सुनायी पड़ी। ऋषि ने राजा से कहा- चलें इसकी मदद करें। घायल व्यक्ति कराह रहा था। जब उसे होश आया तो वह राजा को देखते ही उसके चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगने लगा। राजा को आश्चर्य हुआ कि यह कौन मनुष्य है? वस्तुत: वह राजा को मारने आया था, लेकिन सिपाहियों ने

उसे घायल कर दिया था। अब वह राजा से ही क्षमा-याचना करने लगा। राजा को अपने प्रश्नों का उत्तर अभी तक नहीं मिला था। उन्होंने ऋषि से पूछा तो ऋषि ने कहा- आपके प्रश्नों का उत्तर तो मिल गया। सबसे अच्छा मित्र आपके सामनेवाला है। सबसे अच्छा समय वर्तमान और सबसे अच्छा कर्म उपस्थित कर्म है। यदि ऐसा न होता, तो यह व्यक्ति आपका मित्र कैसे हो जाता, जो आपकी हत्या करने आया था?

९९०) निस्वार्थ प्रेम की शक्ति - बात १९ वीं सदी के उत्तरार्ध की है। मुंशीराम के पास रुपयों की कोई कमी नहीं थी और कोतवाल पिता के पद के कारण अहंकार भी बहुत था। उसका मन हमेशा आमोद-प्रमोद में लगा रहता था। इसके चलते हर संभव दुर्गुण उसमें था। समय आने पर उसका विवाह शिवदेवी नाम की एक सुसंस्कृत कन्या से कर दिया गया, लेकिन इसके बाद भी मुंशीराम की विलासी जीवनशैली पहले की तरह जारी रही। पति की खराब जीवनशैली को देखकर शिवदेवी को बहुत दुख हुआ। उनका चरित्र त्याग, श्रद्धा, उदारता और प्रेम जैसे दैवीय गुणों से परिपूर्ण था। उन्होंने महसूस किया कि जो काम शब्दों से संभव नहीं, उसे प्रेम से ही किया जा सकता है। रोजाना पति के लौटने के बाद उसे भोजन कराकर ही वह खुद भोजन करती थीं। एक बार मुंशीराम देर रात घर पहुंचा। शिवदेवी ने सेवाभाव से उसके पैर दबाना शुरू कर दिया। जब मुंशीराम की आंख खुली तो देखा कि आग के सामने आटा गुंथा रखा था और शिवदेवी पैर दबाते-दबाते बिना कुछ खाए-पिए भूखी सो चुकी थीं। यह देखकर मुंशीराम का हृदय पश्चाताप की आग से जल उठा। उसे महसूस हुआ कि उसकी वजह से शिवदेवी को न जाने कितनी रातें भूखी गुजारनी पड़ीं, लेकिन उन्होंने कभी कुछ नहीं कहा और नि:स्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्य में लगी रहीं। इस घटना के बाद मुंशीराम का हृदय पूरी तरह से परिवर्तित हो गया और उन्होंने अपना बाकी जीवन जनकार्य में लगा दिया।

९९१) अपनी अपनी जमीन - चांदनी रात में ठंड़ी रेत पर देसी खेलों में भाग ले रहे विदेशी कितने भले लग रहे थे। जैसलमेर के विशाल रेगिस्तान में स्वर्गिक आनंद वह क्यों नहीं लूट सकता। हजारों-हजारों किलोमीटर दूर से आए विदेशी लोग रसा खेंच, पगड़ी बांध प्रतियोगिता व ऊंट दौड़ में सहभागी बन रहे थे। उसने एक ठंडी सांस ली और दूरदर्शन पर आ रहे जैसलमेर के इस प्रोग्राम को देख छत पर चला गया। चारों तरफ चांदनी बिखरी पड़ी थी। उसे लगा कि ओसभरी ठंड के कारण फरफुरी सी उठने लगी थी उसमें। क्यों खामख्वाह छत पर आ गया। छत पर आना ही था, वरना वह बच्चे फिर जिद करेंगे। पापा इस बार हमें जैसलमेर जरूर ले जाना। किराये में गजब की वृद्धि हुई है इस बीच। अब वह बच्चों को कैसे समझाये कि राजस्थान में रहते हुए भी जैसलमेर पहुंचने में दस-बारह घंटे लगेंगे। अठै ठंड मैं के कर रया है? सेवानिवृत्त पिता ने खांसते हुए पूछा तो वह बोला- बस बाऊजी, जरा जी मितला रहा था। उसने अंदाजा लगाया कि पिता जरूर अपनी दवाई के बारे में पूछूंगे। अत: वह स्वत: ही बोल पड़ा- वो आपकी दवाई मैं दफ्तर में ही भूल आया था। उसे लगा कि वह सरासर झूठ बोल रहा था। दवाई आ जावैगी, म्हारे देस रा घणा नीक कार्यक्रम आ रया है, चल देख। उसने एक क्षण को देखा, पिता के मुरझाये चेहरे पर एक अपूर्व शांति सी झलक रही थी। अपनी धरती के दृश्य आदमी को कितनी खुशी दे जाते हैं, उसने सोचा। वह पिता को इस बार जरूर जैसलमेर ले जाएगा। चाहे जी पी फंड से पैसा क्यों न निकालना पड़े।

९९२) एक घंटे का समय कैसे खरीदोगे? - एक कंजूस व्यक्ति ने जीवन भर कंजूसी करके पांच लाख दीनार एकत्रित कर लिये। इस एकत्रित धन की बदौलत वह एक साल तक बिना कोई काम किए चैन की बंशी बजाने के स्वप्न देखने लगा। इसके पहले कि वह उस धन को निवेश करने का इरादा कर पाता, यमदूत ने उसके दरवाजे पर दस्तक दे दी। उस व्यक्ति ने यमदूत से कुछ समय देने की प्रार्थना की परंतु यमदूत टस से मस नहीं हुआ। उसने याचना की कि मुझे तीन दिन की जिंदगी दे दो, मैं तुम्हें अपना आधा धन दे दूंगा। पर यमदूत ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। उस व्यक्ति ने फिर प्रार्थना की, मैं आपसे एक दिन की जिंदगी की भीख मांगता हूं। इसके बदले तुम मेरी वर्षों की मेहनत से जोड़ा गया पूरा धन ले लो पर यमदूत फिर भी अडिग रहा। अपनी तमाम अनुनय-विनय के बाद उसे यमदूत से सिर्फ इतनी मोहलत मिली कि वह एक संदेश लिख सके। उस व्यक्ति ने अपने संदेश में लिखा- जिस किसी को भी यह संदेश मिले, उससे मैं सिर्फ इतना कहूंगा कि वह जीवनभर सिर्फ संपत्ति जोड़ने की फिराक में न रहे। जिंदगी का एक-एक पल पूरी तरह से जियो। मेरे पांच लाख दीनार भी मेरे लिए एक घंटे का समय नहीं खरीद सके।

९९३) वास्तविकता - वास्तविकता का बोध मस्तिष्क के स्तर और व्यक्ति की सोच पर निर्भर करता है। एक बार व्यास ने चार्वाक से पूछा, चार्वाक। क्या कभी तुमने यह अनुभव किया है कि तुम कहाँसे आए हो, कहाँ तुम्हें जाना है और इस जीवन का उद्देश्य क्या है? चार्वाक का उत्तर था, मै। अपने चाचा के घर से आया हूं और बाजार जा रहा हूं। मेरा उद्देश्य है अच्छी-सी ताजी सब्जी खरीदना। यही प्रश्न गोविंदप्पा ने शंकर से पूछा तो शंकर का जवाब था, मैं संपूर्णता को महसूस करना ही मेरे जीवन का उद्देश्य है। बुद्ध के प्रश्न पर महाकश्यप का प्रत्युत्तर था, मैं शून्य से आया हूं, शून्य में मुझे जाना है और मेरे जीवन का उद्देश्य भी शून्य ही है। अष्टावक्र ने जनक से जब यही प्रश्न पूछा तो जनक ने जवाब दिया, मैं न तो आया हूं, न कहीं जाऊंगा। और न ही कोई उद्देश्य है। कृष्ण मुस्कुराए और कुछ नहीं पूछा, भीष्म मुस्कुराए और कोई जवाब नहीं दिया। सत्य के बोध के लिए हर एक का दृष्टिकोण अलग होता है।

९९४) पथ का निर्माण - जंगल में चराई के बाद किसी बछड़े को गांव की गौशाला तक लौटना था। नन्हा बछड़ा था तो अबोध ही, वह चट्टानों, मिट्टी के टीलों और ढलानों पर से उछलता-कूदता हुआ अपने गंतव्य तक पहुंचने में सफल हो गया। अगले दिन एक कुत्ते ने भी गांव तक पहुंचने के लिए उसी रास्ते का इस्तेमाल किया। उसके अगले दिन एक भेड़ उस रास्ते पर चल पड़ी। एक भेड़ के पीछे अनेक भेड़ चल पड़ीं। भेड़ जो ठहरीं। उस रास्ते पर चलीफिरी के निशान देखकर लोगों ने भी उसका इस्तेमाल शुरू कर दिया। ऊंची-नीची पथरीली जमीन पर आते-जाते समय वे पथ की दुरूहता को कोसते रहते- पथ था ही ऐसा। लेकिन किसी ने भी सरल-सुगम पथ की खोज के लिए प्रयास नहीं किये। समय बीतते के साथ वह पगडंडी उस गांव तक पहुंचने का मुख्य मार्ग बन गयी जिस पर बेचारे पशु बमुश्किल गाड़ी खींचते रहते। उस कठिन पथ के स्थान पर कोई सुगम पथ होता तो लोगों को यात्रा में न केवल समय की बचत होती वरन वे सुरक्षित भी रहते। कालांतर में वह गांव एक नगर बन गया और पथ राजमार्ग बन गया। उस पथ की समस्याओं पर चर्चा करते रहने के अतिरिक्त किसी ने कभी कुछ नहीं किया। बूढ़ा जंगल यह सब बहुत लंबे समय से देख रहा था। वह बरबस मुस्कुराता और यह सोचता रहता कि मनुष्य हमेशा ही सामने खुले पड़े विकल्प को मजबूती से जकड़ लेते हैं और यह

विचार नहीं करते कि कहीं कुछ उससे बेहतर भी किया जा सकता है।

९९५) अपेक्षा - रीमा, तुमने नीलेश को फोन कर दिया था न तत्काल में रिजर्वेशन कराने के लिए? सुमित ने नाश्ते की प्लेट अपनी ओर सरकाते हुए पूछा। जी, उसी के फोन का इंतजार कर रही हूं। रिजर्वेशन मिल जाए तो अच्छा है, आशा मेरे बचपन की सहेली है, उसके बेटे की शादी में जाने का बहुत मन है मेरा, उसने भी बहुत जोर देकर आग्रह किया था। फिर हमारे यहां भी तो आई थी न वो शादी में, तो जाना तो जरूरी-सा है। चाय का सिप भरते हुए रीमा ने कहा। ट्रिन-ट्रिन कर फोन बज उठा। बड़े उत्साह से रीमा ने फोन उठाया, हां बेटा, क्या रहा रिजर्वेशन का? सॉरी मां, नहीं मिल पाया। ठीक है बेटा, कोई बात नहीं। कोई जाना ऐसा जरूरी भी नहीं था। कहकर उसने फोन काट दिया। पर सुमित से उसके मनोभाव छिप न सके। मुंह नीचे करके वह नाश्ता करने लगी। ट्रेन में नहीं मिला टिकट तो प्लेन से कराने को कह देतीं। नहीं, क्यों कहती? आखिर बेटा है हमारा वह हमारा अधिकार है उस पर। तो, उसका भी फर्ज बनता था, वह भी तो कह सकता था न। कहते हुए रीमा की आवाज भर्रा गई। लाओ फोन दो, मैं ही कह देता हूं। उसे सुबकते हुए देखकर सुमित से रहा नहीं गया। नहीं, कसम है आपको मेरी, आप भी नहीं कहेंगे कुछ। रीमा रुआंसी-सी लगभग फोन उठाकर पटकने को ही थी कि फोन फिर घनघना उठा। माँ, मैंने आपको प्लेन का टिकट करा दिया है, आप प्रिंट आउट निकाल लेना और ध्यान से जाना। उधर से आवाज आई। आंखों में आंसू व होठों पर मुस्कान का मिलन देख सुमित ने मुस्कराते हुए मिठाई उसकी ओर बढ़ा दी।

९९६) सदैव भगवान के साथ - महाकश्यप भगवान बुद्ध के प्रिय शिष्य थे। बुद्ध उनकी त्याग भावना तथा ज्ञान से संतुष्ट होकर बोले- वत्स, तुम आत्मज्ञान से पूरी तरह मंडित हो। तुम्हारे पास वह सब है, जो मेरे पास है। अब जाओ और सत्संदेश का जगह-जगह प्रचार-प्रसार करो। महाकश्यप ने ये शब्द सुने, तो वे मायूस हो गए। वह बोले, गुरुदेव यदि मुझे पहले से पता होता कि आत्मज्ञान का ज्ञान होने के बाद आपसे दूर जाना पड़ता, तो मैं इसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न नहीं करता। मुझे आपके सानिध्य में रहने में, आपके चरण स्पर्श करने में जो परमानंद की प्राप्ति होती है। उससे मैं वंचित नहीं होना चाहता हूं। मैं अपने आत्मज्ञान को भुला देना चाहता हूं। भगवान बुद्ध ने अपने इस अनूठे शिष्य को गले लगा लिया। उन्होंने उसे समझाया, तुम सद्विचारों व ज्ञान का प्रचार करते समय जहां भी रहोगे, मुझे अपने निकट देखोगे। मेरा हाथ सदैव तुम्हारे साथ रहेगा।

९९७) सच्ची पूजा - उठो। अरे, उठो भी। जाना नहीं है क्या? सुबह-सुबह पत्नी के मुख से जाने की बात सुन, मैं कुछ सकपका सा गया। आज तो छुट्टी है, फिर कहां? प्रश्नवाचक निगाहों से, मैंने उनकी तरफ देखा। आप भी न भूल जाते हो, कल ही तो बोला था कि आज शिव मंदिर चलेंगे। हम दोनों ही पूजा का सामान ले, मंदिर की तरफ निकल पड़े। काफी दूर निकल आए तो पत्नी ने अचानक रुकते हुए पूछा, टेबल पर दूध रखा था वो कहां है? कहां ध्यान रहता है आपका सहसा, सामने की एक दूकान की ओर संकेत करते हुए मैं पत्नी से बोला दूध सामने की दूकान से ले आता हूं दो पैकेट ले लेना दो पैकेट। पुन: कुछ न बोल, दूध ले लिया। आगे एक कूड़ादान था जिसके पास एक बुढ़ा शायद कुछ तलाश रहा था। उस बुढ़े ने कूड़ेदान से एक डिब्बा निकला, जो किसी ने फेंक दिया होगा। बुढ़े के होठों

पर हल्की सी मुस्कान आ गयी। उसने वो डिब्बा लिया और वहीं एक किनारे बैठकर उसे खोलने लगा। मुझे जाने क्या हुआ। मैं उस व्यक्ति के समीप जाकर उससे बोला, बाबा इसे मत खाओ खराब हो गया है। वह कातर नजरों से एकटक मुझे देख रहा था। मानो कह रहा हो, इतनी मुश्किल से मिला खाना भी न खाऊं। मैंने दूध के दोनों पैकेट उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, लो, ये पी लो उसे जैसे सहज विश्वास ही नहीं हो रहा था, मेरे पुन: आग्रह करने पर उसने वे पैकेट पकड़ लिए। सामने से सूरज की किरनें पड़ रही थी जिनकी चमक से मेरी आंखों में पानी आ रहा था। मेरी पत्नी दूर से मुझे देख रही थी। उसकी आंखें भी नम थी।

९९८) दो पैसे का मेला - यह घटना सन १९४२ की है। इलाहाबाद में कुंभ के मेले की धूम मची हुई थी। भारत के वायसराय उन दिनों लार्ड लिनलिथगो थे। वह भी कुंभ का मेला देखने के लिए पंडित मदनमोहन मालवीय जी के साथ इलाहाबाद पहुंचे। उन्होंने देखा कि कुंभ में देश के विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न जातियों और समूहों के लोग विभिन्न वेशभूषाओं में सजकर आए हुए हैं। यह सब देखकर वायसराय हैरान हुए और मालवीय जी से पूछा, इस मेले में लोगों को इकट्ठा करने के लिए प्रचार-प्रसार पर तो काफी रुपया खर्च होता होगा। कुछ अनुमान है कि कितना रुपया लग जाता है? यह सुनकर मालवीय जी मुस्कराते हुए बोले, मात्र दो पैसे। यह सुनकर वायसराय दंग रह गए और बोले, क्या कहा आपने? मात्र दो पैसे? भला यह कैसे संभव है? भला दो पैसे से यहां इतनी भीड़ कैसे जुटाई जा सकती है? वायसराय की बात सुनकर मालवीय जी ने अपने पास से पंचांग निकाला और उसे दिखाते हुए बोले, इस दो पैसे के पंचांग से देश भर के श्रद्धालु यह पता लगाते ही कि कौन सा पर्व कब है, स्वयं श्रद्धा के वशीभूत होकर तीर्थयात्रा को निकल पड़ते हैं। धार्मिक संस्थाओं व सभाओं को कभी भी न प्रचार की आवश्यकता पड़ती है और न ही इन लोगों को निमंत्रण भेजने की। मालवीय जी की बात सुनकर वायसराय को हैरानी हुई। उन्होंने कहा, वाकई यह तो बड़े अचरज की बात है। मालवीय जी उनकी बात का जवाब देते हुए बोले, अचरज की बात नहीं जनाब, यह मेला श्रद्धालुओं का अनूठा संगम है। यहां सब अपने आप खिंचे चले आते हैं। वायसराय श्रद्धालुओं के प्रति नतमस्तक हो गए।

९९९) राष्ट्रपति के रिश्तेदार - यह घटना उस समय की है, जब डॉ. जाकिर हुसैन देश के राष्ट्रपति थे। उनसे मिलने अक्सर उनके संबंधी आते रहते और दूर-दराज के लोग भी उन्हें निकटतम संबंधी बनाकर उनसे सिफारिश करने के लिए कहते थे। एक दिन उन्हें एक रिश्तेदार का पत्र मिला। रिश्तेदार ने अपना एक काम करवाने का अनुरोध किया था। जब डॉ. हुसैन ने उनका काम नहीं किया तो वह उनसे मिलने चले आए। डॉ. हुसैन अत्यंत विनम्रता के साथ उनसे मिले और उन्हें अपने पास बैठाया। कुछ देर बाद वह उनसे अपने काम के बारे में बात करने लगे। जब जाकिर हुसैन ने उनके कार्य को लेकर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो वह अपने मुसलमान होने की दुहाई देने लगे। बोले, मुसलमान भाई होने के नाते तो आपका फर्ज बनता है कि आप हमारा काम करा दें। आप तो मालिक हैं। ऐसे में हम आपसे इतनी उम्मीद तो रख ही सकते हैं। रिश्तेदार की बात सुनकर डॉ. हुसैन बोले, देखिए, मुसलमान होने की दुहाई मत दीजिए। देश के लिए हम सबका धर्म एक है और वह है भारतीयता। हम सभी पहले भारतीय है। डॉ. हुसैन के जवाब के बाद भी वह सज्जन बहुत देर ऐसे ही बोलते रहे। आखिरकार डॉ. हुसैन ने अपने निजी सचिव को बुलाया और बोले, इन्हें समझाइए। इन्हें मेरी बात

समझ में नहीं आ रही है। इस पद पर मैं देश सेवा के लिए नियुक्त हुआ हूं अपने संबंधियों की सेवा के लिए नहीं। यदि ये सज्जन, जो मेरे संबंधी भी हैं सचमुच योग्यता का दम भरते हैं, तो इन्हें मेरी सहायता की क्या जरूरत है? यह सुनकर संबंधी का सिर नीचे झुक गया और वह चुपचाप वहां से चले आए।

१०००) अपनी अपनी किस्मत - सांतावन राज्य का राजा बेहद समृद्धशाली व कीर्ति प्राप्त राजा था। उसकी सातों संतानें बेटियां थीं। कई वर्षों तक राज्य में बारिश नहीं हुई। राज्य में अकाल की स्थिति हो गई। राज्य से प्रजा पलायन करने लगी। तभी दूसरे राज्य ने मौका पाकर राजा पर आक्रमण कर दिया। राजा ने अपनी सातों बेटियों को बुलाकर पूछा कि तुम किसकी किस्मत का खाती हो। छह बड़ी बहनों ने कहा कि पिताजी हम तो आपका दिया हुआ ही खाते हैं। तो आप की ही किस्मत का खाते हैं। लेकिन सबसे छोटी बहन ने कहा कि सब अपनी अपनी किस्मत का खाते हैं। मैं भी अपनी किस्मत का खाती हूं। राजा ने कहा कि मुझे बदनसीबी ने घेर लिया है। इसलिए आप सबको घर छोड़कर कहीं और जाना होगा। यह कहकर राजा ने उनके रास्ते के लिये कुछ खाने को बांध दिया और छह बड़ी बेटियों को दे दिया। छोटी बेटी को कुछ चावल के दाने दे दिए।

सातों बेटियां घर से अनजान डगर की ओर चल दीं। काफी दूर तक चलते-चलते उन्हें प्यास लग गई। उन्होंने काफी इधर-उधर पानी ढूंढने की कोशिश की पर कहीं पानी नहीं मिला। थक-हार के एक पेड़ के नीचे बैठ गई और छोटी बहन से कहा कि अब तू जाकर दूसरी तरफ पानी ढूंढ। छोटी बहन ने आज्ञा का पालन करते हुए कहा, ठीक है, आप आराम करो मैं ढूंढ कर आती हूं। थोड़ी ही दूरी पर उसे पानी दिखाई दिया। वह चुप हो गई क्योंकि उसने तो पहले ही पानी लिया था। अब उनको भूख भी लग आई तो सारा खाना खराब हो चुका था। अब बारी आई सबसे छोटी की। उसने थोड़ा-थोड़ा सभी बहनों को दिया जो बच गया खुद खा लिया।

रात होने को आई तो थोड़ी दूरी पर कुछ घर दिखाई दिए। बड़ी बहनों ने छोटी बहन से कहा, हम बहुत थक गए हैं, तुम जाकर देखो वहां कौन रहता है और क्या हमें रात गुजारने के लिए जगह मिलेगी? बेचारी छोटी बहन वहां गई और देखा कि उन घरों में कोई भी नहीं है। घर भी सात ही हैं। उसने छह घरों की सफाई की और सातवें घर में कूड़ा डाल आई क्योंकि सातवें घर में सभी साधन थे। घर का सारा सामान और घोड़ा भी था। वह वापस अपनी बहनों के पास गई और कहा, सारे घर तो खाली हैं और घर भी सात ही हैं। छह घर तो मैं साफ कर आई हूं और कूड़ा सातवें घर में डाल आई हूं। बड़ी बहनों ने कहा, हम सातों एक-एक घर ले लेते हैं। गंदा घर तुम खुद रख लो तुम ही ने गंदा किया है। सातों बहनें आराम से इन घरों में रहने लगीं।

कुछ समय बाद वहां नजदीक में एक मेला लगा। बड़ी बहनों ने छोटी से कहा, तुम घर की रखवाली करो हम मेला देख कर आते हैं। उसने कहा, ठीक है, जैसा आप ठीक समझें। जब छहों बहनें मेला को चली गईं तो छोटी अपना भेस बदलकर राजकुमारों जैसा भेस बनकर घोड़े पर बैठ मेले को चल दी। मेले में सभी लोग उसे ही देखते रह गए। उसके बाद बड़ी बहनों के घर आने से पहले ही वह घर पहुंच कर अपने पुराने भेस में दरवाजे पर बैठ गई और बहनों का इंतजार करने लगी। जब बड़ी बहनें आईं तो छोटी ने पूछा मेला कैसा रहा तो बड़ी बहनों ने बताया, मेले में एक राजकुमार घोड़े पर सवार

होकर आया था। सभी लोग उसे देखते ही रह गए। छोटी बहन ने कहा, मैं तो घर की रखवाली में थी मैं राजकुमार को नहीं देख पाई। तो बड़ी बहन ने कहा, तुम ही तो कहती थीं कि सब कुछ अपनी-अपनी किस्मत से मिलता है। ये समझ लो तुम्हारी किस्मत में राजकुमार को देखना नहीं लिखा था। छोटी बहन मन ही मन मुस्कराती रही।

१००१) असली पुजारी कौन - एक विशाल मंदिर था। उसके प्रधान पुजारी की मृत्यु के बाद मंदिर के प्रबंधक ने नए पुजारी की नियुक्ति के लिए घोषणा कराई और शर्त रखी कि जो कल सुबह मंदिर में आकर पूजा विषयक ज्ञान में अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करेगा, उसे पुजारी रखा जाएगा। यह घोषणा सुनकर अनेक पुजारी सुबह मंदिर के लिए चल पड़े। मंदिर पहाड़ी पर था और पहुंचने का रास्ता कांटों व पत्थरों से भरा हुआ था। मार्ग की इन जटिलताओं से किसी प्रकार बचकर ये सभी मंदिर पहुंच गए। प्रबंधक ने सभी से कुछ प्रश्न और मंत्र पूछे। जब परीक्षा समाप्त होने को थी, तभी एक युवा पुजारी वहां आया। वह पसीने से लथपथ था और उसके कपड़े भी फट गए थे। प्रबंधक ने देरी का कारण पूछा तो वह बोला- घर से तो बहुत जल्दी चला था, किंतु मंदिर के रास्ते में बहुत कांटे व पत्थर देख उन्हें हटाने लगा, ताकि यात्रियों को कष्ट न हो। इसी में देर हो गई। प्रबंधक ने उससे पूजा विधि और कुछ मंत्र पूछे तो उसने बता दिए। प्रबंधक ने कहा- तुम ही आज से इस मंदिर के पुजारी हो। यह सुनकर अन्य पुजारी बोले- पूजा विधि और मंत्र का हमें भी ज्ञान हैं। फिर इसे ही क्यों पुजारी बनाया जा रहा है? प्रबंधक ने कहा- ज्ञान और अनुभव व्यक्तिगत होते हैं, जबकि मनुष्यता सदैव परोन्मुखी होती है। अपने स्वार्थ की बात तो पशु भी जानते हैं, किन्तु सच्चा मनुष्य वह है, जो दूसरों के लिए अपना सुख छोड़ दे। इस युवक ने यही किया है। इसलिए यही सच्चा पुजारी है। प्रबंधक की इस बात में पुजारियों को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया।

१००२) घमंड में आकर मूर्खतापूर्ण कार्य नहीं करना चाहिए - बहुत समय पहले की बात है हिमालय के जंगलों में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था। एक दिन उसने बारहसिंघे का शिकार किया और खाने के बाद अपनी गुफा को लौटने लगा। अभी उसने चलना शुरू ही किया था कि एक सियार उसके सामने दंडवत करता हुआ उसके गुणगान करने लगा। हे जंगल के राजा, मैं आपका सेवक बनकर अपना जीवन धन्य करना चाहता हूं, कृपया मुझे अपनी शरण में ले लीजिए और अपनी सेवा करने का अवसर प्रदान कीजिए, सियार बोला।

शेर जानता था कि सियार का असल मकसद उसके द्वारा छोड़ा गया शिकार खाना है पर उसने सोचा कि चलो इसके साथ रहने से मेरा क्या जाता है, नहीं कुछ तो छोटे-मोटे काम ही कर दिया करेगा और उसने सियार को अपने साथ रहने की अनुमति दे दी। उस दिन के बाद से जब भी शेर शिकार करता, सियार भी भर पेट भोजन करता। समय बीतता गया और रोज मांसाहार करने से सियार की ताकत भी बढ़ गई, इसी घमंड में अब वह जंगल के बाकी जानवरों पर रौब भी झाड़ने लगा और एक दिन तो उसने हद ही कर दी। उसने शेर से कहा, आज तुम आराम करो, शिकार मैं करूंगा और तुम मेरा छोड़ा हुआ मांस खाओगे।

शेर यह सुन बहुत क्रोधित हुआ, पर उसने अपने क्रोध पर काबू करते हुए सियार को सबक सिखाना चाहा।

शेर बोला, यह तो बड़ी अच्छी बात है, आज मुझे भैंसा खाने का मन है, तुम उसी का शिकार करो, सियार तुरंत भैंसों के झुंड की तरफ निकल पड़ा और दौड़ते हुए एक बड़े से भैंसे पर झपटा, भैंसा सतर्क था उसने तुरंत अपने सींग घुमाए और

सियार को दूर फेंक दिया। सियार की कमर टूट गई और वह किसी तरह घिसटते हुए शेर के पास वापस पहुंचा।

क्या हुआ, भैंसा कहां है? शेर बोला। हुजूर, मुझे क्षमा कीजिए, मैं बहक गया था और खुद को आपके बराबर समझने लगा था, सियार गिड़गिड़ाते हुए बोला।

धूर्त, तेरे जैसे एहसान फराहमोश का यही हश्र होता है, मैंने तेरे ऊपर दया करके तुझे अपने साथ रखा और तू मेरे ऊपर ही धौंस जमाने लगा और ऐसा कहते हुए शेर ने अपने एक ही प्रहार से सियार को ढेर कर दिया। और आगे बढ़ चला। किसी के किए गए उपकार को भूल उसे ही नीचा दिखानेवाले लोगों का वही हश्र होता है जो इस कहानी में सियार का हुआ। हमें हमेशा अपनी वर्तमान योग्यताओं का सही आकलन करना चाहिए और घमंड में आकर किसी तरह का मूर्खतापूर्ण कार्य नहीं करना चाहिए।

१००३) बुजुर्ग खरगोश का नन्हे तोतों ने घमंड तोड़ा - बहुत समय पहले की बात है, सुंदरवन में श्वेत नामक एक बूढ़ा खरगोश रहता था। वह इतनी अच्छी कविता लिखता था कि सारे जंगल के पशु-पक्षी उन्हें सुनकर दांतों तले उंगली दबा लेते और विद्वान तोता तक उनका लोहा मानता था। श्वेतू खरगोश ने शास्त्रार्थ में सुरीली कोयल और विद्वान मैना तक को हरा कर विजय प्राप्त की थी। इसी कारण जंगल का राजा शेर भी उसका आदर करता। पूरे दरबार में उस जैसा विद्वान कोई दूसरा न था। धीरे-धीरे उसे अपनी विद्वत्ता का बड़ा घमण्ड हो गया। एक दिन वह बड़े सवेरे खाने की तलाश में निकला। बरसात के दिन थे, काले बादलों ने घिरना शुरू ही किया था। मौसम की पहली बरसात होने ही वाली थी। सड़क के किनारे जामुनों के पेड़ काले-काले जामुनों से भरे झुके हुए थे। बड़े-बड़े, काले, रसीले जामुनों को देखकर श्वेतू के मुंह में पानी भर आया। एक बड़े से जामुन के पेड़ के नीचे जाकर उसने आंखें उठाई और ऊपर देखा तो नन्हें तोतों का एक झुण्ड जामुन खाता दिखाई दिया।

बूढ़े खरगोश ने नीचे से आवाज दी, प्यारे नातियों मेरे लिए भी थोड़े से जामुन गिरा दो। उन नन्हें तोतों में मिट्ठू नाम का एक तोता बड़ा शरारती और चंचल था। वह ऊपर से ही बोला, दादाजी, यह तो बताइये कि आप गरम जामुन खायेंगे या ठंडी? बेचारा बूढ़ा श्वेतू खरगोश हैरान होकर बोला, भला जामुन भी कहीं गरम होते हैं? चलो मुझसे मजाक न करो। मुझे थोड़े से जामुन तोड़ दो। मिट्ठू बोला, अरे दादाजी, आप ठहरे इतने बड़े विद्वान। यह भी नहीं जानते कि जामुन गरम भी होते हैं और ठंडे भी। पहले आप बताइये कि आपको कैसे जामुन चाहिये? भला इसे जाने बिना मैं आपको कैसे जामुन दूंगा? बूढ़े और विद्वान खरगोश की समझ में बिलकुल भी न आया कि जामुन गरम भला कैसे होंगे? फिर वह उस रहस्य को जानना चाहता था इसलिये बोला, बेटा तुम मुझे गरम जामुन ही खिलाओ ठंडे तो मैंने बहुत खाए हैं। नन्हें मिट्ठू ने बूढ़े श्वेतू की यह बात सुनकर जामुन की एक डाली को जोर से हिलाया। पके-पके ढेर से जामुन नीचे धूल में बिछ गये। बूढ़ा श्वेतू उन्हें उठाकर धूल फूंक-फूंक कर खाने लगा। यह देखकर नन्हें मिट्ठू ने पूछा क्यों दादाजी, जामुन खूब गरम हैं न? कहां बेटा? ये तो साधारण ठंडे जामुन ही हैं। खरगोश बोला। नन्हें मिट्ठू तोते ने चौंककर पूछा, क्या कहा ठंडे हैं? तो फिर आप इन्हें फूंक-फूंक कर क्यों खा रहे हैं? इस तरह तो सिर्फ गरम चीजें ही खाई जाती हैं। नन्हें मिट्ठू तोते की बात का रहस्य अब जाकर बूढ़े खरगोश की समझ में आया और वह बड़ा शर्मिंदा हुआ। इतना विद्वान बूढ़ा श्वेतू खरगोश जरा सी बात में छोटे

से तोते के बच्चे से हार गया था। उसका घमंड दूर हो गया और उसने एक कविता लिखी-

खूब कड़ा तना शीशम का, बड़े कुल्हाड़े से कट जाता। लेकिन वो ही बड़ा कुल्हाड़ा, कोमल केले से घिस जाता। सच है कभी-कभी छोटे भी, ऐसी बड़ी बात कहते हैं। बहुत बड़े विद्वान गुणी भी, अपना सिर धुनने लगते हैं।

१००४) जब उड़ने लगी चुनमुन की कुर्सी - चुनमुन कुर्सी पर बैठा कहानियों की किताब पढ़ रहा था। बड़ी ही अनोखी कहानियों की किताब। उसमें एक भुल्लन चाचा थे। वे अपने खटोले पर बैठे-बैठे उड़ते रहते थे। उड़ते-उड़ते सारी दुनिया की सैर कर आते थे।

चुनमुन को भुल्लन चाचा की कहानियां इतनी अच्छी लगीं कि वह उनमें पूरी तरह खो गया। कहानियों की किताब उसने बंद की और थोड़ी देर आंखें बंद करके कुर्सी पर बैठा-बैठा सुस्ताने लगा।

उसने सोचा- काश, यह कुर्सी भी उड़ने लगे, भुल्लन चाचा के खटोले की तरह। फिर तो मैं झटपट सारी दुनिया की सैर करके आ सकता हूं।

और सचमुच जैसे ही चुनमुन ने यह सोचा, उसकी कुर्सी अपनी जगह से हिली और फिर उड़ने लगी। उड़ते-उड़ते वह कमरे से निकली और हवा में उड़ गई। उठती चली गई और फिर बड़ी तेजी से उड़ने लगी।

अब वह बिल्कुल हेलीकॉप्टर की तरह सबके घरों से उड़ती हुई जा रही थी। यह देखकर चुनमुन को बड़ा मजा आ रहा था। पर जो जमीन पर से उसे देख रहे थे, वे देख-देखकर चकरा रहे थे- अरे, अरे, यह क्या? देखो यह कुर्सी पर बैठा हुआ एक लड़का उड़ रहा है। भई यह क्या तमाशा है। कहीं यह लड़का गिर न पड़े।

चुनमुन के दोस्त नीचे से जोर जोर से चीख चिल्ला रहे थे- चुनमुन, ध्यान से बैठे रहना, मजबूती से कुर्सी के हत्थे पकड़े रहना। कहीं गिर न पड़ो। देखो, ऊपर हवा तेज है- बड़ी तेज। अपना ख्याल रखना।

होते-होते चुनमुन के घर के आसपास तो मेला जमा हो गया। हजारों-लाखों लोग इकट्ठे हो गए। सबकी नजर चुनमुन और उड़ती हुई कुर्सी पर थी- अरे-अरे यह क्या? हमने तो भई ऐसा अजूबा पहले कभी नहीं देखा।

बात धीरे-धीरे अखबारों के दफ्तरों तक पहुंची, टी.वी. चैनलों में भी। सारे के सारे कैमरे अब चुनमुन की कुर्सी की ओर लगे थे और चुनमुन मजे से हंसता-गाता हुआ, हवाओं से बात कर रहा था। चाहे ऊंचाई से ही सही, वह सारी दुनिया की एक झलक देख पा रहा था। लोग उसकी सलामती की दुआएं कर रहे थे। कुछ लोगों ने हवन और यज्ञ भी शुरू कर दिया था। दुनिया के बड़े-बड़े वैज्ञानिक यह अटकलें लगाने में लीन थे कि अरे भई, यह कुर्सी उड़ी तो उड़ी कैसे?

आधी रात को सारी दुनिया का चक्कर लगाकर कुर्सी वहीं आ गई, जहां से उड़ी थी। चुनमुन ने देखा, उसके घर के चारों ओर लोगों का भारी हुजूम था। दूरदर्शन वाले अपने अपने भारी भरकम कैमरे लिए खड़े थे। चुनमुन को अपनी जादुई कुर्सी पर बैठे-बैठे नीचे उतरते देखा, तो सारे दूरदर्शन वालों ने उसे घेर लिया- क्यों चुनमुन तुम्हें कैसा लग रहा है। ऊपर से दुनिया कैसी लगती थी? कहीं तुम्हें चक्कर तो नहीं आए?

चुनमुन को तो कुछ खास पता ही नहीं चला था। उसे बड़े जोर की नींद आ रही थी। कुछ देर में नींद परी आई और उसे थपकियां देकर सुलाने लगी। चुनमुन नींद में मुसकरा रहा था।

१००५) फूलों का रंग - राम-रावण युद्ध के बाद एक दिन सभी श्रीराम के सम्मुख बैठे। इस बैठक में युद्ध एवं इससे जुड़ी घटनाओं पर चर्चा हो रही थी। एकाएक श्रीराम ने पूछा कि लंका की जिस वाटिका में सीता को रखा गया था, उसमें सबसे ज्यादा किस रंग के फूल थे? सीता ने कहा, मैं अशोक वाटिका में एक माह तक रही और मैंने देखा कि वहां के सारे फूल सफेद रंग के थे। हनुमान ने बड़ी विनम्रता से कहा, प्रभु। माता सीताजी शायद भूल गई हैं। अशोक वाटिका में तो मैं भी गया था, वहां की सारी वाटिका को मैंने सूक्ष्मता से देखा है, लेकिन वहां मैंने एक भी सफेद रंग का फूल नहीं देखा। सबके सब फूल लाल रंग के थे। माता सीता मेरी धृष्टता को क्षमा करें। सीता और हनुमान दोनों के कथन परस्पर विरोधाभासी थे। अपने कथन का दोनों ने पुरजोर समर्थन किया। इससे एक विवाद की स्थिति उत्पन्न हो गई। दोनों ही प्रत्यक्षदृष्टा थे, किंतु दोनों का कथन एक दूसरे के विपरीत था। स्थिति को नियंत्रित करने की दृष्टि से आखिर श्रीराम ने ही उसका समाधान दिया। उन्होंने कहा- दोनों का ही कथन सत्य है। बैठक में श्रीराम के कथन ने रहस्य को और गहरा कर दिया। सबकी दृष्टि श्रीराम की ओर गई, जैसे सब एक साथ कुछ पूछ रहे हों, प्रभु। दोनों सही कैसे हो सकते हैं? श्रीराम ने कहा, सीता उस समय शांत चित्त थीं। अधिकांश समय वे ध्यान में मग्न रहती थीं। इसलिए पुष्प ही क्या, वहां की हर चीज उन्हें सफेद दिखाई दे रही थी। किन्तु हनुमान उस समय सीता की व्यथा और रावण के अन्याय को याद कर क्रोधित हो रहे थे, उनकी आंखों में लाल डोरे पड़ रहे थे। इसलिए उन्हें अशोक वाटिका ही क्या, पूरी लंकापुरी लाल रंग की दिखाई दे रही थी। किसी ने सत्य ही कहा है कि जैसी दृष्टि-वैसी सृष्टि।

१००६) समय का महत्व - काफी समय पहले चंपापुरी में लक्ष्मण सिंह नाम का एक राजा रहता था। एक सुबह उनकी सभा में फटे चिथे वस्त्रों में एक आदमी आया। आते ही वह हाथ जोड़कर बोला, महाराज। मैं बहुत गरीब हूं, कृपया मुझे सोने के कुछ सिक्के दे दीजिए। इस पर राजा ने पूछा- तुम कोई काम क्यों नहीं करते हो?

वह बोला- कोई मुझे काम नहीं देता है। सभी लोग मुझे आलसी कहते हैं। राजा ने फिर पूछा- तुम्हें लोग ऐसा क्यों कहते हैं? वह बोला- मुझे नहीं मालूम, सब झूठ बोलते हैं। राजा ने कहा ठीक है, खजाने से तुम जितना सोना ले जाना चाहो, ले जा सकते हो। परंतु एक बात का ध्यान रखना, खजाना सूरज ढलने के बाद बन्द हो जाता है, इसलिए समय पर आ जाना। यह बात सुनकर वह बहुत खुश हुआ। घर जाकर जब उसने अपनी पत्नी को यह बात बताई तो वह भी बहुत खुश हुई। अगले दिन नाश्ता कर वह खजांची के घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसे एक छायादार आम का पेड़ मिला। घनी छाया देखकर वह उस पेड़ के नीचे सो गया। दोपहर में जब उसकी नींद खुली, तो उसने सोचा- शायद मैं ज्यादा देर सो गया। कोई बात नहीं, शाम होने में अभी काफी समय बाकी है। वह उठा और आगे चल दिया। रास्ते में उसने एक मेला देखा। उसने सोचा क्यों न कुछ देर मेला देख लिया जाए, फिर खजांची के पास चला जाऊंगा। काफी देर तक वह मेले का आनंद लेता रहा।

जब उसने देखा कि अब सूरज डूबने ही वाला है, तो उसे राजा की चेतावनी याद आई। तुरन्त उसने खजांची के घर की ओर दौड़ लगाई, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी।

सूरज डूब चुका था। जब वह वहां पहुंचा, तो वहां मौजूद सैनिकों ने उसे अन्दर जाने से रोक दिया। उन्होंने कहा कि

तुमने यहां आने में देर करके अमीर बनने का बढ़ियां मौका खो दिया। अब तुम्हें सोना नहीं मिल सकता है। यह सुनकर वह गरीब आदमी बहुत उदास हुआ।

निराश होकर वह अपने घर लौट गया। घर आकर जब उसने अपनी पत्नी को सारी बातें बताई, तो उसकी पत्नी ने भी उसे बहुत कोसा। उसने अपनी पत्नी से वादा किया कि जीवन में वह अब कभी भी आलस नहीं करेगा।

१००७) जिम्मेदारी और विश्वास - एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन और उनकी कैबिनेट के सदस्यों की महत्वपूर्ण बैठक चल रही थी। बैठक में जनरल कॉलिन पॉवेल और कैबिनट के सदस्यों की बनाई नीति पर विचार-विमर्श हो रहा था। राष्ट्रपति रीगन को पॉवेल और सदस्यों की रणनीति पसंद नहीं आई। लेकिन उन्होंने सभी की सहमति देखते हुए प्रस्ताव को आगे बढ़ा दिया। रीगन प्रत्येक व्यक्ति पर विश्वास रखते थे। नीति को लागू कर दिया गया लेकिन कुछ ही समय में नीति असफल हो गई। हर ओर हलचल मच गई कि राष्ट्रपति रीगन ने ऐसी असफल नीति बनाने की अनुमति क्यों दी? मीडिया ने उन्हें घेर लिया। मीडियाकर्मी उनसे उस नीति के बारे में विस्तार से जानने को इच्छुक थे। एक पत्रकार ने पूछा, सर क्या यह नीति आपने बनाई थी या फिर कोई दूसरा इसके लिए जिम्मेदार है? रीगन सहजता से बोले, नि:संदेह यह पूरी तरह मेरा ही विचार था। लेकिन मैं आप लोगों को अपने बारे में एक बात बता दूं, मैं एक बार गलती कर सकता हूं, वही गलती दोबारा नहीं करूंगा। यह बोलकर उन्होंने अपनी कैबिनेट के सभी सदस्यों और जनरल पॉवेल की प्रतिष्ठा को बचा लिया। पॉवेल भी उस समय वहां मौजूद थे। राष्ट्रपति रीगन द्वारा सारी जिम्मेदारियां स्वयं पर लेने की बात सुनते ही पॉवेल की आंखों में आंसू आ गए। वह समझ गए राष्ट्रपति रीगन के अंदर समानुभूति के भाव हैं। उन्हें ज्ञात था कि इस समय पॉवेल के साथ संपूर्ण कैबिनेट के सदस्यों की क्या हालत होती? उनकी जगह खुद को रखकर रीगन ने न सिर्फ उन सबके सम्मान की रक्षा की अपितु उनकी गलती को भी जनता के सामने आने से बचा लिया। इस तरह एक अच्छे टीम लीडर के रुप में दुनिया के सामने मिसाल रखी। अपने व्यवहार से उन्होंने बताया कि ऐसे लीडर को ही अपनी टीम का संपूर्ण समर्पण हासिल होता है।

१००८) एक अनोखा मेल - सन १९०५ की सर्दियों में जमी बर्फ के बावजूद रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में खासी गरमी थी। शहर के लगभग सभी कारखानों के मजदूर हड़ताल पर थे। हड़ताल तोड़ने के लिए जार ने मजदूरों को अलग-थलग करने के लिए उनके बीच धार्मिक लोगों को भेजा। पुतिलोव पीटर्सबर्ग का सबसे बड़ा कारखाना था जहां जार ने फादर गैपन को भेजा। फादर गैपन ने मजदूरों से बात की और तय हुआ कि ९ जनवरी १९०५ को मजदूर जुलूस लेकर जार से मिलने जाएंगे। उस वक्त रूस की कम्यूनिट पार्टी में दो गुट हो गए थे- मेन्शेविक और बोल्शेविक। रूसी क्रांति के पुरोधा लेनिन बोल्शेविकों के साथ तो थे, पर उस वक्त निर्वासित थे। पहले तो दोनों ने इसका विरोध किया, पर बाद में मेन्शेविक जुलूस में शामिल हो गए। जुलूस निकला तो उसके ठीक बगल पंद्रह-बीस बोल्शेविक भी मजदूरों के हक में नारा लगाते आगे बढ़े। जैसे ही जुलूस जार के महल पहुंचा, जार के कजाक अंगरक्षकों ने जुलूस पर घोड़े चढ़ा दिए और भीषण गोलीबारी शुरू कर दी। कई मजदूर मारे गए, जिसकी अगली सुबह फादर गैपन ने ऐलान कर दिया कि- अब कोई जार नहीं है, खून की एक नदी जनता और जार को अलग करती है। कुछ वक्त तक तो फादर गैपन छुपकर रहे, बाद में वह

यूरोप चले गए। यूरोप में उनकी मुलाकात लेनिन से हुई और आश्चर्यजनक तरीके से धर्म के सख्त विरोधी व्लादीमीर लेनिन उनसे मेले में बिछड़े भाई की तरह मिले। लेनिन की पत्नी क्रूप्सकाया ने भी अपनी किताब में इस प्रेमिल मिलन का जीवंत खाका खींचा है। वैसे लेनिन ने काफी कोशिश की, लेकिन पेशे से पादरी गैपन अंत तक अपनी धार्मिक सोच नहीं बदल पाए। इसके बावजूद मजदूरों और लेनिन के साथ फादर गैपन हमेशा खड़े रहे। और इस तरह से धर्म और कम्यूनिस्ट विचारधारा के बीच का यह मिलन इतिहास का सबसे विरला मिलन बना।

१००९) सबसे बड़ा भक्त - एक बार अर्जुन को अहंकार हो गया कि वही भगवान का सबसे बड़ा भक्त है। उनकी इस भावना को श्रीकृष्ण ने समझ लिया। एक दिन वह अर्जुन को अपने साथ घुमाने ले गए। रास्ते में उनकी मुलाकात एक गरीब ब्राह्मण से हुई। उसका व्यवहार थोड़ा विचित्र था। वह सूखी घास खा रहा था और उसकी कमर से तलवार लटक रही थी। अर्जुन ने उससे पूछा, आप तो अहिंसा के पुजारी हैं। जीव हिंसा के भय से सूखी घास खाकर अपना गुजारा करते हैं। लेकिन फिर हिंसा का यह उपकरण तलवार क्यों आपके साथ है? ब्राह्मण ने जवाब दिया, मैं कुछ लोगों को दंडित करना चाहता हूं। अर्जुन ने पूछा, आपके शत्रु कौन हैं? ब्राह्मण ने कहा, मैं चार लोगों को खोज रहा हूं, ताकि उनसे अपना हिसाब चुकता कर सकूं। सबसे पहले तो मुझे नारद की तलाश है। नारद मेरे प्रभु को आराम नहीं करने देते, भजन-कीर्तन कर उन्हें जगाए रखते हैं। फिर मैं द्रौपदी पर भी क्रोधित हूं। उसने मेरे प्रभु को ठीक उसी समय पुकारा, जब वह भोजन करने बैठे थे। पांडवों को दुर्वासा ऋषि के श्राप से बचाने उन्हें तुरंत जाना पड़ा। उसने मेरे भगवान को जूठा खाना खिलाया। मेरा तीसरा शत्रु है हृदयहीन प्रल्हाद। उसने मेरे प्रभु को गरम तेल के कड़ाह में प्रविष्ट कराया, हाथी के पैरों तले कुचलवाया और अंत में खंभे से प्रकट होने के लिए विवश किया। और चौथा शत्रु है अर्जुन। उसकी दुष्टता देखिए। उसने मेरे भगवान को अपना सारथी बना डाला। उसे भगवान की असुविधा का तनिक भी ध्यान नहीं रहा। कितना कष्ट हुआ होगा मेरे प्रभु को। यह कहते ही ब्राह्मण की आंखों में आंसू आ गए। यह देख अर्जुन का घमंड चूर-चूर हो गया। उसने श्रीकृष्ण से क्षमा मांगतें हुए कहा, मान गया प्रभु, इस संसार में न जाने आपके कितने तरह के भक्त हैं। मैं तो कुछ भी नहीं हूं।

१०१०) सजा से मिली सुरक्षा - जॉन डी. रॉकफेलर अमेरिका के धनकुबेरों में से एक थे। वह जितने अमीर थे, उतने ही बुद्धिमान भी थे। एक बार वह ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। टिकट चेकर आया और टिकट दिखाने को कहा। रॉकफेलर ने कहा, मेरे पास टिकट नहीं है। परिणाम यह हुआ कि बिना टिकट यात्रा करने के जुर्म में उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। मजिस्ट्रेट ने बिना टिकट यात्रा करने के जुर्म में उन्हें एक दिन की जेल की सजा सुना दी। एक दिन की सजा काटकर रॉकफेलर जेल से बाहर आए। उन्होंने जेब से टिकट निकाल कर पुलिस अधिकारी के आगे कर दी। अधिकारी देखता रह गया। उसने कहा, यह आश्चर्य की बात है कि अमेरिका के सबसे धनी व्यक्ति होकर भी आप बिना टिकट यात्रा करते हुए पकड़े गए। लेकिन इससे भी बड़ा आश्चर्यजनक है कि वैध टिकट होते हुए भी आपने मजिस्ट्रेट के सामने टिकट न होने की बात की। क्या वजह थी? क्यों निर्दोष होते हुए भी स्वयं को दोषी माना और मजिस्ट्रेट की सुनाई सजा को सहज ही कबूल कर लिया। रॉकफेलर ने कहा, टिकट की कीमत सिर्फ दो डॉलर है, लेकिन मेरे पास वह चीज है, जिसकी कीमत दो हजार डॉलर है। जबसे मैं ट्रेन में बैठा तब से मुझे कई आंखें घूर रही थीं। मैं समझ गया कि लुटेरे ताक में हैं। उन्हें मेरे

पास कीमती चीज होने का पता चल गया है। इस संकट से बचना मेरे लिए जरूरी था। तभी टिकट चेकर आया और मुझे राह सूझ गई। मैंने उससे कहा कि मेरे पास टिकट नहीं है। बेटिकट यात्रा का दोषी न होने के बावजूद मैंने एक दिन की सजा काटी, लेकिन उससे ज्यादा बड़ी बात मेरे लिए यह है कि मेरी यह कीमती चीज लुटने से बच गई। अब मुझे कोई भय नहीं। आप लोगों का धन्यवाद। यह कहकर रॉकफेलर अपनी गाड़ी में बैठे और चल दिए।

१०११) सूझबूझ से टली समस्या - महाराजा रणजीतसिंह पंजाब के शासक थे। उनके ही शासनकाल की एक घटना है। मुहर्रम का त्योहार आया। उस दौरान मुसलमानों ने ताजिए निकाले। ताजिए के जुलूस का मार्ग निश्चित था। लेकिन एक समस्या आ गई। ऊंचे ताजिए के मार्ग में पीपल की झुकी हुई डाल बाधा बन रही थी। बिना पीपल की डाल काटे ताजिए उधर से निकल नहीं सकते थे और पीपल का काटा जाना हिंदुओं को गवारा नहीं था। धार्मिक उसूलों को लेकर हिंदू-मुसलमानों में तनातनी आज की ही नहीं, चिरकाल की समस्या रही है। अनेक बार इसे लेकर दंगे हुए, मारकाट भी हुई। जब भी होली, दिवाली या मुहर्रम, बकरीद आदि त्योहार आते हैं, कोई न कोई पेंच खड़ा हो जाता है। महाराजा रणजीतसिंह के सामने भी समस्या खड़ी हो गई। न जुलूस का मार्ग बदलते बन रहा था, न ही वह पवित्र पीपल की डाल को कटवा सकते थे। लेकिन वह बड़े बुद्धिमान शासक और सूझबूझ से काम लेनेवाले व्यक्ति थे। उन्होंने इस समस्या पर गंभीरता से चिंतन और मंथन किया। इसके बाद रणजीत सिंह ने राजाज्ञा जारी की कि ताजियों को ले जाने का मार्ग वही रहेगा। पवित्र पीपल की एक टहनी को भी नुकसान न पहुंचाया जाए। उस क्षेत्र के जिम्मेदार अधिकारी तुरंत यह व्यवस्था कराएं कि उस मार्ग पर जहां पीपल की डाल झुक रही है, उस मार्ग में आवश्यक दूरी तक जमीन की खुदाई कर दी जाए और अल्पकालिक मार्ग बना दिया जाए। सभी पवित्र ताजिए उसी खुदाई किए गए मार्ग से आगे बढ़ेंगे। महाराजा रणजीतसिंह की आज्ञा का पालन किया गया। इससे न तो मुसलमान भाइयों की अवमानना हुई और न ही हिंदुओं की भावनाएं आहत हुईं। मुहर्रम का त्योहार शांतिपूर्वक संपन्न हो गया। लेकिन इस तरह का निर्णय तभी लिया जा सकता है, जब भीतर ईमानदारी हो, मन पूरी तरह से साफ हो।

१०१२) सच कहने का साहस - वह अपनी मसनद पर बैठे थे कि एक शिष्य ने पूछा, हुजूर आपके वालिद ने तो बादशाह औरंगजेब को करीब से देखा है, उनका क्या ख्याल था औरंगजेब के बारे में, कृपया बताएं। तब वह बोले, हां, अपने आखिरी वक्त में अब्बा हुजूर कहा करते थे, हालांकि बादशाह औरंगजेब अपनी निजी जिंदगी में बहुत ही पाक चरित्र और धार्मिक रहा, फिर भी गैर मुस्लिमों और इल्म के साथ उसने बहुत इंसाफ नहीं किया, जिसका खमियाजा मुगल सल्तनत और हिंदुस्तान को भुगतना पड़ सकता है। अपने अब्बा की यादों का पिटारा खोलते-खोलते उन्होंने अपना दर्शन सुनाया, यदि कोई कौम सांस्कृतिक क्षेत्र में लगातार तरक्की करती है, तो वह बहुत ऊंचाई पर पहुंचती है। हां, अगर उस दौरान उसका शासक सुख और भोग-विलास में पड़ जाए तो इसका सारा बोझ मजदूर वर्ग पर पड़ने लगता है। ऐसे में मनुष्य की सामूहिक संस्कृति नष्ट हो जाती है और वह आगे चलकर पशुओं से बदतर जीवन में बदल जाता है। यदि इन्हें शक्ति और बल से जबर्दस्ती इस संकट से लड़ने पर मजबूर कर दिया जाए तो मजदूर वर्ग गधों और बैलों की तरह केवल पेट भरने के लिए दिनभर काम करने को मजबूर होंगे। इसलिए ऐसे विलासी राजा से पीछा छुड़ा लेना हम सबका कर्त्तव्य

है। ये शब्द आग की तरफ फैल गई। चर्चा होने लगी, ऐसा कहनेवाला निश्चित ही कोई सच्चा दिल और निडर इंसान होगा। शाही दरबार तक यह बात पहुंच गई। उन्हें सबक सिखाने का फैसला हो गया। चूंकि वह लिखते काफी थे और उनके लिखे को गंभीरता से पढ़ा जाता था, सो उनके हाथों को बेदर्दी से कुचलवा दिया गया। उनके दोनों बच्चों को देश की सीमाओं से खदेड़ दिया गया। वह थे दिल्ली के मशहूर सूफी संत और राजनैतिक विचारक शाह अब्दुल वली जो बिना डरे, सल्तनत की आंखों में आंखें डालकर भी अगले हजारों साल का सच कह गए।

१०१३) त्याग का महत्व - सुप्रसिद्ध डांसर सोनल मानसिंह के दादा मंगलदास पकवासा ने महात्मा गांधी और सरदार पटेल के संपर्क में आने के बाद अपनी वकालत छोड़ दी थी। उस समय उन्हें वकालत के लिए तीस हजार रुपये प्रतिमाह मिलते थे। देश के लिए उन्होंने इतनी बड़ी आय त्याग दी। स्वतंत्र भारत में वह पहले पांच राज्यपालों में से थे। उनका जीवन इतना त्यागमय था कि उन्होंने अपनी संपूर्ण संपत्ति राष्ट्र को समर्पित्त कर दी। यहां तक कि सोनल मानसिंह के माता-पिता भी किराए के मकान में रहते थे। मंगलदास जब महाराष्ट्र के राज्यपाल थे, उन दिनों भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड माउंटबेटन का मुंबई में आगमन का कार्यक्रम था। उनके सम्मान में एक भोज रखा गया था। भोज की सूची में मांसाहारी व्यंजन भी शामिल थे। राज्यपाल मंगलदास को जब सूची दिखाई गई तो उन्होंने मांसाहारी व्यंजन को लेकर अपनी आपत्ति जताई। वह शुद्ध शाकाहारी थे। उन्होंने इस सूची के जवाब में पत्र लिखा, मै। स्वयं एक शुद्ध शाकाहारी हूं और इस कार्यक्रम में शराब भी नहीं पिला सकता। हो सके तो कृपया भोज की सूची में परिवर्तन किया जाए। पत्र लार्ड माउंटबेटन के पास हुंचा। उन्होंने इसे प्रधानमंत्री पंडित नेहरू को दिखाया। पंडित जी आग बबूला हो गए और पकवासा को त्यागपत्र देने को कहा। जब नेहरू जी ने इस पत्र को गांधी को दिखाया तो गांधीजी बोले, इसमें गलत क्या है? पकवासा सही हैं। लार्ड माउंटबेटन को पता चली कि शाकाहार को समर्पित्त पकवासा राज्यपाल पद से त्यागपत्र दे रहे हैं तो वह एकदम बोल उठे, क्या बेतुकी बात है। मैं यदि तीन दिनों तक मांसाहार या मद्यपान नहीं करूं तो क्या मर जाऊंगा। मैं किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाना चाहता। ऐसे त्यागी थे मंगलदास पकवासा।

१०१४) मां का हृदय - महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। पांडव पक्ष के लोग विजय की खुशी में सुख की निद्रा में लीन थे। उनकी ऐसी धारणा थी कि कौरव पक्ष का एक भी व्यक्ति शेष न रहने के कारण युद्ध समाप्त हो चुका है, किंतु यह उनकी भूल थी। कौरव पक्ष का एक व्यक्ति जीवित था, जिसके हृदय में बदला लेने की भावना रह-रहकर धधक रही थी। वह था गुरु द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा। उसने युद्ध के नियम ताक पर रख दिए और हाथ में तलवार लिए पांडवों के शिबिर में प्रवेश किया। उसने द्रौपदी के पांच पुत्रों का वध कर दिया। अश्वत्थामा का यह कुकृत्य जब दूसरे दिन द्रौपदी को पता चला तो वह पुत्रों के शोक में विह्वल हो गई। उसके हृदय में क्रोध की ज्वाला धधक उठी। उसकी हालत देख अर्जुन भी आक्रोशित हो गया। वह द्रौपदी से बोला, पांचाली, शोक न करो। मैं उस नीच को अभी पकड़कर तुम्हारे सामने पेश करूंगा और इसका बदला लूंगा। भीम ने भी अर्जुन का साथ दिया और वे दोनों अश्वत्थामा को बांधकर द्रौपदी के पास ले आए। गुरुपुत्र को इस प्रकार से बंधा देख द्रौपदी का कोमल ममतामय हृदय पिघल गया। अर्जुन ने जैसे ही अश्वत्थामा का शीश काटने के लिए तलवार उठाई द्रौपदी ने उसका हाथ थाम लिया। वह बोली, स्वामी, आप इसे पकड़

लाए, बस इतने से ही मैं संतुष्ट हूं। यह गुरुपुत्र है इसे छोड़ दिया जाए, क्योंकि इसकी माता कृपी अभी भी जीवित हैं और मैं नहीं चाहती कि वह भी इसके वियोग में शोक करे। पुत्र शोक का मुझे पूर्ण अनुभव है। मैं नहीं चाहती कि एक माता को शोक के सागर में डुबाया जाए। अपने पांच पुत्र गंवा चुकी मां की इन भावनाओं ने कृपी पुत्र का जीवन बचा दिया। अश्वत्थामा के सिर की मणि को निकालकर उसे मुक्त कर दिया गया।

१०१५) छुट्टियां मनाने की जगह - महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन हर समय अपने काम में व्यस्त रहते थे। एक दिन उनकी पत्नी ने उनसे कहा कि इतने दिनों से आप कठोर परिश्रम में लगे हैं, अब तो कुछ दिनों के लिए विश्राम कर लीजिए। एडिसन को अपनी पत्नी की बात सही लगी, फिर उन्होंने थोड़ा सोचा और फिर कहा, तुम्हीं बताओ मुझे छुट्टियां मनाने कहां जाना चाहिए? कौन सी जगह विश्राम के लिए और घूमने के लिए सही होगी? यह सुनकर उनकी पत्नी मुस्कराई और बोलीं, यह भी कोई पूछने वाली बात है। इतनी बड़ी धरती है, आप जहां जाना चाहें जा सकते हैं। एडिसन ने कहा, तुम सही कह रही हो। जाना मुझे है, तो मुझे ही तय करना होगा कि मुझे कहां जाना है। ऐसी कौन सी जगह हो सकती है जहां मुझे सबसे ज्यादा सुकून मिले। यह सुनकर उनकी पत्नी खुश हो गईं। एडिसन विचार करने लगे कि छुट्टी मनाने के लिए सबसे बेहतर जगह कौन सी हो सकती है, जहां अच्छी तरह छुट्टियां मनाई जा सकें। शाम को पत्नी ने पूछा, क्या मैं जान सकती हूं कि आप छुट्टियां मनाने कहां जा रहे हैं? तब एडिसन बोले, कल आपको पता चल जाएगा कि मैं छुट्टियां मनाने कहां जा रहा हूं। अगले दिन एडिसन सुबह उठे, झटपट अपना काम निपटाया और तैयार हो गए। इसके बाद वह अपनी पसंदीदा और शांत जगह ओल्ड लाइब्रेरी की ओर चल पड़े। अब अपने पति की पसंद को लेकर उनकी पत्नी सोच में पड़ गई कि भला यह भी छुट्टियां मनाने की कोई जगह हुई। मगर वह अच्छी तरह जानती थीं कि एडिसन कुछ मामलों में किसी की नहीं सुनते। इसलिए उन्होंने चुप रहना ही बेहतर समझा। उस छुट्टी वाली जगह पर एडिसन बल्ब बनाने में कामयाब हुए, जिसकी खोज वह कई वर्षों से कर रहे थे। अपनी ओल्ड लाइब्रेरी से निकलकर उन्होंने दुनिया को रोशनी का नया तोहफा दिया।

१०१६) सफलता का सूत्र - अनंतपुर में राजा रामदत्त का राज्य था। वह विद्वानों, कवियों और कलाकारों का बड़ा सम्मान करते थे। अनंतपुर में ही एक शिल्पी भी रहता था। नाम था गंगादास। वह राज्य की सीमा के पास वाली पहाड़ी पर पत्थर काटकर मूर्तियां बनाया करता था। उसकी बनाई मूर्तियां बड़ी सुंदर होती थीं। एक दिन राजा रामदत्त शिकार के लिए जंगल गए। वहां एक मृग के पीछे उन्होंने अपना घोड़ा दौड़ाया। मृग डरकर पहाड़ी की ओर भागा। रामदत्त उसके पीछे-पीछे चलते गए। पहाड़ी पर गंगादास को मूर्तियां बनाते देख रामदत्त ठिठक गए। इतनी सुंदर मूर्तियां उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी। रामदत्त ने गंगादास से कहा, मैं चाहता हूं कि तुम मेरी भी एक सुंदर मूर्ति बनाओ। गंगादास ने सिर झुकाते हुए कहा, महाराज, मैं आपकी मूर्ति अवश्य बनाऊंगा। गंगादास ने राजा की मूर्ति बनानी शुरू की। कई दिन बीत गए, परंतु मूर्ति तैयार नहीं हुई। गंगादास मूर्तियां बनाता और तोड़ देता। जैसी मूर्ति की कल्पना गंगादास ने की थी, वैसी बन ही नहीं पा रही थी। निराश होकर गंगादास टूटी मूर्तियों के समीप बैठ गया। अचानक उसकी नजर एक चींटी पर पड़ी, जो गेहूं के एक दाने को दीवार के उस पार ले जाना चाहती थी। इस कोशिश में वह बार-बार गिर रही थी फिर भी कोशिश कर रही

थी। आखिरकार चींटी की कोशिशें रंग लाईं और वह गेहूं का दाना लेकर दीवार के उस पार चली गई। यह दृश्य देख गंगादास ने सोचा, जब यह छोटी-सी चींटी निरंतर प्रयास से सफलता पा सकती है, तो मैं क्यों नहीं? वह फिर से मूर्ति बनाने के काम में जुट गया। इस बार गंगादास सफल रहा। राजा रामदत्त ने जब मूर्ति को देखा तो देखते रह गए। उन्हें प्रशंसा के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे। रामदत्त ने गंगादास को बहुमूल्य वस्त्र, आभूषण और हजारों स्वर्ण मुद्राएं इनाम में दी और गंगादास को राज शिल्पी घोषित कर दिया।

१०१७) संत का सम्मान - संत अबुल हसन खिरकानी की परीक्षा लेने के लिए महमूद गजनवी अपने एक गुलाम को शाही लिबास पहनाकर और खुद दासी का रूप धारण कर उनके पास गया। संत ने केवल दासीरूप में आए महमूद की ओर देखा। इस पर बादशाह बना गुलाम बोला, आपने बादशाह का सम्मान क्यों नहीं किया? हसन बोले, सब रचा-रचाया जाल है। महमूद जान गया कि यह पहुंचा हुआ महात्मा है। उसने लिबास उतारकर माफी मांगी और कुछ नसीहतें देने को कहा, ऐ। महमूद, जरा अदब का लिहाज रख। जो चीजें हराम हैं, उनसे दूर रह। खुदा की बनाई दुनिया से प्यार कर और अपने जीवन में उदारता बरत। तब महमूद ने उन्हें अशर्फियों की थैली भेंट की। इस पर संत ने एक सूखी जौ की टिकिया उसे खाने को दी। महमूद उसे चबाता रहा, किंतु वह गले से न उतरी। तब वह बोला, यह निवाला मेरे गले में अटक रहा है। इस पर हसन बोले, तब क्या तू भी यह चाहता है कि यह थैली मेरे हलक में अटके? महमूद शर्मिंदा हो गया और जाते-जाते बोला, आपकी झोपड़ी बड़ी उम्दा है। हसन बोले, महमूद, खुदा ने तुझे इतनी बड़ी सल्तनत दी, फिर भी तेरा लालच नहीं गया। क्या तू इस झोपड़े का भी तालिब है? महमूद और भी लज्जित हुआ और वह जाने के लिए बढ़ गया, तो हसन खड़े हो गए। उन्हें खड़ा देखकर महमूद बोला, जब मैं यहां आया, तब आपने सम्मान नहीं किया और अब कर रहे हैं। हसन बोले, महमूद, जब तुम यहां आए थे, तब तुम्हारे दिल में शाही रौब भरा था। तुम मेरा इम्तिहान लेने आए थे, मगर अब यहां से अदब का ख्याल कर जा रहे हो, क्योंकि तुम्हारे चेहरे पर फकीरी का नूर चमक रहा है। इसी कारण मैंने उस समय सम्मान नहीं किया और अब कर रहा हूं।

१०१८) संन्यास का मार्ग - श्रावस्ती के जेतवन विहार में गौतम बुद्ध धार्मिक उपदेश दे रहे थे। नगर के धनी सेठ का पुत्र भी वहां आया हुआ था। उपदेश समाप्त होने पर उसने बुद्ध को श्रद्धापूर्वक प्राणाम किया और उनसे संन्यास में दीक्षित करने की प्रार्थना की। बुद्ध ने स्नेहपूर्वक कहा, संन्यास ग्रहण करने के लिए माता-पिता की आज्ञा अनिवार्य है। नगर-सेठ का युवा पुत्र विदा लेकर अपने घर लौट आया। सात दिन तक निराहार रह कर उसने माता-पिता से प्रार्थना की। उन्होंने पुत्र को संन्यास ग्रहण करने की आज्ञा दे दी। बुद्ध के निर्देशानुसार वरिष्ठ आचार्य ने उसे दीक्षित कर दिया। वह कई वर्षों तक साधना करता रहा। एक दिन उसका एक पड़ोसी घूमता हुआ वहां आ पहुंचा। वणिक-पुत्र ने उससे अपने माता-पिता की कुशल पूछी। उसने बताया, वृद्धावस्था में वे अस्वस्थ रहने लगे हैं। कठिनाई में जीवन-यापन कर रहे हैं। यह सुनकर पुत्र की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने कमंडल उठाया और भिक्षा लेकर माता-पिता से मिलने के लिए चल दिया। वहां पहुंच कर उसने दीन-हीन माता-पिता के चरण-स्पर्श किए। एक भिक्षु को नमन करते देख वे चकित रह गए और पूछने लगे, तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? भिक्षु ने कहा, मैं आपका पुत्र

हूं। मैं आपकी देखभाल करूंगा। अब वह साधना भी करता और भिक्षा मांग अपना व माता-पिता का पालन-पोषण भी करता। दूसरे भिक्षुओं ने उसकी शिकायत गौतम बुद्ध से की, वणिक-पुत्र भिक्षा में मिली वस्तुएं गृहस्थों में बांट देता है। उसने संघ का नियम तोड़ा है। तथागत ने वणिक-पुत्र को बुलाकर पूछा, क्या तुमने भिक्षा में ग्रहण की गई चीजों से गृहस्थों का पालन-पोषण किया? उसने उत्तर दिया, हां भंते, मैंने अपने बेसहारा बुजुर्ग माता-पिता का पोषण किया। गौतम बुद्ध ने घोषणा की, भिक्षुओ। वणिक-पुत्र संन्यास के सच्चे मार्ग पर अग्रसर है।

१०१९) हास्य-रुदन का मोल - अमेरिका में रहनेवाले धनाढ्य खेलप्रेमी वैंडरबिल्ट किसी काम के सिलसिले में तुर्की के प्रमुख नगर कुस्तुनतुनिया गए हुए थे। संयोग से उन्हीं दिनों फ्रांसीसी अभिनेता कॉकलिन भी कुस्तुनतुनिया आए हुए थे। जब वैंडरबिल्ट ने यह बात सुनी तो उन्होंने कुस्तुनतुनिया की प्रसिद्ध नदी में नौका विहार के लिए कॉकलिन को आमंत्रित किया। वैंडरबिल्ट ख्यातिप्राप्त व्यक्ति थे। ऐसे व्यक्ति का निमंत्रण पाकर कॉकलिन प्रसन्न हो उठे और अपने कई साथियों सहित निश्चित समय पर नौका विहार के लिए पहुंच गए। नौका नदी के बहाव के साथ बढ़ने लगी। उस शांत वातावरण में कॉकलिन और उसकी पार्टी ने वैंडरबिल्ट के मनोरंजन के लिए एक अत्यंत रोचक रूपक सुनाया। यह वैंडरबिल्ट को बहुत पसंद आया। वह भावुक हो गए और उनकी आंखों में आंसू आ गए। अमेरिका पहुंच कर वैंडरबिल्ट ने तीन हजार डॉलर का चेक संलग्न करते हुए मिस्टर कॉकलिन को पत्र लिखा, प्रियवर। उस दिन के संयोग को मैं जीवन भर न भुला सकूंगा। आपने अपने कलापूर्ण अभिनय से मेरा मनोरंजन किया उसके छह सौ डॉलर और जो बारह बार आपने हंसाया था, उसके चौबीस सौ डॉलर। इस प्रकार तीन हजार डॉलर का चेक साथ में भेज रहा हूं। कृपया इसे स्वीकार करें। इसके साथ ही उन्होंने हास्य को ज्यादा महत्वपूर्ण बताते हुए लिखा, मानव के स्वास्थ्य के लिए रुदन की तुलना में हास्य अधिक उपयोगी है। उस पत्र का उत्तर कॉकलिन ने कुछ इस तरह दिया, मान्यवर। आपने मेरा अभिनय पसंद किया। इसके लिए मैं हृदय से आभारी हूं। आपका भेजा हुआ तीन हजार डॉलर का चेक मैं लौटा रहा हूं, क्योंकि हास्य-रुदन वास्तव में मानव को प्रकृति की अमूल्य देन है। इसका मूल्य डॉलर जैसी मुद्रा में नहीं आंका जा सकता है। धृष्टता के लिए क्षमा याचना सहित, कॉकलिन।

१०२०) सच्चा प्रेम पाने के लिए - स्वामी रामतीर्थ उन दिनों अमेरिका में थे। दूर दूर से लोग उनसे मिलने आते थे। एक दिन उनके पास एक महिला आई। वह चली तो गई थी, पर कुछ बोल पाने में असमर्थ थी। गहरे दुख ने उसकी आवाज को जकड़ रखा था। काफी देर वह यों ही बैठी रही। इन क्षणों में रामतीर्थ भी उससे कुछ बोले नहीं, बस, करुणापूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखते रहे। उनकी वह करुणापूर्ण दृष्टि उस महिला को छू गई। उसका जमा हुआ विषाद पिघल उठा। दुख की परत आंसुओं में घुलने लगी। कुछ देर रोती ही रही। स्वामी रामतीर्थ उसे स्नेह भाव से निहारे जा रहे थे। उनके स्नेह की संजीवनी से वह जैसे तैसे बोलने लायक हुई। भरे गले से उसने अपनी कथा सुनाई। कथा का सार इतना ही था कि वह प्रेम में छली गई थी। तन-मन-धन-जीवन, सब कुछ निस्सार करने के बाद भी उसे धोखा मिला था। उसकी बातें सुनकर बाद में रामतीर्थ बोले- बहन, यहां हर कोई अपनी क्षमता के अनुसार ही बर्ताव करता है। जिसके पास जितनी शारीरिक, मानिसक, बौद्धिक एवं भावनात्मक क्षमता है, वह उसी के अनुसार बर्ताव करने के लिए विवश हैं। जिनकी

भावनाएं स्वार्थ एवं कुटिलता से भरी हैं, वे तो बस क्षमा के पात्र हैं। महिला का अगला प्रश्न था- तब क्या जीवन में सच्चा प्रेम पाना असंभव है? नहीं, ऐसा नहीं है। स्वामी रामतीर्थ ने कहा- सच्चा प्रेम मिलता है, पर उन्हें जो सच्चा प्रेम करना जानते हैं। महिला ने कहा- मेरा प्रेम भी तो सच्चा था। रामतीर्थ बोले- नहीं बहन, तुम्हारे प्रेम में स्वार्थ की मांग थी, उसमें किसी न किसी अंश में वासना भी घुली थी। सच्चा प्रेम तो सेवा करुणा एवं श्रद्धा के रूप में ही प्रकट होता है। रामतीर्थ की बातों का अर्थ उसकी समझ में आ गया। वह समझ गई कि प्रेम केवल दिया जाता है, उसमें पाने की मांग नहीं होती। इसके बाद वह एक अस्पताल में नर्स बन गई।

१०२१) प्रेम की भाषा - वह तीस भाषाएं जानते थे, लेकिन बात तो प्रेम की ही भाषा में करते थे। इसी भाषा ने उन्हें पूरी दुनिया के लिए इतना सुपरिचित बना दिया, जैसे वह आजमगढ़ के अपने गांव पंदहा में जाने जाते थे। रूसी क्रांति के बाद राहुल सांकृत्यायन ने तय किया कि रूस तो एक बार जाना ही है। तो १९३७ में वह पहले सिंगापुर पहुंचे, फिर वहां से जापान, कोरिया, मंचूरिया, मंगोलिया, मध्य एशिया होते हुए रूस गए। रूस में राहुल को अपनी ही तरह के एक भाषाविद मिले जो उस वक्त रूसी और संस्कृत के शब्दों के आपसी रिश्तों पर काम कर रहे थे। वहां राहुल सांकृत्यायन ने पाली और संस्कृत भाषा पर कई व्याख्यान दिए, जिसने रातों-रात उन्हें रूस में हीरो बना दिया। इसी बीच उनकी मुलाकात वहीं की एक लाइब्रेरी में काम करनेवाली लोला येलेना से हुई और दोनों ने शादी कर ली। भारत लौटने पर उन भाषाविद से उनकी चिट्ठी-पत्री जारी रही। उन्हीं चिट्ठियों में एक दिन राहुल को पता चला कि रूस में उनका एक पुत्र भी है। यह जानते ही वह फिर रूस जाने को बेचैन हो उठे, लेकिन इस बीच दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था। पिता अगर पुत्र के पास होता तो प्रेम के अलावा किसी भाषा की जरूरत न होती, मगर यहां तो बीच में दुनिया के सबसे भीषण युद्ध की दीवार खड़ी थी। पुत्र से करनेवाली बातें वह कागजों से करने लगे। युद्ध के बाद राहुल जब रूस पहुंचे तो देखा कि पुत्र कागज के उन बंडलों से कहीं ज्यादा बड़ा हो चुका है, जिनमें पिता-पुत्र की बातें भरी हैं। और शक्ल भी बिलकुल राहुल जैसी। अपने अंश को गले लगाकर वह कई दिनों तक रोते रहे। पितापुत्र का यह मिलन देख वहां मौजूद सभी रुसियों की आंखें भर आईं। जिस वक्त पूरी दुनिया एक दूसरे को खत्म करने में लगी थी, यह राहुल सांकृत्यायन ही थे जिन्होंने संस्कृतियों का ऐसा प्रेमिल मिलन कराया था।

१०२२) अमृत की खेती - भगवान बुद्ध नगर-नगर भिक्षाटन करते और जो भी मिल जाता, उससे योग साधना या ध्यान विधियां सीखकर कठोर तप करते। तप के दौरान वे एक वक्त सिर्फ तिल और चावल ही ग्रहण करते। एक बार भगवान बुद्ध भिक्षा के लिए एक किसान के यहां पहुंचे। तथागत को भिक्षा के लिए आया देखकर किसान उपेक्षा से बोला, श्रमण, मैं हल जोतता हूं और तब खाता हूं। तुम्हें भी हल जोतना और बीज बोना चाहिए और तब खाना खाना चाहिए। बुद्ध ने कहा- हे अन्नदाता, मैं भी खेती ही करता हूं। इस पर किसान को जिज्ञासा हुई और वह बोला- मैं न तो तुम्हारे पास हल देखता हूं, ना बैल और ना ही खेती का स्थल। तब कैसे कहते हो कि आप भी खेती ही करते हो। आप कृपया अपनी खेती के संबंध में समझाइए। बुद्ध ने कहा- मेरे पास श्रद्धा भक्ति, आस्था, आदर, सम्मान और स्नेह भाव का बीज है। चित्त की शुद्धि, धर्म लाभ के लिए किया जाने वाला व्रत और नियम, इंद्रिय निग्रह तप, योगसाधना, समाधि, ब्रह्मचर्य, तपस्या रूपी

वर्षा जीवमात्र रूपी जोत और हल है। मेरे पास पापभीरूता का दंड है। मेरे पास काले लोहे से सोना बनानेवाले सद्विचारों का पासर रूपी रस्सा है, स्मृति और जागरूकता रूपी हल की फाल और पेनी है। मैं वचन और कर्म में संयत रहता हूं। मैं अपनी इस खेती को बेकार नकारात्मक विचारों की घास से मुक्त रखता हूं और आनंद की फसल काट लेने तक प्रयत्नशील रहनेवाला हूं। प्रमाद के ही कारण आसुरी वृत्ति वाले मनुष्य मृत्यु से पराजित होते हैं और अप्रमाद यानी संत प्रवृत्ति वाले ब्रह्मास्वरूप अमर हो जाते हैं। यही अप्रमाद मेरा बैल है, जो बाधां देखकर भी पीछे मुंह नहीं मोड़ता। वह मुझे सीधा शांति-धाम तक ले जाता है। इस प्रकार मैं भी तुम्हारी तरह किसान हूं, अमृत की खेती करता हूं।

१०२३) पक्के इरादे की उड़ान - एक छात्रा ने अपने शिक्षक से कहा, मैं भी ओलिंपिक खेलों में अपना रेकॉर्ड बनाना चाहती हूं। यह सुनकर शिक्षक ने पूरी कक्षा के समक्ष उस पर व्यंग्य कसा, जिसे सुनकर कक्षा के सभी बच्चे खिलखिला उठे। शिक्षक कह रहे थे, पहले अपने पैरों की ओर तो देखो। तुम ठीक से चल भी नहीं सकती हो और ओलिंपिक खेलों में रेकॉर्ड बनाना चाहती हो? वह बच्ची कुछ नहीं बोल सकी और सारी कक्षा की गूंजती हंसी सुनती रही। अगले दिन कक्षा में मास्टर जी आए तो बड़े धैर्य के साथ दृढ़ और संयमित स्वरों में उस लड़की ने कहा, मास्टर जी, यह ठीक है कि मैं अपाहिज हूं, आज मैं चल-फिर नहीं सकती। पर मास्टर जी, याद रखना कि मन में पक्का इरादा हो तो क्या नहीं हो सकता। आप आज मेरे अपाहिज होने पर हंस रहे हैं, लेकिन यही अपंग लड़की एक दिन आपको हवा में उड़कर दिखाएगी। उसके साथियों ने उसके मुंह से जब यह सुना तो कक्षा के कुछ शरारती बच्चे फिर हंस पड़े। उस दिन भी कक्षा में काफी देर तक उसकी खिल्ली उड़ती रही। पर उस लड़की ने ठान लिया कि हर हाल में उसे अपना सपना पूरा करना है। वह रोजाना चलने का अभ्यास करने लगी। कुछ ही दिनों में वह अच्छी तरह चलने लगी और फिर अपनी अथक मेहनत की बदौलत उसने दौड़ना भी प्रारंभ कर दिया। इस कामयाबी ने उसका हौसला बढ़ाया। बिना प्रशिक्षण के ही वह एक अच्छी धावक बन गई। १९६० के ओलिंपिक में उस लड़की ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया और तीन पदक जीते। सुनकर सभी दंग रह गए। उस पर हंसने वालों को भी जवाब मिल चुका था। हवा से बातें करने की महत्वाकांक्षा रखनेवाली वह अपंग लड़की थी, टेनेसी राज्य की ओलिंपिक धाविका-विल्मा गोल्डीन रुडॉल्फ। उसके मजबूत और पक्के इरादे ने उसे मंजिल तक पहुंचा दिया।

१०२४) अक्लमंद की पहचान - जफर सादिक एक महान संत थे। एक बार उनके पास दूर से आए कुछ लोग विचार-विमर्श कर रहे थे। विमर्श में यह प्रश्न उठा कि अक्लमंद की सही पहचान क्या है? यह सुनकर सभी सोच में पड़ गए और अपनी-अपनी तरह से जवाब देने लगे। किसी ने कहा- जो सोच-समझ कर बोले वह अक्लमंद है। इस पर संत सादिक बोले, अपनी समझ के अनुसार तो हर व्यक्ति सोच-समझ कर ही बोलना चाहता है, मगर ऐसा हमेशा नहीं होता। ऐसे में उन सभी को अक्लमंद नहीं कहा जा सकता। अक्लमंद तो कुछ लोग ही होते हैं और उनकी पहचान भी कुछ खास ही होती है। संत सादिक का यह जवाब सुनकर सभी गहरे सोच में पड़ गए। तभी उनमें से एक बोला, जो नेकी और बदी में फर्क कर सके, वही अक्लमंद है। उसकी इस बात पर संत सादिक बोले, नेकी और बदी का फर्क इंसान ही नहीं, जानवर तक समझते हैं। तभी तो जो उनकी सेवा करते हैं, वे उन्हें न काटते हैं और न ही नुकसान पहुंचाते हैं। यह सुनकर सभी की

बोलती बंद हो गई। इस पर एक व्यक्ति बोला, हुजूर, अब आप ही अक्लमंद व्यक्ति की पहचान बताइए। संत मुस्कराते हुए बोले, अक्लमंद वह है जो दो अच्छी बातों में यह जान सके कि ज्यादा अच्छी बात कौन सी है। और दो बुरी बातों में यह जान सके कि ज्यादा बुरी बात कौन सी है। अच्छी व बुरी बातों में पहचान करने के बाद यदि उसे अच्छी बात बोलनी हो तो वह बात बोले जो ज्यादा अच्छी हो और यदि बुरी बात बोलने की लाचारी पैदा हो जाए तो वह बोले जो कम बुरी हो। यह बात सुनने में बेशक मामूली लग रही है, पर यदि इंसान इस राह पर चले तो वह न सिर्फ अक्लमंद कहलाएगा बल्कि बड़ी से बड़ी मुसीबत टालने में भी कामयाब हो जाएगा।

१०२५) गुणों की महक - हकीम लुकमान जब जीवन की अंतिम सांसें गिन रहे थे, तब वह अपने बेटे को आखिरी प्रेरणा देना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने एक दिन उन्होंने अपने बेटे को अपने पास बुलाया। बेटा जब कमरे में आया तो हकीम लुकमान ने धूपदान की ओर इशारा किया। इशारे को समझ बेटा धूपदान में से एक मुट्ठी चंदन का चूरा ले आया। उसके बाद लुकमान ने दूसरा इशारा किया। इशारा समझ बेटा दूसरे हाथ में कच्चा कोयला ले आया। लुकमान ने फिर इशारा किया कि दोनों को फेंक दो। बेटे ने दोनों को फेंक दिया। लुकमान ने बेटे से जानना चाहा कि अब उसके हाथों में क्या है? बेटे ने बताया कि कुछ भी नहीं है, दोनों हाथ खाली हैं। लुकमान ने कहा- ऐसा नहीं है। अपने हाथों को गौर से देखो। बेटे ने अनुभव किया कि जिस हाथ में चंदन का चूरा था वह अब भी खुशबू बिखेर रहा है और जिस हाथ में कोयला रखा था उसमें अब भी पहले की तरह कालिख नजर आ रही थी। लुकमान ने कहा- बेटा, तुम्हारे लिए यह मेरी अंतिम शिक्षा है। चंदन का चूरा अब भी तुम्हारे हाथ में खुशबू दे रहा है जबकि तुम्हारे हाथ में अब चंदन नहीं है। कोयले का टुकड़ा तुमने हाथ में ले लिया तो तुम्हारा हाथ काला हो गया और उसे फेंक देने के बाद भी हाथ काला ही है। इसी तरह दुनिया में दो प्रकार के लोग हैं। कुछ चंदन की तरह होते हैं जिनका जीवन स्वयं भी खुशबूमय होता है और जहां भी वे जाते हैं महक ही फैलाते हैं। ऐसे गुणवान लोगों के साथ जब तक रहो, तब तक हमारा जीवन महकता रहता है और उनका साथ छूट जाने पर भी वह महक हमारे जीवन से जुड़ी रहती है। दूसरे ऐसे होते हैं जिनके साथ रहने से भी और साथ छूटने पर भी जीवन कोयले की तरह कलुषित होता है। हकीम का बेटा उनका आशय समझ गया।

१०२६) अपमान से प्रेरणा - साहूकार देवराज अनगढ़ जोर से चिल्लाए- राम। यह क्या बेवकूफी है? किधर देख रहे हो? पानी कहां डाल रहे हो? ठीक मेरे हाथों पर क्यों नहीं डालते? राम ने विनयपूर्वक कहा, क्षमा कीजिएगा, मुझसे भूल हो गई। आपके कान की बाली के तेजस्वी मोती में मेरी नजर अटक गई थी। निश्छल राम ने साफ बात बता दी। तब साहूकार ने उपहास की हंसी हंसते हुए कहा, मूर्ख यह मोती हजारों रुपये का है। तुझ जैसे दरिद्र को सपने में भी वैसा मोती प्राप्त नहीं हो सकता। कभी तुम्हारे बाप-दादाओं ने। बात काट कर राम ने कहा, देखिए महाराज, मेरे बाप-दादाओं को बीच में लाने की आवश्यकता नहीं है। यह रहा पानी भरा लोटा और यह रही आपकी नौकरी। जब आपकी जैसी बाली कान में पहन लूंगा तभी आपको मुंह दिखलाउंगा। वहां उपस्थित सभी हंस पड़े। बालक राम नौकरी-चाकरी करता हुआ चार महीनों के बाद काशी पहुंचा। एक विद्वान दयालु आचार्य से उसकी भेंट हो गई। उनकी कुटी में वह पुआल बिछा कर सोता, एक समय रोटी खाता और दूसरे समय गंगा जल पीकर रहता और बारह वर्षों तक वह अध्ययन

करता रहा। व्याकरण, तर्कशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा न्याय शास्त्र में बड़ी उपाधियां प्राप्त कर वह रामशास्त्री प्रभूणे बनकर लौटा। उसकी विद्वता देखकर पूना के विद्वान बहुत प्रभावित हुए। नानासाहब पेशवा द्वारा शासकीय अधिकारी बनाए जाने के बाद जब वह सतारा पहुंचे तब देवराज अनगड़ ने उनका सत्कार किया और अपने पूर्व व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। तब रामशास्त्री ने कहा, आप वह बात अपने मन से निकाल दें। मैं तो यह समझता हूं कि मैं आज जो कुछ भी हूं आपकी बदौलत हूं। आपने उस समय मुझे झकझोरा न होता तो आज मुझे यह यश न मिलता। मैं आपका कृतज्ञ हूं। महाराष्ट्र के इतिहास में रामशास्त्री प्रभूणे का नाम सुप्रसिद्ध है।

१०२७) जीने का तरीका - ललितनगरी के महाराज सारंगदेव अपने मंत्री के ज्ञान व उनकी चेतना से कुपित थे। एक बार मंत्री के जन्मदिन समारोह के दौरान जब सब खुशी से झूम रहे थे, तभी सैनिक राजा का संदेश लेकर पहुंचे और बोले कि आज शाम को मंत्री को फांसी दी जाएगी। यह सुनकर समारोह में उदासी छा गई। मंत्री के मित्र, संबंधी सभी रोने लगे। मगर मंत्री आराम से संगीत व नृत्य का आनंद लेते रहे। ऐसा लगा जैसे उन्होंने कुछ सुना ही नहीं। यह सोचकर सैनिकों ने फिर से राजा का संदेश सुनाया तो मंत्री ने सैनिकों से कहा कि राजा को मेरी ओर से धन्यवाद देना कि कम से कम मृत्यु से पहले आनंद मनाने के लिए अभी कई घंटे शेष हैं। उन्होंने मुझे पहले बताकर मुझ पर बड़ा उपकार किया है। हम अब अपनी मौत से पहले पूरी खुशी मना सकते हैं। यह कहकर मंत्री फिर से नाचने लगे। यह देखकर सैनिक वापस राजा सारंग देव के पास पहुंचे। राजा ने पूछा- मौत का संदेश सुनकर मंत्री का क्या हाल था? सैनिकों ने बताया कि वह तो खुशी से झूम उठे और समय बताने के लिए आपको धन्यवाद देने को कहा है। सारंग देव ने कल्पना तक नहीं की कि मौत की खबर पर कोई खुश हो सकता है। वह सच जानने के लिए मंत्री के घर पहुंचे तो देखा कि मंत्री खुशी से नाच-गा रहे थे। राजा ने मंत्री से पूछा, आज शाम मौत है और तुम हंस रहे हो, गा रहे हो? मंत्री ने राजा को धन्यवाद दिया और कहा- इतने आनंद से मैं कभी भी न भरा था। आपने मौत का समय बताकर बड़ी कृपा की। मृत्यु का उत्सव मनाना आसान हो गया। आपकी कृपा पर आपका धन्यवाद। यह सुनकर राजा सारंग देव अवाक रह गए। बोले कि जब तुम मौत से व्यथित ही नहीं तो अब तुम्हें फांसी देना बेकार है।

१०२८) गांधी जी की हद - देश के बंटवारे के समय हर तरफ दंगा-फसाद फैला हुआ था। दो धर्मों के बीच बंटी धरती ने सबसे ज्यादा उन दिलों को चकनाचूर किया जो एक साथ रहना चाहते थे। जिनके दिलों में आजादी की तमाम उमंगे थीं, मगर बंटवारे ने सब कुछ शोक में बदल दिया। पूरा देश जैसे चीख-पुकार और कोलाहल में डूबा था, मगर पूरे देश में एक कमरा था जहां सबसे ज्यादा शांति थी। जहां सभी धर्म के लोग एक साथ बैठकर एक दूसरे को सहारा दे रहे थे। जहां बाहर होते खून-खराबे की खबरें तो आती थीं, मगर अंदर कोई किसी पर न चीखता न चिल्लाता। वह कमरा महात्मा गांधी का था। एक रोज उसी कमरे में कांग्रेस के एक कार्यकर्ता महात्मा गांधी को बता रहे थे कि दंगे में कितनी जानें गईं। वह सही गिनती तो नहीं बता सके, लेकिन अंदाजन कुछ बोले कि गांधी जी ने उनसे पूछा, जब खून-खराबा हो रहा था, तब आप क्या कर रहे थे? उन्होंने कहा- बापू, हम सब कांग्रेस के कार्यकर्ता उनसे मजबूती से निपटे। दंगे रोकने में हम सब दिन-रात लगे रहे। तब गांधीजी ने पूछा- अच्छा, तो उसमें कितने कांग्रेस के कार्यकर्ता

मारे गए? यह सुनकर वहां बैठे सभी लोग सकपका गए। उन कार्यकर्ता ने कहा कि, बापू, हममें से कोई नहीं मारा गया। तब बापू बोले- तो तुम कैसे कह सकते हो कि दंगे रोकने की बड़ी कोशिश की? कोशिश करते हुए जब तुममें से कोई मारा नहीं गया, तो मैं कैसे मान लूं कि तुमने कोई कोशिश की थी? यह थी अमल की सबसे ऊंची मंजिल, जिस तक गांधी जी खुद तो जाना ही चाहते थे, अपने साथियों को भी ले जाना चाहते थे। बुराई, नफरत, दंगों को खत्म करने के लिए अपनी मौत की हद तक जाना ही तो गांधी जी दिखाना चाहते थे।

१०२९) छह पैसे का राजा - राजा भोज नदी के किनारे टहल रहे थे। उन्हें सिर पर लकड़ियों का बंडल ले जाता एक वृद्ध व्यक्ति दिखाई दिया। वह पसीने से तर हो रहा था, लेकिन प्रसन्न दिख रहा था। राजा ने पूछा, तुम कौन हो? उसने उत्तर दिया, मैं राजा भोज हूं। राजा ने फिर पूछा- कौन? उसने पुन: उत्तर दिया- राजा भोज। राजा जिज्ञासा से भर गए और बोले- तुम राजा भोज हो तो अपनी आय बताओ? लकड़हारे ने जवाब दिया- मैं प्रतिदिन छह पैसा कमाता हूं। राजा ने उस व्यक्ति से पूछा, तो तुम्हारा खर्च कितना है, तुम्हारा राज्य कैसे चलता है? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, एक पैसा अपनी पूंजी के मालिक को देता हूं, एक पैसा ऋणी को, एक पैसा मंत्री को, एक पैसा बचत के रूप में जमा करता हूं, एक पैसा अतिथियों के लिए और शेष एक पैसा अपने खर्च के लिए रखता हूं। राजा ने पूछा, कृपया विस्तार से बताएं। लकड़हारे ने उत्तर दिया, मेरे माता-पिता मेरी पूंजी के मालिक हैं। उन्होंने मेरे लालन-पालन में निवेश किया है। मेरे बच्चे मेरे ऋणी हैं। बड़े होकर वे भी पितृऋण चुकाएंगे। मेरी पत्नी मेरी मंत्री है। वही मेरा घर चलाती है। वही मेरी सबसे अच्छी मित्र और सलाहकार है। राजा ने संकोचपूर्वक पूछा- क्या तुम बचत भी करते हो? वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया- जो व्यक्ति अपने भविष्य के लिए बचत नहीं करता, उससे बड़ा बेवकूफ कोई नहीं होता। जीवन अनिश्चितताओं से भरा हुआ है। प्रतिदिन मैं एक पैसा अपने खजाने में जमा करता हूं। राजा बोले, कृपया बताना जारी रखें। लकड़हारे ने कहा, पांचवा पैसा मैं अपने अतिथियों की खातिरदारी के लिए सुरक्षित रखता हूं। एक गृहस्थ होने के नाते यह मेरा कर्त्तव्य है। और छठवां पैसा मैं अपने लिए रखता हूं, जिससे मैं अपने रोजमर्रा के खर्च चलाता हूं। राजा भोज उस लकड़हारे से बहुत प्रसन्न हुए।

१०३०) कामयाबी की राह - अलेक्जेंडर ग्राहम बेल की पत्नी माबेल गारडीनर सुन नहीं सकती थीं। ग्राहम बेल और उन्हं आपसी संवाद करने में बहुत दिक्कत होती थी। कुछ समय बाद ग्राहम बेल और माबेल एक-दूसरे के साथ संकेतों में बात करने लगे। एक दिन वह माबेल के साथ संकेतों से बात कर रहे थे, तभी उनका ध्यान माबेल के कानों की तरफ गया। वह उनके कानों को ध्यान से देख रहे थे। यह देखकर माबेल संकेत से कान की ओर इशारा करके बोलीं, कान में क्या देख रहे हो? ग्राहम बेल ने संकेत में माबेल को बताया, सोच रहा हूं कि क्या कोई ऐसी मशीन बन सकती है जो सुनने में मदद कर सके? यदि सुनने वाली मशीन बन गई तो फिर मैं और तुम आराम से बातें कर पाएंगे। यह सुनकर माबेल मुस्कराने लगीं। ग्राहम बेल अपने आविष्कार में लग गए। उन्हें एक ही धुन सवार थी कि किसी तरह सुनने की मशीन का आविष्कार करना है। वह दिन-रात प्रयोग करते रहते। इस दौरान कई बार तो खाना भी खाना भूल जाते। यहां तक कि उन्हें दिन और तारीख का भी ध्यान नहीं रहता। आखिर कई दिनों की कड़ी मेहनत के बाद उन्होंने एक आविष्कार कर ही

लिया। जब वह आविष्कार लोगों के सामने आया तो वह सुनने की मशीन नहीं थी, वह आविष्कार था टेलिफोन। माबेल को ज्ञात हुआ कि ग्राहम बेल सुनने की मशीन बनाने में कामयाब नहीं हो पाए लेकिन उन्होंने टेलिफोन बनाने का सिद्धांत अवश्य ढूंढ निकाला। यह जानकर वह ग्राहम बेल को सांत्वना देते हुए संकेतों में माबेल बोलीं, जिस तरह आपने टेलिफोन का आविष्कार कर दिया है, उसी तरह एक दिन सुनने की मशीन का आविष्कार भी अवश्य हो जाएगा। माबेल की बात सत्य सिद्ध हुई। आज सुनने की मशीन का आविष्कार हो चुका है और अनेक बधिर व्यक्ति उसका लाभ भी उठा रहे हैं।

१०३१) प्रेम की आहुति - किसी नगर में एक विद्वान साधु रहता था। लोग उसके पास अपनी समस्याएं लेकर आते और समाधान पाकर प्रसन्नचित्त होकर लौट जाते। एक दिन एक सेठ साधु के पास आकर बोला, महाराज, मेरे पास किसी चीज की कमी नहीं है फिर भी मेरा मन अशांत रहता है। कृपया बताएं कि मैं क्या करूं? यह सुनते ही साधु उठा और चल पड़ा। सेठ भी उसके पीछे-पीछे चलने लगा। आश्रम के एक खाली कोने में जाकर साधु ने आग जलाई और धीरे-धीरे उसमें एक-एक लकड़ी डालता रहा। हर लकड़ी के साथ आग की लौ तीव्र होती रही। कुछ देर बाद वह वहां से वापस अपनी जगह पर आकर चुपचाप बैठ गया। सेठ भी साधु के पास आकर दोबारा बैठ गया। किंतु जब साधु ने उससे कुछ भी न कहा तो सेठ को बहुत हैरानी हुई। वह हाथ जोड़कर विनम्रता से बोला, महाराज, मैं आपके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूं। सेठ के ऐसा कहने पर साधु मुस्करा कर बोला, मैं इतनी देर से तुम्हारा उत्तर ही तो दे रहा था। तुम्हारी समस्या का ही समाधान कर रहा था किंतु शायद तुम्हें समझ नहीं आया। अब मैं तुम्हें विस्तारपूर्वक बताता हूं। देखो, हर व्यक्ति के अंदर आग होती है। उसमें प्यार की आहुति डालें तो वह मन को शांति और आनंद देती है। यदि उसमें दिन-रात काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद की लकड़ियां डाली जाती रहें तो वह मन में अशांति उत्पन्न करती है और आग को भड़काती है। जब तक तुम अशांति फैलानेवाले इन तत्वों को आग में डालना बंद नहीं करोगे तब तक तुम्हारा मन शांत नहीं होगा। यह सुनकर सेठ की आंखें खुल गईं। उसे अपनी समस्या का समाधान मिल गया था। वह साधु को नमस्कार कर प्रसन्नचित्त घर लौट आया। उसने आगे से अपने अंदर की आग में प्रेम की आहुति डालने का संकल्प किया।

१०३२) औषधि का निर्माण - एक बार औषधियों की खोज-बीन में राजवैद्य चरक जंगल-जंगल घूम रहे थे। उन्हें जिस औषधि की तलाश थी वह कहीं भी नजर नहीं आ रही थी। तभी एकाएक उनकी दृष्टि खेत में पौधे पर लगे एक सुंदर फूल पर पड़ी। इससे पहले उन्होंने हजारों फूलों के गुण-दोषों की जांच की थी और उनसे औषधि भी तैयार की थी, परंतु यह तो कोई नए प्रकार का ही फूल लग रहा था। उनका मन उस फूल को पा लेने के लिए उत्सुक था, किंतु पैर आगे ही नहीं बढ़ रहे थे। उनको सकुचाते देख समीप खड़े उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा, गुरुदेव, क्या मैं वह फूल लेकर आ जाऊं? वत्स, फूल तो मुझे चाहिए, लेकिन खेत के मालिक की अनुमति के बिना फूल तोड़ लेना तो चोरी मानी जाएगी। गुरुदेव, कोई वस्तु किसी के काम की हो, तो उसे बिना अनुमति के ले लेना चोरी हो सकती है, परंतु यह तो बस एक पुष्प है। आज यह खिला हुआ है, लेकिन एकाध दिन में मुरझा जाएगा, फिर इसे ले लेने में हर्ज ही क्या है? फिर... गुरु चरक ने बीच में ही पूछा। शिष्य ने कहा, फिर क्या गुरुदेव। आपको तो राजाज्ञा मिली है कि आप कहीं से कोई भी वन-संपत्ति इच्छानुसार बिना किसी की अनुमति के भी ले सकते हैं। चरक ने शिष्य को समझाने की कोशिश की, राजाज्ञा और

नैतिकता में बहुत अंतर होता है। शिष्य ने उत्सुकतावश चरक से पूछा, इसका क्या अर्थ हुआ गुरुदेव? चरक ने समझाया, सुनो वत्स, यदि अपने आश्रितों की संपत्ति को स्वच्छंदता से हम अपने व्यवहार में लाने लगेंगे तो फिर लोगों में आदर्श कैसे जागृत कर पाएंगे? इसके बाद गुरुदेव चरक तीन कोस पैदल चलकर उस किसान के निवास स्थान पर गए और फिर उससे अनुमति लेकर फूल तोड़ा। फूल के गुण-दोषों की जांच करके ही उन्होंने औषधि का निर्माण किया।

१०३३) निंदक नियरे राखिए - इटली सदा से कलाकारों का देश है। वहां के कलाकारों ने दुनिया को देखने की नई दृष्टि भी दी है। एक समय की बात है। इटली में डोनाटेली नामक एक शिल्पकार रहता था। डोनाटेली मूल रूप से फ्लोरेंस शहर का रहने वाला था। अपनी कला से उसने कलाप्रेमियों के बीच खूब नाम कमाया। उसकी बनाई मूर्तियां भी ऐसी होती थीं कि मानों अभी बोल पड़ेंगी। जो भी उसकी बनाई मूर्तियां देखता, बस देखता ही रह जाता। इसी बीच कुछ समय के लिए डोनाटेली इटली के ही पीसा शहर में रहने चला गया। वहां भी उसने एक से बढ़कर एक मूर्तियां बनाईं और खूब प्रशंसा बटोरी। एक समय तो ऐसा आया कि सारा शहर उसका प्रशंसक हो गया था। पीसा के हर चौराहे और हर भवन के बाहर उसकी शिल्पकला के दर्शन होते थे। सबकुछ ठीक चल रहा था कि एक दिन अचानक ही डोनाटेली ने ऐलान कर दिया कि अब वह अपनी जन्मभूमि फ्लोरेंस वापस जाना चाहता है और जीवन का बाकी समय भी वहीं गुजारेगा। इससे उसके प्रशंसकों में शोक की लहर फैल गई। जाने से पहले एक दिन उसके प्रशंसक उससे मिलने आए। उन्हीं में से एक ने पूछा, महोदय, आप वहां क्यों जा रहे हैं? क्या हम लोग आपको पर्याप्त सम्मान नहीं दे पा रहे हैं? तब शिल्पकार ने जवाब दिया- नहीं भाई, ऐसी कोई बात नहीं। आपके प्रेम से मैं अभिभूत हूं। मगर यहां सब मेरी प्रशंसा में ही लगे रहते हैं, जिससे मुझे लगता है कि मैं कहीं घमंड में जल्द ही अपनी कला को ही ना भूल जाऊं। दूसरी ओर मेरे शहर के लोग निष्ठुरता के साथ मेरी आलोचना करते हैं और मेरे काम में हरदम खोट ही निकालते रहते हैं, जिसकी वजह से मुझे अपनी कला को निखारने और कठोर परिश्रम करने की प्रेरणा उत्पन्न होती है। इसलिए मेरा अपने शहर वापस जाना ही श्रेयस्कर है।

१०३४) चलना जरूरी है - स्कूल के दिनों में कोलंबस के हाथ महान गणितज्ञ पाइथागोरस की एक पुस्तक लगी। रेखागणित की उस पुस्तक में लिखा था कि दुनिया गोल है। कोलंबस ने जब यह पढ़ा तो उनके दिमाग में एक विचार आया। उन्होंने सोचा कि अगर दुनिया गोल है तो वे पश्चिम की ओर से समुद्री यात्रा शुरू करके पूर्व की ओर स्थित भारत तक पहुंचने का मार्ग खोज सकते हैं। समय बीतता गया और वह बड़े हो गए। बड़े होकर उन्होंने अपनी योजना जब विद्वानों के सामने रखी, तो सभी हंसने लगे। उन्होंने कोलंबस से कहा कि पृथ्वी गोल नहीं, बल्कि चपटी है और अगर उसने यह मूर्खतापूर्ण कार्य किया, तो वह दुनिया के अंतिम सिरे पर पहुंच जाएगा और अनंत खाई में गिर जाएगा। सत्रह साल तक कोलंबस ने जी-तोड़ कोशिश की कि कोई उनके अभियान के लिए पैसे दे दे। आखिरकार स्पेन की महारानी ने उन्हें जहाज दे दिए, परंतु इस खतरनाक अभियान पर उनके साथ जाने के लिए कोई जहाजी तैयार नहीं था। अंत में कोलंबस ने जेल में बंद कैदियों के सामने यह प्रस्ताव रखा कि अगर वे उनके साथ चलेंगे, तो उन्हें रिहा कर दिया जाएगा। सन १४९२ में कोलंबस तीन जहाजों और ८८ अनिच्छुक नाविकों के साथ भारत की खोज में चल पड़े। काफी समय के बाद भी जब जमीन नहीं दिखी, तो कोलंबस का पूरा दल बगावत पर उतारू हो गया। वे एक असंभव

काम को करने की कोशिश में जान नहीं गंवाना चाहते थे। वे वापस लौटना चाहते थे, पर कोलंबस इसके लिए तैयार नहीं थे। अंत में, कोलंबस ने अपने साहस और दृढ़ संकल्प की बदौलत अमेरिका को खोज लिया। उनके जीवन का रोचक तथ्य यह है कि वे अंत तक यही मानते रहे कि उन्होंने भारत तक पहुंचने का मार्ग खोज लिया है। यही वजह थी कि उन्होंने अमेरिका के निवासियों को इंडियंस नाम दिया।

१०३५) करुणा का कर्ज - ईश्वरचंद्र विद्यासागर के बारे में सभी जानते हैं कि वह एक करुणामय, सहिष्णु और परोपकारी व्यक्ति थे। किसी के सुख-दु:ख में शरीक होना या किसी की मदद के लिए दौड़ पड़ना जैसे उनका रोज का नियम ही हो गया था। एक बार उन्हें पता चला कि कस्बे के ही जयराज नामक दयालु, दानवीर और परोपकारी सज्जन की मृत्यु हो गई है और उसकी पत्नी के पास अंतिम क्रिया तक के पैसे नहीं हैं। विद्यासागर जयराज को नहीं जानते थे। पर जब उन्होंने अंतिम क्रिया के लिए पैसे न होने की बात सुनी तो किसी तरह पूछताछ करते-करते जयराज के घर पहुंच गए। वे जयराज की विधवा के पास दोबारा गए और उससे बोले- मैं और जयराज दोनों अच्छे मित्र थे और दोनों ही एक दूसरे के सुख-दु:ख में काम भी आते थे। मैंने अपने बुरे वक्त में उनसे कुछ रुपये कर्ज स्वरूप लिए थे। आज मैं वही रुपये लेकर उनके पास आ रहा था, तभी यह दुखद समाचार मिला। अब वह तो रहे नहीं, सो आप ही यह कुछ रुपये रख लीजिए। बाकी राशि भी मैं धीरे-धीरे चुका दूंगा। जयराज की पत्नी ने रोते हुए वह रुपये पकड़ लिए। भविष्य में भी विद्यासागर उस औरत के लिए एक निश्चित धनराशि प्रतिमाह भेजते रहे। कई वर्षों के पश्चात उस विधवा औरत को वास्तविकता का पता चला तो वह उनके इस अनूठे झूठ पर अचरज से भर उठी। वह अपने लड़कों के साथ विद्यासागर से मिलने गई और उनके चरणों में गिरकर रोने लगी- आपने हमारे बुरे वक्त में सहारा दिया, हम आपका यह कर्ज कैसे चुका पाएंगे? विद्यासागर बोले- बहन, तुम्हारे इन आंसुओं ने यह सारा कर्ज चुका दिया है। दिल पर कोई बोझ लिए बिना अपने घर जाओ।

१०३६) किसान का बड़प्पन - बाजीराव पेशवा मराठा सेना के प्रधान सेनापति थे। एक बार वह किसी युद्ध में विजयी होकर सेना सहित राजधानी लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने मालवा में पड़ाव डाला। पूरी सेना बुरी तरह से थकी हुई थी। क्या सैनिक और क्या राजा, सभी भूख-प्यास से बेहाल थे, किंतु खाने के लिए अब उनके पास पर्याप्त सामग्री नहीं थी। यह देखकर बाजीराव ने अपने एक सरदार को बुलाकर किसी खेत के फसल कटवाकर छावनी में लाने का आदेश दिया। बाजीराव के आदेश का पालन करते हुए सरदार सैनिकों की एक छोटी सी टुकड़ी लेकर पास के गांव में पहुंचा। गांव के बाहर हर उसे एक किसान दिख गया। उसने किसान को सबसे बड़े खेत पर ले जाने को कहा। किसान को लगा कि यह कोई अधिकारी है, जो खेतों का निरीक्षण करने आया है। बड़े खेत पर जाते ही सरदार ने सैनिकों को फसल काटने का आदेश दिया। यह सुनते ही किसान चकरा गया। उसने हाथ जोड़कर कहा, महाराज। आप इस खेत की फसल न काटें। मैं आपको दूसरे खेत पर ले चलता हूं। सरदार और उसके सैनिक किसान के साथ चल पड़े। वह उन्हें कुछ मील दूर ले गया और वहां एक छोटे-से खेत की ओर संकेत कर कहा, आपको जितनी फसल चाहिए, यहां से काट लीजिए। सरदार ने नाराज होते हुए कहा, यह खेत तो बहुत छोटा है। फिर तुम हमें यहां इतनी दूर क्यों लाए? तब किसान नम्रता

से बोला, वह खेत किसी दूसरे का था। मैं अपने सामने उसका खेत कैसे कटता देखता? यह खेत मेरा है, इसलिए आपको यहां लाया। किसान का बड़ा दिल देखकर सरदार का गुस्सा ठंडा हो गया। उसने फसल नहीं कटवाई और बाजीराव को सारी बात बताई। तब बाजीराव ने अपनी गलती सुधारते हुए किसान को उसकी फसल के बदले पर्याप्त धन दिया और फसल कटवाई। नम्रता, बड़प्पन को दर्शाती है।

१०३७) बेगम के उसूल - १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम सर उठा चुका था। अवध के नवाब वाजिद अली शाह के हाथ से सल्तनत जाने के बाद अंग्रेज हुकूमत को लगा कि अब अवध उसकी मुट्ठी में है। मगर जल्द ही उनका यह भ्रम टूट गया, जब वाजिद अली शाह की बेगम ने खुद ही क्रांति की कमान थाम ली। पूरे अवध में बेगम के नेतृत्व में अंग्रेजों को जबरदस्त संघर्ष का सामना करना पड़ा। बेगम हजरत महल ने हिंदू-मुस्लिम सभी राजाओं को एक करके और अवाम का साथ लेकर अवध में हर तरफ अंग्रेजों को हरा दिया। यहां तक कि पूरी दुनिया में पहली बार अंग्रेजों की शान यूनियन जैक को लखनऊ रेजिडेंसी में जमीन पर गिरा दिया गया। हर तरफ बहुत से अंग्रेज और उनके वफादारों की गिरफ्तारियां हुईं। क्रांति के एक नायक सरदार दलपत सिंह बेगम के दरबार में पहुंचकर कहता है, बेगम हुजूर, आप अपने कैदी अंग्रेजों को हमें सौंप दीजिये। हम उनके हाथ-पैर काटकर अंग्रेजों की छावनी में भेजेंगे, ताकि उन्हें पता चले कि हमारे साथ जो क्रूर व्यवहार किया गया, यह उसका जवाब है। हम चुप रहनेवालों में से नहीं हैं। बेगम का चेहरा सुर्ख हो गया। उन्होंने कहा, हरगिज नहीं। हम अपने कैदियों के साथ ऐसा सलूक न तो खुद कर सकते हैं और न किसी को ऐसा करने की छूट दे सकते हैं। कैदियों पर जुल्म ढाने का रिवाज हमारे हिंदुस्तान का नहीं है। हमारे जीते जी अंग्रेज कैदियों और उनकी औरतों-बच्चों पर जुल्म नहीं किया जा सकता। हिंदुस्तानी तहजीब कैदियों की भी इज्जत और हिफाजत की रही है। आप हमारे सरदार हैं, हम आपकी हिम्मत और जज्बे की इज्जत करते हैं, मगर हम आपकी मांग पूरी नहीं कर सकते। इतने बड़े दिल की मलिका और हिंदुस्तान की पहचान बेगम हजरत महल ने खुद अंग्रेजों के जुल्म सहे, मगर अपने उसूलों से समझौता नहीं किया।

१०३८) आपस की फूट से हुआ नुकसान - प्राचीन समय में एक विचित्र पक्षी रहता था। उसका धड़ एक ही था, परंतु सिर दो थे नाम था उसका भारूड़। एक शरीर होने के बावजूद उसके सिरों में एकता नहीं थी और न ही था तालमेल। वे एक-दूसरे से बैर रखते थे। हर जीव सोचने समझने का काम दिमाग से करता है और दिमाग होता है सिर में। दो सिर होने के कारण भारूंड के दिमाग भी दो थे, जिनमें से एक पूरब जाने की सोचता, तो दूसरा पश्चिम फल यह होता था कि टांगें एक कदम पूरब की ओर चलतीं, तो अगला कदम पश्चिम की ओर और भारूंड स्वयं को वहीं खड़ा पाता था। भारूंड का जीवन बस दो सिरों के बीच रस्साकसी बनकर रह गया था।

एक दिन भारूंड भोजन की तलाश में नदी तट पर घूम रहा था कि एक सिर को नीचे गिरा एक फल नजर आया। उसने चोंच मारकर उसे चखकर देखा तो जीभ चटकाने लगा, वाह। ऐसा स्वादिष्ट फल तो मैंने आज तक कभी नहीं खाया। भगवान ने दुनिया में क्या-क्या चीजें बनाई हैं। अच्छा। जरा मैं भी चख कर देखूं। कह कर दूसरे ने अपनी चोंच उस फल की ओर बढ़ाई ही थी कि पहले सिर ने झटक कर दूसरे सिर को दूर फेंका और बोला- अपनी गंदी चोंच इस फल से दूर ही

रख। यह फल मैंने पाया है और इसे मैं ही खाऊंगा।

अरे, हम दोनों एक ही शरीर के भाग हैं। खाने-पीने की चीजें तो हमें बांट कर खानी चाहिए। दूसरे सिर ने दलील दी। पहला सिर कहने लगा ठीक। हम एक शरीर के भाग हैं, पेट हमारा एक ही है। मैं इस फल को खाऊंगा तो वह पेट में ही तो जाएगा और पेट तेरा भी है।

दूसरा सिर बोला- खाने का मतलब केवल पेट भरना ही नहीं होता भाई। जीभ का स्वाद भी तो कोई चीज है। तबीयत को संतुष्टि तो जीभ से ही मिलती है। खाने का असली मजा तो मुंह में ही है।

पहला सिर तुनक कर चिढ़ाने वाले स्वर में बोला- मैंने तेरी जीभ और खाने के मजे का ठेका थोड़े ही ले रखा है। फल खाने के बाद पेट से डकार आएगी। वह डकार तेरे मुंह से भी निकलेगी। उसीसे गुजारा चला लेना। अब ज्यादा बकवास न कर और मुझे शांति से फल खाने दे। ऐसा कहकर पहला सिर चटकारे ले-लेकर फल खाने लगा। इस घटना के बाद दूसरे सिर ने बदला लेने की ठान ली और मौके की तलाश में रहने लगा। कुछ दिन बाद फिर भारूंड भोजन की तलाश में घूम रहा था कि दूसरे सिर की नजर एक फल पर पड़ी। उसे जिस चीज की तलाश थी, उसे वह मिल गई थी। दूसरा सिर उस फल पर चोंच मारने ही जा रहा था कि पहले सिर ने चीखकर चेतावनी दी अरे, अरे। इस फल को मत खाना। क्या तुझे पता नहीं कि यह विषैला फल है? इसे खाने पर मृत्यु भी हो सकती हे।

दूसरा सिर हंसा- हे हे हे। तू चुपचाप अपना काम देख। तुझे क्या लेना है कि मैं क्या खा रहा हूं? भूल गया उस दिन की बात? पहले सिर ने समझाने कि कोशिश की- तूने यह फल खा लिया, तो हम दोनों मर जाएंगे।

दूसरा सिर तो बदला लेने पर उतारू था। बोला- मैंने तेरे मरने-जीने का ठेका थोड़े ही ले रखा है? मैं जो खाना चाहता हूं, वह खाऊंगा, चाहे उसका नतीजा कुछ भी हो। अब मुझे शांति से विषैला फल खाने दे। दूसरे सिर ने सारा विषैला फल खा लिया और भारूंड तड़प-तड़प कर मर गया। आपस की फूट सदा ले डूबती है।

१०३९) तेनाली एक योद्धा - एक बार एक प्रसिद्ध योद्धा उत्तर भारत से विजयनगर आया। उसने कई युद्ध तथा पुरस्कार जीत रखे थे। अपनी पूरी जिंदगी में वो युद्ध में पराजित नहीं हुआ था। उसने युद्ध के लिए विजयनगर के योद्धाओं को ललकारा। उसके लंबे, गठीले व शक्तिशाली शरीर के सामने विजयनगर का कोई भी योद्धा टिक न सका। इस बात से नगर के सभी योद्धा चिंतित थे। सभी योद्धा इस समस्या के हल के लिए तेनालीराम के पास गये।

उनकी बात बड़े ध्यान से सुनने के बाद तेनाली राम बोला, सचमुच यह एक बड़ी समस्या है, मैं उस वीर योद्धा से युद्ध करूंगा और उसे हराऊंगा, लेकिन मैं जैसा करने बोलूंगा आप सभी वैसा ही करोगे। उन लोगों ने हामी भर दी। शक्ति परीक्षण के दिन तुम सभी पदक मुझे पहना देना और उस योद्धा से मेरा परिचय अपने गुरु के रूप में कराना और मुझे अपने कंधे पर बैठाकर ले जाना। जाते वक्त इस नारे को जरूर बोलना, ममूक महाराज की जय, मीस ममूक महाराज की जय। अगले दिन युद्धभूमि में जोर-जोर से नारा लगाते हुए योद्धाओं की ऊंची आवाज सुनकर उत्तर भारत के योद्धा ने सोचा कि अवश्य ही कोई महान योद्धा आ रहा है। नारा कन्नड़ भाषा का साधारण श्लोक था, जिसमें ममूक का अर्थ था- धूल चटाना जब कि मीस का अर्थ भी लगभग यही था। तेनाली राम उस योद्धा के पास आया और बोला, इससे पहले कि मैं तुम्हारे साथ

युद्ध करूं, तुम्हें मेरे हाव-भावों का अर्थ बताना होगा। अगर तुम मेरे हाव-भावों का अर्थ बता दोगे, तभी मैं तुम्हारे साथ युद्ध करूंगा। नहीं तो तुम्हें अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ेगी। वह योद्धा सोचने लगा कि अवश्य ही तेनाली राम कोई बहुत ही महान योद्धा है। अत: उसने तेनाली की बात स्वीकार कर ली। तेनाली राम ने संकेत देने आरंभ किये।

तेनाली राम ने सर्वप्रथम अपना दाहिना पैर आगे करके योद्धा की छाती को अपने दायें हाथ से छुआ। फिर अपने बायें हाथ से उसने स्वयं को छुआ। फिर उसने अपने दायें हाथ को बायें हाथ पर रखकर जोर से दबा दिया। इसके बाद उसने अपनी तर्जनी से दक्षिण दिशा की ओर संकेत किया। फिर उसने अपने दोनों हाथों की तर्जनी उंगलियों से एक गांठ बनाई। फिर एक मुट्ठी मिट्टी उठाकर अपने मुंह में डालने का अभिनय किया। तेनाली ने योद्धा से इन हाव-भावों को पहचानने के लिए कहा, परंतु वह योद्धा कुछ समझ नहीं पाया, इसलिए उसने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। वह विजयनगर से चला गया और जाते-जाते अपने सभी पदक वे पुरस्कार तेनाली राम को दे गया। विजयनगर के राजा व प्रजा अचंभित रह गये। राजा ने तेनाली राम से पूछा, तेनाली, उन हाव-भावों से तुमने क्या चमत्कार किया?

तेनाली राम बोला, महाराज, इसमें कोई चमत्कारी नहीं था, यह मेरी योद्धा को मूर्ख बनाने की योजना थी। मेरे हाव-भावों के अनुसार वह योद्धा उसी प्रकार शक्तिशाली था, जिस प्रकार किसी का दाहिना हाथ होता है और मैं उसके सामने बायें हाथ की तरह निर्बल था। यदि दायें हाथ के समान शक्तिशाली योद्धा बायें हाथ के समान निर्बल योद्धा को युद्ध के लिए ललकारेगा, तो निर्बल योद्धा तो बादाम की तरह कुचल दिया जाएगा। सो यदि मैं युद्ध हारता, तो दक्षिण दिशा में बैठी मेरी पत्नी को अपमान रूपी धूल खानी पड़ती। मेरे हाव-भावों का केवल यही अर्थ था, जिसे वह समझ नहीं पाया। तेनाली का यह जवाब सुनकर राजा बेहद खुश हुआ।

१०४०) चूहों की कारगुजारी - राजा कृष्णदेव के राज्य में प्रजा सुख-शांति से निवास कर रही थी। सभी मंत्रियों के घरों में हर प्रकार की सुख-सुविधाएं राजा के आदेशानुसार उपलब्ध थीं। मगर मंत्री तेनाली राम राजभवन में अन्य मंत्रियों की भांति न रहकर अपने गांव में बूढ़े मां-बाप के साथ रहते थे।

गांव में राजभवन की तरह सारी सुविधाएं नहीं थीं। चूहों ने तेनालीराम के घर में बड़ा उत्पात मचा रखा था। एक दिन चूहों ने तेनालीराम की पत्नी की एक सुंदर साड़ी काटकर एक छेद बना दिया। तेनालीराम और उनकी पत्नी को बहुत क्रोध आया। उन्होंने सोचा, इन्हें पकड़कर मारना ही पड़ेगा। नहीं तो न जाने और कितना नुकसान कर दें। उधर पत्नी क्रोधवश राजभवन में न रहने के लिए तेनालीराम को कोस रही थी। बहुत कोशिश करने पर भी चूहे उनके हाथ नहीं लग रहे थे। वे संदूकों और दूसरे सामान के पीछे जाकर छिप जाते। भागते-दौड़ते, घंटों की कोशिश के बाद कहीं एक चूहा पकड़कर मार पाए। तेनालीराम चूहों के इस उत्पात से बड़ा परेशान था।

आखिर वह अपने एक घनिष्ठ मित्र के पास गया, जिसने उसे सलाह दी कि चूहों से छुटकारा पाने के लिए एक बिल्ली पाल लो। उसे देखते ही चूहे तुम्हारा घर छोड़कर भाग जाएंगे। वही इस मुसीबत का इलाज है। तेनालीराम ने दोस्त का सुझाव मानते हुए एक बिल्ली पाल ली और सचमुच उसके आते ही चूहों का दिखाई देना कम हो गया। चूहों का उत्पात कम होने से तेनालीराम व उसकी पत्नी ने चैन की सांस ली। अचानक एक दिन उसकी बिल्ली ने पड़ोसी के पालतू तोते

को पकड़ लिया और मारकर उसे भोजन बना डाला। घर की मालकिन ने अपने पति से शिकायत की और कहा कि इस दुष्ट बिल्ली को मार डालो इसी ने हमारे प्रिय तोते को मार डाला है। उसने तेनालीराम की बिल्ली का पीछा किया और कुछ देर बाद उसे पकड़ भी लिया। वह उसको मारने ही वाला था कि तेनालीराम वहां भागता हुआ आ गया।

तेनालीराम ने विनम्रतापूर्वक कहा, भाई, मैंने यह बिल्ली चूहों से छुटकारा पाने के लिए पाली है। हमें क्षमा कर दीजिए और बिल्ली मुझे वापस कर दीजिए। मुझ पर आपका बड़ा एहसान होगा। पड़ोसी नहीं माना, बोला, चूहे पकड़ने के लिए तुम्हें बिल्ली की क्या आवश्यकता है? मैं तो बिना बिल्ली के भी चूहे पकड़ सकता हूं। इस बिल्ली को मारना ही होगा। इसने हमारे प्रिय तोते को मारा है, उसने बिल्ली को मार दिया।

कुछ दिनों बाद पड़ोसी को किसी ने एक सुंदर संदूक उपहार में भेजा। उसने अपने शयनकक्ष में जाकर संदूक खोला। उसी कमरे में उसकी पत्नी की कीमती साड़ियां और अन्य कई कीमती कपड़े रखे हुए थे। संदूक खोलते ही चूहों की सेना उसमें से उछलकर बाहर निकल आई। चूहे कमरे के चारों ओर दौड़ने लगे। वह उन्हें पकड़ने के लिए कभी बाएं तो कभी दाएं उछलता पर वह चूहों को पकड़ने में असफल रहा। उसने अपने नौकरों को चूहे पकड़ने के लिए बुलाया कई घंटों की उछलकूद के बाद कही जाकर उन्हें चूहों से छुटकारा मिला। पर इस दरम्यान उनको काफी नुकसान भी उठाना पड़ा। उनके कीमती गालीचों पर चूहों के खून के निशान पड़ चुके थे। ठोकर खाकर एक कीमती फूलदान भी टूट गया।

थके-हारे पड़ोसी ने जब संदूक में यह देखने का प्रयास किया कि आखिर किसने यह संदूक भेजा है तो उसे संदूक के कोने से चिपकी एक पर्ची दिखाई दी। उस कागज की पर्ची पर लिखा था, आपने कहा था कि आप बिना बिल्ली के ही चूहों पर काबू पा जाएंगे। मैं परीक्षा के लिए कुछ चूहों को आपके यहां भेज रहा हूं। आपका तेनालीराम। तेनालीराम का नाम पढ़ते ही पड़ोसी को सारी बात समझ में आ गई। उसने फौरन अपनी भूल के लिए तेनालीराम से माफी मांग ली।

१०४१) कर्त्तव्य पालन के लिए पुरस्कार दिया - एक बार राजा कृष्णदेव राय के प्रधान अंगरक्षक और तेनालीराम में बहस छिड़ गई। अंगरक्षक खुद को चतुर बताता, तेनालीराम खुद को। राजा के महल में एक सरोवर था। उसमें कृष्णा नदी से जल आता था। राजा उसी में स्नान करते थे। राज परिवार के अलावा किसी और को उसमें स्नान करने की अनुमति नहीं थी। एक दिन तेनालीराम को नीचा दिखाने की मंशा के साथ अंगरक्षक उनसे बोला, तेनालीराम, तुम उस सरोवर में स्नान करके दिखा दो तो मैं तुम्हारा लोहा मान लूंगा। तेनालीराम ने शर्त मान ली। अगले दिन वह कहीं से तीन-चार मेंढक पकड़ लाए और उन्हें लेकर सरोवर में कूद पड़े। फिर भजन गा-गाकर स्नान करने लगे। रखवालों ने अंगरक्षक को बताया। उसने तुरंत राजा को सूचना दी। राजा गुस्से से लाल हो गए। उन्होंने तेनालीराम को गिरफ्तार करके लाने के लिए कहा। सेवक तेनालीराम को पकड़कर ले गए। उन्हें देखकर अंगरक्षक मुस्कराया। तेनालीराम भी सारी बात समझ गए। वह राजा के सामने पहुंचे। राजा ने कहा, यह जानते हुए कि उस सरोवर में नहाना मना है, तुम नहाए।

बताओ क्यों? तेनालीराम सिर झुकाकर बोले, महाराज, सरोवर की सफाई ठीक से नहीं होती। आज मैंने उसमें कई मेढक देखे तो खुद को रोक नहीं सका। उन्हें निकाल ही रहा था, तभी आपके सेवकों ने मुझे बंदी बना लिया। कहकर उन्होंने धोती के छोर में बंधे मेढक राजा को दिखा दिए। राजा ने गुस्से से अंगरक्षक की ओर देखा। सरोवर की रखवाली

में लापरवाही दिखाने के लिए उसे दंड दिया गया। वहीं तेनालीराम को कर्त्तव्य पालन के लिए पुरस्कार दिया गया।

१०४२) जंगल के खरगोश और मेंढक - एक बहुत घना जंगल था। वहां पर बहुत सारे पशु-पक्षी आपस में हिलमिल कर रहा करते थे। इस जंगल में घनी-घनी झाड़ियां ज्यादा थीं इसलिए वहां खरगोश अधिक रहते थे। खरगोश इतने चुस्त थे कि चौकड़ी भरते और एक ही पल में एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी में घुस जाते थे।

तभी सूखा पड़ गया। पूरा मौसम निकल गया। परंतु आकाश से एक बूंद भी पानी धरती पर न आया। सारे पशु पक्षी भूख प्यास के मारे बेहाल हो गये। कि वे अब छिपेंगे कहां क्योंकि गर्मी के कारण घनी-घनी झाड़ियां अब बिलकुल ही सूख गयी थीं। खरगोश भी भोजन की तलाश में सारा दिन मारे-मारे फिरते, परन्तु शाम तक उन्हें निराशा ही हाथ लगती। अंत में सभी खरगोशों ने फैसला किया कि वे अब गांव की तरफ जाकर वहां से दाना व भोजन आदि का प्रबंध करेंगे। इस पर एक समूह के पांच खरगोश मिलकर गांव की तरफ चल दिये परन्तु यह क्या यहां तो उन्हें गांव के कुत्तों के कारण जान बचाकर झटपट भागना पड़ा और इसी चक्कर में खरगोशों का एक मित्र एक कुत्ते का शिकार हो गया। सभी खरगोशों को बड़ा दु:ख हुआ एक तो खरगोश रोने को ही हो गया। अंत में सभी खरगोशों ने फैसला किया क्यों न हम सभी पानी में डूबकर मर जायें, क्योंकि इस तरह भूख से मरने से अच्छा है सब साथ ही बिना कष्ट के ही हम सब मर जायें। यह प्रस्ताव सभी को ठीक लगा और सभी मरने के लिए चल दिए एक जंगल से दूसरे जंगल फिर तीसरे जंगल से होते हुए एक झील पर जा पहुंचे। वहां पर बिलकुल थोड़ा सा जल था। सबने फैसला किया कि एक-एक करके कूदकर अपनी जान दे दें। परन्तु दूसरे ही पल उन्होंने देखा कि बहुत सारे मेंढक किनारे बैठे हैं और खरगोशों कि आहट सुनकर उसी झील में झपाझप कर कूदने लगे। सभी को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये जीव तो हमसे भी छोटे है और हमसे डर रहे हैं फिर भी ये आज तक जी रहे हैं इस पर खरगोशों में सबसे बुजुर्ग खरगोश आगे आया और उसने कहा कि ये जो छोटे-छोटे मेंढ़क हैं इन्हें भी ईश्वर ने ही बनाया है और ये कितने ज्यादा खुश हैं फिर भी, जब कि ये तो हम लोगों से भी डरते हैं। अत: भाइयों यदि ये अपना जीवन जी सकते हैं तो हम सब क्यों नहीं, आखिरकार हर रात के बाद नया सूरज निकलता है, नया दिन लेकर। इसी प्रकार हमारी खुशियां भी अवश्य ही वापस आयेंगी और हमारा जंगल फिर हरा भरा हो जायेगा। सभी खरगोशों ने उसकी बात मान ली और सभी खुशी मन अपने जंगल की ओर वापस आ गए।

१०४३) सबसे बड़ी चीज है गरज - एक दिन बीरबल दरबार में उपस्थित नहीं थे। ऐसे में बीरबल से जलनेवाले चार सभासद बीरबल के खिलाफ बादशाह अकबर के कान भर रहे थे। सभासदों ने कहा- जहांपनाह। आप बीरबल को आवश्यकता से अधिक मान देते हैं। आपने उन्हें बहुत सिर चढ़ा रखा है। जबकि, जो काम वह करते हैं, वह हम भी कर सकते हैं। बादशाह को बीरबल की बुराई अच्छी नहीं लगती थी, अत: उन्होंने उन चारों की परीक्षा ली- देखो, आज मुझै एक सवाल का जवाब चाहिए। यदि सही जवाब नहीं दिया, तो मैं तुम चारों को फांसी पर चढ़वा दूंगा। वे चारों घबरा गये। एक ने हिम्मत करके कहा- प्रश्न बताइये बादशाह सलामत? अकबर ने कहा संसार में सबसे बड़ी चीज क्या है? सभासदों ने कहा हमें कुछ दिनों की मोहलत दी जाये। बादशाह ने कहा। ठीक है, तुम लोगों को एक सप्ताह समय देता हूं। छ: दिन बीत गये, लेकिन उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझा। हार कर वे चारों बीरबल के पास पहुंचे

और उसे पूरी घटना कह सुनायी और हाथ जोड़कर विनंती की कि प्रश्न का उत्तर दें। बीरबल ने मुस्कराकर कहा- मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूंगा, लेकिन मेरी एक शर्त है। तुममें से दो कंधों पर मेरी चारपाई रख कर दरबार तक ले चलोगे। एक मेरा हुक्का पकड़ेगा, एक मेरे जूते लेकर चलेगा। यह सुनकर वे बहुत अपमानित हुए, मगर मजबूर थे, अत: तुरंत राजी हो गये दो ने अपने कंधों पर बीरबल की चारपाई उठायी, तीसरे ने उनका हुक्का और चौथा जूते लेकर चल दिया। रास्ते में लोग आश्चर्य से उन्हें देख रहे थे। दरबार में बादशाह ने यह मंजर देखा और दरबारियों ने भी, कोई कुछ न समझ सका। तभी बीरबल बोले- महाराज? दुनिया में सबसे बड़ी चीज है- गरज। अपनी गरज से यह पालकी यहां तक उठाकर लाये हैं। बादशाह मुस्कुराये। वे चारों सिर झुका कर एक ओर खड़े हो गये।

१०४४) धर्माचरण - एक दिन बहू ने गलती से यज्ञवेदी में थूक दिया। सफाई कर रही थी, मुंह में सुपारी थी, पीक आया तो वेदी में थूक दिया। हालांकि बहू को यह देख बहुत आश्चर्य हुआ कि उतना थूक स्वर्ण में बदल गया है। अब तो वह प्रतिदिन जानबूझकर वेदी में थूकने लगी और उसके पास धीरे-धीरे स्वर्ण बढ़ने लगा। महिलाओं में बात तेजी से फैलती है, कई और महिलाएं भी अपने अपने घर में बनी यज्ञवेदी में थूक-थूक कर सोना उत्पादन करने लगी। धीरे-धीरे पूरे गांव में यह सामान्य चलन हो गया, सिवाय एक महिला के। उस महिला को दूसरी महिलाओं ने खूब उकसाया, लेकिन वह नहीं मानी। महिला बोली, मैं अपने पति की अनुमति के बिना यह कार्य कतई नहीं करूंगी। ग्रामीण महिलाओं ने ऐसा वातावरण बनाया कि आखिर उस महिला ने भी एक रात डरते-डरते अपने पति से पूछ ही लिया। पति ने सख्त लहजे में मना कर दिया, कहा कि यज्ञवेदी क्या थूकने की चीज है? पति की गरजदार चेतावनी के आगे वह महिला चुप हो गई। हालांकि अन्य महिलाओं की बात सुनकर वह साध्वी बहुत व्यथित रहने लगी। पति की व्यस्तता और स्त्रियों के उलाहने ने उसे धर्मसंकट में डाल दिया। वह सोचने लगी कि यह शायद उसका दुर्भाग्य है कि सती स्त्री होते हुए भी उसे एक रत्ती सोने के लिए तरसना पड़ता है। वह सोचने लगी कि इस धर्माचरण ने उसे दिया ही क्या है? हुआ यह कि वह बीमार रहने लगी। पतिदेव इस रोग को ताड़ गए। उन्होंने एक दिन ब्रह्म मुहूर्त में ही सपरिवार ग्राम त्यागने का निश्चय किया। गाड़ी में सारा सामान डालकर वे रवाना हो गए। सूर्योदय के पूर्व ग्राम त्यागने का निश्चय किया। सूर्योदय से पहले पहले ही वे बहुत दूर निकल जाना चाहते थे। लेकिन यह क्या, जैसे ही वे गांव की सीमा से बाहर निकले, पीछे भयानक विस्फोट हुआ। पूरा गांव धू-धू कर जल रहा था। सज्जन दंपत्ति अवाक रह गए और उस स्त्री को अपने पति का महत्व समझ आ गया। वास्तव में इतने दिन गांव बचा रहा तो केवल इस कारण कि उसका परिवार गांव की परिधि में था। धर्माचरण करते रहे, कुछ पाने के लालच में इंसान बहुत कुछ खो बैठता है, इसलिए लालच से बचें।

१०४५) धैर्य से खत्म होती है जीवन की समस्याएं - यह उस काल की बात है जब महात्मा बुद्ध भारतवर्ष में घूम-घूम कर बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रसार कर रहे थे। वे अपने कुछ अनुयायियों के साथ एक गांव में घूम रहे थे। काफी देर तक भ्रमण करते रहने से उन्हें बहुत प्यास लग गयी थी। प्यास बढ़ता देख उन्होंने एक शिष्य को पास के गांव से पानी लाने के लिए कहा। शिष्य जब गांव में पहुंचा, तो उसने देखा कि वहां एक छोटी-सी नदी बह रही है, जिसमें काफी लोग अपने वस्त्र साफ कर रहे थे और कई अपने पशुओं को नहला रहे थे। इस कारण नदी का पानी काफी गंदा हो गया था।

शिष्य को नदी के पानी का यह हाल देख लगा कि गुरुजी के लिए यह गंदा पानी ले जाना उचित नहीं होगा। इस तरह वह बिना पानी के ही वापस आ गया। लेकिन इधर गुरुजी का तो प्यास से गला सूख जा रहा था।

इसलिए पुन: उन्होंने पानी लाने के लिए दूसरे शिष्य उनके लिए मटके में पानी भर लाया। यह देख महात्मा बुद्ध थोड़ा आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने शिष्य से पूछा गांव में बहनेवाली नदी का पानी तो गंदा था फिर यह पानी कहां से लाये?

शिष्य बोला- हां गुरुजी, उस नदी का जल सच में बहुत गंदा था, परंतु जब सभी अपना कार्य खत्म करके चले गये तब मैंने कुछ देर वहां ठहर कर पानी में मिली मिट्टी के नदी तल में बैठ जाने का इंतजार किया। फिर जब पानी साफ हो गया तब वह पानी भर लाया।

महात्मा बुद्ध शिष्य का यह उत्तर सुनकर बहुत खुश हुए तथा अन्य शिष्यों को एक शिक्षा दी कि हमारा जीवन भी नदी के जल जैसा ही है। जीवन में अच्छे कर्म करते रहने से यह हमेशा शुद्ध बना रहता है, परंतु अनेकों बार जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं जब हमारा जीवन दुख और समस्याओं से घिर जाता है, ऐसी अवस्था में जीवन समान यह पानी भी गंदा लगने लगता है।

अत: हमें अपने जीवन में दुख और बुराइयों को देखकर अपना साहस नहीं खोना चाहिए। बल्कि धैर्य रखना चाहिए। गंदगी समान ये समस्याएं स्वयं ही धीरे धीरे खत्म हो जाती है।

१०४६) इससे तो पैदल चलना ही अच्छा- एक बार रेगिस्तान में एक आदमी दस गधों को तालाब में पानी पिलाने ले जा रहा था। कुछ मील चलकर वह एक गधे पर बैठ गया और बाकी गधों को गिनने लगा। पूरे नौ थे। वह घबराकर उतर गया और दसवें गधे की खोज में वापस गया। जब गधा नहीं दिखाई दिया तो उसने सोचा कि वह खो गया होगा।

ढूंढना बंद कर वह हैरान-परेशान वापस लौटा तो क्या देखता है कि पूरे के पूरे दस गधे खड़े हैं। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। खुशी-खुशी वह एक गधे पर बैठ गया। कुछ ही दूर जाने पर उसने सोचा कि चलो एक बार फिर गधों की गिनती कर ली जाए। फिर नौ निकले। वह हैरान था कि माजरा क्या है? वह फिर खोए गधे को ढूंढने निकल पड़ा, लेकिन वह नहीं मिला। वह जल्दी-जल्दी वापस आया और फिर गिनती की तो वापस गिनती में दस गधे आ रहे थे।

उसने सोचा शायद रेगिस्तान की गर्मी के कारण कुछ गड़बड़ी हो रही है। वह बड़बड़ाते हुए कह रहा था कि हो सकता है यहां कोई दुष्ट आत्मा हो, जो मेरे गधों को बार बार गायब करने का खेल कर रही हो। यदि मेरे पैदल चलने पर सारे गधे सलामत रहते हों तो मैं पैदल ही चलता हूं और वह गधों के पीछे पीछे पैदल चलने लगा।

१०४७) सबसे बड़ा दुख है पराधीनता, इसलिए आत्मनिर्भर बनें - एक चिड़िया ने एक खेत में खड़ी फसल के बीच घोंसला बना कर अंडे दिए। उनसे समय आने पर दो बच्चे निकले। चिड़िया दाना चुगने के लिए रोज जंगल जाती। इस बीच उसके बच्चे अकेले रहते थे। चिड़िया लौटती, तो बच्चे बहुत खुश होते और उसका लाया चुग्गा खाते। एक दिन चिड़िया ने देखा बच्चे बहुत डरे हुए हैं।

उन्होंने बताया- आज खेत का मालिक आया था। वह कह रहा था कि फसल पक चुकी है। कल बेटों से खेत की कटाई के लिए कहेगा। इस तरह तो हमारा घोंसला टूट जाएगा। फिर हम कहां रहेंगे?

चिड़िया बोली- फिक्र मत करो, अभी खेत नहीं कटेगा। अगले दिन सच में कुछ नहीं हुआ और बच्चे बेफिक्र हो गए। एक हफ्ते बाद चिड़िया को बच्चे फिर डरे हुए मिले। बोले- किसान आज भी आया था। कह रहा था कि कल नौकर को खेत काटने को कहेगा। इस बार भी चिड़िया ने बच्चों से कहा- कुछ नहीं होगा, डरो मत।

अगले हफ्ते बच्चों ने बताया कि किसान आज फिर आया था और कह रहा था कि फसल की कटाई में बहुत देर हो गई है। कल वह खुद ही काटेगा। यह सुनकर चिड़िया बच्चों से बोली- कल खेत कट जाएगा। वह बच्चों को तुरंत एक सुरक्षित घोंसले में ले गई।

हैरान बच्चों ने पूछा- मां, तुमने कैसे जाना कि इस बार खेत सचमुच कटेगा? चिड़िया बोली- जब तक इंसान किसी काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है, उसके संपन्न होने में संदेह रहता है, लेकिन जब वह काम को खुद करने की ठान लेता है, तो जरूर पूरा होता है। किसान ने जब खुद खेत काटने की सोची, तभी तय हुआ कि अब खेत जरूर कट जाएगा।

१०४८) बुरी आदतें, पौधा और वृक्ष - एक अमीर आदमी अपने किशोर बेटे की बुरी आदतों से बहुत परेशान था। वह जब भी बेटे से ये आदतें छोड़ने को कहता, तो एक ही जवाब मिलता- अभी मैं इतना छोटा हूं। धीरे-धीरे ये आदत छोड़ दूंगा। पर वह कभी भी आदत छोड़ने का प्रयास नहीं करता। उन्हीं दिनों एक महात्मा गांव में पधारे हुए थे। जब आदमी को उनकी ख्याति के बारे में पता चला, तो वह तुरंत उनके पास पहुंचा और अपनी समस्या बताने लगा। महात्मा जी ने उसकी बात सुनी और कहा, ठीक है, आप अपने बेटे को कल सुबह बगीचे में लेकर आइए। वहीं मै। आपको उपाय बताऊंगा। अगले दिन सुबह पिता-पुत्र बगीचे में पहुंचे। महात्मा जी किशोर से बोले, आओ हम दोनों बगीचे की सैर करते हैं और वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। चलते-चलते महात्मा जी अचानक रुके और किशोर से कहा क्या तुम इस छोटे से पौधे को उखाड़ सकते हो?

जी हां, इसमें कौन सी बड़ी बात है, और ऐसा कहते हुए किशोर ने आसानी से पौधे को उखाड़ दिया। फिर वे आगे बढ़ गए और थोड़ी देर बाद महात्मा जी ने थोड़े बड़े पौधे की तरफ इशारा करते हुए कहा क्या तुम इस छोटे से पौधे को उखाड़ सकते हो? जी हां, इसमें कौन सी बड़ी बात है और ऐसा कहते हुए किशोर ने आसानी से पौधे को उखाड़ दिया। फिर वे आगे बढ़ गए और थोड़ी देर बाद महात्माजी ने थोड़े बड़े पौधे की तरफ इशारा करते हुए कहा क्या तुम इसे भी उखाड़ सकते हो?

किशोर को मानो इस सब में कितना मजा आ रहा हो, वह तुरंत पौधा उखाड़ने में लग गया। इस बार उसे थोड़ी मेहनत लगी, पर काफी प्रयत्न के बाद उसने इसे भी उखाड़ दिया। वे फिर आगे बढ़ गए और कुछ देर बाद पुन: महात्माजी ने एक गुड़हल के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए किशोर से इसे उखाड़ने के लिए कहा। किशोर ने पेड़ का तना पकड़ा और उसे जोर-जोर से खींचने लगा, पर पेड़ तो हिलने का भी नाम नहीं ले रहा था। जब बहुत प्रयास करने के बाद भी पेड़ टस से मस नहीं हुआ, तो किशोर बोला अरे। ये तो बहुत मजबूत है। इसे उखाड़ना असंभव है।

महात्मा जी ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा बेटा, ठीक ऐसी ही बुरी आदतों के साथ होता है। जब वे नई होती हैं, तो उन्हें छोड़ना आसान होता है, पर वे जैसे-जैसे पुरानी होती जाती हैं, इन्हें छोड़ना मुश्किल होता जाता है। किशोर उनकी बात समझ गया और उसने मन ही मन आज से ही गलत आदतें छोड़ने का निश्चय कर लिया।

१०४९) बल से श्रेष्ठ बुद्धि - महाराजा प्रहलाद के पुत्र थे विरोचन। उनकी सुधन्वा नामक एक विद्वान ब्राह्मण से मित्रता थी। एक दिन उन दोनों में वाद-विवाद छिड़ गया। विरोचन कहते कि बलवान श्रेष्ठ है। सुधन्वा बुद्धिमान को श्रेष्ठ मान रहे थे। विवाद काफी बढ़ गया, तो विरोचन ने कहा, चलो, महाराज से निर्णय करवाते हैं।

वह बोले, इसमें जो भी जीतेगा, वह हारनेवाले का सिर काट देगा। सुधन्वा ने यह शर्त भी मान ली। दोनों महाराजा प्रहलाद के पास पहुंचे। उन्हें अपने विवाद तथा साथ ही शर्त की बात भी बता दी। मंत्रियों ने विरोचन के प्राण बचाने की गरज से कहा, महाराज, बल ही श्रेष्ठ है। आप महाबली हैं। इसलिए संसार में आपका सम्मान है।

प्रहलाद समझ गए, मंत्री और सभासद ऐसा क्यों कह रहे हैं? उन्हें तो सही फैसला करना था। बोले, नहीं, मेरा निर्णय इसके विपरीत है। बुद्धि ही सिखाती है। महाराजा प्रहलाद ने विरोचन से कहा, अब शर्त के अनुसार तुम प्राण देने के लिए तैयार हो जाओ। उन्होंने सुधन्वा के हाथ में तलवार पकड़ा दी। सुधन्वा ने तलवार तान ली। फिर कहा, महाराज, मैं ब्राह्मण का बेटा हूं। मेरे हाथ में तलवार नहीं, पुस्तक अच्छी लगती है। फिर भी अपने प्राणों से प्यारे मित्र का वध करने के लिए मैंने तलवार उठा ली। मैं किसी भी कीमत पर मित्र के प्राण नहीं ले सकता। मेरी प्रार्थना स्वीकार की जाए। सुनकर महाराजा प्रहलाद मुस्कुराए दरबारियों से कहने लगे, देखो, मेरा यह निर्णय सही सिद्ध हुआ। बल से बुद्धि ही श्रेष्ठ है। सुधन्वा की जगह मेरा पुत्र विरोचन होता तो बल के घमंड में अब तक अपने मित्र की जान ले ही लेता।

१०५०) जो भी आवश्यक है, भगवान जरूर भेज देगा - अमूमन साधु-संन्यासियों को देखकर लोगों की यह आम धारणा सी हो जाती है कि ये पाखंडी हैं, आडम्बर करके समाज को ठगने का धंधा करते हैं। इसलिए लोग इन्हें घृणा और द्वेष की दृष्टि से देखते हैं। बहुतों के मन की धारणा बहुत अंशों में सही भी उतर जाती है। सन्त कबीर ने पांच सौ साल पहले यह बात लिख डाली थी- मन न रंगाये, रंगाये जोगी कपड़ा, और एक बड़े सेठ ने स्वामी विवेकानन्द को इसी कोटि का सन्यासी समझ ही लिया, जो उसके सामने की बर्थ पर विराजमान थे यानी यह भी मंगन ही है। यह सोचते ही उसके मन में ईर्ष्याग्नि भड़क उठी और उनकी ओर मुखातिब होकर बोल उठा- देखने में काफी हृष्ट-पुष्ट हो, लेकिन भीख मांग कर ही खाते होंगे? तुम्हें शर्म भी नहीं आती, ऐसा करते।

विवेकानन्दजी ने बड़ी शालीनता और विनम्रता से उत्तर दिया- नहीं सेठजी, मैं भीख नहीं मांगता।

तब चोरी करते होंगे। सेठ ने बेलाग कह दिया। ऐसा कुछ भी नहीं करता। स्वामीजी ने उत्तर दिया।

तब खाते कैसे हो? सेठ ने पूछा। भगवान भेज देते हैं- स्वामीजी की इस बात को सुनकर सेठ हंस पड़ा।

यात्रा में दिन गुजर गया, रात भी बीत गयी। विवेकानन्दजी बिना कुछ खाये- पीये चुपचाप बैठे रहे। हाथरस स्टेशन पर आकर गाड़ी रुकी। विवेकानन्दजी गाड़ी से उतरने लगे तो सेठ ने फिर ताना कसा। भगवान ने तो नहीं खाना भेजा? कहकर हो-हो-हो करता हंस पड़ा। स्वामीजी ने आश्वस्त होकर कहा- भगवान जरूर भेज देगा। कहकर स्टेशन के बाहर आ गये और एक पेड़ की छाया में बैठ गये। सेठ तो द्वेषान्ध हो गया था, वह स्वामीजी को भरपेट लताड़ना चाहता था, बस उनके पीछे-पीछे आकर वह भी उसी पेड़ की छाया में उनके सन्निकट बैठ गया।

कुछ देर बाद कुछ लोग विविध प्रकार के पकवान तथा तरह-तरह की मिठाइयां लेकर वहीं आ खड़े हुए। उनमें से एक

आदमी ने स्वामीजी के चरणों पर झुक कर प्रणाम किया और हाथ जोड़े ही बोला- आज रात स्वप्न में किसी ने उससे कहा- अमुक पेड़ के नीचे मेरा भक्त बैठा है, उसे शीघ्र खाना देकर चले आओ, इसलिए हम सब प्रस्तुत हैं, कृपया भोजन स्वीकारें वे सब पकवान रखकर बैठ गये।

सेठ बगल में बैठा यह सब न केवल सुन रहा था बल्कि देख भी रहा था, उसे काटो तो खून नहीं, वह हतप्रभ हो गया। लगता था यह सब सुनकर उसके होश हिरन हो गये उसके पांव तले की जमीन खिसक गयी। वह क्षमा, क्षमा कहकर स्वामीजी के चरणों पर गिर पड़ा।

१०५१) धैर्ययुक्त जीवन शैली कामयाबी के रास्ते को आसान बना देती है -

फल तोड़ने पर सुरक्षाकर्मियों द्वारा रोजाना की पिटाई, उलाहना, गालियां और प्रताड़ना से आहत बंदरों ने बैठक बुलाई। विमर्श में उनके सयाने नेता ने सुझाव दिया- क्यों न जंगल में खुद की बागवानी की जाए, रोजाना की झिकझिक से मुक्ति मिलेगी। शाम ढलने तक बुआई हो गई। तड़के सुबह फल खाने को आतुर बंदर खेत में पहुंचे। वहां एक भी पेड़ नहीं था। ठगा महसूस करते बंदरों ने अपने नेता को दुखड़ा सुनाया तो जवाब मिला, फल आने में वक्त लगता है, सब्र रखो। खेती की प्रक्रिया को समझने की कोशिश न करते हुए मूर्ख, क्रोधित बंदरों को इंतजार मंजूर नहीं था। उन्होंने मिट्टी खोद-खोद कर पिछले दिन बोए बीज खा डाले।

१०५२) नारद का दु:ख - एक दिन नारद मुनि अत्यंद उदास मुद्रा में बैठे थे। सनकादिक ने उनसे उनकी व्यथा जाननी चाही। पूछा, हमेशा हँसते रहने वाले आप आज उदास कैसे हैं? नारद बोले, मुझे अपने देश की चिंता सता रही है। जरा भारत भूमि की ओर देखो। धर्म का विनाश हो रहा है। अधर्म पनप रहा है। लोग भूखे मर रहे हैं और लोग धन बटोरकर तिजोरियाँ भर रहे हैं। भाई-भाई को लूटने की युक्ति कर रहा है। उफ। भ्रष्टाचार से तो तौबा। सनकादिक को नारदजी की बात सही लगी। देश का दु:ख किसी भी दु:ख से बड़ा होता है। जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।

१०५३) होनहार उत्तराधिकारी - प्रतापगढ़ के राजा सुल्तान सिंह का राज्य बेहद विशाल था। राज्य में सब ओर सुख-शांति व खुशहाली थी। लेकिन कोई संतान न होने के कारण सुल्तान सिंह चिंतित रहते थे। प्रतापगढ़ का कोई उत्तराधिकारी नहीं है, यह सोचकर उनके शत्रु उनकी मृत्यु का इंतजार कर उनके राज्य पर कब्जा करने की सोच रहे थे। राजा ने अपनी यह चिंता विद्वान मंत्री कुशल सिंह को बताई। कुशल सिंह ने गुपचुप राज्य के उत्तराधिकारी की खोज शुरू कर दी। मंत्री ने समूचे राज्य से अनेक युवकों की परीक्षा ली, जिनमें पांच युवकों को सबसे योग्य पाया। उन्होंने बिना कुछ कहे इन पांचों युवकों को एक-एक पत्र दिया और कहा कि इस पत्र को बिना पढ़े राजा सुल्तान सिंह को सौंपना है। इसमें आप पांचों का बहुत गहरा राज छिपा है जो मैंने आपके बीच में रहकर जाना है। पत्र सौंपते ही पांचों युवक राजा सुल्तान सिंह से मिलने चले। रात में वह एक धर्मशाला में रुके। सुबह उठने पर चार युवक वहां नहीं थे। केवल एक ही बचा था। उसे समझ में नहीं आया कि बाकी चारों कहां चले गए। लेकिन उसे पहले अपना काम पूरा करना था। इसलिए वह राजा के पास पहुंचा और पत्र उन्हें थमा दिया। पत्र पढ़कर राजा ने युवक को बंदी बनाने को कहा। युवक परेशान हो उठा। तब राजा ने पत्र पढ़कर सुनाया जिसमें लिखा था कि यह युवक गद्दार है और इसे तुरंत फांसी की सजा दी जाए। वह युवक कुछ कहता

इससे पहले मंत्री कुशल सिंह वहां पहुंच गए और उन्होंने घोषणा की, महाराज, यही युवक प्रतापगढ़ का सही उत्तराधिकारी है। चारों युवकों ने बिना इजाजत के पत्र पढ़ा और सजा के डर से भाग गए किंतु यह युवक परीक्षा में खरा उतरा। राजा सुल्तान सिंह को सारी बात समझ में आ गई। उन्होंने उस युवक को भावी उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। इस प्रकार मंत्री की समझदारी से राज्य को एक होनहार उत्तराधिकारी मिल गया।

१०५४) गधा और नमक - एक व्यापारी अपने गधे पर नमक का थैला लादकर शहर जा रहा था। रास्ते में नदी आई। पानी ज्यादा गहरा न था। कुछ डग भरने के बाद ही गधे का पाँव फिसल गया, पर गधा इस घटना से तनिक भी दु:खी न हुआ। पानी में फिसल जाने के कारण भीगकर बहुत सा नमक घुल गया और उसकी पीठ पर का बोझ हल्का हो गया। सहसा गधे के दिमाग में यह घटना बढ़िया तरकीब बनकर बैठ गई। दूसरे दिन जब मालिक उसकी पीठ पर नमक का थैला लादकर शहर ले जा रहा था, वह नदी में बैठ गया। दो-चार दिन इसी तरह हुआ, पर मालिक भी कम नहीं था। गधे की शरारत ताड़ गया। समझ गया कि बोझ हल्का करने के लिए यह गधा ऐसी हरकत करता है। फिर क्या था, अगली बार शहर से आते समय व्यापारी नमक की बजाय रूई लेता आया। वापसी में नदी के बीच पहुंचने पर गधे ने जैसे ही अपनी पुरानी आदत दोहराई, वह हैरान रह गया। उसका बोझ हल्का होने की बजाय और भारी हो गया, क्योंकि पानी में भीगने से रूई भारी हो गई थी। व्यापारी की तरकीब काम कर गई थी। मूर्ख एक ही युक्ति का बार-बार उपयोग करते हैं।

१०५५) छोटी सी बात - एक बार बाप-बेटा गली से गुजर रहे थे। बाप ने बेटे से कहा, वह देखो, धूल में घोड़े की नाल पड़ी है। उठा लो और अपनी जेब में रख लो। बाप रे। बेटे ने जवाब दिया, कौन झुके और कौन इसे मिट्टी में से उठाए। बाप ने कुछ न कहा। उसने चुपचाप नाल उठाई और जेब में डाल ली। जब वे करीब के एक गाँव में पहुंचे तो बाप ने एक लुहार को नाल बेच दी। बदले में जो पैसे मिले उससे उसने रसभरी खरीद लीं। बाप-बेटे आगे बढ़ें। सूरज सिर पर चमक रहा था। वे एक सुनसान रास्ते से गुजर रहे थे। दूर-दूर तक कोई घर नजर नहीं आता था। बेटे को बुरी तरह प्यास लगी थी। वह बेचैन हो रहा था। बाप ने बेटे की स्थिति भाँप ली। उसने एक रसभरी रास्ते पर फेंकी। बेटे ने चट से उसे उठाया, धूल पोंछी और मुंह में डाल ली। यह सिलसिला तब तक चला जब तक सारी रसभरी खत्म न हो गईं। तब पिता ने कहा, यह जान लो कि ये रसभरियां उसी नाल की बदौलत थीं, जिसे धूल में से उठाना तुम्हें बुरा लगा था। अगर मैं नाल को न उठाता तो आज तुम्हारी प्यास बुझाने का कोई उपाय हमारे पास न होता। वक्त आने पर छोटी सी चीज भी काम आती है।

१०५६) दूध रोटी - कल्लू धनी परिवार का लड़का था। एक बार वह शहर से घूमने गाँव की तरफ आया। कड़ी दोपहरी थी। उसे भूख लगी। एक किसान से उसने दूध व रोटी खरीदी और एक पेड़ की छाया में आराम से बैठकर खाने लगा। बल्लू एक गरीब घर का बच्चा था। कल्लू को जब उसने पेड़ की छाया में बैठकर दूध और रोटी खाते देखो तो उसकी भी इच्छा हुई कि उससे थोड़ा सा अपने लिए माँग ले; पर वह कह न सका। कल्लू ने बल्लू को दे लिया था और उसका इरादा भी भाँप लिया था। अत: उसने गिलास में थोड़ा सा दूध बल्लू के लिए छोड़ने का निश्चय किया। किन्तु अपनी भूख की वजह से वह पूरा दूध पी गया। जैसे ही उसने अपना दूध खत्म किया, गिलास की तली में उसने कुछ लिखा हुआ पढ़ा। मारे शर्म के उसका चेहरा झुक गया। वह फौरन किसान के पास गया। दूध का एक और बड़ा गिलास

और रोटी खरीदी और बल्लू को पास बुलाकर उससे खाने का आग्रह किया। पंक्तियां जो उसने गिलास की तली में पढ़ी थीं, वे इस तरह थीं- जो गरीबों का खयाल नहीं रखते, वे स्वयं भी भोजन के अधिकारी नहीं हैं।

१०५७) स्वस्थ जीवन के लिए शांत रहना आवश्यक है - एक लड़का महात्मा के पास पहुंचा। लड़का बड़ा शैतान था, उसको देखते ही महात्मा ने भांप लिया। इसलिए मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रतिबोध देने के लिए महात्मा बोले- बच्चे। तुम तो बड़े तेज दिखाई देते हो। वह अपनी प्रशंसा सुनकर खुश हुआ और कहने लगा- स्कूल में सब लड़के मुझसे डरते हैं। महात्मा- अच्छा, तुम सरल काम करना चाहते हो या कठिन? लड़का- मैं कठिन से कठिन काम करना चाहता हूं। महात्मा- तुम्हें कोई गाली दे तो तुम क्या करोगे? लड़का - मुझे कोई एक गाली देता तो उसको दस गाली सुनाऊंगा। महात्मा- ऐसा करना सरल है या कठिन? लड़का- महात्मा जी। यह तो मैं बड़ी आसानी से कर लेता हूं। महात्मा- तुम तो तेज लड़के हो, ऐसा सरल काम क्यों करते हो? लड़का कुछ सकुचाता हुआ बोला- अच्छा, आज से मैं कठिन काम करूंगा। महात्मा- गाली सहना बहुत कठिन काम है। गाली सुनकर गाली देनेवाले बहुत मिलें, पर उस समय खामोश रहनेवाले विरले ही होते हैं। लड़का- महात्मा जी जैसा आपने कहा है, मैं वैसा ही कठिन काम करूंगा। लड़का महात्मा जी को वचन देकर आगे चला तो उसे एक दोस्त मिला। उसने एक कंकड़ उस पर फेंका। वह बालक तिलमिला गया। इतने में उसे महात्मा के शब्द याद आ गये। वह शांत खड़ा रहा। सामनेवाला बच्चा यह देखकर दंग रह गया। वह बोला- भैया, मैंने अच्छा नहीं किया, क्षमा करना। ऐसा सुनकर उसने संकल्प कर लिया कि जीवन की स्वस्थता के लिए वह ऐसे ही काम करेगा।

१०५८) मैं हूं रानी - अंग्रेजों का जनरल ह्यूरोज बड़ा ही कातिल था। पंद्रह दिन के अंदर ही उसने झांसी पर दूसरा हमला बोल दिया। पहले हमले में उसे पीछे धकेलने के बाद इस बार रानी झांसी का मन टूटने लगा था। राज्य में कई गद्दार हो गए थे, जिनकी बदौलत अंग्रेज झांसी पर चढ़े चले आ रहे थे। यह देखकर रानी झांसी के मन में आया कि वह अपने जीवन का अंत कर लें। ठीक उसी वक्त झलकारी बाई ने उन्हें संभाला। उन्होंने अपने पति पूरन लाल कोरी के साथ मिलकर रानी को उनके दत्तक पुत्र के साथ महल से सुरक्षित बाहर निकाल दिया।

रानी झांसी के महल से सुरक्षित बाहर निकलते ही झलकारी बाई की आंखों से अंगार बरसने लगे। युद्ध शुरू हो गया। एक तरफ धोखेबाज ह्यूरोज था तो दूसरी तरफ परमवीर झलकारी बाई थीं। झलकारी बाई ने गाजर-मूली की तरह अंग्रेजों की सेना को काटना शुरू किया। वे किसी तरह अंग्रेजों की सेना को दो घंटे तक उलझाए रखना चाहती थीं, जिससे रानी झांसी को कोई खतरा न हो। उन दो घंटों में अंग्रेजों की सेना को साक्षात काल याद आ गया। जनरल ह्यूरोज ने तो इस घटना का जिक्र कहीं नहीं किया, लेकिन उस युद्ध के बारे में अभी तक झलकारी बाई की वीरता लोगों की जुबान पर है।

हुआ यों कि दो घंटे बाद जब झलकारी बाई को पता चला कि रानी झांसी कालपी नदी पार कर गई हैं तो वह अपने घोड़े पर जनरल ह्यूरोज के पास पहुंची और उसने बोलीं, रानी को कहां ढूंढते फिरते हो? मैं हू रानी, पकड़ सको तो पकड़ लो मुझको। इसके बाद तो युद्ध और भी घनघोर हो गया और वीरांगना झलकारी बाई लड़ते-लड़ते अंतत: शहीद हो गई। आज भी हर १५ अगस्त को झांसी में उन्नाव गेट के पास झलकारी बुर्ज पर उनकी याद में तिरंगा फहराया जाता है।

१०५९) हिस्सा - बड़े साहब की पत्नी हैं तो साहब की साहबी का असर तो पड़ना ही था। साहब दफ्तर में अपना हिस्सा लेने में जागरूक हैं तो वे भी पीछे नहीं हैं। उनका शासन, आज्ञा और चौकन्नापन घर के अंदर से जारी होता है। तमाम खलासी उनकी खिदमत में तैनात रहते, रेस्टहाउस से खाना ही नहीं खानसामा तक वे साधिकार बुला लेती। ऑफिशियल पार्टीज के लिए आनेवाले स्नैक्स, आइस्क्रीम में उनके घर का हिस्सा होता। आदत ही पड़ गई थी हर सरकारी चीज में से हिस्सा लेने की। रेलवे कालोनी की सड़क बनना शुरू हुई तो तमाम गिट्टी उठवाकर अपने बंगले का ग्राउंड समतल करा कीचड़ से मुक्ति पा ली। अब सड़क का काम अंतिम चरण पर था, बड़े-बड़े ड्रमों में डामर उकाला जा रहा था। बेचैन हो उठीं वे। क्या करें? डामर में अपना हिस्सा कैसे छोड़ देतीं? तुरंत अकल भिड़ाई और खलासी को सूप पकड़ा दिया, जाओ... सूपे को डामर में डुबाकर ले आओ। पेंट करने की झंझट मिटेगी? आखिरकार डामर में से भी उन्होंने अपना हिस्सा ले ही लिया।

१०६०) जीने का सार - एक दिन एक प्रोफेसर अपनी क्लास में आते ही बोले, चलिए, सरप्राइज टेस्ट के लिए तैयार हो जाइए। सभी छात्र घबरा गए। कुछ किताबों के पन्ने पलटने लगे तो कुछ सर के दिए नोट्स जल्दी-जल्दी पढ़ने लगे। ये सब कुछ काम नहीं आएगा। प्रोफेसर मुस्कुराते हुए बोले। पेपर बांट दिए गए। अगले ही क्षण सभी पर्चा निहारने लगे। पर ये क्या? इसमें तो कोई प्रश्न ही नहीं था। था तो सिर्फ वाइट पेपर पर एक ब्लैक स्पॉट। ये क्या सर? इसमें तो कोई सवाल ही नहीं है, एक छात्र खड़ा होकर बोला। प्रोफेसर बोले, जो कुछ भी है, आपके सामने है। आपको बस इसी को एक्सप्लेन करना है और इस काम के लिए आपके पास सिर्फ १० मिनट हैं। चलिए शुरू हो जाइए स्टूडेंट्स के पास कोई चारा नहीं था, वे अपने-अपने उत्तर लिखने लगे। समय खत्म हुआ प्रोफेसर ने पर्चे एकत्रित किए और बारी-बारी से उन्हें पढ़ने लगे। लगभग सभी ने उस ब्लैक स्पॉट को अपनी-अपनी तरह से समझाने की कोशिश की थी, लेकिन किसी ने भी उस स्पॉट के चारों ओर मौजूद सफेद जगह के बारे में बात नहीं की थी। प्रोफेसर गंभीर होते हुए बोले, इस टेस्ट के पीछे मेरा एक मकसद है। मैं आपको जीवन की एक अद्भुत सच्चाई बताना चाहता हूं। इस पूरे पेपर का ९९ नप्रतिशत हिस्सा सफेद है लेकिन आपमें से किसी ने भी इसके बारे में नहीं लिखा और अपना १०० प्रतिशत जवाब सिर्फ उस एक चीज को समझाने में लगा दिया जो मात्र १ प्रतिशत है। यही बात जिन्दगी में भी देखने को मिलती है। समस्याएं हमारे जीवन का एक छोटा सा हिस्सा होती हैं, लेकिन हम अपना पूरा ध्यान इन्हीं पर लगा देते हैं।

१०६१) सुख-दुख दोनों है खास - बादशाह अकबर के दरबार के नवरत्नों में बीरबल का अलग स्थान था। बादशाह कैसा भी प्रश्न पूछते, बीरबल सही व सटीक उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा शांत कर देते। एक बार उन्होंने कहा, कुछ ऐसा लिखो जिससे खुशी के वक्त पढ़ें तो गम याद आ जाए और गम के वक्त पढ़ें तो खुशी के पल याद आएँ। बीरबल ने कुछ देर सोचा, फिर कागज पर यह वाक्य लिखकर बादशाह को दिया- यह वक्त गुजर जाएगा। सच, इन चार शब्दों के वाक्य में जीवन की कितनी बड़ी सच्चाई छुपी है। सभी जानते हैं कि सुख-दु:ख जीवन के दो पहलू हैं जिनका क्रमानुसार आना-जाना लगा ही रहता है। किंतु हम सब कुछ जानते-समझते हुए भी दोनों ही वक्त अपनी भावनाओं-संवेदनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाते।

जब खुशियों के पल हमारी झोली में होते हैं तो उस समय हम स्वयं में ही इतने मग्न हो जाते हैं कि क्या अच्छा क्या बुरा, इस पर कभी विचार नहीं करते हैं। अपनी किस्मत व भाग्य पर इठलाते हुए अन्य की तुलना में श्रेष्ठ समझते हैं और अहंकारवश कुछ ऐसे कार्य तक कर देते हैं जिनसे स्वयं का हित और दूसरे का अहित हो सकता है। इस क्षणिक सुख को स्थायी मानते हुए ही जीने लगते हैं और वास्तव में यही सोच अपना लेते हैं कि अब हमें क्या चाहिए, सब कुछ तो मिल गया। बस, एक इसी भ्रांति के कारण स्वयं को उतने योग्य व सफल अपना आपा खो बेसुध होकर सब भूल जाते हैं। छोटे-से-छोटे दु:ख तक में धैर्य संयम नहीं रख पाते। बुद्धि-विवेक व आत्मबल होने के बावजूद स्वयं को इतना दयनीय, असहाय व बेचारा महसूस करते हैं कि आत्मसम्मान, स्वाभिमान तक से समझौता कर लेते हैं। यही कारण है कि सब कुछ होते हुए भी उम्रभर अयोग्य-असफल होने लगते हैं। कहने का सार यह है कि जो भी छोटी-सी जिंदगी हमें मिली है उसमें सुख व दु:ख दोनों ही से हमारा वास्ता होगा, यही शाश्वत सत्य है। इस सच को हम जितनी जल्दी स्वीकार कर लेंगे उतना ही हमारे लिए अच्छा रहेगा, क्योंकि फिर ऐसा समय आने पर हम अपने संवेगों पर काबू कर उन्हें स्थिर रख सकेंगे।

१०६२) भगवान के दर्शन - एक राजा था, जो बहुत ही न्याय प्रिय, प्रजा वत्सल और धार्मिक स्वभाव का था। वह नित्य भगवान की पूजा करता और उनसे दर्शन देने की विनती करता था। एक दिन भगवान ने प्रसन्न होकर राजा को दर्शन दिए और राजा के श्रद्धाभाव से प्रसन्न होकर कोई वर मांगने को कहा।

प्रजा को चाहनेवाला राजा बोला, भगवान आपका दिया सब कुछ है। आपकी कृपा से राज्य में सब प्रकार का सुख-शांति है, फिर भी मेरी एक ही इच्छा है कि जैसे आपने मुझे दर्शन देकर धन्य किया, ऐसे ही मेरी सारी प्रजा को भी दर्शन देकर उसे धन्य करें। भगवान बोले, राजन यह तो संभव नहीं है, लेकिन प्रजा को चाहनेवाला राजा भगवान से जिद पर अड़ गया। आखिर भगवान को राजा की बात माननी पड़ी। उन्होंने कहा, कल अपनी सारी प्रजा को उस पहाड़ी के पास ले आना और मैं पहाड़ी के ऊपर से सभी को दर्शन दूंगा। ये सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और भगवान को धन्यवाद दिया। राजा ने सारे नगर में ढिंढोरा पिटवाकर अगले दिन पहाड़ी पर भगवान के दर्शन देने का संदेश दिया। दूसरे दिन राजा अपनी समस्त प्रजा और स्वजनों को साथ लेकर पहाड़ी की ओर चलने लगा। चलते-चलते रास्ते में एक स्थान पर तांबे के सिक्कों को पहाड़ दिखा, प्रजा में से कुछ एक लोग उस ओर भागने लगे। राजा ने सबको सतर्क किया कि कोई उस ओर ध्यान न दे, क्योंकि तुम सब भगवान से मिलने जा रहे हो, इन तांबे के सिक्कों के पीछे अपने भाग्य को लात मत मारो। लोभ-लालच में वशीभूत प्रजा के कुछ एक लोग तो तांबे की सिक्कों वाली पहाड़ी की ओर चले गए। वहां से सिक्कों की गठरी बनाकर अपने घर की ओर लौट गए। राजा खिन्न मन से आगे बढ़े, कुछ दूर चलने पर चांदी का सिक्कों का चमचमाता पहाड़ दिखाई दिया। इस कई लोग चांदी के सिक्कों के पहाड़ की ओर भागने लगे और उन्हें समेटने के लिए लड़ने झगड़ने लगे। इसी प्रकार कुछ दूर और चलने पर सोने के सिक्कों का पहाड़ नजर आया, अब तो लगभग प्रजा के सभी लोग राजा और उनके परिवार को छोड़कर सोने की पहाड़ की ओर भागे। अब केवल राजा और रानी ही शेष रह गए थे। राजा रानी से कहने लगे, देखो कितने लोभी ये लोग। भगवान से मिलने का महत्व ही नहीं जानते हैं। भगवान के सामने सारी दुनियां की दौलत क्या चीज है? रानी ने भी राजा की बात का समर्थन किया और उनके साथ आगे बढ़ने लगी।

वे अभी कुछ ही दूर चले थे कि रानी को सप्तरंगी आभा बिखेरता एक हीरों का पहाड़ दिखाई दिया। इस बार तो रानी से भी नहीं रहा गया, हीरों के आकर्षण से वह भी पहाड़ की ओर दौड़ पड़ीं और हीरों की गठरी बनाने लगी। फिर भी उसका मन नहीं भरा तो साड़ी के पल्लू में भी हीरे बांध लिए। वजन के कारण रानी के वस्त्र देह से अलग हो गए लेकिन हीरों की तृष्णा अभी भी नहीं मिटी। यह देख राजा को अत्यन्त ही ग्लानि हुई। बड़े दु:खी मन से राजा अकेले ही आगे बढ़ते गए। आखिरकार राजा अपने गंतव्य पर पहुंचे, जहां सचमुच भगवान खड़े उसका इंतजार कर रहे थे। राजा को देखते ही भगवान मुस्कराए और राजा से पूछा- कहां है तुम्हारी प्रजा और तुम्हारे प्रियजन। मैं तो कब से उनसे मिलने के लिये बेकरारी से उनका इन्तजार कर रहा हूं। इस पर राजा ने शर्म और आत्मग्लानि से अपना सर झुका दिया। भगवान ने राजा को समझाया, राजन्, जो लोग अपने जीवन में भौतिक सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति को मुझसे अधिक मानते हैं, उन्हें कभी भी मेरी प्राप्ति नहीं होती और वह मेरे स्नेह तथा कृपा से भी वंचित रह जाते हैं।

जो जीव अपनी मन, बुद्धि और आत्मा से भगवान की शरण में जाते हैं और सर्व लौकिक संबंधों को छोड़कर प्रभु को ही अपना मानते हैं वो ही भगवान के प्रिय बनते हैं।

१०६३) समस्याओं से भागो मत - एक बार नरेंद्र एक सरोवर के किनारे चला जा रहा था। वह किसी सोच में उलझा हुआ था तभी सामने से बंदरों का एक झुंड उसकी तरफ बढ़ा। जब वे बंदर थोड़ी ही दूरी पर रह गए तो अचानक नरेंद्र का ध्यान टूटा और देखा कि लाल मुंह के विशाल एवं विकराल बंदर उससे अधिक दूरी पर नहीं थे। उन्हें देख नरेंद्र घबरा गया और पलटकर भागने लगा। बंदर भी उनके पीछे भागे। नरेंद्र ने सोचा बस अब प्राण गए।

तभी किसी बुजुर्ग ने जोर से चिल्लाकर कहा- वहीं रुक जाओ। भागो मत। पीछे पलटकर बंदरों के सामने सीधे खड़े हो जाओ। डरो मत। नरेंद्र वहीं रुक गया और पीछे पलटकर बंदरों के सामने खड़ा हो गया। इसके बाद जैसे चमत्कार हुआ। वे सारे बंदर वहीं रुक गए और नरेंद्र को निडर खड़े देख पीछे वापस चले गए।

इस घटना से नरेंद्र उर्फ विवेकानंद ने बड़ा ज्ञान प्राप्त किया। एक दिन उन्होंने अपने भाषण में इस घटना का उल्लेख कर कहा- उन विकराल बंदरों से डरकर भागता रहता तो मैं बचता नहीं। बंदर मुझे मार डालते, लेकिन मैं उनके सामने खड़ा हो गया, वे चुपचाप भाग गए। इसी प्रकार समस्याओं तथा संकटों से पलायन करने से वे दूर नहीं होतीं, बल्कि उनका साहस और वीरता से सामना करें तो वे सारे संकट दूर हो जाते हैं।

१०६४) जबान पर ताला नहीं - एक समय एक राजा राज्य करता था जिसकी बुद्धिमत्ता, चातुर्य और राज्य कौशल प्रसिद्धि के शिखर पर था। राज्य धन्य-धान्य से परिपूर्ण था और चहुँओर खुशहाली का साम्राज्य था।

राजा का वजीर एक बार राज्य भ्रमण पर निकला। यात्रा से वापस आकर उन्होंने राजा से कहा- राजन्। आपकी प्रसिद्धि दिशाओं में है, दुनिया के तमाम अन्य राजा महाराजा आपकी बुद्धिमत्ता और राज्य कौशल का लोहा मानते हैं और चहुँ ओर लोग आपकी तारीफ करते हैं। राज्य भी धनधान्य से परिपूर्ण और खुशहाल है। फिर भी कुछ लोग मुझे ऐसे मिले जो आपकी बुराई करते हैं, आपके बारे में चुटकुले सुनाते हैं और आपकी बुद्धिमत्ता पूर्ण निर्णयों की खिल्ली उड़ाते हैं। ऐसा कैसे है राजन्? राजा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया- राज्य की तमाम जनता को मालूम है कि राजा

उनके लिए क्या करता है। रहा सवाल जबान का, तो मैं राज्य के बाहरी रास्तों पर बने हुए दरवाजों को तो बंद कर उन पर ताले लगवा सकता हूं, मगर मनुष्य की जुबान पर नहीं और उनकी ये जुबानें मुझे सदैव उत्तम कार्य करते रहने को प्रेरित करती रहती हैं कि शायद कभी उनकी जुबान बदल जाए।

१०६५) आपकी क्षमताएं अनंत हैं - स्काटलैंड का सम्राट ब्रूस अभी गद्दी पर बैठ भी नहीं पाया था कि दुश्मनों ने आक्रमण कर दिया। बड़ी मुश्किल से संभल पाया था कि दुबारा फिर हमला कर दिया गया। हारते-हारते बचा। इस बार कई राजाओं ने हमला कर दिया, तो बेचारे की राजगद्दी भी छिन गई। लगातार चौदह बार की असफलताओं के कारण उसके सैनिक भी कहने लगे कि ब्रूस के भाग्य में सब कुछ है, पर विजय नहीं, उन्होंने साथ छोड़ दिया। निराश ब्रूस एक पहाड़ी पर बैठा था। एक मकड़ी हवा में उड़कर एक दूसरे पेड़ की टहनी से जोड़कर जाला बुनना चाहती, पर जाला हर बार टूट जाता। मकड़ी ने बीस बार प्रयत्न किया, फिर भी हिम्मत न हारी। २१ वें बार अन्ततः सफल हो गई, तो ब्रूस उछला और बोला- अभी तो सात अवसर बाकी हैं, अभी हिम्मत क्यों हारूं? एक बार फिर सारी शक्ति लगाकर चढ़ाई की और न केवल अपना राज्य वापस कर लिया, बल्कि सभी दुश्मनों को परास्त करता हुआ सबका सम्राट बन बैठा। सच ही कहा गया है कि बार-बार प्रयत्न करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं, सोते हुए सिंह के मुह में जानवर स्वयं नहीं प्रवेश कर जाते बल्कि वह शिकार करके उन्हें हासिल करता है। अतः आपकी क्षमताएं अनंत क्यों न हों, निरंतर प्रयासरत रहें।

१०६६) राज्य की संपत्ति - एक बार मगध के शासक ने कौशल राज्य पर हमला कर दिया। कौशल नरेश ने तुरंत अपनी प्रजा को नगर खाली कर किसी सुरक्षित प्रदेश में निकल जाने को कहा। राजाज्ञा मानकर सभी नागरिक अपने परिवार और सामान समेत नगर से प्रस्थान कर गए। मगध की सेना ने नगर में प्रवेश किया और कौशल नरेश तथा उनके साथ चल रहे कुछ अन्य नागरिकों को घेर लिया। कौशल नरेश ने मगध के सेनापति से अनुरोध किया कि अगर वह उनके साथ चल रहे बारह लोगों को मुक्त कर दें तो वे स्वयं बिना शर्त आत्मसमर्पण कर देंगे। सेनापति ने शर्त स्वीकार कर ली। कौशल नरेश के साथ चल रहे बारह लोगों को छोड़ दिया गया और कौशल नरेश को उनके अंगरक्षकों के साथ मगध नरेश के सामने प्रस्तुत किया गया। सेनापति ने बारह लोगों को छोड़े जानेवाली बात मगध नरेश को बताई तो वह आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने कौशल नरेश से पूछा- जिन बारह लोगों को आपने छुड़वाया वे कौन थे? कौशल नरेश ने उत्तर दिया- मान्यवर, वे हमारे राज्य के संत और विद्वान थे। मैं रहूं या न रहूं इससे कोई अंतर नहीं आनेवाला है। लेकिन एक राज्य के लिए संतों और विद्वानों का बचे रहना आवश्यक है। वे राज्य की संपत्ति हैं। वे रहेंगे तो आदर्श और संस्कार जीवित रहेंगे। किसी राज्य के लिए ये जरूरी चीजें हैं। इन्हीं के द्वारा भविष्य में भी कर्त्तव्यनिष्ठ और योग्य नागरिकों का निर्माण होगा। इस विचार ने मगध नरेश को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने कौशल नरेश को रिहा कर दिया और उनका राज्य भी लौटा दिया।

१०६७) बहुत समय पहले की बात है, दो दोस्त बीहड़ इलाकों से होकर शहर जा रहे थे। गर्मी बहुत अधिक होने के कारण वो बीच-बीच में रुकते और आराम करते। उन्होंने अपने साथ खाने-पीने की भी कुछ चीजें रखी हुई थीं। जब दोपहर में उन्हें भूख लगी तो दोनों ने एक जगह बैठकर खाने का विचार किया। खाना खाते-खाते दोनों में किसी बात को लेकर बहस छिड़ गयी और धीरे-धीरे बात इतनी बढ़ गयी कि एक दोस्त ने दूसरो को थप्पड़ मार दिया। पर थप्पड़ खाने के

बाद भी दूसरा दोस्त चुप रहा और कोई विरोध नहीं किया। बस उसने पेड़ की एक टहनी उठाई और उससे मिट्टी पर लिख दिया- आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मुझे थप्पड़ मारा। थोड़ी देर बाद उन्होंने पुन: यात्रा शुरू की, मन मुटाव होने के कारण वो बिना एक-दूसरे से बात किये आगे बढ़ते जा रहे थे कि तभी थप्पड़ खाए दोस्त के चीखने की आवाज आई, वह गलती से दलदल मे फंस गया था। दूसरे दोस्त ने तेजी से दिखाते हुए उसकी मदद की और उसे दलदल से निकाल दिया। इस बार भी वह दोस्त कुछ नहीं बोला, उसने बस एक नुकीला पत्थर उठाया और एक विशाल पेड़ के तने पर लिखने लगा- आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मेरी जान बचाई। उसे ऐसा करते देख दूसरे मित्र से रहा नहीं गया और उसने पूछा, जब मैंने तुम्हें पत्थर मारा तो तुमने मिट्टी पर लिखा और जब मैंने तुम्हारी जान बचाई तो तुम पेड़ के तने पर कुरेद-कुरेद कर लिख रहे हो, ऐसा क्यों? जब कोई तकलीफ दे तो हमें उसे अन्दर तक नहीं बैठाना चाहिए ताकि क्षमा रूपी हवाएं इस मिट्टी की तरह ही उस तकलीफ को हमारे जेहन से बहा ले जाएं, लेकिन जब कोई हमारे लिए कुछ अच्छा करे तो उसे इतनी गहराई से अपने मन में बसा लेने चाहिए कि वो कभी हमारे जेहन से मिट ना सके। दोस्त का जवाब आया।

१०६८) सब्र का फल हमेशा मीठा होता है - किसी गांव में पिता-पुत्र रहते थे। किसान श्यामलाल का बेटा रामू दिनभर निठल्ला घूमता रहता था। श्यामलाल उसे बहुत समझाता लेकिन रामू पर उसका कोई असर नहीं होता। एक दिन रामू को न जाने क्या सूझी कि वह पिता के साथ खेत पर चला गया। वहां उसने बीज बोने में श्यामलाल की मदद की।

उस दिन रामू को समझ आया कि खेतीबाड़ी का महत्व क्या है और इसमें कितनी मेहनत होती है। उस दिन के बाद वह रोज श्यामलाल के साथ खेत पर जाने लगा। दिन-रात की मेहनत के बाद अब वह चाहता था कि उसकी धान की फसल जल्दी ही खेत में लहलहाने लगे। फसल अपनी गति से बढ़ रही थी। वह रोज फसल देखने जाता लेकिन फसल बढ़ी हुई नहीं दिखती। वह निराश होकर अपने घर लौट जाता।

एक दिन रामू ने फसल को जल्दी उगाने का तरीका सोचा और खेत पर चला गया। वहां जाकर उसने सभी पौधों को जमीन से खींचकर थोड़ा-थोड़ा बाहर कर दिया। बढ़ी हुई फसल को देखकर वह बहुत खुश हुआ। वह दौड़ा-दौड़ा घर गया और सारी बात पिता को बताई। यह सुनकर श्यामलाल तुरंत खेत की ओर भागा लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। सारी फसल नष्ट हो चुकी थी।

श्यामलाल को अपने बेटे की करनी पर बहुत गुस्सा आया लेकिन अब वह कर भी क्या सकता था। उसने नष्ट फसल रामू को दिखाई और समझाया कि जल्दबाजी में काम बनता नहीं बिगड़ता है। सब्र का फल ही मीठा होता है। यह सुनकर रामू को अपनी गलती का अहसास हो गया और उसने पिता से अपने किए की माफी मांगी।

१०६९) रोहन, नानी और अमृत - रोहन और उसकी नानी बैठकर बातें कर रहे थे। नानी रोहन को समझाते हुए कहने लगी बेटा, एक बात गांठ बांध लो कि कभी घमंड नहीं करना चाहिए। हमारे पास जो कुछ भी है, वह हमें ईश्वर ने दिया है। इसीलिए उसे हर किसी के बीच बांटकर इस्तेमाल करने की आदत डालनी चाहिए। रोहन को कुछ समझ में नहीं आया कि नानी आखिर कहना क्या चाहती है। जब उसने हैरत भरी नजरों से नानी की ओर देखा, तो वह उसकी समस्या समझ गई और फौरन कहने लगीं चलो, मैं एक कहानी के जरिये इसे समझाती हूं। एक अमीर आदमी को अपने धन-ऐश्वर्य का

बहुत ही घमंड था। वह बात-बात में लोगों को ताने देता कि वे तो भिखारी हैं।

उस अमीर आदमी के पास अमृत था, जिसे पीने पर किसी भी बीमारी से निजात पाया जा सकता था। लेकिन यह बात वह किसी को पता नही चलने देता था। एक दिन देश के राजा बीमार पड़ गए। उनकी स्थिति दिनोंदिन गंभीर होती चली गई। अमीर आदमी ने सोचा कि राजा के लिए तो देश-विदेश से जड़ी-बूटियां मंगवाई जा सकती हैं। इन्हें मैं अपना अमृत देकर अमृत क्यों व्यर्थ करूं? कुछ ही दिनों में राजा औषधियों और जड़ी-बूटियों से ठीक हो गए। उसके कुछ ही दिनों के बाद देश के एक बड़े संत बीमार पड़े। अमीर आदमी ने मन ही मन सोचा, यह तो संत हैं, यह मेरे अमृत का महत्व क्या समझेंगे? अगर यह ठीक हो भी गए, तो उसे ईश्वर की इच्छा बता देंगे। कुछ दिन बाद वह संत भी ठीक हो गए। इस तरह से साल बीतते गए और अमृत पुराना होता गया अमीर आदमी ने वह अमृत न खुद पिया, न ही किसी को पिलाया। एक दिन खुद वह बीमार पड़ गया। उसने सोचा, अमृत के सही उपयोग का यही उपयुक्त समय है। जब वह संदूक खोलकर अमृत निकालने पहुंचा, तो उसने देखा कि कुछ मोटे-मोटे चूहे संदूक के आसपास घूम रहे हैं। उसने जैसे ही संदूक खोला, तो पाया कि अमृत की बोतल टूट गई है और कुछ चूहे अमृत का सेवन कर रहे हैं। अमीर आदमी यह देखकर सदमे से चिल्लाने लगा। उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि जिस अमृत को उसने उम्र भर बचाकर रखा, उसे चूहों ने चट कर दिया। नानी बोली, अगर वह अमीर अपना अमृत राजा या फिर संत को दे देता, तो वे उस अमृत से और ढेर सारा अमृत बना लेते, जिससे देश की प्रजा को फायदा होता। लेकिन उस अमीर के घमंड और लालच की वजह से सारा अमृत व्यर्थ चला गया। लालच और घमंड से कुछ हासिल नहीं होता। इसलिए लालच से दूर रहना चाहिए।

१०७०) लक्ष्य की तलाश - बहुत पुरानी कथा है। एक राजा अपने राजसी दायित्वों से ऊब गये थे। वह जो भी करते, बेमन से करते। वह चाहते थे कि किसी तरह राजपाट त्याग दें और ईश्वर का साक्षात्कार करें। एक दिन उन्होंने राजसिंहासन अपने उत्तराधिकारी को सौंपा और राजमहल छोड़कर जंगल की ओर चल पड़े। उन्होंने रास्ते में कई विद्वानों के साथ सत्संग किया, कुछ दिनों तक तपस्या की किंतु उनके भीतर अतृप्ति बनी रही। मन में खिन्नता का भाव लिए वह तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। एक दिन चलते-चलते वह काफी थक गए और भूख के कारण निढाल से होने लगे। वह पगडंडी से उतर एक खेत में रुके और एक पेड़ के नीचे बैठ सुस्ताने लगे। उन्हें देख एक किसान उनके पास जा पहुंचा। वह उनका चेहरा देखकर ही समझ गया वह थके होने के साथ भूखे भी हैं। किसान ने हांडी में उबालने के लिए चावल डाले। चावल की हांडी को आग पर चढ़ाकर उसने राजा से कहा, उठो, यह चावल पकाओ, जब चावल पक जाएं तब मुझे आवाज दे देना। हम दोनों इससे पेट भर लेंगे। राजा मंत्रमुग्ध होकर किसान की बात सुनते रहे। किसान के वहां से जाने के बाद उन्होंने चावल पकाने शुरू कर दिए। जब चावल पक गए, तो उन्होंने किसान को बुलाया और दोनों ने भरपेट चावल खाए। भोजन करने के बाद किसान काम में लग गया और राजा को ठंडी छांव में गहरी नींद आ गई। उन्होंने स्वप्न में देखा कि एक दिव्य पुरुष खड़े होकर कह रहा है, मैं कर्म हूं और मेरा आश्रय पाए बगैर किसी को शांति नहीं मिलती। राजन्, तुम भी पुरुषार्थ करो और अपना लक्ष्य प्राप्त करो। नींद खुलने पर राजा ने सपने पर विचार किया तब उन्हें कर्म में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिली। वह वापस अपने राज्य लौट गए। उन्होंने जनकल्याण को अपना लक्ष्य बना लिया और उसी

में रम गए। इससे उन्हें आत्मिक शांति मिली। उन्हें लगा कि यही वह लक्ष्य था जिसे वह अब तक ढूंढ रहे थे।

१०७१) पत्थर और शराब - एक नास्तिक था। वह एक दिन पादरी के पास गयां उनसे बोला, महोदय, एक बात बताइए। क्या? पादरी ने प्रश्न किया। यदि मैं खजूर खाऊं, तो क्या मुझे पाप लगेगा? नास्तिक ने पूछा। पादरी ने जवाब दिया, बिल्कुल नहीं। नास्तिक ने अगला प्रश्न किया, और यदि मैं उस खजूर के साथ थोड़ा पानी मिला लूं और तब खाऊं, तो क्या मुझे पाप लगेगा?

इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा पादरी ने कहा। और महोदय, यदि मैं उस खजूर में पानी के साथ-साथ थोड़ा खमीर मिलाकर खाऊं, तो क्या उससे कोई धार्मिक अवज्ञा होगी? उस नास्तिक ने पुन: प्रश्न किया। पादरी सारी बात समझ गए थे, किंतु फिर भी बड़े शांत स्वर में उन्होंने उत्तर दिया, नहीं, बिल्कुल नहीं। अब नास्तिक तर्क करता हुआ बोला, तो फिर धार्मिक ग्रंथों में शराब पीना पाप क्यों बतलाया गया है, जबकि वह इन तीनों के मिलाने से ही बनती है? पादरी ने नास्तिक के सवाल का जवाब न देते हुए उलटे उससे ही प्रश्न कर दिया, अच्छा एक बात बताओ। यदि मैं तुम पर मुट्ठी भर धूल फेंकूं, तो क्या तुम्हें चोट लगेगी? नहीं। नास्तिक का जवाब था। और, यदि मैं उस धूल में थोड़ा पानी मिला लूं और तब तुम पर फेंकू, तो क्या कोई फर्क पड़ेगा? पादरी ने पूछा। तो भी मुझे कोई चोट नहीं पहुंचेगी। प्रसन्नता से नास्तिक बोला। और मित्र, यदि मैं उस मिट्टी और पानी में कुछ पत्थर मिला कर तुम्हारे ऊपर फेंकूं, तो क्या अंतर होगा? पादरी ने यह सुनकर अगला प्रश्न किया। तब तो मेरा सिर ही फूट जाएगा घबराकर नास्तिक बोला। अब पादरी ने शांति से जवाब दिया, मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है कि अब तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा। अब नास्तिक जिंदगी की वास्तविकता से परिचित हो चुका था।

१०७२) बड़े बुजुर्गों की सलाह को अनदेखी न करें - एक विशाल पेड़ पर बहुत से हंस रहते थे। उनमें एक हंस बुद्धिमान और बहुत दूरदर्शी था। सब उसे ताऊ कहते थे। एक दिन ताऊ ने नन्हीं-सी बेल को पेड़ के तने पर बहुत नीचे लिपटते पाया। ताऊ ने युवा हंसों से कहा, इस बेल को नष्ट कर दो। एक दिन यह बेल हम सबको मौत के मुंह में ले जायेगी। एक हंस हंसते हुए बोला, ताऊ, यह छोटी-सी बेल हमें कैसे मौत के मुंह में ले जायेगी। ताऊ ने समझाया, यह बेल धीरे-धीरे इस पेड़ के तने से लिपटते हुए ऊपर तक आयेगी। फिर बेल मोटी होने लगेगी। एक तरह से यह बेल नीचे से ऊपर तक पेड़ पर चढ़ने के लिए सीढ़ी बन जायेगी। कोई भी शिकारी सीढ़ी के सहारे चढ़कर हम तक पहुंच जायेगा और हम सारे मारे जायेंगे। हंसों ने कहा, ताऊ, तू तो छोटी सी बेल को खींच कर ज्यादा ही लंबा कर रहा है।

इस प्रकार किसी भी हंस ने ताऊ की बात को गंभीरता से नहीं लिया। समय बीतता रहा। बेल लिपटते-लिपटते ऊपर शाखों तक पहुंच गयी। पेड़ के तने पर सीढ़ी बन गयी। सबको ताऊ की बात याद आयी, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी, क्योंकि बेल इतनी मजबूत हो गयी थी कि उसे नष्ट करना हंसों के बस की बात नहीं थी। एक दिन जब सब हंस दाना चुगने बाहर गये, तब एक बहेलिया उधर आया। पेड़ पर बनी सीढ़ी को देखते ही उसने पेड़ पर चढ़कर जाल बिछाया और चला गया। सांझ को सारे हंस लौटे, तो जाल में फंस गये। जब वे फड़फड़ाने लगे। वे ताऊ की बात न मानने के लिए लज्जित थे और खुद को कोस रहे थे। ताऊ सबसे नाराज था और चुप बैठा था। एक हंस ने हिम्मत करके कहा, ताऊ, हम

मूर्ख हैं, लेकिन अब हमसे; मुंह मत फेरो। दूसरा हंस बोल, इस संकट से निकालने की तरकीब तू ही हमें बता सकता है। आगे हम तेरी कोई बात नहीं टालेंगे। सभी हंसों ने हामी भरी। ताऊ बोले, सुबह जब बहेलिया आयेगा, तब सब मुर्दा होने का नाटक करना। बहेलिया तुम्हें मुर्दा समझकर जाल से निकाल कर जमीन पर रखता जाएगा। वहां भी मरे समान पड़े रहना और मेरा इशारा पाते ही सब एक साथ उड़ जाना।

१०७३) बसु का प्रयोग - यह घटना उस समय की है जब भारत के महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु इंग्लैंड में थे। उन दिनों वह इस बात की खोज में लगे हुए थे कि पौधों में भी जीवन है और वे भी हमारी तरह पीड़ा का अनुभव करते हैं। वह इसे सिद्ध करने के लिए दिन-रात प्रयोग में जुटे हुए थे। आखिर वह दिन भी आ गया जब उन्हें लोगों के सामने इस बात को सिद्ध करना था। उस दिन उनका प्रयोग देखने के लिए दुनिया भर के वैज्ञानिक एवं लोग एकत्रित थे। बसु ने एक नजर भीड़ पर डाली जो बेसब्री से उनके प्रयोग की प्रतीक्षा कर रही थी और दूसरी नजर उस पौधे पर जिसके माध्यम से वह प्रयोग करनेवाले थे। उन्होंने इंजेक्शन द्वारा उस पौधे को जहर दिया। बसु के प्रयोग के अनुरूप जहरीले इंजेक्शन से पौधे को मुरझाना चाहिए था, लेकिन कुछ समय बाद भी जब पौधा नहीं मुरझाया तो वहां उपस्थित लोग उनका मजाक उड़ाने लगे। बसु के लिए यह अत्यंत कठिन घड़ी थी। वह अपने प्रयोग के प्रति पूरी तरह आश्वस्त थे। उन्हें लगा कि यदि जहरवाले इंजेक्शन ने पौधे को नुकसान नहीं पहुंचा सकता। हो सकता है कि शीशी में जहर के बजाय कुछ और हो। यह सोचकर बसु ने जहर की शीशी उठाई और अपने मुंह से लगा लिया। उन्हें ऐसा करते देख सभी चिल्लाने लगे और वहां भगदड़ मच गई। लेकिन बसु को वह जहर पीने पर भी कुछ नहीं हुआ। यह देखकर एक व्यक्ति वहां आया और उन्हें शांत करता हुआ बोला उसी ने जहरवाली शीशी बदल कर उसी रंग के पानी की शीशी रख दी थी ताकि यह प्रयोग सही सिद्ध न हो पाए। इसके बाद बसु ने विषवाली शीशी से पौधे को पुन: इंजेक्शन दिया। देखते ही देखते कुछ ही क्षणों में पौधा मुरझा गया। इस तरह यह प्रयोग सफल रहा।

१०७४) बिना समय लिए गांधीजी से मिलना प्राय: असंभव था। लेकिन बच्चों के लिए ऐसा कोई नियम नहीं था। ऐसे ही एक दिन बहुत से बच्चे आए और उन्हें घेर लिया। गांधीजी ने उनसे पूछा, क्या तुमको गिनना आता है? जरा बाईं ओर से दाईं ओर गिनो तो तुम लोग कितने हो? बच्चों को कुछ अनोखा सा लगा। लेकिन उन्होंने गिनना शुरू किया। पहली बार गिनने में कष्ट हुआ, लेकिन दूसरी-तीसरी बार करते-करते वे बड़ी आसानी से गिनना सीख गए। पर खेल यहीं समाप्त नहीं हुआ। गांधीजी ने उनसे पूछा, सम-विषम क्या होता है, जानते हो? केवल एक लड़का ही सम-विषम का अर्थ जानता था। गांधीजी ने सबको अच्छी तरह समझाया और फिर कहा, अच्छा, सब विषम लड़के जहां हैं, वहीं खड़े रहें और जो सम हैं, वे एक कदम आगे जाएं। पहले तो बच्चे अचकचाए, लेकिन बाद में दो कतारें बन गईं। एक सात लड़कों की, दूसरी छह लड़कों की, क्योंकि कुल तेरह लड़के थे। अब आगे का पाठ शुरू हुआ। गांधीजी ने पूछा, जो बच्चे तंबाकू पीते हैं, वे अपना हाथ उठा दें। छह बच्चों ने हाथ नहीं उठाए। गांधीजी ने सबको तंबाकू पीने की हानियां बताईं और फिर पूछा, क्या तुम्हारे अध्यापक अच्छे हैं? तुम्हें अच्छी तरह पढ़ाते हैं? मारते-पीटते तो नहीं? बच्चों ने एक स्वर में अपने शिक्षकों की प्रशंसा की। गांधीजी बोले, क्या वे तुम्हें कभी नहीं मारते? सभी बच्चों ने एक स्वर से कहा, कभी नहीं।

गांधीजी बोले, यह कैसे हो सकता है? क्या तुमने कभी ऐसे आदमी को देखा है, जिसमें जरा भी खोट न हो? इस बार लड़के सहसा कोई उत्तर नहीं दे सके। लेकिन दो मिनट बाद उनका जो नेता था, वह मुस्कुराया और गांधीजी की ओर इशारा करके बोला, हां देखा है उस बच्चे को अपने बारे में यह कहते देखकर गांधीजी चकित रह गए, बोले, न बाबा, यदि मैं बिल्कुल अच्छा होता तो सरकार मुझे बार-बार जेल में क्यों भेजती।

इस बार बच्चों के चकित होने की बारी थी। गांधीजी ने कहा, देखो बच्चों, मनुष्यों में कोई भी बिल्कुल अच्छा नहीं है। दोष-शून्य केवल परमात्मा है। हम सबको उसके जैसा बनने का प्रयत्न करना चाहिए। सत्य ही उसका मार्ग है। कितनी ही बड़ी गलती हम करें, लेकिन बोलें सदा सच। सच बोलनेवाले को कभी दु:ख नहीं होता।

१०७५) जीवन का रहस्य - राजा सुषेण के मन में कुछ प्रश्न थे, जिनके उत्तर की तलाश में वह एक महात्मा के पास पहुंचे। महात्मा ने कहा, अभी मेरे पास समय नहीं है। मुझे अपनी वाटिका बनानी है। राजा भी उनकी मदद करने में जुट गए। इतने में एक घायल आदमी भागता-भागता आया और गिरकर बेहोश हो गया। महात्मा जी ने उसके घाव पर औषधि लगाई। राजा भी उसकी सेवा में लग गए। जब वह आदमी होश में आया तो राजा को देखकर चौंक उठा। वह राजा से क्षमा मांगने लगा। जब राजा ने इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि वह राजा को मारने के इरादे से निकला था, लेकिन सैनिकों ने उसके मंसूबों को भांप लिया और उस पर हमला कर दिया। वह किसी तरह जान बचाकर भागता हुआ इधर पहुंचा है। महात्मा जी के कहने पर राजा ने उसे क्षमा कर दिया। लेकिन तब राजा ने महात्मा से प्रश्न किया, मेरे तीन प्रश्न हैं। सबसे उत्तम समय कौन-सा है, सबसे बढ़िया काम कौन सा है और सबसे अच्छा व्यक्ति कौन है। महात्मा बोले, हे राजन, इन तीनों प्रश्नों का उत्तर तो तुमने पा लिया है। फिर भी सुनो। सबसे उत्तम समय है वर्तमान। आज तुमने वर्तमान समय का सदुपयोग करते हुए मेरे काम में हाथ बंटाया और वापस जान जाने को टाला जिससे तुम बच गए। अन्यथा वह व्यक्ति बाहर तुम्हारी जान ले सकता था। और जो सामने आ जाए, वही सबसे बढ़िया काम है। आज तुम्हारे सामने बगीचे का कार्य आया और तुम उसमें लग गए। वर्तमान को संवार कर उसका सदुपयोग किया। इसी कर्म ने तुम्हें दुर्घटना से बचाया। और बढ़िया व्यक्ति वह है, जो प्रत्यक्ष हो। उस आदमी के लिए अपने दिल में सद्भाव लाकर तुमने उसकी सेवा की, इससे उसका हृदय परिवर्तित हो गया और तुम्हारे प्रति उसका वैर भाव धुल गया। इस प्रकार तुम्हारे सामने आया व्यक्ति, शास्त्रानुकूल कार्य व वर्तमान समय उत्तम हैं। जीवन के इस रहस्य को जानकर राजा महात्मा के सामने नतमस्तक हो गए।

१०७६) संकल्प के साथ समर्पण - लॉरेंस क्लिफ्टन जोन्स एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। आयोवा यूनिवर्सिटी से १९०७ में स्नातक की परीक्षा पास करते ही उन्हें एक बड़े व्यवसाय में पार्टनरशिप का प्रस्ताव मिला। लेकिन उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। वह संगीत में भी निपुण थे। इसलिए उनके पास संगीत के कार्यक्रमों से संबंधित कई प्रस्ताव भी आए। उन्होंने उन सभी को अस्वीकार कर दिया।

बुकर टी वॉशिंगटन की पुस्तक पढ़ने के बाद उन्होंने यह संकल्प लिया कि वह अपने जीवन को अपनी प्रजाति के निर्धन, निरक्षर लोगों को शिक्षित करने के लिए समर्पित कर देंगे। वह अश्वेत थे। वह अश्वेत शिक्षक और उपदेशक बन

गए। उन्हीं दिनों एक दुर्घटना हुई। प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में मध्य मिसिसिपी में यह अफवाह फैली कि जर्मन लोग अश्वेतों को विद्रोह के लिए प्रेरित कर रहे हैं। लॉरेंस पर भी अपने समूह को भड़काने और विद्रोह करने का आरोप लगाया गया। श्वेत लोगों ने उन्हें अपना शत्रु समझा और रस्सियों से बांधकर घसीटते हुए जलती हुई लकड़ियों के ढेर पर उन्हें खड़ा कर दिया। तभी एक व्यक्ति ने बोला, इससे पहले कि हम उसे जलाए, उसकी उकसाने वाली चर्चा एक बार फिर सुन लेनी चाहिए। लॉरेंस मृत्यु को करीब देखकर भी विचलित नहीं हुए। आखिर उन्हें निर्दोष पाकर मुक्त कर दिया गया।

इस घटना के कुछ समय बाद एक मौके पर किसी ने उनसे पूछा कि जिन लोगों ने उन्हें घसीट कर मौत के मुंह में धकेला था क्या उन्हें उनसे नफरत है? इस पर वह बोले, मेरे पास नफरत करने के लिए समय नहीं है। कोई भी व्यक्ति मुझे इतना नीचे नहीं गिरा सकता कि मैं उसे नफरत करने लगूं। लॉरेंस ने पाइनी वुडस कंट्री स्कूल की स्थापना भी की थी। स्वाभाविक रूप से उनके इस नजरिए की वजह से पाइनी वुड्स कंट्री स्कूल को लोगों ने उदारता से दान दिया। आज पाइनी वुड्स कंट्री स्कूल पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। प्रत्येक व्यक्ति को लॉरेंस जोन्स की महानता के बारे में बताते हुए गर्व महसूस होता है।

१०७७) असली गरीब - फकीर अपनी कुटिया से बाहर आए। वहां उनके शिष्य इकट्ठे हुए थे। आज फकीर कोई खास घोषणा करनेवाले थे, बाहर आकर फकीर ने कहा, मेरे पास थोड़ा सा पैसा है। लेकिन मैं उसे सबसे गरीब को देना चाहता हूं। अगले दिन गांव के तमाम गरीबों को इकट्ठा किया गया। फकीर ने एक-एक को देखा और उन्हें गरीब मानने से ही मना कर दिया। शाम को हताश होकर बोले कि अभी असली गरीब नहीं आया है।

दूसरे दिन दोपहर को उस मुल्क का बादशाह उधर से गुजरा। फकीर तेजी से अपनी कुटिया से निकल कर आए और उन्होंने अपनी पैसे की थैली उसके रथ में फेंक दी। बादशाह को भी खबर थी फकीर की अंतिम इच्छा की। वह थैली देखते ही हैरत में आ गए। कहने लगे, पागल हो गए हो क्या? मेरे पास बेपनाह दौलत है। तुम दुनिया के सबसे बड़े अमीर के सामने ये थैली फेंक रहे हो?

हँसते हुए फकीर बोले- बादशाह, जिनके पास पैसा कम है उनकी जरूरतें भी कम है। जरूरतें ही नहीं हैं, तो फिर गरीबी कैसी? अब तुम्हारी जरूरतें भी बहुत ज्यादा हैं। इसीलिए तुम्हारी गरीबी भी बड़ी है। दरअसल, गरीब वह नहीं है जिसके पास पैसा नहीं है। गरीब वह है जिसकी जरूरतें ही खत्म नहीं होतीं। बादशाह से कोई जवाब देते नहीं बना। वह रथ से उतरकर फकीर के पैरों में गिर पड़ा।

१०७८) पगडंडी - चौड़े रास्ते ने पास चलती पगडंडी से कहा- अरी पगडंडी, मेरे रहते मुझे तुम्हारा अस्तित्व अनावश्यक-सा जान पड़ता है। व्यर्थ ही तुम मेरे आगे-पीछे, जाल-सा बिछाए चलती हो। पगडंडी ने भोलेपन से कहा, नहीं जानती, तुम्हारे रहते लोग मुझ पर क्यों चलते हैं। एक के बाद एक दूसरा चला। और फिर तीसरा, इस तरह मेरा जन्म ही अनायास और अकारण हुआ है। रास्ते ने दर्प के साथ कहा, मुझे तो लोगों ने बड़े यत्न से बनाया है, मैं अनेक शहरों गांवों को जोड़ता चला जाता हूं। पगडंडी आश्चर्य से सुन रही थी। सच? उसने कहा, मैं तो बहुत छोटी हूं। तभी एक विशाल वाहन, घरघराकर रास्ते पर रुक गया। सामने पड़ी छोटी पुलिया के एक तरफ बोर्ड लगा था, बड़े

वाहन सावधान। पुलिया कमजोर है। वाहन, एक भरी हुई यात्री-गाड़ी थी, जो पुलिया पर से नहीं जा सकती थी। पूरी गाड़ी खाली करवाई गई। लोग पगडंडी पर चल पड़े। पगडंडी, पुलिया वाले सूखे नाले से जाकर, फिर उसी रास्ते से मिलती थी। उस पार, फिर यात्रियों को बैठाकर गाड़ी चल दी। रास्ते ने एक गहरा निश्वास छोड़ा। री, पगडंडी। आज मैं समझा छोटी से छोटी वस्तु, वक्त आने पर मूल्यवान बन जाती है।

१०७९) बालक निकोलस की खुद्दारी - रूस में एक होनहार बालक निकोलस था। वह पढ़ना चाहता था। परंतु उसके माता-पिता निर्धन थे। वे उसे चाहते हुए भी नहीं पढ़ा सकते थे। वह दूसरे बच्चों को स्कूल जाते देखता तो उसका मन भी करता। निकोलस की मित्रता एक धनी परिवार के बच्चे से थी। वह बच्चा अपने निर्धन मित्र की इस प्रबल इच्छा को देखते हुए अपनी किताबें पढ़ने के लिए दे देता था। एक दिन उस बच्चे की किताबें उस निर्धन बालक निकोलस के घर पर थी। रात में तेज बारिश हुई और किताबें भीग गईं। वह किताबें भीग जाने से बहुत दुखी हुआ। अगले दिन किताबें भीगने की बात बताई, तो उसके मित्र ने कहा, वे किताबें तुम ही रख लो। मैं तो दूसरी खरीद लूंगा, तुम चिंता न करो।

निकोलस बोला कि मैं ये किताबें नहीं रख सकता बिना कीमत चुकाए। मैं किसी से कुछ भी नहीं लेता यदि तुम चाहते हो कि मैं किताबें रख लूं तो इसके बदले तुम्हें कुछ अवश्य लेना पड़ेगा मित्र ने कहा तुम क्या दे सकते हो। वह बोला मैं तुम्हारे यहां काम करके इनकी कीमत चुकाना चाहता हूं। उसका मित्र इस बात पर सहर्ष सहमत हो गया। वह अपने मित्र को किसी भी तरह से पुस्तकें देकर उसकी सहायता करना चाहता था।

१०८०) प्रोफेसर, छात्र और पेड़ - प्रोफेसर कार्णिक वनस्पति विज्ञान के प्राध्यापक थे। एक बार उनकी क्लास में कुछ कामचोर विद्यार्थी आ गए। प्रोफेसर ने आते ही सभी विद्यार्थियों को कॉलेज कैंपस में स्थित एक पेड़ के बारे में सारी जानकारी इकट्ठा करके लाने को कहा। तीन कामचोर विद्यार्थियों ने सोचा, हमारे दोस्त तो जा ही रहे हैं, हम इसमें अपना समय क्यों बर्बाद करें? दोस्तों से पूछ लेंगे। अगले दिन जब वे क्लास पहुंचे, तो प्रोफेसर ने पूछा, आप सब कल पेड़ देखने तो गए ही होंगे। तो आप में से कितने लोग मानते हैं कि वह पेड़ २०० वर्ष से अधिक पुराना होगा? उन तीन छात्रों को लगा, इतना विशाल पेड़ है, कम से कम तीन सौ साल पुराना तो होगा ही। तीनों ने हाथ खड़े कर दिए। प्रोफेसर ने उन्हें एक कहानी सुनाई, एक बार एक राजा ने यह पता लगाने का फैसला किया कि उसके राज्य में कितने लोग मेहनत करते हैं और कितने लोग सिर्फ बातों से ही काम चलाते हैं। राजा ने एक सड़क के बीचोबीच एक बड़ा सा पत्थर रखवा दिया और खुद पीछे कहीं जाकर छिप गया। पहले वहां से कुछ जमींदार गुजरे। उन्होंने पत्थर को देखा और बगल से निकल गए। फिर दरबार के कुछ अधिकारी, मंत्री, सैनिक और ग्रामीणों ने भी पत्थर को नजरंदाज कर दिया। फिर वहां से एक गरीब धोबी गुजरा। उसकी पीठ पर कपड़ों का बोझ था, पर वह रूक गया। उसने कपड़े किनारे रखे और पत्थर को धकेलने लगा। काफी कोशियों के बाद उसने पत्थर को मार्ग से हटा दिया। पत्थर के नीचे उसे एक पोटली मिली, जिसमें सोने की गिन्नियां थीं। धोबी बहुत खुश हुआ। यानी जो मेहनत करता है, उसे उसका फल जरूर मिलता है। कल जब बाकी सारे विद्यार्थी उस पेड़ के पास पहुंचे, तो उन्हें यह पता चल गया था कि वह पेड़ दस साल से अधिक पुराना नहीं है। आप तीनों का झूठ पकड़ा गया। मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता, अत: परिश्रम से पीछे नहीं हटना चाहिए।

१०८१) साधना बिना कुछ भी नहीं - एक नगर से कुछ ही दूरी पर एक आश्रम बना हुआ था। एक महात्मा और उनके कुछ शिष्य वहां रहते थे। महात्मा सभी शिष्यों को हमेशा यही समझाते कि बिना तप के कुछ नहीं मिलेगा। एक दिन कुछ शिष्यों ने कहा, हे देव। आखिर तप से होगा क्या, कृपा करके आप हमें सिद्ध करके बताइए। महात्मा ने कहा ठीक है, आज से आप लोग सात दिन तक बिल्कुल निराहार रहेंगे, केवल जल ग्रहण करेंगे। सात दिन बाद आपको पता चल जाएगा कि साधना क्यों जरूरी है। सात दिन बाद सबकी हालत मरे हुए बैल की तरह हो गई। महात्मा ने कहा, जाओ नगर से भोजन लेकर आओ, तो सभी ने कहा, देव हमारे शरीर में इतना सामर्थ्य नहीं है कि हम वहां तक जाकर आ सकें। महात्मा ने कहा, अब पता चला कि साधना क्यों जरूरी है। वत्स, शक्तिहीन को यहां कोई नहीं पूछता है। इस सत्य को स्वीकार करो कि शक्ति है तभी मूल्य है, शक्ति नहीं होगी, तो हर कोई कुचल कर चला जाएगा। जैसे तन की समर्थता के लिए रोटी जरूरी है, वैसे ही मन के सामर्थ्य के लिए साधना बहुत जरूरी है और जो साधना करेगा, वही आगे की यात्रा आनंदपूर्ण कर पाएगा। तो उठो और साधो इस जीवन को, क्योंकि बिना साधना के कुछ भी नहीं है। शिष्यों को अपने गुरु की बात समझ आ गई और उन्होंने तप को महत्व देना शुरू कर दिया।

१०८२) त्याग में सुख - भगवान बुद्ध के पास सम्राट श्रोणिक आए और पूछा, भंते, हमारे राजकुमार, जिन्हें बहुत अच्छा भोजन मिलता है, जिन्हें हर तरह की सुविधाएं हैं, जो बड़े आवास में रहते हैं, जिनके साथ नौकर-चाकरों की पूरी फौज है, फिर भी वे प्रसन्न नहीं रहते। और आपके ये भिक्षु जो पदयात्रा करते हैं, निरंतर भ्रमण करते हैं, खाने को जैसा मिल जाता है, खा लेते हैं। रहने को जो कुटिया मिल जाए, वहां रह लेते हैं, फिर भी इनके चेहरे पर हमेशा इतनी प्रसन्नता रहती है। इसका कारण क्या है? भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया, प्रसन्नता खोजनी हो तो अकिंचन (जिसके पास कुछ भी न हो) में खोजो। जिसने संकल्प पूर्वक सब कुछ छोड़ दिया, वही प्रसन्न रह सकता है। भिखारी कभी प्रसन्न नहीं होगा, क्योंकि उसने छोड़ा नहीं है। वह तो अभाव में ही जीवन जी रहा है। अभाव का जीवन जीने वाला प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे चिंताएं हर क्षण घेरे रहती हैं। जिसने जानबूझ कर छोड़ा है, वह प्रसन्न रह सकता है। ये दो बातें हैं- एक छोड़ना और एक छूटना। जिसे पदार्थ प्राप्त नहीं है, वह त्यागी नहीं है। त्यागी वह होता है, जो अपने स्वतंत्र मन से त्याग कर दे। वही प्रसन्न रह सकता है। अभावग्रस्त प्रसन्न नहीं रह सकता। साधन, सुविधा संपन्न व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे पैसे की सुरक्षा की चिंता सताती है। वह हमेशा भयभीत रहता है। अभय वही हो सकता है, जिसने स्वेच्छा से त्याग किया है। श्रोणिक को अपने प्रश्न का समाधान मिल गया।

१०८३) चुनौतियां विकास के लिए सीढ़ियां - मनोज अपनी जिंदगी से हार चुका था। इसकी वजह यह थी कि वह जो भी काम करता, उसमें विफलता के अलावा उसके हाथ कुछ नहीं आता। इस कारण वह हमेशा उदास रहता था। उसका एक दोस्त था, जिसका नाम था किंजल। किंजल अपनी जिंदगी में बहुत सफल था। वह चाहे किसी तरह का प्रयोग भी करें, उसमें वह सफल हो जाता था। इस कारण सभी लोग किंजल की मिसाल दिया करते थे। एक दिन मनोज किंजल से मिला और उससे पूछा, दोस्त तुम जिस भी काम में हाथ डालते हो, उसमें सफल हो जाते हो। आखिर तुम्हारी सफलता का मंत्र क्या है?

किंजल बोला, मेरे दोस्त, पहली बात तो यह कि सफलता का कोई मंत्र नहीं होता। हम अक्सर अपने आपको इतना बड़ा समझने लगते हैं कि अपनी गलतियां हमें दिखाई देना बंद हो जाती हैं। जबकि मैं हमेशा अपने आपको एक माध्यम भर ही समझता हूं। वह माध्यम जो अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए काम करना चाहता है। इस तरह सोच पाने के कारण ही मैं गलतियों को गौर से देख पाता हूं और उन्हें सुधार पाता हूं, क्योंकि मेरा कोई अहं नहीं रह जाता। मैं सफल हुआ, तो भी सफलता मेरी नहीं, उनकी होती है, जिनके लिए मैंने काम किया। मुझे सफल होने की कोई लालसा या जल्दबाजी नहीं होती। इसके विपरीत मेरे अंदर यह विश्वास रहता है कि अगर मैं अभी सफल नहीं हो पा रहा, तो जरूर कोई ऐसा पहलू है, जो मुझसे छूट रहा है या मेरी पकड़ में नहीं आ रहा। अगर मैं उस पर भी थोड़ा ध्यान दूं, तो शायद सफलता मुझे मिल सके। इस तरह सोचने से मैं अपने आपको सुधार के कई मौके दे पाता हूं। कई बार इससे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मुझे यह लगता है कि अगर कोई काम कोई दूसरा आदमी कर सकता है, तो भला मैं क्यों नहीं कर सकता। मेरे अंदर वे सारी शक्तियां मेरी ही जिंदगी में दिखती हैं मुझे। बस मेरा चुनौतियों को देखने का ढंग थोड़ा अलग है। मुझे यह लगता है कि चुनौतियां अपने विकास के लिए सीढ़ियां होती हैं। इसलिए मैं जानबूझकर चुनौतियों को आमंत्रित करता हूं। हर चुनौती से मुझे अपने बारे में कुछ नया सीखने को मिलता है। मेरे दोस्त, सफलता को मंजिल की तरह नहीं, रास्ते की तरह देखो। फिर सारी चुनौतियां आसान हो जाएंगी। सफल होने के लिए पहले यह समझना जरूरी है कि सफलता क्या है।

१०८४) साहूकार अमीर बन गया - एक गांव में एक साहूकार था, उसकी बेटी प्रतिदिन पीपल पर जल चढ़ाने जाती थी, जिस पीपल के पेड़ पर वह जल चढ़ाती थी, उस पेड़ पर लक्ष्मी जी का वास था। एक दिन लक्ष्मी जी ने साहूकार की बेटी से कहा, मैं तुम्हारी मित्र बनना चाहती हूं। लड़की ने कहा कि मैं अपने पिता से पूछकर आऊंगी। यह बात उसने अपने पिता को बताई, तो पिता ने हां कर दी। फिर दोनों अच्छे मित्रों की तरह रहने लगे। एक दिन लक्ष्मी जी साहूकार की बेटी को अपने घर ले गई। उसकी खूब खातिर की। जब साहूकार की बेटी लौटने लगी तो, लक्ष्मी जी ने प्रश्न किया कि अब तुम मुझे कब अपने घर बुलाओगी। साहूकार की बेटी ने लक्ष्मीजी को अपने घर बुला तो लिया, परंतु घर की आर्थिक स्थिति देखकर वह उदास हो गई। उसे डर लग रहा था कि क्या वह लक्ष्मीजी का अच्छे से स्वागत कर पाएगी। साहूकार समझ गया। उसने अपनी बेटी को समझाया, कि तू फौरन मिट्टी से चौका लगाकर साफ-सफाई कर, चार बत्ती के मुख वाला दीया जला और लक्ष्मी जी का नाम लेकर बैठ जा। उसी समय चील किसी रानी का नौलखा हार लेकर उसके पास डाल गया। साहूकार की बेटी ने उस हार को बेचकर भोजन की तैयारी की। थोड़ी देर में श्री गणेश के साथ लक्ष्मीजी उसके घर आ गई। साहूकार की बेटी की खातिर से लक्ष्मीजी बहुत प्रसन्न हुई और साहूकार बहुत अमीर बन गया।

१०८५) हीरे से मूल्यवान - अरब का एक अमीर शेख शादी की बहुत इज्जत करता था। उन्हें इस पर आश्चर्य होता था कि ऐश्वर्य की कोई वस्तु अपने पास न होने के बावजूद शेख शादी इतने खुश और संतुष्ट कैसे रहते हैं। एक दिन वह एक काफी कीमती हीरा लेकर शेख शादी के पास पहुंचा, उनका अभिवादन किया, फिर विनम्रता से कहने लगा, आपकी कविताओं से मैं बहुत प्रभावित हूं, लेकिन मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि आपने अपना पूरा जीवन कविताएं

लिखने में ही गंवा दिया। आपने अपने पूरे जीवन में इस हीरे के बराबर भी धन नहीं कमाया। क्या इसका आपको कोई अफसोस नहीं होता? शेख शादी ने वह हीरा उठाया, उसे उलटा-पलटा, फिर अमीर को वापस करते हुए कहा, आप गलत बात कह रहे हैं। सच्चाई यह है कि आपके इस हीरे की तुलना मेरी शायरी के एक शब्द से भी नहीं की जा सकती। मेरी शायरी के शब्द तो इंसान को प्रेम, समता तथा भाईचारे का संदेश देते हैं। जबकि हीरा दो इंसानों के बीच खून-खराबे का जरिया बनता है। मेरी शायरी सुनकर मस्त हुआ इंसान रात को गहरी नींद में सोता है। दूसरी ओर, जिसके पास हीरा या इसी तरह की कोई कीमती संपत्ति है, वह चोरी तथा लूट के भय से हमेशा डरा-डरा रहता है। उसे रात को नींद नहीं आती। अमीर को अब समझ में आया कि बेहद सामान्य जीवन बिताते हुए भी शेख शादी इतने खुश और संतुष्ट क्यों रहते हैं।

१०८६) दो भाई, पिता और इंग्लैंड - एक परिवार में दो भाई थे। बड़ा भाई पढ़ने-लिखने में बहुत तेज था और अव्वल आता था। वहीं छोटा भाई पढ़ने लिखने में थोड़ा पीछे था, लेकिन सामाजिक ज्ञान उसे बड़े से ज्यादा था। बड़ा धीर-गंभीर था, वहीं छोटा थोड़ा नटखट और चतुर था। दोनों भाइयों को स्कूल की तरफ से पढ़ने इंग्लैंड भेजा गया। बड़ा भाई इंग्लैंड की सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी में दाखिला लेकर पढ़ाई करने लगा, वहीं छोटे भाई ने भी एक नामी कॉलेज में दाखिला लिया और नए दोस्त बनाने लगा। बड़ा भाई यूनिवर्सिटी में पढ़ता और फिर अपने कमरे में बंद होकर अभ्यास करता रहता। वहीं छोटा भाई क्लास में थोड़ा बहुत पढ़ता और बाकी पूरा समय इंग्लैंड घूमने तथा वहां के लोगों को समझने में लगा देता। दो साल बाद दोनों भाई घर वापस लौटे, तो उने पिता ने देखा कि बड़ा बेटा तो जैसा गया था, वैसा ही वापस आया है, लेकिन छोटे बेटे में काफी बदलाव देखने को मिला। उसके बोलने का ढंग, उसका आचरण, उसका नजरिया सब बदल गया है। पिता जी ने दोनों बेटों को साथ बिठाकर पूछा, इंग्लैंड में आप दोनों ने क्या देखा?

छोटे बेटे ने सभी जगहों के नाम गिनाने शुरू कर दिए। वहीं बड़ा बेटा चुपचाप बैठा था। पिता ने छोटे को चुप कराकर बड़े बेटे से पूछा। बड़ा बेटा बोला, पिताजी, मैं पढ़ने में इतना मसरूफ था कि कहीं घूमने का मौका ही नहीं मिला। तब पिताजी बोले, बेटा, जैसे तुम्हारे शरीर का हर एक अंग महत्वपूर्ण है। जैसे तुम चाहकर भी अपने सारे काम सिर्फ एक हाथ से नहीं कर सकते, वैसे ही तुम चाहकर भी अपनी जिंदगी सिर्फ एक ही पहलू के भरोसे नहीं बिता सकते। पढ़ाई जरूरी है। जिंदगी के सभी आयामों को बराबरी से जीना चाहिए। तभी संपूर्ण विकास होगा। जिंदगी का हरेक अनुभव हमारे व्यक्तित्व के विकास के लिए जरूरी है।

१०८७) रब्बी को मिला खजाना - पुराने जमाने की बात है। पोलैंड के एक शहर क्राकाऊ में एक रब्बी यहूदी धर्मोपदेशक रहा करता था। एक रात उसने एक अनोखा सपना देखा। सपने में उसे एक आवाज सुनाई दी। कोई उससे कह रहा था कि वह शहर के बीचों-बीच स्थित पुल पर जाए। वहां उसे खजाना मिलेगा। किंतु रब्बी ने सपने को नजरअंदाज कर दिया। दूसरे दिन उसे फिर वही सपना आया। रब्बी ने इस बार भी ध्यान नहीं दिया लेकिन वह सपना उसे हर रात आने लगा। कई रातों तक वही सपना बार-बार आने पर रब्बी ने सोचा कि क्यों न उस पुल पर जाकर देखा जाए।

अगले दिन वह सपने वाले पुल पर पहुंचा। उसने देखा कि पुल के दोनों किनारों पर दो संतरी खड़े हैं। रब्बी कई बार पुल के इस तरफ से उस तरफ आया-गया लेकिन उसे खजाने का कोई सुराग नहीं मिला। उसने महसूस किया कि सपने की

बात में आकर वह मूर्ख बन गया। वह अपने घर लौट आया। मगर उस रात फिर उसने वही सपना देखा। सुबह उठकर वह फिर पुल की ओर चल पड़ा। इस बार वह नदी के एक किनारे जाकर बैठ गया। कुछ देर बाद वह नदी के दूसरे किनारे जाकर बैठ गया। तब भी उसे कोई सुराग नहीं मिला। अब सूरज सिर पर चढ़ आया था। उसने घर जाना ही ठीक समझा।

अगले दिन वह फिर पुल के पास आया क्योंकि पिछली रात फिर उसी सपने ने उसे याद दिलाया कि पुल पर जाने के बाद उसे खजाना मिलेगा। इस बार वह पुल के बीच पहुंचा औरखड़े होकर पानी में देखने लगा। यह देखकर एक संतरी उसके पास आया, मैंने आपको कल यहां देखा था और उसके पहले भी मैं आपको यहां देख चुका हूं। क्या आप यहां कुछ ढूंढ रहे हैं? क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूं।

रब्बी ने राहत की सांस ली। उसे लगा कि अब वह किसी से अपने सपने की बात कह सकता है। उसने संतरी से सारी घटना कह सुनाई। रब्बी की बात खत्म होते ही संतरी जोर-जोर से हंसने लगा, कितने भोले हैं आप। अरे भला सपनों की बात भी कभी सच होती हैं? पिछले कई दिनों से मुझे भी एक सपना आ रहा है। सपने में मैं देखता हूं कि कोई मुझसे कह रहा है कि इसी शहर में जेकेल नाम का एक रब्बी रहता है। उसके बगीचे में खजाना छिपा हुआ है लेकिन मैंने उस सपने पर कभी ध्यान नहीं दिया।

मेरी सलाह है कि आप अपने घर जाएं और आराम करें। यह सुनकर रब्बी हैरत में पड़ गया क्योंकि उसी का नाम जेकेल था। उसने संतरी से कुछ नहीं कहा और सरपट दौड़ा अपने घर की ओर। घर पहुंचकर उसने अपने बगीचे कही खुदाई की तो उसे लोहे की एक बड़ी-सी पेटी मिली। उसने पेटी खोलकर देखा तो देखता क्या है कि यह तो वही खजाना है जो उसके सपने में पिछले कई दिनों से बार-बार आ रहा था।

१०८८) अहंकार से मुक्ति - सुगंधपुर के राजा वज्रबाहु ने प्रजा के हित में जगह-जगह तालाब खुदवाएं और धर्मशालाएं व मंदिर बनवाए। पूरे देश में उनकी राज्य में प्रजा वत्सल राजा के रूप में फैल चुकी थी। एक बार उनके राज्य में एक संत पधारे और घने जंगल में एक वृक्ष के नीचे उन्होंने अपना डेरा जमा लिया। राजा को पता चला, तो उन्होंने अपने मंत्री और बेटे को संत के पास भेजा। राजकुमार ने जाकर संत से प्रार्थना की। महात्मन, महाराज ने आपको सादर राजमहल में आमंत्रित किया है। आप अपने चरणों से हमारे महल को पवित्र करने की कृपा करें। संत ने उत्तर दिया, राजकुमार, संतों को एकांत में रहकर ही साधना करनी चाहिए। आप राजा को हमारा आशीर्वाद पहुंचा दें। संत की विरक्ति को जानकर राजा बेहद प्रभावित हुए। अगली सुबह वह बन में पहुंचे। संत को प्रणाम कर उन्होंने कहा, महात्मन, मैंने यथाशक्ति प्रजाननों की सेवा की है। उन्हें तरह-तरह की सुविधाएं मुहैया कराई हैं। फिर भी मेरा मन अशांत रहता है। उसका क्या कारण है? संत ने जवाब दिया, राजन्, आपने तालाब-मंदिर आदि बनवाए हैं, लेकिन आपके अनुचरों ने उन पर आपके नाम पट्टा लगवाकर आपके पुण्य को क्षीण कर दिया है। सेवा कार्य में अहंकार का प्रदर्शन ही मन की अशांति का कारण है। उसी दिन राजा ने अपने नामपट्ट उखड़वाने के आदेश दिए।

१०८९) मन का काम - फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की का पारिवारिक जीवन बहुत दुखद था। जब वे मात्र तेरह साल के थे तो उनकी मां की मृत्यु हो गई। अठारह साल की आयु में उनके नौकरों ने उनके पिता की हत्या कर दी। फिर बाद

में दोस्तोयेव्स्की को मिरगी के दौरे भी पड़ने लगे। एक दिन उन्होंने एक दौरे में अपनी दायीं आंख फोड़ ली। उनके सामने न परिवार था और न ही कोई प्रेरणा। कुछ समय बाद उन्हें मिलिट्री इंजीनियर की नौकरी मिली, लेकिन उन्हें बार-बार लगता कि उनकी मंजिल कुछ और ही है। उन्हें लिखने का बड़ा शौक था। नौकरी के कारण उन्हें अपना यह शौक पूरा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता था। उन्होंने नौकरी छोड़कर लिखने का मन बनाया। उनका पहला उपन्यास पुअर फोक बहुत लोकप्रिय हुआ। लेकिन कुछ समय बाद ही उन पर क्रांतिकारी षडयंत्र रचने का आरोप लगाकर उन्हें मृत्युदंड की सजा सुनाई गई। मृत्युदंड देने से कुछ मिनट पहले उनकी सजा को बदल दिया गया और उन्हें वहां से साइबेरिया जाने की सजा दी गई। दस साल बाद लेनिनग्राद लौटकर दोस्तोयेव्स्की ने फिर से लिखना शुरू किया। खराब स्वास्थ्य, गरीबी और कष्टों से भरे जीवन के बाद भी उन्होंने अमर ग्रंथ लिखे। जेल के अपने जीवन में उन्होंने कैदियों को बहुत करीब से देखा था, जिसका अमिट वर्णन उनके अमर ग्रंथ क्राइम एंड पनिशमेंट में मिलता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास के जनक दोस्तोयेव्स्की अपने पाठकों के हृदय को छूने में सफल इसलिए रहे क्योंकि उन्होंने जिन अधिकांश कष्टों को अपने जीवन में भोगा था, उन्हीं को लेखन में उतारा था। उन्होंने अपने लेखन से पूरे विश्व के समक्ष इस बात को कष्ट और संघर्ष से लड़कर न सिर्फ अपने लिए एक खास जगह बना सकता है बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत भी बन सकता है।

१०९०) हर देश में ऐसा मंत्री हो - चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में चीन से एक दूत आया। वह चाणक्य के साथ राजनीति के दर्शन पर विचार विमर्श करना चाहता था। चीनी राजदूत राजशाही ठाठबाठ वाला अक्खड़ किस्म का था। उसने चाणक्य से बातचीत के लिए समय मांगा। चाणक्य ने उसे अपने घर रात को आने का निमंत्रण दिया। उचित समय पर चीनी राजदूत चाणक्य के घर पहुंचा। उसने देखा कि चाणक्य एक छोटे से दीपक के सामने बैठकर कुछ लिख रहे हैं। चीनी राजदूत को आया देख चाणक्य खड़े हुए और आदर सत्कार के साथ उनका स्वागत किया और इससे पहले कि बातचीत प्रारंभ हो, चाणक्य ने वह छोटा सा दीपक बुझा दिया और एक बड़ा दीपक जलाया। बातचीत समाप्त होने के बाद चाणक्य ने बड़े दीपक को बुझाया और फिर से छोटे दीपक को जला लिया। चीनी राजदूत को चाणक्य का यह कार्य बिलकुल ही समझ में नहीं आया। चलते-चलते उसने पूछ ही लिया कि आखिर उन्होंने ऐसा क्यों किया। चाणक्य ने कहा, जब आप मेरे घर पर आए तो उस वक्त मैं अपना स्वयं का निजी कार्य कर रहा था, तो उस वक्त मैं अपना स्वयं का दीपक प्रयोग में ले रहा था। जब हमने राजकाज की बातें प्रारंभ की तब मैं राजकीय कार्य कर रहा था तो मैंने राज्य का दीपक जलाया। जैसे ही हमारी राजकीय बातचीत समाप्त हुई, मैंने फिर से स्वयं का दीपक जला लिया। चाणक्य ने आगे कहा, मैं कभी राज्य का मंत्री होता हूं, तो कभी राज्य का आम आदमी। मुझे दोनों के बीच अंतर मालूम है।

१०९१) नेहरू का उपहार - पंडित जवाहरलाल नेहरू हिमाचल प्रदेश के सुदूर इलाके के दौरे पर निकलने वाले थे। उनके जनसंपर्क अधिकार मेजर शर्मा उनकी यात्रा की तैयारियां देख रहे थे। वे पंडितजी का स्वभाव जानते थे। भारत में कहीं भी पं. नेहरू जाते, तो जनता को उपहार देना नहीं भूलते थे। मेजर शर्मा ने अपने वरिष्ठ अधिकारी के सामने प्रस्ताव रखा कि सेब व टॉफियों की कुछ पेटियां साथ में रख ली जाएं, पर अधिकारी को यह प्रस्ताव बेकार लगा। उसने कहा-

इसकी क्या जरूरत है? उन्हें वहाँ कौन से ग्रामीण लोग मिलेंगे, जो उपहार की आवश्यकता पड़ेगी? मेजर शर्मा निराश हुए। पर वे क्या कर सकते थे। लेकिन उनका मन नहीं ही माना और उन्होंने सेब व टॉफियों की दो पेटियां हवाई जहाज में बिना अपने अधिकारी को बताए चुपके से चढ़ा दी। सुबह चार बजे हवाई जहाज रवाना हुआ और सूर्योदय होते-होते पूरी टीम हिमाचल पहुंच गई। वहां के सुंदर प्राकृतिक दृश्यों ने पंडितजी का मन मोह लिया। पंडितजी के उतरते ही स्थानीय लोगों की भीड़ ने उन्हें घेर लिया, जिसमें कुछ नन्हे बच्चे भी थे। बच्चे तो नेहरूजी की कमजोरी थे। उन्हें देखते ही वे कह उठे- क्या इन बच्चों को देने के लिए हमारे पास कुछ है? तमाम अधिकारी एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। तभी मेजर शर्मा ने सेब और टॉफियों की पेटियां नेहरूजी के सामने रख दी। नेहरू जी की प्रसन्नता की सीमा न रही। वे दोनों हाथों से बच्चों को टॉफियां और सेब लुटाने लगे। बच्चे भी चाचा नेहरू के हाथों यह उपहार पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए। पंडितजी ने मेजर शर्मा की सूझबूझ की सराहना की। दूसरे अधिकारियों ने भी मेजर शर्मा से सीख ली।

१०९२) चापलूस को मिला सबक - इंग्लैंड के राजा कैन्यूट के दरबार में ऐसे लोगों का जमघट लगने लगा था जो राजा की प्रशंसा के पुल बांध कर ओहदे व धन पाने के आकांक्षी थे। एक दिन एक चापलूस एवं खुशामदी ने कहा, राजन। आपकी कीर्ति पूरे संसार में फैल चुकी है। आप तो धरती पर साक्षात ईश्वर हैं। आपका आदेश समुद्र भी नहीं टाल सकता। राजा की इस तरह की चापलूसी भरी एवं झूठी प्रशंसा की खबरें उनके एक खास गुरुजी तक पहुंची। इससे गुरुजी चिंतित हुए। गुरुजी ने राजा को सावधानी करते हुए कहा, इन खुशामदियों से बच कर रहो। तुम्हें ईश्वर बता कर ये तुम्हारा अहंकार बढ़ा रहे हैं। ये तुम्हारे एवं राज्य के लिए गंभीर खतरा बन जाएंगे। राजा कैन्यूट ने विषय की गंभीरता को समझते हुए अगले ही दिन ईश्वर बताने वाले उस दरबारी को बुलाया। कैन्यूट उसे समुद्र तट पर घुमाने के लिए अपने साथ ले गए। राजा की मंशा से अनभिज्ञ वह दरबारी अब भी राजा की प्रशंसा के पुल बांध रहा था, लेकिन राजा ने उसकी बातों को अनदेखी करते हुए कहा, मैं ईश्वर होने के नाते तुम्हें आदेश देता हूं कि समुद्र की लहरों में कूद पड़ो। यदि तुम डूबने लगोगे तो मैं समुद्र को आदेश दूंगा। उसकी लहरें तुम्हें समुद्र तट पर छोड़ देंगी।

राजा के ये शब्द सुनते ही मृत्यु के भय से वह खुशामदी दरबारी पसीने से तर हो गया। राजा ने कहा, तुम चापलूसों की चाल मैं अच्छी तरह जानता हूं। मुझे ईश्वर बता कर व्यक्तिगत लाभ उठाना चाहते हो? आज से मेरे पास आने का दुस्साहस न करना वरना सारा जीवन जेल में गुजारना पड़ेगा। इस घटना की खबर समूचे राज्य में फैल गई। परिणाम यह हुआ कि सम्राट कैन्यूट को तो चापलूसों से मुक्ति मिल ही गई, उनके राज्य में चापलूसों एवं खुशामदों द्वारा झूठी प्रशंसा की असामान्य स्थिति भी धीरे-धीरे नियंत्रण में आने लगी।

१०९३) प्रोफेसर, छात्र और कोरा प्रश्नपत्र - एक प्रोफेसर की कहानी, जिन्होंने परीक्षा के बहाने छात्रों को जीवन को देखने का एक नया नजरिया दिया। प्रोफेसर संजय हमेशा छात्रों को कुछ नई सीख दिया करते थे। एक दिन उन्होंने क्लास में घुसते ही कहा, आज मैं आप सब की परीक्षा लूंगा। उन्होंने एक लिफाफे से सभी छात्रों को प्रश्नपत्र देना शुरू किया। फिर वह बोले, अब आप सब शुरू कर सकते हैं। किसी ने भी एक दूसरे की कॉपी में झांका या पूछने की कोशिश की, तो उसके नंबर काट लिए जाएंगे। सभी छात्रों ने प्रश्नपत्र पलटकर देखा और हैरानी से

एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। प्रोफेसर बोले, क्या हुआ? एक छात्र बोला, सर इसमें कोई प्रश्न तो है ही नहीं। बस एक सादा कागज है और बीचोंबीच काला बिंदु। हमें जवाब क्या देना है? प्रोफेसर बोले, इसे देखकर आपके मन में जो भी आए, वह लिख दीजिए। दस मिनट बाद प्रोफेसर ने सभी के उत्तर इकट्ठा किए और एक-एक कर पढ़ने लगे। हर छात्र ने उस काले बिंदु की व्याख्या लिखी थी। किसी ने लिखा था, वह दो बिंदुओं को मिलाकर बनाया गया है, तो किसी ने लिखा था- वह पहले चौकोर था, बाद में उसे गोल किया गया है। प्रोफेसर बोले, इस परीक्षा का अंकों से कोई वास्ता नहीं। पर आप सबने अपना जवाब सिर्फ एक काले बिंदु पर दिया है। किसी ने उस खाली सफेद हिस्से के बारे में कुछ नहीं लिखा। सभी छात्रों ने सोचते हुए हां में सिर हिलाया।

प्रोफेसर बोले, कुछ ऐसा ही हम अपनी जिंदगी के साथ भी करते हैं। काले दागों में इतना खो जाते हैं कि जिंदगी के सफेद पन्नों पर नजर ही नहीं जाती। काले दाग यानी हमारी जिंदगी की तकलीफें, बीमारियां या कोई दुख। पर हमारी जिंदगी में कितना कुछ अच्छा है, जिसकी तरफ हमारी नजर ही नहीं जाती। अगर हम गिनें, तो खुशी के कारण दुख के कारण से कई गुना ज्यादा मिलेंगे। प्रोफेसर ने छात्रों को जीवन को देखने का एक नया नजरिया दिया था।

१०९४) चुनमुन चूहा - सफेद चूहा चुनमुन पूरे जंगल में घूमता रहता था। वह हमेशा हर किसी की मदद के लिए तैयार रहता था। वह बहुत ही प्यारा और समझदार था। नंदनवन के सभी चूहे तो उसे प्यार करते ही थे। दूसरे जानवरों को भी उससे लगाव था। इतना ही नहीं, वह आसपास के दूसरे जंगलों में रहनेवाले जानवरों का भी चहेता था। कहीं भी कोई मुसीबत में होता तो सबसे पहले चुनमुन को याद करता। किसी को कोई राय लेनी होती तो वह चुनमुन को बुलाता। किसी के घर में बर्थ डे, मुंडन या शादी होती तो भी सबसे पहला नियंत्रण चुनमुन को ही जाता।

बुद्धिमान होने के साथ ही उसका स्वभाव भी अच्छा था, जिस वजह से सब उसे इतना पसंद करते थे। इतनी खूबियोंवाले और सबके प्यारे चुनमुन में एक कमी थी, वह यह कि वह कभी भी किसी के भी साथ शरारत कर बैठता था। जब उसके दिमाग में शरारत करने की बात आती तो वह उसके बुरे परिणामों के बारे में नहीं सोचता था। ऐसे ही एक दिन गर्मी की एक दोपहर में चुनमुन चूहा मूवी देखकर आ रहा था। गर्मी तेज होने की वजह से जंगल के सारे जानवर अपने अपने घरों में थे। जंगल सुना-सुना सा लग रहा था। तभी चुनमुन की नजर पेड़ के नीचे सोए हुए शेर पर पड़ी और उसी वक्त उसके दिमाग में एक शरारत आ गई। वह यह भी भूल गया कि वह शेर से पंगा लेने जा रहा है। उसने सोए हुए शेर के पेट में जोर से चिकोटी काटी और छुप गया। शेर को पेट पर कुछ हरकत सी महसूस हुई तो उसने लेटे-लेटे ही पेट की तरफ देखा। जब उसे कुछ नहीं दिखाई दिया तो वह फिर सो गया। जब शेर दोबारा सो गया तो चुनमुन चूहा फिर आया और शेर के पेट पर गुदगुदी करके फिर छुप गया। इस बार शेर की नींद कुछ टूट चुकी थी। उसे अपने पेट पर फिर कुछ हलचल सी महसूस हुई तो उसने अपने पेट पर और फिर दायें-बायें देखा, पर उसे फिर भी कुछ नहीं दिखा। थक-हार कर वह फिर सो गया। अब तो चुनमुन बार-बार ऐसा करने लगा और शेर को परेशान करके मजे लेने लगा। बार-बार ऐसा होने पर शेर की नींद पूरी तरह टूट गई। इतना तो वह समझ चुका था कि कोई उसके साथ मजाक कर रहा है। पर कौन? ऐसा कौन है, जो शेर के साथ मजाक करने की हिम्मत कर सकता है? शेर ने सोचा कि अगर मुझे पता चल जाए कि यह गुस्ताखी करनेवाला

कौन है तो उसे पकड़कर कच्चा ही खा जाऊंगा।

शेर सोचने लगा कि शरारत करनेवाले को कैसे पकडूं? थोड़ी देर सोचने के बाद उसके दिमाग में आखिर एक तरकीब आ ही गई। वह झूठमूठ सोने का अभिनय करने लगा। चुनमुन ने सोचा कि शेर फिर सो गया। वह चुपके से निकला और शेर के पेट पर जैसे ही गुदगुदी करना शुरू किया, वैसे ही उसके मुंह से आवाज निकली, अरे बाप रे, मर गया। क्योंकि वह शेर के पंजों में कैद था। वह छटपटाने लगा और बचने के उपाय सोचने लगा। शेर बोला, क्या तुझे मेरे साथ मजाक करने में बिल्कुल भी डर नहीं लगा कि अगर मैंने तुझे पकड़ लिया तो तू जान से जाएगा? और मारना क्या है। तुझे तो मैं यूं ही खा लेता हूं। यह कहकर शेर ने चुनमुन को खाने के लिए अपना बड़ा सा मुंह फैला दिया। यह देखकर चुनमुन को अपनी गलती का एहसास हुआ। वह फटाफट बोला, शेरजी-शेरजी, रुकिए जरा, आई एम सॉरी। मैं अपने कान पकड़ता हूं। आगे से ऐसी गलती नहीं होगी। प्लीज मुझे छोड़ दो। मुझे खाकर तो आपका पेट भी नहीं भरेगा। लेकिन अगर मैं जिन्दा रहा तो शायद मैं आपके किसी काम आ जाऊं। शेर बोला, मैंने तुम्हारे बारे में सुन रखा है कि तुम सबकी मदद करते हो। सिर्फ यही वजह है कि मैं आज तुम्हें छोड़ रहा हूं। पर वादा करो कि कभी भी किसी को तंग नहीं करोगे और अपने से बड़ों के साथ परेशान करने कोई मजाक नहीं करोगे। यह सुनते ही चुनमुन ने अपने कान पकड़ लिए और बोला, बिल्कुल शेरजी। उसे ऐसा करते देख शेर को हँसी आ गई। इसके बाद शेर ने उसकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाते हुए कहा, मित्र चलो, आज से हम दोस्त हुए। चुनमुन यह सुनकर बहुत खुश हुआ और उसके बाद तो वह हर रोज शेर के साथ उसकी पीठ पर बैठकर जंगल में घूमने लगा। दोनों खूब बातें करते। शेर को भी चुनमुन बहुत अच्छा लगने लगा। अगर वह किसी दिन नहीं आता तो शेर उदास हो जाता।

इसी बीच एक बार रात के वक्त शेरसिंह के घर का एसी खराब हो गया। ऐसे में वह अपने घर के बाहर आकर सो गए। उस रात जंगल में शिकारी आए हुए थे। जब उन्होंने खुले में बेसुध सोते शेर को देखा तो तुरंत ही जाल डालकर उसे कैद कर लिया। इसके बाद उसे बेहोश करके गड्ढे में डाल दिया। शिकारियों ने तय किया कि अगली सुबह शेर को जीप में डालकर ले जाएंगे। जब शेर की बेहोशी टूटी तो उसने खुद को जाल में फंसा और गड्ढे में गिरा देखकर समझ लिया कि शिकारियों ने उसे पकड़ लिया है और हो न हो वे शहर जाकर उसे किसी सर्कस में बेचनेवाले हैं। तभी उसे अपने दोस्त चुनमुन की याद आई और उसने जोर-जोर से दहाड़ना शुरू कर दिया, चुनमुन बचाओ। चुनमुन बचाओ। चुनमुन ने जैसे ही शेर की आवाज सुनी, वह समझ गया कि उसका दोस्त शेरसिंह मुश्किल में फंस गया है। वह शेर की आवाज की दिशा की ओर दौड़ा। वहां जाकर उसने देखा कि उसका दोस्त जाल में फंसा हुआ है। यह देखकर वह बोला, घबराओ मत दोस्त, अब मैं आ गया हूं। तुम्हें यहां से बचाकर ले जाऊंगा। यह मेरा वादा है। इतना कहने के बाद वह सोचने लगा कि शेर को कैसे बचाया जाए। उसने सबसे पहले अपने सभी कबूतर दोस्तों को बुलाया और कहा, फटाफट सबसे पहले हाथी भैया को रस्सी देकर भेजो, उसके बाद जंगल के सभी चूहों को फटाफट यहां पर भेजो। सबसे कह देना कि चुनमुन ने तुरंत बुलाया है। ठीक है चुनमुन भैया, हम तुरंत निकलते हैं।

इतना बोलकर कबूतर चारों दिशाओं में उड़ चले। दस-पंद्रह मिनट बाद ही हाथी भैया रस्सी लेकर पहुंच गए और बोले,

बोलो चुनमुन क्या काम है? चुनमुन बोला, हाथी भैया, मेरे दोस्त शेर को इस गड्ढे से निकालना है। ठीक है, तुम गड्ढे के अंदर जाकर रस्सी जाल में कस कर बांध दो। मैं उसे ऊपर खींच लूंगा। चुनमुन ने ऐसा ही किया और कुछ ही देर बाद शेर सिंह को जाल समेत गड्ढे से बाहर निकाल लिया गया। तब तक वहां पर हजारों चूहे आ चुके थे। चुनमुन ने उन सभी से कहा, जल्दी से जाल को कुतरो, ताकि शिकारियों के आने से पहले ही हम अपने दोस्त शेरसिंह को आजाद करवा सकें। सभी चूहे फटाफट अपने पैने दांतों से जाल को कुतरने लगे और सुबह होने से पहले ही उन्होंने सारा जाल कुतर डाला। शेर आजाद हुआ तो सबने देखा कि उसकी आँखों में आँसू थे। वह चुनमुन के गले लगकर रो पड़ा और बोला, आज मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मैंने तुम्हें उस दिन मारा नहीं और अपना दोस्त बना लिया। एक दिन मैंने तुम्हारी जान बख्शी थी और आज तुमने मेरी जान बचाकर अपना फर्ज निभाया। धन्यवाद दोस्त। चुनमुन के सारे दोस्तों को भी धन्यवाद। यह सुनकर चुनमुन बोला, दोस्त होकर क्या आप यह भी नहीं जानते कि दोस्ती का एक उसूल होता है। दोस्ती में नो सॉरी, नो थैंक्यू। चुनमुन के ऐसा कहते ही शेर समेत सारे जानवर मुस्कराने लगे।

१०९५) सिगरेट का अर्थ - उन दिनों डॉ. सैमुअल जॉनसन अंग्रेजी की डिक्शनरी बनाने में जुटे थे। वे दिन-रात यही सोचते रहते कि शब्दों को किस ढंग से रखा जाए। कैसे शब्दकोश को रोचक बनाया जाए। एक दिन उन्हें ख्याल आया कि क्यों न शब्दों के अर्थ की बजाय उनकी परिभाषा लिखी जाए। इससे लोग उस शब्द को आसानी से समझ लेंगे और वे शब्द हमेशा के लिए लोगों के मस्तिष्क में अपनी जगह बना लेंगे। हालांकि यह काम इतना आसान नहीं था, जितना लग रहा था। कई शब्दों की परिभाषा बनाने के लिए उन्हें कठोर परिश्रम करना पड़ा, गहरी छानबीन करनी पड़ी। कहीं अर्थ का अनर्थ न हो जाए, इस बात का भी डर लगातार बना रहता था। वे इस संबंध में कई विद्वानों से विचार-विमर्श भी करते रहते थे। कई बार तो शब्दों को लेकर तीखी बहस हो जाया करती थी। लेकिन डॉ. जॉनसन इस सब से परेशान नहीं होते थे। उन्हें इसमें सुख का अनुभव हो रहा था। एक दिन उनके सामने एक शब्द आया- सिगरेट। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि सिगरेट की परिभाषा क्या लिखें। केवल उसके आकार-प्रकार की चर्चा का कोई मतलब नहीं था। वह कई बार कुछ सोचते, लिखते और फिर फाड़ देते। उन्होंने सिगरेट को बारीकी से देखा। उससे होनेवाली हानियों के बारे में पढ़ा और अंतत: उन्होंने सिगरेट की परिभाषा को अपने शब्दकोश में स्थान दे दिया। इसका जबर्दस्त प्रभाव पड़ा। इसे पढ़ते समय जिस भी व्यक्ति के मुंह में सिगरेट होती थी वह उसे तुरंत फेंक देता था और आसपास देखता था कि कोई उसे सिगरेट पीते हुए देख तो नहीं रहा। इस परिभाषा ने सिगरेट छुड़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

१०९६) कवि की बेटी - एक बार कवि धनपाल राजा भोज को अपना कथा ग्रंथ सुना रहे थे। जब धनपाल पूरी कथा सुना चुके तो राजा भोज बोले, कथा में विनता का जो वर्णन आया है-उसे हटाकर अवन्ति तथा शुक्रावतार तीर्थ को बदलकर महाकाल नाम दे दें तो यह कथा हमारे राज्य और सीधे हमसे जुड़ सकती है। इसके बदले आप जो भी पुरस्कार चाहें, हम देंगे। राजा भोज की बात सुनकर कवि धनपाल बोले, महाराज। धन के लिए ग्रंथ में परिवर्तन करना मेरे लिए संभव नहीं है। यह मेरी आत्मा को कभी भी स्वीकार्य नहीं होगा। मैं मन से लिखता हूं। लिखते समय मेरे मन में पैसे की लालसा जरा भी नहीं रहती। कवि धनपाल का यह जवाब राजा भोज को चुभ गया। उन्होंने इसमें अपना अपमान महसूस

किया और देखते-देखते क्रोध में धनपाल का वह नवीन ग्रंथ उन्होंने आग में डाल दिया। कुछ ही देर में वह ग्रंथ जलकर राख बन गया। इसके बाद धनपाल दुखी मन से घर लौटे और उदास होकर एक ही स्थान पर बैठे रहे। धनपाल की बेटी तिलक मंजरी से पिता की उदासी छिप नहीं पाई। उसने अपने पिता को इतना हताश और उदास कभी नहीं देखा था। उसने पूछा, क्या हो गया? ग्रंथ कहां है? धनपाल ने दुखी मन से पूरी घटना तिलक मंजरी को सुना दी। वह बोली, पिताजी, उदास मत होइए, न ही चिंता करिए। मैंने पूरा ग्रंथ पढ़ा था, मुझे ग्रंथ की कथा स्मरण है। मैं उसे दोहराती जाऊंगी और आप उसे लिखते जाइएगा। बेटी की बात सुनकर धनपाल का चेहरा चमक गया। उन्होंने बेटी के सहयोग से अपना ग्रंथ नए सिरे से लिखना शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में वह पूरा हो गया। इस ग्रंथ का नाम उन्होंने अपनी बेटी के नाम पर तिलक मंजरी रखा। यह ग्रंथ आज भी कवि धनपाल की महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है।

१०९७) गुलाब और बबूल - संत परमानंद अपने शिष्यों को ज्ञान एवं सदाचार की शिक्षा दिया करते थे। एक दिन वे उन्हें लेकर कहीं जा रहे थे। रास्ते में देखा कि अनेक बेसहारा बच्चे इधर-उधर घूम रहे हैं। तभी उनका एक युवा शिष्य अनंत बोला- गुरुदेव, ये बच्चे अनाथ मालूम होते हैं। एक दिन ये भी पलकर बड़े हो जाएंगे। हम भी कभी ऐसे ही थे। मुझे एक बात समझ में नहीं आती कि जब सब अपने आप बड़े हो ही जाते हैं तो उन्हें शिक्षा क्यों दी जाती है? ऐसा तो नहीं है कि शिक्षा प्राप्त व्यक्ति अधिक खूबसूरत होता है। कई बार अशिक्षित व अनाथ व्यक्ति भी अत्यंत रूपवान होता है। उसकी बात सुनकर संत परमानंद सबको लेकर आश्रम में लेकर आए। उन्होंने बबूल के पौधे की ओर इशारा करके कहा- यह बबूल का पौधा अधिक ध्यान न रखने पर भी स्वत: बड़ा हो गया है, जबकि पास ही लगे गुलाब के पौधे की विशेष देखभाल करनी पड़ती है। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो कभी भी गुलाब का फूल खिल नहीं पाएगा। गुलाब के पौधे की देखभाल करने पर वह सुंदर फूल देता है, जबकि बबूल के पौधे पर कांटों के सिवाय कुछ नहीं मिलता।

१०९८) दार्शनिक का संदेश - एक बादशाह अपने सबसे प्रिय गुलाम के साथ नाव में यात्रा कर रहा था। अन्य यात्रियों के साथ एक दार्शनिक भी था। गुलाम ने कभी नौका में सफर नहीं किया था, इसलिए वह अपने को सहज महसूस नहीं कर पा रहा था। वह उछल-कूद मचा रहा था और किसी को चैन से नहीं बैठने दे रहा था।

मल्लाह ने बार-बार उसे समझाया कि उसकी उछल-कूद से नाव डूब जाएगी। वह भी डूबेगा और दूसरे भी डूबेंगे। मगर गुलाम की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। बादशाह भी गुस्से में थे पर गुलाम को सुधारने का कोई उपाय उन्हें समझ में नहीं आ रहा था। दार्शनिक से रहा नहीं गया। वह बादशाह के पास गया और बोला- जहांपनाह, अगर आप इजाजत दें तो मैं इस गुलाम को भीगी बिल्ली बना सकता हूं। बादशाह ने तत्काल अनुमति दे दी।

दार्शनिक ने दो यात्रियों का सहारा लिया और उस गुलाम को नाव से उठाकर नदी में फेंक दिया। गुलाम को तैरना नहीं आता था। डूबने लगा तो उसने नाव के खूंटे को कसकर पकड़ लिया। मगर फिर भी वहां तो जान के लाले पड़ रहे थे। कुछ देर बाद दार्शनिक ने उसे खींचकर नाव में चढ़ा लिया। वह गुलाम चुपके से जाकर एक कोने में बैठ गया। नाव के यात्रियों के साथ बादशाह को भी उस गुलाम के बदले व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ।

बादशाह ने दार्शनिक से पूछा- यह पहले तो बंदर की तरह हरकतें कर रहा था, अब पालतू बकरी की तरह बैठा है।

दार्शनिक ने जवाब दिया- इस मामले का सबक यह है कि खुद तकलीफ का स्वाद चखे बिना किसी को दूसरे की विपत्ति का अहसास नहीं होता है। इस गुलाम को जब मैंने पानी में फेंक दिया और इसके मुंह में पानी भरने लगा इसे पता चला कि नाव डूब गई तो यात्रियों की क्या हालत हो सकती है। अब यह कभी ऐसी हरकत नहीं करेगा।

१०९९) नुकसान - एक गांव था, जिसके चारों ओर जंगल था। जंगल में तरह-तरह के फलों के वृक्ष थे। वसंत ऋतु में वे फूलों से भर जाते। उनकी महक हवा में तैरती रहती। शाखाओं पर तरह-तरह के पक्षी अपना घोंसला बनाते और अपनी चहचहाहट का संगीत बिखेरते। सर्दियों में डालियां सेब-नाशपतियों से लद जातीं। कुछ शरारती लड़कों ने जंगल में घूम-घूमकर घोंसले खोजे और उन्हें नष्ट कर डाला। बेचारी चिड़िया फिर किसी दूसरी जगह जाकर अपना घोंसला बनाने लगीं। अब हुआ यह कि फलों और पत्तियों को चाट जानेवाले कीड़े-मकोड़े, जो पहले चिड़ियों द्वारा खा लिए जाते थे, फिर से पनपने लगे और सारे फलों को नष्ट करने लगे। सर्दियों में बच्चों को जो मीठे और अच्छे फल खाने को मिलते थे, अब तोड़ने पर कीड़ेवाले निकलने लगे। जो लोग पेड़-पौधों और पक्षियों को स्नेह देते हैं, वे उनसे बदले में उतना ही स्नेह पाते हैं।

११००) रॉनी, मनु और हाथी की कहानी - रॉनी और मनु अच्छे दोस्त थे। मनु पढ़ाई में अव्वल था, पर रॉनी क्लास के पिछड़े बच्चों में से था। एक दिन रॉनी और मनु की मम्मी बोलीं, मनु पढ़ाई में अच्छा है, क्योंकि उसके पिता बेहद पढ़े-लिखे हैं। मैं तो रॉनी को समझाती हूं कि मनु से मुकाबला मत कर। जब तेरे मां-बाप ही पढ़े-लिखे नहीं हैं, तो तू अकेले क्या कर लेगा। मनु की मम्मी को यह सुनकर झटका लगा। वह रॉनी की मम्मी से बोलीं। माफ कीजिए, मैं आपकी इस बात से सहमत नहीं हूं।

रॉनी मेहनती लड़का है और वह जल्दी ही सब सीख लेगा। हतोत्साहित करने के बजाय आपको उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। तभी तो वह बेहतर करने के बारे में सोचेगा। रॉनी की मां बोलीं, यह तो आपका बड़प्पन है। पर सच तो सच है जानवरों को बांधने के लिए एक पतली-सी रस्सी ही काफी है। क्या हाथी में इतनी क्षमता नहीं होती होगी कि वह उस रस्सी को तोड़ दे? पर हाथी रस्सी तोड़ने की कोशिश नहीं करता, क्योंकि बचपन से उसे उसी रस्सी से बांधा जाता है।

बचपन में वह चाहकर भी उस रस्सी को तोड़ नहीं पाता। बड़े होकर भी उसको यही लगता है कि वह उस रस्सी को नहीं तोड़ पाएगा। यह बात सिर्फ हाथियों पर नहीं, इंसानों पर भी लागू होती है। मां-बाप बचपन में ही अपने बच्चों के मन को एक सीमा से बांध देते हैं। बच्चे उस सीमा को तोड़कर आगे बढ़ने की कभी कोशिश ही नहीं करते। पर अगर मां-बाप बचपन से ही प्रोत्साहित करें, तो अनुभव भी सफलता की सीढ़ी बन जाते हैं। हमें भी रॉनी की पढ़ाई फिक्र होती है। पर हम डांटने के बजाय उसे प्रोत्साहित करते हैं। आप भी अपना नजरिया बदलिए। रॉनी का भविष्य सुनहरा हो जाएगा।

बच्चों के प्रति खराब धारणा बनाने के बजाय उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

११०१) नहले पर दहला - कल्लूमल को परेशान देखकर उसके दोस्त ने बड़ी सहानुभूति से पूछा, क्यों दोस्त, क्या बात है, बड़े परेशान नजर आ रहे हो? कल्लूमल का गला भर्रा उठा। बोला, क्या बताऊं दोस्त, मेरे घर के सामने वाला जो दर्जी है न, वह कमबख्त भाग गया। साथ ही टेरालीन की तीन पतलूनें और दो कमीजों का मेरा कपड़ा भी लेता गया।

दोस्त सुनकर मायूस हो उठा। उसकी संजीदगी देखकर कल्लूमल ने पूछा, मगर तुम इतने क्यों उदास हो गए? उदास इसलिए हो रहा हूं कि वह कमबख्त तेरी तो तीन पतलून और दो कमीजों का कपड़ा ही लेकर भागा है, पर मेरी तो ऐसी-तैसी कर दी उसने। चार कुर्ते, चार पायजामों का नाप लेकर रफूचक्कर हो गया। बेवकूफ हमेशा उलटी बातें करते हैं।

११०२) राजा को मिला जवाब - एक बार बुद्ध एक मरुस्थल प्रदेश में गए। उनसे मिलने की उत्कंठा में वहां का राजा उनके पास पहुंचा। राजा को बहुत दिनों से एक सवाल परेशान कर रहा था, जिसे उसने बुद्ध से पूछा। राजा का सवाल था कि क्या इस संसार में कोई ऐसा व्यक्ति भी है, जो महान हो, लेकिन उसे कोई जानता न हो? सवाल सुनकर बुद्ध मुस्कराए और बोले, वास्तव में दुनिया में ऐसे कई असाधारण लोग हैं, जो महान मनुष्यों से भी महान हैं। हालांकि उनकी महानता के गीत नहीं गाए जाते। यह सुनकर राजा ने आश्चर्य से बोला, ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई महान हो, लेकिन लोग उसकी महानता से वाकिफ न हों?

गौतम बुद्ध ने राजा के सवाल का जवाब नहीं दिया, पर उसे अपने साथ लेकर एक गांव की ओर चल पड़े। काफी दूर चलने के बाद उन्हें एक साधारण-सी लड़की नजर आई। वह एक पेड़ के नीचे घड़े में पानी भरकर बैठी थी। गर्मी में लगातार चलने से राजा और बुद्ध थक चुके थे। उन्होंने लड़की से पानी मांगकर पिया। गर्मी से राहत मिली तो दोनों की जान में जान आई। राजा ने लड़की को देने के लिए पैसे निकाले तो उसने पैसे लेने से इनकार कर दिया।

वह बोली, हे राजन। मैं कोई व्यवसाय नहीं करती। आप इस हरे-भरे विशाल पेड़ को देखो, यह किसी से कुछ नहीं मांगता। नि:स्वार्थ भाव से सभी को अपनी छांव के जरिए गर्मी में राहत देते हुए साधना कर रहा है। इसलिए मैं दूर से घड़े में पानी भरकर यहां बैठती हूं ताकि इस पेड़ को पानी दे सकूं और आने-जाने वालों को गर्मी, प्यास, थकान से राहत पहुंचा सकूं। उस लड़की ने आगे कहा, हे राजन्। मेरे पानी पिलाने की इस सेवा से मुझे असीम शांति मिलती है। यह सुनकर राजा को भी संतुष्टि मिली और उसे अपने सवाल का जवाब मिल गया।

११०३) दुश्मन दोस्त - रूस के जार के मुख्यमंत्री काउंट विट्टी ने एक दिन अपने मंत्री से कहा, ऐसे सारे लेखकों की सूची बनाओ, जिन्होंने अखबार में मेरे विरुद्ध लिखा है। जब सूची तैयार हो गई तब विट्टी ने कहा, अब उन लेखकों के नाम चुनो, जिन्होंने मेरी सबसे कठोर आलोचना की है। यह नई सूची भी जब बन गई तब उनके मंत्री ने पूछा, इन्हें क्या सजा दी जाएगी? सजा? कैसी सजा? अब मैं इनमें से अपने सबसे कठोर आलोचक को अपने समाचार-पत्र का संपादक बनाऊंगा। मेरा अनुभव है कि सबसे कठोर आलोचक ही सबसे सच्चा हितैषी होता है। काउंट विट्टी ने जवाब दिया। सच्चा हितैषी वही होता है जो सही आलोचना करता है।

११०४) फकीर की रोटी - शाह शूजा को जब पता चला कि उनकी पुत्री वैराग्यपूर्ण भावनाओं से ओतप्रोत है तो वह सोच में पड़ गए। पुत्री विवाह की उम्र में पहुंच रही थी। काफी सोच-विचार के बाद उन्होंने उसका विवाह एक ज्ञानी फकीर से कर दिया। इसके पीछे उनका आशय था कि उसकी धर्मपरायण भावनाओं को ठेस न पहुंचे और वह अपने इच्छानुसार अपना जीवन व्यतीत कर सके। शाह शुजा की पुत्री शादी के बाद अपने फकीर पति के साथ खुशी-खुशी उसकी कुटिया में आ गई और कुटिया की सफाई करने लगी।

उसी वक्त उसने कुटिया की छत में एक छींका लटकते देखा, जिसमें दो सूखी रोटियां रखी थीं। उसने आश्चर्य से अपने पति की ओर देखा और पूछा, ये रोटियां यहां पर क्यों रखी हैं? फकीर ने उत्तर दिया, कल हम एक-एक रोटी खा लेंगे। अपने पति की बात सुनकर वह हंस पड़ी और बोली, मेरे पिता ने तो मेरी धर्मपरायण वैराग्यपूर्ण भावनाओं को देखकर ही मेरा विवाह आपके साथ किया। वे आपको बैरागी और अपरिग्रही ज्ञानी फकीर समझते थे। लेकिन आपको तो कल के खाने की चिंता आज से ही है। चिंता करनेवाला सच्चा फकीर नहीं हो सकता है। वह बोलीं, अगले दिन की फिक्र तो घास खाने वाले जानवर भी नहीं करते हैं, फिर हम तो मनुष्य हैं। मिला तो खा लेंगे, नहीं तो आनंद से प्रार्थना करते हुए रात व्यतीत करेंगे।

फकीर ने अपनी पत्नी को अपने से भी दस कदम आगे समझा और मन ही मन उसके आगे नतमस्तक हो गया। फकीर बोला आपने आज मेरी आंखें खोल दीं। सिर्फ कहने से कोई सन्यासी या फकीर नहीं हो जाता है। बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में उतारना पड़ता है। आप एक राजा की बेटी होकर राजमहल त्यागकर फकीर की कुटिया में आती हैं, लेकिन फकीर होने के बावजूद मुझे कल को पेट पालने की चिंता सता रही थी। सच में अब मेरी आंखें खुल गई।

११०५) सेनापति का अज्ञान - छत्रपति शिवाजी महाराज जितने तलवार के धनी थे, उतने ही वह चरित्र के भी धनी थे। एक बार शिवाजी के एक वीर सेनापति ने कल्याण का किला जीता। हथियारों के जखीरे के साथ उनके हाथ अकूत संपत्ति भी लगी। एक सैनिक ने मुगल किलेदार की बहू को, जो दिखने में काफी सुंदर थी, उसके सामने पेश किया। वह सेनापति उस नवयौवना के सौंदर्य पर मुग्ध हो गया। सेनापति ने शिवाजी महाराज को बतौर नजराना वह महिला भेंट करने की ठानी। सेनापति उस नवयौवना को पालकी में बिठाकर शिवाजी महाराज के दरबार में पहुंचा।

शिवाजी उस समय अपने सेनापतियों के साथ विचार-विमर्श कर रहे थे। युद्ध में जीतकर आए सेनापति ने शिवाजी को प्रणाम किया और बोला कि वह कल्याण से जीतकर लाई गई एक चीज महाराज को भेंट करना चाहता है। यह कहकर उसने एक पालकी की ओर इंगित किया। शिवाजी ने ज्यों ही पालकी का पर्दा उठाया तो देखा कि उसमें एक सुंदर मुगल नवयौवना बैठी हुई है। शिवाजी महाराज का शीश लज्जा से झुक गया और वह बोले, काश। हमारी माता भी इतनी खूबसूरत होती तो मैं भी खूबसूरत होता।

इसके बाद अपने सेनापति को डांटते हुए उन्होंने कहा कि तुम मेरे साथ रहते हुए भी मेरे स्वभाव को समझ नहीं सके। शिवाजी दूसरे की माता-बेटियों को अपनी मां के समान मानता है। अभी इनको ससम्मान इनकी माता के पास छोड़कर आओ। सेनापति शिवाजी के व्यवहार से काफी अचंभित हुआ। कहां तो वह अपने आपको इनाम का हकदार समझ रहा था और नसीब हुई तो सिर्फ फटकार। लेकिन मुगल सूबेदार की बहू को उसके घर पहुंचाने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं था। मन ही मन उसने शिवाजी महाराज के चरित्र को पहचाना और मुगल खेमे की महिला को सुरक्षित, ससम्मान उसके खेमे तक पहुंचा दिया।

११०६) माँ का मंत्र काम आया - एक सम्पन्न राज्य की सम्पदा से जलकर वहाँ के राजा के कई शत्रु हो गए थे। एक रात राजा के शत्रुओं ने महल के पहरेदारों को मिला लिया और राजा को बेहोश कर अगवा कर लिया। इसके बाद राजा के

शत्रुओं ने राजा को पहाड़ की एक गुफा में बंद कर दिया और एक बड़े से पत्थर से गुफा के मुंह को ढँक दिया।

राजा को जब होश आया तो उस अँधेरी गुफा में अपनी दशा देखकर घबरा उठा। जब उस अँधेरी गुफा में उसे कुछ करते धरते ना बना तो उसे अपनी माता की कही एक बात याद आ गई- कुछ तो कर, यूं ही मत मर।

माँ का दिया मंत्र याद आते ही राजा की निराशा दूर हो गई और उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर अपने हाथों की जंजीरों को तोड़ दिया, तभी अँधेरे में उसका पैर एक सांप पर पड़ गया और सांप ने उसे काट लिया। राजा फिर घबराया, किन्तु अगले ही पल उसे फिर अपनी माँ का दिया वह मंत्र याद आया- कुछ तो कर, यूं ही मत मर। उसने तत्काल अपनी कमर से कटार निकाल ली और उस स्थान को चीर दिया जहाँ साँप ने काटा था। लेकिन खून की धार बह निकलने से वह फिर घबरा गया। लेकिन फिर उसने अपनी माँ के मंत्र से प्रेरणा पाकर अपनी कमर पर लपेटे वस्त्र से घाव पर पट्टी बांध दी, जिससे रक्त बहना बंद हो गया। इतनी सारी मुश्किलें हल होने के बाद उसे इस अँधेरी गुफा से बाहर निकलने की चिन्ता सताने लगी। भूख, प्यास भी उसे व्याकुल कर रही थीं। उस अँधेरी गुफा से निकलने का उसे जब कोई रास्ता न दिखा तो वह फिर निराश हो उठा, लेकिन फिर अगले ही पल उसे अपनी माँ का दिया मंत्र याद आया- कूछ तो कर, यूं ही मत मर। वह उठा और उसने अपनी पूरी ताकत से गुफा के मुंह पर पड़े पत्थर को ढकेलना शुरू कर दिया। बहुत बार प्रयास करने पर आखिरकार पत्थर लुढ़क गया और राजा गुफा से निकलकर पुन: अपने महल में चला गया। शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा हिम्मत और समझदारी से काम लेना चाहिए।

११०७) नटखट सितारा - उन सभी सितारों में सबसे नटखट सितारे का नाम था रेणु। एक रात, उसकी शरारतों से परेशान होकर सितारों की रानी ने रेणु को बुला भेजा और कहा, हम तुम्हारी शरारतों से तंग आ गए हैं। अभी कल ही मैंने सुना कि एक राही भटक गया, सिर्फ इसलिए कि तुम आसमान में अपनी जगह पर नहीं थे। और रानी कहती रही, आज से मैं तुम्हें अपने राज्य से निकालती हूं। आज से तुम पृथ्वी पर रहोगे। वहाँ के शाही घुड़साल में एक घोड़े के बच्चे के जन्म होने का सब इंतजार कर रहे हैं और तुम उसके माथे की शोभा बढ़ाओगे। और जब वह चमकदार काले रंग का बच्चा पैदा हुआ तो उसके माथे पर एक सफेद सितारा चमक रहा था। वह शरारती सितारा खुश था, क्योंकि अब उसे अपनी जगह से भटकने का डर न था। वह अपनी जगह से हिल ही नहीं सकता था। अपना काम ईमानदारी से करना चाहिए।

११०८) तेनाली पर चढ़ा कर्ज का मर्ज - एक बार तेनालीराम की पत्नी बीमार पड़ गई। तेनालीराम को उसके इलाज के लिए महाराज से हजार सोने के सिक्के उधार लेने पड़े। ठीक देखभाल और इलाज से तेनालीराम की पत्नी ठीक हो गई। एक दिन महाराज ने तेनालीराम से कहा, हमारा कर्जा चुकाओ। तेनालीराम कर्ज की वह रकम देना नहीं चाहते थे इसलिए हर बार कोई-न-कोई बहाना बनाकर बात टाल देते। महाराज ने भी तेनालीराम पर ब्याज लगाना शुरू कर दिया।

अब जितना ब्याज बढ़ता, तेनालीराम की कर्ज न देने की इच्छा उतनी बढ़ती जाती। तेनालीराम ने सोचा कि राजा का कर्ज राजा के मुंह से ही माफ करवाऊंगा। दूसरे दिन ही महाराज के पास खबर आई कि तेनालीराम बहुत ज्यादा बीमार हैं और आखिरी समय में महाराज उनका चेहरा देखना चाहते हैं तो देख लें।

महाराज फौरन तेनालीराम के घर पहुंचे। देखा कि तेनालीराम बिस्तर पर पड़े हैं। तेनाली की पत्नी बोली, महाराज

यह बड़े कष्ट में हैं। कहते हैं कि जब तक मुझ पर राजा का उधार है, तब तक मेरे प्राण आसानी से नहीं निकलेंगे। महाराज बोले, तेनाली, मैं तुम्हें इस तरह कष्ट में नहीं देख सकता। मैंने तुम्हारा कर्ज माफ किया। सच तो यह है कि ये सिक्के मैं वापस लेना ही नहीं चाहता था। मैं तो यह देखना चाहता था कि तुम इस कर्ज से कैसे मुक्त होते हो। फिर ठीक है महाराज। तेनालीराम बिस्तर से उठ खड़े हुए। महाराज बोले, अरे तेनालीराम, तुम्हारी तबीयत। तेनालीराम बोले, अब बिल्कुल ठीक है महाराज। दरअसल मैं तो आपके कर्ज के बोझ से मर रहा था, अब जब आपने कर्ज माफ ही कर दिया है तो कैसा मरना-धरना। आप धन्य हैं महाराज, जो आपने मुझे मरने से बचा लिया। ठगे हुए से महाराज तेनाली का चेहरा देखते रह गए।

११०९) समय-समय का फेर - एक जंगल के किसी पेड़ के नीचे बिल बनाकर एक बुद्धिमान चूहा रहता था। उसी पेड़ पर एक बिल्ला भी रहता था। जंगल में एक बार शिकारी ने डेरा डाल दिया। रोज शाम को वह जाल बिछाकर बड़े आराम से अपनी झोपड़ी में सो जाता था। रात में अनेक जीव जाल में फँस जाते थे। जिन्हें वह सवेरे पकड़ लेता था।

बिल्ला यद्यपि बहुत सावधान रहता था तो भी एक दिन वह जाल में फँस ही गया। यह देखकर चूहे की खुशी का ठिकाना न रहा। वह निर्भय होकर जंगल में भोजन ढूंढने लगा। उसकी नजर शिकारी द्वारा डाले गए चोर पर पड़ी। वह जाल में चढ़कर उसे खाने लगा। इतने में उसकी नजर एक साँप पर पड़ी। अब चूहे ने भागकर पेड़ पर चढ़ने की सोची। वहाँ उसकी नजर अपने घोर शत्रु उल्लू पर पड़ीं इन शत्रुओं के बीच पड़कर वह डरकर चिन्ता में डूब गया।

उसी समय उसे एक विचार सूझ गया। उसने देखा कि बिल्ला संकट में हैं, इसलिए वह उसकी रक्षा कर सकेगा। चूहे ने बिल्ले से कहा- भैया जिन्दा हो ना।

देखो, डरो मत, यदि तुम मुझे न मारने का वचन दो तो मैं तुम्हें बचा सकता हूं। देखो यह साँप और उल्लू मेरी ताक में बैठे हैं। अब तुम मेरी रक्षा करो और जिस जाल को तुम नहीं काट पा रहे हो, उसे काटकर मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।

बिल्ला भी बहुत होशियार था। उसने चूहे से कहा- इस समय मेरे प्राण संकट में हैं। तुम जैसा भी कहोगे वैसे ही करूंगा। तुम ही मेरी रक्षा कर सकते हो।

चूहा बोला- मैं तुम्हारी गोद में छिप जाता हूं। तुम मेरी रक्षा करना। इसके बाद मै। यह जाल काट दूंगा। बिल्ला बोला- भैया, तुम तुरन्त आ जाओ। तुम तो मेरे प्राणप्रिय हो। इस संकट से छूट जाने के बाद भी मैं परिवार सहित तुम्हारे हित में कार्य करता रहूंगा। अब चूहा आनन्द से बिल्ले की गोद में जा बैठा। जब साँप और उल्लू ने उनकी ऐसी गहरी मित्रता देखी तो वे निराश हो गए और अपने-अपने स्थान चले गए।

चूहा बिल्ले का स्वभाव जानता था, इसलिए वह धीरे-धीरे जाल कटने लगा। बिल्ला जाल में फँसे-फँसे परेशान हो गया था। उसने चूहे से जल्दी-जल्दी जाल काटने की प्रार्थना की।

चूहे ने कहा- घबराओ नही। मैं तुम्हारा जाल शिकारी के आने से पहले ही काट दूंगा। यदि मैंने पहले ही तुम्हें छुड़ा दिया तो मुझे तुमसे खतरा हो सकता है, इसलिए जिस समय मैं देखूंगा, शिकारी हथियार लिए आ रहा है, उसी समय मैं तुम्हारा बन्धन काट दूंगा। उस समय तुम्हें वृक्ष में चढ़ना ही सूझेगा और मैं भी तुरन्त अपने बिल में चला जाऊंगा।

बिल्ले ने घबराकर कहा- भैया, मेरे पुराने अपराधों को भूल जाओ। देखो। मुसीबत में देखकर मैंने तुम्हें बचा लिया। अब तुम मुझे जल्दी से छुड़ाओ।

चूहे ने कहा- जिस मित्र से भय की संभावना हो उसका कार्य इस प्रकार करना चाहिए कि अपने आप पर मुसीबत न आए। बलवान के साथ संधि होने पर भी अपनी रक्षा का ध्यान रखना चाहिए। मैंने सारे धागे काट दिए हैं अब मुख्य डोरी ही काटनी बाकी है। शिकारी आते ही मैं उसे तुरन्त काट दूंगा। तुम बिल्कुल न घबराओ।

इसी तरह बातों में रात बीत गयी। बिल्ले का भय लगातार बढ़ता ही जा रहा था। प्रात:काल शिकारी हथियार लिए आता दिखाई दिया। बिल्ला भय से व्याकुल हो गया। अब चूहे ने तेजी से जाल काटना आरम्भ कर दिया। छूटते ही बिल्ला एकदम पेड़ पर चढ़ गया और चूहा भी बिल में घुस गया। शिकारी जाल कटा देख निराश होकर वापस चला गया। शिकारी जाने के बाद बिल्ले ने चूहे से कहा- तुम्हें मुझसे भविष्य में घबराने की अब आवश्यकता नहीं है। अब तो मैं तुम्हारा मित्र हूं।

बिल्ले की चिकनी चुपड़ी बातों को सुनकर विद्वान चूहा बोला- समय के फेर से कभी मित्र ही शत्रु और कभी शत्रु ही मित्र बन जाते हैं। हमारी मित्रता तो एक विशेष कारण से हुई थी। अब वह कारण ही नहीं रहा तो प्रेम कैसा। अब तो मुझे खा जाने के सिवाय तुम्हारा कोई दूसरा प्रयोजन ही सिद्ध नहीं होगा। अतएवं भैया मैं यहीं ठीक हूं।

१११०) मजबूर तोता - एक चिड़ियाघर में एक शरारती तोता रहता था। रोज सुबह वह अपने मालिक के हाथ से हरी मिर्च, सेब, फलियाँ इत्यादि अच्छी-अच्छी चीजें खाता रहता। लेकिन उसे पिंजरे में बंद रहना पसंद नहीं था। दूसरे दिन सुबह मालिक ने उसे नाश्ता कराने के लिए जैसे ही पिंजरा खोला, वह फुर्र से उड़कर पेड़ की डाली पर जा बैठा। मालिक परेशान हो गया। देखा तो, आज तुम्हारे लिए कितनी अच्छी अच्छी चीजें खाने के लिए लाया हूं। मालिक काफी देर तक उसे ललचाता रहा, लेकिन तोता नहीं आया। मालिक की आवाज सुनकर चिड़ियाघर की बिल्ली बाहर आकर बोली, अच्छी बात है। अगर तू मालिक की बात नहीं मानता तो मैं तुझे बताती हूं। इतना कहकर वह तोते के ऊपर झपट पड़ी। बचाओ। बचाओ। तोता चिल्लाया और घबराकर फिर अपने पिंजरे में घुस गया। कायरों का भविष्य पिंजरे में ही होता है।

११११) मैनेजर, किशोर और सेब का बगीचा - मैनेजर ने किशोर से पूछा, क्या तुम संगणक चलाना जानते हो? किशारे बोला, जानता तो नहीं, पर सीख लूंगा। मैंनेजर ने फिर पूछा, क्या तुम्हारी ई-मेल आईडी है? किशोर बोला, नहीं, सर। संगणक सीखकर मैं ई-मेल आईडी भी बना लूंगा। मैनेजर बोला, इतना समय नहीं कि हम तुम्हारे सीखने का इंतजार कर सकें। तुम कहीं और नौकरी ढूंढो।

किशोर मायूस होकर वहां से निकल गया। वह पढ़ाई में अच्छा था, पर पिता के गुजरने के बाद घर की जिम्मेदारी उसी पर आ गई। कुछ भी करके उसे रात के खाने के लिए पैसे जुटाने थे। उस दफ्तर से निकालकर वह सेब के एक बगीचे में जाकर बैठ गया। अचानक उसे एक विचार सूझा। उसने उस बगीचे से कुछ सेब तोड़े और उन्हें ले जाकर बेचने लगा। सेब बेचने से उसे लगभग सौ रुपये मिले। वह ऊन पैसों से दोबारा बाजार से सेब खरीद लाया। शाम होने तक उसने लगभग तीन सौ रुपये कमा लिए। ऐसा करते-करते उसने सेब का ठेला, फिर दुकान, फिर कई दुकानें

खरीद लीं। अब वह एक बड़ा व्यवसायी बन गया। एक दिन वह उसी बगीचे के पास से गुजर रहा था, जहां से उसने अपनी यात्रा शुरू की थी। उसने गाड़ी रुकवाई। तभी उस बगीचे का मालिक भी वहां पहुंच गया। उसे लगा, शायद किशोर उसका बगीचा खरीदने आया है।

तभी किशोर बोला, मैं आज जो कुछ भी हूं, आपकी वजह से हूं। बगीचे का मालिक हैरान हो गया। फिर किशोर ने अपनी पूरी कहानी उन्हें सुनाई। बगीचे का मालिक बोला, आपने कभी सोचा है कि संगणक का ज्ञान न होने और ई-मेल के बगैर आप इतने ऊंचे मुकाम पर पहुंच गए। अगर संगणक चलाना आता होता, तो आप आज कहां होते? किशोर बोला, अगर मुझे संगणक आता होता, तो शायद मैं आज एक ऑफिस बॉय ही होता। अगर जज्बा हो, तो शून्य से शुरू कर भी शिखर पर पहुंचा जा सकता है।

१११२) पिता की सेवा का अवसर बड़भागी को ही मिलता है - राजकुमार नाभाग सूर्यवंशी राजा नाभाग के दस पुत्रों में सबसे छोटा था। वह अत्यंत बुद्धिमान, सुशील एवं विद्याव्यसनी था। उसके विद्या-प्रेम को देखकर राजा ने संपूर्ण विद्याओं में पारंगत होने के लिए उसे गुरुकुल भेज दिया। इधर उसके शेष नौ भाइयों ने पिता को वृद्ध समझकर राज्य को नौ हिस्सों में बांटकर अपना-अपना हिस्सा ले लिया।

नाभाग जब विद्याध्यन पूरा कर घर लौटा तो उसके भाइयों ने उससे कहा- नाभाग, हमने अपने पिता की संपूर्ण संपत्ति के नौ हिस्से कर आपस में बांट लिए हैं। तुम यदि अपना हिस्सा चाहते हो तो वृद्ध पिता का ले लो।

भाइयों की बात सुनकर बुद्धिमान नाभाग प्रसन्न होकर पिता के पास गया। राजा नाभाग को अपने बड़े पुत्रों के निर्णय पर दु:खी देख नाभाग ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, पिताजी, इस संसार में अपने माता-पिता की सेवा का अवसर बड़भागी को ही मिलता है। जो पुत्र तन-मन से अपने माता-पिता की सेवा करता है उसके लिए इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। मैं आपको अपने हिस्से में पाकर अत्यंत प्रसन्न हूं।

नाभाग अपने पिता को लेकर अपने भाइयों के राज्यक्षेत्र से बाहर वन में चला गया तथा श्रद्धा एवं भक्ति से उनकी सेवा करने लगा। उसकी इस समर्पित सेवा से प्रसन्न होकर एक दिन उसके पिता बोले, बेटा यहां पास ही में आंगिरस ऋषि एक बहुत बड़ा यज्ञ कई दिनों से कर रहे हैं। किन्तु उन ऋषियों को वैश्वदेव के दो सूक्त याद नहीं आने से वह यज्ञ पूरा नहीं हो पा रहा है। तुम वेद-वेदांगों में पारंगत हो, वहां जाकर उन्हें दो सूक्त पढ़ा दो।

पिता के आदेश से नाभाग वहां गया और ऋषियों को वे दो सूक्त बता दिए जिन्हें वे भूल रहे थे। इससे यज्ञ शीघ्र ही समाप्त हो गया। ऋषियों ने नाभाग को यज्ञ की शेष संपत्ति एवं आशीर्वाद दिया। जब नाभाग उस संपत्ति को लाने लगा, उसी समय एक काले रंग का पुरुष प्रकट हुआ और नाभाग से कहने लगा कि उस पर उसका अधिकार है इसलिए वह इसको नहीं ले जा सकता। नाभाग उस पुरुष के ऐसा कहने पर अपने पिता के पास गया और सारी बात कह सुनाई। पिता ने कहा कि वास्तव में यज्ञ की शेष सामग्री पर अधिकार रुद्र का होता है। बेटा वे कृष्ण पुरुष के वेष में साक्षात शिव हैं। तुम शीघ्र जाकर उनसे क्षमा मांगो। नाभाग शीघ्र यज्ञस्थल गया और उस पुरुष से क्षमा मांगी। सत्यप्रिय रुद्र उसकी सत्यता पर अत्यंत प्रसन्न हुए और उसे ही वह संपत्ति दे दी। अक्षय संपत्ति को प्राप्त कर नाभाग ने धर्मनिष्ठ

होकर लंबे समय तक राज्य किया। इसी नाभाग के एक पुत्र हुआ जो प्रसिद्ध विष्णुभक्त अंम्बऋषि नाम से प्रसिद्ध हुआ।

१११३) महात्मा गांधी जब साइकिल से पहुंचे सभास्थल - महात्मा गांधी समय के बड़े पाबंद थे। एक बार उन्हें एक सभा में भाषण देने का निमंत्रण मिला। निमंत्रण देनेवाले सज्जन ने ठीक साढ़े तीन बजे गांधी जी को लेने के लिए आने का वादा किया। अगले दिन अपनी आदत के अनुसार गांधी जी ठीक साढ़े तीन बजे तैयार हो गए, पर कोई उन्हें लेने के लिए नहीं आया। वे आश्रम से बाहर आए और आश्रम की साइकिल उठाकर तेजी से सभास्थल की ओर बढ़ चले और वहां पहुंचकर तय समय के अनुसार चार बजे भाषण देना शुरू कर दिया। इधर निमंत्रण देनेवाले महाशय कार लेकर गांधीजी के आश्रम पहुंचे। उन्होंने गांधीजी को इधर-उधर देखा, परंतु उनका कोई पता नहीं चला। आखिर वे कार से ही सभा स्थल पहुंचे। वहां जाकर देखते हैं कि गांधी जी भाषण दे रहे हैं निमंत्रण देनेवाले सज्जन ने भाषण समाप्त होने पर बड़ी शर्मिंदगी से माफी मांगी तो गांधीजी बोले- अरे भाई, आपको वक्त की पाबंदी का ध्यान नहीं रहा, पर मुझे था। सुनकर सज्जन गांधीजी की वक्त की पाबंदी के कायल हो गए। जिंदगी में वक्त की बहुत कीमत होती है, जो वक्त की नजाकत को ध्यान में रखते हुए चलता है वही आगे बढ़ता है।

१११४) दूसरों का दोष अपना नुकसान - निशा मैडम की पांचवी कक्षा में पहली क्लास थी। पहली बार बच्चे और टीचर मिल रहे थे। वह क्लास में आईं और घुसते ही बोर्ड साफ करके कुछ लिखने लगीं। बच्चे बड़े ध्यान से उन्हें देखने लगे। निशा मैडम बोर्ड पर नौ का पहाड़ा लिख रही थीं। पर यह क्या, उन्होंने नौ दूनी सोलह लिखा था। वह पहाड़ा पूरा करतीं इससे पहले ही बच्चे हंसने लगे थे। मैडम ने बच्चों की तरफ पलटकर पूछा, तुम लोग क्यों हंस रहे हो? बच्चों को यकीन हो गया था कि नई मैडम को कुछ नहीं आता। मॉनिटर वरुण ने टीचर से कहा, मैडम, आपने नौ दूनी सोलह लिखा है, जबकि अट्ठारह होना चाहिए। निशा मैडम बोलीं, आज यह मेरी पहली क्लास है। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप सभी को नौ का पहाड़ याद है। लेकिन आप में से किसी ने क्या यह सोचा कि मैंने नौ का पहाड़ा ही लिखा है या और कुछ? क्या मुझे यह नहीं पता कि आप सब को नौ का पहाड़ा आता होगा, अब आप बड़े हो गए हैं? अब सभी बच्चे खामोश होकर निशा मैडम को बहुत गंभीरता से सुन रहे थे।

मैडम बोली, यह आपकी क्लास का पहला सबक है। कि बिना जाने-समझे किसी पर हंसना बेवकूफी है। दूसरा सबक, हम अक्सर जिंदगी के नकारात्मक पहलू से इतना जुड़ जाते हैं कि सकारात्मक पहलू दिखना ही बंद हो जाता हैं। ठीक वैसे, जैसे आप सबको नौ के इस पहाड़े में सिर्फ एक गलती दिखी, लेकिन बाकी पहाड़ा सही था, उस बारे में आपने कुछ नहीं कहा। यहां बोर्ड पर भले ही आप वह गलती देखकर हंस पड़े, पर असल जिंदगी में अपने साथ या किसी दूसरे के साथ ऐसा बिल्कुल मत कीजिएगा। यह आप सबके व्यक्तित्व को नुकसान पहुंचाएगा और आज की क्लास का तीसरा और आखिरी सबक यह है कि मेरी क्लास में हमेशा हंसते रहिए। बिना जाने-समझे किसी पर हंसना अपनी बेवकूफी दिखाना है।

१११५) पद से दूर ही अच्छा - एक चीनी दार्शनिक नदी किनारे मछली पकड़ रहे थे। उसी दौरान राजा के एक दूत ने आकर कहा, सम्राट ने आपको अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया है। दार्शनिक ने राजा के उस दूत से प्रश्न किया, सुना

है कि सम्राट के संग्रहालय में किसी दिव्य कछुए की ढाल सुरक्षित है। बताओ, अगर वह कछुआ जीवित होता, तो क्या पसंद करता- सम्राट के संग्रहालय की शोभा बढ़ाना या जहां वह पैदा हुआ था, वहां की दलदल में लौटना? राजा के दूत ने कहा, दलदल में लौटना। दार्शनिक बोले, और मैं भी यही पसंद करता हूं। पद पाकर आदमी शांति खो बैठता है और कभी-कभी अपना जीवन भी। सम्राट से जाकर कह देना, मुझे दलदल में लौटना ज्यादा पसंद है। पद जब बढ़ता है तो जिम्मेदारी बढ़ती है। कभी-कभी जिम्मेदारियां इतनी अधिक बढ़ जाती हैं कि व्यक्ति खुद के लिए समय नहीं निकाल पाता। ऐसे में दार्शनिक और विद्वान लोग पद के लालच से दूर रहते हैं। पद सम्मान तो देता है लेकिन सुख-चैन-शांति छीन लेता है।

१११६) दो चूहे - गाँव के एक चूहे ने शहर के चूहे को दावत दी। शहर का चूहा अपने गाँव के मित्र के पास आया। गाँव के चूहे ने उसे थोड़ी सी मूँगफली और कुछ फल खाने को दिए। यह देखकर शहर के चूहे ने अपने देहाती मित्र से कहा, बंधु।खाने का मजा तो शहर में ही आता है। क्यों न तुम मेरे साथ शहर चलो। दूसरे दिन गाँव का चूहा अपने शहरी मित्र के साथ शहर आ गया। शहर का चूहा उसे एक आलीशान बंगले में ले गया। वहाँ खाने की टेबल पर जूठे बरतन पड़े थे। उन बरतनों में अभी भी मक्खन था, मलाई थी। लड्डू के टुकड़े थे। बढ़िया सालन था। गाँव का चूहा खुशी के मारे पागल हो उठा। तभी बँगले की बिल्ली कहीं से भीतर घुस आई। उसे देखकर दोनों चूहे भय से उछलकर भाग निकले। गाँव का चूहा तो ऐसा भागा कि उसने अपने गाँव पहुंचकर ही दम लिया। हम जीना जानते हैं, पर किस तरह जीना चाहिए, यह बहुत कम लोग जानते हैं।

१११७) जब चार्ल्स ने मारा नहले पर दहला - कथाकार चार्ल्स डिकेंस की इंग्लैंड में ख्याति फैल गई तो एक दिन महारानी विक्टोरिया ने उन्हें अपने महल में आमंत्रित किया। जब वो वहां पहुंचे तो उन्होंने उनसे कहानी सुनने का आग्रह किया। चार्ल्स परम स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उन्हें महारानी के महल में पहुंचकर कहानी सुनाने में अपना अपमान महसूस हुआ। वह अदब से झुककर बोले, महारानी जी मैं अभी तक राजमहल में सुनाने के लायक कोई कहानी नहीं लिख पाया हूं। कभी इस योग्य हुआ तो आपकी मदद जरूर करूंगा। मैं सिर्फ सामान्य लोगों पर कहानियां लिखता हूं।

महारानी बोलीं, तब तो आप मुझे वही कहानियां सुनाइए। चार्ल्स ने कहा कि महारानी मेरी कहानी तभी आपको आनंदित कर पाएंगी जब आप उन्हें सामान्य लोगों के बीच बैठकर सुनें। इस तरह नहले पे दहला मारते हुए चार्ल्स ने अपनी बात मनवा ली। हालांकि महारानी कथाकार का आशय समझ गईं।

१११८) शरारती उपन्यासकार मार्क के रूप में विख्यात ट्वेन - अमेरिका की मिसिसीपी नदी के तट पर बसा है नीबाल गांव। सूर्योदय होते ही लोग अपने अपने काम में जुट गए। गलियों में बच्चों का शोर गूंज उठा। अचानक एक सीटी की आवाज ने सबको चौंका दिया। बच्चे नदी की ओर भागे। उस दिन नदी के तट पर एक स्टीमर आया था। सब लोग आश्चर्य और उत्सुकता से उसे देख रहे थे विशेष रूप से बच्चें। इन्हीं बच्चों में एक का नाम था सैमुएल क्लीमेंस।

स्टीमर का कप्तान एक नाव पर सवार होकर एक बड़े बांस से पानी की गहराई नाप रहा था। फिर एक जगह उसने बांस गाड़ दिया। स्टीमर वहीं आकर रुक गया। बालक क्लीमेंस कप्तान के इस काम को बड़े ध्यान से देख रहा था। जैसे ही

कप्तान नाव से उतरकर किनारे पर आया, क्लीमेंस ने उसे रोक लिया। वह बालक बड़ी निर्भीकता से कप्तान के पास आया और उससे पूछा, इसे क्या कहते हैं? उसका इशारा स्टीमर की तरफ था।

स्टीमर, इसमें बैठकर तुम सैर कर सकते हो इसमें सामान भी ढोया जा सकता है। लेकिन आप बांस से क्या नाप रहे थे? बालक ने पूछा। पानी की गहराई। स्टीमर वहीं पर आसानी से खड़ा हो सकता है जहां पानी दो फैदम गहरा हो। दो फैदम यानी बारह फुट। इस बांस में दो फैदम का यह निशान बना है, जिससे हम पानी की गहराई नापते हैं। इस निशान को मार्क ट्वेन यानी दो फैदम का निशान कहते हैं।

सैमुएल क्लीमेंस को वह बांस और उसमें बना मार्क ट्वेन यानी दो फैदम का निशान बड़ा रोचक लगा। कप्तान ने भी उसे बालक की निर्भीकता देखकर उसे स्टीमर दिखाने और घुमाने का वादा किया।

सैमुएल क्लीमेंस का जन्म फ्लोरिडा में वर्ष १८३५ में हुआ था। शरारत करने में क्लीमेंस अव्वल था। पढ़ने-लिखने के नाम से उसे बुखार आ जाता था। जब वह बारह साल का हुआ तो पिता की मृत्यु हो गई। अब क्लीमेंस को पढ़ाई के साथ मजदूरी भी करनी पड़ी। २२ साल की उम्र में उसने एक नाविक की नौकरी की। फिर उसे छोड़कर एक समाचार पत्र का संवाददाता बन गया। सन १८७० में वह एक पत्र का संपादक बन गया। इसी बीच वह हास्य व्यंग्य की कहानियां लिखने लगा। एक दिन उसने सोचा कि क्यों न अपने बचपन के शैतानी भरे जीवन पर एक उपन्यास लिखूं।

उसने एक छद्म नाम से लिखना चाहा। तभी उसे मार्क ट्वेन वाले बांस की घटना याद आई और उसने अपना नाम रखा मार्क ट्वेन। उसने अपने उपन्यास का नाम रखा टॉम सायर। जब यह प्रकाशित हुआ तो उसे विश्वभर के बच्चों ने पसंद किया। वह विश्व बाल साहित्य का कालजयी उपन्यास है। टॉम एक ऐसा चरित्र बन गया जो शरारती और नटखट होकर भी चतुर है और वह अच्छे काम करना भी पसंद करता है। मार्क ट्वेन के व्यंग्य भी अंग्रेजी साहित्य की धरोहर स्वीकार किए गए। टॉम सायर उपन्यास के पाठक-बच्चों में बहुत कम को मालूम होगा कि उसके लेखक का नाम मार्क ट्वेन क्यों पड़ा?

१११९) गलती न करने की सौगंध ली - एक राजा था। उसने १० खूंखार जंगली कुत्ते पाल रखे थे, जिनका इस्तेमाल वह लोगों को उनके द्वारा की गई गलतियों पर मौत की सजा देने के लिए करता था। एक बार कुछ ऐसा हुआ कि राजा के एक पुराने मंत्री से कोई गलती हो गई। अत: क्रोधित होकर राजा ने उसे शिकारी कुत्तों के सम्मुख फिंकवाने का आदेश दे डाला। सजा दिए जाने से पूर्व राजा ने मंत्री से उसकी आखिरी इच्छा पूछी। मंत्री ने कहा- राजन्। मैंने आज्ञाकारी सेवक के रूप में आपकी १० साल तक सेवा की है। मैं सजा पाने से पहले आप से १० दिनों की मोहलत चाहता हूं। राजा ने उसकी बात मान ली।

दस दिन बाद राजा के सैनिक मंत्री को पकड़कर लाए और राजा का इशारा पाते ही उसे खूंखार कुत्तों के सामने फेंक दिया, परंतु यह क्या। कुत्ते मंत्री पर टूट पड़ने की बजाय अपनी पूंछ हिला-हिला कर मंत्री के ऊपर कूदने लगे और प्यार से उसके पैर चाटने लगे। राजा आश्चर्य से यह सब देख रहा था। उसने मन ही मन सोचा कि आखिर इन खूंखार कुत्तों को क्या हो गया है। वे इस तरह क्यों व्यवहार कर रहे हैं। आखिरकार राजा से रहा नहीं गया।

उसने मंत्री से पूछा- ये क्या हो रहा है, ये कुत्ते तुम्हें काटने की बजाय तुम्हारे साथ खेल क्यों रहे हैं। मंत्री बोला- राजन्। मैंने आपसे जो १० दिनों की मोहलत ली थी, उसका एक-एक क्षण मैंने इन बेजुबानों की सेवा करने में लगा दिया। मैं रोज इन कुत्तों को नहलाता, खाना खिलाता व हर तरह से उनका ध्यान रखता। ये कुत्ते खूंखार और जंगली होकर भी मेरी दस दिन की सेवा नहीं भुला पा रहे हैं, परंतु खेद है कि आप प्रजा के पालक होकर भी मेरी १० साल की स्वामिभक्ति भूल गए और मेरी एक छोटी सी त्रुटि पर इतनी बड़ी सजा सुना दी।

राजा को अपनी भूल का एहसास हो गया। उसने तत्काल मंत्री को आजाद करने का हुक्म दिया और आगे से ऐसी गलती न करने की सौगंध ली।

११२०) अपने हितैषियों की रक्षा करने से हमारी भी रक्षा होती है - किसी पर्वत्त प्रदेश में मंदविष का एक वृद्ध सर्प रहा करता था। एक दिन वह विचार करने लगा कि ऐसा क्या उपाय हो सकता है जिससे बिना परिश्रम किए ही उसकी आजीविका चलती रहे। उसके मन में तब एक विचार आया। वह समीप के मेंढ़कों से भरे तालाब के पास चला गया। वहां पहुंचकर वह बड़ी बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगा। उसे इस प्रकार घूमते देखकर तालाब के किनारे एक पत्थर पर बैठे मेंढक को आश्चर्य हुआ तो उसने पूछा, मामा। आज क्या बात है? शाम हो गई है, किंतु तुम भोजन-पानी की व्यवस्था नहीं कर रहे हो?

सांप बुझे मन से बोला, बेटे। क्या करूं, मुझे तो अब भोजन की अभिलाषा ही नहीं रह गई है। आज बड़े सवेरे ही मैं भोजन की खोज में निकल पड़ा था। एक सरोवर के तट पर मैंने एक मेंढ़क को देखा। मै। उसको पकड़ने की सोच ही रहा था कि उसने मुझे देख लिया। समीप ही कुछ ब्राह्मण स्वाध्याय में लीन थे, वहीं उनके मध्य जाकर कहीं छिप गया। उसको तो मैंने फिर देखा नहीं किंतु उसके भ्रम में मैंने एक ब्राह्मण के पुत्र के अंगूठे को काट लिया। उससे उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। उसके पिता को इसका बड़ा दु:ख हुआ और उसे शोकाकुल पिता ने मुझे शाप देते हुए कहा, दुष्ट। तुमने मेरे पुत्र को बिना किसी अपराध के काटा है, अपने इस अपराध के कारण तुमको मेंढ़कों का वाहन बनना पड़ेगा।

बस, तुम लोगों के वाहन बनने के उद्देश्य से ही मैं यहां आया हूं। मेंढ़क सर्प से यह बात सुनकर अपने परिजनों के पास गया और उनको भी उसने सर्प की वह बात सुना दी। इस प्रकार एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे कानों में जाती हुई यह बात सब मेंढ़कों तक पहुंच गई। उनके राजा जलपाद को भी इसका समाचार मिला। उसको यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। सबसे पहले वही सर्प के पास जाकर उसने फन पर चढ़ गया। उसे चढ़ा हुआ देखकर अन्य सभी मेंढ़क उसकी पीठ पर चढ़ गए। सर्प ने किसी को कुछ नहीं कहा। मंदविष ने उन्हें भांति-भांति के करतब दिखाए। सर्प की कोमल त्वचा के स्पर्श को पाकर जलपाद तो बहुत ही प्रसन्न हुआ।

दूसरे दिन जब वह उनको बैठाकर चला तो उससे चला नहीं गया। उसको देखकर जलपाद ने पूछा, क्या बात है, आज आप चल नहीं पा रहे हैं? हां, मैं आज भूखा हूं इसलिए चलने में कठिनाई हो रही है।

जलपाद बोला, ऐसी क्या बात है। आप साधारण कोटि के छोटे-मोटे मेंढ़कों को खा लिया कीजिए। इस प्रकार वह सर्प नित्यप्रति बिना किसी परिश्रम के अपना भोजन पा गया। किंतु जलपाद यह भी नहीं समझ पाया कि अपने क्षणिक सुख के

लिए वह अपने वंश का नाश करने का भागी बन रहा है। सभी मेंढ़कों को खाने के बाद सर्प ने एक दिन जलपाद को भी खा लिया। इसीलिए कहते हैं कि अपने हितैषियों की रक्षा करने से हमारी भी रक्षा होती है।

ऐसे ठीक हुआ बैलगाड़ी का पहिया - बहुत समय पहले की बात है। शाम के समय चंदनवन के बीच से एक रास्ता गुजरता था। वहां के लोगों के अनुसार वहां एक बहुत बड़ा दानव रहता था। एक शाम की बात है, एक गरीब किसान अपनी बैलगाड़ी पर सामान लादकर घर की तरफ जा रहा था। अभी वह कुछ ही दूर चला होगा कि अचानक से उसकी बैलगाड़ी का पहिया ढीला होने लगा और कुछ समय बाद पहिया बैलगाड़ी से अलग हो गया। पहिए को सही करते-करते शाम ढल चुकी थी। जंगल में अंधेरा भी बढ़ रहा था।

वह अकेले अंधेरे में जंगल के बीचों बीच खड़ा था। किसी भी राहगीर की आहट तक सुनाई नहीं देती थी। रात का समय, घना जंगल, उसे डर लगने लगा। एक तरह से उसका शरीर कांप रहा था। उसने घबराकर हनुमान चालीसा निकालने के लिए अपनी जेब में हाथ डाला जो कि हर समय उसकी जेब में ही रहती थी, लेकिन दुर्भाग्यवश आज वो अपनी हनुमान चालीसा घर पर ही भूल आया था। अब उसने अपनी आंखें बंद कीं और भगवान को याद करना शुरू किया। उसने कहा हे ईश्वर। मैंने आज बहुत ही बेवकूफी भरा काम किया है जो मैं अपने प्रार्थना की किताब घर पर भूल आया और मेरी याददाश्त भी अब पहले जैसी नहीं रही जो कि मैं बिना किताब के ही प्रार्थना दोहरा सकूं। इसलिए अब वर्णमाला के सारे अक्षर मैं आपके सामने दोहराता हूं। आपको तो सही प्रार्थना पता है।

इसलिए मेरे प्रभु मुझे क्षमा करते हुए उन अक्षरों को सही स्थानपर रखकर आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए।

थोड़ी देर बाद एक दिव्य आवाज आई- आज तक मैंने जितनी भी प्रार्थनाएं सुनी हैं उनमें ये सर्वोत्तम है क्योंकि ये स्वच्छ, साधारण, पवित्र और सीधे तुम्हारे हृदय से निकली है। इसमें अनजाने में हो जानेवाली भूल के लिए क्षमा याचना है और गलती हो जाने का डर है। ये सब बातें तुम्हारे एक सच्चे और अच्छे मानव होने का प्रमाण हैं और इसलिए तुम्हारी ये प्रार्थना सच्ची है और मैं इसे स्वीकार करता हूं। अब किसान का डर थोड़ा कम हुआ और उसकी बैलगाड़ी का पहिया भी अपने आप ठीक हो गया।

११२१) राजकुमारी का स्वयंवर - राजा ने तय किया कि वह राजकुमारी का विवाह उस आदमी के साथ करेगा जो रूप, बल और ज्ञान इन तीनों में बड़ा होगा। चंपापुर नाम का एक नगर था, जिसमें चंपकेश्वर नाम का राजा रहा करता था। उसकी सुलोचना नाम की रानी थी और त्रिभुवनसुंदरी नाम की लड़की। राजकुमारी का जैसा नाम था वैसी ही वह गुणी थी। जब वह बड़ी हुई तो उसका रूप और निखर गया। राजा और रानी को उसके विवाह की चिंता हुई। चारों ओर इसकी खबर फैल गई। बहुत से राजाओं ने अपनी-अपनी तस्वीरें बनवाकर भेजीं। पर राजकुमारी ने किसी को भी पसंद न किया। राजा ने कहा, बेटी, कहो तो स्वयंवर करूं? लेकिन वह राजी नहीं हुई। आखिर राजा ने तय किया कि वह उसका विवाह उस आदमी के साथ करेगा जो रूप, बल और ज्ञान इन तीनों में बढ़ा-चढ़ा होगा। एक दिन राजा के पास चार देश के चार वर आए। एक ने कहा, मैं एक कपड़ा बनाकर पांच लाख में बेचता हूं। एक लाख देवता को चढ़ाता हूं, एक लाख अपने अंग लगाता हूं, एक लाख स्त्री के लिए रखता हूं और एक लाख से अपने खाने-

पीने का खर्च चलाता हूं। इस विद्या को और कोई नहीं जानता।

दूसरा बोला- मैं जल-थल के पशुओं की भाषा जानता हूं। तीसरे ने कहा, मैंने इतना शास्त्र पढ़ा है कि मेरा कोई मुकाबला नहीं कर सकता। चौथे ने कहा, मैं शब्दबेधी तीर चलाना जानता हूं। चारों की बातें सुनकर राजा सोच में पड़ गया। वे सुंदरता में भी एक-से-एक बढ़कर थे। उसने राजकुमारी को बुलाकर उनके गुण और रूप का वर्णन किया पर वह चुप रही। इतना कहकर बेताल बोला, राजन तुम बताओ कि राजकुमारी किसको मिलनी चाहिए?

राजा बोला, जो कपड़ा बनाकर बेचता है, वह बनिया है। जो पशुओं की भाषा जानता है, वह ज्ञानी है। जो शास्त्र पढ़ा है, वह ब्राह्मण हैं, पर जो शब्दबेधी तीर चलाना जानता है, वह राजकुमारी का सजातीय है और उसके योग्य है, राजकुमारी उसी को मिलनी चाहिए राजा के इतना कहते ही बेताल गायब हो गया।

११२२) सच और झूठ में आंख और कान जितना ही अंतर - एक दिन बाहशाद अकबर ने बीरबल से पूछा- सच और झूठ में कितना अंतर है बताओ? बीरबल बोले- जितना आंख और कान में। बादशाह बीरबल की बात समझ ना पाए, उन्होंने कहा- बात को साफ-साफ बोलो।

बीरबल ने समझाया- आलमपनाह, ऐसा कहा जाता है कि जो आंखों से देखा जाता है, वह सच होता है और जो कानों से सुना जाता है, वह झूठ होता है। अब फिर आप ही बताएं, क्या दोनों में सच और झूठ जितना फर्क नहीं हुआ। बादशाह ने खुश होकर कहा- बीरबल, तुम्हारे दिमाग का जवाब नहीं।

११२३) लोभ और त्याग - गौतम बुद्ध के एक अनुयायी ने अपनी सारी धन-दौलत लोकोपयोगी कार्यों में लगा दी और संयम का जीवन जीना शुरू कर दिया। वह हर वक्त प्रत्येक व्यक्ति की सहायता के लिए तैयार रहते। हर ओर उनके सत्कार्यों की चर्चा होने लगी। एक दिन कुछ लोग उनके पास आए। उनमें से एक व्यक्ति बोला, महानुभाव, आपका त्याग प्रशंसनीय है। आपकी सेवाओं को लेकर समाज आपका कृतज्ञ है। हम सब लोग सार्वजनिक रूप से आपका अभिनंदन कर आपको दानवीर तथा मानव-रत्न के अलंकरण से विभूषित करना चाहते हैं। हम आपके पास यह निवेदन करने आए हैं कि आप सहर्ष हमें इसकी सहमति दें ताकि हम अपने कार्य को खुशी-खुशी निर्विघ्न संपन्न कर सकें। उस व्यक्ति की बात सुनकर बुद्ध के अनुयायी ने मुस्कराते हुए कहा, आप सब लोगों ने मुझे जितना आदर व सम्मान दिया है इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। किंतु मैंने कोई त्याग नहीं किया है। मेरे जिन गुणों का आप आदर कर रहे हैं, उन्होंने तो मुझे लाभ ही लाभ दिया है। ठीक उसी तरह जिस तरह बैंक में रुपये जमा करना त्याग नहीं, ब्याज का लाभ है। आप सभी जानते हैं कि दुकानदार ग्राहक को कोई वस्तु देकर त्याग नहीं करता बल्कि अपना लाभ कमाता है। उसी तरह मैंने भी अपने व्यक्तित्व से काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि को छोड़कर अपने स्वभाव में अहिंसा, परोपकार क्षमा, सत्य, दया आदि जैसे सदगुण को स्थान दिया है। इस तरह देखा जाए तो मैंने छोड़ा कम पाया ज्यादा। मुझे तो लाभ ही मिला। मैंने अतिरिक्त तो कुछ किया नहीं। यह सुनकर सब उनके प्रति नतमस्तक हो गए।

११२४) सादगी का पाठ - ईरानी बादशाह अब्बास शिकार के लिए जंगल में भटक रहे थे। वहां उनकी भेंट एक चरवाहे बालक से हुई, जिसका नाम था मुहम्मद अली बेग। बादशाह उसकी हाजिरजवाबी से बेहद प्रभावित हुए और उसे

अपने साथ ले आए। उन्होंने उसे अपना खजांची बना दिया। अली बेग पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ काम करने लगा। शाह अब्बास की मृत्यु के बाद उनका अल्पवयस्क पोता शाह सफी राजगद्दी पर बैठा। किसी ने शाह के कान भर दिए कि अली बेग राज्य के धन का गलत इस्तेमाल कर रहा है। शाह ने उस प्रकरण की जांच स्वयं अपने पास रखी और एक दिन बिना सूचना के उसकी हवेली का निरीक्षण करने जा पहुंचा। शाह ने हवेली के सब कमरों का निरीक्षण किया। थोड़ी सी वस्तुओं के अतिरिक्त वहां कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था। शाह निराश लौटने लगा तो खोजियों के संकेत पर शाह की नजर एक बंद कमरे की ओर गई। उसमें तीन मजबूत ताले लटक रहे थे। अब शाह की शंका को कुछ आधार मिला। उन्होंने पूछा, इसमें क्या चीज है, जिसके लिए इतने मजबूत ताले लगाए हैं? ताले खोले गए। शाह ने कमरे के बीच मेज पर एक लाठी, सुराही, कुछ बर्तन, कुछ पोशाक और दो मोटे कंबल देखे। अली बेग ने कहा, जब स्वर्गीय शाह मुझे यहां लाए थे, उस समय मेरे पास यही वस्तुएं थी और आज भी मेरे पास अपना कहने को यही हैं। मैं इन चीजों से ही प्रेरणा ग्रहण करता हूं और उसी स्तर का जीवन बनाए रखता हूं। युवा बादशाह यह देखकर लजित हो गया।

११२५) मनुष्य और ईश्वर - एक महात्मा गंगा तट पर प्रवचन कर रहे थे। भारी भीड़ जमा थी। चर्चा का विषय था- जीव और ब्रह्म की एकता। दोनों के संबंध का विश्लेषण करते हुए महात्मा ने कहा कि जीव ईश्वर का ही अंश है। जो गुण ईश्वर में हैं, वे जीव में भी मौजूद है। सुननेवालों में से एक ने पूछा, भगवन्। ईश्वर तो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, पर जीव तो अल्पज्ञ और अल्प सामर्थ्यवाला, फिर इस भिन्नता के रहते एकता कैसी? यह सुनकर महात्मा जी मुस्कराए। फिर उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, एक लोटा गंगाजल ले आओ। वह व्यक्ति लोटे में गंगाजल भर लाया। फिर महात्मा जी ने उस व्यक्ति से पूछा, अच्छा यह बताओ कि गंगा के जल और इस लोटे के जल में कोई अंतर तो नहीं है? वह व्यक्ति बोला, बिल्कुल नहीं। महात्मा जी ने कहा, देखो, सामने गंगाजल में नावें चल रही हैं। एक नाव इस लोटे के जल में चलाओ। यह सुनकर वह व्यक्ति भौंचक रह गया और महात्मा जी का मुंह ताकने लगा। फिर उसने साहस करके कहा, भगवन् लोटा तो छोटा है और इसमें थोड़ा ही जल है। इतने में भला नाव कैसे चलेगी। महात्मा जी ने गंभीर होकर कहा, जीव एक छोटे दायरे में सीमाबद्ध होने के कारण लोटे के जल के समान अल्पज्ञ और अशक्त बना हुआ है। यदि यह जल फिर गंगा में लौटा दिया जाए तो उस पर नाव चलने लगेगी, इसी प्रकार यदि जीव अपनी संकीर्णता के बंधन काटकर महान बन जाए तो उसे ईश्वर जैसी सर्वज्ञता और शक्ति सहज ही प्राप्त हो सकती है।

११२६) गूंज की गूंज - नन्हा पप्पू एक दिन घाटी में खड़े होकर जोर से बोला, बाप रे। तुरंत घाटियों से आवाज टकराई और गूंज उठी, बाप रे। बाप रे। यह सुनकर नन्हा पप्पू चकित रह गया। उसने जरा ऊंची आवाज में प्रश्न किया, कौन हो तुम? फौरन आवाज पलटी, कौन हो तुम, कौन हो तुम? यह सुनकर पप्पू को बहुत गुस्सा आया। उसे लगा, अवश्य कोई कहीं छिपा है जो उसकी नकल उतार रहा है। घर लौटकर उसने अपनी माँ से इस बात की शिकायत की। घाटी में कोई छिपा है, जो ठीक उसकी आवाज की नकल उतारकर उसे चिढ़ा रहा है। तब माँ ने उसे समझाया, बेटे, वह आवाज किसी और की नहीं, खुद तुम्हारी अपनी थी जो घाटियों से गूंजकर तुम्हें सुनाई पड़ रही थी। अगर तुम कोई अच्छी बात बोलते तो तुम्हें वही शब्द सुनाई पड़ते। पर तुमने गुस्से से पूछा कि तुम कौन हो, तो तुम्हें वही शब्द सुनाई

पड़े। ठीक इसी तरह जीवन में भी होता है। तुम किसी से बुरे ढंग से बोलोगे तो बदले में तुम्हें बुराई ही मिलेगी और अगर अच्छा बोलोगे, करोगे तो बदले में अच्छाई मिलेगी।

११२७) आत्मा सबमें एक है - हुगली के सरकारी वकील स्व. शशिभूषण बंद्योपाध्याय एक दिन किराए की गाड़ी में बैठकर एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के घर पहुंचे। वे एक जरूरी काम से आए थे। उनका स्वागत करते हुए उस व्यक्ति ने कहा, इस भयंकर गरमी में आपने आने का कष्ट क्यों किया? आप किसी नौकर के हाथ पत्र भेज देते तो भी यह काम हो जाता। शशिभूषण ने कहा, मैंने पहले नौकर को ही भेजने का विचार किया था, किन्तु बाहर की गरमी तथा लू देखकर मैं किसी भी नौकर को भेजने का साहस नहीं कर सका। मैं तो गाड़ी में आया हूं, उस बेचारे को तो पैदल ही आना पड़ता। अपने से छोटों का ख्याल रखना बड़प्पन की निशानी है।

११२८) खिलौनों का भोज - एक रात जब पूरा घर सोया हुआ था, नन्ही गुड़िया बिट्टो हौले से अपनी सहेली नीना की बगल से उठी और कूदकर उस अलमारी के पास जाकर खटखटाने लगी जिसमें तमाम खिलौने रखे थे। खिलौने चौंक पड़े। बिट्टो ने कहा, चलो, उठ जाओ। आज रात हम लोग बढ़िया खाना खाएँगे और मौज-मस्ती करेंगे। अलसाता जोकर उठ गया। नन्हे सैनिकों की कतारें अपना बाजा बजाती हुई रसोई की तरफ चल पड़ीं। बूढ़ा साधु अपनी दाढ़ी लहराता चल पड़ा। नई-नवेली दुल्हन अपनी पायल छुनछुनाती उनके पीछे-पीछे बढ़ी। एक ने गरम-गरम पकौड़े तले तो दूसरे ने मक्खन में पराठे बनाए। प्लेटें सजीं। खाना परोसा गया। खाया गया। बरतन धुले। जो चीज जहाँ से उठाई गई थी, ठीक वहीं रख दी गई। फिर टोकरी में रखे हुए फल खाए गए। उसके बाद जमकर नाच-गाना हुआ। रात खत्म हुई। पौ फटनेवाली थी कि सब चेते। धमाधम बंद। दौड़े अपनी अलमारी की तरफ घुसकर अपनी-अपनी जगह जा सोए। नन्ही गुड़िया बिट्टो भी लपककर अपने बिस्तर में जा लेटी। सुबह हुई। घर में सब लोग उठे। रात के शोर-शराबे का उन्हें पता ही नहीं चला। किसी ने कहा, कितनी शांत रात थी। मनुष्य अपने आनंद का निर्माता स्वयं है।

११२९) नकल से ज्यादा अकल है जरूरी - अयोध्या में चूड़ामणि नाम का एक व्यक्ति रहता था। धन पाने की इच्छा से उसने बहुत दिनों तक भगवान की तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर एक रात धन देवता कुबेर ने उसे सपने में दर्शन दिए। उन्होंने कहा- सूर्योदय के समय तुम हाथ में लाठी लेकर घर के दरवाजे पर खड़े हो जाना। कुछ देर बाद तुम्हारे पास एक भिक्षुक आएगा। उसके हाथ में एक भिक्षा पात्र होगा। जैसे ही तुम उस भिक्षा पात्र में अपनी लाठी अड़ाओगे वह सोने में परिवर्तित हो जाएगा। उसे तुम अपने पास रख लेना। ऐसा दस दिन करने से तुम्हारे पास दस सोने के पात्र हो जाएंगे, जिससे तुम्हारी जीवन भर की दरिद्रता दूर हो जाएगी।

रोज सुबह उठकर चूड़ामणि वैसा ही करने लगा, जैसा कुबेर ने सपने में बताया था। एक दिन उसे ऐसा करते हुए पड़ोसी ने देख लिया। बस, उसी दिन चूड़ामणि का पड़ोसी नित्यप्रति किसी भिक्षुक की प्रतीक्षा में अपने घर के दरवाजे पर लाठी लिए खड़ा रहता। बहुत दिन बाद अंतत: एक भिक्षुक उसके दरवाजे पर भिक्षा मांगने आया। पड़ोसी ने भिक्षा पात्र पर डंडा छुआया, पर वह सोने में नहीं बदला। अंत में उसे गुस्सा आया और उसने आव देखा न ताव और भिक्षुक पर प्रहार करना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में भिक्षुक के प्राण पखेरु उड़ गए।

उसके इस कर्म की सूचना राजा तक पहुंची। राज कर्मचारी उसे गिरफ्तार कर राजा के सामने ले गए। अभियोग सिद्ध होने पर पड़ोसी को मृत्युदंड दिया गया।

११३०) किस तरह बनाया जा सकता है? दार्शनिक ने उत्तर दिया, पर्याप्त भोजन, अस्त्र-शस्त्र तथा जनता का विश्वास प्राप्त करके। शिष्य ने पुन: प्रश्न किया, यदि तीनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े, तो किसे छोड़ें? अस्त्र-शस्त्र को। दार्शनिक ने कहा। और यदि शेष दोनों में से एक का त्याग करना पड़े, तब? कन्फ्यूशियस गंभीर हो गए, ऐसी स्थिति में भोजन का त्याग करें। अनंत काल में मानव मृत्यु का ग्रास बनता आया है। भोजन के अभाव में कुछ लोग और मरेंगे। यदि जनता का विश्वास त्याग दें तो कैसा रहे? शिष्य बोला। दार्शनिक ने बिना एक क्षण सोचे उत्तर दिया, ऐसी स्थिति में सर्वनाश हो जाएगा। कोई भी शासन भोजन और अस्त्र-शस्त्र के अभाव में चल सकता है, किन्तु जन-विश्वास के समाप्त होने पर एक क्षण भी नहीं टिक सकता।

११३२) दोष निकालना आसान - एक कथा के अनुसार स्वर्ग में ज्यूपिटर (बृहस्पति) नेप्च्यून (वरुण) और मिनर्वा (ग्रीक मान्यता के अनुसार कला और ज्ञान की देवी) में यह शर्त लग गयी कि उनमें से कौन इस संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु बना सकता है। मोमस भी स्वर्ग में रहनेवाले एक देवता थे। उन्हें इस प्रतियोगिता का निर्णायक बनाया गया। ज्यूपिटर ने इंसान, मिनर्वा ने घर और नेप्च्युन ने सांड को बनाया। निर्णायक की सीट पर बैठे मोमस ने सभी रचनाओं में दोष निकालने शुरू कर दिए। सबसे पहले उसने सांड में यह दोष निकाला कि उसके सींग आंखों के नीचे नहीं हैं, जिससे वह उन्हें देख नहीं पाता। फिर उसने इंसान में यह दोष ढूंढा कि उसकी छाती में कोई खिड़की नहीं है जिससे उसके मन के विचार और भावनाएं दिखायी नहीं देती हैं। अंत में उसने घर में दोष निकाला कि इसमें पहिए नहीं लगे हैं। पहिए न हाने के कारण उसके निवासी उसे बुरे पड़ोसियों से दूर नहीं ले जा सकते। जैसे ही मोमस ने अपना निर्णय समाप्त किया, ज्यूपिटर ने उसे स्वर्ग से बाहर का रास्ता दिखा दिया और कहा कि किसी भी रचना में दोष निकालना बहुत आसान है। उसे दूसरों की रचना में तब तक दोष निकालने का हक नहीं है, जब तक वह स्वयं कोई अनूठी रचना न करे।

११३३) सच्चा दोस्त मिल ही गया - एक द्वीप था। वहाँ वोल्फ जाति के लोग रहते थे। उनमें एक व्यक्ति बड़ा पहुंचा हुआ पंडित था। नाम था कोथी। कोथी की विद्वत्ता चारों ओर फैली थी। लोग उसका आदर करते थे। वह अकसर कहा करता था, किसी के ढेर सारे दोस्त हो सकते हैं। किसी के सिर्फ एक हो सकता है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उसने माफल की कहानी सुनाई। माफल यह सच्चाई जानना चाहता था कि उसका दोस्त कौन है। एक शाम उसने अपने हर जिगरी दोस्त का दरवाजा खटखटाया और सबसे एक ही बात दोहराई, मैंने अभी-अभी राजा के बेटे का खून कर दिया है। सभी ने भय से उसके सामने ही दरवाजे बंद कर लिए। पर एक दोस्त ने उसका साथ दिया, चलो, दोनों भाग चलें। मैं तुम्हें एक ऐसी जगह छिपा दूंगा जहाँ किसी को भनक ही नहीं लग सकेगी। माफल को सच्चा दोस्त मिल गया।

११३४) खुशी देने में धन्यता - फूल और कांटा एक हरे-भरे उद्यान में आजू-बाजू पल रहे थे। एक दिन बातों बातों में कांटे ने फूल से कहा- मित्र, कितने कोमल और नाजुक हो तुम। शीत और ताप के हल्के झोंके भी सहन नहीं कर सकते। तुम आज इस डाल पर खिले हो, पर पता नहीं कल तक तुम यहां रहो या न रहो। एक-दो दिन खिलकर मुरझा

जाने की तुम्हारी इस क्षणभंगुरता पर मुझे तरस आता है। इधर मेरी ओर देखो। मैं कितने दिनों से आराम से यूं ही जी रहा हूं। कांटा आगे कहता ही गया, तुम्हारे कितने ही पूर्वजों को इसी डाली पर खिलते और मुरझा जाते मैंने देखा, पर मेरा अब तक कुछ भी नहीं बिगड़ा। जानते हो क्यों? ऐसा इसलिए, क्योंकि जो भी मेरे पास आता है, मेरे दंश से बचे बगैर नहीं रह पाता। इस वजह से लोग मुझसे भय खाते हैं और मुझे हाथ भी नहीं लगाते। दूसरी ओर तुम हो। तुम्हें जो चाहे तोड़ ले और मरोड़कर इधर-उधर फेंक दे। पर तुम इतने सीधे हो कि इसका प्रतिकार तक नहीं करते। यह सुनकर फूल थोड़ी देर चुप रहा और फिर बोला- बंधुवर, तुम्हारा कहना यथार्थ है। किंतु मैं क्या करूं। मुझे इस संसार में अपने जीने-मरने का कभी ख्याल ही नहीं आता। मुझे लगता है कि मेरे जरिए यदि किसी को खुशी मिलती है, तो समझ लो मेरा जीवन धन्य हो गया।

११३५) कुसंगत का असर - किसी नगर में एक तोता बेचने वाला आया। उसके पास दो पिंजरे थे। दोनों में एक-एक तोता था। तोते वाले ने एक तोते का मूल्य रखा था पचास रुपया तथा दूसरे का पाँच रुपया। संयोग की बात कि उस नगर के राजा की सवारी उधर से निकली। राजा ने तोते देखे तो दोनों तोते खरीद लिए। रात को जब राजा सोने लगा तो उसने अपने नौकर को आदेश दिया कि पचास रुपये वाले तोते का पिंजरा उसके पलंग के पास टाँग दिया जाए। फौरन आदेश का पालन हुआ। राजा सो गया। जैसे ही भोर हुई, तोते ने भजन गाना शुरू किया। फिर सुंदर-सुंदर श्लोक पढ़े। राजा बहुत प्रसन्न हुआ। अगले दिन राजा ने दूसरे पिंजरे को पास रखवाया। जैसे ही सवेरा हुआ, उस तोते ने गंदी-गंदी गालियाँ बकनी शुरू कर दीं। राजा की त्योरियाँ चढ़ गईं। उसने नौकर को आदेश दिया कि इस दुष्ट को तुरंत मार डालो। पहले तोते का पिंजरा भी पास ही रखा था। उसने राजा से प्रार्थना की, इसे मारिए मत। यह मेरा सगा भाई है। हम दोनों एक ही साथ जाल में फँसे थे। मुझे एक संत ने खरीद लिया। उनके यहाँ मैंने भजन सीखे। इसे एक चांडाल ने खरीदा, जहाँ इसने गालियाँ सीख लीं। इसका कोई दोष नहीं। यह तो संगत का असर है। संसार में ऐसे अपराध कम ही हैं, जिन्हें हम चाहें और क्षमा न कर सकें।

११३६) बापू का संदेश - डांडी कूच के ऐतिहासिक दिनों में गांधीजी अपने सहयोगियों के साथ रातभर चलते रहते थे या रुकने पर भी किसी न किसी काम में लग जाते थे। रात के लिए यात्रा के व्यवस्थापकों ने एक मजदूर रखा था जो गैस की बत्ती अपने सिर पर लेकर चलता था। एक दिन जब गांधी जी का उस पर ध्यान गया तो उन्हें उस पर बहुत दया आई। वह एक गांव में भाषण देते हुए बोले, मैंने देखा है कि आप लोगों ने रात के सफर के लिए एक भारी गैस बत्ती का प्रबंध किया है और उसे एक गरीब व्यक्ति अपने सिर पर एक तिपाई के ऊपर रखकर चलता है। सच कहूं तो यह एक लज्जाजनक दृश्य है। उस आदमी को तेज चलने के लिए विवश किया जा रहा है। रात में उस दृश्य को सहन नहीं कर सका। इसलिए मैंने चाल तेज की और सारे लोगों से आगे निकल गया, पर मेरा प्रयास बेकार हो गया। उस बेचारे को मेरे पीछे-पीछे दौड़ने को मजबूर किया गया। मेरी लज्जा की हद हो गई। अगर वह बोझा ले जाना ही है तो हम में से ही कोई उसे ले चलता। हालांकि सबसे अच्छा तो यह है कि हम तिपाई और बत्ती दोनों को ही धता बता दें। कोई मजदूर ऐसा बोझा अपने सिर पर क्यों ढोये। हम बेगार का विरोध करते हैं पर हम ही बेगार करा रहे हैं। अब इससे ज्यादा गलत बात और क्या हो सकती है। अगर हम जल्दी ही अपने तौर-तरीके नहीं सुधारेंगे तो हमने लोगों के सामने स्वराज की जो तस्वीर रखी

है, वैसा स्वराज संभव नहीं होगा। यह एक मजदूर का शोषण है। व्यक्ति को समान स्तर पर लाने के लिए उनको एक ही नजरिए से देखने की भावना हम सबके अंदर होनी चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं कर सकते तो हमारा स्वराज के लिए लड़ना ही बेकार है। सभी सहयोगियों ने ये बातें सुनी और गांधी जी से अपनी सहमति जताई।

११३७) लापरवाही का अंजाम - आशा के माता-पिता बहुत धनी थे। आशा के लिए अलग से एक कमरा था, मगर वह कभी अपना सामान तरतीब से नहीं रखती थी। उसकी माँ बार बार उसे समझाती; किन्तु उसकी आदत में कतई सुधार नहीं हुआ। इतवार का दिन था। आशा नये कपड़े पहन माँ के साथ बाहर जाने की तैयारी कर रही थी कि तभी पड़ोसी की एक बेटी पके आमों से भरी टोकरी लेकर आई। कमरे में सामान बेतरतीबी से रखे हुए थे, अत: आशा को आम की टोकरी रखने की भी जगह नहीं दिखाई दी। अंत में उसने टोकरी एक कुर्सी पर रख दी और माँ के साथ शहर जाने को निकल पड़ी। काफी रात गए वह माँ के साथ घर लौटी। काफी थक गई थी, अत: अपने कमरे में घुसकर जो भी कुर्सी नजर आई उसी पर पसर गई। मुश्किल से कुछ क्षण बीते होंगे कि वह चीखकर उठ खड़ी हुई। वह आमों की टोकरी के ऊपर बैठ गई थी। उसकी चीख सुन माँ हाथ में बत्ती लिए दौड़ी आई। माँ ने देखा- कुर्सी पर रखी आमों की टोकरी में आम पिचपिचा गए हैं। उनका रस कोनों से बहकर नीचे टपक रहा था। आशा की फ्रॉक बुरी तरह चिपचिपा रही थी। यह देखकर माँ ने संजीदा स्वर में कहा, शायद अब तुम्हारी समझ में आ गया होगा कि कमरे में चीजों को तरतीब से रखना कितना जरूरी है।

हमें अपने से बड़ों के कहे हुए पर तथा अच्छे विचारों पर अमल करना चाहिए।

११३८) महलों के सपने - एक चरवाहा मिट्टी की हाँडी में दूध भरकर गाँव में बेचने जा रहा था। उसने सोचा, यह दूध बेचकर मैं कुछ अंडे खरीद लूँगा। अंडों से बच्चे निकलेंगे। ये बच्चे बड़े होकर मुर्गी या मुर्गा बनेंगे। मुर्गियाँ फिर अंडे देंगी, फिर बच्चे पैदा होंगे। फिर मैं अंडों और मुर्गियों का व्यापार शुरू कर दूंगा। कुछ ही दिनों में मैं अमीर बन जाऊँगा। अपनी झोपड़ी छोड़ बड़ी सी कोठी में रहने चला जाऊंगा। वह यह सब सोच ही रहा था कि उसे सहसा ठोकर लगी। दूध की हाँडी जमीन पर गिर टुकड़े-टुकड़े हो गए। सारा दूध जमीन पर फैल गया। सपने कम देखने चाहिए और अमल करने के प्रयास ज्यादा करने चाहिए, वरना महलों के सपने में झोपड़ी भी गँवा दी जाती हैं।

११३९) उजाले की बिंदियां - लुई ब्रेल जब केवल तीन साल के थे, तभी उनके साथ एक दुर्घटना हुई। खेलते-खेलते उनकी आंखों में नुकीली वस्तु चली गई और वे नेत्रहीन हो गए। नन्हे बालक की आंखों की रोशनी नष्ट होने से पूरा परिवार चिंतित हो गया। लेकिन बालक लुई ब्रेल बेहद प्रतिभाशाली थे। वे अक्सर सोचते कि क्या कोई ऐसी तकनीक नहीं बनाई जा सकती, जिससे नेत्रहीन लोग भी पढ़ सकें। संयोगवश एक दिन उनकी मुलाकात फ्रांस की सेना के कैप्टन चार्ल्स बार्बियर से हुई। उन्होंने लुई ब्रेल को सैनिकों द्वारा अंधेरे में पढ़ी जानेवाली नाइट राइटिंग व सोनोग्राफी के बारे में बताया। ये लिपि उभरी हुई तथा १२ बिंदुओं पर आधारित थी।

यहीं से लुई ब्रेल को नेत्रहीनों के लिए एक नई लिपि खोजने का विचार आया। उन्होंने सैनिकों की उभरी हुई लिपि में संशोधन करके छह बिंदुओं वाली एक लिपि बनाई, जिसके माध्यम से नेत्रहीन सरलता से पढ़ सकते थे। इसमें उन्होंने चिन्हों को भी प्रदर्शित किया। इस लिपि के आविष्कार ने नेत्रहीन लोगों के जीवन में क्रांति ला दी। लुई ब्रेल ने अपनी

प्रतिभा से अपने साथ हुई दुर्घटना को कामयाबी की सीढ़ी बना लिया। इतना ही नहीं, उनकी इस सीढ़ी का उपयोग आज भी नेत्रहीन लोग करते हैं और कामयाब होकर अपने जीवन को सफल बनाते हैं।

लुई ब्रेल ने अपने विश्वास के बल पर हर बाधा को अपने मार्ग से हटा दिया। ४३ साल की अल्पायु में ही दृष्टिबाधित लोगों के जीवन में शिक्षा की ज्योति जलानेवाले ब्रेल के जीवन की लौ बुझ गई। उनके देहांत के बाद आज भी ब्रेल लिपि के माध्यम से उनके अद्भुत कृत्य और व्यक्तित्व की लौ अनेक नेत्रहीनों की आंखों में जल रही है और जलती रहेगी। लुई ब्रेल जैसे व्यक्तित्व स्वयं अंधकार में रहकर अपने संघर्ष और हौसलों से दूसरों के घरों को रोशन कर देते हैं।

११४०) सुहास, मास्टर जी और चॉकलेट - सुहास छठी कक्षा में पढ़ता था। एक दिन मास्टर साहब बोले। लालच बुरी बला है। हमें लालच से बचना चाहिए। सुहास बोला, मास्टर जी, आपने लालच के बारे में हमें इतनी कहानियां सुनाई, पर हम तो बच्चे हैं। इस उम्र में बच्चे थोड़े-बहुत लालची होते ही हैं। उम्र बढ़ने पर आदमी संभल जाता है। मास्टर जी बोले, लालच की कोई उम्र नहीं होती। लालची आदमी हमेशा लालची रहता है। सुहास बोला, पर हमें पता भी नहीं कि लालच होता क्या है। फिर हम लालच कैसे कर सकते हैं? मास्टर जी बोले, एक काम करो। पास में एक चॉकलेट फैक्टरी है। वहां जाओ और जो चॉकलेट तुम्हें सबसे ज्यादा पसंद हो, वह ले आओ। चॉकलेट के पैसे मैं दे दूंगा। पर शर्त यह है कि तुम एक ही चॉकलेट उठा सकते हो और एक बार आगे बढ़ गए, तो पीछे नहीं लौट सकते। सुहास भागता हुआ चॉकलेट की फैक्टरी में पहुंचा। वहां लाइन से एक से बढ़कर एक चॉकलेटें रखी थीं। घुसते ही पहले उसे लॉलीपॉप दिखी। उसने सोचा, यह तो मैं रोज खाता हूं। फिर उसे एक मिल्की बार दिखी। उसने सोचा, है तो यह अच्छी, पर क्या पता, आगे और भी अच्छी चॉकलेट हों। फिर वह आगे बढ़ा, तो उसे कुछ नई तरह की चॉकलेट दिखाई दी। पर पहले की तरह वह अपने मन को समझाकर आगे बढ़ गया। इस तरह उसने पूरी फैक्टरी घूम ली और और अंतिम द्वार पर पहुंच गया। सारी अच्छी चॉकलेट पीछे रह गई। वह मायूस होकर क्लास में लौटा। मास्टर जी ने पूछा, कौन-सी चॉकलेट ली? सुहास बोला, मास्टर जी मैं सारा समय यही सोचता रहा कि हो सकता है, आगे और अच्छी चॉकलेट मिल जाए। इस चक्कर में मैं कुछ नहीं ले पाया। मास्टर जी बोले, बेटा, इसी को लालच कहते हैं। जो हमारे सामने होता है, हम उसे यह कहकर अनदेखा कर देते हैं कि मेरे लिए तो इससे बड़ा कुछ नियत है। अक्सर बेहतर की तलाश में हम वह भी खो देते हैं, जो सामने होता है।

११४१) मनुष्य को ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ - बहुत पुरानी बात है। अफ्रीका के किसी भूभाग में अनानसी नामक एक व्यक्ति रहता था। पूरी दुनिया में वही सबसे बुद्धिमान मनुष्य था और सभी लोग उससे सलाह और मदद मांगने आते थे। एक दिन अनानसी किसी बात पर दूसरे मनुष्यों से नाराज हो गया और उसने उन्हें दंड देने की सोची। बहुत सोचने के बाद उसने तय किया कि वह सारा ज्ञान छुपा देगा ताकि कोई और मनुष्य ज्ञानी न बन सके। उसी दिन से उसने ज्ञान बटोरना शुरू कर दिया। उसने सारे ज्ञान को मिट्टी के एक मटके में बंद कर दिया। अनानसी का एक बेटा था जिसका नाम कवेकू था। कवेकू को लगा कि उसका पिता किसी संदिग्ध कार्य में लिप्त है। उसने अनानसी पर नजर रखनी शुरू कर दी। एक दिन उसने पिता को मटका लेकर दबे पांव झोपड़ी से बाहर जाते देखा। कवेकू ने पीछा किया। अनानसी गांव से दूर जंगल

में गया और उसने मटके को सुरक्षित रखने के लिए एक बहुत ऊंचा पेड़ खोज लिया।

अपना ज्ञान दूसरों में बंट जाने की आशंका से भयभीत अनानसी मटके को आंखों के सामने रखना चाहता था, इसलिए वह अपनी छाती पर मटके टांगकर पेड़ पर चढ़ने लगा। छाती पर मटका टांगकर पेड़ पर चढ़ना तो लगभग नामुमकिन ही था। उसने कई बार पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की, लेकिन वह जरा सा भी न चढ़ पाया। सामने की ओर मटका टंगा होने के कारण वह पेड़ को पकड़ नहीं पा रहा था। कुछ देर तक तो कवेकू अपने पिता को पेड़ पर चढ़ने का अनथक प्रयास करते देखता रहा। जब उससे रहा न गया तो वह चिल्लाकर बोला, पिताजी, आप मटके को अपनी पीठ पर क्यों नहीं टांगते? तब आप पेड़ पर आसानी से चढ़ पाएंगे।

अनानसी मुड़ा और बोला, मुझे तो लगता था कि मैंने दुनिया का सारा ज्ञान इस मटके में बंद कर लिया है। लेकिन तुम तो मुझसे भी ज्यादा ज्ञानी हो। मेरी सारी बुद्धि मुझे वह नहीं समझा पा रही थी जो तुम दूर बैठे ही जान रहे थे। उसे बहुत गुस्सा आया और क्रोध में उसने मटका जमीन पर पटक दिया। जमीन पर गिरते ही मटका टूट गया और उसमें बंद सारा ज्ञान उसमें से निकलकर पूरी दुनिया में फैल गया और सारे मनुष्य बुद्धिमान हो गए।

११४२) सफेद हाथी - बच्चों के हाथ से बने हस्तकला के कुछ नमूने बेचने के लिए एक महिला की दुकान पर रखे गए थे। अनन्या ने सोचा, मेरे साथी अपने को मुझसे अधिक कुशल समझते हैं। अगर मैं दुकान की मालकिन से जाकर पुछूं तो वह मुझे सच्चाई बताएंगी कि लोग किसके हाथों की बनी चीजें ज्यादा पसंद कर रहे हैं। वह उस दुकान पर गई। उसने एक गुड़िया की तरफ संकेत कर दाम पूछा, जो उसकी एक सहेली के हाथों बनी थी। यह मैं आपको किसी भी हालत में दस रुपये से नीचे नहीं दूंगी। मालकिन ने कहा। और यह? अनन्या ने दूसरी सहेली के हाथ के बने गुलदस्ते की तरफ संकेत किया। इसकी कीमत बीस रुपये है। यह इधर जो हाथी है, इसकी कीमत? अनन्या ने अपने हाथ से बने हाथी की तरफ संकेत किया। यह तो मैं तुम्हें मुफ्त उपहार के रूप में दे सकती हूं, अगर तुम पहले वाली दोनों चीजें खरीदो तो। अनन्या यह सुनकर शर्म से गड़ गई और अपनी ईर्ष्या भावना पर पछताने लगी। घमंड से आदमी फूल सकता है, फैल नहीं सकता।

११४३) होली का त्योहार - कहते हैं कि होली का रंग-रंगीला त्योहार होलिका दहन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। होलिका राक्षसराज हिरण्यकपिशु की बहन थी। हिरण्यकशिपु बड़ा अत्याचारी और अभिमानी राजा था। अपनी शक्ति के आगे वह किसी को कुछ नहीं समझता था, यहां तक कि ईश्वर को भी वह नहीं मानता था। उसने यह घोषणा की हुई थी कि उसके राज्य में कोई भी ईश्वर की पूजा नहीं कर सकता। ईश्वर की पूजा करनेवाले को वह जान से मरवा दिया करता था। लेकिन कहावत है कि अहंकार तो बड़े-बड़ों का नहीं रहा। स्वयं हिरण्यकशिपु का इकलौता पुत्र प्रह्लाद ईश्वर का परमभक्त था और हर समय भगवान कि भक्ति में लीन रहता था। जब अपने पिता के बार-बार समझाने और मना करने पर भी प्रल्हाद ने ईश्वर-भक्ति नहीं छोड़ी तो हिरण्यकपिशु ने उसे जान से मार डालने का निश्चय किया। उसने उसको पहाड़ से नीचे गिराया, पागल हाथी के पैरों तले कुचलवाना चाहा; लेकिन प्रह्लाद को एक खरोंच भी नहीं आई। होलिका प्रह्लाद की बुआ थी। उसे यह वरदान प्राप्त था कि वह आग में नहीं जलेगी। वह प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई। लेकिन

हुआ उलटा ही। जब आग शांत हुई तो लोगों ने देखा कि होलिका तो जलकर राख हो गई, परंतु भक्त प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हुआ। कहते हैं कि तभी से पाप पर पुण्य की, असत्य पर सत्य की विजय के प्रतीकस्वरूप होली का अनोखा पर्व मनाया जाता है। भारी तलवार कोमल रेशम को नहीं काट सकती।

११४४) ऐसे खोजिए सच्चा दोस्त - विश्व के सबसे अमीर लोगों में से एक हेनरी फोर्ड जब अपनी कीर्ति और कमाई की ऊंचाइयों तक पहुंच गए, तो एक पत्रकार ने उनसे पूछा- सर, आप एक सफल व्यक्ति हैं। क्या आपको अपने जीवन में कोई कमी महसूस होती है? हेनरी फोर्ड बोले- मेरे पास सब कुछ है, लेकिन मेरा कोई सच्चा दोस्त नहीं है। यदि मुझे फिर से जीवन शुरू करना हो, तो मैं सबसे पहले मित्रों की तलाश शुरू करूंगा। इसके लिए मुझे सारा धन ही क्यों न खर्च कर देना पड़े। इस बीच उस पत्रकार ने कहा- तब आपको दोस्त तो कई मिल जाएंगे, लेकिन सच्चा दोस्त मिलना फिर भी मुश्किल होगा। हेनरी ने पूछा- ऐसा क्यों? तब उस पत्रकार ने कहा- क्योंकि आप केवल धन बांटने को तैयार हैं। यश बांटने को नहीं। इस दुनिया में अहंकार को मिटाए बिना संसार की भले ही सारी नियामतें मिल जाएं, लेकिन सच्चा दोस्त कभी नहीं मिल सकता। अगर किसी में यह नहीं है, तो वही आपका सच्चा दोस्त बन सकता है।

हेनरी को अपनी बात पर बहुत शर्मिंदा होना पड़ा। उन्होंने माना कि उसके बुढ़ापे में ऐसा कोई दोस्त नहीं है, जिसके साथ बैठकर वह व्यक्तिगत, साहित्य, राजनीति आदि समस्याओं के बारे में खुलकर बात कर सकें।

११४५) एक डॉक्टर का अनोखा प्रयोग - एक अनाथ व निर्धन छात्र एक प्रसिद्ध डॉक्टर के पास जाकर बोला- डॉ. साहब, मेरे पेट में पथरी है, आप शल्यचिकित्सा कर दीजिए। जांच करने के बाद चिकित्सक ने कहा- शल्यचिकित्सा में दो हजार रुपए खर्च होंगे। आप रुपए जमा करा दीजिए। छात्र ने कहा- डॉ. साहब मैं बहुत गरीब हूं और बेरोजगार भी, जल्दी ही मुझे नौकरी मिलने की संभावना है। नौकरी लगने के बाद मैं आपको पूरा पैसा ब्याज सहित लौटा दूंगा। चिकित्सक के सामने से यह प्रस्ताव बिलकुल नया था। उसने शल्यचिकित्सा किया और छात्र ठीक हो गया। लगभग दो साल बाद चिकित्सक को कृतज्ञता ज्ञापन के पत्र के साथ ही उस लड़के का दो हजार दो सौ पचास रुपए का बैंक ड्राफ्ट मिला। चिकित्सक की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। चिकित्सक ने तुरंत ही एक हजार रुपए का ड्राफ्ट बनवाया और उसे उस लड़के को भेजा। पत्र में लिखा, इस रक्कम को बैंक में जमा करवा देना। तुम्हारा भविष्य सुरक्षित रहे।

११४६) लोभ से आशाएं बढ़ती हैं, लेकिन इंसान के हाथ कुछ नहीं लगता - ईसा मसीह अपने शिष्यों के साथ धर्म-प्रचार के लिए यात्रा कर रहे थे। रास्ते में रेगिस्तान पड़ा। कोई भी घर दिखाई न देने पर भोजन की समस्या सामने आई। ईसा बोले- जो कुछ तुम लोगों के पास है, उसे इकट्ठा करो और सब मिल बांट कर खा लो। शिष्यों के पास कुल पांच रोटियां थीं और सब्जी के मात्र दो टुकड़े। शिष्यों ने भरपेट खाया और जो भूखे भिखारी उधर से निकले, उन्हें भी उसमें से कुछ हिस्सा दे दिया। यह दृश्य देखकर सोलोमन नाम के एक शिष्य ने पूछा- गुरुवर। इतनी कम सामग्री में लोगों की तृप्ति का रहस्य क्या है? ईसा ने कहा- धर्मात्मा वही है, जो स्वयं का नहीं, सबकी सोचता है। अपनी बचत सबके काम आए, इसी विचार से तुम्हारी पांच रोटियां और थोड़ी-सी तरकारी अक्षर और अन्नपूर्णा हो गई। जो जोड़ते रहेंगे, वे हमेशा भूखे रहेंगे, जिन्होंने देना सीखा है, उनके लिए तृप्ति के साधन अपने आप जुट जाते हैं। शिष्यों ने संकल्प किया कि वे एक

रोटी होने पर भी उसे मिल बांट कर खाएंगे।

११४७) जो चाहेंगे पा लेंगे, इसके लिए बस आपकी मानसिक तैयारी जरूरी है - एक डाकू एक संत के पास आया और बोला, महाराज। मैं जीवन से परेशान हो गया हूं। जाने कितनों को लूटकर दुखी किया है, घरों का तबाह किया है। मुझे कोई रास्ता बताइए, जिससे मैं इस बुराई से बच सकूं। संत ने बड़े प्रेम से कहा, बुराई करना छोड़ दो, उससे बच जाओगे। डाकू ने कहा, अच्छी बात है। मैं कोशिश करूंगा। डाकू चला गया। कुछ दिनों के बाद वह फिर लौट आया और बोला, मैंने बुराई छोड़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन छोड़ नहीं पाया। मैं अपनी आदत से लाचार हूं। मुझे कोई दूसरा उपाय बताइए। संत ने थोड़ी देर सोचा, फिर बोले, अच्छा, ऐसा करो कि तुम्हारे मन में जो भी बात उठे, उसे कर डालो, लेकिन प्रतिदिन उसे दूसरे लोगों से कह दो। यह सुनकर डाकू को बहुत खुशी हुई। उसने सोचा कि इतने बड़े संत ने जो मन में आए, सो कर डालने की आज्ञा दे दी है। अब वह बेधड़क डाका डालेगा और दूसरों से कह देगा। वह उनके चरण छूकर लौट गया। कुछ दिनों के बाद वह फिर संत के पास आया और बोला, आपने मुझे जो समझा था, लेकिन वह बड़ा कठिन निकला। बुरा काम करना जितना मुश्किल है, उससे कहीं मुश्किल है दूसरों के सामने अपनी बुराइयों को कह पाना। मुझसे यह नहीं हो पाएगा। अब मैंने डाका डालना ही छोड़ दिया है। यह सुनकर संत बहुत प्रसन्न हुए।

११४८) धर्म की बुनियाद - एक संत भाषण दे रहे थे। उन्होंने लोगों से पूछा, अगर मैं आप लोगों को कोई हुक्म दूं तो क्या आप लोग उस हुक्म को मानेंगे? जी नहीं। एक महिला बोल उठी। संत ने पूछा, क्यों? महिला बोली, आप इतना लंबा चोंगा पहने हुए हैं, लेकिन मेरे पति का चोंगा घुटने तक भी नहीं आता। इससे साफ जाहिर है कि आपने शाही भंडार से अपने हिस्से से ज्यादा कपड़ा लिया है। महिला की यह बात सुनकर संत ने कहा, मैं नहीं जानता, यह कैसे हुआ। मेरा शिष्य इसका जवाब देगा। संत के इशारे पर शिष्य आगे आया। बोला, संत ने कपड़ा ज्यादा नहीं लिया बल्कि मैंने अपने हिस्से का कपड़ा उन्हें दे दिया है। तभी उनका चोंगा इतना लंबा हो सका है। लोगों का सिर संत के सामने श्रद्धा से झुक गया। संत पुरुष सिर्फ कोरे उपदेश नहीं देते, उनका आचरण भी करते हैं।

११४९) जिसने अपने आनंद पर शर्त लगाई वह कभी आनंदित नहीं हो सका - एक दिन एक उदास पति-पत्नी संत फरीद के पास पहुंचे। उन्होंने विनय के स्वर में कहा, बाबा, दुनिया के कोने-कोने से लोग आपके पास आते हैं, वे आपसे खुशियां लेकर लौटते हैं। आप किसी को भी निराश नहीं करते। मेरे जीवन में भी बहुत दुख हैं। मुझे उनसे मुक्त कीजिए। फरीद ने देखा, सोचा और झटके से झोपड़े के सामनेवाले खंभे के पास जा पहुंचे। फिर खंभे को दोनों हाथों से पकड़कर बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगे।

शोर सुनकर सारा गांव इकट्ठा हो गया। लोगों ने पूछा कि क्या हुआ तो बाबा ने कहा- इस खंभे ने मुझे पकड़ लिया है, छोड़ नहीं रहा है। लोग हैरानी से देखने लगे। एक बुजुर्ग ने हिम्मत कर कहा- बाबा, सारी दुनिया आपसे समझ लेने आती है और आप है कि खुद ऐसी नासमझी कर रहे हैं। खंभे ने कहां आपको, यह तो आपने ही खंभे को पकड़ रखा है। फरीद खंभे को छोड़ते हुए बोले, यही बात तो तुम सबको समझाना चाहता हूं कि दुख ने तुम्हें नहीं, तुमने ही दुखों को पकड़ रखा है। तुम छोड़ दो तो ये अपने आप छूट जाएंगे।

११५०) टॉफी नाम की गिलहरी - धूप से बचने के लिए टॉफी नामक एक गिलहरी दादाजी के बाग में बादाम के पेड़ की खोह में छिप गई। पूरे दिन वह खोह में छुपी सोती रहती। बस खाने भर के लिए उठती। पेड़ के बादाम ही उसका भोजन था। एक सुबह उसने देखा कि दादाजी सेबों से भरी टोकरी गोदाम से निकालकर लिए जा रहे हैं। अब वह अक्सर उन्हें गोदाम से कभी सेब तो कभी आलू भर-भरकर ले जाता देखती। बेचारी टॉफी का जी ललचाने लगा, मगर वह मन मारकर रह जाती। इधर बादाम भी पेड़ पर खत्म हो रहे थे। चोरी करना बुरी बात है, यही सोच उसने गोदाम से कुछ नहीं चुराया। दादाजी ने कई बार उस गिलहरी को देखा था और वह यह भी देख रहे थे कि पेड़ के बादाम खत्म हो रहे हैं। उन्हें नन्ही गिलहरी पर दया आई, क्योंकि वह चाहती तो अन्य पेड़ों के फल भी खाकर नष्ट कर सकती थी, मगर गिलहरी बड़ी ईमानदार थी। दादाजी ने अब रोज कुछ सेब और आलू उसके लिए रखना शुरू कर दिया। गिलहरी बहुत खुश हुई। अब वह जैसे ही दादाजी को देखती मस्त हो फुदकना शुरू कर देती। दादाजी भी उसका नाच देख खुश हो जाते। आनंद बढ़ता है ज्ञान के साथ, सदगुणों के साथ।

११५१) सूरज और वर्षा - अनवरत वर्षा और घोर अंधेरे से दु:खी होकर बच्चों की टोली आपस में तर्क करने लगी, कितना अच्छा हो, अगर सूरज हमेशा चमकता रहे। उनकी इच्छा शीघ्र पूरी हुई। सूरज उगा और लगातार कई महीनों तक चमकता रहा। बादल का कोई एक छोटा सा टुकड़ा भी आसमान में दिखाई नहीं दिया। भीषण गर्मी से खेत-खलिहान और पेड़-पौधे सूख गए। धरती सूखकर चटक गई। कहीं कोई हरियाली नहीं बची। तभी बच्चों की मां ने समझाया, देखो। बरसात भी उतनी ही जरूरी है जितना कि सूरज। एक-दूसरे के बिना सब अधूरा है। भगवान की इस व्यवस्था से तुम शिक्षा ग्रहण करो। आदमी पर भी यह लागू होती है। जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए दु:ख और सुख दोनों ही आवश्यक हैं। जब तक दु:ख से नहीं गुजरोगे, सुख का सही अनुभव नहीं कर सकोगे। हर पक्ष का अपना महत्व होता है।

११५२) लकड़ी की चिप्पी - सर्दी की एक शाम को एक क्लर्क रुपयों की गड्डियां लेकर जा रहा था, तभी उस पर किसी ने हमला कर दिया। रुपये छीन लिए और उसे मार डाला। खून की धारा बहकर बर्फ पर जम गई। सुबह मालिक घटनास्थल का मुआयना करने गए। तभी उन्हें लकड़ी की एक चिप्पी पड़ी दिखाई दी। चुपचाप चिप्पी उठाकर उन्होंने जेब में डाल ली। दूसरे दिन सुबह जब वे अपने दफ्तर पहुंचे तो यह देखकर चकित रह गए कि जो छड़ी उनका दूसरा क्लर्क उपयोग करता है, उसकी एक जगह से चिप्पी निकली हुई है। उन्होंने पाई हुई चिप्पी जेब से निकाली और उसी जगह पर लगाकर देखा तो पाया कि वह वहां पर एकदम फिट बैठती है। सारा माजरा उनकी समझ में आ गया। उन्होंने फौरन क्लर्क को कैद कर लेने की आज्ञा दी और उसे जेल में डलवा दिया। लोगों को जब इस घटना की जानकारी हुई तो वे हैरान रह गए कि लकड़ी की एक छोटी सी चिप्पी ने हत्यारे को कैसे रंगे हाथों पकड़वाया। कर बुरा तो हो बुरा।

११५३) हंसानेवाले से बड़ा दुनिया में दूसरा कोई हकीम नहीं होता - गांधीजी जब गोलमेज सम्मेलन में लंदन गए तो उनसे बहुत से लोग मिलने आए। उसमें से एक थे चार्ली चैपलिन। गांधीजी उनके काम को नहीं जानते थे, तो उन्होंने पूछा कि आप क्या करते हैं? चार्ली ने कहा कि फिल्म बनाते हैं और उसमें एक्टिंग करते हैं। गांधीजी ने सलाह दी कि ऐसी फिल्म बनाइए जिनमें रंग भेद, हिंसा और साम्राज्यवाद के विरुद्ध विचार हों। चार्ली ने कहा कि हम ऐसा ही करते हैं मगर

हंसाते हुए, आंसुओं को हम पी जाते हैं। मेरे दर्शकों के होंठों पर मुस्कान होती है और आंखों में आंसू। गांधी मुस्कुरा दिए, जो चार्ली के लिए किसी प्रसाद से कम नहीं था।

अब एक बार चार्ली के जीवन की तहों को खोलिए तो अंदाजा हो जाएगा कि कैसे आंसू और मुस्कान साथ रहकर टूटते दिल को जालिम के खिलाफ मजबूत करते हैं। नफरत के विरुद्ध पनपी नफरत अपने आप में एक बड़ी समस्या हैं। जब हाहाकार से हृदय बार-बार डोल रहा हो कि अब सब्र नहीं किया जा सकता, तब चार्ली की फिल्म देखिए। उसमें वही दर्शन छिपा है, जो आपको हल्का कर देता है। चुप रहकर, हाव-भाव से दर्द को बयान करनेवाले चार्ली का अंदाज हमें अपनाना चाहिए।

११५४) मठ और मंदिरों में नहीं, हमारे ही हृदय के एक कोने में बैठा है ईश्वर - एक नगर था। उसमें एक धनाढ्य परिवार रहता था। दादा-दादी, माता-पिता और उनका जवान बेटा। नित्य विधि-विधान से ईश्वर की पूजा करते, रविवार को हवन करके मंदिरों में दान-दक्षिणा देते। घर में सुख के सभी साधन थे, पर परिवार के उस इकलौते वारिस का मन सदा व्याकुल रहता। उस नगर से थोड़ी ही दूर एक छोटा सा आश्रम था। उसमें एक संत रहते थे। पिता ने निर्णय लिया कि पुत्र के अंतर्मन में सुख के कपाट खोलने के लिए वे उसे संत की शरण में ले जाएंगे।

अगले दिन पौ फटते ही पिता-पुत्र संत की कुटिया पर पहुंच गए। संत ने उनके आने का कारण पूछा। पिता ने पूरी बात कह सुनाई। संत युवक की ओर मुड़े, बोले, तुम्हीं बताओ वत्स, तुम्हारा मन किस बात से विचलित है? युवक बोला, महाराज, जबसे मैंने होश संभाला है, घर में पूजा-पाठ के स्वर सुनता आया हूं। फिर भी मैं ईश्वरीय अंतर्बोध पाने के लिए तरस रहा हूं। आप उसका रास्ता बताएं। यह सुन संत मुस्कराए, बोले, बेटा, तुमने तो बहुत बड़ी बात कह दी। यह राह तो तुम्हें स्वयं तलाशनी होगी। यह अंतर्बोध तो आत्म अनुभूति से ही हो सकता है। बिना सोच-विचार किए गए धार्मिक अनुष्ठान, तीर्थ, पूजा-पाठ, यज्ञ आदि से हम ईश्वर को कदापि नहीं जान सकते। कर्मकांड तो मात्र उसे मानने तक सीमित हैं, उसे जानने का साधन नहीं।

११५५) एक व्यापारी था जो सदा अपने व्यवसाय के बारे में बोलता रहता था। एक बार वह अस्पताल में अपने मित्र को देखने गया और पूछा, कैसे हो? मित्र ने कहा, कुछ ठीक नहीं, प्रतिदिन स्थिति और बिगड़ी हुई मालूम होती है। व्यापारी का, वास्तव में, ध्यान कहीं और था। उसे लगा उसके मित्र ने कहा है कि सब कुछ ठीक-ठाक है, तो यह बोला, बहुत अच्छे, तुम कौन सी दवाएं ले रहे हो? मित्र ने झल्लाकर कहा, मैं जहर ले रहा हूं। अब भी व्यापारी ध्यान से नहीं सुन रहा था और बोला, अरे वाह। बढ़िया दवा है। तुम्हारा डॉक्टर कौन है? अब मित्र से रहा न गया और क्रोधपूर्वक बोला, यमराज मेरा डॉक्टर है। व्यापारी ने कहा, ओहो, वह बहुत ही अच्छा है। तुम सही व्यक्ति के पास हो। अब मित्र महोदय के क्रोध का पारावार न रहा, उसने अपनी आइवी ट्यूब निकाल कर फेंक दी और लगा व्यापारी का गला घोंटने। यदि हम अच्छे श्रोता नहीं बनेंगे, तो हमारा भी यही हाल होनेवाला है। श्रवण एक कला है और हमें इसे सीखना ही चाहिए।

११५६) क्रोध की आग - एक संत के शिष्य की शिक्षा पूरी हो गई। जाने से पहले संत ने उसकी सभी तरह से परीक्षा ली, किंतु एक महत्वपूर्ण परीक्षा बाकी रह गई थी। जब शिष्य ने जाने की आज्ञा मांगी तो संत ने उसे कुछ और दिन रुकने

के लिए कहा। शिष्य रुककर संत की सेवा करता रहा। एक दिन संत ने कुटिया में धूनी जलाकर रख दी और कुछ देर बाद शिष्य से कहा, पुत्र, देखो तो धूनी में कुछ आग है। मुझे थोड़ी आग चाहिए। जरा धूनी में से निकाल कर दे दो। शिष्य ने आग कुरेद कर कहा, गुरुजी, इसमें तो आग नहीं है। मैं आपको कहीं और से आग लाकर देता हूं। संत बोले, नहीं पुत्र, कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं है। मुझे तो इस धूनी में अग्नि के दर्शन हो रहे हैं। तुम मुझे इसी में से अग्नि निकाल कर दो। शिष्य ने फिर धूनी को कुरेदा। किंतु धूनी तो बिल्कुल बुझ चुकी थी। शिष्य विनम्रतापूर्वक बोला, नहीं गुरुजी अब तो इसमें तनिक भी अग्नि नहीं है। लेकिन संत बार-बार यही दोहराते रहे कि थोड़ी अग्नि तो है और शिष्य हर बार विनम्रता से मना करता रहा। यह क्रम पचास बार चला। अंत में संत ने शिष्य को गले से लगाते हुए कहा, तुम आखिरी परीक्षा में भी उत्तीर्ण हुए। मैं तो यह जांच रहा था कि क्या तुम्हारे भीतर अब भी क्रोध की थोड़ी आग बची हुई है? मगर तुमने उस पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है। संत ने शिष्य को आशीर्वाद देकर विदा किया।

११५७) ईमानदारी है जीवन का सत्य - एक लकड़हारा जो लकड़ियाँ काटने जंगल में जाया करता था और उसके पास एक लकड़ी की कुल्हाड़ी थी जो एक दिन नदी में गिर गयी। लकड़हारा बहुत घबरा गया और भगवान से प्रार्थना करने लगा कि उसकी कुल्हाड़ी उसे वापस लौटा दें क्योंकि उसी के जरिये वो अपनी जीविका चला पाता था। ऐसा सुनकर नदी में से एक देवी अपने हाथ में सोने, चांदी और लकड़ी से बनी तीन कुल्हाड़ियां लेकर बाहर आयी और उन्होंने उस लकड़हारे से अपनी कुल्हाड़ी चुनने को कहा। लकड़हारा ईमानदार था इसलिए उसने सोने और चांदी की कुल्हाड़ियों को चुनने के बजाय अपनी साधारण सी लकड़ी की कुल्हाड़ी ही चुनी। उसकी इस ईमानदारी से जल की देवी बहुत प्रसन्न हुई और उन्होंने लकड़हारे को तीनों ही कुल्हाड़ियाँ भेंट कर दी। इस कहानी का सार आज भी वही है जो आपके बचपन में हुआ करता था यानी ईमानदारी इन्सान का सर्वश्रेष्ठ गुण है।

११५८) संयम का पाठ - महादेव गोविंद रानाडे के घर एक दिन उनके किसी मित्र ने आम भेजे। रानाडे की पत्नी रमाबाई ने आम धोकर रानाडे के पास खाने के लिए रखे। रानाडे ने एक-दो टुकड़े खाकर उनके स्वाद की प्रशंसा की और कहा, इसे तुम भी खाकर देखो और सेवकों को भी दो। रमाबाई को आश्चर्य हुआ कि उनके पतिदेव ने आम के केवल एक दो टुकड़े ही खाए। उन्होंने पूछा, आपका स्वास्थ्य तो ठीक है? रानाडे बोले, तुम सोच रही होगी कि आम स्वादिष्ट हैं तो फिर मैंने ज्यादा क्यों नहीं खाए? दरअसल ये मुझे बहुत स्वादिष्ट लगे इसलिए मैं अधिक नहीं ले रहा। पति की यह अजीब बात रमाबाई को समझ में नहीं आई। रानाडे बोले, बचपन में मेरे पड़ोस में एक महिला रहती थी। वह पहले काफी संपन्न थी किंतु दुर्भाग्य से उसकी सारी संपत्ति चली गई। किसी प्रकार उसका और उसके पुत्र का पालन-पोषण हो सके, इतनी ही आय उसके पास बची। वह कई बार जब अकेली होती, तब अपने आप से कहती, मेरी जीभ बहुत चटोरी है। इसे बहुत समझाती हूं कि अब चार-छह साग मिलने के दिन गए। कई प्रकार की मिठाइयां अब दुर्लभ हैं। पकवानों को याद करने से कोई लाभ नहीं, फिर भी मेरी जीभ नहीं मानती, जबकि मेरा बेटा रूखी-सूखी खाकर पेट भर लेता है। उस महिला की बात सुनकर तभी से मैंने नियम बना लिया कि जीभ जिस वस्तु को पसंद करे, उसे थोड़ा ही खाना है। अपनी जरूरतों को कम रखने से जहां सुख के दिनों में आनंद रहता है, वहीं दुख के दिनों में भी कष्ट नहीं होता।

११५९) दान वही जो दूसरों को समर्थ बनाए - सेठजी हमेशा की तरह एक घंटे की पूजा की समाप्ति के बाद मंदिर के बाहर आए। चाल में अमीरों वाला रौबीलापन और चेहरे पर दान कर्त्ता होने का गर्व। जैसे साक्षात भगवान लोगों का दु:ख दूर करने उतर आये हों। मंदिर के बाहर भिखारियों की लंबी कतार लगी थी।

सभी बड़ी आशा से सेठ जी की तरफ देख रहे थे। भिखारियों की उसी लंबी कतार में एक ऐसा भी आदमी खड़ा था जो भिखारी नहीं लगता था। उसकी आंखों में आत्मविश्वास और खुद्दारी झलक रही थी। सेठजी के साथ में कई पुश्तों से सभी धंधों का हिसाब किताब रखते आए बूढ़े मुनीम भी थे। जो हाथ में पचास के नोटों की गड्डी लिए थे। बूढ़े मुनीम ने खड़े-खड़े हिसाब लगा लिया था कि कोई १०० भिखारी होंगे। उस हिसाब से सेठ जी ५००० रुपए तो हर हफ्ते बांट ही देते हैं। अत: उतने में काम हो जाएगा। मन ही मन हिसाब लगाकर मुनीम बहुत खुश हुआ। हमेशा की तरह आगे-आगे सेठजी भिखारियों तक बढ़ रहे थे। उनके साथ चल रहा मुनीम पचास की गड्डी में से एक-एक नोट सेठ जी को देता था। जिन्हें सेठ जी भिखारियों को बांटते जा रहे थे।

सेठ जी भिखारियों की दुआओं से अभिभूत हुए जा रहे थे। फिर सेठ जी आंखों में आत्मविश्वास और खुद्दारी लिए एक आदमी के पास पहुंचे। उसे पचास का नोट पकड़ाया तो उस आदमी ने हाथ पीछे करके जोड़ते हुए कहा- सेठजी मुझे भीख नहीं चाहिए। मुझे कुछ रुपए उधार दे दें। बड़ी मेहरबानी होगी। सिर्फ ५००० रुपये से मेरा काम हो जाएगा। मुझ पर यह उपकार कर दीजिए। उधार का नाम सुनते ही सेठजी के चेहरे के भाव बदल गए थे। उनके चेहरे से धर्मात्मा और दानवीर होने का मुखौटा उतर चुका था। अब वो पूरे सेठ लगने लगे थे। बोले- उधार चाहिए। कैसे देगा वापस? मालिक मेहनत करूंगा, साइकिल लूंगा, गांव से सब्जी लाकर यहां बेचूंगा। अपना परिवार पालूंगा और कुछ ही महीनों में आपका पैसा भी लौटा दूंगा। सेठजी लगभग उसे दुत्कारते हुए आगे बढ़ गए। लेकिन मुनीम जी कुछ अटक गए थे। उनकी पारखी नजरों में उस युवक की आंखों में सच्चाई का हिसाब-किताब नजर आया। सेठजी के साथ गाड़ी में बैठे तो बड़ी हिम्मत करके बोले- मालिक, दे देना था न उस गरीब को रुपया। पागल हो गए हो क्या मुनीम जी। अगर वो भाग जाता और नहीं देता वापस तो? मुनीम ने बड़े धीरे से कहा- पर मालिक, ऐसा आदमी लगता तो न था। और नहीं भी देता तो समझो की एक हफ्ता हमने दान नहीं किया या किसी एक ही भिखारी को दे दिया।

शायद कुछ उसका भला करके हमें पुण्य ही मिलता। बेचारा मेहनत करने को ही तो कहा था। ये मंदिर के बाहर के भिखारी तो सालों से बस आप जैसे सेठों के पैसे पे ऐश करते फिरते हैं, न काम न मेहनत। कभी आपने शाम के वक्त इन्हें देखा है। सब पासवाली देसी कलाली के बाहर दिखाई देते हैं नशे में धुत्त। और रात को...

सेठ जी को गुस्सा तो बहुत आया। कहने को बात सच थी। बोले- मुनीम जी, आप वाकई हिसाब में बहुत कच्चे हैं। इन्हीं गरीबों की दुआओं से तो हमारे पुण्यों का हिसाब बराबर होता है। अब यूं हर किसी की मदद करने लगे तो यहां मंदिर के बाहर लाइन कैसे लगेगी? हमें दुआएं कौन देगा? ५००० रुपये में हजारों हुआएं, वो भी हर हफ्ते। यह कथा सेठ जी की भावना को सामने रखती है। लेकिन दान करनेवाला अगर प्रतिदान में असहायों की ही दुआ चाहता है तो उसका दान सफल नहीं कहा जा सकता। सेठ जी अगर उस मेहनत करनेवाले इंसान की मदद करते तो उनका दान सफल हो जाता।

असमर्थ को समर्थ बनाना ही सही नजरिए से दान करना है।

११६०) संत महापुरुष प्रेरणा देते हैं कि हम संघर्ष करना न छोड़ें - एक पुरानी कथा है- जब प्रभु ने इंसान को पैदा करना चाहा तो उसने सब फरिश्तों को अपने पास बुलाया और उनसे सलाह ली। प्रभु अपने सिंहासन पर बैठ गए और फरिश्ते उनके चारों तरफ खड़े हो गए। एक-एक करके, प्रभु ने उनसे उनका विचार पूछा। न्याय के फरिश्ते ने कहा, भगवन्, इंसानों को पैदा न करें। अगर आप ऐसा करेंगे, तो वे एक-दूसरे के साथ हर तरह के पाप करेंगे। वे दुष्ट होंगे, स्वार्थी होंगे, हिंसक होंगे और अनुचित कार्य करेंगे। सच्चाई का फरिश्ता बोला, इंसानों को पैदा मत करो। वे एक-दूसरे से झूठ बोलेंगे, धोखा देंगे और चोरी करेंगे। हे प्रभु, वास्तव में वे आपसे भी झूठ बोलेंगे और धोखा देंगे। पवित्रता के फरिश्ते ने कहा, इंसानों को पैदा मत करो। हे प्रभु, वे अनेक अपवित्र कार्य करेंगे और आपके नाम को बदनाम कर देंगे। अंत में प्रभु दया के फरिश्ते की ओर मुड़े और उससे पूछा, तुम्हारा विचार क्या है? उसने कहा, हे प्रभु। आप अपना कार्य करें और इंसान को पैदा करते रहें। जब भी वे पाप करेंगे और सच्चाई, पवित्रता व न्याय के आध्यात्मिक मार्ग से भटकेंगे, मैं उन्हें अपनी बांहों में ले लूंगा। उनसे मधुर वचन बोलूंगा और उन्हें आपके पास ले आऊंगा। यह कहानी हमारे जीवन में संतों-महापुरुषों-सत्गुरुओं और जागृत पुरुषों की भूमिका को दर्शाती है।

११६१) प्रतिभा का सम्मान - एक राजा को चित्रकारी का बहुत शौक था। वह अपने राज्य के योग्य चित्रकारों को समय-समय पर सम्मानित भी करता रहता था। एक बार राजा ने एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन रखा और दूर-दूर से मशहूर चित्रकारों को आमंत्रित किया। अनेक चित्रकार निर्धारित स्थल पर पहुंचने लगे। राजा ने सभी चित्रकारों को यथोचित सम्मान व स्थान देकर उन्हें ठहराया। एक चित्रकार बेहद गरीब सा दिख रहा था। वह फटे-पुराने मगर स्वच्छ वस्त्र पहने था। राजा ने उसे एक नजर देखा, फिर अनदेखा कर दिया। नियत समय पर प्रतियोगिता आरंभ हो गई। निर्णय करते समय तीन श्रेष्ठ चित्रों को चुना गया। अंत में निर्णायकों द्वारा उन तीन में से सर्वश्रेष्ठ चित्र को पुरस्कार देने की घोषणा की गई। पुरस्कृत चित्र के चित्रकार का नाम पुकारे जाने पर वही गरीब चित्रकार मंच पर आया। उसे देखकर राजा ने पुरस्कार दिया और कुछ दिन के लिए राजमहल में ठहरने का निवेदन किया। कुछ दिन राजमहल में बिता कर जब चित्रकार लौटने लगा तो राजा ने उसे बहुमूल्य उपहार दिए और उससे बहुत ही विनम्रता से पेश आया। यह देखकर चित्रकार बोला, महाराज, जब मैं प्रारंभ में आपके पास आया था तो आपने मुझे देखकर भी अनदेखा कर दिया था, किंतु आज आप मेरे साथ बहुत ही सम्मानपूर्वक पेश आ रहे हैं। आखिर आपके व्यवहार में यह बदलाव क्यों? उसकी बात पर राजा मुस्कुराया फिर बोला, जब आप प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आए थे तो आप मेरे लिए अनजान थे और साथ ही मैं आपकी प्रतिभा से भी अनजान था। तो आपकी वेशभूषा और रुप-रंग के आधार पर ही अपना व्यवहार तय किया। अब मुझे आपकी प्रतिभा की भी जानकारी हो गई, इसलिए मेरे व्यवहार में आपके साथ आपकी प्रतिभा के प्रति भी सम्मान झलक रहा है। व्यक्ति की पहचान उसके काम से ही होती है। मेरे लिए उस समय भी आपकी आर्थिक स्थिति का कोई महत्व नहीं था और आज भी नहीं है। मैं आपकी प्रतिभा को तराशकर उसे चोटी पर पहुंचाने का प्रयास कर रहा हूं। सुनकर चित्रकार संतुष्ट हो गया।

११६२) अनुशासन हमें आजाद करता है स्वच्छंदता बनाती है इच्छा का दास - आप मुझे क्यों बात-बात पर टोकते रहते हैं? मैं अब बड़ा हो गया हूं, शिक्षित हूं। यह प्रश्न था एक बीस साल के पुत्र का अपने माता-पिता से। पुत्र को समझाने के लिए माता-पिता ने कैंडिल लाइट डिनर का आयोजन किया। मेज पर दो जलते हुए दीपक रखे। एक दीपक पर शीशे कि चिमनी का आवरण था और दूसरा बिना चिमनी के था। भोजन शुरू करने से पूर्व पिता ने पुत्र से कहा- कमरे की खिड़कियां खोल दो। खिड़कियां खुलते ही कमरे में हवा आई और बिना चिमनीवाला दीपक बुझ गया। लेकिन जिस दीपक पर चिमनी थी वह जलता रहा।

माता ने पुत्र से कहा- जो दीपक बिना चिमनी के था, वह हवा आते ही बुझ गया। लेकिन जिसके चारों ओर अनुशासन, मर्यादा रूपी चिमनी का आवरण है, वह हवा के झोंकों के बाद भी प्रकाशित है। तुम युवा और समझदार भी हो, लेकिन वातावरण में प्रलोभनों की हवा नहीं, तूफान चल रहा है। तुम्हारा जीवन अगर मर्यादा के नियंत्रण में नहीं होगा, तो तुम्हारे जीवन की पवित्रता के दीपक को बुझने में एक पल भी नहीं लगेगा। हमारी यह रोक-टोक तुम्हारे जीवन दीप के लिए चिमनी की भूमिका निभाएगी। मर्यादा और अनुशासन बंधन नहीं है, ना ही गति अवरोधक है।

११६३) दिनेश को जब विद्यालय में पता चला कि परीक्षा होने में एक सप्ताह और है और परीक्षा के लिए उसकी बिल्कुल भी तैयारी नहीं है तो उसे बहुत परेशानी हुई। रात को जल्दी ही पढ़ने बैठ गया लेकिन थोड़ी ही देर पढ़ सका। उसने सोचा कि सुबह चार बजे उठूंगा। सुबह कब चार बजे, इसका पता ही नहीं चला। उठा तो पता चला कि अरे, यह क्या? आठ बज गये। चलो, कल जल्दी उठूंगा। लेकिन आज की तरह कल, कई कल बीत गए लेकिन वह न तो चार बजे उठ सका और न ही पढ़ सका, आखिर आलस्य रूपी महान शत्रु जो उसके साथ था।

११६४) हार के डर को जीत कर ही हम सपनों को सही ढंग से जी पाते हैं - उन दिनों थॉमस एल्वा एडिसन अपने सहयोगियों के साथ इलेक्ट्रिक बल्ब के अविष्कार के प्रयोगों में व्यस्त रहते थे। सात सौ से अधिक प्रयोग के बावजूद उन्हें असफलता हाथ लगी तो उनके सहयोगी हताश हो गए। तब एडिसन ने अपने सहयोगियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा, प्रयोग में बार-बार असफल होने का मतलब यह नहीं कि हमारी हार सुनिश्चित है, बल्कि इन प्रयोगों के दौरान हमें अनुभवों की जो बारीकियां और अनुसंधान से संबंधित नई-नई तकनीक व जानकारियां प्राप्त हुईं, वे दूसरे के मुकाबले सात सौ गुना अधिक हैं।

११६५) कल कभी नहीं आता - राम-रावण युद्ध समाप्त हो चुका था। रावण मृत्युशय्या पर पड़ा अंतिम सांसे गिर रहा था। तभी उसने देखा कि लक्ष्मण उसकी ओर चले आ रहे हैं। लक्ष्मण उसके निकट आए और बोले, मेरे भाई श्रीराम आपसे ज्ञान की बातें सीखना चाहते हैं। आश्चर्य में भरकर रावण बोला, तुम्हारे भाई सर्वज्ञ हैं। मैं उन्हें क्या सिखा पाऊंगा। और फिर मैं तो उठकर चल भी नहीं सकता। मैं उनके पास कैसे पहुंच पाऊंगा। लक्ष्मण ने कहा, आप इसकी चिंता न करें। मैं श्रीराम को यहां लेकर आ जाऊंगा। श्रीराम आए। उनसे रावण ने विनम्रतापूर्वक कहा, हे सूर्यवंश के गौरव। मेरा प्रणाम स्वीकार करें। मैं राक्षस हूं, मैं आपको क्या सिखा पाऊंगा। राम ने कहा, यह सच है कि तुम राक्षस हो, परंतु यह भी सच है कि तुम एक शक्तिशाली और बुद्धिमान शासक रहे हो। तुम्हें अच्छे और बुरे का ज्ञान है। मैं यह ज्ञान तुमसे प्राप्त

करना चाहता हूं। रावण ने उन्हें उपदेश देना शुरू किया, अच्छे कार्यों को कभी नहीं टालना चाहिए। हो सकता है कि टालने के कारण उन कार्यों को करने का कभी अवसर ही न आए। मैंने सोचा था कि नरक का मार्ग बंद करवा दूंगा, ताकि किसी को परलोक में दु:ख न भोगने पड़े। दूसरा काम समुद्र के खारे पानी को निकाल कर उसे दूध से भर देने का था। तीसरा काम धरती से स्वर्ग तक सीढ़ी बनाने का था, जिससे पापी-पुण्यात्मा सभी स्वर्ग तक पहुंच सके। इतना कहकर रावण रुका। मृत्यु निकट होने के कारण उसकी बोलने की शक्ति कम होती जा रही थी। हांफते हुए वह बोला, इन तीनों कार्यों को मैं कल पर टालता रहा और कल तो कभी आता नहीं। मैं इन कर सकनेवाले कार्यों को कभी कर नहीं पाया। रावण फिर थोड़ा ठहरकर बोला, अच्छे कार्यों को टालना जितना बुरा है, बुरे कार्यों को टालना उतना ही अच्छा। मां सीता का हरण करने में मैंने तत्परता दिखाई, लेकिन वह मुझे टाल देना चाहिए था।

११६६) सदाचार व मंगल मैत्री धारण करने से हिंसा करुणा में बदल जाती है - एक राज्य में सौ परिवारों का एक छोटा-सा गांव था। गांव के एक मेहनती किसान का बेटा बड़ा होनहार, कुशाग्र बुद्धि व परोपकारी था। वह अपने गांव को आदर्श गांव बनाना चाहता था ताकि दूसरी जगहों के लोग भी उस गांव से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। इसके लिए उसने दिन-रात परिश्रम किया। घर-घर जाकर लोगों को ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा व परोपकार की शिक्षा दी। धीरे-धीरे सारा गांव सदाचार के नियमों का पालन करने लगा। गांव के निवासियों ने एकजुट होकर ग्राम विकास के कार्य प्रारंभ कर दिए। चौपाल व पाठशाला का निर्माण करवाया, गांव के रास्तों को पक्का करवाया और सार्वजनिक संपत्ति के रखरखाव की जिम्मेदारी सभी ने मिलकर अपने ऊपर ली। अब गांव में न कोई दंगा-फसाद होता, न चोरी होती और न ही कोई नशीले पदार्थों का सेवन करता था। सभी प्रेमपूर्वक रहने लगे।

यह सब देखकर गांव का चौकीदार बहुत निराश हुआ। उसकी आय के सभी स्रोत बंद हो गए। वह सोचने लगा कि सदाचारी विद्यार्थी की वजह से उसका धंधा चौपट हो गया है। चौकीदार राजा का विश्वासपात्र था। उसने सदाचारी-विद्यार्थी व ग्रामीणों के विरुद्ध राजा के कान भरने शुरू कर दिए। राजा ने चौकीदार के बहकावे में आकर अपने सिपाहियों को सदाचारी-विद्यार्थी व ग्रामीणों को पकड़ लाने का आदेश दिया। सबको विवेकहीन राजा के सामने लाया गया। राजा ने उनके कार्यों की जांच किए बिना उन्हें हाथी के पैरों तले कुचलने का फरमान जारी कर दिया। गांव के सभी लोगों के हाथ-पैरों में बेड़ियां डालकर महल के प्रांगण में लिटा दिया गया। सदाचारी-विद्यार्थी तनिक भी विचलित नहीं था। सदाचार का आत्मबल उसके चेहरे से झलक रहा था। उसने सभी ग्रामीणों को आत्मविश्वास के साथ उपदेश दिया, आप सभी अपने शील-सदाचार पर दृढ़ रहना। आप अपने हृदय में निंदक चौकीदार, विवेकहीन राजा व हिंसक हाथी के प्रति मंगल-मैत्री के भाव को निरंतर बनाए रखना। सबने मंगल-मैत्री के भाव को हृदय में धारण करते हुए अपनी आंखे बंद कर लीं। राजा ने लोगों को रौंदने के लिए हाथी को आदेश दिया, लेकिन हाथी इसके लिए तैयार नहीं हुआ। वह चिंघाड़ कर पीछे हट गया।

११६७) करुणा व संवेदना से भरा व्यक्ति दूसरे को दुखी नहीं कर सकता - अमेरिका के एक बहुत धनी व्यक्ति ने अपने एक कर्जदार को सबक सिखाने की ठानी। कर्ज की रकम बहुत कम थी, किंतु पूर्वाग्रह के कारण उस धनी ने उस

पर कोर्ट में मुकदमा चलाकर उस पर धौंस जमानी चाही। धनी ने अमेरिका स्प्रिंगफील्ड प्रांत के वकील अब्राहम लिंकन (जो बाद में अमेरिका के राष्ट्रपति बने) से भेंट कर उन्हें अपना केस लड़ने के लिए राजी करना चाहा- आपकी जो फीस हो, मैं तैयार हूं, लेकिन उस आदमी को सबक सिखाए बिना नहीं छोडूंगा। संवेदनशील और उदारमना लिंकन ने उस जिद्दी धनाढ्य को बहुत समझाया कि मात्र ढाई डॉलर की ही तो बात है, उसे माफ कर दो। वह गरीब तुम्हें आशीर्वाद देगा। लेकिन धनी अपनी बात पर अड़ा रहा। लिंकन ने कुछ सोचकर कहा- अगर मुझे अपना वकील नियुक्त करना चाहते हो तो मेरी फीस दस डॉलर होगी। उन्होंने सोचा था कि फीस सुनकर वह पीछे हट जाएगा, किंतु उसने कहा- मैं आपको दस डॉलर दे दूंगा, मेरा केस लड़ें। उसने दस डॉलर उसी समय लिंकन के हाथ पर रख दिए। उसी दिन शाम को लिंकन उस गरीब कर्जदार के पास गए और पांच डॉलर उसे देकर कहा- यह रकम मैंने दी है, इसे बताने की जरूरत नहीं। तुम अभी जाओ और उस हठी आदमी से कर्ज ली हुई रकम चुका आओ। उस गरीब ने ढाई डॉलर का कर्ज उसी समय चुका दिया और बाकी बचा ढाई डॉलर अपने पास रख लिया।

११६८) मंच पर किसी को गाते देखकर उनके अंतर्मन में गायक बनने की इच्छा बलवती हो जाती थी। असल में वह भी गायक बनना चाहते थे। एक बार उन्हें मंच पर गाने का मौका मिला, किंतु स्टेज-एंकर द्वारा उनका नाम पुकारे जाने से पहले ही वह नर्वस हो गए। घबराहट की वजह से उनका गला सूख गया। उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे गले के वाकतंतु लकवाग्रस्त हो गए हों। माथे पर पसीना बहने लगा। वह तुरंत ड्रेसिंग रूम में गए और दर्पण के सामने खड़े होकर उन्होंने अपने अदृश्य डर को सख्ती से आदेश दिया, बाहर निकल जाओ मेरे दिमाग से, मैं अपने लक्ष्य के प्रति अडिग हूं। तुम मुझे गायक बनने से नहीं रोक सकते। मेरा अवचेतन मन असीमित शक्ति और बुद्धिमत्ता का भंडार है। इतना कहते ही उनमें नई चेतना व स्फूर्ति का संचार हुआ और वह आत्मविश्वास से लबरेज हो गए। बारी आने पर वह मंच पर गाने के लिए पहुंचे और ऐसी बेजोड़ प्रस्तुति दी कि श्रोता मंत्र-मुग्ध हो गए। वह थे- इटैलियन गायक एनरिको केरुसो। इस घटनाक्रम के बाद एनरिको ने विश्व के प्रतिष्ठित ओपेरा-सिंगर के रूप में ख्याति अर्जित की।

दरअसल, एनरिको की निश्चयात्मक बुद्धि की अडिगता ने प्रतिक्रियाशील अवचेतन मन के अतार्किक स्तर का खजाना ढूंढ लिया था। जब हम अपने अंत:करण में परमेश्वर की सत्यनिष्ठा को धारण करते हुए अवचेतन मन को दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास से पुष्ट करते जाते हैं, तो हमारे अवचेतन की इंटेलेक्चुअल पॉवर, हमारे दृढ़ निश्चयात्मक संकल्पों को पूरा करने में सारी कायनात उड़ेल देती है।

११६९) वो एक माँ थी - आधी रात को बहुत बारिश हो रही थी। अजय और उसकी बीवी प्रिया एक मित्र के यहाँ पर्व मनाकर अपनी गाड़ी से घर वापस लौट रहे थे। काफी रात हो चुकी थी और बारिश की वजह से अजय बहुत धीमी गति से गाड़ी चला रहा था। तभी अचानक बिजली गिर गई।

बिजली की रोशनी में अजय को गाड़ी के सामने कुछ दिखाई दिया उसने गाड़ी रोक दी। गाड़ी रुकने पर उसकी बीवी ने कहा, क्या हुआ, गाड़ी क्यों रोक दी? अजय ने आगे की ओर इशारा किया। प्रिया ने आगे देखा तो वह डर गई क्योंकि गाड़ी के सामने एक औरत खड़ी थी। वो औरत गाड़ी के पास आयी और हाथ से गाड़ी का शीशा नीचे करने का इशारा करने

लगी। अजय की बीवी प्रिया काफी डर गई थी। उसने अजय को गाड़ी चलाने को कहा। लेकिन गाड़ी भी स्टार्ट नहीं हुई। गाड़ी के बाहर खड़ी औरत बारिश की वजह से भीग गई थी। वो हाथ जोड़कर गाड़ी का शीशा नीचे करने का इशारा कर रही थी। अजय को लगा कि वो औरत किसी मुसीबत में है। इसलिए उसने गाड़ी का शीशा नीचे किया। वो औरत हाथ जोड़कर बोली- भाई साहब मेरी मदद कीजिए। तेज बारिश कि वजह से मेरी गाड़ी का एक्सीडेंट हुआ है। मेरी गाड़ी नीचे गिर गई है। उसमें मेरा छोटा बच्चा है। प्लीज उसे बचाइए। अजय गाड़ी से उतरा और उस औरत के पीछे गया। उस औरत की गाड़ी काफी नीचे गिर गई थी। अजय ने नीचे उतरकर उस गाड़ी में रो रहे बच्चे को बाहर निकाला। अजय को लगा की ड्रायवर की सीट पर भी कोई है। जब अजय ने ड्राइवर की सीट पर देखा तो उसके होश उड़ गए क्योंकि ड्राइवर की सीट पर वही औरत खून से लथपथ मरी पड़ी थी। अजय को अब सब समझ में आया। वो बच्चे को लेकर अपनी गाड़ी के पास आया। बच्चे को अपनी बीवी प्रिया को देने लगा तो उसकी बीवी बोली- वो औरत कहां है? वह कौन थी? अजय बोला- वो एक माँ थी।

११७०) जहांपनाह, आपका तोता न खाता है, न पीता है - एक बहेलिया तोते को पकड़ता, सिखाता और तोते के शौकीन लोगों को ऊंचे दामों में बेच देता था। एक बार एक सुंदर तोते को उसने अच्छी-अच्छी बातें सिखायीं उसे तरह-तरह से बोलना सिखाया और उसे लेकर अकबर के दरबार में पहुंच गया। दरबार में बहेलिये ने तोते से पूछा- बताओ ये किसका दरबार है? तोता बोला- यह जहांपनाह अकबर का दरबार है। सुनकर अकबर बड़े ही खुश हुए। वह बहेलिये से बोले- हमें यह तोता चाहिए, बोलो इसकी क्या कीमत मांगते हो। बहेलिया बोला जहांपनाह, सब आपका है आप जो दें वही मुझे मंजूर है। अकबर ने उसे अच्छी कीमत देकर तोते को खरीद लिया।

उस तोते के रहने के लिए खास इंतजाम किए गए। उसे बहुत ही खास सुरक्षा के बीच रखा गया और रखवालों को हिदायत दी कि इस तोते को कुछ नहीं होना चाहिए। यदि किसी ने इसकी मौत की खबर दी तो उसे फांसी पर लटका दिया जाएगा। तोते का बड़ा ही ख्याल रखा जाने लगा। मगर वह तोता कुछ ही दिनों बाद मर गया। अब उसकी सूचना महाराज को कौन दे? रखवाले परेशान थे। तभी उनमें से एक बोला कि बीरबल हमारी मदद कर सकता है। उसने बीरबल को सारी बात सुनायी तथा उससे मदद मांगी। बीरबल रखवाले से बोला- ठीक है तुम घर जाओ महाराज को सूचना मैं दूंगा। बीरबल अगले दिन दरबार में पहुंचे और अकबर से कहा- हुजूर आपका तोता... अरे खुदा के लिए कुछ तो कहो बीरबल मेरे तोते को क्या हुआ, अकबर ने खीजते हुए कहा। जहांपनाह, आपका तोता न तो कुछ खाता है न कुछ पीता है, न कुछ बोलता है न अपने पंख फड़फड़ाता है, न आंखे खोलता है और न ही... अकबर ने गुस्से में कहा- अरे सीधा-साधा क्यों नही बोलते की वह मर गया है। बीरबल तपाक से बोला- हुजूर मैंने मौत की खबर नहीं दी बल्कि ऐसा आपने कहा है, मेरी जान बख्शी जाए। महाराज निरूत्तर हो गए।

११७१) बहरुपिया गधा - एक नगर में धोबी था। उसके पास एक गधा था, जिस पर वह कपड़े लादकर नदी तट पर ले जाता और धुले कपड़े लादकर लौटता। धोबी का परिवार बड़ा था। सारी कमाई आटे-दाल व चावल में खप जाती। गधे के लिए चारा खरीदने के लिए कुछ न बचता। गांव की चरागाह पर गाय-भैंसे चरतीं। अगर गधा उधर

जाता तो चरवाहे डंडों से पीटकर उसे भगा देते। ठीक से चारा न मिलने के कारण गधा बहुत दुर्बल होने लगा। धोबी को भी चिंता होने लगी, क्योंकि कमजोरी के कारण उसकी चाल इतनी धीमी हो गई थी कि नदी तक पहुंचने में पहले से दुगना समय लगने लगा था।

एक दिन नदी किनारे जब धोबी ने कपड़े सूखने के लिए बिछा रखे थे तो आंधी आई। कपड़े इधर-उधर हवा में उड़ गए। आंधी थमने पर उसे दूर-दूर तक जाकर कपड़े उठाकर लाने पड़े। अपने कपड़े ढूंढता हुआ वह सरकंडों के बीच घुसा। सरकंडों के बीच उसे एक मरा बाघ नजर आया।

धोबी कपड़े लेकर लौटा और गट्ठर गधे पर लादने लगा गधा लड़खड़ाया। धोबी ने देखा कि उसका गधा इतना कमजोर हो गया है कि एक दो दिन बाद बिल्कुल ही बैठ जाएगा। तभी धोबी को एक उपाय सूझा। वह सोचने लगा अगर मैं उस बाघ की खाल उतारकर ले आऊं और रात को इस गधे को वह खाल ओढ़ाकर खेतों की ओर भेजूं तो लोग इसे बाघ समझकर डरेंगे। कोई निकट नहीं फटकेगा। गधा खेत चर लिया करेगा।

धोबी ने ऐसा ही किया। दूसरे दिन नदी तट पर कपड़े जल्दी धोकर सूखने डाल दिए और फिर वह सरकंडों के बीच जाकर बाघ की खाल उतारने लगा। शाम को लौटते समय वह खाल को कपड़ों के बीच छिपाकर घर ले आया।

रात को जब सब सो गए तो उसने बाघ की खाल गधे को ओढ़ाई। गधा दूर से देखने पर बाघ जैसा ही नजर आने लगा। धोबी संतुष्ट हुआ। फिर उसने गधे को खेतों की ओर खदेड़ दिया। गधे ने एक खेत में जाकर फसल खानी शुरू की। रात को खेतों की रखवाली करनेवालों ने खेत में बाघ देखा तो वे डरकर भाग खड़े हुए। गधे ने भरपेट फसल खाई और रात अंधेरे में ही घर लौट आया। धोबी ने तुरंत खाल उतारकर छिपा ली। अब गधे के मजे आ गए। हर रात धोबी उसे खाल को ओढ़ाकर छोड़ देता। गधा सीधे खेतों में पहुंच जाता और मनपसंद फसल खाने लगता। गधे को बाघ समझकर सब अपने घरों में दुबककर बैठे रहते। फसलें चर-चरकर गधा मोटा होने लगा। अब वह दुगुना भार लेकर चलता। धोबी भी खुश हो गया।

मोटा-ताजा होने के साथ-साथ गधे के दिल का भय भी मिटने लगा। उसका जन्मजात स्वभाव जोर मारने लगा। एक दिन भरपेट खाने के बाद गधे की तबीयत मस्त होने लगी। वह भी लगा लोट लगाने। खूब लोटा वह गधा। बाघ की खाल तो एक ओर गिर गई। वह अब खालिस गधा बनकर उठ खड़ा हुआ और डोलता हुआ खेत से बाहर निकला।

११७२) अमित, संजीव और गांव - संजीव अपने परिवार के साथ मॉल में घूमने गया था। वहां उसकी मुलाकात पुराने दोस्त अमित से हुई। संजीव और अमित कभी एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करते थे। लेकिन फिर अमित के मन में न जाने क्या आया, वह सब कुछ छोड़कर एक गांव में रहने चला गया। अमित ने संजीव से पूछा, क्या अब भी तुम उसी कंपनी में हो? संजीव बोला, हां, और जिस कुर्सी पर आज तुम्हें होना चाहिए था, वह मेरे पास है। मैं कंपनी का सीईओ हूं। अमित ने मुस्कराते हुए उसे बधाई दी। संजीव ने पूछा, और तुम? अमित बोला, मैं यह सोचकर गांव चला गया था कि वहां के लोगों का सशक्तिकरण करूंगा। मैंने उनको प्रशिक्षित किया, उनको काम की बारीकियां सिखाई और फिर अपनी कंपनी खोलकर उनके सशक्तिकरण के लिए काम करने लगा। लेकिन मैं अपने काम में सफल नहीं हो पाया। संजीव ने

जोर से हंसते हुए कहा, मुझे पता था कि ऐसा होगा। तुमने लोग ही ऐसे चुने थे। अमित एक बार फिर मुस्कराया और कहने लगा, तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। मैंने गांव के लोगों को सब कुछ दिया, फिर भी उनमें वह जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व नहीं ला पाया। मेरा गांव जाने का मकसद ही जैसे विफल हो गया। फिर मां ने मुझे समझाया कि मैं कुछ अलग नहीं कर रहा हूं। पहले लोग काम के लिए जमींदार या ठेकेदारों के भरोसे रहते थे। अब उन ठेकेदारों की जगह मैंने ले ली थी। मेरी मां ने कहा कि यदि सच में उनका सशक्तिकरण करना है, तो कंपनी भी उन्हीं को बनाने और चलाने दी। उन्हें मालिक बनाओ, नौकर नहीं। जिस दिन वे खुद अपना व्यवसाय चलाएंगे, वे खुद ही जिम्मेदार बन जाएंगे। मैंने माँ से पूछा कि ऐसा होगा कैसे? कौन उनके उत्पादों को बाजार तक पहुंचाएगा ? माँ बोली, यह कौन-सा बड़ा काम है? यह तो तुम भी कर सकते हो। संजीव गौर से अमित की तरफ देखने लगा। अमित ने कहा, आज मैं कह सकता हूं कि मैं भले कुछ नहीं हूं, लेकिन मैंने कई कार्यकारी अधिकारी जरूर बना दिए। खुद के सफल होने के बजाय समाज को काबिल बनाना ज्यादा बड़ा काम है।

११७३) सही दिशा का ज्ञान - राजपथ से जा रहे गौतम बुद्ध ने देखा कि एक जलाशय के समीप एक भिक्षुक स्नान के पश्चात छहों दिशाओं की ओर हाथ जोड़े जाप कर रहा है। बुद्धदेव ने उससे पूछा, महाशय आपने अभी-अभी छहों दिशाओं को प्रणाम किया है। क्या आप मुझे उसका अभिप्राय बता सकेंगे? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, यह तो मुझे नहीं मालूम। बुद्ध ने कहा, जब मूल उद्देश्य जानते नहीं, तो पूजा-पाठ और जाप का क्या महत्व है? तब वह व्यक्ति बोला, भंते, आप ही बता दीजिए कि इन छहों दिशाओं को प्रणाम करने का क्या प्रयोजन है? तथागत बोले, माता-पिता और गृहपति, ये पूर्व दिशा हैं। आचार्य दक्षिण दिशा, स्त्री तथा पुत्र-पुत्रियां पश्चिम और मित्रादि उत्तर दिशा। रही उर्ध्व और अधोदिशा, तो उर्ध्व दिशा श्रमण-ब्राह्मण हैं और सेवक अधोदिशा हैं। इन छहों दिशाओं को किया गया प्रणाम उक्त सभी व्यक्तियों को प्रमाण करने के समान होता है। उस भिक्षुक ने पूछा, यह तो ठीक है भंते, मगर सेवक के प्रमाण करने का क्या प्रयोजन है? बुद्धदेव ने कहा, सेवक भी मनुष्य हैं और हम भी मनुष्य हैं। जब वे हमारी सेवा करते हैं, तो हमारा भी कर्त्तव्य हो जाता है कि हम उनकी सेवा के बदले उनके प्रति स्नेह-वात्सल्य प्रकट करें। सेवकों को प्रणाम करते समय हम उनके प्रति स्नेहभाव व्यक्त कर रहे होते हैं। उन्हें तुच्छ भाव से नहीं देखना चाहिए। भगवान तथागत के उत्तर से संतुष्ट होकर वह व्यक्ति बोला, आज आपने मुझे सही दिशा का ज्ञान करा दिया।

११७४) अधर्म के मार्ग पर न चलें - कर्ण ने कृष्ण से पूछा, जन्म होते ही मां ने मुझे तज दिया। क्या मेरा दोष था? द्रोणाचार्य ने मुझे सिखाया नहीं, क्योंकि मैं क्षत्रिय नहीं था। परशुराम ने मुझे सिखाया, पर सच पता चला, तो शाप दे दिया। द्रौपदी के स्वयंवर में मेरा अपमान किया गया। मुझे जो कुछ मिला, वह दुर्योधन के कारण मिला। मैं उसकी तरफ से लडूं, तो गलत कहां हूं? कृष्ण ने कहा- कर्ण, जिस रात कारागार में मेरा जन्म हुआ, उसी रात माता-पिता से मुझे दूर किया गया। तुम्हारा बचपन रथ, घोड़े, धनुष और बाण के बीच बीता। मुझे गोशाला मिली, गोबर मिला और बचपन में ही कई हमले झेलने पड़े। तुम्हारा गुरु तुम्हारे शौर्य की तारीफ कर रहे थे, मुझे उस उम्र में कोई शिक्षा भी नहीं मिली थी। जब मैं सोलह साल का हुआ, तब जाकर ऋषि सांदीपन के गुरुकुल में पहुंचा। तुम अपनी पसंद की कन्या से विवाह कर सके।

मैंने जिससे प्रेम किया, वह मुझे नहीं मिली और उनसे करना पड़ा, जिन्हें मैंने राक्षसों से बचाया था। यमुना के किनारे से हटकर दूर अपने लोगों को समुद्र के किनारे बसाना पड़ा। पर मुझे रणछोड़ कहा गया। कल अगर दुर्योधन जीता, तो तुम्हें यश मिलेगा। धर्मराज जीतते हैं, तो मुझे क्या मिलेगा? जिंदगी हर किसी को चुनौतियां देती है। दुर्योधन ने अन्याय का सामना किया है, तो युधिष्ठिर ने भी अन्याय भुगता है। पर धर्म क्या है, यह तुम जानते हो। जिंदगी न्याय नहीं करती, इसका अर्थ यह नहीं कि हम अधर्म के मार्ग पर चलें।

११७५) सोने का सिक्का - एक बूढ़ा किसान था। वह हमेशा एक वाक्य हर किसी के सामने दोहराता रहता था जो ईश्वर से प्रेम करता है वह हमेशा बुराइयों से दूर रहता है। उसके पास एक नौकर था, जो बड़ा बदमिजाज था। हमेशा गंदे शब्दों का प्रयोग करता था। किसान ने उसे कई बार समझाया कि वह अपने गुस्से पर थोड़ा काबू करे और ईश्वर-भक्ति में मन लगाए, किन्तु नौकर उसकी कभी नहीं सुनता था। एक सुबह किसान ने अपने नौकर से कहा, छगनलाल, तुम यह सोने का सिक्का देख रहे हो? यह तुम्हें उपहार स्वरूप मिल सकता है, अगर तुम पूरा दिन शांति से बिताओ और गाली-गलौज वाले शब्द न बोलो। छगनलाल इस प्रस्ताव से बहुत खुश हुआ। उसने किसान की बात मान ली। अन्य नौकरों को जब इस बात की भनक मिली तो उन्होंने आपस में तय किया कि वे किसी तरह छगनलाल को उकसाएंगे, ताकि वह गुस्से में भड़क उठे और शर्त हार जाए। पर छगनलाल ने पूरे दिन अपने को काबू में रखा। किसी बात पर नहीं भड़का। शाम को किसान ने अपने वादे के मुताबिक उसको वह सोने का सिक्का उपहार में दिया और बोला, तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए। इस सिक्के के प्यार में तुम पूरे दिन अपने को काबू कर सकते हो, पर ईश्वर के लिए तुम अपनी गलत आदतों का त्याग नहीं कर सकते। दु:खी पर दया दर्शाना मानवोचित है, उसके दु:ख का निवारण करना देवोचित।

११७६) परियों की शहजादी - सकीना दाँत के दर्द से बहुत परेशान थी। उसका दाँत हिल रहा था और लगता था कि उखड़कर गिरने ही वाला है। माँ बोली, बेटी, अपना दाँत तो दिखा। नहीं माँ। वह उखड़कर गिर जाएगा। वह जोर से चिल्लाई। माँ ने कहा, अच्छा ठीक है। हम दोनों दाँतों के डॉक्टर के पास चलते हैं। वह इसका इलाज कर देगा। नहीं, मैं किसी डॉक्टर के पास नहीं जाना चाहती। सकीना फिर चिल्लाई। माँ ने फिर समझाया, नहीं, बेटी, इस दाँत के लिए कुछ-न-कुछ उपाय तो करना ही पड़ेगा। फिर इसका गिर जाना ही अच्छा है, क्योंकि उसके नीचे एक नया दाँत निकल रहा है। टूटे हुए दाँत को तकिए के नीचे छुपाकर रखना। रात को परियों की शहजादी आएगी और सुबह होते ही तुम्हारा दाँत गायब हो जाएगा। उसकी जगह एक पैसे का सिक्का रखा हुआ मिलेगा। सकीना मान गई। अज्ञानी लोग भय से आज्ञा पालन करते हैं तथा ज्ञानी लोग प्रेम से।

११७७) मनीष, उनके भाई और जमींदार - प्रोफेसर कदम ने अपनी क्लास एक कहानी से शुरू की। एक गांव में एक किसान था, जिसके तीन बेटे थे, रवि, सोहन और मनीष, किसान के पास बहुत जमीन थी। एक जमीदार बड़े दिनों से उस पर नजरें जमाए हुए था। किसान की मृत्यु के बाद जमींदार को वह जमीन हथियाने की एक तरकीब सूझी। वह मनीष के पास जाकर बोला, कैसे हो? कितने दिनों बाद तुमसे मुलाकात हुई। मनीष ने चौंकते हुए पूछा। क्या आप मुझे जानते हैं? जमींदार बोला, मैं तुम्हारा चाचा हूं और जो कुछ मेरा है, वह तुम्हारा भी है। मनीष यह सुन बेहद प्रभावित हो गया।

धीरे-धीरे जमींदार के साथ उसकी बातचीत बढ़ने लगी और वह खुद को जमींदार समझने लगा। दोनों भाइयों ने मनीष को समझाने की कोशिश की कि जमींदार अच्छा आदमी नहीं हैं, पर मनीष को लगा कि उसके भाई उससे जलते हैं, इसलिए ऐसा कह रहे हैं। धीरे-धीरे अपने भाइयों से मनीष का झगड़ा बढ़ने लगा। एक दिन जमींदार ने मनीष से कहा, हमारे परिवार का सदस्य होने के नाते मैं तुम्हें विदेश पढ़ने भेजना चाहता हूं। तुम्हारी पढ़ाई और रहने-खाने का इंतजाम तो हो गया है, बस आने-जाने के लिए कुछ और पैसे चाहिए, तो तुम चाहो, तो अपनी जमीन मुझे बेचकर ले सकते हो। मनीष ने सोचा, चाचा मेरा कितना ख्याल रखते हैं। एक यही मेरे हितैषी हैं। यह सोचकर मनीष ने अपनी जमीन कौड़ियों के भाव चाचा को बेच दी। बस फिर क्या था। जमीन मिलते ही जमींदार का बर्ताव बदल गया। मनीष को समझ में आ गया कि उसे विदेश भेजने की बात झूठ थी, उसे ठगा गया। कहानी सुनकर प्रोफेसर ने छात्रों से पूछा, बताओ कि इस कहानी में दोषी कौन है? सभी छात्रों ने एक सुर में कहा, सर जमींदार और मनीष दोषी हैं। प्रोफेसर बोले, यह सही नहीं। जमींदार तो सिर्फ अपना मुनाफा देख रहा था, उसका तो यह काम ही था और मनीष तो हमेशा से बेवकूफ ही था। असली दोषी हैं सोहन और रवि, जो सब जानकर भी चुपचाप रहे। जो सब कुछ जानते हुए भी दूसरों को जाल में फंसने दे, असली दोषी वही है।

११७८) हुक्म का गुलाम - एक मंदिर के बाहर तख्ती लगी थी- जूते दरवाजे के बाहर उतारे बिना अंदर जाना मना है। एक सिपाही वहां हमेशा खड़ा रहता था। जेबों में हाथ डाले हुए एक जवान बड़े रोब से अंदर जाने लगा। सिपाही ने उसे धर पकड़ा, आपके जूते कहाँ हैं? मैं जूते नहीं पहनता। सिपाही बोला, फिर आप अंदर नहीं जा सकते। जवान ने पूछा, क्यों? सिपाही ने कहा, यह तख्ती पढ़िए, मेरा काम तो हुक्म की तामील करना है। लकीर के फकीर न बनो।

११७९) राबिया का उलाहना - मुस्लिम संतों के इतिहास में राबिया अद्वितीय मानी जाती हैं। उनकी दिनचर्या का अधिकांश समय इबादत में ही गुजरता था। एक बार उन्होंने हज करने की ठानी। वह अपने साथ थोड़ा सामान और साथी के नाम पर एक गधा रखे हुए थी।

गधा बहुत ही दुर्बल था, मगर राबिया को वह प्रिय था। राबिया ने उसी पर सामान लादा और काफिले के साथ चल पड़ी। लेकिन उनका कामचोर गधा राह की दुश्वारियां झेल नहीं पाया और मंजिल से पहले ही दम तोड़ गया।

काफिले के अन्य लोग बोले, आप चिंता न करें, आपका सामान हम अपने गधों पर ले चलेंगे। मगर राबिया को छोड़कर आगे निकल गए। एकांत पाकर राबिया दर्द भरी आवाज में, मगर प्रेम से अपने खुदा से फरियाद करते हुए बोली, ऐ मालिक, मैं तेरे ही भरोसे घर से निकली थी। क्या तू अपने बंदों के साथ ऐसा ही सलूक करता है? पहले तूने अपने घर बुलाया और अब आधे रास्ते में ही मेरे हमसफर को अपने पास बुला लिया। तुझ पर भरोसा करना क्या मेरी भूल थी? राबिया अभी अपने खुदा से अपनी परेशानियां और दुख कह ही रही थीं कि उनका गधा रेंकता हुआ उठ खड़ा हुआ। राबिया ने दोनों हाथ उठाकर खुदा का शुक्र किया और गधे पर सामान लादकर फिर आगे बढ़ चली। कहते हैं, जब तक राबिया हज से वापस नहीं आ गई, तब तक उस गधे ने राबिया का पूरा साथ निभाया।

११८०) मूंगफली - दो लड़कों ने एक मूंगफली खोद निकाली। यह मेरी है। पहले ने ऊँची आवाज में कहा। मैंने इसे पहले देखा। दूसरा भी गरम हो उठा। नहीं, यह मेरी ही है। मैंने इसे खोद निकाला। दोनों के बीच मूंगफली को लेकर

गरमागरमी हो गई। मैं तुम दोनों के बीच मामला तय कर दूता हूं। एक युवक, जो वहां से गुजर रहा था, उसके करीब आकर बोला। वह दोनों लड़कों के बीच खड़ा हो गया और मूंगफली को तोड़ते हुए कहने लगा, आधा दाना उसको मिलेगा जिसने मूंगफली को खोद निकाला। बाकी बचे हुए दाने मैं इस समझौते की एवज में ले लूंगा। मुस्कराते हुए उसने उन दोनों की तरफ देखा और कहा, ठीक है न।

११८१) पूरे का पूरा गधा - एक गधे और शेर में मित्रता हो गई। गधे ने शेर से कहा, चलो, हम एक साथ शिकार पर चलते हैं। शेर ने पूछा, पर कहाँ? गधे ने बताया, मैं एक ऐसी गुफा जानता हूं, जिसमें काफी भेड़-बकरियाँ रहती हैं। यह जानकर शेर उसके साथ चल पड़ा। गुफा आने पर शेर प्रवेशद्वार पर खड़ा हो गया और गधा गुफा के पिछले द्वार से अंदर दाखिल होकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसकी आवाज सुनकर भेड़-बकरियाँ डर गईं और प्रवेशद्वार की ओर दौड़ीं। प्रवेशद्वार पर खड़े शेर ने सबका खात्मा कर दिया। बाद में दोनों मित्र भेड़-बकरियों के गोश्त का ताजा भोजन करने लगे। तभी गधा गर्व से बोला, क्यों मित्र। मेरी आवाज डरावनी थी या नहीं? तब शेर ने जवाब दिया, क्या बताऊँ, दोस्त। अगर मुझे यह पता न होता कि तुम पूरे गधे हो तो संभव था, मैं भी डर गया होता। गधा यह सुनकर चुप हो गया। अपने से बड़ों के समक्ष डींग हाँकना बेवकूफी है।

११८२) इंद्रधनुष - भयंकर आँधी और मूसलाधार वर्षा के बाद आकाश में एक सुंदर इंद्रधनुष बन गया। नन्हा हेनरी, जो खिड़की से सारा दृश्य देख रहा था, सतरंगी इंद्रधनुष देखकर खुशी से चिल्ला उठा, मैंने अपने जीवन में इतने सुंदर रंगों की छटा कभी नहीं देखी। आँधी से उखड़े पड़े एक पेड़ के करीब इंद्रधनुष के रंग धरती छू रहे थे। पेड़ की भीगी पत्तियाँ सतरंगे रंगों से रंगी लग रही थीं। नन्हा हेनरी झूम उठा। उसने सोचा कि मैं दौड़कर उस पेड़ के पास जाता हूं और अपने कलर बॉक्स में ये सारे रंग भरकर रख लेता हूँ। वह दौड़कर उस पेड़ के पास पहुंच गया, पर अफसोस। पत्तियों पर कोई रंग न था। दु:खी हेनरी पानी में भीगता-भागता घर लौट आया। घर पर उसने अपने पिता को इंद्रधनुष का किस्सा सुनाया। पिता हँस पड़े और बोले, बेटे हेनरी। ये रंग कभी भी कलर बॉक्स में नहीं भरे जा सकते। पानी की बूँदें ही रंगों में बँटकर इंद्रधनुष के रूप में चमकती हैं। अत: कुछ क्षणों के लिए ही सुंदर-सुंदर रंग उभरते हैं। फिर गायब हो जाते हैं।

११८३) बड़प्पन - एक सैनिक लकड़ी की टांग लगाए एक कस्बे में पहुंचा। अचानक उसे बुखार ने दबोच लिया। निरुपाय होकर उसे अपनी यात्रा स्थगित कर उसी कस्बे में शरण लेनी पड़ी। टोकरी बनानेवाले एक गरीब की बेटी एजी का ध्यान सहसा बीमार सैनिक की ओर गया। दयालु एजी रात-दिन उसकी सेवा में लग गई। कुछ ठीक होने पर वह रोज उस सैनिक को देखने जाती और कुछ-न-कुछ पैसे देकर लौट आती। सैनिक बड़ा ईमानदार था। एक दिन उसने एजी से पूछा, मेरी प्यारी बिटिया, मुझे पता चला है कि तुम्हारे माता-पिता बहुत गरीब हैं, फिर तुम ये पैसे मुझे कहां से लाकर देती हो? मैं भूखा रहना पसंद करूंगा, पर गलत ढंग से लाकर दिए गए पैसे स्वीकार नहीं करूंगा। सैनिक की बात सुन एजी मुसकराई और बोली, आप बिलकुल निश्चिंत रहिए। ये पैसे जो मैं आपको देती हूं, मेरी खरी कमाई के पैसे हैं। रोज सुबह जब मैं स्कूल जाती हूं, रास्ते में पड़ने वाले जंगल से टोकरी भरकर फूल तोड़ती हूं। फिर उसे गांव में बेच देती हूं। मेरे माता-पिता यह बात जानते हैं और मेरी इस बात से वे बड़े प्रसन्न हैं। वे कहते हैं कि बहुत से लोग हमसे भी खराब स्थिति

में हैं। हम उनकी जितनी भी सहायता कर सकते हैं, हमें अवश्य करनी चाहिए। एजी की बात सुनकर सैनिक की आंखें भर आईं। गरीबी अपने को गरीब मानने में हैं।

११८४) बुद्ध के आंसू - भगवान बुद्ध जंगल में आम के एक वृक्ष के नीचे बैठकर साधना कर रहे थे। कुछ बच्चे आम खाने के लालच में पेड़ पर पत्थर फेंकने लगे। पत्थर लगते ही पेड़ पर से आम गिरे तथा बच्चों ने खुशी-खुशी उन्हें उठा लिया। तभी एक बच्चे ने आम को निशाना बनाकर एक छोटा-सा पत्थर फेंका, लेकिन वह भगवान बुद्ध के सिर पर आकर लगा। उनके सिर से खून बहने लगा। यह दृश्य देखकर आम तोड़ रहे सारे बच्चे बहुत डर गए। वे भगवान के पांव छूकर उनसे अपने अपराध की माफी मांगने लगे।

बुद्ध ने निश्छल बच्चों को सहमें हुए देखा तो उनकी आंखें नम हो गई। एक बच्चे ने हाथ तोड़कर कहा, सिर में चोट लगने के कारण आपकी आंखों से आंसू बह रहे हैं। यह हमारे द्वारा किए गए गलत काम का परिणाम है। बुद्ध ने उत्तर दिया, वत्स, चोट लगने के कारण मेरी आंखों से आंसू नहीं आए हैं। मैंने देखा कि तुम लोगों ने पेड़ को पत्थर मारा, तो उसने तुम्हें मीठे आम दिए, लेकिन जब पत्थर मुझे लगा, तो तुम्हें डर के मारे थर-थर कांपना पड़ा। तुम्हें डरा हुआ देखकर मेरी आंखों में आंसू आए हैं। ये आंसू इसलिए भी हैं कि तुमने पत्थरों से इस पेड़ को चोट पहुंचाई। क्या पेड़ को बिना चोट पहुंचाए तुम आम नहीं तोड़ सकते? भगवान बुद्ध की करुणा भावना देखकर बच्चे हैरान रह गए। उन्होंने फिर कभी पेड़ को चोट न पहुंचाने का उन्हें भरोसा दिलाया।

११८५) क्या होती है ईमानदारी और सच्चाई की कीमत? - सऊदी अरब में बुखारी नामक एक विद्वान रहते थे। वह अपनी ईमानदारी के लिए मशहूर थे। एक बार वह समुद्री जहाज से लंबी यात्रा पर निकले।

उन्होंने सफर में खर्च के लिए एक हजार दीनार रख लिए। यात्रा के दौरान बुखारी की पहचान दूसरे यात्रियों से हुई। बुखारी उन्हें ज्ञान की बातें बताते गए। एक यात्री से उनकी नजदीकियां कुछ ज्यादा बढ़ गई। एक दिन बातों-बातों में बुखारी ने उसे दीनार की पोटली दिखा दी। उस यात्री को लालच आ गया।

उसने उनकी पोटली हथियाने की योजना बनाई। एक सुबह उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया, हाय मैं मर गया। मेरा एक हजार दीनार चोरी हो गया। वह रोने लगा।

जहाज के कर्मचारियों ने कहा, तुम घबराते क्यों हो। जिसने चोरी की होगी, वह यहीं होगा। हम एक-एक की तलाशी लेते हैं। वह पकड़ा जाएगा। यात्रियों की तलाशी शुरू हुई। जब बुखारी की बारी आई तो जहाज के कर्मचारियों और यात्रियों ने उनसे कहा, आपकी क्या तलाशी ली जाए। आप पर तो शक करना ही गुनाह है। यह सुनकर बुखारी बोले, नहीं, जिसके दीनार चोरी हुए हैं उसके दिल में शक बना रहेगा। इसलिए मेरी भी तलाशी ली जाए। बुखारी की तलाशी ली गई। उनके पास से कुछ नहीं मिला।

दो दिनों के बाद उसी यात्री ने उदासी मन से बुखारी से पूछा, आपके पास तो एक हजार दीनार थे, वे कहां गए? बुखारी ने मुस्करा कर कहा, उन्हें मैंने समुद्र में फेंक दिया। तुम जानना चाहते हो क्यों? क्योंकि मैंने जीवन में दो ही दौलत कमाई थीं- एक ईमानदारी और दूसरा लोगों का विश्वास। अगर मेरे पास से दीनार बरामद होते और मैं लोगों से कहता कि ये मेरे

हैं तो लोग एक बार यकीन भी कर लेते लेकिन फिर भी मेरी ईमानदारी और सच्चाई पर लोगों का शक बना रहता। मैं दौलत तो गंवा सकता हूं लेकिन ईमानदारी और सच्चाई को खोना नहीं चाहता। उस यात्री ने बुखारी से माफी मांगी।

११८६) गुप्ता जी, दोस्त और मूर्ति - गुप्ता जी बड़े व्यापारी थे। पर कुछ दिनों से उनका व्यापार अच्छा नहीं चल रहा था, इसलिए उन्होंने दूसरे देश में जाकर व्यापार करने के बारे में सोचा। उनके पास सोने की एक बड़ी-सी मूर्ति थी। जिसकी कीमत करोड़ों में थी। चूंकि मूर्ति वह अपने साथ नहीं ले जा सकते थे। इसलिए उसे अपने एक जिगरी दोस्त के पास रखवा दिया।

विदेश में गुप्ता जी ने अपनी जमा पूंजी से अच्छी कारोबार जमा लिया। कुछ साल बाद उन्होंने भारत लौटने की योजना बनाई और अपने दोस्त को फोन किया कि मूर्ति तैयार रखना, लेने आऊंगा। पर उनके दोस्त ने जवाब दिया, तुम्हारी मूर्ति जो चूहे खा गए। गुप्ता जी हैरत में पड़ गए कि सोने की मूर्ति को चूहे कैसे खा सकते हैं। फिर उन्हें एक तरकीब सूझी। उन्होंने दोस्त से कहा, फिर मैं वापस नहीं आऊंगा।

पर इस उम्र मैं इतना काम अकेले नहीं कर पा रहा। अगर तुम अपने बेटे को यहां भेज दो, तो हम दोनों व्यवसाय का आधा-आधा मुनाफा बांट लिया करेंगे। उनके दोस्त ने अपने बेटे को भेज दिया। गुप्ता जी ने उसे एक गुफा में काम करने भेज दिया, जहां उससे कोई संपर्क नहीं कर पा रहा था। एक दिन दोस्त ने परेशान होकर गुप्ता जी को फोन किया और अपने लड़के के बारे में पूछा। गुप्ता जी ने उदास मुद्रा में कहा, क्या कहूं, एक बाज झपट्टा मारकर तुम्हारे बेटे को उठा ले गया।

यह सुन उनके दोस्त ने चिल्लाते हुए कहा, भला इतने बड़े लड़के को बाज उठाकर कैसे ले जा सकता है? गुप्ता जी ने जवाब दिया, जब सोने की मूर्ति को चूहे खा सकते हैं। तो तुम्हारे बेटे को बाज क्यों नहीं ले जा सकते? उनके दोस्त को सारी बातें समझ आ गईं। उन्होंने गुप्ता जी से माफी मांगी, उन्हें उनकी मूर्ति वापस भिजवाई और अपने बेटे को वापस अपने पास बुला लिया। दूसरे की संपत्ति पर हक जताने वाले को अपनी संपत्ति से भी हाथ धोना पड़ सकता है।

११८७) कौन छोटा कौन बड़ा - शिष्य ने प्रश्न किया, गुरुवर। जब संसार में सभी आदमी एक ही तत्व के एक से बने हैं तो यह छोटे-बड़े का भेदभाव क्यों है? गुरु ने उत्तर दिया, वत्स छोटा-बड़ा संसार में कोई नहीं, यह सब अपने-अपने आचरण का खेल है। जो सज्जन हैं, वे बड़े हो जाते हैं, जबकि नेकी और सज्जनता के अभाव में वही छोटे कहलाने लगते हैं। गुरु ने बात ठीक समझा दी थी, पर शिष्य की समझ में अच्छी तरह बात जमी नहीं।

कुछ दिन बाद राजा की सवारी निकली। गुरु अपने शिष्य को लेकर राजपथ के बीचोबीच जा बैठे। पहले सैनिकों का दल आया एक सिपाही ने आगे बढ़कर वृद्ध संन्यासी को धक्का मारा और कहा, मूर्ख मार्ग में बैठा है, पता नहीं, महाराज की सवारी आ रही है। सैनिकों के पीछे प्रधान सेनापति था उसने धक्का तो नहीं दिया, हां वहां से हटने के लिए साधु को डांट अवश्य लगाई। इसके बाद मंत्री निकले, उन्होंने बिना कुछ कहे रथ एक ओर से आगे निकाल लिया और आगे बढ़ गए। सबसे पीछे आ रहे महाराज ने संन्यासी को देखा तो रथ से आगे उतरकर उनके पास आए और पूछा, भगवन आप यहां बैठे हैं, कोई कष्ट तो नहीं। संन्यासी ने उत्तर में केवल आशीर्वाद दिया और महाराज को भी वहां से जाने दिया।

शिष्य बगल में खड़ा यह सब देख रहा था। गुरु के पास आकर उसने कहा, सच है गुरुदेव, व्यक्ति अपने आप में न छोटा

है न बड़ा। गुणों के आधार पर ही कुछ बड़े हो जाते हैं, जबकि दूसरे छोटे ही बने रहते हैं। शिष्य को अपने गुरु की बात समझ आ गई थी। उसने खुद से निश्चय किया कि वह कभी अपने आचरण को नीचा नहीं गिरने देगा। सच तो यही है कि आपकी विनम्रता ही आपको छोटा या बड़ा बनाती है।

११८८) एक मुट्ठी अनाज पर भी उसका अधिकार नहीं - एक बड़ा सुन्दर मकान है। उसके नीचे अनाज की दुकान है। दुकान के सामने अनाज की ढेरी लगी है। एक बकरा आया, उसने ढेरी पर मुंह मारा। दुकान का मालिक एक तरुण धनी दुकानदार बैठा था। उसके हाथ में नुकीली छड़ी थी। उसने बकरे के सिर पर जोर से छड़ी मार दी। बकरा में-में करता हुआ भागा।

श्री नारदजी तथा श्री अंगिराजी अपनी राह जा रहे थे। बकरे की उपर्युक्त घटना देखकर नारदजी को हँसी आ गई। अंगिराजी ने इस हँसी का रहस्य पूछा। तब नारदजी ने बताया कि यह अनाज की दुकान पहले बहुत छोटी थी। इसके मालिक ने इसी दुकान से अपने व्यापार को बढ़ाया। वह अंत में करोड़पति हो गया। उसी ने यह इतनी बड़ी इमारत बनवाई। वह बहुत बड़े-बड़े व्यापार करने लगा; परंतु अनाज की बुनियादी दुकान को अपने रहने के मकान के नीचे ही रखा; क्योंकि इसी दुकान से उसकी उन्नति हुई थी। मालिक मर गया। उसका बेटा उत्तराधिकारी हुआ। वही तरुण दुकानदान बैठा है, जिसने बकरे को छड़ी से मारकर भगाया है। यह इस दुकान पर रोज घंटे भर आकर बैठता है। कामकाज तो नौकर करते हैं। मुझे हँसी इस बात पर आ गई कि दुकान का वह मालिक इस तरुण का पिता ही बकरे की योनि में पैदा हुआ है। यही एक दिन इस दुकान का, मकान का और सारे कारोबार का मालिक था; पर आज एक मुट्ठी अनाज पर भी उसका अधिकार नहीं है। अनाज की ओर मुंह करते ही मार पड़ती है और जिस पुत्र को बड़े प्यार से पाला-पोसा, वही मारता है। यही है जगत का स्वरूप।

११८९) मूर्ख ताकतवर डाकुओं पर चतुराई की जीत - एक गांव में चतुरी अपनी पत्नी के साथ रहता था। गांव में जो थोड़ा-बहुत मिल जाता था, उसी से उसका गुजारा चल रहा था। एक दिन उसने सोचा क्यों न शहर जाकर कमाया जाए। वह शहर चला गया, वहां उसने अपनी सूझबूझ से कुछ ही दिनों में ढ़ेर सारा पैसा कमा लिया। अब वह गांव लौटना चाहता था, तभी उसे याद आया कि गांव के रास्ते में जो जंगल पड़ता है, वहां डाकू रहते हैं। यदि उन्हें पैसे दिख गए तो वे सब ले लेंगे। उसने कुछ पैसों से एक घोड़ी खरीद कर उसकी पूंछ में पचास रुपए बांध दिए। अब वह गांव की ओर चल पड़ा। रास्ते में डाकुओं ने उसे घेर लिया। जब उन्होंने चतुरी से पैसे मांगे तो चतुरी ने कहा- मेरे पास पैसे कहां है, जो थे उसकी घोड़ी खरीद ली। लेकिन इस घोड़ी की एक खासियत है कि अगर इसकी पूंछ पर मारो तो पचास रुपए देती है। डाकुओं को विश्वास दिलाने के लिए चतुरी ने घोड़ी की पूंछ पर डंडा मार कर बताया, घोड़ी की पूंछ से पचास रुपए गिर गए। यह देखकर डाकुओं का सरदार बोला- अब यह घोड़ी हमारी हुई। चतुरी ने कहा- अगर बिना मोल दिए घोड़ी को लो गे तो पैसे नहीं देगी। उसने हजार रुपए में डाकुओं को घोड़ी बेच दी।

घर पहुंचकर चतुरी ने सारी बात अपनी पत्नी को बताई और सतर्क रहने को कहा। अगले दिन वह एक समान दिखनेवाले दो खरगोश खरीद कर लाया। उसने पत्नी से कहा- यदि डाकू आ जाएं और मुझे बुलाने को कहें, तो खरगोश

के कान में मुझे बुला लाने को कहना और इसे बाहर छोड़ देना। बाकी सब मैं संभाल लूंगा। उधर बार-बार डाकुओं ने घोड़ी की पूंछ पर मारा। लेकिन पैसे होते तो निकलते। गुस्से से लाल-पीले होते हुए डाकू चतुरी के घर पहुंचे और चतुरी की पत्नी ने खरगोश से चतुरी को बुला लाने को कहा। थोड़ी देर में चतुरी हाथ में खरगोश लिए घर आया।

खरगोश की करामात देखकर डाकुओं का गुस्सा काफूर हो गया। उन्होंने सोचा खरगोश तो बड़े काम का है। हमारी पत्नियां हमें बुलाने के लिए परेशान रहती हैं। यह खरगोश उनके काम आएगा। उन्होंने हजार रुपए में खरगोश खरीद लिया। घर जाकर डाकुओं ने खरगोश की समझदारी के बारे में अपनी पत्नियों को बताया। एक दिन उसकी पत्नी ने डाकू को बुलाने के लिए खरगोश को छोड़ा तो वह लौट कर ही नहीं आया। डाकू समझ गए कि फिर चतुरी ने एक बार हमें बेवकूफ बना दिया है। वे फौरन उसके घर पहुंचे और चतुरी को एक बोरी में बंद कर नदी में डुबोने चल दिए। थोड़ी दूर चलकर वे थक गए और पास के मंदिर में खाना खाने बैठ गए। वहां से एक ग्वाला अपनी गाय चराकर गुजर रहा था। उसने बोरी में से किसी की आवाज सुनी तो बोरी का मुंह खोल दिया। उसने चतुरी से बोरी में बंद होने का कारण पूछा। चतुरी ने कहा- क्या बताऊं भाई। ये लोग जबरदस्ती मेरी शादी राजकुमारी से करवाने ले जा रहे हैं, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि राजकुमारी कानी है। यह सुनकर ग्वाला बोला- मैं शादी करने के लिए तैयार हूं। उसने चतुरी को बोरी से बाहर निकाला और खुद बोरी में बंद हो गया। थोड़ी देर में डाकू आए और बोरी को उठाकर नदी में फेंक दिया। लौटते समय रास्ते में उन्हें गाय के साथ चतुरी दिखायी दिया। वे अचरज से उसे देखते रह गए। चतुरी बोला- तुमने मुझे नदी में फेका इसलिए ये गाय मुझे मिली अगर और ज्यादा गहराई में चला जाता तो हीरे-जवाहरात मिलते। हीरे-जवाहरात का नाम सुनकर सरदार के मन में लालच आ गया। बोला- चतुरी भाई। तू हमें हीरे-जवाहरात दिलवा दे। चतुरी उन्हें नदी पर ले गया और बोला- तुम सब एक-एक भारी पत्थर गले में बांध लो। डाकुओं ने अपने-अपने गले में पत्थर बांध लिए। चतुरी ने एक-एक करके सभी डाकुओं को नदी में धक्का दे दिया। उसे हमेशा के लिए डाकुओं से छुटकारा मिल गया। वह गाय लेकर घर लौट आया और अपनी पत्नी के साथ खुशी-खुशी रहने लगा।

११९०) देना सीखें - एक बादशाह ने अपने राज्य में घोषणा करवाई कि उसके राज्य के हर जरूरतमंद व्यक्ति की जरूरत पूरी की जाएगी। अगले दिन उसके राजमहल के बाहर लोगों की भीड़ जमा होने लगी। सभी लोग कतार में खड़े होने लगे। एक फकीर था, जो चुपचाप कतार के अंत में जाकर खड़ा हो गया। कुछ देर बाद एक व्यक्ति आया और वह फकीर के पीछे खड़ा हो गया। फकीर ने अपना स्थान छोड़कर उसको दे दिया और वह सबसे पीछे जाकर खड़ा हो गया। फिर कोई व्यक्ति आया और फिर फकीर ने अपना स्थान उस व्यक्ति को दे दिया और वह सबसे पीछे जाकर खड़ा हो गया।

संध्या होने तक यही सिलसिला चलता रहा और इधर राजा अपना खजाना बांटता रहा। जब आखरी में उसका नंबर आया तब राजा ने उससे पूछा, हे फकीर। यदि मेरा सारा खजाना समाप्त हो जाता तो तुम्हें तो कुछ भी नहीं मिलता, लेकिन तुमने उसकी चिंता ना करके दूसरे लोगों को आगे क्यों किया?

उसने बोला- महाराज, आप बहुत किस्मत वाले हैं। परमात्मा की आप पर बड़ी कृपा है कि आपके पास देने को इतना सब कुछ है। मैं फकीर हूं, मैं कुछ रखता ही नहीं हूं तो मेरे पास देने को कुछ नहीं था, लेकिन हां एक अवसर अवश्य था जो

कि आपने मुझको दिया था, जो मैं किसी को दे सकता था। इसलिए मैंने वह अवसर अन्य लोगों को दे दिया। राजा उसकी उदारता व सहृदयता से प्रभावित हुआ। उसने उसका बहुत आदर-सत्कार किया और उसकी पूरी झोली भर कर उसे शाही सम्मान के साथ विदा किया।

ऐसा कोई अवसर नहीं गंवाना चाहिए जहां हम कुछ बांट सके, हम किसी को कुछ दे सकें। हम जितना बाटेंगे, वह अनंत गुना होकर वापस आ जाएगा। पुण्य किए जाओ, परमार्थ किए जाओ, फल की चिंता मत करो। वह तो आना पक्का है।

११९१) मनुष्य होना ही महान - कश्यप ऋषि का पुत्र एक दिन किसी रथ की चपेट में आकर गिर गया और उसे चोट लगी। दुखी होकर वह कहने लगा, गरीब आदमी का जीना ही व्यर्थ है। इसके बजाय मुझे आत्मघात कर लेना चाहिए। ऋषिपुत्र को दुखी देखकर इंद्र गीदड़ के वेष में उनके पास आए और उससे कहने लगे, मनुष्य शरीर पाने के लिए तो सभी उत्सुक रहते हैं। ऐसा दुर्लभ शरीर पाकर उसे यों ही नष्ट कर देना भला कहां की बुद्धिमानी है?

भगवान की बड़ी दया समझिए कि आप किसी दूसरी योनि में नहीं उत्पन्न हुए। हे कश्यप। आत्महत्या करना महापाप है। यही सोचकर मैं वैसा नहीं कर रहा हूं; अन्यथा देखिए, मुझे ये कीड़े काट रहे हैं, लेकिन हाथ न होने से मैं इनसे अपनी रक्षा नहीं कर सकता। आपको अपने वेदोक्त कर्म का वास्तविक फल मिलेगा। आप सावधानी से स्वाध्याय और अग्निहोत्र कीजिए। मुझे देखिए, यह श्रृगाल योनि मेरे कुकर्मों का परिणाम है। मैं कोई ऐसी साधना करना चाहता हूं, जिससे आप जैसा मनुष्य हो सकूं। जबकि आप मनुष्य योनि से छुटकारा पाना चाहते हैं। कश्यप को मानव देह की महत्ता का पता चला। उसे यह, भी मालूम चल गया कि उसे समझानेवाला यह कोई श्रृगाल नहीं, अपितु श्रृगाल वेश में शचिपति इंद्र ही हैं। उसने उनकी पूजा की और उनकी आज्ञा पाकर घर लौट आया।

११९२) तपस्या तभी सार्थक जब वह नि:स्वार्थ हो - बच्चों भक्ति और तपस्या के बारे में शायद आपने सुना होगा। हम आपको बता रहे हैं, निस्वार्थ तप के महत्व के बारे में एक बार मृत्यु के बाद साधु और डाकू साथ-साथ यमराज के दरबार में पहुंचे। यमराज ने कहा मैं आप दोनों के मुंह से ही सुनना चाहता हूं कि आपने अपने जीवन में क्या-क्या किया। पर झूठ न बोलना, यहां असत्य बोलने पर तुम्हारे बचाव की कोई गुंजाइश नहीं है। यमराज की बात सुनकर डाकू डर गया और बोला, महाराज मैंने जीवन-भर पाप किए हैं। मुझे याद आता है कि एक बार मैंने एक निर्धन को खाना खिलाया था और एक बार एक वृद्धा जख्मी हालत में बुरी तरह तड़प रही थी, तब मैंने उसकी मरहम पट्टी करवाई थी।

डाकू की बात सुनकर साधु प्रसन्न होकर बोला, महाराज, मैंने तो जीवन भर तपस्या और भक्ति की। अपार कष्ट सहे, तब कहीं जाकर मुझे ज्ञान की प्राप्ति हुई। इसलिए मेरे लिए यहां सभी सुखसाधनों का प्रबंध किया जाए। यमराज डाकू से बोले, देखो, तुम्हारा जीवन पापमय रहा है। हालांकि तुमने कुछ पुण्य भी किए ही हैं, इसलिए दंड के रूप में तुम साधु की पूर्ण समर्पण भाव से सेवा करो। डाकू ने सिर झुकाकर आज्ञा स्वीकार कर ली। यमराज का आदेश सुनकर साधु नाक-भी सिकोड़ते हुए बोला, महाराज इस दुष्ट के स्पर्श से तो मैं अपवित्र हो जाऊंगा। क्या मेरी भक्ति का पुण्य निरर्थक नहीं हो जाएगा?

यह सुनकर यमराज क्रोधित होकर बोले, यह डाकू अपनी गलती का अहसास कर इतना विनम्र हो गया है कि

तुम्हारी सेवा करने को तैयार है और एक तुम हो कि जीवन भर की तपस्या व भक्ति के बाद भी अहंकारग्रस्त ही रहे और यह न जान सके कि सभी व्यक्तियों में एक ही आत्मतत्व समाया हुआ है। यदि व्यक्ति गलती का अहसास कर नेक रास्ते पर चलने लगे तो उसका मार्गदर्शन करना एक साधु का कर्त्तव्य है। किंतु तुम तो मृत्यु के बाद भी गर्व से भरे हुए हो, इसलिए तुम्हारी तपस्या और भक्ति निरर्थक है। तपस्या और भक्ति तभी सार्थक होती है जब वह नि:स्वार्थ और बिना किसी उद्देश्य के की जाती है।

११९३) अपनी परछाई से ही डर गया मूर्ख - एक गांव में एक मूर्ख रहता था। एक दिन वह कहीं जा रहा था। वह बड़ा डरपोक और शक्की था। इसलिए अकेले चलते हुए डरता था। सोचता था, न जाने किस समय कोई उसे छिपकर मार दे। इसलिए वह इधर-उधर देखकर रास्ते में चलता था। अचानक न जाने क्या ख्याल आया। उसने पीछे मुड़कर देखा, कोई न था। उसकी छाया थी। वह कांप उठा, बोला, वह मेरे पीछे-पीछे कौन चला आ रहा है? छाया ने कुछ न कहा। मूर्ख ने समझा- मुझसे डर गया है। वह आगे बढ़ गया। पर साथ ही उसे यह भी शंका थी कहीं अभी भी पीछा न कर रहा हो। वह एक बार फिर मुड़ा फिर वही छाया दिखायी दी। मूर्ख घबराया। अबकी बार उसने हाथ उठाकर उसे रुकने के लिए संकेत किया। तभी छाया का हाथ टोपी की ओर उठता हुआ दिखायी दिया। मूर्ख ने समझा, मेरी टोपी मांग रहा है उसने अपनी टोपी उसकी तरफ फेंक दी और चलने लगा। आगे चलकर उसे फिर शंका हुई, उसने पीछे मुड़कर देखा। छाया अभी भी पीछे-पीछे चली आ रही थी। मूर्ख चिढ़ उठा अब क्या चाहिए तुझे? उसने पीटने के लिए हाथ बढ़ाया। छाया ने भी हलचल की। छाया में उसके कुर्ते की ओर संकेत दिखायी दिया। मूर्ख ने कुर्ता उत्तर दिया और उसकी ओर फेंकते हुए कहा- ले अब तो खुश है।

मूर्ख फिर आगे बढ़ा। उसे संतोष था कि बला टली। पर मोड़ पर आते ही फिर छाया दिखायी दी। इस बार बड़ा गुस्सा आया। अब उसके शरीर पर धोती के सिवाय कुछ भी न था। बेचारा क्या करता, धोती दे नहीं सकता था। आखिर सिर पर हाथ रखकर वह वहीं पर बैठ गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

उसी रास्ते से एक आदमी आ रहा था। आदमी चतुर था। वह रुक गया। रोने का कारण पूछा मूर्ख ने छाया की ओर संकेत किया और कहा- यह मेरा पीछा कर रही है। मैंने इसे अपनी टोपी दी, फिर कुर्ता दिया। यह न मानी। अब यह मेरी धोती मांग रही है। चतुर आदमी मुस्कुराया और बोला, चिंता न करो। शाम तक यहीं बैठे रहो, वह अपने आप चली जायेगी। मूर्ख ने उसकी बात मान ली। शाम हुई। दिन डूबा। धूप गई। तब मूर्ख उठ खड़ा हुआ। अब उसके पीछे कोई न था। उसने चैन की सांस ली। जान बची। उसने उस चतुर आदमी को मन ही मन धन्यवाद दिया और चला गया।

११९४) बड़ा दिल रखें : क्रोध को बोध से जीता सकता है - एक देवरानी और जेठानी में किसी बात पर जोरदार बहस हुई और दोनों में बात इतनी बढ़ गई कि दोनों ने एक-दूसरे का मुंह तक न देखने की कसम खा ली और अपने अपने कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर लिया।

थोड़ी देर बाद जेठानी के कमरे के दरवाजे पर खट-खट की आवाज हुई। जेठानी तनिक ऊंची आवाज में बोली कौन है, बाहर से आवाज आई दीदी मैं। जेठानी ने जोर से दरवाजा खोला और बोली अभी तो बड़ी कसमें खाकर गई थीं। अब यहाँ

क्यों आई हो?

देवरानी ने कहा, दीदी सोच कर तो वही गई थी, परंतु माँ की कही एक बात याद आ गई कि जब कभी किसी से कुछ कहा-सुनी हो जाए तो उसकी अच्छाइयों को याद करो और मैंने भी वहीं किया और मुझे आपका दियां हुआ प्यार ही याद आया और मैं आपके लिए चाय लेकर आ गई। बस फिर क्या था दोनों रोते-रोते, एक-दूसरे के गले लग गईं और साथ बैठकर चाय पीने लगीं।

जीवन में क्रोध को क्रोध से नहीं जीता जा सकता, बोध से जीता जा सकता है। अग्नि अग्नि से नहीं बुझती जल से बुझती है। समझदार व्यक्ति बड़ी से बड़ी बिगड़ती स्थितियों को दो शब्द प्रेम के बोलकर संभाल लेते हैं। हर स्थिति में संयम और बड़ा दिल रखना ही श्रेष्ठ है।

११९५) लालची मंगतू को मिला लालच का फल - मंगतू किसान गांव में रहता था। वह था तो बड़ा मेहनती लेकिन थोड़ा लालची भी था एक दिन वह खेत में बैठा था। उसने सोचा क्यों ना अपने खेत में गेहूं बोया जाए, लेकिन जैसे ही उसने गेहूं बोना शुरू किया अचानक बारिश होने लगी। उसने भगवान से कहा, हे भगवान, बारिश रुक जाए तो मैं गेहूं बो दूं। उसका कहना था कि बारिश तुरंत बंद हो गई और मौसम साफ हो गया। किसान ने फसल बोकर भगवान से फिर कहा, हे भगवान, अब बारिश कर दो तो मजा आ जाए। उसका कहना था कि बारिश शुरू हो गई। गर्मियों में फसल काटी। इस बार किसान के बहुत अच्छी फसल हुई। इतनी अच्छी कि उसके परिवार और गांव में बेचने के लिए काफी थी। लेकिन किसान लालची जो ठहरा, उसने सोचा अगर थोड़ी और फसल होती, तो मैं पास के गांव में भी बेच देता और मालदार हो जाता। उसने बाहर आकर भगवान से गुस्से में कहा, भगवान, अगर तुम ज्यादा बारिश कर देते तो तुम्हारा क्या जाता? इतना कहना था कि बादल की गड़गड़ाहट के साथ मूसलाधार बारिश होने लगी। इतनी जबरदस्त कि किसान की रखी पकी-पकाई फसल तक बारिश में बह गई और वह बेघर हो गया। किसी ने सही कहा है, लालच बुरी बला है।

११९६) केतन, छोटी बच्ची और कविताएं - केतन अपने परिवार के साथ एक तीर्थ स्थान पर दर्शन करने के लिए गया था। वह जैसे ही दर्शन करके बाहर निकला, उसने देखा एक छोटी-सी लड़की उसका कुर्ता खींच रही है। उसने सोचा यह लड़की जरूर भिक्षा मांग रही होगी और उसने उसे दुत्कार कर भगा दिया। केतन की पत्नी ने उस लड़की को वापस बुलाया और उससे पूछा, क्या चाहिए तुम्हें? लड़की बोली, आंटी मैं पांचवी में पढ़ती हूं और कल मेरी फीस जमा करने का आखिरी दिन है। मेरे पास मेरी कुछ कविताएं हैं, जिन्हें मैं बेचकर पैसे इकट्ठा कर रही हूं। केतन की पत्नी ने लड़की से उसकी कविताएं मांगी। लड़की ने कुछ कागज के पन्ने अपनी कॉपी में से निकाल कर उसे दे दिए। केतन की पत्नी ने देखा कि कविताएं सचमुच हाथ से लिखी हुई थीं और बहुत सुंदर कविताएं थीं। उसने लड़की से पूछा, यह कविताएं किसने लिखीं। लड़की बोली यह मेरे पिता जी की कविताएं हैं। केतन ने पूछा, कहां हैं तुम्हारे पिता जी। बुलाओ जरा उन्हें लड़की ने सिर नीचे कर के कहा, अब वह इस दुनिया में नहीं हैं। केतन और उसकी पत्नी हैरान होकर उस लड़की की तरफ देखने लगे। केतन की पत्नी बोली, क्या तुम हमें अपने घर ले चलोगी। वह लड़की उन दोनों को अपने घर ले गईं। वह लड़की एक अभी बन रही इमारत में रहती थी। जब वह वहां पहुंचे, तो देखा उसकी मां अपने छोटे बेटे को

दूध पिला रही थी। केतन ने हिचकती आवाज में पूछा, क्या यह कविताएं आपके पति की हैं। लड़की की मां बोली, जी हां, वह एक कवि थे। लेकिन पिछले साल बीमारी ने उनकी जान ले ली। केतन को उस वक्त बहुत अफसोस हुआ कि उसने उस छोटी-सी बच्ची के साथ इतना बुरा व्यवहार किया। उसने तुरंत उनको कुछ पैसे दिए और आगे चलकर उन कविताओं की एक किताब भी छपवाई। उस किताब से जितना पैसा आया उससे उस लड़की के परिवार के लिए एक घर का इंतजाम किया और उसकी मां को नौकरी भी दिलवाई। बिना पूरी बात जाने किसी को गलत नहीं समझना चाहिए।

११९७) दुख जीवन में आना स्वाभाविक : मन को झील सा बना लें - एक बार एक नवयुवक किसी साधु के पास पहुंचा। गुरुदेव, मैं अपनी जिंदगी से बहुत परेशान हूं, कृपया इस परेशानी से निकलने का उपाय बताएं, युवक बोला। साधु ने कहा, पानी के ग्लास में एक मुट्ठी नमक डालो और उसे पीयो। युवक ने ऐसा ही किया। इसका स्वाद कैसा लगा? साधु ने पूछा। बहुत ही खराब। एकदम खारा, युवक थूकते हुए बोला। साधु मुस्कुराते हुए बोले, एक बार फिर अपने हाथ में एक मुट्ठी नमक ले लो और मेरे पीछे-पीछे आओ।

दोनों धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे और थोड़ी दूर जाकर स्वच्छ पानी से बनी एक झील के सामने रुक गए।

चलो, अब इस नमक को पानी में डाल दो, साधु ने निर्देश दिया।

युवक ने ऐसा ही किया।

अब इस झील का पानी पियो। साधु बोले। युवक पानी पीने लगा। एक बार फिर साधु ने पूछा, बताओ इसका स्वाद कैसा है, क्या अभी भी तुम्हें ये खारा लग रहा है?

नहीं, ये तो मीठा है, बहुत अच्छा है, युवक बोला। साधु युवक के बगल में बैठ गए और उसका हाथ थामते हुए बोले, जीवन के दु:ख बिलकुल नमक की तरह है; न इससे कम ना ज्यादा।

जीवन में दु:ख की मात्रा वही रहती है, बिलकुल वही। लेकिन हम कितने दु:ख का स्वाद लेते हैं ये इस पर निर्भर करता है कि हम उसे किस पात्र में डाल रहे हैं। इसलिए जब तुम दुखी हो तो सिर्फ इतना कर सकते हो कि खुद को झील सा बड़ा कर लो। ग्लास मत बने रहो।

दु:ख जीवन में अनवरत है, जब तक कि जीवन है। तो क्यों न हम हमारे मन को झील सा बना लें सदैव के लिए और चारों तरफ बाड़ लगा लें अच्छे दोस्तों और परिवारजनों की।

११९८) स्नेहा, उसकी मां और मैनेजर - मां की कहानी, जिसने स्नेहा के दिल से अपने मैनेजर के प्रति नफरत दूर करने के दिए अनोखा तरीका अपनाया।

स्नेहा एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करती थी। लेकिन वह जो भी काम करती, उसकी मैनेजर को हमेशा उसमें कुछ-न-कुछ आपत्ति रहती थी पिछले दो साल से स्नेहा की तरक्की भी उसकी मैनेजर ने रोक रखा था। एक दिन उसने अपनी मां को सारी बातें बताईं और कहा, मेरा मन करता है कि मैं अपनी मैनेजर को जहर दे दूं। स्नेहा की मां बोलीं, ठीक है, अगर तुम यही करना चाहती हो, तो मैं तुम्हारी मदद करूंगी।

लेकिन तुम्हें मेरी सारी बात माननी होगी। स्नेहा बोली, मुझे आप पर पूरा विश्वास है। आप जो भी कहेंगी। स्नेहा की मां

उठीं और कुछ जड़ी-बूटी ले आईं और बोलीं, यह खास किस्म का जहर है। इसे रोज एक पत्ती अपनी मैनेजर की चाय में मिला देना थोड़ी धीरे काम करेगा, लेकिन है बहुत असरदार। तुम्हारा स्वभाव बहुत कोमल और प्रेम भरा रहना चाहिए। स्नेहा समझ गई और अपने दफ्तर वापस लौट गई। अगले दिन से रोज वह एक पत्ती अपने मैनेजर की चाय में मिलाने लगी। मैनेजर जो कुछ भी कहती, वह चुपचाप सुन लेती। धीरे-धीरे कई दिन बीत गए। स्नेहा ने अनुभव किया कि उसका अपनी मैनेजर के प्रति गुस्सा एकदम शांत हो गया था। स्नेहा के बदले स्वभाव से मैनेजर का गुस्सा भी शांत हो गया। एक दिन मैनेजर ने स्नेहा से कहा, आज अगर मेरी बेटी होती, तो वह तुम्हारी ही तरह होती। कुछ ही दिनों में दोनों में मां-बेटी जैसा प्रेम पनपने लगा। अब मैनेजर स्नेहा से पूछे बगैर कोई निर्णय नहीं लेती थीं। स्नेहा को एक साथ दो प्रमोशन भी मिले। स्नेहा अपनी मां के पास पहुंची और कहने लगी कि अब इस जहर का असर किस तरह तरह उतारा जाए, क्योंकि अब मैं मैनेजर को मरते हुए नहीं देख सकती। स्नेहा की मां ने हंसते हुए कहा, बेटा जहर उस मैनेजर में नहीं तुम्हारे मन में था। वे पत्तियां तो मैंने तुम्हारी मैनजर की सेहत बेहतर करने के लिए दी थीं। जहर का इलाज तो कब का हो गया। आप अपना नजरिया बदल लें, तो अपने आसपास की दुनिया भी बदल जाती है।

११९९) संकल्प से अमेरिका के राष्ट्रपति बने - यदि मन में संकल्प दृढ़ है तो सफलता निश्चित है। सफलता के मार्ग में संकल्प शक्ति के बल पर ही मंजिल को पाया जा सकता है। यह बात बहुत पुरानी है। उन दिनों जब अमेरिका के महान पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन नौजवान थे। उन दिनों उनके हालात बहुत खराब थे। वह बेहद अभावग्रस्त जीवन जी रहे थे। वे इतने गरीब थे कि उस समय उनके घर में दो वक्त का खाना भी मुश्किल से बन पाता था। लेकिन विपरीत परिस्थितियों में भी वह हार नहीं मानते थे और समस्याओं की डटकर सामना करते थे। उन्हें पढ़ने का बहुत शौक था, पर गरीब होने के कारण वह पुस्तकें खरीदने में असमर्थ थे। जब उन्हें मालूम होता कि किसी के पास कोई किताब है, तो वह उसके पास तुरंत पहुंच जाते थे। एक बार उन्हें पता चला की उनके गांव में एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश रहते हैं, जिनके पास कानून की विशेष पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। उन दिनों सर्दियों का मौसम था। फिर भी लिंकन कड़ाके की सर्दी में भी न्यायाधीश के गांव में पहुंचने के लिए बर्फीली नदी को पार करने के लिए नाव लेकर चल पड़े। आधी नदी तो किसी तरह पार कर ली पर आगे जाकर नाव बर्फ के एक चट्टान से टकराकर टूट गई। संकल्प के धनी और साहसी लिंकन ने हार नहीं मानी। उन्होंने किसी तरह खुद को संभाला और अनेक मुश्किलों का सामना करते हुए नदी पार कर ली।

इसके बाद वह पता ढूंढते ढूंढते रिटायर्ड जज के घर जा पहुंचे। जज साहब उन्हें घर में मिल गए। लिंकन ने उनसे अपनी पुस्तकें दिखाने का अनुरोध किया। उन दिनों जज के घरेलू काम करनेवाला नौकर छुट्टी पर गया हुआ था, इसलिए उन्हें अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने लिंकन को पुस्तकें इस शर्त पर दिखाना मंजूर कर लिया कि वह उनके नौकर के आने तक उसकी जगह घर का काम संभालेंगे। लिंकन ने किताबों के लिए जज की यह बात स्वीकार कर ली। वह दिनभर जज के घर का काम करते, जंगल से लकड़ियां एकत्रित करके लाते और रात को थक हार कर आराम करने के बजाय पुस्तकें लेकर बैठ जाते, जज महोदय लिंकन की मेहनत, लगन व दृढ़ संकल्प से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने लिंकन को कई पुस्तकें उपहार में दे दीं। लिंकन अपनी इसी संकल्प शक्ति के बल पर एक दिन अमेरिका के

राष्ट्रपति बने और मनचाही सफलता प्राप्त की।

१२००) उस दिन के बाद वे फिर भूखे रहने लगे - एक गरीब आदमी शिकार करने जंगल तो जाता लेकिन अच्छा शिकारी नहीं होने के कारण प्राय: छोटी चिड़िया ही उसके हाथ लगती थी। इस वजह से वह और उसकी पत्नी अधिकतर भूखे ही रहते। एक दिन उस आदमी को कोई छोटी चिड़िया भी नहीं मिल पाई। वह थक-कर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी उसे किसी चिड़िया की मीठी आवाज सुनाई दी। उसने सिर उठाकर देखा तो एक छोटी सी चिड़िया डाल पर बैठी थी। उसके पंख लाल थे। वह चिड़िया बोली, तुम गरीब हो। मैं तुम्हारी मदद करना चाहती हूं। मैं तुम्हें अपना एक पंख दूंगी। तुम घर जाकर उसे पका लेना, तुम्हें बढ़िया खाना मिल जाएगा।

उसने चिड़िया को धन्यवाद दिया और घर आया। उसकी पत्नी सब सुनकर उसका मजाक उड़ाने लगी, मूर्ख आदमी। उस चिड़िया को पकड़ लाते तो हमें कुछ तो खाना मिला जाता? आदमी ने पत्नी की बात का कोई जवाब नहीं दिया और पंख पकाने लगा। थोड़ी देर में बर्तन खाने से भर गया। वह अब रोज चिड़िया से एक पंख मांग लाता। लेकिन पत्नी को इससे संतोष नहीं था। वह चाहती थी कि वह चिड़िया ही उसके पास हो और वह मर्जी से दो, तीन या चार पंख पकाकर ज्यादा खाना खा सके। जबकि पति कहता, वह चिड़िया तो मेरी दोस्त है।

एक दिन जब वह आदमी जंगल जा रहा था, उसकी पत्नी छुपकर उसका पीछा करने लगी। चिड़िया को देखते ही उसने पत्थर चला दिया। चिड़िया पेड़ से नीचे गिर पड़ी। चिड़िया को देखकर आदमी बहुत दुखी हुआ। उसकी पत्नी खुश थी। वह बोली- आज हमें ज्यादा खाना मिलेगा। चिड़िया को लेकर वे घर आए। औरत ने चिड़िया का एक पंख नोच लिया। वह उसे बर्तन में पकाने लगी। पकाती रही, पकाती रही लेकिन वह पंख अंत तक पंख ही रहा। वह खाने में नहीं बदला। उस दिन के बाद वे दोनों फिर से भूखे रहने लगे।

१२०१) मुरली, बंसी और जीत की खुशी - दो सगे भाइयों की कथा जिनकी सोच मां द्वारा सुनाई गई एक कहानी ने बदल दी। मुरली और बंसी सगे भाई थे, पर उनके बीच छत्तीस का आंकड़ा था। दिवाली से पहले मां ने उन्हें कहा। घर की सफाई करना तुम दोनों की जिम्मेदारी है। जो ज्यादा अच्छे से सफाई करेगा, उसे खास उपहार मिलेगा। यह कहकर मां ने घर को दो भागों में बांट दिया। शुरू में दोनों ने काफी मेहनत की। उसके बाद बंसी को ख्याल आया, इनाम जीतने के दो ही तरीके हैं या तो रगड़-रगड़ कर अपने हिस्से की सफाई करो या मुरली के हिस्से को गंदा कर दो। चूंकि सफाई करने में ज्यादा समय लगता, इसलिए वह मुरली के हिस्से में कचरा फैलाने लगा। मुरली को यह देख गुस्सा आया। मां ने दोनों को बुलाकर कहा, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाती हूं। एक प्रतियोगिता में नि:शक्तजनों की दौड़ हो रही थी। तभी एक प्रतिभागी का पैर कहीं फंसा और वह दर्द से कराहने लगा। आगे निकल चुके प्रतियोगी उसकी आवाज सुन रूक गए। उसमें से एक लड़की, जिसका एक पैर एक हादसे में कट गया था, वापस मुड़ी और उस प्रतियोगी के पास जाकर अपना हाथ आगे बढ़ाकर बोली, चलो, हम साथ में दौड़ते हैं। उसे देख बाकी प्रतियोगी भी वापस आए और सबने एक साथ फिनिश लाइन पार की। स्टेडियम में मौजूद लोगों ने खड़े होकर सभी प्रतियोगियों को सलामी दी। मां कहने लगी, मैंने तुम्हें यह कहानी इसलिए सुनाई, ताकि तुम समझ पाओ कि जिंदगी में जीत ही सब कुछ नहीं होती। ऐसी कोई जीत नहीं, जो तुम्हें हमेशा

के लिए खुश कर सकें। खुशी प्यार बांटने और एक दूसरे की मदद करने में मिलती है। कभी एक दूसरे को जीताकर देखो, तुम्हें समझ में आ जाएगा कि वह खुशी तुम्हारे खुद के जीतने से कितनी बड़ी है। मुरली और बंसी ने एक दूसरे की तरफ देखा, क्षमा मांगी और दोनों ने मिलकर घर की सफाई शुरू कर दी। वह जीत किस काम की, जिसमें खुशी न मिले।

१२०२) हीरे की तरह ही बहुत मूल्यवान है हमारा मानव जीवन - एक हीरा व्यापारी था जो हीरे का बहुत बड़ा विशेषज्ञ माना जाता था। किन्तु किसी गंभीर बीमारी के चलते अल्प आयु में ही उसकी मृत्यु हो गयी। अपने पीछे वह अपनी पत्नी और बेटा छोड़ गया।

जब बेटा बड़ा हुआ तो उसकी मां ने कहा, बेटा, मरने से पहले तुम्हारे पिताजी ये पत्थर छोड़ गए थे, तुम इसे लेकर बाजार जाओ और इसकी कीमत का पता लगाओ। लेकिन ध्यान रहे कि तुम्हे केवल कीमत पता करनी है, इसे बेचना नहीं है। युवक पत्थर लेकर निकला, सबसे पहले उसे एक सब्जी बेचनेवाली महिला मिली। अम्मा, तुम इस पत्थर के बदले मुझे क्या दे सकती हो? युवक ने पूछा।

देना ही है तो तो गाजरों के बदले मुझे ये दे दो। तौलने के काम आएगा, सब्जीवाली बोली।

युवक आगे बढ़ गया। इस बार वो एक दुकानदार के पास गया और उससे पत्थर की कीमत जानना चाही। दुकानदार बोला, इसके बदले मैं अधिक से अधिक ५०० रुपये दे सकता हूं, देना हो तो दो नहीं तो आगे बढ़ जाओ।

युवक इस बार एक सुनार के पास गया, सुनार ने पत्थर के बदले २० हजार देने की बात की। फिर वह हीरे की एक प्रतिष्ठित दुकान पर गया वहां उसे पत्थर के बदले १ लाख रुपये का प्रस्ताव मिला और अंत में युवक शहर के सबसे बड़े हीरा विशेषज्ञ के पास पहुंचा और बोला, श्रीमान, कृपया इस पत्थर की कीमत बताने का कष्ट करें।

विशेषज्ञ ने ध्यान से पत्थर का निरीक्षण किया और आश्चर्य से युवक की तरफ देखते हुए बोला, यह तो एक अमूल्य हीरा है। करोड़ों रुपये देकर भी ऐसा हीरा मिलना मुश्किल है। यदि हम गहराई से सोचें तो ऐसा ही मूल्यवान हमारा मानव जीवन भी है। यह अलग बात है कि हम में से बहुत से लोग इसकी कीमत नहीं जानते और सब्जी बेचनेवाली महिला की तरह इसे मामूली समझ तुच्छ कामों में लगा देते हैं। परमेश्वर सभी को इस मूल्यवान जीवन को समझने की सद्‌बुद्धि दे और हम हीरे के विशेषज्ञ की तरह इस जीवन का मूल्य आंक सकें।

१२०३) बुराइयों की थैली आगे और अच्छाइयों की थैली पीछे - एक चौराहे पर तीन यात्री मिले। तीनों के कंधों पर दो-दो झोले आगे-पीछे लटके हुए थे। अपनी लंबी यात्रा से तीनों थके हुए थे, लेकिन एक यात्री के चेहरे पर प्रसन्नता और उत्साह का भाव था। दूसरा यात्री श्रम से थका हुआ तो था, लेकिन निराश या क्लांत नहीं था। पर तीसरा बेहद मुरझाया हुआ और दुखी दिख रहा था।

तीनों एक पेड़ की छाया में बैठकर सुस्ताने लगे। बातचीत होने लगी, कौन कहां से आ रहा है, कहां जा रहा है, किसकी झोली में क्या रखा है।

एक यात्री ने बताया कि उसने अपनी पीछे की झोली में कुटुंबियों और उपकारी मित्रों की भलाइयां भर रखी थी और सामने की झोली में उन लोगों की बुराइयां रखीं थी।

दूसरे ने आगे के झोले में अपने मित्रों और हितैषियों की अच्छाइयां लटका रखी थीं और उनकी बुराइयों की थैली पीछे लटका रखी थी, जिन्हें देख-देखकर अपनी सराहना करता और खुश होता। फिर तीसरे यात्री से उन दोनों ने पूछा- तुम्हारे झोलों में क्या भरा है? आगे का झोला तो काफी भारी लगता है, पीछे का झोला हल्का है।

उसने बताया कि उसने भी अच्छाइयों की थैली आगे और बुराइयों की थैली पीछे लटका रखी है, लेकिन पीछे की थैली में एक छेद है, इसलिए बुराइयां टिकती नहीं, एक-एक कर गिर जाती हैं और पीछे का वजन हल्का हो जाता है।

जिस यात्री ने आगे झोले में अच्छाइयां और पीछे के झोले में बुराइयां भर रखी थीं, वह प्रसन्न था, क्योंकि चलते समय उसकी नजर हमेशा अच्छाइयों पर ही पड़ता था और बुराइयों को वह भूला रहता था।

जिसके थैले में छेद था, वह उत्साह से भी भरा रहता था, क्योंकि चलते समय वह आगे लटकी अच्छाइयों को तो देखता ही था, उस पर बुराइयों का वजन भी कम करता था। वे रास्ते में धीरे-धीरे गिर जाती थीं।

इनके विपरीत जिसने बुराइयों की थैली आगे और अच्छाइयों की थैली पीछे लटका रखी थी, वह हमेशा थका हुआ और निराश रहता था। यही जीवन यात्रा का सार तत्व है।

१२०४) प्रोफेसर, लड़के और पेड़ की उम्र - तीन छात्रों की कहानी, जो मेहनत से जी चुराते थे, पर प्रोफेसर ने उन्हें अनूठे तरीके से समझाया।

प्रोफेसर कार्निक वनस्पति शास्त्र के प्रसिद्ध प्रोफेसर थे। छात्र उनके साथ काम करने के लिए तड़पते थे। प्रोफेसर दिल खोलकर सबकी मदद भी करते थे। पर आलसी छात्रों से वह सख्ती से पेश आते थे। एक बार प्रोफेसर ने सभी छात्रों को कॉलेज कैंपस के मध्य स्थित एक पेड़ के बारे में जानकारी इकट्ठा करके लाने को कहा।

तीन कामचोर विद्यार्थियों ने सोचा, हमारे दोस्त तो जा ही रहे हैं, हम क्यों अपना समय बर्बाद करें? दोस्तों से पेड़ के बारे में पूछकर प्रोफेसर को बता देंगे। अगले दिन क्लास में प्रोफेसर ने पूछा, आप सब कल पेड़ देखने तो गए ही होंगे। आप में से कितने छात्र उस पेड़ को दो सौ साल से पुराना मानते है? तीन कामचोर छात्रों को लगा, इतना विशाल पेड़ है, तीन सौ साल पुराना तो होगा ही। तीनों ने हाथ खड़े कर दिए। प्रोफेसर ने उन्हें एक कहानी सुनाई, एक बार एक राजा ने यह पता लगाने का फैसला किया कि राज्य में कितने लोग मेहनत करते हैं और कितने लोग सिर्फ बातों से काम चलाते हैं। राजा ने सड़क के बीच में एक बड़ा-सा पत्थर रखवा दिया और खुद पीछे छिप गया।

पहले वहां से कुछ जमींदार गुजरे। उन्होंने पत्थर को देखा और बगल से निकल गए। फिर राजदरबार के कुछ अधिकारी, मंत्री, कई सैनिक और कुछ ग्रामीणों ने भी पत्थर को नजरअंदाज कर दिया। फिर वहां से एक गरीब आदमी गुजरा। उसके सिर पर एक बड़ी गठरी थी। पत्थर देख वह रुक गया। उसने गठरी किनारे रखी और पत्थर को धकेलने लगा। काफी कोशिशों के बाद उसने पत्थर को मार्ग से हटा दिया। पत्थर के नीचे उसे एक पोटली मिली, जिसमें सोने की गिन्नियां भरी थी। कहानी सुनाकर प्रोफेसर ने उन तीन छात्रों से कहा, अगर आप कल पेड़ देखने गए होते, तो आपको पता चलता कि वह बहुत छोटा- सा पेड़ है। आपका झूठ पकड़ा गया। मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। मेहनत से ही सफलता मिलती है।

१२०५) लोहार व बढ़ई का नया घर - एक वजीर के घर की दायीं ओर एक लोहर रहता था और बायीं ओर एक बढ़ई। दोनों दिन रात खटर-पटर करते रहते और वजीर की सुख-शांति भंग करते। जब उससे और बर्दाश्त नहीं हुआ तो वजीर ने दोनों को बुलाया और घर बदलने के लिए कहा।

एक दिन लोहार आया और वजीर से बोला- हुजूर, आपकी आज्ञानुसार मैं आज ही अपना घर बदल रहा हूं। वजीर को बहुत खुशी हुई। कुछ देर बाद वजीर के पास बढ़ई पहुंचा, हुजूर, मैं भी अपना घर बदल रहा हूं। वजीर को बहुत ही अच्छा लगा। उसने मन ही मन चैन की सांस ली। लेकिन, ऊपरी मन से बनावटी दुख प्रकट किया कि मेरे इतने अच्छे पड़ोसी चले जाएंगे। उसने उन्हें बहुत बढ़िया भोजन खिलाकर विदा किया, लेकिन हथौड़े और आरी चलने की आवाज अभी भी बंद नहीं हुई थी। वजीर को ताज्जुब हुआ और गुस्से से उबलने भी लगा, उसने नौकरों को बुलाकर कहा, पता लगाओ क्या बात है? नौकर यह समाचार लेकर लौटे कि बढ़ई और लोहार ने घर बदला जरूर था लेकिन बढ़ई लोहार के घर में चला गया और लोहार बढ़ई के घर में और दोनों मजे में रात-दिन अपने हथौड़े और आरे चलाते रहे।

१२०६) ज्ञानी वह है जो गुरु से प्राप्त ज्ञान को अपने जीवन में उतार लेता है - एक भालू हर समय अपने स्वामी की सेवा में लगा रहता। एक दिन उसका स्वामी दूसरे गांव जाते हुए एक पेड़ के नीचे आराम करने लेट गया। उसकी आंख लग गई। भालू स्वामी की रक्षा के लिए पास ही बैठ गया ताकि कोई जानवर उसे नुकसान न पहुंचा पाए। भालू ने देखा एक मक्खी बार-बार उसके स्वामी के मुंह पर उड़कर उसकी नींद में व्यवधान डाल रही है। भालू ने मक्खी को कई बार उड़ाया, लेकिन वह बार-बार चेहरे पर ही आ जाए। यह देखकर भालू को गुस्सा आ गया, उसने मक्खी को मारने के लिए एक बड़ा पत्थर लिया और जैसे ही वह स्वामी के मुंह पर बैठी, उसने जोर से पत्थर मार दिया। मक्खी तो उड़ गई, लेकिन भालू का स्वामी मर गया। भालू अपने स्वामी का भक्त तो था, लेकिन उसमें भक्ति के साथ-साथ ज्ञान नहीं था। वह अज्ञानी भक्त था। यदि वह ज्ञानी- भक्त होता तो अपने स्वामी को न मारता।

१२०७) जब भगवान साथ हो - एक महात्मा अपने शिष्य के साथ घने जंगल से होकर जा रहे थे। उनकी साधना का समय हो गया। वे उसमें लीन हो गए। शिष्य भी साधना करने बैठा। तभी पास के जंगल से एक शेर की दहाड़ सुनाई दी। शिष्य घबरा गया और जान बचाने के लिए पेड़ पर चढ़ गया, लेकिन महात्मा एकाग्रचित थे। शेर वहाँ आया। उसने महात्मा को देखा। फिर पेड़ पर चढ़े शिष्य को देखा। महात्मा के सामने गर्दन झुकाकर चलता बना। लेकिन शिष्य के पेड़ के नीचे इतनी जोर से दहाड़ा कि शिष्य और भी डर गया। उसे डराकर शेर जंगल की ओर चला गया। शिष्य को जब शेर के जाने का यकीन हो गया, तब वह पेड़ से उतरा। साधना समाप्त करके गुरु ने अपना सामान समेटा और चल दिए। काफी दूर तक दोनों खामोश चलते गए। तभी शिष्य को एक थप्पड़ की आवाज सुनाई दी। महात्मा ने अपने ही गाल पर जोर से चाँटा मारा। शिष्य ने ताज्जुब से पूछा, आपने अपने ही गाल पर थप्पड़ क्यों मारा? महात्मा ने कहा, मेरे गाल पर एक मच्छर बैठ गया और उसने मुझे काट लिया। उसे मारने के लिए मैंने चाँटा मारा। शिष्य ने पूछा गुरुवर, जब शेर आ गया, तब तो आप एकाग्र होकर साधना में लीन थे और अब एक मच्छर ने आपको इतना परेशान कर दिया? महात्मा ने जवाब दिया, दोनों हालात में जमीन-आसमान का अन्तर है। उस वक्त मैं भगवान के साथ था, इस वक्त शिष्य के साथ हूं।

भगवान के साथ होने पर कोई खबर नहीं रहती।

१२०८) संचित, किंशुक और कंपनी - संचित एक बड़ी कंपनी में सीनियर मैनेजर था। उसके साथ किंशुक भी काम करता था। संचित अपनी टीम के हर कर्मचारी को आगे बढ़ने का मौका देता था। वहीं किंशुक मौकापरस्त आदमी था। वह खुद को संचित का छोटा भाई कहता था, पर उसके इरादे कुछ और ही थे। संचित अपना ध्यान टीम को प्रोत्साहित करने और कंपनी के उद्देश्यों को हासिल करने में लगाता था। जबकि किंशुक मौका पाकर अधिकारियों की चापलूसी करने का एक भी अवसर नहीं छोड़ता था। धीरे-धीरे उसने सभी अधिकारियों के साथ अच्छी पैठ बना ली थी। एक बार कंपनी के एक अधिकारी संचित की टीम के एक सदस्य से नाराज हो गए। संचित ने टीम को तो समझाया ही, अधिकारियों से भी अपनी टीम के पक्ष में बात की। बस मौका देखते ही अधिकारियों ने संचित की जगह किंशुक को बिठा दिया। पद ग्रहण करते ही किंशुक ने सबसे पहले उस सदस्य को टीम से बाहर कर दिया। जिससे अधिकारी नाराज थे। जबकि संचित को दूसरा काम दे दिया गया। किंशुक को लगने लगा कि अब तो वही राजा है। सारे निर्णय वही लेगा। उसने संचित के बनाए सारे नियम सिरे से खारिज कर दिए और नए नियम ले आया, लेकिन कुछ ही दिनों में जब अधिकारियों ने परखा, तो पाया कि कंपनी पहले के मुकाबले काफी नुकसान में चल रही है। उन्होंने किंशुक को कई बार चेतावनी दी। पर वह तो अधिकार के नशे में धुत्त था। लिहाजा किंशुक को कंपनी से बाहर कर दिया गया। दूसरी तरफ संचित अपने नए काम और नई टीम के साथ लगातार सफलता के झंडे गाड़ता रहा। आगे चलकर कंपनी ने उसे न केवल प्रमोट किया, बल्कि उसकी बनाई गई नीतियों और नियमों को पूरी कंपनी में लागू कर दिया। शॉर्टकट आजमाने वालों को स्थायी सफलता नहीं मिलती।

१२०९) सर्वश्रेष्ठ शासक - सम्राट अशोक का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था, इसलिए सभी प्रांतों के शासक उत्सव में शामिल होने के लिए पधारे थे। सम्राट ने घोषणा की कि आज सर्वश्रेष्ठ शासक को पुरस्कृत किया जाएगा। जब सभी शासकों से उनके प्रांत का हाल पूछा गया, तो उत्तरी सीमांत का शासक बोला, महाराज इस वर्ष मेरे प्रांत की आय तीन गुनी हो गई है। दक्षिण के शासक ने बताया इस वर्ष मेरे कोषागार में पिछले वर्ष की तुलना में दोगुना स्वर्ण एकत्रित हुआ है। पश्चिमी प्रांत के शासक ने बड़े गर्व से बताया, मैंने प्रजा पर कर बढ़ा दिए हैं। इससे आय कई गुना बढ़ गई है। इसी प्रकार अन्य शासकों ने दोगुनी-तीन गुनी आय होने की सूचना दी। पर मगध के शासक ने विनम्रता से कहा, महाराज, क्षमा करें। इस वर्ष तो मेरे प्रांत में पिछले वर्ष से आधा ही धन जमा हुआ है। उनसे पूछा गया, वह क्यों? उसने जवाब दिया। इस वर्ष राजसेवकों को कुछ सुविधाएं दी गई हैं। वे निष्ठा, ईमानदारी और परिश्रम से काम करते हैं। मैंने नागरिकों के कर भी घटा दिए हैं। वर्ष के अंत तक उनके लिए और भी धर्मशालाएं, चिकित्सालय और पाठशालाएं खोलने का विचार है। सम्राट ने उठकर कहा, मुझे रक्त से सनी स्वर्णराशि नहीं चाहिए। प्रजा सुखी रहे और उसे सुख-सुविधाएं मिलती रहें, यही मेरी इच्छा है, इसलिए सर्वश्रेष्ठ शासक का पुरस्कार पाने के अधिकारी मगध के शासक हैं।

१२१०) पहली बार देखना - शांति प्रसाद नामक युवक अपने पिता के साथ रेलगाड़ी में सफर कर रहा था। वह बार-बार कंपार्टमेंट की खिड़की से झांक रहा था और बाहर दिखाई दे रहे पेड़-पौधों को देखकर जोर-जोर से चिल्ला रहा था

और हंस रहा था। जैसे उसने बादलों को अपनी जिंदगी में पहली बार देखा हो या रेलगाड़ी में पहली बार सफर कर रहा हो। उसके पास ही एक शादीशुदा जोड़ा बैठा हुआ था।

पति-पत्नी यह सब देखकर खूब हंस रहे थे। उन्हें लग रहा था कि जरूर यह युवक पागल होगा। नहीं, तो वह ऐसी हरकत क्यों कर रहा है। तभी शांति प्रसाद ने अपने पिता से कहा, देखो पिताजी, बाहर आसमान में बादलों को देखो, वे भी हमारे साथ दौड़ रहे हैं। यह सब कितना अच्छा लग रहा है न। अब उस जोड़े ने मान लिया कि यह लड़का पागल ही है।

युवक ने अचानक शांति प्रसाद के पिता से कहा, आप अपने बेटे को किसी चिकित्सक को क्यों नहीं दिखाते? उसकी पत्नी को डर लगा कि पता नहीं, सामनेवाला क्या प्रतिक्रिया दे। युवक के पिता ने उत्तर दिया, हां, हम चिकित्सक के पास से ही आ रहे हैं। दरअसल मेरा बेटा जन्म के समय से ही अंधा था, कुछ देख नहीं सकता था। आज उसकी आंखों का ऑपरेशन हुआ है। भगवान की कृपा से अब वह देखने लगा है। वह पहली बार खुली आंखों से सब कुछ देख पा रहा है, इसी कारण बहुत खुश है।

१२११) एक घंटे की कीमत - अभिषेक से नन्हे पलाश ने कहा- पापा, क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकता हूँ? हां-हां पूछो, क्या पूछना है? अभिषेक ने कहा। पापा, आप एक घंटे में कितना कमा लेते हैं? इससे तुम्हारा क्या लेना-देना, तुम ऐसे बेकार के सवाल क्यों कर रहे हो? १०० रुपये कमाता हूं अभिषेक ने गुस्से में जवाब दिया। पापा, क्या आप मुझे ५० रुपये उधार दे सकते हैं? इतना सुनते ही अभिषेक आगबबूला हो उठा- तो तुम इसीलिए ये फालतू का सवाल कर रहे थे ताकि मुझसे पैसे लेकर कोई ऊटपटांग चीज खरीद सको। यह सुन पलाश की आँखों में आंसू आ गए और वह अपने कमरे में चला गया। अभिषेक अभी भी गुस्से में था। एक घंटा बीतने के बाद वह थोड़ा शांत हुआ और सोचने लगा कि हो सकता है कि उसके बेटे ने किसी जरूरी काम के लिए पैसे मांगे हो, क्योंकि आज से पहले उसने कभी इस तरह से पैसे नहीं मांगे थे। फिर वह उठकर बेटे के कमरे में गया और बोला, मैंने बेकार में ही तुम्हें डांट दिया, आई एम सॉरी बेटा। ये लो ५० रुपये। थैंक यू पापा पलाश ने खुशी से पैसे लेते हुए कहा और फिर वह तेजी से उठकर अपनी अलमारी की तरफ गया, वहां से उसने ढेर सारे सिक्के निकाले। यह देख अभिषेक फिर से क्रोधित होने लगा, पलाश, जब तुम्हारे पास पहले से ही पैसे थे तो तुमने मुझसे और पैसे क्यों मांगे? क्योंकि मेरे पास पैसे कम थे, पर अब पूरे हैं। पापा अब मेरे पास १०० रुपयें हैं। क्या मैं आपका एक घंटा खरीद सकता हूँ? प्लीज आप ये पैसे ले लीजिये और कल घर जल्दी आ जाइये, मैं आपके साथ बैठकर खाना खाना चाहता हूँ।

१२१२) बेशर्म - हम दो ही बेटे थे अम्मा के। अम्मा अब नहीं है। चली गयी भगवान के पास, दूर बहुत दूर। पिता अम्मा के न रहने पर बिखरते जा रहे हैं। वसीयत कर दी है पिता ने- मेरे और बड़े भैया के नाम। हम दोनों को बराबर दिया है। हम दोनों ने अपने अपने हिस्से सहेजकर रख लिए हैं। पिता अब बहुत ज्यादा बीमार हैं। इलाज चल रहा है पिछले १५ दिनों से मेरे पास ही रहते हैं। आज बड़े भैया आए हैं गांव से उन्हें देखने। आज ही डॉक्टर के पास ले जाना है। मैं डॉक्टर की पर्ची ढूंढ रहा हूं। मिल नहीं रही है। कहां रख दी थी जो नहीं मिल रही। पता नहीं भैया, रखी तो संभाल कर थी। कहीं ऐसा तो नहीं, कूड़े के साथ बुहार दी हो। फिर संभालकर रखना कहां हुआ? भैया ने अपनी

लाल-लाल आंखें दिखाईं। अच्छा बताओ वसीयत कहां रखी है? भैया, वह तो बैंक में रखी है, लॉकर में, सुरक्षित। मैं बेशर्मों की तरह खिलखिला पड़ता हूं।

१२१३) मन का मरहम - ओहो फिर से ये कंकड़ फोड़ खेल। क्या मिलता है तुझे कंकड़ बिखरा के। बेटा तो बेटा, मुन्ना तू भी बच्चे के साथ बच्चा बन जाता है। दादा ने झिड़कते हुए नन्हें बिन्नू के पास खड़े बेटे मुन्ना से कहा। दादा ये कंकड़ नहीं वो बिल्डिंग है जो बन गई है हमारे खेत को छीन। अब कुछ कर तो नहीं पाये सरकार का। तो इन्हें ही फोड़, मन भर लेते हैं। पास खड़े बिन्नू को गोद में लेते हुए मुन्ना ने कहा। अच्छा तो एक बड़ा पत्थर मुझे भी दे भला। वो देखो फिर छितराई ससुरी एक और मुन्ना और दादा खुशी से उचल पड़े। नन्हें बिन्नू को ताली बजाने का मौका मिल गया। मानो तीनों पीढ़ियों मन पर मरहम लगा रही हों।

१२१४) जरूरत - शूटिंग की तैयारी थी। सेट लग चुका था। बस निर्देशक के आने की प्रतीक्षा थी। उनके आते ही सब सचेत हो उठे। सीमा सिंह-कानपुर सब रेडी है? आते ही अपने असिस्टेंट से पूछा। जी सर उसने मुस्तैदी से उत्तर दिया। एक बार सीन ब्रीफ करो। जी, सीन है, मां-बाप का लाड़ला बेटा रूठ गया है, तो माता-पिता तरह-तरह की खाने-पीने की चीजें लाकर उसको मना रहे हैं और बच्चा गुस्से में फेंक रहा है और वो बाल कलाकार? उसका क्या हुआ? अस्पताल से छुट्टी मिल गई? नहीं सर, पर दूसरे बच्चे का इंतजाम कर लिया है। यहीं पास की बस्ती से इंतजाम किया है। सिर्फ दो सीन हैं बच्चे के, दो सौ रुपए रोज पर बुलाया है। काम कर सकेगा? जी सर, मैंने सब समझा दिया है। ओके, चलो फिर, लाइट, कैमरा, एक्शन कट। कट। कट। हाथ से रखना नहीं है, उठाकर फेंकना है। अस्टिटेंट ने झुंझलाहट काबू करते हुए कहा, पहले केक और पेस्ट्री हाथ मारकर दूर गिराओ, फिर दूध का गिलास गिरा दो, ठीक? चलो, फिर से डायरेक्टर ने खीजकर कहा- एक्शन ओहो, कट। कट। कट। अबे, तुझको समझाया था ना? फेंक दे, नीचे गिरा दे। ये इतना संभालकर क्यों रख रहा है बच्चे ने सुबकते हुए कहा, उन अंकल ने कहा था कि शूटिंग के बाद खाने का सारा सामान मैं घर ले जा सकता हूं।

१२१५) गेंद - बैंक में हाहाकार मचा था। नोट बदलने के लिए, नकदी निकासी के लिए लोग एक दूसरे के ऊपर गिर-पड़ रहे थे। सपेरे की पत्नी सुनीता चौथे दिन लाइन में लगी, लस्त-पस्त हो रही थी। नौवां महीना उसके पेट को चल रहा था। अपना जमा धन ही निकालने के लिए लोग नाकों चने चबा रहे थे। सुनीता की बूढ़ी सास बड़ी उम्मीद लिये बहू को लाइन में लगाए थी, तभी सुनीता की सूरत बिगड़ने लगी, चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं, फिर चकराते हुए गश खाकर धराशायी हो गई।

नई दुनिया में नये मेहमान के आने की दस्तक थी। सास ताड़ गई, फौरन भीड़ हटाते हुए अपनी मैली-कुचैली शाल से पर्देदारी की रस्म निभाई फिर कुछ महिलाएं भी इस सनातन परम्परा में सहयोग के लिए आगे बढ़ गई। पुण्य के कार्य में कुछ पुण्यात्माएं जुड़ीं। फिर कहां-कहां की सदाएं बैंक में गूंज उठीं। जैसे बसंत के नए किसलय फूट पड़े हों। खजांची आ गया खजांची आ गया। फिर चुहलबाजी के बहाव में भीड़ का उफनता तूफान जाता रहा। फिर कुछ लोग जच्चा-बच्चा की रक्षा की फरियाद मन ही मन ईश्वर से करने लगे, फिर खबर छपी। उनकी फरियाद ऊपरवाले ने सुनी। मुख्यमंत्री ने

प्रसूता को दो लाख दिए और कहा- ऐसी नोटबंदी किस काम की। प्रसूताएं बैंकों की लाइन में बच्चे जन रही हैं। उनका बयान राजनीति के एक पाले से फेंकी गई वह गेंद थी, जिसे दूसरे पाले वाले ने तीसरे पाले में डाल दिया, तीसरे पाले में जाती हुई यह गेंद फिर राजनीति के दलदल में समा गई बिला गई।

१२१६) आत्मा से निकली बात - न्यूयार्क में एडवर्ड ऐनिस नामक एक व्यक्ति रहता था जो अत्यधिक निर्धन था। उसकी धर्म-कर्म और ईश्वर में बहुत आस्था थी। वह इतना आत्मविश्वासी था कि इसी एक गुण के कारण उसका सभी सम्मान करते थे। निर्धनता की अवस्था में काफी समय बीत गया। एक दिन वह किसी स्थान के पास से गुजर रहा था तो उसे ऐसा आभास हुआ, इस स्थान पर द्रव मात्रा में काफी सोना विद्यमान है। वह प्राय: कहा करता था- मेरी आत्मा इतनी विकार रहित है, जैसे उन्हें मैं सचमुच देख रहा हूँ। जब मेरा विश्वास दृढ़ ही जाता है तो फिर उस कार्य की सफलता में कुछ सन्देह भी नहीं रह जाता। ऐनिस के पास धन नहीं था तो भी उसने अपने तमाम साधन एकत्रित करके कुछ मित्रों से सहायता प्राप्त करके वह जमीन खरीद ली और वहाँ खुदाई प्रारम्भ कर दी। दुर्भाग्य कि वहां कुछ चाँदी के टुकड़े ही उपलब्ध हुए और उसके बाद उनकी मृत्यु हो गई। मरने से पहले अपने एक संदेश में एनिस ने कहा- जो बात आत्मा से निकलती है, वह कभी झूठ नहीं होती। मुझे नहीं मिला तो क्या, अभी उस स्थान पर सोना है अवश्य। उनकी मृत्यु के १६ वर्ष बाद श्रीमती मार्या मारले ने, जिन्हें एनिस के आत्मविश्वास पर भारी भरोसा था, फिर से खुदाई का काम जारी करवाया। ६०० फीट तक खुदाई करने के बाद वहाँ सोने, चाँदी, तांबे और जिंक के भंडार मिले। इससे उस महिला को कई लाख डॉलर का लाभ हुआ। अपनी सफलता पर उन्होंने केवल इतनी ही टिप्पणी की आत्मविश्वास अपने आप एक ज्योतिष है, ऐसा मनुष्य भले ही अपने लिए कुछ न करे पर उसकी विकसित अंतर-शक्ति दूसरों का कल्याण कर सकती है।

१२१७) सहधर्मी - उसने मेरी ओर कृतज्ञता की दृष्टि से देखा, साहब, अगर आप न बचाते तो ये भीड़ मुझे पिलपिला बना देती। आप सोचिए, मैं बाल-बच्चोंवाला आदमी भला जेब कैसे काट सकता हूं। उसने होंठ पर लगे खून को अंगुली से पोछते हुए कहा- आप मेरे साथ एक कप चाय नहीं पियेंगे? मैं उसके अनुरोध को टाल न सका। चाय के दौरान उसने बताया कि उसकी पत्नी असफलता अत्यंत पतिव्रता है। उसकी तीनों लड़कियां- कुंठा, निराशा, भग्नाशा जवान हो गई है और दुर्भाग्य नामक लड़का ग्रेजुएट होने पर भी बेरोजगार है। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह हू-ब-हू मेरी ही कहानी सुना रहा था।

१२१८) दखल - घर में जो खाली जगह पड़ी है, वहां दो कमरे बनाने का विचार था पिताजी। क्यों क्या पीजी वगैरह बनाने का विचार है? नहीं, पिताजी आप तो जानते हैं मुझे आजाद रहने की आदत है, कोई दखल नहीं और फिर पीजी वाले या किरायेदारों के साथ मुझे कुछ व्यवधान सा महसूस होता है। तो और दो कमरे डाल के क्या करोगे, बेकार का खर्चा। अब एक कमरा अलग हो, उसमें टीवी लगा हो, बाथरूम अटैच्ड हो, उसमें आप आराम से बैठें, अपना मनपसंद कार्यक्रम देखें, पूजा पाठ करें। ये दो कमरों में सबकी सेटिंग नहीं आ रही। यहां आपको बच्चे भी डिस्टर्ब करते हैं। वो अपना चैनल लगाने की जिद करते हैं। ऊपर वाला कमरा भी तो खाली ही है, वहां बच्चों को अलग से टीवी लगा देंगे। अरे पिताजी

बच्चे तो ऊपर वाले कमरे में चढ़ उतर लेंगे, आपको कैसे चढ़ाऊंगा। आप बात समझ नहीं रहे हैं। परम्परावादी पिता अब मौन हो गए थे, शायद वो बेटे की बात समझ गए थे।

१२१९) मैं घर पर नहीं हूं - राजू, अरे सुन तो बेटा मिसेज शर्मा की बात पूरी होने तक तो राजू जा चुका था दरवाजे से बाहर। ये राजू भी न, जानकी के बुलावे के बाद तो किसी की नहीं सुनता। मैं जब काम बताती हूं तो मम्मा ये कर रहा हूं, मम्मा वो कर रहा हूं। लाख बहाने हैं इसके पास बुदबुदाती हुई मिसेज शर्मा अपने काम में लग गई। उधर राजू जब जानकी के पास पहुंचा तो वह खाना पकाने की तैयारी में थी। राजू को देखते ही बोली सुबह तू कहां चला गया था? वो मौसी के यहां चला गया था, क्यों कोई काम था, हां वो सब्जी लानी थी। सुबह भी दाल ही बनाई। अभी ले आऊंगा आंटी राजू का ध्यान जानकी की बातों पर कम और इधर-उधर देखने में ज्यादा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी को ढूंढ रहा हो। अंत में उससे रहा नहीं गया और उसने पूछ ही लिया, आंटी, अनु दिखाई नहीं दे रही आज अरे, सुबह उसके पापा आए थे, उसे साथ ले गए। अब इसी स्कूल ने अपनी एक ब्रांच उनके गांव के करीब ही शुरू की है। अनु के लिए अच्छा हो गया। उसे भी तो अपने घर की याद आती होगी। आखिर बुआ के घर कब तक रहती। ओह, अब कब आएगी? आने का तो कुछ नहीं कह सकती बेटा यह सुनते ही राजू बिना कुछ बोले चल दिया बाहर की ओर। यह देख जानकी ने उसे आवाज दी- अरे बेटा, सब्जी तो ले आ, बाद में देखूंगा आंटी। कल टेस्ट है पढ़ाई करनी है। राजू बुदबुदाता हुआ घर में घुसा। मिसेज शर्मा ने पूछ लिया, क्या हुआ बेटा, किस पर नाराज हो रहे हो? कुछ नही मम्मा, लोग सबको अपनी तरह फालतू समझते हैं। जब देखो, बेटा ये ले आओ, बेटा वो ले आओ। आगे से जानकी आंटी कभी आवाज लगाये तो कह देना मैं घर पर नहीं हूं।

१२२०) नाचने से बारिश - किसी गावं में एक साधु रहा करता था। वो जब भी नाचता तो बारिश होती थी। अत: गाव के लोगों को जब भी बारिश की जरूरत होती थी, तो वे लोग साधु के पास जाते और उनसे अनुरोध करते की वे नाचे, और जब वो नाचने लगता तो बारिश जरूर होती।

कुछ दिनों बाद चार लड़के शहर से गाँव में घूमने आये, जब उन्हें यह बात मालूम हुई की किसी साधु के नाचने से बारिश होती है तो उन्हें यकीन नहीं हुआ।

शहरी पढ़ाई लिखाई के घमंड में उन्होंने गाँव वालों को चुनौती दे दी कि हम भी नाचेंगे तो बारिश होगी और अगर हमारे नाचने से नहीं हुई तो उस साधु के नाचने से भी नहीं होगी। अगले दिन सुबह-सुबह ही गाँववाले उन लड़कों को लेकर साधु की कुटिया पर पहुंचे।

साधु को सारी बात बताई गई, फिर लड़कों ने नाचना शुरू किया, आधे घंटे बीते और पहला लड़का थक कर बैठ गया पर बादल नहीं दिखे, कुछ देर में दूसरे ने भी यही किया और एक घंटा बीतते-बीतते बाकी दोनों लड़के भी थककर बैठ गए, पर बारिश नहीं हुई।

अब साधु की बारी थी, उसने नाचना शुरू किया, एक घंटा बीता, बारिश नहीं हुई, साधु नाचता रहा दो घंटा बीता बारिश नहीं हुई। पर साधु तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। धीरे-धीरे शाम ढलने लगी कि तभी बादलों की गड़गड़ाहट सुनाई

दी और जोरों की बारिश होने लगी। लड़के दंग रह गए और तुरंत साधु से क्षमा मांगी और पूछा- बाबा भला ऐसा क्यों हुआ कि हमारे नाचने से बारिश नहीं हुई और आपके नाचने से हो गई?

साधु ने उत्तर दिया- जब मैं नाचता हूं तो दो बातों का ध्यान रखता हूं, पहली बात मैं ये सोचता हूं कि अगर मैं नाचूंगा तो बारिश को होना ही पड़ेगा और दूसरी ये कि मैं तब तक नाचूंगा जब तक कि बारिश न हो जाए।

१२२१) मिट्टी का थैला - व्यापारी ने अपनी पड़ोसी महिला की जमीन का टुकड़ा हथिया लिया। एक दिन वह उसी जमीन पर चलती हुई उस व्यापारी के सामने खड़ी हो गई। फिर आंखों में आंसू भरकर व्यापारी से बोली, क्या तुम मेरे बाप-दादाओं की इस जमीन से मुझे यह थैला भर मिट्टी लेने दोगे। अमीर व्यापारी ने उपहास भरे स्वर में कहा, हालांकि तुम्हारी यह इच्छा बड़ी बेवकूफी भरी है, फिर भी तुम जितनी चाहो, मिट्टी थैले में भरकर ले जा सकती हो। महिला ने मिट्टी से अपना थैला भरा और बोली, मेरी तुमसे एक और प्रार्थना है। क्या तुम यह थैला उठाकर मेरे कंधों पर रख सकोगे।

व्यापारी ने कुछ पल सोचा, फिर एकदम इंकार कर दिया। महिला पुन: गिड़गिड़ाई। अंत में व्यापारी को उसकी बात पर राजी होना पड़ा। पर जैसे ही उसने थैला उठाने की कोशिश की, उसके तो पसीने छूट गए। वह झुंझलाकर बोला, इतना भारी थैला उठाना मेरे बूते का नहीं। यह सुनकर महिला ने कहा, अगर यह मिट्टी का थैला तुम्हारे लिए उठा पाना संभव नहीं तो तुम मेरी सारी जमीन का बोझा किस तरह उठा पाओगे? व्यापारी महिला का यह तर्क सुनकर दंग रह गया। उसे अपनी हरकत पर बड़ी शर्म आई। स्वार्थ में सद्‌गुण ऐसे खो जाते हैं जैसे समुद्र में नदियां।

१२२२) टच स्क्रीन - राधा मौसी की बेटी की शादी में पूरा परिवार एकत्र था। हंसी, ठिठोबली, गाना-बजाना जोरों पर था। राधा मौसी बेचैन थी, उदास थी। इतने में ही शोभा ने चहकते हुए कहा- लो आ गई आपकी रौनक। मोटा चश्मा, गोरी रंगत, ढीली चमड़ी, लटकती बाहें पर चेहरे पर अनुभव एवं प्यार की आब। बैठते ही शोभा से बोली, बिटिया, मेरे बटुए से मोबाइल निकालकर घर पर बहू को खबर कर दे कि ठीकठाक पहुंच गई हूं। कमबख्त अक्षर ठीक से दिखते नहीं है। शोभा ने अपने टच स्क्रीन मोबाइल को दिखाते हुए कहा- ऐसा वाला फोन लेना था। कांच पर तस्वीर आती है और छूने का एहसास भी होता है। सब हंस पड़े। राधा मौसी ने भी हंसते हुए पोपले मुंह से कहा कि आप सब लोग हमें सह रहे हैं वही बहुत है। छूकर महसूस करने की बात तुम लोगों में कहां। मुझे तो यह मोबाइल भी इसीलिए दिया है कि पता चलता रहे कि बुढ़िया की घंटी कहीं बजना बंद तो नहीं हो गई। फिर बिटिया स्पर्श तो कांच छूकर नहीं, दिलों से हाथों तक पहुंचता है। शोभा ने भी हार नहीं मानी, बोली दादी टच स्क्रीन पर हाथ घुमाने का एहसास एकदम मस्त होता है। अमरो बुआ ने तुनककर कहा, बिटिया, स्क्रीन टच करके एहसास जगानेवाली पीढ़ी हो बाकी तो परिवार के टच से तो ऐसे बिदकते हो जैसे कि किसी अनचाही वस्तु को छू लिया है।

१२२३) भय का कारण - नाथ संप्रदाय के आदिगुरु मत्स्येंद्रनाथ एक बार एक सुंदरी के मोह में आसक्त हो गए। शिष्य गोरखनाथ के समझाने पर वह सुंदरी को छोड़कर जाने लगे तो सुंदरी ने उन्हें एक सोने की ईंट दी। गुरु-शिष्य दोनों चले गए। वह एक जंगल में पहुंचे। गुरु बोले, गोरख, आगे कोई भय तो नहीं है? गोरखनाथ ने कहा, नहीं गुरुवर, हम फकीरों को भय कैसा? जब गुरु आगे बढ़े तो फिर से उन्होंने गोरखनाथ से यही सवाल किया। इस बार गोरखनाथ को संदेह

हुआ। जब गुरु नजदीक ही बहती नदी में जल पी रहे थे तो गोरखनाथ उनकी झोली संभाले हुए थे। जब गोरखनाथ ने झोली देखी तो उसमें सोने की ईंट रखी हुई थी। उन्होंने तुरंत उस ईंट को नदी में फेंक दिया। झोली हल्की न लगे ऐसे में उन्होंने कुछ कंकर मिट्टी भर दी। गुरु जल पीकर गोरखनाथ के पास पहुंचे। झोली उठाई और आगे की ओर चल दिए। थोड़ी देर चलने के बाद गुरु मत्स्येंद्रनाथ ने गुरु गोरखनाथ से पूछा आगे कोई समस्या तो नहीं। गोरखनाथ ने कहा, हम समस्या को पीछे छोड़ आए हैं। गुरु सहम गए और उन्होंने झोली को टटोला तो उसमें सोने की ईंट नहीं थी। इस तरह शिष्य गोरखनाथ ने अथ श्री ईंट पुराण सुनाया। गुरुजी समझ गए कि वो माया के कारण ही भयभीत हो रहे थे।

१२२४) आखिरी दरवाजा - एक फकीर था। वह भीख मांगकर अपनी गुजर-बसर किया करता था। भीख मांगते-मांगते वह बूढ़ा हो गया। उसे आंखों से कम दीखने लगा। एक दिन भीख मांगते हुए वह एक जगह पहुंचा और आवाज लगाई। किसी ने कहा, आगे बढ़ो। यह ऐसे आदमी का घर नहीं है, जो तुम्हें कुछ दे सके। फकीर ने पूछा, भैया। आखिर इस घर का मालिक कौन है, जो किसी को कुछ नहीं देता? उस आदमी ने कहा, अरे पागल। तू इतना भी नहीं जानता कि यह मस्जिद है। इस घर का मालिक खुद अल्लाह है। फकीर के भीतर से तभी कोई बोल उठा- यह लो, आखिरी दरवाजा आ गया। इससे आगे अब और कोई दरवाजा कहां है?

इतना सुनकर फकीर ने कहा, अब मैं यहां से खाली हाथ नहीं लौटूंगा। जो यहां से खाली हाथ लौट गए, उनके भरे हाथों की भी क्या कीमत है। फकीर वहीं रुक गया और फिर कभी कहीं नहीं गया। कुछ समय बाद जब उस बूढ़े फकीर का अन्तिम क्षण आया तो लोगों ने देखा, वह उस समय भी मस्ती से नाच रहा था।

१२२५) शिवभक्त की निंदा नहीं करते इंद्र - उपमन्यु की मां ने एक बार उससे कहा कि भगवान शिव अगर प्रसन्न हो जाएं, तो वह भक्त की इच्छा पूरी करने में संकोच नहीं करते हैं। उसी दिन से उपमन्यु ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कठिन तप करने का संकल्प ले लिया। उसने हिमालय पर तप करते हुए अन्न-जल का त्याग कर दिया। उसकी तपस्या से समस्त जगत संतप्त हो उठा। भगवान विष्णु ने समस्त देवताओं को साथ लेकर मंदराचल पर्वत पर जाकर भगवान शिव से कहा कि बालक उपमन्यु को तप से निवृत्त कर जगत को आश्वस्त करना केवल आपके ही वश की बात है। भगवान शिव ने उसकी परीक्षा लेने के लिए इंद्र का वेश बनाया और वहां पहुंच गए। जाते ही उन्होंने इंद्र के रूप में अपना परिचय देते हुए कहा, यह अत्यंत कठोर तप तुम्हारे लिए नहीं है, तुम इसे छोड़ दो। उपमन्यु ने इंद्र का स्वागत करते हुए कहा, मुझे शिव के चरणों में जगह मिले, यही इच्छा है। इंद्र रूपी शिव ने कहा, शिव की प्राप्ति कठिन है। मेरा तीनों लोकों पर अधिकार है, तुम मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुम्हें समस्त भोग प्रदान करूंगा। उपमन्यु ने कहा, इंद्र इस प्रकार शिव भक्त की निंदा नहीं कर सकते। तुमने मेरे आराध्य की निंदा की है।

शिव प्रकट होकर कहा, तुमने अपने तपोबल से मेरी भक्ति प्राप्त की है। मैं तुमसे प्रसन्न हूं, वत्स।

१२२६) घोड़ा और गधा - एक व्यापारी जब भी अपना माल बेचने करीब के गांव में जाता था, सारा बोझा गधे पर लाद देता था। एक रोज चिलचिलाती धूप गधे से बरदाश्त न हुई। उसे चक्कर आने लगे, बंधु। उसने अपने साथी घोड़े से कहा, बड़ी कृपा होगी, अगर मेरा थोड़ा सा बोझा अपनी पीठ पर लाद लोगे। मैं अब ज्यादा दूर तक नहीं चल सकता।

घोड़े ने गर्व से ऐंठकर कहा, बोझ उठाना मेरा काम नहीं। मैं असली अरबी घोड़ा हूं। तभी गधा धड़ाम से रास्ते के बीचोबीच गिर पड़ा। उसके प्राण पखेरू उड़ गए। व्यापारी को किसी तरह भी अपना माल गांव पहुंचाना था। तुरंत उसने गधे का सारा बोझा घोड़े पर लाद दिया। ऊपर से गधे की लाश भी उसी की पीठ पर लाद दी, ताकि मरे हुए गधे की खाल के पैसे उसे मिल जाए। जो मित्र वक्त पर काम नहीं आता, उस पर भी बुरा वक्त आ सकता है।

१२२७) भविष्य का निर्माण - एक घर में पांच दीये जल रहे थे। एक दिन पहले दीये ने कहा- इतना जलकर भी मेरी रोशनी की लोगों को कोई कद्र नहीं है तो बेहतर यही होगा कि मैं बुझ जाऊं और वह दीया खुद को व्यर्थ समझकर बुझ गया। जानते हैं वह दिया कौन था? वह दीया था उत्साह का प्रतीक। यह देख दूसरा दीया जो शांति का प्रतीक था, कहने लगा, मुझे भी बुझ जाना चाहिए। क्योंकि निरंतर शांति की रोशनी देने के बावजूद भी लोग हिंसा कर अशांति फैला रहे हैं और शांति का दीया बुझ गया। उत्साह और शांति के दीये बुझने के बाद, जो तीसरा दीया हिम्मत का था, वह भी अपनी हिम्मत खो बैठा और वह बुझ गया। उत्साह, शांति और अब हिम्मत के न रहने पर चौथे दीये ने बुझना ही उचित समझा, चौथा दीया समृद्धि का प्रतीक था।

ये सभी चारों दीये बुझने के बाद केवल पांचवां दीया अकेला ही जल रहा था। हालांकि पांचवां दीया सबसे छोटा था मगर फिर भी वह निरंतर जल कर रोशनी दे रहा था। तब उस घर में एक लड़के ने प्रवेश किया। उसने देखा कि उस घर में सिर्फ एक ही दीया जल रहा है, वह खुशी से झूम उठा। वे चार दीये बुझने की वजह से वह दुखी नहीं हुआ बल्कि वह खुश हुआ, यह सोचकर कि शुक्र है कम से कम घर में एक दीया तो जलकर घर में रोशनी कर रहा है। उसने तुरंत पांचवां दीया उठाया और बाकी के वे चार दीये फिर से जला दिए। पांचवां अनोखा दीया था उम्मीद का दीया। बस, इसलिए अपने घर में, अपने मन में हमेशा उम्मीद का दीया जलाए रखिये। चाहे सब दीए बुझ जाएं, लेकिन उम्मीद का दीया नहीं बुझना चाहिए। ये एक ही दीया बाकी सब दीयों को जलाने के लिए काफी है, क्योंकि हमारे जीवन में जो उम्मीद जगती है वही उम्मीद हमारे भविष्य का निर्माण करती है।

१२२८) सिमरन, प्रिया और चाची - घर में शादी का माहौल था। प्रिया और उसकी सहेलियों ने घर को दुल्हन की तरह सजा दिया था। आखिर उनकी सबसे प्रिय सहली सिमरन की शादी जो थी। सिमरन के सभी रिश्तेदार आए हुए थे। उसमें उसकी एक चाची भी थी। चाची सिमरन के साथ लॉन में बैठी प्रिया और उसकी दोस्तों को बच्चों के साथ नाचती देख रही थीं। तभी बच्चे एक दूसरे के ऊपर पानी डालने लगे। सारे बड़े किनारे हो गए, लेकिन प्रिया बच्चों के साथ बच्ची बनकर पानी में भीगती रही और बच्चों को भी खूब भिगोया। चाची जी बोलीं, सिमरन, यह क्या है। समझाओ अपनी दोस्त को। अब वह बड़ी हो गई है। शादी का घर है और कितने सारे मेहमान इकट्ठा हैं। कोई देखेगा, तो क्या कहेगा? वह कम से कम अपनी उम्र का तो लिहाज करे। सिमरन ने चाची जी की तरफ घूरकर देखा और कहने लगी, चाची जी, दो साल पहले एक्सिडेंट में मेरा चेहरा पूरा खराब हो गया था। तेरह सर्जरी हुई थी मेरी, तब देखने लायक चेहरा बन पाया था। सब कहते थे कि अब इससे कोई शादी नहीं करेगा। आपको पता है, वहीं अस्पताल में प्रिया से मेरी पहली बार मुलाकात हुई थी। वहां लोग मेरे चेहरे से डर जाते थे, या देखकर मुंह फेर लेते थे, लेकिन प्रिया ने मुझसे कहा था, तुम बहुत खूबसूरत

हो। मैं जानती थी कि मैं खूबसूरत नहीं हूं, न ही अब कभी बन सकती हूं, पर जाने क्यों, उसके एक वाक्य से मेरा फिर से जीने का मन कर रहा था। वह मुझसे कहती थी, तुम जिस तरह से चाहो, जी सकती हो। खुलकर मस्ती कर सकती हो। पता है चाची, प्रिया बोलती थी कि अब जो भी तुम्हें पसंद करेगा, तुम निश्चिंत होकर उसे हां कह सकती हों, क्योंकि वह तुम्हारे चेहरे को देखकर नहीं, बल्कि तुम्हें पसंद करेगा, जैसी तुम हो। मेरे होनेवाले पति अमित ऐसे ही हैं। उन्हें मुझमें सबसे ज्यादा पसंद यही है कि मैं दुनिया के बारे में नहीं सोचती। लेकिन मैं पहले ऐसी बिल्कुल नहीं थी। यह चीज मेरी सबसे अच्छी दोस्त प्रिया ने मुझे सिखाई है। अपना जीवन कैसे जीना है, यह हमें खुद तय करना चाहिए।

१२२९) सच्ची सेवा - एक थी बिल्ली। मुर्गी के बच्चे उसे बहुत ही भाते थे। रोजाना दो-चार बच्चों को वह कहीं न कहीं से खोज खाजकर खा जाती थी। एक दिन उसे भनक मिली कि एक मुर्गी बीमार है। वह हमदर्दी जताने उसके दड़बे के पास आई और कहा, कहो बहन, कैसी हो? क्या मैं तुम्हारी ऐसी हालत में तुम्हारे कुछ काम आ सकती हूं। तुम्हारी सेवा करना मेरा फर्ज भी तो है। बीमार मुर्गी क्षण भर सोचती रही। फिर बोली, अगर तुम सचमुच मेरी सेवा करना चाहती हो तो मेरे परिवार से दूर रहो और अपनी जमात वालों से भीऐसा ही करने को कहा। दुश्मन की शुभकामनाओं पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

१२३०) बिजली और तूफान - बहुत समय पहले बिजली ओर तूफान धरती पर मनुष्यों के बीच रहा करते थे। राजा ने उन्हें मनुष्यों की बस्ती से दूर रखा था। बिजली तूफान की बेटी थी। जब कभी किसी बात पर बिजली नाराज हो उठती, वह तड़ककर किसी घर पर गिरती और उसे जला देती या किसी पेड़ को राख कर देती, या खेत की फसल नष्ट कर देती। मनुष्य को भी वह अपनी आग से जला देती थी। जब-जब बिजली ऐसा करती, उसके पिता तूफान गरज-गरजकर उसे रोकने की चेष्टा करते, किन्तु बिजली बड़ी ढीठ थी। वह पिता का कहना बिलकुल नहीं मानती थी। यहां तक कि तूफान का लगातार गरजना मनुष्य के लिए सिरदर्द हो उठा। उसने जाकर राजा से इसकी शिकायत की। राजा को उसकी शिकायत उचित लगी। उन्होंने तूफान और उसकी बेटी बिजली को तुरंत शहर छोड़ देने की आज्ञा दी और बहुत दूर जंगलों में जाकर रहने को कहा। किन्तु इससे भी समस्या का समाधान नहीं हुआ। बिजली जब नाराज होती जंगल के पेड़ जला डालती। कभी कभी पास के खेतों का भी नुकसान कर डालती। मनुष्य को यह भी सहन न हुआ। उसने फिर राजा से शिकायत की। राजा बहुत नाराज हो उठा। उसने तूफान और बिजली को धरती से निकाल दिया और उन्हें आकाश में रहने की आज्ञा दी, जहाँ से वे मनुष्य का उतना नुकसान नहीं कर सकते थे जितना कि धरती पर रहकर करते थे। क्रोध का फल बुरा होता है।

१२३१) करनी का नतीजा - मालकिन अपने नौकर और नौकरानी को सुबह तब उठाती थी जब तोता शोर करने लगता कि सुबह हो गई, सुबह हो गई। एक रोज नौकरानी तोते पर नाराज हो उठी कि यही मुआ शोर करके मालकिन को जगा देता है और वह फिर हमें जगा देती है। अगर यह तोता नहीं होगा तो मजे हो जाएंगे। हम थोड़ी देर और सो सकेंगे, यह देख नौकर और नौकरानी ने मिलकर तोते की गरदन मरोड़ दी। मालकिन काफी बूढ़ी और बीमार थी। तोते की मौत के बाद उसे वक्त का सही अंदाजा नहीं रहता था। जब भी उसकी नींद खुलती, उसे लगता कि सबेरा हो गया। वह नौकरों को

जबरन जगाकर बैठा देती। कभी-कभी तो आधी रात को ही जगा देती। तोता तो अब था नहीं, जो उसे सही समय बताता। जैसी करनी वैसी भरनी।

१२३२) हवेली का मालिक - हमारे नाना के गांव में एक बड़ी हवेली थी। जिसे गांववासी सात चौक की हवेली कहते थे। हवेली का मालिक अकेला था लेकिन उसके ठाठ निराले थे। वह बड़ा मस्तमौला किस्म का रईस था। उसे खाने का कम, खिलाने का शौक था। वह दावत करने के बहाने ढूंढता यहां तक कि एक बार जब उसकी प्यारी बकरी ने एक बच्चा जना तो उसने सारे गांव को खीर मालपुए और कैरी के रायते की ज्यौनार दी। कहते हैं बैठे-बैठे खाने से तो कारूं के खजाने भी खत्म हो जाते हैं। एक दिन अचानक हवेली का मालिक तिजारत के लिए परदेस चला गया। हवेली में रह गए सिर्फ नौकर, चाकर और चौकीदार। धीरे-धीरे वक्त बीता। अब जब कोई राहगीर उस विशाल हवेली के सामने से गुजरता और पूछता कि इस शानदार हवेली का मालिक कौन है, तो जिस नौकर से पूछता वही कहता कि इसका मालिक मैं ही हूं। धीरे-धीरे विवाद होने लगे और एक दिन गांव के बड़े-बूढ़ों ने सारे नौकरों को इकट्ठा किया। झगड़े होने लगे। हर नौकर अपने को मालिक बताने लगा। आखिर हवेली के सबसे बूढ़े नौकर ने कहा- सब झूठ है। इनमें कोई मालिक नहीं। असली मालिक तो बाहर गया है और उम्मीद है कि एक दिन जरूर लौटेगा। और एक दिन अचानक मालिक लौट आया। सारे नौकर तत्काल विदा कर दिए गए। कहानी खत्म, पैसा हजम। लेकिन क्या आपको नहीं लगता कि इस देश का हाल बिल्कुल सात चौक की हवेली जैसा हो रहा है। असली मालिक यानी जनता अपने आप में ही गुम है और सारे नौकर (राजनेता) अपने आपको देश का मालिक सिद्ध करने में जुटे हैं। किसी ने देश को अपने बाप की जागीर मान रखा है। तो दूसरा नौकर उस जागीर को अपने परिवार के नाम करने पर तुला है। इस पच्चीसों चौक वाली हवेली के हर चौक पर एक नौकर कब्जाधारी बना हुआ है। अरे भाई मालिक। अब तो जाग। वरना ये नौकर सभी हवेली को खोखला कर देंगे। लेकिन मालिक कौन सा कम हैं। मस्ती की अफीम खाकर मस्त पड़ा है। हवेली जाय भाड़ में। जो मजा सोवत में है वो जागत में कहां।

१२३३) बाजों की ऊंची उड़ान - एक राजा को उपहार में किसी ने बाज के दो बच्चे भेंट किए। वे बड़ी ही अच्छी नस्ल के थे और राजा ने कभी इससे पहले इतने शानदार बाज नहीं देखे थे। राजा ने उनकी देखभाल के लिए एक अनुभवी आदमी को नियुक्त कर दिया।

कुछ समय पश्चात राजा ने देखा कि दोनों बाज काफी बड़े हो चुके थे और अब पहले से भी शानदार लग रहे हैं। राजा ने बाजों की देखभाल कर रहे आदमी से कहा, मैं इनकी उड़ान देखना चाहता हूं। तुम इन्हें उड़ने का इशारा करो। आदमी ने ऐसा ही किया। इशारा मिलते ही दोनों बाज उड़ान भरने लगे पर जहाँ एक बाज आसमान की ऊंचाइयों को छू रहा था वहीं दूसरा, कुछ ऊपर जाकर वापस उसी डाल पर आकर बैठ गया जिससे वो उड़ा था।

ये देख, राजा को कुछ अजीब लगा। क्या बात है जहाँ एक बाज इतनी अच्छी उड़ान भर रहा है वहीं ये दूसरा बाज उड़ना ही नहीं चाह रहा? राजा ने सवाल किया। सेवक बोला, जी हुजूर, इस बाज के साथ शुरू से यही समस्या है, वो इस डाल को छोड़ता ही नहीं। राजा को दोनों ही बाज प्रिय थे और वो दूसरे बाज को भी उसी तरह उड़ता देखना चाहते थे। अगले

दिन पूरे राज्य में ऐलान करा दिया गया कि जो व्यक्ति इस बाज को ऊँचा उड़ाने में कामयाब होगा उसे ढेरों इनाम दिया जाएगा। फिर क्या था, एक से एक विद्वान आए और बाज को उड़ाने का प्रयास करने लगे, पर हफ्तों बीत जाने के बाद भी बाज का वही हाल था। वो थोड़ा सा उड़ता और वापस डाल पर आकर बैठ जाता। फिर एक दिन कुछ अनोखा हुआ, राजा ने देखा कि उसके दोनों बाज आसमान में उड़ रहे हैं। उन्हें अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ और उन्होंने तुरंत उस व्यक्ति का पता लगाने को कहा जिसने ये कारनामा कर दिखाया था।

वह व्यक्ति एक किसान था। अगले दिन वह दरबार में हाजिर हुआ। उसे इनाम में स्वर्ण मुद्राएं भेंट करने के बाद राजा ने कहा, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं, बस तुम इतना बताओ कि जो काम बड़े-बड़े विद्वान नहीं कर पाए वो तुमने कैसे कर दिखाया? मालिक, मैं तो एक साधारण सा किसान हूं, मैं ज्ञान की ज्यादा बातें नहीं जानता। मैंने तो बस वो डाल काट दी जिस पर बैठने का आदी हो चुका था और जब वो डाल ही नहीं रही तो वो अपने साथी के साथ ऊपर उड़ने लगा।

हम सभी ऊंची उड़ान भरने के लिए ही बने हैं। लेकिन कई बार हम जो कर रहे होते हैं उसके इतने आदी हो जाते हैं कि अपनी ऊँची उड़ान भरने की क्षमता को भूल जाते हैं। इसलिए ऊंचा उड़ने के लिए जरूरी है कि हम उस डाल को काट दे जो ऊंची उड़ान में बाधक बन रहा है।

१२३४) तृष्णा - एक व्यापारी था, वह ट्रक में चावल के बोरे लिए जा रहा था। खराब सड़क पर ट्रक गड्ढों में निकला तो चावलों का एक बोरा खिसक कर वहीं गिर गया। वहां कुछ चीटियां आईं और चावल का बोरा पड़े देखा तो खुशी से फूली नहीं समाईं।

सभी चीटियों ने चावल के १०-२० दाने लिए और चली गईं। उसके बाद कुछ चूहे उधर पहुंचे तो चावल के बोरे को देखकर वहीं पहुंच गए। चूहों ने भी १००-५० ग्राम चावल खाए और वहां से चलते बने। कुछ पक्षियों की नजर बोरे पर पड़ी वे भी उधर हो लिए। पक्षी भी कुछ ग्राम चावल खाकर अपनी मंजिल की ओर रवाना हो गए।

बाद में उस क्षेत्र में गाय पहुंची तो वे भी करीब २-३ किलो चावल खाकर चली गईं। इसके बाद वहां से एक व्यक्ति गुजरा, उसने चावलों से भरा बोरा देखा तो मन ही मन बहुत खुश हुआ और बोरा उठाकर अपने घर लेकर चला गया।

इससे साफ है कि अन्य प्राणी पेट के लिए जीते हैं, लेकिन मनुष्य तृष्णा में जीता है। इसीलिए इसके पास सब कुछ होते हुए भी यह सर्वाधिक दुखी है। उसे संतुष्टि नहीं है। आवश्यकता के बाद इच्छा को रोकें अन्यथा यह अनियंत्रित बढ़ती ही जाएगी और दुख का कारण बनेगी।

१२३५) साहसी बालक - कलकत्ता की सड़क पर घोड़ागाड़ी दौड़ी जा रही थी। उस घोड़ागाड़ी में एक स्त्री अपने बच्चे के पास बैठी हुई थी। अचानक घोड़ा बिदक गया। कोचवान छिटककर दूर जा गिरा। घोड़ागाड़ी में बैठी स्त्री सहायता के लिए चीख-पुकार मचाने लगी। वह कलकत्ता की भीड़ भरी सड़क थी और उस समय भी लोगों की भीड़ सड़क के दोनों ओर चल रही थी, पर किसी की भी इतनी हिम्मत नहीं हुई कि आगे बढ़कर घोड़े को काबू कर ले। तभी अचानक भीड़ को तेजी से चीरता १२-१३ वर्ष का एक लड़का सड़क पर आया और उछलकर घोड़े की पीठ पर बैठने की कोशिश करने लगा, पर घोड़े ने उसे गिरा दिया। उसके हाथ, पैर, घुटने रगड़ खाकर बुरी तरह छिल गए। वह खून से लथपथ हो उठा, फिर

भी उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने बार बार कोशिश की और अंत में उसे सफलता मिली। वह छलांग मारकर घोड़े पर सवार हो गया और उसे काबू करने में सफल हो गया। तब कहीं घोड़ागाड़ी पर बैठी स्त्री और बच्चे की जान में जान आई। यह साहसी बालक कौन था ? वह था नरेंद्रनाथ, जो बड़ा होकर स्वामी विवेकानंद के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ।

१२३६) अक्ल की बात - छत्रपति शिवाजी एक बार अपनी सेना से बिछुड़कर एक ऐसी जगह जा पहुंचे जहां दूर-दूर तक आबादी का नामोनिशान नहीं था। अंधेरा हो चला। तभी कुछ दूरी पर उन्हें हल्की सी एक रोशनी दिखाई दी। वह रोशनी एक झोपड़ी में से आ रही थी। प्यास से वे बेचैन हो रहे थे। झोपड़ी के बंद दरवाजे पर उन्होंने आवाज दी तो एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला। शिवाजी ने पानी की मांग की तो उस बुढ़िया ने बड़े स्नेह से उन्हें पानी पिलाया। पानी पिलाने के बाद बुढ़िया ने शिवाजी से खाने का आग्रह किया। एक थाली में उसने कोदों का भात परोसा। शिवाजी भूखे तो थे ही, झट एक बड़ा सा कौर भरा। पर तभी आह करके रह गए। बुढ़िया ने जब यह देखा तो बोली, तू भी शिवा जैसे स्वभाव का मालूम देता है। शिवाजी चौंक उठे। बोले, माता, तूने मेरी तुलना शिवाजी से कैसे की? बुढ़िया बोली, जिस प्रकार शिवा आसपास के छोटे-छोटे किले न जीतकर बड़े-बड़े किले जीतने की उतावली करता है, उसी प्रकार तूने भी किनारे-किनारे के ठंडे कोदों न खाकर बीच से बड़ा कौर भरकर हाथ जला लिया। बुढ़िया की बातें सुन शिवाजी की आंखें खुल गईं। उनकी समझ में आ गया, गरीब बुढ़िया ने कितनी अक्ल की बात कही थी। ज्ञान के लिए हमेशा दिमाग खुला रखना चाहिए।

१२३७) गिरीश चाचा और लड़के - गिरीश चाचा मोहल्ले के सबसे दरियादिल इंसान थे। शायद ही मोहल्ले में कोई हो, जो उन्हें न जानता हो। अगर किसी को मदद की जरूरत हो, तो अपनी जान उस पर न्यौछावर कर देते थे। वहीं मोहल्ले में एक नौटियाल साहब भी थे। जिन्हें गिरीश चाचा से हमेशा शिकायत रहती थी कि वह मोहल्ले को निकम्मे लड़कों को बढ़ावा देते हैं। एक दिन जब गिरीश चाचा कुछ सामान लेकर लौट रहे थे। तो रास्ते में उनकी मुलाकात नौटियाल साहब से हुई। मिलते ही नौटियाल साहब ने उन पर ताना कसा, क्यों चाचा, आपके शागिर्द कहां गए आज। इतना भारी समान आप अकेले उठा रहे हैं। गिरीश चाचा बोले, जरूर कहीं अपने कामों में लगे होंगे। नौटियाल साहब बोले, खाक कामों में लगे होंगे। मैं जानता हूं। सब एक नंबर के निकम्मे हैं। नौटियाल साहब ने अपने साथ आ रहे दो लड़कों की तरफ इशारा करते हुए कहा, देखिए, इन बेमिसाल लड़कों को। इनकी नौकरी मैंने लगवाई है। जैसे ही इन्होंने मुझे देखा, ये दोनों मेरा सामान उठाने के लिए आ गए। कर्मठ लड़के हैं न, आपके उन निकम्मे लड़कों से कई गुना ज्यादा अच्छे। तभी उसमें से एक लड़के ने कहा, नौटियाल अंकल, आपने मेरी नौकरी एक दर्जी की दुकान पर लगवाई थी, लेकिन उसके दूसरे ही दिन मैंने वह नौकरी छोड़ दी, क्योंकि वह काम मुझे पसंद नहीं था। गिरीश चाचा ने ही मुझे समझाया कि कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता। तभी मेरे काम और मेरे हुनर को पूरा मोहल्ला जान पाया। दूसरा लड़का भी बोल पड़ा, एक दिन गिरीश चाचा सामान लिए जा रहे थे, जब मैंने उनकी मदद करनी चाही, तो बोले, मैं अपना सामान उठाने में सक्षम हूं। मुझे मदद की जरूरत नहीं। अगर तुम्हें मदद करनी ही है, तो हर उस बुजुर्ग की मदद करना, जो यहां से भारी सामान उठाए जाते दिखे। नौटियाल साहब का मुंह देखनेवाला था। गिरीश

चाचा बोले, मैं किसी को उपदेश नहीं देता। मैं बस वह बनके दिखाता हूं। अगर किसी को नेक बनाना है, तो बोल के नहीं, नेक बनके दिखाओ।

१२३८) ऐसा करके जूलियस सीजर ने क्रोध का समूल नाश कर दिया - रोम के महान सम्राट जूलियस सीजर के बारे में कहा जाता है कि वह काम का धुनी था, इसलिए तुच्छ बातों में समय व्यर्थ नहीं करता था। उसकी इस प्रवृत्ति के सम्बन्ध में एक घटना प्रसिद्ध है। एक बार वह अपने कुछ सभासदों के साथ बैठकर चर्चा कर रहा था। तभी राजकर्मचारी ने उसे पत्रों का एक पुलिंदा लाकर दिया। ये पत्र उसके किसी विरोधी ने लिखे थै। सीजर ने उन्हें बिना पढ़े ही फाड़ दिया। एक सभासद बोला, आपको इन पत्रों को पढ़ना चाहिए था। इससे यह पता चलता कि उस विरोधी के मन में आपके लिए कितनी कड़वाहट है। आप इन पत्रों को उसके राजविरोधी विचारों के प्रमाण के रूप में इस्तेमाल कर सकते थे। सीजर बोला, मैं अपने बारे में उसके विचार जानता हूं, फिर उन्हें दुबारा जानने से क्या लाभ? इससे मेरे मन में क्रोध ही उपजेगा। इसलिए मैंने क्रोध के कारण को ही खत्म कर दिया। यही वजह है कि जूलियस सीजर महान कार्य कर सका और ५५ वर्ष की अल्पायु में भी अपना नाम अमर कर गया।

१२३९) ज्यादा की लालच कभी भी नहीं करें - किसी जंगल में एक शेर रहता था। शेर को कई दिनों से भोजन नहीं मिला था इसलिए वह बहुत भूखा था। एक दिन जब वह अपनी मांद से शिकार की खोज के लिए निकल रहा था तो उसने देखा कि एक खरगोश उसकी मांद के करीब ही दौड़ भाग रहा है।

शेर जैसे ही उस पर झपटनेवाला था उसे सामने एक हिरन दिखाई दिया। शेर ने सोचा खरगोश तो बहुत छोटा है, इससे नाश्ता भी पूरा नहीं होगा हिरन काफी बड़ा है उसी को मारना चाहिए।

शेर खरगोश को छोड़कर उस हिरन की ओर लपका, लेकिन हिरन शेर को देखकर बहुत तेज दौड़ने लगा और जल्द ही वह जंगली झाड़ियों के बीच शेर की आंखों से ओझल हो गया।

शेर ने हिरन को तेज दौड़ते हुए देखा तो वह सोचने लगा कि वह अब हिरन को नहीं पकड़ सकेगा। हिरन के आंखों से ओझल होते ही शेर पूरा भोजन पाने की आशा छोड़ बैठा। उसने मन ही मन निश्चय किया कि हिरन का पीछा करना अब बेकार है। मुझे खरगोश के पास ही लौट जाना चाहिए। उसको खाने से मेरा कुछ तो पेट भरेगा। किंतु वह जब लौटकर अपनी मांद के पास पहुंचा तो वहां खरगोश को न पाकर वह आश्चर्य में पड़ गया। वह सोचने लगा मैं तो खरगोश को यहीं छोड़ गया था? फिर यह खरगोश कहां चला गया? जरूर यहीं-कहीं छिपा होगा। मैं अभी उसको तलाश करता हूं। वह मुझसे बचकर कहां जा सकता है। यह सोचकर शेर उस खरगोश को तलाश करने लगा। उसने मांद के अंदर देखा, मांद के बाहर देखा मगर उसे कहीं भी वह खरगोश नजर नहीं आया। खरगोश तो शेर के वहां से जाते ही रफूचक्कर हो गया था। खरगोश को वहां न पाकर शेर बड़ा हताश हुआ। हिरन और खरगोश दोनों ही उसका भोजन बनने से बच गए थे।

शेर हिरन का ध्यान कर सोचने लगा जब मैंने उसे देखा था तो सोचा था, हिरन खरगोश से बड़ा है इसलिए उसको खाकर मेरा पेट भर जाएगा। खरगोश तो बहुत छोटा है- उसको खाकर मेरा पेट भी नहीं भर सकता इसलिए मैं खरगोश को छोड़कर हिरन का शिकार करने के लिए उसके पीछे दौड़ पड़ा, लेकिन दुर्भाग्य कि वह हिरन मेरे हाथ

नहीं आया और तेजी से भाग गया। अपने दोनों शिकार हाथ से निकल जाने के कारण शेर बड़ा पछताया। वह सोच रहा था मैंने थोड़ा छोड़कर ज्यादा पाने के लालच में अपना सब कुछ खो दिया मैं न थोड़ा पा सका न ज्यादा। इसलिए कहते हैं कि ज्यादा की लालच नहीं करना चाहिए।

१२४०) घंटीधारी ऊंट का शिकार किया - एक गांव में एक जुलाहा रहता था। जुलाहा का विवाह तो हो गया था, लेकिन व्यवसाय ठीक नहीं चल रहा था। एक दिन जुलाहा काम की तलाश में शहर जा रहा था, तभी रास्ते में उसे एक ऊंट का बच्चा मिला, शायद ऊंट के दल से बिछड़ गया था। जुलाहा उस बच्चे को घर ले आया। कुछ दिनों बाद ही एक कलाकार गांव के जमीन पर चित्र बनाने उसी गांव में आया। ऊंट के बच्चे के आने के बाद जुलाहे की तकदीर ने पलटा खाया और उसका व्यवसाय चल निकला। जुलाहा उस ऊंट के बच्चे को अपना भाग्य का सितारा मानने लगा। जुलाहे ने एक सुंदर-सी घंटी खरीदी और ऊंट के बच्चे को पहना दी। जुलाहे ने ऊंट का व्यवसाय शुरू कर दिया तो उसका ऊंटों का व्यापार भी चल निकला। अब उस जुलाहे के पास ऊंटों की एक बड़ी टोली हर समय रहती। उन्हें चरने के लिए दिन को छोड़ दिया जाता। घंटीधारी ऊंट को अपने ऊपर घमंड हो गया कि वो मालिक का प्रिय है और इसी घमंड के कारण वह ऊंटों की टोली से कुछ अलग चला करता। उसी क्षेत्र में वन में एक शेर रहता था। झुंड पर हमला करने से आसान था कि अलग-थलग ऊंट को शिकार बनाया जाए। जैसे ही शेर को मौका मिला उसने घंटी की आवाज सुनकर और उसे अलग-थलग पाकर आसानी से हमला कर दिया और देखते ही देखते ऊंट शेर का शिकार बन गया।

१२४१) बैरागी का आशीर्वाद - पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर की किशोरावस्था में ही गायन की और रुचि पैदा हो गई थी। एक बार वह नेमिनाथ शिखर को पार कर गुरु दत्तात्रेय की तपस्थली में दर्शन के लिए गए। रास्ते में एक वृक्ष के नीचे बैठकर उन्होंने संगीत के स्वर बिखेरने शुरू कर दिए।

अचानक उन्होंने देखा कि एक बैरागी उनका गायन सुन रहा है और उस पर ताल भी दे रहा है विष्णु ने पास जाकर व्यंग्य में उससे कहा, गायन के संबंध में कुछ समझते भी हो या केवल ताल ठोक रहे हो? उस बैरागी ने कहा, गायन के बारे में मैं थोड़ा बहुत तो समझता हूं। लेकिन तुम्हारी बराबरी भला मैं कैसे कर सकता हूं? अचानक वह बैरागी उठा और अपनी मस्ती में गाता हुआ आगे बढ़ गया। कुछ देर तक विश्राम करने के बाद विष्णु आगे की ओर बढ़े। कुछ दूर चलने के बाद एक मंदिर के अंदर से उन्हें गायन की सुमधुर ध्वनि सुनाई पड़ी।

वह मंदिर के अंदर पहुंचे, तो देखा कि वह बैरागी मूर्ति के आगे बैठकर गीत गा रहा है। विष्णु यह देखकर स्तब्ध रह गए। फिर एकाएक बैरागी के चरण पकड़कर उन्होंने कहा, बाबा मुझे क्षमा करें। अहंकार में आकर मैं आपका निरादर कर बैठा। बैरागी ने कहा, तुम अहंकार का त्याग कर विनम्रतापूर्वक भक्ति के गीत गाओं गायन के लिए स्वर में मधुरता चाहिए तुम एक दिन राष्ट्र के अग्रणी गायकों में गिने जाओगे। बैरागी के शब्दों ने विष्णु का हृदय परिवर्तन कर दिया। महान गायक बनने के अलावा उन्होंने गंधर्व महाविद्यालय की भी स्थापना की।

१२४२) रस्सी - दो छोटे लड़कों को सड़क पर एक पुरानी रस्सी पड़ी मिली। दोनों उसे लेने के लिए बुरी तरह छीना-झपटी करने लगे। उनकी चीख-पुकार ऐसी थी कि दूर-दूर तक सुनाई दे रही थी। एक लड़के ने रस्सी को एक

तरफ पकड़ा, दूसरे ने दूसरी तरफ। दोनों ने पूरी ताकत से उसे अपनी-अपनी तरफ खींचना शुरू किया। अचानक रस्सी बीच में से टूट गई। एक लड़का कीचड़ में जा गिरा, दूसरा पास के एक नाले में। एक यात्री वहां खड़ा यह तमाशा देख रहा था। वह जोर से हंस पड़ा। बच्चों। किसी चीज के लिए झगड़ा करने से यही नतीजा निकलता है। वह बोला। स्वार्थ से सुख नहीं मिलता।

१२४३) कुत्ता और खरगोश - एक कुत्ते ने एक खरगोश को देख लिया। शिकार के लिए उसके पीछे दौड़ा। खरगोश भी अपने प्राण बचाने के लिए तेजी से भागा। कुत्ता बराबर उसका पीछा करता रहा। अंत में उसकी साँस फूल गई। थक-हारकर उसने खरगोश का पीछा करना छोड़ दिया। तभी एक चरवाहे ने उसकी ओर देखकर ताना कसा, एक छोटे से खरगोश ने दौड़ में तुम्हें पछाड़ दिया। कुत्ते ने तपाक से जवाब दिया, महाशय। मैं अपने पेट के लिए दौड़ रहा था, वह अपने प्राणों के लिए दौड़ रहा था। जीत के कई कारण होते हैं।

१२४४) हार का कारण - महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद अपने पुत्रों की मृत्यु से दुखी धृतराष्ट्र ने एक दिन विदुर को अपने पास बुलाया और कहा, विदुर जी, हमारे कौरव पक्ष में एक से बढ़कर एक योद्धा थे, फिर भी युद्ध में हमारे सभी योद्धाओं का सफाया हो गया। आपकी दृष्टि में इसका मुख्य कारण क्या है? विदुर जी जन्मजात स्पष्टवादी थे। इसी कारण समय-समय पर सत्य और न्याय का पक्ष लेने का उपदेश देने पर उन्हें कर्ण आदि के द्वारा अपमानित होना पड़ता था। विदुर ने धृतराष्ट्र की जिज्ञासा का समाधान करते हुए कहा, राजन्, विजय हमेशा धर्म और न्याय की होती है। कौरव पक्ष के लोगों ने पांडवों के साथ अन्याय किया, जिसका फल उन्हें भोगना ही था। भगवान श्रीकृष्ण तक उन्हें समझाने आए थे कि पांडवों का राज्य में बराबर का अधिकार है। उन्हें ज्यादा नहीं, तो केवल पांच गांव ही दे दो। उनके अधिकारों का हरण करना सरासर अधर्म और अन्याय होगा, लेकिन कौरव अपनी संख्या और सैन्यबल के अहंकार में किसी की बात सुनने को तैयार नहीं हुए। न्याय-अन्याय का विचार किए बगैर जो युद्ध को तत्पर होता है, उसका एक न एक दिन विनाश ही होता है। कौरवों का भी हो गया। धृतराष्ट्र विदुर जी के मुंह से दोटूक बातें सुनकर हतप्रभ रह गए, किंतु कुछ क्षण रुककर बोले, भैया, मैं भी तो इस सर्वनाश में सहभागी रहा हूं। पुत्रमोह के कारण मैं पांडवों के साथ हुए अन्याय को मौन रहकर देखता रहा। यह कहते हुए धृतराष्ट्र रो पड़े।

१२४५) मोहित, प्रिया और सुखी होने का राज - मोहित और प्रिया की नई-नई शादी हुई थी। वे बहुत खुश थे। उन्हें पता चला कि शहर में एक जाने-माने ज्योतिषी आए हैं, तो दोनों उनके पास पहुंच गए। मोहित ने ज्योतिषी से पूछा, स्वामी जी, हमारी अभी-अभी शादी हुई है और हम चाहते हैं कि हमारे बीच कभी कोई परेशानी न आए। कृपया कुछ उपाय बताइए। ज्योतिषी बोले, एक उपाय है। आप कोई एक ऐसा जोड़ा ढूंढ लीजिए, जो हमेशा खुश रहता हो।

अगर ऐसा जोड़ा मिल जाए, तो उसका एक कपड़ा अपने घर पर रख लीजिए। मोहित और प्रिया उस जोड़े की तलाश में लग गए। उनको किसी ने बताया, राजपाल का परिवार बहुत खुश है। राजपाल के घर जाकर उन्होंने देखा कि उसके बारह बच्चे हैं। उन्होंने सोचा, इतने बच्चे होते हुए कोई खुश कैसे हो सकता है? तभी दूसरे शहर में रहनेवाले उनके रिश्तेदार ने एक सुखी दंपति के बारे में बताया। मोहित और प्रिया ने वहां जाकर पाया कि उस दंपति की तो कोई संतान ही

नहीं है। वे सोचने लगे कि बिना संतान के कोई कैसे खुश रह सकता है।

कई शहरों की भागदौड़ के बाद भी उन्हें ऐसा दंपति नहीं मिला, जो हमेशा खुश रहता हो। फिर उन्हें राजस्थान में एक सुखी दंपति के बारे में पता चला। मोहित और प्रिया ने उनके पास पहुंचकर उनकी खुशी का राज पूछा। वह दंपति बोले, हम ऐसा कोई काम नहीं करते, जिससे एक दूसरे को बुरा लगे। न ही हमारी कोई अपेक्षा है। मोहित और प्रिया को यकीन हो गया कि जिस खुश जोड़े की तलाश वह कर रहे थे, वह उन्हें मिल गया।

मोहित ने उन्हें अपने बारे में बताते हुए कहा, क्या हम आपका कोई कपड़ा ले सकते हैं? दंपति बोले, हमारे पास तन ढकने के लिए कपड़ा नहीं। हम आपको क्या दे सकते हैं? मोहित और प्रिया को समझ में आ गया कि खुशी कैसे मिल सकती है। खुशी सांसारिक चीजों से नहीं, समझदारी और प्यार से मिलती है।

१२४६) घोंसले की लड़ाई - एक चिड़ा पेड़ पर घोंसला बनाकर मजे से रहता था। एक दिन वह दाना-पानी के चक्कर में अच्छी फसल वाले खेत में पहुंच गया। वहां खाने पीने की मौज से बड़ा ही खुश हुआ। उस खुशी में रात को वह घर आना भी भूल गया और उसके दिन मजे में वहीं बीतने लगे। इधर शाम को एक खरगोश उस पेड़ के पास आया जहां चिड़े का घोंसला था। पेड़ जरा भी ऊंचा नहीं था। इसलिए खरगोश ने उस घोंसले में झाककर देखा तो पता चला कि यह घोंसला खाली पड़ा है। घोंसला अच्छा खासा बड़ा था, इतना कि वह खरगोश उसमें आराम से रह सकता था। उसे यह बना बनाया घोंसला पसंद आ गया और उसने यहीं रहने का फैसला कर लिया।

कुछ दिनों बाद वह चिड़ा खा-खाकर मोटा ताजा बनकर अपने घोंसले की याद आने पर वापस लौटा। उसने देखा कि घोंसले में खरगोश आराम से बैठा हुआ है। उसे बड़ा गुस्सा आया, उसने खरगोश से कहा, चोर कहीं के, मैं नहीं था तो मेरे घर में घुस गये हो? चलो निकलो मेरे घर से, जरा भी शर्म नहीं आई मेरे घर में रहते हुए? खरगोश शांति से जवाब देने लगा, कहां का तुम्हारा घर? कौन सा तुम्हारा घर? यह तो मेरा घर है। पागल हो गए हो तुम, अरे। कुआं, तालाब या पेड़ एक बार छोड़कर कोई जाता है तो अपना हक भी गंवा देता है। यहां तो जब तक हम हैं, वह अपना घर है। बाद में तो उसमें कोई भी रह सकता है। अब यह घर मेरा है। बेकार में मुझे तंग मत करो।

यह बात सुनकर चिड़ा कहने लगा, ऐसे बहस करने से कुछ हासिल नहीं होनेवाला। किसी धर्म पंडित के पास चलते हैं। वह जिसके हक में फैसला सुनाएगा उसे घर मिल जाएगा। उस पेड़ के पास से एक नदी बहती थी। वहां पर एक बड़ी सी बिल्ली बैठी थी। वह कुछ धर्मपाठ करती नजर आ रही थी। वैसे तो यह बिल्ली इन दोनों की जन्मजात शत्रु है, लेकिन वहां और कोई भी नहीं था। इसलिए उन दोनों ने उसके पास जाना और उससे न्याय लेना ही उचित समझा। सावधानी बरतते हुए बिल्ली के पास जाकर उन्होंने अपनी समस्या बताई।

उन्होंने कहा, हमने अपनी उलझन तो बता दी, अब इसका हल क्या है? इसका जवाब आपसे सुनना चाहते हैं। जो भी सही होगा उसे वह घोंसला मिल जाएगा और जो झूठा होगा उसे आप खा लें। अरे रे। यह तुम कैसी बातें कर रहे हो, हिंसा जैसा पाप नहीं इस दुनिया में।

दूसरों को मारनेवाला खुद नरक में जाता है। मैं तुम्हें न्याय देने में तो मदद करूंगी लेकिन झूठे को खाने की बात है तो

वह मुझसे नहीं हो पाएगा। मैं एक बात तुम लोगों के कानों में कहना चाहती हूं, जरा मेरे करीब आओ तो।

खरगोश और चिड़ा खुश हो गए कि अब फैसला होकर रहेगा और उस बिल्ली के बिलकुल करीब गये। करीब आये खरगोश को पंजे में पकड़कर मुंह से चिड़े को बिल्ली ने नोंच लिया। दोनों का काम तमाम कर दिया। अपने शत्रु को पहचानते हुए भी उस पर विश्वास करने से खरगोश और चिड़े को अपनी जानें गंवानी पड़ीं।

सच है, शत्रु से संभलकर और हो सके तो चार हाथ दूर ही रहने में भलाई होती है।

१२४७) धर्म का सबसे बड़ा चमत्कार है समाज में सौहार्द्र पैदा करना - कई साल पहले की बात है। हम अपने साथी साधुओं के साथ कपिलवस्तु के बीहड़ रास्तों से होते हुए भारत-नेपाल की सीमा पर स्थित बढ़नी नामक गांव पहुंचे थे। रात में हजारों नेपाली भाई-बहन हमें सुनने उपस्थित हुए। प्रवचन के बाद एक अधेड़ उम्र के संभ्रांत व्यक्ति ने कुछ चमत्कार दिखाने के लिए कहा। उनका कहना था कि अगर मैंने चमत्कार दिखा दिया तो गांववाले मेरे शिष्य बन जाएंगे। एक अजीब सा सन्नाटा पसर गया।

तब जो मैंने कहा था पता नहीं कितनों पर असर हुआ, लेकिन आज के समय में भी उस चमत्कार की भूख खत्म नहीं हुई है। उसे शांत करने के बजाय उसे जगाए रखने की ही कोशिश चल रही है। मैंने कहा था- मैं यहां शिष्य बनाने नहीं आया। सिर्फ यह कहने आया हूं कि अपनी ही अंतश्चेतना के शिष्य बनें। उसी की आवाज पर चलें। इसी से आपके जीवन में परिवर्तन आना शुरू हो जाएगा। आखिर मेरे और आपके धर्म में क्या अंतर है कि मुझे आपको शिष्य बनाने की जरूरत हो। धर्म तो एक ही है। चमत्कार को धर्म से जोड़ने की कोशिश एक दिन खतरनाक रूप ले लेगी।

१२४८) एक पर्व के दिन एक विद्यार्थी ने मां से कहा- आज धर्मस्थान में मेरे सभी साथी नए कपड़े पहनकर आएंगे। मैं भी नए कपड़े पहनूंगा। उसका आग्रह देखकर मां की आंखों में पानी आ गया। उसने कहा- हम गरीब हैं। दो समय की रोटी की भी समस्या है। ऐसे में नए कपड़े पहनना संभव नहीं है। बच्चा मां के उत्तर से निराश और दुखी हुआ। वह अनमने भाव से मां के साथ धर्मस्थल में गया। वहां उसका ध्यान कपड़ों की ओर लगा था। उपासना में उसका मन बिल्कुल नहीं लगा। जब वह बाहर आया तो उसने वहां बैठे एक भिखारी को देखा। वह लूला-लंगड़ा था, फिर भी मस्ती से मधुर भजन गा रहा था। बच्चा अपनी मां के साथ वहां भजन सुनने खड़ा हो गया। जब भिखारी का गाना पूरा हुआ तो वह उसके पास गया और बोला, तुम अपंग हो, फिर भी इतनी मस्ती से कैसे गा रहे हो? भिखारी ने उत्तर दिया- भैया। जो मेरे पास नहीं है, मैं उस ओर ध्यान नहीं देता। जो मेरे पास है, उसका मैं पूरा महत्व समझता हूं। मेरी आंखें अच्छी हैं, मेरा दिमाग अच्छा है, मुझे गला भी मधुर मिला है। ऐसे में मेरे लिए दु:ख और विषाद का सवाल ही नहीं है।

उसे देख लड़के के भी विचार बदल गए। उसने सोचा- इसके हाथ-पांव नहीं हैं, फिर भी यह दु:खी नहीं है। मैं कपड़ों को लेकर दु:खी हो गया था। मुझे अब अभाव को भी भाव तथा दु:ख को भी सुख में बदलना सीखना है।

१२४९) छोटे से छोटे में विराट का संदेश - एक नाई किसी के बाल बना रहा था। उसी समय एक फकीर वहां आ पहुंचे। उन्होंने कहा, खुदा की खातिर मेरी हजामत भी कर दे। नाई ने खुदा का नाम सुनते ही अपने गृहस्थ-ग्राहक से कहा, दोस्त, अब मैं थोड़ी देर आपकी हजामत नहीं बना सकूंगा। खुदा की खातिर उस फकीर की खिदमत मुझे पहले करनी

चाहिए। खुदा का काम सबसे पहले है। इसके बाद उसके फकीर की हजामत बड़े प्रेम और श्रद्धा-भक्ति से बनाई और नमस्कार करके उसे विदा कर दिया। कुछ दिन बीत गए। एक रोज फकीर को किसी ने कुछ पैसे भेंट किए तो वह उन्हें नाई को देने आए। पर नाई ने पैसे लेने से इन्कार कर दिया। उसने कहा, आपने तो खुदा की खातिर हजामत बनाने को कहा था, पैसों की खातिर नहीं। फिर तो जीवन-भर फकीर को वह बात याद रही और वह अपनी मंडली में कहा करते थे, निष्काम ईश्वर-भक्ति मैंने एक हज्जाम से सीखी है। छोटे से छोटे में भी विराट संदेश छिपे हैं। जो उन्हें उघाड़ना जानता है, वह ज्ञान को प्राप्त करता है। जीवन में सजग होकर चलने से प्रत्येक अनुभव प्रज्ञा बन जाता है। जो मूर्च्छित बने रहते हैं, वे दरवाजे पर आए हुये आलोक को भी लौटा देते हैं।

१२५०) महत्वाकांक्षा - एक महात्मा थे। उनकी तपस्या का यह प्रभाव था कि हिंसक हिंसा को भूल गये। शेर और बकरी, सर्प और मेंढ़क अपने जन्मजात बैर को भूल गये। उनकी तपस्या से इन्द्र का आसन डोलने लगा। इन्द्र ने अपने ज्ञान से देखा कि अब उसका पद टिक नहीं सकेगा। वह एक बटोही के रूप में महात्मा के आश्रम में आया। वहां के वातावरण को देखकर वह और अधिक चिंतित हो उठा। महात्मा की तपस्या की यही स्थिति रही तो निश्चय ही उनका आसान अधिक दिन टिक नहीं सकेगा। उसने एक चाल चली। महात्मा के पास आकर वह बोला, महाराज, मैं जरा शहर में जा रहा हूं, अपनी तलवार आपके पास छोड़े जा रहा हूं। यदि आप इसका ध्यान रख सकें तो बड़ी कृपा होगी।

महात्मा ने सहज रूप से इसे स्वीकार कर लिया। इन्द्र चला गया। महात्मा जी ने घंटे दो घंटे तलवार का ध्यान रखा, पर इन्द्र नहीं आया। फिर तो दिन-पर-दिन और महीनों पर महीने बीतते चले गए। महात्माजी जहां भी जाते, तलवार को साथ ले जाते। आश्रम में भी आते तो उसका ध्यान रखते। उनकी साधना का क्रम भंग हो गया। जो मन भगवान में लीन रहता था, वह तलवार में लीन रहने लगा। इन्द्र का आसन डोलना बंद हो गया। उधर आश्रम हाल-बेहाल हो गया। तपस्या के प्रभाव से जो हिंसक जीव हिंसा और जन्मजात बैर को भूल बैठे थे, वे फिर एक-दूसरे को अपना दुश्मन मानने लगे। इन्द्र का जाल काम कर गया।

महत्वाकांक्षा की तलवार भी कुछ ऐसी ही होती है, जो व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य से विमुख कर महत्व-प्राप्ति के लिए उचित अनुचित हर कार्य में प्रवृत्त कर देती है।

१२५१) मन की बात - विधवा वृद्धा माँ को बेटी की शादी की चिंता सता रही थी। जवान बेटी घर से बाहर जाती तो माँ उसकी चौकसी करती। बेटी को यह पसंद नहीं था। संयोग की बात थी कि दोनों को नींद में चलने और बड़बड़ाने की आदत थी। एक रात दोनों नींद में उठ गईं और सड़क पर चलने लगीं। माँ नींद में जोर-जोर से लड़की को गालियाँ दे रही थी- इस दुष्ट के कारण मेरा जीना हराम हो गया है। यह जवान हो रही है और मैं बुढ़ापे में दबी जा रही हूं। बाजू की सड़क पर लड़की भी नींद में चल रही थी और बड़बड़ा रही थी- यह दुष्ट बुढ़िया मेरा पीछा छोड़ती ही नहीं। जब तक यह जीवित है तब तक मेरा जीवन नरक है। तभी मुर्गे ने बाँग दी। चिड़ियाँ चहचहाने लगीं और ठंडी बयार बहने लगी। बूढ़ी माँ ने बेटी को देखा। वह प्यार भरे स्वर में बोली, आज इतनी जल्दी उठ गई। कहीं सर्दी न लग जाए। बेटी ने माँ को देखा तो झुककर उसके पैर छू लिए माँ ने बेटी को गले से लगा लिया। तब बेटी उलाहने स्वर में

बोली, माँ कितनी बार कहा है इतनी सुबह मत उठा करो। मैं पानी भर दूँगी और घर साफ कर दूँगी। माँ, तुम ही तो मेरा एकमात्र सहारा हो। माँ-बेटी नींद में क्या कह रही थीं और जागने पर क्या कह रही थीं? जो नींद में कह रही थीं, वह सच था। जो जागने पर कह रही है वह एकदम झूठ है। मन में गहरी दबी बातें भी नींद में बाहर आ जाती हैं। सज्जन व्यक्ति सुप्तावस्था में वही करते हैं, जो दुर्जन लोग जागृत अवस्था में किया करते हैं।

१२५२) औरत - तीन मनुष्य ब्रह्मा के पास अपनी-अपनी आवश्यकता बताने पहुंचे। पहले ने कहा, मुझे एक घोड़ा चाहिए। दूसरे ने कहा, मुझे एक कुत्ते की जरूरत है, ताकि जंगल में शिकार पकड़ सकूँ। तीसरे आदमी ने कहा, मुझे एक औरत चाहिए, जो आराम और खुशी दे सके। ब्रह्मा ने तीनों की इच्छा पूरी कर दी। तीनों चल पड़े। रास्ते में उन्हें भीषण आँधी-पानी ने जंगल में ठहरने के लिए मजबूर किया। ऐसी स्थिति में न घोड़ा किसी काम आया न कुत्ता। पर औरत ने किसी तरह से तीनों के लिए कुछ चीजों की व्यवस्था करके खाना बनाया और खिलाया। अब उन दोनों को ब्रह्मा से घोड़ा और कुत्ता माँगने पर पछतावा हुआ। उन दोनों ने निश्चय किया कि वे वापस ब्रह्मा के पास जाएँगे और उनसे औरत ही देने की प्रार्थना करेंगे। ब्रह्मा बड़े दयालु थे। उन्होंने घोड़ा और कुत्ता औरत में बदल दिया। पर जो घोड़े से औरत बनी थी, वह स्त्री बड़ी पेटू थी और जो कुत्ते से औरत बनी थी, वह बड़ी संकीर्ण विचारों की थी। किन्तु वह पहली औरत, जो असली स्त्री थी, बड़ी प्यारी और अच्छी थी। वही मानवता की जननी है। रूप बदल जाने से उनकी असलियत नहीं बदल जाती।

१२५३) आत्मबोध - एक बार एक गुरू आत्मा के बारे में अपने एक शिष्य को समझा रहे थे। पर शिष्य कहता, आत्मा को कैसे मानें? वह दिखाई तो देता नहीं। हारकर गुरु ने शिष्य से कहा, अच्छा जाओ, सामने के पेड़ से फल ले आओ। शिष्य गया और फल ले आया। गुरु ने कहा, इस फल को तोड़ डालो। शिष्य ने वैसा ही किया। गुरू ने पूछा, इसमें तुम्हें क्या दिखाई देता है? शिष्य ने उत्तर दिया, गुरुदेव। इसमें बीज दिखाई दे रहा है। गुरु ने कहा, इस बीज को पीस डालो। शिष्य ने बीज को पीस डाला। गुरू ने पूछा, अब तुम्हें क्या दिखाई देता है? शिष्य ने बड़े ध्यान से देखा और कहा, गुरुजी, अब तो कुछ भी दिखाई नहीं देता। तब गुरू ने कहा, वत्स। जो तुझे दिखाई नहीं देता उसी से इतना बड़ा वृक्ष पैदा हुआ है। बीज के अंदर जो शक्ति है वही आत्मा है ओर तू भी वही है। शिष्य की समझ में सारी बात आ गई। आत्मा की ऊँचाई जीवन की ऊँचाई है।

१२५४) कसौटी - अकबर बादशाह के दरबार में एक खिलाड़ी आया। वह बैल का अभिनय कर रहा था, बैल की तरह चल रहा था। बैल की तरह उछल-कूद रहा था। गले से आवाज भी बैलों की तरह निकाल रहा था। यह देखकर एक बच्चे ने अपनी टोपी उतारकर उस खिलाड़ी की ओर फेंकी। सभी को हैरानी हुई। बादशाह सलामत ने उस बच्चे से पूछा, टोपी क्यों फेंकी? बच्चा- मैंने उसे टोपी इनाम में दी है। बादशाह, क्यों? बच्चा- मैंने उसकी परीक्षा ली। वह सफल रहा है। बादशाह- कैसी परीक्षा? बच्चा- उस खिलाड़ी पर पहले मैंने कंकड़ फेंका। जब बैल की चमड़ी से कंकड़ टकराता है तो बैल अपनी चमड़ी थरथराता है। इस खिलाड़ी ने भी वैसा ही किया। बादशाह सलामत उस नन्हे से बच्चे की अक्लमंदी पर खुश हो गए। वह बच्चा और कोई नहीं बल्कि बालक बाल बीरबल ही था। संसार में प्रतिध्वनियाँ बहुत हैं, ध्वनियाँ कम।

१२५५) कंजूस की मौत - एक था कंजूस। एक रोज वह नारियल खरीदने बाजार गया। उसने नारियल का दाम पूछा तो दुकानदार ने बताया, पूरा एक रुपया होगा। कंजूस ने कहा मैं तो पचास पैसे दूंगा। एक मील दूर नारियल की बाड़ी है। दुकानदार ने सलाह दी, वहाँ चले जाओ, पचास पैसे में मिलेगा। कंजूस एक मील दूर चलकर नारियल की बाड़ी में पहुंचा। वहाँ दाम पूछा। बगीचे वाले ने बताया, सिर्फ पचास पैसे। कंजूस ने कहा, मैं तो सिर्फ पच्चीस पैसे दूंगा। बगीचे वाला मुस्कराया और बोला, भई, पच्चीस पैसे भी क्यों खर्च करते हो। वह रहा सामने पेड़। ऊपर चढ़ जाओ और जितने भी चाहो उतने तोड़ लो। कंजूस को यह प्रस्ताव जँच गया। हींग लगे न फिटकरी, रंग चोखा। वह पेड़ की ओर लपका और सँभल-सँभलकर चढ़ने लगा। काफी ऊपर जाने के बाद उसने नीचे देखा तो उसे चक्कर आ गया। उसके हाथ से पेड़ छूट गया। जमीन पर गिरते ही उसके प्राण-पखेरु उड़ गए। लालच कभी-कभी जानलेवा भी होता है।

१२५६) आसान रास्ता छोड़ दें - एक जंगल में एक कोयल अपने सुर में गा रही थी। तभी एक किसान वहां से एक बक्सा लेकर गुजरा, जिसमें कीड़े भरे हुए थे। कोयल ने गाना छोड़ दिया और उसने किसान से पूछा- इस बक्से में क्या है और तुम कहां जा रहे हो? किसान ने उत्तर दिया कि बक्से में कीड़े भरे हुए हैं जिन्हें वह पंख के बदले शहर में बेचने जा रहा है। यह सुनकर कोयल ने कहा- मेरे पास बहुत पंख हैं जिनमें से एक पंख तोड़करैं आपको दे सकती हूं। इससे मेरा बहुत समय बच जाएगा और आपका भी। किसान ने कोयल को कुछ कीड़े निकालकर दिए, जिसके बदले में कोयल ने अपना एक पंख तोड़कर दिया। अगले दिन भी यही हुआ। फिर ऐसा रोज ही होने लगा। एक दिन ऐसा भी आया जब कोयल के सभी पंख समाप्त हो गए। सभी पंख समाप्त हो जाने के कारण कोयल उड़ने में असमर्थ हो गई और कीड़े पकड़कर खाने लायक भी नहीं बची। वह बदसूरत दिखने लगी, उसने गाना बंद कर दिया और जल्द ही भूख से मर गयी। भोजन प्राप्त करने का जो आसान मार्ग कोयल ने चुना, वही मार्ग अंतत: सबसे कठिन साबित हुआ।

१२५७) गरीब बादशाह - बादशाह नसिरुद्दीन के बारे में मशहूर है कि वे अपने खाने-पीने और ऐश-आराम के लिए शाही खजाने से एक भी पैसा न लेते थे। वे किताबों की नकल करते थे और उस नकल की हुई किताबों को बेचकर जो पैसा मिलता था, उसी से अपना और अपने परिवार का खर्च चलाते थे। बादशाह होते हुए भी खाना पकाने के लिए घर में कोई रसोइया नहीं था, जिस कारण बेगम को ही खाना पकाना पड़ता और घर के दूसरे काम भी करने पड़ते थे। एक बार रोटी पकाते समय बेगम की अंगुलियाँ जल गई। बेगम ने डरते-डरते बादशाह से एक दासी रखने के लिए कहा। इस पर बादशाह बोले, मैं जो कमाता हूं, उससे दोनों वक्त का खाना ही किसी तरह जुट पाता है, दासी कहाँ से रखूँ? खजाने के रुपये तो प्रजा के हैं। उन्हें प्रजा की भलाई के लिए ही खर्च करना चाहिए। एक गरीब बादशाह की बेगम होकर तुम्हें ऐसी बात ख्वाब में भी नहीं सोचनी चाहिए। मेहनत की रोटी सबसे मीठी होती है।

१२५८) मुरगे का चौकीदार - एक कुत्ता और एक मुरगा लंबे सफर के लिए साथ निकल पड़े। सूरज ढला, तब वे दोनों एक घने जंगल में थे। मुरगा एक पेड़ पर चढ़कर सो गया। कुत्ते ने पेड़ के पीछे फैली झाड़ियों में अपनी रात बिताने का इंतजाम कर लिया। सुबह हुई तो मुरगा जागा और चिल्लाया- कुकडू कू। उसकी आवाज सुनकर एक सियार दौड़ा आया और मुरगे को पेड़ पर देखकर बोला, यह तो तुमने बड़ा नेक काम किया कि बाँग देकर मुझे सुबह की प्रार्थना के लिए

जगा दिया। अगर तुम नीचे आ जाओ तो हम दोनों साथ मिलकर प्रार्थना कर लें। मुरगा बेवकूफ नहीं था। सियार की नीयत वह तुरंत भाँप गया। उसने कहा, सियार भैया। इस पेड़ के नीचे मेरा चौकीदार सोया है। जरा उसे भी प्रार्थना के लिए बुला लो। सियार दौड़कर पेड़ के पीछे गया तो कुत्ता उस पर लपका। चंद मिनटों में कुत्ते ने सियार का भुरता बना डाला। अपना उल्लू सीधा करने के लिए शैतान भी धर्मशास्त्र का हवाला दे सकता है।

१२५९) बुद्धि का बल - सुकरात एक बार अपने शिष्यों के साथ बैठे कुछ चर्चा कर रहे थे। तभी वहां एक ज्योतिषी आया और कहने लगा, मैं ज्ञानी हूं। चेहरा देखकर चरित्र बता सकता हूं। कोई मेरी इस विद्या को परखना चाहेगा? सभी शिष्य सुकरात की तरफ देखने लगे। सुकरात ने उस ज्योतिषी से अपने बारे में बताने के लिए कहा। ज्योतिषी उन्हें ध्यान से देखने लगा। सुकरात बहुत बड़े ज्ञानी तो थे, लेकिन देखने में बड़े सामान्य थे। ज्योतिषी बोला, तुम्हारे चेहरे की बनावट बताती है कि तुम सत्ता के विरोधी हो। तुम्हारे अंदर द्रोह की भावना प्रबल है। तुम्हारी आंखों के बीच पड़ी सिकुड़न तुम्हारे अत्यंत क्रोधी होने का प्रमाण देती है। ज्योतिषी ने अभी इतना ही कहा था कि वहां बैठे शिष्य उसको वहां से जाने के लिए कहने लगे। सुकरात ने उन्हें शांत करते हुए ज्योतिषी को अपनी बात पूरी करने को कहा। ज्योतिषी बोला, तुम्हारे बेडौल सिर और माथे से पता चलता है कि तुम एक लालची ज्योतिषी हो। तुम्हारी ठुड्डी की बनावट तुम्हारे सनकी होने के तरफ इशारा करती है। यह सुनकर शिष्य और भी क्रोधित हो गए, पर सुकरात प्रसन्न। उन्होंने ज्योतिषी को इनाम देकर विदा किया। सुकरात के इस व्यवहार से आश्चर्य में पड़े शिष्यों ने उनसे पूछा, आपने उस ज्योतिषी को इनाम क्यों दिया? उसने जो कुछ भी कहा, सब तो गलत है। नहीं पुत्रो, ज्योतिषी ने सच कहा। उसके बताए सारे दोष मुझमें हैं। मुझमें लालच और क्रोध है। उसने जो कुछ भी कहा वो सब है, पर वह एक बहुत जरूरी बात बताना भूल गया। उसने सिर्फ बाहरी चीजें देखीं, पर मेरे अंदर के विवेक को नहीं आंक पाया, जिसके बल पर मैं इन सारी बुराइयों को अपने वश में किए रहता हूं। यहीं वह चूक गया। वह बुद्धि के बल को नहीं समझ पाया। यह कहकर सुकरात ने अपनी बात पूर्ण की।

१२६०) छोटी सी आशा - मेरी को बचपन से ही पढ़ना बेहद पसंद था। वह अपने आसपास होनेवाले अन्याय और पक्षपात को लेकर भी काफी संवेदनशील थीं। जैसे-जैसे वह बड़ी होती गईं, समाज में अश्वेतों के साथ होनेवाला भेदभाव उन्हें अखरने लगा। ये भेदभाव शिक्षा से लेकर हर क्षेत्र में चरम पर था। इन्हीं कारणों से कई प्रतिभाशाली अश्वेत विद्यार्थी उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते थे। आखिर एक एक दिन मेरी ने एक ऐसा कॉलेज बनाने का निश्चय किया, जहां सभी विद्यार्थी समानता से शिक्षा ग्रहण करें। अपने इस दृढ़ निश्चय की बात जब उन्होंने लोगों से बताई तो सबने उन पर व्यंग्य करते हुए कहा, मजाक अच्छा कर लेती हो। तुम कॉलेज तो नहीं बना पाओगी, लेकिन कॉलेज बना तो उसमें मजदूरी जरूर कर लोगी। मेरी ने लोगों की बातों की परवाह किए बिना अपना काम जारी रखा। उन्होंने कॉलेज के लिए डेटोना बीच, फ्लोरिडा का स्थान चुना। जब उन्होंने अपना शैक्षणिक संस्थान शुरू किया तो उनके पास केवल छह डॉलर थे। पर वे डटी रहीं। अब तो लोग उन्हें पागल तक कहने लगे थे। सबसे बेपरवाह मेरी अपनी ही धुन में निरंतर अपने पथ पर आगे बढ़ती रहीं। उन्होंने पहले अफ्रीकी-अमेरिकी कन्याओं के लिए स्कूल खोला। कुछ समय बाद यह स्कूल एक निजी संस्थान में परिवर्तित हो गया। अब इसमें अफ्रीकी-अमेरिकी लड़के भी पढ़ने लगे। शीघ्र ही इस संस्थान को बेथून कुकमैन

स्कूल के नाम से जाना जाने लगा था। मेरी इस स्कूल को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दे रही थीं। धीरे-धीरे यह स्कूल कॉलेज में बदल गया। आज बेथून कुकमैन कॉलेज विश्व के उच्च शिक्षा के सर्वश्रेष्ठ कॉलेजों में से एक है। मेरी मॅक्लियॉड बेथून अमेरिका की महानतम महिलाओं में गिनी जाती हैं जिन्होंने छोटी सी आशा के साथ शुरुआत की और सबके लिए शिक्षा के चिराग जला दिए।

१२६२) कुछ भला, कुछ बुरा - कुछ शिकारी एक लोमड़ी का पीछा कर रहे थे। लोमड़ी उछलती कूदती एक लकड़हारे की झोंपड़ी के पास आई। उसने लकड़हारे से विनती की, मुझे बचा लो। मेरी जान खतरे में है। लकड़हारे को दया आ गई। उसने लोमड़ी को झोंपड़ी में छिपा लिया। कुछ ही मिनटों के बाद शिकारी वहां आ पहुंचे। उन्होंने लकड़हारे से पूछा, क्या तुमने यहां से किसी लोमड़ी को गुजरते देखा है? लकड़हारे ने चिल्लाकर जवाब दिया, नहीं। पर हाथ से झोपड़ी की ओर संकेत भी कर दिया। शिकारी उसका यह संकेत समझ न सके और आगे बढ़ गए। कुछ देर बाद लोमड़ी झोपड़ी से बाहर निकली और आगे बढ़ गई। यह देखकर लकड़हारे ने उससे कहा, मैंने तुम्हारी जान बचाई है, कम से कम मेरा शुक्रिया तो अदा करो। लोमड़ी ने तुरंत जवाब दिया, जितनी भली तुम्हारी जीभ है, अगर उतना ही ईमानदार तुम्हारा हाथ होता तो अवश्य मैं तुम्हारा आभार मानती। तन के साथ मन का पवित्र होना भी जरूरी है।

१२६३) खजाने के पत्थर - एक साधु ने एक राजा का खजाना देखने की इच्छा प्रकट की। राजा साधु-महात्माओं का बहुत आदर करते थे, इसलिए मना नहीं कर सके और उन्हें लेकर कोषागार में पहुंचे। हीरे, मोती, नीलम और पन्नों का विशाल ढेर देखकर साधु ने पूछा, इन पत्थरों से आपको कितनी आय होती है? राजा ने कहा, इनसे आय नहीं होती, उलटे इन्हें सुरक्षित रखने के लिए खर्चा करना पड़ता है, पहरेदार रखने पड़ते हैं। साधु ने कहा, आप मेरे साथ चलें, महाराज। इससे बहुत भारी और बहुमूल्य पत्थर मैं आपको दिखलाता हूं। साधु राजा को एक विधवा की झोपड़ी में ले गए। उसके घर में पत्थर की आटा पीसने की एक चक्की थी। दूसरों का अनाज पीसकर वह अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट पालती थी। साधु ने चक्की के पत्थरों की ओर संकेत करके कहा, राजन्। तुम्हारे उन बेकार पत्थरों से ये पत्थर अधिक बहुमूल्य हैं, क्योंकि इस विधवा के लिए ये उपयोगी हैं। कुछ चीजें उपयोग के लिए होती है, कुछ दिखावे के लिए। तुम कौन सी चीज पसंद करते हो?

१२६४) किसानों का देश - गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को तड़क-भड़क और दिखावा तनिक भी पसंद न था। वे सादगी के हिमायती थे। एक बार की बात है कि उनकी पत्नी ने जन्मदिन के अवसर पर उन्हें सोने के बटन भेंट में दिए। रवीन्द्रनाथ ने उनसे कहा, छि-छि:। मैं सोने के बटन लगाऊँगा। मेरा देश किसानों का है, मुझे तो लोहे के साधारण बटन दो। मनुष्य का जीवन सभी ओर से सुंदर होना चाहिए।

१२६५) शांति की खोज - एक महात्मा से एक धनिक ने कहा, महात्मन, आप मुझसे जितना धन चाहें ले लें, लेकिन सुख और शांति को प्राप्त करने की राह बता दें। अँधेरा होने पर महात्मा ने धनिक से कहा, मेरा कमंडल खो गया है, मैं उसे खोजने के लिए बाहर जा रहा हूं। यह कहकर महात्मा कुटी से बाहर चंद्रमा के प्रकाश में कमंडल ढूंढने लगे। धनिक शिष्य पीछे-पीछे जाकर बोला, महात्मन, आपने कमंडल तो कुटी में रखा था, फिर आप उसकी खोज बाहर क्यों कर रहे हैं?

महात्मा ने उत्तर दिया, प्रियवर, कुटी में तो अँधेरा है, वहाँ कमंडल कैसे ढूंढूं? यहाँ प्रकाश है, इसलिए यही कमंडल ढूंढ़ रहा हूं। धनिक को इस बात पर हँसी आई। वह बोला, महात्मन्, कुटी में प्रकाश कीजिए, बाहर के प्रकाश से भीतर तो सहायता नहीं मिलेगी। तभी महात्मा ने कहा, भद्र। यही तो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। बाहर की धन-सामग्री से भीतर मन में प्रकाश कैसे हो सकता है? शांति कीखोज में हम चाहे पूरे संसार का चक्कर लगा आएँ। अगर वह हमारे भीतर नहीं है तो कहीं नहीं मिलेगी।

१२६६) अपमान का बदला - वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन से एक बार एक बालक ने पूछा, अंकल। मुझे कोई ऐसा मंत्र बताएं जिससे जीवन में शत-प्रतिशत सफलता मिल सके। आइंस्टीन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, हिम्मत न हारो। बालक ने पूछा, यह कैसे, अंकल? आइंस्टीन ने बताया, जब मैं तुम्हारी तरह बालक था तो स्कूल के साथी मुझे बहुत तंग करते थे और बुद्धू कहकर मुझे चिढ़ाया करते थे। गणित के अध्यापक मेरा इतना अपमान करते थे कि मैं शर्म से गड़ जाता था। वे हमेशा ताना कसते थे कि तुम सात जन्म में भी गणित नहीं सीख पाओगे। इन सब बातों से चिढ़कर मैंने निश्चय किया कि मैं पूरी मेहनत से सारी चीजें सीखूंगा। किसी के भी अपमानित करने से हिम्मत नहीं हारूंगा। इसीलिए मैं कुछ कर सका। सोचो, यदि मैं डरकर हिम्मत हार बैठता तो मेरी क्या गति हुई होती। जो हिम्मत हारा, वह जीवन हारा।

१२६७) जुनून की ताकत - एडमिरल रिचर्ड बर्ड आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चयवाले व्यक्ति थे। वे जो भी काम हाथ में लेते थे उसे पूरा करके ही दम लेते थे। उनमें बचपन से ही कुछ बड़ा काम करने का जुनून था। १२ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने अपनी डायरी में लिख दिया था कि मैंने फैसला कर लिया है, मैं उत्तरी ध्रुव पर जाने वाला पहला आदमी बनूंगा। उन्हें बचपन में ही उत्तरी ध्रुव पर पहुंचने के लिए किए जानेवाले संघर्षों के बारे में जानकारी थी। यह रोमांचक अभियान उन्हें इतना जंच गया कि उन्होंने आनेवाली चुनौतियों का सामना करने की तैयारियां उसी समय से शुरू कर दी। उन्हें ठंड के मौसम में बहुत परेशानी होती थी। चूंकि उत्तरी ध्रुव में मौसम ठंडा होता है इसलिए उन्होंने उत्तरी ध्रुव पर ठंड का सामना करने के लिए अपने शरीर को कठोर बनाया। सर्दियों में भी उन्होंने कम कपड़े पहने शुरू किए ताकि उनका शरीर पर्याप्त ठंड सहन कर पाए। इसके साथ ही उन्होंने कई मुश्किलों का सामना करने के लिए अपने आपको तैयार कर लिया। लेकिन उनके जीवन का असली इम्तहान अभी बाकी था। वह उत्तरी ध्रुव के अभियान की तैयारी के साथ-साथ अमेरिकी कॉलेज में नौकरी भी कर रहे थे। एक दिन अचानक एक हादसा हुआ और उसमें उनके पैर की हड्डी टूट गई। इसके साथ ही मात्र २८ वर्ष की उम्र में शारीरिक अक्षमता के कारण उन्हें सेवानिवृत्त कर दिया गया। हममें से बहुत से लोग ऐसी परिस्थितियों में हार मान लेते है, परंतु रिचर्ड बर्ड ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने दूसरा रास्ता ढूंढ निकाला। उन्होंने सोचा कि अगर मैं उत्तरी ध्रुव पर पैदल नहीं जा सकता तो हवाई जहाज से तो जा सकता हूं। उन्होंने इसकी तैयारी शुरू कर दी। अंतत: रिचर्ड बर्ड उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव पर हवाई उड़ान भरनेवाले पहले व्यक्ति बने।

१२६८) जंगल में नानक - गुरु नानक अपने प्रिय शिष्य मरदाना के साथ विंध्याचल की तराई की ओर जा रहे थे। एक दिन मरदाना को वन्य जाति के लोग पकड़कर ले गए। ये लोग प्रत्येक अष्टमी तिथि को देवी को प्रसन्न करने के लिए नरबलि दिया करते थे। वे मरदाना को एक गुफा में भैरवी देवी के सम्मुख ले गए। उन्होंने उसे एक वृक्ष से बांधा और ढोल बजाते हुए नाचने लगे। नाच-गाना समाप्त होने पर उन्होंने मरदाना को मुक्त कर दिया। फिर पुजारी उसके

सम्मुख बरछी लेकर आया और उस पर वार करने ही वाला था कि सहसा उन्हें एक शांत स्वर सुनाई दिया, वाहे गुरु। यह सुनते ही पुजारी के हाथ से बरछी अपने आप ही नीचे गिर पड़ी। उस वन्य जाति के सरदार कोड़ा ने नानकदेव को वहां आया देख कठोर शब्दों में प्रश्न किया, कौन हो तुम? तुम्हारे ही जैसा प्रभु का एक बंदा, नानकदेव ने शांत स्वर में उत्तर दिया। मगर हमें तो राक्षस कहा जाता है, वह सरदार बोला। गुरु ने उसके शरीर पर स्नेहिल स्पर्श करते हुए कहा, मगर तुम राक्षस नहीं हो। तुम हो तो मानव, पर तुम्हारे कार्य अवश्य राक्षसों जैसे हैं। उस स्नेहिल स्पर्श का सरदार पर ऐसा असर पड़ा कि वह कठोर मनुष्य भी पिघल गया। तब गुरु नानकदेव जी ने उससे प्रश्न किया, क्या यह तुम्हारी देवी किसी मृतक के प्राण वापस दे सकती हैं? जी कभी नहीं। सरदार ने उत्तर दिया। तो फिर किसी के प्राण लेने का तुम्हें क्या अधिकार है? मनुष्य को किसी के प्राण नहीं लेने चाहिए। जब तुम यह करोगे, तब कोई भी तुम्हें राक्षस ही कहेगा। जो मनुष्य के समान कर्म नहीं करता, उसी को राक्षस कहा जाता है। यह सुन सारे जंगली मानव मनुष्य नानकदेव के पैरों पर गिर पड़े और उन्होंने नर हत्या न करने की प्रतिज्ञा की।

१२६९) कोई नहीं जानता - डजुग्गा में रहनेवाले एक व्यक्ति की दो पत्नियां थीं। दोनों में से वह एक को ज्यादा चाहता था। एक दिन उसकी प्रिय पत्नी बीमार पड़ गई। दूसरी पत्नी अपनी सौत को बीमार देख बहुत खुश हुई कि चलो, अगर यह मर-मरा गई तो इससे पीछा छूटेगा।

वह बीमार सौत के पास जाकर बड़ी सहानुभूति से बोली, कैसी हो? मुझे लगता है, शायद मैं बच न सकूंगी। पहली ने जवाब दिया। घबराओ नहीं। मैं एक दवा जानती हूं, जिसे पीते ही तुम्हें तुरंत आराम मिलेगा। दूसरी ने प्यार से कहा। उसने नदी के किनारे एक बार एक जड़ चखी थी। स्वाद में जड़ बड़ी कड़वी थी। जड़ की कड़वाहट से उसे विश्वास था कि अवश्य यह कोई तेज जहर होगा।

वह नदी के किनारे गई और जड़ खोदकर ले आई। उबालकर फौरन सौत को पीने के लिए दी। किन्तु सौत को जड़ के उस उबले रस से तुरंत आराम पहुंचा। उसने दूसरी से वही दवा और मांगी तो दूसरी हैरान रह गई। असल में उसका षडयंत्र नाकाम रहा। सौत तो एक ही दिन में भली-चंगी हो उठी। प्रसन्न होकर वह दूसरी से बोली, मैं तुम्हारी बहुत एहसानमंद हूं। अगर तुम दवा न देतीं तो मैं कभी ठीक न हो पाती। दूसरी शर्म से पानी-पानी हो उठी। एक आदमी के लिए जो जहर होता है वह कभी कभी दूसरे के लिए अमृत होता है।

१२७०) गांधीजी की खुशामद - गांधीजी से मिलनेवालों की अक्सर भीड़ लगी रहती थीं। मिलने वालों में चिकित्सक, वकील, न्यायाधीश, अभियांत्रिक आदि होते, तो अनपढ़ किसान, मजदूर भी होते। एक दिन ऐसे ही मिलनेवालों की भीड़ लगी थी। उनमें एक धनाढ्य थे तो एक चिकित्सक भी थे। धनिक महाशय पहले से गांधीजी से मिलने के लिए उनके कक्ष में थे, जबकि चिकित्सक बाहर इंतजार कर रहे थे। धनिक महाशय की बातों का कोई अंत नहीं था। वे गांधीजी से अनेक विषयों पर बात करते रहे। शायद वे सोच रहे थे कि जितनी लंबी गांधीजी से बात होगी, उतना ही उनका कद बड़ा होता जाएगा। उन्हें गांधीजी के कीमती समय का भान ही नहीं रहा। देखते-देखते एक घंटा बीत गया और बाहर मिलनेवालों की भीड़ सघन होती गई। उनमें चिकित्सक भी थे, उनकी बेचैनी बढ़ती जा रही थीं। उन्हें गांधीजी

से कोई बहुत जरूरी काम था। इसी बेचैनी में वे क्रोधित भी हो रहे थे। एक घंटे बाद जब वह धनिक महाशय चले गये तो उनकी जान में जान आई। उन्होंने लंबी सांस ली और कक्ष में प्रवेश कर गए। परेशान तो थे ही। कुछ कठोर होकर बोले, बापूजी क्या आप उस बैल को दुह रहे थे? उसमें से कुछ दूध निकला भी? गांधीजी चिकित्सक की बेचैनी समझ गए। वे अत्यंत नम्र होकर, मानो क्षमा मांगते हुए बोले, भाई मैं लोभी ठहरा। जिस तरह तुम सब लोगों की खुशामद करता हूं, वैसे ही उनकी खुशामद भी कर रहा था। शायद किसी दिन देश के काम आ जाए। यही कारण है कि उनकी बातचीत को बीच में नहीं रोक पाया। गांधीजी की विनम्रता देखकर चिकित्सक महाशय भी नियन्त्रित हो गए। इस तरह गांधीजी उपस्थित होनेवाली हर असामान्य स्थिति को सामान्य बना देते ये। गांधीजी का विनम्रता एवं सबके प्रति तटस्थ नजरिया असंख्य लोगों को उनसे जोड़ देता था।

१२७१) सबसे सस्ता भोजन - मगध सम्राट बिंदुसार ने एक बार अपनी सभा में पूछा, देश की खाद्य समस्या को सुलझाने के लिए सबसे सस्ती वस्तु क्या है? मंत्री परिषद तथा सभा के अन्य सदस्य सोच में पड़ गए। कुछ देर बाद शिकार का शौक पालने वाले एक सामंत ने कहा, राजन, सबसे सस्ता खाद्य पदार्थ मांस है। सभी ने सामंत की इस बात का समर्थन किया, लेकिन चाणक्य चुप थे। सम्राट ने उनसे पूछा, आपका इस बारे में क्या मत है? चाणक्य ने कहा, मैं अपने विचार कल आपके समक्ष रखूंगा। रात होने पर चाणक्य उस सामंत के महल पहुंचे। सामंत ने द्वार खोला। चाणक्य ने कहा, शाम को महाराज एकाएक बीमार हो गए है, राजवैद्य ने कहा है कि किसी बड़े आदमी के हृदय का दो तोला मांस मिल जाए तो राजा के प्राण बच सकते हैं, इसलिए मैं आपके पास आपके हृदय का सिर्फ दो तोला मांस लेने आया हूं। इसके लिए आप एक लाख स्वर्ण मुद्राएं ले लें। सामंत ने चाणक्य के पैर पकड़ कर माफी मांगी और उल्टे एक लाख स्वर्ण मुद्राएं देकर कहा कि इस धन से वह किसी और सामंत के हृदय का मांस खरीद लें। चाणक्य सुबह होने से पहले वापस अपने महल पहुंचे और राजा के समक्ष दो लाख स्वर्ण मुद्राएं रख दीं। सम्राट ने पूछा, यह सब क्या है? तब चाणक्य ने बताया कि दो तोला मांस खरीदने के लिए इतनी धनराशि इकट्ठी हो गई, फिर भी दो तोला मांस नहीं मिला। राजन, अब आप स्वयं विचार करें कि मांस कितना सस्ता है? जीवन अमूल्य है। जैसे हमें अपनी जान प्यारी है, बाकी सभी जीवों को भी अपनी जान उतनी ही प्यारी है। लेकिन वे अपनी जान बचाने में असमर्थ हैं। पशु न तो बोल सकते हैं, न ही अपनी व्यथा बता सकते हैं। तो क्या बस इसी कारण उनसे जीने का अधिकार छीन लिया जाए?

१२७२) गोविंद लीनो मोल - महात्मा गांधी के जीवन का हर लम्हा समाज-निर्माण एवं राष्ट्रीयता के लिए समर्पित होता था। एक दिन वे अस्पृश्यता निवारण के संबंध में उड़ीसा में पैदल यात्रा कर रहे थे। शाम के समय पड़ाव पर पहुंचकर उनकी पदयात्रा प्रार्थना-सभा में परिवर्तित हो जाती। सभा में उपस्थित लोग उन्हें कुछ न कुछ भेंट भी दिया करते थे। कभी यह भेंट नकद होती तो कभी वस्तु के रूप में। प्रार्थना-प्रवचन के बाद गांधीजी उन वस्तुओं को नीलाम कर देते थे। प्राप्त राशि का उपयोग गांधीजी के कार्यक्रमों में होता था। उस दिन की प्रार्थना सभा कटक में थी। सदा की भांति लोगों ने बहुत सी वस्तुएं भेंट में दी। गांधीजी उन्हें नीलाम करने लगे। एक कुम्हार ने बाल-गोपाल (कृष्ण) की एक छोटी-सी मूर्ति भेंट में दी। भेंट में प्राप्त वस्तुओं की नीलामी के बीच बेचारे कृष्ण की भी बारी आ गई। गांधीजी ने उस मूर्ति को

उठाया और बोले, अब तुम्हारी बारी है। कलकत्ता के उद्योगपति भागीरथ कानोड़िया उस सभा में उपस्थित थे। वे हंसकर बोल उठे, बापू आपने तो कृष्ण को भी नीलामी पर चढ़ाने से नहीं बख्शा। गांधीजी खूब हंसे, फिर बोले, तुम जानते नहीं, यह तो सदा ही नीलाम होता रहा है। कोई नीलाम करनेवाला और खरीदनेवाला होना चाहिए। पर कानोड़िया को विश्वास नहीं हुआ। गांधीजी ने कहा, क्या तुमने मेरा वह पद नहीं सुना- माई मैंने गोविंद लीनो मोल, कोई कहे सस्ता, कोई कहे महंगा, लीनो तराजू तोल। उस दिन सबसे अधिक कीमत उस मूर्ति की मिली। गांधीजी गंभीर पलों को भी सहज बना देते थे। गंभीर होते क्षणों में भी वे ऐसी कोई बात कह देते, जो सबके गले उतर जाती और माहौल खुशनुमा बन जाता। व्यक्ति जो स्वयं को साधारण मानता, गांधीजी उसकी प्रभुता उजागर कर देते थे। जैसे उन्होंने कुम्हार और उसकी बाल-गोपाल की मूर्ति को मूल्यवान बना दिया।

१२७३) न्याय - जगन की बीवी सुगना की खूबसूरती के चर्चे पूरे गाँव में फैले थे। तीन बच्चों की माँ होने के बावजूद भी उसकी सुन्दरता जस की तस थी। साहूकार की नजर काफी दिनों से थी उस पर, वह बहुत कोशिश कर चुका था सुगना को अपने जाल में फाँसने की। ये बात सारे गाँव को भी पता थी। एक दो बार थाने में साहूकार की शिकायत करने जगन गया भी था पर थानेदार ने उसे डाँट डपट कर भगा दिया। जगन की बीवी का अपहरण हुए आज तीन दिन हो गए। थानेदार साहब खोजबीन भी नहीं करवा रहे। थक-हार कर गाँव वालों की सलाह से आखिर जगन ने मुख्यमंत्री के पास गुहार लगाई। चूंकि मामला सोशल मीडिया की नजरों में भी आ चुका था और पुलिस डिपार्टमेंट पर दबाव बढ़ रहा था तो एसपी ने एक युक्ति निकाली और थानेदार को आदेश दिया, जब तक जगन की बीवी को ढूंढकर नहीं लाते तब तक उसके तीनों बच्चों को अपने घर पर रखो, उनकी देखभाल करो और जगन के लिए दोनों समय का खाना उसके घर पहुंचाओ। चूंकि आदेश में सभी आला अफसरों की स्वीकृति शामिल थी तो पालन तो होना ही था। आदेश पारित होने के दूसरे ही दिन सुगना सही सलामत पुलिस द्वारा ढूंढ ली गई और साहूकार जेल के सींखचों के पीछे थे।

१२७४) तन्मयता के बिना सृजन नहीं - गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर शान्तिनिकेतन के अपने एकान्त कमरे में कविता लिखने में तल्लीन थे। तभी नीरवता को बेधती हुई एक आवाज आई- रुको, आज तुम्हें खत्म ही कर देता हूं। रवींद्रनाथ ने दृष्टि उठाई। देखा एक डकैत चाकू लिए हुए उन पर वार करने के लिए प्रस्तुत है। वे कविता लिखने में पुन: तल्लीन हो गए और धीरे से कहा- मुझे मारना चाहते हो, ठीक है मारना, लेकिन एक बहुत ही सुन्दर भाव आ गया है, कविता पूरी कर लेने दो। भाव में इतने डूबे कि उन्हें याद ही नहीं कि उनका हत्यारा इतना निकट है। इधर हत्यारे ने सोचा- ये कैसा आदमी है? मैं चाकू लिए खड़ा हूं। उस पर कोई असर नहीं। गुरुदेव की कविता जब समाप्त हुई उन्होंने दरवाजे की ओर दृष्टि डाली, मानो कह रहे हो- अब मैं खुशी से मर सकता हूं, लेकिन यह क्या? हत्यारे ने चाकू बाहर फेंक दिया और उनके चरणों में बैठकर रोने लगा।

१२७५) क्षमा महान गुण है - भौतिक विज्ञान के विकास में जिन वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान है उसमें आइजक न्यूटन का अप्रतिम योगदान है। वे कहा करते- कठिनाइयों से गुजरे बिना कोई अपने लक्ष्य को नहीं पा सकता। जिस उद्देश्य का मार्ग कठिनाइयों के बीच नहीं जाता, उसकी उच्चता में सन्देह करना चाहिए। वे प्रकाश से सिद्धांतों की खोज

में बीस वर्षों से लगे थे। अनेक शोधपत्र तैयार किए गए थे। वे मेज पर पड़े थे, वहीं लैम्प जल रहा था, उनका कुत्ता डायमंड उछला और मेज पर चढ़ गया। लैम्प पलट गया। मेज पर आग लग गई। देखते-देखते बीस वर्षों की कठिन तपस्या से तैयार शोधपत्र जलकर खाक हो गए। न्यूटन जब टहलकर आए, तो इस दृश्य को देखकर उन्हें अपार कष्ट हुआ। एक क्षण तो इतने उद्विग्न हुए कि डायमंड को मारकर खत्म करने की बात भी सोचने लगे, लेकिन न्यूटन ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने डायमंड को पास बुलाया, उसकी पीठ पर हाथ रखा, सिर थपथपाते हुए कहा- ओ डायमंड। डायमंड। जो नुकसान तूने पहुंचाया है, तू नहीं जानता। उन्होंने धैर्यपूर्वक सारे शोधपत्र की सामग्री को अपनी स्मृति में खोजा और फिर उसी उत्साह से नया शोधपत्र तैयार करने में जुट गए।

१२७६) जीवन के पन्नों पर - एक पंडित थे, बड़े स्वाध्यायी। शास्त्रार्थ करने के लिए उन्होंने कई ग्रंथों से सामग्री उतार ली और शास्त्रार्थों में उनकी धाम जम गई। ऐसे ही एक दिन उन्हें कुछ चोरों ने मार्ग में घेर लिया। पंडित जी के पास जितनी भी सामग्री थी, सब दे दी, परंतु वह कागजों का पुलिंदा अपने हाथ में उठाए रखा। जब एक डाकू ने वह भी लेना चाहा, तब अनुनय करते हुए बोले- इन कागजों से शास्त्रार्थ करने में मुझे बहुत सहायता मिलती है, इनमें मैंने धर्म लिख रखा है। डाकुओं का सरदार इस पर बोला- अरे पंडित, धर्म तो जीवन में उतारने की चीज है। कागज में लिख रखने की चीज थोड़ी है। तुमने सारा समय यों ही गंवा दिया। उसने कागज लौटाते हुए कहा। पंडितजी सलज्ज भाव से बोले- यह पहला शास्त्रार्थ है, जिसमें मैं पराजित हुआ हूं। अब से मैं धर्म को जीवन के पन्नों पर लिखूंगा।

१२७७) एक लाख हीरा - एक किसान को खेत में एक हीरा पड़ा मिला। किसान को क्या समझ। उसके लिए तो वह मात्र रंगीन पत्थर भर था। घर में ले जाकर उसने उस हीरे को अपने बच्चे को खेलने के लिए दे दिया। लड़का दरवाजे पर हीरे के साथ कंचे की तरह खेल रहा था कि तभी पास से गुजरते हुए एक जौहरी ने उसे देखा। उस किसान को बुलाया और कहा, तुम्हें पता है, इस काँच के टुकड़े की क्या कीमत है? होगी कुछ भी। तुम्हें जो देना है सो दे दो और रास्ता नापो। उस हीरे की कीमत एक लाख रुपये थी। जौहरी चलता-पुरजा था। उसने मात्र एक रुपया किसान को थमाया और चलता बना। हममें से कितने ऐसे हैं जो पास में कीमती हीरो होने के बावजूद उसके मूल्य से अनभिज्ञ होते हैं और उसे पानी के भाव जाया करते हैं। एक की मूर्खता दूसरे का भाग्य बनती है।

१२७८) किसी ने कहा - इधर तो आओ, लिनी। माँ ने कहा, मैं तुम्हें एक बात बताना चाहती हूं। कैसी बात? लिनी ने पूछा। राज की बात है, मगर ऐसी कि तुम किसीसे कहना मत। माँ ने कहा। अच्छा, किसी से भी नहीं कहूंगी, पर तुम मुझे जल्दी से बताओ तो। बहुत जल्दी तुम्हारे एक बहन होगी या फिर एक प्यारा सा भैया, लिनी। माँ बोली। उसी दिन ... पापा। मैं तुम्हें एक राज की बात बताती हूं। पर किसी से कहना नहीं पक्का। पक्का। पर बात तो बताओ, लिनी? पापा ने पूछा। मैं बहुत जल्दी एक प्यारे से भैया या बहन की दीदी बननेवाली हूं। कुछ देर बाद... दादा, दादी। एक बात बताऊँ? पर कहना नहीं किसी से। हरगिज नहीं, बिटिया। कोई खास बात है क्या? जल्दी ही मेरे एक भैया या बहन होगी। थोड़ी देर बाद लिनी अपनी आंटी के पास पहुंची। एक बात बताऊँ, आंटी। वह क्या ? मैं जल्दी से एक भैया या बहन पाऊंगी। अच्छा। हाँ, पर आंटी, कहना नहीं किसी से। बुलबुल, तू वसंत की बात कह, बुरी खबर उल्लू के लिए छोड़ दे।

१२७९) छोटी सी भूल - चांदनी रात में भालू के बच्चे ने आसमान की ओर देखा तो तारों को देख उसका जी ललचा गया। कैसे झिलमिला रहे हैं ये, मैं इन्हें तोडूंगा। वह तारे तोड़ने के लिए चटपट एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। आसमान तब भी उसकी पहुंच के बाहर था फिर उससे भी ऊँचे पेड़ पर चढ़कर आसमान की तरफ हाथ बढ़ाया, पर अब भी हाथ कुछ न आया। सहसा उसकी निगाह पेड़ से लगे स्वच्छ जल के सरोवर पर गई। पानी की उजली सतह पर तारों की परछाइयाँ तारों के होने का आभास दे रही थीं। आह। तब तो मैं इन्हें तोड़ सकता हूं। कहकर वह पेड़ पर से सरोवर में कूदा। जैसे ही वह पानी में गिरा, सारे तारे गायब हो गए। जो कोशिश करता है, उससे भूल भी होती है।

१२८०) मैं कैसे बताऊं - नसरुद्दीन एक बार एक किचन गार्ड में दीवार फांद कर घुस गया और अपने साथ लाए बोरे में आराम से जी भरकर जो भी मिला, सब फल-सब्जी तोड़कर भरने लगा। इतने में माली ने उसे देखा और दौड़ता हुआ आया और चिल्लाया, ये तुम क्या कर रहे हो? नसरुद्दीन बोला, मैं चक्रवात में फंसकर उड़ गया था और यहां टपक पड़ा। माली ने आश्चर्य और गुस्से से कहा, और, और ये सब्जियां किसने तोड़ीं? नसरुद्दीन भोलेपन से बोला, तूफान में उड़ने से बचने के लिए मैंने इन सब्जियों को पकड़ लिया था तो ये टूट गईं। माली ने फिर गुस्से से प्रश्न किया, अच्छा, तो वो बोरे में भरी सब्जियां क्या हैं? नसरुद्दीन फिर भोली सूरत बनाकर बोला, मैं भी तो यही सोच रहा था जब तुमने मेरा ध्यान इधर खींचा।

१२८१) मनुष्य है अनमोल - ग्रीष्म की भयंकर ज्वाला से प्राणिमात्र संतप्त थे। नदी, नालों, सरोवरों आदि का जल सूख गया था; वृक्ष तपन से दग्ध थे और जीव-जंतु आकुल। धरती इंद्रदेव की कृपा से वंचित थी। ऐसी स्थिति में रोहिणी तट पर शाक्यों और कोलियों में रोहिणी के जल के उपयोग पर विवाद छिड़ गया। विवाद ने गंभीर रूप धारण कर लिया और वह युद्ध में परिणत हो गया। दोनों एक-दूसरे के प्राणों के शत्रु हो गए।

उसी समय भगवान बुद्ध ने कपिलवस्तु में रोहिणी के तट पर अपना डेरा डाला था। युद्ध का समाचार सुन वह वहां गए और उन्होंने प्रश्न किया, किस बात का कलह है आप लोगों में? रोहिणी के जल का झगड़ा है, भंते। दोनों ओर से सम्मिलित उत्तर आया। भला बताओ तो, जल का क्या मूल्य है?

भगवान ने दोनों ओर के सेनापतियों तथा सैनिकों से प्रश्न किया। कुछ भी नहीं, भंते। जल बिना मूल्य के हर स्थान पर अनायास मिल जाता है, उन्होंने दृष्टिगत किए उत्तर दिया और मनुष्य का क्या मूल्य है? उन्होंने फिर प्रश्न किया। मनुष्यों का मूल्य लगाया नहीं जा सकता। वे नितांत अनमोल हैं। दोनों पक्षों ने उत्तर दिया। तो फिर अनमोल मनुष्यों का रक्त साधारण जल के लिए बहाना क्या उचित है? नहीं भंते, हमसे भूल हुई थी। हमें प्रकाश मिल गया। अब हम किसी क्षुद्र वस्तु के लिए कभी नहीं झगड़ेंगे, उत्तर मिला और दोनों पक्षों में समझौता हो गया।

१२८२) धैर्य का धनी - बुद्ध के संघ का विस्तार हो रहा था। उनसे प्रशिक्षित होकर बहुत सारे भिक्षु धर्म प्रचार करने निकल पड़े थे। सूना प्रांत ऐसा कठोर स्थान था कि वहां जाने को कोई भिक्षुक तैयार ही न हो। एक दिन उनके शिष्य पूर्ण ने निवेदन किया कि वह धर्म प्रचार के लिए सूना प्रांत जाने की अनुमति चाहता है। बुद्ध ने सोचा कि यह भिक्षु इतना पढ़ा-लिखा भी नहीं है, फुर्तीला भी नहीं है। नई जगह कैसे कामयाब होगा? इसी सोच के साथ बुद्ध ने भिक्षु पूर्ण से कहा, वहां के

लोग बहुत कठोर हैं, तुम्हारी निंदा करेंगे, अभद्र व्यवहार करेंगे। क्या तुम सह लोगे?

भिक्षु ने कहा, मैं समझूंगा कि निंदा ही तो कर रहे हैं। थप्पड़ तो नहीं मार रहे हैं। बुद्ध ने पूछा, अगर वे तुम्हें थप्पड़ मारें तब? भिक्षु बोला, मैं सोच लूंगा कि पत्थर और डंडों से तो नहीं मार रहे। परीक्षा हेतु बुद्ध ने फिर पूछा, मान लो डंडे और पत्थर भी मारें तो? भिक्षु ने कहा, फिर मानूंगा कि मुझे कम से कम तीर-तलवार से तो नहीं मार रहे हैं। बुद्ध ने फिर पूछा और अगर तीर-तलवार से मारें तब? भिक्षु बोला, मुझे घायल ही तो कर रहे हैं जान से तो नहीं मार रहे।

अंत में बुद्ध ने सीधा प्रश्न किया, अगर तुम्हें जान से ही मार दिया तो? तब भिक्षु नतमस्तक होकर बोला, हे तथागत, मरने से पूर्व मैं उनका उपकार मानूंगा। क्योंकि आपके पास रहकर मैंने इतना तो जाना ही है कि यह संसार दुख है, शरीर रोगों का घर है और मुझे इससे छुड़ाकर वे मेरा उपकार ही कर रहे हैं। बुद्ध जान गए कि यह भिक्षु असीम धैर्य का धनी है। क्रोध का शिकार नहीं होगा। यह सच्चा भिक्षु है। भिक्षु के लिए कड़वे वचनों को सुनना और प्रहारों को सहना सबसे बड़ी तपस्या है। आशीर्वाद देकर उन्होंने उसे जाने की अनुमति दे दी।

१२८३) प्रोत्साहन से आत्मविश्वास - शिक्षक ने बालक वाल्टर से कॉपी मांगी। उसने सकुचाते हुए कॉपी शिक्षक के आगे रख दी। आज फिर अधूरा काम देखकर शिक्षक का क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया। शिक्षक ने कहा, वाल्टर, तुम अपना काम कभी भी पूरा नहीं करते हो। चलो पीछे कोने में जाकर बैठ जाओ। आगे की जगह पर प्रतिभाशाली और होशियार बच्चों को बैठना चाहिए। शिक्षक की बात से नन्हा वाल्टर सहम कर पीछे बैठ गया। उसके साथ अक्सर ऐसा होता था। वाल्टर को गणित, विज्ञान से अधिक साहित्य में रुचि थी। वह साहित्य के विषयों को बहुत ध्यान से पढ़ता था।

एक दिन सुप्रसिद्ध कवि रॉबर्ट बर्न्स का उसके घर आना हुआ। एक चित्र के नीचे कविता की बहुत ही सुंदर पंक्तियां देखकर बर्न्स बोले, इन पंक्तियों को किसने लिखा है? पास ही खड़ा वाल्टर संकोचवश यही सोचता रहा कि बोलें या नहीं। बार-बार शिक्षकों की डांट और विद्यार्थियों के चिढ़ाने से उसका आत्मविश्वास दब गया था। बर्न्स के प्रश्न दुहराने पर वाल्टर उठा और उन पंक्तियों को पढ़कर अपने मन से आगे की पंक्तियां भी सुनाता रहा। बर्न्स के साथ ही घर के सभी सदस्य यह देखकर दंग रह गए। वे पंक्तियां बेहतरीन थीं।

बर्न्स ने वाल्टर को गले लगाते हुए बोला, साहित्य में इतनी संजीदगी और श्रेष्ठता का संगम इतनी कम उम्र में मैंने केवल तुम्हारे अंदर देखा है। तुम एक दिन स्कॉटलैंड के महान व्यक्ति बनोगे। यह सुनकर वॉल्टर का हृदय पुलकित हो उठा। शिक्षकों की आलोचना ने उसके मन में अपने प्रति जो संदेह पैदा कर दिया था, वह छंटने लगा। अब वह मित्रों व शिक्षकों को प्रश्नों के जवाब देने लगा। एक दिन यही वाल्टर स्कॉट सुप्रसिद्ध इतिहासकार, उपन्यासकार बना। इस प्रकार बर्न्स के एक छोटे से प्रोत्साहन ने वाल्टर को सफलता के शिखर पर पहुंचा दिया।

१२८४) फकीर के सवाल - औरंगाबाद में सोलहवीं शताब्दी में अमृतराय नामक एक संत कवि हुए थे। वैराग्य भाग्या सारखे भाग्य नाहीं। उनके द्वारा रचित एक पद की लोकप्रिय कड़ी है। एक फकीर को उनका यह पद बड़ा प्रिय था। एक दिन उसके मन में शंका उठी कि क्या इसका रचयिता सचमुच वैरागी होगा?

शंका का निराकरण करने के लिए फकीर अमृतराय के पास पहुंचा। उसने उनसे प्रश्न किया, वैराग्य भाग्या सारखे भाग्य नाहीं वाला पद आपका ही है न? हां, अमृतराय ने शांत स्वर में जवाब दिया। महाराज, क्षमा करें। मैंने पाया कि परोपदेशे पांडित्यम् की कहावत आप पर सर्वथा लागू होती है। अब देखिए न, एक ओर तो आपने सारे सांसारिक सुख भोग लिए, दूसरी ओर लोगों को वैराग्य का उपदेश करते हैं। इसमें आश्चर्य की क्या बात? संत ने जवाब दिया, यह तो देह-प्रारब्ध है। ठीक है, यह देह-प्रारब्ध है, तो क्या आप मेरे साथ वन चलेंगे? फकीर ने पूछा। अवश्य, संत ने जवाब दिया। फिर फकीर सचमुच उन्हें जंगल में ले गया।

जंगल में एक बड़े वृक्ष के पास आकर वह रुक गया और संत से बोला कि वृक्ष के नीचे विश्राम करेंगे। फिर वह उनसे बोला, मैं भोजन के लिए भीख मांगकर लाता हूं। तब तक आप यहीं विश्राम कीजिए। और वह समीप के गांव की ओर चल पड़ा। अमृतराय का एक शिष्य ऊंचे ओहदे पर था। संयोग से वह उसी गांव को जा रहा था कि उसे वृक्ष के नीचे संत दिखाई दिए। वह रुक गया और सेवकों से गद्दी और भोजन की व्यवस्था करने का आदेश दिया। जब फकीर भिक्षा लेकर वापस आया तो अमृतराय को गद्दी पर आराम करते पाया। वही धनिक शिष्य उनके पैर दबा रहा था। फकीर ने यह देखा तो उसे अमृतराय के देह-प्रारब्ध तत्वज्ञान की प्रतीति हो गई। वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, आपको पहचानने में मुझसे बड़ी भूल हुई। मैंने आप पर व्यर्थ ही अविश्वास किया।

१२८५) सबसे सुंदर गुड़िया - तब रुथ हैंडलर अपने पति इलियट हैंडलर के साथ गुड़िया घर के लिए फर्नीचर बनाती थीं। एक दिन उन्होंने देखा कि उनकी बेटी बारबरा और उनकी सहेलियां कार्ड बोर्ड की गुड़ियों से खेलते वक्त बड़ी खुश थीं व उस गुड़िया में अपने बड़े होने की छवि देख रही थीं। वे उस गुड़िया को ऐसे ध्यान रखती थीं, जैसे कि बड़े होने पर अपना ध्यान रखनेवाली थीं। बारबरा और उसकी सहेलियां कार्ड बोर्ड की गुड़िया को बढ़िया से बढ़िया पोशाकें पहनातीं और उसका आकर्षक मेकअप करतीं। यह देखकर रुथ ने उन लड़कियों से पूछा कि क्या उन्हें इस तरह की गुड़िया बहुत पसंद है। तुरंत सभी लड़कियां बोलीं, बहुत। काश ऐसी गुड़िया सचमुच की होती तो कितना अच्छा होता?

फिर क्या था। रुथ ने अपनी बेटी और उसकी सहेलियों के सपनों को पूरा करने की ठान ली। उन्होंने जगह-जगह पर तरह-तरह की गुड़ियों को देखा और फिर स्वयं अपनी कल्पना अनुसार गुड़िया बनाने की सोची। हालांकि हैंडलर को जल्द ही पता चल गया कि उत्पादन की लागत अधिक होने के कारण उन्हें गुड़ियों को जापान में बनवाना होगा। हैंडलर जापान गईं और अलग-अलग खिलौना उत्पादकों से कई सालों तक कई प्रयोग कराए। आखिरकार वे तीन डॉलर में एक गुड़िया बनाने में कामयाब हो गई।

हालांकि गुड़िया को पोशाकों के साथ बनाना काफी महंगा था, लेकिन रुथ ने हार नहीं मानी। वयस्क गुड़िया बनाने के कारण उनकी आलोचना भी हुई, लेकिन वे बेपरवाह रहीं। गुड़िया का नाम अपनी बेटी बारबरा के नाम पर बार्बी रखा। बाजार में आते ही बार्बी सुपरहिट रही और जल्द ही उनकी कंपनी मैटल अमेरिका के सबसे बड़े खिलौना उत्पादकों में से एक बन गई। पांच साल बाद ही मैटल की सालाना बिक्री १०० मिलियन डॉलर हो गई अटकलों के बावजूद रुथ की बार्बी ने तहलका मचा दिया।

१२८६) प्यास कबूतर की - एक कबूतर प्यासा था। पानी की तलाश में वह मारा मारा भटक रहा था, तभी उसकी नजर सराय की दीवार पर पड़ी। दीवार पर किसी ने पानी से भरे मटके का चित्र बनाया हुआ था। कबूतर प्यास से अंधा हो रहा था। वह सीधा उस चित्र पर पलका और दीवार से टकराकर वहीं ढेर हेा गया। सराय के मालिक ने से देखा और उठा लिया। उसके घावों पर उसने मरहम-पट्टी की। कुछ ही दिनों के भीतर कबूतर फिर से तंदुरुस्त हो गया, पर अब वह आजाद नहीं था। सराय के मालिक ने उसे पिंजरे में बंद कर दिया था। भूख प्यास की स्थिति में भी आदमी को अपना विवेक बनाए रखना चाहिए।

१२८७) रंगीन चेहरा - एक गांववाले का विचित्र चेहरा देखकर एक चित्रकार को उसका चित्र बनाने की इच्छा हुई। उसने गांववाले से कहा, सुनो भैया। थोड़ी देर बैठोगे क्या? अठन्नी दूंगा। गांववाले ने कोई जवाब नहीं दिया। चित्रकार ने पुन: पूछा, क्यों। क्या सोच रहे हो? मैं यह सोच रहा हूं कि गांववाले ने जरा सिर खुजलाते हुए कहा, तुम मेरा चेहरा बनाना चाहते हो न। पर रंग भरने के बाद जब चेहरा धोना पड़ेगा तब मेरे चेहरे का रंग तो नहीं उतर जाएगा। जीवन में रंग न हो तो वह जीवन फीका लगता है।

१२८८) एक चूहे की मौत - एक बार एक चूहे ने एक हाथी की बड़ी छाया देखी। उस छाया पर वह इतना मोहित हुआ कि उसने ठान लिया कि अब वह भी अपनी छाया को वैसा ही बड़ा करेगा। उसने उपाय सोचा और आग जलाई। फिर उसने देखा कि वह जैसे-जैसे उस आग के पास जाता वैसे-वैसे उसकी छाया बड़ी बनकर सामने की दीवार पर दिखाई देती। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। इसी खुशी में अपनी छाया को और और बढ़ाने में वह इतना खो गया कि आगे बढ़कर आग में ही गिर पड़ा। आग ने उसे जलाकर भस्म कर दिया। अपने पैर दूसरों के जूतों में न डालो।

१२८९) लगन ऐसी कि पा ली सफलता - लाहौर कॉलेज का वह प्रतिभावान छात्र फारसी के साथ स्नातक परीक्षा देना चाहता था। किसी व्यक्ति ने उसे ताना मारा कि तुम ब्राह्मण के बेटे हो, तुम्हें संस्कृत लेकर स्नातक परीक्षा देनी चाहिए। समय कम था, छात्र ने संस्कृत पढ़ी नहीं थी। छात्र ने विचार किया कि वह संस्कृत लेकर ही परीक्षा उत्तीर्ण करेगा। उसने संस्कृत अध्यापक को अपना विचार बताया। अध्यापक ने कहा, मैं तुम्हें संस्कृत पढ़ाने की चेष्टा करूंगा पर यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम कम समय में संस्कृत कैसे सीखोगे। छात्र ने कहा, गुरुवर, आपने शिक्षा देना स्वीकार कर लिया, मैं धन्य हो गया। मेरा प्रयास यही रहेगा कि आपको अपने निर्णय पर पछताना न पड़े और सचमुच उस छात्र ने प्रथम श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की। यही मेधावी छात्र आगे चलकर स्वामी रामतीर्थ नाम से विश्वविख्यात हुए। यह सब कुछ उसकी सच्ची लगन के चलते हुए।

१२९०) नुकसान - एक गाँव था, जिसके चारों ओर जंगल था। जंगल में तरह-तरह के फलों के वृक्ष थे। वसंत ऋतु में वे फूलों से भर जाते। उनकी महक हवा में तैरती रहती। शाखाओं पर तरह-तरह के पक्षी अपना घोंसला बनाते और अपनी चहचहाट का संगीत बिखेरते। सर्दियों में डालियाँ सेब-नाशपतियों से लद जातीं। कुछ शरारती लड़कों ने जंगल में घूम-घूमकर घोंसले खोजे और उन्हें नष्ट कर डाला। बेचारी चिड़ियाँ फिर किसी दूसरी जगह जाकर अपना घोंसला बनाने लगीं। अब हुआ यह कि फलों और पत्तियों को चाट जानेवाले कीड़े-मकोड़े, जो पहले चिड़ियों द्वारा खा लिए जाते थे, फिर

से पनपने लगे और सारे फलों को नष्ट करने लगे। सर्दियों में बच्चों को जो मीठे और अच्छे फल खाने को मिलते थे, तब तोड़ने पर कीड़े वाले निकलने लगे।

१२९१) जब किसान ने राजा को दी कर्म की सीख - राजा वसुसेन को ज्योतिष पर अंधश्रद्धा थी और वे अपने ज्योतिषी से मुहूर्त जाने बिना कोई काम नहीं करते थे। जब यह बात राजा के शत्रुओं तक जा पहुंची तो वे ऐसे वक्त हमले की योजना बनाने लगे, जिसमें प्रतिकार का मुहूर्त न बने। एक बार राजा देशाटन पर निकले। साथ में हमेशा की तरह राज ज्योतिषी भी थे। मार्ग में एक किसान मिला जो हल बैल लेकर खेत जोतने जा रहा था। राज ज्योतिषी ने उसे रोककर कहा मूर्ख। जानता नहीं, आज उस दिशा में दिशाशूल है और तू उसी ओर चला जा रहा है। ऐसा करने से तुझे भयंकर हानि उठानी पड़ेगी। यह सुनकर किसान बोला- मैं तो प्रतिदिन इसी दिशा में जाता हूं। उसमें दिशाशूल वाले दिन भी होते होंगे। यदि आपकी बात सच होती तो मेरा अब तक सर्वनाश हो चुका होता। राज ज्योतिषी सकपकाकर बोले- तेरी कोई हस्तरेखा प्रबल होगी। दिखा अपना हाथ। किसान ने हाथ तो बढ़ाया किंतु हथेली नीचे की ओर रखी। राज ज्योतिषी चिढ़कर बोले- हस्तरेखा दिखाने के लिए हथेली ऊपर की ओर रखी जाती है। किसान ने कहा- हथेली वह फैलाए, जिसे कुछ मांगना हो। मैं जिन हाथों की कमाई से अपना गुजारा करता हूं, उन्हें क्यों किसी के आगे फैलाऊं? मुहूर्त वह देखे जो कर्महीन व निठल्ला हो। यहां तो ३६५ दिन पवित्र हैं। किसान का उत्तर सुनकर राजा की आंखें खुल गईं और उन्होंने भी परिस्थिति के अनुसार काम करना शुरू कर दिया। वस्तुत: कर्म भाग्य से अधिक फलदायक होता है। जो कर्म करेगा, वह फल भी पाएगा। अकर्मण्यता से कुछ हासिल नहीं होता।

राज ज्योतिषी ने मार्ग में मिले एक किसान को जब दिशाशूल और ग्रहों की बात करते हुए अपने काम से रोकना चाहा तो उसने कर्मठता और पुरुषार्थ की ऐसी सीख दी, जिसे सुनकर राजा की आंखें भी खुल गईं।

१२९२) काम और आराम - पं. विष्णु शर्मा संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। एक दिन वे बच्चों के संग खेल रहे थे। इसी बीच उनके कुछ मित्र वहां आ पहुंचे। एक मित्र ने पूछा, पंडितजी, आप इतने बड़े विद्वान होकर बच्चों के साथ खेल रहे हैं। इससे आपका मूल्यवान समय नष्ट नहीं होता? पंडित ने मित्र की बात का कोई उत्तर न देकर एक बच्चे को संकेत किया कि वह धनुष ले आए। जब धनुष आ गया तो उन्होंने उस धनुष की डोरी ढीली करके रख दी। सभी मित्र असमंजस में पड़ गए कि आखिर पंडित कहना क्या चाहते हैं। तब उन्होंने अपनी बात स्पष्ट की, भाई, हमारा मन धनुष की तरह है। अगर धनुष पर डोरी हमेशा चढ़ी रहे तो उसकी मजबूती कुछ समय में ही जाती रहेगी और यह जल्दी टूट जाएगा; किन्तु अगर काम पड़ने पर ही इस पर डोरी चढ़ाई जाए तो वह अधिक समय तक टिकेगा और काम भी अच्छा होगा। इसी प्रकार हमारा मन है। काम के बाद यदि उसे आराम मिलता रहे तो वह स्वस्थ रहेगा और अच्छा काम करेगा। शरीर का आनंद स्वास्थ्य में है, मन का आनंद ज्ञान में।

१२९३) भैया के गुब्बारे - शीलू भैया के कमरे में जाते हुए चुनमुन हिचकता था। इसलिए कि शीलू भैया कई बार डांट चुके थे- चुनमुन, तू मेरी चीजें खराब कर देता है। मेरी चीजों को हाथ मत लगाया कर। पर आज सुबह से ही चुनमुन का मन शीलू भैया के कमरे में जाने के लिए मचल रहा था। इसलिए कि शीलू भैया ने कल ही गैस के दो गुब्बारे वाले से

कहकर दोनों में एक-एक बड़ा धागा बंधवा लिया था। फिर उन्हें एक कील में अच्छी तरह बांध दिया, ताकि वे उड़कर कहीं चले न जाएं। कमरे में ही रहें।

शीलू भैया दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने गए थे। चुनमुन ने सोचा- भैया के आने में अभी तो कम से कम दो-तीन घंटे लगेंगे। क्यों न तब तक उन अनोखे गुब्बारों की एक झलक देख ली जाए। चुनमुन भैया के कमरे में पहुंचा तो देखा, दोनों गुब्बारे कील से बंधे थे। पर सीधे कमरे की छत से चिपकने की कोशिश कर रहे थे। जैसे शिकायत कर रहे हों कि उन्हें कील से क्यों बांध दिया गया है? हाय, ये कितने परेशान हैं। इन्हें थोड़ा बाहर घुमा कर ले आता हूं। चुनमुन ने कील से धागा खोला और बाहर पार्क की ओर चल पड़ा वाह। बाहर आकर भी ये सीधे आसमान को देख रहे हैं। बड़ी देर तक चुनमुन उन गुब्बारों से खेलता रहा और बातें करता रहा। दोनों गुब्बारों को उसने अपनी गेंद से बांधा और गेंद को दो ईंटों के बीच फंसा दिया। वह मजे में हवा में उड़ते हुए गुब्बारों को देख-देखकर तालियां बजाने लगा।

फिर वह पार्क में गुलाबों की सुंदर क्यारियों की ओर देखने लगा। वहां एक से एक सुंदर फूल खिले थे। चुनमुन को लगा, हर फूल जैसे हंस-हंसकर उससे बात करना चाहता है। थोड़ी ही देर बाद चुनमुन को अपनी गेंद याद आई। वह झटपट वहीं आ गया, जहां उसने गेंद को गुब्बारे में बांध कर अटकाया था। यह क्या। वह चकराया न वहां गुब्बारे थे और न गेंद। ओह। गुब्बारे तो गए ही, साथ ही मेरी गेंद भी। चुनमुन उदास हो गया। वह खाली हाथ घर लौट रहा था, मन में शीलू भैया का डर तो था, पर सोच रहा था, उनके गुब्बारे गए हैं तो क्या हुआ? मेरी गेंद भी तो साथ-साथ गई है। घर पर शीलू भैया अपने गुब्बारों को बेसब्री से ढूंढ रहे थे।

१२९४) सौ लिए, दस चुकाए, उधारी पूरी : वाह-वाह - एक था मियां और एक था बनिया। मियां ने बनिया से कुछ रुपए ले रखे थे। वह रुपयों का तकाजा करता रहता था। मियां की नीयत खराब थी। वह सपने में भी पैसे देने की बात सोचता न था। बनिया जब भी उसके पास पैसे के लिए जाता, वह उल्टा-सीधा जवाब देता रहता। बनिया कह-कह कर थक गया। एक दिन बहीखाता लेकर बनिया मियां के घर पहुंच गया। पूछा, क्या मियां घर पर हैं? मियां के लड़के ने कहा, सेठजी, पिताजी तो कहीं बाहर चले गए हैं। बनिये ने पूछा, किसलिए गए हैं? लड़का बोला, कमाई करने गए हैं?

बनिये ने पूछा, कहां गए हैं? लड़का बोला, गांव की सरहद पर निबौरी लेने गए हैं। वह अपने बाड़े में निबौरी बोएंगे। उनमें से नीम के पेड़ खड़े होंगे, फिर उस पेड़ में निबौरियां लगेंगी। निबौरी हम खाएंगे और उनकी जो गुठली बचेगी उसे पिताजी बाजार में बेचेंगे। जो पैसे मिलेंगे, उससे बनिया का कर्ज अदा होगा।

बनिया समझ गया कि इस मियां से कभी पैसे वसूल नहीं होंगे मियां घर लौटे। बेटे ने उन्हें सारी बातें कह सुनायी। मियां बोले तुमने ठीक बात नहीं कही। आखिरकार पैसे देने की बात तुमने कह दी। यह तुम्हें नहीं कहनी चाहिए थी।

इतने में लाल-पीला होता हुआ बनिया वहां आ पहुंचा। बोला, अपने रुपए चुका दो नहीं तो मैं अदालत में जाऊंगा। मियां ने कहा, कौन कम्बख्त मना कर रहा है? आप पंचों को इकट्ठा कर लीजिए। पंच जो कहेंगे, वैसा ही करूंगा।

पंच बैठे। पंचों ने समझौते की कोशिश की। हां-ना, हां-ना करते आखिरकार पंचों ने सौ के साठ देने की बात तय कर दी। मियां बोले, साठ रुपए तो बहुत होते हैं। कुछ कम कर देंगे तो इसी वक्त अदा कर दूंगा।

फिर पंचों ने दो इधर से कम किए, दो उधर से कम किए। इसके बाद तो कुल तीस रुपए ही देने को बचे।

मियां ने कहा, बात बिल्कुल ठीक है। लीजिए, मैं अभी रकम दिए देता हूं। ये दस नकद दे रहा हूं, दस दिला दूंगा और बचे दस का तो लेना क्या और देना क्या? इतने दिनों बाद इतने बड़े खाते का मामला निपटा, तो उसमें आपको इतनी रियायत तो देना ही चाहिए।

बनिया की तरफ मुड़ कर मियां जी बोले, देखिए, सेठजी। पहले सुन लीजिए और फिर इसी हिसाब से अपने बहीखाते में लिख डालिए। सुनिए-सौ के किए साठ आधे गए नाट। दस दूंगा, दस दिलाऊंगा और दस का क्या देना। मियां जी की चतुराई देखकर बनिया हंस पड़ा। मियां का बेटा बोला, पिताजी देखिए, बनिया हंस रहा है। मियां ने कहा, हां, हंसना तो चाहिए ही, आज उसे नकद पैसे जो मिल गए हैं।

१२९५) ज्ञान बुद्धि - स्वामी शंकराचार्य समुद्र के किनारे अपने शिष्यों से वार्तालाप कर रहे थे। एक शिष्य ने चापलूसी भरे शब्दों में कहा, गुरुदेव। आपने इतना अधिक ज्ञान कैसे पाया, यह सोचकर मुझे आश्चर्य होता है। मेरे विचार से दुनिया में आपसे बढ़कर ज्ञानी दूसरा नहीं है। शंकराचार्य मृदु हँसी हंसे। फिर बोले, गलत सोचते हो तुम। मुझे तो अभी अपने ज्ञान में दिन-प्रतिदिन वृद्धि करनी है। उन्होंने अपने हाथ का दंड पानी में डुबोकर बाहर निकाला और उसके भीगे हुए छोर को शिष्य को दिखाते हुए आगे कहा, इस दंड को जल में डुबोने पर इसने मात्र इस बूँद को ही ग्रहण किया। यही बात ज्ञान को लेकर भी है। ज्ञान पूरा का पूरा किसी के भी हिस्से में कभी नहीं आता। शिष्य उनका उत्तर सुनकर बड़ा लज्जित हुआ। चापलूसी करने और करानेवाले दोनों को भ्रष्ट करती है।

१२९६) दादी और पोता - रोहन के पास एक पैर से चलानेवाला स्कूटर था। वह जब उसे चलाने बाहर निकलता, तो उसकी दादी पीछे दौड़तीं। घर ढलान पर था। आसपास बहुत से चिनार के पेड़ थे। जंगली घास भी थी। दादी को लगता कि कहीं बच्चा साइकिल को न संभाल सके और नीचे लुढ़क जाए, तब क्या होगा, कितनी चोट लगेगी। आसपास वाले दादी से मजाक में कहते, ऐसा करो, तुम भी एक स्कूटर ले लो। बच्चे के साथ चलाओ, कुछ वर्जिश भी हो जाएगी और यह डर भी जाता रहेगा कि रोहन कहीं गिर न जाए। दादी सुनतीं और चुप रह जातीं। उन्हें लगता कि कहीं बच्चे की ज्यादा चिंता करके वह गलती तो नहीं कर रही हैं, क्योंकि सब कहते थे कि बच्चा गिरेगा नहीं, गलती नहीं करेगा तो सीखेगा कैसे? लेकिन गलती करने के चक्कर में कहीं इतनी चोट लग गई कि संभाले नहीं संभली, तब फिर सब उन्हें ही सुनाएंगे कि वह तो बच्चा है, तुम तो बड़ी थी, रोका क्यों नहीं? खान-पान में भी वह चाहती थीं कि वह दाल खाए, सब्जी खाए, दूध पिए, मगर वह हमेशा चॉकलेट और बर्गर मांगता।

दादी सोच में पड़ जातीं कि क्या वह सचमुच पुराने जमाने की हो गई हैं? क्या उन्हें बच्चों के खान-पान और उनके स्वास्थ्य के बारे में कुछ नहीं मालूम? आखिरकार उन्हें लगा कि जब उनकी बात किसी को अच्छी ही नहीं लगती है, तो वह क्यों बोलें। बस अब वह चुप रहने लगीं। वह अपने बच्चों के बचपन को याद करती थी। एक दिन सवेरे सब लोग दफ्तर जाने की तैयारी कर रहे थे। दादी सबके लिए खाना बना चुकी थी। सलाद काट रही थी कि इतने में फोन बजा। वह फोन उठाने गईं। बातचीत करके लौटीं तो देखती क्या हैं कि जिस चाकू से सलाद काट रही थीं, रोहन उसे ही लेकर दौड़ा

जा रहा है। दादी को डर लगा। वह उसके पीछे दौड़ीं और फिसलने से बचीं। उन्होंने रोहन के पापा को पुकारा और देखा तो, इसके हाथ से चाकू ले लो। कहीं हाथ में न लग जाए। बहुत ही शैतान होता जा रहा है। रोहन के पापा दौड़े और उसके दोनों हाथों को पकड़ लिया। पापा चाकू ले लेंगे, यह सोचकर उसने चाकू को तेजी से मुट्ठी में बंद कर लिया और दादी के मुंह से निकला, हे भगवान ये क्या हुआ? रोहन के पापा की नजर भी पड़ी। उसकी हथेली से तेज खून बह रहा था। उसके पापा ने घबराकर कहा, मां देखो यह क्या हो गया? अभी तो डॉक्टर भी नहीं आया होगा। उसकी मम्मी भी घबरा गईं। दादी वापस रसोई में गईं और हल्दी लाकर रोहन के घाव पर बुरक दी। थोड़ी ही देर में खून बहना बंद हो गया। फिर दादी ने पानी में पट्टी को डुबोया और उसके हाथ पर बांध दिया। पानी की पट्टी से क्या होगा मां? उसके पापा ने पूछा तो दादी बोलीं, इससे घाव जल्दी भर जाएगा। लेकिन खून इतनी जल्दी कैसे रुक गया? हल्दी से। हल्दी एंटी सेप्टिक भी है। वाह मां, आप तो पूरी डॉक्टर निकलीं। दादी मुस्कुराईं उन्हें अपने बेटे का बचपन याद आ गया। कैसे खेलते वक्त जब उसे चोट लग जाती थी, तो वह इसी तरह के उपाय किया करती थीं। फिर भी उसके माता-पिता को लगा कि उसे डॉक्टर के पास ले जाना जरूरी है। डॉक्टर ने उसे देखा। दवा लगाई। इंजेक्शन दिया, फिर कहा- आपकी मम्मी ने बिल्कुल ठीक किया हल्दी लगाकर और पट्टी बांधकर, वरना बच्चे का काफी खून बह जाता। घाव गहरा है। फिर मुस्कराकर बोले इन बुजुर्गों के सामने तो कई बार डॉक्टर भी हार मान जाते हैं। चिकित्सक की बात सुनकर रोहन के मम्मी-पापा को भी लगा कि उन्हें भी अपने माता-पिता के ज्ञान का लाभ उठाना चाहिए। जब रोहन लौटा, तो उसके हाथ में बड़ा सा गुब्बारा था। वह दौड़ता हुआ दादी के पास गया और बोला, देखो दादी गुब्बारा। दादी बोलीं, ठीक है, खूब खेलो। वह फिर से खेल में मशगूल हो गया था।

१२९७) दुश्मन हमारे बीच होते हैं - बहुत पुराने समय की बात है कि एक गाँव में एक पेड़ पर कौवा और हंस रहते थे। गर्मी का दिन था। एक थका हुआ शिकारी उस पेड़ के नीचे आराम करने के लिए रुका। वो बड़े आराम से उस पेड़ की छाया के नीचे सो रहा था। कुछ देर बाद उस शिकारी के मुंह पर से छाया चली गई उसके चेहरे पर तेज धूप आ गई थी। सूर्य की तेज धूप को देखकर पेड़ पर बैठे हंस को उस पर दया आ गई, उसने अपने पंखों को पूरी तरह फैलाकर उस आदमी के मुख पर छाया कर दी। छाया होने पर वह आदमी बड़ा आनंद महसूस कर रहा था। उसने अचानक अपना मुंह खोला और सोता रहा। उस पेड़ पर बैठा बुरी दृष्टिवाला कौवा यह सब कुछ देख रहा था। उससे हंस की यह नम्रता देखी नहीं गई। उसने पेड़ के नीचे आराम कर रहे व्यक्ति के मुंह पर बीट कर दी और वहां से उड़ गया। परन्तु हंस को उस काले दुष्ट कौवे की हरकत का पता ही ना चला। बीट गिरते ही वो आदमी नींद से जाग गया। उसने देखा कि हंस उस पेड़ की टहनी पर अपने पंख फैलाए बैठा था। उसे लगा कि जरूर इससे ही उसके मुंह पर बीट की है। उसने उस हंस की तरफ तीर चला दिया। हंस तो तीर लगते ही वह वहीं मर गया। यह कहानी यही शिक्षा देती है कि हमें अपने दुश्मनों से सचेत रहना चाहिए। कई बार दुश्मन हमारे बीच ही छुपे होते हैं और हमें उनका पता ही नहीं चलता।

१२९८) ताड़ का पेड़ - किसी जंगल में एक ताड़ का पेड़ था। उसका तना एकदम सीधा और मजबूत था। जब तेज हवा चलती थी तो जंगल के सारे पेड़-पौधे झुक जाते थे, पर ताड़ का पेड़ तना हुआ अड़िग खड़ा रहता था। एक

दिन उसकी छाँव में घास का एक तिनका उग आया। ताड़ ने उससे कहा, यार। तुम तो हवा के हर झोंके के साथ झुक जाते हो। घास के तिनके ने विनम्रता से उत्तर दिया, मित्र। मैं तुम्हारी तरह मजबूत नहीं। ताड़ का पेड़ इस प्रशंसा पर फूल उठा। घूमकर बोला, हाँ, बंधु। इस जंगल में सबसे ताकतवर मैं ही हूँ। उसी रात जंगल में भयानक आँधी आई। घास का तिनका हर झोंके से इधर-उधर डोलता रहा, पर तूफ़ान ने ताड़ के पेड़ को उखाड़कर फेंक दिया। गर्व देवदूतों को भी नष्ट कर देता है।

१२९९) सियार की दुम - एक था सियार। एक दिन वह शिकारी के जाल में फँस गया। बड़ी कोशिशों के बाद वह भाग निकलने में सफल हो गया, पर उसकी दुम कट गई। उसने सोचा, दोस्त बिरादर मेरी दुम न देखकर क्या कहेंगे? पर वे लोग कुछ सोचें, इसके पहले उसने एक उपाय सोच निकाला। कुछ घंटे बाद जब उसके दोस्त-बिरादर मिले तो उसने कह दिया, देखो, दुम के बगैर एक सियार कितना सुंदर लगता है। इस राज का पता मुझे जैसे ही लगा, मैंने अपनी दुम काट दी। सच कहूँ तो दुम बोझ सी भी लगती थी। क्यों न आप लोग भी मेरी तरह दुम काटकर हल्के और सुंदर हो जाओ। उसके तर्क सुनकर एक बूढ़े सियार ने कहा, ऐसा होता तो तुम अपनी पूँछ काटने से पहले दूसरे की काटकर न देख लेते। सबसे बड़ा झूठ वह नहीं जिसे बोला जाता है, बल्कि वह है जिस पर जिया जाता है।

१३००) जो होता है अच्छा होता है - समुद्र के किनारे एक गांव था। जहां मछुआरे रहते थे। वह अपनी नावें लेकर दूर-दूर तक गहरे समुद्र की ओर निकल पड़ते। एक दिन ऐसी ही स्थिति में तूफ़ान आ गया। मछुआरों की नावें रास्ता भटक गईं। ऐसे में मछुआरों के परिजन समुद्र किनारे आकर उनके सकुशल की उम्मीद करने लगे। वे सभी दु:खी थे, तभी एक और दु:खद घटना घट गई। एक मछुआरे की झोपड़ी में आग लग गई। महिलाओं ने आग बुझाने की कोशिश की लेकिन वो नाकाम रहीं। सुबह हुई सभी मछुआरे वापस आ गए, लेकिन जिस घर में आग लगी थी उस मछुआरे की पत्नी ने अपने पति से कहा, हम बर्बाद हो चुके हैं। कल रात हमारे घर में आग लग गई थी। अब कुछ भी नहीं बचा है। यह सुनकर उसके पति की खुशी का ठिकाना न रहा, वह बोला ईश्वर का धन्यवाद हो, रात में जलती हुई झोपड़ी देखकर ही तो हम अपनी नावें किनारे पर लगा पाए। अगर ऐसा नहीं होता तो हम समुद्र में खो जाते। जो होता है अच्छा होता है, बस आपका नजरिया उस अच्छे को सही दिशा में पहचान ले।

१३०१) लेटर बॉक्स - बच्चों ने आपस में कहा, दादी घूमने गई हैं। हम उन्हें कुछ उपहार देंगे। वे बड़ी प्यारी हैं। हम सबको कितना प्यार करती हैं। बच्चों ने तय किया कि घर के बाहर जो उनका लेटर बाक्स रखा है, उसमें वे गुलाबों का खूबसूरत गुलदस्ता रख देंगे। इत्तिफाक से दादी लेटर बाक्स खुला ही छोड़ गई थीं। लौटकर वे सबसे पहले लेटर बाक्स खोलकर देखेंगी, यह जानने के लिए कोई चिट्ठी आई है क्या? तभी अचानक गुलदस्ता देख कितनी खुश होंगी। बच्चों ने वही किया। शाम हुई। रात आई। फिर सुबह भी हो गई। उनकी प्यारी दादी नहीं लौटी। लेटर बॉक्स में फूल मुरझा गए थे। वे शायद अपने नाती-पोतों के पास ठहर गई हैं। लगता है, वे कुछ दिनों बाद ही आएंगी। ठीक है, तब तक हम कोई नया उपाय सोचते हैं। बच्चे सोचने में ही लगे रहे। एक चिड़िया ने तब तक उस लेटर बाक्स में अपना घोंसला बना लिया। उसने दो नन्ही चिड़ियों को जन्म दिया। घर का अहाता उनकी मीठी चूँ-चूँ से गूंजने लगा। अचानक एक शाम दादी लौट

आई। घर के आहाते में गूंजती मीठी आवाजों ने उन्हें गदगद कर दिया। बच्चों ने जब गुलदस्ता रखा था तब साथ में दादी के नाम एक चिट लगा दी थी- हमारी तरफ से प्यारी-प्यारी दादी को उपहार। वह चिट सूखे फूलों के साथ हटाना वे भूल गए थे। जब दादी ने घोंसले की बगल में वह चिट पड़ी पाई तो बहुत खुश हुईं और मामला समझ गईं।

१३०२) इससे तो पैदल चलना ही अच्छा - एक बार रेगिस्तान में एक आदमी दस गधों को तालाब में पानी पिलाने ले जा रहा था। कुछ मील चलकर वह एक गधे पर बैठ गया और बाकी गधों को गिनने लगा। पूरे नौ थे। वह घबराकर उतर गया और दसवें गधे की खोज में वापस गया। जब गधा नहीं दिखाई दिया तो उसने सोचा कि वह खो गया होगा।

ढूंढना बंद कर वह हैरान-परेशान वापस लौटा तो क्या देखता है कि पूरे के पूरे दस गधे खड़े हैं। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। खुशी-खुशी वह एक गधे पर बैठ गया। कुछ ही दूर जाने पर उसने सोचा कि चलो एक बार फिर गधों की गिनती कर ली जाए। फिर नौ निकले। वह हैरान था कि माजरा क्या है। वह फिर खोए गधे को ढूंढने निकल पड़ा, लेकिन वह नहीं मिला। वह जल्दी-जल्दी वापस आया और फिर गिनती की तो वापस गिनती में दस गधे आ रहे थे।

उसने सोचा शायद रेगिस्तान की गर्मी के कारण कुछ गड़बड़ी हो रही है। वह बड़बड़ाते हुए कह रहा था कि हो सकता है यहां कोई दुष्ट आत्मा हो, जो मेरे गधों को बार-बार गायब करने का खेल कर रही हो। यदि मेरे पैदल चलने पर सारे गधे सलामत रहते हों तो मैं पैदल ही चलता हूं और वह गधों के पीछे-पीछे पैदल चलने लगा।

१३०३) नहले पर दहला - रमन मेहनती, ईमानदार और बुद्धिमान था; पर था बड़ा गरीब। किसी काम से एक दिन वह पास के शहर में गया। बीच बाजार में हलवाई की एक बहुत बड़ी दुकान पर जब उसने बहुत सारी मिठाइयों के सजे-संवरे थाल देखे तो मुंह में पानी भर आया। उसकी जेब में इतने पैसे तो थे नहीं कि मनचाही मिठाई खरीदकर खा सके, फिर भी वहां से हटने को उसका मन नहीं हुआ। थालों के पास खड़े-खड़े ही वह मिठाइयों की खुशबू से अभिभूत होता रहा। दुकानदार, जो पहले दरजे का ठग था। अपनी दुकान के आगे काफी देर से एक भोले-भाले देहाती को खड़े देख ठगने की नीयत से बोला- ए भाई, तुम आधे घण्टे से यहां खड़े-खड़े मेरी मिठाइयों की महक ले रहे हो। निकालो एक रुपया हमारे यहां मिठाइयों को सूंघने के भी पैसे लगते हैं। मगर मैंने कोई मिठाई खायी तो नहीं, सूंघने के कभी पैसे हुए हैं?

तुझे कह दिया न हलवाई इस बार गरजकर बोला- हमारे यहां सूंघने के भी पैसे लगते हैं। एक रुपया निकालता है या बुलाऊं पुलिस कों? रमन भी कम न था। उसने जब देखा कि यह ठग बिना कोई चमत्कार दिखाए बिना माननेवाला नहीं है तो बड़ी विनम्र वाणी में बोला- ठीक है भाई, मुझे पहले पता नहीं था। अब तुम जिद ही कर रहे हो तो लो यह रुपया। कहने के साथ ही साथ रमन के सीमेंट के फर्शपर रुपये का एक सिक्का पटक दिया। सिक्के की खनक सुन हलवाई ज्यों ही उसे लपकने को हुआ, रमन ने फौरन सिक्का उठाकर अपनी जेब में रख लिया और बोला- अब तो हिसाब बराबर हो गया? बराबर? तुमने मुझे रुपया दिया कब? हलवाई आक्रोश में कहने लगा तो रमन ने ठण्डी सांस लेकर मुस्कराते हुए फरमाया तुमने मुझे मिठाई कब दी? मगर उन्हें सूंघा तो है तुमने? बिल्कुल और तुमने मेरे सिक्के की खनक भी सुनी है, अब यह भी सुन लो कि जिस तरह तुम्हारे यहां मिठाई खाना और सूंघना बराबर है, उसी तरह हमारे यहां भी पैसा लेना या उसकी खनक सुनना बराबर है?

अब हलवाई बेचारा क्या करता। उसने तो रमन को भोला-भोला देहाती ही समझ था मगर वह तो स्वयं उससे भी ज्यादा चतुर निकला।

१३०४) साधु ने समझाया- इच्छाएं अमरबेल है - एक राजा प्रजा की हर सुख-सुविधा का ख्याल रखता था। फिर भी प्रजा के बीच से हर दिन कोई नई मांग उठ खड़ी होती। राजा दिन-रात इसी प्रयास में लगा रहता कि वह प्रजा को पूर्ण संतुष्ट रखे, किंतु लोगों की इच्छाओं का कोई अंत नहीं था। अंततोगत्वा राजा बीमार हो गया, क्योंकि उसके मन में गहरा दुख था। वह सोचता रहता कि और क्या करूं, जिससे मेरी प्रजा खुश रहे? राजा का बेहतर से बेहतर उपचार कराया गया, किंतु कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि राजा की परेशानी मानसिक थी। संयोग से एक दिन उस राज्य में हिमालय के एक साधु आए। राजा ने उन्हें अपने मन की पीड़ा बताई और निवेदन किया- आप परम ज्ञानी हैं। मेरा कष्ट निवारण कीजिए। साधु समझ गए कि राजा के तन को नहीं; बल्कि मन को उपचार की जरूरत है। उन्होंने राजा को समझाया- राजन्। तुम्हारे इस कष्ट का कारण तुम्हारी अपनी सोच है। तुम प्रजा की नित नई इच्छा को पूर्ण करने में लगे रहते हो, किंतु यह भूल जाते हो कि मन चंचल होता है। उसका काम ही इच्छा करना है। उसे जितना दोगे, वह और मांगेगी। मन का कोई अंतिम संतुष्टि-बिंदु नहीं होता। इसलिए यह तुम्हें तय करना होगा कि प्रजाहित में जो जरूरी है, वे ही इच्छाएं पूर्ण की जाएं, शेष को नियंत्रित किया जाए। सुख इच्छाओं की नियंत्रित पूर्ति में है। साधु की बात सुनकर राजा को अपनी भूल समझ में आई। अब वह साधु के बताए मार्ग पर चलने लगा और उसके राज्य ने पहले से अधिक बेहतर स्थिति प्राप्त की। सार यह है कि इच्छांए अमरबेल की तरह होती हैं। पहली को पूर्ण करें, चाहे सौंवी को, वे निरंतर फैलती ही जाती हैं। इसलिए आवश्यक-अनावश्यक के आधार पर इच्छापूर्ति की प्राथमिकता तय करनी चाहिए।

१३०५) हिरणी के प्रति दया का फल; एक दिन बादशाह बना - एक दिन एक सैनिक अपने घोड़े पर सवार हो, हाथ में बंदूक ले जंगल में शिकार के लिए चल पड़ा। वह बहुत देर तक शिकार की खोज करता रहा, परन्तु उसे कोई शिकार नहीं मिला। अंत में हारकर वह झाड़ी की तरफ बढ़ने लगा, तभी उसे एक हिरणी अपने बच्चे के साथ दिखायी पड़ी।

हिरणी शिकारी को अपनी तरफ आता हुआ देख अपने साथ बच्चे को ले भागने लगी। भागते-भागते वह अपने वेग में अपने बच्चे को पीछे देखना भूल गयी और स्वयं एक झाड़ी में छुप गयी। छुपने के बाद जब उसने देखा तो पाया कि उसका बच्चा उसके साथ नहीं है। वह एकदम सकते में आ गयी और झाड़ी में से ही इधर-उधर देखने लगी, तभी उसकी नजर शिकारी पर पड़ी। वह शिकारी के साथ अपने बच्चे को देखकर एकदम सन्न रह गयी। शिकारी जब जंगल की सीमा पार करने को हुआ, तब ही उसने पीछे मुड़कर एक बार देखना चाहा। उसकी नजर जब अपने पीछे दौड़ती हुई आ रही हिरणी पर पड़ी तब वह उसका आशय समझ गया और उसकी आत्मा दया भाव से भर उठी, इसलिए उसने हिरणी के बच्चे को अपने घोड़े से उतार दिया। हिरणी का बच्चा हिरणी से जा मिला। इस मिलन दृश्य को देखकर शिकारी का हृदय गदगद हो गया और वह अपनी राह चल पड़ा। शिकारी ने उसी रात में एक स्वप्न देखा, जिसमें किसी ने उससे कहा- हे सैनिक, प्रभु ने तुम्हारे दया भाव को देखकर तुम्हारे नाम के पहले बादशाह शब्द जोड़ दिया है। सचमुच वह आगे चलकर

बादशाह बना। वह बादशाह कोई और नहीं, बादशाह सुबुक्तगीन थे, जो इतिहास में प्रसिद्ध हुए।

१३०६) दुष्ट कौए की दोस्ती पड़ गई भारी - जंगल के रास्ते में एक पीपल का विशाल पेड़ था। पीपल के पेड़ में अनेक पक्षियों ने अपने घोंसले बना रखे थे। उसी पेड़ पर एक हंस भी रहता था। उसी पेड़ पर एक कौआ भी रहता था। हंस के इस उदार भाव के कारण कौआ हंस से ईर्ष्या करता था।

एक दिन एक यात्री उस मार्ग से जा रहा था, उसके शरीर पर मूल्यवान वस्त्र और कंधे पर धनुष-बाण शोभा दे रहे थे। वह गर्मी की पतिश से व्याकुल हो रहा था। पीपल के पेड़ की घनी छाया देखकर उसने पेड़ के नीचे आराम करने का निश्चय किया। पेड़ की सुखद छाया में लेटते ही उसे नींद आ गई। थोड़ी देर बाद सूर्य की रोशनी उस पथिक के ऊपर आ गई। नींद गहरी होने के कारण वह सोता ही रहा। हंस ने जब सूर्य किरणों को उसके मुंह पर पड़ते देखा तो दयावश उसने अपने पंखों को फैलाकर छाया कर दी, जिससे पथिक को सुख मिल सके। यात्री सुखपूर्वक सोता रहा।

सोते हुए उसका मुंह खुल गया। उसी समय कौआ भी उड़ता हुआ आया और हंस के पास बैठ गया। सीधे स्वभाववाले हंस ने कौवे को अपने समीप आया देख उसे सादर बैठाया और कुशल-प्रश्न पूछा। कौवा तो स्वभाव से ही दुष्ट था, हंस को छाया किए देखकर वह सोचने लगा कि यदि में इस यात्री के ऊपर बीट करके उड़ जाऊं तो यह यात्री जाग जाएगा तथा पंख फैलाए हंस को ही बीट करनेवाला समझकर मार डालेगा। इससे मैं हंस से मुक्ति पा जाऊंगा। जब तक यह हंस यहां रहेगा तब-तक सब इसकी प्रशंसा करते रहेंगे। यह विचार कर इस ईर्ष्यालु कौए ने सोए हुए पथिक के मुंह में बीट कर दी और उड़ गया। मुख में बीट गिरते ही यात्री चौंककर उठ बैठा। जब उसने ऊपर कि ओर देखा तो हंस को पंख फैलाए बैठा पाया। यद्यपि हंस ने उसका उपकार किया था, परंतु दुष्ट के क्षणिक संग ने उसे ही दोषी बना दिया। यात्री ने सोचा कि इस हंस ने ही मेरे मुंह में बीट की है। यात्री को गुस्सा तो था ही उसने धनुष-बाण उठाया और एक ही तीर से हंस का काम तमाम कर दिया। बेचारा हंस उस दुष्ट कौए के क्षणिक संग के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ।

१३०७) कंस और हंस - कंस को ज्योतिषियों ने बताया था कि तुम्हारी बहन का आठवां पुत्र तुम्हारी मृत्यु का कारण बनेगा। कंस ने इसीलिए अपनी बहन देवकी को कारागार में डाल दिया। छह बालकों को उसने जन्मते ही मार डाला था। इस वक्त वह सातवें का संहार करने जा रहा था। राजमहल से निकलकर वह बाग में आया। बाग में एक बहुत सुंदर फव्वारे वाला सरोवर था। सरोवर में हँस-हँसिनी का एक जोड़ा रहता था। जैसे ही वह फव्वारे के पास पहुंचा, हँस ने हँसिनी से कहा, अब मोती चुगने का शौक रहने दो। हँसिनी हँस की बात समझी नहीं। बोली, महाराज कंस का राज्य है। मोतियों की क्या कमी। मोती जैसे अन्न के दानों का भंडार तो भरा पड़ा है। हँस पुन: हंसा, जो राजा मानवों की हत्या करता है और तिस पर भी बाल हत्या करता है, वहां धन-धान्य क्या रहेगा। कंस ने अपनी निंदा सुनी तो क्रोधित हो उठा, मेरे ही अन्न-जल पर जीने वाले की यह हिम्मत। उसने तुरंत हँस की गरदन काट दी। हँसिनी चीत्कार कर उठी। इसके बाद कंस कारागार पहुंचा। उसने सातवें बच्चे को उठाया और पत्थर पर पटकने के लिए उछाला। परंतु पत्थर पर टकराने से पूर्व ही वह बच्ची आसमान में यह कहती हुई उड़ गई कि तुम्हारी बहन की आठवीं संतान तुम्हारा काल होगा। यह मत भूलो कि ईश्वर न्यायी है।

१३०८) मिट्ठू का घर - गुड्डू को मजा आता था जब पड़ोस वाली चाची का मिट्ठु उसका नाम बार-बार रटता था। बहुत जिद करने पर भी उसके मम्मी पापा उसके लिए मिट्ठू नहीं खरीद रहे थे, जबकि चाची से उसने एक पुराना पिंजड़ा लेकर इंतजाम से रख दिया था। पापा को गुड्डू का पड़ोस में बार बार जाना पसंद नहीं था। आज रविवार के दिन जब वह जिद पर अड़ा, तो पापा उसे मोटरसाइकिल पर पार्क घूमाने ले जा रहे थे। रास्ते में ही सड़क के किनारे घने पेड़ों पर मिट्ठुओं की टोली को देख गुड्डु खुश होकर बोला- देखो पापा, मस्ती हो रही है मिट्ठुओं की। रुको पापा, मुझे देखना है इतने सारे मिट्ठू। पापा ने मोटरसाइकिल रोककर मोबाइल कैमरे से वीडियो बनाना शुरू कर दिया। गुड्डू पेड़ों पर चहचहाते मिट्ठुओं को एक डाल से दूसरी डाल पर कूंदते-फुदकते देखकर आनंदित हो रहा था। तभी एक ग्रामीण आदमी की आवाज सुनाई दी- भाईसाहब, बच्चे के लिए एक मिट्ठू खरीद लो न, मेरे पास हैं घर पर। या कहें तो एक पकड़ कर दे दूं। यह सुनकर गुड्डू पडोसन चाची के मिट्ठू के बारे में सोचने लगा। क्यों बेटा, एक मिट्ठू अपने घर ले चलें। पापा ने कहा। नहीं पापा, यही मिट्ठू का असली घर है। गुड्डू ने जवाब दिया। सीख- पक्षियों को कैद करना ठीक नहीं, इंसानों की तरह उन्हें भी आजादी चाहिए।

१३०९) जहां धर्म हो, वहां विजय सुनिश्चित - रूपनगर में एक दानी और धर्मात्मा राजा राज्य करता था। एक दिन उसके पास साधु आया और बोला- आप बारह साल के लिए मुझे अपना राज्य दे दीजिए या अपना धर्म दे दीजिए।

राजा बोला- धर्म तो नहीं दे पाऊंगा। आप मेरा राज्य ले सकते हैं। साधु राजगद्दी पर बैठा और राजा जंगल की ओर चल पड़ा। जंगल में राजा को एक युवती मिली। उसने बताया कि वह आनंदपुर राज्य की राजकुमारी है। शत्रुओं ने उसके पिता की हत्या कर राज्य हड़प लिया है। युवती के कहने पर राजा ने दूसरे नगर में रहना स्वीकार किया। जब भी राजा को किसी वस्तु की आवश्यकता होती, युवती मदद करती। एक दिन राजा से उस नगर का राजा मिला। दोनों में दोस्ती हो गई। उस विस्थापित राजा ने नगर के राजा और उसके सैनिकों को भोज पर बुलाया। नगर का राजा बहुत हैरान था। यह देखकर कि उस विस्थापित राजा ने यह सारा इंतजाम कैसे किया। विस्थापित राजा भी हैरान था, तब उसने उस युवती से पूछा- तुमने इतने कम समय में सारी व्यवस्थाएं कैसे की?

उस युवती ने राजा से कहा- आपका राज्य संभालने का वक्त आ गया है। आप जाकर राज्य संभालें। मुझे बचाया था, इसलिए मैंने आपकी मदद की।

जो धर्म को जानकर उसकी रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। जहां धर्म है, वहां विजय है। इसलिए धर्म को गहराई से समझना आवश्यक है।

१३१०) व्यावहारिक ज्ञान के बिना तमाम जानकारियां अधूरी रह जाती हैं - अंग्रेजी व्याकरण का एक प्रोफेसर एक नाविक के साथ नाव में बैठा था। साहित्यिक क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों के घमंड से भरकर, उसने नाविक से पूछा, क्या तुमने कभी व्याकरण सीखी है?

नाविक ने कहा, नहीं, मैंने नहीं सीखी। कटाक्ष के साथ, व्याकरण के प्रोफेसर ने कहा, तब तो तुमने अपनी आधी जिंदगी बर्बाद कर दी। नाविक प्रोफेसर के अभद्र वचनों से व्याकुल हो उठा, पर बाहर से शांत रहा। थोड़ी ही देर में अचानक नाव

एक भंवर में फंस गई और नाविक उसे किसी भी प्रकार बाहर नहीं निकाल पाया। इस भय के साथ कि नाव डूब जाएगी, नाविक उफनती लहरों के शोर में चिल्लाया, प्रोफेसर साहब, तुम्हें तैरना आता है? व्याकरण के प्रोफेसर ने तिरस्कार से उत्तर दिया, नहीं। मुझसे तैरना जानने की उम्मीद मत रखो। मैंने ऐसे बेकार के कामों में समय खराब नहीं किया है। नाविक ने उसे बताया, अच्छा। अब यह नाव भंवर की लहरों में डूबने जा रही है और तुमने तैरना न सीखकर अपनी पूरी जिंदगी बर्बाद कर दी है, क्यांकि अब तुम डूबनेवाले हो। यह हमें इस बात पर विचार करने को कहती है कि हम अपनी जिंदगी कैसे बिताते हैं और हम किसे महत्व देते हैं?

प्रोफेसर को अपनी बुद्धिमत्ता पर बहुत घमंड था, पर जब तैरने के व्यावहारिक अनुभव की बात आई तो उसके बौद्धिक ज्ञान ने उसकी कोई मदद नहीं की। तैरने जैसे व्यावहारिक ज्ञान को उसने महत्व नहीं दिया था। वह अपनी व्याकरण की पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त था और उसने कभी महसूस नहीं किया था कि जीवन में कभी उसे कुछ और सीखने की जरूरत पड़ेगी। हममें से ज्यादातर उसी नाव में हैं। हम अपना जीवन भौतिक और बौद्धिक लक्ष्य पाने में लगा देते हैं।

१३११) दूसरों की देखा-देखी न करें - एक कछुआ यह सोचकर बड़ा दुखी रहता था कि पक्षी बड़ी आसानी से आकाश में उड़ सकते हैं, परंतु मैं नहीं उड़ पाता वह मन ही मन सोच-विचार कर इस नतीजे पर पहुंचा कि यदि कोई मुझे एक बार भी आकाश में पहुंचा दे, तो फिर मैं भी पक्षियों के समान ही उड़ते हुए सैर करूंगा। उसने एक गरुड़ पक्षी के पास जाकर कहा अगर आप दया करके मुझे एक बार आकाश में पहुंचा दो, तो मैं समुद्र के नीचे पड़े सारे रत्न निकाल कर आपको दे दूंगा।

मुझे आकाश में उड़ते हुए सैर करने की बड़ी इच्छा हो रही है। कछुए की प्रार्थना सुनकर गरुड़ बोला तुम जो चाहते हो उसका पूरा होना असंभव है। जमीन पर चलनेवाला प्राणी कभी आकाश में नहीं उड़ सकता। तुम अपनी यह कामना त्याग दो। यदि मैं तुम्हें आकाश में पहुंचा भी दूं तो तुम उसी समय गिर जाओगे और हो सकता है इससे तुम्हारी मौत भी हो जाए परंतु कछुआ नहीं माना, उसने कहा बस एक बार आप मुझे ऊपर पहुंचा दो, मैं उड़ सकूंगा और उड़ूंगा, अगर नहीं उड़ सका तो गिरकर मर जाऊंगा। इसके लिए आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। इस प्रकार कछुआ गरुड़ से बार-बार अनुरोध करने लगा। तब गरुड़ ने हंसकर कछुए को उठा लिया और उसे काफी ऊंचाई पर पहुंचा दिया। उसके बाद गरुड़ ने कछुए को छोड़ दिया। उसके छोड़ते ही कछुआ एक पहाड़ी पर जा गिरा और गिरते ही उसके प्राण चले गए। इसलिए कहा गया है कि आदमी को अपनी क्षमता के अनुसार ही इच्छा रखनी चाहिए, नहीं तो बहुत दु:ख उठाने पड़ सकते हैं।

१३१२) खुद भी प्रशंसा के पात्र बनो - बात उस समय की है जब क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर किशोरवय के थे। सचिन उन दिनों शारदाश्रम स्कूल की जूनियर टीम में खेला करते थे। उनके साथ १२ वर्ष की उम्र में एक घटना हुई, जिसने उनकी सोच को परिवर्तित करके रख दिया। उनके गुरु आचरेकर ने उन्हें एक दूसरे स्कूल में अभ्यास करने के लिए कहा। लेकिन सचिन अपने गुरु की बात न मानकर अपने स्कूल की सीनियर टीम का मैच देखने चले गए। शाम को जब उनकी मुलाकात गुरु आचरेकर से हुई तो उन्होंने उनसे उनके उस दिन के प्रदर्शन के बारे में पूछा और कहा कि आज तुमने कितने रन बनाए? इस पर सचिन ने उन्हें बताया कि वह मैच खेलने नहीं गए थे, बल्कि वह तो सीनियर

टीम का हौसला बढ़ाने के लिए ताली बजा रहे थे। गुरु आचरेकर सचिन पर बहुत क्रोधित हुए। फिर उन्होंने कहा, तुम्हें दूसरे के लिए तालियां बजानी है या खुद भी उस लायक बनना है? तुम खेलो और इस तरह खेलों की दुनिया तुम्हारे लिए तालियां बजाते न थके। इस तरह गुरु की एक प्रतिक्रिया ने सचिन की पूरी जिंदगी बदल कर रख दी और उन्होंने अपने गुरु का सपना भी सच कर दिखाया था।

१३१३) आइंस्टीन के ड्राइवर की हाजिर जवाबी - अल्बर्ट आइंस्टीन हमेशा एक वक्ता के रूप में अलग-अलग नगरों में जाया करते थे। एक बार की बात है, वे किसी सम्मेलन में भाषण देकर आ रहे थे। उन्होंने अपने वाहन चालक को ये बात बताई कि वे इस तरह के सम्मेलन में भाषण दे-देकर थक चुके हैं। उनका वाहन चालक जो कि रूप और अंदाज में उनसे मिलता-जुलता था, ने आइंस्टीन से कहा, क्यूं न मैं आपके स्थान पर भाषण दिया करूं। वैसे भी मैं दिखने में आपके जैसा ही हूं। इसलिए कोई पहचान भी नहीं पाएगा और आपका काम हो जाएगा। वैसे भी मैंने आपको कई बार बोलते हुए सुना भी है। आइंस्टीन ड्राइवर की बातों पर जोर से हंसे और उन्होंने कहा- अच्छा ठीक है कल मेरी जगह तुम भाषण देना। अगले दिन वे सम्मेलन में गए तो आइंस्टीन ने वाहन चालक की कमीज, टोपी पहनी और कमरे के कोने में स्टूल पर बैठ गए। वाहन चालक ने अच्छा भाषण दिया और कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए। वहां बैठे सभी लोग पढ़े-लिखे, बड़े-बड़े प्रोफेसर थे और सभी सयाने थे, सब जानते थे कि ये आइंस्टीन नहीं, बल्कि उनका वाहन चालक है। उनमें से एक प्रोफेसर ने वाहन चालक की टांग खींचने के उद्देश्य से एक बड़ा ही मुश्किल सवाल पूछ डाला।

वाहन चालक ने थोड़ी देर तक प्रोफेसर को घूरा और कहा, ये तो सभी जानते हैं। इस प्रश्न का उत्तर देना मेरे सम्मान और ज्ञान के खिलाफ है, लेकिन फिर भी जब आपने पूछ ही लिया है तो वहां किनारे बैठा मेरा वाहन चालक इसका उत्तर देगा। सब लोग हतप्रभ थे। आइंस्टीन तो आइंस्टीन उनके वाहन चालक भी कम हाजिर जवाब न थे। ये है संगति का असर। हम जिसके साथ रहते हैं, उनसे जाने-अनजाने हम बहुत कुछ सीख लेते हैं। अच्छे लोगों की संगत करें।

१३१४) दिल से जिओ - एक बार एक मछुआरा समुद्र किनारे आराम से छांव में बैठकर शांति से बैठा था। अचानक एक व्यापारी वहां से गुजरा और उसने मछुआरे से पूछा- तुम काम करने के बजाय आराम क्यों फरमा रहे हो? इस पर गरीब मछुआरे ने कहा- मैं आज के लिए पर्याप्त मछलियाँ पकड़ चुका हूं।

यह सुनकर व्यापारी गुस्से में आकर बोला- यहां बैठकर समय बर्बाद करने से बेहतर है कि तुम क्यों ना और मछलियाँ पकड़ो। मछुआरे ने पूछा- और मछलियाँ पकड़ने से क्या होगा? व्यापारी - उन्हें बेचकर तुम और ज्यादा पैसे कमा सकते हो और एक बड़ी बोट भी ले सकते हो। मछुआरा- उससे क्या होगा? व्यापारी - उससे तुम समुद्र में और दूर तक जाकर और मछलियाँ पकड़ सकते हो और ज्यादा पैसे कमा सकते हो।

मछुआरा- उससे क्या होगा? बिजनेसमैन- उससे तुम मेरी तरह अमीर व्यापारी बन जाओगे। मछुआरा- उससे क्या होगा? व्यापारी- अरे बेवकूफ, उससे तू अपना जीवन शांति से व्यतीत कर सकेगा।

मछुआरा- तो आपको क्या लगता है, अभी मैं क्या कर रहा हूँ? व्यापारी कोई जवाब नहीं दे सकता।

जीवन का आनंद लेने के लिए कल का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं और ना ही सुख और शांति के लिए और

अधिक धनवान बनने की आवश्यकता है। जो इस क्षण है, वही जीवन है। दिल से जिओ।

१३१५) और बाघ फिर जंगल की ओर लौट गया - एक कुत्ते और बाघ की आपस में दोस्ती हो गई। कुत्ता काफी मोटा-ताजा था और बाघ दुबला-पतला सा था। एक दिन बाघ ने कुत्ते से कहा- भाई एक बात बताओ तुम कैसे इतने मोटे-तगड़े हो गए। तुम प्रतिदिन क्या खाते हो और कैसे उसकी प्राप्ति करते हो? मैं तो दिन-रात भोजन की खोज में घूमकर भरपेट खा नहीं पाता किसी-किसी दिन तो मुझे उपवास भी करना पड़ता है। भोजन के कष्ट के कारण ही मैं इतना कमजोर हूं।

कुत्ते ने कहा मैं जो करता हूं। तुम भी अगर वैसा ही कर सको तो तुम्हें भी मेरे जैसा भोजन मिल जाएगा। बाघ ने पूछा तुम्हें करना क्या पड़ता है, जरा बताओ तो सही। कुत्ते ने कहा कुछ नहीं रात को मालिक के मकान की रखवाली करनी पड़ती है। बाघ बोला बस इतना ही। इतना तो मैं भी कर सकता हूं। मैं भोजन की तलाश में वन-वन भटकता हुआ धूप तथा वर्षा से बड़ा कष्ट पाता हूं। अब और सहा नहीं जाता। यदि धूप और वर्षा के समय घर में रहने को मिले और भूख के समय भर पेट खाने को मिले तब तो मेरे प्राण बच जाएंगे। बाघ की दुख भरी बातें सुनकर कुत्ते ने कहा- तो फिर मेरे साथ आओ मैं मालिक से कहकर तुम्हारे लिए सारी व्यवस्था करा देता हूं। बाघ कुत्ते के साथ चल पड़ा। थोड़ देर चलने के बाद बाघ को कुत्ते की गर्दन पर एक दाग दिखाई पड़ा। यह देखकर बाघ ने कुत्ते से पूछा भाई तुम्हारी गर्दन पर यह कैसा दाग है? कुत्ता बोला अरे वह कुछ भी नहीं है। बाघ ने कहा नहीं भाई मुझे बताओ, मुझे जानने की बड़ी इच्छा हो रही है। कुत्ता बोला गर्दन में कुछ भी नहीं है। लगता है पट्टे का दाग लगा होगा। बाघ ने कहा पट्टा क्यों? कुत्ते ने कहा- पट्टे में जंजीर फंसा कर पूरा दिन मुझे बांध कर रखा जाता है। यह सुनकर बाघ विस्मित होकर कह उठा- जंजीर से बांध कर रखा जाता है? तब तो तुम अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं कर सकते। कुत्ता बोला ऐसी बात नहीं है। दिन के समय भले ही बंधा रहता हूं, परंतु रात के समय जब मुझे छोड़ दिया जाता है, तब मैं जहां चाहे खुशी से जा सकता हूं। इसके अतिरिक्त मालिक के नौकर मेरी देखभाल करते हैं, अच्छा खाना देते हैं। मालिक भी स्नेहपूर्वक मेरे शरीर पर हाथ फेर दिया करते हैं। जरा सोचो तो मैं कितने सुख में रहता हूं। बाघ ने कहा भाई तुम्हारा सुख तुम्हीं को मुबारक हो, मुझे ऐसे सुख की जरूरत नहीं है। अत्यंत पराधीन होकर राजसुख भोगने की अपेक्षा स्वाधीन रह कर भूख का कष्ट उठाना अच्छा है। मैं अब तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा यह कहकर बाघ फिर जंगल की तरफ लौट गया।

१३१६) भिखारी से भीख मांगी राजा ने - एक भिखारी भीख मांगने निकला। उसका सोचना था कि जो कुछ भी मिल जाए, उस पर अधिकार कर लेना चाहिए। एक दिन वह राजपथ पर बढ़ा जा रहा था। एक घर से उसे कुछ अनाज मिला। वह आगे बढ़ा और मुख्य मार्ग पर आ गया। अचानक उसने देखा कि नगर का राजा रथ पर सवार होकर उस ओर आ रहा है। वह सवारी देखने के लिए खड़ा हो गया, लेकिन यह क्या? राजा की सवारी उसके पास आकर रुक गई। राजा रथ से उतरा और भिखारी के सामने हाथ पसारकर बोला- मुझे कुछ भीख दो। देश पर संकट आनेवाला है और पंडितों ने बताया है कि आज मार्ग में जो पहला भिखारी मिले, उससे भीख मांगें तो संकट टल जाएगा। इसलिए मना मत करना। भिखारी हक्का-बक्का रह गया। राजा, देश के संकट को टालने के लिए उससे

भीख मांग रहा है। भिखारी ने झोली में हाथ डाला, तो उसकी मुट्ठी अनाज से भर गई। उसने सोचा इतना नहीं दूंगा। उसने मुट्ठी थोड़ी ढीली की और अनाज के कुछ दाने भरे। किंतु फिर सोचा कि इतना भी दूंगा तो मेरा क्या होगा? भिखारी घर पहुंचकर पत्नी से बोला- आज तो अनर्थ हो गया। मुझे भीख देनी पड़ी। पर न देता तो क्या करता। पत्नी ने झोली को उल्टा किया तो उसमें एक सोने का सिक्का निकला। यह देखकर भिखारी पछताकर बोला- मैंने राजा को सभी कुछ क्यों न दिया? यदि मैंने ऐसा किया होता तो आज मेरी जीवन भर की गरीबी मिट जाती। इस प्रतीकात्मक कथा का संकेत यह है कि दान देने से संपन्नता हजार गुना बढ़ती है। यदि हम हृदय की सारी उदारता से दान करें, तो प्रतिफल में दीर्घ लाभ की प्राप्ति होती है।

१३१७) जूते का लालच - दीनानाथ गरीब चरवाहा था। वह रोज सुबह भेड़-बकरियों को चराने पहाड़ों की ढलान पर जाया करता था। सर्दी के दिन थे और उस बेचारे के पास पहनने के लिए जूते तक नहीं थे। एक दिन जब वह भेड़ों को चरा रहा था कि अचानक एक गाड़ी उसके करीब आकर ठहर गई। उसमें से एक चोर निकला, जो कई बार जेल की सजा काट चुका था। वह दीनानाथ से बोला, तुम मेरे साथ काम करोगे? यदि करो तो मैं तुम्हें बढ़िया जूते खरीद दूं। तुम्हें अपने भोजन और कपड़ों की भी चिंता नहीं करनी पड़ेगी। यह सुनकर दीनानाथ कहा, मुझे नंगे पांव रहना मंजूर है, पर धोखाधड़ी और चालाकी से कमाए पैसों का सुख मुझे नहीं चाहिए। ईमानदारी की सूखी रोटी बेईमानी से कमाई गई घी चुपड़ी रोटी से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं।

१३१८) लड़कों की जिद - मक्के के खेत के करीब एक जंगल में दो लड़कों ने तीतर का एक घोंसला देखा। किसी तरह वह घोंसला उनके कब्जे में आ गया, जिसमें मादा तीतर अपने अंडों सहित बैठी थी।

बड़े वाले लड़के ने कहा, तुम अंडे ले लो, मैं तीतर रखता हूं। दोनों का मूल्य बराबर ही है। जैसा कि तुम कह रहे हो, अगर यह सच है तो तुम अंडे ले लो, मैं तीतर लूंगा। छोटे वाले लड़के ने जवाब दिया। उनका तर्क-वितर्क लगातार चलता रहा और वे अपनी अपनी जिद पर डटे रहे। अंत में उनकी इस तू-तू, मैं-मैं में अंडे गिरकर फूट गए और तीतर उड़ गई। दोनों हाथ मलते रह गए। लालच का अंत बुरा होता है।

१३१९) जिन्दगी का कड़वा सच - एक भिखारी था। वह न ठीक से खाता था, न पीता था, जिस वजह से उसका बूढ़ा शरीर सूखकर कांटा हो गया था। उसकी एक-एक हड्डी गिनी जा सकती थी। उसकी आंखों की ज्योति चली गई थीं उसे कोढ़ हो गया था। बेचारा रास्ते के एक ओर बैठकर गिड़गिड़ाते हुए भीख मांगा करता था। एक युवक उस रास्ते से रोज निकलता था। भिखारी को देखकर उसे बड़ा बुरा लगता। उसका मन बहुत ही दुखी होता। वह सोचता, वह क्यों भीख मांगता है? जीने से उसे मोह क्यों है? भगवान उसे उठा क्यों नहीं लेते? एक दिन उससे न रहा गया। वह भिखारी के पास गया और बोला- बाबा, तुम्हारी ऐसी हालत हो गई है फिर भी तुम जीना चाहते हो? तुम भीख मांगते हो, पर ईश्वर से यह प्रार्थना क्यों नहीं करते कि वह तुम्हें अपने पास बुला ले? भिखारी ने मुंह खोला- भैया, तुम जो कह रहे हो, वही बात मेरे मन में भी उठती है। मैं भगवान से बराबर प्रार्थना करता हूं, पर वह मेरी सुनता ही नहीं। शायद वह चाहता है कि मैं इस धरती पर रहूं, जिससे दुनिया के लोग मुझे देखें और समझें कि एक दिन मैं भी उनकी ही तरह

था, लेकिन वह दिन भी आ सकता है जब वे मेरी तरह हो सकते हैं। इसलिए किसी को घमंड नहीं करना चाहिए। लड़का भिखारी की ओर देखता रह गया। उसने जो कहा था, उसमें कितनी बड़ी सच्चाई समाई हुई थी। यह जिन्दगी का कड़वा सच था, जिसे माननेवाले प्रभु की सीख भी मानते हैं।

१३२०) धर्म साधना - एक व्यक्ति ने किसी साधु से कहा, मेरी पत्नी धर्म साधना में श्रद्धा नहीं रखती। यदि आप उसे थोड़ा समझा दें तो बड़ा अच्छा हो। साधु बोले, ठीक है। अगले दिन सवेरे ही वह साधु उसके घर गया। पति वहां नहीं थे। उसने उसके संबंध में पत्नी से पूछा। पत्नी ने कहा, जहां तक मैं समझती हूं, वह इस समय मोची की दुकान पर झगड़ा कर रहे हैं। पति पास के पूजाघर में माला फेर रहा था। उसने पत्नी की बात सुनी। उससे यह झूठ सहा नहीं गया। बाहर आकर बोला, यह बिल्कुल गलत है। मैं पूजाघर में था। साधु हैरान हो गया। पत्नी ने यह देखा तो पूछा, सच बताओ कि क्या तुम पूजाघर में थे? क्या तुम्हारा शरीर पूजाघर में, माला हाथ में और मन और कहीं नहीं था। पति को होश आया। पत्नी ठीक कह रही थी। माला फेरते-फेरते वह सचमुच मोची की दुकान पर ही चला गया था। उसे जूते खरीदने थे और रात को ही उसने अपनी पत्नी से कहा था कि सवेरा होते ही खरीदने जाऊंगा। माला फेरते-फेरते वास्तव में उसका मन उसी दुकान पर पहुंच गया था और मोची से जूते के मोल-तोल पर कुछ झगड़ा हो रहा तो तुम जहां हो, वहीं प्रभु का आगमन हो जाता है।

१३२१) चतुर मेमना - मेमने की आवाज कुत्तों के कानों में पड़ गई, कुत्ते समझ गए की छोटा मेमना जंगल में चला गया है वे दौड़ते हुए जंगल में पहुंच गए। बहुत समय पहले की बात है, एक जंगल के किनारे घास के मैदान में एक बकरियों का झुंड रहा करता था। इन बकरियों के झुंड की रखवाली के लिए दो दर्जन कुत्ते हुआ करते थे। बकरियां कभी भी जंगल के अंदर हरी घास खाने नहीं जाती थीं। जंगल के बीच में कई शिकारी जानवर रहते थे। जिनसे बकरियों को हमेशा खतरा बना रहता था। बकरियां मैदान के नजदीक ही चर कर अपना पेट भर लेती थीं। बकरियां अपने मेमनों को भी जंगल के बीच में जाने से रोकती रहती थी और समझाती रहती थी कि अगर वे जंगल में जाएंगे तो उनकी जान को खतरा हो सकता है। एक दिन छोटा सा मेमना हरी और मीठी घास खाते-खाते जंगल के बीच में चला गया। जैसे ही वह जंगल में गया एक भेड़िए ने उसे देख लिया। भेड़िए ने अपने मन में सोचा आज के भोजन का इंतजाम हो गया है। इतना सोचते ही दुष्ट भेड़िया मेमने के सामने कूद पड़ा।

वह अपने बड़े बड़े नुकीले दांत भींचकर बोला तुम्हें मालूम है तुम्हें इस तरह यहां घूमना नहीं चाहिए। भेड़िए को देखकर मेमना डर गया और भय के मारे कांपने लगा परंतु उसने धैर्य के साथ कहा मुझे मालूम है इस तरह घूमकर मैं बड़ी शरारत कर रहा हूं। यह सुनकर भेड़िया उस पर जोर से हंस पड़ा और जोर से बोला अब तुम शरारती बने हो तुम्हें दंड मिलना चाहिए। मैं तुम्हें दंड दूंगा। तुम्हें खाकर अपना भोजन पूरा करूंगा। मेमना बड़ा भयभीत हुआ।

उसने अपनी रक्षा करना जरूरी समझा। इसलिए उसने एक उपाय सोचा। उसे भेड़िए से प्रार्थना की कि क्या आप मेरी अंतिम इच्छा पूरी नहीं करोगे। भेड़िए ने कहा हां हां इससे मुझे कोई हानि नहीं होगी। मेमने ने कहा हे दयालु भेड़िये क्या आप मेरे लिए एक गाना नहीं गाओगे। इस बात से भेड़िया बहुत खुश हुआ और जोर-जोर से गाने लगा। गाने की आवाज

कुत्तों के कानों में पड़ गई, कुत्ते समझ गए की छोटा मेमना जंगल में चला गया है। वे दौड़ते हुए जंगल में पहुंच गए। मेमने को ठीक ठाक देखते ही कुत्ते भेड़िए पर टूट पड़े। कुत्ते उसके टुकड़े-टुकड़े कर देते पर भेड़िए ने बड़ी मुश्किल से भाग कर अपनी जान बचाई। मेमने ने कुत्तों से बोला मुझै बचाने के लिए धन्यवाद। वह अपनी माँ के पास दौड़ता हुआ गया और कहने लगा मैं आगे से इस तरह भटकता हुआ कभी नहीं जाऊंगा। हमेशा अपने बुजुर्गों की बातों को मान लिया करूंगा। इसलिए हमें अपने बुजुर्गों की बातें हमेशा मान लेनी चाहिए।

१३२२) देश की मिट्टी - वह रोज भीख मांग कर अपना गुजारा चलाता था। एक दिन वह शहर के नामी व्यापारी के दर पर पहुंचा और बोला मैंने आपकी बुद्धि और दया के किस्से सुने हैं। इसी आशा से आपके पास आया हूं। व्यापारी बोला, बाबा मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं? भिखारी बोला, ऐ मालिक आप इस पूरी धरती में जिसे सबसे ज्यादा अनमोल समझते हैं, उसे मेरे कटोरे में डाल दीजिए। वह व्यक्ति सोचने लगा, ऐसी कौनसी चीज है, जो मेरे लिए अनमोल है। उसने सोचा बाबा को पैसे की जरूरत है, इसलिए ऐसा बोल रहे हैं। इसलिए उसने उनका कटोरा नोटों से भर दिया। भिखारी हंस पड़ा, तेरी बुद्धिमानी के जितने किस्से सुने थे, सब झूठ थे। व्यापारी चिंतित हो गया, बोला, बाबा, आप मुझे बताएं कि सबसे अनमोल चीज क्या है? अब बूढ़ा भिखारी हंसते हुए बोला, अरे हम सबके लिए धरती मां की मिट्टी बड़ी अनमोल है, जिसका कोई मोल नहीं है। व्यापारी बोला, बाबा, आज मुझे आपने सही सीख दी है। अब मैं भी देश की मिट्टी के लिए काम करूंगा।

१३२३) उत्सव से संगठन - आजादी के पहले की बात है। उन दिनों बंगाल के गांवों में लोग दुर्गा पूजा की तैयारियों में महीनों पहले लग जाते थे। विभिन्न व्यवसाय से जुड़े लोग भी इसकी तैयारी में जुट जाते थे, जिससे सभी को कुछ न कुछ काम मिल जाता था। किंतु सुभाषचंद्र बोस ने देखा कि समय बीतने के साथ-साथ अब उन धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन उतने जोर-शोर से नहीं किया जा रहा है। अब लोगों ने गांवों से शहरों की ओर पलायन करना शुरू कर दिया। इस तरह त्योहारों व धार्मिक आयोजनों का प्रचलन भी कम होता चला गया।

सुभाष ने अपने मित्रों के साथ धार्मिक आयोजनों के बारे में बातचीत की और बोले, मुझे लगता है कि हमें धार्मिक पर्वों को महत्व देना चाहिए और इन्हें फिर से धूमधाम से मनाने की शुरुआत करनी चाहिए। ऐसा करने से लोगों में सामुदायिक विकास एवं सौहार्द्र की भावना विकसित होगी। सुभाष के एक मित्र ने उनका समर्थन किया, तुम्हारा कहना बिल्कुल ठीक है। लोगों का ध्यान भी व्यर्थ की बातों से मुक्त होगा। वे कुछ समय भजन-कीर्तन और उत्सव में बिताएंगे तो उनका तनाव भी कम होगा। सुभाष बोले, मैंने एक पुस्तक में उत्सव के संदर्भ में पढ़ा है। उसमें लेखक ने लिखा है- उत्सव व्यक्ति को अपने जीवन के मूल्यांकन का अवसर प्रदान करते हैं। यदि हर कार्य को उत्सव का रूप देने का प्रयास किया जाए तो हमारा मन उत्साहित रहता है। इसलिए कभी भी विपरीत परिस्थितियों से घराबकर उत्सव के आयोजन को स्थगित नहीं करना चाहिए। आज अंग्रेजों के डर से लोग अपने पर्व तक मनाने से डरने लगे हैं। इस प्रकार सुभाष के प्रयासों से सन १९१७ में एक पूजा का आयोजन किया गया। इसके बाद कई वर्षों तक धूमधाम से यह पूजा मनाई जाती रही। पलायन करनेवाले लोग भी पूजा के समय गांवों की ओर लौटने लगे। सुभाष लोगों को संगठित करना जानते थे।

१३२४) उपन्यास रोबिन्सन क्रूसो एक साहसी व्यक्ति की कहानी - डेनाइल डेफो द्वारा लिखा गया रोबिन्सन क्रूसो एक अत्यंत प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें एक व्यक्ति द्वारा कई वर्षों तक एक टापू पर रहने के प्रयास का चित्रण किया गया है। इस कहानी में बताया गया है कि रोबिन्सन अपने साथी मैन फ्राइडे के साथ लगातार कई वर्षों तक एक टापू पर रहा था। १७१९ में प्रकाशित यह उपन्यास स्काटलैंड के एक नाविक अलैग्जैंडर सेलक्रिक के जीवन की सच्ची कहानी पर आधारित है। समुद्र में अपने जहाज के क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण अलैग्जैंडर को चिली के तट पर स्थित एक टापू पर अकेले ही रहना पड़ा था। वह इस टापू पर लगभग तीन-चार वर्षों तक रहा था तथा बंद में इसे एक ब्रिटिश कप्तान ने वहां से सुरक्षित निकाला था। इस ब्रिटिश कप्तान ने अलैग्जैंडर के इस साहसिक कार्य के बारे में लिखा था, बाद में डेफो ने इस पर एक उपन्यास लिख दिया।

१३२५) खुश रहना बहुत कठिन नहीं - एक संत से एक युवक ने पूछा- गुरुदेव, हमेशा खुश रहने का कोई उपाय हो तो बताएं। संत बोले- बिल्कुल है, आज तुमको वह राज बताता हूं। संत उस युवक को अपने साथ सैर को ले चले, अच्छी बातें करते रहे, युवक बड़ा आनंदित था।

एक स्थान पर ठहर कर संत ने उस युवक को एक बड़ा पत्थर देकर कहा- इसे उठाए साथ चलो। पत्थर को उठाकर वह युवक संत के साथ-साथ चलने लगा। कुछ समय तक तो आराम से चला, लेकिन थोड़ी देर में हाथ में दर्द होने लगा, पर दर्द सहन करता चुपचाप चलता रहा। संत पहले की तरह मधुर उपदेश देते चल रहे थे, लेकिन युवक का धैर्य जवाब देने लगा। उस युवक ने कहा- गुरुजी, आपके प्रवचन मुझे प्रिय नहीं लग रहे, भारी पत्थर को उठाए मेरा हाथ दर्द से फटा जा रहा है। पत्थर रखने का संकेत मिला तो उस युवक ने पत्थर को फेंक दिया और कुछ राहत महसूस की। साथ ही आनंद में भरकर गहरी सांस लेने लगा।

संत ने कहा- यही है खुश रहने का राज। मेरे प्रवचन तुम्हें तभी आनंदित करते रहे जब तुम बोझ से मुक्त थे, परंतु पत्थर के बोझ ने उस आनंद को छीन लिया। जैसे पत्थर को ज्यादा देर उठाए रखने से दर्द बढ़ता जाएगा, उसी तरह हम दुखों या किसी की कही कड़वी बात के बोझ को जितनी देर तक उठाए रखेंगे उतना ही दु:ख और कष्ट होगा। साथ खुशी जीवन से बहुत दूर चली जाएगी। अगर खुश रहना चाहते हो तो दु:ख रूपी पत्थर को जल्दी से जल्दी नीचे रखना सीख लो और हो सके तो उसे उठाओ ही नहीं।

१३२६) बर्तन जन्म भी दे सकते हैं - एक शाम मुल्ला नसरुद्दीन रसोई में कुछ बना रहा था। तभी उसे एक अन्य बरतन की आवश्यकता महसूस हुई। लेकिन उसके पास बरतन न होने के कारण वह पड़ोसी के पास गया। उससे एक बरतन मांगा और वादा किया कि अगले दिन वह बरतन लौटा देगा।

दूसरे दिन मुल्ला पड़ोसी के घर बरतन लौटाने गया। पड़ोसी ने देखा कि उसने बरतन के भीतर वैसा ही एक छोटा बरतन और रखा हुआ है। पड़ोसी ने पूछा- भई मुल्ला, यह छोटा बरतन किसलिए? मुल्ला ने कहा- तुम्हारे बरतन ने रात को इस छोटे बरतन को जन्म दिया था, इसलिए मैं तुम्हें दो बरतन लौटा रहा हूं। पड़ोसी को यह सुनकर बहुत खुशी हुई और उसने वे दोनों बरतन मुल्ला से ले लिए। दो-तीन दिन बाद मुल्ला दोबारा पड़ोसी के घर बरतन मांगने गया। इस बार उसने बड़ा

बरतन मांगा। पड़ोसी ने खुशी खुशी मुल्ला को बरतन दे दिया और अगले दिन का इंतजार करने लगा।

एक हफ्ता गुजर गया लेकिन मुल्ला बरतन वापस करने नहीं आया। एक दिन पड़ोसी और मुल्ला बाजार में टकरा गए। पड़ोसी ने मुल्ला से पूछा- मेरा बरतन कहां है? मुल्ला ने कहा- वह तो मर गया। पड़ोसी ने हैरत से पूछा- ऐसा कैसे हो सकता है? बरतन भी कभी मरते हैं। मुल्ला बोला- क्यों भाई अगर बरतन जन्म दे सकते हैं, तो मर क्यों नहीं सकते? मुल्ला की बात सुनकर पड़ोसी समझ गया कि अब उसका बरतन कभी वापस नहीं आनेवाला।

१३२७) हम भागे तो कभी सुधार नहीं होगा - कुरु जनपद की रानी बुद्ध को पसंद नहीं करती थी। जब उसे पता चला कि बुद्ध उसके इलाके में आ रहे हैं, तो उसने नौकर-चाकरों को आज्ञा दी कि वे उनका विभिन्न प्रकार से अनादर करें। बुद्ध के प्रवेश करते ही लोगों ने उन्हें उलटा-सीधा कहना शुरू किया। कोई उन्हें देखकर हंसने लगा, तो कोई गालियां बकने लगा, पर बुद्ध शांत रहे। लेकिन उनके शिष्य घबरा गए। उनके लिए यह सबसे खराब और बड़ा ही विचित्र अनुभव था। आज तक उन्हें हर जगह स्नेह और सत्कार ही मिला था। ऐसा व्यवहार किसी ने नहीं किया था। वे इसका रहस्य नहीं समझ पा रहे थे।

बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद से रहा न गया। उसने कहा भंते, हमें यहां से चले जाना चाहिए।

बुद्ध ने पूछा - कहां जाना चाहते हो? आनंद ने उत्तर दिया- किसी दूसरे क्षैत्र में, जहां कोई हमें अपशब्द न कहे।

इस पर बुद्ध बोले- वहां भी यदि कोई दुर्व्यवहार करे, तो?

इस पर आनंद ने जवाब दिया- किसी और स्थान को चले जाएंगे। बुद्ध ने कहा- तो हम कब तक भागते रहेंगे?

जहां गलत व्यवहार हो रहा हो, उस स्थान को तब तक नहीं छोड़ना चाहिए, जब तक वहां सामान्य स्थिति न आ जाए। क्या तुमने यह नहीं देखा कि मेरा व्यवहार संग्राम में बढ़ते हुए हाथी की तरह होता है? जिस प्रकार हाथी चारों ओर के तीरों को सहता रहता है, उसी तरह हमें दुष्ट पुरुषों के अपशब्दों को सहन करते रहना चाहिए। देखना एक दिन वे थक जाएंगे।

स्वयं उन्हें लगेगा कि वे गलत कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य उन्हें सही रास्ते पर लाना है, उनसे भागते-फिरना नहीं। अगर हम भागे, तो उनमें कभी सुधार नहीं होगा। और बुद्ध सही निकले। धीरे-धीरे वहां के लोगों को समझ आ गया कि वे एक महान आत्मा से दुर्व्यवहार कर कितना बड़ा अपराध करते रहे हैं।

१३२८) चिराग, अनुराग और पतंगबाजी - आज की क्लास में बनर्जी सर ने सारे विद्यार्थियों को एक यादगार पाठ पढ़ाया। आते ही उन्होंने विद्यार्थियों से पूछा, आपको कैसा लगेगा, अगर आपका हाथ या पैर या शरीर का कोई भी हिस्सा कट जाए? सारे विद्यार्थी यह सवाल सुनकर सन्न रह गए। बनर्जी सर बोले, चलो, इस एक कहानी से समझते हैं। मेरा एक रिश्तेदार है, जिसका नाम है चिराग। एक दिन चिराग दादी मां के साथ छत पर था। रविवार का दिन था, चिराग आराम से सोकर उठा था। सुबह से चिराग की मां उसे नहाने के लिए बोल रही थी। लेकिन चिराग को कोई जल्दी नहीं थी। चिराग पढ़ने-लिखने में बहुत तेज था। उसका दिमाग इतना तेज था कि हर कोई उसे देखकर कहता था कि यह एक दिन जरूर सबका नाम रोशन करेगा। तभी उसके बड़े भाई अनुराग ने चिराग को पतंगबाजी की चुनौती दी। चिराग की यह खासियत थी कि वह जो काम अपने हाथ में लेता था, उसे बड़ी लगन से पूरा करता था। लेकिन यही उसकी एक कमजोरी भी थी।

वह एक काम करता था, तो अपनी सारी ऊर्जा उसी पर केंद्रित कर देता था और बाकी सारे काम भूल जाता था।

दादी मां ने चिराग से कहा, बेटा पहले नहा लो, कुछ खा लो, फिर पतंग उड़ा लेना। लेकिन चिराग ने उनकी नहीं सुनी। अनुराग नहा-धोकर खा-पीकर आया था। अनुराग और चिराग की पतंगबाजी शुरू हो गई। पहले एक मुकाबला, फिर दूसरा, फिर तीसरा और इस तरह कई घंटे बीत गए। चिराग की मां खाने के लिए लगातार बुलाती रहीं, लेकिन चिराग अपनी धुन में मस्त रहा। गरमी के दिन थे और सूरज आसमान पर चढ़ गया था। कड़ी धूप में कई घंटे रहने की वजह से चिराग को प्यास लगी। वह अनुराग की पतंग काटने ही वाला था कि उसके हाथ से डोर छुट गई। अनुराग ने चिराग की पतंग काट दी और खुशी से चिल्लाने लगा। तभी दादी की नजर चिराग पर पड़ी, जो गरमी की वजह से बेहोश होकर जमीन पर गिर गया था। इतना किस्सा सुनाने के बाद बनर्जी सर बोले, इस कहानी से मैं सिर्फ यह बताना चाह रहा हूं कि जैसे हमारे शरीर के सारे अंग बहुत महत्वपूर्ण हैं, उसी तरह से हमारी जिंदगी के सारे पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमारी सेहत, हमारा परिवार, हमारे दोस्त और रिश्तेदार आदि भी हमारी जिंदगी का बहुत अहम हिस्सा हैं। किसी एक पर केंद्रित होकर हमें बाकी आयामों को नजरअंदाज कभी नहीं करना चाहिए। जिंदगी के कई पहलू होते हैं। किसी एक पहलू को ही जिंदगी नहीं माननी चाहिए।

१३२९) सुख की खोज - एक राजा था। वह बड़ा निडर और उदार था। उसकी प्रजा उसे बहुत चाहती थी। एक दिन राजा एकान्त में बैठा कुछ सोच रहा था। सोचते-सोचते वह गहराई में उतर गया। उसे लगा, इतनी सारी सुख निधि पाकर भी आदमी दु:खी है तो क्यों? एक दिन उसने अपने दरबारियों को आज्ञा दी कि सबसे सुखी और तन्दुरुस्त आदमी को पकड़ कर लाओ। दरबारी और प्रजा हैरान। वे राजा की आज्ञा का पालन करने के लिए बहुतेरे भटके, पर राजा जैसा चाहता था, वैसा एक भी आदमी नहीं मिला। उन्होंने दरबार में आकर राजा से कहा, महाराज, इस धरती पर पूर्ण सुखी और स्वस्थ कोई भी इंसान नहीं है। किसी को कोई दु:ख है तो किसी को कोई। सुनकर राजा स्तब्ध रह गया। फिर बोला, तो क्या मेरे राज्य में सब दुखी और बीमार हैं? इस धरती पर कोई भी सुख नहीं है। नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। जाओ, एक बार फिर खोजो। दरबारी क्या करते, फिर निकले। घूमते-घूमते वे एक निर्जन और वीरान जंगल से गुजरे। देखा, एक संत ध्यान में लीन हैं। वे वहीं जाकर बैठ गए। ध्यान खुलने पर संत ने पूछा, तुम लोग कौन हो? कहां से आए हो? दरबारियों ने कहा, हम राजा की आज्ञा मानकर सबसे सुखी और स्वस्थ प्राणी को खोजने निकले हैं। सुनकर संत बोले, क्या तुम्हें अब तक ऐसा कोई आदमी मिला है? दरबारियों ने कहा, नहीं। इसके बाद साधु उनके साथ राजा के पास गए। राजा संत को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। संत ने कहा, राजन्, तुम व्यर्थ ही परेशान होते हो। क्या तुम्हें पता है कि मनुष्य के हृदय में ही सुख का अपार भंडार भरा पड़ा है? जरा टटोलो तो अपने को। सुख की खोज में जैसे कस्तूरी मृग इधर-उधर भटकता है, वैसे ही तुम भटक रहे हो। सुख के लिए बाहर नहीं, भीतर देखना होता है।

१३३०) तकिया - बाबूजी लेटने चले, फिर वह चिल्लाने की आवाज- ये मेरा तकिया किसने छुआ। और फिर हम दोनों बहनें सहमी सी खड़ी हो जाती- नहीं बाबूजी हमने नहीं छुई। घर की सबसे अच्छी तकिया पर बाबूजी का ही कब्जा था, हालाँकि वो भी थोड़ी गुदड़ी-गुदड़ी हो गई थी। पर हम दोनों बहनों की शादी का खर्च सोचकर बाबूजी नई तकिया लेते

नहीं थे। अब जब बाबूजी को नींद नहीं आती तो सारा दोष बेचारी तकिया को देते। करीने से सहला कर उसके रुई पट्टों को ठीक करते फिर लेटते फिर करवट बदलते। फिर चिल्लाते- जरूर मेरी तकिया को किसी ने छुआ है।

उनका चिल्लाना और अम्मा का रोना- हाय न जाने किस भूतप्रेत का साया हो गया है, मेरी तकिया के पीछे पड़े रहते है। रोज का सिलसिला हो गया है। अब ऐसे नहीं चलेगा, किसी झाड़-फूंक वाले को बुलाना पड़ेगा। बीमारी ज्यादा बढ़ गई तो। हे प्रभु दया करना। पिताजी तकिया के पीछे पड़े रहते थे और माँ भूतप्रेत के। आज जब पिताजी काम से लौटे तो उनके चेहरे पर मुस्कान थी। हमने बहुत दिन बाद उन्हें मुस्कुराते हुए देखा था। फिर भी हम अपनी पढ़ाई में लग गए, फिर से कहीं नाराज ना हो जाएं। बाबूजी के माँ से बात करने के स्वर हमें सुनाई दे रहे थे। वो चहक-चहक कर अम्मा को बता रहे थे- सुनती हो, आज तुम्हारी पूजा सार्थक हो गई। श्यामलालजी अपने बड़े बेटे के साथ अपनी बड़ी बिटिया की शादी को राजी है। वह दहेज लेने से भी मना कर रहे हैं। माँ बार-बार हाथ जोड़कर ईश्वर का धन्यवाद देने लगी- हे नाथ, जैसे हमें तारा है, सबको तार देना। ग्यारह बज गया, पिताजी सोने चले गए हैं, हम दोनों बहनें पिताजी की तकिये को कोसने की आवाज की प्रतीक्षा करने लगे। पर ये क्या आज कोई चिर परिचित आवाज नहीं आई। कमरे में जाकर देखा, पिताजी चैन से सो रहे थे। उनके चेहरे पर बच्चों सी निश्चिंतता थी। हम दोनों बहनों को तकिये के रहस्य पता चल गया था।

१३३१) इंसान का फर्ज - समरकंद के शासक उमर शेख नेकदिल और न्यायप्रिय थे। एक बार चीनी यात्रियों का एक दल उनके राज्य की सीमा में बर्फीले तूफान में फंस गया। किसी की जान न बच पाई। उन यात्रियों का सामान व बहुत सारा धन वहीं दबा रह गया। उमर शेख को जब इसका पता चला तो उन्होंने अपने सैनिकों को सामान व धन की सुरक्षा के लिए तैनात कर दिया। इसके बाद उन्होंने चीन के सम्राट के पास सूचना भिजवाई कि उनके कुछ नागरिकों की यहां मृत्यु हो गई है और उनका काफी सारा धन एवं सामान वहां पर मिला है जिसे उन्होंने सुरक्षित अपने पास जमा करा लिया है। उन्होंने चीनी शासक से अनुरोध किया कि वह अपने कर्मचारियों को समरकंद भेजें ताकि मृत यात्रियों की चीजें उनके परिजनों तक पहुंचाई जा सकें। चीनी सम्राट यह जानकर बेहद दुखी हुआ लेकिन उसे यह जानकर प्रसन्नता भी हुई कि समरकंद के शासक में नेकी और परोपकार की भावना कूट-कूट कर भरी है। उसने संदेश मिलते ही अपने सैनिकों को वह सामान व धन वापस लाने के लिए भेजा और बाद में स्वयं भी उमर शेख से मिलने पहुंचा। वह उमर शेख से मिलकर भावुक होकर उनके गले लग गया और बोला, धन्य हैं आप जैसे लोग जिनके दिल में नेकी और परोपकार जीवित है। यह सुनकर उमर शेख बोले, हमने तो सिर्फ इंसानियत निभाई है। ऐसी इंसानियत प्रत्येक इंसान को निभानी चाहिए। यह सुनकर चीनी शासक के मुंह से स्वत: निकला, आप सही कहते हैं। मैं भी आगे से कोशिश करूंगा कि मेरे अंदर भी ऐसी भावनाएं आएं।

१३३२) सुख समृद्धि - वसंत की सुबह एक नन्हा चरवाहा घाटी की ढलान पर अपनी भेड़-बकरियाँ चरा रहा था। बकरियाँ चर रही थीं और वह अपनी मधुर आवाज में एक गीत गुनगुना रहा था। तभी वहाँ का राजा शिकार के लिए भटकता-भटकता उस घाटी में पहुंचा। चरवाहे को इतना खुश देखकर राजा ने उससे पूछा, तुम इतने प्रसन्न क्यों हो? चरवाहा राजा को पहचान नहीं पाया। बोला, क्यों प्रसन्न न होऊं। शायद हमारा राजा भी इतना समृद्ध नहीं होगा

जितना कि मैं हूं। ऐसा है। राजा हैरान हो उठा, पर यह तो बताओ, तुम राजा से ज्यादा धनी कैसे हो? मेरे पास प्रकृति की संपदा है। यह सूरज मुझे रोशनी देता है, यह नीला आकाश मुझे बाँहें पसारे दुलराता है। यह घाटी अपनी पीठ पर मुझे लादे हुए किसी अनंत यात्रा का सुख देती है। मैं मस्त इन घने जंगलों की सुरसुराती हवा की बाँसुरी सुनता रहता हूं। मुझे रोज पेट भर खाना मिल जाता है। साल भर में मैं जरूरत भर का कमा लेता हूं। न चोरों का डर, न छीना-झपटी की चिंता। अब तुम ही बताओ, सुख-संतोष की जो संपदा मेरे पास है वह राजा के पास होगी? सुखी होने के लिए धन का होना जरूरी नहीं।

१३३३) संस्कार की शिक्षा - बगदाद के एक मदरसे में उस्ताद फर्राह के पास दो सुंदर बालक फर्श पर बैठकर उनसे पढ़ रहे थे। थोड़ी देर बाद मौलवी जी खड़े हुए और बोले, भाई मेरी जूतियां उठा लाओ मैं बाहर जा रहा हूं। दोनों बालक एक-एक जूती हाथ में लेकर मौलवी साहब के पास आ गए। वे दोनों भाई बगदाद के खलीफा मामूं रशीद के बेटे थे।

खलीफा बादशाह से भी बड़ा होता है क्योंकि बादशाह के पास सिर्फ हुकूमत होती है जबकि खलीफा के पास हुकूमत के साथ मजहबी ताकत भी होती है। इसी वजह से मामूं रशीद को तख्त और मस्जिद दोनों जगह सत्ता हासिल थी। बच्चों से जूतियां उठवाने की बात पता चली तो उन्होंने तुरंत मौलवी को दरबार में बुलवा लिया। मौलवी के होश फाख्ता हो गए। दरबार में पहुंचे तो खलीफा ने पूछा, मौलवी साहब, एक बात पूछता हूं कि दुनिया में सबसे बड़ा कौन हैं, सबसे ज्यादा इज्जत किसकी है? मौलवी फर्राह की बात समझ नहीं आई फिर भी बोले, हुजूर, आज तो दुनिया में सबसे बड़े आप हैं, सबसे ज्यादा इज्जतदार भी है। क्योंकि आप खलीफा हैं। खलीफा ने बात काटते हुए कहा- नहीं, आज तो दुनिया में उस्ताद फर्राह सबसे बड़े हैं, इज्जत भी उनकी सबसे ज्यादा है क्योंकि खलीफा के बच्चे भी उनकी जूतियां उठाते हैं।

मौलवी साहब माफी मांगते हुए कहने लगे, हुजूर, मैंने बहुत बड़ी गलती की, अल्लाह के नाम पर मुझे माफ कर दीजिए। खलीफा ने हंसकर कहा, आप डरते क्यों हैं? ये मैंने कोई झूठ नहीं कहा। आप मेरे बच्चों के उस्ताद हैं। इसलिए आप ही बड़े हैं और आपकी ही सबसे ज्यादा इज्जत है। मुझे बहुत खुशी है कि मेरे बच्चे आपकी खिदमत करते हैं, इससे मेरी भी इज्जत बढ़ती है। अखलाक और तहजीब के संस्कार जिन बच्चों में प्रारंभ से डाल दिए जाते हैं, वे जिंदगी भर गुरुओं की कृपा पात्र तो बने रहते हैं, संस्कारवान भी होते हैं।

१३३४) नेटवर्क - कई दिनों से सोशल नेटवर्क पर न ज्यादा लाइक्स मिल रहे थे, न कमेंट्स, हर पोस्ट औंधये मुंह गिर रही थी। सो, आज इस छुट्टी के दिन ब्रह्मास्त्र चलाया स्टेटस अपडेट किया, डाउन विद हाई फीवर पहले नाश्ता, फिर किराए के इस वन रूम सेट की सफाई, कुछ कपड़ों की धुलाई उसके बाद लंच तैयार किया और फिर जमकर स्नान। इस बीच लाइक्स और कमेंट्स की रिसीविंग टोन बार बार बजती रही। तीर निशाने पर लग चुका था। लंच के बाद, अपना फोन लेकर वो इत्मीनान से बिस्तर में लेट गया। गेट वेल सून, ओ बेबी ख्याल रखो अपना। वगैरह-वगैरह। एक-एक कमेंट्स को सौ-सौ बार पढ़ते, तमाम लाइक्स को बार बार गिनते और इस बीच दूरदर्शन देखते देखते कब झपकी आ गई, पता ही नहीं चला। चौंककर उठा तो देखा शाम गहरा गई है और कोई कमरे का दरवाजा खटखटा रहा है। जी कहिए? उसने उलझन भरे स्वर में पूछा। नहीं कुछ बात नहीं, दरवाजे पर खड़े, उस अधेड़ उम्र के अजनबी ने संकोच भरे स्वर में कहा,

वो तुम सुबह से अपने कमरे से बाहर नहीं निकले तो सोचा कि पूछ लूं, मैं सामनेवाले वन रूम सेट में ही तो रहता हूं।

१३३५) पत्थर पड़ा अकल पर - एक अमीर महिला ने एक खास किस्म का हार बनवाने के लिए सुनार के पास तमाम तरह के रंगीन तथा कीमती पत्थर भेजे। एक दिन सुनार ने पाया कि उन कीमती पत्थरों में से दो पत्थर गायब हैं। सुनार को अपने यहां काम करनेवाले लड़के चंदू पर शक हुआ। उसने फौरन उसके कमरे की तलाशी ली तो चकित रह गया। एक पुरानी अलमारी के ऊपर उसे दोनों पत्थर पड़े मिले। उसने चंदू की खूब पिटाई की और उसे नौकरी से निकाल दिया। एक दिन सुनार ने पाया कि फिर कुछ कीमती पत्थर अपनी जगह से गायब हैं। खोजने पर वे फिर उसी पुरानी जगह पर मिले। अब सुनार के दंग रहने की बारी थी। उसकी समझ में नहीं आया कि आखिर कौन इस तरह पत्थर उठाकर अलमारी के ऊपर रख देता है; क्योंकि अब दुकान पर चंदू नहीं था। उसने जासूसी करने का निश्चय किया। कुछ समय बाद उसने एक पक्षी को कांच वाली अलमारी में घुसते देखा। पक्षी ने तश्तरी में रखे हुए कीमती पत्थरों में से एक पत्थर चोंच में दबाया और चंदू वाले कमरे में जाकर ठीक अलमारी के ऊपर रख दिया। सारा माजरा सुनार की समझ में आ गया। पर अब चंदू जैसा नेक लड़का उसे कहां मिलता? जीवन की बहुत सी बड़ी चीजों को हम तब पहचानते हैं जब उन्हें खो देते हैं।

१३३६) किसान ने सुना उपदेश - एक बार गौतम बुद्ध उपदेश देने एक गांव में पहुंचे। उनका उपदेश सुनने के लिए हजारों लोग उपस्थित हुए। उस सभा में गांव का एक दरिद्र, किंतु कर्मठ कृषक भी उपस्थित हुआ। बुद्ध का उपदेश सुनने की उसकी बड़ी इच्छा थी, किंतु दुर्भाग्यवश उसका एक बैल खो गया था। कृषक इस चिंता में था कि बैल नहीं मिला तो उसका काम कैसे चलेगा। उसका तो पूरा जीवन ही बैलों पर निर्भर करता था। वह धर्मसंकट में था कि गुम हुआ बैल ढूंढे या बुद्ध का धर्मोपदेश सुने। आखिरकार उसने बैल को ढूंढने का निश्चय किया और वहां से निकल आया।

कृषक के अथक प्रयास से शाम तक उसे बैल मिल गया। दिनभर का थका हुआ और भूखा-प्यासा कृषक इसके बाद सीधे प्रवचन स्थल पर पहुंचा। उसने बुद्धदेव को प्रणाम किया। बुद्धदेव ने पहले उसके थके-मांदे चेहरे को निहारा और भिक्षुओं से कहा कि इसे भोजन करवाओ। कृषक को तृप्त होने के बाद बुद्धदेव ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करना शुरू किया। कृषक ने एकाग्र होकर उपदेश सुना। उसके चले जाने के बाद बुद्धदेव ने अपने शिष्यों में कानाफूसी सुनी कि उस कृषक के लिए बुद्धदेव ने विलंब किया।

बुद्धदेव तब शांत स्वर में बोले, भिक्षुकगण, उस कृषक को मेरा उपदेश सुनने की बड़ी इच्छा थी, लेकिन उसके बैल गुम हो गए थे। इससे उसके कार्यों में बाधा आ सकती थी। अत: वह सुबह मजबूर होकर यहां से लौट गया। वह अपने लोककर्म के पालन के लिए सारा दिन भटका और तृप्त होते ही मेरे पास चला आया। यदि मैं उस भूखे को उपदेश देने लगता तो वह उसे ग्रहण नहीं कर सकता था। क्षुधा के समान कोई भी सांसारिक व्याधि नहीं है। अन्य रोग तो एक बार की चिकित्सा से शांत हो जाते हैं, किंतु पेट की आग बुझाने के लिए चिकित्सा रोजाना करनी पड़ती है।

१३३७) रिश्वत - एक महिला के पास ऊंचे नस्ल की एक मुर्गी थी, जो साल के तीन सौ पैंसठ दिन एक बड़ा-सा अंडा प्रतिदिन देती थी। महिला उसे बेचकर अपना पेट पालती थी। लेकिन एक दिन महिला को न जाने कैसे लालच ने घेर लिया और उसने सोचा, अगर मैं इस मुर्गी को दोगुना दाना डालूं तो यह रोजाना मुझे दो अंडे दे सकती है। उसी दिन

से उस महिला ने मुर्गी को दोगुना दाना डालना शुरू कर दिया। मुर्गी भी दिनभर पूरा चारा सफाचट करने में लगी रहती जिसे देख महिला ज्यादा अंडों की आस में मन ही मन खुश होती। लेकिन कुछ दिनों बाद मुर्गी इतनी मोटी हो गई कि उसने अंडे देने ही बंद कर दिए। प्रकृति को रिश्वत देने से कोई फायदा नहीं है।

१३३८) विनम्र बालिका को मिला नि:स्वार्थ सेवा का फल - इंग्लैंड देश के जॉन मिडल्टन की पत्नी मर चुकी थी। घर में वह और उसकी पुत्री में मिडल्टन बस दो ही व्यक्ति थे। जॉन मिडल्टन गरीब आदमी था। वह किसी प्रकार मजदूरी करके अपना काम चलाता था। उसकी पुत्री में अपने पिता के काम में सहायता करती थी। मे मिडल्टन प्रत्येक रविवार को लन्दन जाती और सप्ताह भर के लिए घर में जो वस्तुएं आवश्यक होतीं, उन्हें खरीदकर लाती।

एक रविवार को जब वह सामान लेकर लन्दन से लौट रही थी तो उसने देखा कि सड़क के किनारे मैले-कुचले कपड़ों में लिपटा एक बूढ़ा आदमी पड़ा कराह रहा है। बूढ़े को बीमार देखकर मे अपनी बग्घी से उतर पड़ी और उस बीमार बूढ़े को अपने साथ घर ले आयी। यद्यपि जॉन मिलडल्टन बहुत गरीब था, परंतु स्वभाव का बहुत अच्छा था। उसने अपनी पुत्री के काम की प्रशंसा की। बूढ़े के चिड़चिड़े स्वभाव के बावजूद पिता-पुत्री दोनों ने उसकी सेवा की। लेकिन कृतज्ञता दिखाने के बजाय बूढ़ा मे को डांटता और झिड़कता रहता, पर मे बेझिझक प्रसन्नता से उसकी सेवा करती रहती। धीरे-धीरे बूढ़े को आराम होने लगा। एक दिन बूढ़ा एक छोटी-सी संदूकची लेकर आया और अपनी की गई सेवा के लिए गहने से भरी उस संदूकची को मे को देने लगा। बूढ़े को गरीब समझनेवाली मे को बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन वह लालच में नहीं पड़ी। उसने कहा- मैंने और मेरे पिता ने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। रोगी और दुखी मनुष्य की सेवा करना तो हमारा कर्त्तव्य ही था। मैं आपके गहने नहीं लूंगी। वह बूढ़ा उस दिन वहां से चुपचाप चला गया, किंतु बूढ़े ने अपनी अंतिम सांस लेने से पहले अपनी सारी सम्पति मे के नाम लिख दी थी। उसके कोई संतान नहीं थी। मे को इस बात का बहुत बाद में पता लगा कि बूढ़े मनुष्य ने उसे सहसा धनवान बना दिया है।

१३३९) अभिमानी चूहा - मैं घर बदलना चाहता हूं। झगड़ालू चूहा अपनी दोस्त गिलहरी से बोला। क्यों, क्या बात है? गिलहरी ने कारण जानना चाहा। यहां खाना बस एक जैसा ही मिलता है। मगर खाने से अधिक तो तुम्हें सोना पसंद है और इत्तफाक से यहां तुम्हारे पास आरामदायक घर है। सिर्फ घर से क्या होता है। कहकर वह जंगल की ओर चल पड़ा। जंगल के रास्ते में उसे एक खरगोश नजर आया, जो घास की पत्तियां चबा रहा था। छि:। यह क्या खा रहे हो? भई, मुझे तो जो मिल जाता है, खा लेता हूं। खरगोश ने जवाब दिया। चूहा नाक-भौंह सिकोड़ता आगे बढ़ गया। तभी उसे तालाब के निकट एक मेंढ़क दिखाई दिया। वह मक्खियां मारकर खा रहा था। छि:। तुम मक्खियां खा रहे हो। तुम भी खाकर देखो। बड़ी स्वादिष्ट हैं। मेंढ़क ने जवाब दिया। मैं ऐरी-गैरी चीज नहीं खा सकता। मरजी तुम्हारी। मेंढ़क ने मुंह बिचकाया। चूहे का कहीं भी मन न लगा। वह पुरानी जगह वापस लौट आया। गिलहरी ने देखा तो हंसकर बोली, क्या हुआ? कैसे लौट आए? अरे, क्या बताऊं। कैसे-कैसे बेवकूफ पड़े हैं दुनिया में। भला उनके बीच रहा जा सकता है। मैं तो यहीं ठीक हूं। यह क्यों नहीं कहते कि लौट के बुद्धू घर को आए। गिलहरी ने उसे चिढ़ाया। अपना घर स्वर्ग जैसा होता है।

१३४०) जेसिका, पिता और सपनों की उड़ान - जेसिका के माता-पिता बहुत खुश थे। आखिर हो भी क्यों न? उनकी पहली संतान जन्म लेनेवाली थी। उनके सारे दोस्त और रिश्तेदार इस मुबारक मौके पर अस्पताल पहुंच चुके थे। लेकिन विधि को कुछ और ही मंजूर था। जेसिका के जन्म होते ही अस्पताल में मौजूद सभी परिवारवालों के चेहरे पर सन्नाटा छा गया था। जेसिका की मां का तो रो-रोकर बुरा हाल था। इसकी वजह यह थी कि उनकी इकलौती बेटी को जन्म से ही दोनों हाथ नहीं थे। डॉक्टर भी समझ नहीं पा रहे थे कि ऐसा क्यों हुआ।

बिना हाथ के बच्ची का जीवन कैसा होगा, यही सोच-सोचकर सभी परेशान हो रहे थे। लेकिन जेसिका के पिता हिम्मत हारनेवाले लोगों में से नहीं थे। वह तो उसे देखकर बहुत ही खुश थे उन्होंने सभी परिवारवालों को समझाने की कोशिश की और उनसे सिर्फ एक ही प्रश्न किया, अगर हम में से आज किसी के साथ दुर्घटना हो जाए, जिसकी वजह से हाथ कट जाएं, तो क्या हम उस शख्स से कम प्यार करने लगेंगे? अगर नहीं, तो फिर मेरी बेटी के लिए आप सब क्यों इतना उदास वह कितनी अनोखी, कितनी प्रिय है। बस जेसिका के पिता का यह कहना था कि सबके चेहरे की मुस्कान वापस लौट आई। जेसिका के पिता उसकी जिंदगी का एक अहम हिस्सा थे। उन्होंने उसे कभी किसी से कमजोर नहीं समझा। बचपन से ही वह स्कूल जाती और वे सारे काम करती थी, जो आम तौर पर बच्चे करते हैं। बस फर्क यह रहता कि वह अपने हाथों का काम पैर से लेती थी। जेसिका जब दस साल की थी, तभी से उसने नृत्य सीखना शुरू किया। चौदह साल की उम्र में उसने अपना पहला स्टेज परफार्मेंस दिया। जेसिका के पैरों की ताकत देखकर एक ताइक्वांडो टीचर ने भी उससे संपर्क किया और जेसिका १७ साल की उम्र में ताइक्वांडो ब्लैक बेल्ट चैंपियन बन गई। ग्रैजुएशन पूरा करने के बाद जेसिका को दुनिया देखने का मन होता था। वह आकाश में उड़ना चाहती थी। वह एक पायलट बनना चाहती थी।

जेसिका के पिता ने उसे हमेशा सिर्फ एक बात सिखाई, अगर तुम्हें अपने ऊपर विश्वास है, तो तुम वह सब कर सकती हो, जो तुम करना चाहती हो। यह मत सोचो कि तुम क्या नहीं कर सकती। आज जेसिका कॉक्स विश्व की पहली पायलट हैं, जो बिना हाथों के प्लेन उड़ा सकती हैं। हमारी सोच ही सफलता की पहली सीढ़ी होती है। इसलिए सकारात्मक सोच रखें।

१३४१) हीरे ने खोजा हीरा - महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के काटलुक गांव में एक प्राइमरी स्कूल था। कक्षा चल रही थी। अध्यापक ने बच्चों से एक प्रश्न किया कि यदि तुम्हें रास्ते में एक हीरा मिल जाए तो तुम उसका क्या करोगे? मैं इसे बेचकर कार खरीदूंगा, एक बालक ने कहा। दूसरे ने कहा, मैं उसे बेचकर धनवान बन जाऊंगा। किसी ने कहा कि वह उसे बेच विदेश यात्रा करेगा। चौथे बालक का उत्तर था कि मैं उस हीरे के मालिक का पता लगाकर लौटा दूंगा।

अध्यापक चकित थे, फिर उन्होंने कहा कि मानो खूब पता लगाने पर भी उसका मालिक न मिला तो? बालक बोला, तब मैं हीरे को बेचूंगा और इससे मिले पैसे को देश की सेवा में लगा दूंगा। शिक्षक बालक का उत्तर सुनकर खुशी से गद्‌गद्‌ हो गए और बोले, शाबाश तुम बड़े होकर सचमुच देशभक्त बनोगे और देश को नेतृत्व दोगे। शिक्षक का कहा सत्य हुआ और वह बालक बड़ा होकर सचमुच महान देशभक्त बना और उसने देश के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस बालक का नाम था गोपाल कृष्ण गोखले।

१३४२) एक टांगवाला बगुला - एक विदेशी भारत में घूमने आया। उसने भारत के कई राज्यों की सैर की। उसको भारत बहुत पसंद आया और उसने कुछ दिन यहां ठहरने का मन बनाया। विदेशी ने शहर में एक घर किराए पर ले लिया। घर के कामकाज निपटाने के लिए एक नौकर भी रख लिया। नौकर घर के सारे काम करता यहां तक कि रोटी बनाने से लेकर कपड़े धोने तक। एक दिन विदेशी कहीं से एक बगुला मार कर लाया और नौकर से कहा कि इसको अच्छी तरह से तडका लगाकर बनाना। नौकर ने पूरे दिल से खाना बनाया। लेकिन बगुले को भूनते समय उसने बगुले की एक टांग खाली। उसने बगुले को प्लेट में सजाकर विदेशी के आगे रख दिया। विदेशी ने देखा की बगुले की एक टांग गायब है। उसने नौकर को बुलाकर पूछा की इस बगुले की एक ही टांग है, दूसरी कहां गई? नौकर ने जवाब दिया की बगुले की एक ही टांग होती है। विदेशी ने कहा कि बगुले की दो टांगें होती हैं। मैं तुम्हें कल सुबह ही दिखा दूंगा। नौकर ने कहा ठीक है। अगले दिन दोनों बगुला देखने चल दिए। झील के किनारे एक बगुला बैठा हुआ दिखाई दिया। बगुले ने एक पैर ऊपर उठा रखा था। नौकर ने कहा वह देखो बगुले का एक ही पैर है। विदेशी ने अपने दोनों हाथों से ताली बजाई बगुले ने दूसरा पैर नीचे किया और उड़ गया। विदेशी ने कहा वह देखो उसके दो पैर हैं। नौकर ने कहा आप रात को प्लेट में रखे बगुले के सामने हाथों से ताली बजाना भूल गए। आपने रात को भी ताली बजाई होती तो वह बगुला दूसरी टांग नीचे कर देता। विदेशी को कोई जवाब नहीं सूझा। दोनों घर वापस आ गए।

१३४३) मृत्यु के भय से छुटकारा - राजा परीक्षित को सर्प ने डस लिया था, मृत्यु का एक दिन शेष था। शुकदेव छह दिनों से भागवत कथा सुना रहे थे, लेकिन राजा का शोक और मृत्यु का भय कम नहीं हुआ था। शुकदेव ने राजा को एक कथा सुनाई, एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया और रास्ता भटक गया। थोड़ी दूर चलने पर उसे एक झोपड़ी नजर आई। उसमें एक बीमार बहेलिया रहता था। उसने झोपड़ी में ही एक ओर मल-मूत्र त्यागने का स्थान बना रखा था और अपने खाने के लिए जानवरों का मांस झोपड़ी की छत पर टांग रखा था। वह बहुत छोटी, दुर्गंधयुक्त झोपड़ी थी। राजा ने विवशतावश बहेलिए से झोपड़ी में रातभर ठहरा लेने की प्रार्थना की।

बहेलिया बोला, मैं भटके हुए राहगीरों को अक्सर ठहराता रहा हूं। लेकिन दूसरे दिन वे इस झोपड़ी को छोड़ना ही नहीं चाहते। मैं अब इस झंझट में नहीं पड़ना चाहता, इसलिए आपको नहीं ठहरा सकता। राजा ने उसे वचन दिया कि वह ऐसा नहीं करेगा। किंतु सुबह उठते-उठते उस झोपड़ी की गंध में राजा ऐसा रच-बस गया कि वहीं रहने की बात सोचने लगा। इस पर उसका बहेलिए से कलह भी हुआ। यह कथा सुनाकर शुकदेव ने परीक्षित से पूछा, क्या उस राजा के लिए यह झंझट उचित था? परीक्षित ने कहा, वह तो बड़ा मूर्ख था जो राज-काज भूलकर दिए हुए वचन को तोड़ते हुए अधिक समय तक झोपड़ी में रहना चाहता था। आखिर वह राजा कौन था?

शुकदेव ने कहा, वह और कोई नहीं, तुम स्वयं हो। इस मल-मूत्र की कोठरी यानी देह में जितना समय तुम्हारी आत्मा को रहना जरूरी था, वह अवधि पूरी हो गई। अब इसे दूसरे लोक को जाना है। क्या अब भी मरने का शोक करना उचित है? परीक्षित ने मृत्यु के भय को भुलाते हुए मानसिक रूप से निर्वाण की तैयारी कर ली और अंतिम दिन का कथा-श्रवण पूरे मन से किया।

१३४४) बुरी संगत - पवन के पिताजी बड़े परेशान थे। कुछ दिनों से पवन बुरी संगत में पड़ गया था। अंत में उन्हें एक युक्ति सुझी। वे बाजार से कुछ आम खरीद कर लाए। सब आम तो पके हुए और बढ़िया थे, पर एक आम काफी सड़ा हुआ था। उन्होंने अच्छे आमों को एक बड़ी प्लेट में चारों ओर रखकर सड़ा हुआ आम उनके बीच में रख दिया। अगले दिन जब पवन ने आम खाने के लिए खुशी-खुशी अलमारी में से प्लेट निकाली तो यह देखकर उसकी हैरानी का ठिकाना न रहा कि सभी आम सड़ गए हैं और उनमें से बदबू उठ रही है। पवन के पिताजी तो इसी मौके की तलाश में थे। उसे दु:खी देखकर बोले, बेटा। इसी तरह एक दिन तुम भी अपने बुरे मित्रों के बीच रहकर भ्रष्ट हो जाओगे। तब तुम्हारी छाया से भी लोग दूर भागेंगे। पवन पर इस घटना का इतना प्रभाव पड़ा कि उसने उसी समय से अपने बुरे मित्रों का साथ छोड़ दिया। बुरी संगत आदमी को बुरा बना देती है।

१३४५) स्वाभिमान की रस्साकशी - कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में वही विद्यार्थी एम.ए. की परीक्षा में बैठ सकते थे जो पूर्व परीक्षा में सफल हो चुके हों। सन १९०६ की घटना है। कॉलेज का प्रधानाचार्य सख्त स्वभाव का अंग्रेज था। पूर्व परीक्षा का परिणाम उसी ने सुनाया। एक सीधा-सादा विद्यार्थी भी कक्षा में बैठा था। उत्तीर्ण छात्रों में कहीं उसका नाम नहीं था। उसने खड़े होकर कहा, आपने मेरा नाम नहीं सुनाया। प्रधानाचार्य ने बताया, सूची में तुम्हारा नाम नहीं है। यानी कि तुम उत्तीर्ण नहीं हुए हो। विद्यार्थी ने कहा, ऐसा कभी नहीं हो सकता कि मैं उत्तीर्ण न होऊं। यह सुनकर प्रधानाचार्य चिढ़ गए। उन्होंने उस विद्यार्थी की अशिष्टता के लिए ५ रुपया जुर्माना सुना दिया, लेकिन विद्यार्थी अपनी बात पर अड़ा रहा। जैसे जैसे उसकी जिद बढ़ती गई, वैसे-वैसे जुर्माना भी बढ़ता गया। अंत में प्रधानाचार्य ने जुर्माना ५० रुपये कर दिया। जब दोनों में स्वाभिमान की यह रस्साकशी चल रही थी, तभी कॉलेज के बड़े बाबू दौड़े हुए आए। उन्होंने सूचना दी कि यह विद्यार्थी तो परीक्षा में सर्वप्रथम आया है। भूलवश उसका नाम सूची में जाने से रह गया। प्रधानाचार्य का चेहरा लज्जा और ग्लानि से झुक गया, लेकिन छात्र का सिर स्वाभिमान से ऊंचा हो गया। यह स्वाभिमानी विद्यार्थी और कोई नहीं, हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद थे। स्वाभिमान खोना, आजादी खोना है।

१३४६) मनुष्य की पहचान - एक दिन पंडित ताराचरण शास्त्रार्थ करने के लिए स्वामी दयानंद के पास पहुंचे। उस समय दयानंद जमीन पर एक आसन पर बैठकर कुछ लिख रहे थे। उन्होंने ताराचरण को अपने पास के एक आसन पर बैठने को कहा। ताराचरण विद्वान थे किंतु उन्हें इस बात का बेहद अभिमान था। वह स्वामी दयानंद को अपने से निम्न मानते थे। स्वामी दयानंद ने जब उन्हें जमीन पर रखें आसन पर बैठने को कहा, तो उन्होंने इसे अपना अपमान समझा। उन्हें लगा कि वह तो सर्वश्रेष्ठ हैं इसलिए उन्हें हर लिहाज से स्वामी दयानंद से ऊंचा आसन मिलना चाहिए। वह भला नीचे के आसन पर बैठकर अपना स्तर कम कैसे कर सकते हैं? वह खड़े रहे। स्वामी दयानंद पंडित ताराचरण के मनोभाव को समझ गए। उन्होंने कहा, पंडित जी, मात्र ऊंचे आसन पर बैठने से कोई महान नहीं होता। यदि ऐसा होता तो सामने ऊंचे वृक्ष पर बैठा कौवा सबसे अधिक पूज्य व महान होता। संयोगवश उस समय सामने के वृक्ष पर एक कौवा बैठा भी हुआ था। कौवे की ओर इशारा करके स्वामी दयानंद फिर बोले, महानता तो त्याग, परोपकार, विनम्रता जैसे गुणों से तय होती है। व्यक्ति गुणों से महान समझा जाता है उच्च स्थान पर बैठने से नहीं। यदि हमारे अंदर गुण हैं तो हम नीचे बैठने पर भी

उतने ही विद्वान रहेंगे और यदि हमारे अंदर बुराइयां हैं तो हम उच्च स्थान पर बैठकर भी बुरे समझे जाएंगे। स्वामी दयानंद की यह बात सुनकर पंडित ताराचरण लज्जित हो गए और उनके बगल वाले आसन पर बैठ गए।

१३४७) महान कौन है? - एक दिन सम्राट ने कनफ्यूशियस के पास आकर कहा, देश में बेईमानी लगातार बढ़ती जा रही है। छल-कपट और धोखेबाजी का बोलबाला है। ऐसे में क्या इस देश में ऐसा कोई आदमी भी होगा, जो सदाचारी और ईमानदार हो? कन्फ्शूयिस ने जवाब दिया, है क्यों नहीं? एक सदाचारी तो आप ही हैं, क्योंकि सत्य को जानने की जिज्ञासा रखनेवाले को मैं महान समझता हूं। सम्राट ने कहा, आप भले ही मुझे महान समझते हो, पर मैं उस आदमी को देखना चहाता हूं, जो मुझसे भी महान है। कन्फ्यूशियस ने जवाब दिया, तब तो वह व्यक्ति मैं हूं। सम्राट ने कहा, मैं आपसे भी अधिक महान व्यक्ति को देखना चाहता हूं। कन्फ्यूशियस ने एक क्षण के लिए सम्राट की ओर देखा, फिर कहा, हमें कहीं जाने की जरूरत नहीं है। हमसे महान सैकड़ों लोग हमें आसपास ही देखने को मिलेंगे। केवल हमें उनकी दृष्टि से देखना पड़ेगा।

सामने सौ साल की उस बुढ़िया को ही देख लीजिए कि वह क्या कर रही है। सम्राट ने कहा, वह कुदाल से कुआं खोद रही है, लेकिन इस उम्र में उसे कुआं खोदने की जरूरत क्या है? कन्फ्यूशियस ने कहा, महाराज, जरूरत ही सब कुछ नहीं हुआ करती। जो दूसरों के लिए इस तरह निर्लिप्त होकर अपना जीवन खपा देते हैं, वही वास्तव में महान हैं। ऐसी ही शख्सियतें अमर हो जाती हैं।

१३४८) मैया से बचाने की शर्त - कृष्ण की शरारतों से तंग आकर यशोदा ने छड़ी उठाई और कृष्ण की ओर दौड़ी। प्रभु ने मां को क्रोध में देखा, तो बचाव करने के लिए भागे। भागते हुए कृष्ण एक कुम्हार के पास पहुंचे। कुम्हार ने कृष्ण को देखा, तो बहुत खुश हुआ। प्रभु ने कुम्हार से कहा कि मेरी मैया मुझ पर बहुत क्रोधित है। छड़ी लेकर आ रही है। भैया, आप मुझे कहीं छिपा लो।

कुम्हार ने कृष्ण को मटके के नीचे छिपा दिया। यशोदा वहां आई, तो कुम्हार से कृष्ण के बारे में पूछा। कुम्हार ने साफ मना कर दिया। कृष्ण सब सुन रहे थे। मैया चली गई, तो कुम्हार ने कृष्ण से मटके से बाहर निकलने के लिए कहा। कुम्हार ने अपने और परिवार के लिए मोक्ष मांगा। कृष्ण ने कहा तथास्तु। कुम्हार ने कहा कि एक इच्छा और है- जो भी प्राणी हम दोनों के इस संवाद को सुनेगा, उसे भी मुक्ति मिले, कृष्ण कुम्हार की भावना से बहुत खुश हुए और उसकी इस इच्छा को भी पूरा करने का वचन दिया।

कुम्हार ने श्रीकृष्ण को घड़े से बाहर निकाल दिया। साष्टांग प्रणाम किया। चरण धोए और पूरी झोपड़ी में चरणामृत का छिड़काव किया। कथा सुनाते हुए डोंगरे महाराज ने कहा कि जो बालकृष्ण सात कोस लंबे चौड़े गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगली पर उठा सकते हैं, क्या व एक घड़ा नहीं उठा सकते थे। लेकिन कोई कितने भी यज्ञ, अनुष्ठान, दान पुण्य करे, जब तक मन में निश्चल प्रेम नहीं होगा, भगवान नहीं मिलते।

१३४९) पवित्रता तो सेवा और श्रम से प्राप्त होती है - एक बार गुरु गोविंद सिंह कहीं धर्म चर्चा कर रहे थे। श्रद्धालु भक्त उनकी धाराप्रवाह वाणी को मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे थे। गुरु गोविंद सिंह की धर्म चर्चा के विषय ही ऐसे हुआ करते थे

कि लोग मंत्रमुग्ध होकर उन्हें सुनते रहते थे। धर्म चर्चा समाप्त होने पर गुरु गोविंद सिंह को जोरदार प्यास लगने लगी।

उन्होंने पहले तो चारों तरफ नजर दौड़ाई, फिर वहां मौजूद अपने शिष्यों से कहा कि कोई भी एक शिष्य अपने पवित्र हाथों से मेरे पीने के लिए जल ले आए। गुरु गोविंद सिंहजी का यह कहना था कि एक शिष्य उठा और तत्काल चांदी के गिलास में जल लेकर आ गया। जल से भरे गिलास को उसने गुरु गोविंद सिंह की ओर बढ़ाते हुए कहा, लीजिए गुरुदेव, जल पीजिए। गुरु गोविंद सिंह ने जल का गिलास हाथ में लेते हुए उस शिष्य की हथेली की ओर देखा और बोले, वत्स, तुम्हारे हाथ तो बड़े कोमल हैं। लगता है कि तुम अपने हाथों का काफी खयाल रखते हो। गुरु के इन वचनों को अपनी प्रशंसा समझते हुए शिष्य को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसे लगा कि गुरुदेव उसकी इसलिए प्रशंसा कर रहे हैं कि वह अपने शरीर का बहुत खयाल रखता है। उसने बड़े गर्व से कहा, गुरुदेव, मेरे हाथ इसलिए कोमल हैं कि अपने घर में कई सारे नौकर-चाकर हैं। वही मेरा और मेरे पूरे परिवार का सब काम कर देते हैं। गुरु गोविंद सिंह पानी के गिलास को अपने होठों से लगाने ही वाले थे कि उनका हाथ रूक गया। बड़े गंभीर स्वर में उन्होंने कहा, वत्स, जिस हाथ ने कभी कोई सेवा नहीं की, कभी कोई काम नहीं किया, मजदूरी से जो मजबूत नहीं हुआ और जिसकी हथेली में मेहनत करने से गांठ नहीं पड़ी, उस हाथ को पवित्र कैसे कहा जा सकता है। गुरुदेव कुछ देर रुके फिर बोले, पवित्रता तो सेवा और श्रम से प्राप्त होती है, इतना कहकर गुरुदेव ने पानी का गिलास नीचे रख दिया।

१३५०) डाकुओं का सरकार सच्चा व भला व्यक्ति बन गया - प्राचीन समय में आज के समान यात्रा हेतु न तो मोटरें थीं और न ही रेलगाड़ियां, हवाई-जहाज तो थे ही नहीं। अत: लोग ऊंटों पर सवार होकर, काफिले बनाकर समूह में यात्रा करते थे ताकि डाकू-लुटेरों से सुरक्षित रह सकें। ऐसे ही एक काफिला जब रेगिस्तान से गुजर रहा था तो यकायक कुछ डकैतों ने उस पर आक्रमण कर दिया एवं यात्रियों को लूटा, मारा और घायल किया। डकैत संख्या में अधिक होने से काफिले को लूटने में सफल रहे।

उस काफिले का सरदार एक धनी व्यक्ति था। डाकुओं ने उसका सारा माल असबाब छीनकर उसे कंगाल कर दिया। उसके पास एक पोटली भी थी। जिसमें रोटियां बंधी थीं। एक डाकू ने जब वह पोटली भी काफिले के सरदार से छीन ली तो यह देखकर डाकुओं के सरदार ने दया करके खाने की पोटली वापस काफिले के सरदार को लौटा दी और बाकी लूट का सभी माल लेकर डाकू चलता बना।

एक अंतराल के बाद वही काफिले का सरदार अपना काफिला लिए उसी रेगिस्तान से गुजर रहा था। उसने देखा कि एक फटेहाल व्यक्ति भूख-प्यास के मारे तड़प रहा है। उसने अपने साथियों को आदेश दिया कि उस आदमी को खाना-पानी दें। जब वह आदमी खा पीकर थोड़ा स्वस्थ महसूस करने लगा तो काफिले के सरदार ने उसे अपने पास बुलाकर नए वस्त्र, कुछ अशरफियां व कुछ ऊंट भी भेंट में दिए। यह आदमी जिसको चीजें भेट में दी गई, कौन था? यह डाकुओं का वही सरदार था जिसने काफिले को लूटकर काफिले के सरदार को कंगाल कर दिया था।

डाकूओं के सरदार ने ऐसा प्रेम भरा सुलूक देखकर कहा, भाई, मैंने तो तुम्हें लूटकर कंगाल बनाया था। तुम मुझ पर इतनी मेहरबानी किसलिए कर रहे हो? सुनकर काफिले का सरदार बोला, मुझे तो तुम्हारी भलाई याद है। तुमने भले ही मेरी

काफिले को लूटा था, किंतु मेरी रोटियों की पोटली मुझे दिलाकर तुमने मुझ पर उस दिन बड़ा उपकार किया था। उन रोटियों के कारण ही मैं इस रेगिस्तान में जीवित रह पाया और आज इस काबिल हुआ कि तुम्हारे उपकार का बदला चुका सकूं। यह सुनकर डाकुओं का सरदार रो पड़ा और काफिले के सरदार के पैरों पर गिर पड़ा। उस दिन के पश्चात, वह डाकू सरदार एक सच्चा और भला व्यक्ति बन गया।

१३५१) सबसे अच्छा रास्ता - तब अरब भूमि तमाम तरह की बुराइयों से घिरी थी। ऐसी बुराइयां जो घरों को तबाह कर रही थीं। लड़कियों को जमीन में जिंदा गाड़ देने का चलन था। लोग एक दूसरे से ऊंचा दिखने को बेताब रहते थे। अपने से अलग किसी दूसरे विचार को नष्ट करने के लिए हत्याएं आम थीं। तब उस धरती पर हजरत मोहम्मद का जन्म हुआ, जिन्होंने इन सारी बुराइयों से पार दुनिया को एक नई रोशनी दिखाई। हजरत साहब ने सत्ता का ऐसा समाजवादी मार्ग बनाया, जो पहले वहां संभव नहीं था।

एक रोज उनके तमाम अहम साथियों में से एक मुआज को उन्होंने यमन का सूबेदार बनाकर भेजा। यह एक बड़ी जिम्मेदारी थी, तो उन्होंने मुआज से जानना चाहा कि जब तुम यमन जाओगे तो तुम्हारा काम करने का तरीका क्या होगा? वह कौन सी बात होगी, जिसकी रोशनी में तुम वहां के लोगों केसाथ इंसाफ कर सकोगे? हजरत मोहम्मद जानना चाहते थे कि मुआज जब यमन से दाखिल होंगे तो वह वहां की समस्याओं से कैसे निपटेंगे? मुआज ने हजरत साहब को बताया कि वह लोगों की समस्याओं का समाधान कुरआन की शिक्षाओं के आधार पर करेंगे।

हजरत मोहम्मत ने पूछा कि अगर कुरआन की शिक्षाओं के साथ वहां की समस्याओं का तालमेल नहीं बैठा, तब क्या करोगे? तब मुआज ने कहा कि तब अपने पैगंबर की मिसाल सामने रखकर उन समस्याओं का हल निकाला जाएगा। हजरत मोहम्मद ने फिर पूछा कि अगर वह भी उनके साथ ठीक नहीं बैठी, तब क्या करोगे? मुआज ने जवाब दिया कि तब अपनी अक्ल और इंसाफ को आगे रखकर काम किया जाएगा। फिर हजरत मोहम्मद मुस्कुराए और बोले कि यही सबसे अच्छा रास्ता है। अपनी अक्ल का इस्तेमाल हर रास्ते से बेहतर है। हर बात दूसरे के कहने की ही बेहतर नहीं मान लेनी चाहिए, अपनी अक्ल का इस्तेमाल करके बड़े काम को अंजाम दिए जा सकते हैं।

१३५२) खुशी मिले या गम - लंदन में जन्मे थॉमस् मोर की विद्वता से प्रभावित होकर बादशाह ने उन्हें लॉर्ड चांसलर बना दिया। बेहद आजाद ख्याल थॉमस मोर को जब राजा के अनैतिक काम का पता चला तो वह राजा के विरुद्ध हो गए। इसकी वजह से उन्हें जेल में डाल दिया गया और फांसी की सजा सुनाई गई। थॉमस मोर से मिलने उनके बीबी-बच्चे आए और कहने लगे कि आप माफी मांग लें तो आपको जीवनदान मिल जाएगा। हम भी हंसी खुशी से रह सकेंगे। तब थॉमस मोर ने कहा, बच्चों, जब हमे फांसी की सजा मिलेगी, तब दुनिया को राजा की असलियत पता चलेगी। इससे इंसानियत की कीमत और बढ़ेगी, लोगों को शैतानियत से नफरत हो जाएगी। मेरा उद्देश्य है कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति को मानवीय अधिकार मिले और उनकी आत्मा को कुचला न जाए। तुम भी मेरे मरने के बाद इसी रास्ते पर चलना, जिससे समाज में प्रेम और शांति के साथ बराबरी आए। उसी रोज फांसी के फंदे पर झूलने से पहले वह जल्लाद से बोले कि अपराध मैंने किया, फांसी मुझे मिली, तो भला यह बेचारी दाढ़ी क्यों सजा पाए? अभी वक्त है तो मुझे दाढ़ी बना लेने दों उनके यह कहने

पर जल्लाद रुक गया और थॉमस ने मजे से दाढ़ी बनाई। यही नहीं, उसके बाद फांसी पर जाते हुए भी वह ठहाके लगते हुए कहने लगे, ऐ भाई जरा हाथ लगा दो तो फंदे तक पहुंच जाऊं, उसके बाद मेरा शरीर खुद-बखुद नीचे आ जाएगा। लेकिन जरा संभलकर, मेरा शरीर थोड़ा भारी है। कहीं तुम पर ही न गिर जाए। यह सुनते ही जल्लाद भी उनके साथ हंसने लगा। थॉमस मोर सैकड़ों साल पहले फांसी पर झूल गए, मगर बता गए कि चाहे कितनी ही विपरीत परिस्थिति हो, अपना दिमाग शांत रखो। अंत तक अपने को खुश रखो क्योंकि यही शांति समाज को एक वक्त के बाद सुकून देगी।

१३५३) पद नहीं, केवल संघर्ष - प्रिसं पीटर क्रोपटकिन का जन्म रूस के एक सरदार के यहां सन १८१२ में हुआ था। सरदारों के घरों में कई गुलाम रहा करते थे। बचपन में उन्होंने गुलामों के साथ होनेवाले पाशविक व्यवहार देखे तो मन में उसके खिलाफ विरोध पनपा। तभी से बालक के मन पर सुसंस्कार अंकुरित हो गए। युवावस्था में उन्होंने भूगोल और विज्ञान का अध्ययन किया। एशिया के नक्शे में सुधार किया। उसके बाद फिनलैंड में ग्लेशियर के विषय में नवीन सिद्धांतों को स्थिर किया। इससे उनका वैज्ञानिक संसार में बड़ा नाम हुआ। किंतु हृदय में एक ज्वाला जल रही थी, मन में रूस की नसों में गुलामी की दशा का चित्र खिंचा हुआ था। प्रिंस ने देश की रगों में स्वतंत्रता का नया रक्त भरने का प्रण किया, जिसकी पूर्ति में उन्होंने अपना जीवन लगा दिया। एक तरफ वे रूस के भूगोल शास्त्र वेत्ताओं की परिषद में काम करते थे, दूसरी ओर देहाती वेश बनाए हुए किसानों को उनके अधिकार समझाने, उन्हें अपनी वास्तविक अवस्था से अवगत कराने और देश को जार के कुशासन से मुक्त कराने का पुनीत कार्य भी जारी रखे रहे। इसके लिए उन्हें जेल भी जाना पड़ा। मित्रों की मदद से वे जेल से निकल भागे और स्विटजरलैंड में उन्होंने समष्टिवाद की अनेक शाखा प्रशाखाओं का अध्ययन किया, अराजकवादी साम्यवाद पर कई ग्रंथ लिखे। वे इसके प्रचारार्थ फ्रांस गए तो वहां भी जेल जाना पड़ा। वहां से छूटकर उन्होंने इंग्लैंड की यात्रा की। बड़े-बड़े बोरों में साम्यवाद का साहित्य भरकर वे रूस भेजते थे। यहां उनके सहयोगी प्रचार-कार्य करते जाते थे। रूसी क्रांति के बाद जब वह देश वापस लौटे तो रूस ने उन्हें हाथों-हाथ लिया। सरकार ने उन्हें शिक्षामंत्री बनने का प्रस्ताव दिया, जिसे उन्होंने विनम्रता से यह कहते हुए मना कर दिया कि पद लेना उनके सिद्धांतों के खिलाफ होगा। ऐसे गुदड़ी के लाल से ही देश बनता है।

१३५४) शब्दों का सही प्रयोग - ब्रह्मभोज का नाम सुनकर तू यहां चला आया, मगर जानता नहीं कि मुफ्त भोजन करना महापाप है? इसके लिए तो कुछ न कुछ सेवा तो तुम्हें करनी चाहिए। आ, मैं तुझे काम देता हूं। देख वहां कुछ वेदज्ञ ब्राह्मण बैठे हैं, उनके लिए चंदन घिस दे, महाधीश ने एक ओर बैठै एक ब्राह्मण से कुछ अधिक ही कड़े शब्दों में कहा। वह ब्राह्मण निर्धन प्रतीत हो रहा था। महाधीश के शब्द उसे तीर की भांति चुभ गए, पर फिर भी मुख से कुछ न कहते हुए उसने खिन्न मन से चंदन घिसना शुरू किया। चंदन घिसते-घिसते मन का ताप शमन करने के लिए वह राम-नाम का जप करने लगा। लेकिन जब उसके मन का संताप शांत न हुआ तो अनजाने ही राम-नाम के स्थान पर अग्निसूक्त गुनगुनाने लगा। लगभग एक घंटे में पर्याप्त चंदन तैयार हुआ और एक परिचारक उसे लेकर चला गया। युवक वहीं बैठा अग्निसूक्त गुनगुनाता रहा। उपस्थित विप्रों ने जब अपने मस्तक पर चंदन का लेप किया, तो वे अग्निदाह से तड़प उठे। सैकड़ों ब्राह्मणों को जलन से छटपटाते देख ग्राम के मुखिया चिंतित हो उठे कि यह क्या अनर्थ हो रहा है। तभी कोई बात महाधीश

के ध्यान में आई। तुरंत युवक के पास जाकर उसने करबद्ध होकर कहा, मान्यवर। अज्ञानतावश मुझसे अपराध हो गया, कृपया क्षमा करें। मैंने आपको अकारण ही कष्ट दिया। कृपया अग्नि की जलन कम करें। महाधीश के आग्रह करते ही युवक जैसे अचेतन से जागा। उसके ध्यान में बात आई तो उसने तुरंत अग्निसूक्त के स्थान पर वरुणसुक्त का पाठ शुरू किया। इससे विप्रों के मस्तक पर लगा चंदन शीतलता प्रदान करने लगा और ब्रह्मभोज निर्विघ्न संपन्न हो गया। तब ग्राम प्रमुख ने युवक का परिचय प्राप्त कर उसके जीने-खाने की व्यवस्था की। यही युवक आगे चलकर मध्व-मठ के आचार्यपीठ पर आसीन हुआ और राघवेंद्राचार्य नाम से प्रसिद्ध हुआ।

१३५५) संकल्प की जीत - १९ वीं सदी के अंत की बात है। मिस्र के एक गांव में बच्चे खेल रहे थे। उन्हीं के बीच एक छोटा बच्चा खेलने आया। खेलते-खेलते जरा ही देर में उसे ठोकर लगी तो वह एक पत्थर पर गिर गया। सिर से खून निकलने लगा। आनन-फानन में उसे घर ले जाया गया। घरवालों ने जब खून साफ किया तो पता चला कि चोट बहुत गहरी है। कुछ महीने बाद ही उस बच्चे की आंखों की रोशनी चली गई। इसके बाद वह बच्चा घर के चबूतरे पर एक ही जगह बैठा रहता। एक रोज उधर से गुजरते हुए एक औरत ने कहा कि कितना कष्टदायी है बिना आंखों के रहना, इससे तो मौत भली। बच्चे को यह बात चुभ गई। वह कुएं की ओर चल पड़ा। वह कुएं में कूदता कि उसे एक बुजुर्ग ने पकड़ लिया। उन्होंने बच्चे को समझाया कि मुझे पता है, तुम आंखें न होने से दुखी हो। अपनी संकल्प शक्ति बढ़ाओ। वह करो, जो आंखवाले भी नहीं कर सकते। बच्चे ने पूछा कि संकल्प शक्ति क्या होती है? बुजुर्ग बोले कि तुम एक बार तय कर लो कि क्या चाहिए, फिर उसके लिए अपनी सारी ताकत लगाकर उसे पाने का प्रयास करो। यही संकल्प शक्ति है। बच्चे के मन में यह बात बैठ गई। वहां से लौटकर उसने पूरी कुरान सहित कई किताबें रट डाली। पढ़ते-पढ़ते एक दिन उसने काहिरा विद्यापीठ से डॉक्टरेट प्राप्त कर ली। इसके बाद तो उसने जिस बेहतरीन साहित्य की रचना की, समूचा मिस्र आज तक उसपर गर्व करता है। बाद में वह बच्चा मिस्र का बड़ा साहित्यकार होकर मंत्री भी बना। यह बच्चा था ताहा हुसैन, जिसे यूनेस्को में डायरेक्टर जनरल के पद के लिए बुलाया गया था, मगर मिस्र ने अपने इस हीरो को भेजने से इनकार कर दिया। ताहा हुसैन का जीवन बताता है कि खुद पर भरोसा करो और जग जीत लो।

१३५६) समस्या किसकी? - एक व्यक्ति को यह आशंका हुई कि उसकी पत्नी कुछ ऊंचा सुनने लगी है। उसे लगा कि उसकी पत्नी को सुनने की मशीन लगवाने की आवश्यकता है। उसने अपने पारिवारिक डॉक्टर से संपर्क किया। डॉक्टर ने उसे पत्नी की बहरापन जांचने के लिए आसान घरेलू उपाय बताया- तुम ४० फुट दूर से खड़े होकर अपनी पत्नी से उस तरह बात करो जैसे उसके नजदीक ही खड़े हो, और देखो कि वह तुम्हें सुन पा रही है या नहीं। यदि नहीं तो ३० फुट की दूरी से बात करो, फिर २० फुट और इसी तरह पास आते जाओ जब तक कि तुम्हें जवाब न मिले। उसी शाम उसकी पत्नी किचन में खाना पका रही थी और वह दूसरे कमरे में था। वह अपने आप से बोला- मैं लगभग ४० फुट दूर हूं। देखते हैं क्या होता है? फिर उसने सामान्य स्वर में अपनी पत्नी से पूछा- अजी सुनती हो, आज क्या बना रही हो? कोई उत्तर नहीं मिला। तब पतिदेव किचन की ओर बढ़े। किचन से लगभग ३० फुट की दूरी से उसने फिर पूछा- अजी सुनती हो, आज क्या बना रही हो? अभी भी कोई उत्तर नहीं मिला। फिर वह किचन के दरवाजे तक यानि पत्नी से १० फुट की दूरी तक

पहुंच कर बोला- अजी आज क्या बना रही हो? तब भी कोई उत्तर नहीं मिला। तब वह पत्नी के ठीक पीछे जाकर चिल्लाया- आज क्या बना रही हो? पत्नी ने उत्तर दिया- पांचवी बार बता रही हूं कि मैं खिचड़ी बना रही हूं।

१३५७) असली सुख - चींटी हर समय काम करती रहती थी। उसे काम करते अकर्मण्य कछुआ देखता रहता था। एक दिन चींटी अपने परिवार के लिए खाना लेने बाहर गई हुई थी। लौटकर आई, तो देखा कि कछुआ उसके बिल के ऊपर पत्थर बना बैठा हुआ है। चींटी ने उसके खोल पर दस्तक दी, तो उसने मुंह निकाला। चिढ़कर बोला- क्या है? चींटी बोली- यहां मेरा घर है, यहां से हट जाओ। कछुए ने कहा- देखती नहीं, मैं आराम कर रहा हूं। मुझे यहां से कोई नहीं हटा सकता। जाओ, मेरी तरह जाकर आराम करो। चींटी तो मेहनती थी। उसने कछुए के पास से बिल बनाया और जमीन के भीतर-भीतर अपने बिल में चली गई। चीटियां संगठित होकर कछुए के नीचे पहुंच गईं और उसे बेतरह काटने लगीं। आखिरकार चींटियों के प्रहार से बचने के लिए कछुए को आलस त्याग कर वहां से हटना ही पड़ा। चींटी आकर बोली- अब बताओ, तुम्हें सुख किसमें मिला? चींटियों से कटते रहने में या अपने हाथ-पांव हिलाकर वहां से हटने में?

१३५८) बेकार का ज्ञान - एक व्यापारी एक अनजान व्यक्ति को व्यवसाय में साझेदार बनाना चाहता था। उसने तसल्ली करने के लिए अपने एक मित्र से उसके बारे में पूछा कि वह कैसा आदमी है? मित्र उस आदमी को जानता था। जिसे व्यापारी साझेदार बना रहा था, वह वास्तव में ठग था। लेकिन मित्र ठहरा शास्त्रों का ज्ञाता, वह दूसरे की बुराई कैसे कर सकता था? उसने शास्त्रों में पढ़ा था कि किसी की बुराई मत करो। उसके दोष बताना तो परनिंदा होगी। उसने ठग की प्रशंसा कर दी कि वह जिसके साथ काम करता है, उस पर अपना विश्वास जमा लेता है। सज्जन की बात पर विश्वास करके व्यापारी ने उसे साझेदार बना लिया। साझेदार ने मीठी-मीठी बातें करके व्यापारी पर विश्वास जमाया और दो महीने में ही सब कुछ लेकर चंपत हो गया। व्यापारी मित्र के पास गया। बोला- तुमने झूठ क्यों बोला? उसने कहा कि मैंने तो झूठ नहीं बोला। वह ज्यादा समय तक सच्चाई और ईमानदारी से विश्वास जमाता था, धोखा तो वह मात्र आखिरी दिन ही देता था। मैं सज्जन व्यक्ति हूं, किसी की निंदा करना तो पाप है। व्यापारी बोला- वाह मित्र, तुम्हारे इस कथित शास्त्रज्ञान और सज्जनता ने तो मेरी लुटिया ही डुबो दी। अगर आपके ज्ञान से किसी का अहित होने की आशंका हो, तो वह ज्ञान किसी काम का नहीं।

१३५९) एक उपदेश, कई मतलब - एक समय की बात है। भगवान बुद्ध एक शहर में प्रवचन दे रहे थे। उन्होंने प्रवचन के बाद आखिर में कहा, जागो। समय हाथ से निकला जा रहा है। इस तरह उस दिन की प्रवचन सभा समाप्त हो गई। सभा के बाद तथागत ने अपने शिष्य आनंद से कहा, थोड़ी दूर घूमकर आते हैं। आनंद, भगवान बुद्ध के साथ चल दिए। अभी वे विहार के मुख्य द्वार तक ही पहुंचे थे, लेकिन वहीं पर रुक गए।

प्रवचन सुनने आए लोग बाहर निकल रहे थे, इसलिए भीड़ का माहौल था। वे दोनों भीड़ कम होने का इंतजार करने लगे। इसी बीच उस भीड़ से निकल कर एक स्त्री भगवान बुद्ध के नजदीक आई और उसने हाथ जोड़कर कहा, तथागत। मैं नर्तकी हूं। आज नगर के श्रेष्ठी के घर मेरे नृत्य का कार्यक्रम पहले से तय था, लेकिन मैं उसके बारे में भूल चुकी थी। यहां जैसे ही आपने कहा कि जागो समय निकला जा रहा है, मुझे तुरंत इस बात की याद आई कि मुझे कार्यक्रम में जाना

है। उसके बाद एक डाकू भगवान बुद्ध से मिला और उसने कहा, तथागत। मैं आपसे कोई बात छिपाऊंगा नहीं। मैं भूल गया था कि आज मुझे एक जगह डाका डालने जाना था, पर आज उपदेश सुनते ही मुझे अपनी योजना याद आ गई।

इस तरह एक बूढ़ा व्यक्ति भगवान बुद्ध के पास आया और उसने कहा, तथागत। जिंदगी भर दुनिया भर की चीजों के पीछे भागता रहा। अब मौत का समाना करने का दिन नजदीक आता जा रहा है, अब मुझे लगता है कि सारी जिंदगी यूं ही बेकार हो गई। आपकी बातों से आज मेरी आंखें खुल गई। आज से मैं अपने सारे मोह छोड़कर निर्वाण के लिए कोशिश करूंगा। जब सब लोग चले गए तब भगवान बुद्ध ने कहा, आनंद। ध्यान दो, प्रवचन मैंने एक ही दिया, लेकिन उसका हर किसी ने अलग-अलग मतलब निकाला।

१३६०) बच्चों के सखा नेहरू - यह प्रसंग तब का है जब जवाहरलाल नेहरू बच्चे थे। एक दिन उन्होंने देखा कि सामने मैदान में कुछ बच्चे गेंद से खेल रहे थे। खेलते-खेलते गेंद उछलकर लकड़ी के एक खोल में जा गिरी। खोल का मुंह छोटा था, इसलिए बच्चों से बहुत कोशिश के बाद भी गेंद नहीं निकल पा रही थी। हालांकि जवाहरलाल उन बच्चों के खेल में शामिल नहीं थे, लेकिन उनके तेज दिमाग ने बच्चों की परेशानी का हल ढूंढ लिया। उन्होंने उन बच्चों से दो बाल्टी पानी लाने को कहा और पानी लकड़ी के उस खोल में भर दिया। पानी भरते ही गेंद ऊपर आ गई और उन्होंने गेंद निकालकर बच्चों को दे दी। सभी बच्चे बालक जवाहरलाल की बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित हुए।

नेहरूजी का बच्चों से और बच्चों का भी नेहरूजी से हमेशा जुड़ाव बना रहा। एक बार प्रधानमंत्री नेहरू बाल मंदिर गए। बच्चे उन्हें देख खुश हो गए। उन्हें क्या वास्ता प्रधानमंत्री पद से जुड़े तामझाम से। एक चार साल की बालिका उनके पास आई और कहने लगी कि आप भी हमारे साथ नाचिए। पंडित जी ने उसे बहलाने की बहुत कोशिश की लेकिन उस बच्ची ने जिद पकड़ ली। उसके साथ कई अन्य बच्चे भी आ गए। आखिरकार जब लगा कि अनुरोध ठुकराने से बच्चे मायूस हो जाएंगे तो पंडित जी ने प्रोटोकॉल को दरकिनार करने का फैसला किया और उन बच्चों के साथ बच्चा बनकर नाचे।

जब दिवाली का मौका होता तो वे अपने नाती राजीव और संजय के बाल मित्रों को आनंद भवन बुलाते और उनके साथ दिवाली मनाते हुए कहते कि बच्चों खूब उत्साह से दीपावली मनाओ और खुशियां बांटो। कभी-कभी वह इलाहाबाद में दिवाली की रात बाहर का नजारा देखने निकल पड़ते और रास्ते में गरीब बच्चों को मिठाइयां, नए कपड़े आदि देते हुए उनकी दिवाली रोशन करते चलते।

१३६१) कर्त्तव्य पालन का पाठ - उन दिनों गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध सत्याग्रह चला रहे थे। भारतीयों के साथ होनेवाले अपमान को वह अहिंसा और शांति से सुलझाना चाहते थे। वह ट्रेन से कहीं जा रहे थे। उनके डिब्बे में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। वह बार-बार ट्रेन में थूक रहा था। गांधी जी ने उसे कुछ नहीं कहा, लेकिन वह जब भी थूकता, गांधीजी एक कपड़े से थूक को पोंछ कर साफ कर देते। उसे गांधी जी पर क्रोध आया।

उसने सोचा कि यह सफाई पसंद आदमी बिना कुछ कहे थूक पोंछकर मुझे नीचा दिखाने पर तुला हुआ है। उसने फिर थूक दिया। गांधीजी ने बिना कुछ कहे चुपचाप थूक को साफ कर देते। इसी बीच स्टेशन आ गया। थूकनेवाले व्यक्ति ने

देखा कि प्लैटफॉर्म पर काफी भीड़ लगी हुई है और वातावरण गांधीजी की जय के नारों से गूंज रहा है। उसने चारों ओर देखकर गांधीजी को खोजने की कोशिश की। उसने देखा कि कुछ देर बाद थूक पोंछनेवाला व्यक्ति डिब्बे से नीचे उतरा तो सभी लोग गांधीजी की जय करते हुए उन्हें घेरकर खड़े हो गए। अब तो उस व्यक्ति को यह समझने में देर न लगी कि यही व्यक्ति गांधीजी हैं। वह पूरी भीड़ के सामने उनके पैर पकड़ कर रोने लगा और उनसे माफी मांगने लगा। उस व्यक्ति को पश्चाताप करते देख गांधीजी ने उसे उठाया और बोले, क्षमा की कोई बात नहीं है, मैंने अपना कर्त्तव्य पालन किया है। ऐसा अवसर आने पर तुम भी ऐसा ही करना। गांधीजी की बात सुनकर वह व्यक्ति बोला, जी गांधीजी, मैं अवश्य ऐसा ही करूंगा। आज आपने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी है। इसके बाद वह गांधीजी का भक्त बन गया।

१३६२) जीवन के हर अनुभव से लाभ उठाना चाहिए - एक विदेशी राजा ने भारत पर आक्रमण करना चाहा। उसने सोचा कि आक्रमण से पूर्व यह जान लेना चाहिए कि उस राजा के पास कोई बुद्धिमान व्यक्ति है या नहीं? उस राजा ने सुरमे की एक डिबियां देकर एक दूत भेजा। उस डिबिया में दो आंखों में ही लगाने लायक सुरमा था वह सुरमा अंधे को आंख देने में समर्थ था। दूत आया। दूत ने कहा, दो आंखों में ही आ जाये, इस डिबिया में इतना सा सुरमा है। हमें इसकी अधिक आवश्यकता है। आपके पास हो तो हमें दें या इस सुरमे के आधार पर कोई व्यक्ति ऐसा ही सुरमा बना सके तो हम उस आदमी को अपने साथ ले जाना चाहेंगे।

राजा ने मंत्रियों से सलाह ली। किन्तु ऐसा सुरमा कौन बना सके? किसी को समाधान नहीं आया। राजा ने सोचा, एक बूढ़ा मंत्री था, जो अभी सेवानिवृत्त हुआ है, उससे पूछा जाये। राजा ने उसे बुला भेजा। वह अंधा हो गया था। वह आया। मंत्री ने डिबिया ली। एक आंख में सुरमा लगाया। कुछ ही क्षणों बाद उसे दिखने लगा। जो शेष सुरमा बचा था, उसे अपनी जीभ पर रख लिया। स्वाद से उसने सुरमे के सारे द्रव्यों का विश्लेषण कर लिया। घर जाकर वैसा ही सुरमा बनाया। परीक्षण के लिए अपनी दूसरी आंख में उसे लगाया। आंख खुल गई। उसने शेष सुरमा डिबिया में भरकर दूत से कहा, जाओ, अपने सम्राट से कहना कि ऐसा सुरमा जितना चाहे यहां से मंगा लें। दूत गया। सम्राट को वृत्तांत सुनाया। सम्राट ने सोचा, जिस देश में ऐसे अनुभवी और वृद्ध रहते हैं, इतने बुद्धिमान मंत्री हैं, उस देश पर आक्रमण करना भयंकर भूल होगी। जीवन के हर अनुभव से लाभ उठाना चाहिए।

१३६३) लगन और लगातार मेहनत से ही लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है - विद्यालय में सब उसे मंदबुद्धि कहते थे। उसके गुरुजन भी उससे नाराज रहते थे क्योंकि वह पढ़ने में बहुत कमजोर था और उसकी बुद्धि का स्तर औसत से भी कम था। कक्षा में उसका प्रदर्शन हमेशा ही खराब रहता था और बच्चे उसका मजाक उड़ाने से कभी नहीं चूकते थे। पढ़ने जाना तो मानो एक सजा के समान हो गया था, वह जैसे ही कक्षा में घुसता और बच्चे उस पर हंसने लगते, कोई उसे महामूर्ख तो कोई उसे बैलों का राजा कहता, यहाँ तक की कुछ अध्यापक भी उसका मजाक उड़ाने से बाज नहीं आते। इन सबसे परेशान होकर उसने स्कूल जाना ही छोड़ दिया।

अब वह दिनभर इधर-उधर भटकता और अपना समय बर्बाद करता। एक दिन इसी तरह कहीं से जा रहा था, घूमते घूमते उसे प्यास लग गयी। वह इधर-उधर पानी खोजने लगा। अंत में उसे एक कुआं दिखाई दिया। वह वहां गया और

कुएं से पानी खींचकर अपनी प्यास बुझाई। अब वह काफी थक चुका था, इसलिए पानी पीने के बाद वहीं बैठ गया। तभी उसकी नजर पत्थर पर पड़े उस निशान पर गई जिस पर बार-बार कुएं से पानी खींचने की वजह से रस्सी का निशाँ बन गया था। वह मन ही मन सोचने लगा कि जब बार-बार पानी खींचने से इतने कठोर पत्थर पर भी रस्सी का निशान पड़ सकता है तो लगातार मेहनत करने से मुझे भी विद्या आ सकती है। उसने यह बात मन में बैठा ली और फिर से विद्यालय जाना शुरू कर दिया। कुछ दिन तक लोग उसी तरह उसका मजाक उड़ाते रहे पर धीरे-धीरे उसकी लगन देखकर अध्यापकों ने भी उसे सहयोग करना शुरू कर दिया।

१३६४) सबसे स्वादिष्ट खाना - एक राजा की चार रानियां थीं। एक दिन प्रसन्न होकर राजा ने उन्हें वरदान मांगने को कहा। रानियों ने कहा कि समय आने पर वे मांग लेंगी। कुछ समय बाद राजा ने एक अपराधी को मृत्युदंड दिया। बड़ी रानी ने सोचा कि इस मरणासन्न व्यक्ति को एक दिन का जीवनदान देकर उसे उत्तम पकवान खिलाकर खुश करना चाहिए। उन्होंने राजा से प्रार्थना की- मेरे वरदान के रूप में आप इस अपराधी को एक दिन का जीवनदान देकर उसे उत्तम पकवान खिलाकर खुश करना चाहिए और उसका आतिथ्य मुझे करने दें। रानी की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। रानी ने अपराधी को स्वादिष्ट भोजन कराया। किंतु अपराधी ने उस राजसी खाने में कोई खास रूचि नहीं ली। दूसरी रानी ने भी वही वरदान मांगा और अपराधी को स्वादिष्ट भोजन कराया। किंतु अपराधी ने उस राजसी खाने में कोई खास रुचि नहीं ली। अपराधी को एक दिन का जीवनदान और मिल गया। दूसरी रानी ने खाना खिलाने के साथ उसे सुंदर वस्त्र भी दिए। पर अपराधी असंतुष्ट रहा। तीसरे दिन तीसरी रानी ने फिर वही वरदान मांगकर उसके नृत्य संगीत की व्यवस्था भी की। किंतु अपराधी का मन तनिक भी नहीं लगा। चौथे दिन सबसे छोटी रानी ने राजा से प्रार्थना की कि मैं वरदान में चाहती हूं कि इस अपराधी को क्षमादान दिया जाए। रानी की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। उस रानी ने अपराधी को सूखी रोटियां व दाल खिलाई, जिन्हें उसने बड़े आनंद से खाया। राजा ने अपराधी से इस बारे में पूछा तो वह बोला- राजन्, मुझे तो छोटी रानी की रूखी-सूखी रोटियां सबसे स्वादिष्ट लगीं, क्योंकि तब मुझे मृत्यु का भय नहीं था। उससे पहले मौत के भय के कारण मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

१३६५) स्टीव, मोनिका और मैनेजर - मोनिका काफी दिनों से देख रही थी कि स्टीव मैनेजर की हिटलिस्ट पर था। वह जो भी करे, उसका मैनेजर कभी खुश नहीं होता था। आम तौर पर सारे कर्मचारी पांच बजे निकल जाया करते थे। पर स्टीव को मैनेजर अक्सर देर रात तक रोक लिया करता था। फिर भी स्टीव के चेहरे पर कोई शिकन नजर नहीं आती थी। एक दिन मैनेजर दफ्तर से जल्दी निकल गया, तो मोनिका ने स्टीव की मदद करने का प्रस्ताव रखा। दोनों ने मिलकर काम जल्दी खत्म कर लिया और फिर साथ बैठकर कॉफी पीने लगे। उसी दौरान मोनिका ने पूछा, तुम पर मैनेजर इतनी ज्यादती करता है, पर तुम कभी आवाज नहीं उठाते। तुम्हें अपने हक की लड़ाई लड़नी चाहिए। स्टीव बोला, जब मैं छोटा था, तो मेरा पढ़ाई में मन नहीं लगता था। क्लास में नंबर कम आते थे, तो शिक्षक नाराज रहा करते थे। दसवीं तक पहुंचते-पहुंचते सभी शिक्षक मुझसे नाराज रहने लगे थे। इसका खामियाजा भी मुझे भुगतना पड़ा, क्योंकि मैंने बोर्ड की परीक्षा तो पास कर ली, पर मेरे इंटरनल नंबर बहुत कम हो गए। पिता जी ने हमेशा की तरह कहा कि जो काम तुमने शुरू किया

है, उसे तुम्हें खत्म करना ही पड़ेगा। उधर शिक्षकों ने ठान लिया था कि बारहवीं में मुझे पास नहीं होने देंगे। पर मैंने भी अच्छे नंबर लाने की ठान ली। मैंने दिन-रात मेहनत की और अंतत: पूरे शहर में टॉप किया। मैं यही कहना चाहता हूं कि सिर्फ लड़ाई से हर जंग नहीं जीती जाती। मैं चाहूं तो मैनेजर से लड़ सकता हूं, पर मुझे उनसे लड़ना नहीं, उनका दिल जीतना है। वह थोड़े दिन मुझे ज्यादा काम देंगे, मुझ पर दबाव डालेंगे, पर उनका यही रवैया उन्हें मेरे काम पर निर्भर बनाता जाएगा और अगर ऐसा न हुआ, तो यह तो तय है कि मेरा अनुभव सबसे ज्यादा होगा। मोनिका मुस्कराई और बोली, अंधियारी गली के आगे तुमने एक रोशन सुबह ढुंढ ली है। हर लड़ाई लड़कर नहीं जीती जा सकती, कुछ लड़ाइयां हारकर भी जीती जाती है।

१३६६) भय और साहस - अभी-अभी ओशो का एक बहुत बढ़िया वक्तव्य पढ़ा-साहस भय की अनुपस्थिति नहीं है, भय पूरी तरह से मौजूद होने के बावजूद उसका सामना करना साहस है।

यह एक पहेली सी है कि भय का सामना कैसे करें? कॉमन सेंस कहता है कि जहां भय है, वहां से बचो और कोई दूसरा काम करो। इससे भय विलीन नहीं होता, उल्टे वह किसी और शक्ल में आ जाता है। क्लीवलैंड, अमेरिका के बॉस्केट बॉल खिलाड़ी कायरी अरविंद कहते हैं, उन पर इतना बोझ होता है जिसका हमें कोई अंदाजा नहीं होता। सबसे बड़ा बोझ है जीतने का, और भय है हारने का। उससे भी बड़ा भय होता है- लोग क्या कहेंगे इस बोझ के तले दबकर कोई खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएगा। अरविंद अपने भय पर काम कर रहे थे, तब उनके हाथ ओशो की किताब आई, करैज अर्थात साहस। साहस से हम इसलिए बचते हैं, क्योंकि साहस खतरे में, अज्ञात में और असुविधा में जीना सिखाता है।

जबकि हमारे मन की आदत है कि जो परिचित है या जो ज्ञात है, उसे पकड़े रखना। ऐसे जीने से ही ऊब पैदा होती है। केवल यंत्र इस तरह काम करते हैं, मनुष्य नहीं। मनुष्य का विकास होता है चित्त दशा को बदलने से। अरविंद ने ऐसा ही किया और अपनी पूरी टीम को सिखाया कि हारने का भय, बदनामी का भय, अच्छा न खेलने का भय इन सबको कैसे छोड़ा जाए? सिर्फ खेलने पर ध्यान को केंद्रित करें। जो भी टीम खेलने का आनंद लेती है, वह इतनी संतुष्ट हो जाती है कि हार-जीत उसके सामने बिल्कुल ही तुच्छ मालूम होती है। इस तरह खेलने से अरविंद की टीम जीत गई।

१३६७) सेठ और किसान - एक व्यक्ति को अपनी दौलत का कुछ ज्यादा ही घमंड हो गया। वह प्राय: अपने बेटे से कहता कि सुख-सुविधा के जितने साधन मेरे पास हैं, उतने अन्य किसी के पास नहीं हैं। बेटे से वह कहता कि तुम गांवों की हालत देखोगे, तो तुम्हें पता चलेगा कि लोग कितने अभावों में दिन काटते हैं। एक दिन वह बेटे को अपनी कार में बिठाकर एक गांव में ले गया और वहां एक परिचित किसान के घर पहुंचा। किसान ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया। मिट्टी की हांड़ी में रखा गर्म दूध उसे पिलाया। ताजा मक्खन, मट्ठा और सब्जी के साथ गर्म-गर्म रोटियां खिलाईं। सेठ जब लौट रहा था, तब उसकी कार में गुड़ व गन्ने रख दिए। वापसी में सेठ ने बेटे से पूछा, तुमने गांव की हालत देखी? तुम्हें कैसा लगा? बेटे ने कहा, पिताजी, हमारे घर में एक कुत्तरा है, किसान के घर में चार गाएं और बैल बंधे हैं। उसके बच्चे ताजा हवा में झूले झूलकर किलकारियां मार रहे थे। हमारी कोठी के पिछवाड़े एक छोटा-सा स्विमिंग पूल है, जबकि किसान के घर के पास नदी बह रही थी। हम फ्रिज में रखी सब्जियों कई-कई दिन तक खाते हैं, जबकि उसने ताजा सब्जियों से भोजन कराया। शहर में हम एकाकी जीवन बिताते हैं, लेकिन जब हम उस किसान के घर पहुंचे थे, तो गांव

के कई लोग हमारे स्वागत में खड़े थे। उस किसान का प्रेमपूर्ण व्यवहार देख मुझे लगा कि हमारे मुकाबले वे अच्छे इंसान हैं और अमीर भी। बेटे की बात सुन सेठ का अहंकार दूर हो गया। उसने खुद को अमीर कहना छोड़ दिया।

१३६८) तगड़े का झगड़ा - बात उन दिनों की है जब गिनती १ से लेकर ९ तक हुआ करती थी क्योंकि १० तब तक बना नहीं था। इस तरह सबसे बड़ा अंक ९ था। सबसे बड़ा होने के कारण वह सभी पर अपना रौब जमाता था। एक दिन गिनती के इन अंकों में किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। सभी अंक अपने से छोटों को पीटने लगे। इस झगड़े की शुरुआत की ९ ने। उसने अपने से छोटे ८ को पीट डाला। ८ ने गुस्से में ७ को मारा।

मार खानेवाले ७ ने इसका बदला अपने से छोटे ६ से निकाला। इसी तरह ६ ने ५ को, ५ ने ४ को, ४ ने ३ को और ३ ने २ को पीट दिया। अब बारी आई १ की। जब २ ने १ को पीटा तो वह बेचारा परेशान हो गया। अब डरने की बारी शून्य की थी क्योंकि १ से छोटा अब शून्य ही बचा था। १ ने सोचा क्यों न इस झगड़े को शून्य के साथ मिलकर यहीं दबा दिया जाए। यह सोचकर १ पहुंचा शून्य के पास। उसने शून्य से कहा, क्यों न हम दोनों मिल-जुलकर साथ रहें। झगड़ने से कुछ नहीं होगा। चलो, तुम अब मेरे साथ रहो।

मार खाने के बारे में सोच-सोचकर बेचारा शून्य बुरी तरह डरा हुआ था। उसने फट से १ की बात मान ली। दोनों ने हाथ मिला लिया। १ और शून्य मिलकर अब १० बन गए थे। दोनों की दोस्ती ने मिलकर सबसे बड़ा अंक बना दिया था। अब डरने की बारी ९ की थी। झगड़े की शुरुआत करनेवाला बेचारा ९ अब डर के मारे शांत हो गया। उसे पता था कि उसकी दादागिरी अब खत्म हो चुकी है।

बेशक १ और शून्य ने साथ मिलकर सभी को बता दिया था कि मिलकर बड़ा बना जा सकता है। इस तरह हम मिलकर और भी नंबर्स बनाए जा सकते हैं, इसलिए हमें बिना झगड़े एकसाथ रहना चाहिए।

१३६९) तुलसी की पत्नी - तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली से बहुत प्रेम करते थे और उनपर अत्यधिक मुग्ध थे। पत्नी के प्रति उनकी आसक्ति की एक रोचक कथा बहुत प्रचलित है। श्री रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास एक बार उनकी पत्नी मायके गई हुई थीं तो तुलसीदास वर्षा ऋतु में एक घनघोर अंधेरी रात जब मूसलाधार बरसात हो रही थी अपनी पत्नी से मिलने के लिए चल दिए। मार्ग में उफनती नदी पड़ती थी। नदी में एक तैरती लाश को नाव समझकर नदी पार कर गए। तत्पश्चात जब पत्नी के मायके पहुंचे तो खिड़की पर लटके सांप को देख उन्होंने सोचा शायद उनकी पत्नी ने उन्हीं के लिए रस्सी लटका रखी है यथा सांप को रस्सी समझकर घर की छत पर चढ़ गए। तुलसीदास की पत्नी रत्नावली बड़ी विदुषी थी, अपने पति के इस कृत्यों से बहुत लज्जित हुई और उन्होंने तुलसीदास को ताना देते हुए कहा- जितनी आसक्ति मेरे हाड़-मांस की देह से है, उसकी आधी भी भगवान राम के प्रति होती तो भवसागर से पार हो जाते। तुलसीदास ने पत्नी के इस उलाहने को गंभीरता से लिया। इस उलाहने ने गोस्वामी तुलसीदास की जीवन दिशा और दशा परिवर्तित कर डाली। इसके पश्चात वह राम भक्ति में ऐसे रमे कि बस राम के ही हो गए।

१३७०) अच्छा कौन - एक ट्रेन में चार यात्री यात्रा कर रहे थे। उनमें एक बंगाली, एक तमिल, एक एंग्लो-इंडियन तथा एक हिंदी भाषी था। वे लोग अपनी-अपनी भाषा पर बात कर रहे थे। बंगाली महोदय बोले, बांग्ला सबसे मीठी भाषा

है। इसने भारतीय साहित्य को अत्यंत उच्चकोटि के साहित्य से समृद्ध किया है। तमिल-भाषी महोदय बोले, तमिल भाषा बहुत प्राचीन है। इसका साहित्य बहुत उच्चकोटि का है। इसका प्रादुर्भाव तब हुआ था, जब आर्य-भाषा निम्न स्तर में थी। एंग्लो इंडियन महोदय भला कैसे चुप रहते, वह बोले, अंग्रेजी सबसे अच्छी, सबसे सरल भाषा है। यह लगभग पूरे विश्व में बोली एवं जानी जाती है। इसका साहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसका दूसरी भाषाओं से क्या मुकाबला। अब चौथे यात्री की बारी थी। वह किसी हिंदी-भाषी क्षेत्र के ग्रामीण रहे होंगे, बोले, आप लोगों की बातें सही हैं, मगर आप लोग बातें तो हिंदी में कर रहे हैं। बाकी तीनों एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

१३७१) शहर के दरवाजे, जुबान पर ताले - एक समय एक राजा राज्य करता था जिसकी बुद्धिमत्ता, चातुर्य और राज्य कौशल चतुर्दिक प्रसिद्धि के शिखर पर था। राज्य धन्य-धान्य से परिपूर्ण था और चहुंओर खुशहाली का साम्राज्य था। राजा का वजीर एक बार राज्य भ्रमण पर निकला। यात्रा से वापस आकर उन्होंने राजा से कहा- राजन। आपकी प्रसिद्धि चतुर्दिक है, दुनिया के तमाम अन्य राजा महाराजा आपकी बुद्धिमत्ता और राज्य कौशलता का लोहा मानते हैं और चहुंओर लोग आपकी तारीफ करते हैं। राज्य भी धन्यधान्य से परिपूर्ण और खुशहाल है। मगर फिर भी कुछ लोग मुझे ऐसे मिले जो आपकी बुराई करते हैं, आपके बारे में फूहड़ चुटकुले सुनाते हैं और आपके बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णयों की खिल्ली उड़ाते हैं। ऐसा कैसे है राजन? राजा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया- राज्य की तमाम जनता को मालूम है कि राजा उनके लिए क्या करता है। रहा सवाल जबान का, तो मैं राज्य के बाहरी रास्तों पर बने हुए दरवाजों को तो बंद कर उन पर ताले लगवा सकता हूं, मगर मनुष्य की जुबान पर नहीं और उनकी ये जुबानें मुझे सदैव उत्तम कार्य करते रहने को प्रेरित करती रहती हैं कि शायद कभी उनकी जुबान बदल जाएं।

१३७२) एक से बढ़कर एक - एक बार एक हाथी और बंदर में लड़ाई हो गई। दोनों में जब कुछ तय न हुआ तो दोनों उल्लू के पास पहुंचे। बंदर ने कहा, श्रीमान, हमारा फैसला कीजिए। हम दोनों में झगड़ा हो गया है। हाथी कहता है वह बड़ा बलवान है, मैं कहता हूं कि मैं बड़ा फुर्तीला हूं। आप यह तय कर दीजिए कि बलवान होना अच्छा होता है या फुर्तीला होना। उल्लू ने कहा, मैं जैसा कहूं वैसा कीजिए। नदी के पार वह आम का पेड़ देख रहे हो न। बस, जो भी उस पेड़ से आम तोड़ लाए, वही बड़ा। बंदर और हाथी दोनों नदी के किनारे पहुंचे। पानी की धार तेज थी। बंदर देखते ही डर गया। यह देखकर हाथी गर्व से फूला न समाया। व्यंग्य से बोला, कहो, कैसे मिजाज है? नदी पार करो तो जानूं। अच्छा, चलो, मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं बड़ा हूं, बहादुर हूं। मुझे नदी पार करते डर नहीं लगता। बंदर चट हाथी की पीठ पर बैठ गया और देखते ही देखते दोनों नदी पार जा पहुंचे, पर जैसे ही दोनों आम के पेड़ के नीचे पहुंचे, पेड़ की ऊंचाई देख हाथी के छक्के छूट गए। पर बंदर छलांग लगाकर पेड़ पर जा चढ़ा और आम तोड़ लाया। फिर मुस्कराकर हाथी से बोला, कहो हाथी भाई, कहां गई तुम्हारी बहादुरी? बताओ। अगर मैं न होता तो क्या तुम आम तोड़ सकते थे? हाथी खामोश हो गया। दोनों वापस उल्लू के पास आए। उल्लू ने सब बातें सुनीं, फिर बोला, यदि हाथी नदी न पार करवाता तो बंदर आम तोड़कर नहीं ला सकता था। हाथी भाई, तुम अगर भारी भरकम और बहादुर हो तो बंदर बहुत फुर्तीला है। कोई किसी से कम नहीं है। मेल जोल से ही काम बनता है।

१३७३) मैया से बचाने की शर्त - कृष्ण की शरारतों से तंग आकर यशोदा ने छड़ी उठाई और कृष्ण की ओर दौड़ी। प्रभु ने मां को क्रोध में देखा, तो बचाव करने के लिए भागे। भागते हुए कृष्ण एक कुम्हार के पास पहुंचे। कुम्हार ने कृष्ण को देखा, तो बहुत खुश हुआ। प्रभु ने कुम्हार से कहा कि मेरी मैया मुझ पर बहुत क्रोधित हैं। छड़ी लेकर आ रही हैं। भैया, आप मुझे कहीं छिपा लो।

कुम्हार ने कृष्ण को मटके के नीचे छिपा दिया। यशोदा वहां आई, तो कुम्हार से कृष्ण के बारे में पूछा। कुम्हार ने साफ मना कर दिया। कृष्ण सब सुन रहे थे। मैया चली गई, तो कुम्हार ने कृष्ण से मटके से बाहर निकलने के लिए कहा। कुम्हार ने अपने और परिवार के लिए मोक्ष मांगा। कृष्ण ने कहा तथास्तु। कुम्हार ने कहा कि एक इच्छा और है- जो भी प्राणी हम दोनों के इस संवाद को सुनेगा, उसे भी मुक्ति मिले, कृष्ण कुम्हार की भावना से बहुत खुश हुए और उसकी इस इच्छा को भी पूरा करने का वचन दिया। कुम्हार ने श्रीकृष्ण को घड़े से बाहर निकाल दिया। साष्टांग प्रणाम किया।

चरण धोए और पूरी झोपड़ी में चरणामृत का छिड़काव किया। कथा सुनाते हुए डोंगरे महाराज ने कहा कि जो बालकृष्ण सात कोस लंबे-चोड़े गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगली पर उठा सकते हैं, क्या वह एक घड़ा नहीं उठा सकते थे। लेकिन कोई कितने भी यज्ञ, अनुष्ठान, दान पुण्य करे, जब तक मन में निश्चल प्रेम नहीं होगा, भगवान नहीं मिलते।

१३७४) भेड़िया और बकरा - एक भेड़िए ने एक बकरे का पीछा किया। बकरा कूदकर एक ऊंची चट्टान पर जा छिपा। भेड़िया चालाक था। उसी चट्टान के नीचे दुबका हुआ वह बकरे के नीचे उतरने की प्रतीक्षा करता रहा। लगातार तीन दिन, तीन रात प्रतीक्षा करने के बाद भेड़िया ऊंची आवाज में बोला, मुझे भूख लगी है। चलूं, चलकर कुछ दाना-पानी का जुगाड़ करूं। बकरे ने जैसे ही भेड़िए की बात सुनी और उसे जंगल की तरफ जाता हुआ देखा, फौरन चट्टान से कूदकर नीचे आ गया। प्यास से उसका गला सूख रहा था। अत: सबसे पहले वह एक झरने पर जा पहुंचा। पानी पीते हुए सहसा उसका ध्यान अपनी परछाई पर गया वह बोला, वाह। क्या खूबसूरत टांगें हैं मेरी। दाढ़ी कितनी प्यारी है। और ये सींग? दूज के चांद जैसे खूबसूरत। ऊंह, आने दो उस भेड़िए को, मैं साबित कर दूंगा कि हम दोनों में कौन ज्यादा सुंदर हैं। तभी झाड़ियों के पीछे छिपा बैठा भेड़िया ठहाका मारता हुआ, अचानक बकरे पर झपटा और एक ही झपाटे में उसने बकरे का काम तमाम कर दिया। शरीर की सुंदरता से अच्छी दिमाग की स्वस्थता होती है।

१३७५) प्रसिद्ध सम्राटों की न्याय व्यवस्था - बलबन दिल्ली का एक महान सम्राट था। वह बहुत न्याय प्रेमी था। प्रजा के संग एक जैसा व्यवहार करता था। किसी को भी चाहे वह बड़ा अधिकारी ही क्यों न हो, दोषी सिद्ध होने पर कड़े से कड़ा दंड दिया जाता था। एक बार बदायूं के जागीरदार ने अपने नौकर को जान से मार डाला। बलबन की आज्ञा के अनुसार उसे ५०० कोड़े मारे गए।

एक बार अलाउद्दीन खिलजी ने प्रसिद्ध अधिकारी मालिक मकबूल को दस कोड़े मरवाए क्योंकि उसने अवैध रूप से अनाज के मूल्यों में वृद्धि की थी। मोहम्मद तुगलक पढ़ा-लिखा मूर्ख बादशाह था लेकिन फिर भी वह सभी धर्मों के लोगों को एक जैसा समझता था। एक बार उसने खुद अपने विरुद्ध फैसला होने पर इक्कीस कोड़े खाए थे। यह बात उसके न्याय प्रिय होने की सूचक है।

फिरोज तुगलक, सिकंदर लोधी, महमूद गावां भी न्याय करने में एक समान थे। शेरशाह सूरी तो खुद कहा करता था, न्याय सबसे उत्तम धार्मिक संस्कार है। शुजात खां जैसे बड़े अधिकारी भी अपराधी होने पर दंड से न बचे। एक बार शेरशाह ने अपने पुत्र आदिल की इतनी पिटाई की थी कि उसके पुत्र का खून बहने लगा था। उसके पुत्र का कसूर था आगरा के एक नागरिक की पत्नी को बुरी नजर से देखना। फांसी की सजा भी शेरशाह के काल में लागू थी।

जहांगीर के आगरे के किले में सोने की जंजीर से लटकी ६० घंटियां थीं। इन्हें बजाकर कोई भी दीन दुखी किसी भी वक्त न्याय की मांग कर सकता था। शाहजहां भी न्याय का गुलाम था। उसने तो बुधवार का दिन ही न्याय के लिए निश्चित कर रखा था। प्रत्येक अधिकारी पर कड़ी नजर होती थी। उसके दरबार में जहरीले सांपों की टोकरियां होती थीं। जहरीले सांपों द्वारा अधिकारियों को डरा कर उनसे जुर्म कबूल करवाया जाता था।

१३७६) बारह में से चार गए, कितने बचे? - अकबर के दरबार में आए दिन बौद्धिक क्षमता को परखा जाता था। एक दिन अकबर के दरबार में एक विद्वान को बुलाया गया। अकबर ने विद्वान से कहा, आप परीक्षा लें। कुछ देर विचार करने के बाद उस विद्वान ने दरबारियों से सवाल पूछा- महामनों, यदि बारह में से चार घटा दिए जाएं, तो क्या बचेगा। दरबार में मौजूद सभी सभासद मुंह पर हाथ रखकर हंसने लगे।

तभी विद्वान ने कहा- मैंने कोई हास्यास्पद बात तो नहीं की, बस एक छोटा-सा सवाल किया। आप सब उसका जवाब दीजिए। पहले दरबारी ने कहा- बादशाह सलामत, ऐसे बचकाने सवाल करके ये विद्वान या तो हमारी तौहीन कर रहे हैं या फिर अपनी बुद्धिमत्ता की सीमा बता रहे हैं। फिर भी इस सवाल का जवाब है आठ। बारह में चार घटाने पर आठ ही बचेंगे।

दूसरा दरबारी- सरकार- आठ। इसी तरह तीसरा, चौथा... करते करते सारे दरबारियों ने यही उत्तर दिया।

अब बारी थी बीरबल की। तभी बादशाह ने कहा- बीरबल आप बताएं। बीरबल ने कहा- कुछ भी नहीं बचेगा, सरकार। अकबर के साथ सारे दरबार चौंकते हुए बोले- क्या। जी हां, सरकार। वो बारह अंक अगर वर्ष के बारह महीने मान लिए जाएं और बारिश के चार महीने उनमें से घटा दिए जाएं, तो किसान के पास क्या बचेगा। पैदावर तो होगी नहीं। इसका मतलब वर्ष के बारह महीनों में से बारिश के चार महीने घटा दिए जाएं तो आम इंसान के पास कुछ नहीं बचेगा। आप विद्वान से ही पूछें, कि मैं सही हूं या नहीं। तभी विद्वान बोल पड़े बिल्कुल ठीक कहा आपने। मेरा प्रश्न बिल्कुल यही था। महाराज। आपके दरबार में सिर्फ बीरबल ही बुद्धिमान व्यक्ति है।

१३७७) नकल करने के लिए अकल की जरूरत - एक पहाड़ की तराई में बरगद के पेड़ पर एक कौआ रहता था। वह बड़ा चलाक और धूर्त था। उसकी कोशिश रहती थी कि बिना मेहनत खाने को मिल जाए। पेड़ के पास खोह में खरगोश रहते थे। खरगोश बाहर आते तो बाज ऊंची उड़ान भर एकाध खरगोश उठाकर ले जाते।

एक दिन कौए ने सोचा, इनका नर्म मांस खाना है तो मुझे भी बाज की तरह करना होगा। दूसरे दिन कौए ने भी खरगोश दबोचने की बात सोच उड़ान भरी। बाज की तरह झपट्टा मारा पर कौआ बाज का क्या मुकाबला करता। खरगोश ने उसे देख लिया और भागकर चट्टान के पीछे छिप गया कौआ चट्टान से जा टकराया। नतीजा, उसकी चोंच और गर्दन टूट गई और उसने वहीं तड़प कर दम तोड़ दिया। नकल करने के लिए भी अकल चाहिए।

१३७८) मिट्टी का दान - पुराने समय में एक संत अपने शिष्य के साथ भिक्षा मांगते-मांगते एक घर के बाहर पहुंचे। उन्होंने भिक्षा देने के लिए आवाज लगाई तो अंदर से एक छोटी बच्ची बाहर आई और बोली कि बाबा, हम बहुत गरीब हैं, हमारे पास देने को कुछ नहीं है। आप आगे जाएं। इसके बाद संत ने कहा कि बेटी, मना मत कर, कुछ नहीं है तो अपने आंगन की थोड़ी सी मिट्टी ही दे दे। छोटी बच्ची ने तुरंत ही आंगन से एक मुट्ठी मिट्टी उठाई और भिक्षा पात्र में डाल दी। संत ने बच्ची को आशीर्वाद दिया और आगे बढ़ गए। कुछ दूर चलने के बाद शिष्य ने संत से पूछा कि गुरुजी मिट्टी भी कोई लेने की चीज है? आपने भिक्षा में मिट्टी क्यों ली? संत ने शिष्य को जवाब दिया कि आज वह बच्ची छोटी है और अगर वह मना करना सीख जाएगी तो बड़ी होकर भी किसी को दान नहीं देगी। आज उसने दान में थोड़ी सी मिट्टी दी है, इससे उसके मन में दान देने की भावना जागेगी। जब कल वह बड़ी होकर सामर्थ्यवान बनेगी तो फल-फूल और धन भी दान में देगी।

इस छोटी सी कथा की सीख यही है कि बच्चों को बचपन से ही अच्छे काम करना सिखाना चाहिए। अगर बचपन से उन्हें अच्छे कामों के लिए प्रेरित करेंगे तो वे बड़े होकर अच्छे इंसान बनेंगे और बुराइयों से बचे रहेंगे। हम जब भी दान करें तो छोटे बच्चों से ही दान करवाना चाहिए। इससे वे दूसरों की मदद करना सीखेंगे।

१३७९) प्रेम की महिमा - एक शहर के आसपास जंगलों में एक विशालकाय भेड़िये का इतना आतंक छाया हुआ था कि वहां कोई रास्ता चलने का साहस नहीं करता था। एक संत ने उस भयानक जानवर का सामना करने का निश्चय किया। ज्यों ही वे जंगल के समीप पहुंचे, त्योंही भेड़िया मुंह फाड़े संत की ओर लपका, परन्तु संत ने शांतिपूर्वक एक संकेत किया और कहा, तूने इस देश को बहुत हानि पहुंचाई है। जो दंड हत्यारों को मिलना चाहिए, उसी दंड का तू अधिकारी है। सब लोग तुझसे घृणा करते हैं, परन्तु यदि तेरे और लोगों के बीच मैत्री स्थापित हो जाए तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। भेड़िये ने अपना सिर झुका लिया और वह अपनी पूंछ हिलाने लगा। इस प्रकार सच्चे दिल से दोनों में संधि स्थापित हो गई। उसके बाद वह भेड़िया उस नगर में दो वर्ष तक रहा और उसने इस बीच में कोई हानि नहीं पहुंचाई। नगरवासी भी उसके लिए प्रतिदिन भोजन लाते थे। जब उसकी मृत्यु हुई तो सबको दु:ख हुआ। वह भेड़िया कितना भी बुरा क्यों न प्रतीत होता हो, पर उसके अंदर एक ऐसी चीज थी, जिसे वास्तव में, तब तक किसी व्यक्ति ने नहीं जाना, जब तक संत ने उसे भाई कहकर संबोधित नहीं किया। इस कहानी में भेड़िया नि:संदेह एक बड़े अपराधी का दृष्टांत उपस्थित करता है, जिससे सब लोग घृणा करते हैं, परंतु यह हमें बताती है कि उन लोगों में भी, जिनसे किसी को कोई आशा नहीं होती, भलाई के कुछ ऐसे बीज होते हैं, जो तनिक-सा प्रेम पाकर फूट निकलते हैं।

१३८०) निरक्षर को पंडितजी बना दिया बीरबल ने - एक ब्राह्मण को पंडित बनने की बड़ी इच्छा थी। वह चाहता था कि किसी प्रकार पंडित बन जाये, लेकिन वह ब्राह्मण मूर्ख था। एक बार उसे बीरबल से मिलने का अवसर मिला। वह बीरबल से बोला महोदय मैं गैर पढ़ा लिखा ब्राह्मण हूं। पढ़ना-लिखना नहीं जानता, लेकिन पंडित बनना चाहता हूं।

बीरबल ब्राह्मण की बात सुनकर थोड़ा मुस्कुराये। वे समझ गये कि यह व्यक्ति किसी भी प्रकार पंडित बनना चाहता है। बीरबल बोले- भाई यह कैसी बात है, बगैर पढ़ा-लिखा व्यक्ति क्या पंडित बन सकता है? पंडित बनने के लिए तो ज्ञान प्राप्त करना बहुत जरूरी है। काफी समझाने के बाद भी वह ब्राह्मण अपनी जिद पर अड़ा रहा। वह बोला- दीवानजी, मैं अब ज्ञान

तो प्राप्त नहीं कर सकता, लेकिन मेरी पंडित बनने की इच्छा आप ही पूरी कर सकते हैं।

बीरबल समझ गये कि अब तो कुछ उपाय खोजना ही पड़ेगा। वे ब्राह्मण से बोले- देखो, मैं तुम्हें पक्का पंडित तो नहीं बना सकता, लेकिन ऐसा उपाय जरूर कर सकता हूं कि सब लोग तुम्हें पंडितजी कहने लगें। वह ब्राह्मण बड़ा प्रसन्न हो गया। वह बोला- ठीक है, ऐसा इंतजाम ही कर दीजिये। बीरबल ने कहा- तो फिर ऐसा करना एक-दो माह तक, जो भी व्यक्ति तुम्हें पंडित कहे, उसे मारने दौड़ना। ब्राह्मण के तैयार होते ही बीरबल ने कुछ बच्चों को समझाया कि बच्चों, जो सामने व्यक्ति दिखाई दे रहा है, इसे पंडितजी नाम से चिढ़ है।

इतना कहना था कि सब बच्चे उस मूर्ख ब्राह्मण को पंडितजी कहकर चिढ़ाने लगे। यह सुनकर वह ब्राह्मण बच्चों को मारने दौड़ता। बच्चों और कुछ बड़ों ने भी उस ब्राह्मण को पंडितजी-पंडितजी नाम से छेड़ना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में सभी लोग उस ब्राह्मण को पंडितजी कहने लगे। अब उस ब्राह्मण ने चिढ़ना बंद कर दिया था। इस तरह बीरबल ने एक मूर्ख ब्राह्मण को पंडित बना डाला।

१३८१) जैसी मिली संगत वैसा मिला सम्मान - बुद्धिमति और उसका पति मतिमंद एक गांव से दूसरे गांव जा रहे थे। चलते-चलते थक गए तो एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने बैठे। उनके बैठने की देर थी कि पेड़ पर बैठा तोता बोल पड़ा, शिकार आ गया है, जो भी पास है जब लूट लो और इन्हें बांधकर पटक दो। पेड़ से आती आवाज सुनकर मतिमंद घबरा गया। दोनों ने बैठकर साथ में लाया भोजन किया। फिर आगे बढ़े। कई कोस चल चुके। फिर थकान हावी होने लगी तो एक बार फिर छाया में डेरा डाला। जैसे ही वृक्ष के नीचे बैठे एक आवाज फिर आई, अतिथि आए हैं, इनका स्वागत करो। पूछो कि रास्ते में कोई परेशानी तो नहीं हुई। भोजन किया कि नहीं? इनके लिए शीतल जल लाओ। मतिमंद फिर घबरा गया और बुद्धिमति से बोला कि लगता है कोई भूत बनकर हमारा पीछा कर रहा है। कभी हमें डराता है तो कहीं भरमाता है। बुद्धिमति ने आवाज लगाई, तोता। मिर्ची खाएगा? देखते ही देखते एक तोता शाख से उतर आया और बुद्धिमति के हाथ से भोजन करने लगा। मतिमंद कुछ समझ नहीं पाया। बुद्धिमति ने कहा, ये एक नहीं दो तोते हैं, पहले हमें जो तोता मिला था उसे दुर्भाग्य से दुष्टों की संगत मिली होगी ओर इस तोते ने अपना जीवन साधुओं की संगत में निकाला है। जो सीखा, यह वही कर रहे हैं। मतिमंद समझ गया कि संगत के असर से बदली बोली ने एक तोते पर पत्थर फिंकवा दिया और दूसरे को भोजन मिला। आदमी की जैसी संगत होती है, वैसा उसका व्यवहार होता है और जैसा उसका व्यवहार होता है, वैास उसका सम्मान।

१३८२) मशाल बनते हुए - लड़का जिस उपेक्षित अंदाज से उठ खड़ा हुआ, उससे मुझे और पत्नी को अचंभा नहीं हुआ। लड़की अब भी सिर झुकाए बैठी थी। मैंने एकाएक निर्णय लिया कि अब किसी के आगे लड़की को चाय की ट्रे ले जाने को नहीं कहूंगा। लड़केवालों को विदा कर मैं लौटा तो पत्नी की आंखों में क्रोध और लड़की की सिसकियों से सहम गया। मैंने पत्नी को तसल्ली दी- तू तो खामाख्वाह परेशान हो रही है। लड़के ने शादी के लिए हाँ कर दी है पर। मैं तुम्हारा पर अच्छी तरह से जानती हूं। उस लड़की के बारे में सोचना छोड़ो। जहां भाग्य होगा, हो जाएगी शादी। हर बार दूकान से सौ- डेढ़ सौ का नमकीन, मीठा उधार लाते हो और। पत्नी अपनी नम आंखें धोती के पल्लू से पोंछने लगी। एकाएक लड़की ने घोषणा कर दी, पापा, मैं बी.एड. करूंगी। आपने मेरा एक साल यूं ही

बरबाद कर दिया। पर बी.एड. में कह देने से ही दाखिला हो जाएगा, बिना सिफारिश के कुछ नहीं होगा। बेटी के गाल पर आंसू सूख चले थें वह बोली- पापा, ये सब मुझ पर छोड़ दें। मैं डिग्री कॉलेज की प्रोफेसर के बच्चों को पढ़ाने जाती हूं। मिसेज ढींगरा मेरी मदद जरूर करेंगी। उसकी बात पर मैं चुप रहा तो मेरे कंधे पर सिर रखते हुए बोली- पापा, अपने काम पर ध्यान दो। मार्किट में फंसी अपनी उधारी निकालो। मेरी चिंता छोड़ो।

१३८३) रंगीन सियार - एक बार एक सियार जंगल में पास के गांव में चला गया और वहां के लोगों द्वारा भगाने से हड़बड़ी में सियार धोबी के रखे नाद में गिर गया जिसके पानी में रंग होने के कारण सियार रंगीन हो गया। फिर वापस सियार जंगल में आया तो सब सियार उससे डर के मारे इकट्ठा होने लगे और सब एक साथ एक उसके सामने आए तो सियार को अपने बदले हुए रंग का पता चला तो उसने तुरंत सभी सियारों से कहा कि मुझे देवदूतों ने आप सबका राजा बनाकर भेजा है इसलिए आज से मैं आप सबका राजा हूं। आप लोग मेरी सेवा करेंगे। सबने निश्चय किया कि अगर ये सियार एक साथ चिल्लाने लगे तो भला सभी सियार के चिल्लाने से अपनी आदत से मजबूर वह सियार भी उनके सुर में चिल्लाने लगा। तो सबके सामने उस सियार की पोल खुल गई और सब सियारों ने मिलकर उसको मार डाला। दुष्ट लोग चाहे कितने सज्जन बन जाएं लेकिन वे अपनी आदत को छोड़ नहीं सकते।

१३८४) जन-गण-मन - चवन्नी लेकर फीते जैसी सफेद देसी चुइंगम, तिरंगी झण्डीवाली सींक पर लपेटकर फेरीवाले ने बच्चे के हाथ में थमाते हुए कहा, लो बेंटे, आज दो-दो मजे लो। आज आजादी का दिन है। मिठाई खाओ और इसके तिरंगे झंडे को लहराओ। मिठाई का फीता मुंह में चबाते हुए मुन्ने की निगाह में सुबह का दृश्य घूम गया। स्कूल में तिरंगा झंडा लहराते हुए हेडमास्टरजी को उसने देखा था और सबने जन-गण-मन गाया था। मुन्ने ने कुछ सोचा और आसपास खेल रहे मुहल्ले के चार-पाँच बच्चों को पास बुलाया। फिर वह छत पर चढ़ गया और मुंडेर के एक छेद में तिरंगी झंडीयुक्त सींक को फंसाकर नीचे उतर आया। आओ हम भी झंडा लहराएंगे और जन-गण-मन गाएंगे। इस पर पिंटू ने मुन्ने की ओर हिकारत से देखा और बोला- तुमने इस झंडी की मिठाई हमें नहीं खिलाई। हम नहीं गाते जन-गण-मन। और सभी उसे चिढ़ाते हुए भाग गए। वह रुआंसे अंदाज में माँ के पास गया और बच्चों की शिकायत करते हुए अपने साथ जन-गण-मन गाने की जिद करने लगा। माँ ने घर के काम में व्यस्त होने का बहाना बनाते हुए उसे झिड़क दिया। वह फिर उदास हो गया। कुछ सोचता हुआ मुन्ना बाहर आया। खुद को आदेश देते हुए वह सावधान- विश्राम की कवायद करने लगा और सैल्यूट मारते हुए तन्मय होकर गाने लगा- जन-गण-मन अधिनायक जय है।

१३८५) सीढ़ी से उतरते हुए - मुझे तुम पर दया आती है। आठ सौ रुपल्ली की खातिर तुम लोगों के दिन-भर पैर पकड़ते हो और उन्हें जूते-चप्पल पहनाते हो। अब तो तुम्हारा लेखन भी छूट गया है। लानत है तुम पर। दोस्त की लंबी झाड़ वह काफी देर से सुन रहा था। पर चुप रहा। उसने बची मूंगफली निकालकर दोस्त को थमा दीं और लिफाफे को एक ओर उछाल दिया। अब बाग में ऊंचे ऊंचे पेड़ों को देख वह बेंच पर पसर सा गया। चलो चलते हैं, ठंडी ओस गिरने लगी है। दोनों बाग के बाहर चाय की दुकान पर आकर रुक गए। पहले उंगली के इशारे से दो चाय का आर्डर दुकानवाले को दिया और बोला- वो तूने एक्जीक्यूटिव पोस्ट के लिए एप्लाई किया था, क्या हुआ? उसका

तो कल इंटरव्यू है। ढंग के कपड़े नहीं, जूते नहीं। दरबार भी घुसने नहीं देगा। उस एयर कंडीशंड शीशेवाले दरवाजे में। तू फिक्र मत कर यार, मैं तुझे अपनी दुकान से रेडीमेड पेंट और शर्ट दिलवा दूंगा। जूते भी। पैसे कटते रहेंगे मेरे हिसाब से। तू ढंग से इंटरव्यू देकर आ। चाय पीते-पीते शायद मुकेश के दिमाग में कुछ आया। वह धीरे से बोला- दोस्त कुछ नहीं होगा। तू मुझे बता रहा था तेरे शोरूम में एक आदमी की जरूरत है। क्या मुझे नहीं खपा सकता अपने यहां। राजू यह सुनते ही चौंक गया। उसे लगा मुकेश उसका मजाक उड़ा रहा है।

१३८६) चंद्रमा को बचाने तालाब में कूदे बंदर - एक रात एक छोटा बंदर कुएं पर पानी पीने के लिए गया। जब उसने कुएं में झांककर देखा, तो उसे पानी में चंद्रमा झिलमिलाता हुआ दिखाई दिया। यह देखकर वह बहुत डर गया और दूसरे बंदरों को यह बात बताने के लिए दौड़ा।

दोस्तों, वह चिल्लाया- चंद्रमा पानी में गिर गया है। कहां, किस जगह, दूसरे बंदरों ने पूछा।

मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें दिखलाऊंगा। छोटे बंदर ने कहा। छोटा बंदर उन्हें कुएं तक ले गया। वे सभी झुंड बनाकर कुएं में झांकने लगे। अरे हां। चंद्रमा तो पानी में गिर गया है। वे चिल्लाए- हमारा सुंदर चंद्रमा कुएं में गिर गया। अब रात में अंधेरा हो जाएगा और हमें डर लगेगा। अब हम क्या करें?

मेरी बात सुनो, एक बूढ़े बंदर ने कहा- हम सिर्फ एक ही काम कर सकते हैं, हमें चंद्रमा को कुएं से निकालने की कोशिश करनी चाहिए। सभी उत्साह से बोले- हमें बताओ कि ऐसा कैसे करें।

वो देखो कुएं के ऊपर पेड़ की एक डाली लटक रही है। हम सभी उससे लटक जाएंगे और चुटकियों में चंद्रमा को कुएं से निकाल लेंगे। बहुत अच्छा तरीका है, सब चिल्लाए। चलो, डाली से लटकें। देखते ही देखते बहुत सारे बंदर उस पतली सी डाली से लटक गए और कुएं के भीतर झूलने लगे। उनमें से एक बंदर कुएं के भीतर पानी में हाथ डालकर चंद्रमा को निकालने वाला ही था कि ऊपर पेड़ पर डाली चटक गई। सभी मूर्ख बन्दर कुएं में गिरकर पानी में डूब गए। चंद्रमा आकाश में स्थिर चमकता रहा।

१३८७) गरीब कौन? - एक अमीर आदमी ने सोचा कि बेटे को गांव की सैर कराई जाए, जिससे वह गरीबों को देखकर यह जान सके कि हम कितने अमीर हैं। वह बेटे को एक गांव ले गया और वहां एक परिवार के साथ छप्पर वाली झोपड़ी में रात गुजारी। वापस आते हुए उसने बेटे से पूछा तुमने देखा कि लोग कितने गरीब हैं। बेटे ने कहा हां पापा, मैंने देखा कि हमारे पास एक कुत्ता है, उनके पास चार हैं, हमारे पास गार्डन में छोटा-सा स्विमिंग पूल है, उनके पास नदी है, हमारे पास इंपोर्टेड लैम्प्स हैं, उनके पास चांद-सितारे हैं, हमारे पास छोटा-सा पोर्टिको है, उनके पास खुला मैदान। कुछ ठहरकर बेटे ने कहा- थैंक्स पापा, यह अहसास दिलाने के लिए कि हम कितने गरीब हैं। बेटे की बातें सुनकर अमीर आदमी निरुत्तर हो गया। आप चीजों को किस नजर से देखते हैं, इससे बहुत फर्क पड़ता है। आपके पास खुशी है, प्यार है, परिवार है, दोस्त हैं, सकारात्मक सोच है, तो आप जैसा अमीर कोई नहीं। इन चीजों को पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। आपने कितनी ही धन-संपदा इकट्ठी कर ली हो, लेकिन अगर आप मन से गरीब हैं, तो आप जैसा गरीब कोई नहीं।

१३८८) चतुर आदमी मिट्टी को भी सोना बना देते है - एक बार राजा कृष्णदेव ने तेनालीराम से कहा, आज की शाम हम तुम्हारे साथ जंगल घूमने चलेंगे।

तेनालीराम ने उत्तर दिया, महाराज, पर एक निवेदन है कि हम आज घोड़ों पर बैठकर जंगल की सैर करें तो ज्यादा मजा आएगा। राजा कृष्णदेव ने हंसकर तेनालीराम की बात मान ली।

राजा कृष्णदेव ने अपना सबसे कीमती और तेज घोड़ा कसवाया और सैर के लिए तैयार हो गए। थोड़ी देर में तेनालीराम भी एक मरियल से टट्टू पर सवार होकर महल के द्वार पर आ पहुंचा।

टट्टू को देखकर राजा कृष्णदेव बोले, यह क्या मरियल सा टट्टू ले आए। यह तो तुम्हें जंगल की बजाय सीधे स्वर्गलोक की सैर कराएगा।

तेनालीराम ने हाथ जोड़कर कहा, महाराज, जो काम यह टट्टू कर सकता है, आपका घोड़ा कभी नहीं कर सकता। राजा कृष्णदेव बोले, सौ-सौ स्वर्ण मोहरों की शर्त रही।

जब वे जंगल के बीचोबीच पहुंचे, तेनालीराम ने अपने टट्टू को कसकर चाबुक लगाए। वह हिनहिनाता हुआ भागा और जंगल में गायब हो गया। तेनालीराम ने हाथ जोड़कर कहा, महाराज, यही कमाल दिखलाइए।

राजा कृष्णदेव अपना कीमती घोड़ा जंगल में कैसे छोड़ सकते थे? उन्होंने ना की तो तेनालीराम ने कहा, तब फिर महाराज, सोने की सौ मोहरें लाइए। आप शर्त हार गए।

अब राजा कृष्णदेव तेनालीराम की चाल समझ चुके थे, उन्होंनें झेपते हुए अपनी हार मान ली। तेनालीराम ने कहा, महाराज, कोई भी चीज बेकार नहीं होती। चतुर आदमी मिट्टी को भी सोना बना देते हैं।

१३८९) गुरु की आज्ञा का पालन करें - एक बार गुरु आत्मानंद ने अपने चार शिष्यों को एक पाठ पढ़ाया। पाठ पढ़ाने के बाद वह अपने शिष्यों से बोले, अब तुम चारों इस पाठ का स्वाध्ययन कर इसे याद करो। इस बीच यह ध्यान रखना कि तुममें से कोई बोले नहीं। एक घंटे बाद मैं तुमसे इस पाठ के बारे में बात करूंगा। यह कहकर गुरु आत्मानंद वहां से चले गए। उनके जाने के बाद चारों शिष्य अलग-अलग बैठकर पाठ का अध्ययन करने लगे। अचानक बादल घिर आए और वर्षा की संभावना बन गई। यह देखकर एक शिष्य बोला, लगता है, तेज बारिश होगी, यह सुनकर दूसरा शिष्य बोला, तुम्हें बोलना नहीं चाहिए था। तीसरा शिष्य बोला, तुमने बोल कर गुरुजी की आज्ञा भंग कर दी। चौथा शिष्य चुपचाप पाठ पढ़ता रहा।

इसी बीच एक घंटा बीत गया और गुरु आत्मानंद वहां आए। उन्हें देखकर पहला शिष्य बोला, गुरुजी यह मौन नहीं रहा और बोल पड़ा। दूसरा शिष्य बोल पड़ा तो तुम कौन-सा मौन थे। तुम भी तो बोल पड़े थे। तीसरा शिष्य बोला, इन दोनों ने बोलकर आपकी आज्ञा भंग कर दी। यह सुनकर दोनों तपाक से बोले, तो तुम भी तो बोल ही पड़े थे। चौथा शिष्य अभी भी चुप था। यह देखकर गुरुजी बोले, तुममें से सिर्फ चौथे शिष्य ने ही मेरी शिक्षा का अनुकरण किया है। यह शिष्य आगे चलकर एक अच्छा व्यक्ति बनेगा, लेकिन तुम तीनों के बारे में मुझे संदेह है, क्योंकि तुम तीनों एक दूसरे की गलती का एहसास कराने के लिए स्वयं भी गलती कर बैठे। वस्तुत: अधिकतर लोग ऐसा ही करते हैं। वह दूसरे को उसकी गलती बताने के चक्कर में स्वयं भी गलती कर बैठते हैं और फिर खुद कब गलत मार्ग पर चलने लगते हैं, इसका उन्हें एहसास तक नहीं होता। यह सुनकर तीनों शिष्यों का सिर लज्जा से झुक गया। उन्होंने गुरु से माफी मांगी और आगे से ऐसा न करने का वचन दिया।

१३९०) आगे की सोच है जरूरी - एक आदमी अपना सोना तोलने के लिए सुनार के पास तराजू मांगने आया। सुनार ने कहा, मियां, अपना, रास्ता लो। मेरे पास छलनी नहीं है, उसने कहा, मजाक न कर, भाई, मुझे तराजू चाहिए।

सुनार ने कहा, मेरी दुकान में झाड़ू नहीं हैं। उसने कहा, मसखरी छोड़, मैं तराजू मांगने आया हूं, वह दे दे और बहरा बनकर ऊटपटांग बातें न कर।

सुनार ने जवाब दिया, मियां, मैंने तुम्हारी बात सुन ली थी, मैं बहरा नहीं हूं। तुम बूढ़े आदमी सूखकर कांटा हो रहे हो। सारा शरीर कांपता है। तुम्हारा सोना भी कुछ बुरादा है और कुछ चूरा है। इसलिए तौलते समय तुम्हारा हाथ कांपेगा और सोना गिर पड़ेगा तो तुम फिर आओगे कि भाई, जरा झाड़ू देना ताकि मैं सोना इकट्ठा कर लूं और जब बुहार कर मिट्टी और सोना इकट्ठा कर लोगे तो फिर कहोगे कि मुझे छलनी चाहिए, ताकि खाक को छानकर सोना अलग कर सको। हमारी दुकान में छलनी कहां? मैंने पहले ही तुम्हारे काम के अन्तिम परिणाम को देखकर व आगे की सोचकर रहा था कि तुम कहीं दूसरी जगह से तराजू मांग लो। सिर्फ काम के प्रारम्भ को ही देखनेवाला मनुष्य अंधा होता है।

जो मनुष्य आगे होनेवाली बात को पहले ही से सोच लेता है, उसे अन्त में लज्जित नहीं होना पड़ता।

१३९१) एक दूसरे को सहयोग करें - एक बूढ़ा व्यक्ति था। उसकी दो बेटियां थीं। उनमें से एक का विवाह एक कुम्हार से हुआ और दूसरी का एक किसान के साथ।

एक बार पिता अपनी दोनों पुत्रियों से मिलने गया। पहली बेटी से हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार हमने बहुत परिश्रम किया है और बहुत सामान बनाया है। बस यदि वर्षा न आए तो हमारा कारोबार खूब चलेगा। बेटी ने पिता से आग्रह किया कि वो भी प्रार्थना करे कि बारिश न हो। फिर पिता दूसरी बेटी से मिला जिसका पति किसान था। उससे हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार बहुत परिश्रम किया है और बहुत फसल उगाई है परन्तु वर्षा नहीं हुई है। यदि अच्छी बरसात हो जाए तो खूब फसल होगी। उसने पिता से आग्रह किया कि वो प्रार्थना करे कि खूब बारिश हो।

एक बेटी का आग्रह था कि पिता वर्षा न होने की प्रार्थना करे और दूसरी का इसके विपरीत कि बरसात हो। पिता बड़ी उलझन में पड़ गया। एक के लिए प्रार्थना करे तो दूसरी का नुकसान। अब समाधान क्या हो? पिता ने बहुत सोचा और पुन: अपनी पुत्रियों से मिला। उसने बड़ी बेटी को समझाया कि यदि इस बार वर्षा नहीं हुई तो तुम अपने लाभ का आधा हिस्सा अपनी छोटी बहन को देना और छोटी बेटी को मिलकर समझाया कि यदि इस बार खूब वर्षा हुई तो तुम अपने लाभ का आधा हिस्सा अपनी बड़ी बहन को देना। एक दूसरे के सहयोग से किसी भी कमी की भरपाई की जा सकती है।

१३९२) तेनालीराम की चतुराई - राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम पर प्रसन्न होकर उसे अपना एक महल एक वर्ष के लिए दे दिया। यह काफी बड़ा सम्मान था। कुछ दरबारियों को यह बात खल गई। उन्होंने मंत्री और सेनापति के साथ मिलकर अफवाह फैला दी कि उस महल में भूत रहते हैं। यह बात तेनालीराम ने हंसी में टाल दी, मगर उस महल में उसे रात बितानी कठिन हो गई। रातभर उसे चलते-फिरते अजीब-अजीब आकार दिखाई दिए। उसने राजा कृष्णदेव राय से शिकायत की, महल में भूत हैं। दरबारी हंसने लगे।

राजा ने चुटकी ली, हमने आज तक भूत नहीं देखा। आज हम तुम्हारे कक्ष में रहेंगे और भूत देखेंगे।

ऐसा ही हुआ। रात को राजा और तेनालीराम कक्ष में छिपकर बैठ गए आधी रात बीत गई। कोई विचित्र घटना नहीं घटी। राजा तेनालीराम से बोले, तुम सठिया गए हो। कल से तुम घर ही पर आराम करना।

अचानक कहीं पास में किसी के गिरने की आवाज आई। राजा और तेनालीराम ने देखा कि कुछ काली आकृतियां गिरती-पड़ती भाग रही हैं। राजा तलवार खींच उनके पीछे लपके। उन्हें रोककर गरजे, रुक जाओ, वरना मार डालूंगा।

आकृतियां रुक गईं। फिर राजा के कदमों में गिर पड़ीं। तेनालीराम बोला, महाराज, यही हैं भूत। राजा ने आकृतियों को गौर से देखा, तो चकित रह गए। काले लबादों में सेनापति, राज पुरोहित और उसका पुत्र था। पूछताछ से पता चला कि वही तीनों महल में उत्पाद मचवाते थे, ताकि तेनालीराम को राजा की दृष्टि में डरपोक, सनकी और वहमी बना सकें। उस

रात तीनों एक टांड पर छिपकर यह देखने-सुनने को बैठे थे कि महल में भूत न देख, राजा तेनालीराम को कैसी खरी-खोटी सुनाते हैं। मगर उनको यह पता न था कि तेनालीराम ने वह टांड उसी दिन कच्ची लकड़ी से इस तरह बनवाया था कि अधिक बोझ न संभाल सके। राजा ने प्रसन्न होकर वह महल तेनालीराम को सदा के लिए दे दिया।

१३९३) अहंकार की पराजय - भगवान श्रीकृष्ण द्वारका में रानी सत्यभामा के साथ सिंहासन पर विराजमान थे। निकट ही गरुड़ और सुदर्शन चक्र भी थे। बातों ही बातों में रानी सत्यभामा ने श्रीकृष्ण से पूछा कि हे प्रभु, आपने त्रेता युग में राम के रूप में अवतार लिया था। क्या सीता मुझसे भी ज्यादा सुंदर थीं? तभी गरुड़ ने कहा कि भगवान, क्या मुझसे भी ज्यादा तेज गति से कोई उड़ सकता है? इधर सुदर्शन चक्र से भी रहा नहीं गया और वह भी कह उठा कि भगवान, क्या संसार में मुझसे भी शक्तिशाली कोई है? भगवान समझ गए कि इन्हें अहंकार हो गया है। उन्होंने गरुड़ से कहा कि तुम हनुमान के पास जाओ और कहना कि भगवान राम, माता सीता के साथ आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। सत्यभामा से कहा कि आप सीता के रूप में तैयार हो जाएं। स्वयं द्वारकाधीश ने राम का रूप धारण कर लिया और सुदर्शन चक्र को प्रवेश द्वार पर पहरा देने के लिए भेज दिया और कहा कि मेरी अनुमति के बिना कोई महल में प्रवेश नहीं करने पाए। गरुड़ ने हनुमान को संदेश पहुंचाया और कहा कि आप मेरे साथ चलें। मैं आपको अपनी पीठ पर बैठाकर शीघ्र ही वहां ले जाऊंगा। हनुमान ने कहा, आप चलिए, मैं आता हूं। गरुड़ ने सोचा, पता नहीं यह बूढ़ा वानर कब तक पहुंचेगा? गरुड़ जब महल में पहुंचते हैं तो देखते हैरान रह जाते हैं। हनुमान तो पहले से ही प्रभु के सामने बैठे हैं। गरुड़ का सिर लज्जा से झुक गया। तभी श्रीराम ने हनुमान से कहा कि पनवपुत्र, तुम बिना आज्ञा के महल में कैसे प्रवेश कर गए? क्या तुम्हें किसी ने प्रवेश द्वार पर रोका नहीं? हनुमान ने मुंह से सुदर्शनचक्र को निकाल कर रख दिया और कहा, मुझे इस चक्र ने रोका था। मुझे क्षमा करें। हनुमान ने हाथ जोड़ते हुए प्रश्न किया, हे प्रभु। आज आपने माता सीता के स्थान पर किसे सिंहासन पर बिठा लिया है। तीनों का अहंकार चूर हो चुका था।

१३९४) लालची चित्रकार का क्या था रहस्य - गेस्सेन नामक जेन सन्यासी बहुत अच्छा चित्रकार भी था। कोई भी चित्र बनाने से पहले वह चित्र बनवाने वाले से पूरी रकम एकमुश्त ले लेता था। वह बहुत महंगे चित्र बनाता था, इसीलिए सब उसे लालची चित्रकार कहते थे।

एक नर्तकी ने गेस्सेन को चित्र बनाने के लिए बुलाया। गेस्सेन ने उससे पूछा- आप मुझे कितना मेहनताना दे सकती हैं? जितना तुम चाहो, नर्तकी ने कहा, लेकिन तुम्हें पूरा चित्र मेरे सामने ही बनाना होगा।

गेस्सेन मान गया और नर्तकी के बताए दिन और समय पर चित्र बनाने का सामान लेकर वहां पहुंच गया। उस दिन नर्तकी ने अपनी संरक्षक के लिए दावत का आयोजन किया हुआ था। गेस्सेन ने नर्तकी द्वारा बताए विषय पर शानदार चित्र बनाया। चित्र के पूरा हो जाने के बाद उसने नर्तकी से बड़ी ऊंची रकम अपने मेहनताने के तौर पर मांगी।

नर्तकी ने वह रकम गेस्सेन को दे दी। फिर वह अपने संरक्षक की ओर मुड़ी और उससे बोली, यह कलाकार पैसे का भूखा है। इसके बनाए चित्र लाजवाब है, लेकिन इसके दिमाग में गंदगी भरी है। पैसों के लिए तो यह अपनी आत्मा भी बेच दे। इतने लालची आदमी के बनाए चित्र किसी प्रदर्शनी में रखने लायक नहीं हैं। इन्हें तो मैं अपने पेटीकोट की जगह इस्तेमाल करूंगी। फिर उसने अपना एक पेटीकोट गेस्सेन को दिया और उस पर भी एक चित्र बनाने को कहा। इस बार भी गेस्सेन ने पूछा, इसे लिए मुझे कितने पैसे मिलेंगे?

जितना तुम मांगों, नर्तकी ने कहा। गेस्सेन ने इस बार भी एक ऊंची रकम कही। नर्तकी के मनमाफिक चित्र बनाने के

बाद वह अपने पैसे लेकर चला गया। बाद में कभी सबको यह पता चला कि गेस्सेन इन कार्यों को पूरा करने के लिए पैसे जमा कर रहा था। गेस्सेन के प्रांत में अक्सर अकाल की स्थिति बन जाती थी। ऐसे समय भी अमीर लोग गरीबों की मदद नहीं करते थे, इसलिए गेस्सेन ने एक गुप्त अन्नकोश बनवाया और उसमें विपत्तिकाल के लिए भरपूर अनाज भर कर रखा, ताकि अकाल में कोई भूखा न मरे।

गेस्सेन के गांव से राजमार्ग को जोड़नेवाली सड़क की दशा अत्यंत खराब थी। मार्ग दुर्गम होने के कारण रोगी, वृद्ध और असहाय बीच रास्ते ही दम तोड़ देते थे। गेस्सेन ने अच्छी सड़क बनवाने की व्यवस्था की।

गेस्सेन के गुरु की अंतिम इच्छा थी कि उनकी भूमि पर भगवान बुद्ध का एक मंदिर बने। गुरु की मृत्यु के कुछ समय बाद गेस्सेन ने उनकी अंतिम इच्छा को पूर्ण कर दिया।

इन तीन कार्यों के पूरा हो जाने के बाद गेस्सेन ने चित्रकारी को तिलांजलि दे दी और पहाड़ों पर चला गया। उसके बारे में फिर कभी कुछ पता नहीं चला।

१३९५) परीक्षा की घड़ी - एक बार मोहम्मद साहब को पकड़ने के लिए कुछ सिपाहियों ने उनका पीछा किया। उस समय उनके साथ उनका केवल एक ही साथी था। उस साथी ने कहा हजरत साहब। सिपाही पकड़ने आ रहे हैं। हमें सुरक्षित जगह पर छिप जाना चाहिए। वे दोनों जब पास की एक खाई के पास पहुंचे तो वहां मकड़ी का एक जाला दिखाई दिया। वह साथी उसे तोड़ते हुए खाई में घुसनेवाला ही था कि मोहम्मद साहब ने उसे रोका और बोला- भैया, खुदा के वास्ते इस जाले को मत तोड़ो। बेचारी मकड़ी ने इसे बनाने में बहुत मेहनत की है। यह उसका घर है। किसी के घर को उजाड़ना उचित नहीं है। साथी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला- समय बहुत कम है, हमारा जीवन खतरे में है। यह ऐसी बातें सोचने का मौका नहीं है। हमें तनिक भी विलंब नहीं करना चाहिए। लेकिन मोहम्मद साहब बोले- अपनी जान बचाने के लिए दूसरे को दुख देना ठीक नहीं है। ऐसे वक्त भी अगर हम दया नहीं करेंगे तो कब करेंगे। यही समय हमारी परीक्षा का समय है और अपने आदर्शों पर कायम रहता है, वही सच्चा इंसान है। आखिर साथी को उनकी बात समझ में आई और वे दोनों जाले को बिना तोड़े उस जाले के नीचे झाड़ियों में जा छिपे। सिपाही जल्द ही वहां पहुंच गए। उस खाई के ऊपर मकड़ी का जाला देखकर उन्होंने सोचा कि वे इस खाई में छुपे होते तो मकड़ी का यह जाला अवश्य टूटता। वे इस खाई में नहीं हैं, वे आगे निकल गए होंगे। यही सोचकर सैनिक आगे बढ़ गए। अपने आचरण से मोहम्मद साहब ने न केवल अपनी और अपने साथी की प्राण रक्षा की बल्कि यह भी बताया कि हमारे आदर्श की असली परीक्षा संकट में ही होती है।

१३९६) गलती का अहसास - एक बार एक राजा अपने राजमहल के बगीचे में सैर कर रहा था। उसने देखा कि कोई आदमी दरवाजे पर खड़ा है। उसने दरबान से कहा कि वह उस आदमी के बारे में पता करे वह दरवाजे पर क्यों खड़ा है। दरबान ने दरवाजा खोला तो देखा एक आदमी एक मोटी ताजी मुर्गी लिए खड़ा था। दरबान ने आने का कारण पूछा तो आदमी ने कहा, मैं राजा को यह मुर्गी देने आया हूं। दरबान ने आदमी को राजा से मिलवा दिया। आदमी बोला, राजा जी मैंने आपके नाम पर यह मुर्गी जीती है। यह मैं आपको देने आया हूं।

राजा ने कहा इसको मेरे मुर्गीखाने में दे दो। आदमी मुर्गी देकर चला गया। कुछ दिनों बाद वह आदमी फिर से आया। इसबार वह अपने साथ एक बकरी लेकर आया था। उसने राजा से कहा राजा जी इस बार मैंने आपके नाम पर यह बकरी जीती है। यह बकरी मैं आपको देने आया हूं। राजा बहुत खुश हुआ। उसने कहा इस बकरी को मेरे बकरियों के झुंड में शामिल कर दो। वह आदमी बकरी देकर चला गया। वह आदमी कुछ हफ्तों बाद फिर राजा के दरवाजे पर आकर खड़ा

हो गया इस बार उसके साथ दो आदमी थे। राजा ने आदमी से पूछा इस बार मेरे लिए क्या लेकर आए हो और तुम्हारे साथ ये दोनों कौन हैं। राजा जी इस बार मैंने आपके नाम पर ५०० चांदी के सिक्के लगाए थे और मैं हार गया हूं। अब इन लोगों को ५०० चांदी के सिक्के देने हैं। यह सुनकर राजा को अपनी गलती का एहसास हो गया। वह उनको मना भी नहीं कर सकता था क्योंकि उसने लेते समय मना नहीं किया था। उस दोनों आदमियों को चांदी के सिक्के देकर जाने को कह दिया। फिर राजा ने उस जुआरी आदमी से कहा आज के बाद तुम मेरे नाम पर कोई दांव नहीं लगाओगे। इस तरह राजा को अपनी गलती का अहसास हो चुका था।

१३९७) दूसरों के लिए क्यों बदले अपना स्वभाव - उन दिनों विंस्टन चर्चिल ब्रिटेन के रक्षा मंत्री थे। नौसेना अध्यक्ष एडमिरल लॉर्ड फिशर से उनकी नहीं बनती थी। फिशर भी कम ताकतवर नहीं थे। ब्रिटिश सत्ता के प्रभावशाली लोगों तक उनकी पहुंच थी। चर्चिल और फिशर की अनबन बढ़ती ही चली गई और चर्चिल को अपना पद छोड़ना पड़ा। चर्चिल के लिए यह गहरा आघात था, फिर भी उन्होंने फिशर के बारे में कहीं भी एक शब्द उल्टा-सीधा नहीं कहा। कई लोग उन्हें उकसाते, पर चर्चिल खामोश रहते। अरसे बाद बातचीत के दौरान उनके किसी मित्र ने वह प्रसंग फिर छेड़ दिया और फिर फिशर की निंदा की।

चर्चिल ने मित्र की बात सुनने के बाद स्पष्ट शब्दों में कहा- यदि मुझे फिर से वही पद मिल जाए, तो मैं फिशर को बुलाकर उन्हें फिर से वही काम सौंप दूंगा। एक कुशल प्रबंधक के रूप में आज भी मेरे दिल में फिशर के लिए वही इज्जत बरकरार है, जो उस समय थी। यह सुनकर चर्चिल के मित्र को बहुत आश्चर्य हुआ, लेकिन फिशर का रवैया एकदम उलटा था। कुछ सालों के बाद फिशर की जीवनी प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने चर्चिल की कठोर आलोचना की थी।

पुस्तक पढ़ते समय चर्चिल को कई बातें बेढ़ंगी लगीं, फिर भी उन्होंने उनकी निंदा में एक शब्द भी नहीं कहा और तो और पुस्तक समाप्त कर चुकने पर उन्होंने पुस्तक की प्रशंसा में एक लंबा लेख तैयार किया और उसे छपने के लिए एक पत्रिका को भेज दिया। लोगों ने इस बारे में जब चर्चिल से पूछा, तो उन्होंने कहा कि फिशर अपने स्वभाव के मुताबिक काम करते हैं। मैं अपने स्वभाव के अनुसार काम करता हूं और आगे भी अपने स्वभाव के अनुसार ही काम करूगा। किसी और के लिए मैं अपना स्वभाव क्यों बदल लूं।

१३९८) किसी की जिंदगी बचा सके तो असल अमरत्व मिल सकता है - एक ३४ साल की स्त्री जब मधुमेह, उच्च रक्तचाप और मोटापे की गिरफ्त में आ गई, तो परिवार चिंतित हो गया। डॉक्टरों ने घोषणा कर दी कि इन तीनों का संयोग घातक है। कुछ सालों में उसके दोनों गुर्दे खराब हो गए। डायलिसिस शुरू हो गया। पहले सप्ताह में एक बार, फिर तीन बार। उसको पल-पल छीजते देखना परिवार के लिए असह्य हो रहा था। नया गुर्दा डालकर ही प्राण बच सकते थे। उत्तर से दक्षिण तक खोज लिया, पर बात बनी नहीं। घर के एक-एक सदस्य की जांच हुई, पर किसी का रक्त उसके ग्रुप से मैच नहीं हुआ। अमेरिका में बसी छोटी बहन का वही ग्रुप था। सबकी नजरें उसी पर थीं। वह वाणी और श्रवण शक्ति जन्म से ही खो चुकी थी। मां का दिल फटा जा रहा था। पहले ही ईश्वर ने उसके साथ अन्याय किया, अब बहन के लिए उसका गुर्दा भी छीन लिया जाए। बात उस तक पहुंची तो वह रुक न पाई। पहली फ्लाइट पकड़कर चली आई। सप्ताह के भीतर उसका गुर्दा बड़ी बहन के शरीर में प्रत्यारोपित हो गया। छोटी को पीड़ा होती तो आंसुओं के बीच मुस्कराकर डॉक्टर को इशारों से समझाती कि मेरी एक किडनी दूसरी हमजोली को ढूंढ रही है, इसीलिए दर्द है। पंद्रह दिनों में बहन को जीवनदान दे अपने परिवार के पास लौट गई।

यहां तो बहन के प्रेम ने प्राण बचा लिए, परंतु ऐसा कभी-कभी हो पाता है। यदि अंगदान करने के लिए देश का एक-एक नागरिक प्रतिबद्ध हो तो धीरे-धीरे बुझी आंखों की रोशनी और सड़े जिगर को नया जीवन मिल जाएगा। नया गुंर्दा पाकर रक्त का विष दूर करके जिंदगी मोहलत पा जाएगी। हमारे देश में हर साल लगभग डेढ़-दो लाख लोगों के गुर्दे खराब होते हैं, केवल साढ़े तीन हजार लोगों को डोनर मिल पाते हैं। ऐसी हालत में भारत के सवा सौ करोड़ नागरिकों को यदि मृत्यु के बाद कानूनन डोनर मान लिया जाए तो इस अंतर को पाटा जा सकता है। पोलैंड और ब्राजील में सभी स्वाभाविक रूप से डोनर माने जाते हैं। कोई अस्वीकृति दे तो बात अलग है। हमारे देश में अंगदान के विषय में अंधविश्वास फैले हैं। परिवार के लोग भी मोहवश देहदान को मृतक का निरादर समझते हैं। यह विश्वास बैठा है कि अगले जन्म में शरीर विकलांग मिलेगा। आत्मा को अजर, अमर और शरीर को नश्वर माननेवाला यह देश भी ऐसे निर्मूल तर्कों में फंस जाता है। मृत शरीर का संस्कार जलाकर, दबाकर, बहाकर या चील-कौवों को खिलाकर करें, आखिर में मिट्टी ही होता है। तो मिट्टी होने से पहले किसी की जिंदगी बचा सके तो असल अमरत्व मिल सकता है।

१३९९) एक मित्र पवित्र स्थान तक पहले पहुंचने के बजाए मार्ग में मिले एक रोगी और असहाय की सहायता करने के लिए रुक गया। दूसरा दोस्त उसे मूर्ख कहकर जल्दी से तीर्थ की ओर बढ़ चला। दोनों ही मित्रों का ध्येय परमात्मा का प्रिय बन जाना था। दूसरा मित्र जब गंतव्य पर पहुंचा, तो उसने दर्शनार्थियों की सबसे अग्रिम पंक्ति में असहायों की सहायता करने के लिए राह में ही रुक गए अपने मित्र को देखा। वह प्रभु के सबसे करीब था। पीछे खड़े मित्र को लगा कि उसे धोखा देकर शीघ्र पहुंचने की कोई और ही व्यवस्था कर रखी गई थी। वह दर्शन करके उसी रास्ते वापस लौटा, लेकिन रास्ते में पड़ी गरीबों की बस्ती में फिर से उसे वही अपना मित्र दिखाई दिया। दर्शन करके वापस लौट रहे मित्र ने उसे भला-बुरा कहा, लेकिन जब आस-पास वालों ने उसे बताया कि यह तो रात-रात भर जागकर हमारी सेवा कर रहा था, तो उसे अपने हृदय की लघुता का अनुभव हुआ। वह समझ गया कि क्यों उसका मित्र परमात्मा के अधिक पास खड़ा दिखाई दिया था।

१४००) संसार को राजी करना असंभव है - एक साधु किसी नदी के पनघट पर गया और पानी पीकर पत्थर पर सिर रखकर सो गया। पनघट पर पनिहारिन आती-जाती रहती हैं। वो आयी तो एक ने कहा- आहा। साधु हो गया, फिर भी तकिए का मोह नहीं गया। पत्थर का ही सही, लेकिन रखा तो है।

पनिहारिन की बात साधु ने सुन ली। उसने तुरंत पत्थर फेंक दिया। तब साधु सोचने लगा, अब वह क्या करे? तब तीसरी बोली- बाबा। यह तो पनघट है। यहां तो हमारी जैसी पनिहारिनें आती ही रहेंगी, बोलती ही रहेंगी। उनके कहने पर तुम बार-बार परिवर्तन करोगे तो साधना कब करोगे? लेकिन चौथी ने बहुत ही सुन्दर और एक बड़ी अद्भुत बात कह दी- क्षमा करना, लेकिन हमको लगता है, तुमने सब कुछ छोड़ा, लेकिन अपना चित्त नहीं छोड़ा है, अभी तक वहीं के वहीं बने हुए हैं। दुनिया पाखण्डी कहे तो कहे, तुम जैसे भी हो, हरिनाम लेते रहो। सच तो यही है, दुनिया का तो काम ही है कहना। आप ऊपर देखकर चलोगे तो कहेंगे अभिमानी हो गए। नीचे देखोगे तो कहेंगे बस किसी के सामने देखते ही नहीं। आंखे बंद करोगे तो कहेंगे कि ध्यान का नाटक कर रहा है। चारों ओर देखोगे तो कहेंगे कि निगाह का ठिकाना नहीं। निगाह घूमती ही रहती है और परेशान होकर आंख फोड़ लोगे तो यही दुनिया कहेगी कि अपना किया हुआ भोगना ही पड़ता है। ईश्वर को राजी करना आसान है, लेकिन संसार को राजी करना असंभव है। दुनिया क्या कहेगी, उस पर ध्यान दोगे तो आप अपना ध्यान नहीं लगा पाओगे।

१४०१) मुल्ला नसरुद्दीन और चांदी का सिक्का - मुल्ला नसरुद्दीन अपनी बुद्धि प्रतिभा के लिए दूर-दूर तक मशहूर

थे। मुल्ला नसरुद्दीन को उनके विरोधी मूर्ख समझ कर उनका मजाक उड़ाते थे, लेकिन मुल्ला नसीरुद्दीन ने अपने विरोधियों की बात का कभी बुरा नहीं माना और अपनी चतुराई से हमेशा अपने विरोधियों को मात दी।

लोग उनकी बुद्धि, प्रतिभा की बहुत तारीफ करते थे। कुछ लोग उनको मूर्ख, गधा भी कहते थे। उनके बुद्धिचातुर्य के बारे में एक कथा बहुत प्रचलित है। एक समय में मुल्ला नसरुद्दीन इतने गरीब हो गए कि उनको घर-घर भटक के भीख मांगना पड़ता था। मुल्ला का बड़ी मुश्किल से पेट भरता था। मुल्ला हमेशा अपने नगर के बाजार में भीख मांगने जाते इस बात से उनके विरोधियों के चेहरे पर अजीब-सी मुस्कान आ गई थी। वो लोग बहुत खुश थे। मुल्ला को जलाने के लिए वो हर दिन कोई न कोई नया षड्यंत्र रचते थे। वो मुल्ला के सामने खड़े होकर अपने दोनों हाथ में सिक्के रखते थे जिसमें सोने का और दूसरा चांदी का सिक्का रहता था। वो मुल्ला को दोनों में से कोई एक सिक्का लेने के लिए कहते थे। हमारे मुल्लाजी हमेशा चांदी का सिक्का पसंद करते थे।

उनकी इस मूर्खता से उनके विरोधी इतने खुश होते थे कि वो मुल्ला के सामने ही नाचने लगते थे लेकिन मुल्ला कभी भी इस बात का बुरा नहीं मानते थे। एक दिन उस नगर में एक सज्जन भ्रमण के लिए आए। उन्होंने यह नजारा अपनी आंखों से देखा। उनको मुल्ला पर बड़ा तरस आया। वह उनके पास गए और कोने में जाकर उनसे कहा, मुल्लाजी आप जानते हैं कि चांदी के सिक्के की तुलना में सोने के सिक्के की कीमत ज्यादा है फिर भी आप हमेशा चांदी का सिक्का ही क्यों पसंद करते हो? आप शायद नहीं जानते, लेकिन इस बहाने लोग आपकी खिल्ली उड़ाते हैं। आपको तो सोने का सिक्का पसंद करना चाहिए। सज्जन की बात सुनकर मुल्ला थोड़ी देर तक खामोश रहे। उन्होंने सज्जन के प्रति अपना आभार व्यक्त किया और साथ में कुछ ऐसा कहा जिसे सुनकर सज्जन भी मान गए कि सच में मुल्ला दुनिया के बुद्धिशाली व्यक्तियों में से एक है।

मुल्ला ने कहा था, सज्जन आपकी बात को मैं भी जानता हूं कि चांदी के सिक्के की तुलना में सोने का मूल्य ज्यादा है लेकिन आप समझ नहीं रहे। मैंने जिस दिन से सोने का सिक्का ले लिया, उस दिन से यह लोग समझ जाएंगे कि मैं उनको मूर्ख समझता हूं और बाद में वह कभी भी मेरे सामने दोनों सिक्के नहीं रखेंगे। इससे मेरी दरिद्रता दूर हो जाएगी। यार कभी-कभी मूर्ख बनना भी फायदेमंद रहता है।

१४०२) स्काउट की वीरता के कायल हुए चाचा नेहरू - बात २ अक्टूबर १९५७ की है, दिल्ली में रामलीला के एक कार्यक्रम में देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। समारोह के लिए अस्थायी रूप से बने पंडाल में बिजली के तारों की शार्ट सर्किट के कारण आग लग गयी। अचानक हुई इस घटना से कार्यक्रम में अफरातफरी मच गयी। लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। ऐसे में लगभग चौदह वर्ष का एक बच्चा दौड़ कर बांस पर चढ़ा। उसने फुर्ती से जलती हुए रस्सी को काट दिया, जब वहां उपस्थित सभी लोग अपनी अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे, ऐसे में एक नन्हें बच्चे को ऐसा करते देखकर पंडितजी को बड़ा आश्चर्य हुआ, इस घटना के बाद पंडित नेहरू ने उस बच्चे को बुलाया और पूछा कि जब सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे, सभी को अपनी जान की ही परवाह थी, उस समय तुमने अपनी जान जोखिम में डाल कर ऐसा क्यों किया? बच्चा सहज होकर पंडित नेहरू की बात सुन रहा था।

बाद में बच्चे ने उत्तर दिया। मैं एक स्काउट हूं। मैंने ऐसा ही सीखा है। स्काउट या गाइड का एक ही नियम होता है, जिसके नौ भाग होते हैं। स्काउट सबका मित्र एवं प्रत्येक दूसरे स्काउट का भाई होता है। स्काउट विनम्र होता है और पशु-

पक्षियों का मित्र एवं प्रकृति प्रेमी होता है। स्काउट सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करने के लिए हमेशा तैयार रहता है। इनका पालन करने की प्रत्येक स्काउट व गाइड प्रतिज्ञा करता है। इससे पंडित नेहरू काफी प्रभावित हुए और उसे तत्कालीन प्रधानमंत्री निवास तीन मूर्ति भवन में सम्मानित करने का फैसला किया। इसके बाद से हर वर्ष देश के हर कोने से असाधारण कार्य करनेवाले बच्चों को राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार दिया जाता है इसमें उन बच्चों को वरीयता दी जाती है, जो अपनी जान की परवाह न करते हुए असाधारण वीरता का प्रदर्शन करते हैं और दूसरों की जान बचाने का कार्य करते हैं। स्काउट पाठ्यक्रम बच्चों की रुचि के अनुकूल है, जिसमें बच्चे खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीखते हैं, इसमें कहानी भी है, गीत भी हैं। साथ ही अनुशासित जीवन जीने के लिए खेल-खेल में दिये जानेवाले संस्कार भी हैं। अगर आप भी इससे जुड़ते हैं, तो असाधारण कार्य करके समाज के लिए एक उदाहरण बन सकते हैं।

१४०३) अवसर मिलेगा जरूर - किसी दूधवाले की दूध की केन में एक नटखट बालक ने दुखीराम नामक मेंढक को पकड़ कर डाल दिया। केन के बन्द होते ही मेंढ़क घबरा गया। केन का ढक्कन बन्द था व उसके बारह निकलने का कोई रास्ता नहीं था। नाम से ही नहीं वह सोच से भी दुखीराम था। अत: उस मेंढक ने पहले तो केन में फेंकनेवाले उस बच्चे को व उसके खानदान को अपशब्द कहे। फिर केन निर्माता को गालियां देने लगा। उसके बाद प्रभु को कोसने लगा कि मुझे ड्रिल जितनी शक्ति मुंह में क्यों न दी। इस प्रकार अपनी कमजोरियों को याद कर स्वयं का जीवन खतरे में डालता रहा। अपनी शक्तियों का उसने तनिक भी विचार नहीं किया। फलस्वरूप दोष देते-देते व थोड़ी देर में डूब गया।

दूसरे दिन एक नटखट बालक ने सुखीराम नामक मेंढक को पकड़कर फिर दूध के केन में चुपके से डालकर ढक्कन बन्द कर दिया। तब सुखीराम ने अपना विश्लेषण पद्धति के आधार पर किया। स्वोट पद्धति की मान्यता है किअपनी शक्तियों को याद करो, कोई न कोई अवसर जरूर निकलेगा। ऐसे में उसे याद आया कि मेंढक की सबसे बड़ी क्षमता किसी भी द्रव में तैरने की है। अत: वह तीव्र गति से दूध का मन्थन हो गया व उसमें मक्खन का एक ढेर बन गया, जिस पर सुखीराम बैठ गया। तनिक देर बाद ज्यों ही दूधवाले ने केन का ढक्कन खोला, वह कूदकर बाहर निकल गया। देखो दोस्तों, समान परिस्थिति में सुखीराम मेंढक सकारात्मक वृत्ति के कारण बच जाता है। एवं दुखीराम डूब मरता है। हम सबको स्वयं का परीक्षण करना चाहिए कि हम किस वर्ग से हैं। हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक है या नहीं। अस्तित्व सकारात्मक है। ब्रह्माण्ड विकासमान है। क्या किसी प्राकृतिक आपदा भूकम्प, बाढ़ या महामारी से हमारी गति रुकी है? सृष्टि चल रही है। इसकी गति सकारात्मक है। क्या हम इससे सकारात्मकता का सबक नहीं सीख सकते हैं। तभी तो वैदिक ऋषियों ने कहा है, चरैवेति, चरैवेति, चलते रहो, चलते रहो।

१४०४) सर्वश्रेष्ठ शासक का पुरस्कार - एक बार सम्राट अशोक ने सर्वश्रेष्ठ शासक का पुरस्कार देने का निर्णय किया। सभी शासक नियत समय पर राजदरबार में आ पहुंचे। अशोक ने उन्हें अपनी उपलब्धियों के बारे में बताने को कहा। एक राज्य के शासक ने कहा कि उसके शासनकाल में राज्य की आय दोगुनी हो गई है।

दूसरे शासक ने बताया कि उसके शासनकाल में स्वर्ण मुद्राओं के भंडार स्थापित हो गए हैं। किसी ने कहा कि उसने आधुनिक शास्त्रों के निर्माण की व्यवस्था की है। सबने तरह-तरह से अपनी सफलताएं गिनाई। अंत में एक शासक ने सकुचाते हुए कहा, न तो मेरे राजकोष में स्वर्ण मुद्राओं के भंडार लगे हैं, न आय दोगुनी हुई है और न ही आधुनिक शस्त्र एकत्र हुए है। मेरे शासनकाल में तो राजकोष और कम हो गया है क्योंकि पिछले दिनों मैंने प्रजा को अधिक से अधिक सुविधा देने के आदेश दिए हैं मैंने राजकोष का धन पाठशालाएं और अस्पताल खुलवाने में लगा दिया है। मेरे राज्य में वृक्ष

लगाने पर भी काफी खर्च किया गया है। युवाओं को रोजगार दिलाने का प्रयास हुआ है। इससे प्रजा प्रसन्न है। इसके अलावा मेरी कोई उपलब्धि नहीं है।

अशोक ने उसे विजेता घोषित करते हुए कहा, वास्तव में तुम ही सच्चे व सर्वश्रेष्ठ शासक हो। एक शासक का प्रमुख कर्त्तव्य अपनी प्रजा को सुखी बनाना और उसकी जीविका के साधन उपलब्ध कराना है। दूसरे शासकों ने वह सब हासिल करने की कोशिश की जिससे राज्य सत्ता ताकतवर बने। राज्यतंत्र शक्तिशाली हो और प्रजा कमजोर, यह मुझे स्वीकार नहीं है। तुमने मेरा आदर्श आत्मसात किया है, इसका मुझे संतोष है। दूसरे शासकों को भी इस पर ध्यान देना चाहिए। यह सुनकर अन्य शासकों के सिर शर्म से झुक गए।

१४०५) सारे गांव में रामू की चतुराई की प्रशंसा होने लगी - रामू गांव में एक छोटी सी दुकान चलाता था। उसका घर गांव के दूसरे छोर के किनारे पर था। घर में वह और उसकी पत्नी ही रहते थे। बच्चे शहर में अपने मामा के पास रहकर पढ़ रहे थे। रामू ज्यादा अमीर तो नहीं था, पर उसका गुजारा अच्छी तरह से चल रहा था। उसकी पत्नी बहुत ही मेहनती और समझदार थी। पति का पूरा ख्याल रखती।

वह बहुत कम पैसे खर्च करती और घर को अच्छी तरह से चलाती। इस कारण से उसने अपने लिये एक-दो सोने के गहने भी जौहरी से खरीद लिये थे। दोनों की गृहस्थी ठीक तरह से चल रही थी।

उन दिनों गांव में कुछ ज्यादा ही चोरियां हो रही थीं। गांववालों ने पहरे का इंतजाम भी किया था। पर चोर पकड़ में नहीं आ रहे थे। चोर दो दो, चार चार के समूह में आते और अपना काम करके निकल जाते। एक ठंडी रात में रामू और उसकी पत्नी घर में सोए हुए थे। एक आहट के कारण दोनों की आँख खुल गई। दोनों समझ गये कि घर में चोर आए है। हो सकता है वे संख्या में ज्यादा हों। अगर ज्यादा हुए तो उन्हें कैसे पकड़ पाएंगे- यह सोचकर पति-पत्नी दोनों चुप रहे।

शोर मचाने का भी कोई लाभ नहीं था। क्योंकि उनके घर के आसपास किसी का घर नहीं था। पति पत्नी ने इस समस्या से निपटने के लिए अक्ल का इस्तेमाल करने की सोची। इसी सिलसिले में उन्होंने रणनीति बनाने की सोची और वे आपस में बात करने लगे- सुन रहे हो क्या? बाहर से एक आवाज सुनाई दी। चोर हो सकता है। रामू की पत्नी बोली।

रामू ने उबासी लेते हुए जवाब दिया- आज चोर आया है तो क्या ले जायेगा। बस, कल न आए। क्यों? कल क्या है? आखिर ऐसी क्या बात हो गई है। कुछ तो पता चलना ही चाहिए। आखिर बता भी दो। तुम्हें कुछ याद भी रहता है क्या? हमने सड़क किनारे वाली जमीन बेची थी। उसकी कीमत एक लाख रुपये देने के लिए कल सेठ का मुनीम आयेगा। रातभर तो वह लाख रुपया अपने घर में ही रहेगा। परसों तो उसे बैंक में जमा करवा दूंगा। पति पत्नी की बातें सुनकर चोर बिना चोरी किये ही चले गये। उनके जाने का आभास रामू को हो गया। उसने खिड़की से देखा चार आदमी जा रहे हैं। कुछ ही देर में वे अंधेरे में ओझल हो गये।

रामू समझ गया कि लाख रुपये के लालच में चोर बिना कुछ चुराए ही आज तो वापस चले गये हैं। लेकिन वे मानेंगे नहीं और अब वे कल फिर आएंगे। सुबह रामू गांव के सरपंच से मिला। रात की घटना उसने सुनाई। सरपंच ने कहा कि गांव के कुछ मजबूत आदमी तुम्हारे घर में छिपकर बैठ जायेंगे और जैसे ही चोर घर में घुसेंगे, उन्हें दबोच लेंगै। एक आदमी मुनीम बना कर कागजों से भरे थैले के साथ तुम्हारे घर भी भेजूंगा।

यदि चोर तुम्हारे घर की निगरानी कर रहे होंगे तो समझ जायेंगे कि रुपये पहुंच गये हैं। रात में पति पत्नी रोशनी बंद करके सो गये। आधी रात को एक एक कर चार चोर घर में घुसे। वे एक कमरे की तरफ बढ़े ही थे कि आसपास छिपे हुए

कई जवान निकल आए और चोरों को पकड़ लिया। चोरों को पुलिस के हवाले कर दिया गया। पकड़े गये चोरों ने चोरी करने की बात स्वीकार कर ली। उन्होंने न केवल पहले की गई कई चोरियों को मान मिला। अब बल्कि गांव में चोरियां होना भी बंद हो गई। अब तो सारे गांव में रामू की चतुराई की प्रशंसा हो रही थी।

१४०६) बर्फीली रात में पसीना - अक्टूबर की बर्फीली रात थी। अमेरिका में गृहयुद्ध समाप्त हुए कुछ ही समय हुआ था। ऐसी रात में एक बेघर, निर्धन और दुर्बल सी महिला आसरा ढूंढ रही थी। किटकिटाते दांत, अकड़ते शरीर को ढकते हुए उसने मदर वेब्स्टर का दरवाजा खटखटाया। मदर वेब्स्टर एक सेवानिवृत्त समुद्री कप्तान की पत्नी थी और एंसबरी, मैसाच्यूएट्स में रहती थी। उन्होंने दरवाजा खोला और पूछा, आप कौन हैं? इतनी बर्फीली रात में आप यहां कहां घूम रही हैं? वह महिला बोली, मैं मिसेज ग्लोवर हूं। एक घर की तलाश में हूं, जहां पर रुककर मैं अपनी समस्या का हल ढूंढ़ सकूं।

यह सुनकर मदर वेब्स्टर बोलीं, मैं यहां अकेली रहती हूं। तुम यहीं क्यों नहीं रुक जाती? मदर वेब्स्टर का आमंत्रण पाकर मिसेज ग्लोवर अंदर आईं। घर में दाखिल होने के बाद जब वह आंगन पार कर रही थी, तभी वेब्स्टर का दामाद बिल वहां आ गया। वह न्यूयॉर्क से छुट्टियां बिताने वहां आया हुआ था। उसे देखते ही वह बोला, मुझे इस घर में कोई भिखारी नहीं चाहिए। यह बोलकर बिल ने मिसेज ग्लोवर को बर्फीली रात में बाहर करके दरवाजा बंद कर लिया। बिल के अपमानजनक शब्दों से बर्फीली हवाओं में भी मिसेज ग्लोवर के चेहरे पर पसीना आ गया। उन्होंने वह रात किसी तरह गुजारी।

अगले दिन वह एक नए विश्वास से उठीं और उन्होंने विश्व में अपनी पहचान बनाने की ठान ली। उनकी कठोर मेहनत, लगन और कर्त्तव्यनिष्ठा रंग लाई। आज पूरा विश्व मिसेज ग्लोवर को क्रिश्चियन साइंस की संस्थापक मैरी बेकर एड्डी के नाम से जानता है। मैरी बेकर एड्डी विश्व की इकलौती ऐसी महिला रहीं जो किसी धार्मिक संस्था की संस्थापक हो। क्रिश्चियन साइंस की संस्थापक होने के अलावा उन्होंने चर्च की स्थापना की और अनेक पुस्तकें लिखीं। उन्होंने साबित किया कि यदि व्यक्ति में मेहनत, जुनून और आत्मविश्वास हो तो वह बर्फीले तूफान से टकराकर भी शिखर पर पहुंच सकता है।

१४०७) गोपाल की चाल - गोपाल भांड बंगाल में नदिया के राजा कृष्णचंद्र के दरबार के नवरत्नों में से थे। वह अपनी सूझ-बूझ और चतुराई से राजा सहित आम जनता की समस्याओं को सुलझाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। एक बार राजा कृष्णचंद्र की सभा में राज्य के बाहर से एक पंडित आए। वह उस समय के भारत में प्रचलित अधिकांश भाषाएं, यहां तक कि संस्कृत, अरबी, फारसी आदि प्राचीन भाषाएं भी धाराप्रवाह बोल रहे थे। पंडितजी देर तक अलग-अलग भाषाओं में बात करते रहे, लेकिन किसी भी भाषा में कोई चूक या कमी नहीं पकड़ में आई। राजा कृष्णचंद्र ने अपने दरबारियों की ओर गहरी नजर से देखा जिसका मतलब यह था कि कोई इन पंडितजी की असलियत बता सकता है, लेकिन दरबारी यह अनुमान न लगा सके कि पंडित जी की मातृभाषा क्या है।

अंत में राजा कृष्णचंद्र ने गोपाल भांड से साफ-साफ पूछा, क्या तुम अतिथि पंडित की मातृभाषा बता सकते हो? गोपाल भांड ने बड़ी विनम्रता के साथ कहा, मैं भाषाओं का जानकार तो हूं नहीं, लेकिन महाराज मुझे अपने तरीके से पता करने की आजादी दे, तो मैं यह काम कर सकता हूं। राजा कृष्णचंद्र ने स्वीकृति दे दी। दरबार की सभा समाप्त होने के बाद सभी दरबारी सीढ़ियों से उतर रहे थे। गोपाल भांड ने तभी अचानक अतिथि पंडित को जोर का धक्का दिया। पंडित जमीन पर गिर गए और गोपाल भांड को गालियां देने लगे।

गोपाल भांड ने विनम्रता से कहा, यही पंडित जी की मातृभाषा है। पंडित जी अब तक संभल चुके थे। उन्होंने पूछा,

आप कैसे कह सकते हैं? गोपाल भांड बोले, तोते को लाख राम-राम और राधे-श्याम सिखा दें, अगर बिल्ली दबोचने को हो तो उसके मुख से टें-टें के सिवाय और कुछ नहीं निकलता। आराम के समय सब भाषाएं चल जाती हैं, किंतु आफत में मातृभाषा ही काम देती है। अतिथि पंडित के सामने सच स्वीकारने के सिवा कोई रास्ता नहीं रहा।

१४०८) चुपके-चुपके राम भजन - भक्त रैदास जाति से चर्मकार थे, किंतु साधु-संतों की बड़ी सेवा करते थे। एक बार एक साधु उनके पास आया। रैदास ने उसे भोजन कराया और अपने बनाए हुए जूते उसे पहनाए। साधु बोला, रैदासजी, मेरे पास एक अनमोल वस्तु है। आप साधु-संतों की सेवा करते हैं, इस कारण मैं उसे आपको दूंगा। इसे पारस कहते हैं और इसके स्पर्श मात्र से लोहा सोना हो जाता है। और ऐसा कहते-कहते उसने उनकी रांपी (चमड़े को तराशने का औजार) को पारस से स्पर्श करके सोना बना डाला। यह देख रैदासजी को दुख हुआ कि अब वे जूते कैसे सी सकेंगे। तब साधु ने कहा, अब आपको जूते सीने की आवश्यकता नहीं। इसी से सैकड़ों रांपियां आ सकती हैं। इस पर रैदासजी बोले, मगर यदि मैं सोना बनाता रहूं तो मेरे सोने की रखवाली कौन करेगा? तब तो मुझे भगवान के भजन के बदले सोने की ही चिंता लगी रहेगी? किंतु साधु नहीं माना और पारस पत्थर को छप्पर में रखकर चला गया।

एक वर्ष बाद वह साधु फिर रैदास के पास आया और उसे यह देख आश्चर्य हुआ कि रैदास की हालत वैसी ही है। उसने जब पारस पत्थर के बारे में पूछा, तो वे बोले, मुझे नहीं मालूम। आपने जहां रखा होगा, वहीं होगा। और वह साधु यह देखकर दंग रह गया कि पारस पत्थर छप्पर में उसी स्थान पर रखा हुआ है। तब वह बोला, आप सचमुच धन्य हैं। आप चाहते तो इस पत्थर से मंदिर बनवा सकते थे, निर्धनों को दान कर सकते थे। इस पर रैदास ने उत्तर दिया, महाराज। अभी तो मैं छिपे-छिपे चुपचाप भगवान का भजन कर लेता हूं। अगर मंदिर बनाता या दान करता, तब तो प्रसिद्धि मिलती और लोग मुझे बहुत तंग करते मैं तो इस झगड़े में बिल्कुल नहीं पड़ना चाहता। और यह कहकर वह जूते सिलने का काम करते हुए राम नाम लेने में व्यस्त हो गए।

१४०९) चतुर और होशियार केकड़ा - किसी स्थान पर एक बहुत बड़ा तालाब था। उसमें तरह-तरह के जलजंतु रहते थे। वहीं एक बूढ़ा बगुला भी रहता था। बुढ़ापे के कारण वह कमजोर हो गया था। इस कारण मछलियां पकड़ने में असमर्थ था। एक बार एक केकड़ा उसके पास आया। बगुले को उदास देखकर उसने पूछा, मामा, तुम रो क्यों रहे हो? क्या तुमने आजकल खाना-पीना छोड़ दिया है? बगुले ने कहा- बेटा, तुमने ठीक समझा। अब मैं अधिकतर उपवास करता हूं। अब मैं मछलियों को मारकर नहीं खाता।

केकड़े ने पूछा- मामा, अचानक यह क्या हो गया? बगुले ने बताया, पुत्र, मेरा जन्म इसी तालाब के पास हुआ था। यहीं मैंने इतनी उम्र बितायी। अब मैंने सुना है कि यहां बारह वर्षों तक पानी नहीं बरसेगा। केकड़े ने पूछा, तुमसे ऐसा किसने कहा है? बगुले ने कहा- मुझे एक ज्योतिषी ने यह बात बतायी है। इस तालाब में पानी पहले ही कम है। शेष पानी भी जल्दी ही सूख जायेगा। तालाब के सूख जाने पर इसमें रहने वाले प्राणी भी मर जायेंगे। इसी कारण मैं परेशान हूं। बगुले की यह बात केकड़े ने अपने साथियों को बतायी। वे सब भयभीत हो गये और बगुले के पास पहुंचे। उन्होंने बगुले से पूछा- मामा, ऐसा कोई उपाय बताओ, जिससे हम सब बच सकें।

बगुले ने बताया- यहां से कुछ दूर एक बड़ा सरोवर है। वह जल से भरा हुआ है। यदि तुम लोग वहां जाओ तो तुम्हारे प्राणों की रक्षा हो सकती है। सभी ने एक साथ पूछा- हम उस सरोवर तक पहुंचेंगे कैसे? चालाक बगुले ने कहा- मैं तो अब बूढ़ा हो गया हूं, लेकिन इस संकट के समय तुम लोग चाहो तो मैं तुम सबको एक-एक करके पीठ पर बैठा कर उस

तालाब तक ले जा सकता हूं। सभी बगुले की पीठ पर चढ़कर दूसरे तालाब में जाने के लिए तैयार हो गये। दुष्ट बगुला प्रतिदिन एक मछली को अपनी पीठ पर चढ़ाकर ले जाता और शाम को तालाब पर लौट आता। इस प्रकार उसकी भोजन की समस्या हल हो गयी।

एक दिन केकड़े ने कहा- मामा, अब मेरी भी तो जान बचाइए। बगुले ने सोचा कि मछलियां तो वह रोज खाता है। आज केकड़े का मांस खायेगा। ऐसा सोचकर उसने केकड़े को अपनी पीठ पर बैठा लिया। उड़ते हुए वह बड़े पत्थर पर उतरा, जहां वह हर दिन मछलियों को खाया करता था। केकड़े ने वहां पर पड़ी हुई हड्डियों को देखा। वह सावधान हो गया। उसने बगुले से पूछा- मामा, सरोवर कितनी दूर है? आप तो थक गये होंगे। बगुले ने केकड़े को मूर्ख समझकर उत्तर दिया- अरे, कैसा सरोवर। यह तो मैंने अपने भोजन का उपाय सोचा था। अब तू भी मरने के लिए लिए तैयार हो जा। मैं इस पत्थर पर बैठकर तुझे खा जाऊंगा। इनता सुनते ही केकड़े ने बगुले की गर्दन जकड़ ली और अपने तेज दांतों से उसे काट डाला। बगुला वहीं मर गया। केकड़ा किसी तरह धीरे-धीरे अपने तालाब तक पहुंचा। मछलियों ने जब उसे देखा तो पूछा- अरे केकड़े भाई तुम वापस कैसे आ गये। मामा को कहां छोड़ आये? केकड़ा हंसने लगा। उसने बताया- वह बगुला महाठग था। उसने हम सभी को धोखा दिया। वह साथियों को पास की चट्टान पर ले जाकर खा जाता था। मैंने उसकी चालाकी को समझ लिया, इसलिए बच गया। मैंने उस धूर्त बगुले को मार दिया है। अब डरने की कोई बात नहीं है।

१४१०) राजा, मेल और भिखारी की खुशी - एक भिखारी की कथा, जिससे राजा को अपनी खुशी और हमेशा मुस्कराने का राज बताया। एक राजा रोज अपनी बग्घी में बैठकर राज्य के भ्रमण पर निकला करता था। एक दिन वह एक मेले में गया। जहां काफी भीड़ थी, लेकिन सबके चेहरे पर उदासी थी। उस साल राज्य में सूखा पड़ा था और लोग परेशान थे। सिर्फ एक ही आदमी को राजा ने मुस्कुराते हुए देखा, जो खाने-पीने की एक दुकान पर बैठा हुआ था।

अगले दिन फिर राजा की बग्घी उसी दुकान के सामने से गुजरी। उस दिन भी वह आदमी मुस्करा रहा था। राजा ने उसे काफी देर तक देखा, फिर आगे बढ़ गया। एक दिन राजा ने सपने में भी उस आदमी को मुस्कुराते हुए देखा। अगले दिन राजा उसी दुकान पर पहुंचा और बग्घी से उतरकर उसकी तरफ बढ़ने लगा। उस आदमी के पास एक कटोरा भी था। यानी वह आदमी भिखारी आखिर इतना खुश कैसे रह सकता है? राजा ने उससे पूछा, तुम्हारे पास न कपड़े हैं, न घर, न पैसे, न परिवार। फिर भी तुम इतना खुश कैसे रह लेते हो? भिखारी बोला, हमारी जितनी क्षमता होती हैं, हमें उतनी ही चुनौतियां मिलती हैं और चुनौतियां हमारी क्षमताओं को और मजबूत बनाती हैं। यदि मुझे ज्यादा तकलीफें मिलती हैं, तो मैं यह सोचता हूं कि मैं बाकी लोगों के मुकाबले इन तकलीफों का सामना करने की ज्यादा क्षमता रखता हूं। यह सोचकर मुझे खुशी मिलती है और जब मैं उन तकलीफों को पार कर लेता हूं, तो यह सोचकर खुशी मिलती है कि मेरा स्तर और ऊंचा हो गया। मुझे विश्वास है कि मैं जहां हूं, जैसा भी हूं और मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ है। ये सारे भाव मेरे चारों तरफ रोशनी पैदा करते हैं और मैं हमेशा खुशी के घेरे में रहता हूं। यह सुनकर राजा की खोई मुस्कान वापस आ गई।

१४११) अपने अतीत को सदा याद रखें -सफलता मिलने पर अहंकारी नहीं बनना चाहिए और हम चाहे कितने ही बड़े क्यों ना बन जाए अपने अतीत को नहीं भूलना। एक ऐसे ही इंसान के बारे में जिसने सफलता मिलने पर उसे दिमाग पर हावी नहीं होने दिया। गांव में एक कथावाचक अपना खर्च जजमानी से चलाते थे। धीरे-धीरे जब उनकी आमदनी कम होने लगी तो वह गांव छोड़कर शहर चले गए। वह अपने साथ लोहे के बक्से में कुछ किताबें और कुछ पुराने कपड़े ले गए। शहर में उन्हें एक सेठ के यहां मुनीम की नौकरी मिल गई। सेठजी के यहां दो मुनीम पहले से काम करते थे। हेड

मुनीम बनते ही पंडित जी ने कड़ाई की और पहले के मुनीमों और अन्य नौकरों की ऊपरी कमाई बंद करवा दी। कमाई बंद होने से वहां के नौकर पंडित जी से नाराज हो गए और किसी तरह उन्हें हटाने की योजना बनाने लगे।

पंडित जी की आदत थी कि वह प्रतिदिन घर पहुंचते ही अंदर से किवाड़ बंद कर लेते थे और एक घंटे तक किसी को भी अंदर नहीं आने देते थे एक दिन पुराने नौकरों ने सेठ से कहा, आप जिस मुनीम को ईमानदार समझते हैं वह महाचोर है। वह घर जाकर नोटों की गड्डी गिन कर रखता है। आप चाहे तो स्वयं देख सकते हैं।

पहले तो सेठ जी को विश्वास नहीं हुआ लेकिन रोज-रोज की शिकायत से परेशान होकर वह उन नौकरों के साथ पंडितजी के घर गए। पंडित जी ने अंदर से किवाड़ बंद कर रखा था। सेठ जी ने दरवाजा खोलने का अनुरोध किया तो पंडित जी ने उन्हें प्रतीक्षा करने को कहा। कुछ देर बाद जब पंडित जी ने दरवाजा खोला तो सेठ जी ने देखा कि सामने कुछ पुरानी किताबें और पुराने कपड़े पड़े थे। एक तरफ वही पुराना ट्रंक रखा हुआ था जिसमें थोड़े-बहुत पैसे थे। पंडित जी ने कहा, मैं प्रतिदिन शाम को अपनी सभी चीजों को देखकर अपने अतीत को याद कर लेता हूं और प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि मुझमें कभी लालच पैदा मत करना। मैं नहीं चाहता कि कोई उस समय विघ्न डाले इसलिए मैं किवाड़ नहीं खोलता। जो लोग अपने अतीत को भूल जाते हैं वह गलत रास्ता पकड़ लेते हैं।

१४१२) खोज रंग लाई - नॉर्मन बोरलॉग आयोवा के एक फार्म पर बड़े हुए। बचपन से ही उन्हें खेती-बाड़ी बहुत अच्छी लगती थी। यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा से उन्होंने प्लांट पैथोलॉजी में पीएचडी की और ड्यूपॉन्ट में माइक्रो-बायॉलजिस्ट बन गए। १९४४ में उन्हें मेक्सिको में रॉकफेलर फाउंडेशन के हंगर प्रोजेक्ट में नौकरी करने का प्रस्ताव मिला। ड्यूपॉन्ट में उनका काम उत्कृष्ट श्रेणी का था। इसलिए ड्यूपॉन्ट ने उन्हें कंपनी न छोड़कर जाने के लिए उनका वेतन दोगुना करने का प्रस्ताव दे दिया। दोगुने वेतन के प्रस्ताव को मानकर वे अपने जीवन स्तर को उच्च बना सकते थे, लेकिन उन्होंने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और मैक्सिको चले गए। नॉर्मन सोचते रहते थे कि कुछ इलाकों में पौधे बेहतर क्यों उगते हैं और कुछ इलाकों में फसल नष्ट क्यों हो जाती है? मैक्सिको पहुंचने पर इस संदर्भ में खोज करने पर उन्होंने पाया कि वहां के किसान अति खेती करते थे, फलस्वरूप मिट्टी के पोषक तत्त्व नष्ट हो जाते थे। फसलों में कीड़े लग जाते थे और फसल नष्ट हो जाती थी। किसान किसी तरह अपनी दो जून की रोटी ही बमुश्किल जुटा पाते थे। अब नॉर्मन ने मैक्सिको की प्रयोगशालाओं में इस बारे में अनुसंधान करना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने पाया कि गेहूं के पौधों की आनुवांशिक संरचना बदलने से उतने ही क्षेत्र में उत्पादन चार गुना बढ़ाया जा सकता है। उनकी खोज रंग लाई और इससे उत्पादन बढ़ने लगा। इसी खोज को एशिया में धान की पैदावार बढ़ाने के लिए लागू किया गया। उनकी इस महत्वपूर्ण खोज के कारण ही किसानों का उत्पादन छह से दस गुना बढ़ गया। चिली से लेकर चीन तक में उनकी इसी खोज के अनुरूप फसल बोई जाने लगी। नॉर्मन बोरलॉग ने लोगों को भूखमरी से बचाने के लिए अपना जीवन लगा दिया। १९७० में उन्हें विश्व से भूखमरी कम करने के लिए नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

१४१३) बड़ा काम - एक बार की बात है, बीकानेर नरेश का दरबार लगा हुआ था। राजद्वार पर ब्राह्मणों की एक बड़ी पंक्ति खड़ी थी। उसी पंक्ति में महामना मदनमोहन मालवीय एक नारियल व कलावा लिए खड़े थे। उनके आगे मौजूद प्रत्येक ब्राह्मण नरेश की कलाई में कलावा बांधता, परिचय देता और फिर दक्षिणा के रूप में एक रुपया प्राप्त कर लौट जाता। नंबर आने पर मालवीय जी ने भी कलावा बांधा ओर नारियल भेंट किया। लेकिन इसके साथ ही उन्होंने स्वरचित शुभाशीष दिया और आगे बढ़ गए। जब नरेश को पता चला कि यह मदनमोहन मालवीय हैं तो उन्होंने उन्हें फिर से

बुलवाया। उनसे आने का प्रयोजन पूछा। मालवीय जी ने उन्हें काशी हिंदू विश्वविद्यालय की योजना बताई और उनके सामने ब्लैंक रसीद रख दी। नरेश ने भी तत्काल एक सहस्र लिखकर साइन कर दिए। बीकानेर नरेश अच्छे से जानते थे कि मालवीय जी द्वारा एकत्रित किया जानेवाला धन यूनिवर्सिटी के निर्माण में ही खर्च होनेवाला है। लेकिन मालवीयजी ने नरेश के अनुदान की ओर ध्यान न देते हुए विश्वविद्यालय की समूची रूपरेखा नरेश के सामने प्रस्तुत की। उन्होंने बीकानेर नरेश को बताया कि यह भारत का अनूठा एवं महत्वपूर्ण उच्च शिक्षा संस्थान होगा, जिससे समूचे भारत का गौरव बढ़ेगा। वे इस भव्य एवं अनूठे कार्य के लिए धन एकत्र करने के लिये ही घर से निकले हैं। जब मालवीय जी ने संभावित व्यय और समाज को होनेवाला लाभ भी बताया, तो नरेश सोचने लगे कि इतने बड़े काम में एक सहस्र मुद्रा से क्या होनेवाला है? उन्होंने पूर्व लिखित राशि पर दो शून्य और बढ़ा दिए, साथ ही कोषाध्यक्ष को एक लाख मुद्राएं प्रदान करने का आदेश दे दिया। ऐसी थी महामना मदन मोहन मालवीय की शिक्षा सेवा की सदिच्छा, जिसके चलते देश के कई नरेशों की ओर से बीएचयू को मदद मिलती गई।

१४१४) तीन दोस्त और परवेज जाफर - तीन शरारती दोस्तों की कहानी, जिनकी जिंदगी परवेज जाफर नाम के एक बुजुर्ग की बातों ने बदल दी।

शुजा, मोहित और रुपेश पांच साल बाद उसी पार्क में मिलने वाले थे, जिसने उनकी जिंदगी बदल दी थी।शुजा सब डिविजनल मजिस्ट्रेट बन चुका था, जबकि मोहित एक बड़ा व्यवसायी और रूपेश सीनियर आईटी इंजीनियर था। तीनों की शादी हो चुकी थी। सभी सपरिवार पार्क में इकट्ठा हुए। शुजा की पत्नी ने पूछा, आज इस पार्क में मिलने की योजना क्यों बनी? क्या खास है इस पार्क में? शुजा, मोहित और रूपेश एक दूसरे की तरफ देखकर मुस्कराने लगे। रूपेश बोला, तुम लोगों को तो पता ही है कि हम बचपन में कितने शरारती थे। पर ग्रेजुएशन के समय इसी पार्क में एक ऐसी घटना हुई, जिसने हमारी जिंदगी बदल दी। शुजा की पत्नी ने पूछा, ऐसा क्या हुआ था? शुजा बोला, तुम लोग शायद इस पर यकीन न करो कि हमने इसी पार्क में एक बुजुर्ग को मारा और लूटा था। तीनों की पत्नियां स्तब्ध रह गईं। रूपेश बोला, हां, हमने एक ही बुजुर्ग को कई बार मारा था और उनकी घड़ी, पर्स, चेन लूटकर भाग गए थे। मोहित की पत्नी ने पूछा, आप लोगों को किसी ने पकड़ा? रूपेश ने जवाब दिया, नहीं। मोहित बोला, एक बुजुर्ग परवेज जाफर रोज शाम को पार्क में टहलने आते थे। वह इतने सज्जन दिखते थे कि कोई सोच भी नहीं सकता था कि वह कभी किसी से मुकाबला भी कर सकते हैं। यही सोचकर हमने उन्हें कई बार लूटा था और लूटने के बाद उन पर खूब हंसते थे हम। कई बार तो पार्क में पड़े पानी के पाइप से उन्हें भिगोया भी था। फिर एक दिन हमें पता चला कि परवेज जाफर शहर के नामी जूडो कोच थे। मोहित की पत्नी बोली, फिर भी उन्होंने आप लोगों का मुकाबला क्यों नहीं किया? शुजा बोला, यही सवाल हमने उनसे पूछा, तो वह बोले, तुम तीनों मेरे बच्चों की तरह हो। तुमने चोरी की है, तो जरूर तुम्हें पैसों की जरूरत रही होगी। बस तुम लोग एक दिन मेरा नाम रोशन करना। मोहित बोला, वही दिन था, जब हमने तय कर लिया कि हमें कुछ करके दिखाना है।

हमारे जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं, जो हमारी जिंदगी बदल देती हैं।

१४१५) सफलता की नाव - दो भाई थे। वे व्यापारी थे। उन्हें हर हालत में रात में ही नाव से सफर करके एक शहर से किसी दूसरे शहर में पहुंचना था। अत: अपनी योजना के अनुसार दोनों भाई रात को नदी पर पहुंच गए। रात में वहां बहुत ही ज्यादा घना कोहरा था। आसपास कुछ नहीं दिख रहा था। जैसे-तैसे उन्हें एक नाव दिखाई दी, उन्होंने नाव ढूंढी और उसमें जाकर बैठ गए। अपने-अपने चप्पुओं से वे नाव को खेने लगे। रातभर उन्होंने बहुत मेहनत की। सुबह तक

थकावट हावी होने लगी थी। पूरी रात बीत गई। सुबह जब कोहरा छंटा तो उन्हें बुरी तरह झटका लगा। उन्होंने देखा कि जिस नाव को अंधेरे में पूरी रात भर खेते रहे हैं, वह अभी भी वहीं थी। वह अपनी जगह से जरा भी आगे नहीं बढ़ी थी।

अब नाव क्यों आगे नहीं बढ़ी? दरअसल, वह नाव की रस्सी को खोलना भूल गए थे, जो किनारे के एक खूंटे से बंधी हुई थी। हम भी जिंदगी में सफल होने के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं। उसके लिए प्रयास भी करते हैं। हम आगे बढ़ना तो चाहते हैं, पर पिछले दुख, असफलताओं, तकलीफों और समस्याओं को नहीं छोड़ते। यदि हम अपने दुखों को, अपनी समस्याओं को और असफलताओं को नहीं छोड़ेंगे तो वह खुद हमें पकड़कर, हमें बांधकर रखेंगी। इसलिए बेहतर यही है कि उन्हें पीछे छोड़कर हम आगे की सोचें।

१४१६) ख्याली पुलाव पकाते-पकाते चावल धूल में मिल गए - एक अत्यंत निर्धन व्यक्ति था। अशिक्षित होने के कारण उसे कोई ढंग का काम भी नहीं मिलता था, सो वह भिक्षा मांगकर पेट भरता। एक दिन भिक्षा में उसे कुछ चावल मिले। चावल उसे काफी दिनों बाद मिले थे, इसलिए वह बड़ा प्रसन्न हुआ। फिर अगले घर से उसे रोटी-सब्जी मिली। घर आकर उसने रोटी-सब्जी से भूख मिटाई और चावल एक मटके में डालकर उसे दीवार पर खूंटी से लटका दिया। फिर वह नीचे लगी चारपाई पर आराम करने के लिए लेट गया। मटके को देखकर वह सोचने लगा कि उसमें कुछ चावल हैं। यदि कल भी चावल मिलेंगे तो मटका आधा भर जाएगा। फिर सौभाग्य से यदि परसों भी चावल मिल जाएं तो मटका पूरा भर जाएगा। अब उसकी सोच उड़ान भरने लगी कि इस प्रकार एक माह में चार-पांच मटके भर जाएंगे। दो-तीन माह के बाद एक बोरी चावल जमा हो जाएगा। इसी तरह बोरियां भरती रहेंगी तो मैं उन्हें बेचूंगा। पैसे आएंगे तो और चावल खरीदकर बेचूंगा। जब मैं धनवान हो जाऊंगा तो मेरा विवाह होगा, फिर मेरे बच्चे होंगे जो बड़े सुंदर व शरारती होंगे। मैं उन्हें अच्छी बातें सिखाऊंगा। यदि उन्होंने उनका पालन नहीं किया तो उन्हें लात मारूंगा। यह सोचते हुए उसने सचमुच हवा में लात मार दी जो मटके को लगी। मटका टूट गया और सब चावल नीचे बिखरकर धूल में मिल गए, साथ ही उसके सपने भी ध्वस्त हो गए। अपनी करनी और दृष्टि अर्थात आचरण और विचार में साम्य न होने पर सदैव हानि ही होती है। अत: जो विचार में हो, वही करनी में होना चाहिए।

१४१७) कभी टूटने न दें विश्वास - शेख सादी मस्जिद में नमाज पढ़ने जा रहे थे। इतने में उन्होंने देखा कि एक अमीर वहां नमाज पढ़ने आया है और उसके पैरों में हीरे-जवाहरात जड़ी जूतियां हैं। उन्हें यह भी पता चला कि वह अमीर साल में एक बार ही नमाज पढ़ने आता है। शेख सादी मन ही मन बोले- हे अल्लाह। मैं रोज नमाज पढ़ता हूं, किंतु मेरे पास फटी-पुरानी जूतियां हैं। यह कैसा न्याय है? शेख सादी यह सोच ही रहे थे कि वहां एक अपाहिज भी नमाज पढ़ने आ गया। उसके दोनों पैर नहीं थे, लेकिन उसने रोज नमाज अदा करने में कभी कोताही नहीं की। यह देखकर शेख सादी तुरंत अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए कहा, मुझ पर अल्लाह ने क्या कम इनायत की है, जो मुझे अल्लाह के दर तक आने के लिए दो सही-सलामत पैर दिए हैं।

इंसान को ईश्वर के प्रति सदैव आभारी रहना चाहिए, क्योंकि ईश्वर ने इंसान को भले ही धन-दौलत न दी हो, लेकिन उसे स्वस्थ शरीर और एक शक्तिशाली मस्तिष्क दिया है, जिसके जरिए वह अकूत संपदा सहित, जो चाहे वह हासिल कर सकता है।

१४१८) प्रलोभन में फंसे बिना - नि:संतान राजा अवक्रीत की उम्र ढलने लगी थी। योग्य उत्तराधिकारी न मिलने के कारण वह चिंतित थे। राजसभा के सदस्यों ने राजा को कहा कि उनके लिए तो राज्य की प्रजा संतान की तरह है।

उन्हीं में से उत्तराधिकारी का चुनाव कर लिया जाए। उनकी सलाह पर राजा ने ढिंढोरा पिटवाया कि अमुक दिन शाम को मुझसे जो मिलने आएगा, उसे मैं अपने राज्य का एक हिस्सा दूंगा। महामंत्री ने कहा, महाराज, आपसे मिलने तो बहुत लोग आएंगे। सभी को उनका भाग देंगे, तो राज्य के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। राजा ने कहा, आप कृपया देखते रहिए कि क्या होता है। नियत दिन राजा ने राजमहल के बगीचे में एक विशाल मेले का आयोजन किया। वहां नाच-गाने और शराब की महफिल जमी थी, अनेक खेल हो रहे थे और खाने के लिए असंख्य स्वादिष्ट पदार्थ थे। राजा से मिलने आए कितने ही लोग नाच-गाने में अटक गए, कितने ही सुरा-सुंदरी में, खेलों में मशगूल हो गए। इस बीच एक व्यक्ति ऐसा भी था, जिसने किसी चीज की तरफ देखा तक नहीं। वह सिर्फ राजा से मिलना चाहता था। उत्तराधिकारी का चुनाव किया जाना है, इससे बेखबर वह बगीचा पार कर राजमहल तक पहुंच गया। वहां तलवार लिए खड़े चौकीदारों ने उसे रोका। पर उनकी अनदेखी कर वह महल में चला गया। जैसे ही वह अंदर पहुंचा, उसे राजा सामने ही मिल गए। पूरा प्रसंग जानकर राजा अवक्रीत ने कहा, कोई व्यक्ति तो ऐसा मिला, जो प्रलोभन में फंसे बिना अपने ध्येय तक पहुंच सका। तुम मेरे उत्तराधिकारी बनोगे।

१४१९) बासी अन्न - श्रावस्ती नगरी के नगर सेठ मिगार भोजन करने बैठे थे। उनकी सुशीला पुत्रवधू विशाला हाथ में पंखा लेकर उन्हें हवा कर रही थी। इसी समय एक बौद्ध भिक्षु आकर उनके द्वार पर खड़ा हुआ और उसने भिक्षा मांगी। नगरसेठ मिगार ने भिक्षु की पुकार पर ध्यान नहीं दिया। वह चुपचाप भोजन करते रहे। भिक्षु ने जब फिर पुकारा तब विशाखा बोली, आर्य मेरे ससुर बासी अन्न खा रहे हैं, अत: आप अन्यत्र पधारे। नगरसेठ के नेत्र लाल हो गए। उन्होंने भोजन छोड़ दिया। हाथ धोकर पुत्रवधू से बोले, तूने मेरा अपमान किया है। मेरे घर से अभी निकल जा। विशाला ने नम्रता से कहा, मेरे विवाह के समय आपने मेरे पिता को वचन दिया है कि मेरी कोई भूल होने पर आप आठ सद्गृहस्थों से उसके विषय में निर्णय कराएंगे और तब मुझे दंड देंगे। ऐसा ही सही। उन्होंने आठ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलवाया, विशाला ने सब लोगों के आ जाने पर कहा, मनुष्य को अपने पूर्वजन्म के पुण्यों के फल से ही संपत्ति मिलती है। मेरे ससुर को जो संपत्ति मिली है, वह भी उनके पहले पुण्यों का फल है। इन्होंने अब नवीन पुण्य करना बंद कर दिया है, इसी से मैंने कहा कि यह बासी अन्न खा रहे हैं। पंच बने पुरुषों को निर्णय सही देना पड़ा। नगरसेठ ने ही लज्जित होकर पुत्रवधू से क्षमा मांगी।

१४२०) रमेश, पिता और बीज - पिता की कहानी, जिसने रमेश को बीज के जरिये संबंधों के महत्व के बारे में बताया। रमेश अपने व्यवसाय के साथ-साथ अपनी निजी जिंदगी में भी बेहद सफल थे। एक बार उनके एक दोस्त ने उनसे पूछा, क्या तुमने जिंदगी में कभी किसी कठिनाई का सामना किया है? वह बोले, एक दौर ऐसा भी था। जब मेरे पास खाने को दो वक्त की रोटी भी नहीं होती थी। आज से तीस साल पहले अगर तुम मुझसे मिलते, तो सोच भी नहीं सकते थे कि मैं एक दिन इस मुकाम तक पहुंचूंगा। मेरे पिता बरेली के पास एक छोटे से गांव में किसान थे। हमारे पास जमीन का एक छोटा-सा टुकड़ा हुआ करता था, जिस पर हम टमाटर उगाते थे। पिताजी पूरा खेत जोतते थे और मां और मैं नालियां बनाकर एक कतार मे बीज डालते जाते थे। फिर मेरे दोनों भाई उसके ऊपर खाद का मिश्रण डालते थे। खाद पड़ जाने के बाद उन नालियों को वापस मिट्टी से भर दिया जाता था। लगातार सिंचाई करने के बाद वे बीज बड़े-बड़े टमाटर बन जाते थे। टमाटर उगाने की उस प्रक्रिया के दौरान मेरे पिता मुझे समझाया करते थे कि बेटा, तुमने देखा, कैसे ये बीज इतनी जल्दी टमाटर बन जाते हैं। फिर टमाटर की सब्जी और चटनी बनती है, जिसका हम सब मिलकर आनंद उठाते हैं। कुछ इसी तरह से हमारे रिश्ते और हमारे संबंध भी पककर तैयार होते हैं। हमारा हरेक भाव, हमारी हरेक बात एक बीज की तरह

होती है, जो समय के साथ परिपक्व होती जाती है और हमारी अलग-अलग परिस्थितियां उन बीजों के लिए खाद की तरह काम करती हैं, उन बीजों को प्रभावित करती हैं। पानी होता है समय। यानी आज मैं जो भी हूं, जो मेरे रिश्ते हैं, जो मेरी उपलब्धियां हैं, उनके बीज मैंने काफी पहले बोए थे। उन्हीं के परिणाम स्वरूप मेरा परिवार आज इतना खुशहाल है और मेरा परिवार आज भी उस खेत की तरह है, जो नई फसल के लिए एकदम तैयार है, मैं आज जो भी करूंगा, वह मेरे आनेवाले कल के लिए एक बीज की तरह होगा। रमेश की इस बात ने उसके दोस्त को बहुत प्रभावित किया। हमारा हर कर्म हमारे आनेवाले कल के लिए एक बीज की तरह होता है।

१४२१) पद नहीं, केवल नाम - जापानी संत मेहजी के प्रकांड पांडित्य और विरक्त स्वभाव की ख्याति पूरे जापान में फैली हुई थी। जिज्ञासु उनके पास आते और अपनी शंकाओं का समाधान पाकर संतुष्ट लौटते थे।

एक दिन जापान के एक प्रांत के राज्यपाल श्री कियाजारी उनके यहां पहुंचे। उन्होंने अपने ऊंचे पद का अभिमान करते हुए संत मेहजी से मिलने की इच्छा जताते हुए अपने सचिव के माध्यम से उनके पास पत्र भिजवाया। पत्र में श्री कियाजारी के पद का भी उल्लेख था। संत मेहजी ने सचिव को बुलवाया और उससे बोले, अपने राज्यपाल को बोलना कि मैं राजकाज की बात करनेवाले किसी व्यक्ति से नहीं मिलता क्योंकि मुझे राजनीति की बातें समझ में नहीं आतीं और राजनीति में मेरी कोई रुचि नहीं है। मैं केवल धर्म तथा साहित्य-संस्कृति की चर्चा करता हूं। मुझे साधारण व्यक्ति और विशिष्ट व्यक्तियों में कोई अंतर नजर नहीं आता। सचिव ने राज्यपाल को संत की कही हुई बातों को सुनाया।

सचिव की बातें सुनकर राज्यपाल को अपनी गलती की अनुभूति हुई। वह संत से मिलना एवं उनका आशीर्वाद लेना चाहते थे। इसलिए इस बार उन्होंने अपनी गलती में सुधार करते हुए केवल अपना नाम लिखकर भेजा तो संत मेहजी ने उन्हें अपने पास बुला लिया। वह घंटों उनसे धर्म-कर्म तथा ईश्वर संबंधी चर्चा करते रहे। उनकी बातचीत में राजनीति एवं राजकाज की कोई बात नहीं हुई, लेकिन बावजूद इसके श्री कियाजारी ने अपूर्व आनंद एवं शांति का अनुभव किया। संत मेहजी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, मेरे लिए आपका जो आदेश एवं संदेश है, वह अवश्य प्रदत्त कीजिए। तो संत मेहजी बोले, धर्म का सार सेवा, परोपकार न्याय और करुणा जैसे सद्‌गुणों में समाहित है। ये सद्‌गुण ही मानव को अमर बनाते हैं, उसे शांति प्रदान करते हैं। कियाजारी संत मेहजी से इतने प्रभावित हुए कि उसी समय से अपने जीवन को संत के आदर्शों के अनुरूप ढालने में लग गए।

१४२२) मन बदल गया - बात उन दिनों की है, जब स्वामी दयानंद मथुरा में रहा करते थे। प्रतिदिन ध्यान-साधना के बाद उनकी आदत थी कि वे मथुरा के विभिन्न पंडितों, महात्माओं से शास्त्रार्थ किया करते थे। उनकी विद्वत्ता के सामने उन पंडितों और महात्माओं ने जो झूठ और पाखंड के किले लोगों को भरमाने के लिए बना रखे थे, सारे के सारे पलक झपकते ही ढह जाते। देखते ही देखते उनके विरोधियों के पाखंड की दुकानें बंद होने लगीं। स्वामी दयानंद के प्रकांड पांडित्य को देखकर उनके सारे विरोधी विचलित हो उठे। ऐसे में विरोधियों ने दयानंद को मथुरा से निकालने की एक योजना बनाई।

एक दिन सारे विरोधी गुट बनाकर एक वेश्या के पास गए और उसे बताया कि अमुक उद्यान में दयानंद रहता है। ऐसा करो कि तुम उसके पास जाओ और पास जाते ही शोर मचा देना। हम सब पास ही झाड़ियों में छुपे रहेंगे। तुम्हारी आवाज सुनते ही हम तुरंत बाहर निकल आएंगे और दयानंद को मार-मार कर अधमरा कर देंगे। ऐसा करने के लिए उन सभी ने मिलकर उस वेश्या को खूब सारे आभूषण और धन दिए। धन के लोभ में वेश्या उनकी बातों में आ गई। उसने उनकी साजिश में शामिल होना स्वीकार कर लिया और अगले दिन तय समय पर विरोधियों के बताए उद्यान में पहुंचीं

उस वक्त उद्यान में स्वामी दयानंद ध्यान में बैठे थे। दयानंद को देखते ही वेश्या के मन के सारे पाप धुल गए ओर उसके मुंह से एक चीख निकल गई। स्वामी दयानंद ने पूछा, मां तुम कौन हो? यह सुनते ही वेश्या की आंखें डबडबा आईं। उसने सारा वृत्तांत दयानंद को सुना दिया। दयानंद ने कहा, मां ईश्वर ने जो श्रेष्ठ बुद्धि इस समय दी है, वह सदा बनी रहे, यही मेरा आशीर्वाद है। इस प्रकरण से वेश्या के साथ-साथ उनके विरोधियों का भी मन बदल गया। उन्होंने स्वामी दयानंद को फंसाने का ओछा इरादा त्याग दिया।

१४२३) पुरानी पेंटिंग - बहुत समय पहले की बात है, १९वीं सदी के मशहूर पेंटर दांते गेब्रियल रोजेटी के पास एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति पहुंचा। उसके पास कुछ स्केच और ड्राइंग्स थीं जो वो रोजेटी को दिखाकर उनकी राय जानना चाहता था कि वे अच्छी हैं, या कम से कम उन्हें देखकर कलाकार में कुछ टैलेंट जान पड़ता है।

रोजेटी ने ध्यान से उन ड्राइंग्स को देखा। वह जल्द ही समझ गए कि वे किसी काम की नहीं हैं और उसे बनानेवाले में नहीं के बराबर आर्टिस्टिक टैलेंट है। वे उस व्यक्ति को दुखी नहीं करना चाहते थे, पर साथ ही वो झूठ भी नहीं बोल सकते थे इसलिए उन्होंने बड़ी सज्जनता से उससे कह दिया कि इन ड्राइंग्स में कोई खास बात नहीं है। उनकी बात सुनकर व्यक्ति थोड़ा निराश हुआ, लेकिन शायद वो पहले से ही ऐसी उम्मीद कर रहा था।

उसने रोजटी से उनका समय लेने के लिए माफी मांगी और अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो वे एक यंग आर्ट स्टूडेंट के द्वारा बनाई कुछ पुरानी पेंटिंग्स भी देख लें। रोजेंटी तुरंत तैयार हो गए और एक पुरानी फाइल में लगी कृतियां देखने लगे। उन्होंने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा- वाह, ये पेंटिंग्स तो बड़ी अच्छी हैं, इस नौजवान में बहुत टैलेंट है, उसे हर तरह का प्रोत्साहन दीजिए, यदि वह इस काम में लगा रहता है और जी तोड़ मेहनत करता है तो कोई शक नहीं कि एक दिन वो महान पेंटर बनेगा। रोजेटी की बात सुनकर उस व्यक्ति की आंखें भर आयीं। कौन है यह नौजवान? रोजेटी ने पूछा- तुम्हारा बेटा?

नहीं, ये मैं ही हूं- तीस साल पहले का मैं। काश उस समय किसी ने आपकी तरह प्रोत्साहित किया होता तो आज मैं पछताने की जगह एक खुशहाल जिन्दगी जी रहा होता। प्रोत्साहन एक ऐसी चीज है जो हमारे अंदर का बेस्ट बाहर लेकर आती है हमें और भी अच्छा करने के लिए प्रेरणा देती है।

१४२४) मेरे पड़ोस में एक महिला रहती हैं। उनके बेटा-बहू और पति सुबह से अपने कामकाज पर जाते तो देर रात को लौटते। यह गृहणी भोर से रात तक घर के कामों में उलझी रहतीं। कुछ दिनों से उन्हें बुखार ने घेर लिया। रोग और दुर्बलता ने उन्हें अशक्त कर दिया था। घर के सदस्य बाहर जाते समय उनकी जरूरत की चीजें पास रखकर जाते। कुछ दिन ऐसे चलता रहा। एक दिन बर्तन-सफाई करनेवाली लड़की खटका-खटका कर वापस चली गई। पड़ोसिन का बेटा संयोग से उस दिन घर पर था। उनकी छत पर कूद उसने दरवाजा तोड़ा और नीचे पहुंच कर मुख्य द्वार खोला। मां ने पलंग पर झांका, तो रोगिणी जमीन पर न जाने कब से बेहोश पड़ी थी। बड़े धैर्य से उन्हें पलंग पर लिटाया। डॉक्टर आए तो उपचार हुआ। घर के लोग लौटे तो उन्हें अस्पताल ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने कहा कुछ और देर होती तो प्राण चले जाते। पड़ोसिन के परिवार को हर ओर से शाबाशी दी गई। पर वे विनीत भाव से कहते रहे- करनेवाला तो ईश्वर है, हम कौन?

१४२५) इंग्लैंड का एक धनी परिवार पिकनिक मनाने गया। उनका बच्चा खेलते-खेलते तालाब में गिर गया। चीखें सुनकर वहां के माली ने छलांग लगा दी और बच्चे को बचा लिया। परिवार कृतज्ञ भाव से उसे कुछ देना चाहता था।

माली ने हिचकिचाते हुए बताया कि उसका बेटा डॉक्टर बनना चाहता है पर यह संभव नहीं है। समर्थ परिवार ने डॉक्टर

बनने तक बच्चे को आर्थिक सहायता दो। पानी में डूबने से बचाया गया बच्चा बड़ा होकर इंग्लैंड का प्रधानमंत्री बना। नाम था विंस्टन चर्चिल। चर्चिल एक बार बीमार पड़ गए। देश के सबसे अच्छे डॉक्टर को बुलवाया गया। चर्चिल जल्द ही रोगमुक्त हो गए। डॉक्टर था पैंसलीन का आविष्कारक अलैक्जेंडर फ्लेमिंग- उसी माली का बेटा।

सहायता के लिए पहल करना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। हाल में ब्रिटेन के एक सिपाही को नाईजीरिया के दो लोगों ने कसाई के चाकुओं से मार डाला। वे और लोगों को भी मारने के इरादे से वहीं खड़े थे। इन्ग्रेड नाम की अधेड़ महिला यह देखकर सीधे उस आतंकी के पास पहुंची। निडर होकर पूछा इसे किसने मारा? वह बोला मैंने। इसने बहुत सारे मुसलमानों को मारा है। अभी पुलिस आनेवाली है उन्हें भी खत्म कर दूंगा। इस महिला ने हिम्मत नहीं छोड़ी। बड़ी शांति से उसे बातों में उलझाए रखा। पुलिस ने आते ही दोनों आतंकवादियों को शूट कर दिया। महिला की हिम्मत ने कई लोगों को बचा लिया।

१४२६) परोपकारी अपने व्यवहार से दूसरों को भी प्रेरित करता है - एक दिन मैं किसी काम से कहीं जा रहा था। रास्ते में बहुत से लोग आते-जाते दिखे, लेकिन तभी एक बुजुर्ग महिला मुझे मिली। उन्होंने मुझसे कहा, बेटा, मुझे मेट्रो स्टेशन के गेट तक छोड़ दो। मैंने उनका हाथ पकड़ा और उन्हें मेट्रो स्टेशन की सीढ़ियों के पास तक छोड़ दिया। वह प्रेम से सौ रूपये देने लगीं तो मैंने लेने से इन्कार कर दिया और कहा, ये रुपये आप उस जरूरतमंद इंसान को दे दीजिए, जिसे इसकी जरूरत हो। इस पर वह मुझे बहुत गौर से देखने लगीं और कहने लगी - बेटा, तुम हमेशा यही कोशिश करना और जरूरतमंदों की मदद करते रहना। वह दिन आज तक मुझे याद है। स्वार्थ भावना से रहित दूसरों के कल्याण के लिए मन, वचन और कर्म से किया गया कार्य परोपकार कहलाता है।

१४२७) एक बहुरूपिये ने किसी सम्राट से कहा, पांच रुपये दान में चाहिए। सम्राट बोला, मैं कलाकार को पुरस्कार तो दे सकता हूं, लेकिन दान नहीं। कुछ दिनों बाद राजधानी में एक अद्‌भुत साधु के आगमन की खबर फैली। तीसरे दिन सुबह स्वयं सम्राट भी साधु के दर्शन को गये और एक लाख स्वर्ण मुद्राएं साधु के चरण में रख दी। अगले दिन सम्राट के दरबार में वह बहुरूपिया उपस्थित हुआ और बोला, एक लाख स्वर्ण-मुद्राओं का दान तो आप मेरे सामने कर ही चुके हैं, अब मेरा पांच रुपये का पुरस्कार दीजिए। सम्राट ने बहुरूपिये से कहा; पागल, तूने एक लाख स्वर्ण-मुद्राएं क्यों छोड़ी? और अब पांच रुपये मांग रहा है। बहुरूपिये ने कहा, महाराज, जब आपने दान नहीं दिया था, तो मैं भी दान कैसे स्वीकारता? बस अपने श्रम का पुरस्कार ही पर्याप्त है।

१४२८) अनासक्ति का अर्थ कर्मों का त्याग नहीं होता - लल्लू महतो और कल्लू महतो सगे भाई थे। एक दिन दोनों बाजार गये और वहां से आम की दो सौ कलमें खरीद लाये। उन्होंने उन कलमों को खेत में रोप दिया। रात को कल्लू अपने कमरे में बैठा सोचने लगा। कलमें लगायी हैं। पांच साल में आम मिलेंगे फिर उनको बाजार में बेचेंगे फिर उनसे इतना रुपया मिलेगा। सातवें साल इतना रुपया होगा। इस प्रकार कल्लू देर रात तक सोचता रहा। उसने अपनी कल्पना में आम पैदा कर लिये। बाजार में बेच भी आया। जब वह सबेरे उठा और अपने खेत का चक्कर लगाने गया, तो देखा कि रात को भैंसों ने आम की कलमों को रौंद दिया था। उसका दिल टूट गया। वह घर आ रहा था कि रास्ते में बेटे ने फीस के लिए पैसे मांगे। वह बेटे पर झल्ला उठा और उसे दो-चार चांटे भी जड़ दिये। घर पहुंचा तो वह पत्नी पर भी गुस्सा करने लगा। दिन भर कुछ करती-धरती नहीं है। अभी तक चाय भी नहीं लायी। इस तरह वह गुस्से में कप, गिलास, बर्तन आदि फेंकने लगा। उधर कल्लू ने रात में बैठकर सोचा कि आम तो लगा दिया हैं। अब उनकी देखभाल करनी है। सबेरे जब वह उठा तो अपने खेत की तरफ गया। उसने देखा कि उसकी भी कुछ कलमों को भैंसो

ने रात में ही रौंद दिया था। वह तुरंत वापस आया और अपने भाई-भतीजों को लेकर खेत पर पहुंचा सब मिलकर बची हुई कलमों को संभालने के लिए बाड़ लगाने लगे।

१४२९) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद - बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद का अर्थ है मूर्ख गुणों को नहीं जानता। जंगल में एक बंदर था, एक बार जंगल में एक पार्टी थी। पार्टी सियार के घर पर थी। वहां बंदर समेत सभी जानवर आए हुए थे। सबने वहां छक कर खाना खाया। बंदर ने भी खाया। खाने-पीने के बाद सियार ने सबको सौंफ की बजाय अदरक के छोटे-छोटे टुकड़े काटकर उसमें नींबू और नमक लगा कर दिया। सबने एक-एक टुकड़ा उठाया। सबकी देखा देखी बंदर ने भी लिया। उसने पहले कभी अदरक खाया नहीं था, लेकिन उसे अदरक बहुत पसंद आया। वह और अदरक लेना चाहता था, मगर किसी ने भी एक-दो टुकड़े से ज्यादा नहीं लिया था, इसलिए वह शांत रहा। अदरक का स्वाद मुंह में लिए बंदर जी घर आए और आते समय बाजार से अदरक भी लाए। अदरक को ठीक उसी तरह छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर, नींबू और नमक लगाया। इस बार उसने मुट्ठी भर से ज्यादा अदरक मुंह में डाल लिया। बस फिर जो गत बनी बंदर मियां की उसने अदरक खाने से तौबा ही कर ली। इसके बाद वह सबको बताने लगा कि अदरक बड़ा बेस्वाद है। जंगल में सभी जानवर बंदर की हरकत को जान चुके थे, इसलिए उन्होंने वह कहना शुरू कर दिया कि बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

१४३०) जॉर्ज, पार्क और कंपनी का मालिक - अंकल जॉर्ज स्कूल की नौकरी से सेवानिवृत्त हो चुके थे। उनके मोहल्ले में एक बड़ा-सा पार्क था, जो काफी नामी था। दूर-दूर से लोग पार्क में टहलने और झूला झूलने आया करते थे। मोहल्ले की सोसायटी एक अच्छे माली की तलाश कर रही थी। अंकल जॉर्ज ने जब अपना नाम सुझाया, तो सभी हैरत में पड़ गए। लेकिन अंकल जॉर्ज से अच्छा और सुयोग्य माली उन्हें कहां मिलेगा। अत: एक हेल्पर के साथ अंकल जॉर्ज को पार्क के रख-रखाव का काम सौंप दिया गया। अंकल जॉर्ज रोज सुबह-शाम चार-चार घंटे पार्क के रख-रखाव में लगाते थे। पार्क में लगा एक-एक पेड़ वह अपने हाथों से सींचते थे। कुछ ही दिन में पार्क पहले से कई गुना ज्यादा खूबसूरत दिखने लगा। उसमें रंग-बिरंगे मौसमी फूल आने लगे। एक दिन एक बड़ी कंपनी के मालिक उस पार्क की सैर करने आए। उन्हें वह पार्क बहुत खूबसूरत लगा। उन्होंने पार्क माली को तलब किया। जब अंकल जॉर्ज उनसे मिलने पहुंचे, तो कंपनी के मालिक ने उनसे पूछा, इस पार्क के रख-रखाव के लिए आपको कितने पैसे मिले हैं? अंकल जॉर्ज मुस्कुराए और बोले, सर बस इतना कि घर का गुजारा हो जाए। कंपनी के मालिक बोले, मैं उससे दस गुना ज्यादा पैसे देने को तैयार हूं। आप मेरी कंपनी में नौकरी करने आ जाइए। अंकल जॉर्ज बोले, सर मेरे पढ़ाए हुए बच्चे आज देश-विदेश की कई बड़ी कंपनियों में ऊंचे ओहदे पर कार्यरत हैं। मेरे पास हमेशा यह विकल्प रहा कि मैं खुद को बना लूं, या फिर उनको बना दूं, जो मेरे ऊपर निर्भर करते हैं और मैंने हमेशा दूसरा विकल्प चुना। ये पौधे भी बच्चों जैसे होते हैं। उन्हें भी उतना ही प्यार चाहिए होता है। क्या आपको लगता है कि जब मैंने नौकरी करते वक्त बच्चों को नहीं छोड़ा, तो अब छोड़ दूंगा? कंपनी के मालिक अंकल जॉर्ज की तरफ देखकर मुस्कराए और बोले, अगर आप जैसी सोच हर प्रोफेसर में हो, तो हमारे देश को सर्वश्रेष्ठ बनने से कोई नहीं रोक सकता। खुद सफल होने से बड़ी सफलता होती है किसी और को सफल बनाना।

१४३१) बेटे का गुस्सा और मां का किस्सा - कबीर दफ्तर से लौटा, तो बहुत नाराज था। मां ने पूछा, आज डिनर में क्या खाओगे? कबीर उन्हीं पर बरस पड़ा, आप एक दिन अपने मन से खाना नहीं बना सकतीं क्या? मां समझ

गई कि यह गुस्सा उसके दफ्तर का है। ऐसा पहले भी कई बार हो चुका था। मां ने कहा, तुम्हें अगर अपना दफ्तर अच्छा नहीं लगता, तो नौकरी छोड़ दो। दूसरी नौकरी मिल जाएगी। कबीर ने कहा, अगर इतना आसान होता, तो दो साल पहले ही छोड़ चुका होता। मां कबीर को एक कहानी सुनाने लगी, एक आदमी पहाड़ों पर सैर करने गया। वह हसीन वादियों का आनंद ले ही रहा था कि एक तेज आवाज पहाड़ों से टकराकर गूंजती हुई उसके कानों में पड़ी। ऐसा लगा, जैसे कोई चीख रहा हो, आजादी... आजादी। वह ढूंढने लगा कि आखिर यह आवाज कहां से आ रही है। उसे पिंजरे में बंद एक तोता मिला, जो चिल्ला रहा था, आजादी... आजादी... मुस्कराते हुए उसने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। पर तोता डरकर अंदर की तरफ भाग गया। आदमी काफी देर तक उसे पुचकारता रहा। पर तोता पिंजरे में बैठा वही राग अलापता रहा। काफी कोशिश के बाद आदमी ने हाथ अंदर डाला, तोते को पकड़ा और बाहर निकालकर पहाड़ से नीचे की तरफ छोड़ दिया, ताकि तोता उड़ जाए। ऐसा करके उसे बहुत सुकून मिला। पर सुबह होने से पहले उसे फिर वही आवाज सुनाई दी। वह दोबारा पिंजरे के पास जाने लगा, पर देखा कि पिंजरे का दरवाजा खुला है और तोता वापस पिंजरे के अंदर बैठकर आजादी की रट लगा रहा है। मां बोली, बेटा, हमारा मन भी इस तोते की तरह है, जो पिंजरे में रहने का अभ्यस्त हो चुका है। वह सारे कष्ट सह सकता है, पर पिंजरा छोड़कर जाने को तैयार नहीं हो पाता। पिंजरा छोड़ोगे तभी तो पता चलेगा कि बाहर दुनिया कितनी खूबसूरत है।

हार का कारण - महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद अपने पुत्रों की मृत्यु से दुखी धृतराष्ट्र ने एक दिन विदुर जी को अपने पास बुलाया। बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, विदुर, हमारे कौरव पक्ष में एक से बढ़कर एक योद्धा थे, फिर भी युद्ध में हमारे योद्धाओं का सफाया हो गया। इसका मूल कारण क्या है?

विदुर जी जन्मजात स्पष्टवादी थे, इस कारण उन्हें समय-समय पर अपमानित होना पड़ता था। धृतराष्ट्र को जवाब देते हुए उन्होंने कहा, राजन, विजय हमेशा धर्म और न्याय की होती है। कौरव पक्ष के लोगों ने पांडवों के साथ अन्याय किया, जिसका फल उन्हें भोगना ही था। भगवान कृष्ण तक उन्हें समझाने गऐ थे कि पांडवों का राज्य में बराबर हिस्सा है। उन्हें ज्यादा नहीं, तो केवल पांच गांव दे दो। उनके अधिकारों का हरण करना सरासर अन्याय होगा, किंतु कौरव अपनी संख्या और सैन्यबल के अहंकार में किसी की बात सुनने को तैयार नहीं हुए। न्याय-अन्याय का विचार किए बिना जो युद्ध के लिए तत्पर होता है, उसका विनाश होता ही है और यही कौरवों के साथ हुआ। धृतराष्ट्र विदुर की बात सुनकर हतप्रभ रह गए, फिर कुछ क्षण रुककर बोले, मैं भी तो इसमें सहभागी रहा हूं। पुत्रमोह के कारण मैं पांडवों के साथ होते अन्याय को चुपचाप देखता रहा। यह कहते हुए धृतराष्ट्र रोने लगे।

१४३२) मनीष, आतंकी हमला और जज्बा - मनीष की कहानी, जो एक आतंकी हमले में अपंग होने के बाद भी जिंदगी से नहीं हारा। रौशन और उसके इक्कीस दोस्त, जो कुछ देर पहले ही स्टेशन पर पहली बार उससे मिले थे, ट्रेन से श्रीनगर जा रहे थे। साथ बैठे एक एक सज्जन ने पूछा, क्या आप एक ही परिवार से हैं? रौशन बोला, जी नहीं। हम सब दुनिया के अलग-अलग कोने से आए हैं। कुछ फौजी हैं, कुछ इंजीनियर, तो कुछ आईआईटी से। हम सब मनीष के दोस्त हैं। सज्जन ने पूछा, मनीष? रौशन बोला, जी हां। मनीष श्रीनगर में एक आर्मी कैंप में पोस्टेड था और अगले महीने शादी करने एक महीने की छुट्टी पर जानेवाला था। पर अचानक एक आतंकी हमले ने उसकी जिंदगी बदल दी। उसे पता चला कि एक स्कूल बस के नीचे बम है। उसने बस से सारे बच्चों को तो निकाल लिया, पर जब वह तसल्ली के लिए दोबारा बस के अंदर गया, तभी बम फट गया। मनीष के दोनों पैर और एक हाथ कटकर अलग

हो गए। ऑपरेशन और सर्जरी से मनीष की हालत स्थिर तो हुई, पर उसकी जिंदगी जैसे खत्म हो गई, लेकिन मनीष एक फौजी था। उसने तय कर लिया कि वह व्हीलचेयर के सहारे नहीं जिएगा। जिस लड़की से मनीष की शादी तय हुई थी, उसने भी उसका साथ दिया। वह लड़की मनीष से शादी के लिए तैयार थी, पर मनीष ने ठान लिया था कि दोबारा अपने पैरों पर खड़े होने के बाद ही वह शादी करेगा। उसने आईटी में ग्रेजुएशन किया और फिर आईआईटी से परास्नातक किया। आज वह आईआईटी में बतौर सीनियर प्रोफेसर काम करता है और हजारों युवाओं को जीने की राह सिखाता है। उसने यहां मौजूद हममें से हर किसी को कभी न कभी गहराई से छुआ है। हम सारे लोग आज मनीष की शादी में आये हैं। रौशन बोला, जी नहीं, उसने तय किया है कि वह अपनी नई जिंदगी वहीं से शुरू करेगा, जहां उसने छोड़ी थी। अगर हौसले बुलंद हों, तो कोई चुनौती सपने पूरे करने से नहीं रोक सकती।

१४३३) बेटा, कंपनी और मां की हिदायत - मां की कहानी, जिनके गुस्से से डरकर बेटा प्रज जीवन में एक सफल आदमी बन पाया। प्रज टेक्नोलॉजीज की दसवीं सालगिरह थी। पिछले दस साल में कंपनी किराये के एक छोटे-से कमरे से लेकर गुरुग्राम के महंगे इलाके में एक बड़ी इमारत तक पहुंच गई थी। प्रज ने यह कंपनी दो लोगों से शुरू की थी और आज कंपनी में बीस हजार लोग काम करते थे। कंपनी की दसवीं सालगिरह पर प्रज की मां भी उसके दफ्तर में आई थीं। इस अवसर पर अपने संबोधान में प्रज ने कहा, मैं मां से बेहद प्यार करता था। मेरी मां लोगों के घरों में बरतन मांजकर घर का खर्च चलाती थीं। मैं भी स्कूल के बाद कभी किसी होटल में बर्तन धो देता था।

तो कभी किसी के घर में सामान पहुंचाने का काम कर दिया करता था। एक बार की बात है। मैं बारह साल का था। मां का जन्मदिन रहा था। मैं अपनी मां को नई साड़ी दिलाना चाहता था, क्योंकि उनकी साड़ी पुरानी और बदरंग हो चुकी थी। मैंने कई लोगों से पैसे उधार लेकर हजार रुपए इकट्ठा किए थे। पर जब मैं अपनी मां के लिए साडी लेकर अया, तो वह बहुत नाराज हुई। वह कहने लगीं, तुम जिंदगी में कुछ नहीं कर पाओगे। तुम्हारा पूरा जीवन ऐसे कर्ज में बीत जाएगा। उन्होंने वह साड़ी वापस कर दी। उसके बाद कई दिनों तक न मैं मां से कुछ बोला, न मां ने मुझसे कोई बात की। मैं स्कूल जाता रहा और वहां से निकलकर छोटे-मोटे काम करता रहा। आज उस बात को लगभग तीस साल बीत चुके हैं। मां मैं आज आपको बताना चाहता हूं कि उस दिन मैं आपके लिए जो साड़ी लाया था, उसके बीच में एक पत्र भी था, जिसमें लिखा था कि मुझे पढ़ाई में कोई रुचि नहीं। मैं स्कूल नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं बिना पढ़ाई के भी कमा सकता हूं। पर आपके डर से मुझे यह बात बोलने की कभी हिम्मत नहीं हुई। अगर उस दिन आपने मेरी साड़ी और मेरा पत्र स्वीकार कर लिया होता, तो मैं आज यह दिन नहीं देख पाता। जो हम सोचें, वह सही हो, यह जरूरी नहीं, पर जो होता हैं, वह अच्छा ही होता है।

१४३४) रमन, पिता और परीक्षा - राजाराम एक बहुत बड़े व्यापारी थे। उन्होंने अपनी जिंदगी में हमेशा कठिनाइयों का सामना किया था। पर मुश्किलों से हारना उन्होंने कभी सीखा नहीं था। उनका एक बेटा था रमन। रमन डॉक्टर बनना चाहता था। वह दसवीं से ही पीएमटी परीक्षा के लिए तैयारी कर रहा था, ताकि उसे किसी अच्छे मेडिकल कॉलेज में दाखिला मिल जाए। बारहवीं के बाद रमन ने पहली बार पीएमटी परीक्षा दी, पर उसमें उसका चयन नहीं हो पाया। काफी तैयारी करने के बाद भी चयन न होने से रमन एकदम टूट गया। उसने एक बार फिर डटकर पढ़ाई की। लेकिन एक बार फिर उसका चयन नहीं हुआ। अब उसकी हिम्मत जवाब दे चुकी थी। पांच साल तैयारी करने के बाद भी उसे कुछ हासिल नहीं हुआ। उसने अपने पिता से कहा, अब मेरा चिकित्सक बन पाना मुश्किल है। शायद मेरे अंदर वह बात नहीं। रमन के

पिता बोले, तुम सही कह रहे हो बेटा। मैंने भी यही सोचा था, जब मैंने नया-नया व्यापार शुरू किया था। रमन हक्का-हक्का अपने पिता को देखने लगा। वह बोले, अपनी सारी जमा पूंजी लगाकर जब मैंने यह व्यापार शुरू किया, तो पहले तीन-चार साल मेरा बहुत नुकसान हुआ। मेरी गाड़ी, मेरा घर सब कुछ बिक गया। यह हालत हो गई की दो वक्त की रोटी भी मैं तुम्हें और तुम्हारी मां को नहीं खिला पाया। उस वक्त मेरे पास दो विकल्प थे, जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूं। पहला, जो हुआ उसे भूलकर नई राह चुनो और नए सिरे से शुरुआत करो। और दूसरा, अपने ऊपर विश्वास रखो और अपनी विफलताओं को आनेवाली सफलता के लिए सीढ़ी बनाओ। उस दिन से रमन ने खुद को पीएमटी की अपनी आखिरी परीक्षा की तैयारी में झोंक दिया। इस बार उसकी ऊर्जा, उसका संकल्प पहले से कहीं ज्यादा दृढ़ और मजबूत था। बुरे वक्त में भी जो विश्वास न खोए। उसे सफल होने से कोई नहीं रोक सकता।

१४३५) उपदेशों को आचरण में लाएं - श्री व्यासराम जी के अनेक शिष्य थे, जिनमें कनकदास भी एक थे। निम्न जाति के होने के बावजूद उनके प्रति गुरु का अपार प्रेम देख अन्य शिष्य उनसे जला करते थे। एक बार स्वामी जी ने एकादशी व्रत के दिन सारे शिष्यों को एक-एक केला देते हुए कहा कि वे उसे ऐसी जगह खाएं, जहां कोई देख न सके। सभी ने निर्जन स्थान में जाकर केला खाया।

एक घंटे बाद स्वामी जीने सभी शिष्यों को बुलाकर पूछा कि क्या सबने केला खा लिया है या कोई भूखा भी है। प्रत्येक ने कहा कि उसने एकांत स्थान तलाशकर केला खाया है और उसे किसी ने खाते हुए भी नहीं देखा। जब यही सवाल कनकदास से पूछा गया, तो उसने डरते, शर्माते हुए उत्तर दिया, गुरुजी, मुझे ऐसी कोई जगह दिखाई न दी, जहां कोई न हो। हर जगह मुझे भगवान का वास होने के कारण ऐसा लगता रहा कि वे देख रहे हैं, इस कारण मैं केला खा नहीं पाया। मुझे क्षमा करें। स्वामी जी खुश हुए, क्योंकि उन्होंने कुछ ही दिन पूर्व बताया था कि भगवान सर्वत्र विद्यमान हैं एवं सबके अच्छे-बुरे कर्मों पर उनकी दृष्टि रहती है। उन्होंने बाकी शिष्यों से कहा, कनक तुम सब में इसी कारण अलग है कि वह दिए गए उपदेशों को अपने आचरण में लाता है। इसलिए अब कभी भी कोई उसके प्रति द्वेष भाव न रखे।

१४३६) प्रबल इच्छाशक्ति से होंगे अच्छे कार्य - जीवन की गाड़ी आगे बढ़ाने के लिए काम तो सभी करते हैं, लेकिन वह कितना फलीभूत होगा, यह उस कार्य के पीछे की भावना पर निर्भर करता है। संभवत: आपने किसी से यह बात सुनी होगी कि मैं भी दफ्तर में उतने ही घंटे कार्य करता हूं, जितना अमुक सहयोगी करता है, लेकिन उसे पदोन्नति मिल गयी, जबकि मुझे नजर अंदाज कर दिया गया। दरअसल, सच तो यही है कि किसी कार्य के पीछे आपका अच्छा सोच और प्रबल इच्छाशक्ति ही उसकी गुणवत्ता तय करते हैं और यही लोगों की नजरों में आपको ऊपर उठाता है।

एक आश्रम में तीन शिष्य शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। संत समय-समय पर अपने शिष्यों की परीक्षा लेते रहते थे। एक दिन उन्होंने शिष्यों को एक मंदिर बनाने के लिए कहा, तीनों शिष्य मंदिर बनाने लगे। जब मंदिर बनकर तैयार हो गया, तब संत ने तीनों को अपने पास बुलाया। पहले शिष्य से पूछा- जब मंदिर बन रहा था, तब तुम्हें कैसा अनुभव हो रहा था? उसने उत्तर दिया- गुरुदेव। मुझे पूरे दिन काम करना पड़ता था। लगता था कि मुझमें और एक गधे में कोई अंतर नहीं रह गया है। मंदिर के निर्माण का काम करते-करते मैं तो परेशान हो गया।

संत ने दूसरे शिष्य से भी यही प्रश्न पूछा, तो वह बोला- गुरुदेव। मैं भी सारा दिन कार्य करता रहा। मंदिर के निर्माण कार्य के दौरान मेरे मन में तो यही विचार आ रहा था कि जल्द-से-जल्द मंदिर बने और मेरा कल्याण हो जाये। संत ने तीसरे शिष्य से पूछा तो उसने भाव भरे हृदय से जवाब दिया- गुरुदेव। मैं तो प्रभु की सेवा कर रहा था, निर्माण कार्य के

दौरान मैं प्रतिदिन प्रभु का धन्यवाद करता था, क्योंकि उन्होंने मेरी मेहनत का कुछ अंश स्वीकार किया। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली मानता हूं। यह सुनकर संत ने उस शिष्य को गले से लगा लिया। फिर उन्होंने अन्य शिष्यों को समझाते हुए कहा- तुम तीनों के कार्य करने के ढंग में अंतर था।

मंदिर तो तुम तीनों ही बना रहे थे। एक गधे की तरह कार्य कर रहा था। भावों का अंतर तुम्हारे कार्य की गुणवत्ता में भी देखा जा सकता है। क्या किया जा रहा है, वह महत्वपूर्ण नहीं। उसे किस भावना के साथ किया जा रहा है, यह महत्वपूर्ण है।

१४३७) क्या होती है सही सही प्रार्थना? - एक नगर सेठ थे। वह हर दिन मंदिर जाते। सर्दी के दिनों में गरम कपड़े बांटने और गर्मियों में ठंडा पानी पिलवाते।

उनके सद्कार्यों की नगरवासी खूब सराहना करते थे। नगर में किसी भी प्रकार का उत्सव-महोत्सव होता तो उन्हें अवश्य आमंत्रित किया जाता। एक दिन नगर के एक गरीब आदमी ने अपनी बेटी के विवाह में उन्हें न्यौता दिया। सेठजी न सिर्फ शादी में शामिल हुए बल्कि बिना किसी को बताये, उन्होंने उस आदमी को धन भी दे दिया। गरीब पिता ने सेठ जी का आभार प्रकट किया।

नगर के गणमान्य लोगों ने उन्हें नगर पिता की पदवी देने का निश्चर्य किया। सम्मानपूर्वक सेठ जी को नगर पिता की पदवी दी गयी। नगर सेठ इस सम्मान के लिये ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते।

नगर पिता एक दिन अपने घर भोजन करने बैठे थे। भोजन का थाल सामने आया। उन्होंने रोज की तरह प्रार्थना की। तभी एक सुंदर बालक सामने आकर खड़ा हो गया। नगर पिता ने कहा- आओ बेटे, भोजन करो।

बालक ने भोजन करने से इनकार कर दिया। कहा, इच्छा नहीं है। सेठ जी भोजन करने लगे। भोजन कर चुके, तो स्नेहपूर्वक बालक से पूछा, बेटे, तुमने भोजन क्यों नहीं किया? तुम भी भोजन करते तो मुझे खुशी होती।

बालक बोला मैं पहले प्रभु की प्रार्थना करता हूं। उसके बाद भोजन करता हूं। आपने प्रार्थना नहीं की, इसलिए मैंने आपका भोजन नहीं किया।

नगर सेठ ने कहा- बेटे, प्रार्थना तो मैं भी करता हूं। प्रार्थना के बाद ही मैंने भोजन किया है। बालक बोला- आप नगर पिता तो हो गए मगर झूठ अब भी बोलते हैं।

बालक के आरोप से सेठ जी हैरान हो गये। बोले- परन्तु मैंने कोई झूठ नहीं बोला। मैंने सचमुच ही भोजन करने से पहले प्रार्थना की थी। बालक ने पूछा- तो बताइये, आपने क्या प्रार्थना की थी? सेठ जी ने कहा, मैंने यही प्रार्थना की कि हे परमात्मा, जैसा भोजन मुझे तुमने दिया है। वैसा ही सबको देना।

बालक बोला- नहीं, यह गलत प्रार्थना है। सेठ जी और भी हैरान हो गये। उन्होंने उत्सुकता वश पूछा- तो सही प्रार्थना क्या है? बालक ने बताया- हे प्रभु। तुमने जैसा भोजन मुझे दिया है, दूसरों को इससे श्रेष्ठ देना। यही है सही प्रार्थना यह सुनते ही नगर पिता की आंखें खुल गयीं। चौंककर जैसे ही उन्होंने सामने देखा, बालक अंतर्ध्यान हो गया।

१४३८) राजा ने प्राण देकर भी अपना राजधर्म निभाया - एक बार की बात है कि चंद्रशेखर नगर में रत्नदत्त नाम का एक सेठ रहता था। उसकी एक लड़की थी, उसका नाम था उन्मादिनी। जो कि बेहद खूबसूरत थी। जब वह बड़ी हुई तो रत्नदत्त ने राजा के पास जाकर कहा कि आप चाहें तो मेरी बेटी से ब्याह कर लीजिए। राजा ने रत्नदत्त की बात सुनकर अपनी तीन दासियों को लड़की को देखने के लिए भेजा। राजा की दासियों ने उन्मादिनी को देखा तो उसके रूप पर मुग्ध हो गई, लेकिन उन्होंने सोचा कि अगर राजा का विवाह उन्मादिनी से हो जाता है तो वह उन्मादिनी के वश में हो जाएगा।

यह सोचकर दासियों ने राजा के पास आकर कह दिया कि वह तो कुलक्षिणी है और दासियों की बात सुनकर राजा ने सेठ से इंकार कर दिया। इसके बाद सेठ ने राजा के सेनापति बलभद्र से अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। विवाह के बाद उन्मादिनी व सेनापति अच्छी तरह से रहने लगे।

एक दिन राजा की सवारी उस रास्ते से निकली। जहां उन्मादिनी की कोठी थी। उस समय उन्मादिनी अपनी छत की मुंडेर पर खड़ी हुई थी। राजा की निगाह उन्मादिनी पर पड़ी तो वह उस पर मोहित हो गया। उसने पता लगाया कि ये कौन स्त्री है, तो राजा को मालूम हुआ कि वह सेठ की लड़की है।

राजा ने सोचा कि हो-न-हो, जिन दासियों को मैंने उन्मादिनी को देखने भेजा था, उन्होंने छल किया है। राजा ने उन्हें बुलाया तो उन्होंने आकर सारी बात सच-सच कह दी। इतने में सेनापति वहां आ गया। उसे राजा की बेचैनी मालूम हुई।

उसने कहा, स्वामी उन्मादिनी को आप ले लीजिए। राजा ने गुस्सा होकर कहा, क्या मैं अधर्मी हूं, जो पराई स्त्री को ले लूं?

राजा को इतनी व्याकुलता हुई और उसे दुख हुआ कि उसने स्वयं न जाकर देखा और दासियों की बात मान ली। इस दुख की वजह से राजा कुछ दिन में ही मर गया। सेनापति ने अपने गुरु को सब हाल सुनाकर पूछा कि अब मैं क्या करूं?गुरु ने कहा, सेवक का धर्म है कि स्वामी के लिए जान दे दे। राजा की चिता तैयार हुई। सेनापति वहां गया और उसमें कूद पड़ा। जब उन्मादिनी को यह बात मालूम हुई तो वह पति के साथ जल जाना धर्म समझकर चिता के पास पहुंची और उसमें जाकर भस्म हो गई।

इतना कहकर बेताल ने पूछा, राजन बताओ, सेनापति और राजा में कौन अधिक साहसी था? राजा ने कहा, राजा अधिक साहसी था। क्योंकि उसने राजधर्म पर दृढ़ रहने के लिए उन्मादिनी को उसके पति के कहने पर भी स्वीकार नहीं किया और अपने प्राणों को त्याग दिया। सेनापति कुलीन सेवक था। अपने स्वामी की भलाई में उसका प्राण देना अचरज की बात नहीं और उन्मादिनी का कर्त्तव्य था कि वह अपने पति के लिए अपने प्राणों की बलि दे। असली काम तो राजा ने किया जिसने प्राण छोड़कर भी राजधर्म नहीं छोड़ा। राजा का यह उत्तर सुनकर बेताल फिर पेड़ पर जाकर लटक गया।

१४३९) बराबर दुकान पर बैठते रहो - अवश्य चलने लगेगी - टोनू घोड़े व सोनू गधे ने एक साथ पास-पास की परचुनी की दुकानें खोली। धीरे-धीरे टोनू घोड़े की दुकान तो जम कर चलने लगी, लेकिन सोनू गधे की ठप्प पड़ गयी। वह बहुत ही दुखी रहने लगा। एक दिन सोनू गधा अपने दोस्त मिमकू बन्दर के पास पहुंचा और बोला- यार तुम्हीं बताओ मेरी दुकान क्यों नहीं चल रही है, जबकि मेरे यहां भी वस्तुओं के भाव उतने ही है जीतने टोनू घोड़े की दुकान पर है। मैं सामान भी पूरा तोल कर देता हूं। मिकू यह सुनकर सोच में पड़ गया।

काफी सोच विचार कर वह सोनू गधे से बोला- सोनू भाई मैं तुम्हारी दुकान पर बैठकर जांच करूंगा कि आखिर तुम्हारी दुकान क्यों नहीं चल रही। वादे के मुताबिक मिकू बंदर अगले दिन सुबह नौ बजे ही सोनू गधे की दुकान पर आकर बैठ गया। वह दिनभर सोनू गधे की गतिविधियों पर गौर करता रहा, साथ ही समय-समय पर बाहर निकल कर वह टोनू घोड़े की दुकान पर भी नजर डाल देता। इस तरह पूरा दिन बीत गया। शाम को मिकू ने सोनू से कहा अब मैं चलता हूं, कल फिर आऊंगा। अगले दिन सुबह ही मिकू दुकान पर फिर आया और आते ही सोनू से बोला यार सोनू बड़ी भूख लग रही है जरा हरिया तोते के यहां से चार समोसे तो ले आओ, मिलकर खाएंगे। हां, समोसे हरिया के यहां से ही लाना कहीं और से नहीं। अच्छा मिकू अभी लेकर आता हूं कहता हुआ सोनू समोसे लेने चल दिया। थोड़ी देर बाद वह समोसे ले आया और दोनों मिलकर समोसे खाने लगे। मिकू ने जैसे ही समोसा चखा, एकदम बोला, सोनू तुम्हें समोसे हरिया के यहां से ही लाने

को कहा था। सोनू बोला, हां, तुम सही कह रहे हो वास्तव में समोसे हरिया के यहां से नहीं वरन कालू चूहे के यहां से ले आया हूं क्योंकि हरिया तोता अपनी दुकान पर नहीं वरन् पास वाली दुकान पर बैठा गप्पें मार रहा था और मैं उसके वापस आने तक इन्तजार नहीं कर सकता था।

यह सुन मिकू बोल उठा, यही बात तो मैंने तुम्हें समझाने जा रहा था। मेरे भाई कि तुम भी जब देखो आस-पास वाली दुकानों पर जाकर गप्पे मारने लगते हो, ऐसे में ग्राहक कब तक तुम्हारा इंतजार करेगा। क्या वह तुम्हारी ही तरह पासवाली दुकान पर जाकर अपना सौदा नहीं खरीद लेगा। अब मैं तुम्हें यही समझाना चाहता हूं, मेरे मित्र कि चाहे तुम्हारी दुकान पर ग्राहक आये या न आये, तुम बराबर दुकान पर बैठा करो। आज नहीं तो कल तुम्हारी दुकान भी टोनू घोड़े की तरह जम कर चलने लगेगी। यही दुकानदारी का राज है।

१४४०) महान कौन है - एक दिन कन्फ्यूशियस से सम्राट ने कहा, राज्य में बेईमान बढ़ती जा रही है, जहां-तहां धोखेबाजों के दर्शन होते हैं। क्या आप किसी ऐसे आदमी के बारे में बता सकते हैं, जो सदाचारी है और गुणों में देवता से भी महान है? कन्फ्यूशियस ने जवाब दिया, की जिज्ञासा वाले व्यक्ति को मैं महान समझता हूं। सम्राट ने कहा, आपकी दृष्टि में मैं भले ही महान होऊं, लेकिन मैं ऐसे महान व्यक्ति को देखना चाहता हूं, जो मुझसे भी महान हो। कन्फ्यूशियस ने उत्तर दिया, तब तो वह व्यक्ति मैं हूं। सम्राट ने कहा, मैं आपसे भी महान व्यक्ति को देखना चाहता हूं। कृपया मुझे उसके पास ले चलिए। कन्फ्यूशियस ने एक क्षण के लिए सम्राट की ओर देखकर कहा, महाराज, हमें उठकर कहीं जाने की जरूरत नहीं है। हमसे महान सैकड़ों आदमी हमें अपने आसपास ही देखने को मिलेंगे, केवल हमें उनकी ओर उस दृष्टि से देखना होगा। कुदाल से कुआं खोद रही उस वृद्धा को ही देखिए। सम्राट ने कहा, लेकिन इस उम्र में उन्हें कुआं खोदने की जरूरत क्या है? उनकी उम्र करीब सौ साल तो होगी ही। कन्फ्यूशियस ने कहा, महाराज, जरूरत ही सब कुछ नहीं है। जो दूसरों के उपकार के लिए आगे आते हैं। वहीं महान होते हैं। सम्राट को समझ में आ गया कि दूसरों के लिए सोचनेवाले ही महान हैं।

१४४१) सेवा से बढ़कर कुछ नहीं - जापान के जैन शिष्य टेटसुगेन को लगा कि धर्मसूत्र अपनी भाषा में भी प्रकाशित होना चाहिए। सूत्र के प्रकाशन का अनुमान लगाकर वह धन इकट्ठा करने निकला।

लोगों ने उदार मन से मदद की। वह इस काम में दस साल तक लगा रहा और तब जाकर उसके पास ग्रंथ प्रकाशन के लिए पर्याप्त धन इकट्ठा हो गया। उसी समय देश में एक नदी में बाढ़ आई।

बाढ़ अपने पीछे अकाल छोड़ गई। टेटसुगेन ने ग्रंथ प्रकाशन के लिए जो धन इकट्ठा किया था, उसे लोगों की सहायता में खर्च कर दिया। स्थितियां सामान्य हुई। तो वह फिर से धन संग्रह करके निकला। कुछ साल बीत गए। धन इकट्ठा हुआ कि देश में एक महामारी फैल गई। टेटसुगेन ने धन फिर से लोगों की सेवा में खर्च कर दिया। इस तरह उसने कई लोगों को मरने से बचाया। ग्रंथ के प्रकाशन के लिए टेटसुगेन ने तीसरी बार धन इकट्ठा करने का निश्चय किया।

बीस साल बाद जाकर ग्रंथ प्रकाशित करने की उसकी इच्छा पूरी हो पाई। उसने ग्रंथों के संकलन का पहला संस्करण निकाला। जिसे क्योयो के आंबाकू विहार में आज भी देखा जा सकता हैं कि उसने तीन बार सूत्रों के ग्रंथ प्रकाशित करवाएं। तीसरा ग्रंथ हमें दिखता है, जबकि पहले दो ग्रंथ जो ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। वे हमें दिखलाई नहीं पड़ते।

१४४२) न यह सच, न वह - जनक ने स्वप्न देखा कि मिथिला पर किसी शत्रु राजा ने आक्रमण कर दिया है। तुमुल संग्राम हुआ और मिथिला की सेना पराजित हो गई। जनक बंदी हुए, विजयी राजा ने सब वस्त्राभरण उतरवा लिए और राज्य

से निकाल दिया। जनक एक छोटा वस्त्र कटि में लपेटे निकल पड़े। चलते-चलते उनके पैरों में छाले पड़ गए। कई दिनों तक उनके पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं गया। एक नगर में अन्न क्षेत्र था, जहां भूखों को खिचड़ी दी जाती थी। बड़ी आशा से जनक वहां पहुंचे; किंतु खिचड़ी बंट चुकी थी। कर्मचारी ने उनसे कहा, खिचड़ी तो है नहीं; किंतु बर्तन में कुछ खुरचन लगी है। तू कहे, तो वह तुझे दे दूं। जनक को यही वरदान जान पड़ा। पर तभी चील ने झपट्टा मार दिया और खुरचन कीचड़ में गिर पड़ी। नींद में जनक चीख उठे। रानियां, सेविकाएं, सेवक दौड़े। जनक अब चारों ओर देखते हुए एक ही प्रश्न करते थे, यह सच या वह सच? एक दिन ऋषि अष्टावक्र मिथिला आए। जनक ने उनसे भी वही प्रश्न किया। अष्टावक्र ने पूछा, महाराज, जब आप भिक्षु के वेश में दोनों हाथ फैलाए खड़े थे, तब यह राजभवन, राजवेश, रानियां, सेविकाएं थीं? जनक ने कहा, कोई नहीं था। अष्टावक्रजी ने फिर पूछा और जागने पर जब आप यहां पलंग पर थे, तब वह अन्नक्षेत्र, खिचड़ी और वह आपकी क्षुधा थी? जनक चुप रहे। अष्टावक्र ने कहा, इस समय वह स्वप्न की अवस्था नहीं है, इसलिए वह सच नहीं और स्वप्न के समय यह अवस्था नहीं थी, इसलिए यह भी सच नहीं। न यह सच, न वह सच।

१४४३) सौंदर्य और विद्या - एक बार सम्राट चंद्रगुप्त किसी बात पर चाणक्य के साथ बातचीत कर रहे थे। बातों-बातों में अचानक चंद्रगुप्त ने कहा कि आपकी विद्वत्ता, सूझबूझ और चातुर्य की मैं दाद देता हूं। मगर कितना अच्छा होता, अगर भगवान ने आपको सुंदर रूप भी दिया होता।

चाणक्य को यह समझते देर न लगी कि राजा को अपने सौंदर्य का घमंड हो गया है और वह सौंदर्य के सामने विद्या को नगण्य समझ रहे हैं। तुरंत चाणक्य ने सेवक को बुलाकर मिट्टी और सोने के एक-एक पात्र में जल लाने के लिए कहा। सेवक ने तुरंत उनके कहे अनुसार दोनों पात्रों में जल लाकर दिया। सेवक के जल लाने के बाद चाणक्य ने राजा से पहले मिट्टी के पात्र का और बाद में सोने के पात्र का जल पीने के लिए कहा। राजा चंद्रगुप्त ने जब जल पीया, तो चाणक्य ने प्रश्न किया, महाराज, किस पात्र का जल शीतल लगा? चंद्रगुप्त ने उत्तर दिया। मिट्टी के पात्र का। इस पर चाणक्य ने कहा, महाराज, वैसे तो दोनों ही पात्रों में ढाला गया जल शीतल था, किंतु बाहर से सुंदर दिखाई देनेवाले स्वर्णपात्र का जल शीतल नहीं रहा, जबकि मिट्टी के पात्र का जल शीतल रहा। यही बात सौंदर्य और विद्या की है। सुंदरता और कुरूपता का विद्या से कोई संबंध नहीं, बल्कि सौंदर्य से विद्या श्रेष्ठ है। चंद्रगुप्त को अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने चाणक्य से क्षमा मांगी।

१४४४) नई पीढ़ी के लिए पेड़ - राजा देवी सिंह अपनी रियासत के गांवों का भ्रमण कर रहे थे। भ्रमण के दौरान पुराने परिचितों से उनकी मुलाकात हुई, तो कुछ नए लोग भी उनके संपर्क में आए। एक दिन एक गांव के जंगल में उन्होंने एक वयोवृद्ध व्यक्ति को आम का पौधा रोपते हुए देखा। वह आदमी बेहद कमजोर दिख रहा था, उसके सारे दांत गिर गए थे। फिर भी वह खुरपी से जमीन में गड्ढा खोद रहा था। भीषण गरमी के कारण पसीने से उसका शरीर तरबतर था। राजा ने उसके पास अपना घोड़ा रोका तथा आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, बाबा आपकी उम्र आराम करने की है, इस कड़ी धूप में पसीना-पसीना होकर काम करने की नहीं। फिर आप तो आम को पौधा लगा रहे हो। जब तक आम का यह पौधा पेड़ बनेगा, तब तक आप इसका फल खाने के लिए शायद ही जीवित रहें। फिर ऐसा काम आप क्यों कर रहे हैं? बूढ़े ने खुरपी जमीन पर खी और राजा का अभिवादन करते हुए बोला, महाराज, मैं जानता हूं कि इस पौधे के पेड़ बनने तक मैं इसका फल खाने के लिए जीवित नहीं रहूंगा। लेकिन क्या इस कारण पौधे लगाना छोड़ दूं? दूसरे लोगों ने वर्षों पहले जो पौधे रोपे थे, उनके पेड़ बनने के बाद उनके फल में खाता रहा हूं। क्या यह मेरा फर्ज नहीं कि मैं भी उसी प्रकार के वृक्ष लगाऊं, ताकि

आनेवाली पीढ़ी मेरी तरह मीठे फल खा सके? वृद्ध व्यक्ति का जवाब सुनकर राजा खुश हो गए। उन्होंने कहा, बाबा, आप जैसे लोग हों, तो इस राज्य में कभी किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आएगी।

१४४५) ईश्वर के छोड़े हुए काम - महाभारत युद्ध में मरे हुए योद्धाओं के शव कुरुक्षेत्र के मैदान में दूर-दूर तक बिछे पड़े थे। गिद्ध और कौए उन्हें नोच-नोचकर खा रहे थे।

भीषण युद्ध के बाद आसपास का सब कुछ ध्वस्त और कुचला हुआ पड़ा था। एक दिन शमीक ऋषि उधर से निकले, तो इस महानाश के बीच उन्होंने दो पक्षी-शावकों को एक गज घंटा के पास चहचहाते हुए देखा। यह देखकर ऋषि के साथ चल रहे शिष्यों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने तत्काल महर्षि से पूछ लिया, महाराज, भला, युद्ध के घमासान में पक्षी के ये दो बच्चे आखिर किस तरह बच गए? शमीक ऋषि से कुछ भी छिपा हुआ नहीं था। उन्होंने अपने शिष्यों की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा, युद्ध के समय आकाश में उड़ती हुई चिड़िया को तीर लगने से वह भूमि पर पड़ी और उसने दो अंडे दिए। संयोगवश एक हाथी के गले का घंटा टूटकर अंडों पर गिरा, जिससे उनकी रक्षा हो गई। अब ये परिपक्व होकर बच्चे के रूप में घंटे के नीचे की मिट्टी हटाकर बाहर निकले हैं। सो तुम इन्हें उठा लो और आश्रम में ले जाकर इनका पालन-पोषण करो। एक शिष्य ने पूछा, महाराज, जिस ईश्वर ने इन बच्चों की रक्षा की है, क्या वह इनका पालन-पोषण नहीं करेगा? महर्षि ने जवाब दिया, देखो, जहां ईश्वर का काम समाप्त हो जाता है वहीं से मनुष्य का काम शुरू होता है। मनुष्य को दया और सामर्थ्य का वरदान इसीलिए मिला है कि वह ईश्वर के छोड़े कार्य को पूरा करें।

१४४६) असलियत - एक राजमहल में कामवाली और उसका बेटा काम करते थे। एक दिन राजमहल में कामवाली के बेटे को हीरा मिलता है। वो मां को बताता है। कामवाली होशियारी से वो हीरा बाहर फेंककर कहती है ये कांच है हीरा नहीं। कामवाली घर जाते वक्त चुपके से वो हीरा उठाके ले जाती है। वह सुनार के पास जाती है। सुनार समझ जाता है इसको कही मिला होगा, ये असली या नकली पता नहीं इसलिए पूछने आ गई। सुनार भी होशियारी से वो हीरा बाहर फेंक कर कहता है ये कांच है हीरा नहीं। कामवाली लौट जाती है।

सुनार वो हीरा चुपके से उठाकर जौहरी के पास ले जाता है, जौहरी हीरा पहचान लेता है। अनमोल हीरा देखकर उसकी नीयत बदल जाती है। वो भी हीरा बाहर फेंक कर कहता है ये कांच है हीरा नहीं। जैसे ही जौहरी हीरा बाहर फेंकता है उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। यह सब एक राहगीर निहार रहा था। वह हीरे के पास जाकर पूछता है कामवाली और सुनार ने दो बार तुम्हें फेंका तब तो तुम नहीं टूटे फिर अब कैसे टूटे? हीरा बोला कामवाली और सुनार ने दो बार मुझे फेंका क्योंकि वो मेरी असलियत से अनजान थे। लेकिन जौहरी तो मेरी असलियत जानता था तब भी उसने मुझे बाहर फेंक दिया, यह दु:ख मैं सहन नहीं कर सका इसलिए मैं टूट गया।

१४४७) दीप नहीं बुझा - वैशाली में चंद्रवतस नाम का पराक्रमी राजा था। उनका जीवन जल में कमल की तरह निर्लिप्त और निर्विकार था। अमावस्या की रात्रि में राजा राजमहल में ध्यान लगाए खड़ा था। महाराज की साधना में कोई विघ्न न हो, इसके लिए दासी ने आकर दीपक जला दिया। देखते-देखते अंतस में प्रकाश जगा। राजा ने संकल्प लिया कि जब तक दीपक जलता रहेगा, मैं ध्यान चालू रखूंगा। दीपक बुझने की स्थिति में आया। तो दासी और तेल डाल गई। महाराज के मन में भी ध्यान की लौ तीव्र हो गई। प्रहर रात्रि बीत गई। दासी ने तेल समाप्त होने से पहले फिर दीपक में तेल डाल दिया। रात बीतती गई, दीपक जलता रहा। जब जब दीपक टिमटिमाने लगता, दासी हाथ में तेल-पात्र लिए तैयार रहती। राजा की अंतर्चेतना प्रबुद्ध हो गई। आत्मा का अखंड दीप भी जलता रहा। राजा ध्यान में लीन हो उच्चतर

भावश्रेणी में चढ़ता गया। दोनों ओर संकल्प की होड़ लगी थी। दासी ने जम्हाइयां लेते हुए भी बाहर का दीपक बुझने नहीं दिया। राजा का सुकुमार शरीर खड़े-खड़े अकड़ गया था। रोम-रोम दुखने लगा था, पर ध्यान का तार टूटने न पाया। प्रात:काल का स्वर्णिम प्रकाश धरती पर बिखरा। दासी ने दीपक बुझा दिया। पर, राजा का अंतर-दीपक जो एक बार जल उठा, वह कैसे बुझता? वह जलता रहा। खड़े-खड़े राजा के पांव सूज गए, रक्त संचार क्षीण होने से शरीर शून्य हो गया और अंतत: ध्यान में तल्लीन राजा की देह भूमि पर मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। मृत्यु के उस क्षण में भी उनके अंतर-दीप नहीं बुझा, सो नहीं बुझा।

१४४८) राजा दिलीप की निष्ठा - राजा दिलीप गुरु वशिष्ठ के आश्रम में पहुंचे। बहुत उम्र हो जाने पर भी उन्हें कोई संतान न हुई थी। गुरु समर्थ तो थे, पर वरदान देकर ऋण नहीं चढ़ाना चाहते थे, जिसे चुकाने में और अधिक त्रास सहना पड़े। उन्होंने सोचा, राजा से कोई काम लिया जाए। वशिष्ठ ने एक वर्ष तक आश्रम में रहकर गायें चराने का काम सौंपा।

राजा दिलीप आदेश का पालन करते हुए आश्रम में रहने लगे। सुबह होते ही रानी समेत वे जंगल में निकल जाते, शाम को वापस लौटते। एक दिन एक सिंह ने आश्रम की एक गाय को दबोच लिया। राजा ने सिंह को मारने के लिए धनुष-बाण संधान किया, पर आश्चर्य यह कि वह चल ही न सका। राजन दौड़कर सिंह के पास गए और उसे अन्य उपायों से भगाने का प्रयत्न करने लगे। तभी सिंह ने मनुष्य की बोली में कहा, मैं शिव के दरबार का सिंह हूं। मुझे भी तो भोजन चाहिए। पशु ही मेरा भोजन है। मैं इस गाय को नहीं छोड़ सकता। यदि इसे छुड़ाना है, तो बदले में अपना मांस दो। दिलीप ने इसे स्वीकार कर लिया और सिंह के सामने जाकर बैठ गए। आश्रम की गाय को बचाने के लिए अपना शरीर सौंपना उन्हें कठिन नहीं लगा। असल में उस सिंह को गुरु वशिष्ठ द्वारा राजा की परीक्षा लेने के लिए भेजा गया था, राजा अपनी निष्ठा में खरे उतरे। सिंह वापस चला गया।

१४४९) अपनी समझ से ही हमेशा कार्य करना चाहिए - एक आदमी के बगीचे में एक पेड़ था। बगीचा छोटा था और पेड़ ने उसे पूरी तरह से ढंक रखा था। एक दिन आदमी के पड़ोसी ने उससे कहा, ऐसे पेड़ मनहूस होते हैं। तुम्हें इसे काट देना चाहिए। आदमी ने पेड़ काट दिया और उसके जलावन के लट्ठे बना दिए। लट्ठे इतने ज्यादा थे कि पूरा बगीचा भर गया। बगीचे के पौधे और फूल लट्ठों के नीचे दबकर खराब होने लगे। आदमी के पड़ोसी ने उससे कहा, इन लट्ठों को मैं ले लेता हूं ताकि तुम्हारे पौधे और फूल सही-सलामत रहें।

कुछ दिनों के बाद आदमी के मन में विचार आया, शायद मेरा पेड़ मनहूस नहीं था। जलावन की लकड़ी के लालच में आकर पड़ोसी ने मेरा अच्छा-भला पेड़ कटवा दिया। वह लाओ-त्जु के पास इस बारे में राय लेने के लिए गया। लाओ त्जु ने मुस्कराते हुए कहा, जैसा कि तुम्हारे पड़ोसी ने कहा था, वह पेड़ वास्तव में मनहूस था, क्योंकि उसे अब काटकर जलाया जा चुका है। यह उस पेड़ का दुर्भाग्य ही था कि वह तुम जैसे मूर्ख के बगीचे में लगा था।

यह सुनकर आदमी बहुत दुखी हो गया। लाओ-त्जु ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, अच्छी बात यह है कि तुम अब उतने मूर्ख नहीं हो; तुमने पेड़ तो खो दिया लेकिन एक कीमती सबक सीख लिया है। इस बात को हमेशा ध्यान में रखना कि जब तक तुम स्वयं अपनी समझ पर भरोसा न कर लो तब तक किसी दूसरे की सलाह नहीं मानना।

१४५०) गुरुदेव को याद किया - स्वामी विवेकानंद दक्षिण भारत के किसी रेलवे स्टेशन पर बैठे थे। उन दिनों वह भारत भ्रमण कर रहे थे। उस दिन स्वामी जी का अयाचक व्रत था। इस व्रत में सन्यासी किसी से कुछ नहीं मांगता और वह निराहार ही रहता है। एक आदमी स्वामी जी को चिढ़ाने के लिए उनके सामने खाना खा रहा था। साथ ही, विवेकानंद

ध्यान की स्थिति में थे और अपने गुरुदेव को याद कर रहे थे।

वह मन ही मन बोल रहे थे कि गुरुदेव आपने जो सीख दी है, उसके कारण मन में कोई दुख नहीं है। दोपहर का समय था। उसी नगर में एक सेठ के सपने में भगवान राम ने आकर कहा कि रेलवे स्टेशन पर मेरा एक भक्त आया है। तुम जाओ और उसे भोजन कराओ। उसका अयाचक व्रत है, इस व्रत में व्रती किसी से कुछ मांगकर नहीं खाता और मेरा वह भक्त बहुत दिनों से भूखा है। सेठ ने सोचा कि यह महज कल्पना है। वह फिर करवट बदल कर सो गया। भगवान ने दोबारा सेठ को दर्शन दिए और कहा कि तुम मेरा व्रत रखते हो और मेरा इतना-सा भी काम नहीं करोगे। जाओ और संत को भोजन कराकर आओ। तब सेठ सीधे विवेकानंद के पास जाकर बोला कि मैं आपके लिए भोजन लाया हूं। विवेकानंद को भोजन की थाली देकर हाथ जोड़कर सेठ बोला, भगवान राम ने तो मुझे कभी दर्शन नहीं दिए। लेकिन आपके कारण मुझे राम जी के दर्शन सपने में हो गए। इसलिए मैं आपको प्रणाम कर रहा हूं। विवेकानंद की आंखों में आंसू आ गए कि मैंने तो बस अपने गुरुदेव को याद किया था।

१४५१) मन को निर्मल बनाओ - एक बार एक महात्मा ने अपने शिष्यों से अनुरोध किया कि वे कल से प्रवचन में आते समय अपने साथ एक थैली में बड़े आलू साथ लेकर आएं, उन आलूओं पर उस व्यक्ति का नाम लिखा होना चाहिए जिनसे वे ईर्ष्या करते हैं। जो व्यक्ति जितने व्यक्तियों से घृणा करता हो, वह उतने आलू लेकर आए। अगले दिन सभी लोग आलू लेकर आए, किसी के पास चार आलू थे, किसी के पास ६ या ८ और प्रत्येक आलू पर उस व्यक्ति का नाम लिखा था जिससे वे नफरत करते थे। अब महात्मा ने कहा कि अगले ७ दिनों तक ये आलू आप सदैव अपने साथ रखें, जहां भी जाएं, खाते-पीते, सोते-जागते, ये आलू आप सदैव अपने साथ रखें। शिष्यों को कुछ समझ में नहीं आया कि महात्मा क्या चाहते हैं, लेकिन महात्मा के आदेश का पालन उन्होंने अक्षरश: किया। दो-तीन दिनों के बाद ही शिष्यों ने आपस में एक दूसरे से शिकायत करना शुरू किया। जिनके आलू ज्यादा थे, वे बड़े कष्ट में थे। जैसे-तेसे उन्होंने सात दिन बिताए और शिष्यों ने महात्मा की शरण ली। महात्मा ने कहा, अब अपने अपने आलू की थैलियां निकालकर रख दें, शिष्यों ने चैन की सांस ली।

महात्मा ने पूछा- विगत ७ दिनों का अनुभव कैसा रहा? शिष्यों ने महात्मा से अपनी आपबीती सुनाई, अपने कष्टों का विवरण दिया, आलुओं की बदबू से होनेवाली परेशानी के बारे में बताया, सभी ने कहा कि बड़ा हल्का महसूस हो रहा है। महात्मा ने कहा- यह अनुभव मैंने आपको एक शिक्षा देने के लिए किया था। जब मात्र सात दिनों में ही आपको ये आलू बोझ लगने लगे, तब सोचिए कि आप जिन व्यक्तियों से ईर्ष्या या नफरत करते हैं, उनका कितना बोझ आपके मन पर होता होगा और वह बोझ आप लोग तमाम जिन्दगी ढोते रहते हैं। सोचिए कि आपके मन और दिमाग की इस ईर्ष्या के बोझ से क्या हालत होती होगी? यह ईर्ष्या तुम्हारे मन पर अनावश्यक बोझ डालती है, उनके कारण तुम्हारे मन में भी बदबू भर जाती है, ठीक उन आलुओं की तरह। इसलिए अपने मन से इन भावनाओं को निकाल दो। यदि आप किसी से प्यार नहीं कर सकते तो कम से कम नफरत और ईर्ष्या मत कीजिए, तभी आपका मन स्वच्छ, निर्मल और हल्का बना रहेगा, वरना जीवन भर इनको ढोते-ढोते आपका मन और आपकी मानसिकता दोनों बीमार हो जाएंगे।

१४५२) अखरोट का पेड़ - फारस का बादशाह नौशेखां अपनी न्यायप्रियता के लिए बहुत प्रसिद्ध था। वह उदार हृदय होने से बहुत बड़ा दानी भी था। एक दिन वह अपने मंत्रियों के साथ घूमने निकला। उसने देखा कि एक बगीचे में एक बहुत बूढ़ा माली अखरोट के पेड़ लगा रहा है। बादशाह उस बगीचे में गया। उसने माली से पूछा- तुम यहां माली हो या यह तुम्हारा ही बगीचा है? माली ने कहा- मैं नौकरी नहीं करता। यह बगीचा मेरे ही बाप-दादों का लगाया हुआ है।

बादशाह ने कहा- तुम ये अखरोट के पेड़ लगा रहे हो। क्या तुम समझते हो कि इनका फल खाने के लिए तुम तब तक जीवित रहोगे? अखरोट का पेड़ लगाने के बीस बरस बाद फलता है, यह बात जगजाहिर है। बूढ़े माली ने बादशाह की बात सुनकर कहा- मैं अब तक दूसरे के लगाए पेड़ों के बहुत फल खा चुका हूं। इसलिए मुझे भी दूसरों के लिए पेड़ लगाने चाहिए। अपने फल खाने की आशा से ही पेड़ लगाना तो स्वार्थ है। बादशाह माली के उत्तर में बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे पुरस्कार में दो सोने की अशर्फियां दीं।

१४५३) सादगी का पाठ - काशी के एक सेठ अकीर्ति बचपन से ही विरक्त स्वभाव के थे। उनकी ईश्वर में गहरी आस्था और भक्ति थी। वह बहुत ही विनम्र थे और सादगीपूर्ण जीवन जीते थे। उनका अधिकतर समय माता-पिता की सेवा में गुजरता था। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी वह अकिंचन और अपरिग्रही थे। माता-पिता की मृत्यु के बाद उनकी संसार से पूरी तरह विरक्ति हो गई। अकीर्ति ने अपना समस्त धन गरीबों और वंचितों के बीच बांट दिया और एक महात्मा की तरह वन में कुटिया बनाकर रहने लगे। एक सच्चे महात्मा की भांति उनका जीवन था लेकिन उन्हें भक्तिमय जीवन जीने में अनेक तरह की बाधाएं भी आती रहीं, फिर भी वह अपनी साधना में लगे रहे। कुछ ही दिनों में उनके त्याग, तप और ज्ञान से प्रभावित होकर लोग उनके दर्शन के लिए आने लगे। लोग उनकी प्रशंसा करते तो उन्हें लगता कि उनका पुण्य नष्ट हो रहा है। जिस मंजिल की ओर वह जाना चाहते है, वहां पहुंचने में ये सारी स्थितियां बाधा हैं। इन्हीं स्थितियों के कारण वह एक दिन कुटिया त्यागकर एकांत साधना करने लगे। पर कुछ दिनों बाद वहां भी आदर-सत्कार करनेवाले पहुंचने लगे। फिर वह नागद्वीप जाकर रहने लगे। अकीर्ति की घोर तपस्या से शुक्र देवता का आसन हिल गया। शुक्र एक दिन अकीर्ति की परीक्षा लेने के लिए नागद्वीप पहुंचे। ब्राह्मण वेश में पहुंचकर उन्होंने अकीर्ति से भोजन की याचना की। अकीर्ति ने वृक्ष के नीचे जमीन पर गिरे पत्ते उबाले और एक कटोरा भरकर उनके सामने रख दिया। फिर वह विनम्रतापूर्वक बोले, आइए, हम दोनों क्षुधा मिटाने के लिए भोजन ग्रहण करें। अकीर्ति ने ईश्वर का स्मरण कर उबले पत्तों के रस को पूर्ण संतोष के साथ पी लिया। जबकि, शुक्र उस बेस्वाद रस को बड़ी मुश्किल से हलके से नीचे उतार पाए। शुक्र बेहद लज्जित हुए। उन्होंने मन-ही-मन अकीर्ति के सादगीपूर्ण जीवन को नमन किया और लौट गए।

१४५४) सदुपयोग की महत्ता - एक राजा आखेट के लिए वन की ओर निकला। शिकार की खोज में भटकता हुआ काफी दूर निकल गया। उसके सैनिक और अंगरक्षक काफी पीछे छूट गए। वह काफी थक गया था, उसे जोरों की प्यास भी लगी थी। भूख-प्यास से पीड़ित वह एक वनवासी के द्वार पर पहुंचा। वहां उसे आतिथ्य मिला तो उसकी जान बची। उसके सेवाभाव से राजा बड़ा खुश हुआ। चलते समय राजा ने वनवासी से कहा, मैं इस राज्य का शासक हूं। तुम्हारी सज्जनता से प्रभावित होकर तुम्हें चंदन का वन प्रदान करता हूं ताकि तुम्हारा आगे का जीवन सुखमय बीते। चंदन का क्या महत्व है और उसका किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है, उसकी जानकारी वनवासी को नहीं थी। जानकारी के अभाव में वह चंदन के वृक्ष काटकर उनका कोयला बनाकर शहर में बेचने लगा। इस प्रकार किसी तरह उसकी जीविका चलने लगी। धीरे-धीरे सारे वृक्ष समाप्त हो गए। एक अंतिम वृक्ष बचा। वर्षा होने के कारण कोयला न बन सका तो उसने लकड़ी को ही बेचने का निश्चय किया। लकड़ी का गट्ठर लेकर जब वह बाजार पहुंचा तो सुगंध से प्रभावित लोगों ने उन लकड़ियों का बड़ा भारी मूल्य लगाया। विस्मय से भरे वनवासी ने इसका कारण उन लोगों से पूछा तो लोगों ने बताया- यह चंदन की लकड़ी है, बहुत मूल्यवान है। यदि तुम्हारे पास ऐसी ही और लकड़ी हो तो उसका बहुत मूल्य प्राप्त कर सकते हो। वनवासी अपनी नासमझी पर पश्चाताप करने लगा। इतना मूल्यवान चंदन वन उसने कौड़ी के मोल कोयले के रूप

में बेच डाला। उसे पछताते देख एक विवेकशील व्यक्ति ने कहा- मित्र। पछताओ मत, यह सारी दुनिया तुम्हारी ही तरह नासमझ है। जीवन का एक-एक क्षण बहुमूल्य है, पर लोग उसे वासना और तृष्णा के लिए कौड़ी के मोल गंवाते हैं। तुम्हारे पास जो एक वृक्ष बचा है उसी का सदुपयोग कर लो तो कम नहीं। बहुत कुछ गंवाकर भी अंत में यदि कोई मनुष्य संभल जाए तो वह बुद्धिमान ही माना जाता है।

१४५५) सच्चा सेवक - गजनी के सुलतान महमूद के पास कई गुलाम थे, लेकिन वह उनमें से अयाज को सबसे ज्यादा प्यार करते थे। इसके कारण कुछ सरदार और गुलाम अयाज से जलने लगे। एक बार हिम्मत करके एक सरदार ने सुलतान से पूछा, हुजूर, गुस्ताखी माफ हो। बहुत से लोग आपकी दिन-रात सेवा करते हैं, आपकी खिदमत में कोई कोर कसर नहीं उठाते, फिर भी आप अयाज को सबसे ज्यादा प्यार करते हैं। क्या औरों की वफादारी में कोई कमी है? सुलतान ने कहा, इसका जवाब मैं समय आने पर दूंगा। कुछ समय बाद एक दिन भरे दरबार में सुलतान ने हीरे-मोतियों से जड़ा एक कीमती हार अयाज को दिया और कहा, इसे तोड़ दो। अयाज ने उसे तुरंत तोड़ दिया। हार में लगे हीरे-मोती फर्श पर बिखर गए। इससे वहां मौजूद लोगों में सन्नाटा छा गया। लोग सोचने लगे कि आज तो अयाज को फांसी से कम की सजा नहीं मिलेगी। ऐसे हुक्म का पालन करने से पहले उसे इसके नतीजे पर विचार कर लेना चाहिए था। सुलतान का चेहरा भी गुस्से से लाल हो गया। उन्होंने गुस्से से चीखते हुए कहा, इतना कीमती हार तुमने क्यों तोड़ा? अयाज ने विनम्रता से कहा, हुजूर, गुलाम से गलती हो गई, माफ कर दें। सुलतान ने उससे पूछा, अयाज, जब तुमने हार को तोड़ा, तब क्या तुम्हें डर नहीं लगा? अयाज ने कहा, कैसा डर हुजूर। मैं जानता हूं कि आप काफी सोच-विचार के बाद ही कोई हुक्म देते हैं। मैंने सोचा कि हार तोड़ने के आपके हुक्म में भी कोई राज छिपा होगा। इसलिए मैंने हार तोड़ दिया। सुलतान ने मुस्करा कर लोगों से कहा, आप लोग जानना चाहते थे न कि अयाज को मैं सबसे ज्यादा प्यार क्यों करता हूं? आज उसका राज आपके सामने है। अयाज कह सकता था कि हार तो मैंने आपके हुक्म से तोड़ा, लेकिन इसके बावजूद उसने अपनी गलती मानी। अपने इसी स्वभाव और सच्ची वफादारी की वजह से वह मेरे दिल में बाकी लोगों से ऊपर जगह रखता है।

१४५६) सबसे बड़ी साधना - नगर सेठ का पुत्र था मेघ। बुद्ध के प्रवचन से प्रभावित होकर उसने भी प्रवज्या ग्रहण करने का फैसला किया। बुद्ध ने उसे अपने निर्णय पर ठीक से सोच लेने को कहा, लेकिन वह अपने फैसले पर दृढ़ रहा। वह बौद्ध विहार में रहने लगा। वह अपने साथ सुख सुविधाओं की चीजें लेता आया था। बुद्ध ने एक दिन विहार के वरिष्ठ भिक्षु को मेघ की सुख-सुविधाएं कम करने को कहा। मेघ को अब मोटा भोजन और मोटा बिस्तर दिया जाने लगा। उसे सेवा के कड़े काम भी दिए गए। धीरे-धीरे मेघ की प्रसन्नता को ग्रहण लगने लगा। वह खिन्न सा रहने लगा। उसने इससे पहले कभी रूखा-सूखा अन्न नहीं खाया था। वह हमेशा आरामदेह बिस्तर पर सोता था। जब से वह इन सुविधाओं से वंचित हुआ, उसका उत्साह कम होने लगा। उसे लगा कि उसकी शांति छिन गई है। उसके मन में विचार उठने लगा कि कहीं मैंने गलत मार्ग का चुनाव तो नहीं कर लिया। ऐसा तो नहीं कि बाद में मुझे पछताना पड़ेगा। उसने बुद्ध के पास जाकर कहा, भगवन, मेरे मन में भौतिक इच्छाएं फिर से पैदा हो रही हैं, आप मुझे विशेष साधना बताएं। इस पर बुद्ध ने कहा, मन को स्थिर रखना ही सबसे बड़ी साधना है। बेहतर यही है कि तुम अपने चित्त को वश में करने का प्रयत्न करो। यह स्थिरता आराम की स्थिति में उपलब्ध होनेवाली जड़ता नहीं है। इसमें जीवन का प्रवाह है। हर परिस्थिति के साथ सामंजस्य बनाने की क्षमता है। बुद्ध की बात सुनकर मेघ उनके समझ नतमस्तक हो गया।

१४५७) राजा का सपना - एक राजा को शिकार का नशा था। वह राजकाज छोड़कर हर समय शिकार में लगा रहता था। वह जिससे मिलता उससे शिकार के किसी प्रसंग पर ही बात करता। एक बार जब वह शिकार करने पहुंचा तो एक हिरन उसके सामने आ खड़ा हुआ। राजा उसे देखकर चकित रह गया। तभी कोमल वाणी में हिरन ने कहा, राजन्, आप प्रतिदिन वन में जाकर जीवों का शिकार करते हैं। कुछ जीव आपके हाथी घोड़ों द्वारा कुचल दिए जाते हैं। मेरे शरीर के भीतर कस्तूरी का भंडार है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस भंडार को ले लें और वन के प्राणियों का शिकार करना छोड़ दें। हिरन की बात सुन राजा विस्मय से बोला, क्या तुम उन्हें बचाने के लिए अपने प्राण देना चाहते हो? तुम जानते हो कस्तूरी पाने के लिए मुझे तुम्हारा वध करना होगा। हिरन बोला, राजन्, आप मुझे मारकर कस्तूरी का भंडार ले लीजिए, पर निरपराध जीवों को मारना छोड़ दीजिए। राजा ने पुन: कहा, तुम्हारा शरीर बहुत सुंदर है। तुम्हारे भीतर कस्तूरी का भंडार है। हिरन ने जवाब दिया, राजन् यह शरीर तो नश्वर है। मैं दूसरों के प्राण बचाने के लिए मर जाऊं इससे अच्छी बात क्या हो सकती है। मृग की ज्ञान भरी वाणी ने राजा के मन में प्रकाश पैदा कर दिया। वह सोचने लगा, यह जानवर होकर दूसरों के लिए अपने प्राण दे रहा है और मैं मनुष्य होकर जीवों को मारता हूं। धिक्कार है मुझ पर। तभी उसकी नींद टूट गई। इस सपने ने उसकी आंखें खोल दी थीं उस दिन से राजा हिंसा छोड़कर सब पर दया करने लगा।

१४५८) आईने की जरूरत है - नीना बड़ी गुस्सैल और बदमिजाज लड़की थी। अकसर नीना की मां उसे ऐसी आदतों से छुटकारा पाने के लिए समझाती, पर नीना थी कि उस पर किसी बात का असर ही नहीं होता था। एक दिन नीना अपनी मेज पर बैठी पढ़ रही थी। करीब ही तिपाई पर एक सुंदर फूलदान रखा था। अचानक उसके छोटे भाई से धक्का लग गया। फूलदान फर्श पर गिरकर चूर-चूर हो गया। यह देख नीना गुस्से से भर उठी। तभी मां ने उसके तने हुए चेहरे के सामने आईना दिखाया। नीना ने शीशे में जब अपनी बिगड़ी हुई सूरत देखी तो चौंक पड़ी। धीरे-धीरे उसका गुस्सा शांत पड़ गया। वह फफककर रो पड़ी। तुमको आईने की जरूरत है। मां ने कहा, अगर तुमने अपना मिजाज शांत न किया तो धीरे-धीरे तुम्हारे चेहरे का तनाव तुम्हारी शक्ल को सचमुच बिगाड़ देगा और तुम अपनी सुंदरता अपनी वजह से ही खो देगी। नीना को मां की बात सही लगी। उसने निश्चय किया कि वह धीरे-धीरे अपने गुस्से को काबू करेगी। ईश्वर ने हमें केवल एक चेहरा दिया है और दूसरा हम स्वयं बना लेते हैं।

१४५९) मेंढ़क और हाथी - एक हाथी तालाब के किनारे पानी पीने आया। मेंढ़क के कई बच्चे उसके पैर के नीचे कुचलकर मर गए। भाग्यवश एक नन्हा मेंढक बाल-बाल बच गया। फुदकता हुआ वह अपनी माँ के पास पहुंचा और यह दु:खद हादसा सुनाया। फिर बोला, माँ, माँ। जानवर इतना बड़ा था कि तुम सोच भी नहीं सकती। कितना बड़ा था? माँ ने अपना सीना फुलाते हुए पूछा, इतना? नहीं माँ, नन्हे मेंढ़क ने इन्कार में सिर हिलाया और भी बड़ा था। माँ ने और गहरी साँस भरी। सीना और फुलाया, इतना? इससे भी बड़ा। नन्हा मेंढ़क आँखें पटपटाकर बोला। माँ गुस्से से फनफना उठी। उसने ताव खाकर अधिक गहरी साँस भरी और उसका शरीर गुब्बारा बन गया। जिस तरह अधिक हवा भरने से गुब्बारा तनकर फूट जाता है, ठीक वैसे ही उसका शरीर फट्ट से गुब्बारे-सा फट गया। कभी-कभी छोटे लोग बड़े बनने की कोशिश में अपना ही अहित कर बैठते हैं।

१४६०) आत्मा के उपासक - एक बार महर्षि अनमीषि ने एक पंक्ति कहीं पढ़ीं, कुबेर हो या रंक, जब तक परिश्रम से कमाए धन का एक अंश लोकहित में समर्पित नहीं करता, वह अधर्म खाता है। महर्षि इस पंक्ति से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पत्नी सहित यह प्रतिज्ञा ली कि अपने भिक्षाटन से उन्हें जो कुछ प्राप्त होता है, उसमें से भी नित्य वे दीन-दुखियों

को भोजन करा कर ही भोजन किया करेंगे। उन्हें संकल्प निभाते कई वर्ष बीत गए। कोई तप परीक्षा बिना सिद्ध हो गया हो, ऐसा कम ही होता है। एक दिन भोजन के समय तक उनके द्वार पर कोई नहीं आया। दोनों उदास हो गए। अनमीषि अपनी कुटिया से बाहर निकले। उन्हें थोड़ी दूर पर एक पेड़ के नीचे एक वृद्ध कुष्ठ रोगी पीड़ा से कराहता दिखाई दिया। अनमीषि ने उसके पास जाकर कहा, हे बंधु, मेरे यहां भोजन तैयार है। उसे खाकर निश्चय ही आपकी पीड़ा कुछ कम होगी। कृपया उसे ग्रहण कर हमें भी कृतार्थ करें। वृद्ध ने अत्यंत दीन भाव से कहा, आर्य श्रेष्ठ, मैं आपकी उदारता का अधिकारी नहीं हूँ, क्योंकि जाति का चांडाल हूं। यदि संभव हो तो बची हुई कुछ रोटियां यहां फेंक दें, उन्हें उठाकर मैं अपना पेट भर लूंगा। वृद्ध की यह बात सुनकर अनमीषि की करुणा उमड़ पड़ी, आंखों से अश्रु की धारा बह चली। वे बोले, ऐसा न कहें तात। हम जाति के पुजारी नहीं, जीवमात्र में व्याप्त आत्मा के उपासक हैं। आपके अंदर जो चेतन है, वही तो परमात्मा है। उसे छोड़कर हम अन्न ग्रहण करने का पाप कैसे कर सकते हैं? वे उसे सादर अपनी कुटिया पर ले गए। स्नान आदि करा कर साफ कपड़े पहनाए। फिर उसे भोजन कराने के बाद ही पति-पत्नी ने स्वयं भोजन किया। जब रात को अनमीषी सोए तो अग्नि देव प्रकट हुए और बोले, तू ही ईश्वर का सच्चा भक्त है, जो ब्राह्मण, चांडाल, हाथी व कुत्ते में कोई भेद नहीं करता।

१४६१) जब बेटे ने कराया एहसास - जैसा दूसरों के साथ करते हैं, वैसा आपके साथ भी होता है। बच्चों कभी भी दूसरों के साथ गलत न करें। एक समय की बात है एक गांव में एक किसान अपने बेटे, बहू और पोते के साथ रहता था। जब वह बूढ़ा हो गया तो उसने अपनी सारी जिम्मेदारी अपने पुत्र को सौंप दी। इस उम्मीद के साथ कि वो उनका ध्यान उसी तरह रखेगा जैसा उन्होंने रखा था। कुछ समय तक बेटे ने पिता की ठीक तरीके से सेवा की, लेकिन समय बीतने के साथ वह पिता की तरफ से उदासीन रहने लगा। एक दिन उसने पिता की चारपाई एक छोटी सी कोठरी में डाल दी, जहां न धूप आती थी न रोशनी। खाना भी कोठरी में दिया जाने लगा। पिता का जूठन मांजना न पड़े, इसलिए खाने के लिए मिट्टी के बर्तन रख दिए गए। बूढ़ा किसान उसी बर्तन में खाता था। कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसके पुत्र ने गांव को दिखाने के लिए बहुत बड़ा भोज दिया। जब सारा क्रियाकर्म पूरा हो गया तो वह पिता की चीजें एक-एक कर फेंकने लगा। चारपाई फेंक दी, कपड़े फेंक दिए। जब वह मिट्टी के बर्तनों को फेंकने जा रहा था तो उसके बेटे ने कहा, बर्तनों को मत फेंकिए। पिता ने पूछा, क्यों, अब इस कूड़े को रखने का क्या फायदा?

पुत्र बोला, इसका फायदा है। एक दिन आपको भी बूढ़ा होना है। फिर सारी जिम्मेदारी मुझे संभालनी पड़ेगी। जब आप बूढ़े हो जाएंगे तो उस समय आपके लिए भी मिट्टी के बर्तनों की जरूरत पड़ेगी जैसे दादा जी के काम आती थी। उस समय मैं बाजार से नया बर्तन न खरीद कर इन्हीं में आपको खाना दिया करूंगा।

पिता सोच में पड़ गया। थोड़ी देर बाद उसने कहा, तुम ठीक कहते हो बेटा। मैंने जो व्यवहार अपने पिता के साथ किया, वही तुम्हें भी मेरे साथ करना चाहिए। काश, यह समझ मुझे पहले आ गई होती कि पिता के अच्छे-बुरे कर्मों का असर पुत्र पर भी पड़ता है। यह कहकर उसने सिर झुका लिया। पुत्र ने कहा, पिताजी, अब आप इन बर्तनों को फेंक दीजिए। अब उनकी जरूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि आपको अपनी गलती का अहसास हो गया है।

१४६२) ईश्वर के दर्शन - सरस्वती चंद्र तीर्थयात्रा पर जा रहे थे। लंबे और कठिन सफर को देखते हुए साथ में बर्तन, भोजन और जरूरत का अन्य सामान भी था। रास्ते में एक गांव पार करते हुए वह वहां के एक वीरान मंदिर में रुक गए। पहले तो सोचा कि यहां कोई नहीं होगा पर मंदिर के अंदर गए तो देखा एक बीमार वृद्ध कराह रहे हैं। उनकी हालत देख लगता था कि उन्होंने काफी दिनों से कुछ खाया न हो। सरस्वती चंद्र को उन पर दया आ गई। उन्होंने कुछ समय वहीं

रुककर उनकी सेवा करने का फैसला किया। उन्होंने अपने कपड़े उस वृद्ध सज्जन को पहना दिए। अपने सारे बर्तन मंदिर के उपयोग के लिए रख दिए। अपना भोजन भी उन्हें खिला दिया। फिर आसपास से फल और कुछ औषधियां ले आए। खाली समय में सरस्वती चंद्र मंदिर की सफाई में लगे रहते। इस तरह मंदिर का कायाकल्प हो गया। इधर वृद्ध सज्जन धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे। कुछ दिनों के बाद सरस्वती चंद्र बिना तीर्थधाम गए ही घर वापस आ गए। घर वालों ने इस तरह आने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि रास्ते में ही उन्हें ईश्वर के दर्शन हो गए। इसलिए आगे जाने की उन्होंने कोई आवश्यकता ही नहीं समझी और लौट आए। इधर मंदिर के पुनरुद्धार हो जाने से लोग वहां फिर से आने जाने लगे। इस तरह सूने पड़े मंदिर में रौनक लौट आई। वहां वह वृद्ध सज्जन हर किसी को यह बताते थे कि एक दिन यहां ईश्वर आए थे। उन्होंने ही इस मंदिर को तीर्थ बनाया और मुझे जीवन दान दिया।

१४६३) कोयला और चंदन - हकीम लुकमान का पूरा जीवन जरूरतमंदों की सहायता के लिए समर्पित था। जब उनका अंतिम समय नजदीक आया तो उन्होंने अपने बेटे को बुलाया और कहा- बेटा, मैंने अपना सारा जीवन दुनिया को शिक्षा देने में गुजार दिया। अब अपने अंतिम समय में मैं तुम्हें कुछ जरूरी बातें बताना चाहता हूं। तुम एक कोयला और चंदन का एक टुकड़ा उठा लाओ। बेटे को पहले तो यह अटपटा लगा लेकिन उसने सोचा कि जब पिता का हुक्म है तो यह सब लाना ही होगा। उसने रसोई घर से कोयले का एक टुकड़ा उठाया। संयोग से घर में चंदन की एक छोटी लकड़ी भी मिल गई। वह दोनों लेकर अपने पिता के पास गया। लुकमान बोले- अब इन दोनों चीजों को नीचे फेंक दो। बेटे ने दोनों चीजें नीचे फेंक दी और हाथ धोने जाने लगा तो लुकमान बोले- ठहरो बेटा, जरा अपने हाथ तो दिखाओ। फिर वह उसका कोयलेवाला हाथ पकड़कर बोले- बेटा, देखा तुमने। कोयला पकड़ते ही हाथ काला हो गया। लेकिन उसे फेंक देने के बाद भी तुम्हारे हाथ में कालिख लगी रह गई। गलत लोगों की संगति इसी तरह होती हैं। उनके साथ रहने पर भी दुख होता है और उनके न रहने पर भी जीवन भर के लिए बदनामी साथ लग जाती है। दूसरी ओर सज्जनों का संग इस चंदन की लकड़ी की तरह है जो साथ रहते हैं तो दुनिया भर का ज्ञान मिलता है और उनका साथ छूटने पर भी उनके विचारों की महक जीवन भर साथ रहती है। इसलिए हमेशा अच्छे लोगों की संगति में ही रहना। तुम्हारा जीवन सुखद रहेगा।

१४६४) साहस और संकल्प - लिंडन जॉनसन नौ वर्ष की उम्र में जूते पॉलिश कर आजीविका चलाते थे। इसी के साथ वह पढ़ाई भी करते थे। उन्होंने १५ वर्ष की उम्र में ही हाई स्कूल की परीक्षा पास कर ली। फिर उन्होंने कई छोटे-मोटे काम हाथ में लिए। आगे की शिक्षा के लिए वे सैन मार्कोस नगर में आ गए। एक कॉलेज में प्रवेश लिया। खर्चे की समस्या आई तो उसी में गेटकीपर का काम करने लगे। २२ वर्ष में उन्होंने बीएससी की उपाधि हासिल की। फिर वह एक हाई स्कूल में अध्यापक हो गए। पर उनकी ज्ञान पिपासा शांत नहीं हुई। अध्यापन छोड़कर वह वॉशिंगटन आ गए। यहां राजनेता रिचर्ड कलेबर्ग के सचिव बने। दिन में सचिव का कार्य करते और रात को जार्ज टाउन विश्वविद्यालय में कानून की पढ़ाई। पर सचिव बनकर भी वह संतुष्ट न हुए। १९३५ में राष्ट्रपति रूजवेल्ट द्वारा वह टेक्सास नेशनल यूथ एडमिनिस्ट्रेशन के निर्देशक पद पर नियुक्त हुए। यहां कार्य करते दो वर्ष ही हुए थे कि १९३७ में प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन होने लगे। जॉनसन ने अपनी प्रतिभा के निखार के लिए यह समय उपयुक्त समझा। नौ प्रतिद्वंद्वियों को पराजित कर वह टेक्सास राज्य के प्रतिनिधि निर्वाचित हुए। १९४८ और १९५४ में सीनेट के सदस्य निर्वाचित होकर उन्होंने जनता पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप डाली। १९५३ में उनकी कार्यक्षमता और नेतृत्व शक्ति ने ही उन्हें सीनेट में अल्पसंख्यक

दल का नेता बना दिया। तब उनकी आयु केवल ४४ वर्ष थी। अब तक चुने गए सबसे कम आयु के जॉनसन ही थे। १९५४ में वे बहुमत दल के नेता निर्वाचित हो गए। और ९ नवंबर १९६० को अमेरिका के राष्ट्रपति बन गए।

१४६५) बैरागी का आशीर्वाद - सौराष्ट्र की एक रियासत के राजा चंदबर शाह अपनी प्रजा का हाल-चाल जानने के लिए गांवों में घूम रहा था। घूमते-घूमते उसके कुर्ते का बटन टूट गया। उसने मंत्री से कहा कि पता करो, इस गांव में कौन दर्जी मेरे कुर्ते का बटन लगा सकता है।

मंत्री को पता चला कि गांव में एक ही दर्जी है, जिसका नाम है चैनराम। उसे राजा के कुर्ते का बटन लगाने ले जाया गया। राजा ने कहा कि तुम मेरे कुर्ते का बटन सी सकते हो। चैनराज ने कहा, कोई मुश्किल काम थोड़े है। उसने मंत्री से बटन ले लिया और धागे से राजा के कुर्ते का बटन टांक दिया। टूटा हुआ बटन राजा के पास था, इसलिए दर्जी को महज अपने धागे का इस्तेमाल करना था। राजा ने दर्जी से पूछा कि कितने पैसे दूं। उसने कहा, महाराज। रहने दो। राजा ने फिर से दर्जी को कहा, बोलो, कितनी मुद्रा दे दूं? चैनराज ने सोचा कि दो रुपये मांग लेता हूं। फिर मन में सोचा कि कहीं राजा यह न सोचे कि यह बटन टांकने के बदले में मुझसे दो रुपये ले रहा है, तो गांववालों से कितना लेता होगा। उसने राजा से कहा कि जो भी आपको उचित लगे, वह दे दो।

राजा ने मंत्री से कहा, इस दर्जी को दो गांव दे दो। कहां दर्जी सिर्फ दो रुपये की मांग कर रहा था और कहां राजा ने दो गांव दे दिए। चैनराम ने दोनों गांवों की जागीर कबूल करते हुए कहा, जब हम प्रभु पर सब कुछ छोड़ देते हैं, तो वह अपने हिसाब से देते हैं। हम सिर्फ मांगने में कमी कर जाते हैं, देनेवाला तो पता नहीं, क्या देना चाहता है।

१४६६) अहंकार से निकलता पतन का रास्ता - तीरंदाजी की कई प्रतियोगिताएं जीतने के बाद वह नौजवान खुद को सबसे बड़ा धनुर्धर मानने लगा था। वह जहां भी जाता, लोगों को मुकाबला करने की चुनौती देता और उन्हें हराकर उनका मजाक उड़ाता। एक बार उसने एक प्रसिद्ध जेन मस्टर को चुनौती दी। दोनों के बीच मुकाबला शुरू हुआ। युवक ने अपने पहले प्रयास में ही दूर रखे लक्ष्य के ठीक बीचों-बीच निशाना लगा दिया। अपनी कामयाबी पर इतराते हुए वह बोला, मास्टर, आप इससे बेहतर दिखा सकते हैं? मास्टर ने उस युवक से कहा, पुत्र, मेरे पीछे आओ। चलते-चलते दोनों एक खतरनाक खाई के पास पहुंच गए। युवक ने देखा कि वहां दो पहाड़ियों को जोड़ने के लिए किसी ने लकड़ी का एक कामचलाऊ पुल बनाया है, जो काफी जर्जर हो चुका है। मास्टर पुल के बीचों-बीच पहुंचे। उन्होंने कमान से तीर निकाला और दूर एक पेड़ के तने पर निशाना लगाया। तब मास्टर बोले, तुमने तीर-धनुष पर तो नियंत्रण हासिल कर लिया है, पर उस मन पर अब भी तुम्हारा नियंत्रण नहीं है, जो किसी भी परिस्थिति में लक्ष्य भेदने के लिए आवश्यक है।

जब तक सीखने की जिज्ञासा नहीं होगी, ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती।

१४६७) प्रायश्चित ने तार दिया - राजा शर्याति अत्यंत न्यायप्रिय और प्रजासेवक थे। एक दिन राजा अपने परिवार के साथ वन विहार के लिए निकले। दंपति तो सरोवर के निकट बैठ गए। पर राजकुमारी सुकन्या ने मिट्टी के टीले में दो चमकदार मणियां देखी। कौतूहलवश टीले के निकट जाकर उसने लकड़ी की सहायता से मणियों को निकालने की कोशिश की। मणि तो निकली नहीं, वहां से खून बहने लगा। यह देखकर सुकन्या घबरा गई। पिता से उसने पूरी बात कही। शर्याति उस स्थान पर पहुंचे और देखकर बोले, अनर्थ हो गया। यह च्यवन ऋषि हैं, जिनकी आंखें तुमने फोड़ दी। शर्यति ने बताया कि महर्षि च्यवन यहां तपस्या कर रहे थे। आंधी-तूफान और वर्षा के कारण उनका शरीर मिट्टी का टीला बन गया। ऋषि उसी में दबे बैठे रहे और तुम्हें नहीं दिखे। इतने में च्यवन ऋषि की कराह सुनाई दी। सुकन्या

ने तय किया कि वह प्रायश्चित करेगी। शर्यति ने कहा, कितना ही कुछ करो, आंखें तो वापस नहीं आएंगी। इस पर सुकन्या बोली, मैं इनकी आंखें बनूंगी। मैं मात्र भूल व क्षमा का बहाना बनाकर अपराध मुक्त नहीं होना चाहती। मैं ऋषि से विवाह करूंगी। शर्याति ने च्यवन ऋषि की उम्र का हवाला दिया, पर राजकुमारी नहीं मानी। अंतत: राजा शर्याति ने अपनी पुत्री का विवाह च्यवन ऋषि से कर दिया। सुकन्या की इस अद्भुत त्याग की भावना को देखकर देवगण अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने एक औषधि बताई, जिसका सेवन कर च्यवन युवा हो गए। किसी अपराध का प्रायश्चित कर लेना उस अपराध से मुक्त होने का बड़ा उपाय है।

१४६८) स्वर्ग का रास्ता - गयासुर नाम का एक राक्षस था। उसने इतनी लंबी तपस्या की कि ब्रह्माजी उसके तप से प्रसन्न हो उठे। उन्होंने गयासुर से कहा, तुमको जो भी माँगना हो, माँगो। गयासुर घमंड से बोला, अरे छोड़ो। तुम कौन होते हो देनेवाले। माँगना है तो तुम मुझसे माँगो। गयासुर की घोर तपस्या से देवता भयभीत थे, फिर भी उसने माँगने के लिए कहा तो ब्रह्माजी ने सुरक्षा के लिए वरदान माँगा- अपनी देह दे दो। तुम्हारी देह तप से पवित्र हुई है, हम उस पर यज्ञ करेंगे। गयासुर ने स्वीकार कर लिया। राक्षस की देह पर यज्ञ शुरू हुआ। देवताओं ने वर्षों तक यज्ञ किया, फिर भी राक्षस नहीं मरा। इतने में एक और गड़बड़ हुई। राक्षस की देह उड़ने लगी। ब्रह्माजी अत्यधिक चिंतित हो उठे। उन्होंने फौरन नारायण की स्तुति शुरू कर दी। नारायण प्रकट हुए, क्या बात है, वत्स? ब्रह्माजी बोले, गयासुर की देह हवा में उड़ रही है। वह मरेगा नहीं तो देवताओं का नाश हो जाएगा। गयासुर की उड़ती हुई देह को नारायण ने दो लात मारी, फिर भी वह नहीं मरा। नारायण ने कहा, अरे, अब तो जीवन का मोह छोड़ो। गयासुर ने कहा, ठीक है। पर मैं राक्षस हूं, मैंने कठोर तप किया है। वह व्यर्थ तो नहीं जाएगा। भगवान नारायण को उसकी बात ठीक लगी। वह राक्षस होकर भी दे सकता है और ये देवता होकर सिर्फ ले रहे हैं। देवों के देव नारायण ने गयासुर को वरदान दिया, जाओ, तुम्हारे अवसान से यह जगह पवित्र हो जाएगी। लोग यहां आकर अपने पिता की श्राद्ध करेंगे तथा पितरों को पिंडदान करेंगे। गया उसी राक्षस की भूमि है। भगवान के आशीर्वाद से पवित्र हो गई। आज भी लोग श्राद्ध करने गया जाते हैं। तप से पापी भी पवित्र हो जाते हैं।

१४६९) कुत्ता- घर का और गांव का - एक बार घर का कुत्ता और गाँव का कुत्ता रास्ते में टकरा गए। गाँव के कुत्ते ने देखा कि उसका मित्र काफी तंदुरूस्त और हट्टा-कट्टा है, जबकि उसकी अपनी हालत बड़ी नाजुक हैं। पूरे-पूरे दिन उसे खाने को नहीं मिलता था। तभी घर के कुत्ते ने सहानुभूति से भरकर उसे बताया, अगर तुम चाहो तो तुम्हें भी पेट भरकर खाना मिल सकता है। गाँव के कुत्ते ने पूछा, वह कैसे? घर के कुत्ते ने जवाब दिया, तुम्हें हमारे मालिक के घर की चौकीदारी करनी होगी। मैं तैयार हूं। गाँव का कुत्ता बोला, पर तुम्हारे गले में यह क्या है? पट्टा। घर के कुत्ते ने बताया, रात में मैं पहरेदारी करता हूं। दिन में हमारा मालिक मुझे बाँधकर एक कोने में बिठा देता है। यह सुनकर गाँव का कुत्ता चलता बना। यशस्वी होने का सबसे छोटा रास्ता अंतरात्मा के अनुसार चलना है।

१४७०) मछलियां और सांप - बुद्धूराम बड़ा नासमझ लड़का था। एक दिन वह नजदीक के एक तालाब में मछलियाँ चुराने गया। किनारे पर औंधे लेटकर उसने एक बाँह पानी के भीतर डाल दी और मछलियों के हाथ में आने का इंतजार करता रहा। तभी उसे महसूस हुआ कि हाथ में कोई मछली फँसी हैं। वह प्रसन्न हो गया। चट उसने अपना हाथ पानी से बाहर निकाला, पर जैसे ही नजर हाथों की तरफ गई, वह सन्न रह गया। पानी वाला साँप उसके हाथों से लिपटा था। चीखकर उसने साँप को वापस पानी में झटक दिया और सिर पर पैर रखकर भागा। रास्ते में मछुआरे ने उसे रोका और डाँटने लगा, अगर यह साँप जहरीला होता तो आज तुम्हारी खैर नहीं थी।

१४७१) किसान और चिड़िया - गेहूं के खेत में चिड़ियों की एक टोली मौज कर रही थी, तभी किसान आया और फसल को देखकर बोला, फसल तैयार है। फसल काटने के लिए मुझे अपने पड़ोसियों की मदद लेनी पड़ेगी। यह कहकर वह पड़ोसियों को बुलाने चला गया। चिड़ियाँ ने अपनी माँ को पुकारा, माँ, माँ। चलो, हम किसी और खेत में जाकर चुगें। माँ ने इत्मीनान से कहा, अभी चिंता की कोई बात नहीं। तुम सब मौज उड़ाओ। किसी पड़ोसी के साथ न आने पर किसान ने फसल को देखकर दूसरे दिन कहा, भाड़ में जाएँ पड़ोसी, मैं जाकर अपने रिश्तेदारों को बुला लाता हूं। वह अपने रिश्तेदारों को बुलाने गया कि नन्हीं चिड़ियाँ फिर चिल्ला उठीं, माँ, माँ। अब तो यहाँ से उड़ चलो, अभी काफी वक्त है। तुम आराम से दाना चुगो। तीसरे दिन किसान अकेला ही आया और बोला, रिश्तेदार भी भाड़ में जाएँ। अब तो मुझे स्वयं ही कुछ इंतजाम करना होगा और मजदूरों की तलाश में वह गाँव की ओर चल पड़ा। तब माँ ने नन्हे-मुन्ने बच्चों की ओर देखकर कहा, चलो बच्चों, अब हम किसी और किसान के खेत में चलकर डेरा डालेंगे।

१४७२) पीड़ा का कारण - कुरुक्षेत्र का मैदान। भीष्म पितामह बाणों की शय्या पर लेटे हैं। मगर उनके प्राण नहीं निकल रहे हैं। अर्जुन ने तीर मारकर पाताल फोड़ डाला। पातल के घडे का पवित्र पानी भीष्म पितामह पर छिड़का, फिर भी उनकी आत्मा को शांति नहीं मिली। आसपास पांडव खड़े हैं। भीष्म कातर दृष्टि से कृष्ण को निहार रहे हैं। श्रीकृष्ण ने कहा, आपने पाप देखा है, पितामह... इसीलिए यह यातना भोग रहे हैं। भीष्म तो गंगाजल से पवित्र हैं फिर भी? श्रीकृष्ण ने आगे कहा, कौरवों की भरी सभा में जब दु:शासन द्रौपदी का चीर खींच रहा था, उस वक्त आप भी वहाँ उपस्थित थे, दूसरों की तरह मूकदर्शक थे। न आप दु:शासन का हाथ पकड़ सके, न दुर्योधन को ललकार सके। पाप देखना भी पाप में भागीदार बनने से कम नहीं है।

१४७३) कंस और हंस - कंस को ज्योतिषियों ने बताया था कि तुम्हारी बहन का आठवाँ पुत्र तुम्हारी मृत्यु का कारण बनेगा। कंस ने इसीलिए अपनी बहन देवकी को कारागार में डाल दिया। छह बालकों को उसने जन्मते ही मार डाला था। इस वक्त वह सातवें का संहार करने जा रहा था। राजमहल से निकालकर वह बाग में आया। बाग में एक बहुत सुंदर फव्वारे वाला सरोवर था। सरोवर में हंस-हंसिनी का एक जोड़ा रहता था। जैसे ही वह फव्वारे के पास पहुंचा, हंस ने हंसिनी से कहा, अब मोती चुगने का शौक रहने दो। हंसिनी हंस की बात समझी नहीं। बोली, महाराज कंस का राज्य है। मोतियों की क्या कमी। मोती जैसे अन्न के दानों का भंडार तो भरा पड़ा है। हंस पुन: हँसा, जो राजा मानवों की हत्या करता है और तिस पर भी बाल-हत्या करता है वहाँ धन-धान्य क्या रहेगा। कंस ने अपनी निंदा सुनी तो क्रोधित हो उठा, मेरे ही अन्न-जल पर जीने वाले की यह हिम्मत। उसने तुरंत हंस की गरदन काट दी। हंसिनी चीत्कार कर उठी। इसके बाद कंस कारागार पहुंचा। उसने सातवें बच्चे को उठाया और पत्थर पर पटकने के लिए उछाला। परंतु पत्थर पर टकराने से पूर्व ही वह बच्ची आसमान में यह कहती हुई उड़ गई कि तुम्हारी बहन की आठवीं संतान तुम्हारा काल होगा। यह मत भूलों कि ईश्वर न्यायी है।

१४७४) कद्दू और बेल - एक किसान बेल के पेड़ के नीचे खड़ा हुआ अपने पड़ोसी की फुलवारी को देख रहा था, तभी उसकी निगाह कद्दू को देख उसकी बेल पर गई। एक बड़ा सा कद्दू बेल में लगा हुआ था। किसान यह देखकर स्वयं से ही बोला, बेल का यह पेड़ कितना मजबूत है और इसमें लगनेवाला फल कितना छोटा, हल्का, गेंद सा होता है और कहाँ यह कद्दू की दुबली-पतली बेल और इतना वजनी कद्दू। अगर मैंने इस संसार का निर्माण किया होता तो शर्तिया बेल को कद्दू की हल्की-फुल्की लत्तर में गूंथ देता और एक-एक टन वजनी कद्दू को इस मजबूत बेल के पेड़ में लटका देता, जो सचमुच देखने लायक होता। किसान का इतना कहना भर था कि तभी बेल के पेड़ से एक बेल टूटकर उसकी नाक पर गिरा। नाक

से खून बहने लगा। किसान दु:खी हो बड़बड़ाया। मैं भी कितना गलत-सलत सोचता हूं। जो जहाँ है वहीं भला है। अगर बेल के पेड़ पर एक टन का कद्दू लगा होता तो। ईश्वर ने सभी को सोच-विचार कर जगह दी है।

१४७५) चालाक चमगादड़ - किसी जमाने में चखेरूओं और पखेरुओं के बीच युद्ध छिड़ गया। कई दिनों तक युद्ध चलता रहा। चमगादड़, जो आधा पशु और आधा पखेरू था, इस युद्ध पर अपनी दृष्टि गड़ाए रहा। अंत में उसे ऐसा लगा कि चखेरू युद्ध जीत जाएँगे। तुरंत वह चखेरुओं की फौज में भरती हो गया, पर युद्ध का नतीजा एकाएक पलट गया। आखिरी हमले में चखेरू हार गए और पखेरुओं की जीत हो गई। यह देखकर चमगादड़ ने फिर दल बदला। वह जैसे ही पखेरुओं के दल में घुसने गया कि सारे पखेरुओं ने मिलकर उसे खदेड़ दिया। वह फिर चखेरुओं के बीच लौट आया, पर उसकी इन हरकतों से चखेरू उस पर चिढ़े बैठे थे। उन्होंने उसे ऐसा खदेड़ा कि उसे अपनी जान के लाले पड़ गए। वह जाकर अँधेरे कोने में छिप गया। तब से आज तक चमगादड़ अपना मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहे। शायद इसीलिए वह सिर्फ रात में ही घर से बाहर आते हैं। स्वार्थी को सभी धिक्कारते हैं।

१४७६) घोंसला - वसंत ऋतु आई। चिड़ियाँ अपने स्वभाव के अनुसार चहचहाने लगीं। किसान ने यह देख अपने बच्चों को बुलाया और कहा, कभी इन चिड़ियों को नुकसान न पहुंचाना। जो लोग इनका घोंसला उठाकर फेंक देते हैं उनके घर से सुख और संपन्नता खत्म हो जाती है। हमारे पड़ोसी ने यही किया था, तब से उनके ऊपर ऐसी आफत आई कि उनका सारा व्यापार चौपट हो गया। बेचारे कहीं के नहीं रहे। किसान के छोटे बेटे राजा ने यह सुनकर कहा, पिताजी, आप हमें उनकी पूरी कहानी सुनाइए न। किसान ने घटना बयान की, हमारे पड़ोसी के दादा-परदादा चिड़ियों को बहुत प्यार करते थे। उन्होंने कभी चिड़ियों को नुकसान नहीं पहुंचाया, बल्कि वे सुबह चिड़ियों की मीठी चहचहाट सुन जाग जाते थे और वक्त से अपने काम के लिए निकल पड़ते थे। किन्तु हमारे पड़ोसी अपने बाप-दादा की परंपरा का निर्वाह न कर सके। वे रात भर होटल में काम करते थे, सुबह घर लौटकर सोते थे। ऐसे में सुबह चिड़ियों की मीठी चहचहाट उन्हें तंग करती थी। उन्होंने उनका घोंसला उठाकर फेंक दिया, अंड़े फोड़ डाले। तभी से वे भीख माँगते हैं। दया सुख-संपन्नता की कुंजी है।

१४७७) चालाक भेड़िया - एक चरवाहा जंगल में जब भी अपनी भेड़-बकरियाँ चराने जाता तो पाता कि एक भेड़िया चुपचाप उसकी भेड़-बकरियों के करीब आकर खड़ा हो जाता है। उसे देखकर वह अकसर भयभीत हो जाता। पर फिर उसने पाया कि उसका भय निर्मूल है-भेड़िया बिना किसी भेड़-बकरी को छेड़े आराम से उनकी रखवाली करता रहता है। चरवाहे को विश्वास हो गया कि वह भेड़िया जमाने के साथ बदल चुका है। इसने अपनी मांसाहारी प्रवृत्ति त्याग दी है। खुश होकर उसने अपनी भेड़-बकरियों की देख-रेख भेड़िए को सौंप दी और खुद आँखें मूंदकर हरी-हरी घास पर सो गया। घंटे भर बाद जब उसकी आंख खुली तो उसे चक्कर आ गया। भेड़िया उसकी सब भेड़-बकरियों का खात्मा कर जंगल में गायब हो गया था। उन धोखेबाजों से दूर रहो जो मित्र होने का दावा करते हैं।

१४७८) लाल लड़की और भेड़िया - एक भेड़िये के बच्चे ने एक लोककथा सुनी थी। वह एक नन्ही लाल लड़की के विषय में थी। उसने एक रोज तय किया कि वह पास के गाँव में जाकर बच्चों से मिलकर उस लड़की के बारे में पूछेगा। बच्चों के समूह में उसे एक नन्ही लड़की लाल फ्रॉक और लाल टोपी पहने दिखाई दी। वह फौरन उसके पास पहुंचा और बोला, हे नन्ही लाल गुड़िया, हम लोगों को लोककथाओं में झूठ-मूठ का दुश्मन बना दिया गया है, जो कतई सच नहीं है। पर अब उस कहानी पर बच्चे बिलकुल विश्वास नहीं करते। नन्ही लाल गुड़िया ने कहा। बहुत अच्छा। तो फिर आओ, हम दोनों दोस्त बन जाएँ । भेड़िया बोला। ठीक। नन्ही लाल गुड़िया सी बच्ची ने प्रसन्न हो उत्तर दिया। दोनों दोस्त हो गए।

१४७९) मूर्ख के पीछे न चलो - एक सांप की पूंछ बिगड़कर बोली, क्यों जी, यह कहां का न्याय है कि तुम तो सदा नेता की तरह जहां चाहो आगे आगे चलो और मैं दासी की तरह तुम्हारे पीछे-पीछे घिसटती रहूं? यह मेरा अपमान है। आज से इस शरीर को मेरी इच्छानुसार चलना पड़ेगा। सिर ने विनम्र स्वर में कहा, बहन। तुम्हारे पास दिमाग नहीं है, आंखें नहीं हैं, कान नहीं हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम मेरे दिखाए हुए रास्ते पर चलो। पूंछ झुंझलाकर बोली, बस-बस, दूसरों का हक छीननेवाले हमेशा ऐसी ही मीठी-मीठी बातें करते हैं। आखिर सिर को पूंछ के हट के सामने झुकना पड़ा। पूंछ शरीर को लेकर आगे बढ़ी और सिर लटकता हुआ पीछे चला आँखों के न होने की वजह से पूंछ को रास्ता तो दिखलाई पड़ता नहीं था। परिणाम यह हुआ कि सांप एक गड्ढे में जा गिरा। किसी प्रकार निकलकर पूंछ फिर आगे बढ़ी। सिर ने लाख समझाया, पर वह अपनी जिद से न हटी। अबकी सरकते-सरकते वह आग के दहकते हुए कुंड में जा गिरी। स्वयं तो जली ही, सिर भी शरीर समेत जलकर राख हो गया। जो मूर्ख अपने को बुद्धिमान समझता है, उसका रोग असाध्य है।

१४८०) ऊंचाई का रास्ता - हजरत अली के पास एक नौकर था। वह एक दिन किसी बात पर नाराज हो गया और नौकरी छोड़कर चला गया। इसके बाद हजरत अली जब मस्जिद में नमाज पढ़ने गए तो नौकर चुपचाप वहाँ पहुंचा और तलवार निकालकर हजरत अली पर वार किया। हजरत अली को गहरी चोट आई। कुछ लोगों ने उन्हें उठाया और तुरंत उनकी सेवा में जुट गए। एक व्यक्ति ने दौड़कर नौकर को पकड़ लिया। तभी हजरत अली को प्यास लगी। उन्होंने पानी माँगा। लोग दौड़े और शरबत ले आए। गिलास जब उनकी ओर बढ़ाया गया तब उन्होंने नौकर की ओर इशारा करके कहा, मुझे नहीं, पहले इसे पिलाओ। देखो नहीं, बेचारा कितना बुरी तरह हाँफ रहा है। लोगों ने नौकर की तरफ गिलास बढ़ाया तो उसकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। हजरत अली ने बड़े प्यार से कहा, भाई मेरे, रोओ मत, गलती हम सबसे ही हो जाती है। शरबत पी लो।

१४८१) तिनके का सहारा - एक बार की बात है, दो आदमी नदी पार कर रहे थे। नदी के बीच पहुंचते पहुंचते वे इतने थक गए कि डूबने लगे। एक ने घास का एक तिनका देखा, लेकिन उसे पकड़कर अपने को बचाने की कोशिश नहीं की। दूसरे ने उस तिनके को देखा और पकड़ लिया। वह तिनका एक बारीक धागे से बँधा हुआ था, जिसका दूसरा सिरा एक रस्सी से बँधा था और वह रस्सी बड़ी रस्सी से बँधी थी, जो किनारे के खंभे से बँधी थी। जिस आदमी ने तिनका पकड़ा था वह किनारे पर आ गया। पहले ने कोशिश नहीं की, इसलिए बीच में ही डूब गया। जो उम्मीद हारता है, वह सभी कुछ हार जाता है।

१४८२) एक जुर्म, एक सजा - एक व्यापारी के पास कई भेड़ें थीं जिन्हें संभालने के लिए उसने दो नौकर पाल रखे थे। दोनों के लिए भेड़ों को भी दो हिस्सो में बांट दिया गया और उन लड़कों से कहा गया कि वे अपने-अपने हिस्से की भेड़ों का पूरा खयाल रखेंगे। एक दिन व्यापारी यात्रा पर निकल गया। कुछ दिनों बाद जब वह लौटकर आया तो देखा कि ज्यादातर भेड़ें कमजोर हो गई थीं और कुछ तो मर भी गई थीं। व्यापारी ने दोनों नौकरों को इसके लिए जिमेदार ठहराया। क्योंकि एक नौकर को जुआ खेलने की आदत थी। जहां कहीं भी वह जुए की बाजी लगते देखता, वहीं दांव लगाने बैठ जाता। इस चक्कर में भेड़ें कहीं से कहीं जा पहुंचतीं और भूखी-प्यासी रहते कष्ट पातीं। दूसरा नौकर पूजा-पाठ में लीन रहता और भेड़ों पर ध्यान नहीं देता। व्यापारी दोनों नौकरों को पकड़कर न्यायाधीश के समक्ष ले गया। न्यायाधीश ने दोनों को समान रूप से दंडित किया। यह सुनकर दूसरा नौकर न्यायाधीश से बोला- माना कि मुझसे चूक हुई लेकिन मैं जुआरी तो नहीं हूं। मैं तो पूजा-पाठी सदाचारी हूं। मुझे जुआरी जैसा दंड

क्यों मिल रहा है? न्यायाधीश बोले, सबसे पहला काम अपना कर्त्तव्य निभाना है, जिसमें तुम दोनों नाकाम रहे हो। फिर, कारण भले ही क्यों न अलग-अलग हों।

१४८३) अशोक वाटिका में सीता - रावण की अशोक वाटिका में सीता भगवान राम को याद कर छटपटा रही थीं। उनके आसपास राक्षसियां बैठी पहरा दे रही थीं। त्रिजटा ने करीब जाकर पूछा, तुम तो राम का ध्यान इतना करती हो कि एक दिन खुद ही राम बन जाओगी, जैसे कि प्राण शिव हो जाते हैं। नहीं। ध्यानस्थ सीता चौंकी- मैं उनमें लीन होकर भी सीता बनी रहना चाहती हूं, क्योंकि अगर मैं उनमें लीन हो मिट जाऊं तो फिर उनकी सेवा कैसे कर पाऊंगी। भक्त बनना भगवान बनने से भी कठिन है।

१४८४) बूढ़ा कुत्ता - एक बूढ़ा कुत्ता, जो अपनी जवानी के दिनों में बढ़िया शिकारी था, अपने मालिक के साथ जंगल में शिकार खेलने गया। जंगल में काफी दूर जाने के बाद उसे एक गीदड़ नजर आया। कुत्ते ने दौड़कर उसे घेर लिया। कुत्ते और गीदड़ के बीच युद्ध छिड़ गया। काफी घेरा-घारी के बावजूद गीदड़ कुत्ते के पंजे से छूट भागा। कुछ मिनटों बाद कुत्ते का मालिक हाँफता हुआ कुत्ते के निकट पहुंचा। गीदड़ को न पकड़ पाने की कुत्ते की असमर्थता पर वह क्रोधित हो उठा। छड़ी उठा कुत्ते की पिटाई करने जा ही रहा था कि तभी कुत्ता नरम स्वर में बोला, मालिक। उन दिनों की याद करिए, जब मैं जवान था और बड़े बड़े शिकार आपके लिए झपट लाता था। लेकिन अब तो मैं बूढ़ा हो गया हूं। मुझ पर दया करो। समय सत्य के सिवाय हर चीज को कुतर खाता है।

१४८५) साधु सन्तों का अनादर - मुनि दुर्वासा स्नान के लिए जा रहे थे। तभी राह में इंद्र की सवारी चली आ रही थी। इंद्र थे राजाओं के राजा। साधु-संतों की क्या परवाह। उन्होंने न दुर्वासा मुनि को प्रणाम किया, न ठहरकर आदर ही दिया। दुर्वासा मुनि को यह अनादर सहन न हुआ। गुस्से से बोले, ऊँचे सिंहासन पर बैठा है, पर मन कितना छोटा है। संत मुनियों को देखकर भी वंदना नहीं करता। जा, आज से तू निर्धन बन जाएगा। दुर्वासा मुनि का शाप। जो नाथों का नाथ था, वही इंद्र अनाथ हो रास्ते का भिखारी बन गया। न जाने कब तक वे इसी दशा में भटकते रहे। अगर कोई व्यक्ति अपने को कीड़ा बना ले तो रौंदे जाने पर उसे शिकायत नहीं करनी चाहिए।

१४८६) पानी की प्यास - करनाल के मैदान में मुहम्मद शाह की सेना को हराकर जब विजयी नादिरशाह दिल्ली पहुंचा तो दोनों बादशाह साथ ही तख्त पर बैठे। नादिरशाह को प्यास लगी। उसने मुहम्मद शाह को पानी मंगाने का संकेत किया। वह पानी आने का इंतजार कर रहा था कि उसे नगाड़े बजने की आवाज सुनाई पड़ी। लगा, जैसे कोई उत्सव होने जा रहा है। वह अभी पूछने ही वाला था कि उसके सामने दस-बारह नौकर हाजिर हुए। किसी के हाथ में रूमाल था तो किसी के हाथ में पानदान। तभी दो-तीन नौकर आगे बढ़े। उनके हाथ में चाँदी का एक थाल था। उसमें बड़े तरतीब से जल भरे हुए गिलास सजे थे। वह थाल बेशकीमती कपड़े से ढँका हुआ था। नादिरशाह को जब पता चला कि यह सारा आडंबर उन्हें पानी पिलाने के लिए है तो वह बोला, हम ऐसा पानी नहीं पीते। इसके बाद उसने जोर से आवाज देकर अपने भिश्ती को बुलाया। भिश्ती चमड़े की मशक में पानी लिए तुरंत दौड़ा आया। नादिरशाह ने सिर से अपना लोहे का टोप उतारा और उसमें पानी भरकर तुरंत पी गया। फिर उसने मुहम्मद शाह की ओर देखकर कहा, अगर हम भी तुम्हारी तरह पानी पीते तो ईरान से हिन्दुस्तान तक न आ पाते।

१४८७) बंद आंखें, खुला मुंह - एक छोटे से गांव में रहनेवाले एक मुरगे को अपनी आवाज पर बड़ा नाज था। एक दिन एक चालाक लोमड़ी उसके पास आई और बोली, मुरगे महाशय। सुना है, आपकी आवाज बड़ी प्यारी और बुलंद है।

मुरगे ने गद्‌गद् होकर अपनी आंखें मीचीं और ऊंची आवाज में चिल्लाया- कु कु छू कूं। पर तभी लोमड़ी ने फुरती से उसे अपने मुंह में दबोच लिया और जंगल की तरफ भाग चली। गांववालों की नजर उस पर पड़ी तो वे चिल्लाए, पकड़ो, मारो। यह तो हमारा मुरगा दबोचे लिए जा रही है। लोमड़ी ने उनकी चिल्लाहट पर ध्यान नहीं दिया। यह देखकर मुरगा बोला, लोमड़ी बहन, ये गांववाले चिल्ला रहे हैं कि मेरा मुरगा दबोचे लिए जा रही है। आप इन्हें जवाब क्यों नहीं दे देतीं कि यह मुरगा आपका है, उनका नहीं? लोमड़ी को मुरगे की बात जम गई। उसने फौरन मुंह खोला और गांव वालों की ओर देखकर कहा, भूल जाओ अपने मुरगे को। यह तो अब मेरा निवाला है। पर यह कहने के साथ जैसे ही लोमड़ी का मुंह खुला, मुरगा उसके मुंह से छूट गया। वह सरपट भागा और अपने गांव वालों के पास पहुंच गया। प्रयत्नशील लोगों के लिए सदा आशा है।

१४८८) सुख-समृद्धि - वसंत की सुबह एक नन्हा चरवाहा घाटी की ढलानपर अपनी भेड़-बकरियां चरा रहा था। बकरियां चर रही थीं और वह अपनी मधुर आवाज में एक गीत गुनगुना रहा था। तभी वहां का राजा शिकार के लिए भटकता-भटकता उस घाटी में पहुंचा। चरवाहे को इतना खुश देखकर राजा ने उससे पूछ, तुम इतने प्रसन्न क्यों हो? चरवाहा राजा को पहचान नहीं पाया। बोला, क्यों प्रसन्न न होऊं। शायद हमारा राजा भी इतना समृद्ध नहीं होगा जितना कि मैं हूं। ऐसा है। राजा हैरान हो उठा, पर यह तो बताओ, तुम राजा से ज्यादा धनी कैसे हो? मेरे पास प्रकृति की संपदा है। यह सूरज मुझे रोशनी देता है, यह नीला आकाश मुझे बांहें पसारे दुलारता है। यह घाटी अपनी पीठ पर मुझे लादे हुए किसी अनंत यात्रा का सुख देती है। मैं मस्त इन घने जंगलों की सुरसुराती हवा की बांसुरी सुनता रहता हूं। मुझे रोज पेट भर खाना मिल जाता है। साल भर में मैं जरूरत भर का कमा लेता हूं। न चोरों का डर, न छीना-झपटी की चिंता। अब तुम ही बताओ, सुख-संतोष की जो संपदा मेरे पास है, वह राजा के पास होगी? सुखी होने के लिए धन का होना जरूरी नहीं।

१४८९) रंग बिरंगे नाखून - सोनगढ़ के महाराज पशु-पक्षियों से बहुत प्यार करते थे। एक दिन एक बहेलिया एक सुंदर व रंगीन विचित्र किस्म का पक्षी लेकर राजदरबार में पहुंचा। वह बोला, महाराज, इस सुंदर व विचित्र पक्षी को मैंने कल जंगल से पकड़ा है। यह बहुत मीठा गाता है और बारिश होते ही मोर की तरह नृत्य करता है। महाराज ने बहेलिए को ५० स्वर्ण मुद्राएं दीं। लेकिन राजकुमार को बहेलिए की बात झूठी लगी। उसने कहा, पिताजी, बहेलिया झूठ बोल रहा है। महाराज ने कहा, राजकुमार, तुम अपनी बात सिद्ध कर सकते हो? राजकुमार ने सिपाही से एक गिलास पानी मंगाया और पक्षी के पिंजरे में गिरा दिया। सभी दरबारी पक्षी को आश्चर्य से देखने लगे। पक्षी पर गिरा पानी रंगीन हो गया और उसका रंग हल्का भूरा हो गया। राजकुमार बोले, यह कोई विचित्र पक्षी नहीं है बल्कि जंगली कबूतर है। महाराज बोले, परंतु तुम्हें कैसे पता लगा कि यह पक्षी रंगा गया है? पिताजी, बहेलिए के रंगीन नाखूनों से। पक्षी पर लगे रंग तथा उसके नाखूनों का रंग एक समान है।

१४९०) कुओं की चोरी - एक राजा ने गृहमंत्री को राज्य में अनेक कुएं बनाने का आदेश दिया। गृहमंत्री ने इस कार्य के लिए शाही कोष से बहुत-सा धन लिया। एक दिन कुछ गांव वाले गृहमंत्री की शिकायत लेकर महामंत्री के पास पहुंचे। अगले दिन महामंत्री, राजा से बोले, महाराज, हमारे नगर से कुछ कुएं चोरी हो गए हैं। इस पर राजा बोले, क्या बात करते हो, महामंत्री, कोई चोर कुओं को कैसे चुरा सकता है? यह सच है महाराज, चोर अब तक कई कुएं चुरा चुके हैं। महामंत्री ने कहा। राजा ने उनकी बात मान ली और गृहमंत्री, महामंत्री, कुछ दरबारियों तथा गांववालों के साथ कुओं का निरीक्षण किया तब उन्हें गृहमंत्री की बेईमानी पता चला। राजा को यह पता लगते देख गृहमंत्री घबरा गया। वास्तव में उसने कुछ

कुओं को ही बनाने का आदेश दिया था। बचा हुआ धन उसने अपनी सुख-सुविधाओं पर व्यय कर दिया। अब तक राजा महामंत्री की बात का अर्थ समझ चुके थे। राजा ने गृहमंत्री को पद से हटाया और सौ और कुएं बनवाने का आदेश दिया।

१४९१) बसना हो तो किसी के हृदय में बसो - एक दिन रूक्मणी ने भोजन के बाद श्रीकृष्ण को दूध पीने को दिया। दूध ज्यादा गरम होने के कारण श्रीकृष्ण के हृदय में लगा और उनके श्रीमुख से निकला- हे राधे। सुनते ही रुक्मणी बोली- प्रभु। ऐसा क्या है राधाजी में, जो आपकी हर सांस पर उनका ही नाम होता है? मैं भी तो आपसे अपार प्रेम करती हूं।

फिर भी, आप हमें नहीं पुकारते। श्रीकृष्ण ने कहा- देवी। आप कभी राधा से मिली हैं और मंद-मंद मुस्काने लगे। अगले दिन रुक्मणी राधाजी से मिलने उनके महल में पहुंची। राधाजी के कक्ष के बाहर अत्यंत खूबसूरत स्त्री को देखा। और उनके मुख पर तेज होने कारण उसने सोचा कि- ये ही राधाजी हैं और उनके चरण छूने लगीं। तभी वो बोली- आप कौन हैं? रुक्मणी ने अपना परिचय दिया और आने का कारण बताया।

तब वो बोली- मैं तो राधाजी की दासी हूं। राधाजी तो सात द्वार के बाद आपको मिलेंगी। रुक्मणी ने सातों द्वार पार किये और, हर द्वार पर एक से एक सुन्दर और तेजवान दासियों को देख सोच रही थी कि अगर उनकी दासियां इतनी रूपवान हैं तो, राधारानी स्वयं कैसी होंगी? सोचते हुए राधाजी के कक्ष में पहुंची।

कक्ष में राधाजी को देखा- अत्यंत रूपवान तेजस्वी जिसका मुख सूर्य से भी तेज चमक रहा था। रुक्मणी सहसा ही उनके चरणों में गिर पड़ीं।

पर, ये क्या राधाजी के पूरे शरीर पर तो छाले पड़े हुए हैं। रुक्मणी ने पूछा- देवी आपके शरीर पर ये छाले कैसे? तब राधाजी ने कहा- देवी। कल आपने कृष्णजी को जो दूध दिया... वो ज्यादा गरम था। जिससे उनके हृदय पर छाले पड़ गए और, उनके हृदय में तो सदैव मेरा ही वास होता है।

इसलिए कहा जाता है- बसना हो तो... हृदय में बसो किसी के... दिमाग में तो... लोग खुद ही बसा लेते हैं।

१४९२) यह कैसा भेद? - गुरुदेव रवींद्रनाथ शांति निकेतन में अपने छात्रों की जिज्ञासा शांत कर रहे थे। एक छात्र ने पूछा, गुरुदेव, संबंध और सेवा में क्या अंतर है? इन दोनों में कौन अधिक उपादेय है और किसका चयन करना चाहिए? गुरुदेव ने कहा, संबंध और सेवा आपस में जुड़े हैं। भावनाओं के कारण ही संबंध बनते हैं और उन्हीं के उफान से व्यक्ति सेवा-कार्य करने लगता है। संबंध की अंतिम परिणति कई बार अधिक सुखद नहीं होती। वहीं संबंध में यदि अपेक्षाओं का बोझ डाल दिया जाए तो यह अति बोझिल व असह्य हो जाता है। सेवा के साथ भी अपेक्षा और परिणाम पाने की इच्छा बलवती हो जाए, तो यह अपना उद्देश्य खो बैठती है। संबंध तभी ठीक है जब अपेक्षाओं का बोझ कम हो और सेवा उत्कृष्ट हो। यदि इसे निष्काम भाव से करके आगे बढ़ जाना हो तो दोनों ही श्रेष्ठ हैं। निष्काम सेवा ही अच्छी है क्योंकि इससे व्यक्ति आगे निकल जाता है। परंतु संबंध हमें आगे बढ़ने से रोकते हैं। शिष्य गुरुदेव की बात का मर्म समझ गया।

१४९३) किसान और कुत्ते - अकाल का मारा एक आदमी भूखों मरने लगा। घर में खाने को कुछ था नहीं। अचानक उसे एक उपाय सूझा, क्यों न मैं अपनी भेड़ों को अपना भोजन बनाऊं? दूसरे दिन से उसने भेड़ मारकर खाना शुरू कर दिया। कुछ दिनों में वह सारी भेड़ें मारकर खा गया। तब उसकी नजर अपनी बकरियों पर गई। महीने भर में सारी बकरियां भी खत्म हो गईं। तभी उसके दो कुत्ते चौंक उठे। वे समझ गए कि अब उनकी भी खैर नहीं। गाय के बाद उनका ही नंबर है। जब तक जान में जान है, यहां से भाग निकलो- और वे उस किसान के घर से भाग खड़े हुए। दूसरों के घरों को जलता देखकर अपने घर की फिक्र करनी चाहिए।

१४९४) भेड़िए की चाल - एक भेड़िया बीमार की वजह से कुछ कमजोर हो गया। जंगल में शिकार कर अपने लिए भोजन जुटाना अब उसके लिए संभव न रहा। उसने एक चाल चली। भेड़ की खाल ओढ़कर वह भेड़ों के एक झुंड में घुस गया। किसी को पता न चला। चरवाहे को भी नहीं। बस, अब क्या था। मौज-ही-मौज। भेड़िया रोज चुपके से एक भेड़ के बच्चे को अलग ले जाता और मिनटों में गड़प कर जाता। कुछ रोज तक यह युक्ति चलती रही। एक दिन चरवाहे के घर पर कुछ मेहमान आनेवाले थे। उसने एक बड़ी सी भेड़ को काटकर उसका सालन बनाने का निश्चय किया। अचानक उसकी दृष्टि भेड़ की खाल ओढ़कर भेड़ बने भेड़िए पर गई। चरवाहे ने फौरन उसकी गरदन धड़ से अलग कर दी।

१४९५) लड़कों की जिद - मक्के के खेत के करीब एक जंगल में दो लड़कों ने तीतर का एक घोंसला देखा। किसी तरह वह घोंसला उनके कब्जे में आ गया, जिसमें मादा तीतर अपने अंडों सहित बैठी थी। बड़े वाले लड़के ने कहा, तुम अंडे लेलो, मैं तीतर रखता हूं। दोनों का मूल्य बराबर ही है। जैसा कि तुम कह रहे हो, अगर यह सच है तो तुम अंडे ले लो, मैं तीतर लूंगा। छोटे वाले लड़के ने जवाब दिया। उनका तर्क-वितर्क लगातार चलता रहा और वे अपनी-अपनी जिद पर डटे रहे। अंत में उनकी इस तू-तू, मैं-मैं में अंडे गिरकर फूट गए और तीतर उड़ गई। दोनों हाथ मलते रह गए। लालच का अंत बुरा होता है।

१४९६) दीर्घायु का रहस्य - एक राजा ने अपने पड़ोसी देश का इतिहास पढ़ा तो पाया कि उस देश के राजाओं की आयु उसके अपने देश के राजाओं की आयु से बहुत अधिक है। उनकी दीर्घायु का रहस्य जानने के लिए उसने अपने मंत्री को पत्र लिखकर पड़ोसी राजा के पास भेजा और कहा, यदि तुम मेरे प्रश्न का उचित उत्तर लेकर नहीं आए तो तुम्हें फाँसी दे दी जाएगी। मन ही मन दुखी होता हुआ मंत्री पड़ोसी देश में पहुंचा। वहाँ उसका खूब स्वागत-सत्कार किया गया। फिर उसे एक हरे-भरे वट वृक्ष की छाया में ठहराया गया और कहा गया कि जब तक यह वट वृक्ष जलकर खाक नहीं हो जाएगा तब तक उसे अपने सवाल का जवाब नहीं मिलेगा। अब तो मंत्री मन-ही-मन मनौती मनाने लगा कि इस वटवृक्ष का नाश हो तो मुझे छुटकारा मिले। आखिर तीन महीने में बद्दुआ फली। मंत्री फौरन पड़ोसी राजा के पास पहुंचा, महाराज। वट वृक्ष जलकर खाक हो गया है। अपने वचनानुसार अब आप हमारे प्रश्न का उत्तर दे दें। राजा ने कहा, अब क्या जवाब दूं। जवाब तो तुम्हें मिल गया है। क्या तुमने स्वयं नहीं देखा कि तुम्हारी बद्दुआओं से हरा-भरा वृक्ष जलकर खाक हो गया? ऐसे ही जब प्रजा की बद्दुआएँ फलती हैं, तो राजा की उम्र भी घट जाती है।

१४९७) ओस की बूंदें - एक जादूगरनी ने एक सुंदर सी लड़की को पौधे पर लगे फूल के रूप में बदल दिया। लेकिन रात के समय उसे यह छूट थी कि वह लड़की अपने रूप में आ जाती और रात अपने माता-पिता के साथ रहती। प्रात:काल होने पर फिर से फूल बन जाती। एक सुबह जब वह लड़की पुन: पौधों पर लगे फूल में परिवर्तित होने जा रही थी तो अपनी मां से बोली- मां, यदि तुम मुझे किसी तरह पौधे से तोड़ लो, तो मुझ पर से जादू का असर टूट जाएगा। बात तो ठीक थी, लेकिन समया यह थी कि उसकी मां उसे पहचानती कैसे? वहां तो हजारों दूसरे वैसे ही फूल लगे थे। मां सोचने लगी कि इतने फूलों में बेटी की पहचान कैसे की जाए? लेकिन मां को तो बेटी को वापस पाना था। आखिर उसने सोचा और सूरज निकलने से पहले ही बगिया में पहुंच गई। मां ने हजारों फूलों में से वहीं फूल तोड़ा जो उसकी बेटी थी। डाली से टूटते ही वो मां से लिपट गई। पूछने लगी मां इतने फूलों में से आखिर तुमने मुझे पहचाना कैसे? मां बोली- बेटी, तुम्हें

पहचानना तो बड़ा आसान था। तुम रात अपने घर बिताकर प्रात:काल के समय फूल बनती थी, इसलिए तुम ही एक ऐसा अकेला फूल थी, जो ओस की बूंदों से भीगा नहीं था और मैंने झट से पहचान लिया।

१४९८) कड़वा सच - एक भिखारी था। वह न ठीक से खाता था, न पीता था, जिस वजह से उसका बूढ़ा शरीर सूखकर कांटा हो गया था। उसकी एक-एक हड्डी गिनी जा सकती थी। उसकी आंखों की ज्योति चली गई थी। उसे कोढ़ हो गया था। बेचारा रास्ते के एक ओर बैठकर गिड़गिड़ाते हुए भीख मांगा करता था। एक युवक उस रास्ते से रोज निकलता था। भिखारी को देखकर उसे बड़ा बुरा लगता।

उसका मन बहुत ही दुखी होता। वह सोचता कि वह क्यों भीख मांगता है? जीने से उसे मोह क्यों है? भगवान उसे उठा क्यों नहीं लेते? एक दिन उससे न रहा गया। वह भिखारी के पास गया और बोला- बाबा, तुम्हारी ऐसी हालत हो गई है, फिर भी तुम जीना चाहते हो? तुम भीख मांगते हो, पर ईश्वर से यह प्रार्थना क्यों नहीं करते कि वह तुम्हें अपने पास बुला ले?

भिखारी ने मुंह खोला- भैया, तुम जो कह रहे हो, वही बात मेरे मन में भी उठती है। मैं भगवान से बराबर प्रार्थना करता हूं, पर वह मेरी सुनता ही नहीं। शायद वह चाहता है कि मैं इस धरती पर रहूं, जिससे दुनिया के लोग मुझे देखें और समझें कि एक दिन मैं भी उनकी ही तरह था, लेकिन वह दिन भी आ सकता है, जबकि वे मेरी तरह हो सकते हैं। इसलिए किसी को घमंड नहीं करना चाहिए।

लड़का भिखारी की ओर देखता रह गया। उसने जो कहा था, उसमें कितनी बड़ी सच्चाई समाई हुई थी। यह जिंदगी का एक कड़वा सच था, जिसे माननेवाले प्रभु की सीख भी मानते हैं।

१४९९) ईश्वर हैं सबके पालनहार - एक राजा अपनी वीरता और सुशासन के लिए प्रसिद्ध था। एक बार वह अपने गुरु के साथ भ्रमण कर रहा था, राज्य की समृद्धि और खुशहाली देखकर उसके भीतर घमंड के भाव आने लगे और वह मन ही मन सोचने लगा- सचमुच, मैं एक महान राजा हूं, मैं कितने अच्छे से अपनी प्रजा की देखभाल करता हूं। मेरे जरिये कितने लोगों का पालन-पोषण होता है।

गुरु सर्वज्ञानी थे, वे तुरंत ही अपने शिष्य के भावों को समझ गए और तत्काल उसे सुधारने का निर्णय लिया। रास्ते में ही एक बड़ा-सा पत्थर पड़ा था, गुरुजी ने सैनिकों को उसे तोड़ने का निर्देश दिया। जैसे ही सैनिकों ने पत्थर के दो टुकड़े किए, एक अविश्वसनीय दृश्य दिखा। पत्थर के बीचो-बीच कुछ पानी जमा था और उसमें एक छोटा-सा मेंढ़क रह रहा था। पत्थर टूटते ही वह अपनी कैद से निकल कर भागा। सब अचरज में थे कि आखिर वह इस तरह कैसे कैद हो गया और इस स्थिति में भी वह अब तक जीवित कैसे था?

अब गुरु राजा की तरफ पलटे और पूछा- अगर आप ऐसा सोचते हैं हर किसी का ध्यान रख रहे हैं, सबको पाल-पोस रहे हैं तो बताइए पत्थरों के बीच फंसे उस मेंढक का ध्यान कौन रख रहा था? बताइए कौन है इस मेंढक का रखवाला? राजा को अपनी गलती का अहसास हो चुका था, उसे अपने अभिमान पर पछतावा होने लगा। गुरु की कृपा से वे जान चुके थे कि वह ईश्वर ही हैं जिसने हर एक जीव को बनाया है और वही हैं जो सबका ध्यान रखते हैं।

कई बार अच्छा काम करने पर मिलने वाले यश और प्रसिद्धि से लोगों के मन में अहंकार घर कर जाता है और अंतत: यही उनके अपयश और दुर्गति का कारण बनता है। अत: हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम चाहे इस जीवन में किसी भी मुकाम पर पहुंच जाएं किंतु कभी घमंड न करें और सदा अपने अर्थपूर्ण जीवन के लिए उस सर्वशक्तिमान ईश्वर के कृतज्ञ रहें।

१५००) स्नान के बाद पूजाघर की ओर रुख किए झल्लाते हुए उन्होंने पत्नी को फटकार लगाई, सैकड़ों बार कहा है, पूजा के लोटे-थाली हफ्ते दस दिन में ही सही, साफ कर दिया करो। पर मेरे कहे की परवाह किसे है? पूजा के दौरान बाथरूम जाते बेटे पर नजर पड़ी तो उस पर बरपी हिकारतभरी फब्ती से समूचा घर सराबोर हो गया, हो गया उठने का वक्त, मैं तो फिर कहूंगा इस साल बोर्ड की परीक्षा ड्रॉप कर दो, नाक तो नहीं कटेगी। पूजा अभी शेष थी कि घरवालों को चेतावनी जारी की गई, सभी बहरे हो गए क्या, पिछवाड़े का नल टपकने की आवाज नहीं सुनाई पड़ती, तुरंत नल बंद करो। चंद मिनट और बीते तो सामने से गुजरती बेटी को मुस्कुराते बोले, मेरी इतने करीने से की जाती पूजा के शॉट तुम व्हॉट्स ऐप पर पोस्ट करने में बहुत ढीली हो, जबकि रोजाना के धर्म-कर्म में मेरी पाबंदी को दुनिया जानती है।

यह कैसी पूजा, किसकी अर्चना, जब ध्यान प्रति क्षण प्रभु के अलावा कहीं और ही भटकता रहे? ध्यान करते वक्त तो सुध ही नहीं रहनी चाहिए कि आसपास क्या घट रहा है, कौन क्या कर रहा है। फिर आप चाहते हैं कि आपकी पूजा-आराधना का ढोल बराबर पिटता रहे। यह तो रस्म अदायगी हुई, प्रभु में आपने चित्त तो नहीं लगाया। सच्ची आराधना में तो भक्त और प्रभु के बीच ऐसा गहरा साहचर्य निर्मित हो जाता है कि दोनों एक हो जाते हैं, किसी तीसरी अस्मिता का पता ही नहीं चलता।

१५०१) जब एक छोटी-सी मदद से जिंदगी बदल गई - मार्क हर रोज की तरह स्कूल से घर लौट रहा था। उसने अचानक गौर किया कि उसके आगे अनमने ढंग से चल रहे लड़के की सारी किताबें नीचे गिर गयी हैं। उसके अलावा उसके पास दो स्वेटर, बेसबॉल बैट, दस्ताने और एक छोटा टेपरिकार्डर भी था। वो सब भी नीचे गिर गये थे। मार्क झुका और फैले हुए सामान को उठाने में लड़के की मदद करने लगा।

दोनों का रास्ता एक ही था, इसलिए वे आपस में बातें करने लगे। मार्क ने लड़के का कुछ वजन भी उठा लिया। साथ चलते हुए पता चला कि लड़के का नाम बिल है। यह भी कि उसे वीडियो गेम्स, बेसबॉल खेलना और इतिहास विषय अच्छे लगते हैं। यह भी जाना कि उसे दूसरे विषयों की पढ़ाई करने में दिक्कतें होती हैं। हाल में उसके माता-पिता का तलाक हुआ है और उसका एक दोस्त उससे बहुत दूर चला गया है। रास्ते में पहले बिल का घर पड़ता था। बिल ने मार्क को घर बुलाया। साथ ही उसे कोल्डड्रिंक्स और टेलीविजन देखने के लिए आमंत्रित किया। इस तरह दोपहर एक-दूसरे के साथ हंसी-मजाक में बीत गयी। उन्होंने कुछ बातें कीं और मार्क घर चला गया।

वे दोनों अब आगे भी स्कूल में मिलने लगे। कभी कभार साथ में खाना खाते। दोनों ने जूनियर स्तर की पढ़ाई एक ही स्कूल से पूरी की। उसके बाद हाईस्कूल भी एक ही रहा। दोनों की दोस्ती कायम रही। अब पढ़ाई का अंतिम वर्ष पूरा होने को था। तीन सप्ताह शेष थे, जब बिल मार्क के पास आया और कहा कि उसे कुछ बातें करनी हैं। वे दोनों पैदल चलने लगे। बिल ने मार्क को उस दिन की याद दिलायी, जब वे पहली बार मिले थे। उसने मार्क से पूछा कि क्या तुमने कभी सोचा कि उस दिन मैं इतना सारा सामान घर क्यों लेकर जा रहा था? जानते हो, मैंने उस दिन अपना लॉकर पूरा खाली कर दिया था, ताकि कोई उसे इस्तेमाल कर सके। मैंने अपने पास अपनी मां की कई सारी नींद की गोलियां इकट्ठी की हुई थीं। मैं उस दिन आत्महत्या करने जा रहा था। पर फिर हमने कुछ वक्त साथ बिताया। हमने बातें की। मैं तुम्हारे साथ हंसा। मुझे एहसास हुआ कि अगर मैं मर गया होता तो वह समय तुम्हारे साथ नहीं बिता पाता। और वह सब समय भी नहीं, जो इतने सालों में मैंने तुम्हारे साथ बिताया है। बिल ने कहा, मार्क उस दिन तुमने मेरी किताबें ही नहीं उठायी थीं, मुझे भी उठा

दिया था। वह छोटा सा काम नहीं था, वह मेरी जिंदगी थी।

१५०२) अनमोल धन - एक विचारक थे। वे नास्तिक थे। न ईश्वर को मानते थे और न आत्मा को, सिर्फ वर्तमान क्षण में विश्वास रखते थे। अपने शिष्यों के साथ वे नगर से बाहर एक बगिया में रहते थे। एक दिन सम्राट की इच्छा हुई कि इस विचारक से मिला जाए, वह उनकी बगिया में पहुंचा। उसने देखा कि वातावरण बेहद शांत है। सब अपने अपने काम में मगन हैं। खुश और आनंदित। लेकिन भौतिक सुविधाओं का अभाव है- न बैठने की जगह, न सर ढंकने के लिए छत, न पानी के लिए कोई कुआं। रसोई की जगह लगभग फाकाकशी के हालात। फिर भी संत आनंदित थे। सम्राट हैरान हुआ और प्रभावित भी। उसने विचारक से कहा, मैं आपको कुछ भेंट भेजना चाहता हूं। बताइए क्या मंगा दूं, जिस चीज की भी आपको जरूरत हो। यह सुनते ही विचारक के माथे पर बल पड़ गए। उसने मानो दुखी होकर कहा, आपने तो हमें चिंता में डाल दिया, क्योंकि हम भविष्य का तो कोई विचार ही नहीं करते। अभी पास जो है, उसी का आनंद लेते हैं। जो नहीं है, वह आ जाए तो भला हो जाए, उस तरह सोचते ही नहीं। अब आपने दुविधा में डाल दिया है। विचार करना पड़ेगा, सोचना होगा कि आपसे क्या मांगें। फिर बोले, हां एक रास्ता हैं। आज ही हमारी इस बगिया में एक नया शिष्य आया है। वह अभी तक यहां के वातावरण में घुल मिल नहीं पाया है। उससे पूछ लेते हैं, शायद उसे किसी चीज की जरूरत हो। शिष्य से पूछा गया। वह थोड़ी देर सोचता रहा, फिर बोला, कुछ भेंट ही करना चाहते हैं तो थोड़ा मक्खन भेंट कर दें। यहां रोटियां बिना मक्खन के बनती हैं। सम्राट स्वयं मक्खन लेकर आया। उसने देखा कि उसका वहां ऐसा स्वागत हुआ, मानो स्वर्ग उतर आया हो। मक्खन खाकर सभी नाचे और आनंदित हुए। सम्राट को तब यह अहसास हुआ कि मेरे पास इतना सब कुछ है, फिर भी मैं आनंद नहीं मनाता। शायद मैंने संतुष्ट होना ही नहीं सीखा।

१५०३) एक बार कई बीमारियां मिलजुल कर एक पहाड़ के पास पहुंची और बोलीं, दुनिया में सभी हमें ठुकराते हैं। गले लगाने की बात तो दूर, हमें कोई दो-चार दिन चैन से टिकने भी नहीं देता। सुना कि पहाड़ अटल होता है, सहनशील होता है। इसलिए काफी आशा लेकर आपकी शरण में आई हैं। आप हमें आसरा देदें।

पहाड़ ने एवमऽस्तु कहा और सभी को अपने अंदर आश्रय दे दिया।

उस पहाड़ के सामने ही किसानों की एक बस्ती थी। एक दिन उन्होंने सोचा, क्यों न इस पहाड़ को समतल करके कृषि योग्य भूमि तैयार कर ली जाए। दूसरे ही दिन से पहाड़ को तोडने का काम प्रारंभ हो गया। पहाड़ चिंतित था, मेरा तो अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। उसने अपने भीतर आश्रय लेनेवाली बीमारियों को जगाया और उनसे कहा, तुम सभी कुछ दिनों के लिए मेरा आश्रय छोड़कर बस्ती के किसानों के पास जाओ। किसान बीमार पड़ जाएंगे और मुझे काटने का काम बंद कर देंगे। अन्यथा मैं तो समाप्त हो ही जाऊंगा, तुम्हारा ठिकाना भी खत्म हो जाएगा।

बीमारियों ने रातों-रात अपना ताम-झाम समेटा और विश्राम कर रहे किसानों के शरीर से चिपट गईं। हफ्ता-दो-हफ्ता बीता, परंतु पर्वत के कटने का क्रम निरंतर जारी रहा।

अचानक एक रात अपना मायूस-सा चेहरा लेकर सभी बीमारियां पर्वत के पास लौट आई और बताने लगीं, हम बस्ती में गई थी। हम किसानों के शरीर से चिपट भी गई थीं। लेकिन किसानों ने अपनी नियमित दिनचर्या बना रखी है। पहाड़ काटने के समय वे बीमारी की हालत में भी आ जाते हैं और सब कुछ भूलकर कटाई में लग जाते हैं। दिन-भर के कठिन श्रम से उन्हें जो पसीना निकलता है, उसी के साथ हम बीमारियां भी उनके शरीर से बाहर आ जाती हैं।

१५०४) समझदार ऊंट - एक व्यापारी रेगिस्तान में ऊंट के साथ यात्रा कर रहा था। भरी दोपहरी में पसीने से तरबतर व्यापारी ने अपनी यात्रा बीच में ही रोक दी। ऊंट की पीठ से अपना तंबू उतारकर एक जगह गाढ़ दिया और उसके अंदर जाकर सुस्ताने लगा। ऊंट भी छांव चाहता था मगर व्यापारी ने डपटकर उसे धूप में ही खड़े रहने का हुक्म सुना दिया। ऊंट बेचारा मन मसोसकर रह गया। आधी रात होते-होते मौसम ठंडा हो गया। व्यापारी के दांत किटकिटाने लगे तो उसने रेत में ही तंबू लगाया। इस बार ऊंट पहले से ही तैयार था। उसने कहा, मालिक, मुझे भी ठंड लग रही है। व्यापारी ने घूरकर उसकी ओर देखा। ऊंट बार-बार तंबू में सिर घुसेड़कर पूछता, मालिक मैं भी अंदर आ जाऊं? आखिर तंग आकर व्यापारी ने कहा ठीक है, तुम अपना सिर तंबू के अंदर कर लो। थोड़ी देर बाद ऊंट जोर-जोर से कराहने लगा। व्यापारी ने पूछा, अब क्या हुआ? ऊंट बोला, ऐसे तो मैं बीमार हो जाऊंगा मालिक। आधा शरीर गरम और आधा ठंडा हो रहा है। देख लीजिए, अगर मैं बीमार हो गया तो आपको भी यात्रा बीच में ही छोड़नी पड़ेगी। व्यापारी बेचारा सोच में पड़ गया। फिर बोला, तो क्या करूं? ऊंट बोला, करें क्या मालिक? मैं अपना बाकी शरीर भी अंदर कर लेता हूं। व्यापारी बोला। नहीं, नहीं इस तंबू में दो की जगह नहीं है। ऊंट बोला ऐसा कीजिए, आप बाहर निकल जाइए। मैं अंदर लेट जाता हूं। यह कहकर ऊंट तंबू में घुस गया और व्यापारी को सारी रात रेगिस्तान की ठंड में गुजारनी पड़ी।

१५०५) जब हम सत्संग में कुछ पाने जाते हैं - पुरानी कथा है, एक ऋषि थे। आश्रम में अपने शिष्यों को वे आध्यात्मिक जीवन के बारे में बताया करते थे। जब शिष्यों की शिक्षा पूरी हो जाती थी और वे अपने घरों को वापस जाने लगते थे, तो वे ऋषि से पूछते कि गुरुदक्षिणा में क्या दें? तब ऋषि कहते कि तुमने जो पाया है, दुनिया में जाकर उस पर अमल करो, अपने पैरों पर खड़े होओ, सच्चाई की कमाई खाओ और फिर एक साल बाद तुम्हारा जो दिल चाहे वह दे जाना। शिष्य जब आश्रम छोड़कर जाते थे, तो उनमें से कोई एक पेशे में जाता था, कोई दूसरे में। अपने पेशे, अपने कामकाज से जिसे जो कमाई होती थी, उसमें से वे श्रद्धापूर्वक कुछ हिस्सा उन्हें दे दिया करते थे। एक बार गुरुकुल में एक सीधा-सादा शिष्य आया। वह साधारण गृहस्थ था। दिनभर मेहनत करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। लेकिन ऋषि जब उसे पढ़ाते थे, तब उसको जो भी सबक देते, अगले दिन वह उसे जरूर पूरा करके लाता था। जो कुछ उसे सिखाया जाता था, उस पर पूरे मनोयोग से अमल करता था। जब उसकी शिक्षा पूरी हुई तो उसने भी गुरु से पूछा, दक्षिणा में क्या दूं? ऋषि ने उससे भी यही कहा कि दुनिया में जाओ, जो सीखा है, उस पर अमल करो और फिर एक साल बाद जो चाहो, वह दे जाना। गृहस्थ चला गया। एक साल बाद वह भी गुरु के पास लौटा और श्रद्धा से बोला, दक्षिणा देने आया हूं। ऋषि उसे देखकर बड़े खुश हुए। हाल समाचार जानने के बाद पूछा, क्या लेकर आए हो बेटा? गृहस्थ ने दस लोगों को खड़ा कर दिया, जो उसके गांव के थे। फिर बोला, मैं गुरु दक्षिणा में ये दस नए शिष्य लाया हूं। ऋषि ने पूछा, दस लोग किसलिए? तो उसने कहा, जो शिक्षा आपने मुझे दी थी, मैंने उसे इन तक पहुंचाया। उतने से ही इनका जीवन संवर गया। अब आप गुरु दक्षिणा में इन सबको अपना शिष्य बना लें, ताकि इतने लोग और आपके बताए रास्ते पर सही तरीके से चल सकें। ऋषि बहुत खुश हुए और कहा, तुमने मुझे सबसे अच्छी गुरु दक्षिणा दी है। हम भी जब किसी सत्संग में जाते हैं, तो समझ नहीं पाते कि हम वहां से क्या पाने आए हैं। बहुत से लोग सत्संग में इसलिए जाते हैं ताकि उनके सांसारिक कष्ट दूर हो जाएं। किसी के शरीर में कष्ट है, किसी के घर में समस्याएं चल रही हैं, कहीं पति-पत्नी की नहीं बन रही है, तो कहीं मां-बाप या भाई-भाई में झगड़े हो रहे हैं। कोई अपना व्यापार बढ़ाने के लिए आता है, कोई संतान की

कामना रखता है। हम सब सोचते है कि सत्संग में जाएंगे, किसी महापुरुष के पास जाएंगे, तो हमारी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी। पर वहां हमें बार-बार यही समझाया जाता है कि अपने आपको जानो। हम यह सुनते हैं, बार-बार सुनते हैं। लेकिन मतलब समझने की कोशिश नहीं करते।

१५०६) स्वर्ग और नरक - गणेश भक्त मुद्गल के परोपकार के कार्यों से प्रसन्न होकर एक बार देवराज इंद्र ने गणेश से कहा, मेरी इच्छा है कि मुनि मुद्गल को स्वर्ग में लाकर उनका सम्मान किया जाए। इस पर नारद जी बोले, लेकिन क्या मुनि स्वर्ग में आने को तैयार होंगे? वहां उपस्थित सभी लोगों ने आश्चर्य से कहा, स्वर्ग में आने के लिए तो पृथ्वी लोक के सभी लोग, चाहे वे संत हों या किसान, लालायित रहते हैं। यह तो मुनि मुद्गल का सौभाग्य है कि इंद्र स्वयं उन्हें यहां आमंत्रित कर रहे हैं। नारद ने कहा, फिर भी एक बार उनसे पूछ तो लेना चाहिए। इंद्र ने अपने दो दूतों को मुनि मुद्गल के पास भेजा। दूतों ने जब मुनि को इंद्र का संदेश सुनाया तो वह बोले, देवदूतों, आप तो हमारे अतिथि हैं। हम आपका सम्मान करते हैं लेकिन मैं पृथ्वी लोक छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। मेरी जरूरत पृथ्वी पर है, स्वर्ग लोक में नहीं। दुखियों की सेवा करके मुझे जो आनंद यहां मिल रहा है, वैसा स्वर्ग लोक में नहीं मिलेगा। देवदूतों ने कहा, मुनिवर, पृथ्वी लोक का हर व्यक्ति स्वर्ग में जगह पाने के लिए उत्सुक रहता है। फिर आप क्यों नहीं जाना चाहते? मुनि ने कहा, वत्स, स्वर्ग और नरक तो पृथ्वी पर भी है। यह हमारी इच्छा पर है कि इसे स्वर्ग बनाएं या नरक। परोपकार के कार्य करके पृथ्वी को स्वर्ग बनाया जा सकता है और अधर्म का काम करके नरक। मैं पृथ्वी को स्वर्ग बनाने का काम कर रहा हूं। आप देवराज इंद्र से कहना कि मैं अपनी कुटिया छोड़कर उनके स्वर्ण सिंहासन पर बैठने का दुख सह नहीं पाऊंगा। यह वार्तालाप स्वर्ग लोक में बैठे इंद्र ध्यान से सुन रहे थे। वह नारद की ओर देखकर बोले, उनका पूरा जीवन परोपकार के कार्यों में व्यतीत हो रहा है, उनके पास स्वर्ग और नरक में अंतर करने का समय ही कहां है। अब हमें स्वयं महर्षि के पास जाकर उन्हें सम्मानित करना होगा।

१५०७) संसार के सुखों की अनित्यता - किसी नगर में एक गृहस्थ के घर गाय पली थी। एक दिन उस गाय का बछड़ा बहुत उदास हो रहा था। वह समय पर माता के स्तनों में मुख लगाकर दूध पीने में भी उस दिन उत्साह नहीं दिखला रहा था। गाय ने अपने बच्चे की यह दशा देखकर पूछा- बेटा। आज तुम इतने उदास क्यों हो? उत्साहपूर्वक दूध क्यों नहीं पीते हो? बछड़ा बोला- माँ तुम उस भेड़ की ओर तो देखो। वह काला-कलूटा है, मुझसे छोटा है और सुस्त भी है; किंतु अपने स्वामी का पुत्र उसे कितना प्यार करता है। उसे वह रोटी खिलाता है, हरी-हरी घास देता है, मटर की फलियां अपने हाथों से खिलाता है और उसे पुचकारता है। दूसरी ओर मुझ अभागे की कोई पूछा ही नहीं। मुझे पेट भर सूखी घास भी नहीं दी जाती। समय पर कोई मुझे पानी तक नहीं पिलाता। मुझमें ऐसा क्या दोष है? मैंने कौन सा अपराध किया है?

गाय बोली- बेटा। व्यर्थ दु:ख मत करो। यह संसार ऐसा है कि यहां बहुत सुख और बहुत सम्मान मिलना बड़े भय की बात है। संसार के सुख और सम्मान के पीछे रोग, शोक, मृत्यु तथा पतन छिपे हैं। तुम लोभ मत करो और दूसरे का सुख-सम्मान देखकर दुखी भी मत हो। वह तो दया का पात्र है। जैसे मरणासन्न रोगी जो कुछ चाहता है, उसे दिया जाता है; वैसे ही यह भेड़ भी मरणासन्न है। इसे मारने के लिये पुष्ट किया जा रहा है। हमारे सूखे तृण ही हमारे लिये शुभ हैं।

कुछ दिन बीत गये। एक संध्या को गौ जब वन से चरकर लौटी, तब उसने देखा कि उसका बछड़ा भय से काँप रहा है। वह न दौड़ता है, न बोलता है। दीवार से सटा दुबका खड़ा है। पास जाने पर भी उसने दूध पीने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

गाय ने उसे चाटते हुए पूछा- बेटा। आज तुझे क्या हो गया है?

बछड़ा बोला- माँ मैंने देखा है कि उस भेड़ को पहले तो खूब सजाया गया, फूल-माला पहनाई गई; किंतु पीछे से एक मनुष्य ने उसका मस्तक काट दिया। केवल एक बार चीत्कार कर सका बेचारा। उसने थोड़ी ही देर पैर पछाड़े। उसके शरीर के भी हत्यारों ने टुकड़े-टुकड़े कर दिये। अब भी वहाँ आँगन में भेड़े का रक्त पड़ा है। मैं तो यह सब देखकर बहुत डर गया हूं। गाय ने बछडे को पुचकारा और वह बोली- मैंने तो तुमने पहले ही कहा था कि संसार के सुख और सम्मान से सावधान रहना चाहिए। इनके पीछे ही रोग, पतन और विनाश दबे पैर आते हैं।

१५०८) तेनालीराम को मिली महामूर्ख की उपाधि - विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय होली का त्योहार बड़ी धूम-धाम से मनाते थे। इस अवसर पर हास्य मनोरंजन के कई कार्यक्रम होते थे। हर कार्यक्रम के सफल कलाकार को पुरस्कार भी दिया जाता था। सबसे बड़ा पुरस्कार महामूर्ख की उपाधि पानेवाले को दिया जाता था। कृष्वदेव राय के दरबार में तेनालीराम सबका मनोरंजन करते थे। वह बहुत तेज दिमाग के थे। उन्हें हर साल का सर्वश्रेष्ठ हास्य-कलाकार का पुरस्कार तो मिलता ही था, महामूर्ख का खिताब भी हर साल वही जीत ले जाते। दरबारी इस कारण से उनसे जलते थे। उन्होंने एक बार मिलकर तेनालीराम को हराने की युक्ति निकाली। इस बार होली के दिन उन्होंने तेनालीराम को खूब छककर भांग पिलवा दी। होली के दिन तेनालीराम भांग के नशे में देर तक सोते रहे। उनकी नींद खुली तो उन्होंने देखा दोपहर हो रही थी। वह भागते हुए दरबार पहुंचे। आधे कार्यक्रम खत्म हो चुके थे। कृष्णदेव राय उन्हें देखते ही डपटकर पूछ बैठे, अरे मूर्ख तेनालीराम जी, आज के दिन भी भांग पीकर सो गए? राजा ने तेनालीराम को मूर्ख कहा, यह सुनकर सारे दरबारी खुश हो गए। उन्होंने भी राजा की हां मे हां मिलायी और कहा, आपने तो बिल्कुल ठीक कहा, तेनालीराम मूर्ख ही नहीं महामूर्ख है।

जब तेनालीराम ने सबके मुंह से यह बात सुनी तो वे मुस्कराते हुए राजा से बोले, धन्यवाद महाराज, आपने अपने मुंह से मुझे महामूर्ख घोषित कर आज के दिन का सबसे बड़ा पुरस्कार दे दिया। तेनालीराम की यह बात सुनकर दरबारियों को अपनी भूल का पता चल गया, पर अब वे कर भी क्या सकते थे? क्योंकि वे खुद ही अपने मुंह से तेनालीराम को महामूर्ख ठहरा चुके थे। हर साल की तरह इस साल भी तेनालीराम महामूर्ख का पुरस्कार जीत ले गये।

१५०९) शादी का सपना टूट गया - रामू नामक एक गरीब और भोला व्यक्ति था। वह दिन में सपने देखा करता था। वह गांव में मजदूरी करता पर लोग उसके भोलेपन का फायदा उठाते थे। वे मजदूरी के बदले में उसे पैसे नहीं देते थे बस, एक समय भोजन करवा देते थे। इस तरह रामू के पास बिल्कुल धन नहीं था। अपने जीवन से परेशान होकर उसने शहर जाकर कमाने की सोची।

एक दिन वह अपने मित्र से कुछ धन उधार लेकर शहर चला आया। वह एक जगह खड़े होकर देख ही रहा था कि इतने में उसे एक आवाज सुनाई दी। यह मिट्टी के दीयों का टोकरा उठाकर मेरे घर ले चलोगे? रामू ने घूमकर देखा, तो एक धनी व्यक्ति उसकी ओर देख रहा था। रामू ने कहा क्यों नहीं साहब। अपना तो काम ही मजदूरी का है। वजन ज्यादा है इसलिए पांच रुपए लूंगा। धनी व्यक्ति ने कहा- ठीक है ले लेना। जरा ध्यान से टोकरा उठाना, कहीं सामान का नुकसान मत कर देना। पांच रुपए की मजदूरी पाकर रामू बहुत खुश था। वह चलते-चलते सोच रहा था यदि ऐसे दस ग्राहक रोज मिल जाएं, तो पचास रुपया रोज के मिल जाएंगे। खर्चा करने के बाद भी हजार रुपया महीना आराम से बचाया जा सकता है।

फिर मैं शादी कर लूंगा। दूल्हा बनूंगा, घोड़ी पर बैठूंगा। सभी घरवाले नाचेंगे, वे मुझे भी नचाएंगे, जैसे ही उसने नाचने के लिए हाथ आगे बढ़ाए सिर पर रखा दियों का टोकरा जमीन पर गिर पड़ा और उसमें रखे सभी दीपक टूट गए। यह देखकर धनी व्यक्ति चिल्ला पड़ा। मेरा नुकसान कर दिया। सारे दीपक तोड़ दिए। अब पांच रुपए तो दूर एक ढेला भी नहीं मिलेगा। उसकी बात सुनकर रामू सोच रहा था, इसे अपने पांच रुपयों की पड़ी है, मेरा तो शादी का सपना ही टूट गया। मेरे साथ ऐसा क्यों होता है?

१५१०) कर्ण की उदारता - एक बार भगवान श्रीकृष्ण पाण्डवों से बातचीत कर रहे थे। वह उस समय कर्ण की उदारता की बार-बार प्रशंसा करते थे, यह बात अर्जुन को अच्छी नहीं लगी। अर्जुन ने कहा- श्यामसुन्दर, हमारे बड़े भाई धर्मराज युधिष्ठिर से बढ़कर उदार तो कोई है नहीं, फिर आप उनके सामने कर्ण की इतनी प्रशंसा क्यों करते हैं?

भगवान ने कहा- यह बात मैं तुम्हें फिर कभी समझा दूंगा। कुछ दिनों बाद अर्जुन को साथ लेकर श्रीकृष्ण धर्मराज युधिष्ठिर के राजभवन के दरवाजे पर ब्राह्मण वेश बनाकर पहुंचे। उन्होंने धर्मराज से कहा- हमको एक मन चन्दन की सूखी लकड़ी चाहिये। आप कृपा करके मंगा दें। उस दिन वर्षा हो रही थी। महाराज युधिष्ठिर ने नगर में अपने सेवक भेजे, किन्तु कहीं भी चन्दन की सूखी लकड़ी सेर-आध-सेर से अधिक नहीं मिली। युधिष्ठिर ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की- आज सूखा चन्दन मिल नहीं रहा है। आप कोई और वस्तु चाहें तो दी जा सकती है।

भगवान ने कहा- हमें कुछ और नहीं चाहिये। वहां से अर्जुन को साथ लेकर उसी ब्राह्मण वेश में भगवान कर्ण के यहां पहुंचे। कर्ण ने बड़ी श्रद्धा से उनका स्वागत किया। भगवान ने कहा- हमें इसी समय एक मन सूखी लकड़ी चाहिए।

कर्ण ने दोनों ब्राह्मणों को आसन पर बैठाकर उनकी पूजा की। फिर धनुष चढ़ाकर उन्होंने बाण उठाया। बाण मार-मार कर कर्ण ने अपने सुन्दर महल की मूल्यवान किवाड़, चौखटें पलंग आदि तोड़ डाले और लकड़ियों का ढेर लगा दिया। सब लकड़ियां चन्दन की थीं। यह देखकर भगवान ने कर्ण से कहा- तुमने सूखी लकड़ियों के लिए इतनी मूल्यवान वस्तुएं क्यों नष्ट कीं? कर्ण हाथ जोड़कर बोले- इस समय वर्षा हो रही है। बाहर से लकड़ी मंगाने में देर होगी। आप लोगों को रुकना पड़ेगा। लकड़ी भीग भी जाएगी। ये सब वस्तुएं तो फिर बन जायेंगी, किन्तु मेरे यहां आये अतिथि को निराश होना पड़े या कष्ट हो तो वह दुख मेरे हृदय से कभी दूर नहीं होगा।

भगवान ने कर्ण को यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया और वहां से अर्जुन के साथ चले आये। लौट कर भगवान ने अर्जुन से कहा- अर्जुन, धर्मराज युधिष्ठिर के भवन के द्वार, चौखट भी चन्दन की हैं। चन्दन की दूसरी वस्तुएं भी राजभवन में हैं। लेकिन चन्दन मांगने पर भी उन वस्तुओं को देने की याद धर्मराज को नहीं आई और सूखी लकड़ी मांगने पर भी कर्ण ने अपने घर की मूल्यवान वस्तुएं तोड़कर लकड़ी दे दी। कर्ण स्वभाव से उदार हैं और धर्मराज युधिष्ठिर विचार करके धर्म पर स्थित रहते हैं। मैं इसी कारण कर्ण की प्रशंसा करता हूं।

१५११) दो बाल्टियों की कहानी - किसी गांव में एक किसान को बहुत दूर से पीने के लिए पानी भरकर लाना पड़ता था। उसके पास दो बाल्टियां थीं। जिन्हें वह एक डंडे के दोनों सिरो पर बांधकर उनमें तालाब से पानी भरकर लाता था। उन दोनों बाल्टियों में से एक के तले में एक छोटा सा छेद था जबकि दूसरी बाल्टी हालत में थी। तालाब से घर तक के रास्ते में छेदवाली बाल्टी से पानी रिसता रहता था और घर पहुंचते-पहुंचते उसमें आधा पानी ही बचता था। बहुत लंबे अरसे तक ऐसा रोज होता रहा और किसान सिर्फ डेढ़ बाल्टी पानी लेकर ही घर आता रहा। वह छेद वाली बाल्टी को

बदलना भी चाहता था लेकिन कुछ सोचकर रुक जाता था। ऐसा नहीं कि उसकी आर्थिक स्थिति बाल्टी बदलने जैसी नहीं थी लेकिन जब भी उसकी पत्नी इस बारे में कहती तो वह पत्नी के कहने को टाल जाता था।

किसान की इस आदत को देखकर अच्छी बाल्टी को अपने पर घमंड हो गया। वह छेदवाली बाल्टी से कहने लगी कि बेहतर तो मैं ही हूं। मुझमें से जरा सा भी पानी नहीं रिसता मेरी तुलना में तुम कमजोर हो। फिर बाद में अच्छी बाल्टी इस बात को बार-बार दोहराने लगी। छेदवाली बाल्टी को यह सुनकर बहुत दु:ख होता था और उसे अपनी कमी पर लज्जा आती थी। छेदवाली बाल्टी अपने जीवन से पूरी तरह निराश हो चुकी थी। वह निराश के कारण बहुत दुखी भी हो गई थी और कभी-कभी तो आत्महत्या का विचार भी उसके मन में आने लगा। उसने एक दिन रास्ते में किसान से कहा मैं अच्छी बाल्टी नहीं हूं। मेरे तले में छोटे से छेद के कारण पानी रिसता रहता है और तुम्हारे घर तक पहुंचते-पहुंचते मैं आधी खाली हो जाती हूं।

किसान ने छेदवाली बाल्टी से कहा, क्या तुम देखती हो कि पगडंडी के जिस ओर तुम चलती हो उस ओर हरियाली है और फूल खिलते हैं लेकिन दूसरी ओर नहीं। ऐसा इसलिए है कि मुझे हमेशा से ही इसका पता था और मैं तुम्हारे तरफ की पगडंडी में फूलों और पौधों के बीज छिड़कता रहता था जिन्हें तुमसे रिसने वाले पानी से सिंचाई लायक नमी मिल जाती थी। दो सालों से मैं इसी वजह से अपने देवता को फूल चढ़ा पा रहा हूं। यदि तुममें वह बात नहीं होती जिसे तुम अपना दोष समझती हो तो हमारे आसपास इतनी सुंदरता नहीं होती।

मुझमें और आपमें भी कई दोष हो सकते हैं। दोषों से कौन अछूता रह पाया है। कभी-कभी ऐसे दोषों और कमियों से भी हमोर जीवन को सुंदरता और पारितोषिक देनेवाले अवसर मिलते हैं। इसीलिए दूसरों में दोष ढूंढने के बजाय उनमें अच्छाई की तलाश करें।

१५१२) झूठ और सच का फर्क - सुंदर नगर में धर्मदत्त नाम का एक पंडित रहता था। एक बार वह अपने यजमान से प्राप्त हुआ एक बकरा लेकर अपने घर जा रहा था। रास्ता लंबा और सुनसान था। आगे जाने पर रास्ते में उसे तीन ठग मिले। पंडित के कंधे पर बकरे को देखकर तीनों ने उसे ठगी से प्राप्त करने की योजना बनायी।

एक ठग ने पंडित को रोककर कहा, पंडित जी यह आप अपने कंधे पर क्या उठाकर ले जा रहे हैं। यह क्या अनर्थ कर रहे हैं? पंडित होकर एक कुत्ते को अपने कंधों पर बैठा कर ले जा रहे हैं। पंडित धर्मदत्त ने उसे झिड़कते हुए कहा, अंधा हो गया है क्या? दिखाई नहीं देता, यह बकरा है।

पहले ठग ने फिर कहा, खैर मेरा काम आपको बताना था। अगर आपको कुत्ता ही अपने कंधों पर ले जाना है, तो फिर मुझे इससे क्या। आप जानें और आपका काम।

थोड़ी दूर चलने के बाद पंडित जी को दूसरा ठग मिला। उसने भी पंडित जी को टोकते हुए कहा, पंडित जी, क्या आपको पता नहीं कि उच्चकुल के लोगों को अपने कंधों पर कुत्ता नहीं लादना चाहिए। पंडित जी उसे भी झिड़क कर आगे बढ़ गये। आगे जाने पर इस बार तीसरा ठग मिला। उसने भी पंडित जी से उनके कंधे पर कुत्ता ले जाने का कारण पूछा। इस बार पंडित जी को विश्वास हो गया कि उसने कंधे पर बकरा नहीं, बल्कि कुत्ते को बैठा रखा है। थोड़ी दूर जाकर उसने बकरे को को कंधे पर से उतार दिया और आगे बढ़ गये। इधर तीनों ठग ने उस बकरे को मारकर खूब दावत उड़ाई।

किसी भी झूठ को बार-बार बोलने से वह सच की तरह प्रतीत होने लगता है।

१५१३) अब्दुल को नया कोट नहीं चाहिए - अब्दुल को मालूम था कि अब्बू को फुटबॉल में मिला यह मैडल बहुत ही प्यारा था। उसे याद था एक बार अब्बू बीमार पड़ गए थे और पैसे की परेशानी थी, तब अम्मी ने पूछा- यह मैडल बेच दूं? यह सुनकर अब्बू बहुत नाराज हो गए थे।

अब्दुल जब घर आया, तो बहुत उदास था। आज सुरेश नया कोट पहनकर आया था। पिछले साल ही उसने अब्बू से कहा था कि वह भी कोट लेगा। तब अब्बू ने कहा था कि वह जल्द ही उसे कोट बनवा देंगे। पिछले साल अम्मी ने उसे एक स्वेटर बुनकर दिया था। वह स्वेटर भी अब पुराना लगने लगा था, लेकिन अब्बू ने कोट बनवाकर नहीं दिया। अब्दुल के अब्बू एक सिलाई की दुकान पर कारीगरी करते थे। अब्दुल यह भी जानता था कि उसके अब्बू रोज बारह-तेरह घंटे काम करते हैं, तब जाकर घर तथा बच्चों की पढ़ाई का खर्च निकल पाता है। लेकिन वह सोच रहा था कि जब सब खर्च पूरे हो सकते हैं, तो उसके लिए एक कोट भी बन सकता है। क्या बात है अब्दुल? अम्मी ने पूछा।

मैं कल से स्कूल नहीं जाऊंगा। अब्दुल बोला- मुझे कोट चाहिए। मेरे सभी दोस्तों के पास कोट है और मैं यह सड़ा-सा स्वेटर पहनकर जाता हूं। मैं तब तक स्कूल नहीं जाऊंगा, जब तक मुझे कोट नहीं मिलेगा।

बेटा, तुम तो जानते हो, हमारे पास पैसे नहीं हैं। तुम्हारे अब्बू कितनी मेहनत करते हैं, तब जाकर घर का खर्च और तुम दोनों की पढ़ाई चल पा रही है। अम्मी धीरे-से बोलीं।

मुझे सब मालूम है। तुम बीमार हुई थी, तो पैसा आ गया था, लेकिन मेरे कोट के लिए गरीबी है। अब्दुल झुंझलाकर बोला। क्या बात है बेटे? घर में घुसते हुए अब्बू ने पूछा। उन्होंने अब्दुल की बात सुन ली थी। आज वह दुकान से जल्दी आ गए थे। अब्दुल कह रहा है कि जब तक आप उसे कोट बनवाकर नहीं देंगे, वह स्कूल नहीं जाएगा। अम्मी ने बताया। अब्दुल चुपचाप कमरे में चला गया। अरे, तो इसमें क्या है। मैं कल ही अपने बेटे के लिए बढ़िया कोट बनवा दूंगा। अब्बू बोले। अब्दुल ने अब्बू की बात सुनी, तो उसका मन नाच उठा। वह बहुत खुश हो गया। नाश्ता कर, वह खेलने चला गया। शाम को वह बैठा पढ़ रहा था, तभी उसका ध्यान पास के अम्मी की आवाज की ओर चला गया। आप अपना यह मैडल क्यों निकाल रहे हैं? अम्मी पूछ रही थीं। अरे, इसका करना क्या है, इसे बेच दूंगा, तो अब्दुल का कोट बन जाएगा। अब्बू कह रहे थे।

अब्दुल को मालूम था कि अब्बू को फुटबॉल में मिला यह मैडल बहुत ही प्यारा था। अब्दुल की आंखों में आंसू छलछला आए। दूसरे दिन जब वह नाश्ता करके स्कूल की तैयारी कर रहा था, तो अब्बू बोले- अब्दुल बेटा, स्कूल से तुम दुकान पर चले आना, आज हम लोग कोट का कपड़ा खरीदेंगे।

नहीं अब्बू, मेरा स्वेटर तो अभी ठीक है, मैं कोट नहीं लूंगा। अब्दुल बोला।

क्यों? कल तो तुम कह रहे थे कि जब तक कोट नहीं मिलेगा, मैं स्कूल नहीं जाऊंगा। अम्मी आश्चर्य से बोलीं। वह तो मैं ऐसे ही कह रहा था। अब मैं भी बड़ा हो गया हूं- अब्दुल ने कहा और बस्ता उठाकर स्कूल चल दिया। अम्मी और अब्बू उसे जाते हुए देखते रहे।

१५१४) गप्पी को भारी पड़ गया शर्त लगाना - एक छोटे से शहर में दो गप्पी रहते थे। दूर की हांकनेवाले। अपने को सबसे बड़ा बतानेवाले। एक दिन दोनों में ठन गई। देखे कौन बड़ा गप्पी है। शर्त लग गई। जो जीते दो सौ रुपए पाए और जो हारे वह दो सौ रुपए दे। बात शुरू हुई। गप्पें लगने लगीं। पहला बोला, मेरे बाप के पास इतना बड़ा, इतना बड़ा

मकान था कि कुछ मत पूछो बरसों घूमों, दिन-रात घूमों पर उसके ओर छोर का पता न चले। दूसरे ने कहा, सच है भाई, वह मकान सचमुच इतना बड़ा रहा होगा। उसे मालूम था कि पहला गप्पी बिल्कुल झूठ बोल रहला है, लेकिन इस होड़ में यह शर्त थी कि कोई किसी को झूठा नहीं कहेगा, नहीं तो शर्त हार जाएगा। इसीलिए उसे, सच है भाई, कहना पड़ा।

पहला गप्पी फिर बोला, उस बड़े मकान में घूमना बहादुरों का काम था, कायरों का नहीं। मेरे बाप ने उस मकान को ऐसे बनवाया था- ऐसा, जैसे चीन की दीवार हो। बाप भी मेरे बस दूसरे भीमसेन ही थे। इतने तगड़े, इतने तगड़े कि बस हां। दूसरा गप्पी बोला, भाई, मेरे बाप के पास इतना लंबा बांस था कि कुछ पूछो मत- इतना लंबा कि तुम्हारे बाप के मकान के इस सिरे से डालो तो उस सिरे से निकल जाए और फिर भी बचा रहे। उस बांस से यदि आसमान को छू दो तो बस छेद हो जाए आसमान में और झर-झर वर्षा होने लगे, पानी की धार लग जाए। पहले गप्पी ने कहा, ठीक है भाई ठीक है, और अब मेरी सुनो- मेरे बाप उस मकान से निकले तो उन्हें मिल गई एक घोड़ी। घोड़ी क्या थी, हिरण बछेड़ा थी। हवा से बातें करती थी। उड़ी सो उड़ी, कहो दुनिया का चक्कर मार आए। हां, तो बाप थे मेरे घोड़ी पर सवार और तभी किसी कौए ने बीट कर दी घोड़ी पर और उग आया उस पर एक पीपल का पेड़। मेरे बाप तो आखिर मेरे बाप ही थे न। अकल में भला कोई उनकी बराबरी कर सकता था। उन्होंने झट पीपल के पेड़ पर मिट्टी डाली और खेत तैयार कर उसमें ज्वार बो दी। अब बिना पानी के ज्वार बढ़े तो कैसे बढ़े। पानी बरस नहीं रहा था। लोग परेशान थे। फसलें बर्बाद हो रही थी। बस समझो कि अकाल पड़ गया था, अकाल पड़ गया था, अकाल। तभी मेरे बाप को वह लंबा बांस याद आया जिससे तुम्हारे बाप आसमान में छेदकर पानी बरसाते थे। बस घोड़ी पर सवार मेरे बाप तुम्हारे बाप के घर पहुंच गए और उन्हें पानी बरसाने के लिए मना लिया। फिर क्या कहना था। जहां-जहां तुम्हारे बाप आसमान में छेदकर पानी बरसाते, वहां-वहां मेरे बाप घोड़ी को ले जाते और जहां घोड़ी जाती, वहां वहां पीपल और जहां-जहां पीपल वहां-वहां ज्वार का खेत। भाई मेरे, कुछ पूछो न। ऐसी ज्वार हुई ऐसी ज्वार हुई जैसे मोती-सफेद और मोटे दाने। ज्वार क्या थी भाई, अमृत था। अब जो तुम्हारे बाप ने देखी वैसी अजूबा ज्वार तो मचल गए और पांच सौ रुपए की ज्वार लेकर ही रहे। मेरे बाप ने पैसे मांगे तो बोले, अभी मेरे पास नहीं हैं, उधार दे दो। मेरे बाप बड़े दरियादिल तो थे ही, उन्होंने उधार दे दी ज्वार। और भाई क्या कहें, तुम्हारे बाप भी बड़े ईमानदार थे। उन्होंने कहा, अगर मैं यह कर्ज न उतार सकूं तो मेरे बेटे से पूरे पैसे ले लेना। मेरा बेटा बहुत अच्छा है और अच्छे बेटे अपने बाप का कर्ज जरूर अदा करते हैं। दूसरे गप्पी ने यह सुना तो उसकी तो बोलती बंद। न तो वह, सच है भाई, कह सकता था न, झूठ है, ही कह सकता था। सच कहता तो पांच सौ रुपए का कर्ज चुकाना पड़ेगा और झूठ कहता तो शर्त हारने के दो सौ रुपए देने पड़ेंगे। मतलब यह कि इधर कुआं तो उधर खाई। उसने सोचा कुएं से तो खाई ही भलीं वह झट बोला, झूठ-झूठ-झूठ मेरे बाप ने कभी तुम्हारे बाप से पांच सौ रुपए की ज्वार नहीं ली। उसका इतना कहना था कि पहला गप्पी बोला, मैं जीत गया, लाओ दो सौ रुपए दो। दूसरे गप्पी ने दो सौ रुपए देकर अपनी जान छुड़ाई।

१५१५) बदलाव के साथ आगे बढ़ने की कोशिश ही जीवन है - एक जैन गुरु ने हरदम परेशान रहनेवाले अपने शिष्य को शिक्षा देने का एक उपाय निकाला। उन्होने उससे थोड़ा नमक लाने को कहा। वह नमक ले आया तो उसे एक गिलास पानी में मिलाकर पीने को कहा। घूंट भरते ही शिष्य घबरा गया। पूछने पर बोला- पानी **का स्वाद कड़वा है। इसके बाद गुरु ने उतना ही नमक झील के** पानी में डलवाया और उसे पीने को कहा। शिष्य ने कहा- इसका स्वाद अच्छा है। गुरु ने समझाया- जीवन में दुख या परेशानी नमक की तरह होती है। हम उसे जितना सीमित सोच में बसा लेंगे, उतना ही वह

हमें घेरे रहेगा। हर पल उसी में डूबे रहने के कारण हमें उसकी कड़वाहट झेलनी पड़ेगी। पर उसके साथ सोच के दायरे को फैला देने से मात्रा कम न होने पर भी दर्द में अंतर जरूर पड़ेगा। हमें यही सोच अपनानी चाहिए।

१५१६) स्वामी रामतीर्थ एक छोटीसी कहानी कहा करते थे। वे कहते थे, कल्पगंगा के किनारे, स्वर्ग की गंगा के किनारे, ज्ञान और मोह एक सुबह आ कर रुके। गंगा ने कहा, भले आए स्वागत। लो डुबकी मुझमें, तुम्हें पवित्र कर दूंगी। उतरो मुझमें। नहा लो। तुम नए हो जाओगे। तुम्हें फिर कुंआरा कर दूंगी। सारी धूल पोंछ डालूंगी।

ज्ञान तो अकड़ा रहा, क्योंकि ज्ञान ने कहा, तू और मुझे शुद्ध करेगी? उसे तो इस बात पर भरोसा न आया और झुकने की क्षमता वह खो चुका था, समर्पण की कला खो चुका था, शिष्य होना भूल चुका था। किसी दूसरे कुछ हो सकता है, यह बात ही भूल चुका था। ज्ञान कही अकड़ आ गई थी कि मैं सब स्वयं कर लूंगा, किस गंगा की जरूरत है? किस तीर्थ की जरूरत? किस गुरु की जरूरत? किसी की कोई जरूरत नहीं है।

वह तो मुस्कुराया। वह तो गंगा के इस बेहूदे आमंत्रण पर मुस्कुराया। लेकिन मोह तो मोह है मोहाविष्ट हो गया। मोह को तो बात लुभा गई। लोभ के कारण वह तो उतर गया। गंगा ने उसे नहला दिया। वह शुद्ध हो गया।

वह पवित्र हो गया। वह निर्दोष हो गया। वह बाहर तो देवताओं ने उसकी स्तुति की, आरती की; क्योंकि मोह अब प्रेम हो चुका था। नहा लिया था गंगा में, झुक गया था। मोह अब प्रेम हो चुका था।

१५१७) नजरिया- जीवन के कार्यक्षेत्र में हमारी आदतें व नजरिया ही है जो हमें सफल व असफल बनाते हैं। एक बार जंगल से एक स्वामीजी गुजर रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि कोई मंदिर बन रहा है। उसे देखकर वे मंदिर की तरफ चल दिए। रास्ते में उन्हें एक व्यक्ति मिला जो काम में लगा था। उन्होंने उससे पूछा कि क्या कर रहे हो। उसका जवाब था कि पत्थर तोड़ रहा हूं। कुछ देर बाद कुछ दूर चलकर दूसरे से पूछा उसका जवाब था कि रोजी-रोटी बना रहा हूं। जब तीसरे के पास गए तो उसने जवाब दिया कि स्वामीजी मंदिर बना रहा हूं। अब तीनों लोग काम एक ही कर रहे थे, लेकिन काम को लेकर उनका नजरिया अलग-अलग था। सफल होने के लिए अपना नजरिया बदलिए। सफलता के लिए साहस के साथ-साथ चुनौतियों को देखने का नजरिया भी बदलने की जरूरत है।

१५१८) चार किसान साथ-साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में कोई गांव आया। एक किसान बोला- भूख लग गई है। कहीं खाने-पीने का सरंजाम है क्या? दूसरे किसानों ने कहा- यहां किसी की नानी का घर तो है नहीं। भोजन कौन कराएगा? किसान बोला- तुम लोग यहीं ठहरो, मैं अभी भोजन करके आता हूं। वह गांव में गया। किसी सेठ की बड़ी-सी हवेली देख उसमें प्रविष्ट हो गया। सेठ के घर एक रसोई बनानेवाली थी। किसान सीधा उसके पास पहुंचा और बाई बाई कहता रोने लगा। रोते-रोते कुछ समय दोनों ने बात की। फिर किसान जाने लगा तो महिला बोली- भाई। रोटी खाकर जाओ। किसान ने कहा- तुमसे मिलने की इच्छा हुई तो आ गया। अब अधिक समय मत रोको। वह बोली- बहन के घर से भाई भूखा नहीं जा सकता। किसान ने कहा- तुम इतना कहती हो तो थोड़ा-सा खिला दो। उसने उसको गरम-गरम खिचड़ी घी और सब्जी-रोटी परोसी। किसान ने भर पेट भोजन कर लिया। भोजन करने के बाद बोला- अच्छा बाई। अब मैं जा रहा हूं।

किसान लौटने लगा तो सेठ ने रसोईदारिन से पूछा- वह कौन था? वह बोली- मैं उसे नहीं जानती। सेठ ने कहा- बिना-जान पहचान भोजन करा दिया? रसोईदारिन दरवाजे तक आकर बोली- ओ जातोड़ा बटाऊ। तुम कौन हो? किसान ने

उत्तर दिया- मैं चौधरी हूं। वह बोली- तुम मेरे क्या लगते हो? किसान ने कहा- बाई, गाय के भैंस क्या लगती है? वह विस्फारित नेत्रों से देखती बोली- मुझे देखकर रोए क्यों? किसान हंसता हुआ बोला- मैं भूखा था, इसलिए रोना आ गया। तुम्हें भूख लगती है तो तुम नहीं रोतीं? रसोईदारिन देखती रह गई। किसान गर्व से चला गया।

१५१९) क्रोध के उपहार को हमें दाता के पास ही छोड़ देना चाहिए - एक बार एक ब्राह्मण ने महात्मा बुद्ध को उसके घर आकर, भोजन करने का निमंत्रण दिया। जब बुद्ध वहां पहुंचे तो उन्होंने पाया कि ब्राह्मण ने उन्हें किसी अन्य मकसद से वहां बुलाया था। ब्राह्मण उनकी निंदा करने लगा और उन्हें अपशब्द कहने लगा। बुद्ध ब्राह्मण के वचनों के वार चुपचाप सहते रहे। अंत में बुद्ध ने कहा, हे ब्राह्मण जी, क्या आपके घर में मेहमान आते रहते हैं? हां, आते हैं। ब्राह्मण ने उत्तर दिया। बुद्ध ने पूछा, जब मेहमान आते हैं तो आप उनके लिए क्या भोजन बनाते हैं? ब्राह्मण ने उत्तर दिया, हम एक बड़े भोज की तैयारी करते हैं। बुद्ध ने पूछा, अगर वे नहीं आते तो आप क्या करते हैं? ब्राह्मण बोला, हम भोज स्वयं खा लेते हैं।

बुद्ध बोले- अच्छा, तुमने मुझे भोजन पर बुलाया पर तुमने मेरा स्वागत कठोर वचनों और आलोचना से किया। लगता है कि जो भोज तुम मुझे परोसने वाले थे, वह इसी का है। मैं तुम्हारे द्वारा परोसे भोजन को नहीं खाना चाहता। कृपया इसे वापस ले लो और स्वयं खाओ। बुद्ध ने महसूस किया कि जो भोज उन्हें दिया गया था, वह खाद्य पदार्थों का नहीं, बल्कि गालियों का था। उन्होंने वापस मुड़कर ब्राह्मण का तिरस्कार करने और उसे अपशब्द कहने के बजाय उसके क्रोध को स्वीकार नहीं किया। बल्कि वे उस स्थान से चले गए। इस प्रकार, क्रोध उसी के साथ रहा जो उसे प्रकट कर रहा था।

महात्मा बुद्ध के शिष्य यह देख रहे थे। बुद्ध ने उन्हें सलाह दी, जीवन में कभी अपने साथ हुए सलूक के रूप में बदला न लो। घृणा कभी घृणा से खत्म नहीं होती।

१५२०) हरदम याद रखें कि हमारा कहीं एक नित्य घर भी है - एक संपन्न व्यवसायी कहीं जा रहा था। चौराहे पर उसकी गाड़ी रुकी तो एक लड़का पास आया और बोला- रात से भूखा हूं। कुछ मदद कर दें। व्यवसायी ने कहा- भीख क्यों मांगते हो? कुछ काम किया करो। लड़का बोला- मुझै कौन काम देगा? उसने कहा- मैं तुम्हें काम दूं तो मेरे साथ चलोगे? जवाब हां में मिला तो वह लड़के को अपने साथ घर ले आया। लड़का घर के सब काम करने लगा और उसने अपने मालिक का दिल जीत लिया।

मालिक ने सोचा कि क्यों न इसे कुछ पढ़ा-लिखा दिया जाए। उसने एक स्कूल में लड़के को भर्ती करा दिया। वहां भी उसकी लगन देखकर अध्यापक प्रसन्न थे। पढ़ते-पढ़ते लड़का बड़ा हो गया। आगे की पढ़ाई के लिए विश्वविद्यालय जाने लगा। धीरे-धीरे मालिक ने उसे अपने काम में हाथ बंटाने के लिए अपने साथ ले लिया। फिर हुआ यह कि उसकी बेटी उसी लड़के से प्रेम कर बैठी। मालिक ने उनकी शादी करा दी। कुछ समय बाद व्यवसायी ने लड़के को बिजनेस कोर्स के लिए विदेश भेज दिया। समय-समय पर वह उसे पैसे भी भेजता रहता। एक बार छह महीने तक लड़के का खत नहीं आया तो ससुर का माथा ठनका। आखिरकार वह लड़के से मिलने विदेश जा पहुंचा। लड़के ने देखा कि ससुर आया है तो उसने फौरन पैर छूकर उसे अपने पासवाली कुर्सी पर बिठाया। इससे पहले कि ससुर उससे कुछ पूछें, लड़के ने कहा- पापा। ये मेरी गर्लफ्रेंड है। हम दोनों एक फ्लैट में रहते हैं। अपनी फ्रेंड को भी उसने बताया कि यही हैं जो हमारे यहां रहने का खर्च इत्यादि भेजते हैं। बड़े अदब से उसकी दोस्त ने हाथ मिलाकर उनका सम्मान किया।

ससुर की हालत ऐसी कि काटो तो खून नहीं। उसने सोचा- अपनी पत्नी को तो इसने छह महीने से चिट्ठी नहीं लिखी और यहां इसके साथ गुलछर्रे उड़ा रहा है। फिर भी उसने बड़े प्यार से कहा- जितनी पढ़ाई तुम्हारी हो चुकी है, वो बहुत है। अब तुम अपना सामान पैक करो और भारत वापस चलो। लड़के ने कहा- मैं चला गया तो मेरी मित्र का क्या होगा? यह मेरे आसने ही तो जी रही है। ससुर ने गुस्से में कहा- और वो जो उधर घर पर है? लड़के ने कहा- जो भी हो, मैं यहां से नहीं जा सकता। अब आप ही बताइए कि वह लड़का गलत है कि नहीं? यही स्थिति हमारी है। हमने अनित्य संसार में अपने आपको इतना उलझा लिया है कि हमें लगता ही नहीं कि हमारा अपना कहीं कोई नित्य घर भी है। हमारे वास्तविक माता-पिता हैं, जो हर तरह से हमारा भला चाहते हैं और हमारा भला करते हैं। हम उनका ही खाते हैं और उनको ही भूल बैठे हैं।

१५२१) मृत्यु परमात्मा का उतना ही मंगलकारी वरदान है जितना जन्म - एक बार एक व्यक्ति महान संत एकनाथ जी के पास गया और उनसे पूछा, महाराज, क्या मेरा जीवन आपके जीवन की तरह निष्पाप और पवित्र हो सकता है? यदि हो सकता है तो कैसे और नहीं हो सकता तो क्यों? एकनाथ जी ने कहा, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर फिर कभी देंगे। परंतु यह क्या? तुम्हारे ललाट की रेखाओं के अनुसार तो एक सप्ताह बाद तुम्हारी मृत्यु का योग है।

यह सुनकर वह व्यक्ति सन्न रह गया। मृत्यु का भय उस पर इस कदर चढ़ा कि वह खाना-पीना व अपना कारोबार आदि सब छोड़-छाड़कर एक कमरे में चुपचाप बैठ गया और खुद पर मंडरा रही मृत्यु का एक-एक पल गिनने लगा। उसका सारा जीवन स्वार्थ-सिद्धि के लिए छल-कपट कर पैसा जुटाने में बीत गया। उसने निश्चय किया कि कम से कम इस बचे-खुचे समय में ऐसा कुछ न किया जाए जिससे लोगों को कष्ट हो और उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचे। वह अपने पापों की क्षमा मांगते हुए नित्य भगवान का भजन करने लगा और वहां से गुजरने वालों को धन व वस्त्रों का दान देने लगा। सातवें दिन एकनाथ जी ने उससे पूछा, इन दिनों तुमने कैसे समय बिताया और क्या-क्या पाप किए? उसने कहा, आप पाप की बात करते हैं, मुझे तो हर पल मृत्यु ही दिखाई देती रही। बस हर पल भगवान याद आते रहे। कोशिश की कि किसी को कोई कष्ट न हो। एकनाथ जी मुस्कराते हुए बोले, बस यही तुम्हारे उस दिन के प्रश्न का उत्तर है। जो लोग मृत्यु को याद रखते हैं और समझ लेते हैं कि यह कभी भी, कहीं भी आ सकती है, वे पापकर्मों से बचकर परमात्मा के निकट बने रहते हैं।

१५२२) एक बार कुछ लोगों के बीच यह चर्चा छिड़ी कि इस संसार में सचमुच में संतुष्ट कौन है? सबसे सुखी कौन है? शांति किसके पास है? लोगों ने कहा, राजा ही होगा। उसके पास नौकर-चाकर हैं, सत्ता है, धन-दौलत है। तो उन्होंने राजा के पास जाकर पूछा कि क्या आप संतुष्ट हैं?

राजा ने कहा, अरे नहीं, मैं संतुष्ट कहां हूं? हमेशा चिंता लगी रहती है कि पड़ोसी राजा कहीं मेरे ऊपर हमला न कर दे। डर लगा रहता है कि कोई दरबार में षडयंत्र न करे। लोगों ने पूछा कि तब आप क्या सोचते हैं, फिर कौन संतुष्ट होगा? राजा ने कहा, बादशाह हो सकता है।

वे लोग बादशाह के पास पहुंचे और पूछा कि आप क्या संतुष्ट है? बादशाह ने भी वही बात कही, मुझको तो हर घड़ी राज्य की ही चिंता लगी रहती है। सिर पर ताज धरनेवाले को शांति कहां? लोगों ने सोचा कि राज-पाट वालों को तो संतोष नहीं है, हो सकता है कि वह संतुष्ट हो जिसके पास कुछ खोने के लिए नहीं है। उन्होंने एक भिखारी को पकड़ा।

भिखारी बोला, कैसा मजाक करते हो भाई, मुझे तो हमेशा यह चिंता लगी रहती है कि अगले समय का खाना कहां से आएगा? आखिर में लोग भगवान के पास पहुंचे। भगवान ने कहा, जो मेरा भजन करता है, एक वही इस संसार के अंदर संतुष्ट है, बाकी कोई नहीं।

जिज्ञासुओं ने पूछा, ऐसा क्यों? तो बोले, क्योंकि भगवान तुम्हारे भीतर बैठा है। जब तुम संतुष्ट होते हो, बाहरी चीजों से विरक्त होते हो, तभी उसके पास तक पहुंचते हो।

यह एक कहानी है, समझाने के लिए। क्योंकि सबको मालूम है कि अगर कोई परमानंद है तो केवल भगवान ही है। इस भौतिक जीवन में परमानंद जैसी कोई चीज तो हो नहीं सकती। यहां तो कितने सारे भगवान हैं।

एक राम दशरथ का बेटा है, एक राम घट-घट में बैठा।

एक राम का जगत पसारा, एक राम सब जग से न्यारा।।

१५२३) एक कुत्ता तेजी से दौड़ रहा था। रास्ते में खड़े एक किसान ने उससे पूछा- तुम कहां जा रहे हो। कुत्ते ने जवाब दिया- मैं अपने पाप धोने गंगा स्नान को जा रहा हूं। तुम्हें गंगाजी तक पहुंचने में कितना समय लगेगा? किसान ने पूछा। कुत्ता बोला- यह दूरी तो कुछ ही दिनों में तय की जा सकती है, लेकिन मुझे कई गुना ज्यादा समय लगेगा। किसान ने जिज्ञासा रखी- ऐसा क्यों? कुत्ते ने कहा- इसकी वजह मेरे मनुहारिए मामा लोग हैं जो गांव-गांव में मिलते हैं। बात किसान की समझ में नहीं आई। उसने पूछा- क्या आपके इतने सारे मामा हैं कि गांव-गांव में मिलते हैं। कुत्ते ने कहा- मामाओं से मतलब मेरी बिरादरी के कुत्ते हैं। वे जहां भी मिलते हैं, भरसक मुझे रोकने का प्रयास करते हैं। बहुत समय अपनी बिरादरी वालों को समझाने-बुझाने और लड़ने-झगड़ने में ही बीत जाता है। बड़ी मुश्किल से मैं फिर यात्रा के लिए आगे निकलता हूं। किसान समझ गया कि घर की लड़ाई की वजह से सफलता देरी से मिलती है।

१५२४) एक कलाकार के सामने बिक्री के लिए लगभग एक जैसी दो लकड़ी की मूर्तियां रखी हुई थीं। एक मूर्ति की कीमत थी दो हजार रुपए और दूसरी की कीमत थी पांच हजार रुपए। मूर्तियों की कीमतों में भारी अंतर के विषय में पूछने पर कलाकार ने बताया कि जो ज्यादा कीमती मूर्ति है उसकी लकड़ी बहुत अच्छी है और उसके रेशों की बनावट ऐसी है कि उस पर की गई खुदाई एकदम साफ और सुंदर दिखाई पड़ती है। लेकिन जो कम कीमती मूर्ति है, उस पर किया गया काम भी उतना सुंदर और साफ नहीं है। ये पूछने पर कि बढ़िया मूर्ति को बनाने में समय भी ज्यादा लगा होगा, कलाकार ने उत्तर दिया, समय तो बराबर ही लगता है। लकड़ी अच्छी निकल आए तो काम जल्दी और अच्छा हो जाता है और दाम भी अच्छे मिल जाते हैं।

काम जल्दी और अच्छा हो और दाम भी अच्छे मिल जाएं, इसलिए आप हमेशा अच्छी लकड़ी का चुनाव क्यों नहीं करते? कलाकार ने बताया कि कोशिश तो होती है, लेकिन यह हमेशा संभव नहीं हो पाता। एक ही प्रजाति में हर पेड़ की लकड़ी की गुणवत्ता में भी काफी अंतर मिल जाता है। कई बार लकड़ी पर कुछ काम करने के बाद लकड़ी टूट या फट जाती है। इससे सारी मेहनत बेकार चली जाती है। जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी ऐसा ही होता है। कहा जाता है कि जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा, लेकिन जीवन में यह हमेशा संभव नहीं होता। आज अधिकांश माता-पिता बच्चों की शिक्षा और पढ़ाई-लिखाई को लेकर बहुत चिंतित रहते हैं। वे इसके लिए कोई कसर नहीं रख छोड़ते और जब बच्चा उनकी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता तो मायूस हो जाते हैं।

१५२५) दूर के ढोल सुहावने होते हैं - मोहन कक्षा आठ का छात्र था। वह अधिक समय अपनी पुस्तकों के साथ ही गुजारता था। जब उसके साथी खेल के मैदान में खेल रहे होते थे, उस समय भी वह किताबों में सिर खपाता रहता था। इतना पढ़ने के बाद भी वह कई बार अपना स्कूल का काम पूरा नहीं कर पाता था। आए दिन उसे अध्यापकों की डांट खानी पड़ती और कक्षा में सबके सामने लज्जित होना पड़ता।

एक दिन मास्टर जी से डांट खाकर उसे अपनी स्थिति पर बड़ी ग्लानि हो रही थी। उसने सोचा, काश। मैं मास्टरजी होता। इतने में एक आश्चर्य हुआ। खिड़की के रास्ते एक बादल का टुकड़ा उसके घर में घुस आया। मोहन सोचने लगा कि आजकल तो बरसात का मौसम भी नहीं है। फिर यह बादल कहां से आ गया। तभी उस बादल ने परी का रूप धारण कर लिया। श्वेत वस्त्र धारण किए एक परी मोहन के सामने खड़ी थी। उसने आगे बढ़कर मोहन के सिर पर हाथ रखा और बोली, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो, दूसरे ही क्षण मोहन ने अपने को एक विद्यालय में अध्यापक के रूप में पाया।

बच्चे झुक-झुककर उसे प्रणाम कर रहे थे। उसकी खुशी का ठिकाना न था, वह बच्चों को कक्षा में श्रुतिलेख लिखवा रहा था, तभी स्कूल का चपरासी कक्षा में आया और मोहन से बोला- मास्टरजी। आपको प्रधानाध्यापक जी बुला रहे है।

वह प्रधानाध्यापक की आज्ञा का उल्लंघन तो कर नहीं सकता था इसलिए न चाहते हुए भी उसे श्रुतिलेख अधूरा ही छोड़कर प्रधानाध्यापक जी के कक्ष में जाना पड़ा। वहां से लौटकर लाख चाहने पर भी वह कक्षा में कुछ कार्य न करा सका। बच्चों को आपस में बातें करते देख अपने मन का सारा आक्रोश उसने उन पर ही उतारा। एक दो बच्चे की तो पिटाई भी कर दी। वह सोचने लगा- प्रधानाध्यापक पूरे, स्कूल में अकेला होकर भी सभी अध्यापकों और छात्रों को अपनी अंगुली पर नचाता है। काश, वह भी प्रधानाध्यापक होता।

परी पुन: आई और बोली, एवमस्तु। तभी अध्यापक बने मोहन ने देखा कि वह किसी विद्यालय के बड़े से कक्ष में प्रधानाध्यापक जी की कुर्सी पर बैठा था, उसकी मेज के सामने विद्यालय के कुछ अध्यापक खड़े थे। उसने अध्यापकों को अपनी-अपनी कक्षा में भेजा और विद्यालय की प्रगति के लिए योजना बनाने लगा। वह चाहता था कि उसके विद्यार्थी इतनी मेहनत करें कि उनका नाम योग्यता सूची में आए। अभी वह योजनाएं बना ही रहा था कि फोन की घंटी घनघना उठी। फोन विद्यालय-निरीक्षक का था। दो-चार औपचारिक बातें करने के बाद वे बोले-हैड मास्साब। इस बार आप विद्यालय का वार्षिकोत्सव दिसम्बर के महीने में ही मना लें।

पर यह कैसे सम्भव है? उन दिनों तो बच्चों की अर्द्धवार्षिक परीक्षा होती है। वार्षिकोत्सव की तैयारी कैसे होगी? प्रधानाध्यापक बने मोहन ने निरीक्षक महोदय की बात का विरोध करना चाहा तो वे आग-बबूला हो गए और बोले- यह सब मैं नहीं जानता, यह तो तुम्हें देखना है कि किसी तरह वार्षिकोत्सव भी हो जाए और अर्द्धवार्षिक परीक्षा भी न रुके।

निरीक्षक महोदय ने फोन रख दिया और मोहन सोचने लगा कि प्रधानाध्यापक के भी हाथ बंधे हैं। वह अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता। मैं विद्यालय निरीक्षक बनूं तो कुछ बात बने। मोहन के इतना सोचते ही परी फिर प्रकट हुई। इस बार भी उसने एवमस्तु कहा और मोहन विद्यालय-निरीक्षक बन गया। उसने स्वयं को एक लम्बी-चौड़ी मेज के पास रखी कुर्सी पर बैठा पाया। वह सोचने लगा कि अब वह स्कूलों की दशा सुधार देगा। वह ऐसी स्थितियां बना देगा कि प्रधानाचार्यों अथवा अध्यापकों को दबाव में काम न करना पड़े।

वह इस बारे में सोच-विचार कर ही रहा था कि मंत्रीजी के दफ्तर से बुलावा आ पहुंचा। वह तुरन्त उठा और वहां पहुंच

गया। तभी मंत्री महोदय बोले- तुम्हें मालूम है कि चुनाव समीप है- चुनाव जीतने के लिए जरूरी है कि विद्यालयों के बच्चे भी कुछ विशेष मुद्दों पर रैलियां निकाले। आप हर स्कूल के प्रधानाचार्य को सूचित कर दें कि वे बच्चों द्वारा सम्बधित विषय के पोस्टर बनवाएं। आखिर आज के बच्चे हो तो कल के नेता होंगे।

विद्यालय निरीक्षक बने मोहन ने बोलना चाहा कि बच्चों की पढ़ाई का क्या होगा। कल के अच्छे नेता तो वे तभी बन पाएंगे जब आज उन्हें अच्छी शिक्षा मिलेगी, पर उसकी बात सुनने के लिए वहां कोई था ही नहीं। मंत्रीजी तो अपनी बात कहकर चलते बने। मोहन समझ गया था कि यहां कोई अपनी इच्छा के अनुसार काम नहीं कर सकता- चाहे वह निरीक्षक हो, प्रधानाध्यापक हो या फिर अध्यापक हो, उसे विश्वास था कि मंत्री जी के भी हाथ जरूर बंधे होंगे। अब उसे लगा कि उसका छात्र बने रहना ही ठीक था। मन में यह विचार आते ही उसे अब वह अच्छी तरह पता चल गया था कि दूर के ढोल सुहावने लगते हैं। वास्तव में मनुष्य अपनी लगन और मेहनत से हर स्थिति में सुखी रह सकता है, कमी तो हर स्थान पर, हर दशा में रहती ही है।

१५२६) बीरबल बहुत नेक दिल इंसान थे। वह सदैव दान करते रहते थे और इतना ही नहीं, बादशाह से मिलने वाले इनाम को भी ज्यादातर गरीबों और दीन-दुखियों में बांट देते थे, परंतु इसके बावजूद भी उनके पास धन की कोई कमी न थी। दान देने के साथ-साथ बीरबल इस बात से भी चौकन्ने रहते थे कि कपटी व्यक्ति उन्हें अपनी दीनता दिखाकर ठग न लें। ऐसे ही अकबर बादशाह ने दरबारियों के साथ मिलकर एक योजना बनाई कि देखें कि सच्चे दीन-दुखियों की पहचान बीरबल को हो पाती है या नहीं। बादशाह ने अपने एक सैनिक को भेष बदलवाकर दीन-हीन अवस्था में बीरबल के पास भेजा कि अगर वह आर्थिक सहायता के रूप में बीरबल से कुछ ले आएगा, तो अकबर की ओर से उसे इनाम मिलेगा। एक दिन जब बीरबल पूजा-पाठ करके मंदिर से आ रहे थे, तो भेष बदले हुए सैनिक ने बीरबल के सामने आकर कहा, हुजूर दीवान, मैं और मेरे आठ छोटे बच्चे हैं, जो आठ दिनों से भूखे हैं। भगवान का कहना है कि भूखों को खाना खिलाना बहुत पुण्य का कार्य है, मुझे आशा है कि आप मुझे कुछ दान देकर अवश्य ही पुण्य कमाएंगे। बीरबल ने उस आदमी को सिर से पांव तक देखा और एक क्षण में ही पहचान लिया कि वह ऐसा नहीं है, जैसा वह दिखावा कर रहा है। बीरबल मन ही मन मुस्कुराए और बिना कुछ बोले ही उस रस्ते पर चल पड़े जहां से होकर एक नदी पार करनी पड़ती थी। वह व्यक्ति भी बीरबल के पीछे-पीछे चलता रहा। बीरबल ने नदी पार करने के लिए जूती उतार कर हाथ में ले ली। उस व्यक्ति ने भी अपने पैर की फटी पुरानी जूती हाथ में लेने का प्रयास किया। बीरबल नदी पार कर कंकरीले मार्ग आते ही दो-चार कदम चलने के बाद ही जूती पहन लेते।

बीरबल यह बात भी गौर कर चुके थे कि नदी पार करते समय उसका पैर धुलने के कारण वह व्यक्ति और भी साफ-सुथरा, चिकना, मुलायम गोरी चमड़ी का दिखने लगा था, इसलिए वह मुलायम पैरों से कंकरीले मार्ग पर नहीं चल सकता था। दीवानजी दीन हीन की पुकार आपने सुनी नहीं? पीछे आ रहे व्यक्ति ने कहा। बीरबल बोले, जो मुझे पापी बनाए मैं उसकी पुकार कैसे सुन सकता हूं? क्या कहा? क्या आप मेरी सहायता करके पापी बन जाएंगे?

हां, वह इसलिए कि शास्त्रों में लिखा है कि बच्चे का जन्म होने से पहले ही भगवान उसके भोजन का प्रबंध करते हुए उसकी मां के स्तनों में दूध दे देता है, उसके लिए भोजन की व्यवस्था भी कर देता है। यह भी कहा जाता है कि भगवान

इन्सान को भूखा उठाता है पर भूखा सुलाता नहीं है। इन सब बातों के बाद भी तुम अपने आप को आठ दिन से भूखा कह रहे हो। इन सब स्थितियों को देखते हुए यहीं समझाना चाहिए कि भगवान तुमसे रुष्ट हैं और वह तुम्हें और तुम्हारे परिवार को भूखा रखना चाहते हैं, लेकिन मैं उसका सेवक हूं, अगर मैं तुम्हारा पेट भर दूं तो ईश्वर मुझ पर रुष्ट होगा ही। मैं ईश्वर के विरुद्ध नहीं जा सकता, न बाबा ना। मैं तुम्हें भोजन नहीं करा सकता, क्योंकि यह सब कोई पापी ही कर सकता है। बीरबल का यह जवाब सुनकर वह चला गया। उसने इस बात की बादशाह और दरबारियों को सूचना दी। बादशाह अब यह समझ गए कि बीरबल ने उसकी चालाकी पकड़ ली है। अगले दिन बादशाह ने बीरबल से पूछा, बीरबल तुम्हारे धर्म-कर्म की बड़ी चर्चा है पर तुमने कल एक भूखे को निराश ही लौटा दिया, क्यों?

आलमपनाह, मैंने किसी भूखे को नहीं, बल्कि एक ढोंगी को लौटा दिया था और मैं यह बात भी जान गया हूं कि वह ढोंगी आपके कहने पर मुझे बेवकूफ बनाने आया था। अकबर ने कहा, बीरबल तुमने कैसे जाना कि यह वाकई भूखा न होकर, ढोंगी है?

उसके पैरों और पैरों की चप्पल देखकर। यह सच है कि उसने अच्छा भेष बनाया था, मगर उसके पैरों की चप्पल कीमती थी। बीरबल ने आगे कहा, माना कि चप्पल उसे भीख में मिल सकती थी, पर उसके कोमल, मुलायम पैर तो भीख में नहीं मिले थे, इसलिए कंकड़ की गड़न सहन न कर सके। इतना कहकर बीरबल ने बताया कि किस प्रकार उसने उस मनुष्य की परीक्षा लेकर जान लिया कि उसे नंगे पैर चलने की भी आदत नहीं, वह दरिद्र नहीं बल्कि किसी अच्छे कुल का खाता कमाता पुरुष है।

बादशाह बोले, क्यों न हो, वह मेरा खास सैनिक है। फिर बहुत प्रसन्न होकर बोले, तुम्हें धोखा देना आसान काम नहीं है। जिसके बाद बादशाह के साथ साजिश में शामिल हुए सभी दरबारियों के चेहरे बुझ गए।

१५२७) रहीम चाचा, खंबाटा जी और मूर्ति - रहीम चाचा नामी मूर्तिकार थे। उनकी मूर्तियों में कोई मामूली सा भी नुक्स नहीं निकाल पाता था। एक दिन शहर के बड़े उद्योगपति खंबाटा जी रहीम चाचा की दुकान पर मूर्ति लेने आए। रहीम चाचा बोले, आपको जो भी मूर्ति चाहिए, आप मुझे बता दीजिए। मैं बना दूंगा। खंबाटा जी को अपने दफ्तर के आगे लगाने के लिए बुद्ध की एक विशाल मूर्ति बनवानी थी। उन्होंने अपनी सारी प्राथमिकताएं गिनानी शुरू कीं। चाचा बोले, अगर आप मुझे कुछ समय दें, तो मैं आपको ठीक आपकी अपेक्षाओं के मुताबिक मूर्ति बनाकर दे दूंगा। खंबाटा जी ने कुछ पैसे एडवांस देकर सौदा पक्का कर लिया। जब कुछ दिन बीत गए और खंबाटा जी को मूर्ति नहीं मिली, तो दुकान पर आकर उन्होंने पूछा, क्यों भाई, मेरी मूर्ति का क्या हुआ? चाचा बोले, मुझे क्षमा करें, आपकी मूर्ति अभी तैयार नहीं हो पाई है। पर मैं उसी पर काम कर रहा हूं और जल्द ही आपको भिजवा दूंगा। तब तक खंबाटा जी की नजर वहां रखी बुद्ध की वैसी ही मूर्ति पर पड़ी, जैसी उन्होंने मांगी थी। वह बोले, चाचा, मैंने आपको मूर्ति का ऑर्डर पहले दिया था। कहीं ऐसा तो नहीं कि आप मेरी मूर्ति किसी और खरीददार को देकर मुझे मेरी मूर्ति देरी से बनाकर दे रहे हो। रहीम चाचा बो, नहीं हुजूर, ऐसा बिल्कुल नहीं है। खंबाटा जी बोले, फिर यह मूर्ति किसकी है? आप ऐसा करें, यही मूर्ति मुझे दे दें। चाचा बोले, माफ किजिएगा, यह मूर्ति बिकाऊ नहीं है। खंबाटा जी ने पूछा, पर है तो यह एकदम मेरी अपेक्षाओं जैसी। फिर आप यह मूर्ति किसको देंगे? चाचा बोले, यह मूर्ति खराब हो गई है। खंबाटा जी ने पूरी मूर्ति जांची, फिर बोले, पर मुझे तो इसमें कोई

खराबी नहीं दिखती। चाचा बोले, इस मूर्ति की नाक पर खरोंच लग गई थी। भले आपको वह न दिखाई दे, पर मुझे साफ दिखाई दे रही है और मैं अपने आप से बेईमानी नहीं कर सकता। खंबाटा जी बहुत खुश हुए और चाचा को मूर्ति बनाने का पूरा समय और दोगुने पैसे भी दिए। ईमानदारी का पालन सबसे पहले खुद के स्तर पर होना चाहिए।

१५२८) ईश्वर के सच्चे रूप हैं मां-बाप कौन चुका पाया उनका ऋण - एक महानगर में एक मध्यवर्गीय परिवार रहता था। गृहस्वामी शर्माजी, उनकी सुंदर-सुसंस्कृत पत्नी, दो कॉलेज जाते बच्चे और शर्माजी के बूढ़े माता-पिता, जिनकी उम्र ८० को पार कर रही थी। शर्माजी दिन-रात पुत्र-पुत्री और पत्नी की इच्छाओं को पूरा करने में जुटे रहते। किंतु वृद्ध माता-पिता की देखभाल करने में उन्हें बहुत झुंझलाहट होती। उनके पिता को मधुमेह था और मां के घुटने गठिया के कारण जवाब दे रहे थे। हर हफ्ते दो हफ्ते शर्माजी को उन्हें डॉक्टर के पास ले जाना पड़ता। उन्हें लगने लगा था कि माता-पिता के साथ रहने से उनके मनोरंजन और दोस्तों के यहां आने-जाने में विघ्न पड़ने लगा है। तमाम सुख-सुविधाएं होते हुए भी शर्माजी को जीवन बोझिल लगने लगा।

एक दिन दफ्तर में अचानक उनका कॉलेज का एक दोस्त आया। शर्माजी बहुत गर्मजोशी से मित्र से मिले। वर्षों पुरानी यादें तरोताजा हो गईं। शाम के पांच बजे मित्र ने अपने घर जाने का आग्रह किया। पर शर्माजी का मन अभी भरा नहीं था, उन्होंने उसे रोकते हुए कहा, इतनी जल्दी भी क्या है? रात्रिभोज के बाद चले जाना। पर मित्र तैयार न हुआ, बोला, दो सप्ताह पहले ही मां की हृदय शल्यचिकित्सा हुई है, मुझे उनकी देखभाल करने जाना होगा।

यह सुन शर्माजी को लगा कि उनका मित्र और वह एक ही नाव में सवार हैं। इधर पिता की मधुमेह, मां की गठिया, उधर दोस्त की मां की हार्ट सर्जरी। दोनों का ही जीवन बूढ़े माता-पिता की देखभाल करते करते तुम्हें जीवन बड़ा नीरस और बोझिल लगने लगा होगा? यह सुन मित्र मुस्कुराया और शर्माजी के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला, मित्र, कैसी बात करते हो। इस उम्र में भी मेरे सिर पर माता-पिता के स्नेह की छतरी बनी हुई है, इस से बड़ी सौगात मेरे जीवन में क्या हो सकती है भला। उनके होते हुए ही तो मैं सेवानिवृत्ति की इस उम्र में भी बच्चा बना हुआ हूं।

मित्र की बात सुन शर्माजी का सर लज्जा और ग्लानि से झुक गया। उनकी आंखें पश्चाताप के आंसुओं से नम हो गईं। वह सीधे घर पहुंचे, माता पिता के कमरे में गए और उनसे लिपट गए। लगा जैसे बचपन लौट आया हो। माता पिता का स्पर्श उन्हें अलौकिक अनुभूति दे गया।

१५२९) औरों को बदलने से पहले खुद को बदलना सीखें - रामकृष्ण परमहंस के दो शिष्यों में विवाद हो गया कि दोनों में कौन बड़ा है। एक कहता कि तुमसे बड़ा मैं हूं क्योंकि मैंने तुमसे पहले संन्यास-दीक्षा ली थी। दूसरा कहता कि मैंने तुमसे ज्यादा ज्ञान अर्जित किया है। विवाद का हल पाने दोनों गुरु के पास गए। गुरु ने मुस्कराते हुए कहा कि जो दूसरे को बड़ा माने वही बड़ा है। उनका निर्णय दोनों ने सुना। अब दोनों एक दूसरे को बड़ा कहने लगे। जो संन्यास में बड़ा था वह वह कहने लगा- सिर मुंडाने से क्या होता है, महत्वपूर्ण है ज्ञान। आप शास्त्रज्ञ हैं इसलिए आप श्रेष्ठ हैं। दूसरा बोला- शास्त्र पाठ से क्या होता है, महत्व साधना का है जिसमें आप श्रेष्ठ हैं। पहले दोनों में मैं बड़ा का झगड़ा हो रहा था, अब आप बड़े का होने लगा। मगर एक अंतर आ गया। पहले में कटुता मौजूद थी, दूसरे में मधुरता आ गई। एक में आग्रह और अहं था जबकि दूसरे में विनम्रता और सरलता।